# गुज़राती-हिंदी कोश







For Private and Personal Use Only

## सो रूपिया

## © गूजरात विद्यापीठ, १९६१

## पहेली आवृत्ति, प्रत १०,००० प्रथम पुनर्मुद्रण, प्रत ५,०००, डिसेम्बर १९९२

मुद्रक जितेन्द्र ठा. देसाई नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद-३८००१४

प्रकाशक विनोद रेदाशंकर त्रिपाठी मंत्री, गूजरात विद्यापीठ मंडळ गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद-३८००१४

For Private and Personal Use Only

## प्रकाशकनुं निवेदन

गुजराती-हिन्दी शब्दकांश अने संस्कृत-गुजराती शब्दकोश प्रसिद्ध करवानुं गूजरात विद्यापीठे ई. स. १९५५ मां ठराबेलुं. आ वे शब्दकोशो पैकी गुजराती-हिन्दी शब्दकोश आजे गुजरातनी जनता समक्ष रजू करता आनंद अनुभवीए छीए. आ शब्दकोशनी योजना श्री मगनभाई देसाईए शरू करावेली, एटले तेनुं प्रास्ताविक निवेदन लखी आपवानी तेमने दिनंति करी. तेनो स्वीकार करी आ निवेदन लखी आपवा बदल तेमनो आभार मानुं छुं.

आ ग्रंथना प्रकाशन-खर्च पेटे भारत सरकारना वैज्ञानिक संशोधन अने सांस्कृतिक बाबतोना खाता तरफथी आर्थिक मदद मळी छे, तेनो उल्लेब करना आनंद थाय छे.

गुजरातनी जनता आ प्रथने उत्साहपूर्वक वधावी लेखे एवी आसा छे. ता॰ १२--१२--'६१

## निवेदन

भाई रामलाले जणाव्युं के, जे कोशना संपादनमां, — तेना संकल्पयी मांडीने लगमग ते छपाई रहेवा आव्यो त्यां सुघी, — मारो हाथ हतो, ते प्रजा पासे जाय त्यारे ए कामने अंगे निवेदन हुं करुं, ए उचित घरो. आ विनंती मान्य राखी, हुं आ निवेदन करुं छुं. तेम करवानी मने तक आपी तेने माटे विद्यापीठनो आमारी छुं.

ई. स. १९३५ मां सरकारना कबजामांथी विद्यापीठ छूटयुं, पछी नवेसर तेणे जे कामो सरू कर्यां, तेमां राष्ट्रभाषा हिंदी-हिंदुस्तानीना प्रचारनुं कार्य सास हतुं. ते अंगेना कार्यक्रममां एक नानकडो हिंदी-गुजराती कोश तैयार करवो जोईए, एम नक्की ययुं. अने ते काम में शरू करोने १९३९ मां प्रसिद्ध कर्यु हतुं. आ ग्रंथने सूब सारो आवकार मळघो. कुल ७,००० नकलोनी वे आवृत्तिओ पूरी थई गया पछी, १९५६ मां बहार पाडेली (कुल १०,००० नकलोनी) आवृत्ति अत्यारे प्रजा आगळ चाले छे.

उपरनो कोश वहार पड्या पछी थोडां ज वर्षोमां, स्वाभाविक रीते, मने थयुं अने एवी मांग पण यई के, हवे गुजराती-हिंदी कोश पण तैयार करीने गुजरातने आपवो जोईशे. १९५० वाद गुजरातमां हिंदीनो अम्यास सरकारी निशाळोमां दारू थयो, एटले पण आवा कोशनी जरूर वधु ने वधु देखाबा लागी. तेथी १९५५ मां विद्यापीठे विचार्युं के, एक नानकडो गुजराती-हिंदी कोश पण हवे बनती त्वराए सैयार करवो जोईए. एवो कोई कोश चालु उपलब्ध नथी, तेथी शिक्षण अने साहित्य क्षेत्रे आ जातना प्रकाशननी खोट छे ने पहेली तके दूर करवामां आवे. एटले था काम विद्यापीठना हिंदी विभागना अध्यक्ष, भाई गिरिराज किशोर जोडे चर्चीने शरू करवानूं नक्की करवामां आव्युं, अने ते माटेनी योजना विचारीने तेमने अणाबी, काम उपाडवा व्यवस्था करी.

पहेलु पगलुं ए हतुं के, कया अने केटला गुजराती शब्दो सामान्यपणे आ कोशमां लेवा, ए विचारवूं. लोकोपयोगितामी दृष्टिए जरूरी हतुं के, कोश अति मोटो न करवो तैम ज नानो पण न चाले. हिंदी शिक्षण अने प्रचारनी गुजरातनी चालु स्थितिनी मांगने पहोंची वळे एटली शब्द-सामग्री ( शब्द-प्रयोगो सहित) ओछामां ओछी होवी घटे. ते दृष्टिए कोशमां लेवाना गुजराती

शब्दौनी पसंदगीनुं काम पहेलुं उपाडघुं. आ अरसामां गुजराती विनीत जोडणी-कोशनी शाळोपयोगी आवृत्ति बहार पाठवामां आवी हती; तेने आघारे शब्दोनी विणामणी करवी सारी, एम विचार्युं, अने ते काम विद्यापीठना हिंदी विभागना सेवक श्री नानुभाई बाररोटने सोंप्युं.

जैम शब्दोनी पसंदगी पाय तेम तैनां कार्ड बनाववामां आवतां. एटलुं मके, ते शब्दोना हिंदी पर्याक्षे मुझकानुं शरू करवानुं वीजुं पगलुं भरवामां बाव्युं हतुं. ते पछी श्री नानुमाई साथे विचापीठ हिंदी विभागना बीजा सेवक श्री अंबाशंकर नागरने हिंदी पर्वायो जोई जवा माटे श्री नानुभाई साथे थवानुं सोंग्युं. श्री गिरिराज किशोर पण आ कामसां घटतुं ध्यान रासी हिंदी पर्यायो विषे बरोबर चकासणी करी ले, ए उचित हतुं. श्री अंबाशंकर आम गुजराती छे, मरंतु ते घको काळ राजस्थानमां हता. अने श्री निरिराज किशोर हिंदी-भाषी प्रदेशना व छे. आ वे व्यथे हिंदी पर्यायोनी संचोट समर्पकता विषे शब्दोने तपास्या छे. तेथी आ कोशने गुजराती-आशी तेम ज हिंदी-आयो एम बंने प्रकारना संपत्थकोनो लाभ मळघो छे. अलबत्त, मुख्य काम श्री तानुश्वाईए संपाछपुं छे, तेनी नोंघ लेतां आनंद थाय छे. ते युजरातना एक जूना हिंदी प्रवारक अने अनुभवी शिक्षक तथा साहित्यप्रेसी छे.

आगळनुं पगलुं हतुं, सब्दोनां कार्डं परथी कोक्षबुं हस्तलिखित — प्रेस कॉपी तैयार करवानुं. ए.काम थये आ त्रण मित्रोए पाछुं ए सळंग जोई लई, बेसमां छपावचा माटे मोकलवा सारू छेवटनुं करी लीधुं अने हिंदी विभाग तरफथी श्री निरिराजजीए मने जणाब्युं के, हवे छापकाम शरू कराबी शकाय छे.

कोशना काममां झूब झीणकटभरी महेनत करवानी होय छे, ए तो सौ आचे छे. पेथ तेमा अमुक कसब पक जरूरनो छे. ते दृष्टिए पथ आ काव जोनुं कोईट. उपरना वर्ण सित्रो माटे कोशनुं काम नवुं हतुं. तेथी आ करवावां औ गोपाळदास पटेले अने में भ्यान आप्युं हतुं. मारे वहींयां कबूल करवुं जोईए के, जनेक बीजां कामोने लईने हुं मनें गमे तेटलुं वघुं ध्यान आपी शक्यो नवी. परंतु प्रथमुं संपादन बरोबर थाय ए सातरी मेळववा पूरतुं काम कर्यानो संतोक मने छे.

छपाती बचते 'नवजीवम 'ना हिंदी विभागमां काम करता श्री सोमेध्वरजी पुरोड्ति, श्री तिवारीजी वगेरे भाईभोनी कीवती मदद मळी छे, तेनी सामार नोंघ छेनी कोईए. जा बंने भाईको गुजराती झाचे छे, तेवी शब्दोना समर्थक हिंदी पर्याच आपवामां एननां सलाह सूचनो कीमती नीवढपां छे.

ŧ

आम सैमार वयेलु काम हवे प्रवाः आवन रफू याय छे. वाला छे के, तेमने ते उपयोगी नोवडशे. विद्वापीठ आ एक कीमती काम करी सक्यु तेथी पोताने कृतार्य थय माने छे.

<del>R</del>

कोशना संपादननी दृष्टिए केटलीक वाबतो कहेवा जेवी गणाय, तें उपर हवे आवूं.

जा कोश तैयार करती वस्तते गुजरातना विशाळ विद्यार्थीवर्गने नजर समक्ष राखवामां आख्यो छे. बीजी दृष्टि गुजराती भाषाना लोकभोग्य साहित्यने हिंदीमां उतारवाना कार्यमां आ कोश द्वारा कंईक मदद यशे एवी पण जाशा छे.

गुजराती अने हिंदी भाषामां घणुं साम्य छे. तथी आवा कोशमां शब्दोनी पसंदगी करवामां घणी सावधानी राखवी पडे छे. संस्कृत तत्सम शब्दो, के जेनां अर्थ अने जोडणी बन्ने भाषामां सरखां होय, तेवा शब्द लोघा नयी. पण तेवा शब्दनो शब्दप्रयोग लेवा योग्य होय तो तेवा तत्सम शब्दोने स्थान आप्युं छे. उदा० सिंह; स्वभाव इ०. जोडणीमां सामान्य फरक होय तेवा समानार्थ हिंदी के उर्दू-कारसी शब्दोने खास लीघा छे. उदा० ' मेहनत; जात; मा इ०' कियापद लगभग बघा लीघा छे. जियापदना कर्मणि, मावे तेम ज प्रेरक रूपीना अर्थ शब्द होय त्यां मुधी आपवानी प्रयत्न कर्मणि, मावे तेम ज प्रेरक रूपीना अर्थ शब्द होय त्यां मुधी आपवानी प्रयत्न कर्मणा बाब्दा' अध्या छे. कोशमां आवां रूपोना पर्याय आपवानुं उचित गणवामां नयी आवत्, ' गाया जाना ' व्यवहारमा वापरी शकाय छे, पण कोशमां मुकाला नयी. पण जा कोश विद्यार्थीओ माटे छे, तेवा तेमने भाषांतर करती मुश्केली न पडे एम मानी, आवा पर्याय आप्या छे.

एम काम करता आ कोशमां कुल लगभग २५ हजार धन्दी संवत्तका छे. आ संख्या ठीक काम दे एवडी गणाय. आगळनी आवृत्तिओमां, जरूर प्रमाणे, वधारो थतो रहेशे.

हिंदी अर्थ छूटथी आप्या छे, जेवी कोश वापरनार तेना अनेक पर्याय जाणी शके. अर्थ आपकामां बोलचालनी हिंदी-हिंदुस्तानी भाषानो सविशेष उपयोग करवामां आव्यो छे. हिंदी बहु मोटा जनसमूहनी भाषा छे. तेवी राक्य छे के, एक प्रदेशमां वपरातो शब्द ते ज रूपे बीजा प्रदेशमां न वपरातो होय. आयी पण बन्या तेप्रसा जुदा जुदा वधु पर्याय खाप्या छे.

U

शब्दप्रयोग सास आप्या छे. समजवा सरळ होय तेवा शब्दप्रयोग नवी आप्या. बघा ज प्रयोगो आपवा जतां कोशनुं कद तया किंमत वघी जाय, ए पण संभाळवुं रहघुं.

श्वब्दनी व्युत्पत्ति आपी नथी. आवा नाना कोशमां व्युत्पत्ति आपीने तेनुं कद वधारवुं आ सबक्के जरूरी नथी मान्यूं.

गुजराती शब्दोना हिंदी अर्थ आगळ बतावेली दृष्टिने घ्यानमां राखीते आपवामां बाव्या छे. जरूरी लाग्युं छे त्यां शब्दनी व्याख्या आपीने पछी तेना पर्याय आपवानो प्रयत्न कर्यों छे. जेम के, 'ठीकरुं न० मिट्टीके बरतनका टूटा हुआ टुकड़ा; ठीकरा'.

आ कोश तैयार करवामां मुख्यत्वे गूजरात विद्यापीठना 'सार्थ गूजराती जोडणीकोश ', 'विनीत जोडणीकोश ' तथा 'हिंदी-गूजराती कोश ' नो उपयोग करवामां आव्यो छे. हिंदी पर्याय माटे जानमंडल लिमिटेड, बनारस,ना 'बृहत् हिंदी कोश ' तथा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी,नो ' संक्षिप्त हिंदी शब्द-सागर '-नो अने ' फिरोजउल लुगात ' उर्दूनो विशेष उपयोग कर्यो छे. उपरांत बीजा नाना मोटा कोशोनो पण उपयोग करवामां आव्यो छे. ने बधानी आभारपूर्वक नोंघ लेवामां आवे छे.

अंते, आ बहार पडे छे त्यारे मारो आतंद अने संतोष प्रगट कर छुं के, हिंदी प्रचारना काममा आवा एक कोशनी जरूर मानी हती, ते आजे ईश्वरकुपाए पूरी यई शकी छे. हवे तेने वधु ने वधु उपयोगी बनाववानुं काम तेना वापरनारानुं छे. तेओ तेने सुधारवा वधारवा माटे, पोताना अनुभव-मांयी मळतां सूचनो विद्यापीठने करता रहेशे एवी विनती छे. तो आ कोश तेनी उत्तरोत्तर आवृत्तिओ रूपे पोतानी साहित्य-अने-शिक्षणमां सेवा आपवानी शक्ति वघारतो रही शकशे.

22-22-122

मगनभाई देसाई

## कोश वापरनारने सूचनाओ अल्होनी गोठवणी

शब्दोनी गोठवणी पूजराती कक्कावारीना सामान्य धोरणे करवामां आवी छे. एटले अनुनासिक के अनुस्वारदाळो अक्षर ने वगरना अक्षरनी पछी मूकबामां आव्यो छे. जेम के, 'चंचळ', 'चंपल ' वगेरे सब्दो ' चरबी ', 'चलम' पछी आवे. आ ज प्रथा बधा अक्षरोमां अपनाववामां आवी छे. ते सिवाय बाकीनी गोठवणी कक्कावारीना सामान्य क्रममां छे.

मुळ सब्दना विकल्प होय तो तैमने मूळ सब्द पछी अल्पविराम मूकीने आग्वा रुखनामां आव्या छे. जेम के,

<u>अन्त्रहब</u>खड, अखडाबन्दर्श

जातवंत, जातवान

पण आ रीत बधे अखत्यार करवामां नथी आर्वा, केटलीक जग्याए मूळ बब्दना विकल्पने टूंकावीने नीचे प्रभाणे मुक्यो छे :

अकेक (-कुं)-- अकेक, अकेकुं जउथा (-यां)तोड --- जडवातोड, जडवातोड हिंगळो (०क) --- हिंगळो, हिंगळोक सदा (०काळ) --- सदा, सदाकाळ

एटले के, आ '–' संज्ञा तेनी पूर्वेना अक्षरने बदले लता शब्दना अने आ '०' संज्ञा तेमां उमेरीने बनता सब्दनो विकल्प सूचचे छे.

आ कोशमां लिपि देवनागरी वापरी छे. प्रथम गुजराती शब्द काळा टाइपमां मूक्या छे. पछी तेना उच्चारप्यनी संकेत () आवा कौंसमां आप्यो छे. पछी ते कुजराती शब्दनुं व्याकरण आवे छे. राव्दना सामान्य अर्थ पुरा यया पछी तेना प्रयोगो आप्या छे. त्रेम के, लोय (अ,) स्त्री० लोध; लाश (२) आफन; बला (ला.) (३) वि० बहुत अका हुआ; लोध-पोध। [-धवुं = यककर चुर होना.]

#### उ<del>ण्प</del>ारण

अर्क्टोना उच्चारण विषे संकेत मूलवामां आव्या छे, ते शब्द पछी तरत ज अने व्याकरण बताव्युं छे ते पहेलां ( ) आवा कौँसमां छे. जेम

के, सौकळ (०) स्त्री० उच्चारणमां हश्रुति, यश्रुति, पोचो अनुनासिक, पहोळा ऍ, ऑ, अने क्यांक लवुप्रयत्न अकार (जेम के र्हेवुं) बताव्या छे. दरेक संकेतनी समज संकेतसूचीमां आपी छे.

#### सम्बद्धांग

जे सब्दनो प्रयोग होय से स शब्दना सामान्य अर्थो पूरा थया पछी नागरीनुं पूर्णविरामनुं '।' चिहुन कर्या पछी [] आवा कौंसमा आपवामां आव्यो छे. एक सब्दप्रयोग पूरो याय एटले तेने छेडे '।' आवुं चिहुन मूक्युं छे. सब्दद्रयोग पूरो थाय त्यारे गुजराती पूर्णविरामनुं '.' आवुं चिहुन मूकी कौंस पूरी कर्यो छे.

टूकाणने खातर, शब्दप्रयोग लखवामां मूळ शब्द फरी न लखता तेने स्थाने ' – ' आदी नानी लीटी मूकीने चलाव्युं छे. जेम के, झांझ शब्दमा । [ – आटा कान करवा = सुनी. अनसुनी करना । – तळे काढवुं = देख लेना; नजर डालना. ]

ज्यां मूळ सब्दनुं रूपांतर धईने सब्दप्रयोग बने त्यां ते सब्द आखो लक्ष्यो छे. जेम के, आंक्से पाढा बांबवा; आंक्सो बोचीए आवबी, इ०

शब्दप्रयोग कक्कावार कममां मूक्या छे. ज्यां मूळ शब्द आगळ कोई पद आवे तेवो शब्दप्रयोग होय, (जेम के, मॉं शब्दमां **गळगुं मॉं करवुं,** कराबवुं) त्यां ते शब्दना सामान्य प्रयोगो पूरा थया पछी, अने तेमना कममां आपवामां आव्या छे.

पर्यायवाचक शब्दोना अर्थ दरेक ठेकाणे लखदाने बदले एक ठेकाणे लखी बीजे ठेकाणे देकिये लखीने पछी ' ' आवा चिह्नमां ते शब्द जणाववानो रिवाज राख्यो छे. ज्यां ते शब्दना दधा अर्थ लागु न पड़ता होय त्यां अर्थनो अमुक नंबर जोवानुं कह्युं छे. स्थळसंकोचने कारणे आवा पर्यायवाची शब्दो एकसाये मूकीने पछी तेना अर्थमां 'देक्षिये -- आदि' कह्युं छे. उदा० सांक, सांकरे, सांको देखिये ' सांज ' आदि.

केटलाक पारिभाषिक शब्दोना हिंदीमां अर्थ आप्या पछी तेनो ' ' आवा चिह्नमां नागरी लिपिमां अंग्रेजी अर्थ आप्यो छे.

#### संक्षेपोनी समज

अ० अव्यय ्अ० कि० अकर्मक कियापद इडदा० उदाहरणः

कर्मणि कर्मणि प्रयोगनुं रूप ग० गणितशास्त्र न० नपंसक लिंग न०ब०व० नपूसंक लिंग, बहुवचन प० पद्ममां वपराती शब्द ণুঁও বুলিন पुंध्यव्यः पुंलिंग, बहवचन प्रेरणार्थक प्रेरक भेदन रूप भावे भावे प्रयोगनं रूप লাও চাঞ্চামিকি বি বিহায়িগ वि०पं० विशेषण, पॅलिंग वि०स्त्री० विशेषण, स्त्रीलिंग व्या० व्याकरण स० सर्वनाम स०कि० सकर्मक कियापद स्त्री० स्त्रीलिंग स्त्री०ब०व० स्त्रीलिंग, बहुवचन

## उण्यारणनी संकेत

- (०) पोचो अनुनासिक छे एम बतावे छे. जेम के, आंख (०).
- (ऍ) पहोळो छे एम बतावे छे. जेम के, पेठे (पॅ).
- (ऑ) पहोळो छे एम बतादे छे. जेम के, मोळुं (मॉ).
- (') वर्णनी पछी उपर मूकेलुं अल्पविराम ते वर्णमां हश्रुति छे एम बतावे छे. जेम के, वीलुं (वी').
- (,) वर्णनी पछी नीचे मूकेलुं अल्पविराम ते वर्णमां यश्र्युति बतावे छे. जेम के, वाड (ड,).
- (्) खोडानुं चिह्न, लघुप्रयत्न अकार बतावे छे. जेम के, रहेवुं (र्ह्र).

ŧŧ

## अनुकमणिका

१. प्रकाशकनुं निवेदन	२
२. निवेदन — श्री मगनभाई देसाई	لر
३. कोश वापरनारने सूचनाओ	٩
४. गुजरासी-हिन्दी कोझ	<b>१</b> -५५२



#### अ

**अ पुं**० संस्कृत-कुटुंबकी वर्णमालाका पहला अक्षर — एक स्वर अकडाई स्त्री० अकड़; अकड़बाजी; ऐंठ; अभिमान (२) बौकपन ইিঁচ अकडाट पुं० तनाव ; अकडाव ; अकड़ ; अकडावुं अ० कि० अकड़ना अकर्बच वि० जैसेका तैसा; बग्रैर खोला हुआ; न बरता हुआ; ज्योंका त्यों अकरांतिमुं वि० पेटू; भुक्खड़ (२) अत्यधिक (खानां) अकर्मी वि० अभागा (२) अकर्मण्य; आलसी (३) अकर्मी; दुराचारी अकल स्त्री० अक्ल; बुद्धि; समझ अकलमंद वि० अक्लमंद; समझदार **अकसीर** वि० अकसीर; राभबाण अकस्मात् अ० अकस्मात्; अचानक; यकायक घिटना अकस्मात पुं० दुर्घटना; आकस्मिक अकळामण स्त्री० व्याकुलता; घबराहट; बेचैनी अनळावुं अ० फि० अकुलाना; घबराना (२) ऊबना; उकताना (३) चिढुना अकारत (- थ) अ० अकारथ; वेकार; व्यर्थ अकार्ष वि० अप्रिय; नापसंद अकाल (--ळ) वि० बेमौका;बेमौसमका; असामयिक (२) पुं० अयोेग्य अवसर (३) अकाल (४) परमात्मा अकीक पुं० अफ़ीक़ ; एक प्रकारका पत्थर **भँकेक(--क्रुं)** दि० एक-एक (२)एकके बाद एक (३) प्रत्येक; हरएक

अक्कड वि० सरुत; कड़ा (२) तना हुआ; सीधा (३) ऍठू. अक्कर्मी वि० देखिवे 'अकर्मी' अवकल स्त्री० देखिये 'अकल ' **अकलक (--प)रो** पुं० अकरकरा **সদক্ষমাত্র** বি০ **अ**क्लमंद अक्का स्त्री० कुट्टी; दोस्ती तोड़ना; लड़कोंका खेलमें मैत्री-भंग अक्नेक वि० देखिये 'अकेक' अक्षत वि० अक्षत; अखंडित; बिना ट्टा हुआ (२) पुं० व० व० बिना टूटे हुए चावल, गेहूँ या जौके दाने; जक्षत अकर वि० अविनाशी (२) पं० अकारादि वर्ण (३) हरफ़ (४) पुं० ब० व० हस्ताक्षर (५) विधिके लेख (६) ब्रह्मा । [--काढवो = (हाथसे) लिखना या (मुँहसे) बोलना। **~पाडवो =** लिखना.] अक्षरगणित न० अक्षरगणित; बीज़-गणित; अलजबरा अक्षरमेळ वि० अक्षर-वृत्त; वर्णोंकी और लघु-गुरुके संख्या कमकी समानतावाला वृत्त; वर्णिक छंद अखड वि० जोता-बोया न जानेवाला (खेत) (२) घास भी न पैदा हो ऐसा (खेत) (३) खाली (मकान)

असटनकड, असटावसडी वि० उत्रह-सावड़

अ**चतरो** पु० प्रयोग; आजमाइश अ**चत्पार पु**० अस्तियार; इस्तियार; अघिकार

ਸ਼ ਜਿ\_0

असरयारनाम्	. स् अघभर्त
असर्यारनामुं न०, असर्यारपत्र न०; पुं०	<b>अगरवली स्त्री</b> ० अगरबत्ती;धूपबत्ती;
मस्रतारनामा: अधिकार-पत्र	ऊदबत्ती
असत्थारनामुं न०, असत्यारपत्र न०; पुं० मुस्तारनामा; अधिकारपत्र अस्तवारनवीस पुं० अखवारनवीस; संवाददाता असरामण न० जामन; वह चीज जिसे दूधमें डालकर दही जमाते हैं असराचुं अ० कि० जमना (दही) असराचे न० अखरोट असादो पुं० असाड़ा; दंगल (२) साधुओका मठ : [असाडा करवा == सुनी-अनसुनी करना; ध्यान न देना.] असात्रीज स्त्री० आसातीज; वैशाख शुक्ल तीज असूट वि० असूट: जो खुटे नहीं अस्तवात्रीज स्त्री० आसातीज; वैशाख शुक्ल तीज असूट वि० असूट: जो खुटे नहीं अस्तवात्री स्त्री० असहां जानवर लड़ाये जाते हैं [पुं० अवघूत; साधु सराववंब वि० सुद मोटा;संड-पुसंड (२) मगडबंगई वि० सरा-स्रोटा (२) न० अड-बंड; बेमायने वात धगण्यातेर वि० उनहत्तर; ६९ अगण्याएंकी वि० उन्नासी; ७९ आगस्य स्त्री०;न० महत्त्व (२)जरूरत।	
[-आपवी(-चुं) = महत्व देना.]	अगुवो पुं० अगुआ; मुखिया(२)आगे
मगभियो पु० एक पेड़; अगस्ति	चलनेदाला
अगन स्त्री० अगन; अग्नि (२) जलन	अग्रणे पुं० अगुआ
मगभवेती स्त्री० आगम-सोच; दूरदेशी;	अग्रलेख पुं० अगुआ
पेशबंदी	अग्रलेख पुं० अग्रलेख; लीडिंग आटिकल'
अगमनिगम न० भूत और मविष्य (२)	अघटसुं वि० अघटित; अनुचित;
(स. आगम-निगम) वेद और शास्त्र	अयोग्य; बेजा [नाजायज्ञ
भगमबुद्धि स्त्री० आगम-बुद्धि; दूर-	अघटित वि० अघटित; अयोग्य; बेजा;
दशिता; पेशबंदी [वाणी; गूढ़ गिरा	अघण न० हगनेकी किया; हगना(२)गुदा
अगमबाजी स्त्री० अगमबानी; रहस्य-	अघणसाड(-ण)स्ती० हगनेका गढ्ढा;
अगर पु० आगर (२) न० अगर; आगक	हगनहटी [बार हगे ऐसा; हुग्गु
(३) अ० अगर; यदि; जो (४) अधवा	अघणसी (सी) वि० हगोड़ा; बार

q	5	₹
	× .	

**अवमूतर** स्त्री० हगना जौर मूतनरू **अवरणी** न०; स्त्री० पहले पहल गर्भ धारण करना (२) सीमंत; सीमंतोन्नयन संस्कार; आठवाँ पूजना **ধাহাৰ্ছ** বি০ **मु**ष्टिकल; कठिन अधवर्षु स० कि० हगाना; पाखाना फिराना (२) खूब पीटना (३) जबरदस्ती वसूरु करना; हगा लेना अधवुं अ० कि० हगना; पाखाना फिरना (२) दबावके कारण विवश होकर दे देना; हग देना [ला.] अम्राटवि० अपार; अनंस (२) (दस्तावेजमें) कुल हक़ोंके साथका (३) पुं० शिलालेख (४) माफ़ीकी अमीन जिसे उसका स्वामी बेच न सके; अघाट (५) घाट अधाहियुं वि० कुल हक्रोंके साथ दिया हुआ (२) नमकहराम कराना वजारणुं स० कि० हगरना; मलत्याग **अधानुं** वि० पाखानेकी हाजतबाला सवामण स्त्री० अतिसार; दस्त लगना (२) भय या सल्त परिश्रमसे दस्त लग जाय ऐसी स्पिति • • • अखाववुं स० कि० देखिये 'अभववुं' अज्ञार स्त्री० बीट; चिड़ियोंका मैला अघोर वि० मयानक; अति घोर अचोरी वि॰ सुस्त; निद्रालु; अहदी (२) घिनौना (३) पु० अघोरी; अघोरपंथी साधु; औषड़ अचननुं अ०त्रि० अटनना; ठिठनना; [अचरज; अचमा रकता अचरज(–त) न०, (–ती) स्त्री० अर्थवो पुं० अचंभा; आवचर्य; हैरत अचानक अ० लेचनिक; यकायक **ৰাজুক** বি*০* এাখুক; জালী ন আনীৰাজা (२) अ० बिना मूके; सहा

मचाण्यं अण्डेर पुं० आवा सेर (कल्ला) अच्छेरो पुं० अध्यक्षेरा (कच्चा) अछत स्त्री॰ कमी; न्यूनता मछ्यडा पुं० बव वरु छोटी माता; चेचकका एक प्रकार আিবিকা अकूत वि० अछूत; अस्पृश्य (२) बकुत अछो अछो करवुं, अछो अछो कार्स करवां = लाढ़-प्यार करना; अक्खो-मनलो करना (२) प्रेमपूर्वक जाव-भगत करना अछोटो पुं० पमा (२) एक लड़ीकी गलेकी माला (३) घड़ीकी जंजीव या सौकल अजगर पुं० अजगुर सौंप अजमायश स्त्री० आजमाइश; परीका; পৰ্যমাহহা ्रिकरना अजमाबबुं स० कि० वाजमाना; जोच अजमो पुं० अजवायन [जो पचे नहीं अजर वि॰ अजर; जरारहित (२) अजरामर वि० अजर और अमर; अविनाशी; जरा-मरणरहित अजरो पुं० अपच; बदहजमी; सजीर्ण मजवळ्वं स॰कि॰ मौजनाः; रगहडर <u>ःउजलाः करना (२) उजाला करना</u> (३) नाम रोशन करना (४)इज्जत बरबादः करना (व्यंगमें) अजवाळियुं न० शुक्ल पक्ष; उजाला पास (२) रोशनदान अजवाळी वि० स्त्री० चांदनी रात अत्रवाळुं ने॰ उजाला; प्रकाश; रोजनी अजंप(न्थो) पुं० वयड़ाहट; अज्ञान्ति; वेक्ररारी াপমাল अजान वि० अनजान; नावाक्रिस (२)

अवागतः अ० अनजाने (क्रुक्स्या) अजाम्मुंः वि० अनजानः अपरिषितः

	Ι.	
26.0		

¥

8 C 4 C

·····	
अस्तम्ब वि० जजीव; आश्चर्यकारक	अद्यनहा मुंश्व श्व रंगविरंगी वारियाँ
अजायनी स्त्री० आश्चर्य; तअञ्जुन	(२) पटा
अजीठुं वि॰ जूठा (२) जिसमें खाया-	अदामण न॰ पलेचन
पिया गया हो (बरतन, चौका)	वदारी स्त्री॰ अटारी; कोठा; झरोसा
(३) जूठनसे गंदा (४) नज जूठन	अटारो (-सो) पुं० अटाला; क्लाब
अवीरण न० तथीरम; बदहर्ख्यी	(घरका टूटा-फूटा सामान)
अवीर्ग वि० अजीर्ण; जो पथा न हो	<b>अटाळी स्त्री</b> ० देखिये 'अटारी'
े (२) न० अजीरन; अपच; बदहजमी	अदूलुं वि० अनेला; तनहा; एकला
अजुक्त ( यतुं) वि० अनुचित; अयुक्त;	<b>अटेरण</b> न० अटेरन (सूत रुपेटनेका
नामुनासिब [लाजवाब	साथन) [बटल
अजोड वि० बेजोड़; अद्वितीय; लासानी;	अट्टल वि० पक्का; पूरा(२) अडिग;
अटक स्त्री॰ अटक; स्कावट; बाधा (२)	अट्टहास पुं०; न०, अट्टहास्य न०
मुश्किल (३) शंका (४) हवालात;	अट्टहास; जोरकी हँसी; कहकहा
हिरासत (५) टेकन (६) प्रतिज्ञा;	<b>अठवाहिक</b> वि० प्रति सप्ताह होनेवाला;
संकल्प (७) देखिये 'अडक'	साप्ताहिक (२) न० साप्ताहिक पत्र
अटकत्राळुं वि॰ नटखट; शरारती	<b>अठवाडियुं</b> न० अठवारा; सप्ताह; <del>ह</del> फ़्ता
(२) न॰ शरारत; नटखटी	<b>अर्ठग वि॰ चा</b> लाक; उस्ताद; <del>प</del> ंट
पटकम वि॰ जो ठहरा रहे (२)	अठिंगण न० टेकन; सहारा; तकिया
स्वी॰; न० टेउकी; टेकन (३)	अर्डिंगचुं स॰फि॰ सहारा लेना;उठँगना;
ठोकर (४) मशीनको चलाने या	टेकना
धकर (॰) मसावका चलान था बद करनेकी कल	अठिमुं नि॰ हठी; ज़िद्दी (२) मोटा
अटलयुं अ०कि० अटकना;रुकना;श्मना	अठेदारफा ⇒ यहीं पड़ाव
अटकरु स्त्री॰ अटकरु;अंदाजा;अनुमान	अठ्ठाणु(-णुं) वि० अट्ठानबे; ९८
अटकायस स्त्री॰ रुकावट; रोक; अटकाव	अहावम वि० अट्ठावन; ५८ [२८
जटकायत स्ताण्ड एकापद; रापा, जटकाय ः (२) हिरासतमें रखमा	<b>अठ्ठावीश (स)</b> वि० अट्ठाईस; अट्ठाहस;
	अठ्ठोतेर वि॰ अठहत्तर;अठत्तर;७८
अटकायती वि॰ हवालासमें रखा हुना; नचरबद (कैंदी)	<b>अहृभाशी(-सी)</b> वि॰ अठासी; ८८
मदराव (अप) अटकाव पुं० अटकाव; रुकावट; अटक	अडक स्त्री० उपनाम; अल्ल; जाति,
	वंश, धंघे और रहनेकी जगह
(२) अड्चन; बाधा (३) मासिक-धर्म	आदिके आघार पर रखा गया नाम
अटकावचुं संश्रुकि० अटकाना; रोकना – अटकर्ट वि. अटकरा, प्रेजीवर	अ <b>डकवुं</b> स०कि० छूना (२) अ०कि०
<b>मदचदुं</b> वि० <b>मटपटा; पेचीदा</b> सराम्य सर्वत्रिक भरतम्प (२) तैनोले	अडना; अटकना
सटबान् अ०कि० भटकना (२) वैरोमें	अडकाडर्षु स० कि० छुआना; छुलाना
उल्ज्ञना (३) उल्लाममें पड़ना	अडकाव पुं० स्त्रीका रजस्वला होना
बहबानुं अ० कि॰ पिसलेग अपूर	अडकाखचुं स॰ कि॰ बंद करनाः;
होनाः (२) चुँडमा; पिसमा	उठँगानाः; भोठँगाना

For Private and Personal Use Only

वासकार्य	4	अडोशपकोच
<b>सबकार्य</b> अ० कि० रजस्वला होना <sub>र</sub> (२)		अस्तांग वि० नादान (२) मूर्स; अविनारी
बंद होना; लगना [अग्रूल-बगुळ		अक्वोत (-य) वि॰ गावदी; गुँदार
अडसेयडसे अ० इदं-गिर्द; आस-पास;		(२) स्त्री० मौल; चपत्
<b>अडग</b> वि० दृढ़; अडिग		<b>सहबहियुं</b> त० देखिये 'अडबहियुं
<b>अडखण</b> स्त्री० अङ्चन; डाघा <sub>य</sub> (२)		<b>अडवाम्</b> वि० नगे पैर चलनेवाला
मुश्किल (३) स्त्रीका रजस्तला होना		अडवुं वि० बेहूदा; बेतुका; गोभाहीन
<b>अडण</b> न० खीरी; <b>धन</b>		(२) नगे पांच चलनेवाला
<b>मक्ताळोस</b> वि० <b>अ</b> डतालीस; ४८		अडवुं स॰ कि॰ छूना (२) अटकुना;
अडद पुंठ ब० व० उरद; , उड़द		अड़ना (३) घाटा या नुकसान होना
<b>लडवाबो (-ळो)</b> पुं० कुटनेसे नरम		(४) अ० कि० साथ होना (५)
होना (२) मारसे हड्डी-पसलीका		लगा रहना; आरंभ होकर आरी
ुदुखना;हड़फूटन (३) थककर चूर		रहना (६) (घ्रोड़ेका) अड़ना
हो जाना । [ <b>काववो =</b> काम या		अडसट्टे अ० अंदाजन्
मारसे भरता बना देना; कचूमर		अडसट्टो पु० अंदाजा; अनुमान
निकालना; हलदा निकालता ।		<b>अडलठ</b> वि॰ अडुसठ; ६८
-नीकळवो ≕ थककर चूर हो जाना;		अडंग्रो पु० अडंगा (२) कुश्तीका एक दावें
हरुवा निकल जाना.] <b>अवघ</b> वि० आधा		अडाउ वि० बिना बोये उगनेवाला;
<b>अडपियुं</b> न० अद्वा (तौल) (२)		खुदरी (२)
हाथीदांतकी आधी चूड़ी (३) थोड़े		<b>अवायवुं</b> स॰ कि॰ छुआना (२)
डिब्बोकी थोडी दूर जानेवाली रेल-		भकेल देना; भीतर घुसेड़ना 
गाड़ी; 'शटल'		अवायुं न० कंडा; गोईठा
<b>अडणुं</b> वि० आघा; नीम [ <b>बहुरा</b>		<b>अडाववुं स</b> ॰ कि॰ गप मारना (२)
<b>अड्युंपड्युं</b> वि० लगभग आधा; थोड़ा-		झूठ कहना (३) खूब खाना (४) समापन (५) समकरण सीमय
अडवो पु॰ अठन्नी		धुसाना (५) धमकाना; डॉटना
<b>अडघोअडघ</b> वि० आधों-आध; आधै-आघ		अबाळी स्त्री० वरामदा; वारजा. अवस्थीयवन्त्री स्वीत वरणे सिवेतर
<b>अडघोजी</b> पुं० अघेला; घेला		अडाळीपडाळी स्त्री० आगे-पीछेका बरामदा
अवपलुं वि० शरारती; नटखट (२)		अधियल वि० अहि़्यरू
न० शरारत; छेड़छाड़; नटसटी		भहिनरे पुंक अड्डा; डेरा
अडफ(⊶फे,⊸फो)ट स्त्री० चपेट।		अबीओपढी स्त्री० अड़चन; संकृद;
[मां आवर्षु = किसीके साथ टकरा		अरूरतका वक्त; अड़ी
जाना; किसीकी ठोकर लगना; <b>बीचमें</b> अन्य प्रस्तर 1		मडीलम वि० शूरवीर; हट्टा-कट्टा
आ जाना.] अडकाउ वि० फ्रालतू; बेकार		बदूकददूकियुं वि० दोनों पक्षोंमें रहने-
जन्महियुं न <b>ः भवकर;</b> लड़सड़ाहूट;		वाला; जौढर (२) अस्यिर्
ा सहसहा सहसहा		अडोवापडोश पुं० अड़ोस-पड़ोस

महो	द् अत्यारे
नही पुं० नहा (२)व्यापक असर [ला.]	<b>অগৰদাৰ</b> গুঁ০ অপধন; ৰিণাড় ; ৰূত্ৰণত
अंडर्षु वि० रका हुआ 👘 👘	<b>লগৰালীন্ট</b> ৰি০ অসিয
अडपुंसडपुं वि० अटका या रुका हुआ	अणवर पुं० शहबाला; विदायक; दुलहा
अडळक वि० ज्यादह; ढेर; पुष्कळ	या दुलहिनका साथी अल्ह <b>ढ़प</b> न
अडार वि० अठारह; १८	अगसमज(०ण) स्त्री० बेसमझ;
अवी वि॰ ढाई; २॥	अणसगलणुं, अणसमजु वि० बेसमझ;
<b>अढीहब्बुं</b> वि॰ बौना (२) लुच्वा;	नादान; अनाही
बदमाश [ला.] [उठँगना	अणसार पुं० समानताका या साख्वस्यका
अढेलर्षु स०कि० सहारा लेना; टेकना;	अंश (२) सूक्ष्म असर [भनक; आहट
अन नकार और निषेधसूचक उपसर्ग –	अणसार (-रो) पुं० इशारा; संकेत (२)
अने; उदा० 'अनधन्' (२) पु॰ का	अणि स्त्री० अनी; नोक (२) चोटी;
स्त्री० बनानेवाला प्रत्यय (३) किया	शिखर (३) अंत; सिरा (४)
परसे संज्ञा बनानेवालां प्रत्यय	सकटकी स्थिति; अडी
अणमार्वड(०त) स्त्री० किसी चीडके	अणिवार वि० नोकदार; नुकीला
न आनेका माव; अज्ञान; अकौशल	अणियार्ख्यु वि० नोकदार; नुकीला
अणकी स्त्री, खेलमें उलटा सीघा	अणियुं न॰ लेखनीकी नोक; टॉक
बीलमा; रोंगटी	अणिशुद्ध वि० समूचा अखंडित (२)
<b>अचकू (को)ट</b> पुं० अन्नकूट	संपूर्ण दोषरहित
अणसूट (टपुं) वि॰ असूट	अणी स्त्री०, अणीवार वि०, अणीशुर्द
अणसेवर्षु वि॰ बिना जोता हुआ	वि॰ देखिये 'अणि' आदिमें
अजगमतुं वि० नापसंद; अप्रिय	अणुमात्र वि० बिलकुल थोड़ा; लेशमात्र
अजगमो पुं० नापसंदगी (२) अरुचि	अजू (-गो) जो पुं॰ कारीगरोंकी खुट्टीका
अभवड वि० अनगढ़; अपढ़; अशिक्षित	दिन; अंसा; छुट्टी [मिचाजी
अणचिषुं वि० बेईमानी करनेवाला;	अतन् वि॰ मिलनसार नहीं ऐसा;
खेलमें रोंगटी खानेवाला	<b>बतरहो</b> ूपु॰ बढ़ईका एक औजार; रेती
अवचितव्युं, अवचितुं (-त्युं) वि० अन-	अताग वि० अथाह
चीता (२) आकस्मिक; यकायक	अतूट वि० अटूट; असंड
अणची स्त्री॰ देखिये 'अणकी '	अतोभ्रम्बः ततोभ्रम्बः वि०न घरकान
अणछतुं वि॰ युप्त; छिपा हुआ	घाटका; <b>कही</b> का न रहनेवाला
अनजाण वि० अनजान(२)स्त्री० अज्ञान	अत्तर न॰ इत्र; अतर
<b>अणवीठ(~ठुं)</b> वि॰ अनदेखा; अदृष्ट	सत्तरघडी अ० अब ही
अजवार्यं वि० यकायक; अचानक; बिना	अत्तरवानी स्त्री॰ अतरदान; इत्रवान
सोचा हुआ; अचीता [झुका हुआ	अत्तरपगले अ॰ देलिये 'अत्तरववी'
अजनम वि॰ अडिंग; जो न सुके; न	अत्यार स्त्री॰ चालू समय; वर्तमान काल
अणपतीज स्त्री० अविश्वास	<b>अत्यारे ज</b> ० गमी; फ़िल्-हाल; हाल ही

~

সম	७ अध्रियं
अत्रे अ॰ यहाँ	अदेवाई स्त्री० ठाह; ईव्या [ईव्यांसु
<b>लवडाअवडी</b> स्त्री० बेकार घूमना;	अदेशियुं, अवेशुं वि० अदेसी; डाही;
आवारागर्दी (२) टक्कर (३) लड़ाई	अहरू अ० सही; बराबर
अयडामण (-णी) स्त्री० मुठभेड़;टक्कर	मय गि• अर्थ; आधा; अध (समासमें)
(२) आषारागर्दी	अवकचरु वि० अधकुटा (२) कच्का-
अपडायुं अ०कि० टकराना; भिड़ जाना	पक्का (३) कच्ची समझवाला [ला.]
(२) भटकना (३) व्यर्थ कोशिया	अषसोस् वि० वषसुला
करना [ला.] (४) तकरार होना	<b>अधडूकुं</b> वि० देखिये <sup>ँ</sup> ' अजूकडुं '
अथवा अ॰ अथवा; या; ख्वाह	अवचय अ० अहाहा 😳 [(कण्ना)
<b>সমাক</b> বি০ <b>अ</b> थक	अध्मण न० मनका आधा भाग; अधमन
<b>क्षयाक(—</b> ग) वि० अयाह; <b>बे</b> हद	<b>अभमणियो, अभन्यीको</b> पुं० अधमॅनका
अथार्ष् न० अथाना; अचार; संधाना	बाट (कच्चा)
अवर्कु वि० अधिक; ज्यादह; विशेष	<b>अषमूढं</b> वि० अषमरा; अधमुआ
अर्गा(नुं) वि॰ अदना; तुच्छ	अमरात स्त्री० अधरात; आधी रात
अदब स्त्री० अदब; विवेक; शिष्टाचार	(२) अरूरतका बकुत
(२) दोनों हाथ कोहनीमेंसे मोड़कर	अघरात मधरात अ० आधी रातको;
आमने-सामने कोहनीके पास रखनेकी	🕐 बहुत रात बीते जब चाहे तब (२)
<b>विनय-सूचक एक मुद्रा</b>	ऐन या जरूरतके वक्त 💡 👘
अवबद वि० अनिहिचेत	अववय स्त्री० मध्य; नीच (२) अर्
अवबसर अ० विनयपूर्वक; लिहाज़से	अधबीच; बीचमें (३) समाप्तिसे पहले
अबल वि॰ सही । [-नो कांटो	अषवचाळ अ० देखिये 'अधनच' 🕤
= सच्चा न्याय । - मो घंट = पुराने	अभवषरं वि॰ कच्ची समझवाला
जमानेमें इन्साफ़ चाहनेवाले फ़रियादी-	अभवारषुं अ०कि० आधा होनाः (२)
के लिए लगा हुआ घंटा.]	स०कि० आधे-आध करना; अधिमाना
अवलबबल अ० रह-बदल; फेरफार	अभवार्य ने० अधियारी; अधियार (२)
अदलाबदली स्त्री०, अदलोबदलो मुं०	दो जगह पर भाग करके रहना
अदला-बदला; हेर-फेर	अवायंच, अवार्थु (-्यूं)च (-वी) स्त्री •
अवा स्त्री० अदा; नखरे; चेष्टा (२)हाव-	देखिये ' अधाषूषी '
भाष; अदा (३) अ० चुकता; बेबाक़	अधिकार पुं० अधिकार; सत्ता; हुकूमत
अदालत स्त्री० अदालत; न्यायालय	(२) पद (३) लियाक़त; पात्रता
अवायत स्त्री० अदावत; बेर	(४) हक (५) प्रकरण
वदावतिम् वि० अदावती; अदावत	अचिवेशन न॰ अधिवेशन; बैठक
रखनेवाला [हुभा; अदीठ [प.]	अभीराई स्त्री०, अमीरापणुं न०
अबीठ (ठुं) वि॰ अनदेखा; न देसा	अमीरता; उतावली
अडूगडुं वि० देखिये 'अधूकडुं' 🦈	अवीर्य वि० अधीर; धैर्यरहित; उतावला

	6	असम
अधूकद् विवः जो उकद् बैठा हो कर		अनावड, अनावडत स्त्री० किसी चीडके
अक्रूपं वि० अधूरा; वाकी:। [ज्यां क्रूपं		न आनेका <b>भाव; अकौ</b> शल <b>; अनभि<del>न्नता</del></b>
🚔 विगडे हुए कामको और विगाड़मा;		<b>अनुकूल (−ळ)</b> वि० अनुकूल(२)हितकर
तुर्रा यह कि । अधूरे सावयुं, अवतरयुं,		अनुकम पुं० अनुकम; सिलसिला का
चन्मवुं = पूरे समयसे पहले ही भाग		अनुकमणिका, अमुकमणी स्त्री०
होना। अपूरे जवुं = अधूरा जानाः		अनुकमणिका, अमुक्रमणी स्त्री० अनुकमणी, विषय-सूची
हमल गिरना; कच्चा जाना । अभूसे		<b>अनुप</b> वि० बेजोड़; अनुपम; लासानी
घत्रो छलकावी = 'अधजल गगरी		<b>अनुबंध</b> पु० अनुबंध; संबंध
<del>छल्लकत जाय'; अज्ञानीका ज्ञानी</del>		अनुभव पुं० अनुभव; प्रत्यक्ष ज्ञान;
होनेका घमंड करना.]		तजरबा
अप्रेली स्त्री० जंगेली; अठनी		अनुभववुं स० कि० अनुभव करना;
अथलेो पुं० अधेला; धेला		महसूस करना या होना
अभोतुं न० बरता हुआ या जीर्ण वस्त्र		अनुरूप वि० अनुरूप; योग्य; लायक
अषोळ न॰ आधी छटांक (कच्ची)		अनुलक्षवुं स० कि० लक्ष्यमें रखना
अषोळुं न० आधी छटँकी (कच्ची)		<b>अनुवाव</b> पुं० कही हुई बातको दोबारा
अध्यर अ० अंतरिक्षमें; हवामें लटकता		कहना (२) अनुवाद; तरजुमा
(२) अनिष्चित	•	अनुसंधान न० अनुसंधान; पहले आई
क्षण्घरताल अ० लटकता; अनिश्चित		हुई बातके साथ संबद्ध बात (२)
<b>तत्वर-पत्धर अ० विलकुल अंतरिक्षमें</b>		योग्य संबंध (३) जौच-पड़ता <del>ल</del> ~
<b>अननास</b> नं॰ अनन्नास		अनुसार अ० अनुसार; मुताबिक
अनदान न० अनदान; आहारका त्याग		अले (नॅ) अ० और; तथा
अन्हबं वि० बेहद; असीम		अनेनास न० देखिये 'अननास'
अनिष्ण ने॰ अनाज; नाज		अनेवं वि॰ निराला (२) अपूर्व; अनोसा
<b>अलाड</b> पुं० बिगाड़; नुक़सान (२)		<b>अनोख्ं</b> वि० अनोखा; अनूठा
अड़चन (३) वि० देखिये 'अनाडी '		<b>अन्न</b> न० अन्न; खुराक
<b>अनावी</b> वि० गेंवार;मूर्ख (२)जिद्दी;हठी		<b>লম্বন্ড, অম্বন্ত</b> ন০ লম্ব-স্কল; বানা-
अनाम वि० अनाथ; निराधार (२)		पानी (२) लेगा-देना; क्रिस्मत [ला.]
स्त्री० ग़रीबी; कंगालियत		अन्नपाणी न॰ अन्नजल; खाना-नीना;
<b>अनाग</b> वि० अनाम; बग़ैर नामको (२)		गुजारेका साधन [युक्त
अप्रसिद्ध (३) अवर्णनीय (४) पुं०		अस्तेयुं वि० देशिये 'अणचिपुं'; अन्याय-
परमेश्वर		अन्वये अ० अनुसार; मुताबिक
अनामत स्त्री०; न० अमानत; थाती		अपनो पुं० अपच; बदहजमी; अजीर्थ
अलामी वि० (२) पुं० देखिये ' अलाम '		<b>अपजरा, अपजरा</b> पुं० अपजरा; अपगणा;
(३) स्त्री॰ मरमी		बदनामी भाषाक विक अगवः अनगव
अनार न॰ अनार		ধ্রমন্ত বি॰ প্রমেট; প্রদাবর্

अपनावन्	5
अपनाबबुं स॰ कि॰ अपनाना; अपना	
बना लेना या मानना [(३) स्रौतेला	লক
धपर वि॰ दूसरा; भिन्न (२) पीछेका	अफ
अपर मा, अपर माता स्त्री० सौतेली मां	f
अपरंपार वि० अपार [(२)पाप	अफ
अपराध पुं० अपराध; दोष; गुनाह; जुर्म	লক
सपलक्षण न० अपलक्षण (२) दुराचरण	अफ
अपवाद पुं० अपवाद (२) निदा;	अन्
लाछन; ऐब। [-बेसबो, लागबो	সক
= ऐब लगना.]	अफी
अपबास पुरु उपवास; फाका	अफी
अम्रजुकन पु० अपराकुन; असमुन	अप
अपशुकनियाळ, अपशुकनियुं वि० वद-	সৰম
शगुन; मनहूस; अशुभ	अस्य
अपंग वि॰ अपंग; पंगु; अंगहीन (२)	, अबर
लाबार [ला.] [रहनेका स्थान	अवा
<b>सपासरो</b> वि० उपाश्रय; जैन साघुओंके	अबन
<b>मपील</b> स्त्री० अपील; साम्रह प्रार्थना	अबर
(२) निचली अदालतके फ़ <b>ैसले</b> पर	<b>অৰ</b> হ
पुनविभार करनेके लिए दर <b>स्यास्त</b>	बर
(३) चंदे <b>के लिए प्रायंना ।</b> [ <b>–करवुं</b>	भव
= दिल पर आसर हो इस प्रकार	अन
विनती करना । <b>–वर्षु</b> = दिल पर	दो
असर करना; जेंचना। <b>मां अयुं</b>	अबा
= अपील अदालतमें अपील करना.]	देन
अपील कोर्ट स्त्री० अपील अदालत	अबी
<b>अपूरतुं</b> वि० अपर्याप्त; जो काफ़ी न हो	अबी
अपूर्णीक पुं० पूर्ण संख्यासे कम संख्या;	भवुष
भिन्न [ग-]	मुख
अपूत्राण, अपोक्षण न० मोजनके प्रारंभ	<b>মৰ্</b> ত

**अपूराण, अपोधाण न० मोजनके प्रारंभ** तया अंतमें किया जाता आचमन(२) मोजनके प्रारंभमें थोड़ा भाढ परोसा जाता है वह

मप्रिय वि० अप्रिय (२) न० अनिष्ट मफ्रद्रान वि०(२)पु० अफ़ग़ान;काबुकी अब्देखा

at वि० निश्चित; अटल **त्राबुं** अ० कि० अफरना क्लातून पूं० अफ़लातून; प्लेटो (२) व० सुंदर वा स्त्री० अफ़वा; अफ़वाह; गप ळायुं अ० कि० टकराना; भिड़ना nट वि० (२) अ० बहुत विशास; स्खलित [(चीज) गळवुं स० कि० टकराना; पटकना ोण न० अफ़ीम; अफ़यून ोणियुं, **अफोणी** वि० अफ़ीमी; फ़ीमची (२) सुस्त; आलसी 🚬 धडी अ० अभी; इसी क्षण; फ़ौरन् ज वि० (२) पुं० अब्ज; अरब तर वि० खराब; बिगड़ा हुआ **पूत** पुं० अवधूत (२) वि० मस्त नूस न० आबनूस **ৰক, অৰবকা** ন০ অৰবস্থ ला, अबळा वि० स्त्रीव् अस्प ठवाली (२) स्त्री० अबला; स्त्री ळला स्त्री०, **अवळलो** पुं० इच्छा; रमान; चाव(२)गशिणीकी इच्छा; हद; बिरौंय 🛙 पुं० लग्न आदि अवसर पर लेन-को तय हुई बात (२) नेग-दस्तूर अ० अभी; इसी क्षण र, अवील न० अवीर ष वि० अनोध; नासमझ (२) र्ब (३) अल्हड़ **अबूज** বি॰ नाक्रदर **अज़्त** वि० दे**सि**ये 'अब्ध' अवे अ० अबे; अरे (तिरस्कारसूचक) अवेतवे करचुं = अवेतवे करना अवोक्ता पुं० इ० द० वरको ख़िलाये जानेवाले खाजे (२) अरुचि; अनिच्छा ।

होना

अमरपटी अभावो पुं० अरुचि अभिनन्बन न० अभिनंदन; धन्यवाद; बघाई (२) अनुमति (३) स्तुति अभिनन्धवुं स० कि० अभिनंदन करना; बधाई देना (२) अ० फ्रि० आनंदित **अभिनेता** पुं० अभिनेता; नट

अभित्राय पुं० अभिप्राय; राय (२) हेतु; मतलब; आशय

- अभिलास पुं० अभिलाष; मनोकामना (২) তকেত হল্জা
- **লমিলাৰ দু**০, **লমিলাৰা '**হৰী০ अभिलाष; अभिलाषा

**সমিতাৰী** বি০ **अ**মিতাৰ্থী

- अभिवंदन न०, अभिवंदना स्त्रीव अभिवंदन; अभिवन्दना; नमस्कार (२) देवको आरती, भस्म वगैरह लेना
- अभिषुद्धि स्त्री० अभिवृद्धि; बढ़ती (२) তদ্বরি
- **अम्यास** पुं० अभ्यास; पढ़ाई (२) पुनरावृत्ति (३) अम्यास; आवत; मुहावरा । [-पडको ≕ मुहावरा या अभ्यास हो जाना; आदी होना (२) बीचमें मुहावरा छूट जाना (३) बीचमें पढ़ाई रुक जाना.]
- अम्यासी वि० जम्यासी; अभ्यस्त; आदी (२) उद्यमी (३) पुं० विद्यार्थी(४)पंडित
- **अभ्रेण** ने० अभ्रेक; अंबरक
- अमर्थुवि० व्यर्थ (२) अकारण; बिलावजह (३) मुफ्तका
- ममन न० अमन; शान्ति (२) सुख-चैन **अमनचमन** न० अमन-चैन;सूख-शांति **अमरपटो** पुं० अमरताका वरदान था पट्टा । [--सर्दने, समामीने आवर्षु == अमर होकर जन्मना या अमर होना.]

मबोट [अबोसे पडवूं = (किसी चीज पर) अरुचि पैदा होना.] अबोट पु॰ चौका लगाना (२) बिना स्नान किये जहां जाया या छुआ न जाये ऐसी जगह; चौका अबोटियं न० खाना पकाते या खाते समय पहननेका रेशम, सन या अनका बस्त्र अबोध वि० देखिये 'अब्ध' बबोल वि० जो बोलां न जां सके (२) अबोल; गूंगा; चुप (३) बेहोश मबोला पुं० ब० व० अबोला **सम्बा** पुं० अब्बा; बाप अम्बा स्त्री॰ माँ (२) बुढ़ी स्त्री (३) थुथू-थक्का (खेलमें) बब्बाजान पुं० अब्बाजान; पिताजी अभ्याभक्ष पुं० देखिये 'अभक्यमक्षण ' अभक्यभक्षण न० निषिद्ध आहार करना; मांसाहार करना **सभडावूं अ०** कि० छूत लगना (२) स्त्रीका रजस्वला हीना; कपड़ोंसे होना अभग वि० अनपढ़; निरक्षर **अभरको** पुं० देखिये 'अबळखा' **अभराई** स्त्री० टॉड़;परछत्ती । [–उपर चढावर्षु, मुकर्षु≕(काममेंसे या विचार-मेंसे) दूर करना; अलग रखना; घ्यान न देना.] **अमरे भरवुं** = समृद्ध करना; खूब भरना **धभाषण, सभागणी** विवस्त्री व्यभागिनी अभाषियुं वि० देखिये ' अमागी ' अभागी वि० अभागी; कमनसीब; अभागा (२) जायदादमें हिस्सा पानेका अनधिकारी; अभागी লমাৰা বুঁ০ ৰ০ ষ০ গমিণীকী জমি-

रुपा; दोहद; विराँय

~	10 C
_	
	14.101
	1 C 4 67

अरदूसी अमीन वि० अमीन; विश्वसनीय (२) पुं० एक अल्ल (३) अभिमावक; ट्रस्टी (४) पंच; मध्यस्य (५) गौँवेका बढा हाकिम; अमीन **अमोनिधि** पुं० अमृतका भंडार (२) चन्द्र <mark>अमीर</mark> पूं० अमीर; सरदार (२) अफ़ग़ानिस्तानके राजाकी उपाधि (३) अमीर; रईस; धनी व्यक्ति <mark>अमीरस</mark> पुं० अमृत-रस;्सुघा अमीराई, अमीरात स्त्री० अमीरी; दौलतमंदी (२) अमीर-वृत्ति; अमीरी अमीरी वि० अमीरके जैसा; अमीराना (२) स्त्री० अमीरी <mark>अमुक</mark> वि० अमुक; फ़र्ला (२)अनिश्चित (३) स० अमुक; ढिमका **अमुक तमुक** वि० अमुक-अमुक; फ़लौ-उद्विग्न होना अमुझावुं अ० कि० घबड़ाना; अकुलाना; अमूलख, अमूलुं वि० देखिये 'अमूल्य ' अमृल्य वि० अमृल्य; अनमोल; बहुमुख्य अमुझण स्त्री० घबडाहट अमुंसावुं अ० कि० देखिये ' अमुझावुं ' अमृत वि॰ अमृत(२)अमर (३) न॰ अमृत-रस अमोल, अमोलुं वि० देखिये 'अमुल्य' अयोग्य वि० अयोग्य; नामुनासिन

(२) नाकाबिल

फ़र्ला

अरक पुं० अर्क; सत्त्व

अरगजो पुं० अरगजा ∫फ़रियाद क्षरज स्त्री० अर्ज्ञ;निवेदन;प्रार्थना(२) **अरजदार** वि० अर्ज करनेवाला; फ़रियादी

अरजी स्त्री० अरजी; निवेदन; फ़रियाद (२) अर्जी; प्रार्थना-पत्र; अरजी **अरङ्ली** स्त्री० अडुसा

अमरवेल स्त्री० जमरबेल; अकासबेल अमराई स्त्री० अमराई; आमका बास अमल, अमळ वि० अमल; निर्मल; शुद्ध अमल पु० अमल; सत्ता; अधिकार (२) हुकुमत; शासन; व्यवस्था (३)अमल; नशा या नशीली चीज; अफ़ीम (४) समयका शुमार (५) व्यवहारमें लाना । -िजतरवोः सत्ताया नशेका दूरहोना । -करबुं अमल करना;आचरण करना । -करवो=अमल-पानी करना ।-चडवो = नशा छाता । -पवो = अमल दर-आमद होना । --मां आणवुं, मूकवुं, **स्नाववूं** == —का अमरू करना;कार्यमें स्त्राना.] अमलवार पुं० अमलदार; अधिकारी अमलबारी स्त्री० अधिकारीका काम

यो पद

**अमरुपाणी** न० अफ़ीम-पानी

- अमस्तकुं, अमस्तुं वि० देखिये 'अमधुं' अमळाट पुं० ऐंठन;रस्सी आदिकी ऐंठन: बट (२) पेटमें ऐंठन; मरोड़ (३) बल; लचक (४) मिजाज (५) बैर अमळावुं अ० कि० ऐंठा जाना; बल खाना (२)पेटमें दुखना; मरोड़ आना (३) दिल दुखना दुर्भाग्य अमंगल, अमंगळ वि० अमंगल (२) न० अमास्य पुं० अमात्य; मंत्री; वजीर अमार्व (-- वा) स्था, अमास रूत्री० अमादसः; अमावास्याः; मावस
- **अमी न**० अमृत; अमी [प.] (२) मिठास (३) क्रुपा (४) थूक (५) (जमीनका) रस और कस **अमीट वि**० अनिमेष
- अमीदृष्टि, अमीनजर स्त्री० दयादृष्टि; क्रुपा; मेहरवानी

सम्बद्ध

सर्वन् . \$3 अर्थं पुं० अर्थं; हेतू (२) अर्थं; सानी अर्रीस, सरमी स्त्री० अरती; अर्रीय, **सरम्** वि^ देखिये 'अडधुं' (३) ग़रज; प्रयोजन (४) धनु; बिहत संपत्तिः अर्थं । [-आवर्षु = काम्में **सरभुंपरधुं** वि० लगभग आधा; थोड़ा-अरघोजरघ वि० आघो-आव:आघे-आघ आना; सहायक होना । -- बेझणो अरब पूं० अरब (देश); अरबिस्तान अर्थ होना; समझमें = वराबर (२) अरब-निवासी; अरब आना । -- बेसाढवो = अर्थ बैठाना । अरबी वि० अरबी; अरब देशका -सरवो=हेतू सिद्ध होना; अर्थ सरना; (२) अरब-निवासीसे संबद्ध (३) काम चलना.] (तंत्रकी व्यवस्था स्त्री० अरबी; अरबकी भाषा अर्थकारण न० अर्थव्यवस्था; आर्थिक अरमान स्त्री० अरमान; अभिलाषा अर्थायम वि० अर्थपुर्ण अल्लार स्त्री० जहाजी बेड़ा; नौसेना अर्थतंत्र न० अर्थव्यवस्था **सरर अ॰** अरर; अहह अर्चे अ० लिए: वास्ते अरसपरस अ० आपसमें; परस्पर अर्घवि० अर्घ; आघा; नीम (२)न० अरसो पुं० अरसा (२) मौका एक चीजके दो समान हिस्सोंमेंसे एक <mark>अराजक</mark> वि० अराजक; बिना राजाका अर्थगोळ पुं० गोलार्थ (२) वि० अर्थ-(२) न० राजाका न होना; अराजक गोलाकार (३) अंधार्षुध; अव्यवस्था अर्थवग्ध वि० अर्धदग्ध; अधजला (२) अधकचरा; अध्रे ज्ञानवाला स्त्री ० अराजकता अराजकता; अर्धविराम न० अर्धविराम अञ्चयवस्था; अधाधुध अरोठी स्त्री० रीठी (पेड़) अर्पवुं स०कि० अर्पण करना (२) भेंटके अरीडुं न० अरीठा; रीठा रूपमें देना स्त्रयोंकी चोटी अरीलो पुं० अरीसा; आईना; शीशा अलक पुं० अलक; लट; जुल्फ़ (२) अर्टचतुं वि० अरुचिकर; नापसन्द **अलकमलक प्ं० दे**श-विदेश अरुचि स्त्री० अरुचि: अनिच्छा: नफ़रत अलग वि० अलग; जुदा (२) दूर (२) भूख न लगना; अरुचि **अलगार स्त्री० पंक्ति; क़तार** अरणुं वि० अरुण; लाल रंगका अलड (ल') वि० देखिये 'अल्लड' अंषपर अ० इधर-उघर; आगे-पीछे अलफाउ वि० निकम्मा; फ़ालतू, **अरे** अ० अरे (२) स्त्री० हाय; **अलगत (-त्त,-सां)** अ० अलगता... दुःखकी पुकार (३) चिंता; फ़िक अलबेलुं वि०अलबेला;बाँका(२)आशिक अरेराट पुं०, अरेराटी स्त्री० दुःख या अलमस्त वि० अलमस्तः मौजी: मस्त चिता होना (२) जोरावर; हट्टा-कट्टा अच्ये वि० अच्ये; मूल्यवान(२)पूजनीय; अलमारी स्त्री० अलमारी; आलमारी अर्घ्य (३) न० पूजा; सम्मान । (२) कई खानोंवाला ताखा या आला [-आपर्यु = (पुजापा लेकर) पूजना; **अलवण** वि० अलोना (२) पायमाल करना (व्यंग्यमें).] असाणम् अ० कि० (ऊँटका)बलवलाना

ৰজালী

11

र्खीचनेवाले **अलाजी** स्त्री० मोट बैलोंके आने-जानेके लिए कुँएके पास बनाया हुआ ढाल; नैची ललाबला स्त्री० वला; प्रेत-बाधा **अलापवुं(**ला') वि० अलहुदा; अलग अली स्त्री० अली; सखी (२) अ० एक स्त्रीवाचक संबोधन; अरी अलुमी न०ब०वं० अलोना-वतके दिन **सलूणुं** वि० अलोना (२) न० अलोना रहना (वत) होना; अनबन **अलेणाभाव** पु०, अलेणुं न० लेन-देन न **अलेतुं** (ले') वि० अल्हड्; नासमझ **अलेलटप्पु** वि० अललटप्पूं ; अटकलपच्यू **अलेयां-बले**यां न**०ब०व० बलायें** लेना **अल्लोप** वि० अल्लोप; नदारद अल्प वि० अल्प; तुच्छ; थोड़ा अल्पविराम न० अल्पविराम अल्या, अल्यो अ० अबे अस्लब (ल') वि॰ अल्हड़; नासमझ (२) उच्छृंखल अल्ला पुं० अल्ला; अल्लाह; खुदा। [-मी गाय,गावडी = ग़रीब स्वभावका मनुष्य; अल्लाह मियांकी गाय.] अवकरा (-ळा) स्त्री० देखिये 'अवक्रिया' अवकळा स्त्री० व्याकुलता; बेकली (२) उलटा असर **अवकाश** पुं० अवकाश; खाली जगह (२) मौका (३) क्षेत्र (४) फ़ुरसत अवकिया स्त्री० उलटा असर; नुक़सान अवगणना स्त्री० अवगणना; अवज्ञा अवगणवुं स०कि० गिनसीमें न लेना; उपेक्षा करना **अंचगतिक, अवगतियुं** वि० मरनेके बाद भूत-प्रेत होनेवाला (२) नरकमें पड़नेवाला; अधोगामी

वयस्या अवगुज पुं० अवगुण; दोव; दुर्गुंग (२)हानि(३)अपकार दुर्गुणी अबगुणियुं, अबगुणी वि० कृतच्ने (२) अवजोग पुं० दुर्योग; अशुभ मुहूर्त अवड(व') वि० खाली; जो मुद्दतसे काममें न लाया गया हो; अव्यवहृत अवतरण न० अवतरण; नीचे उतरना (२) अवतार; जन्म (३) ढलवौ उतार (४) अवतरण; उद्धरण अवतरण चिह्न न० अवतरण चिह्न; ('') ऐसा चिह्न {जन्म लेना अवसरबुं अ०कि० नीचे उतरना (२) अवतार पुं० नीचे उतरना; अवतार (२) जन्म; देहघारण (३) जिन्दगी (४) देव या ईश्वरका अवतार अबतारी वि० अवतारी (२) दैवी;ईश्वरी अवध (ध,) स्त्री० देखिये 'अवधि' अवधि पुं०; स्त्री० अवधि; हद (२) अंत (३) नियत काल; मीयाद . अवनवुं वि० अभिनव; नेंगां(२) अंद्भुत अवयव पुं० अवयव(२)वस्तुका विभाग; अंश (३)साधन (४) 'फेक्टॅर' [ग.] अवरजवर पुं०; स्त्री० आना-जाना अवल वि० अब्बल; पहला (२) उत्तम अवलकारकुन पुं० मुख्य कार्रकुन अवल-मंजल स्त्री० (पारसियोंकी) उत्तर**क्रिया**ं अवलंबचुं स०कि० (किसीका)सहारा या आधार लेना (२) अ०कि० लटकना अवलंबित वि० अवलंबित; आश्रित (२) लटकता हुआ [যাুকল' अवश(-शू)कन पुं० देखिये 'अप-अवस्था स्त्री० अवस्था; हालत; दशा (२)आयुष्यके चार अंश; अवस्थाएं (३)

बुढ़ीपा

केसन २० अववेसना अववेसा स्वी०

सन्तरेलन

अस्तर

अवहेलन ने०,अवहेलना, अवहेला स्त्री०
अवहेलना; अवहेला; अनादर
<b>अवळचंडाई स्त्री०</b> शरारत
<b>अवळचंडुं</b> बि॰ कहे इससे उलटा
करनेवाला (२) भरारती(३)उलटी
<b>सोप</b> ड़ीका
<b>अवळवाणी</b> स्त्री० उल्तट-वाँसी; गूढ़
बानी(२)उलटा बोलना(३)अशुभ बानी
अवळसवळ अ० उलटा-सीधा; उलटा-
पलटा
<b>अवळासवळी</b> स्त्री० एक बेल (२) अ०
उल्तटा-पुलटा या उलटा-सीधा
अबर्ङ्ध वि० उलटा; औंधा (२) टेढ़ा;
आड़ा (३) विपरीत । [अवळा करवा
<b>के पथा</b> = घाटा उठाना या होना;
कसर खाना । अवळा पाटा बांधवा
= ग़लत समझाना; अममें डालना;
उलटी पट्टी पढ़ाना। अवळा पूजेला
= गत जन्ममें पाप किये हुए होंगे।
अबळे हाथे देवी = जोरसे चपत
लगाना.]
<b>अवळूंसवळूं</b> वि० उलटा-पलटा
<b>अवाज</b> पुं० आवाख; ध्वनि; शब्द (२)
आवाज; स्वर
अवाडू ने० खीरी; थन
अवारो (वा') पु॰ देखिये 'हवाडो '
अवारनवार अ० कभी-कभार; कभी
कभी (२) बारी-बारीसे
अवावरं वि॰ देसिये 'अवड'
अवाळु पुं०; न० मसूड़ा; मसूढ़ा
अविचारी वि० अविचारी; विवेकहीन
(२) उतावला [(२) पैसा; पूँजी
अवेज पु॰ एवज; घदला; मुआवजा
अवेजी वि० वदलेमें काम करनेवाला;
एवजी (२)स्त्री० एवजी होनेका भाव

**अवेर** (वॅ') न० वैरका अमाव; प्रेम अवेर पुं० निगरानी; काबू (२) विवेकी उपयोग; सब्यवस्था ( ३ ) मितव्ययिता; किफ़ायत (४) समेटना रिखना अवेरवुं स०कि० सँभालना; सुव्यवस्थित अझक्य वि० अशक्य; नामुमकिन अधनाई स्त्री० आधनाई (२) शरारत अज्ञरफी स्त्री०अशरफ़ी; (सोनेकी)मुहर **अशराफ** वि० शरीफ़ अवास(--द) पं० असाढ अध्टकल्याणी वि० आठ शभ लक्षणों-वाला(अश्व जिसके चारों पाँव, ललाट. सीना, कंघा और पूंछ सफ़ेद हों) अष्टकोण वि० (२) पुं० अष्टकोण **अष्टंपष्टं** अ० उलटा-सीधा : सही-ग़लत असल वि० असल; असली; मुल (२) पुराना (३) उत्तम(४)सही;असल; खालिस(५)अ० पहले पुराना असलनुं, असली वि० असली; आगेका; असवार पुं०सवार;घुड़सवार(२)सिपाही असवारी स्त्री० सवारी असहकार पुं० असहयोग (२) ब्रिटिश शासनको सहयोग न देनेके लिए गांधीजी द्वारा चलाये गये आंदोलनका नाम असार पं० देखिये 'अषाड' असावथ, असावधान वि० असावधान; ग्राफ़िल; बेखबर असीम वि० असीम; बेहद; अपार असील वि० असील; खानदानी (२) भला; असील (३) पुं० मुवक्किल अखूम वि० जो कंजूस न हो; उदार असूर, असूरं अ० देरसे; विलंबसे असेमसे अ० किसी भी मिस या बहाने अस्तर ने० अस्तर

अस्तरो

१५

अंगियो

अस्तरो, अस्त्रो पुं० उस्तुरा; अस्तुरा;	अंकोडो पुं० अंकुड़ा; जंजीरका आँकड़ा
उस्तरा	(२) अंकुड़ा; हुक (३) सँड़सा
अहसान न० देखिये 'अहेशान'	अंग न० अंग; शरीर (२) अवयव
महालेक पुं० अलख	(३) भाग (४) खुद; आप ।
<b>अहित न</b> ० अहित; अकल्याण (२)हानि	[−सळे घास्त्रयुं ≕ किसीकी कोई वस्तु
<b>बहोर</b> पुं० अहीर; ग्वाला; आभीर	हड़पना; दबा बैठना; हजम करना ।
<b>अहीं</b> अ० यहाँ; अत्र; इधर	<b>~तूटवुं</b> = देह टूटना; अंग टूटना;
अहींतहीं अ० इधर-उधर	अँगड़ाई । - सोडवुं = खूब मेहनत
अहोंगां अ० यहाँ; इधर	करना। –भराई आवर्षु, जर्षु =
<b>अहेबा</b> ल पुं० अहवाल; वृत्तांत	(थकावट या मेहनत – मज़दूरीसे)
<b>अहे</b> द्यान न० एहसान ; आभार [क्रुतज्ञ	शरीरका जकड़ना या दुखना । – भरा <b>वुं</b>
<b>अहेशानमंद</b> वि०अहसानमंद;आभारी;	= देहके जकड़नेका असर माऌम होना;
<b>बहोभाग्य</b> न० बड़ा भाग्य; खुझ-नसीबी	ज्वरके लक्षण दिखाई देना। - भारे
<b>अहोहो</b> अ० अहह	थवुं ≔ शरीरका बोझ बढ़ना; मस्ती
<b>अळलामणुं</b> वि० अप्रिय	या सुस्ती आना.]
<b>अळगुं</b> वि॰ अलग; दूर (२) न्यारा;	अंगउषार वि० (२) अ० हाथ-उघार
निराला (३) न॰ रजोदर्घन	अंगकसरत स्त्री० कसरत; व्यायाम
अळसो पुं० अलता; नहावर (२)	<b>अंगत</b> वि० खानगी; निजी
मेहेँदीका लोंदा [ला.]	अंगनुं वि० निजका; ख़ानगी (२)
अळवी स्त्री० अरवी; पुइयाँ	विश्वासी (३) नखदीकी (संग)
अळबीतरुं वि० तूफ़ानी; ऊघमी (२)	अंगमहेनत स्त्री० शारीरिक श्रम
न० तूफ़ान	अंगमोडा पुं० ब० व० अँगड़ाई आना;
<b>अळजियुं, अळसियुं न</b> ० अलसीका तेल	देहका टूटॅना
अळवोो स्त्री०, अलसी	अंगरखुं न०, अंगरखो पु० अँगरखा
<b>ेअळसियं</b> न० केंचुआ; गिजाई [घाम	अंगवस्त्र न० उपरना (२) रखेली [ला.]
अळाई स्त्री० अम्हीरी; गरमी-दाना;	अंगार पुं० अग्नि (२) अंगार; अंगारा
अंक पुंज अंक; चिह्न; छाप; निशान(२)	(३) जलन (४) कपूत [ला.] ।
संख्याका चिह्न; अंक (३) दास;	[अंगारा ऊठवा ≃ अंगारों पर
कलंक (चंद्रमें) (४) गोद; अंक (५)	- लोटना; खूब अखरना.]
नाटकका एक भाग; अंक	<b>अंगारवायू</b> पुं० 'कार्बोलिक एसिड गैस'
<b>अंकगणित</b> न० अंकगणित	अंगारी स्त्री अंगारी; चिनगारी (२)
अके अ० अंकोंमें [जकड़कर	अँगीठी
<b>अंकोडाबंध</b> अ० श्रृंखलाबद्ध रीतसे (२)	<b>अंगारो</b> पूं० देखिये 'अंगार <i>'</i>
<b>अंकोडी स्</b> त्री० अँकुड़ी; रुग्गी (२)	अंगियुं ने० झगा (आस्तीनकी)
लग्गी; लकसी (३) कॅटिया	अंगारो पुं० देखिये 'अंगार <i>'</i> अंगियुं न० झगा [आस्तीनकी) अंगियो पुं० अँगिया; चोली (बिना

वंगुर

25

नंतराय

**अंगुर** न०; पुं० अंगुर (घावका) मंजाबुं अ० फ्रि० चौंधियाना (२) **अंगुरू** पुं० अंगुरु (२) उँगरुी; अंगुस्त किसीसे प्रभावित हो जाना (३) अंगुलि (-ली) निर्वेश पुं० अंगुल्यादेश 'আঁতাৰ্বু' কিযাকা কৰ্মজিছেয अंजीर ने॰ अंजीर (फल और पेड़) **अंगुछो** पुं० अँगोछा; गमछा अंगुठी स्त्री० पैरके अँगुठेमें पहननेका अंजुमन न० अंजुमन; सभा; मजलिस स्त्रियोंका एक गहना (२) अंगुल्ताना अंटल पुं० आंट; कट्टर बैर अंगुठो पुं० अँगुठा। [अंगुठा पकडुवा अंटोळकाटलुं न० खोटा बाट (२) = खड़े हो, नीचे झुककर पैरके अँगूठे आवारा आदमी [ला.] पकड़ना; ऐसा करनेकी सजा होना अंडळ वि० विना मेहनतका; हरामका (२) आगेके लिए सीख ग्रहण करना; अंडळगंडळ वि० अंड-बंड; झूठ-सच गुंगाह कबूल करके उसमेंसे नसीहत अंतर वि॰ अंतर; भीतरका (२) पाना [ला.] । अंगुठे कमाइ ठेलवुं नजदीकी (३) न० भीतरका हिस्सा = किसीको मालूम न हो इस तरह (४) अंतःकरण; मन; दिल (५) कोई काम करना या किसीकी मदद अवकाश; फ़ासला; अंतर(६) **बीचका** करना। –आपवो, करी आपवो. समय (७) फ़र्क; अंतर (८) मेद; पाडवो = (दस्तावेज आदिमें) अँगु-ज्दाई (९)समासके अंतमें ' अन्य ' या ठेका निशान लगाना (२) दस्तखेत 'बीज्' ऐसे अर्थमें; उदा० 'रूपांतर' करना; मंजर रखना। - देखाडको, (१०) स्त्री० ('खबर'के साथमें) बताववो = ठेंगा, अँगुठा दिखाना ] आंतरिक समाचार । [–खोलवुं = दिल अंगुर स्त्री० अंगुर खोलना (२) मनकी बात साफ़ साफ़ अंगे ज० -की बाबत; -के बारेमें बता देनाः ---पडवुं == अंतर पड़ना अंगोलंग अ० अंग अंगमें (२) फ़र्क़ होना (३) जुदाईका अंग्रेज पं० अँगरेज; औंग्रेज भाव पैदा होना.] अंघोळ न॰ स्नान **अंतरछाल** स्त्री० अंतरछाल अंघोळवुं अ०कि० नहाना अंतरजामी वि॰ अंतरजामी; अंतर्यामी अंघोळियुं न० नहानेका पानी गरम कर-(२) पुं० परमात्मा नेका पात्र (२) नहाने बैठनेका पीढ़ा **अंतरपट**न० अंतरपट: परदा अंचई स्त्री० रोंगटी; बेईमानी (खेलमें) **अंतरवेल** स्त्री० अमरबेल अंतरस न० पानी या खुराकका श्वास-अंचळवो, अंचळो पुं० बच्चोंके ओढ़नेके नलिकामें घुस जाना काम आनेवाला बहरगी रूमाल (२) तेलमें डुबाकर सुलगाई हुई रस्सी अंतरंग वि० अंतरंग; नजदीकी; भीतरी अंजन न० अंजन; काजल (२) एक वृक्ष (२) आत्मीय; दिली (३) विश्वसनीय अंजळ, अंजळपाणी न० देखिये 'अन्नजरू' (४) न० अंदरका हिस्सा; अंतरास्र अंजान पु॰ अंजाम; अंत (२) परिणास **अंतराई** स्त्री० अंतर;फ़ासला(२)जुदाई अंजाववं स० कि० अँजाना; अँजवाना अंतराय पुं० अंतराय; विष्न; बा्धा

र्अंतराल	হত	<b>લે</b> લોટ વું
अंतराल न० अंतराल ; बीचकी जगह(२)	अंधारको	टडो स्त्री० अँघेरी कोठरी (२)
अंतर; फ़ासला (३) अवकाश; जगह	कालको	ठरी (३)क्रैंदखाना
अंतरावुं अ०कि० रकना; घिरना; फँसना	अंधारपह	केडी स्त्री०, <b>अंधारपछेडो पुं०</b>
<mark>अंतराळ</mark> न० देखिये 'अंतराल'	वह (य	गला या जादुई) वस्त्र जिसे
<b>अंतरियाळ</b> अ० अघर; अंतरीक्षमें	ओढ़कर	र अदृश्य या गुप्त रहा जाय ।
<b>अंतरो</b> पुं॰ अंतरा; ध्रुपदके तीन	[-ओढ	ाडवी,(−वो)=अँथेरी डालना;
हिस्सोंमेंसे दूसरा; घ्रुपदके बाद	धोखा	
आनेवाली हर एक टेक		अ०क्रि० आकाशका बादलोंसे
<b>अंतवेळा</b> स्त्री० अंतकाल		ना; घटा घिरना; घुमड़ना
<b>अंतिम</b> वि० अंतिम; आखिरी		<b>1०ब०व० अ</b> खींके आगे अँधेरा
<b>अंसे</b> अ० अंतमें; आखिरकार		चक्कर आना । [ <b>उलेचवां</b>
अंस्य वि० अत्य; आखिरी; अंलिम	(प्रकार	ा पानेके लिए) व्यर्थ कोशिश
अंस्यज वि॰ अंत्यज (२) पुं० अछूत	<b>करना</b> .	
जातिका मनुष्य; हरिजन		वि० अँषेरा;अँथियारा (२)
<b>झंबर</b> अ० अंदर; भीतर		वेरा पाख; अँघेरिया
<b>अंदरखाने, अंदरखानेयी</b> अ० अंदरूनी		स्त्री० अँघेरी; अँधियारी(२)
तौर पर	-	त एक औजार (३) अँघेरी
अंदाज पुं० अंदाज्र; अंदाज्रा;अटकल ।		; घोखा देना (४) चक्कर (५)
[ <b>-काढवो</b> = अंदाजा लगाना ।ले <b>वो</b>		अँघेरी कोठरी (६) काल-
≕अंदाजा पानेके छिए कसना;		की सजा
आजमाना.]		ा॰ अँधेरा (२) अंधेर [ला.]
अंदाजपत्र, अंदाजपत्रक पुं०; न० 'बजट';	• •	गुप्तता (४) अज्ञान
आय-व्ययका चिट्ठा		ोर वि० (२) न० घना अंघकार;
अंदाजी वि० अंदाजसे नियत किया हुआ	अँधेरा	
अंदेश, अंदेशो पु० वहम;आर्शका;अंदेशा		० अंधेर; अव्यवस्था
अंध वि० अंध;अंधा(२)विचारहीन;	_	न० उपलोंका ढेर; गोहरोंका
नासमझ [ला.]	अंबार	
<b>अंधकार</b> पुं० अंधकार; अँधेरा		स्त्री० अंबारी; हौदा
अंबभक्ति स्त्री० अंधभक्ति; विवेकहीन		ुं० अंबार; ढेर
भक्ति [अंधेर; अराजकता	-	। ०कि०(दाँत)खटाना ; गुठलाना
अंधाधूंघ, अंघायूंघी स्त्री० अंधार्घुघ;		स्त्री० छोटा जूड़ा
<b>अंधापो</b> पुं० अंधापा; अंधापन		पुं० जूड़ा; खोपा
अंघारकोट पुं० घनघटा; घनघटासे	-	स०कि० खटाई लगाना (२)
छानेवाला अँधेरा	बढ़ाना	; मिलाना

#### १८

#### आगरण

#### आ

क्षा पुं० वर्णमालाका दूसरा अक्षर – एक स्वर आ स० (२) वि० यह आई स्त्री० माँ (२) दादी (३) देवी आईजी स्त्री० सास आाउ न० थन; .सीरी आकडी स्त्री० आकका एक प्रकार आकडो पुं० आकड़ा; आक आ करुं वि० कड़ा; सख्त (२) कठिन; भुश्किल (३) तेज;तीखा(४)महँगा आकर्षण न० आकर्षण; खिचाव (२)मोह आकर्षवुं स॰ कि॰ खोंचना; आकृष्ट करना (२) मुग्ध करना आकस्मिक वि० आकस्मिक; अचानक आकळविकळ वि॰ आकुल; बेचैन आकळुं वि० अधीर (२) गुस्सावर आका पुं० आका; मालिक आकाडोडी, आकादोडी स्त्री० आकका घूआ या डोंड़ी **आकार** पुं० आकार; आकृति; शक्ल (२) लगान मुक़र्रर आकारणी स्त्री० जमाबंदी (२) अँकाई; कूत (३) आँकनेका औजार; अंकन आकारवुं स० क्रि० मूल्य ठहराना (२) कृतना; आँकना (३) पैभाइश करना (४) – के नाम डालना आकाश न० खाली या शून्य स्थान; अवकाश (२) आकाश; गगन आकीन पुं०; न० यक्तीन; श्रद्धा आकुल,(--ळ),० व्याकुल,(--ळ) वि० बहुत घबड़ाया हुआ; व्याकुल

आक्षेप पुं० आक्षेप;इलजाम(२)निंदा आखडवुं अ०कि० भटकना (२)ठोकरें জ্ঞানা (২) সিড় আনা आखडी स्त्री० मानता; मनौती आखर स्त्री० आखिर; अंत (२)अ० आखिरमें आखरघडी स्त्री० अंतिम पल (२) मौतका वक्त; अंतकाल आखरण न० जामन आखरचुं स० कि० जमाना (दही) आखरी वि० आखिरी; अंतिम आखरे अ० आखिरकार (२) हारकर **आखलो पुं**० साँड् आंखळियो पुं० (रोटी बेलनेका) चकला आखाखाउ वि० (बगैर हक) पूराका पूरा खा जानेकी वृत्तिवाला; लोभ<u>ी</u> आखाबोलुं वि० स्पष्टवादी (२)कटुभाषी आखुं वि०पूरा; अखंड; साबित आग पुं० आगम; आना आग स्त्री० आग; अग्नि (२) जलन (३) आग (लगना) (४) कोध आगगाडी स्त्री० रेलगाड़ी आगतास्वागता स्त्री० आगत-स्वागत; आव-भगत आगबोट स्त्री० अगिनबोट; 'स्टीमर' आगमच, आगमज अ० आगेसे; पहलेसे आषमण स्त्री० चूल्हेका अगला हिस्सा (जहाँ कोयले बुझाये जाते हैं) **आगमन** न० आगमन आगरण स्त्री०लोहारखाना या लुहारकी भट्ठी (२) सुनारकी भट्ठी

आगली	पाछली
------	-------

গালকান্ত

आगली पाछली स्त्री० पुरानी या गई गुजरी बात । **(--काढवी =**पुरानी बातें याद करना;गड़े मुर्दे उखाड़ना । --काढी नाखवी, भूलवी = गई गुजरी भूल जाना; माफ़ करना.] आगलुं (लुं,) वि० अगला (२) मुख्य आगलुंपाछलुं वि०(२)न० आगे-पीछेका; अगला-पिछला आगवाळो पुं० आगवाला; 'फायरमैन ' **आगव्रं** वि० अपना आगवो पुं० अगुआ; राहबर आगळ अ० अगाड़ी; आगे (२) पासमें; बग़लमें (३) सामने (४) आइंदा; आगे आगळियो पुं०, आगळी स्त्री०, आगळो पुं० अगड़ी; अरगल आगाही स्त्री० आगाही; भविष्यवाणी **आगियो** पुं० जुगनू (२)ज्वार-बाजरेका एक रोग; आगड़ा (३) सफ़ेद ज्वार (४) वेताल **आगुचो** पुं० देखिये 'आगवो' आगे अ० आगे; अगाड़ी आगेकवम न०, आगेकूच स्त्री० आगे बढ़ना; प्रगति आगोवान वि० आगे चलनेवाला (२) पुं० नेता; अगुआ आगेवानी स्त्री० अगुआई; अगवानी आगोतर, आगोतरं वि० आगेका; शुरूका; पहलेका (२) पासका आर्धु वि० दूर (२) कि०वि० आगे; पास; उदा० 'आघुं आव' आचुंपाछुं वि० (समय या अंतरमें) आगे-पीछेका (२) (स्थान-फेरके कारण) जो नजर न आये (३) झूठ-सच । [**⊸करवुं =** हेर-फेर करना (२)छिपाना । --जोवं == आगे-पीछेका

पूरा खयाल करना; परिणाम पहलेसे सोचना। **--यवुं =** इघर-उघर बेकार धूमना(२)छिपना या हट जाना.] आघे अ० दूर; परे आघेषी अ० दूरसे आर्घेनुं वि० दूरका (२) भविष्यका आचकी स्त्री० नसोंका तनाव; ऐंठन आचको पुं० हचकोला; दचका;धक्का (२) संकोच;आना-कानी[ला.](३) षड्का (४) हानि; घाटा आचमन न० आचमन; अचवन (२) प्रवाही प्रसाद आचमनी स्त्री० आचमनी **आचरकूचर** वि०फुटकर(२)न०खानेकी फुटकर चीजें (३)फुटकर चीज-बस्तु आचार पुं० आचार; बरताव (२) सदाचरण (३) आचार-विधि (४) शास्त्रोक्त आचार(५) शिष्ट संप्रदाय आचारविचार पुं० ब० व० आचार-विचार (२) धार्मिक रीति-रिवाज और मान्यताएँ आछकलाई स्त्री०, आछकलापणुं न०, **आछकलावेडा** पुं०ब०व० छिछोरापन आखकलुं वि० छिछोरा (२) फुलकर कुष्पा हो जानेवाला आछर पुं० पोशाक (२) बिछावन (३) गधेकी पीठ पर रखनेकी गद्दी आछरषुं अ० त्रि० घटना; उतरना (२) नरम होना (३) बिछाना आछुं वि० छिदरा; झीना(२)कम; थोड़ा (३)धृंधला [तैसा आइंपातळुं वि० थोड़ा-बहुत (२) जैसा-आज अ० आज (२) स्त्री० आज आजकाल अ० आज-कल (२) अभी; हाल (३) स्त्री० आज-कल । [--करवी


50

आरंबरी

= आज-कल करना; टाल-मटोल	आटोपबुं स०कि०समेटना(२)निबटाना;
करना-]	समाप्त करना (३) बंद करना
<b>आजनूं</b> वि० आजका; हालका (२)	आठ वि० आठ; ८
आज-कलका; अर्वाचीन (३)कमसिन	<b>आठम स्त्री</b> ० आठें; अष्टमी
आजम वि० अजिम; बड़ा(२) माननीय;	आड(ड,) स्त्री० आड़; आड़ा तिलक
बुज्जुर्ग [मक रोग	(२) हठ। [-पकड़वी, लेवी = हठ
आजार पुं० आजार; बीमारी (२)संका-	या जिद पर्कड़ना.]
आजारी वि० बीमार; रोगी; मरीज	आड (ड,) स्त्री० आड़; ओट; परदा (२)
आजी स्त्री० मॉंकी माँ; नानी	रोक; रुकावट (३) प्रतिबंध; बाधा (४)
आजोजी स्त्री० आजिजी; गिड़गिड़ाहट	'उप' जैसा पूर्वग जो 'गौण' अर्थ बताता
आजीविका स्त्री० आजीविका; गुजरान;	्र है; उदा० 'आडकथा' । [ <b>–मां मूकवुं</b> ⇔
निर्वाह(२)निर्वाहका साधन;रोजी	कर्ज लेते समय जमानतके तौर पर कोई
आजुबाजु, आजूबाजू अ० आस-पास;	चीज एवजमें रखना.] [परोक्ष
इर्द-गिर्द; चारों ओर	आडकतरं वि॰ टेढ़ा-मेढ़ा; तिरछा (२)
<b>आजे</b> अ॰ आज	आडकया स्त्री० उपकथा (२) बोत-
आजो पुं० माँका बाप; नाना	चीतमें विषयांतर करना
आज्ञा स्त्री० आज्ञा (२) रजा; इजाजत	आडसील, (-ली) स्त्री०, आडसीलो
<b>आज्ञापत्रिका</b> स्त्री० आज्ञापत्र;फ़रमान	पुं० विध्न (२) अर्गला
(२) सरकारी 'गैंजेट'; गजट	आडगीरो पुं० बंघक रखी हुई चीजको
आज्ञार्थ पुं० आज्ञार्थ; विध्यर्थ [व्या.]	दुबारा बंधक रखना
आज्ञांकित वि० आज्ञाकारी; ताबेदार	<b>आडणी</b> स्त्री० (रोटी बेलनेका)चकला
आझम वि० देखिये 'आजम'	आडत स्त्री० आढ़त
<b>আন্নাৰ</b> ৰি॰ আ <b>ন্বা</b> द; स्वतंत्र	आइतियो पुं० आढ़तिया; आढ़तदार
आझावी स्त्री० आजादी; स्वतंत्रता	आडत्रीस वि० अड़तीस; ३८
<b>आटआटलुं</b> वि० इतना इतना	आडधंधो पुं० गोण घंघा [भूला हुआ
आटलामां अ० इतनेमें (२) पासहीमें;	आइफेटियुं,आडफेटुं वि० गुमराह;रास्ता
यहीं कहीं	आडमींस स्त्री० ओट या परदेके लिए
आटलुं वि॰ इतना	बनाई हुई दीवार
आटापाटा पुं० ब० व० एक खेल	आडरस्तो पुं०राजमार्गे नहीं ऐसा गली-
आटापाणी न० ब० व० दाना-पानी;	कूचेका रास्ता(२)पथ-भ्रष्टता;गुमराही
खुराक (२) आजीविकाके साधन [ला.]	आडश स्त्री० आड़; परदा [बँडेर
आटालूण न० आटा-नमक (२)व्यर्थ	<b>आडसर</b> पुं०;स्त्री०;न० पाऌ;बॉघ (२)
होना [ला.]	आडंबर पुं० घटाटोप(२)ठाट;दबदबा
आटो पुं० आटा; पिसान (२) चूरा।	(३)आडंबर;दिखावा (४) अहंकार
[ <b>–काढवो =</b> खूद यका डालना.]	<b>आडंबरी</b> वि० आडंबरी; ढोंगी

बर पुं० घटाटोप(२)ठाट:दबदबा ३)आडंबर;दिखावा (४) अहंकार **वरी** वि० आडंबरी: ढोंगी For Private and Personal Use Only

आसर्ह

28

खाना.]

आणीपार **आहुं अव**ळुं वि० (२) अ० उलटा-सीधा: इघर-उधर (२) बेढंगा [ला.] (३) खरा-खोटा; झूठा;सही-ग़लत । [-लेवुं = खूब भमकाना; आड़े हाथों लेना (२) घुस बित आ<u>इं</u>बोद्दं वि० उलटा-सीधा (२)न०वैसी आडे अ० आहे; बीचमें (२) विरोधमें **आडेदहाडे** अ०बहुत कामके या त्योहारके दिनके सिवा और किसी दिन आडेघड, आडेघडे अ० अंघाषुंघ; बेहिसाब; मनचाहे वैसे आशो पुं० विरोध; स्कावट(२)हठ; जिद आडो आंक पुं० सीमा; हद; मर्यादा। [-वळवो = हद करना; गुजब ढाना.] आबोबाई स्त्री० देखिये 'आडाई ' आबोशपाबोश पुं० अड़ोस-पड़ोस; पास-पड़ोस(२)आसपास रहनेवालोंका समृह आबोबाीपाडोवीि पुं०; न०लड़ोसी-पड़ोसी

आण (ग,) स्त्री० आज्ञा; आन (२) मनाही; शपय (३) घोषणा । [-देवी = (देव, देवी आदिका नाम लेकर) मना करना । ~फरबी, वर्तवी = हुक्म या सत्ता चलना । -फेरबबी, वर्ताववी ≕ हुक्स चले ऐसा करना; ढिंढोरा पिटवाना.] [(२) अघिकार आणदाण स्त्री० वसूल करनेकी सत्ता आंभपाण स्त्री० चवन्नी, आना, पैसा बतानेवाली आड़ी-खड़ी लकीरें;पाई आदि; उदा० '०।≈।।।'

आणवुं स० कि० लाना; ले आना आणी स्त्रीलिंगका एक प्रत्यय - आनी; उदा० 'देवर-देवराणी'

आणीकोर, आणीगम, आणीतरफ, आणीपा अ० इस ओर

आणीपार अ० इस पार; इस तरफ़

- आबाई स्त्री० आड़ापन; टेढ़ाई (२)
  - हेठ; दुराग्रह; जिद
- आहाबोलुं वि॰ झूठ बोलनेवाला; टेढ़ी बात करनेवाला
- भाडियुं न० आरा; करवत (२) तिलक करनेका साधन(३)आधी अंजलीभरकी एक माप (४) बच्चोंका आस्तीनसे नाकके रेंटको पोंछना
- आडो स्त्री० आड़े रखनेकी चीज (२) (बँडेरसे पतली) बल्ली (३) मनौती (४) हठ (५) सीमा (६) कुश्तीका एक पेंच (७) आड़ा तिलक; आड आहीवाडी स्त्री० कुटुंब-कबीला; बाल-बच्चे
- मार्चुवि० आड़ा; जो सीधा न हो (२) खड़ेका उलटा (३) बीचमें पड़ा हुआ या बीचमें आये ऐसा (४) हठी (५) अड़ंगेबाज; रुकावट डालनेवाला (६) परोक्ष (७) टेढ़ा; बाँका (८) विषद्ध; बीचमें आता हुआ (९) ब० तिरछी दिशामें (१०) न० बैलगाडीका खड़ा डंडा (११) भूत-पलीत इत्यादि । आही जीभ करवी = बीचमें झुठ बोलकर रुकावट डालना । – (–डे) आववं = बीचमें (बाधा या मददके रूपमें) पड़ना। -(-डे) ऊतरवुं = कार्यके बीचमें आकर विघ्न या मदद पहुँचाना (२) असगुन होना (ख़ास करके बिल्लीसे ) । या हठी होना । -पडवूं = लेटना (२) बीचमें बाधा डालना; बिरोध करना । -फाटबुं = बीचमेंसे दूसरे रास्ते मुड जाना (२) बुरा रास्ता पकड़ना (३) बाषक होना]

२२

आदाक्षीकी

मा	-	ч	ास	

आणीपास अ० इस ओर आणीपेर अ० इस तरह **आणीबाज्** अ० इस तरफ़ आणुं न० गौना (२) उस समयका नेग। [-आवयुं = वधूको ससुरालसे बुलाया आगा । **−करवुं** ≕गौना करना (२) गौनेकी रस्म करना.] आणे (आ'णे,) स० इस आदमीने (२) इससे **आतम पुं०** आत्मा आतमराम पुं० अपनी आत्मा **आतवार** पुं० रविवार; इतवार आत्व, आतस पुं० आतिश; आतश; अगिन (२) जलन (३) को घ आतशपरस्त वि० आतिशपरस्त; अग्नि-पूजक (२) पुं० पारसी आतज्ञबहेराम पुं० अगियारी; आतिशखाना आतशवाजी स्त्री० आतिशवाजी आतुर वि० आतुर; --से पीड़ित (२) अधीर; आकुल (३) उत्सुक आतो पुं० ज्येष्ठ पुत्र (२) दादा आत्मपरीक्षण न० आत्मनिरीक्षण आरमबंधु पुं० अपना – निजी संबंधी (मामा, मौसी या फूफी आदिका बेटा) आत्मबुद्धि स्त्री० अपनी समझ २) अपनेपनकी समझ (३) स्वार्थपरता; खुदगर्जी ज्ञान आत्मभान न० अपनी जातका भान-आत्मभाव पुं० आत्मभाव; गर्व; अहंभाव (२)अपनी रक्षा और विकासकी इच्छा (३) सबमें अपनासा आत्मा है ऐसी भावना आत्मसमर्पण न० आत्मनिवेदन; अपने आपको और अपना सब कुछ ईरवरके

चरणोंमें समर्पित करना; नवधा भक्तिका एक प्रकार **आत्माराम** वि० आत्माराम (२) पुं० आत्म-ज्ञानका प्रयासी योगी (३) जीव-न्मुक्त योगी (४) आत्मा; परमात्मा आयडवं अ०कि०भटकना (२) लड़ना आथमणुं वि० पश्चिमी; मगरिबी आथमवुं अ० कि० अस्त होना (२) पतनकी ओर जाना आयर पुं० घासकी तह (२) चादरा; बिछावन आधरण न० चादर(२)बिस्तर;बिछौना आयरबुं स०कि० बिछाना (२) घासकी गंजी बनाना (३) ढँकना आथवण न० खमीर (२)पाचनक्रियामें उपयोगी पदार्थ; ' एन्झाईम ' [र.वि.] आषवुं स० कि० फल या तरकारीको मिर्च-मसाला लगाकर तेलमें रखना (२) खमीर उठाना आयो पुं० खमीर उठना (२) खमीर। [-आववो, चडवो = खमीर उठना.] आदत स्त्री० आदत; टेव; अभ्यास आदम पुं० आदम (२) मनुष्य आवमजात स्त्री० मनुष्यजाति आदमी पुं० आदमी; मनुष्य आदर पुं० आदर; सन्मान; पूज्यभाव आदरवुं स॰ कि॰ शुरू करना (२) आदर-सत्कार करना (३) प्रेम दिख-लाना (विवाहके लिए) आदवेर न० पुराना बैर; क़दीमी अदावत (२) कट्टर बैर क्षाबानप्रवान न० आदान-प्रदान;लेन-देन **आवापाक** पुं० अदरक-पाक (२)मार; मरम्मत [ ला. ] आदाशीशी स्त्री० आधासीसी

आपघात पुं० खुदकुशी; आत्महत्या

आपण स० (सामान्यतः पद्यमें) मैं या हम और तुम या आप; अपन [प.] आपणुं स० अपना (२) हमारा

आपणे स॰ देखिये 'आपण' (२) मैं;

ъĩ	rí	ĥ
-	•••	

आफरीन

आव
आदि वि० आदि; आदिका (२) मुख्य;
प्रधान (३) वग्रैरह; इत्यादि (४)
पुं॰ प्रारंभ; शुरू (५) मूल कारण (६) पहला पद [ग.]
(६) पहला पद [ग.]
आदिमजाति स्त्री० आदिमजाति
<b>आदिवासी</b> वि॰ आदिवासी
<b>अर्र्बु न</b> ० अदरक
স্বাম বি০ আগা
आषण, आधरण न० अदहन
<b>आधार</b> पृं० आधार;टेक(२)सहारा;
आलंबन (३) सबूत; प्रमाण (४)
'फल्कम'[प.वि.] [ग्रंथ
आधारग्रंथ पुं० प्रमाणभूत या प्रमाणरूप
आधाशीशी स्त्री० आधासीसी
<b>आधोन</b> वि॰ अधीन; मातहत
आघेड वि० अघेड़; ढलती उम्रका
<b>आनंदवूं</b> अ० कि० खुश होना
<b>आनंदी</b> वि० आनंदी; खुशमिजाज
<b>त्रानाकानी</b> स्त्री०आनाकानी;आगापीछा
<b>आनावारी</b> स्त्री० कनकूत; दानाबंदी
आनी स्त्री० इकन्नी (२) सोलहवा
भाग [ला.]
<b>आप</b> न०आपा; अपना स्वरूप(२)खुदी;
अहंता (३)स्वशरीर (४) स० आप;
' तुम ' का आदरार्थक रूप (५)खुद;
स्वयं (समासमें) [अपना
<b>आपआग्रण्</b> ं वि० अपना-अपना; अग्प-
<b>आपआपमां</b> अ० आपस-आपसमें; अंदर
ही अंदर [स्वोपार्जित धन
<b>आपकमाई</b> स्त्री० खुर्रकी कमाई;
<b>आपकर्मी</b> वि० अपने ही पुरुषार्थं पर
आधार रखनेवाला; स्वावलंबी
आपखुद वि० खुदराय; स्वेच्छाचारी;
निरंकुश [चार
ानरकुश [यार आप <b>सूवी</b> स्त्री० खुदमुस्तारी; स्वेच्छा-

**उदा० 'भाई, आपणे एमां मानता न**थी' (३)तुम; आप [कठिनाईकें दिन आपत्काळ पुं० आपत्काल; मुसीबत – आपत्ति स्त्री० आपत्ति(२)दुःख;मुश्किल आपद, आपवा स्त्री० आपद्; आपदा आपभीग पुं० स्वार्थत्याग आपमतलब्दियुं, ৰি ৩ आपमतलबी मतलबी; खुदगर्ज; स्वार्थी आपमतियुं, आपमतीलुं वि० अपनी ही बुढिके अनुसार चलनेवाला; खुदराय आषमुखत्यार वि० खुदमुख्तार; स्वतंत्र **भाषमेळे** अ० अपने-आप; खुद-ब-खु**द** आपरखुं वि० अपना ही खयाल रखने-वाला (२)स्वार्थी आपले स्त्री० लेना-देना; आदान-प्रदान आपवडाई स्त्री० आत्मवलाघा; खुद-नुमाई आपवीती स्त्री ० आपवीती(२) आत्मकथा आपवुं स० कि० देना (२) सौंपना आपे अ० आप ही आप; स्वतः; मन ही मन [बुजुर्ग [ला.] आपो पुं० पिता (२) वृद्ध मनुष्य; आपोआप अ० खुद-ब-खुद;स्वयं;आप ही आप (२) स्वाभाविक रीतिसे आफणीए अ० [प.] अपने-आप (२) यकाथक आफत स्त्री० आफत **आफरवुं** अ० कि० अफरना **आफरीन** अ० कुरबान, फ़िदा, खुश-खुश

हुआ हो ऐसे; बलि गया हो ऐसे(२)

at	फरो

58

आमजूर

	×.•	आमणूर
आफ़रीं; शाबाश; भन्य (उद्गार)		आबादानी; भोबादी स्त्री० आबादानी;
(३) स्त्री० शाबाशी [सानेसे)		आबादी ; समृद्धि
आफरो पुं० अफरा; अफारा (ज्यादा		<b>आबेहूब</b> वि० हूबहू; वैसा ही
आफलातून पुं० देखिये 'अफलातून'		आबोहवा स्त्री० आबहवा; हवापानी
(२) विं० सुँदर		आभ न॰ अकाश; आसमान (२)
<b>आफळवुं</b> अ० कि० टकराना; भिड़		बादल । [ <b>–तूटी पडवुं</b> = आसमान
जाना (२) विफल होना		फटना।फाटबुं = आसमान सिर
<b>आफूस</b> स्त्री० आमकी एक जाति		पर टूट पड़ना । <b>ना तारा देखाडवा</b>
<b>आफ्रिदो</b> वि० भारतकी पश्चिमोत्तर		≕खूब परेेेेेेेेेेेेेे करना । <b>−नी साथे</b>
सीमा पर बसनेवाली एक पठान		<b>बाय भोडवी=</b> बूतेसे ज्यादा हिम्मत
जातिका (२)पुं०उस जातिका आदमी;		करनाः.]
अफ़रीदी		आभडछेट स्त्री० अस्पृक्ष्यको छूना(२)
आब न॰ आब; पानी (२) तेज;		छूतछातका खयाल; छुआछूत (३)
नूर (३) धारकी तेजी – तीक्ष्णता		रजस्नाव (४) प्रसवके समय निकलने-
<b>आबकारो</b> स्त्री ०शराब चुआने या खींच-		वाला लहू, आँवल वग़ैरह
नेका काम (२) शराब वग़ैरह मादक		आभडवुं अ० त्रि० अस्पृथ्यको झूनेसे
चीजों पर कर (३) वि० उस करसे		अपवित्र होना (२)स्पर्श करना; छूना ।
संबंधित		[ <b>आभडवा अवुं</b> ≓किसीके अत्येष्टि-
<b>आबसोरो</b> पुं० आबसोरा		संस्कारमें जाना.)
आवरू स्त्री० आवरू; कीर्ति; साख;		आभलुं न० आकाश; आसमान (२)
नाम (२) स्त्रीको लाज [ला.]।		बादल(३) आईना(४) छोटा गोल दर्पण
[-उघाडवी, उघाडो करवी = इज्जत		(जो कपड़ों पर लगाया जाता है)
उतारना; वेआबरू करना ।काढवी		<b>आभार पुं</b> ० उपकार; एहसान
=नाम निकालना (२) (स्यंग्यमें) नाम		आभारदर्शन न० एहसान मानना
डुबाना; बदनाम होना । -ना ककिरा		आभालाडु पुं० (मनसे गढ़ा हुआ)भारी
= बेआवरू; फ़जीहत । <b>-पर हाय</b>		मुनाफ़ा – फ़ायदा (२) मनके लड्डू;
नाखवो = इज्जत पर हाथ डालना(२)		खयाली पुलाव (३) अशक्य आशा
स्वीकी लाज लेना ; बलात्कार करना.]		आभुं वि० चकित; हैरान; भौंचक
आवस्त्रार वि० प्रतिष्ठित; इज्जतदार		आम पुं० आँव (२) पेचिश
<b>क्र्यने</b> पुं० अब्बा; पिता∞ (३) दादा		आम अ०इस तरह(२)इस ओर;यहाँ
<b>आबाद</b> वि० आबाद; बस्तीवाला (२)		आम वि० आम; साधारण; सामान्य
संपन्न ; खुशहाल; फलता-फूलता (३)		<b>आमच् न०</b> कच्चे आमकी सुखाई हुई
उपजाऊ; चरखेज (जमीन) (४)		फॉक; अमहर (२) किसी भी खट्टे
सलामत; सुखी (५) सुंदर; खूब		फलकी सुखाई हुई फॉक
(६)अचूक(७)अ० विना चूके; खूब		<b>आमचूर</b> न० आमका अचार आदि
For Private and Personal Use Only		

#### वामजनता

**कार**ब्युं

आसजनता स्त्री० आमें लिकटु अवेव	
<b>आमटी स्त्री० इ</b> मलीके पानीकी कढ़ी	ਫ਼ੋਵ
या दारू (दक्षिणी ढंगकी)	आम
आमणे (आ'म) स० इन्होंने	आमे
आमतेम अ० अव्यवस्थित ढंगसे; किसी	हुव
भी तरहसे (२) इधर-उधर	भाय
आमतेमयो अ० किसी भी प्रकारसे	आय
(२) कहींसे; इधर-उधरसे	भाष
आमणी अ० इस ओरसे	आय
<b>आमवनो, आमदानी</b> स्त्री० आमदनी;	साय
आय (२) पैदावार; उपज	अराय
आग्मनुं वि० इस ओरका; इघरका(२)	भाष
(आ′म) स० इनका । <mark>[आमनो सूरज</mark>	आय
<b>आम ऊगवो</b> = अनहोनी होना;इधरकी	आय
दुनिया उघर हो जाना.]	भाय
<b>आमन्य, स्त्री० आज्ञापालन(२)मर्यादा;</b>	माय
लिहाज।[—पाळवी, मानवी, रा <b>सवी</b>	भाय
=आज्ञानुसार बरतना; आज्ञा झिरो-	आयं
धार्य करना (२) अदब-लिहाज रखना ।	(;
<b>−मां रहेवुं =</b> ~की आज्ञा या मर्यादाका	आय
लोप न करना.] [गंघक	आय
लोप न करना.] [गंघक आमलसारो गंघक पुं० आँदलासार	हुव
आमली स्त्री॰ इमली; इमलीका पेड़	आ
और उसका फल [(लड़कोंका)	आये
भामसीपीपळी स्त्री० एक खेल	( •
<b>आमवर्ग</b> पुं० आम – साधारण लोगोंका	आये
समाज; जनसाधारण	भार
<b>आमसभा</b> स्त्री० आम-जलसा; जन-	आर
साधारणकी सभा (२) उसके प्रति-	(đ
निधियोंकी सभा [ड़ना; उमेठना	आ
<b>आमळवुं</b> स०कि० बटना; ऐंठना; मरो-	आर
आमळो स्त्री० आँवला; आँवलेका पेड़	आर
आमळुं न॰ आँवला; आमला (फल)	( ٦
मामळो पु॰ बट; ऐंठन (२) टेक;	आर
अभिमान (३) द्वेष; साहुन [रेवो	उक्
· · -	

बट देना । --रासवो = टेक या षका भाव होना.] **गंत्रणपत्रिका** स्त्री० निमंत्रण-पत्र नेज वि० आमेज; शामिल; मिलाया आ ब न० आयु; उम्र व स० (२) वि० यह (पारसी) ম ণুঁ০ আয; তাম (২) उपज a (आ'य) स्त्री० शक्ति (२) हिम्मत गसूं न० आयुष्य; जिंदगी; जीवन <mark>गत</mark> स्त्री० आयत; क़ुरानका वाक्य गताराम पुं० मुफ़्तखोर [मुफ्तका **रत्** बि॰ अनायास मिला हुआ; रनो पुं० आईना विरसा म्पतः स्त्री० आय; आमदनी (२) न० **ग्पलवेरो** पुं० आयकर **ाव्यय** पुं• आय-व्यय; आमद-खर्च वि अ० आयंदा; आइंदा; मविष्यमें २) अंतमें; फल्तः गस्त्री० आया; घाय गत वि० आयात; बाहरसे आया मा (माल) (२) स्त्री० बाहरसे ानेवाले मालकी आमद ोजन न० आयोजन; व्यवस्था; प्रबंध २) उसकी साधन-सामग्री **ोजना** स्त्री० व्यवस्था; संगठन :(आ'र) पुं० मौड़ी (२) आहार स्त्री० आर; अरई; (लोहेकी) गैने आदिकी) (२)छोटा पैना (३) र; सूआ (मोचीका) गर्णुं न० आरा; सूआ (मोचीका) जूस्त्री० आरजू; इच्छा(२)आ शाः ३) आतुरता **डवुं** अ०कि० गला फाड़कर बोलना; डकराना (चौपायों आदिका) (२)

#### आरणकारण

## आलपाको

ऊँची, बेसुरी आवाज निकालनी;	आरियं 👬 औरिया; फूट
रेंकना [ला.] [अनिष्टिचत	आरी स्त्री० आरी;छोटा करवत(२)
कॉरणकारण न० बहाना (२) वि०	मोचीका एक औजार; सूआ
आरत वि० आर्त (२) विपद्ग्रस्त (३)	आरेडुं वि० तूफ़ानी (२) झक्की; हठी
जरूरी (४) आतुर	(३) न० पक्के साढ़े तीन मनकी एक
<b>आरत</b> स्त्री० आति;पीड़ा;संकट (२)	मॉप या वजन
चाव ; उत्साह [रखनेका पात्र	आरो पुं० किनारा (२) अंत (३)
<b>आरतियुं</b> न० आरती ; आरतीका दीप <b>क</b>	छूटनेका उपाय; चारा [ला.] '
<b>आरती</b> स्त्री० आरती; देव आदिकी	आरो पुं० आरा;पहियेकी गड़ारी और
मूर्तिके समक्ष दीपक घुमाना (२)उस	पुट्ठीके बीचकी पटरी
समय गाया जानेवाला स्तोत्र;आरती	आरोगवुं स० कि० जीमना
(३)आरतीका दीपक रखनेका पात्र;	<b>आरोप</b> पुं० आरोप; इलजाम (२)
आरती (४) एक छंद । [उतारवी,	आरोपण;ऌगाना;रखना । [ <b>−आववो</b> =
<b>करवी</b> =आरती उतारना (२) मान,	दोष या इलजाम लगना। <b>–मूकवो,</b>
पूजा या अभिनंदन करना [ला.].]	<b>रूगाववो =</b> दोष लगाना.]
<b>आरपार</b> अ० आर-पार	<b>आरोपण न</b> ० आरोपण; एक्टु वस्तुमें
<b>आग्य</b> पुं० अरब;अरब देशका निवासी	दूसरीके गुण-धर्मकी कल्पना (२)
<b>आरस, आरसपहाण</b> पुं० संगमरमर	आरोप; इलजाम (३) संस्थापन(४)
आरसो पुं० बड़ी आरसी; आईना	रोपना; लगाना; रखना; मढ़ना
आरंभ पुं० आरंभ; तैयारी; शुरू	<b>आरोपवं</b> स०कि० एक पदार्थमें दूसरेके
आर्रभवुं स० कि० शुरू करना (२)	गुण-धर्मकी कल्पना करना (२) ऐब
तैयारी करना	या इलजाम लगाना (३) घालना;
आरंभशूर, आरंभशूरुं वि० क्षणिक	रखना; लगाना; डॉलना; उदा०
उत्साह दिखानेवाला; शुरूमें उत्साह	'वरमाळा आरोपनी; मन प्रभुमा
दिखाकर बादमें शिथिल होनेवाला	आरोपवुं ' इ०
आराम पुं० आराम;सुस्ताना (२) शान्ति	आरोपी वि॰ मुलजिम; अभियुक्त
(३) दुःख वग़ैरहमेंसे छुटकारा (४)	<b>कारोवारो</b> पुं• छुटकारा (२) आख़िर
कवायदमें आरामसे खड़ा रहनेका	आरोहण न० आरोहण; चढना (२)
हुक्म । [ <b>–मळवो =</b> थकावट दूर	सवार होना (३) ऊपर बैठना
करनेके लिए समय या अवकाश	आईतामापक वि० आईता या नमी नापे
मिलना.]	ऐसा (२) न॰ ऐसा यत्र; 'बैरोमीटर '
आरामखुरशी स्त्री० आरामकुरसी	आर्द्रवास् पुं० 'हाइड्रोजन '
<b>आरियां</b> न० ब० व० नाव, जहाज	<b>क्षालपाको</b> पुं० अलपाका; एक प्रकारकी
वगैरहके पाल उतारना	भेड़ (२) उसके ऊनसे बनाया जाता
आरियुं न० टोकरा	कपड़ा; अलपाका

आलपाल

a de la compañía de l

आवर्ष

आलपाल स्त्री० सेवा-टहल (२) देख-भाल (बालकोंकी) **आरुबम** न० अलबम आलबेल स्त्री० सब सलामत है ऐसा सूचित करनेवाली संतरीकी पुकार । [--पोकारवी = ' आलबेल ' पुकारना ] आलमगीर वि० दुनियाको जीतनेवाला (२) पुं० औरंगजेबका उपनाम आलवं स० कि० देना **आलंबन** न० आलंबन <mark>आला</mark> वि० आला; श्रेष्ठ <mark>आलापय</mark>ुं स० कि० अलापना; बोलना (२) आलापके साथ गाना; आलापना; अलापना आलांबालां न० ब० व० बहाने आलिम वि० आलिम; पंडित; विद्वान् आलिगबं स०कि० भेंटना; गले लगाना आली वि० आली; भव्य; उच्च; ऊँचा आलीज्ञान वि० देखिये 'आलेज्ञान ' आखु न० जरदारु; खूबानी आलेख पु॰ आलेख; लिखावट (२) पट्टा; दस्तावेज(३)सनद(४)मुहर; 'सील' (५) 'ग्राफ़'; आलेख; मानचित्र (६) चিत्र **आलेखवं** स०कि० अंकित करना; रेखा लींचना (२) उरेहना (३) लिखना आलेकान वि० प्रतिष्ठित; उत्तम (२) बहुत बड़ा (३) आलीशान; भव्य; शानदार [करना **आलोकवुं** स०क्रि० देखना(२)अवलोकन आलोपालो पुं० आला-पाला; पेड़की पत्तियाँ, जड़ें वगैरह वनस्पति आव स्त्री० आमद; आयात आवक स्त्री० आना; आगमन (२) आय; आमदनी (३) कमाई; उपज

59 आवकजाबक स्त्री० आना-जाना (२) आय-व्यय (३) उसकी वही आवकवेरो पुं० आयकर(२)चुंगीकर; आयातकर आवकार पुं० आव-भगत; सत्कार । [–आपवो, देसो ≕ स्वागत करना; 'खुश-आमवीद' कहना.] आवकारवुं स० कि० आव-भगत या स्वागत-सत्कार करना आवची बावची स्त्री० एक वनस्पति या उसके बीज; बनतुलसी आवजा, आवजाव स्त्री० आना-जाना; (कारी; कुशलता आमद-रफ्त आवड, आवडत स्त्री० आना; जान-आवडवं अ०क्रि० आना; जानना; –से वाकिफ़ होना; –की जानकारी होना **आवड्रं** वि० इतना आवरदा पुं०;स्त्री०; न० आयुष्य (२) जिंदगानी । [**--बहु लांबो छे** == किसीको याद करते ही वह आ पहुँचे सब बोला जाता उद्गार। **–नुं पूरुं, –नुं** बळियुं = पूरी उमरवाला; नसीबदार.] आवरवुं स०कि० ढँकना (२) छा जाना; व्याप्त होना (३) घेरना आबरो पुं० मासिक आय-व्ययके हिसाबकी खाताबही (२) आमद आवरोजावरो पुं० आना-जाना (२) आय-व्यय आवयं अ०कि० आना; दूरकी जगहसे पास पहुँचना (२) आना; अंतर्भाव होना; उदा० 'अमदावाद गुजरातमां आब्युं ' (३) पैदा होना; निकलना (फल, फल, कोघ, दाँत आदि) (४)

For Private and Personal Use Only

आसामी

बैठना; मिलना(६) समाना(७) --में वर्द होना; (आँख) उठना। [आवी घडवुं क्ला धमकना। आवी चूकवुं चपूरा हो जाना (२) कम पड़ना। आवी पडवुं क्ला पड़ना। आवी बनवुं क्लारी संकटमें आ जाने। आवी मळवुं क्लानानक मिल जाना या प्राप्त होना.]

आवळ पुं०; स्त्री० एक वनस्पति आ वार अ० इस बार; इस समय आवुं(आ'वुं) वि० ऐसा

आवृत्ति स्त्री० आवृत्ति; चक्कर लगाना (२) लौटना (३) बार बार होना; बार बार करना (४) पुस्तकका फिरसे छपना; आवृत्ति; संस्करण आवेग पु० आवेग; प्रबल मनोवेग; जोश

(२) आवेश; क्षोभ (३) उतावली; दौड़ा-दौड़ी [ग़ुस्सा आवेश पुं० आवेश;जोश;उत्साह(२)

आवश पुण्णापर, जारा, उत्ताह(२) आझक पुं० आशिक; प्रेमी (२) वि० आशिक; आसक्त; मोहित; फ़िदा

आशकमाशूक न॰ ४० व० आशिक-माशूक [आदि लेना आशका स्त्री० देवताकी आरती, भस्म आशनाई स्त्री० आशनाई; मित्रता;

दोस्ती आद्याय पुं० आशय; मनसूबा; इरादा (२) न० स्थान; आशय (३)पत्र (४) किये हुए कर्मोंके संस्कार या उनका समूह आक्षरे अ० करीब; लगभग; अंदाजन् आक्षरो पुं० आसरा; आश्रय; छत्रछाया; सहारा (२) आधार; अवलंब (३) अंदाजा; तस्तमीना । [आक्षरे अवुं = सरणमें जाना; आश्रय स्वीकार करना । -काढवो = अंदाफ लगाना.] **आशाभर्युं** वि० आशान्वित

आज्ञाबाबी वि० आज्ञावादी; जो होता है वह भलेके लिए होता है इस सिद्धान्तको माननेवाला (२) पुं० ऐसा पुरुष

आश्रम पुं०;न० आश्रम; विश्रामस्थान; रहनेका स्थान (२) विश्रान्ति (३) साधु-संतकी कुटी; पर्णकुटी (४) जीवनके चार विभाग या अवस्थाएँ; आश्रम (५) राष्ट्रीय या धार्मिक हल्जलका प्रधान स्थान

आसन न० आसन; बैठनेकी जगह (२) बैठने, सोने या खड़े रहनेका ढंग(३)वह चीज जिस पर बैठा जाय; आसन(४) रुकीरोंसे बनाया हुआ कोष्ठक; खाना

<mark>आसनावासना</mark> स्त्री० आश्वासन (२) खातिरवारी; आव-भगत

आसनियुं न० आसनी; छोटा आसन आसमान न० आसमान । [-जमीन एक थवां = आकाश-पाताल एक होना; बहुत बड़ा अनयं होना; प्रलय होना । सातमा आसमान पर धबबुं = आसमान पर उड़ना.]

आसमानी वि० आसमानी; आसमानके रंगका (२)देवी (३)स्त्री० असमानी गजब; दैवकोप

आसमानी सुलतानी स्त्री० दैवकी और राजाकी ओरसे ढाया जानेवाला दोहरा ग़जब

आसंघ स्त्री० एक औषधि; असर्गध बासाएदा स्त्री० आसाइश; आराम

आसान वि० आसान; सहल आसानकेद स्त्री० सादी क़ैद;क़ैद-महज आसामी पुं०;स्त्री० आसामी;आदमी; व्यक्ति (२) क़र्जुदार; असामी (३)

	_
मासराववा	5
	~

ओकम्

मासुरविवाह	२
मालदार – प्रतिष्ठित आदमी (४)	
प्राहक; मुवक्किल	
आसुर (-रो) विवाह पुं० आसुर विवाह;	
कन्याविऋयवाला विवाह	
आसो पुं० असोज;आदिवन मास;कुआर	
<b>आसोपालव</b> पुं० अशोक वृक्ष	
<b>आस्ते</b> अ० आहिस्ता	
आस्था स्त्री० आस्था; आदरभाव(२)	
श्रद्धा; धर्मविश्वास; यक़ीन (३) पूँजी	
आह स्त्री० आह; हाय(२)अ० आह; हा	
आहा,(०हा) अ० आहा	
आहीर पुं० अहीर; ग्वाला	
आहीरडी, (-णू,-णी) स्त्री० अहीरिन;	
अहीरकी स्त्री	
आहेडी पुं० अहेरी; शिकारी	
आळ न० कलंक; तोहमत(२) ढकोसला;	
बहाना (३) स्त्री० नटखटी । [ <b>ऊतरव्</b>	
= कलंक टलना । <b>−मूकवुं</b> ≕ बोहतान	
जोड़ना; तोहमत लगाना]	
आळपंपाळ वि० मिथ्या (२) जो सत्य	
न हो (३) फुसलानेवाला (४) न०	
आश्वासन (५) भूतप्रेतादि	
आळवीतरं वि॰ तूफानी; ऊधमी	
<b>आळस</b> स्त्री०; न० आलस्य; सुस्ती;	
काहिली; ढिलाई । [-आवथी, (वुं)	
चहवी, (वुं) अलसाना; सुस्ती	
लगना ।खावी, (वुं) = आलसी	
होकर पड़ा रहना । <b>⊷मरडवो</b> ≔ अँगड़ाई लेना.]	
भाळसु वि॰ आलसी; काहिल; सुस्त ।	

- [-नो पीर = बहुत बड़ा आलसी.]
- आछं वि०गीला (२)ताजा उधेड़ा हुआ; कञ्चा (चमड़ा) (३) जरा छूनेसे दर्द हो ऐसा (४) नरम; गुदगुदा 🛛 [बालक **बाळुंमोळुं** वि० भोला-माला (२) न०

<b>আক(০</b> ) ণ্ড  গাঁৰ	; খায	क (२)	दर;
मूल्य (३) मोटाई	काय	। पतलेप	नका
िहिसाब (सूत्तका) (	(४)नि	ाशानी;	चिह्न
(५) अंदाजा (६)	) सीम	ा;हद	(७)
पुं०ब० व० पहाड़े ।	[–पा	डवो, म	াঁৱৰী
= दाम ठहराना.]	[1	<b>करनेकी</b>	बही
आंकडावही(०) स्थ			
अकिडाशास्त्र (०)	न०	अंकशा	स्त्र;
संख्याशास्त्र ; 'स्टे	टिस्टि	क्स '	

**आळेलवं** स० फि० देखिये ' आलेलवं

**आळोटबुं** अ०कि० लोटना

- **आंकडी(०)** स्त्री० अँकुड़ी;हुक (२) कॅंटिया; मछली पकड़नेकी बंसी (३) आँतोंमें होनेवाली पीड़ा; मरोड़ (४) अकड़बाई (रोग)(५)सख्त एतराज; नाराजगी [ला.] [एँच-पेंच
- **आंकडीघुंकडी(०)** स्त्री० आँट-साँट; आंकडो (०) पुं० आंकड़ा; अँकुड़ा; हुक
- (२) कॅंटिया (३) डंक (बिच्छू वगैरहका) (४) मूंछके सिरेकी ऐंठन
- **आंकडो (०)** पुं० आँकड़ा; अंक ; संख्या; संख्याका चिह्न (२) लेन-देनका हिसाब या चिट्ठी (३) बिल(४) दहेज । –मूकवो = ठहराई हुई रकम लिखना । ৰ আঁকতা (भणवा, আবৰবা)
- = थोड़ा, सामान्य (पढ़ना, आना).] आंकणी (०) स्त्री० आंकने या लकीर
- खींचनेका साधन (२) ॲकाई: कूतना
- आंकेणुं(०) न० चिह्न लगानेका बढ़ईका एक औजार; किलकी
- आंकवुं(०) स० कि० आँकना; निशान लगाना; (२) लकीर खींचना (३) कूतना;अंदाजा करना;आंकना (४)

সাঁকী

Зo

आंगळी

- पहचाननेके लिए शरीर पर चिह्न अंकित करना;दागना (५) खास कामके लिए नाम-निर्देश करके कुछ फंड या रक़म अलग रखना; 'इयरमार्क' [ला.] आंको (०) पुं० निशानीकी रखा;चिह्न
- (२) अंदाजा; अँकाई (३) <del>ह</del>द; औदित्यकी सीमा
- आंकोशियां(०) न० ब० व० पसलियाँ (२) बेहद कोशिश (३) इससे पैदा होनेवाला हाँफा
- आंख(०) स्त्री० आँख (२) [ला] देखनेकी ताकत ; नजर (३) निगाह ; ध्यान ; देख-भाल (४)(किसी चीज़का आँख जैसा)छिद्र;छेद;नाका(५)बीजकी गाँठ परकी नोक (ईख आदिकी)। -आडा कान करचा = सुनी अनसूनी करना । –आवनी 🛥 आँख आना (२) पशुके बच्चोंकी आँखका काम करनेके क़ाविल होना **।−ऊंची करवी**≕ काममेंसे निगाह दूसरी ओर लेजाना (२) गुस्सा होना (३) (बीमारका) आँख खोलना। –चोळतं रहेवुं, चोळीने रहेवुं = हार या थककर रोते रहना; लाचार बनना । **-ठरवी** = कलेजा ठंडा होना (२)पसंद आना। -तळे काढवं = देख लेना; नजर **डालना । −फोडवी ≕** आँखें फाडकर निकम्मी चीजको देखना या पढ़ना (२) और फोड़ना। -मां आंगळीओ **घालवी** = (दूसरेको) नापसंद हो या उसे परेशान करे ऐसा उसके देखते हुए करना । –मां आंजवुं == नजर बौधना; भरमाना (२) दूसरेको उसके रूप, गुण आदिकी कमीके बारेमें लज्जित करना । --मां कमळो होवो

= (मनके किसी कारणसे) जैसा हो
बैसान दिखाई देना यान समझना;
आँखोंमें पीलिया होना । आं <b>खे पाटा</b>
• सांधवा ⇒ अक्लका चरने जाना (२)
भरमाना; घोखा देना । (झडीने)
आंखे बाझवुं = खूब सुंदर होना ।
आंखो बोचीए आववी = थककर
चूर हो जाना.]

- आंखढांकणी (०) स्त्री० बैल या घोड़ेकी आँखों पर लगाये जानेवाले ढक्कन; अँघोटी; अनक्ट
- आंखम(~मि)चकारो(०) पुं० निमिष; पलकोंका गिरना (२) आँख मारना; आँखसे किया हुआ इशारा
- आंखमि (--मीं) चामणां (०) न०व०व० आँख-मिचौनी; लड़कोंका एक खेल (२) देखा अनदेखा करना (३)इशारा (आँखसे)
- आंगडी (०) स्त्री० छोटा अँगरखा; झगा
- आंगण,(-णुं)(०) न० आँगन; सहन आंगमण(०) स्त्री० जोर (२) देखिये
  - 'आगमण' संग्रेन (-) न नगर कोन के
- आंगलुं(०) न० झगा; छोटा अँगरखा आंगळ(०) न० अंगुल; उँगली (२) उँगलीके जितनी लंबाई; अंगुलमान (३) दशकी संज्ञा
- अांगळियात, ऑगळियुं(०) वि० (२) न० पहले खाविदका पत्र या पत्री
- भागविषका पुत्र या पुता आंगळो (०) स्त्री० अँगुली; उँगली। [-आपतां पहोंचो पकडवो, पहोंचे बळगबुं = उँगली पकडते पहुँचा पकड़ना। -करवी = इशारा करके उकसाना; चिढ़ाना; छेड़ना (२) उँगलीसे दिखाना(३) बदनाम करना; उँगली उठाना। - पर नचावचुं

# ऑगळी-देखामणुं

= उँगलियों पर नचाना । **--मी नख** वेगळा = नख और उँगली सायमें होते हुए भी अलग है ऐसा भेदभाव । –ना वेढा पर,–ने टेरवे होवुं = बराबर जबानी होना; जबान पर होना आंगळी-देखामणुं (०) न० अंगुश्त-नुमाई; फ़जीहत; वदनामी आंगळुं(०) न० देखिये 'आंगळी ' आंगी (०) स्त्री० दूल्हेको ननिहालकी ओरसे मिलनेवाला बिना तुरपा हुआ कोरा वस्त्र (२) देवीकी मुर्तिके बदले रखी जाती रंगबिरंग धातुओंके पतरेकी तख्ती (३) हनुमानकी मूर्ति परकी तेल और सिंदूरकी परत (४) मूर्तिकी सजावट (जैन) (५) धूलकी आँधी

- **आंग्ल** वि० अँगरेज संबंधी
- आंग्लदेश पुं० अँगरेज्ञोंका देश; इंगलैंड आंच(०) स्त्री० आँच; ज्वाला (२) तेज; दीप्ति (३) रोब (४) धमकी (५)चोट। [-आववी = आँच आना;
- ईखा पहुँचना । **~लागवी ≃ ज**लना.] **आंचकबुं(०)** स० कि० जोरसे एकदम खींचता |हिचकी
- आंचकी (०) स्त्री० नसोंका सनावे (२) आंचकी (०) पुं० देखिये 'आचको '
- <mark>आंचळ (०)</mark>पुं० (मादा पशुका) लंबा थन **आंचळी** स्त्री० अंचल; वस्त्रका छोर
- **अांजण(०)**न०आँजन;अंजन(२)भरमाना
- आंजणी (०) स्त्री० अंजनी; बिलनी; अंजनहारी
- आंजवुं(०) स०कि० आँजना; आँखमें लगाना(२)तेजकी प्रखरतासे आँखें चकाचौंघ हो जाना (३) चकित कर देना; प्रभाव डालना [ला.]

# आंतरसो

- अगंट(०) स्त्री० औंट; उलझन; गुत्थी (२) क़ीना; बैर; आंट (३) लेन-देन संबंधी एतबार; साख; प्रतिष्ठा (४) हथौटी (५) हाथकाममें या बोलने-लिखनेमें तेजी (६) अँगूठे और तर्जनीके बीचकी जगह; औंट (७) निशानेबाजी; निशाना बाँधनेकी कुशलता। [-जवी, तूटवी = साख जाना; बेइज्ज्ञत होना.]
- आंटण(०) न० घट्ठा (चमड़ी परका) आंटखुं(०) स०क्रि० निशाना बाँधना
- (२) आगे निकल जाना; बढ़ना
- आंटी(०) स्त्री० आँटी;गाँठ;उलझन (२) सूतकी आँटी;लच्छी(३)कीना; आँट[ला.](४)फंदा;पेच;प्रपंच(५)
- समस्या; मसला (६) साख; आबरू आंटीघूंटी(०) स्त्री० औट-सौट; दांव-
  - **पेच** (२) छल-कपट
- आंटो(०) पुं० बट; लपेट; पेच (२) धक्का; चक्कर (३) कट्टर बैर
- **आंटोफेरो(०)** पुं० चक्कर और फेरा(२) कामके लिए इघर-उघर आना-जाना
- **आंतरडी(०)** स्त्री० दिल; जी
- आंतरडुं(०) स्त्री० आँत; ॲतड़ी । [आंतरडां ऊंचां आववां, गळे आववां = आंतें गलेमें आना; अधिक श्रम पड़ना। आंतरडांनी सगाई = सच्ची सगाई; नाभि-संबंध.]
- अांतरवुं(०) स० किं० (बाड़ या परदेकी आड़ बनाकर) अलग करना (२) घेरना (३) रास्ता रोकना
- आंतरसी (−से)वो, आंतरसो (०) पुं० अंदरकी सिलाई, सिया हुआ कपड़ा ठीक नापका हो इस वास्ते अंदरसे टौके देना; पऌेट; पट्टी

# आंतरो

अगंतरो (०) पुं० अंतर; फ़ासला; फ़र्क (२) अंतरपट; परदा (३) मेद (४) ध्रुपदका दूसरा हिस्सा; अंतरा (५) दो रेखाओंसे छेदा हुआ तीसरी रेखाका भाग; 'इन्टरसेप्ट' [ग.]। [-राझवो = भेद-भाव रखना; दिल खोलकर बात न करना.]

गावल सालमर भारत न करनाः] आंधण (०) न० देखिये 'आधण '

- आंबळियुं (०) न० साहस ; अविचारित कर्म ; विवेकहीन कर्म
- आंधळी खिसकोली(०) स्त्री० एक खेल; अंघा भैंसा
- आंचळी चाकण, (-ळ,-ळण)(०) स्त्री० दोर्मुंहा सांप; गुंगी
- आंधळुं(०) वि०ँ अंधा; अंध (२) ज्ञानहोन; अंधा (३) अँधेरा; प्रकाश-रहित । [आंधळियां करवां = आँख भूँदकर साहसमें कूद पड़ना; बिना सोचे-समझे कूद पड़ना। आंधळे बहेर्थ कुटावुं = अंधे और बहरेका – एक सरीखे अज्ञानमें भटकना; घोटाला और बढ़ना.]
- आंघळुंधब, आंघळुंभींत(०) वि० पूरा या निपट अंधा
- आंधो स्त्री० आंधी; अंघड़(२)अंघापन। [-आववो, चडवी ≕आंधी उठना.] आंबलियो(०) पुं० आमका पेड़ [प.] आंबली(०) स्त्री० इमली (२) चिआं आंबलीपींपळी(०) स्त्री० एक खेल आंबलुं(०) स० क्रि० आगे बढ़े हुएकी बराबरीमें आ जाना; पकड़ लेना

(२) अ०कि० आम जाना;गुठलाना **आंबळी स्त्री० आंबळुं(०) न० देखिये** 'आमळी, आमळुं' **आंबागाळो (०)** पुं० आमका मौसम **आंबामोर(०)** पुं० बौर; आमका मौर (२) धानका एक प्रकार **आंबावाडियुं** न०, आं**बावाडी** (०) स्त्री० अमराई; आमका बाग आंबाज्ञा(-सा) ख(०) स्त्री० पेड़ पर पका हुआ आम; सीकल; कोपर **आंबाहळबर(०)** स्त्री० आँबाहलदी आंबेल(०) त० एक जुन अलोना रहनेका वत (जैन) आंबेल (०) स्त्री० (बालकके जन्मके समयकी ) नाल आंबो (०) पुं० आम; आमका पेड़ (२) बच्चोंका एक खेल आंबोई(०) स्त्री० नाभिके नीचे रगोंकी गाँठ जैसा अंदरका भाग अांबोळियुं(०) न० अमहर; रोंठा आंस(०) पुं० घुरा; अक्ष आंसु(०) न० ऑसू; अशु । [-आववां, खरवां, पडवां, वहेवां = आँसू गिरना; रोना। -ढळवां = रोना; औंसू ढालना । –लूछवां, लोहवां ⇒रोनेवालेको शान्त करना (२) ढाढ्स दिलाना; औसू पोंछना.] आंहां(०) अ० औहां; ऊँहूँ आंहांतूस(०) स्त्री० हॉं-ना (करना); पसोपेश आंहों (०) अ० यहाँ

E (

**₹**₹

## इ

- इ स्त्री० देवनागरी वर्णमालाका तीसरा अक्षेर – एक स्वर इकरार पुं० इक़रार (२) स्वीकृति इकरारनामुं न० इक़रारनामा; प्रतिज्ञापत्र; 'एफिडेविट'
- **इकोतेर** वि० एकहत्तर; ७१
- **इसलास** पुं० इखलास; दोस्ती; मेल-मिलाप [आवाा करना
- इच्छ्युं स॰ कि॰ इच्छा करना (२) इच्छा स्त्री॰ इच्छा; मरजी; रुचि; खुशी(२)आक्षा; उम्मीद (३)इच्छा; चाह [जान-बूझकर; सोद्देश

इच्छापूर्वक अ० इच्छाके अनुसार (२) इच्छावर पुं० स्वयं पसंद किया हुआ वर

- इण्छाशक्ति स्त्री० संकल्पका बल; मनोबल
- इजन न० न्योता; निमंत्रण
- **इजने**र पुं० इंजीनियर(२)यंत्रविद्याका विशेषज्ञ
- इजनेरी वि० इंजीनियरसे या उसके कामसे संबंधित (२) स्त्री० इंजीनि-यरिंग; यंत्रका काम या यंत्रकास्त्र
- इजाफत स्त्री० इज़ाफ़ा; वृद्धि (२) मिलाना; खालसा करना इजार स्त्री० इजार;सुरवाल;पाजामा
- **इजारवार** पुं० इज़ारेदार; ठे**केवार इजारबंध** पुं० इज़ारबंद; नाड़ा
- इजारापद्धति स्त्री० इचारा देकर कार्यकी व्यवस्था करनेकी पद्धति
- इजारो पुं० इजारा; ठेका (२) सनदसे मिला हुआ हक़ । [**→राखवो, केवो**≕

ऐसा हक्र प्राप्त करना, खरीदना मा जमाना. ]

- इज्जत स्त्री० इज्जत; आवरू (२) सतीत्व;स्त्रीका शील । [**~ना कॉकरा** थवा ≕ इज्ज्वत गॅवानाः]
- इसरायल वि० यहूदी लोगोंसे संबंधित; इबरानी (२) पु० इसराईल (३) यहूदियोंका देश
- इठ्ठोतेर वि० अठहत्तर; ७८
- इठपाती (-सी)वि० अठासी ; अट्ठासी; ८८
- इतबार पु॰ एतबार;विश्वास;भरोसा इतर स॰ (२) वि॰ इतर;अन्य (३) भिन्न (४) तुच्छ
- इतरडो स्त्री० किल्नी; चिचड़ी
- इतरवाचन ने० पाठयकमको पुस्तकोंके अतिरिक्त किया जानेवाला बाजन इतराज वि० नाखुश
- इतराजी स्त्री० नाराजगी; खफ़गी
- इति अ० इस तरह (२) इति(३) स्त्री० इति; समाप्ति
- इतिमात्र वि० इतिमात्र; इतना इतिमी स्त्री० इति; समाप्ति
- इषरउषर, इथरसियर अ० इघर-उधर इनकार पुं० मना (२) इनकार ।
- [-जवुं = मकरना.] इनकारबुं स० कि० इनकार करमा इनसाफ (-फी) देसिये 'इन्साफ' इनाम न० इनाम; बख्शिश;पुरस्कार इनामअकराम न० बख्शिग(२)झ्नाम-इकराम; पुरस्कार और सन्मान

	MALK.	
e		

- इनामदार वि० इनाम पानेवाला (२) जिसके पास इनाममें मिली जमीन या गाँव हो; माफ़ीदार; इनामदार (३) पुं० एक अल्ल इनामी वि० इनामसे संबंधित (२) इनाममें पाया हुआ (३) इनाम मिले ऐसा इनामर्से स्त्री० इनायत; भेंट इन्कमटॅक्स पुं० जाय-कर
- इन्कार पुं० भना(२)इनकार;अस्वीकृति
- इन्कारचुं स० फि० इनकार करना
- **इन्किलाव झिंदावाद =** इनकलाव जिंदीबाद; कान्ति बनी रहे
- **इन्साबल्लाह =** ईश्वरेच्छा
- इन्सान पुं०; न० इनसान; मनुष्य (२) मनुष्य-जाति विता; सज्जनता
- इन्सानियत स्त्री० इनसानियत; मान-इन्साफ पुं० इंसाफ़; न्याय (२) फ़ैसला।
- इन्साम पुण्डराज, पाय (२) क्रयण । [**−मागवो =** न्याय करनेको कहना – अर्च करना.]
- इम्साफी वि० इन्साफ़से संबद्ध(२)न्यायी (३) स्त्री० इंसाफ़की रीति (४)अदालत
- इवादत स्त्री० इवादत; भक्ति; स्तुति इवादतसाना न०, इवादतमाह स्त्री०
- इबादतसाना; उपासना-मंदिर
- इमान पुं० इसाम (२) मुल्ला; क़ाजी (३) वह क्षंडा जो ताखियेके आगे रखा जाता है; पंजा (४) तसबीका शुमारदाना
- इमारत स्त्री० इमारत; हवेली
- इमारली वि॰ इमारतसे संबद्ध (२) इमारतके कामका
- इवक्ता स्त्री॰ नियत परिमाण, संस्था बादि(२) इयत्ता; प्रमाण(३)सीमा इयळ स्त्री॰ पिल्लू; ढोला

इस्पिताळ
इराबी पुं० इरादा; उद्देश; आशय
इलकाब पुं० खिताब; पदवी
इलम पुं० इल्म;विद्या (२) जादू (३)
जंतर-मंतर; वशीकरण (४) उपाय
<b>इलमबाब, इलमी</b> वि० इल्म जाननेवाला
(२) काबिल
इलाको (-को) पुं० इलाका;प्रांत;प्रदेश
(२) हुकूमत्त → अधिकारका प्रदेश (३) हक; इलाक़ा
इलाज पुं० इलाज; उपाय(२)चिकित्सा
इलायची स्त्री : न॰ इलायची;लायची
इलायबुं वि॰ देखिये 'अलायदुं'
इलाही वि० खुदा-संबंधी; ईश्वर-
विषयक (२) वंदनीय [आदि
इशक, (०वाजी), (की) देखिये 'इश्क'
इशारत स्त्री० इशारत; संकेत; इशारा
इकारो पुं० इशारा; संकेत (२) सूचन
इक्क पुं० इक्क; प्रेम (२) कामविकार
(३) आसक्ति व्यापार
इइक्वाजी स्त्री० भोगविलास; प्रणय-
इशकी वि॰ आशिक (२) छैला
इक्की टट्ट न० इरक्तवाज; व्यभिचारी
या कामी पुरुष
इसप(
इसम पुं० मनुष्य; व्यक्ति; शल्स
इस्कामत स्त्री॰ मालमत्ता; मिल्कियत

- **इस्कामत** स्त्री० मालमत्ता; मिल्कियत **इस्कोतरो** पुं० छोटा संदूक इस्कू पुं०स्तू ¦[**--डीलो होवो** = मगज
- अस्पिर होना या ऐसा प्रतीत होना.] इस्टापडी स्त्री० सिटकिनी; खटका; 'स्टापर '
- इस्तरो स्त्री० इस्तरी; इस्तिरी इस्तेमाल पुं० इस्तेमाल; उपयोग इस्त्री स्त्री० इस्तरी इस्पिताल (--ळ) स्त्री० अस्पताल

84

ईरे च

#### इसीयस

इलायल वि०(२)पुं० देसिये 'इज्ञरायल' इल्लाम पुं० इसलाम इल्लामी वि० इसलामी;इसलाम संबंधी (२) इसलामका अनुयायी इंगळा स्त्री० इंगला; इडा नाड़ी इंच पुं० इंच इंबिन न० इंजन

- ईतेचान पु॰ इंतजाम;बंदोबस्त इंतेचार वि॰ अतर: अधीर
- इंतेकार वि० आतुर; अधीर इंतेकारी स्त्री० इंतजार; आतुरता इंद्रगोप पुं० इंद्रगोप ;बीर-बहूटी इंद्रजव पुं० इंद्रजौ; कुटजका वीज इंद्रवारणुं न० इन्द्रायन (२) रूपवान किंतु कपटी मनुष्य [स्रा.]

£

- ई स्त्री० देवनागरी वर्णमालाका चौथा वर्ण – एक स्वर
- र्रववुं (ई′) स॰ कि॰ ठूँसकर खाना (२) गुच्ची पर रखी हुई गुल्लीको डडेसे उछालना (पीडा: चोट

ईजा स्त्री॰ ईजा; कष्ट (२) (शारीरिक) ईतरायुं अ॰ कि॰ इतराना

- ईनमीम ने (०साडे)तीम = इने-गिने; अल्प; थोड़े
- ईमान पुं०;न० ईमान;श्रद्धा(२)धर्म; ईमान (३)अंतःकरण(४)प्रामाणिकता; सचाई
- ईमामबार वि० ईमानदार; सज्या

ईमानवारी स्त्री० ईमानदारी; दयानत ईमानी वि० ईमानवाला; प्रामाणिक ईव स्त्री० हौना; आख स्त्री ईशान स्त्री० ईशान (२) पुं० शिव ईशानकोण पुं० ईशान |ईशानी

ईशानी वि॰ ईशानका (२) स्त्री • दुर्गा; ईश्वर पुं॰ ईश्वर; प्रभु (२) स्वामी; मालिक (३)राजा। [--जपर चिट्ठी ⇔केवल ईश्वराषार। –ना घरनी चिट्ठी, धरनुं तेडुं ≃ खुदाके घर जाना; मौत आना। –ने कोळे बेसवुं = ईश्वराधीन होना। –ने माथ के बचमां राखीने = ईग्वरको साक्षी बनाकर; खुदाको दरमियानमें रखकर; ईग्वरका डर रखकर। –ने लेखे, –ना नाम पर, –ने खालर = खुदाके वास्ते; ईग्वरका डर रखकर; धर्म, दया या सत्यकी खातिर; खुदाको राह। ईग्वरे सामुं जोवुं = ईग्वरकी कृपा-दृष्टि होना.]

ईव्यरी वि॰ ईश्वर संबंधी (२) स्त्री॰ दुर्गी; ईश्वरी (३) देवी

ईस स्त्री॰ चारपाईके ढाँचेके दाहिनी और बायीं ओर लगी दो लबी लकड़ियाँ; पाटी

ईसवी वि॰ ईसवी; ईसाका

ईसबीसन पुं०; स्त्री० ईसवी सत्

**ईसाई** वि॰ ईसाई (२) ईसाका

ईसामसीह, ईसुस्टिस्त पुं० ईसामसीह

- **ईस्ती वि॰** ईसवी
- इंट स्त्री॰ इंट
- इँटबाधो पुं० ईटका भट्ठा; पजावा ईँटाळो पुं० इंटकोहरा; ईंटका टुकड़ा (२)ईंटें बनानेका सौंचा |हुवा इँबेरी (--रू) वि० ईंटोंसे चुना, जोहा

ईराळ

ईंडाळ स्ती*र्व* अंडे लेकर जानेकाली चीटियोंनी पंक्ति (२) छोटे छोटे अंडोंका ढेर (३) बच्चोंकी वाड़; **ৰুত্ব ৰ**ত্ব জা.]

35

रतेषच्

ईं दुंन• अंडा (२) मंदिरका करूश ईंढोनी स्त्री॰ ईंडुरी; गेंडुरी; ईंडरी **ईंचफ** (--जुं) न॰ ईंधन; जलावन

ব্ত

- ड पुं० नागरी वर्णमालाका पाँचवाँ अक्षर – एक मुख्य स्वर
- उकरडी स्त्री० कूड़ेका छोटा ढेर (२) ब्याहके अवसर पर कुड़ा-करक़ट डालनेकी जगह(३)एक मलिन देवता जनरहो पुं० घूरा (२) गंदा स्थान; गदगी [ला.] व्याकुलता उकरांटो पुं० जोश; आवेश (२) उकळाट पुं० जमस (२) गुस्सा (३) संताप उकाळ्युं स॰ कि॰ उबालना (२)फ़ायदा
- करना [ला.] (३) बिगाडना (व्यग्यमें) उकाळावुं अ० फि० उवाला जाना **उकाळो** पु॰ उब्सलना (२) काढ़ा; घनिया, लौंग आदि मसालोंको पानीमें औटाकर बनाया हुआ पेय (३) ऊमस (४) कुढ़न; संताप
- जकांटो पुं० आवेश; जोश (२) उबकाई (३) अरुचि; उकताना (४)कंप; सिहरन (५) अञ्ययहुत किनारा
- उकांसण न० उकसाहट; उत्तेजना
- उकांसबुं स० कि० खोद निकालना; बाहर निकालना (२) घ्यान पर लोना; पुरानी भूली हुई बातों को याद दिलाना
- [स्रा.] (३) 'उकसाना; उभारना उकेरो पूर्व देखिये 'उकरडो '
- उकेल पुं०; स्मी० सूझ; समझ (२) रासा; हरु; सुरुझाव। -काढवा

- ⇒ निबटारा या फ़ैसला करना; उपाय बताना; सुलझाना । -पडवो = सूझना; हल होना; निबटना.]
- उकेलवुं स० कि० खोलना; उघेड़ना; (रुपेट, बट, गुत्थी, टांका आदि)(२) बाँचना (३) खत्म करना; निबटाना (४) उकेलना; खोलना; खुला करना
- **उकेलावुं** अ० कि० ' उकेलवुं ' कियाका

  - कर्मणिरूप; उकेला जाना
- उखडियो पुं० खुरचनी

जनसाट वि० जुला,

दिलाना [ला.]

उक्तरबुं (--णुं) वि० खुला (२) न० दूसरेकी बात जाहिर करना

उखरांटी पुं० घातुके पात्र परका दाग़

उखाडवुं स०कि० 'ऊखडवुं' किमाका प्रेरणार्थक रूप(२)उखाड़ना(३)पदच्युत

उलाणुं न०, (--मो) पुं० समस्या;पहेली

(२) कहावते; मिसाल; दृष्टांत

उखाळबुं स०कि० उखाड़ना(२)उकेलना;

उघेड़ना (३) भूली हुई वासोंको बाद

उत्तेर वि० जोतनेके अयोग्य (जमीन);

खराबा (२)जो परती रहा हो; वीरान

करना [ला.] (४) नाज्ञ करना

े (३)पु०;स्त्री० उखाड़ी हुई चीज़; परत उल्लेडवुं स० कि० देखिये ' उलाडवूं '

उच्चेहावुं	३७ उभारतुं
उसेंडाबुं २० कि० ' उसेंडवुं ' कियाका	उघाडवार्ड वि० जो चोरको सुगम हो;
कर्मणिरूप; उखेड़ा जाना	खुला (२) न० भाग छूटनेका रास्ता;
<b>अगटमुं</b> न० हलदी और तेल मिला	चोर-खिड्की [करना
उबटन जो वर-कन्याको लगाते हैं	<b>उघाडवास</b> स्त्री० खोलना और बंद
<b>उगम</b> पुं० उगना; उदय (२)आरंभ; मूल	<b>उघाडवुं</b> स० कि० उघाड़ना; खोलना
<b>उगमणुं</b> वि० पूरबका; मशरिकी	उषाईं, वि० खुला; जो ढॅका, बंद या
<b>उगाडवुं</b> स॰ कि॰ उपाना	भिड़ा हुआ न हो (२) जिसने ओढ़ा,
उ <b>गामवुं</b> स॰ कि॰ मारनेके लिए	पहना न हो; नंग( (३) साफ़;
उठाना; त्तानना [(२)बचत; लाभ	स्पष्ट (४) प्रकट; जाहिर∴(५)
<b>उगार</b> पुं० उबार; <b>ब</b> चाव; छुटकारा	अरक्षित । [ <b>करवुं, भारवुं</b> = खुला या
<b>उगारवूं</b> स०कि० उबारना; बचा लेना	प्रकट करना (२) जाहिरमें बदनाय हो
(२) बचत करना ['उगावो'	और सब निदा करें ऐसा करना।
उगारो पुं० देखिये 'उगार' (२) देखिये	<b>–षवुं, पडवुं</b> ≕ जाहिर होना; परदा
उगाबी पुं० उगना; फलना-फूलना (२)	खुलना (२) बदनाम होना । उषाडे
वर्षाकालमें उगनेवाले छोटे-छोटे 	चोक, उघाडे छोगे, उघाडे बारणे
पौधोंका समूह	≕ जाहिरमें ; खुले आम ; खुले खजाने.}
उघडावचुं स०कि० 'ऊघडवुं' कियाका	उचारुं पुगाहुं वि० नंगा; नंगवहंग
प्रेरणार्थक रूप; खुलवाना	उच्चकामण न०, (-णी) स्त्री० ढोनेकी
<b>उधराई</b> स्त्री० उगाही;लगान, कर्ज, कर	मजदूरी; ढुलाई
इत्यादिकी वसूली जन्म-निजने तेव जनवार जनवीलन	उत्तकावर्तुं स०कि० 'ऊचकवुं' कियाका
उत्तराणियो पुं० तलबगार; वसूलीका काम करनेवाला	प्रेरणार्थक रूप; उठवाना जन्मन एंक उत्पर जिन्ह (२) अभीतन्त्र
उघराणी स्त्री॰ उगाही (२)तकाजा	उचाट पुं॰ उचाट;फ़िक (२) अधीरता उच्चाल प्रदीक त्यार: अन्यित रोजिले
डधराणुं न॰ चंदा; फंड	उपापल स्त्री० हड़प; अनुचित रीतिसे किसी चीअको उड़ाना
उवरात स्त्री० देखिये 'उघराई'	ाकता माजका उड़ाना उच्चाळी पुं० घरका माल-असबाब <del>।</del>
उधरातदार वि० वसूली करनेवाला;	उपाळा नुए पर्यंत नाल-जर्तनाथ न [उपाळा भरवा = भर-बार खाली
तलबगार	्डमळ्य नरपा - नरपार जाला करके निकलना या भाग जाना;
<b>उछराववुं</b> स०कि० उगाहना; तहसीलना	करेक लिकरणा की मान साम समेहना कोरिया-बैंधना उठाना या समेहना
<b>उपलावर्वुं</b> स० कि० 'ऊपलवुं' कियाका	(२) चंपत होना; चलते बनना.]
प्रेरणार्थक रूप; वरयात्रा निकालना	उचेडवुं स०कि० उधेड्ना; (छाल)
<b>उघाड</b> पुं० बादलोंका हट जाना;	उत्तारना
आकाशका खुलना (२) भाग्यका उदय;	उच्चक वि० मोल-तोल किये बिना ऐसे
लाभ [ला.]। [-नीकळवो = (बादल	ही  विया हुआ, रखा हुआ या ठहराया
आदिका हटकर) भूप निकलना.]	हुंग
उघाडपगुं वि० नंगे पैर चलनेवासा	उ <b>च्चरनुं</b> स॰ कि॰ बोलना

उष्धारवुं	३८ उद्यौग
उण्वारवुं स० कि० उज्यारण करना	उजवणी स्त्री० (पर्व, तिथि, त्योहारादि)
(२) बोलना	उत्सव मनाना (२) वनभोजन
<b>उफ्यालक</b> पुं० ऊँचा उठानेका मुख्य	उजवर्षु न० वर्तादिकी समाप्तिका
सग्घन ; उत्तोलन दंड ; 'लीवर' [प.घि.]	उत्सव
जण्यालन न० ऊँचा करना; उचकाना	<b>उजवाववुं</b> स० कि० 'ऊजवबुं' कियाका
🔹 (२) लीवरकी मददसे बल लगानेकी	प्रेरणार्यंक रूप; किसी कार्यको संपन्न
एक योजना [प.वि.]	करवाना उच्चजातीय
<b>उच्छेदनुं</b> स० क्रि० उच्छेद करना	उजळिपात वि० उच्च (ऊँच) जातिका;
<b>ंउच्छेरियुं</b> वि० लावारिस; निर्वंश(२)	<b>उजागर</b> वि॰ उजागर; चंमकदार
उण्छेदी(३)न० लावारिसकी जायदाद	<b>उजागरो</b> पुं० उजागरा ; रतजगा (२)
<b>उछरंग</b> पुं० आनंद या आनंदकी उ <b>छा</b> ल	
<b>उक्ररंगी</b> वि० हर्षोन्मत्त; आनंदविभोर	<b>उजाड</b> स्त्री० बरबादी; तबाही
उछळाट पुं० उछाल; आवेग	<b>उजाडवुं</b> स॰ कि॰ उजाड़ना
उच्छामनो स्त्री॰ होड़; स्पर्धा (२)	<b>उजाणी</b> स्त्री० वनभोजन (२) जियाफ़त
नीलाम	उजाज (-स) पु० उजास; रोजनी
<b>ওভা</b> ত ধ্বী০ ওভাজ	उजाळवुं स॰ कि॰ उजालना (२)
उडाळबुं स॰कि॰ उछालना (२) ऊपर-	चमकाना; रोशन करना [ला.]
नीचे करना (शाक इ०) (३) (धनका)	उजें <b>श (–स) पुं०</b> देखिये 'उजाश'
दुरुपयोग करना	<b>उज्जद</b> वि० उजाड़; वीरान
उछाळाबंभ अ० उछलते हुए	उझरडवुं स॰ कि॰ नोचना
उकाळो पुं० उछाल; छलांग (२)	उन्नरढावुं अ०्कि० नुचना; नोचा जाना
यकायक बढ़ती (३) आवेश; जोश	उसरबो, उझेबो पुं० खरोंच; रगड़
(४) हमला (५) उबकाई । [आवबो - गजनग्र नगर	उटकटो पुं० एक वनस्पति; उत्कटा
. = एकदम उछल पड़ना; ऊँचे जाना।	उटकाम <b>क न० (बरतन)मॉ</b> जनेमें काम
मारवो=जोरसे उछलना.] उ <b>डांछळावेडा</b> पुं०व०व० उद्धत बरताव	आनेवाली चीज (२) मॉजनेकी
ज्वास्त्राव ज्वास्त्रा पुण्यवव उद्धत वरताव ज्वास्त्र्युं वि० उद्धत(२)बेहया; निर्लज्ज	मजदूरी; मँजाई
उछीतुं (गुं) वि० लौटानेकी क्षतं पर	<b>उदकाववुं</b> स॰ कि॰ मेंजवाना
मांगकर लिया या दिया हुआ;मँगनीका	उटपटं(टां)ग वि० (२) न० देखिये 'उटंग'
उछेरियुं वि० (२)न० देखिये 'उच्छेदियुं'	उटग उटटबर्च् न० उबटन
उछारम् (५७ (२) १० दाखय उच्छादयु उछर पुं०;स्त्री० पालन-पोषण;परवरिज्ञ	उटवर्षु १० उबटन उटंग वि० जटपटांग; असंगत (२)
(२) शिक्षा-दीक्षा; तालीम	पट विसिर-पैरकी बांत; गप (३)
उड़ेरबुं स॰ कि॰ पाल-पोसकर बड़ा	गण् पासर-गरको बात; गग (३) तरंग; मनकी लहर
करना (२) शिक्षा-दीक्षा देना;	परंग, मगगा अहर उटनी वि॰ मनगढत (२) गप्पी
संस्कारवान बनाना	उटना वि० देखिये 'उटंग'

चटांटियुं	३९ चतार
उटांटियुं न०, (यो) पुं० कुकुरसाँसी	डवावबुं स॰ कि॰ उड़ाना (पतंग)
उठम (व) गुंने० मृतक व्यक्तिके घर	(२) उड़ा देना; फ़जूल सर्च करना
बैठनें जानेकी एक रीति; मातमपुरसी	(३) अफ्रवाह फैलाना (४) चकमा
उठाउ, (॰गोर) वि॰ उठाईगोरा;	देना; धोका देना; उड़ान मारना
उचनका; वाँई [(३) सड़ा करना	(५)मआक उड़ाना(६)(परीक्षामें)
उठावर्षु स०कि० उठाना (२) जगाना	फैल करना । डिंडावी देवुं≕ लापता
उठामणुं न० देखिये 'उठमणुं'	कर देना (२) फ़्रेंबूल सर्च कर डालना;
डठाव पुं० उठाव ; उभार (२) ऊँचाई ;	उड़ा देना (३) (सिर, अंग) काट
उठान (३) खपत; बिकी (४)	डालना; मारे डालना; नष्ट <del>-ण्यस्त</del>
कल्पना; मनकी लहर (५) देखाव;	कर देना (सुरंग आदिसे).]
तड़क-भेड़क [सुहावना	বৰাৰ্ষু ২০ কি০ ভৱা আনা
<b>उठाववार</b> वि० असरकारक; दर्शनीय;	<b>उटरणुं</b> न० बीड़; बिड़ई
उठावर्षु स०कि० उठाना; उ <b>चकाना</b>	उडाजी, उडेणी स्त्री० ईंडुरी; इंडुवा
(२) चुपकेसे उठाकर चलते बनना;	गूंथी हुई छोटी बिड़ई
चुराना (३) (खूब) खाना (४)	उ <b>ढाणुं</b> न० देखिये 'उढरणुं'
जगाना; सोये हुएको उठाना (५)	उतरद स्त्री० एकके ऊपर एक (एकसे
खड़ा करना; तैयार करना (६)	एक छोटा ऐसे कममें) रखे बरतन
पालन करना; मानना; अदा करना	उतरबवुं स॰ कि॰ उथेड़ना (२)
(हुक्म, सेवादि)	(छाल, चमड़ी इ०) सींचना
उठावावुं अ० कि० उठाया जाना	उत्तराम स्त्री० मकर-संकांति (२)
उठावुं अ० कि० 'ऊठवुं' कियाका भावे	मकर-संक्रांति (त्योहार); खिदड़वार
रूप; उठा जाना	उतराण न० उतार; वह जगह वहसि
उठाबो ५० मनगढत या बनावटी बात (२) खपत; उठाव	नदी चलकर पार की जा सके
उठांतरी स्त्री॰ चंपस बनना;चल देना।	जतरातुं (बुं) वि∘ उत्तरका; उत्तरी
[-करबी = नी दो ग्यारह होता.]	उतरामण न०,(-णी) स्त्री० उतराई
जडताळीस वि॰ देसिये 'अडताळीस'	उतरावचुं स० कि० उतरवाना (२)
<b>ভটোৱা</b> যে বিগ বহাক; দাবুললৰ্ব	'ऊतरवुं' कियाका प्रेरणार्थक रूप
उबाउपर्यु न० उड़ाऊपन; फ़जूलसर्थी	(३) (सिर परका बोझ) उतारनेमें मदद करना
उडावर्षु स॰कि॰ देखिये 'उडाववूं' (२)	मदद करना उतार, पुं० उतार, उतराव, ढास्त (२)
उड़ाना (मक्खी, चिड़िया आदिको)	भाटा (३) (नशा, उहर, मंत्र, बराब
उडाण (	बसर, दवा इ० का) प्रभाव दूर करने
लगे; बायुवेगी (२) न० उड़ान	या उतारनेका उपाय; उतार (४) रोग
<b>उहाणकोडो</b> पु॰ उड़नेवाला घोड़ा	था भूत-प्रेतके असरको उतारनेके लिए
(२) वायुवेगी घोड़ा	सिर परसे बारी हुई सामग्री; उतारा
7 V 1	10 X 1 XW 11 XI 🖉 (11781) - O(1 (1

90	 
	• •

¥٥

उत्साह

anera	डा फार
(५) अधमाधम मनुष्य या ऐसे	उत्तरपक्ष पुं० बचावपक्ष; प्रसिवादी (२)
मनुष्योंका गुट [ला.]	মনিৰাবীকা জৰাৰ (३) কৃত্ত্বসম
<b>उतारषुं</b> स० कि० 'ऊतरबुं' कियाका	<b>उत्तरपत्र</b> न०; पुं० उत्तर-पुस्तक
प्रेरणार्थक रूप (२) उतारना (३)	<b>उत्तरवही</b> स्त्री० उत्तर-पुस्तक
खराद या चाक आदि पर चीर्जे तैयार	<b>उत्तेजन न</b> ० उत्तेजन; प्रोत्साहन (२)
करना; उतारना (४) सान चढ़ाना	उसेजना । {आपवुं, देवुं = बढ़ावा
(५) लिखना; नक़ल करना (६)	देना; भड़काना; उकसाना । <b>–मळ्यूं</b> 🖛
अहरका असर उतारना (७) पार	प्रोत्साहन मिलना.]
पहुँचाना (८) भूत-प्रेतके असरको	उत्तेजवुं स्० कि० हौसला बढ़ाना;
दूर करनेके लिए सिर परसे वारना ।	बढ़ावा देना
उतारी पाडवुं≔वात काटना; वातका	उत्वान न० उत्थान (२) उदय (३)
बीचमें खंडन करना (२) मान मंग	उन्नति; जागृति(४)उत्साह; हौसला
करनाः; हरुकी या नीची श्रेणीमें रस	(५) सहायता
देना.]	उत्मापर्वु स॰ कि॰ खंडने करना;
उतार पूं० प्रवासी; मुसाफ़िर (२)	उखाड़ना (२) (आज्ञा, नियम
(सराव, होटल आदिमें) ठहरनेवाला	आदिको) तोड़ना या न मानना
उतारो पुं० उतारा; पड़ाव; मुझाम	(३) उठाना; जगाना
(२) অবরেংগ; তব্বুর এরা	उत्पन्न वि॰ उत्पन्न; जनमा हुआ (२)
उताबळ स्त्री॰ उतावली; जल्दी	उपजा हुआ; बना हुआ (३) उगा
उतावळिम् वि० उतावला; जल्दवाज (२) अधीर [उतावला	हुआा (¥) न॰ पैदाशार; उपज
(२) मधार [उतावला उत्ताबद्धुं वि० तेख; वेगी (२) अमीर;	(५) कमाई (६) नफा; लाभ
उत्तान् विश्व किः 'अतवुं' कियाका	उत्पात पुं०उछाल;छलौग(२) घौधल;
अतम् जण्णामण् अतपु निगयामा भावेरूपः, उकठना	उभग; उत्पात (३) विथत्सूचक अपकरिपदा अपनेष (४) वियत्सूचकी
उतेब्बुं स॰ कि॰ देखिये 'उतरब्बु'	आकस्मिक घटना (४) विनाशकारी अग्राचि (अर्ह्या आदि), ज्वयान
उत्कोंग्रकोच पुं० केंद्रापसारी, कोण;	आपत्ति (भूकंप आदि); उत्पात <b>उत्पातियुं</b> : उ <b>त्पाती</b> वि० उत्पाती;
'एक्सेंट्रिक एंगल ' [ग.]	खुराक़ाती; गांत न रहनेवाला (२)
उत्तर वि॰ उत्तर; पिछला (२)पीछे	अधमी; शैतान (३) उत्पात
आनेवाला (३) -से अधिक; ज्यादा	भचानेवाला; उपद्ववी
(४) वार्या (५) पुं०; म० जवाव; उत्तर	उत्पादन न॰ उत्पादन; पैदा करना
(६) बचाव; सफ़ाई (अभियोगसे) (७)	(२) पैदावार; उपज (३) फल; लाभ
स्त्री० उत्तर दिशा (८) अ० पीछे।	उत्साह पुं० उत्साह; हौसला; उमंग
[ <b>आपमो</b> ⇔ जवान देना (२) बचावमें	(२) जानंद; हर्ष(३) तंदेही; संत।
कहना; सफ़ाई पेक करना.]	[-रेडवो = जोश पैदा करना; हौसला
वत्तरभूव पुं० उत्तरी धुव	बढ़ाना.
<b>-</b>	

85

তৰদাৰৰ্ষ্

- उपलाववुं स०क्रि० ' ऊथलवुं ' कियाका प्रेरणार्थक रूप; उधल-पुथल कर देना (२) पदच्युत करना (३) पलटना; बदलना
- उथापन न०, (--ना) स्त्री० उत्थापन; उठाना; जगाना (२) मंदिरमें देवसाका सोकर उठना (३)न मानना
- उषापर्वं स॰ कि॰ बदलना या हटा देना (२) उलटना-पलटना (३) आज्ञाका उल्लंघन करना
- उचामवुं स० कि० इघरसे उधर उठाना और रखना; बार बार उठाना(२) बिखेरना; तितर-बितर या ऊपर-नीचे कर देना (३) व्यर्थ श्रम करना (४) इधर-उधर खोजना उदबस्ती स्त्री० ऊदबत्ती; अगरबत्ती
- उदबत्ता स्त्रा० ऊदबत्ता; अगरबत्ता अवमात पुं० ऊघम; उत्पात
- उ**वमातियुं** वि०ंऊधमी; क्षरारती; उत्पाती
- **बदम** पुं० उदय; उगना (२) बढ़ती; उन्नति (३) प्रकट होना; उद्भव । [–मामचुं ≈ उदित होना; उगना (२) उन्नति होना.]
- उ<mark>वपात</mark> वि० सूर्योदयकालमें पड़नेवाली तिथि; उदया तिथि
- उदर न० उदर;पेट (२)गर्भाशय(३) कोटर; सोखला भाग (पेड़, पहाढ़का) (४) आजीविका; रोजी [ला.](५) वस्तुका भीतरी भाग । [--भरचुंझ्साना (२) गुजारा करना; पेट पास्ना.] उदरनिर्बाह पुं० आजीविका; गुजरान उदरस स्त्री० देखिये 'उघरस '
- प्**यवंशर (−रो), उदुंबर** पुं० मूलर (२) देहली (३) हिजड़ा

*কৰত*পৰ্ন্যু

उदारमतवाद एं० रूढ़िवादी न रहकर नये सुधारोंके लिए अवकाश रखने-वाला वाद; 'लिबरलिज्म' उदास वि० उदासीन; निरपेक्ष; सटस्थ; वेगरवाह (२) विरक्त; विषयवासनाकी इच्छासे रहित(३) ग्रमगीन; उदास; तटस्थ; निष्पक्ष **ৰি**ন্ন उहासीन वि० उदासीन; विरक्त (२) उबाहरण न० उदाहरण; भिसाल। [–आपवुं, देवुं = मिसाल देना । - सेबुं =सबक लेना; दृष्टांत परसे सीख लेना; समझना.] **टक्<b>गार** पुं० उद्गार; बोल्ल; शब्द । (--काढवो = उच्चारण करना; बोजना (भाव या 'लागणी 'के साथ).] **उद्गारचिह्न** न० आश्चर्यचिह्न; '!' उब्बाटन न॰ उद्धाटन; सोलना (२) स्पष्ट करना; समझाना (३) स्रोलनेका साधन (कुजी वगैरह) (४) रहेंट **उब्धाटनक्रिया** स्त्री० उद्घाटन-विधि उद्देश पुं० उद्देश; हेतु; इरादा उद्देशवुं स० कि० नाम लेकर या लक्ष्य करके कहना [उद्देश्य व्या.] उद्देश्य वि० उद्देश्य; लक्ष्य (२) न० उद्देवयवर्षक न० उद्देवयवर्धक [ब्याः] उद्वारवुं स॰ कि॰ उद्वार करना. उद्भववुं अ० कि० उत्पन्न हरेगा उद्योग पुं० उद्योग; पेशा; व्यवसाय (२) कामकाज; उद्यम (३) मेहनत; अम उद्योगमंत्रो पुं०उद्योग-भंषा;काम-काज; स्त्री० उद्योगशाला रोज्रगार उद्योगमंदिर न०, उच्चोगज्ञाला (-ळा) चषडकर्षु अ० कि० (हृदयका) धड्कना; कांपना (२) सोते सोते यकायक जाग उठना; उझकना


उपयोग

	** ******
उषमात पुं०, (सियुं) वि० देसिये	उथेई स्त्री० दीमक
'उदमात' आदि	<b>उघेडवुं</b> स० कि० देखिये 'उचेडवुं'
उपरस स्त्री० खाँसी। [आववी ==	उष् <b>भव</b> ं वि० देसिये 'ऊषड'
रूसी आना । <b>-सावी</b> = सॉसना ]	उनामणियुं, उनामणुं(ना')  न० नहानेका
उचान न॰ ऊँचे चढ़ना (२)दमा (३)	पानी गरम करनेका पात्र
बड़ा ज्वार (समुद्रके जलका)⁻(४)	<b>उनाळु</b> (ना') वि० गरमियोंमें बोयी
पशुओंकी संभोगको इच्छा (५) तीनको	जानेवाली या तैयार होनेवाली; चैती
संख्याका व्यापारियोंका संकेत ।	(२) ग्रीष्म-संबंधी; ग्रीष्मकालीन
[चडव्रुं ≕ बड़ा ज्वार आना (२)	उनाळो (ना') पुं० गरमीका मौसम;
दमेका हमला होना.]	गरमी
उषामो पुं० प्रयत्न (२) मिथ्या दौड़-	उन्मनुं वि० उन्मना; अघीर; आतुर
धूप। [-करवो = बहुत दौड़-धूप	(२)खिन्न;अनमना [उपजाऊ
करना; महा प्रयत्न करना.]	<b>उपजाउ</b> वि॰ उत्पादक (२) जरखेज;
उचायेलुं दि० दीमकका खाया हुआ	<b>उपकार</b> पुं० उपकार (२) मदद;
उमार वि॰ उधार (२) चुकता न	सहायता (३) एहसान । [ <b>-चडचो</b> =
किया हुआ (३) गया-बीता; निकृष्ट;	एहसानमंद होना । <b>मानवो =</b> एहसान
बोझ-सा [ला.]। [करवं ≕नाम पर	माननाः]
लिसवाकर खरीदना; कर्ज करना।	उपजाथवुं स० कि० 'ऊपजवुं' कियाका
<b>—लेब्</b> ं <mark>≕</mark> पैसे बाक़ी रखकर माल	प्रेरणार्थक रूप (२) मनसे उपजाना;
सरीदना.]	बनानाः, गढ्ना
<b>उषारनोंध</b> स्त्री० उधार बेचा हुआ माल	उपटण (-र्षु) त० उबटन
लिखनेकी बही; उधार नोंधवही	उपडाई स्त्री०, (-मण) न०, (-मण)
<b>उभारपासुं</b> न० वहीका यह भाग जहाँ	स्त्री० उठानेकी उजरत; उठौनी
खर्चकी रॅकमें लिखी जाती हैं; खर्चबाजू	<b>उपडाववूं</b> स० कि० ' उपाडवुं', 'ऊप-
उषारवही स्त्री० देखिये 'उधारनोंव "	डवुं 'की प्रेरणार्थक किया
जवारवुं स०कि० नामे लिखना; सर्चमें	उपगाववुं स० कि० ' ऊपणनुं ' कियाका
लिखना	प्रेरणार्थक रूप ओसानेमें मदद करना
उषाराषुं अ० कि० ' उघारवुं ' कियाका	उपसंत्री पुं० सहायक संपादक
कर्मणि रूप; नाम पर लिखा जाना	<b>उपदेशकुं</b> सं० कि० उपदेश देना
जघारियुं दि० बार बार उधार	उपनगर न० उपनगर
पर खरीदनेवाला	उपमंत्री पु० उपमंत्री; सहायक मंत्री
उषाई वि० देखिये 'उधार'	उपयोग पुरु उपयोग; काम; व्यवहार;
उषारो पुं० उधार या सर्चका हिसाब	प्रयोग (२) जरूरत; उपयोग (३)
(२) वादा (३) विलंब; डिलाई	ध्यान; सतर्कता (जैन)। [-सेबो =
(४ <u>)</u> घाटा	काममें लेना; इस्तेमाल करना.]

उपयोगिता

ХŚ

র্বন্দ্রাল

उपयोगिता स्त्री० उपयोगिता
<b>उपयोगी वि० उपयोगी; काममें</b>
आनेवाला; कार-आमद
उपर अ० ऊपर (२) ऊँचे; नीचेका
उलटा (पद, स्यान, कम आदिसे)
(३)-से ज्यादह; अलावा; अतिरिक्त
(४) (-से)आगे; ऊँचे दरजेमें (५)
आगे; पहले; पूर्व (६) - के सहारे;
-की वजहसे (७) बारेमें; -की
—की वजहसे (७) वारेमें; —की बाबत (८) किनारे पर। [ <i>⊶</i> आवुं
=जात या स्वभाव पर जाना।नीचे
<b>मवूं</b> ≕ अधीर बनना। <b>वेसवुं,ने</b>
<b>उपर बेसवुं</b> = निगरानी रखकरे काम
लेना (किसी व्यक्ति या कामकी)।
<b>−ने उपर राख्युं</b> ≕अपना पल्ला नीचे
न पड़ने देना (२) खूब दुलारना।
करना (२) कुचलना ।पडवुं =
प्रतियोगिता या होड़में उतरना (२)
काम बिगाड़ना; रुकावट डालना (३)
-के आसरे जाना; वोझ बनना (४)
रूप, गुण आदिमें मिलता-जुलता होना;
उदा० 'ए एना बाप उपर पडधो छे' ।
<b>–रहीने =</b> जान-बूझकर.]
<b>उपरउपरथी</b> अ० ऊपर-ऊपर; बाला-
बाला (२) ज़रा-ज़रा
उपरउपरनुं वि० ऊपरी; दिखाऊ
<b>उपरचोटियुं, उपरछ</b> लुं (स्लुं) वि०
ऊपर-ऊपरका; छिछला; दिखावटी
<b>उपरटपके</b> अ० ऊपर-ऊपर (२)
हिसाय-बहीमें चढ़ाये बिना
उपरणी स्त्री० ओढ़नी; छोटा उपरना
उपरणुं न०,(-णो)पुं० उपरना; दुपट्टा
उपरबंट स्त्री० अनधिकार बड़े अधि-
कारीका भाव जताना(२)उल्लंघन;

(३) বি৽ अवगणना বিষ্ত্র: अवगणना करनेवाला (४) बढ़ेचढ़े ऐसा; सवाया। [-जवं,थवं=अवगणना करके काम करना.] उपरवटणो पुं० खरलकी मुसली; बद्रा **उपरवाड** स्त्री० घर, मुहल्ले या गौवके पासका हिस्सा उपरबास अ० पानी या पवनके बहाबकी उलटी दिशामें ; उजान उपरवास पुं० बालासानेमें रहना उपराज्पर, उपराड(-छा)परी ब॰ लगातार; एकके बाद एक उपराणुं न० पक्ष लेना; तरफ़दारी उपरामणी स्ती० दो चीजोंके अदल-बदलमें मल्यका तफ़ावत जो अधिक देनेका हों; फ़र्फ़ उपराळुं न० देखिये 'उपराणुं' उपरांत क० ज्यादा; अधिक (२) अतिरिक्त; सिवा;(इसके) अलावा (३) वाद; जपरसे; उपरांत उपरी पुं० बड़ा अधिकारी; बड़ा अफ़सर (२)वि० ऊपरी बिर्ताव उपरीषणुं न० बड़ा अफ़सर हो ऐसा उपर्व दि० तिरछा; पहलुके बल (२) खडा; उदा० 'साटलो उफरो करवो' उपलक वि० ऊपर-ऊपरका (२) फ़ालतू (३) हिसाबबहीमें नोंध किया हुआ मगर किसी खास खातेमें नहीं चढाया हुआ; उर्चत। [--मांडवुं, राखवुं = किसी खास खातेमें चढाये बिना बहीमें दर्ज कर लेना या नोंघ करना.] उपलक्तियं वि० छिछला:ऊपर-ऊपरका: दिखातेका उपलाज वि० उपरका; उपरके हिस्सेका

(२)न० ऊपरका हिस्सा था बाबू

ৰন্ধনুঁ 👘	४४ .जनग
उपलुं (लुं,) वि॰ ऊपरका (२) ऊपर	पीड़ा या संझटकी स्थितिमें आ पड़ना।
आया हुआ; उपरोक्त	मां पडवुं = मुसीबतमें फॅसना;
उपसंहार पु॰ उपसंहार (२) सारांश;	आफ़त मोल लेना.]
निचोड़ (३) सार-संक्षेप; उपसंहार	उपार्जन न०, (-ना) स्त्री० उपार्जन;
अपसागर पुं० उपसागर किलाव	प्राप्ति; कमाई
<b>उपसाट</b> पुं॰ उभार (२) सूजन-(३)	ज्यासण न० (भूले हुए या ठंडे पड़े हुए
उपसाववुं स० कि० ' ऊपसंसुं ' क्रियाका	मामलेको) फिरसे उकसाना; उकसाहट
प्रेरणार्थंक रूप(२)उभारना(३)फुलाना	उफरां वि० देखिये 'उपरं'
उपस्थित वि० उपस्थित; मौजूद;	<b>उफांत (द)</b> स्त्री० अहंपद; गर्व (२)
हाजिर (२) सामने आया हुआ	अमीरीका आइंबर (३) उड़ाऊपन;
उपाड पुं० सूजन (२) फैलाव (३)	फ़िजूलक्षभी
मोटापा (४) जोश (५)आरंभ (६)	<b>उबळक वि</b> ० हिसा <b>ब</b> बहीमें किसी खास
कोशिझ; यत्न (७) जमा रक़ममेंसे	खातेमें नहीं चढ़ाया हुआ; उपंत
बापस लेना (८) वापस ली हुई	<b>उबाट</b> पुं <b>० फ</b> फूंदी (२) उबसनेसे जमने-
रकम (९) खपत; मांग	वाली फर्फूदी या होनेवाला परिणाम
उपाडवुं स० कि० ' ऊपडवुं ' कियाका	<b>उवाडियुं</b> न० लुआठी; लूका
प्रेरणार्थक रूप; ऊँचा करना; उठाना	<b>उचावुं</b> अ० फि० फर्फूदी जमना;
(२) (किसीके)ऊपर लेना; जिम्मे	उबसना; सङ्ना
लेना; अंगीकार करना; मोल लेना	उवाळो पुं० ऊमस (२) उफान; जोश
(३) जड़-मूलसे उखाड़ना (४) रखी	(३) उकसाहट; उत्तेजना (४)
हुई रक़म वापस लेना (५) उचकना	होहल्ला; कोलाहल (५) ईंधन;
(६) आरंभ करना; शुरू करना	उपले (६) (एक साथ जलाया जाय
अपाडावुं अ०कि० ' उपाडवुं ' का कर्म-	इतना) मुट्ठा। [आवणो = उफननाः
णिरूप; उठाया जाना	<b>उबेर</b> स्त्री० हुलमें फाल बिठानेके लिए
उपाडो पुं० देखिये ' उपाड' (२) झाड़-	लगाया आनेवाला पच्चड; खुक्र
संसाड़ काटकर किया हुआ ढेर	उबेलो पुं० मरोड़के साथ दस्तको
उपादेय वि० उपादेय (२) स्वीकार्य	हाजत होता (२) मरोड़ा; आमशूल
(३) पसंद करने योग्य (४) उत्तम;	उनेळवुं स० कि० बट या ऐंठनको
सराहनीय उपाधि स्त्री० उपाधि; पीड़ा (२)	खोलना (२) बोया हुआ खेत फिरसे
जंजाल; संसट; चिंता (३) चिह्न;	ओतना; उल्ल्टना (३) गई-गुज़रीको — —
पजाल, संशट, विता (२) विह्न, संज्ञा (४) खास लक्षण; गूण-धर्म	याद करना उभइ(–डू)क वि० घुटनोंको मोड़कर
(५)पदवी; 'डिग्री'(६) खिताब (७)	अधा लड़ा रहा हुआ (लड़े बल)
अल्ल । (-वळपबी = बला पीछे	अत्या सड़ा रहा हुआ (सड़ बल) (२) उकडूँ बैठा हुआ
लगणा। —मां आवर्य, आवी पडवुं ==	(२) उभकू पठा हुना <b>उभय वि० उभय;</b> दोनों
જાવવા તે – જેવે આપવું આપવા વહેવું –	তমনা । শুদ ও যাব। দু গোবা।

 $i \sim 1$ 

उभयस्वयी	४५ उक्तासिम्
उभयाम्बनी वि० उभयान्वयी; समु-	उमेदचार विक उम्मीदवार; अपेका
ञ्जयबोधक [ब्या.]	रसनेवाला (२) पुं० उम्मीदवार;
उभरच न० उफान (२) खमीर उठना	नौकरीका प्रार्थी था नया काम
<b>उभराट</b> पुं० उफान	सीखनेवाला
उमरामण न० उबांल; जोश (२)	<b>उमेरवारी</b> स्त्री० उम्मीदवारी
उफनकर बाहर निकला हुआ पदार्थ	उनेरण न० और बढ़ाना; वृद्धि करना
उभाळ वि॰ खड़ा हो ऐसा; सीधा	(२) जामन
कपुरको उठा हुआ (२) ढलवाँ (३)	उमेरणी स्त्री० और बढ़ाना; वृद्धि करना
হসী০ বর্ব	(२) बढ़ाकर बात करना; बढ़ावा [ला.]
<b>उमेळवुं</b> स०कि० देखिये 'उबेळवुं' (२)	उमेरवुं स॰ कि॰ और रखना, डालना,
घानकी इस तरह कुटाई करना कि	उँडेलना, बढ़ाना (२) मिलाना; जोड़ना
सिर्फ़ उसके छिलके निकल आयें	(३) उसकाना; भड़काना [ला.]
उमदा (-वुं) वि॰ उम्दा; अच्छा;	<b>उमेरो</b> पुं० बढ़्तीः; वृद्धि (२) मिलावट
बढ़िया (२) कुलीन; खानदानी(३) कीमती	उरफे अल्उर्फ़; अथवा
कामता उमर स्त्री० उमर; उम्र। [थवी =	उरस पुं॰ उसे (२) शादीका भोज
बुढापा आना; उम्र ढलना। –सामुं,	उरावनुं स० कि० देखिये 'उडाडवुं'
्रुप्रात जात, उन्न इस्तान सातु, (मे) जोवुं = बड़ी उम्रका खयाल	<b>उरांगछटांग</b> पुं० ओरांग-उटांग
करना, उसकी कई करना। उमरे	<b>उरेफ-बंडी</b> स्त्री० औरेबदार बंडी —र्-्-्
पहोंचवुं == वयस्क होना.]	उर्बूस्त्री∘ उर्दूभाषा (२)इस भाषाकी लिपि
उमरेडुं न० उदंबरका फल; गूलर	उर्फ (फें) अ० देखिये 'उरफे'
जमरबों पुं० उदुंबर; गूलर (पेड़)	उलटायवुं स०कि० उलटना; औँधाना
उमरलायक वि० उमरलायक; वयस्क	उलंघवुं स० कि० लाँघना; फौंदना
<b>उमराव</b> पुं० अमीर; रईस(२)श्रीमंत	(२) अनादर करना; उलंघना [प.]
<b>उमळको</b> पुं० हुलास ; दुलारको उमंग ।	जलाळ(ला') ति० उलार; ओलरता
[आणवो, लाववो = प्यारका भाव	(२) पुं० गाड़ी आदिका पीछेकी
अपनेमें जगाना; हुलसना । –आषवो	ओर अघिक बोझसे झुकना । [ <b>पडवो</b>
≕ दिलकी कली खिलना.] [चाय	च उलार होना.]
उमंग पुं० उमंग; हुलास (२) आनंद;	<b>उलाळवुं</b> (ला')स०कि० उलार हो <b>ऐसा</b>
उमंगी वि० उमंगवाला; हौसलामंद	करना (२) उछालना (३) अधकीच
<b>उमाह(-डियुं)</b> न०, <b>(-डो)</b> पुं० देखिये	छोड़ देना (४) लेन-देन बंद करना;
'उबाडियुं '; रुुआठा	दिवाला निकालना
<b>उणिया</b> स्त्री॰ उमा; पार्वती	उल्लाळियुं(ला′)न० उलारनेकी किया ।
जिनियांबर पुं० उमापति; महारेव	[कद्दुं क् बीचमेंसे बंद करना (२)
उमेब स्त्री० उम्मीद (२) इच्छा	दिवाला निकालना.]
167	

जन्माळियो	४६ उल्ताबी
बलाळियो (ला')पुं० उलारनेकी त्रिया	उनेसवुं स० कि० उपेक्षा करना (२)
(२)देखिये ' उलाळो '(३) स्त्रियोंका	अनादर, अवहेलना या तिरस्कार
एक गहना (४) दिवाला निकालना	करना
(५) विनाश। [-करवो = देखिये	उवेसावुं अ० कि० उपेक्षित होना
' उलाळियुं करवुं '.]	<b>उद्योक्तुं (सुं)</b> न० तकिया
<b>उलाळो</b> (ला') पुंध्य किवाड़में पुराने	<b>उन्ने(ते)टवं</b> स॰ कि॰ (तिरस्कारमें
ढंगकी लकड़ीकी खड़ी सिटकिनी (२)	या लापरवाहीसे) फेंकना
उबकाई; उछाल	उइकेरणो स्त्री० उत्तेजना; उकसाहट
<b>उलेम (-मो)</b> (ले') पुं० रूमाल;	<b>उक्केरवुं</b> स०कि० उत्तेजित करना;
गरमीसे बचनेके लिए रखा जाता	भड्काना (२) उकसाना; उभाइना
गीला केपड़ा (२) चंदोवा	उइसेराट पुं० आवेश; उकसाहट
<b>उल्लेचनियो</b> (ऌे')पुं० उलीचनेका पात्र ;	<b>उक्केरावुं</b> अ० कि० आपेमें न रहना;
डोई (२) उलीचनेकी एक तरकीब	उत्तेजित होना
उलेखबुं स०कि० उलीचना	<b>उष्णकटिबंध</b> पुं० उष्णकटिबंध
<b>उलेचावुं</b> अ० कि० उलीचा जाना	उष्णतामान न० तापमान; 'टेम्परेचर'
<b>उल्लसवुं</b> अ०कि० देखिये ' उल्लासवुं '	उष्मा स्त्री० उष्मा ; गरमी (२) सहारा
उल्लंघन न० उल्लंघन; लैधना	(३) भाष
(२) (आज्ञा, नियम) तोड़ना;	उष्मामान न० तापमान; 'टेम्परेचर'
अनादर करना; विरुद्धाचरण करना	उष्मामापक न० तापनापक; 'थरमा-
(३) अपराध	
उल्लंघवुं स० कि० देखिये ' उलंघवुं '	<b>उसरडवुं</b> स०कि० बटोरना (२) झाड़-
उल्लास पुं॰ उल्लास; हर्ष (२)	बुहारकर (फेंक देनेके लिए) कचरा
प्रकाश (३) प्रकरण; उल्लास	इकट्ठा करना
उल्लासवुं अ० कि० हुलसना; उल्ल-	<b>उसरडो</b> पुं० बटोरन; झाड़-बुहारकर
सित होना (२) पुलकित होना (३)	इकट्ठी की हुई वस्तु (२) तबाही
चमकना	उसेटवुं स०कि० देखिये 'उशेटवुं';फेंक
<b>उल्लु वि०</b> उल्लू; मूर्ख। [ <b>वनवुं</b>	देना
= मूर्ख समझा जाना; मूर्खोंमें शुमार	उसेटावुं अ० कि० फेंका जाना
होना.]	उसेडवुं स० कि० देखिये ' उसरडवुं '
उल्लेखवुं सं० कि० लिखना; सोदना	उस्ताद वि० उस्ताद; होन्नियार (२)
(२) उल्लेख करना; निर्देश करना	पुं० गुरु (३) शिक्षक; उस्ताद;
(३) बयान करना	आचार्य; तज्ज्ञ
उबटण न॰ उबटन (२)लेप या मालिश	उस्ताबी वि० उस्तादके ढंगका (संगीत)
करना(३) मॉंजनेके काम आनेवाली	(२) स्त्री० उस्तादी; होशियारी
वस्तु	(३) चालाकी; धूर्तता

उंदर

**४**७

उंदर पुं० चूहा; मूस |दान उंदरकणियुं न०, उंदरकणी स्त्री० चूहा-उंदरबी स्त्री० चुहिया; मूषा उंदरबो पुं० चूहा (२)मूषी;बड़ा चूहा उंदरबाई स्त्री०, उंदरियुं न० चूहादान उंदर पुं० देहली; चौखट

- क्रथअबु उंबर पुं० उदुंबर; मूलर उंबरें न॰ गूलर (फल) उंबरो पुं० उदुंबर; गूलर उंबरो पुं० चौसटकी नीचेवाली लकड़ी; देहली उंबी स्त्री० ऊमी; जौ-गेहूँकी बाल
- ক
- ऊ पुं० देवनागरी वर्णमालाका छठा वर्ण-एक स्वर
- <mark>ऊकटो</mark> पुं० उठी हुई आँखकी एक दवा **ऊकडुं** वि० देखिये 'उभडक'
- उन्नरुखुं अ० कि० उकलना; खुलना; सुलझना (गुत्थी, डोर, लपेट, ऐंठन आदि)(२)(अक्षर या लिखा हुआ) पढ़ा जाना (३) सधना; काम पूरा होना
- उक्क्ळॉबदु न० वह सापमान जिस पर पदार्थ खौलने लगे; 'बोइलिंग पॉइन्ट' [प. वि. ]
- उकेळवुं अ० कि० उबलना; खौलना (२) उबल पड़ना; गुस्सा होना
- असंबर्धु अ० कि० उखड़ना (२) जड़-मूलसे अलग होना; हटना(३)गुस्सा हो जाना; आपेसे बाहर हो जाना [ला.] (४) बहक जाना; आवारा होना। | उस्तदी जखुं स्तबाह हो जाना; दुर्दशा होना। उस्सदी पढ्युं ≈गुस्सा हो जाना.]
- अस्सदेल वि० गुमराह; बहका हुआ असर वि० रेहुआ (२) स्त्री० ऊसर असळ न०, (-ळी) स्त्री०, (-ळुं)न०, (-ळो) पुं० असल; ओसली

- क्रगट स्त्री० खड़े पहियेके आगे या पीछे रखी जाती आड़;टेउकी(२) उबटन; बटना
- जगटो पुं० देखिये 'जकटो '
- क्रगम पुं० उगना; उदय (२) उत्पत्ति-स्थान; उद्गम (३) शुरू; आरंभ क्रगरवुं अ० कि० उबरना; बचना (२) नाकी उदनर
  - (२) बाकी रहना
- **क्रगवुं** अ० कि० उगना; अँखुआना; (बीजका) अंकुरित होना (२) (सूर्य, चंद्र) उगना; उदय होना (३) (मनमें)उठना; उपजना (४) फल्डदायी होना; परिणाम आना (त्रा.]। [**ऊगता सूरजने पूजवुं** = उन्नतिशील पक्षमें रहना;लाभकी ओर जानेकी वृत्ति रखना। **ऊगवुं तेवुं** आ**धमवुं** = सुबहसे शाम तक परि-स्थितिमें कोई फ़र्क़ न आना; सावन हरे न भादों सूखे। **ऊग्या आयम्धानो खबर** = दुनियादारीकी समझ या खयाल; सामान्य समझ.]
- **ऊघडवुं** अ० कि० उघड़ना; खुलना (२)खिलना (फूल, कली); (नसीब) खुलना [ला.] (३) (रंग, आसमान इत्यादि) निखरना; साफ-स्पष्ट होना

(६)धनसे सुखी। [ डजळां थणकांनुं ⇔नेक क़दम; शुभ सगुनवाछा। ऊजळे छगडे = आवरूके साथ; बिना

जनळुं (०कट), (०फटाक), (०वम), (०वग जेवुं) वि० एकदम सफ़ेद जसवबुं स० कि० त्याग करना; छोड़ना

अन्दकचुं स० कि० मांजना अन्दकायुं अ० कि० मांजा जाना अन्दोकूटो पुं० अनाजको कूटकर फट-कनेके बाद रहनेवाले छिलके; भूसी उन्ठ (--ठु) वि० साढ़े तीनगुना उन्ठवेस स्त्री० उठ-बैठ (२) उठने-बैठनेकी कसरत; उठा-बैठी (३) एक प्रकारकी सजा (४) बार बार उठना और बैठना (बेक़रारी या घबड़ाहटसे)

_	_		-	-
-		~		

बदनामीके. |

রচন্দির

Total
(४) नये सिरेसे सुरू होना; स्के
हुए कामका जारी होना; सुरुमा
(स्कूल आदि)
अध्यसम् अ० कि० घोड़ी चढना (२)
बदनाम होना (कटाक्षमें)
<b>ऊचन</b> अ॰ देसिये 'उच्चक'
अधकर्षु स॰ कि॰ उठाना; ऊँचा
करना; सिर पर रख लेना (२)
उलाहना देना; धमकाना [ला.]
কৰকাৰে অত কি০ ততাযা जানা
जबको स्त्री॰ हिचकी
<b>ऊचकुं</b> वि॰ मॅंगनीका (२) नादार
<b>ऊचक्को</b> पुं० उचक्का (२) ठग
<b>कथमूथ</b> अ० अचानक [देना
कची जबुं अ० कि० दूध देना बंद कर
उछरवुं अ० कि० पलना
उक्क के कि॰ उछलना (२)
जोश मारना (३) छलौग भरना;
उछलना (४) घड़ाघड़ चलना (लाठी,
तलवार, बस्तु इत्यादि) (५) सूब बढ़ जाना (चीडोंके दाम)
बढ़ जान। (चाक्सक दाम) जन्म जिन्न नेकिस्टों (जन्मक //जीवरण)
जजह वि॰ देखिये 'उज्जह ';वीरान जन्मन संस्कृत (कर्यातन) जन्मन
कंजवबुं सं०कि० (वतादिका) उद्यापन
करना (२) उत्सव मनाना (३) बदनाम करना (करामप्रों) । कर्णलकर
करना (कटाक्षमें) (कर्मणिरूप उत्तरहाई २० कि. (उत्तरहाँ ) किणासा
<b>ऊजवाषुं</b> अ० कि० ' ऊजववुं ' कियाका <b>ऊजळाई</b> स्त्री० चमक; उजलापन (२)
क्वच्छता (३) संस्कारिता (४) धन-
संपत्तिसे पूर्ण होनेका आडंबर
<b>ऊवछाट</b> पुं०, <b>(-मण)</b> स्त्री०; न०, ( <b>-</b> धा) स्त्री० उजलापन
(म्थ) रशेष उपलाग <b>उपल</b> ुं वि॰ उपला; सफ़ेद (२)
जजागर: चसकटार (3) निर्मल
उजागर; चमकदार (३) निर्मेल; स्वफ्छ (४) उच्च वर्णका (५)
(a,b) = (A,b) = (a,b) = (a,b)

अच्छे चलि-चलनवालाः सदाचारी

**उठव्रं** अ०कि० उठना; खड़ा होना(२) जागना (३) चौकन्ना – सजग होना; उद्यत होना था उठ खड़ा होना (४) अचानक उपस्थित होना; आ पड़ना; टूट पड़ना (दंगा, आँधी) (५) कार्य ख़त्म करके उठना (सभा, अदालत) (६) खिलना; निखरना; बराबर (৩) खुलना ; दिलसे उभरना उतरना; मन फिर जाना। **किठ** पहाणां पग पर = अपने ही हायों अपना खराब करना । अठतां बेसतां उठते-बैठते; हर वक्त। ऊठी जवं = चला जाना (२)(शाला)छोड् देना (३) दिवाला निकालना; तबाह होना (४) मर जाना। **ऊठीने बेठुं** थवुं = बीमारीमेंसे अच्छा होना. ] जठबेठ स्त्री० सेवा-टहलमें हरदन हा-जिर रहनेसे होनेवाका श्रम (२) बह श्रम जो बेगार-सा लगे

রকা	84	ऊलरबुं
कठा न०व०व० साढ़े तीनका पहाड़ा; हूँठा। [गणाववां, भणाववां = भर-	ऊ	डेल (लुं) दि० चंचल वृत्तिका (२) बहका हुआ
माना; घोखा देना; छलना.]		डण न० इंडुवा; बिहई
अडकर्षु,अडकार्षु देखिये 'उटकर्बु' आदि		ज वि० ठन; न्यून; अघूरा (२) स्त्री०
जरमूब अ० अंघाधुंघ; विना सोचे-	:	कमी; न्यूनता ें 🏅 🔪
क्चिरे; आँखें मूँदकर	35	णप(म) स्त्री० न्यूनसा; कमी
जडमूडियुं वि० अवार्षुघ; विचारहीन		(२) अपूर्णता (२) धोष; बुराई
(२) वैसे कार्य करनेवाला; अंघा	3	णुं वि० अपूर्ण; कम; अधूरा
<b>ऊडण</b> वि० उड़ाकू; उड़नेवाला (२)	3	तडवुं स॰ कि॰ देखिये 'उतरडवुं'
छुतहा; संकामक (३) साघारण		तरचड स्त्री० चढा∺उतरी
तापमान पर उड़ जानेवाला (तेल		<b>तरवुं अ० कि० उतरना (२)</b> यिरना;
आदि); 'वोलेटाइल' [र. वि.]		घटना; कम होना (वस्तुक्योंके भाव)
<b>जडणखाटली</b> स्त्री० उड़नखटोला; बैलून		(३) (गुण, स्थिति, स्वभावमें)
<b>अडणघो</b> स्त्री० चंदनगोह		हलका पड़ना; बिगड़ना; खानेकी
<b>ऊदणघोडो</b> पुं० उड़नघोड़ा		वीजोंका बिगड़ना; औसना (४) तौलमें
<b>ऊडणपावडी</b> स्त्री० पवनपादुका		ठीक उतरना (५) होना; उपजना;
<b>ऊडमूड</b> अ० यकायक; चुपकेसे		गना (फ़सल) (६) ठहरना; मुक़ाम
क्वब् अ॰ कि॰ उड़ना (२) तेज		करना (७)हूबहू बनना (नक़ल, छबी)
चलना; दौड़ना (३) फीका पड़ना		(८) (स्पर्धा, नाटक आदिमें)शरीक
उड़ना (रंग आदि) (४) भागना;		होना (९) (किसी अंग या हड्डीका
छू होना (५) बिकना ; खपना (वस्तु,	e A	अपने स्थानसे हटना; उस्तड़ना (१०)
माल आदि) (६)फैलना (७) (किसी		ग्रह या दशाका) योग समाप्त होना;
पर) आक्रमण करना; टूट पड़नाः		प्रसर हटना (११) लज्जित होना;
(८) (परीक्षामें) असफल रहना।	•	नुंह लटक जाना (१२) (रंग) घुल 
[ <b>ऊढता काग पाडे एवूं</b> =चकोर;बा-	e _	त्राना (१३) (मन, हृदय, घ्यानमें)
हो़्श; कैसे भी पार पाये ऐसा; घाघ		ठीक जमना; बैठना; खयालमें आना;
(२) शरारती; उत्पाती। <b>कडीने</b>		भाना; घर करना; जगह करना (nx) (चर) चर्नाः जिल्लान
आं <b>से ्वाप्तवुं</b> ≕ एकदम सुंदर लगना ;		(१४) (बाल) झड़ना; निकलना (१५) एक्सि, सार स्वार, जिल्ला
आँखमें बसनाः ]		(१५) स०कि० पार करना; पार जनना/जनी एक भारति । जिल्लाना
<b>कडसूड</b> अ० बिना सोचे-समझे; बिना		उतरना (नदी, पुल आदि ) । [कतरतां प्राणी – कम होना जान्य होन
इत्तेला दिये		राणी ≕ कम होता जाता जोझ, गैसचर कोर का जिल्ला (२) जनन्त
<b>कडाऊड (डी)</b> स्त्री० बार-बार उड़ना राजी स्त्री- उजी-प्राय्वकंपनी एक क्यायन		हौसला, खोर या स्थिति (२) बुढ़ापा । स्वरी अवं - गमना पर औपपन
<b>कडी स्त्री</b> ०उड़ी;मालखंभकी एक कसरत राजे कई - भागले कार्य तकार्य जात		ज्रतरी जबुं = सड़ना या औसना (२) श्रीक जनरना। इन्ही कर्न
<b>केंडी जबुं</b> = भाषके रूपमें हवामें उड़		(२) ठीक उतरना। <b>कतरी पडवुं</b> - जल्दी जवरना (२) असमा कोस्ट
जाना (गंध, कपूर, स्पिरिट आदिका)	-	= अल्दी उतरना (२) शुस्सा होकर
गु. हि-४		

. . . .

•	
- <b>1</b>	
911119	

#### ऊपसांषुं

लड़ने पर उतार होना; आपेसे बाहर	जन्म
होना; डॉंटना; (३) उलहना देना ]	- अनुं (
<b>उत्तरावुं</b> अ० कि० ' उत्तरबुं ' कियाका	ज्य
भावेरूप; उत्तरा आना	स्त
उत्तरेलुं वि० निकृष्ट; उपयोगमें से रद्	भय
किया हुआ (कपड़ा वग़ैरह); उत-	प्रस
रन; 'सेकंड हैन्ड'	=
उत्तवुं अ० कि० हवा या पानीके असरसे	दुख
(लकड़ीका) ऐंठ जाना; उकठना	कपज
कतळुं वि० उथला; कम गहरा	आ
जगल्यायल वि० उलट-पलट;परिवर्तित	ऊपउ
(२) स्त्री० उथल-पुयल	( :
क्रथल (-ला) वुं अ० कि० औँघा होकर	आ ऊपज
गिरना; उलटना	জপত বন
कमलो पुं० पलटा; पलटा साना(२)	(1 (1
अच्छा होनेके बाद फिर रोगका	् । होन्
आकमण होना; दौरा (३) कवितामें	. मि
छंदांतर सूचित करनेवाला पद्य (४)	ऊपर
प्रत्युत्तर । [खावो = उलटना ; औँघा	ऊपर
या उलटा होना (२) बीमारीमें से	अपर
उठकर फिर रोगप्रस्त होना। –	(1
मारवो≕ पलट देना; नीचेका भाग	े. का
ऊपर करना (२) पलटा खाना; उलट जाना.]	છ્
उल्ला पाताः] जवबती स्त्री० ऊदबत्ती; अगरवत्ती	ত
कर्बु वि० बैंगनी; ऊदा	चु
<b>जगु</b> (19 पाए) जार <b>डगई</b> स्त्री० दीमक	पैर
जयह वि॰ मोल-तोल किये बिना ऐसे	स
ही दिया, लिया या अंदाजसे ठहराया	(a
हुमा (ऐसी दर, नाप, खरीद)	ऊपण
अभ्य दिलये 'ऊषड' (२) न॰ ऐसा	ऊपष
काम। [लेषुं = आहे हायों लेना;	कपर
खूब धमकानाः j	पां
ज्यर (रा)वुं अ० कि० सर्चमें लिखा	कपर
जाना (२) दूर होना ; टलना (३) पलना	; )
• • •	

जनवा (न') पुं० एक सूत्ररोग; सूजाक
झनुं(नुं') वि० गरम; तप्त (२)
ज्वरयुक्त। [ ऊनी आंच (आवर्ष),
लागबी) = भौच आना; कुछ नुकसान,
भय, जोखिम या बेइज्जती हो ऐसा
प्रसंग या समय। जनी बराळ काढबी
= दिलका गुवार निकालना; अपना
दुखड़ा रोना.]
कपज स्त्री० उपज; पैदावार (२)
आमदनी; प्राप्ति (३) नफ़ा
<b>ऊपजनोपज</b> स्त्री० पैदावार और बढ़ती
(२) उपज (३) शुद्ध आय; असल
आमदनी
क्रयजवुं अ०कि० उपजना; उत्पन्न होना;
जनमना (२) बनना; परिणत होना
(३) मिलना; सिद्ध होना; प्राप्त
होना या आमदनी होना (४) दाम
मिलना (५) असर पड़ना ; बस चलना
<b>ऊपजवेरो</b> पुं० आयकर
क्रपटबुं अ० कि० उड़ना (रंग आदिका)
अपडवं अ०कि० उभरना; ऊँचा होना
(२) उठाया जाना (३) प्रस्थान
करना; निकलना; उठना;चलना;
छूटना (४) अचानक शुरू होना;
उठना (पीड़ा, रोग आदिका) (५)

- उँठना (पीड़ा, रोग आदिका) (५) चुराया जाना; हड़प हो जाना (६) पैसोंका वापस लिया जाना (७)बिकना; खपना (८) झपटना; लपकना। [**ऊपडतां(-ती)ने**=एकदम; यकायक.]
- **जपणवुं** स॰ कि॰ ओसाना

जपणावुं अ० कि० ओसा जाना

- क्रपर्चुं न० खाटके सिरहाने था पांतेके तरफ़की लकड़ी
- कपस(--सा)वुं अ० कि० उभरना (२) फूलना (३) सूजना

- ¬.	Χ.

जनवर्षे

	7
कफर्य वि॰ देखिये 'उपरं'	
<b>ऊव स्त्री</b> ० फर्फूंदी; भु <b>कड़ी</b>	
झबक स्त्री॰, (-को) पुं० उबकाई	
अबट वि॰ सड़ा हुआ; बिगड़ा हुआ	
(२)उतरा हुआ (तेल, बनाज आदि)	
जबबुं वि० उकडूं बैठा हुआ (२) औंघा ।	
[- उह़ोने ≔ झख मारकर; अपने अ।प	
ठिकाने आकर; मजबूर होकर; अपनी	
गरजसे.] [जमना	
<b>ऊबव्दुं</b> अ० कि० देखिये 'उबावुं'; फर्फूदी	
अवळवुं ४० फि० (बटका) खुलना;	
<b>उकल्ला (२) (घाव या</b> बीमारी <b>ीक</b>	
हो जानेके बाद) फिर शुरू होना;	
पलटा खाना	
अभव पुं० हर रोज उजरत पर काम	
करनेवाला मजदूर (२) जनिकेत;	
सानाबदोश कर्का किन्द्र के स्टिप्ट	
कमबूं वि॰ देखिये 'ऊमुं'	
<b>कभणी</b> स्त्री० मकानके फ़र्शसे वालाखाने	
सककी ऊँचाई (२) (घरकी) कुरसी	
<b>कभर(-रा)</b> वुं अ०कि० उफानसे बाहर	
तिकलना; उमड़ना(२)छलकना(३)	
बहुत बड़ी संस्थामें इकट्ठा होना –	
उमह पहना	
कमरो पुं० उफ्रान; उछाला (२)	
मनकी वृत्तिका उछाल या गुबार। [आववो, चडवो = ओश खाना;	
[— जायपा, चक्या = जारा सामा, गुवार निकलना.]	
जुबार गनकलनाः] ऊमबुं अ० कि० खड़ा रहना – होना	
(२) थमना (३) इटना; टक्कर	
लेना; मुकावला या सामना करना ऊभळवुं अ० कि० देखिये 'ऊबळवुं'	
अनळवु अण् । मण्ड दाखय अवळपु जनाकभ स्त्री॰ लगातार खड़ा रहना(२)	
अन्धलन स्तरण लगतार सड़ा रहना(२) अन्धलन स्तर सड़े-सड़े; सरौर कल	
पाये ( <b>≧)</b> मुद्धी ्र स्वरंत	
THE I BEAUTING WALL	

अर्भु वि० खड़ा (२) षमा हुआ; चलता बंद पड़ा हुआ; रुका हुआ (३) सीभा;तना हुआ (४) खड़ी चढ़ाईवाला (५)अधूरा; जारी; बाकी; आगे चलनेकी या पूरा होनेकी अपेक्षा रखनेवाला (६) सीषा; जो एक ही दिशामें गया हो; जिसमें धुमाव न हो (৩) বিবা; দীসুব (৭িি) (८) लंबरूप। (ऊभां हाडकांनुं = कामचोर; वालसी । कभी पूंछवीए नासबूं = दुम देशकर भागना ।⊷करवुं=≍सड़ा करना; क्रायम करना; उद्यत करना; रचना; उपजाना; बनाना (प्रायः – अर्हा कुछ न हो उसमें से पैदा करनेका तथा कृत्रिमता या बनावटका भाव वताता है)।-**चवुं**=खड़ा होना; स्यापित किया जाला (२)वीमारीमेंसे उठना (३)चुनावमें खड़ा होना । --**यई रहेवुं = राह** देखते खड़ा रहना (२) बाट देखना; रुकना (३) चकित होना; भौंचक खड़ा रहना। अर्भु में अर्भु बाळी के सळगावी मुकबुं 🛥 जिस स्थितिमें हो उसी हालतमें एकदम जला डालना (२) रीस या सीज सहे ऐसा कहना या करना; जी जलाना। -रहेवुं = घ्कना (२) बाट देखना (३) टिकना; न डिंगना; सामना करना; कम न होना। – थरस ≕ सारा साल; पूरा वर्ष । **ऊभें पगे =** लगातार काममें लगा हुआ (२) झटपट; बिना रुके। ऊभे पगे धई रहेवुं == अभीर हो उठना; बेसब्र बनना.)

**अमटवुं** अ०कि० उपड़ेना; जोक्षमें आकर बढ़ना (२) पकना

आपनं अ० कि० देखिये 'ठमटबुं'

	•

- ज्मर, जमरो पुं० देहली; नौसटकी नीचेवाली लकड़ी। [जमरा घसवा = (बेकार) घर घर भटकना। जमरा धच्चे बेसवुं = (आना-जाना रके इस तरह) चौसटके धीच बैठना (२) फ़ाक़ा करते हुए घरना देना; सक़ाखा करना। जमरे चढवुं = (किसीके) घर जाना। - जसडी जवो = निवँदा होना; घर बेचिराग्र हो जाना। --सोबी मालवो = लेनदारका तकाखा जारी रहना। --धसी मालवो = बार बार किसीके घर जाना.]
- क्रमलपुं अ०कि० सिलना;विकसित होना (२) (पशुका) बियानेकी स्थितिमें होना (३) (चूनेका) फटना
- **क्रसिकाच्य, अभिगीत** न**ं गीति काव्य;** ' लिरिक '
- कर्मिल वि० आवुक; तरंगी उल्ल स्त्री० जीमका मैल; जिह्वामल । [--उतारवी = (दातुनकी चीर या जीभीसे) जीभका मैल साफ़ करना.] उल्लक्त (ल') स्त्री० हुलकी; क्रै; उलटी उल्लक्तुं न० मात्र हल्ले-गुल्लेसे मचनेवाली भगदढ़ और घबढ़ाहट; हुरूलढ़।
- ्रिन्यडचुं ≕ भगदड़ होता, मचता.] अललट स्त्री० हौसला; उमंग
- डलट वि० उल्टा; विपरीत । [--टपाले = लौटती डाकसे.]
- कलटतपास स्त्री० जिरह
- ऊलटपा(-पू)स्रट वि० उलट-पलट; परिवर्तित (२) अव्यवस्थित; अस्त-ध्यस्त (३) स्त्री० उलट-पलट जाँच (४) खव्यवस्था

अलटभेर अ० उमगके साथ; बाहौसला

५२

ऊंष

**उल्टब्** अ० कि० उमंगसे करना (२) उमड़ना; बढ़ आना (३) हमला करना; टूट पड़नां (४) औंधा हो जाना; उलटना (५) दोहराना; उलटना **ऊल्टसवाल** पुं० प्रतिप्रश्न **कलटमुलट** वि० उलट-सूलट; अस्त-व्यस्त (२) उलटा-सीधा; इघर-उमर **अलटानुं** वि० उलटा **कलटासूलटी** वि० देखिये 'ऊलटसूलट' कलटी स्त्री अलटी; वमन कलटुं वि० उलटा; औषा (२) विषद; आहा (३)खिलाफ़; उलटा । (ं**कलटी** गंगा बहेबी = उल्लटी गंगा बहना; स्वाभाविकके बदले उलटा होना; अनहोनी होना.] अलबुं(ल') अ॰ कि॰ (मौसमका) बीत जाना; खत्म होना जलळ**ब्रुं(लॅ) अ**० कि० झुक जाना; नमित होना (२) गाड़ी आदिका आगेसे ऊँचा हो जाना; उलार होना (३) उलटना; सीषेका औंधा हो जाना (४) कूदना(५)खत्म होना; नाश होना (६) उत्साहके साथ आगे बढ़ना -- पाँव धरती पर न रखना[ला.] ऊलिपुं न० जीभी **क्रशियुं** न० हैंसिया कस पुं० रेह; कल्लर सिर्वनाश **ऊसरपाटो** पुं० विनाश (२) सत्यानास; कहापोह पुं० चर्चा **ऊंध** स्त्री० ऊँध; निब्रा; नींद। [**-ऊर्श** जबी = नींद उचट जाना; जाग पड़ना (२) आलस्य या अज्ञान दूर होना; होशमें आना। --काववी =- नींद लेना (२) (रतजयेके कारण) भरी नींद निकालना । **--वेचीने उजागरो** 

र्कमण

इंग्ल्यु

- बहोरबी = जान-बुझकर दुःस या इंझटमें फँसना । —मां अबुं = गफ़लत या अनजानमें जाना.] कंषण स्त्री॰ ऊँघ (२) बहुत सोनेकी (आलसी; अहदी भादत कॅंधनशी वि० ऊँधनेका आदी (२) क्रेंबबुं अ० कि० ऊँघना; नींद लेना (२) आलसी होकर पड़े रहना; अलसाना (३) अनजाने-अज्ञानमें रहा करना [ला.] । [ कंघी जयुं≕ सो जाना; गहरी नींदमें गड़प होना (२) (किसी बात या कार्यमें असरकारक होनेसे) बचना; बलासे पड़ा रहना; धरा रहना; उदा० 'ऊषी जाय न आवे तो.'] **ऊंषाबब्** अ० कि० सुलाना (२) छोड़ देना: शांत करना कंषाळ (०वं) वि० ऊँघनेका आदी (२) जरा जरामें ऊँघे ऐसा क्रेंच वि० उच्च ; –से बढ़कर ; श्रेष्ठ (२) **उमदा; ब**ढ़िया (सिर पर उठाना **ऊंधकर्षु** स॰ कि॰ उठाना (२) (बोझ) **कंचकामण** न०, (--णी) स्त्री० उठानेकी उजरत; ढुलाई मदद करना **ऊंचकाववुं** स० कि० उठवाना; उठानेमें कंबकाबुं अ० कि० उठाया जाना **कंच-नीचभाव** पुं० अमुक ऊँचा और अमुक नीचा ऐसी भावना **ऊँचाई** स्त्री० ऊँचाई; बुलंदी **अंचाण** म० ऊँचाई (२) ऊँची जगह;टीला केंचुं वि० ऊँचा; बुलंद; नीचाका
  - उलटा (२) उच्च; बढ़कर; उमदा (कद, प्रमाण आदिमें) (३) खूब चढ़ाया हुआ (स्वर, आवाज्व) (४) अनमना; उदास (मन, जीव)।[र्क्रची

आंख करवी = ( किसी काममें से ) अखि उठाना; ध्यान दूसरी ओर जाने देना (२) कोघ या विरोष दिखाना; औस दिखाना। --माबवुं = (दुःस, पीड़ा, भार आदिसे) छुटना; उबरना; मुक्त होना। --करचं = कोझ सिर धर रखना; इसके लिए मदद करना (२) गडे मर्दे उसाड़ना । --बडाबर्चु == भूठा बखान करना; अति मान देना; **धढाना । –जोबुं =** काममेंसे अवकास निकालना या पाना (२) निषग्रह डालना; लयाल रखना। --ने झॅर्ष् मार्थ राखवं = गवंसे इतराना; घमंडमें चूर होता। --मूकर्ष, मेलर्बु=अलग या दूर रखना; छोड़ देना; भूल जाना (काम, हया, पढ़ाई आदि) (२) खिपाकर रखना; छिपा देगा; बचत करना; सँभालना.]

- अंचुंनीचुं वि० ऊँचा-नीचा; ऊबड़-खाबड़। [-करदुं स्तरतीबसे रखना; साफ़-सूफ़ करके व्यवस्थित करना (२) खलबली पैदा करना; अशान्ति खड़ी करना [ला.]। कंचो नीचो हाव पडवो स्अन्यायसे धन कमाना; ऊपरकी आमदनी करना.]
- **कंचे** अ० ऊँचे। [**--चडाववुं**=देखिये 'ऊंचुं चडाववुं'.]
- **ऊँचेथी** अ० ऊँनाईसे; ठपरसे (२) छूए बिना; ऊँचेसे (३) ऊँची कावा-उसे; ऊँचेसे (४) आकाशमेंसे
- ऊँजण न० तेल देना (२) तौलनेका द्रव्य – तेल, अरंडीका तेल वग्रैरह
- ऊंजव्युं स० कि० तौलना; तेल लगाना (२) रोग या भूत-प्रेत निकालनेके लिए मंत्र पढ़कर फूँकना; झाड़ना

۰.		_	_	_	٠
					,
	-	т			L
					,

म्मृं

- कंनावचुं स॰ कि॰ ' कंधवुं' किवाका प्रेरणार्थक रूप; तुलवाना कंट न॰ ऊँट ! [--चेषुं = बहुत लंबा; लंब-तड़ंग (२) बेवकूफ़; गेंवार ! --तां अधारे वांकां = स्वभावसे ही टेढ़ापन; केंटकी सब कलें टेढ़ी; ऊँटकी कौनसी कल सीची.]
- **कंटडी** स्त्री॰ ऊँटनी; सॉड़नी (२) सुनारका **एक औ**खार
- कंटबो पुं० ऊँट (२) देखिये 'ऊंटियो' कंटबैद पुं० नीम हकीम; अताई वैध केटबैद्दुं न० कठबैदई; अनाड़ी उपचार कंटिया(--ग्रुं) चीई न० इसबग्रोल
- अंदियो वि॰ ऊँट वैसा ऊँचा; लंब-तड़ंग (२) पूंब ॐट (३) मंदबुदि और वालसी व्यक्ति(४)भारी बोझ ऊँवा करनेवाला यंत्र; हत्था; बालाकुप्पी (५) उटड़पा (गाड़ीका)

(२) उटड्पा (गाडाका) झंबळ स्त्री० पेटका वायुगोला; मरोड़ा कंबाई स्त्री० यहराई (२) इसकी माप कंबाच म० देखिये 'कंडाई' (२) निचान कंबुं वि० सतहसे नीचा; नीचा (२) उपलाका उलटा; गहरा (३) भीतरसे लंबा; दूर तक अंदर ही अंदर चला गया हो ऐसा (४) घना (बन) (५) गंभीर; गहन; जिसके मनकी घाह न लगे [ला.]

अंदर पुं० चूहा

क्रेंक्सी स्त्री० उंदरी; गंज रोग

**अंवकोवियुं** वि∙ उसटे काम करनेवाला **अंवॉबळुं** वि॰ पुँधला (२) चुँधा (३) मुर्खे (४) उड़ाऊ

- **ऊंची पूर्तळीनुं** वि॰ जिसकी आँसकी पुरालीमें उलटा या ओंघा प्रतिबिंब पड़ता हो
- उंचुं वि॰ औंघा; उलटा (२) आड़ा; विरुद्ध; सीमा या सुरुटेका बिलकुरु उलटा; सूठा। [क्रंबा पाटा बांबवा = उलटा-सीघा समझाकर बहकाना; उलटी पट्टी पढ़ाना। कंचा पगलानुं = कमनसीब; नहसकदम । ऊंघी पाघडी मुकबी = दिवाला निकालना । --करबुं = औंघाना ' ऊंषुं (२) देखिये मारव्'। -घालम्ं = शरमाना; रुज्जित होना। – घार्सीने == दूसरी ओर निगाह डाले बिना (२) बिना सोचे-समझे;आंख मूँदकर (३)साहसके साथ । -मारषुं = बिगाइना ; चौपट करना । - वाळवुं = विगाड्ना । - वेतरवुं = गुड़ गोबर कर देना; उलटा कर देनाः} **अंचुंच (-छ)तुं वि०** उलटा-सुलटा **ऊंबाडियुं** न० लूका; लुआठा कंबेलो पुं० मरोड़ा; मरोड़
- **अंहकारो पुं० '**जंह' ऐसा उद्गार; उंह
- **कंहुं** ल० <mark>क</mark>ेहूँ; इनकार या हठसूचक उद्गार

ΞĘ.

#### 44

## 曳

म्ह पुं० देवनागरी वर्णमालाका सातवाँ अक्षर -- एक स्वर [बोझ; ऋण ऋण न० ऋण; कर्जु (२) एहसानका ऋणसंबंध पुं० पूर्वजन्मका लेन-देन ऋणानुबंध पुं० पूर्वजन्मका लेन-देन (२) लेन-देन ऋषियुं, ऋणी वि० ऋणी; कर्जुदार; देनदार (२) आभारी **च्छु** पुं० गर्भाधानका काल (२) रजोदर्शन (३) दो मासका नियत काल; ऋतु (४) मौसम; किसी चीखके होनेका उपयुक्त काल [ला.] (५) आबोहवा। [--चेसवी≔भौसमका बुरू होना.]

## ए

- ए पुं० देवनागरी वर्णमालाका वसवां अक्षर -- एक स्वर
- ए स॰ (निःच्ययवाचक) वह (२) वर या वधूकी संज्ञा (हिंदुओं में) (३) वि० वह
- एक वि० एक; १ (२) वेजोड़; अढितीय (३) अमुक; एक; उदा० 'एक राजा हतो' (४) भेदरहित; समान (५) एक मतका; एकजबान (६) (संख्यावाचक शब्दके अंतमें) ' क़रीब ', 'लगभग' ऐसे अर्थमें ; उदा० 'पांचेक, सोएक' (७) 'सिर्फ या मात्र ' के भावमें ; उदा ॰ ' एक पिताना वचनने सारु'। [- अस्त्रे मुडवुं = (बिना लिहाजके सबके साथ) एकसा बरताव करना; एक लाठीसे सबको हॉकना।--आंख ववी = आंखें चार होना । – आणि वोवुं 😑 पक्षपात - इंद्रियन् करना । ज्ञान 😑

एक ही दिशा या हेतुका ज्ञान; सब तरफका नहीं।-कानमी बीजे **कान अर्थु =** कानोंकान बास फैलना; एक कानसे दूसरेमें जाना। - काने सांभळी बीजे काने काढी नासवुं == सुनी अनसुनी करना; सीख गाँठमें न बॉधना। –कांकरे थे पक्षी मारवां = एक पंथ दो काज ! -- गुरुमा ৰৈলা = एक থঁঁলীক বটু-ৰটু। – যাত্ **वे ककडा =** झटपट जवाब या फ़ैसला (करना, देना)। --पग बूधमां में एक पग दहींमां = दोनों पक्षोंमें; दो नावों पर चढ़ना।—पछी एक ≕ क्रमसे; एकके बाद एक।-पायो **ओछो होनो = ज**रा पागल या अल्हड़ होना । --भवमां वे भव करवा == धर्म-भ्रष्ट या जातिच्युत होना (२) किसीके घर बैठ जाना । - मगनी ( ०वे) फाड = एक चनेकी दास; सहोदर।

হ্য	एक
2.1	57

## **एकदे**शी**म**

<u> </u>	
माळाना मणका = एक तवेकी	(३) शादीके लिए बिरादरीका मंडल
रोटी, क्या मोटी और क्या छोटी।	बनाना <b>।काढी नाखवो ==</b> मिनतीर्मेसे
<b>-लाकडीए हांकवुं</b> ≕ एक लाठीसे	हटा देना; संबंध-विच्छेद करना
हॉकना (२) एकसा रौब चलाना ।	(२) जिद छोड़ देना। <b>कापवो</b> ==
-हाथे ताळी न पडें = एक हाथसे	विरादरीसे खारिज करना (२)
ताली नहीं बजसी।नुं वे न वर्षु =	शुमारमें न ले <b>ना।पाडवो</b> ≕
चिद न छोड़ना; अपनी बात पर	शिक्षारंभ करना (२) सही करना;
कायम रहना; बात पर अडना.]	स्वीकृति देना.]
एक एक वि० एक दफ़ा एक (२)	एकदाळियुं वि० एकपलिया (छाजन)(२)
एकके बाद एक; क्रमिक	न० एकपलियां मकान या ओसारा
एककेसरी वि॰ एक केसरवाला (फूल)	एकतरकी वि॰ एकतरफ़ा; एकपकीय
एककोशी वि० एककोशी	एकतंत वि० आग्रही (२) पुं० माग्रह
एकगांठ स्त्री० एका; मेल; मित्रता	एकतंते अ० साथ मिलकर; साथमें;
एकचकी वि॰ एकचक; एक पहियेवाला	एकजीव होकर (२) लगा रहकर;
(२) चक्रवर्ती(३)स्त्री० एकचकी;	जारी रहकर; तदेही और आग्रहपूर्वक
एक पहियेवाली साइकल	एकतार वि० एक तारवाला (२) एक
एकचके व० एक ही आदमीके पास सब सत्ता रखकर	सरीखा (३) एकरस (४) एकचित्त
एकचिस वि० एकचित्त; तल्लीन; दत्त-	एकतारो पु॰ एकतारा; इकतारा
बित्त (२) न॰ ज्यान; एकाय्रता	<b>एकताळीस वि० एक</b> तालीस; इक-
एकछत्र वि॰ एकष्छत्र; एक नरेशवाला	तालीस; ४१
(२) द॰ एकतंत्र शासन-प्रणाली;	<b>एकताळो</b> पुं० एकतालीस सेरकी मन- वाली भाष
एकहत्वी हुक्मत जिगह पर	एकतीस वि॰ इकतीस; ३१
एकजये (-म्य) अ० एकसाय; एक ही	ग्रुकत्र अ० एक जगह पर; साथमें
एक भीव वि० एक जीव; अभिन्न	(२) एकत्र; इकट्ठा; मिले-जुले
एकटाणुं न० एक जून भोजन करना	एकत्रीस वि० देखिये 'एकतीस'
एकठुं वि॰ इकट्ठा; एकत्रित (२)	एकदम अ० एकदम; तुरंत (२) विल-
अ० एकसाथ; एक जगह पर; एकत्र	कुल; निपट; उदा० 'एकदम काळुं'
एकडो पुं० एककी संख्या वतानेवाला	एकदळ वि० जिसकी दाल न बनती हो
अंक-१ (२) हस्ताक्षर (३)	ऐसा
क्रबूल (४) विरादरीका गोल।	एकदिल वि० एकदिल; अभिन्न हृदय
<b>एकडा वगरनुं मींडुं =</b> जो गिनतीमें न	एक्दिली स्त्री० एकदिली; एकदिल
्हो; मामूली; निकम्मा। एकडे	होना (२) मनका मेल; एका
एकची = शुरुसे । - करवो = एकका	एकदेशी (०य) वि० एकदेशीय; एक
<b>अंक लिखना (२) सही, कबूलन क</b> रना	ही देशका (२) जो एक ही देश या

	<b>TR</b>

युकल्लगु

हिस्सेको लागू हो ऐसा; एकतरफ़ा; एकांगी (३) संकुचित; मर्यादित एकपारं वि॰ एकसा; फेरफाररहित एकपा अ॰ अचीर हुआ हो ऐसे एकम पुं॰ इकाई; एकाई; 'यूनिट' (२) एकका अंक; एक (३) गण- नामें दाहिनी ओरसे प्रथम अंक या उसका स्थान; एकाई (४) स्त्री॰ पड़वा; प्रतिपदा एकमत वि॰ एकमत [एकवाक्पता एकमती स्त्री॰ सबका एकमत होना;	एकालियुं ज० एक आदमीके सोनेकी नापकी तोशक एकलुं वि० अकेला; एकाकी; तनहा एकवचन न० एकवचन [व्या.] एकवचनी वि० कहा पालनेवाला; बातका धती एकवढुं वि० एकहरा;इकहरा [धान एकवाई वि० एकहरा;इकहरा [धान एकवारियुं न० एक बारका छड़ा डूआ एकदीस वि० इकसठ; ६१ एकसरखुं वि० एक सरीखा; समान
एकमार्गी वि० एक ही मार्गको पकड़े रहनेवाला (२) सरछ; सीषी राह चलनेवाला	<b>एकसंप</b> दि० मेलवाला (२) पुं० ऐक्प; मेल <b>एकसंपी</b> स्त्री०(२)वि० देखिये 'एकसंप'
एकमेक अ० परस्पर; आपस-आपसमें	एकसाथे अ० एकसाथ; मिले-जुले
एकमेळ पुं० मेल; एका (२) वि०	<b>एकसेरं</b> वि० एक लड़ीवाला
सहमत; अनुकूल(३)मेल रखनेवाला	एकसें (सो) वि० एक सौ; १००
<b>एकर</b> पुं० एकड़	एकहथु (-ब्यु) वि० एकहत्था; एक
एकरगियुं वि० झक्की	व्यक्ति द्वारा संचालित
एकरस वि॰ एकरस (२) मझबूल	एकंदर वि० सारा; कुल
एकराज्ञ वि० एक राशिका - एक सरी-	एकंबर (रे)अ०आम तौरसे; समग्रतया
खा; समान गुणोंबाला (२) स्त्री०	<b>एकाएक</b> अ०; एकाएक; अचानक
समानता (३) मेल; एका	<b>एकाकार</b> वि० एकाकार; एकरूप (२)
एकलभी वि० एक ही लक्ष्य या हेतुवाला	मिला-जुला ; गडु-मडु [निराधार
एकलडोकल वि० अकेला; अकेला-	एकाको वि० एकाकी; अकेला (२)
, दुकेला; इक्का-दुक्का	एकाक्ष(क्षी) दि० एकाक्ष (२)
एकलता स्त्री० अकेलापन; तनहाई	काना (३) पुं० कौआ
एकलबोकल वि० देखिये 'एकलडोकल '	<b>एकाणु(–णुं)</b> वि० एक्यानबे; ९१
एकलपेटुं वि० अकलखुरा; खुरगर्अ	एकाद(दुं) वि० एक-आघ; एकाध;
एकलमुडियुं, एकलमुडुं वि० स्त्री, पुत्र	कोई एक(२)एक-दो (३)शायद एक
आदिसे रहित; निरा अकेला	<b>एकावन</b> वि० इक्याबन; ५१
<b>एकलवा</b> युं वि० अकेला; अकेंला-दुकेला	एकाझण(जुं) न० एकाझना; एक
एकल्बीर पु० अकेला जूझनेवाला बीर	अून भोजन करना
एकलसूर्व वि० अनेला; संगी-सामीहीन	एकाझी (-सी) वि० इक्यासी; ८१
(२) मतल्बी	<b>एकासण (जुं)</b> न० देखिये 'एकासण '

- X L	एकासूच
-------	--------

एठवाडी

एकासूच अ० प्रत्येक; एक-एक; तमाम एकोतेर वि• एकहत्तर; ७१ एनके वि० देखिये 'एके' एकांक वि० एक अंकवाला (२) एक अंकवाला (नाटक); एकांकी (३) एक्को पुं० एक्का;एक बुटीवाला ताशका न० इकाई; 'यूनिट' पता (२) एक ही बैरू या घोड़ेकी एकांकी वि॰ देखिये 'एकांक' दो पहियोंवाली गाड़ी; इक्का (३) एकांग वि० एक अंगवाला एका; मेल (४) सबसे होशियार (२) अपंग (३) पुं० अंगरक्षक या क्रुंशल जादमी; वेजोड़ या श्रेष्ठ एकांगी वि० देखिये 'एकांग' (२) पुरुष; एक [ ला. ] एक्याशी (-सी) वि० इक्यासी; ८१ एकतरफ़ा; एकांगी (३) हठी; एक एखरो(ऍ) पूं० एक औषधि (२) ही बातको पकड़े रहनेवाला इसका पौचा (३) रही-सी चीजें [ला.] एकांस वि० सूना; निर्जन (२) अकेला; एकलास पुं० देखिये ' इखलास '; दोस्ती एकांत (३) खानगी (४) एक ही **एजन अ**० ऐजन;फिर वही ; ऊपर बताये कोर लगा हुवा (५) न०; स्त्री० सूना स्थान; एकांत अनुसार [मूखतार; एजेंट एकांतरा (०) अ० बीयमें एकको एबस्ट पुं० आढतिया (२) प्रतिनिधि; एजन्सी स्त्री० आढत (२) आढ़तकी छोड़कर बारोका बुखार दुकान; एर्जेंसी (३) अंग्रेजोंके अम-एकांतरियो पुं० एकांतर; अँतरा; एकांतरे अ० देखिये 'एकांतरा' लमें सरकारी एजेंटके अधीन (देशी रियासतोंका) प्रदेश एकी वि० जो दोसे निःशेष विभाजित एटएटखुं वि० इतना ज्यादा न हो सके (संक्या); ताक़ (२)स्त्री० एटलामां अ० इतनेमें; इतने समयमें एकता (३)पेशाबकी हाजत [ ला. ]। एटलुं वि० उतना। (एटला माटे = [-करवी=पेशाब करना।-लगगबी इसलिए; इस कारण.] = पेशाबकी हाजत होना। -- पत्री = पेशाब होना.] **एटलुं वधुं** वि० इतना अधिक; पुष्कल एकी वि॰ एक ही (अब्यय जैसे प्रयोगमें; एटले अ० अर्थात्; यानी (२) इससे; उदा० 'एकीकलमे') इस परसे (३) वहाँ तक; उस हद एकोकलमे अ० एककलम; एकबारगी तक (४) उस समय; इतनेमें एकीटझो (--से) अ० एकटक; अनिमेध एटलेपी अ० वहाँसे; उस स्थानसे **एক্সীৰকা দ্বা**০ ৰাজকাঁকা एক खेल एड(ऍ) वि॰ जूठा (२) स्त्री॰ जूठन एकीवसरते, एकीवारे अ० एक-साथ एठवाड (--बो) (ऍ) पुं० खाने-पीनेके **एकीसाचे** अ० एक-साथ कारण होनेवाली गंदगी (जुठा बरतन, एको वि० एक भी जूठन वग्रैरह) (२) कूड़ा-करकट; एकेक वि० एक-एक (२) अलग; मलिनता। [ एठे पाजोए छाटे तेर्चु अुदा (३) अ० एक-एक मची = जूठे हायसे कुत्ता न मारे ऐसा; एकेर्कुवि० एकके बाद एक बहुत कंजूस.]

TFR

एलचेल

- एटं (पॅ) दि॰ किसीके सानेसे बचा हुआ; अण्छिष्ट (२) सा-पीकर या सूकर जुठारा हुआ या जुठारमे योग्य; जूठा (३) जिसमें साया-पिया गया हो या जूठन रूगी हो; जूठा (बरतन, चौका, हाध) (४) न॰ जूठा या जुठारा जाय ऐसा अक्स
- **एटुं बूटुं(ऎं)** বি॰ जूठा (२) स∙ उण्छिष्ट; जूठन
- एड (--थी) स्त्री० एड़ी; एड़ (२) बूटकी एड़(३)बूटमें लगाई जानेवाली घोड़ेको मारनेकी कील; एड़
- एको (ए') पुं० नेह;स्लेह [ओर एकी कोर, एकी गम, एकी पा ब० उस
- एने (एँ) स० उसने
- एबी (ऍ) वि० अहदी; आलसी; प्रमादी एबीसानुं (ऍ) न० अहदीखाना
- एषाष (ऍ)न०, (--भी) स्त्री० निशानी; पहचान; चिह्न । [--आपवी, कहेवी =-पहचान या यादके लिए निशानी देना। --भूकवी =- पहचानका चिह्न या निशानी करना या इसके लिए कोई चीच रखना.]
- एम(ऍ) वि० ऐन;ठीक;असल;खरा (२)खास;मुख्य(३)सुंदर(४)काम-चलाऊ; मामूली (५) स्ती०; न० शान; आबरू (६)जरूरतका वक्त; ऐन वक्त [वक्त; खड़ी एमवेळा(ऍ)स्त्री० ऐन वक्त; खडरतका एनायत स्वी० देखिये 'इनायत'।

एमिस पुं० अप्रैल

एंब(ऍ) स्ती॰ ऎब; दोष; खामी (२) बुराई; कलंक। [--अवादवी = दोष या बराई बलाना। ---वोबी = ऐव ढूँढ़ना; ऐवजोई करना। ⊶डांकवी ≕ शरीरका गुद्धांग ढकना (२) कलंक पर परवा डालना; ऐवपोशी करना। –सागवी ≕ घन्वा लगना.]

- एम(ऍ) अ० उस तरह।[--करतां ≕ उस तरहसे; यों।---भुँ एम, एम मे एम ≕ जैसेका दैसा;विना फेरफारके; ज्योंका त्यों.]
- एम छतां (ऍ) अ० फिर भी
- एमनुं(ऍ) वि० उस अनेरका; उस रीतका; बैसा(२)(ऍ')स० उनका एमां(ऍ') स० उसमें।
- एरम (--मी) (एर') स्त्री० निहाई। [--मी मोरी ने सोयमुं दान = बढ़े पापके अनुपातमें प्रायध्वित्तके तौर पर किया जानेवाला अल्प दान या शुभ काम.]
- एरंडियुं न० रेंड़ीका तेल । [--पीवुं = मुंहका स्वाद खराब हो जाना; मुंह बिगाड़ना; गुंह उतरना (मुंह बिगड़ा या खराब हुबा हो तब प्रयुक्त होता है).]
- एरँडी स्त्री॰ एरंडकी छोटी जाति; अंडी (२) रेंड्रके बीज; रेंड्री
- एरंडो पुं० एरंड; रेंड; अंडी; अरंड एरिंग न० कानकी बाली; कर्णफूल एरं(ऍ') पुं० सौंप [अंतु एरं सांसर(ऍ')न० सौंप आदि अहरीले एरो(ऍ') पुं० झाना-जाना(२) उबारा एरोक्सेरो पुं० सोनारूपाका चूरा;(भंगरा)
- एलवी पुं० एलची; राजदूत एल(--छ)ची न०; स्त्री० इलायवी एलफोल(ऍ; फॅ) वि० उलटा-सीवा; अंड-वंड (२) अविचारी; अंट-संट (३) असभ्य (४) न० नसरा; धारारत (५) अनाप-रानाप

11.13	
J	~ .

**\$**0

ओवाय

एलक्षमुं (एँल') अ० कि० पानी छूटना
(हाथ, नमक आदिमेंसे)
एबबुं वि॰ उतना (२) उतना अधिक
एवामां (ए′) अ० इतनेमें
एचुं (ए') वि॰ वैसा; उस तरहका
(२) उसके जैसा
एबे (ए') अ॰ उस समय
एश (एँ) स्त्री० ऐश; सुख-चैन
एशआरराम (एँ) पुं० ऐशोआराम;
भोग-विलास
एसरवुं(ऍ) अ० कि० द्रवना; पानी
छूटना (२) कम होना; घटना(३)
विकार उत्पन्न होना; औसना
एळियो पुं० एलुवा; मुसन्बर
एळे (० बेळे) (एँ; वॅ) ज० वृथा; बेकार
• • • • • • • • • •

(२) बिना मेहनतके; मुफ़्तमें।
[जण्युं = व्ययं या बेकार जानाः]
एंजिन (ऍ) २० इंजन; एंजिन
<b>एंजिनियर</b> (पें) पुं० इंजीनियर
एंट (ऍ०) स्त्री० ऍठ; हठ; खिद
(२) इतबार (लेन-देन संबंधी);
साख (३) टेक; प्रतिज्ञा
एंटबुं (ऍ०)अ० कि० ऐंठना; अकड़ना
(२) जिद करना
<b>एंठ (०वाद),(टुं)</b> (ऍ०) देखिये
' एठ ' आदि
एंघरां (ऍ०) न० ब० य० इंघन
एंबाण (ऍ०) न०, (-णो) स्त्री०
देखिये 'एधाण'
एंशी,(-सी) (ऍ०)वि० अस्सी; ८०

# ऐ

ऐ स्त्री० देवनागरी वर्णमालाका ग्यारहवाँ वर्ण-एक स्वर **ऐड** वि० आड़ा; जिही; ऐँड़ा **ऐडर्जतर** वि० पूरा आड़ा; एँड़ा-जेंड़ा

# ओ

सो पुं० देवनागरी वर्णमालाका बार-हवां अक्षर – एक स्वर सोइयां (ओ) अ० डकार लेते समय होनेवाला संतोधजनक उद्गार (२) न० ढकार या उसकी आवाख (२) डकार जाना; हजम कर लेना सोकवुं (ओ) स० कि० ओकना; कै करना; उबकना (२) हजम किया हुआ माल वापस करना; उगलना [ला.](२) कह डालना; जाहिर करना अोकारी (ऑ)स्त्री० उवकाई; उलटी ओकावनुं (ऑ)स० कि० ' ओकवुं 'की प्रेरणार्यक किया ओक्टोबर पुं० अक्तूबर ऑक्सिकन पुं० आक्सिजन ओकार (ऑ) न० मैला; गंदगी। [-करवुं = (गाय, भैंस आदि चौपा-योंका) विष्टा साना.] ओकात(--ब)(ऑ) स्त्री० ताक़त; बूता (२) औकात; हैसियत; बिसात

## **जीगचना**लीस

48

ओ**ललप**त्सौ

**ओगणचालौस** वि० उनचालीस; उन-तालीस; ३९ [¥९ ओगणेपचास वि० उनचास; उंचास; ओगणसाठ वि० उनसठ; ५९ **ओगणीस** वि० उन्नीस; १९ क्षोगणोतेर वि० उनहसर; ६९ ओगण्याएंशी वि० उन्नासी; ७९ ऑगस्ट पुं० अगस्त ओगळवुं (आँ) अ० कि० ठोस वस्तुका प्रवाही होना; गलना; पिघलना (२) (शरीर) घुलना; दुबला होना (३) दयाई होना; पसीजना; दिल पर असर होना [ला.] ओगाट (--ठ) (ऑ) पुं० मवेशियोंका खाते खाते छोड़ा हुआ चारा; आखोर ओगान पुं० पानीकी तरंग **ओगास(**ऑ) पुं०;न० देखिये 'ओगाट' **सोगाळपुं**(मॉ) स॰ कि॰ 'भोगळबुं'की प्रेरणार्थक किया (२) घीरे घीरे ধ্বা জানা [(२) ढेर; राशि **मोध पूं०** ओध;बाढ़का पानी; प्रवाह **ओधड(**ऑ) वि॰ औधर; अनगढ़; बुदू (२) भग्वहीन; लागणीशून्य; जिसे भयका खयाल न हो ओधराळुं (ऑ) वि० धब्बेदार **ओघराळो (**ऑ) पुं० **होई** (२) लसदार चीजका दाग्र ओवलो, लोघो पुं० कोघ; ढेर; गंजी (२) बिखरे हुए वालोंका समूह (३) भोज लेनेवालोंका बड़ा समूह ओषर (--रियुं) (ओं) न० हिसाबके भ्योरेका आधाररूप पुरजा;वाउचर ओजिस् (ऑ) दि० अनचीता (२) अ० यकायक; अचानक ओण्छव (ऑ) पुै॰ उत्सव; घूमधाम

(२) (गाते-बजाते इए) भजन-कीतम ओछ (०५) स्त्री० न्युनता; कमी **থীভাৰ** (ऑ) দুঁ০ ৰিজ্ঞানকা কণ্ডা; भादर; आच्छादन (२)ग्रिलाफ़; खोल ओछाडवुं (ऑ) स० फि० ढकना; ओढ़ाना (२) छाना; छांव करना **ओछाबोलुं** वि० कम बोलनेवाला; मितभाषी सिकोच; रुज्जा ओछायो (ऑ) पुं० छाँह; परछाई (२) ओछं वि० योड़ा; कम (२) अघुरा; अपूर्ण (३) घटिया; हलका । [--आजवुं, आवर्बु == दिल दु:सी होना; बुरा ्लगना (२) अपनेमें हीनभावका अनुभव करना । --यब् = बला टलना; दूर होना। **--पडव्ं ==** कम या थोड़ा है ऐसा लगना; इसका दुःख या अपमान लगना । **---पात्र = कम** थो-ग्यतावाला या नीचे कुलका; जोछा आदमी (२) जिसके पेटमें बात न पचे (३) अभिमानी; बड़ाई हॉकनेवाला; ओछा आदमी । -लागर्बु = बुरा लगमा; दिल दुःसी होना। -लावयुं = देसिये ' ओछुं आवयुं '। -- ओछं यई जबं = प्रेम या हर्षके मावसे पुरुकित हो जाना.] **ओर्छ्वस्ं** वि० कम-बेश; थोड़ा-बहुत कोजार (ऑ) न० कौबार; आला; राछ; साधन शोझरू (ऑ) पुं०;स्त्री०;न० ओझरू; परदा;बुरका (२)जनाना । [–पाळर्ष् =स्त्रियोंका परदेमें रहना। -- रहेर्बु

= परदेमें रहना (२) शरमाना [ला.].] ओझलपड (-र) बो(ऑ) पुं० स्त्रियों और पुरुषोंके बैठनेकी जगहके बीचमें डाला हुआ परदा (२) परदा रखनेका रिवाज

For Private and Personal Use Only

ओक्षी स्त्री० कुम्हारिन ओक्को पुं० क्रुम्हार

ओट पुं०; स्त्री० भाटा (२) आड़; ओट(३),पतन [ला.] (४) अ० वापस ओटच न० तुरपन (२) दसिया ओटची स्त्री० तुरपन (२) तुर्रपनेकी

ओटली स्ती० छोटा चबूतरा ओटलो पु० वड़ा चबूतरा(किसी मकानसे सटकर बनाया हुआ)।[--जठवो ≕खूब नुकसान होना; तवाह होना (२) निवंश होना; घर वेचिराग होना। --धसी माखवो = बार बार चक्कर लगाना (आजिजी या खुशामदके लिए)। ओटले बेसवुं ≕ ( क्रर्जेकी तलबीके लिए) चौसटके बीचमें बैठना; तकाजा करना (२) घर उजड़ना; बुरा हाल होना (३) (वेश्याका) चकलेमें बैठना.] ओटवुं स० कि० बसिया करना;तुरपना ओटी स्त्री० अटी; टेंट; आंटी ओटो पु० चब्तूतरा; चौतरा

सोठ(ओ') पुं० होंठ; सोठ। [-ऊघडवा = उवान खुलना; शब्द निकल्लना। -उधाडवा = जवान हिलाना; वोल्ना। -करडवा = होंठ काटमा या चवाना (हताशा, पछतावा या कोधके कारफ)। -पीसवा = होंठ चवाना; (कोधसे) गुस्सा होना। -सुधी बावव् = होंठों पर आना; वोलनेको उखत होना.] जोठवव् (ऑ) स० कि० ग्रल्त वात वमाकर कहना; झूठ वोल्ना (२) रखना; सजाकर रखना; जमाना(३)

क्षोट्टं(ऑ) दि० सेंपू; क्रिसियाना (२) न० परदा; ओट (३) ओटके कारण

ठूंसकर साना

	•
đΠ	

मजदूरी

सोतची

ર આસમા
बनी हुई एकान्त और अँघेरी जगह
(४) छिपने या आश्रय पानेकी जगह
(५) परछाई; अक्स (६) दागु;
धब्बा (७) बहाना (८) नमूना; नक्रल
(९) तुच्छ व्यक्ति;मुतला (ग्यक्ति)
(१०) ताना; चुटीली बात
<b>मोड</b> पुं० ओ <b>ढ़</b>
ओड (ऑ) स्त्री० गला; गरदन
ओडकार पुं० डकार
ओडण स्त्री० ओड़ जातिकी स्त्री
भोडनुं चोड (ऑ;चॉ) वि० कुछका कुछ !
बिलकुल उलटा; विचित्र । [वेतरवुं
=बिलकुल उलटा कर डालना.]
ओडवूं न॰ एक फल (२)छोटी नाव;
डोंगी (३) स॰ कि॰ पेश करना (४)
रोकना(५) अ०कि० मुझ्किलसे बोलना
या अपनी बात समज्ञाना वाल
ओडियां (ओं)न० ब० व० गरदन परके
ओडुं न० (खेतका) धड़का (२) काम-
चलाऊ खड़ा किया हुआ निकम्मा
वादमी; पुतले जैसा भादमी
भोडण न०,(णी) स्त्री०,(णुं) न० ओढ़ना; ओढ़नी
भोडवुं स॰ कि॰ ओढ़ना (२) अपने
कपर, जिम्मे लेना; ओढ़ना[ला.] (३)
दिवाला निकालना
ओवाडवुं स०कि० 'ओढवुं' का प्रेरणा-
र्थंक रूप; ओढ़ाना
<b>ओडो पुं० ओड्</b> ना; खोल; ढक्कन
ओग(ऑ) अ॰ इस साल (२) चालू
समयम
<b>कोतणी</b> स्त्री॰ ढालनेका काम; ढलाई
(२) ढालनेका पात्र (३) उसकी
कला (४) घातु गलानेकी भट्ठी (५)
उसकी मजदूरी; ढैलाई

# भोत्तरंग

- भोतरंग(ऑ) पुं०; न० उतरंग भोतराचीतरा न० ब० व० उत्तरंग फाल्गुनी और चित्रा नक्षत्रोंका असहा गरमीका समय [उत्तरकी ओरका भोतरातुं (--दुं) (ऑ) उत्तर दिशाका; ओतवुं स० कि० घातु ढालनेका काम करना;ढालना [रास्ता मूला हुआ ओतादुं (ऑ) वि० (मार्गसे) अपरिचित; भोत्तारी अ० ओहो ! बाह !
- अोेच स्त्री० आसरा (२) मदद; शरण ओचमीर पुं० ('अक्कल ' शब्दके साथ प्रयुक्त होता है) मुर्ख
- अोथो (ऑ)पुं० वासरा; शरण (२) ओद; बीचमें आना(३)छाया; छांह ओषान(ऑ)न०गर्भ रहना; गर्माचान ओष्धेबार (-री), ओष्धो देखिये 'होद्देदार, -री, होद्दो '
- ओप पुं० ओप; चमके; मुलस्मा (२) पालिश; रौनक़। [--आपबो, चठा-बवो, देवो ≕रौनक बढ़ाना; चमक-दार बनाना.]
- ओपटी स्त्री०औपटी; अड़चन; कठिनाई (२) रजोदर्शन (३) प्रसुति
- औपणी स्त्री० ओप (२) मुलम्मा चढानेका औखार
- ओपवुं अ०कि० सोहना; शोभा देना (२)स० कि० मॉज, रगढ़कर चमक लाना; ओपना (३) (चाँदी या सोनेका) पानी चढाना
- **मॉफिस स्त्री० आफ़िस;कार्यालय; द**फ़्तर
- ओवाळ (--ळो) पुं० ईंघन(२)नदीके द्वारा लाई गई मिट्री; भाठ
- सोभा स्त्री॰ आफ़रा; पीड़ा; बला
- **बोभामण (--मी) स्त्री०` वाफ़स**में फेंसना; उल्झन

# ओरमायुं

- भोभाषुं अ०कि० कठिनाईमेंसे या प्रसूतिकी वेदनामेंसे छूटनेके लिए व्यर्थ प्रयत्न करना (२) घवड़ाना; पसोपेशर्मे पड़ना; फैंस जाना (३) आफ़सर्मे आ जाना: पचड़ेमें फैंसना [माटा ओर स्त्री० लाग-डॉट; चढ़ा-चढ़ी (२) ओर स्त्री० लाग-डॉट; चढ़ा-चढ़ी (२) और स्त्री० लाग-डॉट; जन्य; दूसरा (२) निराला; अजीब; विचित्र ओर(ऑ) दि० और; अन्य; दूसरा (२) निराला; अजीब; विचित्र ओर(ऑ) स्त्री० औवल (गर्भका) (२) आमको पालमें डालना ओरबी स्त्री० छोटा कमरा
- ओरडो पुं० बड़ा कमरा (२) घर (३) अंतःपुर; जनानखाना [ला.]। [ओरडे अजवाळुं होवुं = घरमें घन-दौलत और संतान होना । ओरडे ताळां बेवावां==घर बेचिराग होना; निःसंतान होना । --वसाबो = निःसंतान होना.]
- ओरणी स्त्री० बोबाई (२) बोआईका समय (३) बाँसा (बोज बोनेका) (४) चक्कीका मुँह (५) गर्लमें ठूँसना – बहुत अधिक खाना (तिरस्कारमें)
- आरेर्ष्युन० उतना अनाज जितना एक बार पीसनेके लिए चक्कीमें डाला जाय; झींका; घान
- **ओरत** (ऑ) स्त्री० औरत; स्त्रो
- **कोरतो** (ऑ) पुं० अरमान । [**–रही अवो** ≕मनकी मनमें रहना; अरमान रह जाना । **–वीतवो**≕ इंज्छा पूरी होना; अरमान निकल्लना.]
- भोरमाई (--न, --थुं) (ऑ) वि० सौतेला (मां या वालकोके छिए) । [--करवुं =-(बालकके लिए) सौतेली यां स्प्रना (२) सौतेली मांकी सरह वरताव करना.]

ओरवुं	६४ औस	म
ओरबुं स० कि० -में डालना; सदा०	ओवालो पुं० छाती (२) (वाजरेकी	Ĵ,
' घंटीमां रळवानुं अनाज ओरवुं ' (२)	मोटी रोटी (तिरस्कारमें)। [	Ì.
(बीज) वोना; बाँसेसे (खेतमें) बोना	<b>ओशलो कुटवो = नर</b> ∕आ मुआ ऐस	ft
(३) (पकानेके लिए) दाने अदहनमें –	बददुआ देना। –करवो, टीपबो	=
खौलते हुए पानीमें डालना(४)मुंहमें	रोटियाँ बनाना (२) रसोई करन	π
ठूसना; खाना (तिरस्कारमें)	(३) खूब पीटना.]	
<b>जोर्राभयो पुं०</b> होरसा; पत्थरका	<b>ओशियाळ</b> वि० देखिमे 'ओशियाळु	
चकला। [आरिशिया जेषुं साफ 🖛	(२) स्त्री०; न० आश्रय, ग़रज थ	
बिलकुल सपाट (२) निर्वंश; संतति-	एहसानके कारण उत्पन्न होनेवाल	গ
रहित [ला.].]	पराधीनता या दीनता	
ओरस पुं० देखिये 'उरस'	ओद्विमाळुं वि० आश्रय, गरज य	
ओराढवुं स० त्रि० देखिये 'ओढाडवुं '	एहसानके कारण दबैल या पराधी	
ओरियो (ऑ) पुं० देखिये 'ओरतो'	(२) शमिदा (३) न० उक्त प्रकारक	ਹੈ
(२) किनारे परका कुँआ	पराधीनताका भाव	~
<b>कोरी</b> स्त्री० एक छुतहा रोग (प्रायः	<b>ओशिकळ, ओशिगण</b> (ऑ)वि०आभार्य	a –
बालकोंका); खसरा	<b>ओझोकुं न०</b> सिरहाना; तकिया	_
<b>ओलबवुं</b> (ल') स॰ कि॰ बुझाना	ओसड न० औषभ; दवा (२) उपाय	
क्षोला पु॰ कच्चा चमड़ा;खाल [पौदर	इलाज [ला.]। [—करबुं⇔दवा य	
ओलाण (~-ण्ं) (ओं; ला') न० नैची;	इलाज करना (२) विघन दूर करनेव	
ओलाव (ऑ) स्त्री० औलाद; संतान	इलाज करना । <b>—वाटवूं</b> ≔ सजा करन	Π
(२) कुल	(२) बदनाम करना.]	
मोलां न० ब० व० ओले	<b>ओसहवेसह</b> न॰ दवा-दारू	
ओलियुं (ऑ) वि० भोला; सरल; उदार	<b>ओसडियुं</b> न० दशाके गुणोंनाली वनस्पति	
(२) भवत [बंदा; भवत	ओसरबुं (ऑ) अ० कि० पीछे हटना	
ओलियो (ऑ)पुं० औलिया (२) खुदाका	सिकुड़ना (२) कम होना ; घटना (३	
ओर्खुं वि० वह [हुआ छोटा चूल्हा	सूखना (४) लज्जित होना; शरमान	
ओलो(ऑ) पुं० चूल्हेके साथ लगाया	ओसरी (ऑ) स्त्री० देखिये 'ओशरी	•
ओल्युं वि० वह	ओसक्वां स॰ कि॰ पसाना	
ओवारणुं न० किसीके अमंगल या दुःखके	ओसवाबुं अ० त्रि० (दाना) पकना	
निवारणके लिए आशिष देनेकी एक	गलना; सीझना (२) जज्ब होक	
रस्म; वारना [(२) निछावर करना	कम होना (३) मनमें दुः सी होना	
ओवारवुं स॰ कि॰ वारना; बलैया लेना	मन मसोसना [ला.] (४) लज्जित होन	T
ओबारो पुं० (नहाने, धोनेका) धाट	ओसंगो (ऑ) पुं० शरम; संकोच	
<b>कोज्ञरी</b> (भाँ) स्त्री० ओसारी; दालान;	<b>ओसाण (~-न)</b> (ऑ) पुं॰ हिम्मत; जोक	Γ;
बरामदा	भैयें (२) निशानी; चिह्न	

ओसामण न० माँड़;पसावन (२)दालके

**क्षोसारो** पुं० ओसारा; दालान **ओसावव्ं** स० क्रि० देखिये 'ओसवय्ं'

ओहियां अ० देखिये 'ओइयां'

निशान; परिचायक चिह्न

**ओळलपत्र** न०परिचयपत्र

मनुष्यका सबूत

परिचित

अगेळ(ळ,) स्त्री० कतार; पॉत (२) श्रेणी; वर्ग (३) गली; कचा

क्षोळल स्त्री० पहचान; परिचय (२) अल्ल; उपनाम (३) पहचाननेका

ओळसयुं स० कि० पहचानना;पिछानना

ओळलाण स्त्री०;न० पिछान;परिचय;

पहचान (२) पहचाननेका निशान;

परिचायक चिह्न (३) पहचाननेकाले

**कोळलाववुं** स० क्रि० पहचान कराना

**ओळसावुं** अ० कि० 'ओळसवुं ' किया-

का कर्मणिरूप (२) परखा जाना;

पहचाना जाना; भला-बुरा मालूम

होना (३) प्रसिद्धि प्राप्त करना

**ओळखौत्**ं वि० जान-पहचानवाला;

**ओळववुं स०** कि० हड़पना; पराये

मालको अनुचित रीतिसे आरमसात्

कर लेना; पचाना (२) छिपाना

पानीसे बनाई जाती एक खाद्य वस्तु

. A.		
भार	Te	म

44

ककडभूस ओळवुं(ओ') स०कि० कंघी करना; (बारु) सँवारना

ओळ्**वुंचोळवुं** (ओं) स० कि० मिट्टी, साबुन वग़ैरहसे बालोंको घोना और बादमें कंघीसे सँवारना-पुलझाना

ओळंगवुं स० कि० पार जाना; लाँधना; फौदना; ऊपरसे होकर जाना (२) कूद जाना (३) उल्लंघन करना; अवज्ञा करना; (आज्ञा, नियमको) तोड़ना ओळंडवुं स० कि० ऊपरसे होकर जाना; लोघना

- ओळंबो पुं० साहुल; सहावल; गुनिया
- आलेखा पुं० ब० व० बूट; हरे चनेकी फलियाँ; चनेके फलदार हरे पौषेकी पूलियाँ;होरहा(२) होरा; होला

झोळाओळ अ० एक क़तारमें स्थित; श्रेणीबढ (२) एकके बाद एक पंक्तिमें आया हो ऐसे

- ओळायो (ळा,) पुं० देखिये 'होळायो ' ओळांडवुं स० कि० देखिये 'ओळंडवुं ' ओळांसवुं स० कि० मालिश करना; मलना (२) खुशामद करना [ ला.]
- ओळो पुं० चनेकी अवपकी फलियां; होरा
- ओळो पुं० परछाई (२) योड़ा स्पर्श या संबंध [ला.](३)रक्षण; आश्रय

### क

- पुं० देवनागरी वर्णमालाका पहला
   व्यंजन कंठप वर्ण
- कअवसर पुं० प्रतिकूल समय

कई स०(२)वि० स्त्री० कौनसी

कऋतु स्त्री० प्रतिकूल ऋतु(२) असा-घारण या वेमौसिम समय

गु. हि्−५

ककडसुं वि॰ कड़कड़ासा हुआ (२) कलफ़दार और सफ़ (कपड़ा) (३) कड़ाकेका (सदी) [महान; भव्य ककडवज वि॰ मज़बूत (२) सीघा (३) ककडमूस अ॰ 'कड़-कड़ ' आवाज़के साथ (टूटना, गिरना आदि)

.

ৰাৰ্যৱন্তু	६६ कचाल
ककड्युं अ० कि० कड़कड़ाना (२)दाँत	कक्षा स्त्री० कक्षा; ग्रहोंका अमणपर्य
किटकिटाने लगें इतना काँपना;बसीसी	
बजना (३) 'कड़-कड़' आवाज हो	कमर (४) कछोटा (५) कमरा;
इतना खोलना	खास कमरा; अंतःपुर
ककडाट पुं० कड़कड़ाहट(२)अ० तेजीसे;	<b>कगरवुं</b> अ० कि० गिड़गिड़ाना
फर्राटेसे (३) बिना रुके; एकसमान	<b>कच स्त्री</b> ० कच-कच; किच-किच
रीतिसे <b>ककडी</b> स्त्री <b>० छो</b> टा टुकड़ा	<b>कचकच</b> स्त्री० किच-किच; माथा-
ककडीने अ० कड़ाकेका; जोरका	पञ्ची (२) कजिया; हुज्जत
कनडे-बचके अ० थोड़ा-थोड़ा करके;	<b>कचकचावयं</b> स० कि० कच-कच कराना
रुक-टुक	(२)कसकर बांधना (३)हैरान करना
<b>ककडो</b> पुं० टुकड़ा	<b>कचकचियुं</b> वि० झगड़ालू; हुऊ्जती (२)
ककर्य वि० करकरा; खुरदरा (२) तेज	माथापच्ची करनेवाला
स्वभावका [ला.] विश्वि-पुकार	<b>कचकडूं</b> न०, (डो) पुं० कचकड़ा
ककलाण न०रो-पीट; कलपना (२)	<b>कघडव्ं</b> स० कि० देखियें ' कचरबुं '
ककळवुं अ० कि० कलपना; बिसूरना	<b>कचरकूट</b> स्त्री० कुचलना और कूटना
(२)बङ्बडाना (३) उबलना। किंकळी	(२) मेहनत; रगड़
<b>ऊठवुं =</b> कुहराम मचाना (२) (जी)	कचरपचर वि० कच्चा; जो मनमें आया
जलना – दुःखी होना.]	ऐसा – पक्व या अपक्व (खाना)
ककळाट पुं० क्रजिया; क्लेंश; किकि-	<b>कचरव्</b> स० कि० कुचलना (२) बारीक
याना (२) चीख-पुकार ————————————————————————————————————	.कुचलना (३) कूटना; चूर्ण करना
ककळाटियुं वि० झगड़ालू; कलहप्रिय	<b>कचरापटी (-ही)</b> स्त्री० कूड़ा (२)
<b>ककळाण</b> न० देखिये 'ककलाण '	कचरेका ढेर
<b>ककाटियो</b> पुं० चकमक	<b>कचरापेटी</b> स्त्री० कचरापेटी; कूड़ा
<b>कक्कावारी</b> स्त्री० वर्णमालाका अनुक्रम	डालने या इकट्ठा करनेका संदूक
कक्को पुं० क वर्ण (२) ककहरा; वर्ण-	कचर न० कचरा; रही चीज
माला (३) ककहरा ; एक तरहकी कवि-	<b>कचरो</b> पुं० कचरा; कूड़ा (२) कीचड़
ताकी रचना जिसके चरण वर्णमालाके	(३) मिट्टीका गारा (४)अति खराब
अक्षरोंके क्रमके अनुसार आरंभ होते	या निकम्मा आदमी [ला.]
ेहैं; अखरावट (४) प्राथमिक ज्ञान	<b>कचवाट</b> पुं० कचवाट; असंतोष (२)
[ला.] । [-सरो करवो = अपनी राय	अनबन (३) माथापच्ची [असंतुष्ट जनवनियं विक सनम्पर प्रजीयम्बर
या जिद दूसरेसे स्वीकृत कराना।	<b>कचवाटियुं</b> वि० कचवाट करनेवाला; ब⊒रायलं प्र∘ किं∵ जिन उपराय
	<b>कचवाववुं</b> स० कि० दिल दुखाना जन्मनां अ० कि० दिल ट्रोसारा लेका
रंभ करना (३)किसी काममें प्रारंभिक जनसम्पर्ध जोना । संस्थर जन्मी –	<b>कचवावुं अ</b> ० कि० दिलमें दुःख होना; जगपा (८२) जोन
अवस्थामें होना ।धूंटचा करवो ==	चुभना [(३)कुटेव
अपनी बात पर आना ; अपनी गाना.]	कचाल पुं० कुप्रथा (२) स्त्री० कुचाल

#### के चा वा

ęю

न्दारी

	1-
कचाश स्त्री० कचाई (२) न्यूनता	कजारः
कचियुं वि० देखिये ' कचकचियुं '	(२)
<b>कचुंबर</b> स्त्री०; न० कचूमर	कजावो
कचूको पुं० चिऔ	कजिया
<b>कचूडो</b> पुं० झूला	कजियो
<b>कचूम</b> र स्त्री० देखिये 'कचुंबर'	कजोबुं
कर्चूरो पुं० कुचला	असम
कचेरी स्त्री० कचहरी; अदालत (२)	ন্যায়া
आफ़िस; दफ़्तर; कार्यालय (३)	कट स्त्र
इजलास ; दीवानखाना । [ –ए चंडवुं,	कट पुंध
जबुं = कचहरी चढना.∮	<b>कट</b> अ
कचोरी स्त्री० कचौरी	<del>ल</del> ईने
<b>कचोरो</b> पुं० कुचला [रखनेका पात्र	कटकट
कथोलुं न० कचुल्ला; कटोरा (२) रोली	वाज़ (
कच्चर वि० कुचला हुआ(२)गुप्त (मार)	टोक;
कच्चरघाण पुं० कचरधान, पूरी	आवो
कच्चरधाण पुं० कचरधान; पूरी पामाली। [-नीकळवो, वळवो =	कटकटा
बिलकुल तबाह होना.]	कटकर्णू
कच्चाबच्चां नव्बव्वव्कच्चे-बच्चे	कटकिय
कच्छ पु॰ कच्छ; लँगोट (२)कछुआ(३)	·(३)
कछारँ; किनारेकी जमीन (४) हमेशा	कटकिय
जहाँ पानी रहे वह देश; केच्छ (५)	कटकी
पुं०; न० कच्छ प्रदेश जो सौराष्ट्रके	कटक्
उत्तरमें है	कटको
कच्छी वि० कच्छी; कच्छ देशका(२)	कटलुं
स्त्री० कच्छकी बोली; कच्छी	कटोकट
कच्छो पुं० कच्छ; लॅंगोट	(२)
कछोटी स्त्री० लँगोटी (२) इसमें आ-	प्रतिद्व
वृत्त अवयव	कटाणुं '
कछोटो पुं० कछोटा; कछनी (२)	(३)
कछोटेमें आवृत अवयव	(मुंह
<b>कछोरु (-रं</b> ) न० बुरी औलाद; कपूत	कटामण
कजळ (ळा) वुं० अ० कि० कजलाना;	जिसम
भँगाना	कटार
कजात वि० कुजन्मा; कमजात; नीच	कटार
-	

जा स्त्री० खुदाका कहर; आफ़त कुजा; मौत <u>ो प</u>ं० कजाबा **खोर** वि० झगड़ालू ौ पुं० क्रजिया; तकरार न० स्वभाव, रूप, वय आदिमें गन जोड़ा (वर-कन्याका ) ; बेमेल भी० **कु**ट्टी (लड़कोंके खेलमें) ० कट; काट (पोशाक) ा० तुरत; पट; खटसे । [--वईने, =खट आवाजने साथ (ट्टना).] र स्त्री० ऊब पैदा करनेवाली आ-(२)बक-बक; चिढ चढे ऐसी : किट-किट (३)अ० ' किट-किट' जिके साथ (४) कड़कड़ाते हुए **ावव्** स० कि० कटकटाना ां वि० कनकना (टूटना) **; लस्ता** षं वि० कनकना(२)न० छप्पर बालाखाना ; मंजिल यो पुं० सैनिक स्त्री० छोटा टुकड़ा; कुटका न० छोटा खेत: गाटा पुं० टुकड्रा न० कुटिया (२)टट्टर टी स्त्री० मारपीट; मारकाट जानलेवा दुश्मती (३) खबरदस्त इंद्रिता (४) नाजुक समय; अड़ी वि० कसैला (२) कसैला (स्वाद) बिगाड़ा हुआ; बनाया हुआ ) (४) न० अयोग्य समय णुं वि० कसाव चढ़ावे ऐसा (२) में कसाव उत्तरे ऐसा(३)कसँला स्त्री० (अखबारका) कालम

कटार (--रौ) स्त्री० कटार (शस्त्र)

44-14	

के बल

कटाव	६८ कहतुं
कटाव पुं० एक छंद (२)पत्तोंके खेलमें	कठेडो (-रो) पुं० खिड़की, जीना, छत
अमुक पत्तोंका न होना(३) काट या	आदि स्थानों परसे गिर न जाये इस
खोदकर बेल-बूटे बनाना ; कटाय (४)	लिए की हुई आड़; कटहरा (२)
(पतंगका)पेच 👘 [बूटोंवाला	अटारी; झरोखा
<b>कटावदार</b> वि० कटावदार; बैल <del>े</del> -	<b>कठोळ</b> न० दलहन; द्विदल
<b>कटावच्</b> स०क्रि० कटाना ; कटवाना (२ <b>)</b>	<b>कड</b> स्त्री० पहली बार कूटा हुआ धान
<b>अ०क्रि०</b> कसाव लगे ऐसा करना	(२)गिनती पर दी जानेवाली चोजके
<b>कटाव्</b> अ० कि० कसाना (कसावसे)	ऊपर प्रति सैंकड़े दी जाती वृद्धि
<b>कटि</b> स्त्री० कटि; कमर	<b>कडक</b> वि० कुरकुरा (२) कठिन;
<b>कटिबद्ध</b> वि० कटिबद्ध; तैयार	मुश्किल्ल (३) कच्चा; अपरिपक्व
कटिबंध पु॰ कमरबंद (२) कटिबंध	<b>केडकेड</b> अ० कड़कड़ाकर
(पृष्वीका)	<b>कडकडत्</b> वि० देखिये ' ककडतुं '
कटी स्त्री०, कटीबद्ध वि०, कटीबंध पु०	कडकडाट पुं० (२)अ०देखिए 'ककडाट'
देखिये 'कटि; कटिबद्ध; कटिबंध '	<b>कडकडाववुं</b> स० कि० कड़कड़ाना
कटु(०क) वि० कटु; कड़वा (२) तीखा	<b>कडकडीने</b> अ० देखिये ' ककडीने '(२)
(३)अप्रिय [ला.]	अति वेगसे
कटेव स्त्री० कुटेव	<b>कडकबंगाळी</b> वि० मुफ़लिस ; निर्धन
कटोकटी स्त्री० अड़ी; नाजुक वक्त	<b>कडकाई</b> स्त्री० कड़ाई (२) तंगी; अर्थकष्ट
कटोरी स्त्री० कटोरी; छोटा कटोरा	<b>कउकाबाऌ्स</b> वि०देखिए 'कडकबंगाळी'
कटोरो पुं० कटोरा; प्याला	<b>कडको</b> स्त्री० छोटा टुकड़ा
कट्टर वि० बहुत कड़ा; दृढ़ (२) कट्टर;	<b>कडको</b> पुं० टुकड़ा
चुस्त (३) प्राणघातक	<b>कडछी स्त्री</b> ० कलछी ; करछी
कट्टा (-ट्टी) स्त्री० कुट्टी; मैत्री-भंग	<b>कडछो</b> पुं० कलछा ; करछा
<b>कट्टुं</b> वि० देखिये ' कट्टर '	कडड (०कडड) अ० कड़ककर (टूटना)
कठ स्त्री० जमस (२) अंतर पीड़ा; घब-	<b>कडउडभूस</b> अ० कड़ककर (टूटना,
ड़ाहट (३)कठिनाई	गिरना आदि)
<b>कठण</b> वि० कठिन(२)दुस्साध्य ; मुझ्किल ।	कडवो पु० कम देना (२)मिलावट (३)
[-छातीनुं = दुःख या संकट्झेल सके	बाट । [ <b>~करवो</b> =छूट देकर सस्तेमें <i>दे</i>
या उसका मुक्रावला करे ऐसा ]	देना (२) बाधा दूर करके सौदा
<b>कठणाई</b> स्त्री० कठिनाई	पटाना.] [कड़वी; कड़वी
<b>कठव्ं</b> अ० कि० दुःस होना; घबड़ाना	कडप पु० देखिए 'करप '(२)स्त्री०
(२) ऊमस होना(३) चुभना; अखरना	<b>कडब स्त्री</b> ० कड़बी; कड़वी
कठारो पुं० ऊमस (२)देखिये ' कठेडो '	<b>कडली</b> स्त्री० कडुला; छोटा कड़ा
<b>कठियारं न</b> ० लकड़हारेका पेशा	(बच्चोंका)
<b>कठियारो</b> पुं० लकडंहारा	कडलुं न० कड़ा; पविका एक गहना

कडवाट स्त्री० कडुआहट (२) मनमें

कडवुं न० एक ही रागके काव्यकी

**कडव्** वि० कड़वा; कड़आ (२) अप्रिय ।

**कडवुंझेर, कडवुंबल** वि० जहर, विष-सा

कडवो पुं० करवा; टोंटीदार लोटा

**कडा** पुं० एक प्रकारका घान-चावल

कडा स्त्री० कड़ाही (तलनेकी) (२)देख

**कडाकडो** स्त्री० चढ़ा-ऊपरी(२)सस्त

बोल-चाल; मार-पीट (३) कड़ाका;

**कडाक्**ट स्त्री० किच-किच; साथापच्ची

कडाक्टियुं दि० मगजचट; माथापच्ची

कडाको पु० कड़ाका; कड़क (२) कड़ा-

का; निराहार उपवास। किडाका

थवा, पडवा = खाना नसीब न होना;

**कडाबोन** स्त्री० कडाबीन; छोटी बंदूक

**कडियाकाम** न०राजका काम ; राजगीरी

कडियाळी वि० स्त्री० लोहेकी कड़ियाँ

कडी स्त्री०कडी; अँकड़ी; हुक (२) गोल

मोड़ा हुआ तार या छड़; कड़ी (३)

कानका एक गहना; बाली (४)बेड़ी

करनेवाला; उकता देनेवाला

कडा पुं० कुटज; इन्द्रजौका पेड़

कडाई स्त्री० कड़ाही; कढ़ाई

**कडाक** अ० कडाकेके साथ

किडयो जीभ=अप्रिय लगे औसा

[कडवा; अति कटु

दुर्भाव; संबंधमें कटुता [ला.]

**कडवा**झ स्त्री० कड्आपन

कुछ कड़ियोंका समुदाय

**कडवी** स्त्री० गुडुच

बोलना.]

फ़ाक़ा

फ़ाके होना.]

**कडा (--ढा) युं** न० कड़ाहा

जड़ी हुई लाठी; लोहाँगी

कवियो पुं० राज; मेमार

#### कंब्राट

**4**8

(५)कविताकी टेक; चरण; कड़ी (६)क़तार; पंक्ति (७)किवाड्की जंजीर या साँकल; कुंडी । [--करबी = बेड़ी डालना **। --देवी, मारवी = कुंडी** लगाना.] [(२)मजबूत;दुढ़ कढीतोड वि० कड़ी या सांकल तोड़े ऐसा कडीबंध वि० सिलसिलेवार; पंक्तिबद्ध (२) साँकलकी तरह जोड़ा हुआ कडु न० एक वनस्पति-औषधि;कूटकी कडुं न० कड़ा; बडी कड़ी (२)हायका एक गहना; कड़ा **कडूचुं** वि० कुछ कड़वे स्वादका कडेटाट अ० झपाटेके साथ ; तेजीसे **कडो** पुं० कुड़ा; इन्द्रजौका पेड़ कडोकफ न० कफ; चकमक और डोरेका आग झाइनेका एक साधन कडंग्रंवि० कुढंगा; बेडौल कढा(०ई) स्त्री० कढ़ाई; कड़ाही कढापो पुं० ऊमस (२) क्लेश; कुढ़न (३) कढ़ी (तिरस्कारमें) **कढायुं** न० कड़ाहा कढियल वि०कढ़ा हुआ; खूब खौला हुआ **कढी** स्त्री० कढी कण पुं० कण (२) परमाणु (३) काह्यण या अभ्यागतको दिया हुआ মিধ্বান্ন [লা.] **कणक** वि० अपरिपक्व; जरा क<del>ण्चा</del> कणक स्त्री० गूँधा हुआ आटा (२) শিক্ষাম कणकण स्त्री० कराह; आह **कणकणवुं** अ० कि० कराहना; आह खीचना कणकी स्त्री० कनकी; किनका कणजियुं न० करंजके बीजका तेल कणको स्त्री० एक पेड़; करंज

For Private and Personal Use Only

क्षणर्वु	७० कनकवो
<b>कणवुं</b> अ० कि० कराहना	<b>कधीर न</b> ० रौंगे और सीसेके मेलसे
कणसंखुं न० बाल (जौ, गेहूँ आदिकी)	
<b>कणसर्वु</b> अ० कि० कराहना	तुच्छ वस्तु [ला.]
<b>कणिक पुं० ; स्त्री० वाल ; स्रोशा(२)</b> कण	
किरच (३)गूँधा हुआ आटा	कथीरो पुं० बड़ी किलनी; चिचड़ा
<b>कणिका</b> स्त्री० कणिका; परमाणु(२)	
रगड़से शरीर पर पड़ा हुआ चिह्न; 	्विगड़ना <b>कथोल (–लुं</b> )वि० कुठौरका (२)असु-
षट्ठा	कथाल(–लु)।२७ पुठारमा (२)अपु- विधाजनक(३)प्रतिकृल; बाषक
कणी स्त्री॰ देखिये ' कणिका '	कथ्याई वि० कत्यई; खैरा
<b>कप्पेजरो</b> पुं० एक दनस्पतिऔषधि	ana l'art anno 1777 (ana màra
<b>कणो</b> पुं० सँपोला; पोआ (२) फेंटा (३)	A
अोटनीकी धुरी (४) ओटनीकी पेचदाय	उटा० 'कदरूप'
लाट [कैंची;कैंची	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
कतरणी स्त्री० धातुके पत्तर काटनेकी	
कतरातुं (युं) वि० कतराता हुआ ;	' (४) पद∶ दरजा । [ –स्रसर्वु≔कुल,
तिरछा जाता हुआ <b>कतरायुं</b> अ० कि० कतराना; तिरछ	दरजा या आबरू जाना या कम होना.]
जाना (२) विरुद्ध जाना (३) कटना	भाषभ गण्यापन, पाल (२) ७ग
कतल स्त्री॰ कतल; क्रत्ल	<b>कदमबोसी</b> स्त्री० कदमबोसी (२)
<b>कतलखानुं</b> न० कत्लगाह; वधस्थल	साष्टांग प्रणाम; नमस्कार
कतलनी रात स्त्री० कतलकी रात;	<b>कदर</b> स्त्री० कट; कदर
मुहर्रम महीनेकी दसवीं रात (२)बहुत	
धमाल और जोरोंकी तैयारीका समय	<b>MANKER 144 MARKER 1000</b>
किसी कामको पूरा करनेके वास्ते	
जोर-शोरसे की जानेवाली पूर्व तैयार	
या उसकी धमाल	<b>कदाचित</b> अ० कदाचित्; कभी
कतार स्त्री० कतार; पंक्ति	कदापि अ० कदापि; कभी (२)हरगिज
कथनी स्त्री० कथा; बात; कथनी [प	कदावर वि० कहावर; बड़े डील-डीलका
कथरोट स्त्री० कठौता; कठैला	(२)मजब्त
कथंबुं स० कि० कहना; बोलना(२)कथा	
वार्ता करना (३) टीका या विवेचन	
करना [(२)बिगड़न	
कथळव् अ०कि०(हड्डी आदिका)उखड़न	· · · · · ·
कयाकार पुं० कयक्कड़; कयक(२	
कहानी रचनेवाला; कहानीकार	<b>मुकाववो=</b> पतंगको उड़ता करनेके

57	R,	η	α

कन्द्र स्त —	V
लिए दूसरेका उसे दूर ले जाकर	
छोड़ना; दरियाई देना ।चगाववो	
= पतंग उड़ाना.]	
कनडगत स्त्री० कष्ट; दु:ख देना	
<b>कनडव्</b> स० कि० दुःख देना; सताना	
कनात स्त्री० कनात (२)मोटे कपड़ेका	
पुर्दा	
कने अ० कने; पास	
<b>कन्ना</b> स्त्री० कन्ना(पतंगका)[— <b>खायी</b> ≕	
कनियाना; कन्नी खाना। बांधवी=	
कन्नेकी डोर बांधना.]	
कन्नावुं अ० कि० कनियाना; कन्नी खाना	
• कन्नी स्त्री० कन्नी; घज्जी (पतंगकी	
(२)छोटी पतंग	
कन्या स्त्री० कन्या; क्वारी लड्की (२)	
पुत्री (३)कन्या (राशि) (४)पार्वती (५)राज्य ( 🚃 के िल्लू केंट्र	
(५)कन्ना । [ <b>–ऊतरबी</b> ≕ विवाह-संबंध रोज्यः जेनी व्याप्तक रोज्या ।	
होना; बेटी-व्यवहारहोना.] ————————————————————————————————————	
कन्याकाळ पुं० कुँआरेपनका काल (२)	
कन्याका विवाह करनेका समय	
कन्यारादा वि० कन्यारासी; स्त्री-स्व-	
भाववाला (२)स्त्री०एक राशि; कन्या	
<b>कन्याविकय</b> पुं० कन्या देनेके बदलेमें जिसे उपनेकारे पैलेश करणकारक	
लिये जानेवाले पैसे; कन्याझुल्क	
<b>कप</b> पुं० कप; प्याला (२)प्रतियोगितामें विजेताको मिलनेवाला प्याले जैसा	
विजय-प्रतीक	
<b>कृपची</b> स्त्री० गिट्टी (२) पत्थरका चूरा	
<b>कपट</b> न० कपट । [ <b>रमवुं =</b> धोखा देना;	
कपट करना. ] जनवरेषा संस्कृतनार राजनारि जेल	
कपटवेश पुं० कपटवेश; बनावटी भेस	
<b>कपडछाण</b> वि० कपड़छान; कपडेसे छाना	
्हुआ (२) (औषध आदि) कपड़ेमें सीकर पिटीपे नीपा तथा। सामकीयी	
सीकर मिट्टीसे लीपा हुआ ; कपड़मिट्टी हिया वैया (३) वर्ष <del>इपलय</del>	
किया हुआ (३) न० कपड़छन	
8. 	

<b>कपडमट्टी</b> स्त्री० कपड़सिट्टी
<b>कपडांसलां</b> न० ब० व० कपड़ा-रुत्ता
कपडुं न० कोरा कपड़ा (२) वस्त्र ; कपड़ा
कपर्छ वि० कठिन (२)तेज स्वभाववाला;
सस्त (३) दबंग (आदमी)
कपालर वि० देखिये ' कुपात्र '
<b>कपाझियो</b> पुं० बिनौला(२)फुंसी आदिको
दबानेसे निकलनेवाली कड़ी पीप; कील
<b>कपाज्ञी, कपासी</b> स्त्री० (पाँवके)तलत्रोंमें
गाँठ पड़ जाना; गोलरू
कपरस पुं॰ कपासका पौधा (२)बीज-
समेत रुई; कपास
<b>कपासियो</b> पुं० देखिये 'कपाशियो '
कपाळ न० ललाट; भाल (२) कपाल;
खोपड़ी (३) भाग्य [ला.]
कपाळकूट स्त्री० माथापच्ची; किच-किच
कपूस पुं० कपूत (बेटा)
कपूर न०कपूर [सुगन्धित जड़ी)
कपूरकाचरो(स्त्री) स्त्री० कपूरी(एक
कपूरियां न०ब०व० कपूरी (नागरदेलके
कपूरियां न०ब०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२)कच्चे आमकी लंबी फॉकें
कपूरियां न०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२)कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२)
कपूरियां न०व०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२)कच्चे आमकी लंबी फॉकें कपूरी दि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान)
कपूरियां न०व०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२)कच्चे आमकी लंबी फॉकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; अटपटा
कपूरियां न०ब०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; अटपटा कपोदी स्त्री०,(-दुं)न० पपड़ी (रोटीकी)
कपूरियां न॰ब॰व॰ कपूरी (नागरदेलके पान) (२)कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि॰ कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि॰ पेचीदा; अटपटा कपोचे स्त्री॰,(-टुं)न॰ पपड़ी (रोटीकी) (२)पतली छाल; ऊपरी पतली परत
कपूरियां न०व०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; अटपटा कपोटी स्त्री०,(-टुं) न० पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोळकल्पित वि० कपोलकल्पित
कपूरियां नव्यव्यं कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी विव कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं विव पेचीदा; अटपटा कपोटी स्त्रीव, (-र्टु) नव पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोछकल्पित विव कपोलकल्पित कप्तान पुंव अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ्र-
कपूरियां न॰ब॰व॰ कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि॰ कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि॰ पेचीदा; जटपटा कपोटी स्ती॰,(-टुं) न॰ पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोळकल्पित वि॰ कपोलकल्पित कप्तान पुं० अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ़- सर(२) जहाज या स्टीमरका मुखिया;
कपूरियां न०ब०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; अटपटा कपोटी स्त्री०,(-टुं) न० पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोळकल्पित वि० कपोलकल्पित कप्ताक पुं० अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ़- सर (२) जहाज या स्टीमरका मुखिया; कप्तान (३) पलटन या किसी टुकड़ीका
कपूरियां न०व०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; जटपटा कपोटी स्त्री०,(-र्टु) न० पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोळकल्पित वि० कपोलकल्पित कप्तान पुं० अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ़- सर (२) जहाज या स्टीमरका मुखिया; कप्तान (३) पलटन या किसी टुकड़ीका नायक; दल-नायक
कपूरियां नं ० व ० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; अटपटा कपोटी स्त्री०,(-र्टु) नं० पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोछकल्पित वि० कपोलकल्पित कप्तान पुं० अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ़्र- सर (२) जहाज या स्टीमरका मुखिया; कप्तान (३) पलटन या किसी टुकड़ीका नायक; दल-नायक कफ पुं० कफ; शरीरकी तीन घानुओंमें
कपूरियां न०व०व० कपूरी (नागरदेलके पान) (२) कच्चे आमकी लंबी फौकें कपूरी वि० कपूरी; कपूरके रंगका (२) कपूरी नामका (पान) कपेचुं वि० पेचीदा; जटपटा कपोटी स्त्री०,(-र्टु) न० पपड़ी (रोटीकी) (२) पतली छाल; ऊपरी पतली परत कपोळकल्पित वि० कपोलकल्पित कप्तान पुं० अगुआ; मुख्य या वड़ा अफ़- सर (२) जहाज या स्टीमरका मुखिया; कप्तान (३) पलटन या किसी टुकड़ीका नायक; दल-नायक

पकड़नेवाली रुई; कफ

रुफ्रम	७२	कभारणा
कफन न० कफ़न (२)मुर्दा रसनेका बक्स		कबाब पुं० कबाब
कफनी स्त्री० कफ़नी; फ़क्कीरोंका बिना		<b>कवावची</b> नी स्त्री० कवावचीनी
बहिका कुरता (२)छोटी बाँहका लंबा	•	कवालो पु० बदला; एवज; विनिमय (२)
कुरता		कबाला; बयनामा (३)वादेके मुताबिक
<b>कफा</b> वि० खफ़ा; नाराज; कुपित		पैसे देनेकी शर्त पर की हुई खरीद
<b>फफामरजी</b> स्त्री० खफ़गी; नाराजगी		कबी अ० कभी; कदापि
कफोडुं वि० प्रतिकूल; विषम (२)कुढंगा;		<b>कबोर</b> वि० कबीर; महान (२) पुं०
मुश्किल [(२) कोष्ठबद्ध		भाट; कवि(३)संत कबीरदास
<b>कबज</b> वि० जो कब्जे या अधिकारमें हो		<b>कबीरो</b> पुं० कबीरपंथियोंका चौड़े मुँहका
<b>कबजागीरो</b> पुं० भोगबंधक; पटबंधक		भिक्षापात्र; कटोरा (२) इस्लामी
<b>कबजिय (−या)त</b> स्त्री० रुकावट ; अव-		शरियतके मुताबिक महा अपराध
रोध (२) क़ब्ज ; क़ब्जियत		<b>कबीलो</b> पुं० बोवी-बच्चे (२)क़बीला
<b>कबजेदार</b> वि० कब्जेवाला (२) पुं०		<b>कबुलाववुं</b> स० कि० कबुलेवाना
ऐसाव्यक्ति; क्राबिज		कबुलावुं अ० क्रि० क़बूला जाना
<b>कबजो</b> पुं० क़ब्जा; अधिकार; दखल	•	<b>कबूँतर</b> ँन० कबूतर
(२)दबाव; पकड़; क़ाबू (३)बिना	•	<b>कबूंतरखान्</b> न० कबूतरखाना; काबुक
बाँहका या छोटी बाँहका कुरता (४)		(२) छोटे छोटे बहुत खानोंवाली अल-
चोली ; अँगिया । [ <b>–करवो =</b> कब्ज़ा या		मारी (३) गंदी जगह [ला.]
अधिकार करना;हथियाना। <b>–मेळववो</b> ,		कबूध स्त्री० कुबुद्धिः दुर्बुद्धि
<b>लेवो ≕</b> वाक़ायदा क़ब्ज़ा लेना.]		कबूल वि० कबूल; मंजूर
<b>कबजोभोगवटो पुं</b> ० कब्जा और उप-		कबूलत स्त्री० कबूलियत; स्वीकृति।
भोग; अधिकार और भुक्ति		
कबर स्त्री० कबर; कब्र (२)मुर्दा गाड़नेके		लियत लिखना ।मागवी = स्वीकार
बाद उसके ऊपर बनाया हुआ चब्तरा		करनेको कहना; बात मंजूर है या
कवरस्तान न० क़ब्रिस्तान; क़वरिस्तान		नहीं यह पूछना; स्वीकृति माँगना.]
<b>कबाट</b> पुं०; न० अलमारी		कबूलतनामुं न०; कबूलतपत्र पुं० कबू-
कबाड ति० कुरूप; दुष्ट (२)पुं०घासका		ल्यित; इक़रारनामा; स्वीक्रति-पत्र
भरा हुआ गाड़ा (३)न० मकान बना-		कबूलमंजूर वि० कबूल किया हुआ ;
नेकी लकड़ी		स्वीकृत; मंजूर
क्बाडी वि० बुरे काम करनेवाला (२)		कबूलवुं स० कि० कबूलना;स्वीकार
पुं० मकानको ल <b>कड़ीका व्या</b> पारी (३)		करना (२)स्वीकृति देना
लकडहारा		कबूलात, (०नामुं), (०पत्र) देखिये
कबाडुं वि० बेडोल; कुढंगा; कुरूप (२)		'कबूलत, कबूलतनाम्', कबूलतपत्र' 
बुरा; दुष्ट; व्यभिचारी (३) न० वैसा		का, का स्तान देखिये 'कबर, कबरस्तान'
कॅमि		कभारजा स्त्री० लड़ाकी, कर्कशा स्त्री

## कभावो

कभावो पुं० अनिच्छा; अरुचि; तिरस्कार
कम वि०कम (२) खराब ; बुरा
<b>कमअक्कल</b> वि०कमअङ्गल; मूर्ख (२)
स्त्री० कम अङ्गल [ज्ञान
कमआवडत स्त्री० अल्प कौशल; अल्प
<b>कमकमवुं</b> अ० कि० सिंहरना; कांपना
<b>कमकमाट</b> पुं०, ( <i></i> टो) स्त्री० कॅंपकॅंपी;
सिहरन (२)त्रास (३)जुगुप्सा; घृणा
<b>कमकमां</b> न० ब० व० कॅंपकॅंपी; सिहरन ।
[आव्वां, खावां, छूटवां ≔ कॅंपकॅंपी
छूटना.]
<b>कर्मकमी</b> स्त्री० कॅंपकॅंपी (२) घिन
<b>कमखो</b> पुं० कंचुकी; अँगिया
<b>कमजरे</b> अ०वृथा; बेकार; बरबाद
<b>कमजात</b> वि० रखेलीके पेटका
कमठाडुं न० कमठी; कमठ
<b>कमठाण</b> न० बड़ा परिवार; रिसाला
(२) असबाब; सामान(३) बेढंगी या जन्मचर करी जन्म
खामखा वड़ी रचना कपन्द तिरू कपन्दर प्रक्रिय
<b>कमतर</b> वि० कमतर; घटिया कमराकाल जि० कम सम्बद्धांका
<b>कमताकात</b> वि० कम ताक़तवाला <b>कमली</b> ति० कम: अला
कमती वि० कम ; अल्प कमन न० अप्रीति ; अरुचि [नसीबी
<b>कमन न० अ</b> प्रीति; अरुचि [नसीबी <b>कमनसीब</b> वि० कमनसीब (२)न० कम-
कमबेश वि० कमोबेश; कम-ज्यादा
कम्बर्भा पण कमावस, कम-प्रयादा कमर स्त्री० कमर। [कस्वी, बांधवरे=
कमर कसना; तैयार होना; कमर
कमर करना, तथार हाना, कमर
बाँधना । <b>–तूटवो, भांगवो =</b> हताश दोवाः दिस तेर जाताः जिपस पा≠
होना;दिल बैठ जाना; हिम्मत पस्त
होन≀। <b>⊷तोडवी</b> ≔स€त मेहनत करना
(२) अन्य पस्तहिम्मत हो ऐत्ता करना.]
कमरक (स)न० कमरख (फल)
<b>कमरपटो, कमरबंध</b> पुं० कमरबंद ; पट्टा
कमळ न०कमल; पद्म
<b>कमळकाकडी</b> स्त्री० कमलगट्टा

कमीजास्ती
कमळी स्त्री० कमलबाई; पीलिया
कमळो पु० कमल;पीलिया(२)विकृत
<b>বৃ</b> ষ্টি [স্তা.]
कमंडळ (ळू) न० कमंडल; कमंडलु
(२)एक धातुपात्र (परोसनेका)
<b>कमाई</b> स्त्री० कमाई; उपार्जित धन
कमाउ वि० कमाऊ; कमासुत
<b>कमाड</b> न० किवाड़ । [–देवुं, वासवुं≐
किवाड़ बंद करना । <b>−भांगवां≕बार</b> बार
आना-जाना (वसूली) आदिके लिए).]
कमाणी स्त्री० कमाई; कमाया हुआ धन
कमानस्त्री० कमान; धनुष (२)कमानके
आकारकी कोई बनावट; मेहराब
_ (३) कमानी ; 'स्प्रिंग' । <b>[–चढाववी ≕</b>
कमान खोंचना (धनुष )। <b>छटकवी =</b>
कमानी (स्प्रिंग) छटकना (२)गुस्सेमें
होना; कमान चढ़ना.]
कमाल वि० कमाल;पूर्ण (२) उत्कृष्ट;
कमाल; बढ़िया (३)सुंदर(४)स्त्री०
्हद ; पराकाष्ठा । [ <b>–करवो</b> ≕कमाल
करना; भारी पराक्रमका काम करना.]
कमावयुं स० कि० (चमड़ा)कमाना;
काम लेने लायक बनाना (२) 'कमावु'
कियाका प्रेरणार्थक रूप; कमवाना
<b>कमाव</b> ुंस० कि० कमाना , पैदा करना
कमिटी स्त्री० कमिटी; कमेटी; समिति
कमिशन न०कमीशन; कमिशन; दस्तूरी
(२)नियुक्त जाँच-समिति; कमीशम
(३) अधिकार-पत्र ; सनद (४)मुख-
तारी; अधिकार
<b>कमिद्यानर</b> पुं० कमिदनर-एक अमलदार

- .(२) कमीशतका सदस्य
- कमी वि०कम;अल्प(२)न्यून;अधूरा; ऊन (३) ऱ्वी० कमी; खामी; कसर कमोजास्ती वि० कम-ज्यादा; कम-जेश

करम

<u>_</u>	
फमाना	ĺ

कमीना स्त्री० कमी; खामी; क़सर कमुरत न० अशुभ मुहुर्त; कुसाइत कमूरतां न० ब० व० अश्भ दिन कमोत न० कुमौत; अस्वाभाविक मृत्यु कमोसम स्त्री० बेमौसिमका समय; प्रतिकूल ऋतु; अयोग्य काल कम्मर स्त्री० देखिये 'कमर' कयुं स० (२)वि० कौन; कौनसा;क्या **कर** पुं० कर; हाथ (२) कर; महसूल; जकात (३) नेग; लाग (४) किरण (५) स्ंड़ (६) दोकी संज्ञा। [-धालवो, ठोकवो, नाखवो, बेसाडवो = कर लगाना । –भरवो = कर देना, भरना.] **करकर** स्त्री० किरकिरी **करकरियावर** पूं० लग्न आदि अवसरों पर की हुई लेन-देनकी प्रतिज्ञा; ठहरौनी; पहरावनी (पोशाक या रुपये); लाग **करकरुं** वि० करकरा; खुरदरा करकसर स्त्री० किफ़ायत ; मितव्ययिता **करकसरिय**ुं वि०किफ़ायतशार ; कमखर्च **करकोल्खुं** स०क्रि० धीरे-धीरे काटकर या ककोरकर खाना; ट्रैंगना करगरवुं अ०कि० देखिये 'कगरवुं' करच स्त्री० किरच; कनी **करचली** स्त्री० झुर्री (देह पर);चुनट (कागज आदि पर) **करचलो** पुं० केकड़ा **करचळी** स्त्री० देखिये 'करचली' करचोली (--ळी) स्त्री०देखिये 'करचली' **करज न०** कर्ज; कर्जा। [**⊸काढवूं**≕कर्ज पर लेना ; कर्ज लेना । **–भूकवर्षु,पतवर्वु** = ऋण चुकाना; कर्ज अदा करना। करेजे आपवुं, लेवुं, काढवुं=कर्ज़के रूपमें देना, लेना.]

**करजवार** वि० कर्जवार

- **करजाळी** स्त्री० काजल पारनेका मिट्री-
  - का दिया ; कजलौटी (२) चिमनी
- करड स्त्री० देखिये 'कड'
- करड स्त्री० काट;डंक(२)खुजली
- करडकणुं वि० कटहा; काटनेवाला
- **करडवुं** स०कि० काटना ; डॅसना ; दाँतसे काटना (२) खासा (तिरस्कारमे) (३) कष्ट प़हुँचाना ; काटना
- करडाकी (-गी) स्त्रीर्थ (वाणीकी) वत्रता;कटाक्ष (२)बाँकपन; अकड़; एँठ (३) सस्ती; कड़ाई
- **करणी** स्त्री०करनी; करतूत;आचरण (२) राजका एक औजार;कन्नी(३) चमत्कार; जाद्र
- करताल (-ळ) स्त्री० हाथसे ताली बजाना (२) करताल; झांझ
- करतां अ० ~से (तुलना बतानेके अर्थमें); --की अपेक्षा
- करतुंकारवतुं वि० करता-धरता ; मुख्य ; अगुआ ; जिसकी चलती हो ; कारबारी
- **करतूक(~त)** न०करतूत; करनी(२) (खराब) बर्ताब; अग्र्चरण
- **करप** पुं० आतंक;दाब;धाक; अंकुझ । [**–बेसाडवो**≕धाक जमाना । **–रास्तवो** =क़(बूमें रखना; बसमें करनेके लिये रोब जमाना.]
- करपवुं स० कि० दौतोंसे थोड़ा-थोड़ा काटना; ककोरना; कुतरना; टूँगना करपीण वि० रोथें खड़े करनेवाला;निदंस
- **करबडी** स्त्री ॰ खेतीकी घास निकालनेका एक औजार ; गहनी
- **करबव्**स० कि० खेतमें गहनी देना
- करभाग पुं० करके रूपमें देनेका भाग
- **करम** न० करम; काम(२)कुकर्म(३)

भाग्य; विधाता । [**–ऊघडयुं**≕नसीब

करम

खुरू आना; सुअवसर प्राप्त होना।	आरेसे शरीर चिरवाकर प्राणत्याग
<b>फूटबुं</b> ≕करम फूटना;त्रुरे दिन आना ।	करना; काशी-करबट लेना.]
<b>–वांधवां=अ</b> न्नेवाले जन्ममें (खराब)	करवती स्त्री०छोटा करवतं ; आरी (२)
फल भुगतने पड़े ऐसे करम करना;	सुनारका एक अोजार
पाप कमाना । <del>–</del> ना भोग≕कर्मफलके	<b>करवूं</b> स०क्रि० करना;बरतना;आच-
रूपमें मिलनेवाले दुःख ; कर्मभोग.]	रना; बनाना; आयोजन क२ना;
करन स्त्री॰करम; उदारता (२)कृपा	रचना करना;संपादन करना;पैदा
करम पुं० कृमि; पेटमें होनेवाला एक	करना वग्नैरह(२)अन्य कियाके साथ
कीडा	सहायक कियाके रूपमें आता है और
<b>करमकथा</b> स्त्री० करमकथा; बीती	अर्थमें विशेषता लाता है; उदा० जोबु
<b>करमकल्लो</b> पु० करमकल्ला; बंधगोभी;	करवुं' <del>≕दे</del> खना-दाखना (३)भूतकाल्किक
पातगोभी	कृदंतके साथ आकर अभ्यासबोधक
<b>करमकहाणी</b> स्त्री० बीती (कथा)	किया बनाता है ; उदा० 'जोया करवुं'≕
करमकूट स्त्री० निरर्थक श्रम; माथा-	देखा करना । [ <b>करी बोधुं =</b> आजमा-
पच्ची ; किच-किच (२) पिष्टपेषण	ना; प्रयोग करना.]
करमज,करमजी देखिये 'किरमज' आदि	<b>करवुंकारववुं</b> स०कि०अंजाम देना; पूर्ण
करमबी स्त्री०, (-बो) पुं० करौंदा	करना (२) किसी कियासे सब तरहसे
<b>करमनूं फूटरुं</b> वि॰ अभागः; बदनसीब	निबटना
<b>करमाधरमी</b> वि० कर्माधीन; भाग्याधीन	करंडियो पुं० करंड (बाँसका टोकरा)
<b>करमाव्</b> अ०क्रि॰क्रुम्हलाना; मुरझाना	करंदुं वि० कर्मी; उद्यमी; उद्योगी
<b>करमियो</b> पुं० देखिये 'करम'; कृमि	करा पुं० ब०व० ओले; कर
करमी वि० नसीबदार (२) धनाढच	कराड स्त्री० बड़ी शिला; चट्टान (२)
<b>करमोड</b> स्त्री० मोच	करारा; कगार (३) खोह; कंदरा
	कराडी स्त्री०पहाड़की सेंकरी और ऊँची
<b>करमोडवुं</b> स०कि० मरोड्ना (२)थोड़े	दरार; खोह (२)दह(नदीका)(३)
प्रवाही पदार्थके साथ मिलाना–मस- ——	नदीका ऊंचा किनारा; कगार (४)
लना; सानना [लचकना	सोनीका एक औजार
करमोडाव्युं अ०कि० मोच आना;मुड़ना;	कराबीन स्त्री० कड़ाबीन; छोटी बंदूक
करमो (०व) वुं स०कि० थोड़े प्रवाही	करामत स्त्री० कारीगरी; कसब (२)
पदार्थके साथ मिलाना-मसलना;	हिकमत ; चतुराई ( ३ )बनावट <b>; रचना</b>
सानना	(४) चमत्कार; केरामात
करवडूं न० कीप	करामती वि० करामाती; चमद्रकारी
<b>करवडो</b> पुं० करवा (लोटा)	करार पुं० क़रार; कबूल;ठहराव(२)
करवत स्त्री०; न० करवत; आरा।	करार; चैन; आराम
[-मुकाववुं, मेलाववुं=(काशीमें)दूसरे	करारदाद पुं० प्रतिज्ञापत्र ; कबूलियत
जन्ममें अभोष्ट फल प्राप्त <b>करनेके लिए</b>	(२) सुलहनामा; संधिपत्र

	•
करारना	Ţ

CALE OF

करारनामु	UĘ	<b>क</b> स्ट्रम
<b>करारनाम्</b> , करारपत्र न० क़रारनामा;		कर्ता वि० कर्ता;बनानेवाला (२)पुं०
प्रतिज्ञा-पत्र; दस्तावेज (२) संघिपत्र		करनेवाला मनुष्य; कर्ता
कराल(–ळ) वि०कराल;भयंकर(२)		कर्ताहर्ता (
उग्र; तीव (३) ऊँचा [कड़कना		करनेवाला (ईश्वर) (२) हरता-
करांजवुं अ०कि० कांखना(२)चिल्लाना;		धरता; सर्वेसर्वा
करांटुं(रां') न० देखिये 'खरेटुं'		कर्मन०कर्म; किया; क्षाम (२) प्रवृत्ति;
करांठी (–ठुं) स्त्री० अरहर या कपास∽		पेशा; धंधा; उदा० 'वैश्यकर्म' (३)
का सूखा डंठल; कड़िया (अरहरकी)		आचरण; धर्म-कर्म; नित्य-नैभित्तिक
<b>करियाणुं न</b> ० किराना(२)पंसारीका पेशा		कर्म (४)करम; नसीब ; पूर्वजन्मके कर्म
<b>करियात्</b> न० चिरायता		[ला.] (५)कर्त्तव्य (६) कुकर्म; पाप
करियावर पुं० पहरावनी (पोशाक या		(७) अह पद जिस पर क्रियाका फल
रुपये);शादीमें नेगकी रस्म; लाग		पड़े; कर्म [व्या.] । [ <b>बांघवां, बंघावां</b>
करो स्त्री० परहेज; पथ्य (२) छुट्टी;		=ऐसे कर्म करना जिनके भले-बुरे
`अंझा । [ <b>पाळवी=</b> श्रहेज करना.]		फल भुगतने पड़ें.]
<b>करी</b> अ० – के कारण; – की वजहसे		<b>कमंकथा</b> स्त्री० करमकथा; बीती
करीने अ० –के लिए; –के कारण(२)		<b>कर्मचंडाळ</b> पुं० कर्मचांडाल; अधर्मी
नामका; उदा० 'दशरथ करीने एक		कर्मणि वि० कर्मणि; कर्मके अनुसार
राजा हती'		पुरुष, लिंग और वचन लेनेवाला [ब्या.]
<b>कदशप्रशस्ति</b> स्त्री० शोकगीत; 'एलीजी'		कर्मणप्रयोग पुरु कर्मणप्रयोग [व्या.]
<b>करुणांत</b> वि० करुण अंतवाला (२)न०		कर्मना भौग पुं०ब०व०दैवयोग; प्रारब्ध
दुःखान्त (नाटक); 'ट्रेजेडी' [छाछ		कर्मनां काळां, कुंडाळां न० ब० व० हीन
<b>करेटुं</b> न० देखिये 'खरेटु'(२)घोमें रही हुई		कर्मरेख [वाद; प्रारब्धवाद
<b>करेण</b> स्त्री० कनेर मोनी न्ही- सन्दर्भ सोन(२) फोग		कर्मबाद पुं० कर्मसे संबद्ध वाद (२) कर्म-
करेळी स्त्री० कुहराम; कोर(२)कोध;		कर्मवाबी वि० (२) पुं०कर्मवादमें मान-
क्रोधकी ज्वाला [दीवार; खोपा करो (रो') पुं० मकानकी वग्रलकी		नेवाला; दैववादी —र्भे कि - चरित्रक (२) - रोजी: - नर्भे
करोड स्त्री ० मेरुदंड ; रीढ़ (२) पीठ		कर्मी वि० नसीबदार (२) उद्योगी ; कर्मी
करोड स्थाण्मख्य, राखु (२) गाठ करोड पुं० करोड़; कोटि		कलः पुं० कलः गुंजन (२)कला;मात्रा (छंदःशास्त्र)
करोडपति पुं० करोड़पती		<b>कलकल पुं० प</b> क्षियोंकी. मधुर ध्वनि;
<b>करोडाधिपति</b> पु॰ करोडपती		चह-चहा (२) गुंजार (३) कलबल
करोळियो पुं० मकड़ी (२) सेंहुआ; सफ़ोद		कलकलाट पुं० कोलाहल; शोर-गुल
कोढ़ [(३) निर्देय		कलकलियो पुं०एक पक्षी; किलकिला;
कर्कग वि० कर्कश; कठोर (२) कटुभाषी		पनडुब्बी [गुच्छा
कर्कशा वि० स्त्री० कर्कशा; लड़ाकी		कलगो स्त्री० कलगी;मौर (२)फूलोंका
<b>फर्तरिप्रयोग</b> पुं० कर्तरिप्रयोग		कलण न॰दरुदल; गड़प्पा
entering for entering		· · · · · · · · · · · ·

करनेवाला (ईश्वर) (२) हरता-धरता; सर्वेसर्वा **कर्म**न०कर्म; किया; काम (२) प्रवृत्ति; पेशा; धंधा; उदा० 'वैश्यकर्म' (३) आचरण; धर्म-कर्म; नित्य-नैमित्तिक कर्म (४) करम; नसीब ; पूर्व जन्मके कर्म [ला.] (५)कर्त्तव्य (६) कुकर्म; पाप (७) वह पद जिस पर क्रियाका फल पड़े; कर्म व्या.]। (--बांघवा, बंघावां =ऐसे कर्म करना जिनके भले-ब्रे फल भुगतने पड़ें.] कर्मकथा स्त्री० करमकथा; बीती कर्मचंडाळ पुं० कर्मचांडाल; अधर्मी कर्मणि वि० कर्मणि; कर्मके अनुसार पुरुष, लिंग और वचन लेनेवाला ब्यि.] कर्मणिप्रयोग पुरु कर्मणिप्रयोग [व्या.] **कर्मना भो**ग पुं०ब०व०दैवयोग; प्रारब्ध कर्मनां काळां, कुंबाळां न० ब० व० हीन कर्मरेख [वाद; प्रारब्धवाद कर्मवाद पूं० कर्मसे संबद्ध वाद (२) कर्म-कर्मवाबी वि० (२) पुंश्कर्मवाद में मान-नेवाला ; देववादी कर्मी वि० नसीबदार (२) उद्योगी; कर्मी कल पुं० कल; गुंजन (२)कला;मात्रा (छंदः शास्त्र) कलकल पुं० पक्षियोंकी मधुर ध्वनि; चह-चहा (२) गुंजार (३) कलबल कलकलाट पुं० कोलाहल; शोर-गुल कलकलियो पुं०एक पक्षी; किलकिला; पनडुब्बी गुच्छा कलगो स्त्री० कलगी; मौर (२) फूलोंका फलण न॰दलदल; गड़पा

जानेवाला

कुलंक न० कलंक; दाग; धब्बा(२) तोहमत । [--उतारवुं, घोई नाखर्वु ==

### गलवार

919

8

ओरसे भेजा

'कंसार'; कलेवा

1. N. S. S. T कल्ला

	99
कलदार वि० कलदार (सिक्का)	
कलप पुं० कलप; सिजाब	
<b>कलपव्ं</b> अ०कि० झुरना (२)कलपना	
कलफ पुं० कलप; खिखाब 🏾 [कोलना	
कलबल स्त्री॰ कलबल (२) अस्पष्ट	
<b>कलबलाट</b> पुं० कोलाहल; शोर-गुल	
कलम स्त्री० क़लम; लेखनी (२)	
लिखावट (३) कूँची; तूलिका (४)	
रचना-कौशल; लेखनशक्ति; चित्र-	
कारीका जौहर [ला.](५) (पेड़-	
पौधेकी) क़ल्प्रेस, पैबंद (६) दफ़ा;	
धारा (कानूनकी) (७) करारकी	
र्श्त (८) भेम्या या लिपि; उदा०	
′त्रण कलम जाणनार'।[⊷कपावी	
= इज्जत जाना (२) बरतरफ़ होना ।	
<b>–करबी</b> ≕क़लस लगाना (पेड़, पौदा ) ।	
<b>चालवी, चलावयी =</b> बिना रुके सुंदर	
र्डगसे लिखना । <b>लागवी</b> (क़ानूनकी	
षारा) लागू होना ; दफ़ा लगना.]	
कलमदान न० कलमदान	
<b>कलमबंदी</b> स्त्री० दफ़ावार या पैरे बांध-	
कर की हुई चौकस लिखाई (२)	
कुर्कनामा (३) जब्त की हुई चीजोकी	
तफ़सील (४) किसी भी भागकी	
व्यवस्था या कामकाजकी पढति बताने-	
वाली तफ़सील (५) कौल-क़रार	
कलमवार अ० धारानुकमसे या इसके	
ंअनुसार [वि० क़लमी (पेड़)	
कलमी पुं० एक प्रकारके चावल (२)	
कलमेशरीफ पुं० कलामे पाक; कुरान-	
शरीक	
कलमो पुं० कलमा; क़ुरानका मूलमंत्र	
कलरव पुं० कलरव (खासकर पक्षियोंका)	
कलवो पुं० कौर; निवाला (२) घोड़ी	
चढ़नेके पहले दूल्हेको कन्यापक्षकी	

कलंक धो डालना; दोष दूर करना ।
चडवुं, चोटवुं, बेसवुं, छागवुं = ऐब
लगना; दारा लगना.]
कलंकी (–गी) पुं० कल्कि
कलंदर पुं० क्रलंदर; मुसलमान साधु
(२)निःस्पृह व्यक्ति; फक्कड़(३)
मदारी (४) वर्णसंकर
कला स्त्री० कला; अंश (२)चंद्रका
सोलहवाँ भाग; कला (३) 'मिनट' —
डिग्रीका साठवाँ हिस्सा [ग.] (४)
कालका एक मान (५) युवित ; हिक-
मत(६)हुनर;कला; कारीगरी(७)
सुंदर रचना या ऐसी हिकमत; कला
कलाई स्त्री० क़लई; रॉग (धातु) (२)
कलईका मुलम्मा, लेप । [ <b>कराववी =</b>
[ला.] सब बाल मूँडवाकर सिर सफ़ाचट
करानाः इजामत बनाना बनवाभा ]

- कामत बनःना, बनवलि[.] कलाईगरो, कलाईवाळो पुं० झलईगर कलाक पुं० ६० मिनटका कालमान; घंटा कलाडी (ला') स्त्री० मिट्टीका छोटा तवा कलाडुं (ला') न० देखिये 'कलेड्'
- **कलाबो** पुं०वाँहका कट (२)दो सिरोंको जोड़नेके लिए बीचमें रखी जाती लोहेकी अँकुड़ी [उद्योगशाला कलांभवन न० हुनर और कलाकी शाला; **कलामेशरीफ़** पुं० क़ुरान-शरीफ़ कलाल पुं० कलाल; कलवार कलाव**वुं (०पटाववुं)** स०क्रि० युक्तियुक्त
- (रोचक) बातोंसे समझाना कलिंगड (-डुं) न० कलिंग; तरबूज कलेक्टर पुं० कलक्टर

कलेज्	७८ कसरवार
कलेजुं न०कलेजा (२) हृदय [ला.]	कवेण न० अपशब्द; कुवाक्य
कलेजी स्त्री० मिट्टीका छोटा तवा	कवेळा स्त्री० कुबेला; असमय
कलेडुं न० रोटी सेंकनेका मिट्टीका तवा	<b>कब्बाल</b> पुं० कब्बाल; कौवाल
कलोल पु० देखिये 'कल्लोल'	<b>कव्याली</b> स्ती० देखिये 'कवाली'
कल्पना स्त्री० नई बात सोचने या गढ़-	कज्ञ स्त्री०, (०ण)न० कस; बंद; तनी
नेकी मानसिक प्रक्रिया; कल्पना(२)	कशीवो पुं० कशीदा: जरीका काम
थारणा; खयाल(३)मनकी तरंग	कर्शु स० (२) वि० कोई; कुछ
<b>कल्पचं</b> स॰ कि॰ कल्पना करना	कशुंक स० (२) वि० कोई भी; कुछ ही
कल्मे <b>शरीफ</b> पुं० क़ुरान-शरीक़	<b>कष्टवं</b> स०कि० दःख. कष्ट देना
कल्लो स्त्री० छोटा मुट्ठा (२) हाथकी	कष्टावुं अ०त्रि० कष्ट पाना(२)प्रसबकी
उँगलियोंसे (साड़ी, धोती आदिमें)	पीड़ा होना
डाली जाती चुनट	कष्टो स्त्री० किस्त (देनको)
<b>कल्ली</b> स्त्री० कड्ला	<b>कस</b> पं ० कस (सोते-चाँदीका)/२)क्रमौशी
कल्लुं न० कड़ा;स्त्रीके पाँवका एक गहना	कस पुं० कस; सार; माल(२) बल; जोर।
कल्लो पुं० मुट्ठा; पुलिंदा	कार्यवो, जोवो, लेवो कमरा
कल्लोल पुं० कल्लोल; मौज (२) आनंद;	माप या प्रमाण निकालना; जांचना।
आनंदविभोर होना [करना	<b>–काढवो</b> व्यक्तमुमर निकालना; कड़ी
कल्लोलव् अ० कि० कल्लोल, आनंद	मेहनत कराना । -पर आधव, कसे
कवलत पुं०; स्त्री० अयोग्य समय;	चड्युं, भरावुं = होड़ाहोड़ी पर आना;
असमय	तूल जाना, पकड़ना
<b>कवच</b> स्त्री० केवाँच; कौंच	कस स्त्री० कस; बंद; तनी
<b>कवर</b> न० कवर; लिफ़ाफ़ा	कसकसतुं वि० कसकर बाँधा हुआ (२)
कववुं स०कि० कविता करना (२) स्तुति	जो मुश्किलसे अपनी जगह पर आता
करना (३) वर्णन करना	हो (चीज); चुस्त; तंग
कवा पुं० प्रतिकूल पवन (२) प्रति-	कसकागळ पुं० रासायनिक प्रक्रिया दि-
कूल परिस्थिति ; कुजोग । [ <b>पेसवो</b> = (शरीर) बिगड़ना.]	खानेवाला काग्रज; 'टेस्टपेपर' [र.व.]
	कसणवुं स० कि० रौंदना; गूंधना
<b>कवाब पुं</b> ० कवाब [िस्पायाम <b>कवायत</b> स्त्री० कवायद; परेड (२)	कसणो स्त्री० कास; खाँसी; हब्बा-डब्बा
कवायती वि० कवायद पाया हुआ;	(बच्चोका)
कसरती	<b>कसतुं</b> वि० बलात् अपनी जगह पर ठीक
कवाल पुं० देखिये 'कव्वाल'	आता हुआ; चुस्त (२) तौलमें कम
कवाली स्त्री० कव्वाली; कौवाली; गुजल	रहता हुआ
कवावुं अ०कि० शरीरमें विकार पैदा	कसदार वि० कस-सत्त्ववाला (२)उप-
हो जाना (२) बिगड़ना (३) दूष तोड़ना	जाऊ; जरखेज (३) मालदार; धनी
(४) बदनाम होना	(४) ओजपूर्ण
	1 1 G.G.

	<u> </u>
-94	मळा

कसूर

- **कसनळी स्त्री**० कस निकालनेके लिए इस्तेमाल की जाती काँचकी नली; 'टेस्ट-ट्यूब'
- **कसब** पुं० कलाबसू
- कसब पुं० कसब; धंघा (२) हुनर; कारीगरी (३) कलाकौशल; सिपुणता
- कसबधोर पुं० अपना हुनर दूसरोंसे छुपाये रखनेवाला; अपना फ्रन छिपा-नेवाला (२) धंधेमें ठगनेवाला
- **क्षसभो** वि० कलाकुंशल; निपुण;हुनर-मंद (२)कस्बी; कलाबतूनी; काम-दार(३) पुं० कारीगर
- **कसबो** पु॰ मुसलमानोंकी ज्यादा बस्ती-वाला गाँव (२) बड़ा गाँव; क़सबा (३) गाँवमें मुसलमानोंका टोला
- कसम पुं० व० व० क़सम; सौगंध। [-आपया, खवडाववा, देवा = सौगंध दिलाना.]
- **कसभनाम्**ं न० हरुफ़नामा ; शपथ-पत्र ; 'एफिडेबिट'
- कसमोडा पुं०ब०व० अँगड़ाई लेनेकी उत्कंठा होना (२) प्रसवके समय शरीरमें पीड़ा होना
- कसर स्त्री० कसर; कमी; टोटा (२) अपूर्णता; कचाई (३) खामी; दोष (४) कमखर्ची (५) नुकसान; हानि । [-आपबी (बिल चुकाते समय) योड़ी छूट देना । -करबी क्रकिफ़ायस करना (२) कम करना । --काढवी =(चूक या घाटेका) बदला ले लेना; कसर निकालना । -राझवी कसर रखना.] कसरत स्त्री० कसरत; व्यायाम (२) अम्यास [यौक्रीन

कसरतवाज वि० कसरती; कसरतका

**कसरती वि० कसर**ती

- कसवाण स्त्री० बीमारी; बेकरारी
- **कसवुं** सं०क्रि० कसना; खूब सींचना; कसकर बाँधना
- कसवुं स०कि० कसना; परखना; आख-माना (२)थकाना; रगढ़ना (३) तंग करना; सताना; पीस डालना(४) कम देनेका प्रयत्न करना। [कसोने आपवुं, लेखुं ≕मोल-तोलकी बात पक्की करके देना या लेना। कसीने काम लेखुं चनने उतना ज्यादा काम कराना.] कसाई पुं० क़साई(२) गला काटनेवाला कसाकस (-सी) स्त्री० कशमकश;
- खींचातानी **कसाणुं** वि० कसैला; बेस्दाद
- कसायेखुं वि० कसैला [अनुभवी कसायेखुं वि० सधा हुआ; गठीला; कसावुं अ०ऋि० अनुभव या परिश्रमसे अम्यस्त होना; सधना
- कसुतर (-र्रु) वि० दुष्कर; मुझ्किल (२) जो काममें न लाया जाय; विगड़ा हुआ (३) पेचीदा; टेढ़ा
- कसुवाण स्त्री० देखिये 'कसवाण'
- कसुवावड स्त्री० असमय गर्भसाव होना कसुंबल (--लुं) वि० कुसुंभी
- **कर्सुंबी** वि०<sup>ँ</sup>कुसुंभी; कुँसुमके रंगका (२)स्त्री० कुसुंभा रंग
- कसुंबो पुं० कुसुम; कुसुंभ (२) इसके फूलमें से प्राप्त रंग (३) कुसुंभी (कपड़ा) (४) घोला; नशीला पेय; कुसुंभा; कुसुंभेके बहाने होनेवाला जलसा। [--गाळवो, घोळवो = अफ़ीम घोलकर एकरस बनाना। --पीबो, लेबो = अफ़ीमका रस पीना.]

कसूर स्त्री० कसूर; कुसूर

कसूंबल (-लुं), कसूंबी, कसूंबी देखिये

कसोज (--जूं) वि० जो साफ़-सुथरा न

हं; करदा मिला हुआ (अनाज आदि)

कसोटी स्त्री० कसौटी; शाण (२)

कस निकालनेकी रीति; परख (३)

कड़ी जाँच-परीक्षा । [ --ए चढाववुं =

(सोनेको) कसौटी पर घिसकर कस

देखना (२) कडी जाँच करना; कसौटी

करना (३) कस निकले इस तरह

काममें लाना। --**मां ऊलरखूं == क**ड़ी

जाँचके लिए तैयार रहना; इसमें

कस्तर न० वह लेप जो ठठेरा रसोईके

कस्सी स्त्री० पारसीका जनेऊ या इसका

कहाणी (क्) स्त्री० कहानी (२)कहावत

कहान(-नो)(क्) पुं० श्रीइत्व्य

कहीं अ० कहाँ; किस जगह

**कहोंकहीं** अ० कहीं-कहीं

लोकर्निदा; दोष

णार्थंक रूप

कहोंक अ० कहीं; किसी जगह

(संदेशा, निमंत्रण आदि)]

कहावर्षु स०कि० कहाना; कहलाना

कहेण (क्हे) न० सैंदेशा (२) हुक्म;

कहा (३)कथन;वचन (४)बुलावा;

ग्योता । [--मोकल्र्चुं = कहला भेजना

कहेणी (क्हे)स्त्री० कहावत (२) कथन;

कहनेकी रीति (३) कहानी (४)

**कहेती** स्त्री० कहावस (२)कहानी (३) **कहेवडाववुं** (क्हे) स०फि० कहलाना;

सिस्कार

[लोकनिंदा

कस्तर न० तिनका; रज; करदा

शरीक होता.]

बरतनों पर करता है

'कसुंबल, कसुंबी, कसुंबो' आदि

•	
क्सूब	e

60

नडन्ग

षृष्टांत; मिसाल (३) मक्कूला; उक्ति (४) लोकनिंदा

**कहेवापणुं न**० खामी; दोष

- कहेवुं (क्हे) स० कि० कहना; बोलना; बताना (२) समझाना (३) नसीहत देना (२) समझाना (३) नसीहत देना (२) नाम देना; फरमाना (५) उलहना देना (६) नाम देना; फहना। [कही आपवुं चतरकाल असर होना (२) गुप्त या भविष्यकी बात बताना; प्रकट करना। कही छूटवुं = माने या न माने पर कहनेका धर्म समझकर कहना। कही देषुं = गुप्त बात कह देना। कही बताववुं, कही संभळाववुं = आगेकी बात या एहसान जताकर ताना देना.] कहागर्थ वि० कहा माननेवाला; आज्ञाकारी कहार्य करा; क्चन; नसीहत
- कळ स्त्री० कल; पेच-पुरजा; खटका (२) यंत्रकी चाभी; चाँप (३)युक्ति; कल [ला.]। [-दाबवी, मरडवी = कल घुमाना (२) पट्टी चढ़ाना.]
- कळ स्त्री० (चोट आदिके कारण)एक-दम होनेवाली तीक्ष या सतत वेदना (२) इससे होनेवाली मूच्छां; गश। [-चाद्यवी=एकदम दुःख पैदा होना
  - (२) दुःखसे मूच्छित होना ।-वळवी=

कल पड़ना; दुःखका दूर होना.]

कळा स्त्री० अटकल; सूझ

- **भळ** पुं० दलदल; गड़प्पा
- कळकळ स्त्री० कल-कल; शोर-गुल (२) किट-किट; माथापच्ची (३)पक्षियोंका कलनाद – कलकल
- कळकळचुं अ०कि० देखिये 'ककळघुं' कळकळाण न० देखिये 'ककलाण' कळज(--जु)ग पुं० कलियुग

<mark>कहेव</mark>त (क्हे) स्त्री० कहावत (२)

कहरुवाना (२) 'कहेवुं' कियाका प्रेर-

**चंक्रणरो**रो

दाना

_	-	
•		-

कळियुग पुं० कलियुग

कळियो पु० गुठली(२)भुट्टा(३)अनारका

कळिंगड(--बुं) न० कलिंग; तरबुज

कळण, (--तर) न० दलदल; गढ़प्ना कळतर न० कष्ट; वेदना (शरीरमॅ) कळतर न० कनकूत कळमी स्त्री० कुलभी (अनाज) कळपर्बु स०कि० मृतकोंके नाम संकल्प करके दान देना (२) चलना;उप-योगमें जाना कळपर्व अ०कि० कलपना; झुरना कळब (--वि)कळ स्त्री० कल; युक्ति (२) शास्ति; चैन; कल (३) सुझ; समझ कळव् सं०कि० ताड़ना; भौपना (२) कल्पना करना; अंदाजा लगाना कळार्यं अ० फि० दुसना; पीड़ा होना कळबूं अ०कि० दलदलमें गड़ना; धँसना कळ्या पुं०कलगी; लोटा (२) मंदिरका शिलर; कल्फा । **[−चडाववो == सिढि-**की पराकाष्ठा पर पहुँचना [ला.].] कळकियो पुं० लोटा (२) दरत (रोग) । [ कळघो (-- जिये) अबुं = पाखाने आना.] निर्मि कळशी स्त्री० सोलह (कच्चे ) मनकी एक **फळको पुं**० लोटा कळा स्त्री० देखिये 'कला' (२) (मोरकी) पूँछके परों (कलाप)को फैलानेकी किया; कला।[—करबी ≃युक्ति करना; चाल चलना (२) सौंदर्ययुक्त रचना करना (३) रोरका कला करना.] **कळाकार** पं०कलाकार कळाण न० दलदल; कीचडवाली जगह कळाघर पु० मोर (२) चंद्र (३) कलाकार कळाभवन न०देखिये 'कलाभवन' कळायल वि० जिसने कलापको फैलाया हो ऐसा (मोर) [जाना; दिखाई देना कळार्यु अ० कि० प्रतीत होना; समझा **कळिकाळ** पूं० कलिकाल

कळी स्त्री०कली; रोह(२) मोतीचूरकी बुंदिया (३) अँगरखा, कूर्ता आदिमें लगनेवाला तिकोना कपड़ा; कली। -सीलवी = जीकी कली खिलना; (मनुष्यका) प्रफुस्लित े होना । --पावचो = मोतीचुर बनाना (२) तह बनाना.] कळीणूनो पुं० कलीणूना; कलईका चना कळे कळे, कळे बळे अ० कलसे; युक्ति-पूर्वक; समझा-बुझाकर कळेळी स्त्री० कुहराम; भीख-पुकार कई अ० क्या; कही (वाक्यमें प्रश्नवाचक या निषेषसूचक उपयोगमें बाता है ); उदा० ' कई मारायी अवाय ?' कई वि० (२) स०कुछ; अमुक (अति-रिचतार्थ, प्रश्नार्थ और निषेधार्थमें प्रयुक्त होता है)। [-कंई चब् = मति भाँतिके अवर्णनीय भाव या घबढ़ाहट या पीड़ा होना । [--महीं = 'कोई फ़िक नहीं, चिता नहीं ' ऐसा उद्गार। [—महीं सो ≕ और **मा अ**षिक नहीं तो; कुछ नहीं तो; सब कुछ छोड़कर । -न् मंई = कुछका कुछ; उलटा]. कई वि० (२) स० कई; अनेक; उदा० 'तमारा जेवा तो कई आवी गया' कंईक वि० (२) स० कुछ कईक वि०(२)स० थोड़ासा **कंईक** अ० कहीं विवाहसूत्र कंकण न० कंकण; दंदानेदार चुड़ी (२)

कंकणबोरों पुं० लग्नविधिके प्रारंभमें वरकन्याके हाथमें बौधा जाता मैन-फल और लाल डोरा; कंगन; कंगना

गु. हिं--६

**कंटोलो (--ळी)** स्त्री० ककोड़ेकी बेल;

	•
3.5	10.01
4.4.	

कंकावटी स्त्री० कुंकूम रखनेका पात्र कंकास पुं० क्रजिया; क्लेश [(स्त्री) कंकासियण दि० स्त्री० कर्कशा; लडाक कंकासियं वि० झगडाल; कलहप्रिय संकु न० कुंकुम; रोली।[-ना करवा = मंगल कार्यका प्रारंभ करना (२)काम-में फ़तह हासिल करना [ला.] । --नां **पगलां 😅** सूख-वैभवका शुभागमन । —नो पगलां करवां == आगमनसे घरको सुखी बनाना.] পুৰুৰ कंकुपती स्त्री०, (-डो) पु० रोलीका कंकोडी स्त्री० ककोड़ेकी बेल; खेखसा कंकोड न० ककोडा: खेखसा (फल) कंकोतरी, कंकोत्री स्त्री० कूंकूमपत्रिका ; ন্তানদলিকা कंगण न० देखियें ' कंकण ' कंगनी स्त्री० कंघी कंगाल (--ळ) वि० कंगाल; कॅंगला (२)दरिद्र; तुच्छ (३) रस और कससे [ग़रीबी हीन: निःसत्व: बेमजा कंगालि (-- क्रि) यत स्त्री० कंगालियत; कंजूस वि० कंजूस; सूम; कुपण कंजसाई स्त्री० कंजुसी; कुपणता कटाळवं अ० कि० ऊबना; उकता जाना कंटाळी वि० स्त्री० कॉंटेदार; कॅंटीली (२)स्त्री० पंजेदार थुहड़;नाग-फनी कंटाळ वि० कॅंटीली; कॉंटेदार(२)न० सफ़ोद कूम्हड़ा; पेठा कंटाळो पं० ऊब कंटियं न० बाल (जौ, गेहें आदिकी) कंटी स्त्री० बालके बारीक दाने(२) बाल; रकोशा (३) ताजा भान कंटी (-टे)वाळो पुं० चुल्हे पर रखनेसे पहले रसोईके बर्तनों पर बाहरकी ओर किया जानेवाला मिट्टी या राखका लेप: लेव

त्नेत्वमा

कंडोसिय

ललस।
<b>कंठ</b> पुं० कंठ; गला; हलक (२) टेंटुया
(३)स्वर;आवाज(४)पक्षीका कंठा।
[क्रूल्बो ⇒ आवाज साफ़ निकलना;
कंठ <sup>े</sup> खुलना। <b>बॅसवो, बेसी जडौ</b> ≕
गंला बैठना; कंठ बैठना; स्वर साफ़ न
निकलना ।— <b>दंषायो</b> =गला <b>रॅं</b> घना; जी
घबडाना । <b>-सुकावी</b> =गला सूखना ।
कंठे प्राण आधवा = बहुत मुसीबतमें
फँसना । <b>कंठे सोस पडवो</b> == पानीके
बिना गला सूखना; कौटा पड़ना। फंठे
होषुं = खबानी होना; कठस्थ होना.]
कंठार (-छ) स्त्री० समुद्रतट; किनारा
कंठाळ स्त्री० गोन (घोड़ा, बैल आदिकी)
(२) वरतन भरनेका बोरा (३) बहा
(२)वरतन भरनेका बोरा (३)वड़ा चैला (४) देखिये 'कंठार'
कंठी स्त्री० कंठी; गलेका एक ग्रहना (२)
गुरुसे प्राप्त माला;कंठी(३)(अँगरसमें)
गलेके सामनेके भाग पर किया जाने-
वाला बेल-बूटों या सुहावनी सिलाईका
काम। 🕰 बाबवी क्रा चेला या शिष्य
काम । [—् <b>यांघक्षो</b> ≕ चेला या शिष्य बनाना ; कंठी बौंधना.] [कंठीबंद
कंठीबंधुं वि० एक ही गुरुका (२) वैष्णव;
कठो पुं० बड़े मनकोंकी माला; कंठा
<b>कंड</b> पुं० कुंड (२)कुऔं जोड़नेके काममें
अनिवाली टेढ़ी ईंट
कंडार पुं० नक़्क़ाशी; कोरनी (२)आ-
लेखन, चित्रकारी किरना
कंडारवुं स० कि० कोरना; नक्क्राशी
कंडियो पुं० करंड
कंडील न॰ दीया रखनेका कांचका
गिलास ; हाँडी ; कंदील (२) लालटेन
कंडीलियुं न० कंडीलिया (२) दीयेको
पवन न लगे इसलिए बनाया हुआ
further when me

मिट्टीका छोटा घर

<b>फे</b> ताई	৫২ কাল
कंताई स्त्री० कालनेकी मजदूरी; कलाई	नगकब पुं+ गुड़ या महुएका शीरा
<b>कंतान</b> न० पटसनका कपड़ा; टाट(२)	(तंबाकू बनानेके काम आता है)
गोनपाट [' कंताई '	काकम पु० शीरा; कियाम
<b>कंतामण</b> न०, ( <b>जी) स्त्री</b> ० देखिये	काकर पुं० वौत(सूअर आदि प्राणियोंका)
कतावुं अ० कि० काता जाना (२) कृश	
होना; सूखना(३)कम होना	<b>चमड़ीमें बना हुआ कड़ा थी</b> रा
कंबार न०, (-री) स्त्री०,(-री) पुं०	काकरिया कुंमार पुंक कलगीवाला पक्षी
एक वनस्पति; कथारी	काकरी स्त्री० छोटे दंदानोंधाली भार
कंषाळ स्त्री ० गोन (घोड़ा, बैल आदिकी)	(२) कंकड़ी (२) किरकिरी; रेत
<b>नंदो</b> पुं० (नंदूक्तका काठका) दस्ता ; कुंदा	काकरो पुं० कंकड़ (२)गाँठ (प्याज
<b>संबोर्ड</b> पुं० हलनाई	इत्याविकी) [गिड्किङाहट
कंबोरी स्त्री० छोटी करघनी	काकलूबी स्त्री० आजिजी; जिरौरी;
कबोरो पुं० कंदोरा; करवनी; तागड़ी(२)	काका (का-का) अब कौबेकी बोली;
दीवारकी जोड़ाईमें ईंटोंसे बनाई हुई	
कोर;कंगनी(३)निशानकी ल्कीर,लीक	
र्क्तपर्वु अ० कि० कौपना; कॅंपना; बरु	<ul> <li>काकाकौबो पुं० काकाकौथा.; काकातुआ</li> </ul>
यराना (२)डरना; सहमना	काकाजी (-ससदा) पुं० चचिया ससुर
<b>कंपाउंड</b> न० कंपाउंड; अहाता	काकाबळिमा पुं० ब० व० चेचक; बढ़ी
कंपाण(ण,)स्त्री० राटुल; बड़ा तराज्	
<b>कंपारी</b> स्त्री०,( <b>-रो</b> )पुं० कॅंपकेंपी; कंप	
कंपास पुं० कंपास; कुतुबनुमा; दिग्द	
र्शंक यंत्र (२) परकार; कंपास	काकीजी (-सासु) स्त्री० वचिया सास
कंबल पुं० कंबल (२) गल-कंबल	काको पुं० चाचा (२) (पिताको संबोधन
कंबा स्त्री० बांसकी फट्टी; खपची (२)	करनेमें प्रयुक्त होता है ) (३ )(व्यंग्यमें)
बढ़ईका गज जो २४ इंचका होता है	दुश्मन । <b>[काका मामां करवा =</b>
कसार पुं० कसार जैसा मिष्टान्न	खुशामद करना.]
कंसारी स्त्री० ऊन आदिके कपड़े ख	ा काकोससरो पुं० चचिया ससुर
जानेवाला एक कीट;कीड़ा	<b>कास स्</b> त्री० कौस; बग्रल
<b>कसारो</b> पु० कसेरा; ठठेरा	<b>कालयरुाई,कालविस्नाडी</b> स्त्री० कें <b>लौ</b> री
काकडी स्त्री० ककड़ी (२) आरिया (३)	) बरालका फोड़ा [बजाना.]
धज्जीको बटकर बनाई हुई बसी	काखस्ती स्त्री० काँख । [कूटबी=व्यासे
काकडो पुं० बड़ी बत्ती (२) गलेवे	
भीतरकी दोनों ओरकी गठिं (३)	· · · ·
जीभकी जड़के ऊपर लटकनेवाल	
मांसखंड; घंटी	बिना किन्हीं दो घटनाओंका अचा

-	

	<u></u>
नक होना जिससे यह भ्रम पैबा हो	कांगारोळ
कि इनमें सम्बन्ध है; कौएका बैठना	्रोल; कौ
और ताड़के फलका गिर पड़ना ।ने	কাৰ দুঁ০ ব
<b>कोळे राह औषी≔ग्</b> टूत आंतुरतासे राह	काचनी स्ट
देलना.] [पुरबा; पत्रिका	कावको पुंध
कागज पुं० काराज; कागद (२) चिट्ठी;	काणर स्त्री
कागडी स्त्री॰ कोलेकी मादा; काकी	नावरकूषर
कामडो पुं० कीमा; कौवा (२)धूतें और	चना-चबेन
चालाक प्राणी [ला.] 🗄 🕻 कागढा अडवा	काचली स
⊯वीरान हो जाना;उजेड़ जाना(२)	काचर्स् न
िनिस्सतान होना। <b>कावडानी नगरे</b>	हुआ अर्ध
बोबुं = बहुत बौकन्ना रहना.]	आदिका)
भागनी वि० भागती; पतली छालवासा	कटोरा ।
(२)जो जल्दी टूट-फूट जाय; नाजुक	परिश्रम ।
(३)पुं० काग्रज बनानेवाला; काग्रजी	काचंडो पुं०
(४) काग्रज वेचनेवाला या वही	<b>কাৰা কা</b> ন জনচী সচী
बौधनेवाला; काग्रजी	काची बुट्टी जग्गे सेन
कागवास (स,) स्त्री० श्रादके दिन पित-	जाये ऐस सम्बद्ध
रोंके निमित्त कौलेको बलि देते समय	<b>काच्</b> ुवि०ः अचि पर
निकाला जानेवाला उद्गार (२)	भाष पर अध्यकचरा
काकबलि काचळ पुं० देखिये 'कागज '। [ नी	(भात) (
कोषळी = बहुत नाजुक (बस्तु)।	(भारा) (४)साफ़
	(७) पाः स्थितिमें ह
मगिना या लाना.]	र्दिट-फूट
कागळपत्तर,कागळपत्र पुं० चिट्ठीं-पत्री	रू १ूप न टिकने
या डाकरों आई हुई चिट्ठी	नादान;
कागळियुं न० काग्रेडका टुकड़ा; परचा	आदिमें ) (
(२)काग्रजका रूपया-नोट,लोन, शेयर,	पक्व (काम
हुंडी जैसा। [कागळियां करवां =	जिसमें का
भीतिल बनाना था काग्रजी कार्रवाई	(९)पोचा
करना। कागळिये चडवूं=चीचमें मर	(१०)वा
जाना (२) जाहिर होना (२) अदालत	अंदाजसे वि
चढना (४) काबजी कार्रनाई होना;	नाप) (१
इसमें पड़कर कामका रुकना.]	कच्चा (से
	•

पुं० रोना-पीटना (२) काना-ौआरोर काच; काँच(२)आईना त्री० क<del>ख</del>ुई; मादा क<del>खु</del>का ০ কন্তনা **ो० छोटा टुकड़**ा र न० फुटकल खाद्य चीचें; ना (२) अंगड़-खंगड़ त्री० नारियलकी न**रेछी** ० नरेली (२) कोई भी टुटा र्थगोल हिस्सा (नरिया, चड़ा ) ; कटाह, ठीब आदि(३)ऐसा কিৰিকা কৃষ্ণা = আৰ্থ ∙रला.] » गिरगिट **स्तं वि० कानका कच्चा** । (--माया)स्त्री० धोसः सा ।। भोला मनुष्य कच्चा; अपक्य(फल)(२) न पकाया हुआ (मटका); ा–जिसके पकनेमें कसर **हो** (३) न भूना हुआ (चना) 5 न किया हुआ---जो कु**दरती** हो (बातु, माल) (५) जल्दी काज-भोज; जानेवाला ; वाला (सड़क, रंग) (६) अनुभवहीन (मनुष्य, ज्ञान (७) अधुरा; अपूर्ण; अपरि-म, बुद्धि ) (८) कामचलाऊ; ट-र्छांट हो सके (हिसाब) ा;बेहिम्मत;ढीला (दिल) रदान आदिके साथका या नियत किया <u>ह</u>ुआ (<mark>वजन</mark>, ११)पक्के दबानसे आधाः कच्चा (सेर,मन) (१२) न० कच्चापन ;

For Private and Personal Use Only

		5	
11	ſ	ы	ų.

24

काट प्

- कसर; अघूरापन । [--कापर्बु=अधूरी तैयारी या असमयमें किसी बातमें कसर होते हुए भी जस्वी बरतना या कुछ करना (२) ऐसा करके काम बिगाड़ना (३) उतावलीसे बरतना'। --कार्बु=जगी या कमी महसूस करना.]
- कार्चुकोई दि० न पकाया हुआ और रूखा; रूखा-सूखा
- '**কাৰ্য্যনখ** বি০ ৰিতকুত কল্বা
- कार्चुपाकुं वि० अर्धेदग्ध; कच्या-पक्का
- कार्षुपोर्चु वि० अनुभवहीन और माहिम्मत
- काछडी स्त्री० काछनी; लाँग। [नक्टूटी वर्ष्य≔डर जाना। न्यूराकीने, पकडीने दोढवुं = डरसे पागल होकर भागना; टुम दबाकर भागना.]
- **काछडीडूटो** वि० पुं० व्यमिचारी
- **काछरो पु० काछा ; कछोटा । [--मारवो,** बाळ**रो ≕** कछोटेकी सरह थोती पहनना.]
- काछियज स्त्री० काछी जातिकी स्त्री काछियो पुं० काछी (तरकारी वेजने-
- वाला) (२) काछी जातिका आदमी
- काछोटी स्त्री काछ ; काछनी
- **काछोटो** पुं० कछोटा; काछा बाह्य नः नगर-काम (२) काछा
- **काक न० काज;काम (२)काज;प्रयोजन काइळ** न० कालिख (२)काजल
- कामळकंकु न० द० व० काजल और
- कुंकुम (सौभाग्यवतीका सिंगार) काबळराणी स्त्री० कजली तीज
- कालळी स्त्री० कालिख; काजल (२)
- रासकी तह (३)काली फफूंदी (४) कजरोटा (५) गायके पूजनका
- स्त्रियोंका एक दत (सायन मासमें) क्राकटी क्रीज स्त्री० कजली दीज

काजी पुं० काखी (२) मीलवी काजु पुं० काजू [चढ़ाये हुए काजू काजुकळिया पुं० ब०व० काजू (२) जीनी काज व० - के लिए; वास्ते काक्षी पुं० देखिये 'काजी '

- काट पुं० जंग; कसाव; काई (२) बोझ-रूप निकम्मा उतार या मैल [ला]। [-काबो, चढपो, वळगवो = जंग लगना, बिगड़ना.]
- काट पुं० प्रतिदावा; प्रतिकार (२) (ट,) स्त्री० ताशके खेलमें अमुक रंगका पत्ता न होना-काट
- काट पुं० कौटा; रोक; विघ्न; साल; उदा० 'शत्रुनो काट काढवो '
- काटकूट स्त्री० काटना और कूटना (२) टूटा-फूटा सामान; कबाड़; अंगड़-संगड़ (३)मकान बनानेका सामान
- काटको पु० कड़ाका; बड़ी गर्जना
- काटसूज पुं० ९० अंशका कोण; सम-कोण (२)इस नापका राज-बढ़इयोंका औजार; गोनिया
- **काटसूणत्रिकोण** पुं० समकोणत्रिकोण काटसूनो पुं० देखिये 'काटसूण '
- **কাटछांट** स्त्री० काट-छांट
- काटमाळ पुं० इंमारतको नयी पुरानी रूकड़ी (बल्ली, बाँस आदि )
- काटरडो पुं० तलछट; कीर्ट;किट्ट(२) रद्दी-बेकार चीर्चे; कबाड़
- काटसुं न० वजन; बाट (२) जज्जाको दी जानेवाली पुष्टई(३)कम करना; काट लेना(४)कौटा-बाधा; बला। [-काढवुं = बाधा दूर करना (२) काम तमाम करना; मार डालना]
- काटवुं स० कि० काटना (२) डॅसना; काटना (३) छलना

_	
Ŧ	1 <b>1 1</b>
	-

ь

44

कात स्व

(भाव, नाप) (८)रोशन करना ; निका-
लना (नाम, आवरू, दिवाला आदि)
(९)व्याप्त वस्तुओंको अलग करना;
सार-तत्त्व निकालना (मलाई, तेल);
"रकम अलग रखना; उदा० 'तेणे
🔹 पांचसो रूपिया दान खाते काढणा '
(१०)कमाना; प्राप्त करना; जुटाना
(११) अन्य कियाके साथ आने पर
उस कियाके खरम होने या निबटनेका
भाव बताती है। [काढो नाकवुं≖रह
करना (२) अनुत्तीर्ण करना (३) क्रुछ
न समझना। काढी मूकचुं, मेलचुं =
निकाल देना; भगा देना(२)रबा
दे देना (३) निकालकर रखना.]
काडो पुं० काढ़ा; श्वाय
काण (०मोकाभ) (ण,) स्त्री० मृतकके
पीछे रोना-घोना; सियापा । [ <b>–करवी</b> ,
<b>माडवी</b> =मृतकके पीछे रोना-बोना
🐳 (२) किसीसे बियड़ा हुआ काम
बनवाना । काणे अयुं = मातमपुरसीके
लिए (दूसरे गाँव) जाना.]
काणियुं (ग,) वि० सोगी; मासमदार
<b>कालियुं</b> वि० काना;एकाक्ष
कार्चु वि० सूराखदार;छेदवाला(२)
काना; एकाक्ष (३)न० छेद; सूराख
कातर वि० कातर; आर्त (२)भीर (३)
तिरछा; काना
कालर स्त्री०कतरनी;क्रैंची (२)वास
झड़नेका चौपायोंका एक रोग (३)
क्रैंचीका-सा घारदार पतला ठीकरा,
चादर आदि; टीन आदिकी <b>चाद</b> र।
[-जलावची, फेरवची, मूकवी = काट
- छोट करना.]
कातरण न० कतरन
<b>कातरवुं</b> स० क्रि०कतरना (२)काटना;

- वि॰ सूराखदार;छेदवाला(२) ा; एकाक्षा (३) न० छेद; सुराख
- वि॰ कातर; आर्त (२)भीष (३) ङा; कॉना
- स्त्री०कतरनी;क्रैंची (२)बास का चौपायोंका एक रोग (३) को-सा भारदार पतला ठीकरा, र आदि; टीन आदिकी चादर। **रुावची, फेरवची, मुकची =** काट टि करना.]

	<u> </u>	
कास	T.C	Ŧ.
		•

कानुहो

The second se	69
कुतरना (३)कम करना (४)कुरेदना ;	a
खुरचना (५)कटती कहना [ला.]	ą
कातरियुं न० छप्परके बिलकुल पासकी	
नीची मंखिल (२) लकड़ीका एक	
दुषारा अस्त्र (३) सेंध लगानेका	
औजार (४) दो चूड़ियोंके बीचमें	
पहननेका एक पतला कंगन (५)	
भेजा (६) कटाक्ष; तेवर बदलकर	
देखना; तीखी निगाहसे देखना (७)	
स्लेटका टूटा हुआ बड़ा टुक <b>ड़ा</b> ।	
[कातरियां खावां, नाखवां = रोपमें	٩
तिरछे देलना; चिंढ़कर देखना.]	4
कातरी स्त्री० किसी चीजका पतला,	
चिपटा टुकडा; क्रतला; बचका [प.]	٩
कातरो पुं० चिपटा, लंबा और टेढ़ा फल;	4
उदा० 'आमलीनो कातरो' (२) इससे	
मिलती-जुलती एक आतिशबाजी;	٩
छर्छूंदर(३)अनाजके उगते पौधोंको खा	
जानेवाला एक कीड़ा (४) गलमुच्छा	
(५) केलोंका <b>घो</b> रा, घौद	
कासळी स्त्री० देखिये 'कातरी'	
कासिल वि॰ क्रातिल (२) घातक (३)	
मर्मभेदी [(३) दग़ा [ला.]	٩
काती स्त्री० काती; छुरी (२)करवती	4
कातुं न० काता; कुंद छुरी	ą
काथाकवला पुं० बण्ब०कुत्सा;निदा;	
झूठ-सच (२)हुज्जत ; व्यर्थकी तकरार	٩
काचियुं वि० कत्धई (२)न०नारियलके	
छिलकोंके रेशोंको बटकर बनाई हुई	
रस्सी (३) इसकी चटाई(४) पाअंदाज	٩
कायी स्ती० नारियलके छिलकोंके रेशे	٩
या इनकी डोरी	
कायो पुं० कत्या; खैरसार	٦
कारव पुं०कीच;कीचड़। [-उराडवो,	٦
<b>फेंकवो</b> ≕निंदा करना ; बदनाम करना.]	1

**कादव-कोचड** पुं० गहरा कीचड़; दलदल कान पुं० कान (२) लक्ष्य; घ्यान (३) बेघ;छेद। [-- ऊघदवा = खरी बाबत मालूम होना । -करडवा = कानाफूसी करना **। –घरेणे मूकवा**≕बहरा बनना । --फुटवा = (बहरा हो जाय ऐसा) असह्य कोलाहल होना (२) बहरां होना।--फोडी नाखवा= भारी शोर-गुल होना । **–मां दूबा मारवा=कान**में तेल डालना.] **कानसजूरो** पुं० कनसजूरा **कानछेरियां** न० ब० व० कानके ऊपरके बालोंकी जुल्फें **कानटोपी** स्त्री० कनटोप; कुलही कानडी वि०करनाटकी(२)स्त्री०कन्नड (भाषा) कानपटी (-ट्टी) स्त्री० कामकी छौ; लोलकी । [**⊸पकडवी** ≕अपनी भूल क़बूल करना; कान पकड़ना (२) किसीको आगेके लिए सचेत करनेके लिए उसका कान पकड़ना; कान ऐंठना.] **कानफढो** पुं० कनफटा(साधु) **कानफुटुं** वि० बहरा **रागफूसियां** न०ब०व० कानाफूसी ; कन-फुसकी (२) बहकाना; कान भरना **कानफूसियुं** वि० बहकानेवाला; कन-फुसका (२)चुग़लखोर(३) न० बहकाना या चुग़ली करना; कान भरना <mark>कानसंभेरणी स्</mark>त्री० कान भरना **कानमूळियुं** न० कानकी जड़में होनेवाला एक रोग; कर्णमूल ('कानछेरियां' **कानझियां,कानझेरियां** न०ब०व०देखिये कानस स्त्री० रेती (औजार) **कानुडो पुं०** कान्ह; कन्हाई; श्रीकृष्ण<sup>े</sup>

कानूगो	८८ कामकाव
कानूनो पु० कानूनदा	काफर वि॰ काफ़िर; अधर्मी (२)
कानून पुं०कानून (२)परिपाटी; रिवाज	बदमाश; दुष्ट (३) जंगली (४) पुं०
कानूनभंग पुं० कानूनभंग	अफ्रीकाकी आदिम जातिका आदमी
कानूनी वि० कानून संबंधी; कानूनी	काफलो पुं० काफ़िला; समुदाय (२)
कानेकान अ० कानोंकान	जंगी बेड़ा
कानो(का′) पुं० 'आ'कारका चिह्न;	काफी स्त्री० काफ़ी; कहवा
'l'; खड़ी पाई;काना (२)बरतनका	काबर स्त्री० एक पक्षी; मैना
किनारा; औवठ किंग्नोंकान	काबरचीतरं वि० चितकबरा; रंग-बिरंगा
कानोकान (का') अ० लबरेख (२)	कावरियुं वि० कवरा; चितकवरा
काप पुं० काटना; काट (२)काटनेसे	काबरी स्त्री० कुसुम; करड़ी (२)चित-
होनेवाली खरोच, रगड़ या गड्ढा	कबरे, सफ़ेंद और काले रंगका तेलहन
(३)स्त्रियोंका कानका एक गहना;	काबदं वि० कबरा; चितकबरा
कपि (४)काटने-ब्योतनेका ढंग; काट	काबू पुं० काबू; अधिकार (२)अंकुझ;
<b>कापकूप</b> स्त्री० देखिये 'कापाकूप'	नियंत्रण; बस(३)क़ब्बा(४)वजन;
<b>कापड न०</b> (कोरा, न बरता हुआ)कपड़ा	प्रभाव चितुर; काविल
कापश्चियो पुं० वजाज	काबेल वि० अनुभवी (२) होशियार;
कापकी स्त्री० छोटी अँगिया	काबेलियत स्त्री० काविलीयत ; चतुराई
<b>कापडूं</b> न० अँगिया; कंचुकी	<b>काम</b> न० काम ; कृत्य ; कार्य (२)नौकर-
कापनी स्त्री० काटनेकी रीत (२)	का काम; उदा० 'काम करनारी आजे
(फ़सलकी) कटाई (३) (पत्तर कारवेकी) कटाई	आवी नथी' (३) कर्तव्य; फ़र्ज (४)
สกราชกุ) สรรา	घंघा-रोजगार; व्यवसाय (५) जरूरत;
कापली स्त्री० काग़ज या कपड़ेका छोटा	खप ; उपयोग(६)केस ; मुक़दमा ; उदा ०
टुकड़ा; कतरन पुरजा 	'एना उपर काम चलाववुं जोईए'
कापस्त्री पुं० काग्रज या कपड़ेका टुँकड़ा;	(७)अ०के लिए; वास्ते ।[आववुं,
काथवुं स०कि० काटना; काटकर बलग	<b>रू।गबुं</b> ≕काममें आना; इस्तेमाल होना।
करना; (कुछ अंश) कम करना;	(२)(युद्धमें) काम आना ।–चालवुं≖
घटाना (३)दूर करना; हटाना;	अदालतमें मुक़दमा शुरू होना ।− <b>थव्</b>
काटना (४) साशके पत्तोंको फेंटनेके	≕काम निकलना; प्रयोजन सिद्ध होना।
बाद उनमेंसे कुछ पत्तोंको उठाना (५) ताशमें तुरुप चाल चलना; काटना	<b>पडवुं</b> ≕का उपयोग या आवश्यकता
कापाकाप(-पी) स्त्री० कटाकटी;	होना (२)–के साथ काम होना।
खूनरेजी; क्रांतल	<b>–सरव्ंु =</b> काम होना; मतलब पूरा
कापाकूप (-पी) स्त्री० कतर-ब्योत (२)	होना ] [मेहनती
काट-छोट (३) बचत; किफ़ायत	कामकरंदुं वि० कर्त्तव्यनिष्ठ ; कर्मठ (२)
कापो पुं० लकीर(पड़ना); छॅक(२)	कामकाज न० काम-काज; काम-धंधा
चीरा; शिगाफ़	(२) कार-बार

	. A
11111	1

कारण

कामचरी स्त्री० नौकरी; वाकरी; काम (२) नौकरीमें करनेका काम कामगर्ष वि० कामकाजी; उद्यमी कामगार वि० मेहनत-मखदूरी करने-वाला; काम करनेवाला (२)पुं०काम-दार; मजदूर कामगोरो स्त्री० देखिये 'कामगरी' कामचलाउ वि॰ कामचलाऊ (२) अस्यायी कामचोर वि० कामचोर; आलसी (२) पुं० ऐसा आदमी (३) अपना हुनर दूसरोंसे छिपाये रखनेवाला कामचोरी स्त्री० कामचोरका कर्म; कामचोरी कामजोग (-गुं) वि० कामके वास्ते कामठी स्त्री० छोटा कमठा; धुनकी (२) पुं० कमठा रखनेवाला; भील **कामठूं** न० कमठा; धनुष् **कामडी (--ब्रं)** वि॰ दुबला--पतला; सुखंडी (२) स्त्री० बौसका फट्ठा कामदुं वि० कर्मठ; कर्तव्यनिष्ठ (२) [जंतर-मंतर; जादू-टोना मेहनती कामण न० वशीकरण; मोहनी (२) कामणगार्वं वि० वशीकरण करे ऐसा; मोहक [मंतर **कामणटूमण न० व**शीकरण और अंतर-कामदार पुंदीवान; कारदारी (२) नौकरीपेशा आदमी; मजदूर कामबारपक्ष पुं० मजदूर पक्ष;मजदूर दल कामदारसंघ पुं० मजदूर संघ कामबंबोपुं० काम-धंधा; बनिज-ब्योपार कामसर अ० कामके लिए कामळ (--ळी) स्त्री० कमली कामळो पुं० कंबल; कम्मल कासो पुं० वीरताका काम; पराकम

कायटियो मुं० एकावशाहका श्राद करा-नेवाला ब्राह्मण; कटंहा; महाबाह्मण कायदुं न० एकादशाह; करट; उस दिन होनेवाला भोज। 🛛 – करबुं, बाळबुं 🛥 एकादशाहके दिन भोजन करना। --सरावचुं≕उस दिनका श्राद करना ] कायबाबाज वि० कानूनदौ कायवा (--दे) सर अ० क़ानूनन् ; नियमा-कारी कायदा नुसार कायबो पुं० कायदा; नियम (२) सर-कायम वि० कायम; स्थिर; टिकाऊ (२) स्थायी; 'परमेनन्ट' (३) मंजूर; बहाल कायमी वि॰ नित्य; स्थायी कागर वि० कायर; नाहिम्मत; नामदे कायर(--चं) (का') वि० काहिल(२) त्रस्त; उकता गया हुआ; थका हुआ (३) कायर; बुजदिल । [-करषुं = परेशान करना; सताना ।] [पलट **कायापलटो पुं**० कायांकल्प (२) कायां-काश्क न० कारक [ब्या.] (२)पदविन्यास कारकविभक्ति स्त्री० कारकविभक्ति कारकियों स्त्री० कार्यकाल (२) इस बीच किया हुआ काम-काज; कारकिर्देगी कारकुन पुं० कारकुन; कारिंदा **कारकुनी स्त्री० कारकुनका** काम कारसानदार पु० कारखानेदार; कार-खानेका मालिक कारसानुं न० कारखाना (२) किसी बड़े कार-बारको स्थान कारगत स्त्री॰ ताकत (२) प्रभाव; थलती (३) काम; अर्थ (४) काममें आनेका भाव कारज न०कार्य (२)विवाह या मृत्युसे संबद प्रसंग –भोज।[**–करनुं,यवुं**≔इस प्रसंगका खर्चा आदि करना या होना;

उसका धार्मिक कृत्य आदि करना.]

32

काळास

मचलता हुआ; लड़ैता (२) तोतला
(३) बालिश; नादान
कार्सुं न० कपासका डोंड़ा; ढोंढ़; ढेंढ़ी
काले अ॰ देखिये 'काल' अ॰
<b>काबड</b> स्त्री० कॉंबर; बहेँगी
कावडियूं न० एक पैसा
<b>काववियो</b> पुं० कौवरिया
कावतरासोर, कावतरावाज वि० चाल-
बाज; छली [साजिश
कावतरुं न० कारस्तानी; प्रपंच (२)
कावसियो पुं० पक्का आवमी; घाष
कावळी स्त्री० पानी, दूध आदि पर
तैरनेवाली पतली परत; काई
कावादावा पुं० दौव-पेच ; छल्ल-कपट
काबुं अ०कि० ऊब जाना; तंग आना
काबो पुं० कहवा (२) काढ़ा; क्वाथ
काश(-स) पुं०;न०काश;कॉस (२)
उसका फूल; काश
काश (स) पुं० कास; सौसी
काश (
काटवी,जवी ≕ बाघा दूर होना; बला
टलना (२) मामलेका तूल सींचना.]
कासर पुं० क़ासिद; हरकारा
कासळ न० अड्चन; रकावट; कॉंटा
काळ पुं०काल (२) अकाल; कहत (३)
कोष ।[-आवयो=गुस्सा आना (२)
मौत आना । <b>काढवो</b> = समय पसार
करना ।सूटवो = आ बनना; मौतका
सिर पर खेलना। –मांची साववुं =
भूसपीड़ित होना; खूब भूखा होना.]
काळका स्त्री० कालिका; चंडिका
কাত্রখন্দ ন০ কাতেবক
काळचीववियं न० धातक समय या
मातका घड़ा
काळबातूट वि० घोर; जीतोड़

काळजी स्त्री॰देखमाल; हृदयपूर्वक सँभाल; सबर या चिंता। [--करबी, **धरावणी, रासवी ==** देसभाल करना; खबर लेना.] काळज्.ं न०देसिये 'कलेजुं' (२)हृदय; जी;मन [ला.] । [**-कोराब्**=दिलुको संताप होना । --स्नसर्चु = मन-बुद्धिका भ्रमित होना; अकुल भारी जाना। -**ठरषुं, ठंडुं थयुं** ≕कलेजा ठंडा होना.] **काळजूनुं** वि० बहुल पुराना **काळक्वर पुं० कालज्वर** काळप स्त्री०कालापन(२)कलंक **काळवळ** न० कालबल **काळभेरव** पुं० कालभैरव; शिव **काळमापक यंत्र** न० कालमापक यंत्र **काळमॉद** वि० काला-कलूटा (२) निष्ठुर (३) पुं० एक प्रकारका बहुत सल्त और काला पत्यर काळमुझुं वि० कालके-से मुंहवाला काळमूर्ति वि० कालकी-सी मृतिवाला (२) स्त्री० शरीरथारी काल(३) कालकी-सी भयंकर आकृतिवाला पुरुष काळयोग पुं० समयका योग; संजोग काळरात्री स्त्री० अँघेरी, डरावनी रात (२)कालरात्रि; प्रलयकी रात(३) ७७ सालके बाद आनेवाली आध्विन-शुक्ला अष्टमी या भाद्रपद कृष्णाष्ट-मीकी रात (४)कालीके जन्मकी रात (५)यमराजकी बहन सिमय काळवेळा स्त्री० भयंकर समय (२)संच्या काळाट पुं० कालापन काळावजारियो पुं० कालाबाजार पला-नेवाला व्यक्ति या व्यापारी कळाइा स्त्री० कालापन (२) मामुली

कॉलायन

कछ्छांतरे	53	कांग्
काळांसरे अ॰ देखिये 'कालांतरे'		भारतुंमेश वि० काजल-सा काला; काला-
<b>काळांचोळां न० व० व० कारस्तानी;</b>		कलूँटा
काली करतूतें(२)वदचलनी । [करबा		<b>काळो कामणगारो</b> पुं० श्रीकृष्ण
= छलकपट या बदचलनी करना ]		काळो कायवो पुं० बहुत अप्रिय और
काळियार पुं० काला हिरन; कालसार; करूसायल		दालिम क्रायदा; काला क्रायदा(२) 'रॉलेट एक्ट'
काळी वि॰ स्त्री॰ काले रंगकी स्त्री;		<b>फाळोतरी स्त्री० संबंधियों आदिको भेजी</b>
काली (२) स्त्री० काली बूटीवाले		जानेवाली मृतक कमें आदिकी चिट्ठी;
साशके पत्तोंका एक प्रकार; काला		कहावत ['कई', 'कईक'
थान (३) काली; कालिका		काई(०क)(०) वि० (२)स० देखिये
काळीचौदश (-स)स्त्री० नरक चतुर्देशी		कौकज (०) न० कंगन
काळीबोरी स्त्री० कालीजीरी		कांकरी (०) स्त्री० कंकड़ी; कंकरी (२)
काळीटीली स्त्री०कलंकका टीका;लाछन		रेत; पथरी (३) पथरी रोग
काळीनाग पुं० काला नाग-सौप (२)		कांकरीचाळो (०) पुं० मजाकमें किसी
कालिय अादिवासी लोग		पर कंकड़ी फेंकना;छेड़-छाड़
काळोपरन स्त्री ॰ 'दूबळा', 'चौथरा' आदि		कॉकरो (०)पुं०कंफड़ (२)डला (नमक,
<b>काळोरोटी</b> स्त्री० <sup>ं</sup> मालपूआ		मिसरीका ) (३)कौटा; फौस; अड़चन;
काळीरोळी स्त्री० संघ्याका झुटपुटा		रुकावट (४) शंका; मनका कौंटा;
कार्ळ् वि० काला(२)टुष्ट ; बुरा;अनीति-		खटका (५) पलकके नीचे होनेवाली
मय; काला (कर्म, बाजार आदि)		फुंसी ।[ <b>स्रंचवो</b> ≕मनमें चुभता रहना.]
(३)दुष्कर; सस्त; भयानक; कठोर		कांग(०) स्त्री० कॅंगनी;कांगनी
आदि भाववाला (चोर;परिश्रम)।		कांगबुं(०) न० दुड्डी; ठुर्री;अनाजका
[काळा अझरने कूटी मारवा≔दिल-		न भीगनेवाला दाना
कुल अनपढ़ होना; अक्षरसे भेंट न		कांगरी (०) स्त्री० दंदानेदार या उभड़ी
होना । काळा अडद थोरवा≕भयकर		हुई बनावटवाली पंक्ति (२) दीवा-
पाप करना । <b>काळा तल चोरवा</b> ऱ्ऱ्याप		रकी कँगनी; कारनिस
करना । <b>काळाना बोळा चवा⇒बु</b> ढापा		<b>कांगरो(०)</b> पुं० दौता; दंदाना (२) शिखर
अाना। काळा माचानो माननी=		(३) क़िलेकी मुंडेर परका छोटा कँगूरा;
आदमजाद; मनुष्य (सामान्यके अर्थ-		बजरी (४)दीवारकी बड़े दंदानोंवाली
में) । –करबूं≕कलकित करना (२)		पंक्ति (५)कामदानीका एक प्रकार्
मुंह काला करना ; टलना ; दूर होना ]		कांगर्खु (०) वि० देखिये 'कांगुं'
काळ्पाणी न० देसनिकाला; कालापानी		कौगारू न० कंगारू
काळुंबजार न० कोलाबाजार		कांगावेबा (०) पुं० ब०व० रांकपन;
कार्ळुभम्मर वि० काला भुजंग; अति		गिड़गिड़ाहट करना
काला		कागुं(०) वि० रंक; कायर

 - 8
ωı

- कोंचळी(०) स्त्री०कंचुली; चोली(२) केंचुली; केंचली। [--उतारवी, कासी नाववी = केंचुली झाड़ना, छोड़ना, बदलना।-पहेरवी=कायरता दिखाना; चूड़ियाँ पहनना (२) जनाना मेस बनाना.] [लेई(३)माँडी कांबी(०) स्त्री०कांजी; लपसी(२) कांदादार(०) वि०पानीदार; जोक्रीला
- कोटासरि (-ळि)यो (०)पुं० कटसरैया (पौषा)
- कौटाळुं (०) वि० केंटीला; कटिंदार कींटियुं (०) न० कफ़न (२) संडास
- कॉटुं(०) न०माल लेने देनेका इंत-जाम-कौलकरार; सौदा (प्राय: नॉ-जायज)(२)भूसा
- कांटो (०) पुं०कांटा (२) उसके आकारकी कोई बीच (धड़ीकी सूई आदि) (३) युरोपीय लोगोंका खाना खानेका एक साधन; कांटा; उदा^ 'छरी-कांटो' (४) तौलनेका कटिंदार तराजू; राटुछ; टक्ष आदि (५) नाकमें पहननेका स्त्रियोंका एक गहना; लौंग; कील (६) रोमांच [ला.] (७) हकावट; कौंटा (८) बैर; कीना(९) वहम; शंका(१०) जोश; पानी (११) टेक; दुराग्रह। [कांटा बाबबा, बेरवा=बैर मोल लेना; कटि बोना। कांटो काढको = बांधा दूर करना (२) मनका खटका दूर करना.]
- कांठली (०) स्त्री० हँसली (२) करघेकी डरकी; भरनी; 'गटल'
- कांठलो (०) पु० अँगरखेकी काट जो गलेमें ठीक बैठती हो; कंठा (२) तोतेके गलेकी रंगीन रेखा; कंठा (३) देखिये 'कांठली' (४) घड़ा, गागर आदिका गला; कंठ (५) घाट; किनारा

কাৰ

- कांठो (०) पुं० किसारा; तट (२) अंत; छोर;सीमा (३) (वड़ा, गागर, कुआँ आदिका) काँठा
- कांड पुं० कांड; परिच्छेद (२) पौर (पीयेकी);कांड (३) डाली; झाखा कांडावडियाळ(०) स्त्री० कलाई पर

बौधनेकी घड़ी; 'रिस्टवॉच'

- **দাঁৱাৰত** (০) ন০ মুত্তৰন্ত; ৰান্তুৰন্ত
- कॉडावळियुं (०) वि० मखबूत (कला-ईका बल); बाहुबली
- कांडियुं(०) न॰ पेंहुँची;मुतेहरा(२) कफ़ (क्नमीज आदिका)
- कांडी (०) स्त्री०दियासलाई या इसकी पेटी (२)देखिये 'कांडु'
- कांडुं (०) न० कलाई; गट्टा । [-कार्था आपवुं झ्हस्साक्षर कर देना; झबूलत लिखना (जिससे बादमें मुकर न जाये)। --पकडपूं झपाणिग्रहण करना; ब्याहना (२)आसरा देना.]
- कांतच (०) न० कताई; कातनेकी किया कांतचुं (०) स०कि० कातना (२)निक-
- म्मी चर्चा करना; बालकी खाल निकालना [ला.]। [कांसेखुं कांतर्षु = व्यर्थं परिश्रम करना; किया हुवा काम दुबारा करना; पिष्टपेषण करना.]
- कां तो (०) अ० अथवा; या तो
- कांदो (०) पुं०कांदा;प्यांख (२)कंद; गाँठदार जड़ (३) लाभ; फ़ायदा [ला.]।[-काढवो = फ़ायदा मिलना; हाथ ऑना.]
- कोथ(०) स्त्री०कंघा; स्कंघ(२)जूएकी रगढ़से गरदन पर होनेवाला चट्ठा। [--आपवी = कंघे पर उठाकर सहा-यता करना; कंघा देवा।[--पडवी=

कपिरंवत

बैलके कंधेकी अमडीका सस्त होना )

कांधास्तत (०) न० क्रिस्तोंके अनुसार

कांबायांजरां (०) न० व० व० किस्त

सूदके साथ दुवारा क़िस्तें बौधना

कांधियो (०) पुं०कंघे पर बोझ ढोने-

वाला मजदूर (२) बैल (३) ठठरी

उठानेवाला; कंभा देनेवाला (४)

किस्त पर व्याज-बढ्रेका रोजगार

कांप(०) पुं० काला, चिकना, जमा

कौपचुं(०)अ०कि० कौपना(२)थरथराना

कांबी (०) स्त्री०स्त्रियोंका पाँवका एक

गहना (२)चरसेके मोहरेका कांठा

(३) औत उतरनेकी बीमारीमें गाँठ-

को दबानेवाली करघनी; कंदोरा (४)

कांस (०) पुं० छोटी नहर (२)नाली

कांसवुं(०) अर०कि० खाँसना(२) . खखारना(२)हाँफना;साँस लेना(४)

स०कि० ठूसना; दबा-दबाकर भरना

कसिका बढ़ा कटोरा-तसला (३)कंघा

कांसी ( ) कोड) ( ) स्त्री ); कांसी-

जोडं (०) न० (बहुदचनमें) बड़ा

कांसां (०) न०व०व० कांस्यताल; झाँझ कांसियो (०) पुं०पीतलकी कल्छी (२)

कांबळ (--ळी) (०) स्त्री० कमली

करनेवाला (५) पूठवाल; पिट्ठू

कांच (०) न० किस्त; खँटी

कांप(०) पूं० कंप; सिहरन

हुआ कीचड़; करेल

कांबळी (०) पुं० कंबल

चमडेका डोल

कांसको (०) स्त्री० कंघी

कांसको (०) पुं० कंघा

अदान होने पर बक़ाया रक्तमकी

कर्ज चुकानेका कवाला-दस्तावेज

-मारबी = कंधा देना.]

किस्स कस्पिताल ; स्रौंस । নিলিবাৰা वगाडवां==(धन आदिका)घटना (२) भीख मौगना (३) काम-धंघा चला जाना; बेकार बनना.] कांसुं(०) न० कांसा **किकियारी स्त्री**० किकियाना; कॅंपा देनेवाली ची**ख কিজ্জা** দুঁ০ বিজা किसो पुं० (सरकंडेकी)क़लम;लेखनी (२) अच्छे अक्षरोंमें लिखा हुआ मसौदा-नभूना (३) किता; खेतका टुकड़ा (४)अ० ऐजन् **কি**জা**ৰল্** কিলক্ষাৰ পুঁ০কীনজাৰ; কদৰুবাৰ ( ২ ) किनार(-रो) स्त्री० किनारा; कोर (२)गोट;किनारी(३)तट;किनारा किनारो पुं० किनारा;कौठा;तट किन्नाकोर, किन्नो देखिये 'कीनाखोर', 'कीनो' वि० सस्ता किफायत स्त्री० किफ़ायत; बचत(२) किफायती वि० किफ़ायतका; सस्ता खुर्दा; थोड़ा थोड़ा करके किरतार पुं० करतार; स्रब्टा किरपाण स्त्री० किरपान; कृपाण किरमज पुं० किरिमदाना (२) इसमेंसे निकलनेवाला लाल रंग और दवा; किरमिज **किरमजी** वि० किरमिजी; गहरा लाल किलकार पुं० किलकार; किलक किलकारी स्त्री० किलकारी : किलकार (२)तीक्ष्ण चीख या पुकार [चहचहा किलकिल स्त्री० कुलकुलकी आवाज; किलकिलाटपुं० कुलकुलाना; कलरव (२) हर्षघ्वनि कीड़ा; कीट किल्लुं न० नाजमें पड़नेवाला एक

For Private and Personal Use Only

<u> </u>	-	_
TG		π

ष्ट्रीटामण

**किल्लेवार** पुं० किलेदार(२)क्रिलेकी रक्षा करनेवाला सैनिक किलेकी तामीर किल्लेबंबी (--की) स्त्री ॰ किलेबंदी (२) **किल्लो** पं० किला; गढ काश्तकारी किस्त स्त्रीं० किश्त; शह (शतरंज)(२) किश्ली स्त्री० किश्ली; नाव **किसम** स्त्री० क़िस्म; प्रकार किसमिस स्त्री० किसमिस; किशमिश किस्ती स्त्री० किस्ती; डोंगी किल्सो पुं० किस्सा; कहानी (२) किस्सा -कहानी । [--**करवो** = युक्ति रचना.] किंकर पुं० किंकर; सेवक किंकरी स्त्री॰सेविका;दासी किंमत स्त्री०क्षीमत;बदला;मुआवजा (२) कद्र; गिनती कीकली स्त्री० बच्ची **कीकलो** पुं० बच्चा कौकी स्त्री० (आंखकी) पुतली; तारा कीकी स्त्री० बच्ची; बालिका कीको पुं० बच्चा; छोटा बालक कीस (०इ) पं० कीच; कीचड़ कीट वि० बराबर जवानी किया हुआ; बरजबान (२)पूरा माहिर;अनुभवी कीट पुं० मैल; जंग (२) कुड़ा-करकट; करदा; किंद्र; तपाये हुए घीकी तल-छट (३) गौठ; गट्ठा कोट(०क) पुं० कीट; कीड़ा कीटली स्त्री० केतली; चायदानी **फीटियुं** वि०जिसमें बिनौलेके टुकड़ों या पत्तियोंका चूरा आदि कचरा हो (२) न॰ छिलपट (लकड़ीकी) कीटी स्त्री० रूई (बिनौलेके बारीक टुकड़ों या पत्तियोंके चुरे आदि)का [किट्र ; काई कचरा **कीटं** न० तपाये हुए घीकी तलछट;

कीडियाचं न० चींटियोंका दर कोडियासेर स्त्री० काचके बहुत छोटे मनकोंकी माला कीडियूं न० काचका बहुत छोटा मनका कीडी स्त्री० कीड़ी; चिउँटी। [--क्षे उत्तराबी ≕ असंख्य जादमियोंका जमा होनां।**–ओ चडवी**⇒(काम करते) उकता जाना !--उपर कटक=सामान्य प्रयोजनके लिए भारी प्रयत्न.] कोडीबेग प्०चिऊँटीकी चाल: चिउँटिया रेंगान कीडो पुं० कीड़ा **कीनासोर** वि० कीनाकश; कीनावर कीनो पु० कीना; कट्टर वैर कौमत स्त्री० देखिये 'किंमत' कीमसी वि० कीमती; मुल्यवान कीमियागर पुं० कीमियागर (२) कला-कुशल-हुनरमंद व्यक्ति(३)धूर्त;ठग कीमियो पुं० कीमिया; अकसीर(२) जादू; कार्यसाघक युक्ति [ला.] (३) आसानीसे अधिक धन मिले ऐसा इल्म, पेशा या साधन कीरतम न० कीर्तन कीरतनियां न०ब०व० झाँझ कीरतनियो पुं० कीर्तनिया; कीर्तनकार कील पुं० (गाड़ीके पहिये परकी) कालिस (२)मेस ; सूंटा ; कील कोलो स्त्री०ताली;कुंजी(२)तिजोरी कीलीदार पुं० ज़िसके पास (क़िला, तिजोरी बग़ैरहकी) कुंजी रहती हो वह व्यक्ति **कुकरेक्**क न० कुकडूं-कूं (मुरगेकी) कुछंब पुं० बुरी लत या चसका; लंपटता कुटामण न० बेकार चक्कर काटना; कूचागर्दी

	• •
कुटारो	९६ डुसनायक
कुटारो पुं०कूवागर्दी (२) झंझट ; माथा-	उडत; बहका हुआ; वेजदव (३)ने-
पच्वी [ला.] [रूप	निम्न कोटिका पात(४)कुपात्र व्यक्ति
कुटाबबुं स०कि० 'कूटवुं'का प्रेरणार्थक	कुप्पी स्त्री॰ कुप्पी; छोटा कुप्पा
कुटाबुं अ०कि० 'कूटवुं'का कर्मणि (२)	कुप्पी पुं॰ कुप्पा [दुरुचरित्र स्त्री
भटकना; व्ययं चेक्कर रुगाना (३)	कुबका स्त्री० कुब्ला; कुवडी (२) खराब,
समझमें न आना; असमंजसमें पड़ना	कुब्ला वि० स्त्री० कुब्ला; कुवडी (२)
[ला.]	स्त्री० कैकेवीकी दासी-पंथरा; कुवरी
क्रुटूंब न० क्रुटुंब; परिवार (२) क्रुटुंब-	(३) कंसकी एक दासी जो कृष्णकी
क्रबीला (३) स्त्री-पुत्रादिका समूह;	कृपापात्र थी; कुबरी; कुब्ला
बाल-बच्चे [बच्चे	कुमारबा स्त्री० नीच-बुरी स्त्री (२)
क्रुटुंबकबीलो पुं० क्रुटुंब-क्रबीला; बाल-	लड़ाकी; कर्कशा (३) फूहड़ स्त्री
कुटुंबपरिवार पुं०क्रुटुंब और परिवार	कुमक स्त्री० कुमक; मदद। क्रिक्के क्रमा
जुदुवरारवार पुण्ठुदुव जार गारगर कुटुंबो वि०कुटुंबी; कुटुंबका (२) कुनवे, बाल-बच्चेवाला (२)न०;पुं० कुटुंबका व्यक्ति कुटेव स्त्री० कुटेव; बुरी आदत कुटबूं न० कुटता कुतरुं न० कुरता कुतरियुं न० कुत्ता (घास); रुपटौशौ कुटुब पुं० चक्कीकी कौल; अखौटा	रहेषुं = (किसीकी) कुमक पर होना; किसीका मददगार होना.] कुमकुम न० कुंकुम; रोली [नरमी कुमळाझ स्त्री० कोमलता; मुलायमत; कुमळूं दि० देखिये 'कोमळ' कुमाविसवार पुं० माल-महकमेका अधिकारी [(२) साफ बुनाई कुमाझ स्त्री०मुलायमत;नरमी(कपड़ेकी)
(२)ध्रुव तारा; कुसुब कुत्ती स्त्री० कुत्ती; कुतिया कुत्तो पुं० कुत्ता कुत्वक्तारो पुं०कुदन्का; कुदान कुत्वक्तुं न० कुतका;सोंटा कुत्वक्त स्त्री० कुदरत (२)जातिस्वभाव (३) शक्ति;ताकृत	डुरकुरियुं न० कुत्तेका बच्चा; पिल्ला डुरतुं न० कुरता डुरन(–नि)स, डुनिंश स्त्री० कोरनिश डुल वि० कुल; सारा(२)तमाग; पूर्ण डुल न० कुल; कुटुंब(२) कुलीनता(३) समूह; झुंड; दल (४) मुवक्किल (वकीलका) डुलबी(ल) स्त्री० कुल्हिया(२) सुना-
कुदरती वि०कुदरती; प्राकृतिक; असली	रोंकी कुल्हिया जिसमें सोना-चौंदी
कुदावद्दं स०कि०कुदाना; कुदवाना	गलाते हैं; धड़िया(३)गुदाका भाग;
कुदावुं अ०कि० कूदा जाना	काँच (जिसमें से मल बाहर आता है)।
कुद्यान न० कुधान्य	[-मां गोळ भागवो≕आपसमें (झगड़ा)
कुद्यारो पुं० कुरीति(२)मुघारका उलटा;	निबट लेना (अन्य व्यक्तिको बीचमें
विगाड़ [चालाकी	लाये बिना).]
कुनेह स्त्री० हिकमत (२) चतुराई;	कुलनायक पुं० विश्वविद्यालयका उप-
कुपात्र वि० कुपात्र; नालायक (२)	कुलपति; 'वाईस-चान्सलर '

ङ्कर्पति	९७ ष्ट्रांबन
कुसपति पुं० कुलपति (२)कुलपति;	क्रुहाबो पुं० कुल्हाबा । [कुहाबी (-बा)-
<sup>- 'चान्</sup> सलर' [एक बानगी; कुलफ़ी	नी हावो ≕ बुरे काममें किसीका
कुलफी स्त्री० बर्फ़रे जमाई हुई दूधकी	साधन बननेवाला या उसका काम
कुलाको पुं० अंतरीपकी जमीन (२)	निकाल देनेवाला.]
आस्तीनका कट	<b>कुळ</b> न० देखिये 'कुल्र <sup>'</sup> न०।[—उजाळव्
<b>कुली</b> पुं० कुली; मोटिया [मिलाकर	= कुनवेकी धान बढ़ाना । -तार <b>युं</b> =
कुले अ॰ कुल-जमा; समग्रतया; सब	कुलको सारना; कुलोदार करना।
<b>कुलेर</b> (ले') स्त्री० घी-गुड़के साथ मसला	–बोळव् = कुलका नाम डुबाना.]
हुआ वाजरे आदिका कच्चा आटा –	<b>कुळदीवों</b> पुं० कुलदीपक (२)पुत्र
एक खाद्य पदार्थ [कुष्पी	<b>कुळदेवी</b> स्त्री० कुलदेवी
<b>कुल्ली</b> (कु') स्त्री॰ देखिये 'कुलडी' (२)	<b>कुळरीत</b> स्त्री० कुलरीति; कुलमर्यादा
कुल्लुं (कु')न॰ कुप्पा। [कुल्लामां हाथ	कुळलजामचुं वि० कुलको लज्जित
<b>मुकावचो, मेलावचो = खू</b> ब लालच	करनेवाला; कुलबोरन
देकर भरमाना]	<b>कुळवंत, कुळवान</b> वि० कुलीन
<b>कुल्ले</b> अ० देखिये 'कुले'	<b>कुळहीण (गूं)</b> वि० कुलहीन
<b>कुवेभ न</b> ० गाली; कुवाक्य (२) कटु वचन	<b>क्वंकुम</b> न० कुंकुम;रोली [लग्नपत्रिका
<b>कुवेतर</b> न॰ कुएँसे सींची जानेवाली	कुंकुमपत्रिका स्त्री० कुंकुमपत्रिका;
बमीन; चाही जमीन	कुंजडी स्त्री० एक पक्षी; मादा काँच -
<b>कुवेती</b> पुं० चरससे कुएँसे पानी	बगली (२) छोटा कुंज; कुंज गली
निकालनेवाला; चरसी; चरसिया	कुंजडूं न० एक पक्षी; कूंज; कौंव
<b>कुम्बत</b> म॰ कूबत; ताक़त	कुंजबो पुं० कुँजड़ा (२) माली (३)
<b>कुशका</b> ्पुं०ब०व० धान, कोदों आदिके	एक पक्षी
छिलके; भूसी	कुंजार वि० कुंज जैसा; छतनार
कुशकी स्त्री० कूटे हुए घानकी बारीक	<b>कुंजो</b> पुं० कूजा; सुराही
फटकन; बारीक भूसी	क्रुंड पुं० कुंड; यज्ञवेदी (२) जल-
कुञ्चल (ळ) वि॰ शुभ; मंगल (२)	संचयके लिए बनाया गया सीढ़ियों-
आरोग्यवान (३)प्रवीण; कुझल(४)	वाला पक्का हौज; कुंड (३) कुंडके
न० कुशल, क्षेम नि० कुशल-क्षेम	आकारका पात्र (४) बलि चढानेकी
कुशळकोम वि० सुखी और तंदुहस्त (२)	जगह (५) छोटा उवारा; कुंड(६)
कुसँग पुं० फूट; अनैक्य; अनवन	गढ़ा; गत
'कुसूंबी (-बो) देखिये 'कसुंबी', 'कसुंबो'	कुंडली स्त्री० छोटा कुंडरा; मंडलाकार
<b>डुस्ती</b> स्त्री० कुश्ती (२)गुत्यमगुत्या;	रेखा (२) घातुकी खोली; शामी
े <del>कु</del> श्तमकुश्ता	(২) অন্ধন্যৰকা
<b>कुस्तीवाज</b> पुं० कुश्तीवाज	<b>छुँडळ</b> न॰ कानका गहना; कुंडल
<b>कुहावी</b> स्त्री छुठकाडी	<b>कुंदन</b> ने <u>क</u> कुंदन; खालिस सोना

শু. ছি-৩

हुंदो	् ९८ कूणो
हुवी पु॰ कुंदा; सोंटा;डंडा (२)लाठी	क्कडेकूक न० मुरगेकी आवाज;कुकडू कूँ
या बंदूकका मोटा सिरा; कुंदा	कूकडो पुं० मुरगा; मुर्ग
डुंभकर्णनी ऊंध = लंबी और खूब गहरी	<b>कूकरी</b> स्त्री० हलमें लगाई हुई पच्चर;
(छह महीनेकी) नींद	खुरा(२)नेपाली कटार; खुखड़ी
डुंभमेळो पु० बड़ा मेला (२) हर बार-	<b>कूकरी</b> स्त्री० (खेलनेकी) गोटी
हवें बरस लगनेवाला हिंदुओंका एक	कूकी स्त्री० छोटी गोटी (खलनेकी)
मेला; कुम [उयक्ति[ला]	`कूको पुं० पस्थरका छोटा गोल टुकड़ा;
डुंभार पु० कुम्हार (२)अनगढ़ या मूर्ख	गोटी (२) ठीकरी; गोटी
डुंभी स्त्री० खभेके नीचेका पत्थर या	कू्झ स्त्री० कुख; कोख(२) गर्भाशय;
लकड़ीका आधार;बैठक (२)मकानका	पेट [ला.] (३) संतान । [ <b>–मांडणी =</b>
लंगा [मार; पिटाई	स्त्रीको प्रथम गर्भ रहना;कोख खुलना ।
डुंभीपाक पुं० कुंभीपाक; एक नरक (२)	– <b>लाजवी =</b> मॉको ऐव लगना.]
डुंबर पुं० कुँआरा लड़का (२) राज-	कूच स्त्री० कूच ; रवानगी (२) ल्डकरी
ुँकुमार, कुँबर (३) लाडला बेटा, कुँअर	चाल; कूचे-क़दम
<b>कुंबरो</b> स्त्री० क्वॉरी कन्या, कुँआरी (२)	कू <b>चडी</b> स्त्री० मोटे बालोंकी कूँची;बुरुश
राजकुमारी, कुँबरी (३)बेटी, लाडली	<b>कूचडी पुं</b> ० उसकन;उबसन (२) <b>(जूना</b>
बेटी	फेरनेके काम आनेवाली मूंज आदिकी)
कुंबार स्त्री० धीकुंआर; ग्वारपाठा	कूँची (३) तानेका सूत साफ़ करनेका
कुंबारका स्त्री० कुँआरी; कन्या; कुमा-	ब्रश; कूँच
रिका(२)वह नदी जो समुद्रमें न मिलती	<b>कूचापाणी</b> वि० जो बराबर घुल-मिल
हो [छीसा अंक्रुर; ग्वारपाठा	या पिघल गया न हो (२) न०ब०व०
कुंवार (०नुं) पाठुं न० घीकुआरका बर-	फोक और पानी(३)निस्सार <b>चीजें</b>
<b>कुंवारो</b> वि॰ स्त्री॰ समुद्रमें नहीं मिलने-	कूची स्त्री० देखिये 'कूचडी '
वाली (नदी)	कूचो पु० फोक; फुजला; सीठी(२)
<b>कुंवार्ध</b> वि॰ कुँआरा; क्वाँरा;अविवाहित	उवसन (३) (चूना फेरनेकी)कूँची;
कुवार विण् कुजारा, क्वारा, कायताहत	बश (४) तलछट;गाद (५)तानेका
कूई स्त्री० कुइयाँ; छोटा कुआँ	बश (४) तलछट;गाद (५)तानेका
कूक न० आँखमिचौनीके खेलमें की	सूत साफ़ करनेका ब्रश; क्ँच(६)
जानेवाली आवाजा (२) इंजनकी	बार-बार कही गई सारहीन बात
-सीटीकी आवाज; भोंपू; सीटी	[ला.] (७) पूरी तरहसे सोची-समझी
कुकगरडी स्त्री० रेलगाड़ी (बालभाषा)	हुई बात(८)निंदा । [ <b>∽करथो≔</b> [ला.]
कुकडां न०ब०व० मुर्ग्री, बतख इत्यादि:	एक ही बात बारबार कहना; पिष्ट-
ें'पोल्ट्री'	पेषण करना । <b>–काढवो =</b> कड़ी मेहनत
कूकडी स्त्री० मुरगी	लेना;थका देना;मोमियाई निकालना.]
कूकडीकूक अ० आंखमिचौनीके खेलमें	<b>कूजव्</b> अ०कि० कूजना; कुँजना
की जाती आवाज	कूजो पुं० कूजा; सुराही
For Private an	d Personal Use Only

कृह

<b>d</b>	<u> </u>
कूट वि० जो न समझा यान पढ़ा जाय;	कूतरी स्त्री० कुत्ती; कुतिया
गूढ़ (२) रहस्यमय ; पेचीदा (३) झूठा ;	कूतदं न० कुत्ता । [ कूतरा जेव्दुं≕भट-
कूट (४)पुं०; न० कपट; घोखेवाजी;	कता; आवारा (२) कटहा और
ठगाई (५) पहाड़की चोटी; शिखर	भौकनेवाला । कू्सराने मोते मरबुं 🚎
(६)ढेर(७)कुटप्रदन (पहेली, रहस्य	कुत्तेकी मौत मरना.]
आदि) [वरतन; कबाड़	कूतरो पुं॰ कुत्ता
कूट स्त्री० माथापच्ची (२) टूटे-फूटे	<b>कूपकी</b> स्त्री० कुत्सा; बदयोई; निदा
<b>कूटणलानुं</b> न० वेश्यागृह; कसबीखाना	क्षूचलो, क्रूचो पुं० गढ़बड़झाला ; घोटाला
<b>कूटणी</b> स्त्री० कुटनी; कुट्टनी	(२) मायापुच्ची (३) उबसन (४)
कूटणुं न० सियापा; मातम; मृतकके	'कुत्सा; बदगोई
पीछे पिट्टस (२) वसा प्रसंग	कूवको पुं० कुदान; छलौग
कूटखुं स०कि० मारना; पीटना (२)	<b>कृदव्</b> अ०कि० कूदना (२) अपने बूतेसे
कूटना (धान, औषध आदि) (३) मृतक	अधिक खर्च या ठाठ करना [ला.] ।
ध्यक्तिके पीछे छाती कूटना	[कूरी पडवूं = कूद पड़ना; साहस
कूटाकूट स्त्री० बार बार ठोंकना;पिटाई;	करना। कूवी रहेवुं = फ़जूल (स्नर्च
ठोंक (२) खूब रोना-पीटना ; पिट्टस	करनेके लिए) तत्पर रहना (२)
कूटियुं न० मार; मरम्मत (२) बाज-	आतुर, लैस होना.]
रेको कूटकर बनाई हुई खाद्य वस्तु ।	कूदंकूदा, कूदाकूद स्त्री० उछल-कूद;
[करबुं, काढबुं = बहुत पीटना; खूब	कुदक्का (२) चंचलता ; अशान्ति [ला.]
मरम्मत करना.]	(३) हदसे ज्यादा खर्च करना
कूटी स्त्री० गोटी; नर्द	कूपी स्त्री० कुप्पी; कूपी
<b>कूटो</b> पुं० चूरा; चूर्ण (२) मार; कुटाई	कूपो पु० कुप्पा (२) कुप्पेक़े आकारकी
कूड न० कपट; ठगाई(२)नुकताचीनी	
कूडकपट न० छल-कपट; धोखा-धड़ी	<b>कूबड्रं</b> वि० बंदशमल; कुरूप
कूडुंवि० कपटी; कूट (२) कुटिछ;	कूबो पुं० घोंसला (२) घासकी गुंबद-
सोटा (३) न० अपराध; खता (खास	दार कुटिया
करके देवी या मातृकाकी ) [ <b>⊸पडव् ं</b> =	कूबो पुं० पक्का फ़र्श; गच (२) फ़ुर्श करने गीरनेका गौगपाः जोजनाः जेल
देव-देवियोंका अपराघ होना; वैसा	कूटने-पीटनेका मुंगरा ; मोगरा ; कोबा
काम होना.] काम हालम की कोगलना	कूलो पुं० कूल्हा; चूतड़; कूला
<b>कूचप, कूणादा स्त्री० कोमलता</b> क्यू ति० कोगल, जाजक	क्वायंभ, कूवो पुं० मुस्तूल
कू <b>णुं</b> वि० कोमल; नाजुक <b>कूनकुं न</b> ० कुतका; सोंटा	क्वो पु॰ कुँआ;कुओं। [कूवामां उतार हुं,
कूतरानी टोपो स्त्री०, कूतरानी, कान	नाखवुं = खूब नुकसानमें रु, जाना; फँसाना । कूवे पडवुं = आर्महत्या
पूर्व कुकुरमुत्ता [चमरी, मंजरी	गताना । कुर्य पक्ष ≕ आर्महत्या करना; कुऍम गिरना (२) झाहस
कूतरी स्त्री॰ कुत्ता घास (२) इसकी	परिता, अपने गरिता (४३ झाहस करना । <b>−पूरवो, −हवाडो करवो</b> ≕
שמינו כאויש שנו שום (ז) במשו	करता – प्रत्यक्ष –हवाका करवा ==

हुवो

केरबी

कुएँ या उबारेमें गिरकर आत्महत्या
करना; कुएँमें गिरना.]
कूवो पुंक मस्तूल
कूळुं वि० कोमल; नाजुक
कूंको स्त्री० कुंजी; ताली (२) उपाय
[ला.] (३)रहस्य जाननेका साधन; कुंजी
भूं <b>जडी</b> स्त्री०, <del>भूं</del> जडूं न० एक पक्षी;
कौंच; कूँज [धेरा; कुंडलिका
कूंडाळी स्त्री॰ छोटा कुँड़रा (२)[ला.]
कूंबाळुं न॰ कुँड़रा; घेरा; वृत्त;परिषि
(२) घपला; घोटाला। [ <b>कूंडाळा</b>
करवा, बाळवां = घोटाला, गढ़बड़
करना । <b>–वाळव्यं</b> ≕दिवाला निकॉलना
(२) साफ़ इनकार करना.]
कूंबी स्त्री० कुंड जैसा छोटा गढ़ा (२)
चौड़े मुंहका छोटे कुंड-सा बरतन;कुंडी;
कूँड़ी (३) छोटा उबारा; कुंड (४)
बीसकी संख्याका संकेत ; कोड़ी (५)
गुच्ची [(३) घेरा; कुँड़रा
कूंड्रें न० कुंडा; कूंडा; कुंडरा (२) गमला
कूंचुं वि० कोमल; नाजुक 
कूंदली स्त्री॰ (मूसलके सिरेका) खोल
क्दूर (भ) वुं न॰ घासकी मंजी; टाल
क्रूंपळ स्त्री॰ कोंपल; गाभा
कूंभी स्त्री॰ देखिये 'कुंभी '
कूँळुं वि० कोमल; नाजुक
हुपाळु वि० कृपालु; दयालु
के अब्ब अथवा; या; वा (२) कि
केटलुं वि० कितना
<b>केटलुंएक, केटलुंक</b> वि० कुछ ; कुछ एक
केटलूंकेटलूं, केटलूंबचूं, केटलूंब वि०
कितना-कितना; कितना
केड (कॅड,)स्त्री० कमर(२)कुमक लि.]
केडियूं (कें) न॰ कमर तकका अँगरखा;
मिरबई

केडी स्त्री० पगडंडी
केडे अ० पीठकी और; पीछे
केडो पुं॰ पगढंडी (२) पीछा (३)
सिरा; अत (४) सताना; कष्ट[ला.] ।
[
करना (२) सताना । -मूकवो =पीछा
छोड़ना.]
<b>केणीगम,केणीपा,केणीम</b> ग अ० किस ओर
केद (कॅ) वि० बंघनयुक्त (२) स्त्री०
क़ैंद; बंधम
<b>केदलानुं</b> न० <b>कै</b> दखाना; कारायार
<b>केदार(–रो)</b> पुं० एक राग; केदार;
केदारा । [ <b>–करवो =</b> भारी पराक्रम
करना;बहुत जोर मारना (२)कुछका
कुछ कर देना [ला.].]
के बी अ० किस दिन ? कब ?
केवी (कें) वि० क्षैदमें पड़ा हुआ (२)
कँद किया हुआ (३) पुं० कैंदी
केफ(कॅ) पुं०; स्त्री० कैफ़; खुमार
[ <b>∼ऊतरवो</b> ≕नशा उतरना । <b>⊸करवो</b>
≕नेशा करना; नशीली चीजोंका उप-
योग करना । <b>⊸खढ़वो</b> ⇔नशा चढ़ना;
नशा छाना.]
केफियत (कॅ) स्त्री० अधिकारीके पासः
पेश की जानेवाली हक्तोकत केंक्रियत
केफी वि० कैंफ़ी; नशीला; मादक
केम (कें) अ० क्यों; किसलिए (२) केंसे
(३) प्रश्नसूचक अव्ययके रूपमें –
क्यों ? िक
केम के, केम जे अ० क्योंकि; कारण यह
कॅंसेरा पुं० कैंसेरा
केर(कॅ) पूंर्ङ कहर; जुल्म । [वर्तवो
= कहर टूटना; चारों और जुल्म फैल
जानाः
<b>केरडी (कें)</b> स्त्री० एक वनस्पति; करील
•

केरहुं १०	१ कोकडावुँ
<ul> <li>केरदुं १०</li> <li>केरदुं (कॅ) न० करीलका फल; ट्रेंटी केरवो (के) पु० एक नाच; कहरवा (२) इसमें गाया जानेवाला गीत (३) इसका राग; कहरवा</li> <li>केरी (के) स्त्री० आमका फल; आम केरीगाळो पु० आमका मौसम केरी (के) स्त्री० आमका फल; आम केरीगाळो पु० आमका मौसम केरी (के) न० करीलका फल; टेंटी केरोसीन न० केरोसिन; मिट्टीका तेल केल पु० पीसा हुआ चूना</li> <li>केवडुंब वि० कितना</li> <li>केवडुंब वि० कितना ही [केवड़ा केवडां पुं० नेवड़ा (पेड़) (२) इसका फूल; केवळ वि० केवल; शुद्ध (२) सिर्फ़; मात्र (३) एकमात्र; अकेला; केवल (४) अ० निपट; बिलकुल [(अव्यय) केवळप्रयोगी वि० विस्मयाविषोषक केषुं वि० कैसा ? केर्बुब वि० कैसा श केर्बुब वि० कैसा श केर्बुब वि० कैसा श केर्बुक वि० कैसरा ( अक्सर केर्बुक वि० केसरा भी केश्वर वि० केस्रा श केर्बुक वि० केसरा भा केश्वर वि० केसरा श केर्बुक वि० केसरा ( किस्का रिका केर्बुक वि० केसरा श केर्बुक वि० केसरा ( किस तरडका ) जमक बात या घटना या इससे संबद्ध व्यक्ति । [-बाल्वो= मुकदमा इजलासमें चलना । -माडवो = मुक्तदमा दायर करना.] केसर न० केसर; जाफ़रान (२) इसके फूलके बीचोंवीच उगनेवाला महुकदार रेवा - सीका; केसर (३) प्रत्येक फूलके</li> </ul>	शेषकार्यु केसरमीनुं वि॰ केसरिया बाना पहनकर समर-भूमिमें मरनेको उद्यत केसरियां न॰ ब॰ व॰ केसरिया बाना पहन या तो अफ्रीमका आखिरी घूंट पी मरजिया बनकर लड़ना केसरियुं वि॰ केसरिया; पीला(२) रंगीला; मौजी (३) न॰ स्त्रियोंका केसरिया कपड़ा केसरी वि॰ केसरिया; पीला केसरी वि॰ केला; कदली केळवर्षी स्ती॰ देखिये 'केळवनुं' (२) व्यवस्थित पालन-पोषण, विकास और घिसा (३) शिक्षा; तालीम (४) पढ़ाई; अघ्ययन केळवर्षीकार पुं० शिक्षा-सास्त्री केळवर्षु स॰ कि॰ व्यवस्थित रूपसे विकास करना, पालना-पोसना, सुधा- रना; शिक्षण देना (२) (साना हुआ वाटा)गूंधकर तैयार करना(३)(कच्चे चमड़ेको) कमाना (४) सवारी ढोने या जोताईकी शिक्षा देना; सघाना केत्रुं न॰ केला (फल) केनात्यागी वि॰ केन्द्रवर्ती; मघ्यवर्सी को स॰ (२) वि॰ देखिये 'कोई '[प.] (३) कीन कोई स॰ (२) वि॰ कोई कोइ वि॰ (२) स॰ देखिये 'कोईक' कोकटी वि॰ कुकटी (२) इससे बनने- याली (खारी)

कोकुडियो जुंभार	१०२ कोठी
कोकडियो कुंभार पुं० एक पक्षी;महोसा	कोट स्त्री० गरवन्। [-मा माळा मे
कोकडी स्त्री० कुकड़ी; लच्छी (२)	<b>हैयामां लोळा</b> =पुखर्मे राम और बग्नलमें
मुर्री (३) सुखाई हुई खिरनी	छुरी; दंभ । <b>कीटे वांधव्ं</b> ≕गले मढना
कोकडूं न० बड़ी कुकड़ी; लच्छा (२)	(जिम्मेदारी); साथ कर देना । कोटे
(शरीर या चमड़ीका) ऐंठना, सिकुड़ना	र <b>बळगवुं</b> =्गले पड़ना (२) बोझ बनना.]
या झुर्री पड़ना (३) पेचीदा मामला;	<b>कोटडी</b> स्वी० कोठरी
ं टेढ़ी खीर; उल्ला हुआ कामकाज ।	। • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
🛛 [ उकेलवुं = उलझे हुए सूतकी रूच्छी	। 🔹 कोटलुं न०कड़ा छिलका(२)निस्सार चीज
<ul> <li>खोलना (२) किसी काममें आई हुई</li> </ul>	ं 🔹 कोटलो पुं० मिट्टीका पिटारा (२)कोठार
ं अड़चन, कठिनता या उलसन दूर	र <b>कोटवाल (छ)</b> पुं० कोतवाल (२)
करना । <b>⊶गूंचवाचुं, गूंचाचुं</b> ≕मा <b>मला</b>	্
उलझनमें पड़ना; हरू न होना ]	कोटवाली (स्त्री) पुं०; स्त्री० कोतवाली
कोकरवरणुं,कोकरवायुं = कुनकुना	कोटि स्त्री० कोटि; करोड़ (२)कमानका
कोगळियुं (कॉ)न० हैजा; 'कॉलेरा'	सिरा (३) किसी बादका पूर्वपक्ष (४)
कोगळो (कॉ) पुं० मुँहभर पानीका घूँट	दर्जा; कोटि; श्रेणी (५)परमोल्कर्ष
या कोई भी तरल पदार्थ (२)कुल्ला;	<b>कोटिकोण</b> पुं० कोटिकोण; 'कोम्प्लिमें-
कुल्ली । [ <b>~करवो</b> =कुल्ली करना (२)	टरी एंगल' <b>कोदियुं</b> न० छोटी नाव; डोंगी (२)
मातमपुरसी करना (३) संबंध-विच्छेद	गाडनु गण्छादा गांग, जागा (२) गुल्ली-डंडेके खेलमें एक दाव (३)
करना; नाता तोड़ देना.]	पुरला‴ण्ण्ण्य स्वय दक पान (२) जानवरोंके गलेमें बौधी जानेकाली
कोच पु० कोच; सोफ़ा (२)छ्परखाट	गोल लकड़ी
(३)एक तरहकी गद्देदार बग्धी ; कोच	
कोच न० चुभ जानेसे बना हुआ छिंद्र;छेव	<b>a</b> a (a )
कोचर्च वि० छेदोवाला (२) बहुत पुरान	
कोचलुं न० छिलका (फल, अंडे आदिका	
कोचववुं स० कि० दिल दुसाना	( खानेकी चीर्चे रखनेकी ) (२)
कोचव स० कि० कोचना; चुमाना (२)	
सेंघ लगाना (३) दिल दुसाना [ला.	
कोट पु० कोट; परकोटा(२) सत्रु न घुसन	
भेदने पावे ऐसी व्यूह-रचना (३)	) चार दीवारोंका बनायां हुआं पक्का
डँढ़वारा; चहारदीवारी (४)किलेक	
भीतरी भाग	(४) खेजाना; कोश
कोट पुं० कोट; बड़ा अँगरखा (२)	) <b>कोठारियुं</b> न <b>े छो</b> टा कोठार [अल्ल
(ताशके खेलमें) एक पक्षका जल्दीरें	ते कोठारी पु॰ कोठारी; अंडारी (२)एक
सातों सर (हाय) करना औ	र <b>कोठी</b> स्त्री० मिट्टी या घातुका गोल
विपक्षको एक भी न करने देना	ठँथा पात्र; कोठी (२) कोठा; बलाय

कोषद्वी

(३) साहूकारकी दुकान; पेंठ; कोठी	कोडियूं नः छोटा सकोरा; बसोरा (२)
(४) थाना (५) कुठियाके आकारकी	(सिट्टीका)दीया
आतिशबाजी । [घोईने कादव काडवो	कोबी (कॉ) स्त्री० कौड़ी; छोटा शंख
= निकम्मे काम पर व्यर्कं श्रम करना;	(२) एक छोटा सिक्कां; कौड़ी (३)
इससे बदनाम होना.]	बीसकी संज्ञा; कोडी
कोठी (कॉ) स्त्री करेंगे; कपित्य (दूक्ष)	कोडीखु वि० हुलासी; चार्यभरा
कोठुं (कॉ) न० कपित्य; कैथ (फल)।	कोबुं (कों) न॰ छोटा संख; कौड़ी
[-आपगुं = विक्षास करना; (प्रति-	कोडो (कॉ) पुं० कौड़ा; शंख
पक्षीसे) अपनी ग़रज दिखाना (२)	कोड पुं० कोढ़; क्रुष्ठ
(नौकरीमें से) रखा दे देना; बरतरफ़	कोड (काँढ,) स्त्री० पशुशाला;बाड़ा;
करना (३) निराश करना; कुछ न	अड़ाड़ (२) मिस्तरीखाना
देना । –मळवं =(नौकरी या कामसे)	कोढियुं (कॉ) न॰ पशुशाला; बाड़ा
छुट्टी मिलना (२) निष्फलता या	कोदी (कॉ) स्त्री० कुल्हाड़ी
निराशा मिलना; (फेरा या काममें),	कोडियुं (येरु) वि० कोढ़ी
निष्फल रहना.] [चालबाजी	कोढी ( ०स्टुं) वि० कोढ़ी ; कुष्ठरोगी
कोटुं (कॉ) न० चेहरा; मुखड़ा (२) प्रपंच;	कोढो (कॉ) पुं० कुल्हाड़ा (२)वि० पुं०
<b>कोठो</b> पुं० कोठा; पेट(२)शरीर; शरी-	अक्लड़; जबान-दराज; उजहु
रके अंदरका कोई भी कोथरूप भाग	कोच(कॉ) स॰ (२) वि० कौन
(३) मन; अंतःकरण (४) खाना;	कोज जाजे (कॉ) – क्या माठूम ? कौन
कोष्ठक (५) (चौसर, शतरंज आदिका)	जाने ? [कुहनीकी नोकदार हड्डी
्र घर; खाना (६) बखार; गोल बढ़ा	कोणी (कॉ) स्ती० कुहनी; कोहनी (२)
कुठला (७)बड़ा कुऔं (८) म्युनिसि-	कोतर न० जमीन या पहाड़में गहरा,
पलिटीका मुस्य कार्यालय ; कोठी ; (९)	चौड़ा गड्ढा; खोह; नाला
चुंगी-कचहरी; मालगुजारका दफ़्तर	कोतरकाम न० नक्काशी; कोरनी
(१०) काँजी-हाउस (११) क़िलेका	कोतरणी स्त्री० नक्कांशी करनाः;
बुर्ज (१२)व्यूह-रचना (१३) तालिका;	खोदना (२) खुदाईका ढंग (३) खुदाई;
पहाड़ा (१४) अँगरखेका गला; गरे-	नक्काशी (४) खोदनेकी उज्यत; खुदाई
बान । [कोठे पडवुं = (सीख, दवा	(५) ननकाशका औआर किरेना
आदिका) खास असर न होना।	<b>कोतरवुं</b> स० कि० नक्काशी करना;
<b>क्टूटवो =</b> दस्त लग जानम्(२)मौत	कोथमी (०र) स्त्री० हरा धनिया
आना । <b>–वटल्भववो</b> ≕निषिद्ध आहार	<b>कोयळी</b> स्त्री० कोवली, थैली (२) अंड-
करना; देह नापाक करना.]	कोष; फ़ोता (३) हजारकी संज्ञा।
कोड पुं० मनोभाव; चाव; हुलास.	[- इटी मूकवी, नुं मों छोडवुं जुन या
कोडामणुं वि० हुलासी; चावभरा(२)	जरूरतसे ज्यादा खर्च करना । – रूपि-
बैला	या <del>= ह</del> वार रुपये । <b>मांवी</b> विला <b>ड</b> ुं

. <b></b>	
	6 AT

कोर्च वाकोर

नीकळर्च, साथ नीकळनी = जिसकी मनमें कल्पना भी न हो ऐसी बात बनना; अनचीता ही जाना; धोखा खाना.] कोभळो पुं० कोथला; बड़ा थैला। कीवळामां पांचहोरी घालीने मारवी = मीठी या गुप्त मार मारना.] **कोदरा** पुं० कोदरा; कोदो कोटरी स्त्री० कोदोके दाने कोबाळ (कॉ) वि० जड़बुद्धि; गँवार कोबाळो (कॉ) स्त्री० कुदाली; कुदाल कोबाळो (कों) पुं० बड़ी कुदाल; खंसा कोदुं (काँ) न० बढ़ी या कम, नहींवत् दूष देनेवाली भैंस कोनुं(कॉ) स०किसका? (२)किसीका [प.] कोपरबरास न० ताँबे और पीतलके मेलसे बनी एक घातु कोपराधाक पुं० खोपड़ेको कसकर बनाया हुआ एक पाक (२) मार (व्यंगमें) कोपरं न० खोपड़ा; खोपरा; नारियलकी गिरी कोपरेल न० खोपरेका तेल कोपवुं अ० कि० कोपना; गुस्सा करना कोबाड वि० मुखे. कोबी(०ज) स्त्री०; न० कोबी; गोभी कोम स्त्री० क्रीम; जाति **कोमवाद** पुं० जाति-वाद

- कोमळ वि० कोमल; मुलायम (२) सुकुमार; नाजुक(३) मृदु(४)मधुर; -मनोहर (५) दयाई
- कोमी वि० क्षीमका; कौमी; जातीय
- कोयडो (कॉ) पुं० देखिये 'कोरडो' कोयलो (कॉ) पुं० कोयला (२)बुझाया हआ कोयला (३) अंगारा; अंगार
- कोर स्त्री० कोर; हाशिया; किनारा (२) किनारी; गोट (३) ओर;

बाज़ू (४) बाज़ू परका टुकड़ा; किनारा; कोना [कोरे बेसवुं ≕स्त्रीका रज-स्वला होना.]

- कोरट (कॉ) स्त्री० कोर्ट; अदालत
- कोरडुं वि॰ जो गीला नहो; जिसमें नमी न हो (२) जो न भीगा हो; उड्डी (दामा)
- कोरडो पुं० चाबुक; कोड़ा (२) दौर; धाक; सत्ता [ला.] (३) जुल्म; सस्ती आतंक;त्रास (४)पहेली; समस्या; प्रश्न
- कोरण स्त्री० बाजू (२) सिरा; चौचका किनारेका हिस्सा या सीमा; कोर; छोर (३) आंधी
- **कोरणी** स्त्री० कोरनेका औज़ार (२) कोरनेकी रीति या कारीगरी
- **कोरम न**० 'कोरम'; कार्यवाह संस्था
- **कोरम्ं** न० दालका चूरा ; खुद्दी
- कोरवर्कु वि० एक ओर टेढ़ा ढलता हुआ; तिरछा
- कोरचुं अ० कि० वेषना; छेदना(२) अंदरसे कोरना; जरा-जरा सोदना
- कोरी स्त्री० कच्छका रूपेका एक सिक्का जो क़रीबन् <del>डु</del>रुपयेका होता था
- कोदं वि० सूखा (२) रूखा (३) नया; न बरता हुआ; कोरा (कपड़ा) (४) सादा; कोरा (पत्र, काग्नज आवि) (५) बिना पकाया हुआ (आटा-पावल, सीधा आदि) । [-काखवुं= (वषमिँ) बादलोंका खुलना । -पडवुं= सुखना(२) वर्षाका रुक जाना(३)अनावृष्टि होना । कोरे कागळे मत्तुं = कोरे काग्रज पर दस्तखत करना । कोरे लूगडे=कर्लकित हुए बिना; बाआबरू; घाटा सहे बिना.] कोरंकड वि० समूचा कोरा [(कपड़ा) कोरं काकडतुं वि० बिलकुल नया; कोरा कोरं वाकोड (-र) वि० समूचा कोरा

## कोर्चमोर्च

भुजंगा

क्यारी

*IN1IN
कोदंमोदं वि॰ बिलकुल तया; बिना
बरता हुआ; तहदर्ज
कोल (कॉ) पुं० क्रौल; प्रतिज्ञा; कबूलियत
<b>कोलकरार</b> पुं∙ क्वौल-करार; इक्ररार-
नामा (२) तंथिपत्र; सुलहनामा
कोलदा(-सा)र्पु० कोलतार; अल-
कृतरा; तारकोल
कौलम न० कालम (अखबारका)
कोलसी (कॉ) स्त्री० (कोयलेका) बुरादा
(खासकर जबे हुए खानके कोयलेका)
कोलसो (कॉ) पुं० कोयला
कोलु (लु′) न० कोल्हू (ईख पेरनेका)
को्लुं(ऌं′)ून०गीदड़; सियार
कॉलेज स्त्री० कालिज
<b>गॅलेरा</b> पुं० कालरा; हैजा
कोलो (कों) पुं० कोना; क्लेरा
होधडामज (कॉ) स्त्री० संड्रान;संड्राव(२)
सढ़ाई हुई चीज
होवडा(रा)ववुं (कॉ') स०कि० सड़ाना
<b>गेवाड</b> (काँ') वि० कुल्हाड़ीकी धार
जैसी जिसकी (जीभ, वाणी) हो आकान-
वराज (२) अक्सइ; जड़बुढि;उजडु
<b>तोवावुं</b> (कॉ <sup>7</sup> )ज०कि० सड़ना;सड़ जाना
कोश (कॉश) स्त्री० रंभा; सब्दल (२)
फाल; कुसी
तोश पुं० खाना;धर या आवरण (चीर्जे
रखनेका) (२)कोश; संचित घन;
खजाना (३) शब्दकोश (४) म्यान (५)
चरसा; मोट (६) जीबित प्राणीके
गरीरकी अणु जैसी मूळ इकाई
(जिसके मांश, पेशी वरीरह बनते हैं);
(अञ्च, प्राणमय) कोश
मेक्सियो पुं० मोट चलानेवाला
(बैंकोंसे) (र)मोटसे पानी निकालने-
बाला; पुरहा; चरसी(३)एक पक्षी;
Najut

क्यारा
कोझेटो पुं० रेशमंके कीड़ेका घर;कोया
कोष्टक न० कोठा; कोष्ठक (२) तौल,
माप, अर्थ आदिके परिमाणोंकी
तालिका; सारणी
कोस पुं० कोस (दूरीकी नाप)
कोस पुं० चरसा; मोट; पुर [रोग
कोह (काँ) पुं० सड़न (२) चमड़ीका एक
कोहव(-या)ण न०, कोहवाट(-रो)
(को) पु० सड़न ; बिगाड़
कोहवुं (कॉ) अ० कि० सड़ना (२)चमड़ीमें
रोग लगना [(२) सड़ा हुआ
<b>कोहेलुं</b> वि० जिसे चमड़ीका रोग हुआ हो
कोळ पुं० घूस (बड़ा, मोटा चूहा)
कोळवुं (काँ) अ० कि० खिलना; फूलना;
पनपना; विकसित.होना (२) <mark>फैलना</mark>
कोळाबुं(कॉ) अ०कि० हर्ष या गर्वसे इत-
राना; फूला-फूला फिरना [गस्सा
कोळियो (कॉ) पुं० कौर; निवाला;
कोळी(को') स्त्री० कुम्हड़ेकी बेल;कुम्हड़ा
कोळुं (को ) न० कुम्हड़ा; कड्र (फल)
कोंटुं(कॉ०) न० धोखा; चाल;पैतरेबाखी
कोंटो (कॉ॰) पुं॰ फुनगी; अँखुआ
<b>कौत(-तु)क</b> न॰ कुत्त्रहल(२)कुत्तूहल
जगानेवाली कोई बात (३) अचंभा;
कौतुक (४) हँसी-मजाक
कौवच स्त्री०; न० केवांच; कोंच (२)
खुजली पैदा करनेवाली इसकी फली
कौवत न० कूवत; ताक्रत
कौंस पुं० लिखाईमें व्यवद्वत [],(),
चिह्नोंका जोड़ा; कोष्ठक; ' ब्रेकेट '
व्यासत स्त्री० क्रयामत
श्यारबी स्त्री० धानका छोटा खेत;क्यारी
क्यारडोपुं०वानका मेंड्यार खेत;धनकर
क्यारी स्त्री० छोटी क्यारी; याला (२)
सिंबाई करनी पड़े ऐसी जमीन(३)पानी

-

## १०६

	रण्य सतरा
भरा रहे ऐसी जमीन; क्यारी; कियारी (४) बोई-जोती जानेवाली जमीम क्यारे (क्या') अ० कब ? क्यारेक (क्या') अ० कभी; किसी समय क्यारेव (क्या') अ० जी चाहे तब (२) कभी भी क्यारी (क्यांभा खेता; घनकर (२) कभी भी क्यारी [कीमतकी अंकाई; अंदाज क्यारी [कीमतकी अंकाई; अंदाज क्यारी [कीमतकी अंकाई; अंदाज क्यारी (२) जास; घारणा; अनुमान (२) क्यां अ० कहीं; किसी जगह क्यांक अ० कहीं; केयांक काह क्यांक अ० कहीं; किसी जगह क्यांक अ० कहीं; किसी जगह क्यांक अ० कहीं; केसी जगह क्यांक अ० कहीं केसी जगह केयांक की की की जगह का की की जगह की की जगह का की की जगह की की जगह का की की जा की की की की की जा की की जगह का की की जगह का की की की की की की की जगह की की जगह का की की जगह की की की जगह की की जा की की जा की की की जगह की की जा की की क	नेवाला (पद) [व्या.] जियाविशेषण (०अव्यय) न० किया- विशेषण [वाक्य जियाविशेषण वाक्य न० कियाविशेषण कूस पुं० देखिये 'कॉस' कॉस पुं० कूस; वधस्तंम (२) ईसाइयोंका
	77

- ख
- द्ध पुं० कवर्गका कठस्थानीय दूसरा व्यंजन (२) शून्य स्थान; आकाश

**सई** पुं० झयरोग (२) खाई; खंदक

- **खल्डवज** वि०(प्रायः जर्जरित फिर भी) मंजबूत गठनवाला (२) रोबदार ; भव्य
- **सलडर्युं** अ० कि० खड़ेकना; खड़खड़ाना; बजना

ससबाट पुं० सहसंडाहट

बसहावयुं स० कि० खड्खड़ाना; खट-

- खटाना (२) धमकाना [ला.] (३) मारना (चपत)
- **खसरी** स्त्री० खखार (२) गाते समय सुरको कॅंपाना (३)सुर;आवाज (४) चिंता; खटका; चटपटी । [**–बाझवी** = गलेमें कफका चिपक जाना.]
- ससरो पुं० शोक; संताप (२)पछतावा (३) शक; अंदेशा। [-करवो = शोक करना (२)मातमपुरसीके लिए

क्लासत्	204
जाना। -काढी नालवो ≕ संदेह दूर	सवबाळबुं स० कि० खुजलाना
करना ।थवो =- पछलावा होना.]	जजानो पुं० खजाना; भंडार; धना-
आवळतुं वि॰ खौलता हुआ; अत्युष्ण	गार (२) धन; दौलत [ला.] (३)
(२) कलकल घ्वनि करते बहता हुआ	ं हथियार रखनेका खोल, म्यान या
<b>चबळ्युं</b> अ० कि० खौलना; उबलना	छेदोंवाला पट्टा (४) बंदूक्षमें गोली
(२) बहते हुए कल्कल ध्वनि करना;	भरनेका खाना; खजाना (५) चिलमर्मे
खलखलाना (३)अंजर-पंजर ढीले हो	तंबाकू रखनेका गड्ढा (६) नमक
जाना; जीर्ण-शीर्ण होना	जमानेका गड्ढा; आगर। [सजाने
सगोल (-छ)पुं०लगोल; आकाशमंडल	<b>पडवुं=</b> ऐसी दशामें आ पड़ना कि
बाच अ० कसकर; मजबूतीसे (२) भीतर	कोई न तो चिंतन करे न गिनतीमें ले
धँसने, चुभने या इससे उलटी कियाकी	(२) अपनी जगह ठीक जम आनाः
आवाज; उदा० ' खच दईने पेसी गयुं ';	
' खच दईने खेंची काढणुं '	खजूर न० खजूर (थह फल जिससे
ज्वचनावुं अ० कि० सिसमना (२)पीछे	छुहारा, खारिक बनता है)
हटना; हिचकना	स्तजूरियुं वि० खुजली पैदा करे ऐसा
- सचको पुं० सतह पर पड़ा हुआ छोटा	खजूरी स्त्री० खुजली पैदा करनेवाले
गर्ढा या कटाव; खाँचा (२) अङ्चन;	छोटे छोटे रोयें, रोओं (२) खुजली
अंतराय	<b>खजूरी</b> स्त्री० खजूरका पेड़; खजूर (२)
सबर न० खच्चर	एक मिठाई; खजूर
सवरी स्त्री० मादा खज्बर	<b>खजूर्य</b> न० खजूरकी जातिका एक पेड़
बाइ न० निकम्मा या खच्चर जैसा	जिसमेंसे ताड़ी निकलती है
घोड़ा (२) दि० बूढ़ा; कमजोर	<b>सजूरो</b> पुं० कनसजूरा
स्वदं न० जवानकी मौत	सटक सटक अ० खटाखट; सट-खट
सचवुं स० कि० अड़ना; बैठाना;	आवाज करते हुए 🧭
ठोंकना (२)खचाखच भरना; लादना	
सवालय अ० जल्दी-जल्दी चुभानेकी	
आवाज (२) खचाखच	करम; निरयकर्म
सचासनी अ० जरूर; अवश्य (२)	<b>सटकवुं</b> अ०कि० खटकना; किर-
स्त्री० भीड़; जमघट	किरीकी तरह खटकना; कसकना (२)
समीत अ० जरूर; अवश्य	अंदरसे दुःसी होना; पश्वासाप करना
सबोलन अ० धड़ाघड़ चुभाते हुए (२)	
ठसाठस; खचाखच	आवाज; खटक (२) अड़चन; अंत-
सच्च अ॰ देखिये ' खच '	राय (३) खटका; शुबहा; आशंका
<b>सण्यर न० ख</b> च्चर [खुजलाहट	
बाजवाळ स्त्री० देखिये 'संजवाळ';	<b>बटबट</b> स्त्री० सटखट(आवाज) (२)

 <u>.</u>	_	
 ٩,	П	रा

الاشادد

#c#al(1	140
अङ्चन; विष्न; बाधा(३) संझट;	Ċ,
मायापच्ची; खटखट [सटखट	٩
सटलटारो पुं० मायापच्ची; किय-किय;	्र
सटपट स्त्री • युक्तिबाजीसे काम निकाल	(
लेनेकी कोशिश; खटपट (२)योजना;	9
म्पवस्था (३) खटखट; झंझट;	- ব্য
जजारु । [ <b>मा पडवुं</b> =्समेलेमें पड़ना;	चर
सिर सपानाः]	ৰ ন
बरपटियुं वि० उकता देनेवाला; टेवा;	इ
क्षंग्नटी (२)चाल्बाज; सटपटिया	ৰ
<b>बहपटी वि० स</b> टपटिया; चाल्रवाज	- ব্য
<b>सटमधुर(-रं)</b> वि॰ सटमीठा	ਚ
सटमोठुं वि॰ सटमीठा; सटमिट्ठा	स व
बटराग पुं० छः राग; वर्षराग (२)	(
अनबन; खटराग (३) घर-गृहस्पीका	
जंजाल; मायाजाल <b>सहरागी</b> वि० झगड़ालू <b>; बखेडि़</b> या (२)	हु
जिंदरागा विश्व सगढ़ालू; बलाढ़वा (२) 🧳 दुनियादार; संसारी	নৰ
् <b>सटलो</b> पुं० कुटुंब-क्रवीला; वाल-बच्चे	रस्
(२) सरोसामान; सामग्री (३)	स्वर
मुक़दमा (४) पेचोदा – मुश्किल काम;	ভয
देवी स्रीर [फ़ायदा प <b>हुंचा</b> ना	दर
बटबर्षु स॰ कि॰ खटास चढाना (२)	दर
बटाई स्त्री॰ सट्टापन (२) बट्टी चीच;	(12)
सटाई (क़ज़िया;तकरार [ला.]	(1
सटासट ( दी) स्त्री० सटासट (२)	(1
सटातोप पुं० आढंबर; (व्यर्थका) भारी	[स
दिखावा; जरासे कामके वास्ते	पार
अनावश्यक बड़ा आयोजन	कर
सदापदी स्त्री॰ गढ़बड़ (२) खटापटी;	व०
श्रेगड़ा; अनबन	बर २
सदारों पुं॰ माल ढोनेका गाड़ा; सग्गड़	निय
(२) इसके जैसा कोई बड़ा वाहन;	स द व
मोटरलारी (३)कर्कंश आवाज करने-	े भाव
बाला – सराव वाहन [ला.](४) घर-	स्त्री
गृहस्थीकी बीचें; घरबार	

सटावर्षु स० कि० ' सटावुं ', 'साटवुं
का प्रेरणार्थक रूप
<b>सटार्ष्</b> अ० कि० सटाना; सट्टा हो जाना
(२) 'खाटदुं ' कियाका कर्मणिरूप;
फ़ायदा पहुँचना [अनवन [स्रा.]
. सदाज्ञ स्त्री० देखिये ' खटाई ' (२)
<b>सदुंबर्डु, सद्ंमडूं</b> वि० थोड़ा सट्टा
. सड वि० समासके पूर्वपदके रूपमें 'बड़ा'
इस अर्थमें आता है; उदा० ' खडदादो,
खडमोसाळ '
सड न॰ खड; घास; करवी (२) खेतमें
उगी हुई अनावस्यक घास; चिखुरन
बडक पुं० चट्टान (२)पानीमॅकी चट्टान
(३) धारदार कगार
सडकलो पुं० ढेर; एक पर एक रखी
हुई चीक्रोंकी राग्नि; गहु
सडकर्षु स० कि० एक पर एक कममें
रखना; लादना
सबको स्त्री० पौरी; डचोढ़ी (२) दो या
ज्यादा धरोंके आगेकी एक ही आग
बरवाजेवाली गली (३) इस तरहके
दरवाजे परका बालासाना
<b>सबलड</b> अ॰ खिलखिलाकर; खुलकर
(हॅसना) (२) स्त्री॰ खिलखिलाहट
(२) खटपट; दलल; बखेड़ा; पीड़ा
[स्रा.] (४) तकरार; झगड़ा
<b>बडबडतुं</b> वि॰ 'सड-सड'की आवाज
करता हुआ; खड़खड़ाता हुआ (२)
न॰ बिना पानीका नारियल (३)
बरतरफ होना [ला.] [-आपवुं =
निकाल देना; बरतरफ़ करना.]
<b>तडकर महभद्द</b> संदर्भ में भड़भड़' की । साराजने प्राप्त भारतको का (२)
थावाजके साथ; भड़मड़ाते हुए (२) स्त्री० भड़मड (३.) झोर-गक्ष
रताण महमह (३,) शारनाल

**মৰমাৰু** জ০ কি০ বৰ্বৰানা

-	59	बाह
•		

संपद्ध जाद

संस्पाराट	\$
संदेशकाट पुं० सहसराहट (२) अ०	
कहकहा लगाकर (हँसना)	
<b>तडसडियुं</b> वि० (२) न० देखिये ' <b>सड-</b>	
खडतुं' (३) किवाड़ या खिड़कीमें	
लगी काठकी पट्टियोंकी एक रचना जो	
खुलती और बन्द होती है; सिलमिली	
(४) एक खाद्य पदार्थ	
बडलल वि० कष्ट सहन कर सके ऐसा	
(२) मेहनती (३) गठीले बदनका	
(४) तुब्छ सन्दर्भ सम्बद्धाः सः स्वीकारीः सारमार्थः	
स <b>व्तूं, सव्तूस</b> न० मौक़ूफ़ी ; वरतरफ़ी सब्दुं न० लोंदा; तरल पदार्थंका जमा	
त्रब्बु नण्णवा, तरल पदायका जना हुआ थक्का; औठी	
डुना नाला नाउ <b>सरवच्छ</b> ं वि० खुरदरा	
तडनुं न॰ देखिये 'खडदुं'	
तरब्च(-चुं) न० खरब्जा	
तडभड स्त्री० खड़बड़ (आवाज) (२)	
गड़बड़; शोर; ऊधम (३) क्वांबिया;	
कहा-सुनी (४) दखल	
<b>बस्मडव् अ०</b> कि० खड्बड़ाना (२)	
कहा-सुनी होना [हल्ला-गुल्ला	
बिभवाट पुं० खड़बड़ (२) शोर;	
<b>गडमा (-मां)कडी स्त्री० धासका एक</b>	
कीट; 'ग्रासहोपर'	
राइमोसाळ न० माँ या बापका ननिहाल	
बडवुं स०कि० लेप करना; पोतना (२)	

- दासवाला करना था मैला करना (३) धाग्र लगाना; तोहमत्त लगाना (४) वसीटना; बुरे काममें शामिल करना सडब् अ० कि० अड़ना; अटकना; रकना; थम जाना (२) हाथ-पैर आदि अवयवींका उखड़ जाना; उखड़ना
- (३)झगड़ेमें उलझना; गिर जाना सबा स्त्री॰ इन्द्रधनुष् (२) खड़ाऊँ **सडाई** स्त्री० शठता; कामचोरी

बहाउ स्त्री० खड़ाकें; पादुका

स्रवियाट पुं० तालावमें उतरनेका विना

- सीढ़ियोंका पक्का ढालू घाट; गऊघाट
- सवियं न० चीता; बाघ (२) ओसर; बिना का.ही हुई जवान भैंस
- सबिपुं न० सूला; अवर्षण (२) सूखनेसे वरारें पड़ी हुई घरती (३) चौनासेमें कई दिन बारिश न होकर सख्त धुप पड़े यह समय
- स्तरियो पूं० दवात; दावात (२) दीपकके काम आनेवाली डिबिया: ढिबरी (३) बहुत खानोंवाली थैली; कंघेके दोनों ओर लटकाया जाय ऐसा थैलः(४) बड़ा बटुआ । [**सहिया भरवा,** लर्डिया पोटलां बांघवां = बोरिया-बिस्तर समेटना या उठाना.]
- स्रडियो सार पुं० सुहागा; एक झार सविंग अ० ऐसी आवाज करके
- सबी स्त्री॰ खड़ी; खड़िया मिट्टी (२) सड़क पर डाले जानेवाले पत्थरके छोटे टुकड़े; कंकड़; गिट्टी
- सदी फोज स्त्री० स्थायी लशकर
- **लडी माटी** स्त्री० खड़िया मिट्टी; खड़ी **सडी साकर स्त्री० एक** प्रकारकी मिसरी
- साबुंवि० सड़ा (२) तत्पर; तैयार। [-करवुं=पेश करना; सामने रखना; सामने हाजिर करना । **–वव्ं=**सामने उपस्थित होना; खड़ा होना.]
- सबै जोक अब्सबके सामने ; खुले आम बटे जोटे अ० सड़े-सड़े; तुरत; सड़ी
- सवारी
- लण स्त्री० सुजली; मुल
- **समसम** अ० 'सन-सन' आवाजके साथ. **মলৰাগৰ্** স০কি০ অনকনা;মনজনানা

**सनसनाट** पुं० खनकार; संकार

/ir Jain Aradnana Kendra	www.kobatirtn.org	Acharya Shri Kallassagarsuri Gy
লস্মলিয়া	220	सपरडी
जणस्णिमां न०व०व० सन-सन	লাবার আলাৰ	गी स्त्री० खतरानी
करनेवाले छोटे छोटे घुंघरू र		वि॰ (२) पुं॰ देखिये 'खतरी '
जैसे पतरे (रथ आदिके)		र अ० खदखद; खदबद
<b>सम</b> सोज(-त,-तर,-द) स्त्री०	बारीक सावस्व	रवुं अ०कि० खदखदाना (२)
जौच-पड़ताल (२)खुचड़; हर		खद ' आवाज करते हुए उबल्ता
निंबा [ला.]		रं स॰ कि॰ खूब दौड़ाना (२)
<b>सणसोबियुं</b> वि० खुचड़ी; नुक	ताचीं <sub>भटा</sub>	काना; चक्कर कटवाना (३)
<b>समज</b> स्त्री० खाज; चुल; सुर		र परिश्रम कराना; कसना
<b>खणवुं</b> स० कि० खरोंचना (२)		वि० ठस और मोटा; दबीज़; गफ़
खोदना(३)खुजलाना (४) चुटर्क		ापण वत्त आरम्माटा ; दबाज ; गफ़ ह अ० किलबिलाते हुए
सणस स्त्री० शक; शुबहा; अंदे		र जण्डाकाला हुए ब्रुं अ० कि० किलबिलाना
लगडाँट; कीना (३) तेरेही;		
पाखाने-पेशाबकी हाजत (५)		र् स॰ कि॰ देखिये 'खदडवूं' बि॰ देखिये 'खदडूं'
[-यवी = हाजत होना । खणसे		ावरुदालय खदहु मंगः जिन् चल्ली क्लि
=जिद पर आना; अड़ना.]		वुं अ० कि० लकड़ी आदिकी
बणसाब अ० कि० शुबहा होन	्यतह (२) (२)	का (दीमक आदिसे) खाया जाना ) खुरदरा होना
डाह करना (३) हाजत होना		न स्त्री० चसका; लत (२)
सत न॰ खत; लेखपत्र; दस्त	•	े (३) बारीक जाँच; खुचड़
वतपत्तर, सतपत्र न० दस्तावे	· ·	॰ उपयोग; व्यवहार (२) सहत्त्व;
इससे संबद्ध कागुजात		गिता; जरूरत(३)कमी; तंगी
बतम अ०खतम; खत्म; सम	प्त ·(४)	। खपत; बिकी (५) प्रयत्न ।
<b>बतरी</b> वि० क्षत्रियकी एक ज	_ ``	रवर्षु जप, जिमा (२) प्रयत्न । स्वर्षु = उपयोगी होना; काम
(आदमी) (२) कपड़ा बुननेक		(२) रण-मैदानमें मारा जाना।
करनेवाली एक जातिका (३)		गवो≕र्मांग, खपत बढ़ना ।-पडवो
जातिका आदमी; खत्री		
त्रत्वं न० दोष; छिद्र		रूरत खड़ी होना ।स्नागवुं ≕काम ⊡] [यघावश्यक
ततरो पुं० खतरा; भय (२) अ		
धोखा; सटका		म्गुंवि० जरूरतके मुताबिक्षः; स्त्री० खपतः; बिकी
ततवणी स्त्री • संतियोंनी; स्त		रगण् अपत, खका वि० काममें आये ऐसा; उपयोगी
<b>ततवव्</b> स०कि० खतियांना;	1 A	विक जाये ऐसा; खपता (३)
चढाना	चिक रू	

- चढ़ाना [्चूक स्रता (-त्ता) स्त्री० नुकसान(२)खता; सत्तो पुं० ठोकर (२) घप्पा; घौछ। [सत्ता सावा≕घप्पया ठोकर लगना
  - (२) ग़ल्ती करके नुक़सान उठाना |
- जो सान-पानमें लिया जाये; व्यव-हार्य; उपयोगमें आ सके ऐसा
- खपनुं वि॰ उपयोगी; कार-आमद सपरबी स्त्री॰ छोटा टहर; टही(२)

उगते पौधोंको खा जानेवाला कीट

सपरहो १	११ सम्मा
सपरबो पुं० वर्सिकी फट्टियोंका टट्टा;टट्टर सपयुं अ० कि० खपना; विकना (२) नाश होना; खपना; खर्च होना (२) गिनती में होना; कुछ महत्त्वका होना (४) व्यवहारमें चले ऐसा होना (५) काममें आना; लगना; दरकार होना सपाट स्त्री० खपची; कमठी; खपटी सपादियुं न० खपाच; फट्ठा सपाद स्त्री० खपची; कमठी; खपदी सपादियुं न० खपाच; फट्ठा सपाद (-व) वुं अ० कि० 'खपतुं' कियाका प्रेरणार्थक रूप सपूसबुं अ० कि० तेंदेहीसे किसी काममें जुट जाना; लगा रहना; दत्तचित्त होना (२) स० कि० पीटना; ठोंकना सपेडी स्त्री० देखिये 'खपरडी' (२) (लकड़ो आदिका) छिलका; पपड़ा(३) नाकका मैल; नकटी; गुजी सपेडो प्?० टट्टर (२) पाइटमें काम आनेवाला टट्टर; पाड़ [(रोटीकी) सपोटी स्त्री० खरंड; खुट्ठी सपोटी स्त्री० खबरदारी; सावधानी खबड वि० गाढ़ा (दूध) सवडवारी स्त्री० खबरदारी; सावधानी खबड पि० गढा (२ध) जानकारी; पता; ज्ञान; होश (४) निगरानी; देख-माल । [-करवी= इत्तला देना; जताना(२)टोह लेना; सोज-खवर लेना।एखवी= देखमाल रखना; खबर लेना। -लेवी = खबूर	समरअंतर पुं०ब०व० खबर; समाचार (२) शरीरका हाल पूछना सबरदार वि० खबरदार; होशियार (२) सावघान; चौकन्ना (३) अ० 'सतर्क रहो; होशियार हो जाओ; खयाल रखो ' इस मतलबका उद्गार सबरपत्री पुं० संवाददाता सभळाद् पुं० कि० खलबलाना (२) हलचल मचना; हिल उठना (३)बेचैन होना; घबड़ाना; झुक्ध होना [ला.] सभळाट पुं० खलबलाहट; खलबली सभो पुं० कंघा। [-चबावचो = इनकार करना; आनाकानी करना ।ठोकचो, याबबचो = धन्यवाद देना; तारीफ करना । -वेबो = उठानेमें मदद करना; कंघा देना ] [मनमें हकना समय (-बा)षुं अ० कि० झिझकना; समय न० कढूकका पर कसी हुई चीज (२) भापमें पकाई हुई दाल और चाव- लके दरदरे आटेकी एक साद्य चीज समगढोकळां न०व०व० देखिये 'समण' समणवुं स० कि० कडूकका पर कसी हुई चीज (२) भापमें पर्काई हुई दाल और चाव- लके दरदरे आटेकी एक साद्य चीज समयां स्त्री० कटूकका समयं; योग्य (३) समृद; घनी समयुं स० कि० कडूकका पर कसना समयां स्त्री० कटूकका समतुं वि० जो सहन कर सके (२) समयं; योग्य (३) समृद; घनी समयुं स० कि० झेलना; सहना; सरना [जैन](३)अ० कि० बमना; ठहरना समा स्त्री० कमा (२) धीरज; सक्न (३) अ० देखिये 'खम्मा' समीर न० खमीर (२) सटासयुक्त उभार; उठान (३) जोश; ताकत समीस न० कमीज; कमीस समा अ० ' क्षेम-कुशल.रहो '; 'दुःक्
रखना; खबर लना। —लवा = खबूर लेना; पता लगम्ना (२) डाँढना, फटकारना; खबर लेना.]	न हो'; 'लुडा खेर करे'; 'जिन्द बाद 'ऐसा सूचित करनेवाला उद्गा

-	-

	5		,
	4	Ŷ	1

(२) क्रिकेटके खेलमें खड़ी गड़ी हुई	साराषुं अ० कि० सिसकना; सरकना
तीन सूंटियोंमेंसे एक; 'स्टंप'	(२) रपटना; फिस्रलना (३) [ला.]
सलास यि० खलास; समाप्त	अपने क्रौल, राय, मान्यता, कयन
<b>जलास (-सी)</b> पुं० खलासी; जहाजरान	आदिमें से निकल जाना; निकलना
क्सली स्त्री॰ खलियान; कलिहान(२)	<b>खसियाण्ं</b> वि० खिसियाना
दलहनको दलकर दाल बनानेका स्थान	ससियुं(⊶येरू) वि० सौरा; सौरा
<b>सलीतो पुं॰ ख</b> रीता; बड़ा लिफ़ाफ़ा	रोगवाला
सलेची स्त्री० छोटा खलीता; (खाने-	<b>सन्नो</b> स्त्री • सन्ती ; बचिया करना
दार) थैली	खसूस(०न) ब० खुसूस; अवश्व(२)
सलेडी स्त्री० गिलहरी	खासकर
<b>कलेल</b> स्त्री०; न० खलल	क्तसेबवुं स० कि० खिसकाना; हटाना
<b>सवडा(-रा)ववुं</b> स० कि० सिलाना	<b>सरसी</b> स्त्री० देखिये ' खसी '
<b>लवाडवुं</b> स॰ कि॰ खिलाना	सळ वि० खरु; शट
<b>स्तवाव्</b> अ० कि० खाथा जाना (२)	सळसळ ४० कलकल ध्वतिके साथ (२)
बंग लगना या सड़ना; क्षीण होना	स्त्री०; न० कलकल (मधुर घ्वनि)
<b>सवास</b> वि० खवासकी जातिका (२)	खळखळत् वि॰ देखिये 'खखळतुं'
पूं० खवास (३) खास खिदमतगार;	<b>खळखळवुं २</b> ० फ्रि॰ खलबलाना
हुजूरी (४)चीजकी तासीर; पदार्थका	सळसळाट अ० कलकल करते हुए;
गुण (५) स्वभाव; मिखाज	विना रुके बहते हुए (२) पु॰ खल्झल
श्ववासण (–णी), खवाझी स्त्री०लौडी;	खळभळ स्त्री० खलबली(२)वेचैनी
दासी (२) <b>स</b> वासिन; खबासकी स्त्री	सळमळवुं अ० कि० देखिये 'समळवुं' ।
<b>श्ववीस</b> पुं॰ खबीस (२) राक्षस	[सल्लभली कठवुं = क्षोभ होना (२)
<b>सन्नियाणुं</b> वि॰ सिसियाना; रूज्जिस	सिहर उठना; घवडा जाना.]
बस स्त्री॰ खुजली; खारिश (रोग)	सळभळाट पू॰ घबडाहट; बेचैनी (२)
सस स्त्री॰ सस (जड़); साम	कोलाहल; सलबली
<b>ससकवुं</b> अ०, त्रि० देखिये 'सीसकवुं'	<b>লত্রৰু</b> अ০ ক্ষি০ হকল।
बसको पु॰ देखिये 'खचको '	<b>सळावाड</b> स्त्री० खलिहानकी जगह
स्रससस स्त्री० पोस्तेका दावा; खस-	बळी स्त्री॰ देखिये ' खली '
् सस; खशस्त्राश (२) पोस्ता	स्नळ्रुं न० सलिहान
<b>बसर</b> स्त्री० खरोंच; लीक	स्तंस वि॰ संस; खाली; लुक्स (२)
<b>बसरको</b> पुं० लीक; सतह परका छोटा	खोखला; साररहित (३) निर्धन
गड्ढा (२) खरोंच	<b>संसाळव्ं</b> स०कि० खॅंगालना (२)पानीकी
स्रसली स्त्री० सूखी घास; खंड; जारा	कुल्ली करके (मुँह) साफ़ करना
<b>ससलुं न० सूखी</b> धास या तिनका; खर	<b>संकेरवूं</b> स० कि० झाड़ना (२) फट-
<b>ब्रसल्डुं</b> वि० खौरा; स्नारिस्ती	कारना; धमकाना; पीटना

भंगोरवुं	* **	बाकी मनो
बंबोरबं स॰ कि॰ झाड़ना (आम) (२)	)	संती ( • सं) विकतदेह
बिखेर देना (३) नाखूनसे कुरेदना		खंषाई स्त्री० धूर्तता
संग पूं० गडु; डेर (२) डाह; बै	र	संख्रं वि० भूतें; दगाबाज
(३) बदला (४) तंदेही		खंपाली (-ळी) स्त्री॰ पाँचा
संगाळवुं स० कि० देखिये ' खंखाळवुं	3	खाई (ला') स्त्री० खंदक; गहरा गढ्डा
संचायुं अ० कि० झिझकना; रुकन	T	(२) खाई (३) वर्षाका पानी मिकालनेके
संबरी स्त्री० संजरी; संजड़ी; उपल		लिए गाँवके पास लोदी हुई लाई
संजवाळ स्त्री० खुजली; खाज (रोग	)	साईसपूसीने अ० देखिये 'खाईपीने'
(२) चुल; सुरसुरी		साईपीने अ० दलपित्त होकर; सर्देहीसै;
संजवाळव् स॰ कि॰ खुजलाना		पूरी लगन और एकाग्रसाके साथ
संद पुं० खंड; भाग; टुनड़ा (२) दल	;	साईबदेखुं वि० पूरा चालाक;पक्का वाव
समूह (३) प्रकरण (४) चोरुखंड (५		साउघवं वि॰ खाऊ;पेटू(२)घूससोर
मकानका एक हिस्सा; कमरा (६		साएत स्त्री० रूवाहिश
पृच्चीका महाद्वीप; खंड (७) वि	•	साक स्त्री॰ खाक; घूल (२) मारी
विभागवाला; विभक्त; संडित (८		हुई घातु; कुश्ता (३) गांश; तवाही
छोटा;संक्षिप्त [छंदोंवाला काव		साकटी स्त्री॰, (-र्टुं) स्॰ इटिकोरा;
चंडकाव्य न० लंडकाव्य (२) अने		अँबिया
संडणी स्त्री॰ अधीन राज्यकी और		साकी वि० साकवाला; भरम मरुने-
प्रभु राज्यको दिया जानेवाला <b>धन</b>		वाला (२) खाकके रंगका; मटि-
खिराज	1	याला; खाकी (३) गाढ़े पीले रंगका (४) लेखिल जिस्
संडव् स॰ कि॰ संहित करना; तोड़न	ग	(४) ऐहिंक [ला.] बाब स्त्री० देखिये 'खाक'
(२) कुछ कम देकर हिसाब बेबा		सास (पार्थ्याख्य खान) सासर पुं० पलाश; टेसू (पेड़)
करना (३) थोकके दाम तय कर		सासर पु० अरहरकी सूसी पत्तियाँ
सस्तेमें खरीदना		सासर पुण्जरहरना पूजा नारवा सासरी स्त्री० छोटी सूब सिंकी रोटी
संबासंबी स्त्री० भीड़-भाड़; रेल-पे	ਲ	(२) रोटी (३) तंबाकूकी सूखी पत्तियाँ
संदाववुं अ० कि० कुटवाना		सासरो पुं० पलाश वृक्ष
संहाव अ० कि० कुटना; कूटा जा	ना	सासरो पुं॰ करारी, खूब सिंकी रोटी
(२) चाटेमें रहना (३) पीड़ित होना		सासावीसी वि० छिन्न-मिन्न (२) दुःसी;
भोड़में हैरान होना	•	परेशान (३) स्त्री० पांमाली; बबंदी
संहियुं वि॰ खिराज देनेवाला(२) खंडि	त	साली वि॰ देसिये ' खाकी '(२) संस;
संबियेर न० खेंडहर		निर्धन (३) न॰ खाकी (कपड़ा)
संहेर न॰ देखिये ' खंडियेर'; खंडर		खासी बंगाली (ळी) वि० काली झाव
संत स्त्री० तनदिही; सावधानीके सा		मस्त होकर घूमनेवाला; फाकड़ जैसा
काममें लगे रहनेका गुण (२) सा		त्तासी बाबो पुं॰ मस्म मलनेवाला सांघु;
भानी; होशियारी		सासा मामा गुण परण पठनपाला आयू। खाकी
		· · ·

	ररम् जल्
बाज न॰ खानेकी चीब; खाब (२)	<b>भाग</b> न॰ सांनी या उवाला हुवा वाना
साजा (मिठाई)	(मवेशीके लिए)
साम स्ती॰ साज; खुजली (रोग)	<b>बाल (ण')</b> स्त्री॰ लान; खदान (२)
सावली स्वी० छोटा खाजा	छिपा खजाना (३) जिसमेंसे बाहर
जाननं न॰ जाजा (२) कुँइरा; चक्कर	न निकला जाय ऐसा गहरा गढ्ढा;
बाजुं न॰ खाजा (मिठाई) [साट	उदा० 'नरकनी खाण' (४) असूट
साद स्त्री० हिंडोलेके काम आनेवाली	भंडार (५) बनाज भरनेके लिए
साडकी पुं० कसाई; बूचड	बनाया हुभा तहखाना; सौँ (६)उत्पत्ति-
संस्टक्रावश नि० खाटसे लगा हुआ;	स्थान (७) धारदार चीजकी धारमें
शम्यागत (प्रसूति या वीमारीसे)	पड़ा हुआ गड्ढा; दाँता
बाटली स्त्री० खटोछा; सहिया (२)	<b>लाणियो पुं० खानका</b> मजदूर
्मरयी; खाद	<b>काणुं</b> न० भोज; दावत(२)वनभोज <b>न</b>
बाटलो पुं० खाट; चारपाई (२)	स्नातमो पुं० खातमा; अंत (२) मृत्यु
का] बीमारी (३) प्रसुति । [ साटले	<b>सातर</b> स्त्री० खासिर-सवाजा; आव-
ॅ <b>बेडवूं</b> ≕झाट पर पहना; बीमार होना ।	भगत (२) तरफ़दारी (३) अ०
	खातिर; लिए; वास्ते
बीमार होना। –भोगववो = बीमारी	क्सातर न० खाद (२) सेंघ(३) चोरी
भोगना। – होबो = धरमें बीमारी होना	जातरपाडु पुं० सेंथिया; चोर
(२) प्रसूति होना.] [कमाना	खातरपूँचो पुं० खादमें काम आने लायक
साटन् स०कि० प्राप्ति होना; सटना;	कचरा ; घास-पात, गोबर, कूड़ा आदि
साहियुं न० लही, रसादार तरकारी	कातरवरवाश(-स) स्त्री० खातिरदारी
(२) कच्चे आमका पना	<b>क्वातरियूं न</b> ० सेंध लगानेका एक औषार
सादीमीठी स्त्री॰ सानेकी खट-मिट्ठी	<b>वातरी</b> स्त्री० भरोसा; सातिरजमा
टिकिया या गोली; 'पिपर्रीमट'	(२) जिसमें कोई संशय न हो;
बाहुं वि॰ लट्टा (२) रंजीबा;नाराज	निश्चय (३) सबूत; प्रमाण
काटुं, (०चड), (०चरड), (०चूना	<b>सातरीवार</b> वि० विश्वसनीय; भरोसेका
सेषुं), (०चंड), (०स्टर, -स) वि०	सातरीपूर्वक, सातरीबंध अ० यकीनन्;
सट्टामूक; अति सट्टा	विश्वासपूर्वक
सहार्था, जारा कहा साह स्त्री० संदक; गड्ढा	जाताबंधी स्त्री० जमीन महसूलका एक
साडाजाजरू त० गढ्ढे पर रखनेका	बंदोबस्त; रैयतवारी [निकलना
	खाताबाकी स्त्री० खातेमें बाकी(भावना)
पासाना; उठौंका पासाना जाने की करणाना पारी नहीं जनी	सातावही स्त्री० साता-बही; सतीनी
साडी स्त्री० ज्यारका पानी नदीमें जहाँ	सातां पीतां अ० क० निर्वाहका खर्च
तक जाय वहाँ तकका नदीका हिस्सा	निकलते हुए
(२) खाड़ी (३) गठर; मोरी	सातुं न० खाता; मद (२) ऋणपत्र;
साहो पुं० सङ्ढा; गड्ढा (२) घाटा	तमस्सुक (३) विषय; प्रकरण(४)

_		-*
٩.	q٩	Ŧ.
	•	•

बारेड

ચાલુવગુ	<u>((a</u>
दफ़्तर; महक़मा । <b>[-कोक़र्मु</b> = काम-	साप स्त्री० दर्पण(२)अवरककी पत्ती
काजका नया विभाग शुरू करना (२)	<b>सापरियुं</b> न० सपरिया; आंसकी एक
(बैंकमें या शराफ़के यहाँ) नया काता	औषर्षि (२) बालकको दी जानेवाकी
सोलना, ढालना । –जूकते करवुं,	एक औषध
<b>जूनवी देवुं =</b> ऋण चुका देना; कर्ज	साबोचियुं न० ठवरा
अदाकरना। – मांडी वाळवं == बट्टे	<b>कामणुं</b> न० (प <b>ड़ीं</b> ची आदिमें) वरतन
<b>वाते लिखना । –सरमर करषुं</b> ≕जमा	रखनेके लिए बनायी हुई बैठक (२)
और उघार दोनोंको बराबर करना.]	(पेड़का) थाला; आलबाल (३) झद;
सातुंपत्रुं न॰ लेन-देन आसूदा	आकार (४)वि० नाटा; छोटे क्रदका
बात पीत वि॰ खाने-पीनेसे सुखी;	बामी स्त्री० सामी; न्यूनता; कसर
बाले अ० किसी स्थल पर; -में; उदा०	(२) घाटा (३) कुसूर; भूल; दौष
'मुंबई खाते रमायेकी मेच'	सामुसा अ० खामखाह; स्वाहमस्याह
<b>जातेंदार</b> पुं० खसरे या किसी लेन-	(२) खासकर (३) जानवृशकर
दारकी बहीमें जिसका खाता हो वह	सामोश अब 'सन करो, दक जाओ,
व्यक्ति; असामी	शान्त हो जाओ, खामोश ' इस व <b>र्थका</b>
साबी स्त्री० खादी; खद्दर	उद्गार
<b>बादीमंडार</b> पुं० खादीभंडार	बामोश (-शी) स्त्री० सत्र; भीरज
साम (भ,) स्ती॰ टोटा; भाटा (२)	सार पुं० खार; कांटा (२) वेर (३)
दोष; कमी (हीरा-नोती आदिमें)	ईर्ष्या; बाह
कावरो पुं० गहरा गर्द्धा (२) नुक़सान	सार पुं० खार; कार
क्षाबालचं, लाधाबाई, लामाकोराकी	सारपाट पुं०; न० जिसमेंसे नमक बनता
स्त्री॰ खुराकी	हो ऐसी भूमि; क्षारभूमि
साथेल पीचेल दि० खाने-पीनेसे सुसी; भारत राज (२) जार एक	कारको पु॰ खलासी; बहाखरान(२)
आसूदा-हाल (२) हुष्ट-पुष्ट	फेरौरी करनेवाला; छप्परवंद (३)
<b>ज्ञानगी</b> वि॰ खानगी; निजी (२) गुप्त	क्षारयुक्त गुड़
ज्ञामवान वि० खानदानी; कुलीम (२) अतिष्ठित (३) न० खानदान; कुटुंब	<b>काराट</b> पुं० कुछ-कुछ खारापन
<b>सानदानी</b> स्त्री॰ कुलीनता (२)सञ्जनता	बाराज स्त्री॰ देखिये 'खाराट' (२)
सामपान २० सान-पान (२) उसकी बीज	अनबन [ला.] [साग; अमळोनी
सानसान प्रथानसाम सानसाना पुं० सानसाम	सारी स्त्री॰ ऊसर; कल्लर(२) नोनिया
	बारीलुं वि॰ देवी; ईर्ब्यालु
ज्ञानाजराब वि० सत्यानासी	सारं वि० खारा; नमकीन (२) नमक
कानावराबी स्त्री॰ सत्यानास; तवाही	चढ़ाया हुआ (३) देवी; ईष्यलिु
<b>सानुं</b> न० खाना; घरका विभाग; कमरा	बढ़ाया हुआ (२) प्रया, इण्यालु सार्व अग्गर, सार्व ऊस, सार्व रव वि०
(२) भंडार; निधि (३) मेख, संदूक,	सार जग्गर, सार कत, सार रग 14.0 अति सारा
वालमारी वादिका दिसाय; चाना (४) कोरक: जाना	
(४) कोष्ठक; खाना	कारेक स्त्री० कारिक; झुहारा

	११८ आसिन्स
कारेकी वि० सारिक जैसा मा इसके	उदा॰ 'आ मकाने सो रूपिया खाचा;
करका 👘 सिज्जी लार	'आ काम बहु दहाडा खारो' (५)
<b>वारो पुं</b> ०ःपापड़में डालनेका खार;	हड़पना (६) 'दम, छोंक, बगासुं,
बारोपाट पुं० देखिये 'खारपाट '(२)	ज्यरस' आदिके साथ प्रयुक्त होता है
बच्चोंका एक खोल [छाल	(७) न० पकवान (८) सानेकी
बाल (•बी) स्त्रीई बाल; चमढ़ा (२)	चीज; साजा; संबल; उदा० साबुं
सालपो पुरु चमार	बंधाववु'। (साईने सोदवुं = बेवफ़ा
<b>सालवर्षु</b> स० कि० खाली करना	या नमकहराम होना । खाईपी उत्तरवु
सालना वि० अपनी पूरी मालिनीका;	⇒संसारके सुखोपभोग करके निवृत्त
स्वकीय (२) खालिसा; सरकारी ।	होना । साई वगाडवुं = वेवफ़ा होना
[-करबुं = खाळसा करना ।- बबुं =	(२) खारो-पीते भी दुर्बरु रहना।
बग्स होना.]	जातांपोतां ≕संसारके सुख भोगते हुए
बालो वि॰ खाली; रीता (२) निर्धन;	(२) खर्चेंके उपरांत। खात् घन =
खाली हाथ (२) स्त्री० झुनझुनी;	जिसके पीछे बार-बार खर्च करना
सनसनी (४)साली ताल (संगीतमें)	पड़े ऐसी जायदाद । <b>खातुंपीतुं = सामा</b> -
(५) अ० बेकार; व्ययं (६) केवल;	न्यतः सुखीः; खुश्रहाल ]
लाली । [⊶करवं = अंदरकी कीज	लाज्ञ स्त्री० खानेका जोर (२) खानेकी
निकाल लेमा (२) मकाम छोड़ देना	चीजोंको राशि
(३) निर्धन बनाना ।वयुं = मकान	खास वि० खास; अपना; निजका(२)
खाली पड़ना (२) तंगदस्त हो जामा;	बिधिष्ट; असाधारण (३) असल;
पैसेको कमी होता.] [सालो	खरा (४) अमीराना; खास
बालीबम, बालीखंब वि॰ बिलकुल	ज्ञासडियुं वि० जूते जैसा(२)घटिया;
जालीपीली ज॰ बिना कारण; खाला	कठ (केला)
कार्लु नव तुरी (जुलाहेका बानेका	बासबुं न० जूता (२) फटकार [ला.]।
औजार) (२) खलिहानका माज	[ सासदां सार्वा = ठोकरें खाना;
ढकनेकी पास (३) परती रखा हुआ खेत (४) क्यारी; गाटा; उदा०	कड़ी फटकार पड़ना । सासडां मारवां
	≈सख्त उलहना देना (२) जूतीकी
'तमाकुनुं खोछु'	नोक पर मारना; कुछ न समझना।
सावटी स्त्री० साहूकार या जमीदारके	फाटी जबुं= क्या गया? क्या
पाससे मेंगनी पर छिया गया अनाज (२) खुराकी; गुबारा	बिगड़ा ? ऐसे अर्थमें । सासदे मार्युं =
बार्बु स॰ कि॰ खाना (२) सहना;	'धरा रहे; जूसीकी नोक पर; कुछ परथाह नहीं' ऐसे अर्थमें.]
उदा॰ 'मरि खाबो' (३) सेथम करना;	जासदार पुं० सेवक; हुजूरी (२) साईस
लगने देना; उदा० 'हवा सावी' (४)	सासियल स्त्री० खासियत ; प्रकृति (२)
के पीछे खब होना; में लपना;	बिशिष्ट गुण (३) आदत
e no or grup or other	1.1.1. 3.4 ( 4 ) MIAU

वार्ष् '

- कासुं वि० खासा; मजेदार (२) अ० वाह; झाबाश (३) मला; खुब; बराबर। [-वीवा जेबुं= विलकुल स्पष्ट.
- बाळ पुं०; स्त्री०मोरी;नाबदान(२) नाली लगी हुई छोटी कूँड़ी
- खाळक्वो पुं० मोरीके पानीका गड्ढा या कुर्था; धहवच्चा (२) पाखानेके लिए बनाया हुआ कुआ; संडास
- साळकूंडी स्त्री० मैंसे पानीकी कूँड़ी साळव्रं स० कि० थामना; रोकना
- बांबत (--व) (०) स्त्री० भारी कुतूहल (२) घ्यानपूर्णं मनोयोग; बड़ी लगन; तनदिही (३) नापसंदगी; नफ़रत
- सांच (०) स्त्री० सतह परका छोटा गब्ढा; शौता; कटाव; खाँचा (२) तंगी; संकीर्णता (३) घाटा; टोटा (¥) धक्का; झटका ('\) जमा-उभारका हिसाब न मिलना
- कांचजूंच (०) स्ती० छोटी-मोटी त्रुटि या न्यूनता; कोर-कसर; नुकता (२) बारीकी; गहराई
- साचो (०) पुं० (एकसी घार, सतह या लीकमें होनेवाला) मोड़; कटाव या दाँता (२) संकरा रास्ता; कूचा (३) नुक्कड़; निकल्ता हुआ कोना(४) विरोघ; हरज। [-काढवो = बाधा डालना या खड़ी करना (२) नुक्कड या **भुमाद बनाना । --पक्ष्यो =**हरज होना (२)विघ्न आना। --राज्यवो=एतराज्र होना या शुबहा रखना (२) नुक्कड़ बने ऐसा करना.]
- सांबर्ष(०) न० कोना; वह स्यान जहाँ जल्दी किसीकी निगाह न जाय(२) कुटनीका घर (३) अनाज जमा करनेका

- The second
1000

- स्यान; कुठला-कोठारि। चित्रिये मांचर्षु = कोनेमें डाल रखना; परवाह न करना.] वत स्राट(-दु)(०) वि० काइयां; चाई; क्षांड(०) स्त्री० चीनी ; शक्कर । [-कावी = जरूरतसे बयादा अच्छा या खुश होने लायक मान बैठना । -पीरसबी = मीठा मीठा बोलकर खुशामद करना.] सांडनियूं (०) न० मूसल सांडणियो (०) पुं० सोखली; ऊखरु। [ सांडणियामां घालीमें सांडवुं=अपने वंशमें करके जुल्म करना.] सांहणी(०) स्त्री० छोटी ओंसली ; हायन **सांडवुं**(०) स**०** कि० कूटना सांडियुं वि० खौड़ा; विकलांग (२)न० खंडित सींगोंवाला ढोर (२)भैंस या उत्तका बच्चा एक तोल सांडी (०) स्त्री० बीस (कच्चे) मनका सांबुं(०) वि० खौड़ा; टूटा हुआ; खंडित सांबु(०) न० खाँड़ा; दोधारी तलवार (२) दुलहेके बदले उसका खाँड़ा साथमें लेकर गयी बरात [ला.] **सांग** (०) स्त्री० कंघा (२) पशुकी यर-दन (३) जूआ लेनेवाले पशुकी गरदन पर जूएकी रगड़से होनेवाला घट्टा। [--आववी=जुआ लेनेवाले पशुकी गर-दन परकी चमड़ीमें घाव हो जाना; कंधा लगना **। –पडवी** ≕पशुकी गरदन पर धट्ठा हो जाना.] खांषियों (०) पुं० अरेथी ढोनेवाला; कंघा देनेवाला (२) मेददगार; साथी (३)खुशामदी; पिंट्ठू **सार्च्** (०) न० क्रिस्त; भाग सांपन(०) स्त्री० खामी; दोष; ऐब;
  - नुकता (२) कफ़न

ulug	१२० बीमनुं
सांपषुं(•) स॰ फि॰ छांगना; छांटना (२) थोड़ा थोड़ा खोदना; (ढेरमें से) फावड़ेसे इघर-उघर करना सांपो (०) पुं० (पेड़-पोषेकी) खुत्थी; खूंटी (२) टूटी हुई डालका तनेसे लगा हुवा ठुंठ (३) किसी भी सतह पर रही हुई खूंटी या खुत्थी (४) खामी; दोष (५) गँवार; उजहु [ला.] सांभी (०) स्त्री० स्मुतिस्तंम; स्मारक सांभी (०) पुं० गांवकी हद बतानेवाला	१२० सीमने सीमा (-मो) सीम अ० खपाखप; ठसाठस भीख स्त्री० सीज; चिढ़; गुस्सा (२) थिढ़ानेके लिए दिया हुआ नाम। [काधची == एक परका गुस्सा दूसरे पर उतारना। -पधवी == चिढ़ानेके लिए नाम धरना.] सीजवा पुं० शमी (वृक्ष) सीजवायुं अ० कि० सीजना; पिढ़ना सीजवायुं अ० कि० सीजना; पिढ़ना सीजवायुं अ० कि० सीझना; झुँसलाना
पत्पर (२) स्मृतिस्संभ बांसवुं(०) अ० कि० खाँसना बांसवुं(०) स्त्री० खाँसी विषवड़ोंके योग्य विजवमी स्त्री० खिजाना; छेड़छाड़ विजवमी स्त्री० खिजाना; छेड़छाड़ विजवाट पुं० खीज; गुस्सा; कुढ़न विजवाट पुं० खीज; गुस्सा; कुढ़न विजवमी स्त्री० खिजाना; चिढ़ाना; विज्ञावां अ० कि० खिजना; खिझना; विलवमी स्त्री० गिलंहरी; चिखुरी विलवमी स्त्री० थिलाना; विकास विलाबट स्त्री० देखिये 'खिलवमी'	(२) स॰ कि॰ डाँटना सीण स्त्री० घाटी; वादी; दर्रा(२) पहाड़के दो ऊँचे स्थानोंके बीचका प्रदेश; खोह सीमो पुं० क़ीमा सीर स्त्री० दूध-मातकी एक बानगी सीर स्त्री० दूध-मातकी एक बानगी सीर्द न० (आटा और पानीका) घोल (२) खमीरदार घोल; मैदानी (३) सीरा (४) एक प्रकारका मोटा कपड़ा सील पुं० मुँहासा (२) आँखकी पलक पर होनेवाली रक्त-मांसकी गौठ (३) चक्कीकी खूंटी; कील
सिलावर्षु स० कि० खिलाना; विकसित करना [रहना; उलझना; टॅंगना सिलावुं अ० कि० ऊँची जगह पर अटके सिलोडी स्त्री० गिलहरी सिसमाकोली स्त्री० गिलहरी सिसमाकोली स्त्री० गिलहरी सिसमाकोली स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० गिलहरी सिसमाकोल स्त्री० सिसमा स्त्रिये सीम वि० खचासच; ठसाठस जोचडी स्त्री० सिचड़ी। [-सवराववी जनवहि करना। -जूटवी ज्ञ रोजी कम होना; दाना-मानी उठना.]	सीलगोटीसो पुं० कील; राछ सीलगोटीसो पुं० चक्कीके बीचोंबीच गड़ी खूंटी; कील; राछ; अखोटा सीलमा(-मा)कडी(०)स्त्री०चक्कीके ऊपरवाले पाटके बीचोंबीचकी लकड़ी जो नीचेवाले खूंटेमें पिरोई जाती है; मानी (२)कील और मानी (चक्कीकी) सीलबंबुं स० कि० खिलाना; विकसित करना (२)डेंडियाना; (कंबल, चादर आदिके दो हिस्सोंको लंबाईकी ओरसे मिलाकर) सीना डील्डबुं अ० कि० खिलना; फूलना- फलमा(२)फ्रबना; सुंदर लगना (३)

-	
	C 50 M

## 195

्युवार

- प्रसम,प्रफुल्लित होना (४) हॅसी सूझना (५) रंगमें आना; मस्द्राना; उत्तेजित होना; जापेसे बाहर होना (६) स०क्रि० (कंबल, चादर बादिको बीभमेंसे) सीना; डेंड़ियाना [आला बीलापाटी स्त्री० पेंच या स्त्रू बनानेका
- बीली स्त्री० कील; मेख
- सीलोपसि (-सि)यारां न॰ ब॰ व॰ (कमरकस वर्गरह गहनोंमें) भोगली और उसे पहनानेका नाका - छेद
- सीलो पुं० सूंटा (२) जुएका दौव लेनेवाला मध्यस्य जुवाडी [ला.]। [सीले बांघवुंः ्खूंटेके साथ बांधना (२) स्थायी रूपसे जोड़ देना (३) झ्याहना; उदा० 'छोडी सीले बांधी सारी' [ला.].]
- **सीसकवुं** अ० कि० फिसलना ; सरकना **सीसाकालव** वि० लेवकट ; जेवकतरा
- **क्षोसाकरच, क्षोसाकर्च पुं०** सामारण ः**क्षर्च**के वास्ते जेबमें रखनेके पैसे (२) जेबक्षर्च; निजी **खर्च**
- सीसुं न० खीसा; जेव। [सीसामां घालवुं, मूरुवुं = अपने क्र-कोर्मे रखना (२) कुछ न समझना। सीसां तर करवां = खूब धन जमा करना। - तर होवुं = खूब पैसा होना; जेब भरी होना। --भरवुं = धूस देना या लेना.]
- सोंटी स्त्री० छोटा सूँटा; मेस्र (२) कपड़े टौगनेके लिए दीवारमें गाड़ी हुई मेस्र; सूँटी
- सौंटो पुं० खूँटा; मेख; कील
- **सुटाडव्** स० कि० घटाना; कम करना (२) पूरा करना
- खुबबो पुं० खुर्दा; रेजगारी (२) रेखा-रेखा; पूरा [सा.]। [-करवो ≃धन उड़ाकर उसे सरम करमा (२) तोड़-

नाजयो≕क्षोड़-फ्रोड़कर चूरा करना.]
जुताडवुं स० कि० धेंसाना; कीचड़में
धुसाना (२) भीतर जाकर चिपका देना
सुब वि० असली; खालिस (२) स०
खुद; आप
जुबाई वि० ईश्वरका; ईश्वरसे संबद्ध
(२) पवित्र (३) क़ुदरती; दैवी (४)
भोला; खुदाका [ला.] (५) स्त्री०

फोड़कर भूरा करना ।--**काटवो, काटी** 

- ईश्वरता (६) सुष्टिः; खुदाई
- जुनामरको स्त्री० खूनखराबा; खूरेजी
- **सुन्नस** स्त्री०; न० खुनस
- **सुं**पाव**बुं** स० कि० घेंसाना; नीचेकी ओर उतारना (२) गड़ाना
- **जुमारो** स्त्री० खुमारी; खुमार (२) घन, वैभव, सत्ता आदिका गरूर
- **सुरदो** पुं० देखिए 'खुडदो '
- **कुरदाी (--साै** )स्त्री० कुरसी; कुर्सी (२) मान या अघिकारका स्थान; आसन [ला.]
- **सुरी** स्त्री० खुर; सुम
- **जुलासावार** अ० खुलासावार; खुलकर
- **कुलासो** पुं० खुलासा; स्पष्टीकरण(२) सार; निचोड़ (३)हल्ल; उपाय (४) कुशादगी; फैलाव(५)दस्त; पाखाना [ला.]
- बुल्लंबुल्ला अ० खुल्लम-खुल्ला
- भुंस्लुं वि० खुला; प्रेकट (२) निस्तालिस; साफ़दिल (३) स्पष्ट (४) नंगा; जो डॅंका-छिपा न हो (५) प्रकट; खाहिर (६) असम्य (७) जो घिरा हुआ न हो; सक्या (८) जो गया ब हो: स्वक्या
- सुला (८) जो गाढ़ा न हो; हलका सुल्लेसुल्स्ंवि० बिलकुल सुला
- सुवार वि० स्वार; सूब परेशान (२) तवाह

सुपारी	ľ
-	

145

भूमाम्

खुवारी स्त्री० स्वारी; बरवादी **सुझ वि० सुश; आनंदी (२)** संदुरस्त खुदाको स्त्री० खुदकी; स्थल-मार्ग खुशखुशाल वि० तंदुदस्त और प्रसन्न; জুৰ জুগ खुशबो(०ई) स्त्री० खुशबू; सुगंध **सुझबोबार** वि० सुशब्दार सुधमिजाज पुं० आनंदी स्वभाव (२) वि॰ हँसमुख; खुशमिजाज खुशामत स्त्री० खुशामद; चापलूसी बुजामतलोर वि० खुशामदी; चापलूस **सूझामतियं** वि० खुशामदी **जुवाल** वि० खुवहाल; सुखी (२) तंदुवस्त खुझाली स्त्री० खुशहाली; समृद्धि खुशी स्त्री० (२)वि० खुशी; प्रसन्नता; हर्ष (३)मरजी; इच्छा (४)वि०लुश; राज्ञी **खूजली (–ळी)** स्त्री॰ खुजली; **पु**ल (२) साज; सुजली रोग (३) वह चीज जिसके छू जानेसे खुजलाना पड़े खुटल वि० अप्रामाणिक;झूठ बोलनेवाला क्षुटर्षु अ० कि० घटना; कम होना (२) छीजना **सूजेसांचरे** अ० किंसी कोनेमें **जूजो** पुं० कोना; गोशा चतुन्न जुं ज कि देखिये ' खूंतयुं ' **ল্ব(--খ) হ**'ল০ জুবড়; ভিব **सूम न० खून;** लहू (२) खुनस; कीना (३)हत्या; खून **सूनचरावो** पुं० झून-खराबा; मार-काट **जूनकार** वि० खूँखार (२) घातकी ; खूनी **सूनरेवी** स्त्री० सूरिजी; करोल (२) खूँखार मारपीट सूनस स्त्री०; न० देखिये 'खुन्नस' क्र्मी वि॰ खूनी; चातक; हिंस्र (२) कातिल; खून करनेवाला

स्रम्यं ४० फि० धेंसना (२) गुभना (३) दलदलमें धँस जाना या चिपक जाना खूब वि० खूब; सुंदर; बढ़िया (२) बहुत ; खूब । [**—करी =**कमास्र किया ; खूब करी (प्रशंसासूचक उद्गार).] खूबसूरत वि० खूबसूरत; रूपवान खूबी स्त्री० खूबी; विशेषता (२) मजा; लुस्फ़ (३)चतुराई (४)सौंदर्य; कमारू फ़रोश (५) भलाई; खूबी सूमचावाळो पुं० सोन्वेवाला; सोन्वा-खूमचो पुं० खोन्चा (२) बेचनेकी चीजोंसे भरा हुआ खोन्वा (३) उसमें भरी हुई चीज; भेंटकी चीज ब्रुरपी स्त्री० खुरपी सूलतुं वि॰ खुला; ढीला; जो तंग या चुस्त न हो; झौंगला (२) खुलता हुआ (स्कूल, दफ़्तर भादि) सुरुषुं अ० कि० सुरुना (२) सिलमा (फूल) (३) फबना; खिलना (रंग) **स्रुंसारव्युं** अ०कि० 'खूं-खूं' आवाज **कर-**ना (२) (अमुक आवाज करके) **खज्ञा-**रना (३) हिनहिनाना (४) (अपनी हाजिरी, बड़प्पन आदि जतानेके लिए) खाँसना-खलारना **सूंसारो** पुं० ससारना (२) सों-सों **सूंच(०क्षांच)** स्त्री० कोना; नुक्कड़; क्षोंच (२) चुभन; खटक (३) असर; लगना (४) देव; बैर (५) सूक्ष्म बुद्धि; तीक्ष्ण सूझ-बूझ (६) भूछ-वूक; लामी; दोष; खुचड़ ख्र्ंचवयुं स० कि० छीन लेना; झटकना खूंखबूं अ० कि० खटकना; चुभना (२) मनर्मे खटकना; सालना (३) बंधनर्मे

पड़ना; षॅंसना; किपटना **सूंचावव् स० कि० छीन** लेना; हथियाना

बतानेवाला पत्थर; सूँट(३) अ० ठीक       संबद(         नापसे; पूरा       [खोंटना; खुटकना       (रास्ता)         सूंटवुं स० कि० जड़मूलसे उखाड़ना(२)       खेती स्त्र         सूंटवां पुं० साँड (बैल)       खेती स्त्र         सूंटवां पुं० साँड (बैल)       खेती स्त्र         सूंटवां पुं० साँड (बैल)       खेती स्त्र         सूंटवां पुं० सुँटा       [गड़ना         सूंदवं अ० कि० (दलदरलमें) धेंसना;       खेदो(	o स्रेती; काश्तकारी स्त्री ० स्रेती और बाड़ी (२) ड़ी; किसानी [तहस-नहस ान(सॅं, में) वि० मलियानेट; ते) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) दी यात्रा; सफ़र (३) सेपकी (४)व्यापारकी चीजोंका एक (सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
बतानेवाला पत्थर; खूँट(३) अ० ठीक       संबद(         नापसे; पूरा       [खोंटना; खुटकना       (रास्ता         खूंटवुं स० कि० जड़मूलसे उखाड़ना(२)       खेती स्त्र         खूंटवे पुं० साँड (बैल)       खेतीकाडी         खूंटवे स० कि० (दलदलमें) धेंसना;       खेवानमेव         खूंदवुं स० कि० रोंदना       खेरा स्त्री         खूंदवुं स० कि० रोंदता       खेर स्त्री         खूंदवुं त० खुत्थी; खूंटी पेठवाला; कुबड़ा       (५) -         खूंपवं न० खुत्थी; खुंटी (पेड़, पौदेकी)       खेपानी (प्         खूंपवं न० खुत्थी; खुंटी (पेड, पौदेकी)       खेपानी (प्         खूंपवं न० खुत्थी; खुंटी (पेड, पौदेकी)       खेपाने प्         खूंपवं त० खुत्थी; खुंटी (पेड, पौदेकी)       खेपाने (प्         खूंपवं त० कि० (२) अ० कि० देखिये       खेर खो         खूंपवं त० कि० (२) अ० कि० देखिये       खेर खो         खूंदवुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये       खेर खो         खेर स्त्री	२)खेतमेंसे होकर जानेवाला ) ो० खेती; काश्तकारी रत्त्री० खेती और वाड़ी (२) ड़ी; किसानी [तहस-नहस ान(खॅ, में) वि० मलियामेट; तो) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) दी यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४)व्यापारकी चीजोंका एक सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
<ul> <li>नापसे; पूरा [खोटना; खुटकना (रास्ता सूंटवृं स० कि० जड़मूलसे उखाड़ना(२) खेती स्त्र खोटवा पुं० सौड़ (बैल) खेतीवार खूंटी एवं० सूंटा [गड़ना खेदानमेव खूंटी एवं० सूंटा [गड़ना खेदानमेव खूंतवृं अ० कि० (दलदलमें) घेंसना; खेदो (न्य खूंतवृं अ० कि० रोंदना खेप स्त्री खूंद स्त्री० कंधे परका डिल्ला; कूबड़ (२)लं (पशु) (२)पीठकी हट्टीके टेढ़ी होनेसे मजदूरी होनेवाला कूबड़ (मनुष्प) देशसे द्र प्रेंच प्रेंच स्त्री क्र को परका डिल्ला; कूबड़ (२)लं (पशु) (२)पीठकी हट्टीके टेढ़ी होनेसे मजदूरी होनेवाला कूबड़ (मनुष्प) देशसे द्र स्त्रे होनेवाला कूबड़ (पनुष्प) देशसे द्र स्त्रे होतेवाला; कुबड़ा (५) - खूंदर्य द्र खेटा (दूल्हेका) (६) हि ख्रुपर्व न० खुत्यी; खुत्य (२) खूंटी; खोप्पर्व पं० सेहरा (दूल्हेका) देही पीठवाला; कुबड़ा (५) - खूंपर्व पं० खेटरा (दूल्हेका) खेपानी (द्र ख्रेमकुति जड़ ['खूपर्व' खेमकुत्र देही सीठवाला; कुबड़ा (६) हि ख्रेयानी (द्र ख्रेकडो पुं० केकड़ा [गाँव; खेडा खेर (खेंत्र खेमकुत्र दर्या खेर्कडो पुं० केकड़ा [गाँव; खेडा खेर (खेरा खेर कुंतरी; जोत (२) न० खेड; (२) र खेर हवी खेरती; जोत (२) न० खेड; (२) र खेर हवी खेर खेती; जोत (२) न० खेड; (२) र खेर हवी खेरती; जोत (२) न० खेड; (२) र खेर हवी खेर (खेंतराह करना) (६) सासा वनिज-क्योपार खेर दर्वा खेर खां करनाना; विकास करना (३) साहस या बनिज-क्योपार खेरराह तेवा खेरताह करना (४) मुसाफ़री करना (५)</li> </ul>	) ) स्रेती; काश्तकारी रत्री ० स्रेती और बाड़ी (२) ही; किसानी [तहस-नहस ान(सॅं, में) वि० मलियामेट; ो) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) दी यात्रा; सफ़र (३) स्रेपकी (४) व्यापारकी चीजोंका एक रूसरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
सूंटवृं स० कि० जड़मूलसे उखाड़ना(२)       सेती स्त्र         सूंटियो पु० साँड़ (बैल)       सेतीकाडी         सूंटी स्त्री॰ खूंटी; मेख       सेतीकाडी         सूंटी पु० सूंटा       [गड़ना         सूंदो पु० सूंटा       [गड़ना         सूंदो पु० सूंटा       [गड़ना         सूंदवुं अ० कि० (दलदलमें) धॅसना;       खेदो(-ब         सूंदवुं अ० कि० (दलदलमें) धॅसना;       खेदो(-ब         सूंदवुं अ० कि० (दलदलमें) धॅसना;       खेदो(-ब         सूंदवुं अ० कि० रोंदना       खेप स्त्री         सूंदवुं त० कधे परका डिल्ला; कूबड़       (२)लं         (पशु)(२)पीठकी हट्टीके टेढ़ी होनेके       मजदूरी         सूंप स्त्री       सुंदर्कुका)       देशसे द         सूंप पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंप पुं० सेहरा (दूल्हेका)       खेपानी(द         सूंपर्व न० खुत्यी; खुत्य (२) खूंटी;       खेपानी(द         सूंपर्व न० खुत्यी; खुत्य (२) खूंटी;       खेपानी(द         सूंपर्व न० खुत्यी; खुत्य (२) छूंटी;       खेपानि, द         सूंपर्व त० कि० (२) अ० कि० देखिये       'धेमकु         सूंप क्रिंगे एं० केकड़ा       [गांव; खेडा         स्त्रेकडो पुं० केकड़ा       [गांव; खेडा         सेंद क्रें स० कि० (जिपान) जोतना(२)       खेर स्त्री         सुंधारना; उपजाऊ बनाना; विकास       सेरबाट         सराता, २) साहस या बनिज-क्	स्त्री • खेती और बाड़ी (२) ड़ी; किसानी [तहस-नहस ान (खॅं, मॅं) वि० मलियामेट; ते) पु० पीछा • खेप; फेरा (बोझका) दी यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४) ब्यापारकी चीजोंका एक दूसरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
भूटियो पुं० सांड (बैल)       सेतीवार्ड         सूंटो स्त्री॰ लूंटी; मेख       सेतीवार         सूंटो पुं० सूंटा       [गड़ना       सेतीवार         सूंदो पुं० सूंटा       [गड़ना       सेतीवार         सूंदां पुं० सूंटा       [गड़ना       सेवानमेद         सूंदां पुं० सूंटा       [गड़ना       सेवानमेद         सूंदां पुं० स्तर रौदना       सेप स्त्री         सूंद स्ती० कंधे परका डिल्ला; कूबड़       (२)लं         (पशु) (२)पीठकी हड्डी टेढ़ी होनेसे       मजदूरी         सुंप पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंप पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंपरो पुं० सुल्यी; सुंटी(पेड़, पौदेकी)       सेपानि         सूंपरो पुं० सुल्यी; सुंटी(पेड, पौदेकी)       सेपनकु         सूंपरा पुं० सेहरा (इल्हेका)       (६) हि         सूंपतुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये       सेनकु         स्तंकवो पुं० नेकडा       [गाँव; सेडा         संद स्ती॰ सेती; जोत (२) न० सेड;       (२) स         स्तंबद्द स० कि० (जमान) जोतना(२)       सेर स्त्री         सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास       सेरबाह         सराता (२) साहस या बनिज-क्योपार	ड़ी; किसानी [तहस-नहस ान (खॅं, में) वि० मलियामेट; ो) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) वी यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४) व्यापारकी चीजोंका एक इसरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
सूटी स्ती॰ खूंटी; मेख       सेतीवार खूंदा पुं० खूंटा       [गड़ना       सेवानमेव खेदानमेव         सूंदा पुं० खूंटा       [गड़ना       सेवानमेव         सूंदा पुं० खूंटा       [गड़ना       सेवानमेव         सूंदा पुं० खूंटा       [गड़ना       खेदानमेव         सूंदा पुं० खूंटा       (तरलदलमें) धेंसना;       खेदो(-ख         सूंदा पुं० कि॰ रोंदना       खेप स्त्री         सूंप स्त्री॰ नधे परका डिल्ला; कूबड़       (२)लं         (पशु) (२)पीठकी हड्डीके टेढ़ी होनेसे       मजदूरी         होनेवाला कूबड़ (मनुष्प)       देशसे ह         सूंप पुं० रोहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंप पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंपरो पुं० खुल्यी; खुंटी (पेड़, पौदेकी)       खेपानी (२)         सूंपरा पुं० खुल्यी; खुत्य (२) छाई?       खेपया २         सूंप पुं० खुल्यी; खुत्य (२) छाई होने रेकिंश       खेपानी (२)         सूंपरा पुं० खुल्यी; खुत्य (२) छाई होने रेकिंश       खेपाने २         सूंपरा पुं० खुल्यी; खुत्य (२) छाई होने रेकिंश       खेपाने २         सूंप पुं० खेतरा; जोत (२) न० खेड;       (२) स         स्तुंदा स० कि० (उगीन ) जोतना(२)       खेर स्त्री         सुंदा सूंग वर्ग बानिज-ब्योपार       खेर स्त्री         सुंदा स० कि० (अमीन) जोतना(२)       खेर स्त्री         सुंदा साता; ३पजाऊ बनाना; विकास       खेर स्त्री         <	न (खॅ, में) वि० मलियामेट; ो) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) वी यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४) व्यापारकी चीजोंका एक (सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
स्रोटो पुं० सूंटा [गड़ना खेवानमेव सूंतव् अ० कि० (दलदलमें) घेंसना; खेवो (-घ सूंवव् अ० कि० रोंदना खेप स्त्री सूंवव् स० कि० रोंदना खेप स्त्री सूंवव् स्त्री० कंधे परका डिल्ला; कूबड़ (२)लं (पशु) (२)पीठकी हट्टीके टेढ़ी होनेसे मजदूरी होनेवाला कूबड़ (मनुष्प) देशसे ह होनेवाला कूबड़ (मनुष्प) देशसे ह सूंविप् पुं० रोहरा (दूल्हेका) (५) - सूंच पुं० रोहरा (दूल्हेका) (६)हि सूंपरो पुं० खुल्यी; खुत्य (२) खूंटी; बालकी जड़ ['खूपवुं' खेमकुस्ट सूंपवुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये स्रेच्वचं स० कि० (२) अ० कि० देखिये संचत्वां पुं० नेकड़ा [गांव; खेड़ा खेर (खे स्रेच्वचं स० कि० (अभीन) जोतना(२) सुंघारना; उपजाऊ बनाना; विकास करना (३) साहस या बनिज-क्योपार करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	ते) पुं० पीछा ० खेप; फेरा (बोझका) दी यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४)ब्थापारकी चीजोंका एक (सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
सूंतव् अ० कि० (दलदलमें) घेंसना;       स्वे (-म         सूंवव स० कि० रौदना       सेप स्ती         सूंव स्ती० कंघे परका डिल्ला; कूबड़       (२) लं         (पशु) (२)पीठकी हड्डीके टेढ़ी होनेसे       मजदूरी         होनेवाला कूबड़ (मनुष्प)       देशसे ह         सूंब पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) लि         सूंब पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) लि         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       स्वेपयती (         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       सेपियो प         सूंपत्र पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       सेपियो प         सूंपत्र पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       सेप्तकु श्रेक्सकी जड़         सूंपत्र पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       सेप्तकु खेर (खें         सूंपत्र पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       सेप्तकु खेर (खें         संककी जड़       ['खूपतु'         संककी जड़       ['खूपतु'         संकको पुं० केकड़ा       [गाँव; सेडा         सेर (वे देह प्री० खेती; जोत (२) न० खेड;       (२) स         सुंघारना; उपजाऊ बनाना; विकास       सेर स्वी         करना (३) साहस या बनिज-क्योपार       सेर स्वा         करना (४) मुसाफ़री करना (५)       निकाल	• खेप; फेरा (बोझका) ती यात्रा; सफ़र (३) खेपकी (४) व्यापारकी चीजोंका एक (सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही कस्त [चतुर; अनुभवी
सूँ देवुं स० कि० रौंदता       खेप स्त्री         सूँ व स्त्री० कंधे परका डिल्ला; कूबड़       (२) लंग         (पशु) (२) पीठकी हट्ठीके टेढ़ी होनेसे       मजदूरी         होनेवाला कूबड़ (मनुष्प)       देशसे ह         इंगिवाला कूबड़ (मनुष्प)       देशसे ह         सूंबियुं, सूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंबियुं, सूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंब पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुंटी (पेड़, पौदेकी)       खेपानी (५)         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुंट्य (२) खूंटी;       खेपियो ५         संपरो पुं० खुत्थी; खुंट्य (२) खूंटी;       खेपियो ५         सूंपर्व न० खुत्थी; खुंट्य (२) खूंटी;       खेपियो ५         संकडो जुं० खुत्थी; खुंट्य (२) खूंटी;       खेपियो ५         संकडो पुं० खेकड़ा       [गाँव; खेड़ा         संकडो पुं० केकड़ा       [गाँव; खेड़ा         खेद स्ती० खेती; जोत (२) न० खेड;       (२) स         सुंघारना; उपजाऊ बनाना; विकास       खेर स्त्री         करता (३) साहस या बनिज-क्योपार       खेरबगूं         करतना (४) मुसाफ़िरी करना (५)       निकाल	वी यात्रा; सफ़र (३) खेपको (४)व्यापारकी चीजोका एक (सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही कस्त [चतुर; अनुभवी
सूँग स्त्री० कंधे परका डिल्ला; कूबड़       (२) छं         (पशु)(२)पीठकी हड्डीके टेढ़ी होनेसे       मजदूरी         होनेवाला कूबड़ (मनुष्प)       देशसे ह         सूंगियां, फूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंगियां, फूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंगियां, फूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंगर्य पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंपरो पुं० खुल्यी; खुट्य (२) खुंटी;       खेपियो प         अप्रंपरो पुं० खुल्यी; खुट्य (२) खुंटी;       खेपियो प         स्रंपत्रो पुं० खुल्यी; खुत्य (२) खुंटी;       खेपियो प         स्रंपत्रो पुं० खुल्यी; खुत्य (२) अ० कि० देखिये       'धीमकु खेर (खं         स्रंपत्रो पुं० केकड़ा       [गाँव; खेड़ा         सोद हरी केती; जोत (२) न० खेड;       (२) स         सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास       खेर स्वी         कररना (३) साहस या बनिज-क्योपार       खेरवातुं         करतना (४) मुसाफ़िरी करना (५)       निकाल	(४)व्यापारकी चीजोंका एक सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
(पशु)(२)पीठकी हड्डीके टेढ़ी होनेंसे मणदूरी होनेवाला कूबड़ (मनुष्प) देशसे द द्वांस द द्वांस पुं देशसे द द्वांस पुं देशसे द द्वांस पुं देशसे द द्वांस पुं देशसे द द्वांस पुं देश पीठवाला; कुबड़ा (५) - पूंच पुं दे रेहरा (द्र्ल्हेका) (६) हि पूंच पुं दे रेहरा (द्र्ल्लेकहा [गाँव; खेडा खेर (खे स्रेक हो पुं दे केकड़ा [गाँव; खेडा खेर (खे से क्हे द्वां दे रेहरा (द्र्ल्लेकहा (२) न दे सिये से क्हे द्वं स दे रेहरा (२) र से द्वं द्वं द्वं द्वं द्वं द्वं द्वं द्वं	सरे देशमें आना; आयात - के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
<ul> <li>होनेवाला कूंबड़ (मनुष्प)</li> <li>देशसे ह चूंबिपुं, कूंचुं वि० टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा</li> <li>(५) -</li> <li>कूंच पुं० सेहरा (दूल्हेका)</li> <li>कूंपरो पुं० सहरा (दूल्हेका)</li> <li>कूंपरो पुं० सहरा (दूल्हेका)</li> <li>कूंपरो पुं० खुत्यी; खुत्य (२) खूंटी;</li> <li>बालकी जड़</li> <li>['खुपवुं'</li> <li>क्वेमकु तर्ज (२) अ० फि० देखिये</li> <li>क्वेमकु तर्ज (२) अ० फि० देखिये</li> <li>क्वेकको पुं० केकड़ा</li> <li>[गाँव; खेड़ा</li> <li>क्वेकढो पुं० केकड़ा</li> <li>[गाँव; खेडा</li> <li>क्वेद स्ती० खेती; जोत (२) न० खेड;</li> <li>स्वेद स्ती</li> <li>सुंघारना; उपजाऊ बनाना; विकास</li> <li>करना (३) साहस या बनिज-क्योपार</li> <li>करना (४) मुसाफ़री करना (५)</li> </ul>	- के पीछे लगा रहना; तंदेही हस्त [चतुर; अनुभवी
सूंबियं, सूंबुं वि०टेढ़ी पीठवाला; कुबड़ा       (५) -         सूंब पुं० सेहरा (दूल्हेका)       (६) हि         सूंबर्य न० खुत्थी; खूंटी(पेड़, पौदेकी)       खेपानी(देकी)         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         सूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         स्रूंपरो पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         स्रूंपर्व पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         स्रूंपर्व पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         सूंपर्व पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी;       खेपियो प         सूंपर्व पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खुंटी;       खेपियो प         सूंपर्व पुं० खुत्थी; खुत्थ (२) खुंटी;       खेप्रिका प्         सूंपर्व पुं० केकड़ा       [गाँव; खेड़ा         खेर स्त्री       खेर (खं         खेर स्त्री       खेर स्त्री         सुंघारना; उपजाऊ बनाना; विकास       खेरसाह         करता (३) साहस या बनिज-व्योपार       खेर स्वा         करतना (४) मुसाफ़िरी करना (५)       निकाल	कस्त चितुर; अनुभवी
भूषेपरं न॰ खुत्था; खूँटी (पेड़, पौदेकी) खोपाती ( भूषेपरो पुं॰ खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी; खोपयो प भूषरो पुं॰ खुत्थी; खुत्थ (२) खूंटी; खोपकु सर भूषम् , स॰ कि॰ (२) अ॰ कि॰ देखिये सेमकु मूषम् , स॰ कि॰ (२) अ॰ कि॰ देखिये सेमकु मूषम् , स॰ कि॰ (२) अ॰ कि॰ देखिये सेमकु से देखें स॰ कि॰ (अमीम) जोतना(२) सेर स्त्री सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास से देखाह करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	sस्त [चतुर; अनुभवी
भूंपरो पुं० खुत्वी; सुत्य (२) खूंटी; खोमकु गळ भूंपवुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये भूं भेमकु कूंपवुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये भेमकु क्रेंचचुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये खेर (खें क्रेंचचुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये खेर (खें केंचच पुं० केकड़ा [गांव; खेड़ा खेद स्वी॰ खेती; जोत (२) न० खेड; (२) स् सेंडवुं स० कि० (अमीन) जोतना(२) खेर स्वी सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास खेरखाह करना (३) साहस या बनिज-क्योपार खेरववुं इ करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	N A TAT AT A.
दालकी जड़ ['अपूपवुं' क्रेमकुशव क्रूंपवुं स० कि० (२) अ० कि० देखिये क्षेमकु क्रेकडो पुं० केकड़ा [गाँव; खेड़ा कर (खे बोड स्त्री० खेती; जोत (२) न० खेड; (२) स सेडवुं स० कि० (जमीन) जोतना(२) क्षेर स्त्री सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास क्षेरसाह करना (३) साहस या बनिज-क्योपार क्षेरववुं क	ते) वि० ऊथमी; शरीर (२)
बालकी जड़ ['खूपवुं' खमकुशव कूंपवुं स॰ कि॰ (२) अ॰ कि॰ देखिये खेमकु केंबबो पुं॰ केकड़ा [गाँव; खेड़ा खेर (खें बेड स्त्री॰ खेती; जोत (२) न॰ खेड; (२) र खेडवुं स॰ कि॰ (जमीन) जोतना (२) खेर स्त्री सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास खेरसाह करना (३) साहस या बनिज-ज्योपार खेरववुं इ करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	रं० दूत; कासिद
मूपमु सका कठ (२) अठा कठ दासय सोर (सें सेकडो पुं० केकड़ा [गांव; सेड़ा सोर (सें सेड स्त्री० खेती; जोत (२) न० सेंड; (२) र सेडवुं स० कि० (अमीन) जोतना (२) सोर स्त्री सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास सोरसाह करना (३) साहस या बनिज-क्योपार सोरबवुं : करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	। (सँ) वि० (२) न० देखिये
सकबा पु० ककड़ा [गाव; सड़ा छेर (स बोड स्त्री० खेती; जोत (२) न० खेड; (२) स सेडवूं स० कि० (जमीन) जोतना(२) छरेर स्त्री सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास खेरसाह करना (३) साहस या बनिज-व्योपार खेरववुं : करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	<sub>शळ</sub> ) न० खैर; खदिर (पेड़)
बाह स्ता० खता; जात (२) न० खड; (२) र सोडवुं स० कि० (जमीन) जोतना(२) स्नेर स्वी सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास स्नेरसाह करना (३) साहस या बनिज-क्योपार स्नेरबवुं व करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	) अ० खैर; अच्छा; मले
सोडवुं स॰ कि॰ (जमीन) जोतना(२) स्नेर स्वी सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास स्नेरसाह करना(३)साहस या बनिज-क्योपार स्नेरवर्षु करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	त्री० खैरियत; कुशल
सुधारना; उपजाऊ बनाना; विकास स्नेरसाह करना (३) साहस या बनिज-क्योपार स्नेरबाह करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	० खेह; घूल; झाड़न
करना (३) साहस या बनिज-व्यीपार झरेतवर्षु करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकाल	(खें) वि॰ खैरख्वाह; हितैषी
करना (४) मुसाफ़िरी करना (५) निकॉल	त० कि० झाड़ना (२) हटाना;
wordty and posterious access	(खॅ) स्त्री० खैरसल्ला;
<b>जेडहक (क्क</b> ) पुं० दसीलकारी ; खेती कुशल-४	तेम (२) अ० 'खैर, मले या
सेंडाण वि० जोता-बोया हुआ ; जो जोता जाने द	'ऐसा उद्गार [कत्या
	(स्त) (सॅ) पुं० खेरसार;
बोयी जाती खमीन सेरंघो (	-टो) पुं० खेह; घूल;झाड़न
<b>सेड्</b> वि० चलाने <b>वा</b> ला; हॉकनेवाला <b>सेरात</b> (	खँ) स्त्री• खैरात; दान
(२) पु० किसान [आदमी स्रेराती	खें) वि॰ खैराती; वर्मायें
	आ (२) जो खैरात करता हो
स्रोत न० खेत; क्षेत्र स्रोरियत	(सॅ) स्त्री० खीरियत; खैर
	रे झाड़न; रज(२) बॉत पर
	ाली पपड़ी; दंतवर्करा

जेरी १	<i>१२४</i>	
<b>चेरो (सॅ) पुं० डोरियोंको यूँयकर</b>	<b>सेंचासेंच (</b>	
बनाया हुआ जालीदार थैला	तानी (२	
केरो (सॅ) पुं० झाड़न; पूरा	सेंचाम (से	
केल पुं० खेल; खेल-कूद (२)तमाछा;	सेंचताम (	
करतक; दृश्य नाटफ; भौड़का क्षेत्र	<b>चैद्य</b> स्त्री०	
(२) राजनाः जीवर निगी। [सालको	(२) अव	

- (३)रचना; लीला [ला.] । [-**-काढवा** 🛥 --का नाटक खेलना; अभिनय करना । -- स्नेलचो = खेल खेलना ]
- सेलदिली स्त्री० दिलमें खेलके प्रति प्रसन्न भाव होना
- बोक्च वुं अ० कि० खेलना (२) खेल बेलना
- बेलाही वि० खेला-खाया; चतुर ; मुरसद्दी (२) पुं० सेलनेवाला; नट; खेलाड़ी; জিতা হুট
- सेवना स्त्री० सोच; चिंता; परवाह **सेस** पुं० दुपट्टा; उपरना
- केंसबबुं स० कि० खिसकाना; हटाना
- जेसियुं न० दुपट्टेकी तरह काम आने-वाला चादर जैसा बस्त्र; खेस
- **सेह** स्त्री० खेह;घूल;रज(२)पुं०क्षय क्रेड (सॅ) स्त्री० मौड़ी
- बॉब (०२०) स्त्री० खिंचाव; तनाव (२) आग्रह (३) कमी; तंगी
- सँबताण (खँ०) स्त्री० खींचा-तानी (२) बाग्रह [ला.]
- बेंचवुं (खें०) स० कि० खींचना; षसीटना (२) कसना; चुस्त करना (३) जाग्रह करना; आग्रहपूर्वक पकड़े **रहना (४) चुसना; रस निकाल लेना;** निचोड़ना। सिंची सालबुं, पकडवुं, राजार्युः = सींधकर सल्त पकडेना (२) (अपनी बातका) आग्रह रखना; डील न देना; बात नीचे न बालना.] **बेंबंबेंबा** (खें०) स्त्री० सींचा-सींबी; <u>फेशमक</u>स

-बी) (सँ०)स्मी० सींमा-



- ) आप्रह io) न० देखिये 'खेंच' **सॅ०)** स्त्री० सींच-तान सूखने देना; पानी न देना (२) अवर्षण; सूखा संदियं वि० जलहीन; जो सींघा न जाता हो (खेत) (२)न० सूखा (वर्ष) को (सो') स्त्री० लत; आदत (२) द्वेष; बैर; जलन । [---भू**लाववी =** सबक सिखाना; लत छुट जाय ऐसा करना। – भूली बबी = (जिन्दगीके लिए) सबक मिलना.]
- सो (सो') स्त्री० साई; सोह; कंदरा
- स्रो (स्रो') स्त्री० एक खेल (२) उस खेलमें प्रयुक्त बोल
- **कोई** स्त्री० बच्चेको सूलानेके लिए बनाई या लटकाई हुई झोली ৰিনিৰ
- सोस न० वडे क़दकी मगर खोसकी
- सोसरं वि० जिसमेंसे मोटी और कर्कश आवाज निकले ऐसा (२) जो कुछ ट्टा-फुटा हो
- कोर्बुन० जिसका सार-सत्व निकाल लिया गया हो ऐसी सोसली चीज (२) भीतरका सामान निकाली हुई हलकी पेटी, बक्स आदि (३) काग़ज और कपड़ा लेईसे चिपकाकर बनाया हुआ पगड़ीका आकार; टुकड़ोंकी बनाई हुई पगड़ी (४) अदा हुई हुंडी; खोखा (५) नमूना; प्रसिकृति; ढाँचा (६) खर्रा;मसौदा (७) कलेवर; कंकाल
- स्रोसो स्त्री० एक खेल
- सोचचं (सॉ) वि० पोला (२) वति-दार (३)न० सोह (४) पुराना जमाना

ч	ľ	T,

ठिठकना

होना

करना.

मुकर जानेवाला

सौचरे (साँ) अ० कोनेमें

**क्षोवर्ष्** स॰ कि॰ खोजना; ढूँढ़ना कोड स्त्री॰ घट; कमी; न्यूनता(२)

नुकसान; घाटा (३) मूछ; चुक(४)

छोटी ज्वार (समुद्रमें)। [-साबी =

नुक्रसान उठाना; घाटा सहना ।--पहची

= -- की सहत जरूरत महसूस करना

(२) कम होना; तोलमें कम होना.]

[(३) आलसीपन

सोटक(--का)वुं अ० कि० अटकना;

**कोटाई** स्त्री० झूठापन (२) खोटाई

सोटाबोलुं वि० झूठ बोलनेवाला ; झूठा ;

बोटारं वि० सुठा (२) खोटा; दुष्ट;

**सोटारो** पुं० ईंटकोहरा (२) अंगारा

सोही अ० देर हो इस सरह; समय बर्बाद

हो इस तरह (२)स्त्री० देर; विलंब

सोटोपो पुं० विलंब होना; कामर्मे देर

कोट्टुं वि० झूठा; असत्य (२) ग़लत;

सीटा (३)खराब; बुरा; सोटा (४)

मुकर जानेवाला; बेवफ़ा (५) न०

बुरा ; नुकसान; अन्याय; उदा० 'कोईनु

सोटुं करवामां वापणमे शो जाम !'

सोड(४,) स्त्री० लत; कुटेव; सराव

वादत (२) शारीरिक खामी या दोष

(३) भूल; ऐब; कलंक; लांछन;

दोष (४) न० ठुंठ । [**--आववी == ल**ामी

या केच्चापन रह जाना। स्वासवी =भूछ निकालना; दोष बताना (२)

निंदा करना। **--मुलाववी ==** संबक्त

सिस्नाना; आदत छूट जाय ऐसा

सोडसांपण स्त्री० खामी या दोष; त्रुटि

पाजी (३) न० झूठ (४) प्रपंच

124

- सोड्यू स॰ कि॰ गाड़ना (२) रोपना; खड़ा करना
- सोडसुं न० ठुंठ; ठूंठा
- स्रोडंग (—गा) दुं, सोडादुं अ० कि० लॅंगड़ाना; सौड़ा चलना
- **क्रोडीवार्च** न० खेतमें आने जानेके लिए दो बाजेूवाला खूँटा गाड़कर बनाया. हुआ रास्ता
- सोंडीखुं वि० खोंडा; अंगहीन
- सोबुं वि० सोंड़ा (२) छँगड़ा (३) स्वररहित; हलंत
- खोडो (सॉ) पु॰ सिर पर जमनेवाला मैल; रूसी (२) सिरकी चमड़ीका एक रोग (३) संहार; सर्वनाञ्च। [--काढवो, काडी वासवो ≕ संहार करना। --नीकळो जवो ≕ असि संहार होना.]
- कोतरणी स्त्री॰ दांत कुरेदनेकी सलाई, तिनका (२) खुरपी (३) नक्काशी करनेका औजार; टॉकी (४) खुदाई; नक्काशी
- स्रोतरणुं न० टॉकी (२) सुरपी (३) कुरेदनेका साधन; सोदनी (४) सुचड़; दोष
- खोतरबुं स० कि० जरा जरा सोदना; कुरेदना (२) पामाल करना; /हंकिसी की) निदा करना [स्त्र.]
- सोरकाम न॰ खोदनेको किया; सुदाई (२) नहर, तालाव आदि खोदमेका काम; खुदाई (३) महकाषी
- **क्रोक्यी स्ती॰ लुवह; निवा; बदगोई** {ला.] ! [**-करवी, क्रोवक्री ≕ लुवड़** निकालना; छिद्रान्वेषप करना.]
- सोदनुं स॰ कि॰; ज॰ कि॰ सोदना; जनना(२)क्रुरेदना; नक्काशी करना (३) निदा करना [ला.]

For Private and Personal Use Only

-	
च	19

## .....

कोबाई स्त्री० कोवनेकी उजरत ; खुदाई	सोस स्त्री० त्रुटि; कपडेका झोड़;
स्रोबाज न० खोदा जाना या सोदना;	सिलवट; खोखला (२) उतरी <b>हुई</b>
खुदाई (२) पानीके कोरसे खुदी हुई	जीर्ण त्वचा; झोछ (३) साँपकी
जमीन	केंचुली (४) शामी (५) ग्रिलाफ़ ; खोल
सोबामणी स्त्री० देखिये 'खोदाई '	कोलको स्त्री० गधी
<b>सोपरो</b> स्त्री० स्रोपड़ी। [मां पवन	सोसकुं न० रेंगटा
<b>भराबो, होबो</b> ≕मित्राज सातनें आस-	सोलको पुं० गषा; खर
मान पर होना; इतराना.]	सोसम् सं कि को लगा (२)स्पापित
कोफ (सॉ) पुं० सौफ़ (२) गुस्सा	करना (घातुकी)
<b>सोकनाक (सॉ</b> )वि० खौफ़नाक;डरावना	कोकी स्त्री • शामी; टोपी (किसी
क्षोबलो, लोबो पुं० अंजली; संपुट(२)	सोस्री स्त्री० कोठरी
अंजलीभर वस्तु (माप)	स्रोवडा (-रा) धर्षु स० कि० गँवा देना
<b>सोयभी</b> (स्रो') स्त्री० बघार; छौंक	सोवाव् अ० कि० सो जाना; हिराना
<b>तोगणुं (सो</b> ')न० जलती हुई लकड़ी;	स्रोबुंस॰ कि॰ सोना; गँवाना (२)
<b>लुमा</b> ठा (२) जामगी (३) छेड़खानी;	घाँटा या नुक़सान होना। कोई
उकसाहट [ला.] 👘	वेसबुं=गॅवाना (२) पराजित होना.]
क्षेयूं २० पालनेकी झोली (२)ढोलनी;	सोसबं स०कि० सोंसना गडाना धेंसाना
पालना [कोठरी	<b>सोह</b> स्त्री० सोह; कंदरा
कोरहुँ न॰ झोंपुड़ा; मिट्टीका घर (२)	सोळ स्त्री० देखिंगे 'सोल '(२) से (५)
<b>तौरण्</b> न॰ देखिये 'खोयणुं'	क्लोळ (क्लॉ) पुं० सली
बोरवार्यु अ० कि० क्लिसना ; कम टूटना 👘	स्रोळ (सॉ) स्त्री० सोज; तलाश
तोरांक पुं० खुराक (२) यह सामग्री	सोळपुं (साँ) स॰ कि॰ सोजना; दूँद्रना
जिससे किसी बात, क्रियादिका	सोळसोळा (लॉ) स्त्री॰ सूव दूँढ़ना
,निर्बाह हो; सामान; मसाला [ला.]	सोळंगे (भो) पुं० विलंग; दीस ।
<b>गोराकी</b> स्त्री <i>०</i> खुराक; गुजारेकी चीज	[कोळंभे माकन् = सटाईमें डालना।
(२) उसका खर्ष्चें; खुराकी	जोळंगे पहवुं = खटाईमें पड़नाः]
गौराकीपोक्षकी स्त्री० अन्न-वस्त्र(२)	सोछासोछ (सॉ) स्त्री० देशिये
उसका खर्च	' स्रोळंसोळा '
होराट (सॉ) पुं०, (-क्र) स्त्री० चीज	<b>सोळावर (सॉ</b> ) पुं० जामिन
पुरानी होनेसे उसमें पैदा होनेवाला	कोळाधरी (सॉ) स्त्री० जमानत;
बेस्वादपन 👘 🖓 🖉	जामिनी [भरना
<b>कोरियुं</b> न० लुमाठा; लूका 👘	सोळाभरमुं (क्षों) म॰ सीमंत; गोद
<b>कोचं (कों)</b> वि (कोंटा तेल्लाबि	सोळियूं न॰ तोशक, गद्दे आदिका सोल
पुराना होनेसे) उतरा हुआ;बेस्ताब;	जिसमें रुई न भरी हो; खोली (२)
बदबायका हो सम्ब	देह; चोला

ihuit				<b>t 4</b>		-
ोसी	ল্গা•	शामी;	टोपी	(किसी	-भरवो = सीमंतोन्नयन	संस
चातुः	តិ)				करना; गोद भरना.] [′र	र्मुखाः इ

- कोछो (लॉ) पुं० गोद; गोदी (२) कोंछ या आंचलसे बनाई हुई झोछी।
  - ग

ग पुं० कवर्गका⊸कंठस्थानीय तीसरा [पिछले दिन; कल व्यंजन ग्रईकाल स्त्री॰ गत दिवस (२) अ॰ महिकाले अ० पिछले दिन; कल (२) बिलकुल हालमें; कल ही [ला.] मईगुजरी स्त्री० गईगुजरी; भूतकालकी ंबात **भगववुं** अ० कि० गड़गड़ाना; गरजना बधबाट पुं० गढ़गड़ाहट (२) अ० तेजीके साथ; बेरोकटोक गगडावचुं स० कि० गड़गड़ाना (२) तेजीसे, बिना दके काम करना (३) जल्दी जल्दी पढ़ जाना; रपटाना 🕠 गगणव् अ० कि० गुनगुनानः (२) ं नकियाना (३) अस्पष्ट शब्दोंमें अपनी नामरजी जताना; बढ़बड़ाना [ला.] (४) स॰ कि॰ मनमें बड्बड़ाना; अस्पष्ट स्वरमें कहुना, बोलना गगजाट पुं० बकवास; बढ्बड्राहट गगरो पुं० गगरा; गागर समर्छ वि० दीन; गिड़गिड़ाता हुआ (२) गदराया हुआ (फल) 🕤 ग्गी स्त्री॰ बेटी; बिटिया गगौ पुं० बेटा; पुत्र हए गच अ० गचसे; धेंसनेकी आवाज करते गचरकू न०, (-को) पुं० सट्टी या तीखी बकार; अम्लीका 👘 अंगरोध (झा.) यचियं न० चक्का; ढोंका (२) बामा;

- \_
- ग<del>क्वी</del> स्त्री० गच; गचकारी (२) छत; गच
- गचची स्त्री० सिट्टी, ईंटें, कंकड़ और चूना आदिका जम जाना; गच; उदा० 'चूना गच्ची' (२) छत; पाटन (३) पक्का फ़र्डा; गच
- गण्छन्ती स्त्री० चंपत होना; ⊶भाग जाना। [~करवी, पकडवी==चलता बनना; चंपत होना.]
- गज पुं० लंबाईकी चौवीस तसूकी एक माप (२) बॅवड़ा; अरगरु (३) छड़ (४) (बंदूकका) गज (५) (सारंगी आदिकी) कमानी; गज । [-बाखो, बागवी=प्रयोजन सिद्ध होना; सद्धर होना.]
- गज पुं० हाथी; गज
- गजग्राहः पुं० 'टन ऑफ वार' रसान खींचनेका खेल; रस्सा-खिचाई
- गव्यव पुं० ग़जब; जुल्म (२) आफ़त; विपत् (३) अचंभा; आरज्ज्यं। [—करत्रो, वर्ताथवो = ग़जब ढाना। — थवो = गजब टूटना]
- गजबनाक वि० ग्रजब ढानेबाला
- गजर पुं० गजर; पहर-पहर पर बजने-वाला घंटा (२) भोरका घंटा; गजर गजरो: पुं० गजरा
- गजल स्त्री० देखिये 'गझल '

राजमत्र्	रे रेट गरेडा म
गजनबुं स॰ फि॰ गूँजता करना; गुजा-	गंडदागढदी स्त्री० मुक्केकांची (२)
रित करना; गुँजाना	भीड़-भाड़;रेला [(२) हाथापाई
गजवाकातद पुं० जेवकतरा; जेवकट	गडदापादु न० ब० व० घूँसा और सात
गजवुं न० जेब; सीसा। [गजवामा बालवुं	<b>गडदो</b> पुं० वूँसा; मुक्का
के मूकवुं = घूस देना (२) खयालमें न	गढव स्त्री॰ गाँठ; सूजन; फोड़ा;गंड
लाना; कुछ न समझना; परवाह न	<b>गडबड</b> स्त्री० कोलाहल; शोर-गु <del>ल</del>
करना (३) अपने अंकुशर्मे या दबावर्मे	(२) गड़बड़; अव्यवस्था
लाना (४) –से बेहतर या बढ़कर	ग <b>डवडगोटो पुं</b> ० गड़बड़ी; सड़बड़झाला
होना । गजवां भरवां≕षूस देना ]	(२) हिसाबमें गोळमाल; हिसाब-
<b>गजवेल</b> स्त्री० फ़ौलाद; गजबीली	<b>चोरी । [वाळवो =-</b> घोटाला या घपला
<b>गजाववुं</b> स० कि० देखिये 'गजवबुं'	करना.] [कोलाहलै; धमार्छ
गवियुं वि० चौबीस इंचकी नापका (२)	गडबड सडबड स्त्री० गहुमगोल (२)
न॰ गजी; गाढ़ा	<b>गडबडाट पुं० को</b> लाहल; शोर- <b>गु</b> ल
गर्ब न० दिसात; सामर्थ्य; बूता	<b>गडवडियूं</b> वि० गडवडिया; उपद्ववी
गक्वर पु॰ वड़ा बढ़ई;मिस्तरी (२)	(२) न॰ लड़खड़ी
बढ़ा मुक़द्दम गलल स्त्री० एक फ़ारसी राग; रेखता	<b>गडवव्ं</b> स० कि० दबा-दबाकर भरना;
(२) उस रागका काव्य; गर्जल	ठूँसना (२) पीटकर अघमुका बनाना;
बंदकावर्षु स॰ कि॰ गटकना; उदरस्थ	भुरकस निकालना
करना (पीना, निगलना)	गढमवल स्त्री॰ मेहनत; सिर मारना
महमहावयुं स॰ कि॰ गटगट पीना	गडणुं झ० कि० गड़ना; घुसना (२)
गहिंयुं वि० देखिये 'गट्टू'	लुढ़कना (३) गढ़गड़ाना सर्वे पंत प्रोटे व्यक्ताना वेंनेनल
गद्दी (-द्दुं) वि० नाटा; ठिंगना (२)	गडवो पुं० घड़ेके आकारका पेंदेदार सोम मोगा संसन्द (२) लिलौजा
ठिंगना और मोटा; योल	गोल कोटा; गडुवा (२) घियौड़ा सम्बद्ध एंदर स्वीत यह या लगीन पिका
গঠিযুঁ বি জুর্ন; ঘাই; আজাক	गडाकु पुं०;स्त्री० गुड़ या समीर मिला-
गठ्ठी पुं०जम गया हुआ ढेर; ढला; ढोंका	कर देनाया हुआ तवाकू; गुडाकू; समीरा
गड न॰ गाँठ; गट्ठा (२) फोड़ा;	गडी स्त्री० गौठ; गुल्थी; उलझन
गंड;गाँठ(३)स्त्री० चुनट(कपडे़की)	(२) तह (कपहेकी) (३) गड़ारी;
गडगडलूं, गडगडाट, गडगडावजूं देखिये	घिरनीके कीचका गड्ढा। [-पडवी
'गगडवुं, गगडाट, गगडाववुं '	= गाँठ पड़ना (२) स्रौट होना (२)
गडगूमड न० फोड़े-फुन्सी (२) इनके	तह या चुनट पड़ जाना.]
कारेण होनेवाला चमड़ीका एक रोग	गडी पुं० दक्षिणी नौकर
गडगूंबी स्त्री० छसोड़ा; लहसुआ (पेड़)	गडीबंब वि० तह-ब-तह; तह पर तह
गडगूंडूं न० लसोड़ा; रेंटा (फल)	गरूषी स्त्री० गुडूच; गुड़च; गिलोय
गडपूंबी पुं० लसोड़ा (पेड़)	गडेडाट अ० (२) पुं० गड़गड़ाहट; गर्जन

	5	~
q	Π₹	मा

गत

गत ।

गडेरियो पुं० गड़रिया (४) समझ या सयानापन प्राप्त करना; गडो पुं० बड़ा डला (२) समीरी उदा० 'भण्यो पण गण्यो नहीं' तंबाकुका बड़ा कंकड़ गणवेश पुं० सारे समूहकी एक सरीखी गढ पुं० गढ़; क़िला; गिरि-दुर्गं। पोशाक; वरदी; 'यूनीफार्म' [--- **उबलाववो =** भारी माथापच्चीका गणसारो पुं० आहट; भनक काम करना; किला फ़तह करना; गणित वि० गणित; गिना हुआ (२) गढ़ जीतना ] न० गणित; अंकशास्त्र (३) इसकी गढवी पुं० गढ़पाल (२) चारण (खासकर अंकगणितकी) किताब गढवुं न० गुड़ भरनेका मिट्टीका बड़ा मणिती पुं० गणितज्ञ; गणितशास्त्री मटका गणुं वि० गुना; उदा० 'चार गणुं' गढाण न० जहाँ सिर्फ़ घास उगती हो गणेझचतुर्थो, गणेशचोत्र स्त्री० गणेश-ऐसी जमीन; चरागाह; घासकुंद चौथ; गणेशचतुर्थी गढी स्त्री० गढ़ी; छोटा गढ़ (२) छोटा **गणोत** स्त्री०; न० (काश्तकारके द्वारा मटका मालिकको दी जानेवाली) बटाई(२) गण पुं० गण; समूह (२) जाति; जमीनके उपयोगका अधिकारपत्र; वर्ग (३) गुण; कीमत पट्टा; क़बूलियत **गणकारवुं** स० कि० गिनना ; कुछ मूल्य-गणोतनामुं न०, गणोतपटो (--द्वो) पुं० महत्त्वका समझना; गिनतीमें लेना जमींदार और काश्तकारके बीच होने-भणगण अ० गुनगुनाते हुए वाला लगानका क़रार; पट्टा; कब्लियत गणगणतुं, गणगणाट देखिये 'गगणतुं, **गणोतियो** पुं० जोतनेके लिए दूसरे**से** गगणाट' ] देखिये 'गणतरी' पट्टे पर जमीन लेनेवाला काश्तकार; गणतर वि० गिनतीके; इने-गिने (२) न० असामी गणतरी स्त्री० गिनती; गणना (२) गण्युंगांठच् वि० गिना-गिनाया;गिनतीका गिननेकी रोति (३) गिनकर निकाली गत वि० गत; गया हुआ (२) बीता हुई संख्या (४) अंदाज; खयाल; हुआ (३) मृत (४) अ० तक; उदा० 'पेढीओ गत कोईना पैसा रह्या नथी' । हिसाब; उदा० 'गगतरी बहारनुं खर्च' (५) मान; गिनती; लिहाज [ला] [-यवं=मर जाना] गत (त') स्त्री० देखिये 'गति' गणतंत्र न० देखिये 'गणोतपटो' **मणना** स्त्री० देखिये 'गणतरी' (२) वाद्य पर बजाया जानेवाला (किसी रागका) सरणम; गणराज्य न० गणराज्य; गणतंत्र गणवत (०पटो) देखिये 'गणोतपटो' [ **–जाणवी =** (समभावपूर्वक) हाल समझना । **गले घालवुं =**(श्राद्ध करके) गणवुं स० कि० गिनना; गणना करना (२) गणितका प्रश्न या हिसाब करना; सद्गतिको पहुँचाना (२) उपयोगमें ले लेना; काममें लेना**। गते जव्**= गिनना (३) [रुा.] कुछ मूल्य या मह-सद्गति प्राप्त करना.] त्त्वका समझना; भानना; गिनना गु. हिं-९

चुटकुला

उपाय; मार्ग

गदन् न० बहाना; मिस

रंगरली (२) गुदगुदी

गतकडूं न० आश्चर्यकारी

हैरतअंगेज वाक्रया (२) लतीफ़ा;

गतागम स्त्री० समझ; ज्ञान; सूझ-बुझ गति स्त्री० गति; चाल (२) वेग;

रौ (३) पहुँच; समझशक्ति; पैठ

(४) समझ; मति (५) सामर्थ्य;

बल (६) दशा; गत (७) मृत्युके बादकी दशा; गति (८) चारा;

मतियुं वि० सद्गतिको प्राप्त (२)

युक्तिसे काम निकालनेवाला; चतुर

मतिशास्त्र न० गतिशास्त्र; 'डायनमिक्स'

गबगब वि० (२) अ० देखिये 'गदुगद'

**গৰণবিয়া** ন০ ৰ০ ৰান-দান,

रुपये-पैसे या आनन्दकी बौछार;

गबगबुं वि० गुदगुदा; पिलपिला (२)

गवडवुं स० कि० (पैरोंसे) दबाना;

सिङा हुआ

_	 _	۰.
		r
	• 3	5

ł	ą	o
---	---	---

घटनाः;

गवकावव् देखिये गघेडी (--चुं,--डो) 'गवाही. गषाड, गंधाडो' गध्वापचीशी (-सी) स्त्री० गदहपचीसी गण्धामस्ती स्त्री० नासमझकी तरह तूफ़ान और शरारत करना गष्यादैतर्च न० कड़ी मेहनत; रगड़ (२) व्यर्थकी मेहनत सिद्भाग्य गनीमत स्त्री० ग़नीमत; ईश्वरकृपा; गप स्त्री॰ गप; अफ़वाह (२) झूठी [गपागप.] बात; डींग गप व० गपागप; झट। [--वईने == गपकाबबुं स॰ कि॰ गपकना गपगोळो पुं० गपोड़ा **गपसप स्त्री**० गपशप गपागप अ० गपागप; जल्दी-जल्दी गपाटी वि० गपोड़िया; गप्ती गपाहो प्ं० गपोड़ा; गपड़-चौय गपाववुं स० कि० छिपे-छिपे घुसामा गपाबुं अ० कि० छिपे-छिपे घुसना गपाब्दक न० गपड्वीथ; गप गपोड्झंस पुं० गप हॉकनेवाला गपोसियुं न० नागा (विद्यार्थीका शालामें से) (२)व्यभिचार । [⊶करवुं≕नाग्रा करना; गोता मारना ] गण्पी वि० गप्पी; गप हॉकनेवाला गप्पीदास पुं० गप हॉकनेका आदी; गपौड़िया **गप्पुं न०** गप्प; अफ़वाह गफलत स्त्री० ग्रफ़लत; बेखबरी (२) गलती; भूल

**गफलतियुं, यकलती** वि० ग़ाफ़िल; लापरवाह

**गफ्को** पुं० गप्फा; बड़ा कौर

गव अ० सट; चटसे

गवकावर्षु स॰ कि॰ गपकना

रौंदना (२) परेशान करना [ला.] गरबबियां न०ब०व० देखिये 'गदगदियां' गदावयुं स० जि० रेतमें दौड़ाना; थका [तौल (प्राचीन) डालना गवियाणो पुं० गद्याणक; आघे सोलेकी गदेलुं न० गदेला (२) गद्दा; तोशक गद्गद वि० गद्गद (२) अ० ऐसे कंठसे गवाडी स्त्री० गधी गधार्थं न० गया। शिवाडान् पुंछद् ्**पकववुं,पकडी राखवुं ==** हठ न छोड़ना । **गषाहाने ताव वढे एवं**्चनिरा मूर्खं;जो विलकुल नापसन्द हो । **गथाडे थेसव्**= बलील या बदनाम होना;नाम हुबाना । -गःथाहो बमवुं = बेवकूफ़ बनना. ] भधाको पुं० गधा (२) मुर्स; गघा [ला.]

गर्बणम

				<b>१</b> ३१	
0	गपागप;	चटचट	(२)		गमवं

नबगब अ स्त्री० अन्यकी बातोंमें बीचमें बोलना गवडगंड (-दुं) वि॰ मूर्ख; गबरगंड गवडगंडुं वि० गंदा और अव्यवस्थित गबद्ध अ० कि० लुढ्कना (२) लोटना (३) (बिना हरकत या विध्नके) चलना; निभना; आगे बढ़ना गवारो पुं० गुब्बारा; बैलून (२) गुब्बारा (आतिशवाजी) गबी स्त्री० गुच्ची गबो (--म्बो) पुं० सबी; मूर्ख (व्यक्ति) गभराट पुं० घबराहट [(२) भय गभरामण स्त्री० घबराहट; बेचैनी गभरावुं अ० कि० घगराना; अकुलाना; दुःस पाना (२) डर जाना गभव वि० गोरा और पुष्ट; गवरू (२) मासूम; भोला गभाण स्त्री० गाय-बैलको चारा-पानी देनेकी आड़ी लकड़ी रखकर बनाई हुई जगह; चरनी (२) गौवके पासका घासका मैदान; चरागाह गभार (--रो) पुं० (मंदिरका) गर्भागार गम स्त्री० ओर; दिशा (२) मन; मनका झुकाव (३) गति; पहुँच; (४) गम; सूझ; समझ। (--पबनो = सूझना; दिमाग़ या घ्यानमें आना.] गम स्त्री० ग्रम; शोक (२) सत्र;ग्रम-

- खारी। [-क्साबी = राम खाना.]
- गम पुं० कोक्ति (२) करीरका जोड़ → संघिस्यान । [-भागवा = पैरोंकी कक्तिका जवाब दे देना; पाँव कट जाना.]
- गमत स्त्री० विनोदे (२) मजा; आनन्द गमती वि० विनोदी (२) हैंसोड़; मजाक-पसन्द

अ० कि० भाना; रुचमा (२) प्रिय लगना; पसन्द वाना गमाण स्त्री० देखिये 'गभाण' गमाणियुं न० चरनीकी आड़ी रखी हुई लकड़ी गमार वि० मूर्ख (२) गैवार; उजह गमे ते स॰ (२) वि॰ कोई भी या. कुछ भी (३) मनोनुकूल; इच्छित गमे तेम अ० जी चाहे इस तरह; इच्छानुसार (२)निरंकुश या अमर्याद रीतिसे (३) अव्यवस्थित रूपमें; लस्टम-पस्टम । [--करीने = किसी भी उपाय या रीतिसे.] गमो पुं० रुचि; पसन्द गम्मत स्त्री० देखिये 'गमत' गयाव (-- वा)ळ पुं० गयावाल गर पुं० जहरीली बीट (छिपकलीकी) गर पुं० गूदा (फलका); मरेख; मज्जा (पेड़का) (२) मनका रहस्य; मर्म गरक वि०्ग्ररक; डूबा हुआ (२) लीन; गुर्क

- गरकवुं अ० कि० घेँसना (दलदलमें) (२) ग़र्क होना; डूबना (३) तन्मय होना; ग़रक होना
- गरकाब वि० ग़रकाब; मशगूरु
- गरगडी स्त्री० गराड़ी; चरखी (२) फिरकी; 'रील'

गरज स्त्री० ग़रख; अरूरत (२) स्वार्थ । [--पडवी ≕ग़रज होना; जरूरत मह-सूस होना । –सरकी ≕ग़रज सरना, निकलना.]

गरजवुं अ० कि० गरजना; दहाड़ना (शेरका) (२) कड़ककर बोलना; तड़कना [मंद; स्वार्थी गरजाउ,गरजी(०ऌं),गरजुवि० ग़रज-

गरजो	१३२ गर्सवंती
गरजो पुं० फ़ुनगी; अंकुर (२) कौटा; खड़ा खूटा (३) खुत्थी	फलोमेंसे निकलनेवाला गुड़ जैसा रेचक पदार्थ
गरहगप (-फ) अ० गड़पसे; चटसे	गरमाळो पुं० अमलतास
गरणी स्त्री॰ गुरुआनी; स्त्री-गुरु(२) जैन साध्वी	गरमी स्त्री० गरमी (२) गरमीकी बीमारी; उपदंश। [-आववीच उष्णता
गरज़ीजी स्त्री० जैन साच्वी	या जागृति पैदा होना ]
गरय पुं० अर्थ; धन	गरमी स्त्री० किलकी (बढ़ईका औड़ार)
गरदन स्त्री० गरदन; गला	गरमुं न० कटोरदान
गरदी स्त्री० भीड; मजमा	गरवुं वि० गौरवशाली; बड़ा;- महान
गरनाळुं न०पानी आने जानेके लिए जोड-	गरवुं अ० कि० गिरना; झड़ना(२)
कर बनाया हुआ सेकरा रास्ता; नाला	गड़ना; घीरेसे घुसना
गरबढ, (०गोटो), (०वुं),(०सडबड),	<b>गराडी</b> वि० व्यसनी ; भाँग, गाँजा आदि
( ०सरबड ), (-डाट), (-डियुं)	पीनेका आदी; पियक्कड़
देखिये 'गडबड' आदि	<b>गरास</b> पुं० गाँवकी रखवाली करनेके
गरनी स्त्री० स्त्रियोंके रागमें गानेकी	बदलेमें दी हुई जमीन या कुछ रक़म;
एक प्रकारकी कविता	जागीर (२) (राजवंशियोको) नि <b>र्वा</b> -
गरको पुं० नवरात्रमें या जवारा बोनेके	<b>हार्थ दी हुई जमीन; जागीर; इनाम</b>
समयकी बहुत छेदोंवाली गगरी जिसमें	<b>गरोब</b> वि० ग़रीब ; निर्घन (२) बापुरा;
लगातार धीका दिया जलाते हैं;	दीनहीन (३) नरम; रक; सीघा-
झिझिया (२) झिझिया या दियोंके	सरल [ला.]
झाडके आसपास वृत्ताकारमें घूमते	<b>गरीबग (गु) रबुं</b> वि० ग़रीब-ग़ुरवा
भूमते ताली बजाते हुए गाना (३)	सरीबाई, गरीबी स्त्री० गरीबी; कंगाली
एक प्रकारका रास या नाच; गरबा	
गरम वि॰ गरम; गर्म; उष्ण (२)	गरुड पुं०; न० गरुड (पक्षी)
शरीरमें उष्णता बढ़ानेवाला; उष्ण-	
वीर्य (३) कुढ़; जोशीला; उत्तेजित	
[ला.] । [-आग, लाग = बहुत गरम	
(२)अतिशय चरपरा।कपडः=ऊनी	
कपड़े; गरम कपड़े । <b>पडव्ं</b> ≕गरमीका	
. असर होना; शरीरमें गरमी लगना.]	गर्भ पु॰ गर्भ; हमल (२) मग्ज़;
<b>गरम मसालो</b> पुं० गरम मसाला	गूदा (३) किसी वस्तुका भीतरी हिस्सा;
<b>गरमागरम</b> वि० गरमागरम	पेट (४) नाटककी एक संघि; गर्भ
गरमागरमी स्त्री० गरमागरमी; झगड़ा	
<b>गरमाटो (वो)</b> पुं० गरमाहट; उष्णता	गभंवती, गभंवती वि० स्त्री० गभेवती;
गरमाळागो गोळ पुं० अमलतासकी	हामिला (२) स्त्री० गर्मिणो

-----

		<b>.</b>
गम	म्।	भल

	રત્ત ગઢનું
गर्मश्रीमंत वि॰ जन्मसे श्रीमंत; पोत-	गलोली स्त्री॰ छोटा गुरुला; गुल्ला
ड़ोंका अमीर	गलोलो पु॰ गुलेला
गल पुं० केंटिया; गलप्रह (मछलीका)	गस्लांतल्लां ने॰ ब॰ व॰ बहाने; टाल-
<ul><li>(२) धूस; लालच (३) पता; बात;</li></ul>	मटूल
समाचार (४) गूदा; मदत्र	गल्लो पुं०खजाना;गोलक (२)रोज़की
गरू पुं॰ विषैलो बीट या लार (२)	
बत्तीका बिलकुल जला हुआ सिरा;	गवडा (⊸रा) वर्षु स०कि०गवाना (गीत)
गुल (३) चिलममेंका तंबाकूका जट्ठा;	गवार पु॰ ग्वार (२) उसको फली
गुल	और बीज; ग्वारफली
<b>गलकी</b> स्त्री० नेनुआ (बेल); घियासोर्	गवारफळो, गवारसींग स्त्री० ग्वारफली
गलकूं न० घिया; नेनुआ (तरकारी)	गवार्यु अ० कि० गाया जाना (२)
गलगलियां न० द० द०, गलगकी स्त्री	१ बदनाम होना [ला.]
गुदगुदी [उसका फूर	<sup>5</sup> गवाह पं० गवाह, साक्षी
गलगोटो पुं० एक फूलका पौधा (२)	गवाही स्त्री० गवाही; साक्षी
गलबुं वि॰ वृद्धः बूढ़ाः, बहा	<b>गवैयो</b> पूं० गर्वैया; गानेवाला
<b>गरूपूर्धा</b> स्त्री० देखिये 'गळथूथी '	गळकां न० ब० व० गोते; डुबकिंयौं;
<b>गरुपटो (-हो)</b> पुं० गलेमें लपेटनेक	🤊 डूबते समयकी सिसकी। [-सातां=
पट्टी; गुलूबंद	गौते खाना]
<b>गलवो</b> पुं० फूलका एक पेड़	गळको पुं० एक दफ़ा चली हुई चीजका
गंस्ती स्त्री॰ देखिये 'गलीपची'	स्वाद लगना; चसका (२) रुचि;
गस्ती स्त्री० गली; कूचा -	शौक; चाह; अरमान
गली हू (- कूं) ची स्त्री० गली-कूचेक	ग <b>गळगळुं</b> वि० गुलगुला ; नरम ; पिलेपिला
टेढ़ा-मेढ़ा और सेंकरा रास्ता	(२)गद्गद; दुःखकातर
गलीगली स्त्री० गुदगुदी	गळचढुं वि० जरा मोठा
गलीच वि० ग़लीख; बहुत गंदा	<b>गळचव्रुं</b> स०किं० गले तक खाना ; ठूँसना;
गलीचो पु० देखिये 'गालीचो '	नाक तक भरना
गस्तीपची स्त्री० गुदगुदी	<b>गळचियुं</b> वि० गलेतक आये उतना;लब-
<b>गस्रूबियुं</b> न० पिल्ला	रेज (२) न० देखिये 'गळची' (३)डूबते
गलूबंद ( भ) पुं० गुलूबंद (पट्टी)	भनुष्यका डूबना-उतराना ; डुबकी
गलेफ पुं० गलेफ; ग्रिलाफ़; कपडेकी	ा <b>गळचो</b> स्त्री० गला; गरदन
स्रोली	गळच्,ं न० गला (तुच्छताद्योतक)
गलोटियुं न० कलैया; कलाबाजी	<b>गळणो</b> स्त्री० तरल पदार्थ छाननेका
गस्रोटुं (-फ़ुं) न० मुंहके भीतरका	
गालका भाग; गलफड़ा	गळण् न० दूष, पानी आदि छाननेक:
गलोल स्त्री० गुलेल (२) गुलेला (ढेला)	कपड़ेका टुकड़ा; छन्ना; छनना

गळली	१३४ बंठो
गढ़ती स्त्री॰ जलहरी (झिर्वालंग पर स्रटकाई हुई)	
गळणूणी स्त्री० घुट्टी; जनमर्षुटी	अपने उपयोगमें लेना (२) गले मढ़ना । गळे टांटिया आववा, भरावा 🛥
मळबरी, गळवाई, गळवी स्त्री० पित्त-	पळ टाट्या जाववा, मरावा <del>—</del> मुसीबतमें फ्रेंस जाना; विकट परि-
विकारके कारण गलेमें दाह होता;	'पुरायित के जात, जात, विमुट कर- स्थितिमें आ पड़ना। गळे प्रडवुं=ऐद
अञ्चनलिकाकी जलन	लगाना; गले पड़ना; मत्थे मढ़ना (२)
मळपण न० मिठास (२) गुड़, बाक्कर	हदसे ज्यादा आजिजी करना; गरे
आदि मीठी चीजें; मीठा	पड़ना । गळे बाझवुं, वळगवुं = देसिये
गळको पुं० उगाल; खखार	'गळे पडवुं'(२)गलेमें अटकना । <b>गळे</b>
गळनाणुं न० एक स्वादिष्ट पेय	हाम मुकवा = गलेकी सौगंध खाना.]
<b>भळव्ं</b> स॰ कि॰ निगलना (२) छानना	गळेपदु वि० हड़पनेवाला (२) तोहमती
मळमुं अ० कि० रिसना (२) गलना;	<b>गळो</b> स्त्री० गुड्रुच; गिलोय
पिंधलना (३) नरम होना; पकना (४) गॅल्क्स, सम्बन्ध, जिल्हे ज्वंच	गळर्षु वि० मीठा; शीरीं; मधुर
(४) र्षेसना; गड़ना। [गळी जवुं= गलेके नीचे उतार देना (२) ग्रम	गंगाजळी स्वी० गंगाजली (पात्र)
गणक गांव उतार दना (२) ग्रन बाना; सह लेना; पी जाना (३)	<b>गंगा नाहवी ≕ छ्</b> टना; बरी होना
बगर, तर जान (२) बिगड्ना या गलना.]	(पाप, जवाबदारी या जंजालमेंसे);
<b>मळच्चा प्</b> राण्डसान् । मळच्चा नं गला सूज आता; गलसुआ;	गंगा नहाना संगल्पनन सन् गंगानी सानाने सार घर
कनफेड यिला घोटना	<b>गंगापूचन</b> न० गंगाकी यात्राके बाद घर परकी जानेवाली गंगाकी पूजाकी विधि
गळाडूंथो पुं० गला घोंटकर जान लेना;	गंगास्यइत वि० पवित्र (विधवाके
गळाकांसो पुं० गलफांसी	नामके पहले आदरार्थ इस्तेमाल
<b>मळाबूड</b> वि॰ गला डूबे ऐसा(पानी आदि)	किया जानेवाला 'गं. स्व.' विशेषण)
गळामेच न० (सोना, चौदी आदि)	गंज पुं० गंज हेर (२) एक पर एक रखी
गलग्नेकी रीत या इसकी उजरत (२)	हुई एकसी चोजोंका ढेर; गहु
गलाते समय निकला हुआ कचरा	गंगांवर वि० बहुत बड़ा; जंगी
<b>गळाववुं</b> स० कि० गलाना	गंबी स्त्री० गंजी; घासका गंज
<b>गळिप्</b> वि॰ गरियार; परुआ (२)	मंजीकराक न० गंजी; बनियाइन
[ला.] निकम्मा (३) झक्की	मं <b>जीको</b> पुं० ताशके पत्तोंकी गड्डी; गड्ड
<b>गळिये</b> ल वि० नीलके रंगका; नीला	<b>गंजेटी(री)</b> वि॰ गॅंजेड़ी
गळी स्त्री॰ एक वनस्पति; नील (२)	<b>গঁঠাৰুঁ</b>
नील; दूली (रंग)	कर्मणिरूप;गौठा जाना(२)बढ़ते हुए
गळ्वं न॰ गला (२) आवाज; सुर।	पदार्थका गाँठ पड़कर अटक जाना; गाँव लगाना कि
[ <b>−कापवुं ≕</b> विश्वासंघात करना ; गला	गाँठ पड़ना [ला.]
काटना । रहेंसबूं, रेंसबुं = देखिये 'सर्व काएवं' । सर्वे साम्यां - जान पर	गंठियुं वि० ठग; घूर्त (२) गॅठकटा मंग्रे एं. फोक्स प्रकर्णन सम्प्रकरण सम्प्र
'गळुं काप <b>वुं ' । गळे आवर्षु =</b> जान पर	गंठो पुं० गलेका एक गांठा हुआ गहना;

<u></u>
गठाया

गाँठी; कंठा (२) कसकर बाँधी हुई गठरी; गौठ (३) गड्रा; गाँठ (४) बाठ कुटकी एक माप गंठोडो पुं० स्त्रियोंका पैरका एक गहना (२) हायका सोनेका सौंकड़ा (३) पीपरामुल; पिप्पलीमुल गंडूं वि० मुर्ख; पागल गंडेरी स्त्री॰ गेंड्रेरी (ईलकी); गुल्ली (२) लकड़ीके गोल छोटे बल्ले; कुंदे गंदकी स्त्री० गंदगी गंदबाड पुं०;स्त्री०, (-डो) पुं० गंदगी (२) अस्वच्छता गंदुं वि० गंदा; मैला गंबुंगोबर्य वि० गेंदला; मैला-कुचैला र्यब पुं०;स्त्री० गंघ; बास(२)बदबु; दुर्गंध (३) सुगंधी द्रव्य; चन्दन (४) तिलक; टीका (५) [ला.] ऍठ; षमंड (६) नापसंदगी (७) (लेश-मात्र ) स्पर्श ; निकटता ; उदा० 'मारे ऐनी गंघ पण न जोईए' **গৰক** পুঁ০ গঁধক [(२) सड़ना गंवायुं अ० कि० गंधाना; बूमारता गंधोर्ख् वि० वदवुदार (२) [ला.] ईर्षालु; अदेखी (३) झगड़ालू (४) अतिशय चिकने स्वभावका गंमत स्त्री० देखिये 'गमत' गाब पुं० कोस (क़रीब डेढ़ मीलकी नाप) गागर (र') स्त्री० गगरी; झोटा गगरा (२) हलककुद নাৰ পুঁ০ কাজ (ৰতনকা) गांबर पुं०; न० गाजर [विजली गाजबीब स्त्री० बादलोंका गर्जन और **गाववं अ**० कि० गाजना; गरजना (२) प्रसिद्धि होता; नाम आसमान पर होना [ला.]

गामा

- गावर न० भेड़
- गाडरियुं वि॰ भेड़से संबंधित (२) भेड़वाल चलनेवाला; अंधानुकरण करनेवाला
- गाडवं न० मेड़
- गा**डव्ं** स॰ कि॰ गाड़ना
- गाडवो पुं० वियाँड़ा (घी, तेल भरनेका)
- गाडालेडु पुं० गाड़ीवान
- गाडी स्त्री० गाड़ी; सवारी (रेलगाड़ी, बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी इत्यादि)। [– करदी ≕किरायेकी गाड़ी करना । –मां खालबुं = सवारी पर बिठाना या रखना.]
- गाडीत (--नाम) पुं० गाडीवान
- गढीमार्युं न० गाड़ी आदिका किराया; भाड़ा
- गाडुं न० कैलगाड़ी; छकड़ा (२) घर-वार; रोखगार [ला.]। [--गवडावखुं, कलाववुं == अपना व्यवहार धैर्यपूर्वक निभाना;गुजारा करना। [--धपाषखुं, हाकचुं ⇒ देखिये 'गाडुं गवडाववुं'। गाडे धडीवे == कुले आम (२) यकायक (मोत आना).]
- याड (-हुं)वि० गाढ़ा; ठस(२) घोर; अत्यंत; घना (अज्ञान; अधिरा) (३) गहरा; भारी (नींद)
- गार्चुं म०गाना (किया) (२) गीत; गाना गालडी स्त्री० गाती; वह गाँठ जो
- पालको स्थाप गरा, यह गाउ जा थिना सिया हुआ कपड़ा ओढ़कर गलेमें लगाई जाती है
- गातर न० ब० व० अवयव; अंग
- गाचा स्त्री॰ गाया; कथा (२) छंदो-बद्ध कथा; गाथा (३) श्लोक; उदा० 'बौद्ध गाथा' (४) प्राकृतका एक भेद; गाथा

		•
-		-
- 4	19	~
		-

मापम

	र प् म्यूम्म
गारलुं न० गदेला; भारी सोशक; गद्दा	[गाभेगाभा काकी नासवा = सस्त
गादी स्त्री० गद्दी; बैठनेका छोटा गद्दा	मरम्मत करना; खूब पीटना । गामा
(२) सेठ, महत आदिका आसन या पद;	नीकळी जवा == संख्त मार थड्ना;
गद्दी; गादी (३) सिंहासन; राजगद्दी	भुरकुस निकलना; थक जाना.]
<b>गादीतकियो</b> पुं० गद्दी और तकिया (२)	गाम न० ग्राम; गाँव (२) वतन;
मसनद ; गावतकिया [बैठा हुआ	वासस्यान । [ <b>–गांडूं के घेलूं करडूं</b> ≕
गाबीनझीन वि॰ गद्दीनशीन; गद्दी पर	रूपगुणसे गौनको वेश करना; वर्शमें
<b>मावीपलि</b> पुं० राजा (२) गद्दीका वारिस	करनाः; मोहित करना । <del>नुं</del> पाप,
गान न० गान; गाना; गीत	<b>नो उलार</b> ≕र्गांवका सबसे खराब
गानुसान् २०गाना-बजात्ता (२) सुख-	व्यक्ति । <b>-माथे करखुं =</b> सारे गाँवमें
चैन [ला.]	तलाश करना; गाँवकी खाक छानना ।
<b>गापची स्त्री० युक्तिपूर्वक निकाल लेना</b>	<b>-वज्ये रहेवुं</b> =सबके साथ इज्जतसे
या निकल जाना । <b>[मारवो =</b> (काम-	रहना.]
मेंसे या केहीसे) तरकीबके साथ	<b>गामई</b> वि॰ सारे गाँवका; ग्राम्य
निकल जाना; सोतां मारनर.]	गामठाण न० वह भूमि या स्थल जहाँ
गाफ (फे)ल वि० गाफ़िल ; असावधौन	गाँव बसा हो; गोट-बस्ती
गावची स्त्री० देखिये 'गापची'	गामठी वि० गौवका; गाँव संबंधी (२)
गावती स्त्री० छिद्र; सूराख (२)छोटा	गैवार; ग्रामीण [ला.]
गड्ढा (३) युक्तिपूर्वक निकल जाना	गामडियण स्त्री० गँवारिन; गँवार स्त्री
[ला] । [-मारवी = देखिये 'गापची	गामडियुं वि० गाँवका; देहाती; ग्राम्य
मारवी'.] [घाटा [ला.]	(२) असंस्कृत; उजडु
गावडूं न० वड़ा छेर (२) गड्ढा (२)	गामहियो पु॰ ग्रामीण; देहाती
गाभ पुरु गाभ; पशुका गर्म	गामहुं न० गेंवई; छोटा गाँव
गाभग(-मो) वि॰ स्त्री॰ गाभिन	गामतर्ह न॰ ग्रामांतर करना
(पशुकी मादा)	गामस(-सा)रणी स्त्री० सारे गाँवको
गाभदं वि० घडराया हुआ; हक्का बक्का	भोज देना सम्बद्ध दिन वेफिसे (सम्पर्ह)
मामलुं वि० नरम; गुदगुदा (२) न० घुनी	गामात वि० देखिये 'गामई' भारेणी पंत्र गाँवचा समयाः प्रविणय
हुई नरम रुई; गाला (३) बादलोंका समन	गामेसी पुं० गाँवका अगुआ; मुसिया (२) <del>गाँवका कौर्</del> गीयातः गोप्टन
समूह मामो पंत्र जन जीवा जिनको जिनको	(२) गाँवका चौकीदार; गोड़इत च्चेन्ट्रं २० टेल्ट्रिये ' <del>गायरप्रग</del> रि'
गामो पुं० वह चीज जिससे किसी चीजके भीतरका खोखलापन भरा	गामेरुं न० देखिये 'गामसारणी' क्योन कि जीवन (२) गणण (३)
जाय; गाभा (२) पगड़ीके नीचेका	गामोट वि० गाँवका (२) ग्राम्य(३) गंद प्रोटन: गामगाजी
भाष, गाना (२) परड़ाक नाचका कपड़ा; तहपेच (३) जेवरके भीतरकी	पुं० गौवका पुरोहित; ग्रामयाजी सम्प्रेलवं २० टेपिये (सम्प्रहरं)
गणज़ा, तहापण (२) अवरक मातरका ताँबे-पीतलकी सलाई (४) मग्ज़;	गामोतरं न० देखिये 'गामतरुं' जनस्य करित प्रयास स्वय
	गाय स्त्री० गाय; गऊ
गूदा; हीर (५) गूदड़; चिथड़ा।	गत्यब वि० ग्रायव; अदृश्य

गार	,
-----	---

१३७

ঘাত

गार स्त्री० मिट्टी और गोबरका रुप;
गारा [जादूगर
<b>गावडो</b> पुं० गारुडी (२) मदारी (३)
गारोपुं० कीचड़ (२) गारा (३) पीसा
हुआ चूना
<b>गास्ठ</b> पुं० गाल
<b>गाल्पचोरि(-ळि)यां</b> न०ब०व० गलेके
भोतरकी गाँठका सूजना; गलशुंडी
<b>गालमज्ञू (–सू)रियुं</b> न० गलतकिया
<b>गालीचो</b> पुं० गालीचा; कालीन
गाल्ली स्त्री० छोटी बैलगाड़ी (२)
(कज्चे) तीस मनकी एक नाप
गारुर्लुं न० छकड़ा; सम्गड़; गाड़ा
<b>गावडो</b> स्त्री० गाय; गैँया
<b>गावडोल</b> पुं॰ मुख्य मस्तूल
गावली स्त्री० दलाली [ काष्ठी जवुं =
कामके बोझमेरी छटकना; जवाब-
दारीमेंसे हटना.] [1ाल
गावी पु० मुख्य मस्तूल पर ताना हुआ
गावुं स०क्रि० माना (२) [ला०] बखान-
ना; गुण गाना (३) एक ही बातको
बारबार कहना; दोहराना । <b>[गाया</b>
<b>करवं ्=</b> (एक ही बातको) बारबार
कहना.]
गाशा (←शियो) पुं० घोड़ेके जीनके नीचे
डालनेका नमदेका टुकड़ा; अर्क्नगीर
गाळ स्त्री० गाली
गाळ पुं० खूद; निथार
गाळवुं स० कि० छानना (पानी आदि)
(२) उगारना; ओगारना(कुआं आदि)
(३)गुलाना (घातु आदि) (४)गुला-
ना; सोखना; कम करना(५)बिता-
ना; काटना; गुजारना(६) भबकेसे
अर्क खींचना; चुआना; खींचना
<b>याळंगाळा,याळामाळी स्त्री</b> • मालीगलौज

गाळियुं	न०	गरांव	(२)क	ार्यंका	भार;
जिस्मे	वारी	[ला]	(३)	छनन	ז (א)
खूद ;	নিখ	गर ँ			• •

- गाळी पुं० अरिवन; फंदा (२)मीआद; अवधि (३)मौसम; उदा० 'केरीगाळो' (४) घरका विभाग; कमरा (५) (दो स्थल या कालके बीचका)अंतर (६)अर्ज; चौड़ाई; पनहा (७)अमुक स्थान; प्रदेश (८) चक्कीमें झींका डा-लनेका गड्ढा; मुँह (९) चूड़ीका घेरा (१०) शरीरकी गठन; काठी (११) दर्रा; धाटी (१२) बट्टा; लाभकी मात्रा; 'मार्जिन' (१३) औतोंमें छनकर जमा हुआ मल (१४) स्त्रियोंका एक बारीक वस्त्र
- गांगडो (०) स्त्री० डली; छोटा टुकड़ा
- गौगडुं(०) वि० जो भीगे नहीं और पके नहीं (२) पुं० ठुर्री; ठुड्डी । [-रहेवुं = पकाने पर भी दानेका न पकना (२) न मुघरना (३) दोनों पक्षोंमें अप्रिय बनना.]
- गांगडो (०) पुं० डला;रवा(२)कपासकी डोंडी जो फटी न हो [(ऊँटका)
- गांगरवुं (०) स० कि० बलबलाना
- गांगुं(०) वि० रौक; दीन (२) बेशऊर गांजयुं(०) स० कि० झाँसना; चकमा देना; फुसलाना (२) हराना (३) बदना;गिनना। [गांज्युं जवुं = चकमा दिया जाना (२) किसीसे प्रभावित होकर दबना.] [पत्तियाँ) गांजो (०) पुं० गाँजा (पौघा और गांठ(०) स्त्री० गाँठ; गिरह; गुत्थी (२) पेडका वह भाग जहांसे डाली फूटती है; पोरोंका जोड़;गिरह(३)

लकड़ीमें भँवरीका गाँठ जैसा भाग;

## गांठगळफो

शांसनी

110-120-121	<b>र</b> २८ गावणा
मैंबरी (५)गौठकी शकलकी जड़ (जि	गट्टा (२) बेसनकी तली हुई एक
समेंसे अखुआ फूटता है) (५)लह जग	
जानेसे शरीरमें होनेवाली गौठ; गुल	गठिसे संबंधित; गठिदार; उदा०
थी; गिलटी(६)एक रोग; प्लेगर्क	ी 'गांठियो ताव,'
गिलटी (७) [लां०] बैर; कीना (८)	
मेळ; गठौती। [-करबी = छिपे तौ	
पर पैसा इकट्ठा करना; गाँठ करन	।। गांडो (०) पुं० बड़ी गांठ; पोरोंके
(२)एका करना (३)बैर मोल लेना	। जोड़के पासका हिस्सा
<b>—थालवी =</b> लहूका गाँठके रूपमें जम	म गांड(०) स्त्री० गांड; गुदा (२)पेंदा;
आना (२) गिल्टीकी पीड़ा होना	। तला [स्त्री० पागलपन
<b>-नीकळवी =</b> प्लेग होना । <b>पडवी</b> =	= गांडछा (०) स्त्री०, (-पण) न०, गांडाई
(दोरीमें) गौठ पड़ना (२) मित्रत	ा <b>गांबियुं</b> (०) बौड़म; पागल; सनकी
होना (३) बैर होना; गाँठ पड़ना	। गांडुं वि०पागल; धनचक्कर; नासमझ;
— <b>–व.ळवी ≔</b> निष्चय करना; गाँठन	n सनकी (२)न० मूर्खताका काम या आ-
[ला.] ।मुं गोपीचंदन करवुं वे	<b>के</b> चरण <u>(</u> ३) (चौसर आदिमें) पक <b>आने</b>
<b>धलर्षु =</b> ख़ुदके पैसे खर्च करके ख़ुदक	· · ·
ही नुकसान करना। गांठे <b>करबुं</b> =	= = नासमझीका काम करना (२)गोटी-
े देखिये 'गांठ करवी '। गांठे <b>वांध</b> य	
⇒ अपने क्रस्बेमें करना; गाँठ बाँधना.	
गांठगळफो (०)पुं० गांठ या फुचड़	
(सूतके धागेमें) (२)खटका; संशय	
<b>गांठरी</b> (०) स्त्री० गठरी (२)गठरी ; धन	न गांदर्थ (०) न०, (-रो) पुं० गाँवके
<b>थांठडो</b> (०) पुं० गट्टर; गट्ठा	पशुओंके खड़े होनेकी सिवानके
<b>गाठन</b> (०) न∙ जोड़; संघि (२) दे	
् तारोंको जोड़नेवाली गाँठ (३) गाँठ	
नेके घागे (४) गाँठनेकी कला	गांचियाटुं(णुं)(०) न० देखिये'गां-
गोडनुं (०) वि० गौठका । [उमेरबुं ≠	
नमक-मिर्च मिलाना । –गोपीचर	
करबुं = अपने ही पैसे खर्च करके अपना	
ही नुक़सान करना.]	गांघीवट् (०)न०,(-टो)पुरुपसारीका
गांठवुं (०) स० कि० गाँठना (२) गाँठ	
लगाना (३)गाँठ करना (४)बदना ; संगणना	; होना [ला.]
समझना गांठाळूं(०) वि० गौठदार	<b>गांयजण, गांयजी</b> (गा <sup>र</sup> ०) स्त्री० नाइन संस्को (गार्ट) पंत सर्वर (२) आहंतनी
गाठाळू(०) विण्याव्यार गाठियो(०) पुं० सुलाई हुई हलदीका	गांवजो (गा'०)पुं० नाई(२)आढंबरी र स्पन्ति (मर)
AURALLA JA GALS BS BOG (4)	त व्यक्ति [सा.]

	e.
11111	П

गांसबो (०) स्त्री० गठरी: गाँठ (रूईकी) गांसहो (०) पं० गटुर । गिंसहां पोटलां बांचवां = बोरिया-बैंधना उठाना.] गिटकोडी स्त्री० गिटकिरी गिनती स्त्री० गिनती: हाजिरी लेना गिनी स्त्री० गिनी; गिन्नी गिजाब अ० कि० (पतंगका) कश्री खाला; कनियाना (२) नाराज होना; रिसाना **गिरदो** स्त्री० भीड गिरफतार वि॰ गिरफ़्तार(२)तल्लीन गिरफतारी स्त्री० गिरफ़्तारी विरमा **पिरमीट न० छेद करनेका औजार**: गिरवी अ० देखिये 'गीरवी ' गिरो अ॰ (२) पं॰ देखिये 'गीरो ' विलेट पुं० गिलट; मुलम्मा **विल्ली** स्त्री० गिल्ली; गुल्ली (२) गिलटी; गौठ; सूजन बिल गिल्लीबंडो पुं० गुल्ली-डंडा या उसका गौगौ स्त्रो० छोटी लडकी ; वच्ची गीयो पुं० छोटा लड्का; बच्चा गीच वि॰ चना गीचोगीच अ० खचाखच (२)वि० बहत **भनाः धनिष्ठ** गीष न० गीध; गिद्ध गोनी स्त्री० गिन्नी: गिनी गोरणी स्त्री० मिल गोरववं स० कि० गिरवी रखना गीरबी अ० गिरवी; गिरो गिरवी गीरो अ० गिरवी (२)पुं० गिरो; बंधक; गीरोज्ञत न० गिरवीनामा; रेहननामा गीस स्त्री० चोरी। [-पडवी = घाटा या नुकसान पहुँचना । --मारबी = चुराना.] गुध्रपुध अ० फुसफुससे; चुपकेसे(२) गिचपिच; अस्पष्ट (लिखावट)(३) स्त्री० फुसफुस

वुषर

गु <b>वपुचियं</b> वि० गिचपिच; अस्पष्ट
गुच्छ(च्छो) पुं० गुच्छा; गुरुदस्ता
(२) बालोंका गुच्छा; जुल्फ़
<b>गुजरडुं</b> न० गणपतिके आगे रखनेका
मिट्टीका पात्र (२)गारेकी गाअर जैसी
आकृति जो मांगलिक प्रसंगों पर
वेदी पर रखी जाती है
गुजरबुं अ० कि० गुजरना; बीतना (२)
गुजरना; सिर पर आ पड़ना; कष्ट
आना (३)स० कि० जाने देना; माफ़
करना । <b>[गुअरी वर्षु</b> = चल वसना;
मर जाना.]
गुजरात न० गुजरान; निर्वाह
<b>गुजरी</b> स्त्री० शहूर-क़सबेमें लगनेवाला
बाबार; गुजरी; हाट
षुवारब् स॰ कि॰ गुवारना; विताना
(२) पेश करना;दाद माँगना;गुजा-
रिश करना (३) दुःख देना; सिर
पर पहाड़ गिराना
<b>गुजारो</b> पुं० गुजारा; गुजर; निर्वाह
<b>गुटको</b> पुं० गुटका (पुस्तक)
गुटपु(-मु)टअ० (सोनेके लिए)वरा-
बर रुपेटकर; झुरमुट मारकर
गुम पुं० गुण; जाति-स्वभाव; मूल
लक्षण (२) सद्गुण । [-ऊतरी मावना
= अच्छा स्वभाव या गुण विरसेमे
मिलना ] (३) प्रकृतिके तीन गुण-
सत्त्व, रज, तम (४) (इन परसे)
तीनकी संख्या; गुण (५) असर;
फ़ायदा । [-करको – फ़ायदा पहुँचा
ना; असर करना (दवाका).] (६)
उपकार; उदा० 'तेणे गुण पर अवगुण
कर्यो ' (७)प्रत्यंचा (८) डोरी ; घागा
रस्सी; गुण(९)अंक; 'मार्क'
गुलका स्त्री० गणिका; वेश्या

नुचनुष

www.kobatirth.org

गुणगुण अ० गुनगुनाकर गुणवत्ता स्त्री० गुणयुक्तता; गुणोपेतता (२) उत्तमता; श्रेष्ठता गुणवंसी वि० स्त्री० गुणशालिनी **नुभवाचक** वि० गुणवाचक (विशेषफ) **गुणव्** स० कि० गुणा करना गुणाकार पुं० गुणा; गुणन (२) गुणनफल नुणियस नि० सद्गुणी; गुणाढच गुणी वि० सद्गुणी (२) गुणवान पुरुष (३) कलाकोविद (४) जंतर-मंतर करनेवाला ; जंतरी [(२)सज्जन **नुमोजन** पुं०; न० गुणग्राहक; क़द्रदान गुनेगार वि० गुनहगार; अपराधी **नुभेगारी स्त्री० गुनहगारी; अपराध** गुनो(नो') पुं० गुनाह; जुर्म **गुपच्प** अ० गुप-चुप; चुप-चाप **गुप्ती** स्त्री० गुप्ती **गुफा** स्त्री० गुफा; खोह; कंदरा गुफ्त (-- फ्ते) गो स्त्री ॰ गुफ़्तगु; बातचीत **गुबारो** पुं० देखिये 'गबारो ' गुम वि० गुम; लापता; गायब गुमसूम अ० गुमसुम; स्तब्ध **गुमान** न० गुमान; गर्व **गुमानी** वि० गुमानी; अभिमानी **गुमाववुं** स० कि० गेवाना (२) नष्ट करना ; उड़ा देना गिरी गुमास्तागीरी, गुमास्तो स्त्री० गुमावता-**गुमास्तो** पुं० गुमा**र**ता ; कारकुन **नुम्मो** पुं० घूँसा; मुक्का **गुरको पुं**० गोरखा गुरदो पुं० गुरदा; मूत्रपिंड; ' किडनी ' **गुरु** वि० गुरु; बड़ा (२)भारी; वजन-दार(३)दीर्घ(४)पुं० गुरु; शिक्षक (५) पुरोहित (६) बृहस्पति (ग्रह) (७)गुरुवार

गुरुकूंची स्त्री० अनेक तालोंको	लगने-
वाली ताली-कुंजी (२) कैसी भ	गे परि≁
स्थितिमें कारगर होनेवाली	युक्ति,
उपाय, साधन आदि;गुर	

- **যুকৰ্ম, যুক্ষাই** পুঁ০ যুহসাই **गुरुवार पुं० गुरुवा**र; बृहस्पतिवार
- **गुर्जर** वि० गुजरातका (२)पुं० गु<del>उ</del>जर जाति (३)गुर्जर; गुजरात (४) गुज-रातका रहनेवाला; ग्जंर
- गुर्जरी स्त्री० गुर्जरी; गुजरात देशकी स्त्री (२) ग्वालिन ; गूजरी (३) एक पु∽ राना गुजराती रास (४)एक रागिनी; गुर्जरी (५) गुजराती (भाषा) (६) गुजरात-रूपी देवी(७)वि० गुजरातसे संबद
- गुल न० गुल; फूल (२) गुलावका फूल (३)वत्तीका सिरा जो बिलकुल जल गया हो ; गुल [ला.] । [-करबुं = दीया ठंडा करना ; चिराग़ गुरु करना । **--वर्षु** =दीया बुझना; चिराग गुल होना ]
- गुलछड़ी स्त्री० फूलोंका एक पेड़ (२) जसका फूल (३) गुलाबके फूलोंका गुच्छा (४) एक गहना
- गुलजा(-सा)र पुं० गुलाबवाडी; फुल-
- वारी (२)वि० गुलजार ; रम्य
- गुलतान वि० मशगुल; तल्लीन

गुलमोहर(२)उसका फूल

गुलाब न० गुलाब (फूल और पौधा)

- **गुरुतोरो** पुं० गुलाबका गुच्छा ( २ ) फूलों-
- का एक पेड़

गुरुवांग न० गुरु-गपाड़ा (२) हँसी-

- गुलनार पुं० अनार

नुसाबजळ	१४१ गूमूतर
गुलाबजळ न० गुलाबजल	गुंब (०र) पुं० गोंद; नियसि (२) चिप-
गुरुवकांबु न० गुलावजामुन	कानेके काम आनेवाला <b>बबूल</b> का गोंद
गुलाबदानी स्त्री० गुलाबपाश; दमकला	
<b>गुलाबो</b> वि० गुलाबी (२) मजेदार;	हुआ पाक (२) एक मिठाई (३)
हरुका (मींद, तबीयत, जाड़ा आदि)	मार [ला.]
(३) स्त्री० हलका लाल रंग; गुलाबी	<b>गुंदरियं</b> न० गोंददानी (२) चमचि <b>च्यड़</b>
<b>गुलाम्</b> पुं <b>ृ गुलाम</b> ; दास (२) पराघीन	
ब्यक्ति [ला.]	गुंदियुं न० गोंददानी
<b>गुल्लमखत</b> न० गुलामीका प्रतिज्ञा-पत्र	<b>गुंधज</b> पु०- सुंबज ; सुंबद
(२)परतंत्र बनावे ऐसा लेख क़रार	मू न० गू; मैला
<b>गुलामगीरी</b> स्त्री० देखिये ' गुलामी '	गूगळ पुं० गूगल; गुगगुल
गुलामही स्त्री० लौडी; दासी	गूज(
<b>गुलामी</b> स्त्री० ग़ुलामी (२)ताबेदारी;	(दोनों ओर नोकवाली तस्ते जोड़नेकी)
दासत्व (३)पराधीनता	कौली (३)वि० गुप्त ; गुह्य
<b>गुलाल पूं</b> ०; न० गुलाल; अबीर	गूडलुं न० लोई (पापड़की)
<b>गुरुगंट</b> (०) स्त्री० जलाबाजी (२) उलट	<b>गूडवुं</b> स० कि० काटना (२) गोड़ना;
जाना ; पलटा खाना [ला.] । [ <b>-मारवी</b> ,	खोदना [ध्वज
रूगाववी = स्थितिका या बातका पूर्ण-	गूडी स्त्री० उत्सवके दिन गाड़ा हुआ। सनी सनने पंत्र के सम्बद्ध के जिल्ला
तः परिर्वातत हो जाना ; पलटा खाना.]	गूडी पडडी पुं० चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सको होन प्राप्त (कैप्सर) (२) प्राप्त (निष्
<b>गुल्ल्ं</b> न० (पापड़की) लोई	गूडो पुं० तला (पैरका) (२) बल । [गूडा भौगला + पैटोंगें सजित न पत्रका
<b>गुसपुस</b> स्त्री० फुस-फुस; कानाफूसी	भौगवा ≕ पैरोंमें शक्तिन रहना; पौन कर उसक (२) जन्मि
गुस्ताली स्त्री० गुस्ताली; अशिष्टता	पौव कट जाना (२) झक्ति खत्म कर देना.]
<b>गुस्सो</b> पु॰ गुस्सा; कोध केंद्र जेवन केंद्रिय के	गूण स्त्री० गोनी; गोन; बोरा(२) बैल
गुंगुं वि० देखिये 'गूगुं 'वि० मेल न	या गर्धे पर अनाज लादनेका दोनों
गुंज न॰ रहस्य; छिपी हुई बात (२)	ओर लटकनेवाला थैला; गोन (३)
ंस्त्री० गुजा(३)गुत्यी; उलझन संदर्भ आ० कि० गुजुर्म, जुजुर्मन	(कच्चे) चार मनकी नाप
<b>गुंजवं</b> अ० कि० गुंजना; गुनगनाग संचय (०स) पंच संचलनः जेंद्र (२)	गूणपाट न॰ पटसनका मोटा टाट (२)
गुंजार (०व) पुं० गुंजार; गूंज (२) अवाकन भाग भ्वतिः संतन्तः क्लान्ति	न० ब० व० उसके कपड़े या उनके
अव्यक्त मधुर ध्वनि ; गुंजन ; कलध्वनि गंजास स्त्री व्यापर्यं : वैयियन : गंजानय	पहननेकी जेलकी सजा
<b>गुंजाज्ञ स्त्री</b> ०सामर्थ्य ; हैसियत ; गुंजाइज्ञ गुं <b>ठो</b> पु० जमीतको एक नाप(एकडका	गूणियुं न० गोनी; बोरा
पुरा पुर प्रमागमा एक माप(एकड्का) चालीसवाँ हिस्सा)	गूणियो पु॰ ताँबेका घड़ा (२) थैला;
<b>गुंडागोरी</b> स्त्री० गुंडागोरी; बदमाशी	गोनी (३) गोनिया (कारीगरका आला)
गुँडो वि० गुंडा; बदमाश (२) पुं० गुंडा	गूमड(हुं) न० कोड़ा
(आदमी)	<b>गूमूतर</b> न० गू-मूत; मल-मूत्र

-	_	
- The second		
- 1	••	•

# गेरफायदो २)ग्यनेकी

<u> </u>	
<b>गूलर</b> न० गूलर (पेड़ और फल) (२)	<b>गूंधण</b> न० गूंथना; गुंफन(२)गूं <mark>यनेक</mark> ी
कानका एक गहना	किया ; गुंधावट (३) गूंयनेकी कला
<b>गूलवं</b> न० पापड़की लोई (२) देखिये	गूंचजी स्त्री० गूँथनेकी किया; गुंचावट
'गूलर' (३) पालनेमें लटकानेका	(२)गूँधनेकी कला (३)उसकी उजरत
लकड़ीका एक खिलौना	<b>गूंधवुं</b> स० कि० यूंथना; गूथना; गुंफना
<b>गूंगण्</b> वि० गुनगुना; नाकसे बोलनेवाला	<b>गूंचाववूं</b> स० कि० गुथवाना
<b>गूंगळामण</b> न०; स्त्री० दम घुटना	<b>गूंचामुं</b> अ० कि० गूँथा जाना; गुयना
गूंगळाववुं स॰ कि॰ घोंटना (दम)	गूंबगुं स॰ कि॰ खूंदना; रौंदना (२)
गूंगळाणुं अ० कि० घुटना; सौंस र्वधना	गूँधना; मसलना (३) मारना;
<b>गूंगुं</b> वि० गुनगुना; नाकसे बोलनेवाला	पीटना [ला.]
(२)गूँगा; मूक (३)न० गुजी; नाकका	<b>गूंदापाक पुं०</b> एक मिठाई (२) मार [ला.]
सूला मेल	गूंबी स्त्री॰ गोंदनी (पेड़); गोंदी
गूंगो पुं० गुजी;नकटी; नाकका सूखा	<b>गूंब्ं</b> न० गोंदनीका फल; गोंदनी
सैल (२) एक प्रकारका कीड़ा	<b>गृहकार्य</b> न० घरका काम-काज (२)
गूंच स्त्री० गुत्थी (२) उलझन; कठि-	गृहकार्य (विद्यार्थीका)
नाई [ला.] । [ –उकेलवो = गुत्थी	गृहप्रवेता पुं० गृह-प्रवेश (२) दंडनीय
क्रोलना (२) मसला, उलझन हल	अनधिकार प्रवेश
<b>करना ;</b> सुलझाना । <b>–पडवी =</b> उलझना	<b>गृहलंसार</b> पुं० गृहस्थी; घर-गिरस्ती
(तागा, डोरा) (२) उलझन पैदा	गेड (गॅंड,) स्त्री० (कपडेकी) तह;
होना (३) मुसीबत आना.]	परत (२) चुनट ; सिलवर्ट (काग्नजकी )
गूंधवण स्त्री० (ताया, डोरी आदिका)	(३) मेल साना; बनत [ला.] ।
गुच जाना; उलझना (२)असमंजस;	[- <b>-वेसवी =</b> समझा जाना; खयालमें
<b>दुविधा</b> ; चक्कर; फेर	आना (२)सुराग्र मिलना; पता लगना.]
गूंचवचुं स॰ कि॰ उलझाना; फेंसाना	गेडी स्त्री० गेंद मारनेका एक सिरेसे
<b>गूंचवाढियुं</b> वि० पेचीदा; टेढ़ा	मुड़ा हुआ डंडा 🛛 [खेला जाता खेल
<b>गूंचवाडो</b> पुं० देखिये 'गूंचवण'	गेडीवडो पुं० गेंद और डंडा या उनसे
<b>गूंचवार्त्</b> अ० कि० उल्झना (तागा,	गेब(यें) वि॰ गायब (२) न० गैब
डोरा आदिका) (२)फेंसना; हल न	गेबी (गॅ) वि० गैबी ; गुप्त ; गूढ़
पाना [ला.] (३)अकुलाना; घबराना	गेर पुं० झड़ा हुआ चूरा; झाड़न
गुंचक्की स्त्री० लच्छी; अंटी	गेर (गॅ) ग़ैर (पूर्वग)
गूँबळुं न० गोलाकार लपेटी या ऐंठी	<b>गेरइनसाफ</b> (गॅ) पुं० गैरइनसाफ़ी
ेंहुई चीज; गेंड़ली	<b>गेरकायदे</b> (गॅ)वि० (२)अ० ग़ैरक़ानूनी ;
<b>गूंचानुं</b> अ० कि० देखिये 'गूंचवावुं'	अवैघ
<b>गूंछळी, गूंछळुं</b> देसिये 'गूंचळी', 'गूंचळुं'	<b>गेरकायदेसर</b> (गॅ) अ० ग़ैरकानूनी ; अवैध
गूंब्रुं (-मुं) न॰ जेब; सीसा	<b>गेरफायदो</b> (गॅ)पुं० नुक़सान;ें हानि
	· · ·

	5	
ग	 ΠR	atta
•		

गोटसीवांच

गेरवंबीवस्त (गॅ)पुं० अव्यवस्था ; गड़बड़	गोकळियुं न० गोकुल (गांव) (२)वि०
<b>गेररस्ते</b> (गॅ) अ॰ बेतरीके; नाजायज	गोकुलका
रीतिसे [अनुचित लाभ	गोकळो पुं० ग्वाला; अहीर -रेन्ट्रेन्ट्रेन्ट्र
गे्रलाभ (गॅ) पुं० घाटा; नुक़सान (२)	गोकीरो पुं० गुल-गपाड़ा; शोर
गेरवतंगूक (गॅ) स्त्री० अयोंग्य आचरण	गोस(गॉ) पुं० गोसा(२)ताक; आला
गेरवल्ले (गॅ)अ० बेठिकाने। [-अवुं,पडवुं	गोसण न० घोलना; रटाई
= ठिकाने न लगना ; योग्य जगह पर	गोलमपट्टी स्त्री० घोलना; रट डालना
न पहुँचना (२) खो जाना.]	गोसणिमुं वि० घोसनेवाला; रटनेवाला
<b>गेरववुं</b> स० कि० गिराना; झाड़ना	गोलर पुं०; न० गोलर (वनस्पति और
<b>गेरवहीवट</b> (गॅं) पुं० अंघेर; अव्यवस्था	बीज)
<b>येरवाजनी</b> (गॅ)वि० ग़ैरवाजिब; अनुचित	गोक्सली (गाँ) स्त्री० छोटा ताक्र
गेरबो पुं० गेरुआः; गेरुई (रोग)	गोचलो (गाँ) पुं० गोखा; ताक
गेरव्यवस्पा (गॅ) स्त्री० अव्यवस्था;	गोसवुं स० कि० घोसना; रटना
घोटाला [ग्रलतफ़हमी	गोचर वि० गोचर; इंद्रियग्राह्य (२)
<b>गेरसमज (-जूत, -जूती)</b> (गॅ) स्त्री०	न० गोचर; चरागाह
<b>वेरहाजर</b> (गॅ) वि० गैरहाजिर	गोवरी स्त्री० गोचरी; भिक्षा
<b>गेरहाजरी</b> (गॅ) स्त्री० गैरहाजिरी	गोचलुं न० गोलाकारमें या टोलीमें
<b>गैर्व</b> पुं०; नर्० गेरू (२)गेरुआ (रोग)	इकट्ठा होना । <b>[गोचलां गणवां =</b> पार
गेदओ (वो) पु॰ गेरूका रंग; भगवा	न पाना; आगा-पीछा करना; न
गेरेज (गें) न॰ मोटरखाना; गराज	सुलझाना.]
गेरो पुं० गिरा हुआ चुरा; झाड़न	गोझ।दं वि० गायकी हत्या करनेवाला;
गेल(गॅ) न० दुलार; प्यार (२)दुलार-	पापी (२) जहाँ हत्या हुई हो ऐसा;
भरी कीड़ा	अपवित्र (स्थल) [हत्यारा
<b>गेस(</b> गॅ) पुं० गैस(२)जलनेवाली वायु	गोझारो पुं० गोहत्या करनेवाला(२,)
जो कोयलेमें से निकाली जाती है; गैस	गोट पुं० घटा (धुएँकी) (२)घूँट(३)
<b>गेंघट</b> (गॅ०) वि० (नझेमें) चुर	स्त्रियों और बच्चोंके हायमें पहननेका
गेंडी (गॅ॰) स्त्री॰ मादा गैड़ा	एक गहना (४)गोट; मग्रखी
गेंडी (गॅ०) पूं० गेंडा; गैंडा	<b>गॅाटपीट</b> न० गिटपिट
गौ स्त्री० गो; गाय (२) इंद्रिय (३)	गोटपो (-मो )ट अ० देखिए ' गुटपुट '
वाणी ; गिरा (४) पृथ्वी (५) आकाश	गोटली स्त्री० गुठली (२)गुठलीके भीत-
गोकळमाठम स्त्री० जन्माष्टमी; कृष्णा-	रका गूदा; गिरी (३)काममें से गोता
ष्टमी	मारनाः, नागा। [-मारवी = काममेंसे
<b>गोकळगाय</b> स्त्री० वीरबहूटी; इंद्रगोप	युक्तिपूर्वक निक <mark>ल</mark> े जाना; ग्रोता
(२) सींगोंवाला एक कीछा (इसे	मारना.]
ईप्वरकी गाय भी कहते हैं)	गोटलीबाज वि० कामचोर

गोटली

188

मोर्मु

- **धोटलो** पुं० गुठली (२) मांसपेशी । [--चडवो = मांसपेशी पर ब्रल पड़नेसे उसमें दर्द होना.]
- गोटाचुं अ० कि० अंधड़की तरह गोल-गोल घूर्मना और छा जाना (२) जलते समय घुआँ होना (३) जटिल होना
- गोटाळो पुं० घोटाला; अव्यवस्था (२) असमजस; पसोपेश (३) (पैसोंके मा-मलेमें)गोलमाल; घपला। [-वळवो = अव्यवस्था होना। -वाळवो = गोल-माल, घपला करना.]
- मोटी स्त्री० गुटी; गोलो; गुटिका (२) छोटी गाँठ [बाजी
- गोटीमडुं, गोटीलुं न० कलैया; कला-
- धोटीलो पुं० रुई धुननेका गुंबददार डंडा; बान; मुठिया (२) पिंडा;गेंद (३) (पक्षोका) कंठा (४) कपड़ेको बटकर बनाया हुआ कोड़ा
- गोटो पु० गोला; पिंडा(२) फूलोंकी कल-गी; गुच्छा (३) एक प्रकारका फूल (४) (धूल या धुएँका)बादल; बगूला (५) फलके भीतरकी गोल गिरो; गोला; उदा० 'नारियेळनो गोटो' (६)घोटाला; घपला[ला.]।[--घास्त्रवो = घोटाला, गोलमाल करना (२) चूल्हेमें आग रखना; सुलगाना (३) फूट डालना। -वळवो, वाळवो = देखिये 'गोटाळो वळत्रो, वाळवो ? गोठ (ठ,) स्त्री० गोठ; गोष्ठी; रहस्य (२) गोट; वनभोजन (३) हॅसी-मजाक; दिल्लगी (४) मित्रता (५) भेंट; नेग (खासकर होलिकोत्सव पर) गोठडी स्त्री० गोठ; गोष्ठी
- गोठण पुं० घुटना
- गोठवण (-- णी) स्त्री० तरतीब; रचना;

व्यवस्थित रखना (२)प्रबंध; सुभीता; व्यवस्था

गोठवखुं स० कि० तरतीवसे रखना; व्यवस्थित करना या रखना; लगाना (२)काम-घंषेमें लगाना

गोठवुं अ०कि० रास आना;भाना;हचमा गोठिवण स्त्री० स्त्री-मित्र ; गुइयाँ ; ससी गोठिवो पुं० दोस्त ; साथी

- गोठीमडुं न० कलैया; कलाबाजी; लुढ़कनी [चैन; शान्ति गोठो प्०गोठ; गोष्ठ (२) घोसला (३)
- गोड (गाँ) न॰ गंड; गिलटी; गाँठ
- गोड स्त्री० गोड़ाई (किया)
- गोडवुं स० जि० गोडना; खोदना
- गोडाउन स्त्री०;न० गोदाम
- गोडे(गउँडे') अ० नाई; भाँति (२)-के साथ;-की संगतमें
- गोतर(गॉ) न० द्विदलकी सूखी फलि-योके छिलकों और पत्तियोंका भूसा; मिस्सा (चौपायोंका चारा)
- गोतर न० गोत; गोत; कुल
- गोतरज पुं०; स्त्री० देखिये 'गोत्रज '
- गोतवुं स० कि० खोजना; तलाश करना गोतुं (गौ) न० (मवेशियोंके लिए उबाला हुआ)भूसा(२)बिना ढंगके राँधा हुआ या ठंडा और बदजायका अन्न [ला.]
- गोत्र न० गंछ; वंश
- गोत्रज वि० गोत्रज; गोती (२) पुं०; स्त्री० कुलदेवता
- गोष (थ,) स्त्री० गिन्नी (पतंगकी) (२) भूल-चूक; धोखा खाना [ला.]
- गोचुं ने० शरीरकी ऐसी स्थिति जिसमें सिर नीचे हो (२)कलाबाजी; लुढ़कनी (३) सींगवाले प्राणीक

नीव	१४५ मीरह
सिरसे चोट करना (४) [द॰ व॰]	गोबो पुं० सौड़
• म्पर्थ श्रम करना (५) मुलावा ; घोला	
साना [ला.] । [ –साबुं = घोला खाना	रोकजियो पुं० गोफनसे फेंकनेका ढेला;
(२) लुढ़क जाना (३) कछा-	गुल्ला (२) लहु (व्यंग्यमें)
बाबी करना।मारबुं = (सींगवाले	
प्राणीका) सिरसे चोट करना । गोवां	
<b>सावां</b> = व्यर्थे श्रम करना.]	गोबाबुं अ० कि० पिचकना
बोब स्त्री० गोद	गोबो पुं० पटकनेसे घातुकी चीजोंका
वोद(द,) स्त्री० वार-वार टोकना;	पिचकना
दखल; अंतराय । [धालवी = वाघा	गोयणी (गाँ) स्त्री० सौमाग्यवती स्त्री
<b>सड़ी</b> करना या रोड़ा डालना ]	(२) द्रतके लिमित्त भोजनके सिए
<b>गोरही</b> स्त्री० गद्दी (२)गुदड़ी (३)गल-	. बुलाई गई सौभाग्यवती स्त्री
कंबल (बिछानेका)	
<b>गोबर्यु</b> न० गद्दा; गदेला (ओढ़ने और	गोर(गाँ) पुं० पुरोहित(२)पंडा
<b>योदवणी</b> स्त्री० दखल; अंतराय; अङ्चन	· <b>गोर</b> पुं० (उपलोंका)चूरा
<b>गोवन्ं</b> स० कि० गोड़ना ; खोदना	गोर (गाँ) स्त्री० देखिये 'गोरमा '
<b>योबाववुं</b> स० कि० घूँसे मारना (२)बार	गोरल आमली स्त्री० एक पेड़;
<b>वार क</b> हना; टोकना	विलायती इमली (२) उसका फल
<b>मोदाम</b> स्त्री०; न० गोदाम; मालखाना	गोरकायंत्रो पु॰ गोरलपंथी साधुओंका
<b>भोबाववूं</b> स॰ कि॰ गोड़वाना (२) घूँसे	
मारना (३) टोक-टाककर सावधान	(२)एक ही कामकी निरयंक पुनरा-
करना [ला.]	वृत्ति [ला.] । [क्षामे झागे गोरज्ञ जाते 
भोबी स्त्री॰ गोदी; नौनिवेश (जहाज	= आगेकी बात आगे सोची जायेगी; अन्ये देखा आगेगा।
वादिका) (२)गोदाम	मागे देसा जायेगा.] गोरक स्त्री० गोरज (२) संघ्यान्वेसा
गोबो पुं० चुभे या गड़े ऐसी उमरी	f1
हुई चीज; गाँठ; औस (२)मुक्का;	
घूँसा (३) नुक़सान; धक्का [ला.]।	<u> </u>
<b>[—मारवो ≕ धूँसा लगाना (२) नुक़सान</b> राजेंबराज रे	गोरद (दियुं,दुं) वि० गोरा;गौरवर्ष
प <b>हुँचा</b> नाः] <b>वोच्च</b> न० गोघन; गायोंका समूह	गोरपदुं (गाँ) न॰ पुरोहिताई; यजमानी
<b>गोवलियुं</b> न० छोटा सौड़; बछड़ा	गोरमढी स्त्री॰ लाल-पीली भिट्टी; मिट्टी
योगा(-मु)लगम न० गोधूलीके समय	
सामा(	(२) कुँबारियोंका गौरी-पूजनका व्रत
बोचुं न० देखिए 'गोघलियुं'	गोरसी स्त्री॰, मोरसुं न॰ बही, धूब
गोजूम पुं० ब० व० गेहूँ; गोधूम	रखनेका सिट्टीका पात्र; दोहनी
ग्. हिं–१०	

गोसं

		_
٩1	N	E

5×6

गोराट वि० देखिये 'गोरट' गोराड(-वू) वि० पोषी, बलुई और कुछ राती या पीछी (मिट्टी या जमीन) गोराणी (गाँ) स्त्री० पुरोहितानी (२) गुर्स्आनी गोरी स्त्री० गोरी; गौर वर्णवाली स्त्री गोरणंबन न० गोरोचन गोचं वि० गोरा **गोर्च गफ, गोर्च गफाक** वि० गोरा-जिट्टा बोरो पुं० गोरा परदेशी (यूरप, अमरिका गिल आकार आदिका) गोल वि॰ गोल; वुलाकार (२) पुं॰ गोलक पुरु गोलक; संदुक गोलन स्त्री० 'गोला' जातिकी स्त्री गोलमाल पुं० घपला; गोलमाल गोलबुं(गों) स॰ कि॰ रौंदना गोलापो पुं० दासपना; गुलामी चोलां न०ब०व० जनानस्तानेके निम्न कोटिके दास-दासी गोली स्त्री० 'गोला' जातिकी स्त्री (२) खवासिन; दासी गोलो पुं० गोला नामक जातिका आदमी (२) जमानखानेका नौकर (३) ताशका एक पत्ता; गुलाम गोल्लो पुं० बछड़ा(२)देवीका अनन्य भक्त(३) ताशका एक पत्ता; गुलाम गोदालणी स्त्री० ग्वालिन; अहीरिन बोबाळ पुं० गोपालक; चरवाहा; म्वाला गोबाळन (--मी) स्त्री० ग्वालिन गोबाळियो पु० चरवाहा तोस न० गोस्त **मोसांई**(०)पूं० एक प्रकारका सामु-वैरागी (२) असलमें गुसाँई मगर आज-कल गृहस्याथमी बनी हुई एक जाति गोसईंबी (०) पूं० वैष्णवोंके आचार्य; गोस्वामी

पं० कन्याओंके लेन-देनके लिए जाति-वालोंका रचा हुआ एक जूथ-मंडली गोळ (गाँ) पुं० गुड़ गोळकेरी (गाँ, कें) स्त्री० आमका एक तरहका गुड़युक्त अचार गोळगोळ वि० गोल-गोल; अस्पष्ट गोळगोळ(गौ-गौ) वि० नरम; गुल-गुला (२) जिसका दिल पसीज गया हो बह; दिलगुदाज [ला] गोळचुं(गाँ) न० वह अचार जिसमें गुड़की अधिकता हो; गुडंबा गोळणाणा (गाँ) पुं० ब० व० गुड्मिश्रित धनिया (मांगलिक अवसर पर बाँटा जाता है) **गोळपापडी (ग**ाँ) स्त्री० एक मिठाई गोळमटोळ वि० बराबर गोल(२)गल-गुगनाः; हृष्ट-पुष्ट [(परिषद) गोळनेजी वि॰ (२) स्त्री॰ गोलनेज गोळवा पुं० ब० व० स्त्रियोंके हाथके सोनेके कड़े (२) उस आकारकी काँचकी चूड़ियाँ (३)लकड़ीके (गोल)बल्ले गोळाई स्त्री० गोलाई; घेरा **गोळाकार** वि० गोलाकार; गोल गोळी स्त्री० गोली(२)दवाकी बटी; गोली (३) बंदूककी या तमंचेकी गोली (सीसेकी) (४) पानी भरनेकी मटकी; कछरी (५) दही मथनेका मटका; मयनी (६) अंडकोष गिलीचालन गोळीवार पुं० गोली चलाना; फैर; गोळो पुं० गोला (२)गोफनसे फेंकनेका ढेला ; गुल्ला ( ३ ) (तोपका )गोला (४) पानी भरनेका बड़ा मटका (५)वायु-गोला रोग; गोला (६) गप (७)

लालटेनकी चिमनी; कुमकुमा; लट्ट

बोळ वि० (२)पुं० देखिये ' गोल '(३)

1.1.1

यों र पं

गोंदर्च(गाँ०) देखिये ' गांदरुं '	
गोंचवुं (गाँ०) स० कि० बंद जगहमें	
रखना; क़ैद करना	
म्यासतेल न० मिट्टीका तेल	

_				
		5) प्०	ग्नंथपारू;	'लाइ-
	रयन' निव (	की क	<b>ী</b> ০ শ্বঁথাৰণি	à.
	-		गण प्रवायाः ग्रामपंचायस	

- च पुं० 'क'वर्गका—कंठस्थानीय चौथा व्यंजन
- यई स्त्री॰ देखिये 'घाई'
- घर्ड पुं० व० व० गेहूँ; गंदुम
- घडंबर्षुं वि० गेहुआं; गंडुमी
- **धव(०क)** अ० गच (धँसनेकी आवा-ख)।[--दईने ⇔गच आवाजके साथ; फटसे.]
- वचरकुं न०,(-को)पुं० खट्टी या तीकी डकार; अम्लीका
- **षणूभलो** पुं० जमाव; झुंड; भोड़(२) महु-महु; अव्यवस्था [धाटा
- षट (ट,) स्त्री० घट; कमी (२)टोटा; घट वि० देखिये 'घट्ट'
- चंड अ० गट आवाजके साथ; गटगट
- धट पुं० घड़ा (२) शरीर (३) हुदय ; बट बढक वि० घटक ; वस्तुका अंशरूप (अवयय) (२) योजक ; रचनेवाला
  - (२) पुं० वह अवयव जिसके मेलसे कोई वस्तु बनी हो; इकाई
- भटतुं वि० उचित; उपयुक्त (२) घटता हुवा; बाक्रीका
- वतना स्त्री० घटना; रचना; बनावट (२) माजरा; घटना (३) कौशल; कारीगरी [(२)सिलसिला;परंपरा घटनाळ स्त्री० रहेँटके घड़ोंकी माला

- घटवुं अ० फि० घटना; कम होना; छीजना (२) (कपड़ा) तंग⊸बुस्त होना; कसना (३) शोभा देना; भला लगना; योग्य होना (४) ठीक बैठना; लागू होना; उदा० 'श्लोकनो अर्थ बराबर घटाव्यो'
- धटस्फोट पुं० चिसाको ठंडी करके उस पर घड़ा फोड़ना (२) हमेशाके लिए संबंघ तोड़ना [ला.] (३) हरू; निब-टारा(४)गुप्त वातका भेद खोलना; भंडाफोड़
- धटा स्त्री० घटा; समूह; झुंड; झुरमुट (बादलों, वृक्षों आदिका)
- घटासार वि॰ घटादार; छतनार
- घटाटोप पुं० घटाटोप; घनघटा (२) ऐसा डक्कन या वस्तु (३) आडंबर; ठाट-बाट
- घटाडवुं स० कि० घटाना; कम करना घटाडो पुं० कमी; घटाव
- घटारत वि॰ उचित; उपधुक्त; ठीक घटाबबुं स॰ कि॰ ठीक बैठाना; लगाना
- उदा० 'क्लोकनो अर्थ बराबर घटाव्यो' घडित वि० उचित; उपगुक्त; मौजूँ घट्ट वि० गाढ़ा; गफ़ (बुनाई);दबीज घडतर न० गढ़-पीटकर बनाई हुई 'बाक्टति; गढ़न; बनावट(२) गढ़ना, 'रंपना या बनामा या उसकी रीति;

_		
-	1	

मणुंबर्ष

बनावट (३) गढ़नेकी उष्मत; गढ़ाई	महियो पुं० पहाड़ा
(४) झिक्रा पाकर तैयार होना;	षडी स्त्री॰ घड़ी; घटी (२) [सा.]
शिक्षा (५) वि०्गढ़-पीटकर <b>बनता</b>	क्षण (३)मौका; प्रसंग । [-को गणभी
हुवा (लोहा भादि)	= (-की) तैयारी होना (२)षड़ियाँ
धंडपण न० बुढ़ापा; जरा	गिननाः, मौतकी तैयारी करना।
भडमगि(-ज) स्ती० गढूना और	-ना छठ्ठा भागमां = बातकी बातमें;
तोड़ना (२) पसोपेश; दुबिधा	छनभरमें.]
<b>भडमभरः</b> स्त्री० देखियें 'गडमथल'	<b>घडी घडी</b> अ० घड़ी-घड़ी; बार-बार
<b>घडवुं</b> न० गुड़ भरनेका मटका	वडीताळ अ० आसन्नमरण; धड़ीसाइत
<b>वडवुं</b> स॰ कि॰ गढ़ना; आकार देना	<b>घडीभर</b> अ० घड़ीभर; थोड़ी देर
(२) बनाना; रचना; छिखना	घडीसाथ अ० घड़ी-साइत; आसन्नमरण
(जेवर, कुर्सी, ग्रंथ क्षादि) (३)व्यव-	<b>মৰুৱাত</b> গৃঁ০ মঙ্গঙাहত
स्थित रखना; संकलन करना (४)	घडूली स्त्री० छोटा घड़ा
<b>थीटना (धातु) (५) म</b> सविदा तैयार	घडूको पु॰ घड़ोला; घड़ा
करना (६) शिक्षा देकर योग्य बनाना	घडो पु॰ घड़ा; कलसा। [घडाना कळ-
[स्रा.] (७) मरम्मत करना; गढ़ना।	शिया करवा = कोल्हू काटकर मुँगरी
[यशाईने ठेकाणे आवर्षु = अनुमवसे	बनाना ।-भराबो = पाप उदय होना ]
या ठोकरें खाकर समझ जाना ।	घडोलाडवो पुं० मुरदेको जलानेके बाद
श्वकी नालाव् ुं ≕ लूब पीटना; गढ़ना.]	स्मशाचमें लड्डूवाला घड़ा फोड़ना (२)
<b>भडमह</b> ाट पुं० घड़मड़ाहट; घड़-घड़	फ़्रैसला; निबटारा [ला.]। [-करबो =
<b>ধাৰাত্ৰ</b>	निबटारा कर देना।-वबो = कोई भी
भडवो पुं० घड़ेके आकारका लोटा	फ़ैसला होना (२) मौत होना (३)
बहाई स्त्री॰ गढ़नेकी उष्वत; गढ़ाई	भारी नुकसान आ पड़ना)
<b>बडामण</b> न०, (-णी) स्त्री० गढ़नेकी	चम पुं० भारी हयौड़ा; घन [युन
उष्धतः गढाई	धण पुं० लकहीमें होनेवाला एक कीड़ा;
बडायेलुं वि० अनुभवसे पक्का बना	धनाधनी स्ती० गाढ स्लेह; गहरी छनना
हुवा; कसा हुआ; मेंजा हुआ (ला.) भारतमां सः जिन्त्र सम्पन	मनुं वि० बहुत; ज्यादा; अतिशय।
<b>धडावव्</b> स० कि० गढाना जन्म कर्मन	-कर्षु = जो शक्य हो सब कर
चडादुं अ०कि० गढ़ा जाना; अनुभवसे पक्का होना; कसा जाना [ला.]	डालना (२) अनेक प्रकारसे समझामा
बहियाळ स्त्री॰;न॰ घड़ी (यंत्र)(२)	(३) किफ़ायतसे बचत करना।
सालर; घड़ियाल। (-चा थीए छे	करीने ≕ बहुत करके; प्रायः ।होब्
शालर, याड्याला [चा चार छ ==धड़ी ग्रेलत समय बताती है या	= बीमारीका स्यादा होना; घड़ियाँ
≕वड़ा प्रलग सनय वताता हुया बन्द है.]	गिनना । धर्णा वानां करबां = अनेक
अन्तिपाळी ु॰ चड़ीसाज [लबनी	उपाय करना (२) खूब समझाना.]
चरियुं न० तरही चुवानेकी संबी हाँबी;	वर्षुवर्ष अ० बहुत करके; अकसर
	્≜પ્રચ્ચાર વ્યુપ્ત વારવા/ ગાવવી દ

For Private and Personal Use Only

चचुंय	१४९ मरवानी
षणुंय वि० बहुत ही	जन्मकुंडलीमें ब्रहविशेषका स्थान
भन वि० घन; ठोस (२) घना; गाढ़ा	[ज्यो.](५) कुल;घरे (घरकी आवरू,
(३) बहुत; अधिक (४) लंबाई,	खुशहाली, गृहस्यी आदि) (६)घरके
भौड़ाई और ऊँचाईवाला; 'क्यूबिक;	लोग; घर-बार; घर-गिरस्ती (७)
घन [म.] (५) पुं० किसी अंकको	खानदान; कुल। [अथवाळवुं =
उसी अंकसे दो बार गुणा करनेसे उप-	घरकी शान, आवरू बढ़ाना । उचाई
लग्ध गुणनफल; 'क्यूब'; धन(६)	रहेबुं = वंश चालू रहना (२) शादी
छः समान बाजुओंवाळी आकृति(७)	होना; घर बसना। -काणुं करवुं=
र्पु॰; न॰ बादल; धन	घरमें फूट डालना; घर फोड़ना(२)
भन्त्वन्कर वि० घनचन्कर; जिसका	घर ही घरमें व्यमिचार करना।-
दिमारा चला गया हो	<b>पूछीने आवयुं</b> ≕जान-बूझकर नु <b>क्रसान</b>
धनफल (-छ) न० घनफल; 'वौत्यूम'	करनेके लिए किसीका (संबंधी होकर)
<b>बनवूल</b> न॰ घन-मूल; 'क्यूब रूट'	घरमें आना। -फाडवुं = चोरी करना;
वनसार पुं० घनसार; कपूर (२)	सॅघ लगाना ]
अल (३) पारा (४) भंदन	<b>घरआंगणुं</b> न॰ घरका आंगन (२)
<b>पल अ</b> ० घमाघम; घमाकेसे प्राणानी स्ट. सिंद सम्प्राप्त	अति परिचित – पासका स्थान [ला.]
<b>মনকৰ্</b> জ০ কি০ ঘনঘনালা প্ৰাৰম্ভ (জী) জিলাই ল'ন জলাল	<b>धरकाज</b> (म) न० घर-गिरस्ती;
भमकार (-रो), धमको पुं० धमाधम;	गृहकार्य
श्वमक [आधात करना; धमजमाना	घरकूकडियुं, घरकूकडी वि० घरघुसडा
<b>भगमगवर्षु</b> स० कि० यसाधमन्त्रोरसे	<b>भरसटलो पुं</b> ० घरका माल-अस <b>बाब;</b>
<b>वनसाज</b> न॰ सूफ़ान; घमरौल; ऊधम	घर-बार (२) गृहस्थीका काम-काज (३) गंगर पर सामनगणन जनगणिक
(२) मयंकर युद्ध; धमसान (३) तिमाध (४) कोर्योका कामकः प्रवार ।	(३) संसार था व्यवहारका-गृहस्थीका हाम हाज (४) जन्म
विनाश (४) लोगोंका जमाव ; मजमा । 	काम-काज (४) पत्नी, बाल-बुच्चे स्रीप्टकर गणवाण
<ul> <li>[-मचवुं = बड़ी भीड़ इकट्ठा होना (२)भारी तूफ़ान या घमसान मचना.]</li> </ul>	वग्रीरहका समुदाय सन्दर्भ समुदाय
्रमंड पूं० धर्मंड; अहंकार(२) आइंबर	<b>भरसरच, घरसर्च</b> पूं०; न० घरका जिल्लास सरवेगें त <del>ोलेकाणा अर्च</del>
मनंडी वि॰ घर्मडी; मग्ररूर	निवाह करनेमें होनेवाला सर्च घरगतु(थु,थ्यु) वि० घराऊ;घरेलू
धम्मर अ० घमर आवाजकी तरह; घुमुर	परगयु(-पु, -पु) विच पराऊ, मरलू . (२) बेचनेके लिए नहीं बनाया हुआ
<b>धम्मर धाधरो</b> पुं० घेरदार बड़ा वाघरा	(२) खानगी; घरू
<b>घर</b> न॰ घर; रहनेकी अगह; कोठी;	(२) सानगा, यस धरधालु वि० घरघालन (२) फ़िजूल-
मकान (२) गृह; एक कुनबेका वास-	खर्च; उड़ाऊ (३) दगाबाच
स्थान; पैतृक निवास-स्थान (३)	धरजमाई पुं० घरजेवाई; घरजमाई
भीज रखनेका या उसके रहनेका	वरणगाइ गुण् परपगाइ, परपगाइ घरड स्त्री० लीक (२)परंपरा; प्रथा[ला.]
बक्स; कोठा; खाना; उदा॰	धरबायो पुं० बुढापा (२) बुढाँकी-सी
'बध्मानुं घर; सोगठीनुं घर' (४)	समझ; जरूरतसे ज्यादा समझ [ला.]
actual and an end at (a)	משמון אדי אנו איואו משמ [מון

चलोब्

घरहियुँ
घरहियुं वि० बुढ़ा; वृद्ध
घरकियो पुं० वृद्ध-बुद्धुर्ग मनुष्य
मरहियो पुं० गलेकी घरघराहट; घरा
(प्रायः मरणासन्न व्यक्तिका)
मरमुं वि॰ वृद्ध; बुढ़ा (२) पुराना;
नयाका उलटा (३) पत्रका; सस्त ।
[पान=अति वृद्ध व्यक्ति (कभी मी
मर जाये ऐसा).]
वरदूंबस वि॰ बिलकुल जराग्रस्त;
जरा-जर्जरित [[तुच्छकारमें]
मर्बुडण्वर वि० बिलकुल जराग्नस्त
धरबेर्ध वि० वृद्ध; बुजुर्ग; आवरणीय
बरभणियाणी स्त्री॰ घरवाली; गृहिणी
(२) घरकी माल्रकिन; घरनी
<b>वरवजी</b> पुं० गुहस्वामी;घरवाला(२)
भरका मालिक
घरवंधो पुं० गृहकार्य; घर-मिरस्ती
<b>घरन्</b> वि॰ घरू; निजी; सानगी
बरप्रवेश पुं० देखिये 'गृहप्रवेश'
बरबार न॰ घर-बार; घरकी चीज-
वस्तु;घर-गिरस्ती, बाल-बच्चे वग्रैरह
(२)कुटुम्ब और क़बीला [संसारी
बरबारी वि॰ घर-गिरस्तीवाला (२)

धरबोळु वि० धर-घालन

- मरमंग पुं० (पत्नीके मरनेसे) घर उजड़ना (२) वि॰ उस दशाको प्राप्त
- बरमेबु वि० घरका मेद जाननेवाला (२) घरका भेद खोलकर दग्रा देनेवाला
- बरमेळे अ० आपसमें समझकर (२) मित्रताके भाते
- **घररस्** वि० घरकी संभाल रखे ऐसा **बरवसरी** स्त्री० देखिये 'घरवाखरो' धरबसु वि०ं घरको चाहनेवाला; घर-षुसङ्ग

धरबट स्त्री० एक घरके हों ऐंसा गाढ़ा संबंध; घरोबा (२) वि० वरका-सा [धर-बार संबंधी घरवासरो पुं० घरकी चीज-वस्तु; वरवाळी स्त्री० घरकी मालकिन (२) ]वालों; पति घरवाली; पत्नी धरबाळो पुं० घरका मालिक (२)घर-**घरवैद्**ंन० घरेलु वैदक घरसंसार पुं० गृहस्थाश्रम (२) पर-जुगत; घर-गिरस्तीका काम धरसूत्र न० देखिये 'घरसंसार' धराक पुं०; न० गाहक; खरीदार(२) पारखी; गुणग्राही घराकी स्त्री विकी; गाहकी (२) खरीदारोंकी आमद (३) खपत; विकी धराजियात वि० गिरवी लिया हुआ या रखा हुआ घराचे अ० देखिये 'घरेणे' धर्ष न० घरुआ (डिब्बा) बरेड स्त्री० देखिये 'घरड' (२) क्रुँएके पत्थरों पर रस्सीसे होनेवाली गराड़ी बरेडी स्त्री । चिरनी; गराड़ी; गड़ारी (२) घर्रा; धरपराहट (गलेकी) बरेषुं न० गहना; जेवर **धरेणुंगठुं** न० गहना-पाता धरेजे अ० गिरवी; बंधक; रेहन **धरोपो(-यो)** पुं० घरका-सा गाढ़ संबंध; घरोबा वरोळी स्त्री० देखिये 'गरोळी' घलात स्त्री० बूबी हुई या बुबाई गई रक्रम;बट्टा;टोटा(२)पावना न देना घलावुं अ० कि० 'घालवुं' का कर्मणि वलोडी स्त्री॰ कुँदरू (बेल) (२) देखिये 'गरोळी' चलोडुं न० देखिये 'घिलोडुं'

चेवार्षु

- **घथानुं** अ० कि० घायल होना; चोट लगना
- अलबसाट अ० गहराईसे (नींद लेना) बसडबोरो पुं० घसीट लिसावट लिसने-का श्रम
- धसडवुं स० कि० घसीटना (२)घसीट किसायट लिखना या जैसे-रौसे काम करना; रगढ़ मारना [ला.]
- वसरको पुं० निशानीकी रेखा; चिह्न; आँक; खरोंच [का काम; बेमार वसरडो पुं० खरोंच; रगड़ (२) बेमन-
- क्सरका पुरु सराप; रगढ़ (२)वभन-वतरपसर अ० घसीटते हुए; ज्यों-स्यों करके (२) बेगारकी तरह
- वसर्षु स० फि० विसना (२) हापसे रगड़ना; मलना(३) (बरतन)मलना (४)ओपना; चमकाना [पाससे
- बसाईने (जबुं) = क़रीबसे, बिलकुल
- धस्तसुं दि∙ं जो अपमानित करे, नींचा दिखाये; कटतीः (कहना) (२) नुक-सानदेह; हानिकर
- **बसारवं** न० विसंकर पीनेकी अधिवि बसारो पुं० विसा जाना; छीज; बटाव
- (२) चिसनेसे गिरी हुआ रज; चिसाई (३) नुकसान; घाटा; छीज। [-काचो, वेठवो = घाटा या सर्च सहन करना। -पहोंचवो, लागवो = सर्च होना; घाटा होना; नुकसान पहुँचना.]
- धसावम् स० कि० घिसाना
- ससार्बु अ० कि० 'धसतुं' कियाका कर्मणि रूप; घिसा जाना; घिसना (२)नुकसान उठाना;घाटेमें रहना। [ससाई अवुं == (खूब काम आदिसे शरीरका) क्षीआ होना; काम आना; खप जाना.]

- वसियुं वि० चूर्यं जैसा (नमक) वसियों पुं० आटेको सेंककर बनाई जानेवाली एक साख वस्तु
- घंबोसियुं न० निकम्मा, खराव घर; धरौँदा (२) सारी देह ढक जाय इस तरह ओढ़ना; झुरमुट(२)तहस-नहस होना; बर्बादी
- घंट पुं० बड़ी चक्की; जॉता
- घंट पुं० घटा; कौसेका लंगरदार घंट (२) कौसेका बजानेका सोल और मोटा पट्टु; घड़ियाल (३) घंटा बजनेका शब्द; डंका (४) चंट; धूर्त; घाघ; उस्ताद (व्यक्ति)[ला.]। [-फरदो, बागसो =घरका सब कुछ खर्च हो जाना (२) ग्ररीबी होना। --वगाडवो = प्रकट करना; बाहिर करना.]
- घंटकी स्त्री० बहुत छोटा घंटा; घंटी; घंटीकी आवाज (२) घंटा; घून्य; कुछ नहीं [ला.]
- घंटलो पुं॰ दलनेकी बग्रैर यालेकी भवकी
- घंटी स्त्री० पक्की। [घणी घंटीओनो लोट साणो होयो ≕ बहुत अनुभवी होना; प्रराना घाघ होना.]
- व्हा पुं० चालाक चोर; वाऊषप बंढी पुं० बड़ा पटा (२) उसका डंका वा पुं० कागजके चौवीस तावोंकी गड्डी; दस्ता
- भा पुं० चोट; बाधात (२) घाव; जुस्म (३) भारी गमका गहरा बसर [ला.]।[-धडवी = जुस्म होना (२) आफत आना (३) [ला.] सूब सहन करना; बल रुगाना; जोर करना; जुदा० 'काम करतां शा घा पड़े छे?'। --भेगो घसरको = इतना हुवा तो और ज्यादा होने दो.]

भाई

**१५**२

•		

- माई स्ती॰ जल्दवाखी; दौड़-भूप (२) हंगामा; घांधल (३) भीड़; झमेला घाषरी स्त्री॰ घाषरी; छोटा लहेंगा। [-पहेरवी⇒स्त्रीका पार्ट लेना; चूड़ियाँ पहनना (२) नामर्द बनना.] घाबरो पु॰ घाघरा; लहेंगा घाट पु॰ आकार; देखाव; सूरत; रूप (२) मौका; घात; ताक [ला.]
- (३) मछी-बुरी रीतोंसे काम निकाल लेनेकी योजना; उपाय (४) रीत; लक्षण; शोभा। [-आवचो च्योग्य आकार देना (२) घात लगुना; मौका मिलना। --घडवो = आकार बनाना (२) युक्ति या प्रपंच करना (३) मन-सूबा करना (४) ताकमें रहना (५) मार ढालना (६) भारी नुक्रसान पहुँचाना.]
- भाट पुं० घाट (२) दर्रा; घाटी(३) सद्याद्रिका पहाड़ी प्रदेश
- वारण स्वी० सह्याद्रिके पहाड़ी प्रदेश-में रहनेवाली जातिकी स्त्री
- बादी वि०- सह्याद्रिके घाटोमें रहने-वाली एक जातिसे संबंधित (२) पुं० उस आतिका मनुष्य
- **थाटीलुं** वि० सुडौल; रूपवान्; सुगठित **बाढुं(-ड)** वि० गाढ़ा; लोंदादार (२) सचासच (३) बहुत; गहरा
- (४) कठोर; मजबूत
- बाबुं वि० देखिये 'घाटुं'
- धार्ण पुं० घान (अनाज, तेलहन आदिका) (२) संहार। [--काढवो ≃ भयंकर संहारकरना। --नीकळी जवो, वळवो =विलकुल तवाह हो जाना.]
- **वाल** पुं०ँ लकड़ी खाँ जानेवाला एक कीड़ा; घुन

### माल्यारी

- धाण स्त्री० गंध; बदब् **घाणी स्त्री० तेलहन पेरनेका यंत्र**; धानी ! -ए बोडबुं = उबा देनेवाले, कड़ी मेहनतके काममें लगाना; जोतना । --नो बळद = कोल्हका बैल.] बात पुं० धात; चोट; चाव(२)नांध; हत्या (३) स्त्री० अकाल मृत्युका फौसा। [-जबी=मरते मरते बचना; बाल्वालं बचनाः] धासकी वि० घातकी (२) कूर **घतिल** न० घाव पर लगानेका तेल **भाम प्**० धाम (२) ऊमस (३)पसीना चायल वि॰ धायल; जल्मी बारण न॰ घोर मिद्रा (२) नींदमें सरटि लेना (३) नींद लानेवाली दवा धारी स्त्री० एक मिठाई (२) उरद या मूँगकी दालका बड़ा (३) चोटीके इर्द-गिर्द रखे हुए वालोंका गुच्छा; चेंदिया [ভির; না্া্ वारं न० रोगसे शरीरमें होनेवाला घाल (रू) स्त्री० जेवनारमें एकसाथ भोजन करनेवालोंकी पाँत; पंगत **घाल (ल,) स्त्री॰ घाटा; टोटा** धालनेल स्त्री० निकालमा और 'रसना ; षाल-मेल करना (२) पचड़ा;संसट (३) प्रपंच; स्रट-पट धालम् स० कि० धालना; स्रोंसना (२) पहनना (३) अवसर पर उप-
- हारके रूपमें पहनाना; उदा० 'में कन्यानी कोटमां अछोडो घाल्यो'(४) माल मारना; रक्षम डुवाना (५) विगाड़ना; घालना; उदा० घर घालवुं घास न० घास; सड; चारा। [--कापर्वु = घास काटना।--कार्यु= घास साना]

घासचारो पुं० घास-चारा

Tricker	<b>१५३</b>	ण्म्मो
बालतेल न० मिट्रीका रे	रेल; किरासन - पुड़की । [-	<b>याडवो = चील</b> मारकर
<b>वासलेट</b> न० देखिये 'धा		) स्तीजना; धमकाना.]
<b>वासलेटियं</b> वि० घासले		देखिये 'घलोडी'
वासियुं वि० जिसमें वार	स ही होती हो <b>थि लोबुं</b> न० हु	
ऐसा (२) घासमेंसे 4		
(३)निस्सस्व; हरूका		बळतामां घी होमबुं =
सौना आदि) [ला.]		बौर बढ़ाना; जलती
बासियो पुं० घासका बिर	ष्ठौना;सायरा आगमें भी र	गलनाः]
[प.] (२) घसियारा	चीकेळां न० ब	० व० घी और केले(२)
<b>गसियो</b> पुं० देखिये 'गा	शयो' बड़ा लाभ ; प	चों घीमें होना (लाम)
<b>राष्ट्रं (</b> ०) वि० उताय	प्रला; अधीर वीच यि०देखि	ाये 'गीच'
(२) घबड़ाया हुआ	<b>গীৰ্মাগীৰ</b> বিধ	> संचासच; ठसाठस
गेच (०;च,) स्त्री० ल	ीकके दीचका घीतेसुं न० कॅंब	
गबूबा; गड़ारी; गब्दा (	(२) उलझन; मीस स्त्री० ख	रोंष (२) घोरी (३)
भुषिकल	भार-पीट । [-	-पबबी = नुक़सान होना
गंबन (०) स्त्री० तेति		ोना (३) मार पड़ना।
ांची (०) वि० तेल	पेरनेका पेशामारबी=हार	। मारना; चोरी करना.]
करनेवाली एक आतिव		
(२) दूध बेचनेका पेइ		लको जोताईकी शिक्षा
एक जातिका (आदमी)	(३) पुं० उस देनेका सामन	•
जातिका भादमी; सेली;	घोसी। [ नो युषरबट स्त्री ॰	वेरदार पायरेकी थुंब-
बळब = कोल्हूका बैल	(२) मूर्ख.] रूदार कोर (	२) पुं० ऐसी कोरवाला
<b>া</b> হাঘাত (০) ম্পী০ শ	ौख; पुकार; वायरा	_
शोर-गुल 	मुमरियाळूं वि	
ाटी (०) स्त्री० गले 		) पुं० गर्जना; घहराना
भौटी; कौआ; गलेकी व	१ह छाटा हड्डा <b>भुष्या</b> भु० घूसा २	;मुक्का [कीड़ा; धुन
जो आगेकी ओर निकल भंटी; टेंटुआ		ो सा जानेवाला एक
पटा, टदुजा <b>स्टी (०</b> ) स्वी० दर्रा;	युमरडा स्ता॰	गोलाकारमें धूमना-
[ला.] मुविकल और न		ी (२) सिरका भवकर
(२) अड्चन; कठिनाई		(३) (खेल आदिमें)
पं <b>डवी</b> =अड्रचन या व	-	मुलावेमें डालकर घूम
<b>भागा</b> ; मुश्किलमें फँसन		ज्नेको हिलाना ; मुलाना
भागा, गुरस्थलम् कसम् İtal (०) पुं० कंठ; अ		॰ घुमाना; चक्कर देना
पुकार; हॉक; ऊँची ठ		' घूमवुं 'का भावे रूप
प्रसार, हान्स, कामा व	गवाज (३) धुम्मो पुं० धूँसा	।; मु <b>नका</b>

1.514	म
-	•

<u>t</u>ty

पूंडविय्

·
षुरकियुं न॰ घुड़कनेकी आवाज; सुरा-
हट (२) घमकीमरी ढॉट; धुड़की
<b>मुवद</b> पुं०; न० उल्लू; <b>मु</b> ज्बू
चसनियं दि० किसी तरहमे घमतेवाका-

- 1
- भुसामयु विश्वकसा तरहस भुसनवाका;
- भुसनेके स्वभाववासा

- **पुत्तपुत्त २०** फुससे (२)स्त्री० कानाफूसी
- षुसारुषुं स० फि० षुसेड़ना; मीतर
- पहुँचाना; दाखिल करना (बग्रैर

मंदिरके भीतरका भाग

षूषरी

्बदमस्त

- इजाजत या हकके)

- **मुसावर्षु** स॰ कि॰ घुसाना; घुसवाना

- - **भूमन्ं अ० कि० धन्कर खाना; गोला**-कारमें घूमना (२) बेकार घूमना (३)
- षुंगढ पूं० गुंबद (२) गुंबदके नीचेका
- **मुतार्यु** अ० कि० ' वूसवुं 'का कर्मणि

षुषरमाळ स्त्री० बैरुके गसेकी घंटि-

षुवरी स्त्री॰ घुंघरू; नूपुर (२) स्त्रियोंके

हायमें पहननेका घुंचकदार एक गहना

(३) एक खिल्जैना; छोटा घुनयुना

(४) उवाली हुई ज्यार-बाजरा आदि;

षुषरो पुं० धातु वादिका पोला बजने-

्वासा गोला जिसमें कंकड़ आदि चीजें

रखी जाती हैं (२) एक खिलौना;

मुनघुना (३) एक सास परार्थ।

[**वूचरा केर्वु =**सुन्तर; मजेदार (२)

मजाक-पसम्द (३) बोल्सा; वाचाल.]

**मूम्मवर्षु अ**व्हेकि० महराना (२) गरजना

**चूब व० विचार-मग्न;** लीन (२) चूर;

भूमधी पूं० पत्तियोंका बत्या; गुंचा

**षूमवर्षु** स॰ ऋि॰ पालनेको हिस्लाना;

झुलाना (२) चनकर खिछाना ; घुसाना

घूनची स्त्री० देखिये 'घूमरही'

ष्मह पुं० देखिये 'षुंमट'

ष्मतो पुं० पूंषट

योंकी माका; टाशीकी माला

- - - - [स्रा.] बड़ा कारोबार 'चलाना (४)
        - खुशीमें भूभना; छहराना (५) लग

बदलना

रहना; आरी रहना

रामहना (४) थॉस उठना

षुमाषूम(-मी) स्त्री० दौड़ा-दौड़ी; बार-बार वाना-जाना

**पूनडी** स्त्री • देखिने 'मुमरडी' ¦ भुमड़ी **बूमराब् ं स॰ कि॰ ईंग्ल**लाना; रोषसे

र्मुंह विगाड़ना; कुढ़ना (२) परकर स्राना (गोलाकारमें) (३) घुमढ़ना;

षुमरी स्ती० जलका भवकर; भँवरी;

भुमरी (२) घुमड़ी; फेरा (३) तेवर

- **ष्<b>रकर्ष्** अ०क्रि० षुरषुराना; गुर्राना (२) बोरसे मूँकना (३) षुड़कना; गुर्राना
- षूकर(--र),(-रो) देखिये 'गूलर'
- मूस पुं॰ घूस; एक तरहका बड़ा मूहा भूसण न॰ मुसना; अनधिकार प्रवेश
- (२) वि० किसी प्रकारसे घुसनेवासा **धुन्नव् अ० कि० धु**सना
- ष्क्रियूं न० पूहे फँसानेका सटकेवार पिजडा; चूहेदान
- **षुसिम् मन** न० (पेड़की खोह या उस तरहकी जगहमें घुसकर बनाये हुए छंत्तेका) एक तरहकी छोटी मघ<u>्</u>मक्सियोंका शहद
- ष्रंषद (-दो) पुं० यूंघट
- र्घ्रट पुं० पूँट (२) आवाफ; कंठ(३) स्त्री० (दम) धुटना
- ष्ट्रंडचे पुं० धूंट (पेय)। [-- कतरबी = र्षूट गलेखे नीचे उतरना (२) समझा आना; हरूकसे उतरना.]
- षूंडण पुं०; न०, (-चियुं) न० चुटना

भूंडणिये १५	१५ गोवर्ष
षूंटषिषे; घूंडणे ज॰ घुटतोंके बछ (चलना); दोधानू (बंठना)।[- पड्युं=वालकका घुटतोंके बल चलना (२)[ला.] मत्था टेकना (३) गिड़- गिड़ाना; घुटने टेकना.] षूंद्रषुं स॰ कि॰ घोंटना; पीसमा; वाटना (२) रोकना या चोंटना (राग) रटना; अम्यास करना षूंदी स्त्री॰ टलना वांटना; (राग) रटना; अम्यास करना षूंदी स्त्री॰ टलना अंदेना; पटना; (राग) रटना; अम्यास करना षूंदी स्त्री॰ टलना अंदाना करना षूंदी स्त्री॰ टलना; छतमार (पेड़) (२) मतवाला; बदमस्त षेदी स्त्री॰ मेड़ [-धसान.] बेद्दं न॰ भेड़। [घेटानुं टोट्युं= मेडिया बेदो रंगी॰ मेड़ क्रि.; सुरसी(२) पद; खुमार बेद (घॅ) न॰ नशा; केंफ्र; सुरसी(२) मद; खुमार बेद (घॅ) अ॰ घर पर; घरमें; घरकी बोर। [-साळुं देवावुं = घरका सर्व- नाश होना या निर्वश होना; घर उजडना। -चेडां = घर बैठे(२) वग्रैर मेहमतके; स्वामाविक रूपसे।(-मे) घेर बेतथी = -की कमी पड़ना; छर्च होना; नुक़सान होना; उदा॰ 'आमां तो एने रू॰ १०० ने घेर बेठी' (२) (स्त्रीका) किसीके घर बैठना। -बेसचुं = बेकार बनना; घर बैठना (२) नौकरी आदिसे अलग किया जाना; बरतरफ्र होना (३) -के साथ	किनारेका हिस्सा (४) थोटीके इवेंगिर्द रखे हुए वाछ; चेंदिया (५) होली खेलनेवाले लड़कोकी टोली घेरवार वि॰ घेरवार (कपड़ा) (२) बुछा; जो कसता न ही घेरषुं स॰ कि॰ घेरना (२) थौपायोंको पानी पिलाना घेराव पूं॰ घेरा; विराव; चारों ओरका विस्तार; फैलव (२) घेरनेकी किया; विराई; रोक; अठकाव घेराषुं थ० कि॰ घिरना; घेरा जाना (२) घेरेसें आना; फैलना (३) छाना; विराई; रोक; अठकाव घेराषों थूं० कि॰ घिरना; घेरा जाना (२) घेरेसें आना; फैलना (३) छाना; विराहा; फैलना; पलकें मारी होना (वाकाश या चन्द्र वादलोंसे; वांसें नशे या नींदसे) घेरावो पुं० देखिये 'घेराव' छेर्द (कें) वि॰ गाड़ा; कत्री न झ्टने- वासा; पत्रका (रंग); झोख; गहरा; उदा॰ 'घेरो लाल' (२) गहन; गहरा (३) खुमारमरा; नशीला (वांसें) घेरेयो पुं॰ पगुहारा; होली खेलनेवाला घेरो पुं॰ घेरा (२) रोक (३) समूह; सुरनुट (पेड़ोंका) घेरछा(ष)ं)स्ती॰ वावलप्रपन (२) सनक घेलाई (घें) स्ती॰ पायलपन; सिड़ घेर्स (-क्र) वि॰ सिड़ी; पायल (२) न॰ पायलपन घेस (-क्र) (घें०)स्ती॰ मट्ठेमें नमक डालकर पकाया हुवा नरम मात;महेरी घो स्त्री॰ गोह
• •	-

-	_
En e	TT.

मौर

- भोधो वि॰ पुं० अनपढ़; मूर्ख (मनुष्य); घोंघा (२) पुं० सौप (३) मुँह और माया ढक जाय इस तरह बोढ़ना; वुग्घी ओढ़ना
- **वोच** स्त्री० चुमनेका असर; चुमन **बोचवुं** अ० कि० भोंकना; चुमाना
- घोडदोड (दाँ) स्त्री० घुड़-दौड़(२) घुड़-दौड़का मेदान अयवा मार्ग
- घोडागाडी स्त्री० घोड़ागाड़ी; सौगा घोडागाठ स्त्री० सरकतेवाली दोहरी गाँठ [आनेवाली भारी बाढ़
- **धोडापूर न०** (घोड़ेकी तरह) यकायक **घोडार** (र,) स्त्री० तवेला
- **वोडासर** स्त्री० **भुड़**साल; तवेला **वोडियुं न० पालना; ग**हवारा । [**–वंधायुं** =संसान होना; गोद भरना. ]
- चोडी स्त्री॰ घोड़ी (२) लकड़ी या चातुकी खूँटी जिस पर कोई चीज रखी जाय या व्यवस्थापूर्वक भरी जाय या टौगी जाय; घोड़िया, चोड़ी, बैठकी, तिपाई आदि (३) वह लाठी जिसका भाधार लेकर चला जा सके; वैसाची (४) ऊँचे चढ़नेका सीडियोंवाला नसेनी जैसा लकड़ीका साधम; छोटा चौगोड़िया। [-स्टूटी के घोडो छूटघो व्य किसे मालूम क्या हुआ? --ए चडचूं= अमल-पानी करना; नझा करना। -पलाणची= घोड़ी पर सवार होना.]

- मोइं न∘ मोड़ा या घोड़ी (२) छोटा या दुवला घोड़ा; टट्टू (३) चुड़-सवार सेना; रिसाला। [-पाडवुं≕ बहुत खर्ष कर डालना; (किसीको) बोझरूप होना.]
- **घोडे** अ० --के अनुसार; --की भौति **घोडेसवार** पुं० घुड़सवार
- षोडेसवारी स्त्री० घुड़सवार होना
- घोडो पुं० अक्व; घोड़ा (२) नदी या समुद्रकी उत्ताल तरंग (३) घोड़ेके आकारका सकड़ी आदिका नकुका-शीदार टोंटा; घोड़ा (४) बंदक. तमंचेका खटका ; घोड़ा ; लबलबी (५) कोई घीज रखनेके लिए बनाया हुआ वाला जैसा साधन; चौगोड़िया। चिका **रोडाववा == ल**याली पुलाव पकाना; मनके लहु खाना, फोड़ना । घोडा **नहीं** पहोंचवा = पैरोंकी शक्तिका जवाब दे देना; पैर लड़खड़ाना (२) अपना बस न होना; शक्ति न होना। घोडे वडवुं = नेतृत्व करना; अगुआ बनना (२) घोड़ी चढ़ना (३) बदनाम होना (४) उद्यत या आमादा होना। चोडे चडीने अग्वचुं = उतावली करते हुए वाना (२) खुले आम आना। **- साह** ववो = घोड़ेका पिछले पैरों पर खड़ा होना ]
- घौर्षुं न० जरूम, धाव(२)ल्रहुके सेलमें चढ़नेवाला दौव या खेलनेकी बारी
- घोर पुं० गूँज; गुंजार (२) संबूरा आदिमें क्ष्ड्लके स्वरोंके तारकी आवाज या गूंज या तान-सरंग
- घोर वि० घोर, डरावना (२) सिहरी पैदा करनेवाला; रोयें सढ़े करनेवाला (३) भूप; गहरा; घना; निबिङ;

_	•	_
l	ΨŪ,	¢

#### 240

- मारी; घोर; अत्यंत (निद्रा, बन, अज्ञान, अँधेरा आदि)
- जनान, जयरा जाव) **चोर** स्त्री० गोर; क़ब्र
- **बोरसोरियो** पुं० गोरकन (२) गोर खोदकर मुर्देको खा आनेवाला एक प्राणी (३) हीन कर्म करनेवाला[सा.]
- **घोरसोद्** वि॰ विनाशक; जो विनास करने पर आमादा हो
- षोरस्तोबुं न० गोर स्रोदेकर मुर्देको सा आनेवाला एक प्राणी
- **घोरवुं** अ०कि० (नींदमें) नाकसे खर्र-**खरंकी आवाज निकालना (२) खर्राटे** लेना; गहरी नींद सोना
- **धोरी** वि० नींद लेनेका झादी;सर्राटे-बाज्र
- घोरी पुं० गल्ला; गोरू (चरनेके लिए अहाने-जानेवाला)
- क्षोलक(-की) स्त्री०, (-कुं) न० बिस्टकुल छोटा प्रकाशरहित घर; 'स्लम'; घरौँदा
- बोळगुं स॰ कि॰ पिलपिलाना (२)
- च पुं० 'च' वर्गका तालुस्थानीयपहला व्यजन चक पुं० चिक; जालीदार परदा चकचक अ० सलाझल; चमाचम चकचकवुं अ० कि० चमकना; झलकना चकचकाद पुं० चमक; झलक; कांति चकचकित वि० चमकदार; चमकीला चकचार स्त्री० पूछताछ; चर्ची जकचूर दि० ग्ररक; वदमस्त (किसी नशेसे) (२) अ० चकनाष्टर

- षोलना (३) मिलाना (४) बोरसे धुमाना; चक्कर देना। [घोळी वीषुं, षोळीने पी अबुं = कुछ न समझना; न बदना; बसमें न रहना.]
- घोळाषोळ (--ळी) स्त्री० बहुत घोलना; चक्कर देना (२) विचारोंका मनमें चक्कर साना; मनकी डॉंबाडोल स्थिति; उघेड़-बुन
- घोळाचुं स०कि० ँघोळवुं 'का कर्मणि । [चोळाया करदुं = देर करना (२) किसी बात या विचारका मनमें बार-बार उठनाः]
- घोंबाट (बॉ॰)पुं॰ झोर-गुल; चिल्ल्पों
- वॉंच (घाँ०) स्त्री० लीकमें पड़ा हुआ गहरा गड्डा; बड़ी गड़ारी (२) चुभनेसे हुआ घाव या उसका असर; चुभन (३) नुक़सान [ला.]। [-वा पडवुं = लीकमें पड़कर गति मंद होना; बटाईमें पड़ना; रुका पड़ा रहना.]

चारन पर्ना, रका परा रहता.] घोंचपरोणो पुं० बार-बार पैना भोंकना घोंचवुं (घां०)स०कि० भोंकना; चुमाता

### খ

पकडोल (--ळ) पुं० पालने जैसी डोली-का बना, नीचे ऊपर चक्कर झाने-वाला एक झूला; हिंडोला (२) घुमड़ी चक्कर । [चकडोळे चडपुं = हिंडोलेमें बैठकर झूलना (२)नक्षा छाना, चढ़ना (३) उलझनमें पड़ना; मन डोलना (४)बारबार स्थगित -- मुस्तवी रहना.] चक्ती स्वी० छोटा गोल घपटा टुकड़ा; चक्ती

चकर्तुं न० किसी साथ वस्तुका गोल

	~	T.	

	110
या कोनेवार टुकड़ा; जलला (२)	षकसुं न० मुहल्लेके आगेकी सुली जगह;
चकत्ता (चमड़ी धरका निशान)	चौक (२) भौमुहानी; चौराहा;भौक
- वकनक पुं० चकनक (२) स्त्री० चिन-	चनली पुं० चौक या उसमें लगनेवाला
गारी (३) जनक; सरुक (४) तकरार;	बाजार
सगवा [रुा.] । [−सरवी कतकरार	चकलो पुं॰ नर चिड़िया; चिड़ा
होना; बसेड़ा होना.] [गोछ-गोछ	<b>भक्तवी</b> स्टीर० मक्रवाकी; चकई
चकर चकर स० धूमते चककी तरह	ৰকৰা ওুঁ০ বঙ্গৰাক; বচৰা
जकरडी स्त्री जकफेरी; गोल-गोल	ৰকতৰ(–ৰি)কত বি০ (২) ৰ০
<b>क्</b> मना; जनकर साना (२) पुमड़ी;	<b>आकुल-व्याकुल; ह</b> न्का-वन्का
सिरका घुमाद (३) चकई; गोरुा-	वकावक व० सकाचक; तृप्स होकर
कारमें धूमनेवाली चकती (४) गोल-	<b>वकान्ं(-यूं)</b> न० चकत्ता
गोल फिरे ऐसा एक खिलौना; फिरकी;	चकासबुं सं०कि० छान-बीन करना
चकई । [–रलाडवी ≕भरमाना; भुछा-	चकित वि० चकित; दंग
वेमें डालनाः] [सेलनेका एक सेल	<b>पकोतर्व</b> न०,( <b>–रो</b> ) पुं० एक तरहका
<b>भकरडी भगरडी स्त्री० वृत्त बनाकर</b>	बड़ा नीबू; चकोतरा
<b>वकरबुं न० व</b> क; चाफ (२)शून्य; सिफ़र	बकोर वि॰ चालाक; संसर्क; बंट
<b>चकर जगर</b> अ॰ पूमते चफ्रकी तरह	(२) पुं०; न० चकोर (पक् <u>व</u> ी)
<b>क्रकर बकर अ० वन्कर आनेसे मूर्डित</b>	वक्कर वि० धनचक्कर; पागल; बौड़म
(२) जनकी तरह इघर-उधर बूमना	(२) न॰ चक्का; पहिया (३) दौरा
बौर मुढ़गा; चकराना	लगाना; घूसना (४) घेरा; जमघट;
<b>भकरानो पुं० भनकर;</b> नेरा (२)	गोलाकार (५) (जैलमें) गोलाकारमें
परिषि; फैलाव (३) चक्रव्यूह;	मकानोंकी क़तार (६)भुमढ़ी ; सिरका
चकाबूह।[-सावो; चकरावामा पढषुं	घुमाव; ग्रेश; चक्कर (७) गोला-
≕ लंबा चक्कर काटते हुए जाना;	कारमें धूमना; चक्कर साना।
चकाबूहर्मे पड़ना.]	[आवर्षां =-सिरका चक्कर साना (२)
चकरी वि० गोलाकार; गोल; उदा∙	ग्रदा साना। –मां पडवुं = फँसना;
'वकरी पाघडी' (२) स्त्री॰ सिरका	उलझना (२) खटाईमें पड़ना (३)
धुमाव; धुमड़ी; चक्कर	षाटा होना; उदा० 'सो रूपियाना
<b>चकली</b> स्त्री० चिड़िया; गोरैया (२)	चनकरमां आवी गयो'.]
(नलकी) टोंटी; पानीकी कल्ल [ला.]	भवको स्त्री० भवको (२) घानी
(३) पानीका नरु। [गानी में	धक्कु न॰ देखिये 'चाकु'
् फैडफो मोढो=छोटे मुंह बड़ी बात; बूतेके बाहरकी बात.]	<b>चकम पु</b> ० पानल, बौडम मनुष्य
नूपन महरमा महरू। <b>बक्लुं</b> न० चिडि़या; प्रबेरू; उदा०	<b>चकवृदि वि० व</b> कवृद्धिः ओ सूद-दरसूद समयसः अपने
परुषु गण गिर्हमा, पश्चर, उपाण 'मकला बहु साई बाय छे'	रूगाया आये
নদকা বহু কাই বাগ চ	শলাৰণু ম০ কি০ পৰানা

		•	
4	1.	J.G.	l

**भवहोळ** न० देखिये 'चकहोळ'

बोरसे दबाना; रौंदना

बलना [ला.]

क्षम्बर्चु स० कि० पाँवों सरे कुचलना;

**चनदान्** अ० कि० कुषला जाना; रौंदा

बगबुं अ० फि० आकाशमें-ऊँचे उड़ना

(२) आनन्दविभोर होना; बहकना

बधवबुं अ०कि० जलन होता; छर-

छराना; चुनचुनाना (२) 'चरचर'

आधालके साथ जलना; जरवराना

(३) मनमें दुः श्वी होना; कुढ़ना;

**थचरपुं अ**०कि० छरछराना; जलन होना

चचराट पुं० छरछराहट; काटे; जलन

बट स्त्री॰ चिंता; सोच; फ़िक (२)

बिद; हठ (३)अ० चटसे (४) चाट-

पोंछकर; चट (कर जाना) झाना।

[--ददिने, लईने = चटसे; तुरन्त.]

**मटक** वि० चटकदार; गहरा; शोख;

उदा॰'रातुं चटक' (२) स्त्री॰ रुज्यत;

स्वाद (३) मनकी भूभन; दंश [स्रः]

(२) चटकदार; चटकीला (३)

मनको भानेवाला (४) मनोभावोंको

भड़कावे, उकसावे ऐसा (लेख,माषण)

**भइकमटक** वि० रसिक ; नसरेबाच (२)

बटकर्षु स०७० डंक मारना (२)

**भटफावर्षु** स०कि० डंक मारना;

भटनी स्त्री० उत्कट मनोभाव; बुभन

मनमें भूभना [ला.] (३) अ० कि०

स्त्री० चटकमटक

(चौदनीका) घटकना

काटना (२) मनमें चुमना

**पटकरार** वि० स्वादिष्ठ, लज्जतदार

बचुको (-डो) पुं० चिंगी; चिंबा

**पण्यार** वि० चार-वार

चचनाट पुं० चुनचुनाहट; जलन

जिला

(२) चुटकी (१) मोहिनी (४) सोहावना, सुरुता काल रंग **भटकुं** न॰ दूँद; छींटा बटको पुं० दंश; डंक (२) [का.] तीव मनोमाव; बुभन (३) स्वाद; चसका । [-सागवो = इंक लगना (२) मनमें चुभना (३) चसका लगना] षटघट अ० झटपट; तेवीसे चटनी स्त्री० घटनी चटपट अ० झट-सट; साबड्तोड़ बटपटी स्त्री० चटपटी (२) व्यकाहट; छटपटी; संताप बटबुं अ० कि० दिलको चोट लगना। [चटी जबुं = दिल पर चोट लगना.] भटाई स्त्री० चटाई स्विद चटाको पुं० मनकी चुमन; दंश (२) बटाढव्ं स० फि० घटाना **धटापटा** पुं० ब० व० रंगबिरंगी धारियाँ **षट्ट्** वि० घटोरा; जिमला (२) षूससोर षटोषट (--ट्रू) अ० चटाक-पटाक;तेजीसे बहुं व० देखिये 'चट' बड्डां अ० चट (कर जाना); सरम **चडकतर(--री)**स्त्री० जड़ा-उतरी चडचड अ० चड़-चड़से **ৰঙৰৰৰুঁ** গ০কি০ **শ**র-বর লাৰাৰ करना; तड़तड़ाना (२) तड़कना; भर्राना; घावमें खुइकीके कारण तना-वसे दर्द होना; चरचराना (भढ़ाई चढण (ड') २० चढ्राववास्ता रास्ता; चडती (ड़')स्त्री ०उमति (२) बढ़ोतरी; उत्यान-पतन बढ़ती **चक्तीपडती (उ'**)स्त्री० चढ्ती-पड्ती; षबतुं (उ') वि० बढ़ता, ऊँचे उठता हुआ (२) बढ़िया। विक्तो बहाको 🖛 चरर

	÷
	5

- बढ़ता हुआ दिन (२) उगता सूर्य (३) समुढिके दिन (४) (स्त्रीके) सगर्भा-बस्याके दिन ]
- **चवप(०चडप) अ**० चटसे; त्वरासे **चडमड** स्त्री० **बढ़-चढ़कर ढोल्**ता; खीज; ग़ुस्सा
- **चडभडवुं** अ० कि० ग़ुस्सा होना; (किसी पर) बिगड़ना; झगड़ा मोरू लेना; अधीर हो उठना
- अडसडाट पुं० गुर्राहट; सीज; गुस्सा
- चडब् (ड') स०कि०; अ०कि० चढ्ना (२) बाढ़ पर होना; बढ़ना; तेज, महंगा होना (पानी, आवाज, सूजन, भाद आदि) (३) सवार होना; उदा० ' घोडे महतू' (४) चढ़ाई करना; उदा॰ गुजरात पर चढी आव्यो' (५) पकना; सीझना; उदा० 'भात चडी गयो छे' (६) गर्वसे इत-राना; फूलना (७) सुस्सा होना; खीजना; उदा० 'चडी चडीने बोले छे' (८) तंग - चुस्त होना ; कसना; उदा० 'कपडुं चडी गयुं' (९)--से बढ़िया ठहरना (१०)--का असर होना;--का रंग रूगना; नशीली चीजोंका असर होना (११) जिद पर आना; उदा॰ 'ते हठे चडयो छे' (१२) (बाकी)बचना; इकट्ठा हो जाना; वद जाना; उदा० 'काम, उघराणी, 'रजा इत्यादि चडचां छे' (१३) **'चढ़ाया जाना; चढ़ना; उदा० 'हनू-**मानने तेल चडवुं; पीठी चडवी' (१४) देवादिको भेंट किया जाना; उवा॰ 'देवने फुरू, नाळियेर चडवु' (१५) काग्रज या खोल चढ़ाना। (वडी बेसनुं = सवार होना (२)

सिरजोरी करना (३) मर्यादा लौबकर
वरतना; हुकम न मानना । अभी
<b>बागवुं =</b> बहकना (२) मुंह लगना; मर्यादा लौंघना । <b>बढघे घोडे आववुं</b>
मर्यादा लॉघना । चढचे घोडे आवर्षु
😑 उतावली करते हुए आना.]

चढवो पुं० मिट्टीका छोटा जलपात्र; कुल्हड़ [(३) ममत्व; अहंकार

बहस पुं० चरस (२) व्यसन; चसका

चडसाथडसी (ड') स्त्री॰ प्रतियोगिता; चढ़ा-उपरी

- चडसीस्टुं(ड') वि० आदी; व्यसनी (२) अहंकार, ममत्य रखनेवाला;हठी
- **चढाई (डा**') स्त्री० चढ़ाई; सेनाका आकमण
- चटाउ (डा<sup>\*</sup>) वि० फूलकर कुप्पा हो जानेवाला (२) झट गुस्सा हो जानेवाला; तुनकमिजाज (३) (जमीनको) अनुकूल आनेवाला; गुणकारी (४) सवारीके योग्व
- चडाझतर (डा') स्त्री॰ देखिये 'चड-जतर' [होड़

बढाचढी (हा')स्त्री० चढ़ा-चढ़ी;स्पर्था;

- चढाण (डा') न॰ चढ़ाद; चढ़ाई चढाव (डा') पुं॰ ऊँषाई (२) उत्त-रोत्तर ऊँषी होती जानेवाली जमीन (३) ऐसा मार्ग (४) बढ़ती; वृद्धि (५) सेनाका आकमण
- चढावर्षु (डा') स॰ कि॰ चढ़ाना(२) चढ़ाई करनेको प्रेरित करना; उक-साना (३) चट कर आना; उदरस्य करना [बढ़ावा; उकसाना चढाचो (डा') पुं॰ देखिये 'चढाव' (२) चडियार्सु (डि') वि॰ बढ़िया चडी स्त्री॰ जीधिया; चट्टी चढक्तर स्त्री॰ देखिये 'चढऊतर'

बड्यूं स०कि०; अ०कि० देखिये 'चड्यू'

HEI	रदर वेपीलप्
महाई, चढींड, बहाझतर, बढावेडी	, बपट दि॰ बिपका हुआ; विपटी;
<b>भवाण, भवाव</b> देखिये 'चडाई' शीरि	
चढावचुं स० कि० चढाना	बपट वि० चिपटा; बैठा या घैसा हुआ;
चडियालुं वि० देसिये 'चडियातु'	चपटी स्त्री० चुटकी (२) उसमें पकडी
चण(ण,) स्त्री० थुगा; चुन; चुगा	ं जाय उतनी मात्रा; चुटकी मर चीज
भर्ष स्त्री० लहेंगे आदिकी भुष्ठटदांग	
सिलाई [(२) उसकी रीति	
बनतर न॰ चुनाई; (दीवारकी)जोडाई	र्चुटकी (बजाना) (४) चुटकी बर्जेर-
<b>चणवुं</b> स०कि० ईटें जोड़नां; चुनना	नेमें लगनेवाला समय; बोड़ी देर
খন্দৰ্ সংকিৎ খুখনা	(५) चुटकी (मरना, काटना) i [मा
वर्णसार पु० चनासार	<b>उडावव् ≕</b> शुमारमें न लेना; कुछ न
अमापनी स्त्री० हरे चनेका पौधा;बूर	ः समझना (२) मजाक उड़ाना ]
(२) ऐसे पौर्धोकी पूली, जुट	चपटी पुं० बड़ी चुटकी
<b>चणियारं</b> (णि') न० चौखटकी लक	<ul> <li>चपढालाख स्त्री० साफ की हुई लाखकी</li> </ul>
डीका छेद जिसमें किवाड़ धूमा करत	
है; चूल। [-ससी अवुं=दिमार्ग	
खिसकना (२) नुक़सान होना.]	(२)चमला;भिक्षापात्र [पुरेजा
<b>चनियो</b> पु० लहेँगा; घाघरा	धपतर्य न० काग्रजका टुकड़ा'; परचा;
वनी स्त्री० चनेकी एक जात; छीटा चन	
चमीबोर, न० चमेक जितना छोटा बैर;	
ें झेड़बेरी	जोड़नेवाला लोहे या पीतलका भुरेजी;
<b>भगोठी</b> स्त्री॰ घूँघची; गुंजा (बेल)	कब्जा (ई) बड़ाई; प्रशस
(२) गुँजा-फल (३) एक मान; रत्ती	
षतुराई स्त्री॰ चतुराई; होशियारी	विषसम् अ० कि० चौंपना; चौंपना;
भत् वि० देखिये 'छत्'	जोरसे दबाना (२) अपनी जगह पर ठीक बैठना
<b>यत्</b> पाट वि॰ पूरा चित ; चारों खाने चित	
चसापाट अ० पीठके बेल; अटॉचित	
चत्तुं (०पाट) देलिये 'चतुं' आदि	जगटबुं स॰ कि॰ सपॉर्टेसे खीनी; चंट कर जाना
बनोठी स्त्री॰ देखिये 'चणोठी'	भगेटी (-री) स्त्री० चार परिसेवली
षपं अ० झट; चटसे; एकदम	
चपकावयं स०कि० गरम करके चांपना	ा ्राज (२) नाज राज <b>चयैट(∻टी)</b> स्त्री० चपेट; तमाचा (१ं)
(र) चिपकाना (३) छौंकना	
<b>पपूषप अ० 'जूप-चप' आवाजके</b> संाथ (२) घटपट; तेजीसे अट कर्मान	रिए) (३) नुकसाने; 'आफत कि मान
बगबर्षु विर्वं चिपचिपा और पर्वपर्देश	
•	ાં ચકરવાય ગાળ પ્રાથમ કૃપાળવા ક <b>્રાદશાદ</b>
ग. हि—११	

भगोलई	१९२ चल्लारात
भयोतवं न० कागजका टुकड़ा; पुरजा	क्सन्वो पुं० चम्मच; चमचा
<b>षप्पट</b> वि० देसिये 'चपट'	चमर स्त्री० वाल या पर(२)स्त्री०;
<b>चम्पण(-णियुं)</b> न० देखिये 'चपण	
चम्पु पुं०; न० देखिये 'चाकु'	<b>चनरल्ं</b> न० चमरख
वबरको (सी) स्त्री० कागजका छोटा	
टुकड़ा; चिट [ बाचाल	<b>चमरबंची</b> वि० (जिसने) कमरमें चम
<b>भवराक</b> वि० चरबांक; चचल (२)	
<b>पतावलुं</b> वि० जरूरतसे ज्यादा अकलमद	
बबूतरी स्त्रीः छोटा चबूतरा (२)	जिसने कमरबन्द बाँघा हो
पक्षियोंके बैठने और दाना चुगनेकी	
चजूतरी	मंजरीके जैसी उनी या रेशमी कारी-
बबूलरो पुं० थाना; पुलिस-चौकी (२)	गरी (३) घोड़ेकी पूंछके बालोंकी
कर वसूल करनेका स्थान ; नाका (३)	बनाई हुई चँबरी; चँवरी
चौतरा; चबूतरा (४)पंखियोंको चुगा	<b>चमरोगाय</b> स्त्री० चमरी; सुरा-गाय
डालनेका पक्का स्थान	चमार पुं० चमार (२) वि० उस जातिका
<b>ब्बोळव्ं</b> स॰ कि॰ गालियाँ बकना	<b>चमेलो</b> स्त्री० चमेली (लता)
<b>गमक</b> स्त्री० चमक; झलक(२) (कंप	<b>चम्सद</b> वि० चमड़े जैसा; चिमड़ा;
या ऍठके कारण शरीरका) तनाव;	चीमड़ (२) कृपण; कंजूस
तनना (३) ताज्जुब (४)पुं० चुंबक;	जन्मडतोड वि० कंजूस; बखील
लोहुकान्त मणि	<b>चम्मर</b> स्त्री०; न० चँवर; चामर; चुमर
ामकर्षु अ० कि० चमकना; झलकना	चर अ० चरसे (कपड़ा आदि फटनेका
(२) चौंकना (३) चाल अच्छी न	<b>शब्द करते हुए</b> )
होना; हाथसे जाना	<b>घर स्त्री० लाई</b> ;नाली(२)भाड़;भट्ठा
सकाट पुं० चमक; चमकारा (२)	<b>चरकवूं</b> अ० कि० चिरकना (खासकर
वातोन्मादका आवेश (३) हाथसे	पक्षियोंका) [कड़वा; बेस्वाद
जाना; यहकना	<b>चरकुं(स्ं</b> ) वि० चरपरा और थोड़ा
मकार(रो) पुं॰ तनाव; कंप (२)	भारको पुं० रूई ओटनेकी चरसी;
षमकारा; झलक (३) 'चम-घम'	ओटनी (२) मिल (३) खराद
পাৰান্ত্ৰ	<b>चरचर</b> अ० जलनेकी आवाज करते
मकावयुं स० कि० चमकाना; चम-	हुए; चड्रचडसे (२) तेजीसे; जल्द
चमाना (२) (यप्पड़) रसीद करना;	(३) स्त्री० चरचराहट; 'खर-खर'
पीटना	आवाज (४)छरछराहट (५) चिता;
वजी स्वी० छोटा चमचा; चमची	सोच [ला.]
नकी स्त्री० पान-सुपारी आदि रसनेकी	<b>परघरषुं</b> ज० कि॰ देखिये 'चचरुवुं'
सास येकी; बदुवा	चरचराट पु॰ देसिये 'चचराट'

For Private and Personal Use Only

चरउ	રક્ષ્ણ ત્યાનું
<b>चरड</b> अ० कपड़ा वगैरह फटनेका झब्द; चरसे (२) जूतेमेंसे निकलनेवाली आवाज; चरमर <b>चरण</b> पुं०; न० चरण; पाँव (२) कविताका पाद; छंदका एक पाद; चरण; मिसरा। [सेथवां = चरणका आश्रय लेना; पैर पकड़ना.] चरबी स्त्री० चरबी; मेद (२) मद;	<ul> <li>मर्था स्त्री॰ चर्चा; बहस; जिरह(२) मिंदा (३) लेप</li> <li>मर्चामंत्र न॰ समाचारपत्रमें आया हुआ चर्चा-विवेचनात्मक लेख या पत्र; संपादकके नाम पत्र</li> <li>मर्यापत्री पु॰ समाचारपत्रमें चर्चात्मक लेख या चर्चापत्र लिखनेवाला</li> <li>मर्थाषुं अ॰ कि॰ चर्चा होना</li> </ul>
अभिमान [ला.] + [-करबी, करडवी ⇒ छेड़छाड़ या नटखटी करना (२) रोब या जोर दिखाना।बडवी, बमवी चचरबी चढ़ना; घमंड करना.] बरवुं अ० कि० चलना; फिरना (२) (पशुओंका) चरना (३) कमाना; पैदा करना ['चडस' आदि	चलन न० खोर; सत्ता; जलती (२) प्रचलित सिनका; चलन (३) रीति- रिवाज; चलन चल्ल्यी वि० जिसका घलन हो; चलन- सार; चलता (सिक्का) चसम् स्त्री० चिलम चलवर्षु स० कि० देखिये 'चलावर्यु'
<b>घरस, चरसाचरसी, चरसीलुं</b> देखिये <b>घराई</b> स्त्री॰ पशु आदिको चरानेकी मजदूरी; चराई <b>चराण</b> न॰ चरान; चरायाह; गोचर (२) चरानेकी मजदूरी; चराई <b>चरामण</b> न॰, (-जी) स्त्री॰ चरानेकी मजदूरी; चराई <b>चरावयुं</b> स॰कि॰ चराना [चरित <b>चरित</b> न॰ चरित; आचरण (२)जीवन- <b>चरित्र</b> न॰ आचरण; व्यवहार (२) जीवनचरित; जीवनी (३)वरित्तर; कपट; पाखंड [ला.] <b>घरी</b> स्त्री॰ परहेच [घर	चलाउ दि० चलाऊ; टिकाऊ चलापो स्त्री० पेंदेदार छोटी कटोरी; छोटा प्याला [छालिया चलापुं न० पेंदेदार छोटा कटोरा; चलाववुं स० कि० चलाना चलाषुं अ० कि० चलाना चलाषुं अ० कि० चलाया जाना चलाषुं अ० कि० चलाया जाना चलाषुं अ० कि० चलाया जाना चलूढुं न० छोटा कसोरा; छोटा प्यासा (२) मिट्टीकी लुटिया; कुल्हि्स चल्लुं न० गौरवाकी जातिका छोटा पक्षी; चिडि़या चल्लुं न० चुल्लू; अंजली चवड वि० चीमड़; चिमडा चयडावयुं स० कि० चववाना
वरा रागण रहवा [ यद बद पुं० चौड़े मुँहका एक बरतन; देग्न; बरेडो पुं० दिलको धक्मा लगना; धढ़का; डर; कलेजा फटना (२) चीरा बरो (रो') पुं० चरी; गौचरभूमि बर्बेचुं स०कि० चर्चा-बहस करना (२) निदा करना (३) चरखना; चंदन बादिका लेप करना	ववडावन् सर्व गिरु पंचवाना चवडुं दि० चीमड़ (२) न० (हल्की) फाल; कुसी चवराबनुं स० कि० चवाना चवाचुं न० चवेना; चवैना; चवाचुं न० चवेना; चवैना; चवाचुं न० चरमा; ऐनक। [ चद्या वाच्यां== कम दिखाई देना (२) दुमंड

14.1	
_	

_	÷	-	
•	Į.		

	( in the second se
हीता; चरबी लढ़ता । बर्ग्सा करी	बळबळ स्त्री॰ घटपटी; उतावसी (२)
जवां=गुस्सा होना ; तैवर बदलना (२)	हलचरु; आंदोलन
सही वस्तु न दिखाई दे ऐसा होनाः]	<b>चळवळियुं</b> वि० हलचल मचानेवाला
<b>भईमेध्य</b> वि० बिना ऐनकके बिलकुल	चळर्चु अ० कि० डिगना; हटना;
देख न सके ऐसी अखींवाला	खिसकना (२)पतित होना ; च्युत होना
चसक स्त्री० रेग या संघिस्थलके स्नायुके	चळाईँ स्त्री० छाननेकी मजदूरी
यकायक होनेवाले तनावसे उठनेवाली	भळामण न० छाननेकी उज्जत (२)
पीड़ा; हुक; चमक	छाननेके बाद चलनीमें बचनेवाला
चसकर्वु अ० कि० छटकना; खिसकैना	भूसा, चोकर आदि ; बूरे ; चलनौस
े(२) दिमारा ठिकाने ने रहनेहें चसको पुं० चमक; हुक (२) तलिवे;	<b>चळाववुं</b> स०फि० 'चळवु', 'चाळवुं' का प्रेरणार्थक
चाव (३) लत; यसुका (४) माज-	<b>चळावूं</b> अ० कि० 'चाळवुं'का कर्मरीण
नखरा; चांच-चोचला । [-आवयो,	(२) 'चळवुं'का मावे
नांखवो, मारवो ≟ टीस या चिलक	<b>चळुं</b> न० चुल्लू; आघी अंजली; अचवना
उठना; शूल उठना। –लागवों – लत	(खानेके बाद हाथ-मुंह घोते समय)
या आदत पड़ जाना; चसका लगना]	चंगी(०मंबी) वि॰ भाग-गांजेमें पूर
वसवसाट अ० कसकर; मर्जबूतीसे (२)	रहनेवाला ; भंगड़ ; मॅंगेड़ी-गॅंजेड़ी ( २ )
गट-गट (पीना) (३) पुं० चुस्त होना	व्यभिचारी
चसमपोशी स्त्री० चरमपोशी	चंगुं वि० चंगी; तंदुरुस्त
चसमुं न० देखिये 'चश्मु'	चंचवाळवुं संवंत्रिव (चोंचमें समाये
बसब् अ० त्रि० खिसकना; हिलना	इतना)थोड़ा थोड़ा मुँहमें लेकर स्वाद
बहेरी पु॰ चेहरा। [-पडवी, पडी जवो	लेना; चुभलाना (२) जल्द खत्म
बहरा पुरु वहरा [पडवा, पुडा जवा = बेहरा उतरना , मुँह लटकना ] क्रम विरु चल अस्थिर	न करना [ला.] (३) सहलाये जाना;
	हाय फेरना
चळ(ळ,) स्त्री० सुजली; चुल (२)	भंधळ दि० चचल; अस्थिर; डीवी-
हड़बड़ाहट, चटपटी [ला.]।[-आवयी,	डोल (२) चुलबुला (२) क्षणिक;
<b>बबो =</b> छट्पटी होना (२) खुजली उठना; चुलचुलाना.]	फ़ानी (४) चालाक; होशियार केंग्र ( च) कर केंद्र ( च) केंग्र
उठना; चुलचुलानाः]	चंचु(-चू) पात, चंचु(-चू)प्रवेश पुरु
चळक स्त्री॰ झलक'; चमक(२)चमक-	ेंचोंच डुबाना (२)अल्प परिचय; <del>चर्चु</del> - प्रवे <b>ज्ञ</b> [ला.]
दार टिकली; सितारा चळकचुं अ० कि० 'वलकना; 'वमकेनी	<b>पंडाल (ळ)</b> े दि० पंडाल; चांडाल;
चळकाट पुंठ चिलके; चमक; प्रकाश	निदंब; चातक (२) पापी; नीच (इ)
बळको स्त्री विलेक (रे) चमकनेवलि	पूरु एक जासका अत्यज; जोडाका
मितिका छिड्कान उदार्थ करिका	(४) जल्लाद'; इत्यापा (५) नीव्यधर्म
Internet internet	(-) month former (1) man

करनेवाला व्यक्ति; खांडाल (का)

े विषर चलकी छेटावी छे जिमा गणा है।

भाषु

4146

···ə
<b>डिवरी (२)गोल गठरी (३)व्यवस्थित</b>
रीतिसे लगाया हुआ ढेर; चक्का 🦥
चाकु पुं०; न० चाकू
चाकुं ने∘ बड़ा टुकड़ा; टौकी (२)
भेषका (३) <b>अजूरका गट्ठर</b> े
चाकू पुं०; नव चाकू; छुरी
भासकी स्त्री० खड़ाऊँ; पाँतड़ी
भासवुं संक्रिं० चालना; चसना (२)
स्वादके सिए साना ( चलना [ ला. ]
षाट वि॰ झेंपू; खिसियाना
चाट(ट,) स्त्री० कुत्तों आदिको खाना
डाल्जनेका पात्रविशेष (२) सानेका
्यसका; चाट [चोट
बाट स्त्री० चौटा;तमाचा (२)ताना;
बाटण न० चाटनाः चाटनेकी किया
(२)चाटनेकी औषधि ; अवलेह
<b>चाढणिमुं</b> वि० चटोरा; जिभला
<b>चाटणुं</b> न०चाटकर खानेकी दवा;अबलेह
बाटलुं न० दर्पण; आरसी
चाटचुं स० कि० चाटना;स्वाद लेना;
्रजीभ केरना [पौना(२)चप्यू
<b>चाटवो</b> पुं० काठकी बड़ी करछी ; डौवा ;
<b>चाटूडो</b> स्त्री० काठकी छोटी करछी;
्छोटा डौआ [चरबाँक
<b>वादूडूं</b> वि० जरूरतसे ज्यादा अक्लमंद्र ;
बादूडुं वि० जिसे चाट खानेका चसका
हो; चटोरा (२) षूसखोर
<b>चाटो</b> पुं० अवलेह; चटनी
बाठुं न० चकला; ददोरा
चाडियण वि०स्त्री० एककी बात दूसरे-
को कह देनेवाली; चुग़लखोर स्त्री
चाडियुं वि० एककी बात अन्यकी कहने-
थाला; खुतरा; चुग़लखोर
भाडियों पुं० दुवला-पतला व्यक्ति
(२) चिड़ियों, बंदरों आदिको डरानेके

<u> </u>
लिए बनाया जानेवाला मनुष्य जैसा
पुतला; भूहा; बिजूका; घड़का (३)
गौवका-मुहल्लेका दुष्ट व्यक्ति (४)
वि० पुं० चुग़लखोर, लुतरा
बाडी स्त्री० एककी 'बात दूसरेको
कह देना; चाड़ी। [ करवी, आवी
= चुग़ली साना ] [लाई-लुतरी
षाडीवुगली स्त्री० चाड़ी; चुगली;
चाडूं न० गोफनका ढेला रखनेका फंदा
(२) दीवार आदिमें दीया रखनेके
लिए लगाया जानेवाला लकड़ीका
टोड़ा; दीवारगीर (३) मुखड़ा;
चेहरा (तुच्छकारमें) (४) थाला
चावर स्त्री० चादर; चद्दर। [जोववी
≕चादर शरीर पर ओढ़ना (२)
दिवाला निकालना।
चादरसे ढाँकना (२) महंतकी मृत्युके
बाद उनके वारिसको गद्दी पर बिठाना
(३) तबाह करना; दिवाला निक-
लयानाः] [या बिछौना
चाबर्य न० चादरसे बड़ा रंगीन ओढ़ना
चादानी (चा')स्त्री० चायकी केतली;
चादानी
चानक स्त्री० चिंता; खटका (२)
चेतावनी (३) जागृति; चालाकी।
[-आपवी = चेतावनी देना । -आववी,
लागबी = सोच, फ़्रिक करना ; चेतना ।
-राखवी = सुतर्क रहना (२) सोच,
फ़िक करना ]
बानको स्त्री० चेंदिया; छोटी रोटी
वानकुं न० देखिये 'चानको'
वापचीप स्त्री० टीप-टाप (२) चिक-

- वापचीप स्त्री०टीप-टाप (२)चिक-नाई; अरूरतसे ज्यादा अझल इस्ते-माल करनेकी आदंत
- वापट स्त्री० चपत; तमाचा

बांधकी	<b>१६७</b> বলি
बायडी पुं० किसी चीजको कसकर	<b>चार</b> वि० चार; ४ (२) कुछ; कई
बौधनेका बंध; पट्टी; बंद; चिप्पड्	
<b>चापवुं न</b> ० हाय या पैरका उँगलियों	
बाला भाग; तली	होना (३) चार आंखें होना; देखा-
चापाचीप स्त्री० देखिये 'चापचीप'	देखी होना। – बोल कहेवा = जरा
चापाणी (ना') त० ब० व० चाय या	सीख या उलहना देना। चारे हाय
चायके साथका कलेवा; चाय-पानी	
(२) स्वागत या विदाई समारंभको	हेठा पडवा = कोई चारा या आधार
जल्पान [भाग;तली	' न रहना ]
चापुं (पूं) न॰ पैरका उँगलियोवाला	<b>चारसूणियुं</b> वि० चौकोना; चौकोर
चाबलो पुं० चाबुक; कोड़ा (२)	चारसूंट वि० (२)अ० चौकोर ; चौसूंटा
लगनेवाली बात—मार्मिक वचन[ला.] । -	9
चानला मारवा = व्यंग्य या मर्मभेदी	-
वंचन कहना ]	जातिका मनुष्य; चारण (२)वि० उस
<b>चाबुक</b> पुं० चाबुक; कोड़ा	जातिका 👘
चामठ् न० चकता; क्षाग़; सौट	चारणकाव्य न० 'बॅलड'
<b>चामड</b> वि० चमड़े जैसा चिकना	चारणी वि० चारणका; चारणसे संबद्ध
बामडियण स्त्री० चमारिन	(२)स्ती०भाट-चारणोकी कविताकी
चामहियो पुं० चमार	भाषा (३) चारण स्त्री
चामडी स्त्री० चमड़ी। [-आववी =	•
्यावका भर जाना; घाव पर नई	
चमड़ी आना।-सोडी नाखवी ⇒खूब	
पीटना; चमड़ी उघेड़ना.]	की ४२० वीं धारा-धोखेबाजी, छल-
चामडुं न० प्राणियोंकी शरीरसे अलग	
की हुई खाल; चमड़ा (२) चमड़ी	<b>y i i i</b>
(तुच्छकारमें) । [चामडां रंगवां =	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
् सस्त पीटना; खूब मरम्मत करना।-	
<b>ेलराब थव् ≃</b> मार खाना ।– <b>जूंवानुं</b> ⇔	
शव ठिकाने न पड़ना (२) बेकार श्रम	
उठाना (३) (स्त्रीका) झीलमंग	
होना; मर्यादा जाना (४) बदनामी	
होना.] [चामर वृत्त	<b>चारो पु॰ चा</b> रा; उपाय (२) चलन;
भागर पु; न॰ चामर; चेंवर (२)	सत्ता
बामाबीडियुं न० चमगादड	चारोळी स्त्री० चिरोंजी
भार (र,) स्त्री० चारा; हरी घास	चाल स्त्री० देखिये 'चाली'

 _
 ~

·····	
बाल पु॰ वाल; रीति-रिवाज (२)	बालती बहेलमा बेसवुं, बेसी बर्चु =
(चलनेक्रा-ुढंग; चाल (३) गति;	बड़ोंके या विजमीके पक्षमें जा भुसना.]
रप्रतार (४) (खेलमें)मोहरा मलाता	जालाक वि० चालाक ; होशियार ; चंट
या उसका दौव(५)चलन; आचरण ।	(२)धूर्त; काइयां
[ -पाडसो ⇔रीति कायम करना; प्रथा	<b>चालाकी</b> स्त्री० चालाकी; धूर्तता
क्टूरू करना । (~नी) झाले चालबुं,≔	<b>वाली</b> स्त्री० किरायेकी अनेक कोठ-
-की वाल-गतिके अनुसार चलना	दियोंवाला बड़ा मकान; चाल
(२)-का अनुसरण करना.]	बाखु वि० चुल्ता हुआ; जारी (२)
चालचलगत स्त्री॰, चालचलम न॰	हालका; वर्तमान
चाल-चलन; आचरण(२)चारित्र्य;	<b>चावडी</b> स्त्री० पुलिस-चौकी; थाना
হাল	<b>चावडुं</b> न० बीज गिराकर अनाज
षालणगाडी स्त्री० बच्चोंको खड़े खड़े	बोनेका बाँसकी उल्लियोंदाला
चलना सिंखलानेकी गाड़ी; घुड़ला	साधनु; बॉसा; सेल
पालवलाउ दि० कामजलाउ	<b>चावणुं</b> न० चना-चबैना
बालती स्त्री॰ चलता बनना। [	<b>चाववुं</b> स० कि० चवाना
पकडवी = चलता   अनना; प्रकायव	चावळुं वि० जरूरतसे ज्यादा अनुल
करना.]	बघारनेवाला (२)चरबाँक
बालवाकी स्त्री० गोटी आदि चलातेकी	चावी स्वी० चाभी; चावी; कुंजी (२)
रीति या होशियारी (२) चालनाजी;	उपाय ; गुर [ला.] । [–चडाववी्≡उक-
चालाकी [ला.]	साना; उत्तेजित करना; उभाड़ना ।
बालवुं अ० कि० चलना(२)किसी यंत्रका	<b>जडवी = रह</b> स्य या उपाय मिल जाना.]
गतिशील होता; चलना(३)निभना;	चास पु० हरू जोतनेसे बनी हुओ गहरी
गुज़र होना; उदा० ′आम आपणुं क्यां	लकीर; कूँड [कसौटी
सुषी चालगे ?'(४)टिकना; चलना;	<b>चासणी स्त्री</b> ० चाशनी; शोरा <u>(२</u> )
काम देना; उदा० 'आटला चोखा घणा	<b>चासन वि०</b> (२)अ० देखिये 'चाहन'
दिवस चाल्शे ' (५) असर होना;	चाह पुं० चाह; इच्छा (२)प्यार
बस चलना; उदा० 'एनुं कई	चाहन वि०(२)अ० जाहिर;खुले-आम
चालतुं नथी' (६) आचरण करना;	<b>चाहना स्त्री</b> ० देखिये 'चाह'
अनुसरण करना (७) काफ़ी होना;	<b>चाहवुं</b> स० कि० चाहना (२)प्रेम करना
हो सकना; उदा∙ ′आमा आटऌुं	पाहे अ० चाहे; मरजीमें आये
दूध चालको' (८) किसी प्रवृत्तिका	<b>भाळणी स्त्री० चलनी;</b> छलनी
गतिशील बनना ; उदा० 'अहीं मसलत	<b>चाळणो</b> पुं० अनाज छाननेकी बड़ी <b>छ</b> ल-
चाले छे'(९)चलन होना; प्रचलित	नी; झरना; चलना 💠
होना । [चालतां, रस्ते चालतां = अ-	चाळवचुं स० कि० कभी कभी उलद्भकेर
कारण; वैसे ही (झगड़ा मोल लेना) ।	करना; फ़ेरना (२)खपरलीको फेरना-

ुर्भवन्तुं	१६९ गई
<ul> <li>अस्तर्श</li> <li>क्रीक करना (३) अलग अलग तरीक्रेसे उपयोग करना (४) गोटी चलाना</li> <li>चाळ्य सुं कि छानना; चालना (२) खपरलोको ठीक करना; फेरना (३) अच्छा-बुरा छांटकर अलग करना; चुनना</li> <li>चाळा पुं ०व०व० नकल उतारना; स्वांग (२) नखरे; चोचला; हाव-माव (३) नटखटी; शरारत । [-पाडवा = किसीकी नकल उतारना.]</li> <li>चाळाचसका पुं ०व०व० नाज-नखरे; ,हाव-भाव (२) आनाकानी; टालमटूल घालीस वि० चालीस; ४०</li> <li>चाळो पुं ० नखरा; मटक (२) लक्षण; निशान; चिद्ध</li> <li>चांड करवुं, करी खवुं = हजम कर जाना; धोसा देकर था भय दिखाकर ले लेना; हड़पना; माल मारना</li> <li>चांगठ्र (०) न० चुल्लू; चार डॅनलियोकी अंजली</li> <li>चांच (०) स्त्री० चोंच (२) चोंचके जैसी नोकदार चीज; नीक; उदा० 'पाय- होनी चांच'।[-क्रूंचवी, दूबवी, दूडवी= समअमें आना; अक्लका काम करना; कुछ करनेके लिए शक्तिमान होना,]</li> <li>चांख (०) पुं गैती [डकैत चांख्यो (०) पुं गैती [डकैत चांख्यो (०) पुं गैती [डकैत चांख्यो (०) पुं व्येती, दांचीन; ज्यो खांछ वि० (२) पुं देखिये 'चंडाळ' चांहाळ वि० (२) पुं देखिये 'चंडाल' चांहाळ वि० (२) पुं देखिये 'चंडाल' चांहाळ वि० (२) पुं देखिये 'चंडाल' चांहाळ वि० (२) पुं व्येतनी; ज्योत्रमा (२) चरावा; छत चांहार्ड (०) न० तारोंकी धुंझली</li> </ul>	मांदरण् (०) न० देसिये 'चांदरडु' मांदरं (०) वि० सफ्रेद चित्तीदार (२) निरंकुश; मस्ताना [ठा.] चांदलियो (०) पु० चंदा; चंदामामा चांदलो (०) पु० टीका । [ चांदले चोंढवुं = नसीवमें लिखा जाना; पल्ले पड़ता.] चांदवुं (०) वि० . स्टट्सट; शरारती (२) न० नटसटी; शरारत चांदी (०) स्त्री० चांदी (घातु) । [ -जेवुं = विलकुछ उजला. ] चांदी (०) स्त्री० एक संकामक रोग; उपदंश (२) जहांसे चमडी छिल गई हो या उमरी हो ऐसा छाला । [-गडवीं = छाला पड़ना.] चांदुं (०) न० छेददार घाव; त्रण; उप- दंश रोग (२) घावका दाग्रं; चकत्ता (३) लांछन; दाग्र [ला.] (४) छिंद्र; दोष [गोल आकार
रोशनी (२) चांदनी (३) छोटे छेदमेंसे	चार्षु ( ५) न० पके कटहल्ला बीजकोषः
मुग्नेवाली रोशनीकी किरन For Private an	कोया <sub>.</sub> d Personal Use Only
- ··· <b>···</b> - ···	

ৰাল্জী	



चाल्लो पु॰ तिलक; टीका (२) डलाटमें	चिताळ स्त्री० चीरी हुई लकड़ीका
चिपकानेकी बिदी या टिकिया(३)	टुकड़ा; फट्ठा; चैला
मंगल अवसर पर दो जाती पैसोंकी	चित्त न० वित्त; मन(२)घ्यान [ला.]
भेंट ; बरोक ; टीकेका रुपया (४)ठीक	<b>चित्तो</b> पुं० चीता
तरह नहीं गठा हुआ (दालका) दाना।	चित्र न० चित्र; तसवीर
[-अमर रहो = (स्त्रीका) सौभाग्य	<b>चित्रकाम</b> न॰ चित्रकारी
असंड रहो। -बीटवी, बवी = इतने	चित्रो पुं∘ देखिये 'चीतरो'
रुपयोंका बैकार खर्च होना(२)इतने	<b>चिथरियुं</b> वि० देखिये 'चींथरेहाल'
रुपयोंका जुरमाना होना ]	<b>चिनगारी</b> स्त्री० देखिये 'चिणगारी'
<b>चिकासाई</b> स्त्री० देखिये 'शिकाकई'	चिनाई वि० चीनमें बनाया हुआ (२)
<b>जिकार</b> वि० भरपूर; चक; ठसाठस	चीन देशका; चीनी (३) चीनी
(२) लबरेज	मिट्टीका बनाया हुआ (४)नाजुक; कभ
बिखल पु० कीचड; चीखल [प.]	टिकाऊ मगर आकर्षक
<b>विश्वकको</b> पुं० झूला	चिपासियुं वि० कंजूस (२) बातका
विधियारी स्त्री० किकियाना;चिल्लाहट	बतगड बनानेका आदी
<b>विचूको (डो</b> ) पुं० विंआं, चिंचा	<b>चिवावलुं वि० दे</b> खिये 'चबावलुं' जिन्होनी की - जिंहती - जिन्ही
चिचोको पु॰ ईख पेरनेका कोल्हू	<b>विमोडी</b> स्त्री० चिंचड़ी; किल्नी <b>चिराई</b> स्त्री० चिरवाई; चीरनेको उ <b>फा</b> त
<b>चिदनीस</b> पुं० चिटनवीस	
बिठ्ठी स्त्री॰ चिट्ठी; खत; पुरजा (२)	<b>चिराग</b> पुं० चिराग़; दिया (२ <u>)</u> दियेकी लौ
मृत्युकी खबर देनेवाली चिट्ठी; कहा-	चिराडो पुं० देखिये 'चीरो' ['चिराई'
बत (३) सिफारिशो चिट्ठो; सिफ़ा-	विरामण न॰,(-णी) स्त्री॰ देखिये
रिशनामा ।[–उपाबबी == चिट्ठी उठा-	चिराववुं स० कि० चिराना; चिरवाना
कर खास वस्तुके अधिकारीका नाम	<b>चिरावुं अ०</b> कि० चिरना;फटना;दरकना
ंनिविचत करना । <b>⊸नाकवी</b> ≕उसके	<b>चिरूट</b> पुं०; स्त्री० चुरुट; सिगार
लिए चिट्ठी डालना ]	<b>चिरोडी</b> पुँ० एक प्रकारका नर्म पत्थर
<b>थिडावुं</b> अ० कि० चिड़चिड़ाना ; चिढ़ना	<b>चिसवर्षु</b> स <sup>े</sup> ० कि० मनन करना; सोचना
<b>খিরিয়</b> ন্ড বি <b>ও বি</b> ঙ্বিষ্টা	चिता स्त्री० चिंता; फ़िक(२)विवेार
<b>विद्याणुं</b> वि० चीकट और बदबूदार	चीक पुं०; स्त्री० अनस्पतिमें से निकलने-
चित्रमगरी स्त्री० चिनगारी	वाला चिकना रस या दूध ; निर्यास
वितर्यु न॰ चित; चित्त [प.]	<b>थीकट</b> वि० चिकना; चीकट(२)तेल,
<b>वितरानन</b> न० चित्र (२)चित्रकारी	घी आदि लगा हुआ(३)न०; स्ती०
वितराववुं स॰ कि॰ चित्र बनवाना	चिकनाई(४)चिकनी चीज़ (घी, तेल
चितार पुं॰ चित्र (२)हूबहू बयान	आदि) या ऐसे पदार्यमें रहनेवाला
<b>वितारो</b> पुं० चितेरा; चित्रकार	स्निग्ध,तरल–तैली तस्य;चरबी ; 'फॅट'

		÷.,	٠
499	<i>.</i>	Т	r
			3

101

- वीकटार्व अ०कि० घी, तेल आदिसे चिकटा होना; चिकटना; चिकनाना (२) घी, तेल लगा हुआ पदार्थ खानेसे रोग या फोड़ेका बढ़ जाना चीकटुं वि० चिकटा; चीकट (२) सौंप; भीतल चिकनाः स्रसदार निापन **चीकमाई (--्रा)** स्त्री० चिकनाई ; चिक-चीकणुं वि० चिकना; चिपथिपा; रूस-दार (२) [ला] कमखर्च; कंजूस (३) अरूरतसे ज्यादा अमुल इस्तेमाल करनेवाला; चिकनी चपड़ी बातें कर-नेवाला **चीकांश स्त्री० चिकनाई; स्निग्धता** चीकुन० मीकू (पेड़ और फल) चीचवाटो (--बो) पुं० चिल्लाहट ; चिचि-गीत; भीज याना चीज(--स) स्त्री० चीज (२) अच्छा चीटकवुं स० कि० चिमटना; पिंड न छोड़ना; लिपटना चीटुंवि० चिकना; चिकटा (२) न० मक्खन तपानेसे नीचे बैठनेवाला मैल : घ्तमंड; किट्ट रित; चिढ़ चीड(ड') स्त्री० गुस्सा; रिस(२)नफ-चीड न० चीड़ (वृक्ष) ि खिझाना चोडववं (ड') स० कि० चिढाना; षीडवार्षु (ड') अ० कि० चिढना; [ धुड्की; सिड्की स्रीजना **चीडियुं (ड')** वि० चिड्रचिडा (२) न० चीणो पुं० एक प्रकारका मोटा अनाज; चेना
- चीत वि० चित; पटका उलटा (कुश्तीमें) चीत (०ड्रं) न० चित्त
- चीतरवुं स॰ कि॰ चित्र बनाना; उरे-हना (२) घसीट लिखावट लिखना; घसीटना

ं चीत् चीतरी स्त्री० विनः नफ़रत या नाराज-गीसे छटनेवाली कॅपकॅपी । [-वडवी = घिनसे कॅपकेंपी छुटना ] **चीतरो** पुं० चीता (२) एक प्रकारका [ चैला बीतळ स्त्री० चीरी हुई लकड़ीका फट्ठा; पीलळो पं० एक प्रकारका सौंप; चीतल चीयद्वं न० चिवड़ा; चीयड़ा; े **चीवरी, चीवरं, चीवरेहाल** देखिये 'चींचरी' आदि. चीनी वि० चीनी: चीन देशका: चीनसे संबद्ध (२)स्त्री० एक प्रकारकी सफ्रेद मिट्टी (३) चीनकी भाषा बीनो पुं० चीन देशवासी; चीनी बौप स्त्री० लंबी चपटी पट्टी; खपची; चिष्पी; फड़ी (२) ताशके पत्तोंकी पिसाई या उसकी बारी बीपट स्त्री० खपची; चिप्पी 🛶 **चोपटो** स्त्री० देखिये 'चपटी' चीपटो प्ं० देखिये 'चपटो' चीपई न०, (-डो) पुं० औखका कीचड़ ; चीपड़; कीचड चौपवुं स०कि० हाथसे दाब--सींचकर पट्टी बनाना (२) सजाकर रखना; ताशके पत्तोंको पीसना; फेंटना; धोतीकी लौंगको ठीक करना (३). (बातका) क्तंगढ़ करना चीपाचीप स्त्री० वार-बार सजाकर रखनेकी किया चीषियो पुं० चिमटा चीवडी स्त्री० उल्लुकी जातिका पक्षी; खूसट

- षीबडुं वि० चिपटी नाकवाला; चिपट षीबरी स्त्री० देखिये 'चीबडी'
- **चीमुं** वि॰ चिपटी नाकवाला; चिपट

क्रिसवी	<i>१७२ - व्यापुर</i>
सीभड़ी स्वी० ककड़ीकी जातकी एक बेल	······································
सीमब् न॰ आरिसा; फूट	रिवाज; परपरा; रूढ़ि [ला.]
जीमटी स्त्री० देखिये ' चपटी '	<b>चीपट</b> स्त्री • होशियारी; दरकार
भौमटो पु॰ बड़ी जुटकी (२) बड़ी	
जिमटी; चिकोटी (३) चिमटा <del>.</del>	<b>चीसाचीस</b> स्त्री० लगातार चीखना-
बोमनी स्त्री० धुआंकश; चिमनी (२)	र्भीयरी स्त्री० छोटा चिथड़ा (२)धज्जी
लेम्पकी चिमती [ (कृत)	<b>ग्रींथर्थ</b> त० फटा-पुराता कपड़ा य <del>ः क</del> प-
<b>चीमळव्ं</b> स॰ कि॰ महोड़ना; उमेठ <del>क</del>	ढ़ेका टुकड़ा; चिथड़ा; गूदड़
भोमळावुं अ०कि० कुम्हलानाः मुरझाना	<b>र्वाथरेहाल</b> वि० जो फटे-पुराने कपड़े
(२) भीतर ही भीतर जलना;	पहने हो (२) अत्यंत निर्धन; फटे-
ुकुढ़ना; झुरना 👘 👘 [वरार	हाल [ला.]
चीर स्त्री० फॉक; टुकड़ा (२) चीरा;	चींदरडी स्त्री० चिंदी; (कपड़ेकी) घज्जी
चीर स्त्री० स्त्रियोंका एक रेशमी वस्त्र	चोंबरडो पुं० (कपड़ेकी) बड़ी चिंदी,
(२)वल्कल(२)कोई कीमती कपड़ा;	धज्जी [(२)फ़रमाना
षीर (प्रायः व्यंग्यमें)	चींघवुं स॰कि० चेंगलीके इशारेसे क्लाना
बीरबुं स० कि० चीरना; फाइना; पाछ-	<b>चींबोळव्ं स</b> ०कि० देखिये 'चीमळव्ं'
ना; काटना (२) बीचमें से दो हिस्से	• •
करना; आर-पार निंकल जाय ऐसा	चुकाबचुं स०कि० 'चूकवुं'का प्रेरमार्यक
करना (भीड़को चीरना) (३) गहिकसे	<b>जुकावुं</b> अ० कि० 'चूकवुं'का कर्मणिरूप
उचितसे अधिक दाम लेना; लूटना;	<b>भुगल</b> वि॰ मुग़लखोर; लुतरा (२)
कसेना [ला.] [अचार	स्त्री० चुग़ली
भीरियां न०व०व० आमकी फाँकोंका	<b>चुगललोर</b> वि॰ चुग़लखोर; चवाई
षौरियुं न० फॉक (२) (प्रायः आमके)	<b>भुगली</b> स्त्री॰ चुग़ली
तचारका टुकड़ा	<b>चुगलीलोर</b> वि० चुग्रलखोर; चवाई
<b>भोरी</b> स्त्री॰ छोटी पतली फॉक; टुकडा	<b>षुडेल</b> स्त्री० चुड़ैल; डायन
<b>चीरो</b> पुं० चीरकर बनाया हुआ लेबा	<b>चुनंदा(दुं)</b> वि० चुनिंदा; बढ़िया
पतला टुकड़ा; घज्जी; चीर (२)	<b>चुनारो पु० चूना फूँकनेवाला (२)चूने</b> से
शिगाफ; दरार(३)पाछ; चीर	पुताई करनेवाला  राज(३)चूना फूँक- रेकानी, व्यक्तिय प्रयाग
षील स्त्री० वृक्षों आदिमेंसे निकलने-	नेवाली आतिका मनुष्य
वाला रस; निर्यास(२)एक तरहकी भाजी; बथुआ; चिल्ली	<b>जुप</b> वि० चुप; खामोश (२) अ० शान्त आप प्रौत स्वर्टने जिप समित करने
गोजा, बपुजा, पिल्ला <b>चोल</b> स्त्री॰ चील पक्षी	या मौन रहनेके लिए सूचित करने- वाला संकेत
बोलकाबप स्त्री० चीलकी तरह झपट्ठा	
मारकर झट छीन लेना; चीलझपट्टा	चुपकी, चुपकोबी स्त्रो० चुप्पी; मौन चयनाय अपासंप अ० चपनाय
	<b>प्रयाप, युपाप्रुंप अ०</b> चुपचाप

	ेर्रेष्ड् जूलासमझ
ৰুমাৰ ন০ সি০ অগলী মতাকি ভিলায	
शान्त होना; मन मारना (२) मीत	
ही भीतर जलना; मन मसोसना	निशासा, गाँडी वादि)
<b>पुलेतवं</b> न० छोटे पीढे पर जड़ी हुई एव	
प्रकारकी छुरी; हँसिया	भूड स्ती० औटी; (सॉपकी)पकड़;
<b>भूलेतरी</b> पुं० आम काटनेका औंजार;	; लपेट, कुंडली
लकड़ी परे जड़ा हुआ बढ़ा सरीता;	
अमकटना "	बुडलो पुं० देखिये 'चुडो'
<b>जुसणियुं वि० सोखनेकी प्रकृतिवा</b> स	
(२) न० छोटे बच्चोंका चाटनेक	में रेकार्ड ; चडी । 🕞 🖬 यहेरबी 🖛 नामर्द
काठका खिल्जैना; चट्टू 👘 🖉	बननाः चडियां पहननाः ।
<b>चुसाड (र) मुं</b> स० कि० भुसाना	The second se
<b>चुंग(-गा)</b> रू स्त्री० पंत्रा; चंगुरू;	
चुंगल (२) उसके जैसी मजबूत पकड़;	
বৰাৰ; হিৰ্মাজয় [জা.] -	बूडो पुं० बड़ी चूड़ी; चूड़ा । [-कोंबको
<b>चुंगी</b> स्त्री० तंगाकू पीनेकी नलीके आका	
रकी चिलम [महसूछ; जुबी	
भूनी स्त्री० माल पर लिया जानेत्राख	
<b>र्चुबक</b> चि० चुंबन <b>ंकरनेवाला; झुंबक</b> (क)र्फ्लानि चोन करनेवाला; झुंबक	। पत्रका छत्त थे। । — च — क करेक — क — क / , )
(२) अपनी कोर कींचमेवाला (२)	
न० चुंबक वस्तु; उदा० 'लोहर्चुंडक'	
<b>चैंबर्च्</b> स॰ कि॰ चूमना संगणीय जिन्द्र स्वैजनीय रेड्डर	<b>भूनुं</b> म <b>ं म्</b> यी; मुज्नी; चूनी-भूसी ह
चुंमाळीस वि० चौवालीस; ४४ बोलेलेल विकासी करा शिक्षा	<b>थूती</b> कुं० चूनाः भ ('पुप' आदि
<b>भूमोतेर</b> वि० मौहत्तर; ७४ जन रही कर भार	चूप, चूपकी, चूरायाप, चूपांचूप दिलिये
<b>चूक</b> स्त्री॰ चूक; भूल	बूसेंबु संगफि० चूमना; जिबन करता।
चुकेते वि० चुकती; बैंबॉक चुकेते अ० चुकती; अदा	भूर पूर्व भूर; भूरत [भूर्ण सरम पर साम र सामिति ) मिल्लिय
भूकते जेण मुलदा, जेवा भूकतेवच् स० कि० भुला देना; भुलाम	चूरण न॰ चूरन; बुकमी (२) औषविका सन्म न॰ भोजन्तर पत्र प्रवार विकास
पुरुषपु २० (२० नुरु) २९१२, नुरुम	
े (२) चुकता करना ; निपटाना <b>(ऋर्णे</b> ; ''तर्करार)	; <b>वूरी</b> स्त्री० चूर; बारीक <sup>9</sup> षूरा (सुपारीका)⁻
<b>जूक्वावं</b> अ० कि० 'चूकववुं'का कर्मणि	ग बूरी पुंठ क्रुशह बूर मन्द्र का क
बिकव अ० फि॰ चुकमा (गलती करमा)	; चल (च'ल,) स्कीक रसोईके किष्ट केल-
भिल्नों (२) अदी होना; निर्दछना चुकता (३) संयुक्त कियेकि स्पर्भ मुल	कर बनाया हुना बडा पूरहा; जिट्डीन
चुकता (३) संयुक्त किंधनि स्पर्मे मुल	त्र प्रायमधी, प्रतारमधी (कि)गेरव्या -
कियकि साथ जाती है; व्यूकेना;	दूल्हेका भी काम <sup>ा</sup> देनेवाली अनीखी

meter .	१७४ चेताव्य
पूलो पुं० चूल्हा। [ भूस्लमा का, पव, पेस	भूंदली स्त्री व्युटकी;चितुटी । [-सम्बरी,
= कूल्हेमें जा; भाड़में जा। -कूंकबो	भरबी,लेबी = चुटकी काटना या लेना.]
= खुद रसोई पकाना ; भूल्हा फूंकनाः ]	भूंटलो पुं० बड़ी चुटकी
<b>चूर्वु</b> अ०कि० चूना; टपकना	चूंटवुं स०कि० चुटकीसे तोड़ना ;चुनना
<b>बूबो</b> पुं० छप्परका वह छेद जिसमेंसे	(फूल आदि) ; किसी वस्तुका ऊपरका
पानी चूए (२) लकडी या नरेली <del>के</del>	हिस्सा नोचना, स्रोंटना (२) चुनना;
षलनेसे उसमेंसे निकल्नेवाला रस	पसंद करना; छोटना । <b>[चूंटी काढवूं =</b>
भूस स्त्री० चूसना; कोवण; बोहन	चुननाः, छोटनाः]
भूसम न० शोषण (२)वि० नूसनेवासा	चूंदाचुं अ०कि० चुना जाना
भूसणनीति, भूसणपद्धति स्त्री० शोषण	चूंडी स्ती॰ चुटकी; चिकोटी
<b>पूसनी</b> स्ती॰ चट्टू (२) जूस डालना	भूंस स्ती० अंगतोड़ पीड़ा
बूसबुं स०कि० चूसना; सोसना(२)	<b>चूंथव्ं</b> स० कि० हायसे कुचल, मसल
रस, सार निचोड़ लेना [ला.] । [बूसी	डालना; गींजना; कम या व्यवस्था
<b>चावुं =</b> चूसकर निःसत्त्व कर डालना.]	अस्तव्यस्त करना
र्णू के चांन करवुं ≕चीं-चपड़ न करना; चूँन करना	<b>चूंगावुं</b> अ०क्ति० 'चूंयवुं'का कर्मणि च <del>्चनी ज्वी</del> र जन्मीर चौनी जि
चूंक स्त्री॰ पेटकी ऐंठन; मरोड़(२)	<b>र्षूववी</b> स्त्री० चुनरी; <b>पूं</b> दरी [प.] संसर्य दिक लेकिने 'लंगरू'
छोटी कील; तारकी खूँटी; चरई।	<b>चूंबळुं</b> वि० देखिये 'चूंखडुं' <b>चूंबाळीस</b> वि० देखिये 'चुंमाळीस'; ४४
[-आवबी =पेटमें पीडा होना (२)	जूनाळास (५० पालय पुनाळास ; •• वेकन् (जॅ') स॰ कि॰ देखिये 'छेकवुं'
बुरा लगना; नाराज होना (३)	वेकंचेका, बेकाचेक (चॅ') स्त्री॰देखिये
गुप्तरूपसे एतराज होना.]	' <b>ອີຈາເອົາ</b> '
भूकार्ष ज० कि० पेटमें ऐंठन पैदा होगा	<b>चेको (चॅं) पूं० छेंक</b> (२) छ <del>ॅंकनेसे</del>
(२) गुप्तरूपसे मनमें नारावनी	होनेवाली लकीर या दाग
होना; नहीं भाना [ला.]	चेदकन०्मूत; भूतप्रेतकी छाया (२)
भूंसगुं (चूं) वि॰ चूंधा; छोटी सर्सों-	जादू; चेंटक
वाला; जिसकी दुष्टि मंद हो	चेडां न० ब० व० पागलके से हावभाव
<b>चूंचवाब्</b> अ० कि० देसिये 'चुमार्यु'	्या चेष्टाएँ (२) छेड्छाड़; नटबद्ध
<b>पूंचडूं</b> वि० देखिये 'पूंखडुं'	<b>पेतवणी</b> स्त्री० चेतावनी; चितावती
चूंचा न० चूं या चीं-तनिक मी बोलना;	<b>वेतवर्ष्</b> स० कि० अलाना; सुलगाना
प्रत्युत्तर देना (२)एतराज; आना-	(२)आग लगाना (३)इशारेसे ब्लाना (४) चिताना
कानी । [ <b>–करवुं ≃ कूं-</b> चपड करना. ] <b>कूंदुं वि</b> ● देखिये 'कूंसळुं'	<b>चेतव् अ० कि० सुलगना; जलना(२)</b>
भूमु । ५० २। २४२ - पूलस्यु भूट स्त्री० सुजसी ; मुलकन	भाग लगना (३) इशारेसे समझ जाता
भूदमी स्ती० भूनताः परांदः (२)	- (¥) बौकबा होना; चेतना
कुतानः; निर्वाचन कर्णाः स्थितः १९१)	वितायनुं स॰ कि॰ देलिये 'वेतववु'

	<u> </u>
1	
	-



- चेम(चे) न० चैन; सुस; आराम; . कल (२) आनंद; मजा।[--पडण्ं= कल पड़ना; चैन पड़ना ] बैन(चॅ') न० चिन्न; आसार वेनवाळो (चे')पु० चिह्न; निशानी (२) पुं०ब०व० हाव-भाव; नाज-नखरे चेनवाबी (चें) स्त्री० सुंख-चैन; अमन-चैन; चैनकी बंसी बजाना **चेप** पुं० मवाद; पीब(२)दूसरेके रोग या संबंधका असर; छूत वैष पुं० दाब;दबाव (२) दुराग्रह; जिद;हठ। [— छोडवी == संग छोड़ देना(२) अपनी हठ छोड़ देना। -मुकबो, मेलवो = (सूई दारा)टीका लगाना (२)दुरावह छोड़ना ] **चेपम्ं** स० कि० दबाना (२)निचोड़ना (३)स्रोंसना; रोपना चेपी दि० छुतहा; छुतैला; संक्रामक (२) चिकना; दुराग्रही **वेरव्**(चॅं) स० किं० अक्षर आदि काटना; छेंकना (२) खुचड़ या दोष ॅनिकालना; चर्चा करना; <mark>बात छेड</mark>़ना **वेरंवेर** (--रा), **वेरावेरी** (जॅ) स्त्री०
- खूब छेकता; बार बार छेकना चेरीमेरी स्त्री० बढि्याया
- **बेरो (चॅ')** पु० छॅंक
- चेलको स्त्री॰ लड्की (प्यार और तुच्छ-कारमें) (२)चेली; गुरगी
- **चेलकुं** न० बालक
- **वेलको** न० लड़का
- जेली स्त्री० चेली; चेलिन; गुरमी
- **वेलो पु॰** चेला। [**--गूंडवो** == चेला मूंबना]
- वैवर्षु सं•कि० सेंकवा; भरम करना (जलती ६ई या मोमके); कुरुकामा

**चेह (**चॅ) स्त्री॰ चिता

- बँचे (चॅ०)स्त्री०चीं-चीं (२)किच-किच
- **चेंचें**पेंचें (चॅ॰,पॅ॰)अ० खानगीमें; आप-समें (२) स्त्री०; न० आनाकानी;
  - एतराज (३) बककास; बड़बड़
- **चैतर** पुंक् चैत्र मास; चैत
- बोक (थाँ) वि० चार गुना (अंकोंमें) (२) पुं० घरके बीचकी चौकोर खुली जगह; चौक; अजिर (३) मकानके सामनेकी खुली जगह; चौक; सहन (४) मुहल्लेके बीचकी खुली बगह (५) बाजार। [-पूरबा = चौकमें सथिया (स्वस्तिक) अंकित करना (२) मंगल-कार्य करना (३) खयाली पुलाव पकाना.]
- षोकठुं (चाँ) न० लकड़ीका चौकोर ढाँचा जिसमें किवाड़के पल्ले जड़े जाते हैं; चौखट; चौकठा (२) ऐसा लकड़ी-का कोई चौकोर ढाँचा; जौखटा; फ्रेम; चौकठा (३) युक्ति; बाखी [ला.] (४) मुहल्लेका सहन । [--बेसचु, बेसी खचुं=सब जोड़ोंका ठीक लगना (२) विधाह तय होना.]
- बोकडी (याँ) स्त्री॰ × ऐसा चिह्न (२) कमरेमें बना हुआ मेंडदार चौका जिसमें मोरी रहती है; बौका (३) चार आद-मियोंकी मंडली; चौकड़ी (४) चार युगोंका समूह। [-यडवी=लिखा हुआ गुरुत होनेसे उस पर कास पड़ना; अनु-नीण होना।- मूंकवी=गुरुत ठहराना; रह करना (२) उत्तीर्ण न करना (३) गैरहाजिरका चिह्न करना.]
- चोक्स्टुं (चॉ) २० किं० देखिये/चॉक्स्टूं' चोक्स (चॉ) वि० चौकस; तय; प्रक्य;
  - ठीक (बस्तु) (२) ततर्क; होशियार;

-	- C
	TEC.
46.44	

	रण्य चाल्यु
चौकस (मनुष्य) (३) भंरोसेका	भोस वि॰ बोखा; साफ़ (२) स्त्री॰
े (मनुष्य) (४) अ० अवस्य 👘 👘	सफ़ाई; चोसापन (३) फ़ैसला; निब-
चोंचेसाई (चाँ) स्त्री० चौकसी; चौक-	टारा (ला.)
साई (२) भरोसा (३) खबरदारी।	बोलवट स्त्री॰ पवित्रता; शुद्धि (२)
[-रासवी = सतकं, सावधान रहना ]	सफ़ाई; स्पष्टता (३) निबटारा;
<b>कोकसी</b> (चॉ) पु॰ सोने-रूपेका कस नि-	फ्रेंसला.
कालनेवाला (२) चौकसी; सोने-रूपेका	भोकंड (चाँ) नि० देखिये 'चोखंडु' (२)
पैशा करनेवाला (३) एक अल्ल (४)	पुं० चौकोर आइति (३) चारों महा-
स्त्री० देखिये 'चोकसाई'	द्वीप (पृथ्वीके) जोवनंग (जर्भ) कि जोनेनेन के जिल्ल
चोकियात (चॉ) पुंध् चौकीदार	बोखंडुं (चाँ) वि॰ चौकोर; चौकोना (२) जेनन (२) जेनन
बीकी (वाँ) स्त्री॰ वह स्थान जहाँ चौकी-	(२) चौरस (३) चौखंड
दार रहती हो; चौकी (२) रखवाली;	<b>चोला</b> पुं० <b>व० त०</b> चावल; तंडुल । जिल्लामा जर्म-ज्योग केरे जिल्ला।
वीकीदारी (३) निगरानी; चौकी	[-मूकदा जवुं = त्योता देने जाना। भेगी इसळ् = बड़ेके साथ छोट्टा]
े (४) टोल-नाका; चुंगीघर (५) एक	चोसापूर वि॰ एक चावलके बराबर
गहना (६) लकड़ीका चार पायावाला,	्नाप या वजनमें); चावलभर् 🛬
चौकोर छोटा सख्ता; चौकी	श्वीखाभार वि० एक चावलके वज्रन्के
चोकोदार (चॉ) पु॰ चौकीदार	जितना(२) जरा-सा [ला]
भोकीदारी स्त्री० चौकीदारी; रखवाली	जितना(२) बरा-सा [ला ] <b>बोखुं</b> वि० देखिये 'चोख्खु'
मोकीपहेरो पु॰ चौकी और पहरा; कड़ी	<b>चोलूण(-णियु)</b> (चा) वि० चतुष्कोणः
्निूर्गरानी; सख्त पहरा	योकोना.
कोको (चाँ) पु॰ चौकोर स्थान; चौका	चोचूंट (चाँ) विश्वचारों दिशाओंमें
(२) रसोई करनेके लिए गोकुसो	आया हुआ; सम्हम; चौर्खंट (२)-अन
लिप्री: हुई लगह; चौका (ह) मुल्झुः	आया हुआ; हमाम: चौर्ष्ट (२) अत चारों ओर; चौर्ष्ट
्सज व्यक्तिको लिटानुके लिए मोनरसे	चोखो पुं० चानरुका, दानाः 🔬 👾
लीयकर तैयार की हुई जगह; लोका।	चोरुलाई स्त्री० स्वच्छता; शुद्धता(२)
्रिकोके पहलुं म्मरणासन्न होनर । जोके	प्रासाणिकता; संबाई 👘 👘 😕
लेन् 📻 मरणकम्या प्रर सुलन्ताः खादसे	खोख्खुं वि० स्वच्छ; साफ़ (२) बिना
- इतारना । देवो, :: वाळवो 🗮 ,चौका	मिलावटका; शुद्ध; फोखा; सम्रुलिस
लगाना (२) प्रपुत्तः करताः काम	(नफ़ा) (३) सच्चा; खरा; झामा-
े <b>बिगासूला,</b> (१९३४२२४२४) २४	णिका(४)सम्बट; सन्न ।∉[∺कर्र्सुकः
बोको (चाँ): मुंध्वनीकाः चौका (ताशकी)	ात्रासः नारवाः (२)
चोकास (मर्ट) विकदेशिमे विवासू मान	घोटाला निकाल देना (४) खत्म केरना ।
बोक्सने (चौ) मुंब के बौआ हर बाँकान	<b>बीरतो<sup>ः</sup> नामरे</b> , <sup>कः</sup> हाम 🗄 प्रामालिक,
. <b>(तारामेम)</b> , केंश्रे कर्त को जिल्ला भाषा गर्द	<b>देवालधारः व्यप्तिः</b> ]ः (१२११२०)

मोरन् पट

100

चोचरी

- **कोक्सुंधट** वि० विल्कुल साफ़;साफ़-सुषरा
- चोगको (चॉ) पुं० चारका आँक; ४
- **थोगथुं**(चाँ) वि० चार गुना; चौगुना **वोमथ(--रद**स) (चाँ) अ०∵ चारों
- दिशाओंमें; चौगिर्द
- **चोमान (**चॉ) न० मैदान; भौगान
- **चोवडियां** (चॉ) न०ब०व० चार चार घड़ीके अंतर पर बजाये जानेवाले नगाड़े; गजर
- षोघडियुं (चॉ) न० चार घड़ी जितना समय (२)मुहूर्त; साइत
- बोट स्त्री चोट; आधात; वार (२) घात; दावें; मौका (३) एक प्रकारका तांत्रिक अभिधार; मारण; मूठ(४) निशाना। [-लागथी, वागवी ⇒ अवूक वार होना; दावें या युक्तिका सफल होना (२) चोट लगना; जरूमी होना; मोच आना. ]
- चोटडुं(-डूक, -च) (चॉ) वि० चिप-कनेवाला; चमचिच्चड़
- भोटली स्त्री० चोटी; शिखा (२)नारि-यलने रेंगे ! [-पकडवी = चोटी दवाना (२)कान पकड़ना; कबूल कराना। --मंतरबी ≕दार्व-पेचसे बसमें करना; चोटी कतरना। --स्रद्दे जबी ≕छलना.]
- बोटलो पुं० स्तियोंकी चोटी; वेणी
- चोटवुं (चाँ) स०कि० चिकनाईके कारण जुड़ना; चिपकना; (--से) ऌग जाना (२) चिमटना; आग्रहपूर्वक पकड़े रह-नाः; अड्डा जमाना [ला.](३) अ०कि० नैठना (तुच्छकारमें)
- **चोटाइन्** (चों) स॰ कि॰ चिपकामा -
- चोटी स्त्री० चोटी; शिवा
  - गु. हि–१२

- **कोट्डुं** वि० कोरी करनेका आदी; कोट्टा (२)सुज्वा; चाई
- भोबवुं (वॉढ) स॰ कि॰ चिपकाना (२) जड़ना; विठाना (३) जमाना; लगा-ना; मारना (धौल, सोंटा) (४) ठीक, कठोर, छनती बात कहना
- **चोटाई (चॉ \ स्त्री ० चौड़ा**ई
- षोडुं (चॉ) वि॰ चौड़ा (२) चौहरा
- चोडो (चाँ) पुं॰ एकके ऊपर एक रखी हुआँ चीजोंका ढेर; गड्डी
- त्रोतरक (चॉ) अ॰ चारों तरफ ; चौमिर्द
- बोतरो (चाँ) पुं० बड़ा चढूतरा; चौतरा (२)थाना; चौकी [दोसुती; इसुती
- चोतार्थ(चॉ) वि॰ चार तारोवाला; बोत्रीस (चौ)वि॰ चोतीस; चोंतिस;३४ बोथ (चॉथ,) स्त्री॰ चौथ; प्रत्येक
- पान (पान,) स्ताउ वाप, प्रतक पक्षकी नौथी तिथि(२)देखिये 'वोवाई'
- **वोयाई (चॉ) स्त्री**० खौयाई; चौया आग (२) राजस्वका चतुर्थांश
- बोबियुं (चाँ) वि॰ चौथे दिन पर पड़ने-वाला (२)म० चौथा भाग (३) डोटे वालककी मृत्युके चौथे दिन होनेवाली किया या भोज
- चोथिसो ( ०ताब ) (चॉ ) पुं० चौथे दिन आनेवाला ज्वर; चौबिया
- षोद(-दि)ञ्च(यॉ)ञ० चौग़िर्द; थौ-र्खूट; चतुर्दिक
- बोबरी (चाँ) पु॰ मुक्य गाड़ीवान; सारयि (२)गाँवकी सीमाकी बौकी करके बख्यिसमें मिली हुई जमीनकी उपज लेनेवाला (३)पहाड़ों और जंग-लोमें बसनेवाकी एक जात्नि
- षोषरो (वॉ) पुं० गॉक्का\_मुक्तिया; मुक्तिया; चौषरी (२) 'भौधरी' जातिका आवमी

الس	-		
1		n	T

**पोरी**पत्तारी

- षोयार (यॉ)वि० (२) अ० बहुत; जाठ आठ औसू या फूट-फूटकर (रोना) षोपग (-पुं) (यॉ) वि० चार पैरॉवाला (२)न० पशु; वौपाया [चीनी षोपषोनो स्त्री० एक औषवि; वोब-षोपट (चॉ) स्त्री० पौसर; वौपड़ (२) वौसरकी विसात; चौसर
- चोपड न० घी
- **धोपडव्रं** स० कि० चुपड़ना; पोतना -
- चोपडाववुं स०कि० 'चुपड़मा' की प्रेर-णार्यक किया(२)गाली या अपझब्द सुनाना; फटकारना
- भोपडी (जॉ) स्त्री० पुस्तक; किताब। [चोपडॉ फाडवॉ = किताब बहुत पढ़ना (व्यंग या तिरस्कारमें); पोथा पढ़ना.]
- चोपबुं (चॉ) वि॰ जिसमें चार तहें हों; चौहरा (२)न॰ घार तहोंवाली रोटी; चपाती (३)किताब (तुच्छकारमें)
- भोषबुं दि० भुपड़ी (चीज); जिकटा भोपडो (चॉ) पुं० हिसाब लिखनेकी बही; बही। [--डकेलवो, काखवो == ब्यीरेवार नोट सोलना; उधेड़कर रख देना (२) गड़े मुर्दे उसाड़ना.]
- बोपन (थाँ) वि० चौवन; ५४
- **चोपबुं** स० कि० खोंसना; रोपना; 'चहोरना (पौदा) (२) टीपना (३) मरम्मत करना; मारना
- बोपाई (जो)स्त्री० जीपाई (२) चारपाई
- चोबाट (चौ) स्त्री० देखिये 'चोपट' (२) समतल भूमि; मैदान (३) दालानके अंदरका कमरा
- चोपानियुं (वॉ) त० भारन्तांच पृष्ठोंकी लब्बु पुस्तक; पुस्तिका; स्तिला; चौप्रतिया;: 'पेम्पलेट' (२) विज्ञस्पन; घोषणा (३) (छोटा:)वमाचारपत्र

- **वोपास (वॉ**) अ० वारों ओर; **वौनिर्ध** वोफेर (--री) (वॉ) अ० जारों क्षोर
- चोभीसुं वि० खिसियाना; लज्जित
- दोमग(चाँ) अ० चारों ओर; दौगिर्द दोमासु(चाँ)वि० चौमासेमें होनेवासा;
- चौमसिया [महीने; चौमासा बौमसिया [महीने; चौमासा बोमार्सु (चॉ) न० बरसातके घार
- चोमेर (चाँ) अ० चारों ओर; चौगिर्द चोर पूं० चोर। [-कोटवाळने इंडें झ
  - उलटा मोर कोतवालको डांटे.]
- **पोरपलार** पुं० चोरपकार
- **चोरदुं** वि० चोट्टा; चोरटा
- **भोरनी** स्त्री० लड़के-लड़कियोंके पहन-नेका छोटा पाजामा; सुथनी
- **बोरणो** पुं० जांघके पास तंग न हो ऐसा पाजामा; सुथना (२)बड़ा पाजामा
- **पोरदानत स्त्री० बदनीयत; बेईमानी**
- चोरबुं स॰ कि॰ चुराना; चोरी करना; काममें जी चुराना; उर्चितसे कम्र काम करना; कसर करना; कमी रक्षमा (काम, मन, मिहनत आदिमें)
- **चोरस (**चॉ) पुं० समकोण चतुर्मुज आइति (२) दि० ऐसे आकारका; चौरस; 'स्ववेर'
- भोरसो (चॉ) पु० मोटे कपड़ेका चौरस टुकड़ा (२)एक प्रकारकी ज्यादा चौड़ी चादर; चादरा [चीरानवे; ९४
- चोराणु(--जुं) (चॉ) वि० चौरानदे; चोराग्री(--सी) वि० चौरासी; ८४ (२)स्त्री० बाह्यणोंकी चौरासी--सभी जातियोंका समूहमोज
- बोरी (चाँ) स्त्री० लग्न-मंडप; बौरी बोरी स्त्री० चोरी (२) घोरका काम बोरीबपाटी स्त्री० किसी प्रकारकी वोरी या गुनाह; बोरी-चकारी

-	-	<u> </u>
1	τ	म्रम
-	• • •	<b>T</b> .''



चोरी-छुप्पें **चोरीफॆरा(चॉ)** पुं० ब० व० रूग्न-मंडपमें वरकन्याकी अग्निकी परि-कमा; भॉवर; फेरे

भोरीडूपी स्त्री॰ भोरी या छिपाव;

- भोरो (चॉ) पूं० चौपाल (२) पुल्स-चौकी; धाना (३)बड़ा चब्तरा; चौरा
- चोबद्रुं (चॉ) वि० चार सहोंवाला; चौपर्ता; चौतहा (२)चौगुना
- बोबीस (चाँ) वि० चौबीस; २४
- **चोसठ**(चाँ) वि॰ चौंसठ; ६४
- भोसर (थॉ) वि० चौलड़ा; चौसर(२) स्त्री० चार लड़ोंको गूँथकर कपड़े पर बेल-बूटे निकालनेका काम; चौकड़ी (३) एक खेल; चौसर(४) चारकी गोईँ (बैलोंकी) (५) चौलड़ा हार (पुक्योंका) [चक्का चोसल्रंं (चॉ) न० जमा हुआ टुकड़ा;
- बोळ (चाँ) स्त्री० चौरेकी फली
- चोळवुं स० कि० मलना; मंसलना(२) कुचलना; वारवार उलटपुलट करना; विगाड़ना [ला.]

बोछा (चाँ) पुं० व० व० एक दलहम; बोड़ा; लोकिया; चौरा बोळाबोळ (--ळी)स्त्री० गींजना-मलना बोळिया पुं० व० व० गलेमेंकी दोनों ओरकी गिलटी; कौवा; गलेकी घंटी

**चोळी** स्त्री० चोली

- भोळी (वॉ) स्त्री॰ वोड़ा (फली) (२) वोड़ा; चौरा; लोबिया
- चोळो पु॰ अँगरसेका कंठा या घाट; चोला (२)फ़कीरोंका लंबा, ढीला-ढाला कुरता; चोला
- चौंकचुं (चाँ०) अ० कि० चौंकना; अड़-कना; चमकना [िषमटना चोंटचुं (चाँ०) स० कि० चिपकना;
- बौद्धं त० वाखार; चौहट्टा; चौक
- **খাঁহ** বি॰ चौंदह; १४
- बौदमुं वि० चौदहर्वा (२)न० मृत्युके चौदहवें दिन किया जानेवाला भोज बौदमुं रसन न० अमृत (२)मार; दंड [ला.] [चौदस बौदस (--स) स्त्री० चौदहवीं तिथि; बौदसियों पुं० विघन-संतोषी

#### 평

- पुंक्'च' वर्षका तालुस्थानीय दूसरा व्यंजन
- 🖤 বি॰ ভ:; ভ; ६
- हम अ० चकित; विस्मित; मौचक
- डकर्युन०,(--को) पुं० 'छका समूह; डकड़ी; छक्का
- डकवो पुं॰ छकड़ा; समाह; बैलगाड़ी डकवुं थ० फि॰ छकना; किसीके काबू-के स जल्दा: कामने वामा: वर्षीला
  - में म रहना; हायसे आना; बहकना

- **छन्वद स्ती० वप्पड़ ; तमार्थ्वा (२) जूल-**भूक
- डरकडियो पुं० छ उँगलियॉवाला स्थक्ति; डौगुर
- अपको पुं० छ बूटियाँवाका तासका पत्ता; छनका (२) पालेका बहः बक्ष जिसमें छह विदियाँ हीं। [ छनका कूती जवा==नाउम्मीद होना; पस्त-हिष्मत होना; छनके जूटना. [

अको पंचो	१८० म्यू
<b>छनको पंजो</b> पुं० सट्टे या गंजीफ़ेका एक	यूड़ी जैसा पाँचका एक गहना; छड़ा
खेल (२) जूंगा; छनका (३) दाव-	(२) (कुंकुमका) थापा
पेच; छक्का-पंजा	डवा (मन) स्त्री० छड्नेकी उचात;
<b>- ड्यून(नियुं)</b> वि० छः कोण या छः	कुटाई; छँटाई(२)छड़नेसे निकलने-
भुजाबोंवाला; षट्कोण या षड्भुज	वाली महीन भूसी; चावलकी महीन
इस्मबो पुं० छः का आँक	भूसी
छचोक(चॉ) अ० खुले-आम; सबके	📽 सी॰ छड़ी;सीघा, पतला डंडा
सामने [ ग्रुस्सा	
<b>छन्द्रणाढ</b> पुं० छन-छन (२.) मिल्राज;	बल्लम;चोव(३)गुच्छा । [–पोकारवी∞
कार्ष वि॰ छिछला; उथला	राजाओंकी स्तुति गाना ]
<b>क्रम्यूंबर</b> न० छर्छ्र्दर; छर्छ्रुदर(२)एक	
आतिसबाजी (३)वि० नटखट; ऊषमी	ं छद्दं वि॰ छड़ा; अकेला (२) [ला.]
∎जावटी स्त्री० झरोलेका छोटा छप्पर;	क्टुंवारा; अदिवाहित (३ ) जिसके बाल-
<b>ভি</b> র্থ]	बच्चे न हों;अकेला [जाहिरमें
छन् न॰ छज्जा; झरोखा; बारजा	<b>छडेवोक म० खुले ख</b> जाने ; सरे बाजार ;
छट अ० घुतकारसूचक उद्गार; धत्	धणको पुं० छनाका; छन'की आवाज
इटकर्बु अ० कि० छटकना; सरकना;	(२) गुर्राहट ; गुस्सा (३)तुच्छकार;
सिसकना (२)भाग जाना [ला.]	फटकार
क्टकारबुं स॰ कि॰ दुतकारता	छणवुं स० ऋि० महीन कपड़ेसे छानना
छटक् न॰ छटका; दावें-पेच; जाल	या चालना (२)कड़ी जांच या छान-
डरा स्त्री॰ छटा; धोभा; शान (२)	बीन करना
रीत; खूबी [(भाषण, वार्ता)	छण्डुं स॰ कि॰ नाखूनसे खुजलाना
छटादार वि० शानदार; लच्छेदार	
<b>्छटांक</b> न०्एक (कच्चा)सेरका आठवौँ	बातको छेड़ना [ला.]
भाग; छटाँक	छणणी, छणावट स्त्री० छानना; छान-
छठ स्त्री॰ छठी तिथि; छठ	बीन; भूली <b>हुई</b> बातको छेड़ना
अ्च्ठी स्त्री» जम्मके बादका कठा दिन;	डस स्त्री॰ होलेका भाव; हस्ती(२)
ভঠা। [বুঁ মাৰল কাতবুঁ, কাৰী	बहुतायत; अधिकता; बाढ़
नसम् च छठीका खाया-पीया निक-	छत स्त्री० मकान या कमरेके अंदरकी
लना; बहुत कै करना (२) खूब पीटना.]	
स्टर्ट् वि॰ स्टर्ग ; स्टा	सकानका उत्परका पक्का खुला फ़र्झ ;
क्तामुं स॰ जि॰ छड़ना; (जावल वावि)	छत; धाबा
कूटकर किलके बलग करना (२)	अस्तं ४० तब भी; फिर भी
् बीटना (२) ठगना व्या व्या व्या	जतुं वि+ तिग्रावान; विन्ता (२)पडका
स्टबा पुं० ब० ते० (स्त्री वा वण्डोंका)	क्कडा; चित्र (३)सरल; सीबा (४)

Ş	Ч	Æ

तरहसे सँभालकर रखना.]

करनेवाला; पालक

दन: छतरी

छियानवे; ९६

नीचे गिरना

नींद सोना

का बड़ा अकाल

खुला; आहिर । [**⊸रासव्ं =** वंशपरं-(३)न० घिसावसे पतला बना हुआ परा जारी रखना (२) सब अच्छी पत्तर (४)गींजा हुआ काराजका टुकड़ा छवरडो पुं० घोटाला; अव्यवस्था [ हुआ छतुंपाट वि० चित; पीठके बल फैलाया छबलीका न०ब० व० साल-सालर; छते अ० रहते हुए; होते हुए झौझ । [--वगाडवां 🖛 घनदौलतका छत्ता (-त्तुं)पाट वि० देखिए 'छतुंपाट' नाश होना; रुपये पैसेसे खाली होना ] छत्र न॰ बड़ी छतरी;छाता (२) राज-कांति; सौंदर्य; छवि चिह्नरूप छतरी; छंत्र (३) रक्षण छबीलुं वि० छबीला; सजीला [[ला.] छमकलुं न० नटखटी (२)बसेड़ा;दंगा छत्रछाया स्त्री० छत्रच्छाया (२)आश्रय छमकारबं स० कि० 'छन' की आवाज छत्री स्त्री० छाता; छतरी(२)गाड़ी, पलंग आदिके ढाँचेके ऊपरका आच्छा-करना; छनकाना [ छमाही छमासिन थि० छः महीने पर होनेवाला; छत्रीज्ञ(-स) वि० छत्तीस; ३६ छर पुं० उस्तुरा; छुरा(२)मद; अहं-**छमाछनी** स्वी० बार-बार छन-छनकी कार(३)मस्ती ; धुन । [-जठवो, जडवो आवाज होना (२) रुपये-पैसोंकी बाढ़ = उस्तूरेका चेप लगना छरी स्त्री० छुरी; काता। [- कछळवी छम्(--भ्रं) वि० छानबे; छियानबे; मिजदूरी ; छपाई =छुरीसे मारकाट होना ! --मूकवी == छुरी फेरना (२)पायमाल करना ] छपाई (--मण,--मर्णा) स्त्री० छापनेकी छपावचुं स० कि० छपाना; छपवाना छरो पुं० छुरा (२)खंजर(३)बंदूक़का छर्रा(४) बोल-बेर्रिंगमें काम आनेवाली छपार्यु अ०कि० छपना; छापा जाना लोहेकी गोली; छर्रा (२)छिपना(३) (पतंगका) एकदम छलक अ० छलकता हो इस तरह **छम्पन** वि० छप्पन; ५६। [**--उपर** छलकाबुं अ० कि० छलकना (२) गर्वसे इतराना [ला.] **भूंगळो वागवी =** बहुत मालदार होना छलंग स्त्री० छलौग; चौकड़ी (२) बिलकुल खयाल न रहना ; गहरी छलाछल अ० लबालब (भरा हुआ) छलाबुं अ० त्रि० देखिये 'छलकाब्' छप्पन भोग पुं० छप्पन प्रकारकी रसोई जो ठाकुरजीके भोगमें लगती है छल्बी स्त्री० छाली; कटोरी छप्पनियो वि० पुं० विकम संवत् १९५६ **छलोछल** अ० देखिये 'छलाछल' छवार्युं अ० कि० छाना ; घिरना ; पसरना [ छप्पय छप्पो पुं० छः चरणोंवाला एक छन्द; छव्वीज्ञ (---स) वि० छब्बीस; २६ छबछबाववुं स०कि० छपछपाना (२) छळ पुं०; न० छल; धोखा; झाँसा

छपछपाकर कपड़ा घोना; छाँटना

**छवतर्व** वि० छिछला(२)गॅदा; मैला

For Private and Personal Use Only

छळकपद न० छल-कपट; झौसा-पट्टी

छळबुं स॰ कि॰ छलना; ठगना

1000 **4** 

छार

छळ्युं अ० कि० भयसे चौंकना; चौंकना **चंछेदयुं** स० कि० छेड़ना; चिढ़ाना **ন্ততকাৰ** প্**০ ভি**ত্তকাৰ खंदावर्षु स० कि० छिड्कवाना छंटाचुं अ० कि० छिड्का जाना (२) े छींटे उड़ना; छींटोंसे तर होना; भीगना (३)गाभिन होना; भरना (गाय, भैंस आदिका) छंब पुं० लत; टेव; व्यसन डंदी, छंबीलुं थि० मौजी ; शोक्रीन ; छैला (२)अमुक चीजकी आदत रखनेवाला डाकपुं० छाक; नशा(२)मिजाज; अहंकार (३) स्त्री० दुर्गंध; हीक **छाकटं** वि० शराब पीकर मदहोश बना हवा; मतवाला; प्रमत्त **छाकटो पुं०** शराबी छाकोदो पुं० झिड़की; लानत; भर्त्सना **ভান্তৰ্য বি**০ ভিশুকা 👼 ज ० छप्पर पर अंतरवन, बाँस, तख्ते या बल्लियों वगैरहसे किया जानेवाला आच्छादन या ये सब चीजें; छाज; [छज्जा(२)परछत्ती;टाँड् छाजन डाजली स्त्री० अटारीकी पक्की छत; छाजवुं स० कि० लायक्र-क़ाबिल होना (२) फबना; शोभा देना; छजना; जेब देना(३) ज्यादा समय टिकना छालियुं न० शोकावेयसे छाती पीटना; [ पाट ; सिल्ली पिट्स छाट स्त्री० पत्थरका लंबा∽चौड़ा टुकड़ा; छाच न० गाय-भैंसका मल; गोबर **छाणवूं** स० कि० वारीक छानना **छान्ं न**० उपला; गोहरा डाती स्त्री०छाती;सीना(२)दिल(३) हिम्मत; जिगर। [-जपर हाथ मुकवो = छाती पर हाय रखना -ईश्वरके सा-

मने (सच कहनाः) (२) हिम्मत बेंधाना । --ठोकीने कहेवुं = विश्वास और हिम्म-तके साथ कहना;छाती ठोककर कहना। -- फूलबी = आनंद या गर्व होना । --मा घालबुं = छातीसे लगानाः ]

छातीचलं वि० दिलचला; साहसी

- **डातीफार्ट अ० छाती फट जाय इस** तरह; हृदयपूर्वक
- छातीभेर अ॰ हिम्मतसे (२) (सदी चढ़ाईमें) दम भर जाय इस तरह
- छानुं वि० गुप्त;छिपा हुआ(२) शान्त;
- चुप [न जाने ऐसा; गुप्त
- छानुंछपतुं (--नुं) वि० छिपा हुआ ; कोई छानुंमानुं वि० गुप्त (२) छिपे-छिपे; चप-चाप; घोरी-घोरी
- छाप स्त्री० एक चीजका दूसरी पर दब-नेसे पड़नेवाला चिह्न; निशान; मार्का; छाप (२)मुहर; ठप्पा (३)पतंगका यकायक गिरना (४) [ठा.] मन पर पड़ा हुआ असर; कायम की हुई राग
- (५)छापनेकी सफ़ाई(६)प्रभाव;दाब छापखानुं न० छापाखाना; 'प्रेस'
- छापरी स्त्री० छपरिया; मड़ई (२) झोंपड़ी;धर [ला.] [झोंपड़ा छापर्च न० घरका छाजन; छप्पर(२)

छापचुं स० कि० छापना [(२)ठप्पा छापुं न० दैनिक अखबार; समाचारपत्र

- छापो पुं० छापा; घावा (२) छापेसे बनाया हुआ निशान; छापा (३) लाग; रसूम; कर
- छाद (०डी) स्त्री०, (०ई) न० डलिया; छिछला, छोटा छवड़ा; दौरी
- डार (छा') पं०; स्त्री० पजावेका खूरा (२)फर्फूदी(३)घूल(४)छार; राख (५)चीद पर जमनेवाली पपड़ी

 _	۰.
	2
4	γ.

**डारी** (छा)स्त्री० किसी कोच पर जननेवाली परत या पपड़ी छाई (छा') न॰ ईंटों, मिट्टी और चुने-तीसी ढकार े वाला चुरा **भारोडिया** (छा') वि०ब०व०पिस्तवाली धाल स्त्री॰ छाल (पेड़की) डाल पूं० पीछा (डोड्ना) डालक स्त्री० छलक डालनं वि॰ छिछला; उथला (२) हलका; ओछा [ला.] (३) न॰ दो बाजुबाली और बीचमें खुली गंदे पर लादनेकी गोनी; गठिया; खुरजी (४) चार मनकी तौरु (कच्ची) डास्त्री न० व० व० छिलके; भूसा (२) स्रंड; छाले छालियुं न० चौड़े मुंहकी कटोरी डाली स्त्री० कटोरी; प्याली जार्मु न० कटोरा; प्याला **छावनी (**छा') स्त्री० (लश्करी) पड़ाब <sup>;</sup> या मुक़ाम; छावनी ভাষবৰ্ষু (छা') स॰ কি॰ আच्छादन करना; ढँकना (२) प्रकट न करना; छिपाना छाषुं(छा') स॰ कि॰ छाना; ढकना ज्ञास (श') स्त्री० छाछ; मट्रा डाशी(-सी) वि० छियासी; ८६ चांडियुं (०) न० झिड्की; भर्त्सना छांट (०) स्त्री० नन्हीं नन्हीं बूंदें; फुहार (२) ऊपर ऊपरसे छीलने या काटनेसे होनेवाले टुकड़े; छटिन; ् छौट । -मारवी = गप हॉकना (२) बड़ाई, अभिमान हॉकना। --लेबी = छोंटे डलवाकर स्पर्शदोषसे मुक्त होता.] र्डांटच् न० (रोली-केसर वरौराके)डीटे र्फेकना (२) (कपड़े पर)छोटोंकी छाप

छाटबुं(०) स॰ कि॰ छिटकनाः छिड्कना; विखेरना (२) ऊपर कुपरसे काटना; छौटना (३) गप या बड़ाई हौंकना [लाः] (४) षुस देना [सींसी छोटा (०) पुं० ब० व० छोटे; फुहार; ভাঁৱ (০) বি০ গণীয়া ष्ट्रों(०) पुं० छींटा (२) [ला] दाग्न; कलंक (३) खुआ छुत या खाने-पीनेका संबंध (४) तनिक; जरा भी; उदा० 'एनामां छांटोय अक्कल नयी' **डांटोपाणी** (०) न० शराब [ला.] छांबर्षु (०) स० कि० त्यागना; छोड़ना (२) विवाह-संबंधका विच्छेद करना; तस्राङ्ग देना;स्यागना (३),थालीमें अस ৰুঠা ভীঢ়না छांबी (--बेली) (०) वि० स्त्री० पतिकी त्यागी हुई; तलाक दी हुई; त्यक्ता डांदबुं(०) स०कि० लोंदेसे थोपना → मोटा लीपना; छोपना छांबो(०) पुं० गोबर और मिट्रोका लोंदा; गिलावा;छोप(२) गाढ़ा लेप या लिपाई ष्ठांय स्त्री०, (-यौ) पुं०, (०बी) स्त्री०, (०को) पुं० छाया; साया; छाँह (२) आश्रय (३) असर; छाप [ला] **डिमाळ** वि० छिनाला करनेवाला (२) स्त्री० छिनाल; कुलटा **छिनाळव् वि० वद**कार: व्यभिचारी **डिनाळी** स्त्री०, (--ळुं) न० छिनासा; बदकारी **डिपोली** स्त्री० देखिये 'छीप' छी अ० धिक्कार मा तिरस्कारका भाव प्रगट करनेवाला सब्द; थू; छि:; छी (२) गंदगीसूचक उद्गार; छी (३)

स्ती•;न०गंदीचीज (४) छी; गू; मैसा

,

डीवर्षं वि० डिछ्ला; उदला छीणदुं स० कि० कदूकदा पर घिसना; कसना(२)छीलना; काटना(सब्बी) छीषी स्त्री० कदूकदा; घियाकदा (२) सुतारका औखार; दखानी (३) घातु	पतंगको उड़ानेके लिए दरिवाई देना; छुड़ाना (५) स्वतंत्रता (६) रिकायत; कड़ाईका अभाव ॥[ <b>-सापवी</b> =स्पतंत्रता देना; रखा या आजादी देना।
कसना (२) छीलना ; काटना (सब्बी) <b>छीची</b> स्त्री० कढूकझ; घियाकझ (२) सुतारका औखार; रुखानी (३) घातु	कड़ाईका अभाव ।[ <b>–सापवी</b> ≕स्वतंत्रतः देना; रखा या आजादी देना। <b>–थवी</b> झछुट्टी मिलना(२)रोकया मनाहीका द्वर होना(३)कमी न रहना.]
कसना (२) छीलना; काटना (सब्दी) <b>छीमी</b> स्त्री० कढूकश; घियाकश (२) सुतारका औजार; रुखानी (३) घातु	देना; रखाया आजादी देना । – <b>थवी</b> झछट्टी मिलना(२)रोकया मनाहीका द्वर होना(३)कमी न रहना.]
<b>छीपी</b> स्त्री० कढूक्वा; घियाकरा (२) सुतारका औंबार; रुखानी (३) घातु	<b>ः छुट्टी</b> मिलना (२) रोक या मनाहीका द्वर होना (३)कमी न रहना ]
सुतारका औधारे; रुखानी (३) धातु	द्गर होना (३)कमी न रहना ]
या पत्थर काटनेका औजार; टौकी;	
छैनी । [-मूकवी = काट डासना (२)	स्टब वि० अलग-अलग; भिन्न-भिन्न
तबाह करना; छुरी फेरना]	(२)खुर्दा; फुटकर
छीनवब् स॰ कि॰ छीनना (२)ठगना	<b>क्रूटको</b> पुं० <b>छु</b> टकारा; रिहाई
डीनवाबुं अ० कि० छीना जाना ; छिनना	<b>कूटकाट</b> स्त्री० (ऋणमें) थोड़ी-बहुत
डीप स्त्री० सीप	माफ़ी देना;छूट;रिआयत(२)जगहकी
ष्ठीपर्वं अ० कि० बुझना-मिटना (प्यास-	बहुतायत; कुशादगी सन्दर्भ अन्तरिक संघल टर सोनाः सरना
का) (२)छिपना; लुकना	<b>छूटवुं</b> अ० कि० बंधन दूरहोना; छूटन। (२) (यकायक या जोरसे)बाहर निक-
छीमो पुं॰ कपड़ा छापनेवाला; झीपी	लना (पसीना, बू, गोली आदि) (३)
डीयुं न॰ पतीलोका ढक्कन; तश्तरी	पाससे निकलना; उदा० 'चमडी तूटे
<b>डींक</b> स्त्री० छींकनेकी किया; छींक	पण दमडो न छूटे' (४) (जानेके लिए)
<b>डींकनी</b> स्त्री॰ स्र्यंयती; नास	इजाबत मिलना; छूटना(५) चिपकी
ন্তীকৰ জাত কিত প্ৰতিকলা	हुई चीजका अलग होना; खुलना
<b>डींट</b> स्त्री० वह कपडा जिस पर रंग-	(गाँठ) (६) किसी भाव या लागणीका
बिरंगी बूटियां छपी हों; छींट	एकदम उमड़ आना-प्रगट होना
र्डींडी स्त्री० दो मकानोंके बीचकी सेंकरी गली; अंतरिका	(रहम, गुस्सा, लज्जा)। [ खूटी जवुं =
जेर्स, जतारम स्नैंडूं न॰ बाड़में सँकरा रास्ता (२)	करेद या बंधनसे मुक्त होना (२) अदा-
[मा.] ऐव; दोष (३) बहाना	लतमें निदोंष ठहरना । छूटी पडवुं =
दुरकारो पुं० छुटकारा; नजात; रिहाई	जवाबदारीमेंसे मुकर जाना (२) बर-
धुरान् अर् कि॰ छूटा जाना; छूटनेकी	बाद, निकम्मा जाना (मिहनत).]
<b>कुना</b> होना	छूटाछेढा पुं० ब० व० कायदेके अनुसार
<b>मुद्दी स्त्री</b> ॰ छुट्टी (२)फ़ुरसत	विवाहका विच्छेद; तलाक
<b>प्रदर्श</b> वि॰ देखिये 'छटुं'	इन्दूं वि॰ जो बँघान हो; छुट्टा; सुला;
	रिहा (२) फ़ारिग; बेकार; नौकरी
<b>ङ्रपाववुं</b> स० कि० छिपाना; छुपाना; डौपना (मुँह) [ दबकना	आदिसे मौक्रूफ़; बरतरफ़(३)अलग;
सुपानुं अ० कि० छिपना; छुपना;	मिन्न (४)भुरमुरा (५)कुशादा; खुला;
बू न॰ छू होना; चलता बनना	विस्तृत (६) म० रेखगारी; खुदी; खुट्टा
स्ट्रें(ट,) स्त्री० कुशादगी (२) रखा;	क्टूंक्रमायुं वि० तितर-बितर; जलग-
अनुमति (३) छूट; ऋणकी माफ़ी (४)	अलग; झिलमिला (बुनाई)

	6.6	
ъ		×

**छेलक्र्या**ल्

**क्तवकूत** स्त्री० छुथासूत; कूतछात क्**र्यपुं** अ०कि० छिपना; छुपना क्रूपी पोलीस स्त्री० सुफ़िया पुलिस; सी० आई० डी०

सूर्यं वि० गुप्त; खुफ़िया

- **डूमंतर** न० जादू; छूमंतर । [**−थई जवुं** = भाग जाना; ग्रायब होना; छू होना]
- इंछां न० व० व० रेशे; फुचड़े
- **छूंवणुं** न० वदन पर सुई चुभाकर बनाई हुई बिंदी, आकृति आदि ; गोदना
- इत्वयुं स० कि० सुई चुमाकर गोदना; गोदना (२) बारीक कूटना; कुवल्ला इत्याययुं स० कि० गुदाना; गुदयाना; कुटवाना; कुचल्याना [जाना इत्यायुं अ० कि० कूटा जाना (२) कुचल
- क्रूंगो पु० कूट-कूटकर बनाया हुआ स्रोदा,पिडा(२)कसकर बनाया हुआ आगमका अचार
- च्चेक अ० निपट; विलकुल; निरा(२) पुं० आखिर; जंत [प.]
- डेकवुं स॰ कि॰ छेंकना (२) लिखा हुवा काटना या मिटा देना
- छेकाछेक (-की)स्त्री० लिखे हुए अक्षरों-को अहौ-तहाँ काटना या मिटाना; छेंक छेको पु० छेंकनेके लिए सींची हुई लकीर छेदुं वि० दूर (२)न० दो जगहोंके बीचका क़ासला; दूरी। [-पदवुं = अंतर
- बढ़ना । –भागवुं झ अंसर कम करना.] इस्टें अ० दूर; फ़ासले पर
- **छेग्ली** स्त्री० छिद्र; दोष; ऐद (२) नटसटी; छेड़सानी; सताना; छेड़ना **छेग्रवुं** स०कि० सिझाना(२)छेड़ना; टकोरना; बजाना
- छेटागांठण (-णुं) (छे') न० वर-वधूके

कपढ़ेके	छोर	बाँधनेका	वस्त्र;	नंह-
बंधन ;	गँठजोग	म		
डे <del>डाव</del> ं अ	০ ক্ষি০	चित्रनाः व	जीअना	

- छढाषु अ० क० भवढ़ना; साजना छेडो (छे')पुं० आखिरका हिस्सा; छोर; सिरा; अंत (२)हद (३) कपड़ेका छोर; दामन (४) आश्रय; मदद [ला.]। [छडे बांचवुं = गिरहमें दांचना(सीख) (२) अपने अधिकारमें करना; इकट्ठा करना (३) अ्यसन लगना। छेढे बांची अचुं = परलोकमें साथ ले जाना। ---बाळबो == किसीकी मौत पर
- दामनमें **मुं**ह ढौंपकर रोना.] <mark>छेतरॉपडी</mark> स्त्री० ठगाई; झौसाप**ट्टी** छेतरपुं स०कि० ठगना;छल्ना; **वकम**ा

देना [जानेका भाव; **घोला** छेतरामण न०, (–भी) स्त्री० ठगा छेतरामणुंवि० धोखेबाज

छेसाळीस (छं) वि० छियालीस; ४६

- छेद पु० छेद; चीरा; शिगाफ़; काट (२)छेद; सुराख (३) भिन्न संस्थाकी भाजक संख्या;हर (४) नारा
- छेदबुं स० कि० छेदना; काटना(२) छेद, सूराख करना; छेदना(३)निक-दन करना(४)अंशको हरसे भाग देना (गणित)
- छेर (छे') स्त्री० धूल; झाड़न
- **छेरवुं**(छें')अ०कि० पतला दस्त होना; पॉकना

छेरंटो (छे') पुं० पतला दस्त; पोंकना

- **छेरंटो** (छे') पु० घूल; कचरा; झाड़न छेरामण (छे') न०;स्त्री० पसला दस्स; पोंकना
- छेल (छँ) पुं० छैला; रंगीला पुरुष
- **क्रेल्डमीलुं** (छॅ) वि० छवीला; मोहक और रूपवान

केनमटाउ	१८६ छोलपु
<ul> <li>डेसबदाद (छॅ) दि० (२) पुं० छेला; बत- ठनकर रहनेवाला; छेल-छवीला [प.]</li> <li>छेलाई (छॅ) स्वी० बांकपन; छवीलापन; सौक्रीनी</li> <li>डेल्स् (छॅ) वि० आखिरी; अंतिम ।</li> <li>[छेल्ले पाटले बेसवुं = असलियत पर आ जाना (२) आख़िरी हद तक जाना.]</li> <li>डेवट (छे') स्ती०; न० अंत; आखिर</li> <li>डेवट (छे') स्ती०; न० अंत; आखिर</li> <li>डेवा दुं (छे') वि० आखिरी; छोर परका</li> <li>डेह पुं० दगा; विश्वासघात</li> <li>छेताळीस (छॅ०) वि० छियालीस; ४६</li> <li>छेयाछोकरां न० ब० व० बाल-बच्चे</li> <li>डेये पुं० लड़का</li> <li>डो (छो') स्त्री० फर्झ या छत बनानेका चूनेका मसाला; कमाया हुआ चूना; गच</li> <li>डो (छॉ) अ० भले</li> <li>डोकरायत वि० बालक जैसी अल्प मति- वाला या हठी (२) स्त्री० बालकपन;</li> <li>छोकरापन; नासमझी</li> <li>डोकरापन; नासमझी</li> <li>डोकरापन; नासमझी</li> <li>डोकरापन; नासमझी</li> <li>डोकरापन; नासमझी</li> <li>डोकरी स्त्री० लड़की (२) कन्या; बेटी (३) (कटाक्षमें) नामर्द</li> <li>छोकरी न० संतान; औलाद; बालक (२)</li> <li>छोटा बच्चा या बच्ची</li> <li>डोकरो पुं० लड़का (२) कच्ची उम्रका</li> </ul>	<ul> <li>छोड स्वी॰ सफ़ाई या आवारकी तीब लागणी</li> <li>छोड (छॉ) न॰ पेड़की छाल जो सुसकर कड़ी बनी हो (२) सुसा हुआ गर्भ (३) नाकमें जिपकनेवाली रेंट आदिकी सूसी पपड़ो</li> <li>छोडवुं स॰ फि॰ सोलना; संघन सोलना; छुटे ऐसा करना (२) तजना; छोड़ना</li> <li>छोडवो पुं० पौषा; पौदा</li> <li>छोडवा स्वा करना (२) तजना; छोड़ना</li> <li>छोडवा स्वा करना (२) लज्महो का पतला टुकड़ा; जिल्पड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिलपड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिल्पड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिलपड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिल्पड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिल्पड (२) लकड़ीका पतला टुकड़ा; जिल्पड (२) लकड़ी ता देहावा कोडो नाखवा, पाडवा = उलहना देना; कड़ी आलोचना करना; आडे हावा लेना (२) मारना. ]</li> <li>छोडो स्त्री॰ लडड़का [(२) छिल्का छोद्दं(छॉ) न॰ छालका टुकड़ा; चिप्पड छोतर्च (छॉ) न॰ छालका टुकड़ा; चिप्पड छोतर्च (छॉ) न॰ छिलका छोद्दां(छॉ) न॰ छिलका छोत्र (-से) र (छॉ) वि॰ छिहत्तर; ७६ छो ने (छॉ) अ० भले ही छोबांघ (छो) वि॰ फ्रिया पा [हुआ छोभाव ं अ०कि॰ सिसियाना [हुआ छोभाव ं अ०कि॰ सिसियाना [हुआ छोभाव ं अ०कि॰ सिसियाना; झेंपा छोद (-रं) न॰ छोरा; बालक छोरा (ए॰; स्त्री (लकड़ी आदि) छीलनेसे निकलनेवास्ठी चिप्पड, छिलके; छोलन</li> </ul>
छोटा बच्चा या बच्ची	निकलनेवाली चिप्पड़, छिलके; छोलन

-	
1.11.5	

46

डोलावचुं स॰ कि॰ बहुत छीलना (२)
सस्त फटकारना; डॉटना [ला.]
ক্টাকাৰ্ম্ব ৰঙ কিও জিলনা
छोवुं स॰ कि॰ स्पर्शं करना; छूना;
(२)अ०कि० स्पर्शेसे अपवित्र होना
चौर्षु (छो') स० फि॰ पलस्तर करना;

छोप	नर.		
गेळ (	ತ್ಮ,	}	स्त्री

छोळ (छॉळ,) स्त्री० तरॅम; लहर(२) छलकना; छलक (३) बहुलता; इफ्र-रात; भरमार छतिर (छॉ०) वि० देखिये 'छोतेर' छपाझी (-सी) वि० देखिये 'छाझी'

## স

ज पुं० 'च' वर्गका – तालुस्यानीय तीसरा व्यंजन अर अ०ही (जोर देने और अनन्यता या निश्चय बतानेके लिए इसका प्रयोग होता है); उदा॰ 'त्यां ज '; ' तेने ज ' जईफ वि० जईफ़; वुद्ध(२)दुर्बल जक (ज') स्त्री० जिद; हठ(२) झक-झक; हुज्जत; उदा० 'लेबुं होय तो ले, नकामी जक छोड़ ' चकड स्त्री० जनड़; पकड़; शिकंजा जनवर्षु स० कि० जनड्ना; कसकर बौधना, पकड़ना जकात स्त्री० जकात; आयातकर; चुंगी (२) (इस्लाममें)दान; खैरात; जकात जकाती वि० जकातका; जकातसे संबद्ध (२) जकातके योग्य (३) पूं० जकाती व्यक्ती दि० सक्ती; हठी जल मारवी(ज') == पछताना; झख भारना;पराजय स्वीकार कर ठिकाने भागा खन्नमं पुं० जलम; जरूम; चोट जलमी वि॰ जलमी; जल्मी; घायल **जगन** पुं० यज्ञ (२)अति कठिन या बड़ा ন্মন [তা.] ৰনমন্ধিয় বি গুবসেয়িয়া; জনজান্তিব

जगबत्रीशी (-सी) स्त्री० अफ़वाह;
किंवदंती
जगा स्त्री० जगह;स्यान;ठिकाना(२)
खाली जगह(३)नौकरी (४)साधुओंका
मठ। [- आपदी = बैठनेको जगह
देना (२) नौकरी देना।भूरवी =
खाली जगह (नौकरी, काम) पर
किसीको रखना। -लेबी = जमीन
खरीदना(२)-का स्थान सम्हालना.]
जगाड(व) दुं स० कि० जगाना
जगावुं अ०ं कि० ' जागवुं 'का भावे;
जगना
अग्या स्त्री० जगह
जग्धुं न० बच्चा
जज पुं० जज; न्यायाधीश 👘 [ आदि
जजमान (०वृत्ति) देखिये 'यजमान'
जजिमावेरो, जजिमो पुं० मुसलमान
शासनकालका ग्रैरमुसलमानों पर एक
कर; जजिया
<b>जटिपुं</b> न० बालोंकी उलझी हुई या
खुली लट; जटा; झोंटा
थड स्त्री० जड़; मूल(२) ई्टी; मेस
(३)स्त्रियोंका नाकका बिना चुन्नीका
एक छोटा गहना; लॉम; भोगली।

{-**- उच्चेड्यी, काढयी ≈ जड़**.उखाड़ना;

चनामारी

सौंदा(३) रोकंड्-बाकी (४) गहना;
जोवर (५) अफ़ीम
<b>अंजसमाव</b> स्त्री०; न० धन-दौलत जीर
गहना-पाता; मूरुयवान चौथों
अण्यावयुं स० कि० ' जाणवुं 'की प्रेरक
किया; अताना; जनाना
<b>जन्मार्यु</b> अ० कि० ' जणवुं ', ' जाणवुं 'का
कर्मणि (२) दिखाई देना (३) बाहर
आना; बाहिर होना;खुलना
जतन न०,(-मा) स्त्री० जतन;यरन;
हिफ़ाजत
जतरदुं न०, (-डो) पुं० जंता; सोने-
चांदीके तार खींचनेका एक औ <b>जार</b>
<b>जमार्वथ</b> अ० थोक; फुटकरका उलटा
जयो पुं० जत्था; जूथ; दल
<b>कभ्याबंध अ</b> ० देखिये ' जथाबंध '
जम्यो पुं० देखिये 'जथो '
<b>जनता</b> स्त्री० जनता; लोग <b>-मा</b> ग
जनम पु॰ जन्म; जनम; पैदा होना
(२)जिंदगी; जीवन । [-आपबो = पैदा
करना; जन्म देना.
जनमनुंडळी स्त्री० कुंडली; जन्मकुंडली
अनमकेब स्त्री० उमरकैंद; डामल
जननकेवी वि॰ (२) पुं॰ जिसे उमर-
क्रैदकी सजा हुई हो; उमरकैंदी
जनमगांठ स्त्री० बरसगौठ; सालगिरह
धनमटोप स्त्री० डामल; आजीवन
कारावास; उमरक्रीद
जनसर्वु अ० कि० जन्म लेना; जनमना
जनमारो पुं० जन्मसे मृत्यु तकका कारु;
सारी जिन्दगी या उम्र; जनमारो [प.]
जनमोजनम अ० हर एक जनमर्मे
अनमोतरी, जनमोत्री स्त्री० जनमपत्री;
जन्मपत्रिका; जायचा [छिनासा
जना ( ०कारी ) स्त्री ० जिना ; जिनाकारी;

मानमी	૧૮૬ અમારનું
बनाचो मुं० अरथी; जनावा (२) जन	- जबरज (द)स्त वि॰ जबरदस्त; जो-
बेके पीछे जानेवाला जुलूस	रावर विलाकार; ज्यादती
<b>बनानवान्</b> न० जनानसानाः अंतःपुर	; जनरज(द)स्ती स्त्री० जनरदस्ती;
हरम	जबराई, <b>बब</b> री स्त्री० देखिये'जबरदस्ती'
<b>मनानी</b> वि० जनाना; स्त्री-संबर्ध	
ेस्त्रियोंका ; उदा० ' जनानी जोडा '(	e) [ন্তা.] [আৰান
नामदै; नपुंसक	जबान स्त्री० खबान; जीम (२) बोली;
<b>बनानो</b> पुं० जनाना; परदेमें रहनेवा	গ জন্মৰ বি॰ ইম্বিয় ' জনাই '
्स्त्री-समुदाय या उसका जनानखान	; अम जेवुं = भयंकर और कूर (२) जमकी
हरम	भौति अपना काम करने करानेमें अटल
बनाब वि० जनाब; श्रोमान	(व्यक्ति); उदा० 'जम जेवो माथे
<b>जनावर</b> न० जानवर;पशु(२) झिका	
जानवर; हिंस्र पशु; हिंसक	<b>थमवो</b> पुं० जम; जमदूत
जनेता स्त्री० जननी	जमण न∘जीमना; मोजन (२)जेवनार;
<b>जनोई</b> स्त्री०; न० जनेऊ; उपवीत	जाति-भोज; जेंक्सार
अनोईवाद विं० जनेऊका हाथ ब	वें जमर्णवार पुं०; स्त्री० जेवनार; आसि-
कंघे पर तलवारका तिर काट	п भोज (२) उसकी तिथि वा दिन
हुआ (वार)	जमजुं वि० दाहिना। [जमजो हाम =
जन्मत न० जन्नत; स्वर्ग [जिद	ो मुख्य मददगार व्यक्ति; दाहिना हाथ.]
जन्म पुं० जनम; जन्म (२) जीवन	; जमपुरी स्त्री० यमनगरी; यमलोक
बन्मकुंडली (ळी), जन्मकेइ,जन्मके।	
<b>बन्मगंठ, जन्मटीप, जन्मबूं</b> देखि	
'जनम' आदि ['जनम' आ	दे जमवुं स०कि० जीमना (२) लाभ होना;
जन्मोजन्म, जन्मोतरी, जन्मोत्री देखि	
जपत वि० जब्त; कुर्क; राज्य द्वारा व	
ड़के रूपमें जब्त किया हुआ; जब्तशु	
(२)कर्जने एवजमें जब्द किया हुआ	
जन्तश्दा	प्राप्ति-वसूल (४) जोड़; जुमला; जमा
<b>चपती</b> स्त्री० जब्ती (२)कुर्की	जमाई पुं० जुमाई; दामाद
जप्त, जप्ती देसिये ' जपत', ' जपती '	जमाउषार न॰ जमा और खर्च; आय-
जबर वि० चबर; बलवान; बढ़	
भारी; सस्त; बहुत (कद, बरु, सर	
सति आदिमें) (२) उर्दु लिखाबट	
इस्व अकारका चिह्न; जबर	भगावर्षु स॰ कि॰ जिमाना; मोजन

वनात स्त्री० जमात; जमाजत; समूह	जमीनदोस्त वि० जमींदोज; तहस-नहंस
(२) नागा सामुओंकी जमात	<b>जमे</b> वि० (२)स्त्री० देखिये ' जमा '
<b>बनान</b> पुं० जामिन; जमानतदार	जमैयो पुं० खुखड़ी; कटार जैसा एक
अमानी स्त्री० जमानत; जिम्मेदारी	हथियार
जमानो पुं० जमाना; युग; बहुत समय	जर पुं० जर; धन; सोना(२) खरतार
(२) देशकालकी, आचार-विचाराधि-	<b>जरकसो</b> वि॰ जरकश; कलाबसूनी
की अमुक स्थिति या उसका काल।	<b>भरख</b> न ० एक जंगली प्राणी ; लक <b>ड़ब</b> ग्धा
<b>जमानानुं साधे</b> ल = जमाना देखा	<b>अरजोलम</b> न॰ पैसा आदि जोखिम
हुआ; अनुभवी; पक्का	<b>जरभोस्ती</b> वि० जरतुश्तका; जरतु्श्ती
बनापासुं न०जमा; बहीमें वह भाग जहाँ	(२)ज़रतुक्तका अनुयायी(३)पुं० पारसी
प्राप्ति या आमदनी लिखी जाती है	<b>जरदाल् (ट्यु) न०</b> जरदालू; खूबानी
<b>अमाबंदी (-भी</b> )स्त्री० जमाबंदी; बंदो-	<b>जरदी</b> स्त्री० अंडेके अंदरका पीला <b>रस</b> ;
बस्त [ पासुं '	जरदी
जमाबाजु(जू) स्त्री० देखियें जमा-	जरदो पुं० तंबाक़ूका चूरा; जरदा
जमाव पुं० जमाव; भीड़; जमघट	<b>जरवुं</b> अ०कि० जीर्णं-जर्जरित होना;
क्मावट स्त्री० जमाना (२) किसी चीजमें	घिस जाना; झीना या दूर दूर होना
खप जानेवाली मिलावट	(२) पचना; हजम होना
<b>अगावर्षु</b> स०कि० जमाना	<b>अरा वि० (</b> २)अ० जरा; थोड़ा
जमावसूल स्त्री०; न० जमाबंदी; लगा-	<b>जराक वि०</b> (२)अ० जरासा; अल्प
नकी उपज	<b>जरातरा अ०</b> थोड़ासा ; नहींवत्
अक्सीन स्त्री० जमीन; भूमि(२) खेतीके	<b>बरायत</b> वि० वर्षाके पानीसे होनेवाला;
योग्य जमीनका टुकड़ा; खेत(३)घा-	चौमसिया (फ़सल)
बके भर जानेसे आनेवाली नई चमड़ी;	<b>जरी</b> स्त्री० जरी; कलाबत्तू; जरीका
<b>खुरंड। [–आववी</b> =पाद भर जाना।	माल (२)वि० आरकश; जरव9्त
-मां पेसवुं = नाटा 'रहना (२) बहुत	जरी वि०(२) अ० खरा; योड़ा; कुछ
शर्म आना; जमीनमें गड़ जाना ]	<b>जरीक</b> वि० (२)अ० थोड़ासा ; नहींबत्
<b>जमीनदार</b> वि <u>०</u> जमीनकी मालिकी	<b>जरीकाम</b> न० जरीका काम; कसीदा;
रखनेवाला (२)पुं० जमीनका मालिक	सलमे-सितारेका काम; जरी
(३)जमींदार	<b>जरीप़ुराणुं</b> दि० पुराना; टूटा-फूटा;
वमीनवारी वि०जमींदारका ; जमींदारसे	विशेष पुराना
संबद्ध (२)स्त्री० जमीदारी	जरूसो पु॰ देखिये 'झरूखो '
सम्रिनदारी पटति स्त्री० लगान अदा	<b>अकर</b> स्त्री० उपयोगिता; जरूरत 🕬
करनेकी वह पद्धति जिसमें किसानोंके	जरूर स्त्री॰ चरूरत; आवश्यकता;
बदले मालगुजार- अमीदार सरकार-	ग्ररप; हाजत; उपयोगिता(२)अ०
ेको मालगुचारी थवा करता है	जरूर; अवस्य; बेशक

For Private and Personal Use Only

	<u> </u>	
	2	<b>N</b> 1 -
-	•	

### - 222

जगक

जकरत; जकरियात स्त्री० देखिये 'जरूर'
स्त्री० में
<b>भक्स्री</b> वि० जरूरी ; आवश्यक ; लाजिमी
जसजल्बंबाकार अ० सब जगह पामी
पानी हो गया हो इस तरह; जलवल
एक हो इस तरह
जलव वि० तेख; सख्त; तीखा
<b>बलवी</b> स्त्रीं० जल्दी;उसावली(२)अ०
झटपट; शीझ; जल्द
<b>बलपान</b> न० जल पीना
<b>अलसो</b> पुं० जलसा (२)संगीतका अलसा
जर्णव(-भ) र न० जलंधर; जलोदर
जलेबी स्त्री॰ जलेबी
<b>कव</b> पुं० जी; जब [स्तार
वनकार पुं० जवासार; जौके पौदेका
<b>भवरअवर</b> स्त्री० बारबार आना-जाना;
आमद-रफ़्त
जबल्ले अ० क्वचित्; कभो; शायद
बबबुं अ० फ्रि॰ (फलके लिए) लगना;
फलना; फल लगना; उदा० 'फुल
बेसे पछी सींग जवे '(२) (फलादिमें)
डोला पड़ना
चबान वि० (२) पुं० देखिये ' जुवान '
जबानी स्त्री॰ देखिये ' जुसानी '
<b>ववाब</b> पुं० जवाब। [वापवा सर्वु =
अपने भले-बुरे कर्मोंका हिसाब देने
ईश्वरके पास जाना; मर जाना
जनावदार वि॰ जवाबदार; जिम्मे-
दार; उत्तरदायी ु
बबाबदारी स्त्री॰ जवाबदारी; जवाब-
देही; उत्तरदायित्व
बबाबी वि० जिसका जवाब माँगा गया
हो; जयाबी (२) जिसके जवाबका खर्च
दे दिया गया हो; जवाबी (सत; तार)
बबारा पुं० ब०व० धान, जौ आदिके

मिट्रोमें साइकर उगाये हुए अंकुर; जरई: जेवारा जाना जवाबुं अ० कि० ' जतुं ' का भावे ; जाया जवासो पं० जवासा; जवास जवाहिर न० जवाहिर; हीरा, रत्म, मणि आदि जौहर जब अ०कि० जाना;गुजरना; दूर होना (२)हाथसे निकल जाना; कम होना (३)नुकसान होना; नष्ट होना; घ-टना (४) बीतना । वित् करवुं = माफ़ करना; रिहा करना; जाने देना.] जसत न० जस्ता; जस्त जहन्नम न० जहन्नुस; नरक; जहन्नम जहाज पूं० जहाज; जलयान; अलपोत अहाजी पूं० जहाबी; जहाजरान(२) वि० अहाजी; जहाजका जळ न० जल; पानी । [**--जंपव्ं = नीरव** शान्ति होना; सन्नाटा छाना। **–म कवं** = प्रतिज्ञा करना। – लेवुं = प्रतिज्ञा क'रना. मिद्गु जळकुकडी स्त्री० एक जलचर पक्षी; जळघोडो पुं० दरियाई घोड़ा; 'हिपो-पोटेमस ' बिंबाकार ' **जळजळबंबाकार** अ० देखिये जलजरू-जळजळब् अ० कि० जलना (२) जलन होना जळजळं वि० डवडवाया हुआ (लोचन) जळझोलणा(--गो) वि॰ स्त्री॰ भाद्र-पद शुक्ला एकादशी जळवार्षु 'अ० कि० 'जाळवव्' का कमेंणि जळम् अ० कि० जलना; सुलगर्नी **जेंठो** स्त्रीं० जोंक जळोब(-ब)र देखिये 'जलंबर' वंगम वि० जंगम; चल; मनकूला थाना. ]

न्त्रंतर १९	२ जाण्येनवाण्ये
मेंसर पुं०; न० जंतर; तांत्रिक आकार या कोष्ठ; यंत्र (२)ऐसी आकृति या	<b>वाचम</b> स्त्री• जाजम; जाजिम; बिसाँदा; बिछादन
भा गरा-७, २२ (२) २३। जाइगरा था अक्षरोंबाला काग्रज या पतरा; ताबीज	जाजरू पुं०; म० पासाना; जाजरू
(३)जादू; जंतर-मंतर	जावरण न०; जाबाई स्त्री० मोटाई;
<b>र्थतरडुं</b> न॰ देखिये 'अतरडुं '	स्यूलता
<b>भंतरमंतर</b> पुं; न० जंतर और मंत्र; संत्र	<b>बादियुं</b> वि॰ मोटा; स्यूल
-मंत्र; बाँदू-टोना	जाडू वि॰ मोटा; दलदार(२)मोटा;
र्षप(ज') पुं० चैन; कल; शान्ति	मेदस्वी; चरबीयुक्त (२) दबीज; घना;
र्णपर्वु (जं') अ० कि० चैन होना; शांत	ठस; गाढ़ा (४) तीक्ष्णका उलटा;
होना(२)झपना; जरा नींद लेना –	भोयरा; कुंद(५)भारी; कर्कश(६)
अखि लगना (३)तूफ़ान या धमाल	[ন্ডা.] শ্বৰুদ্ধি; जड़ (৩) अशिष्ट;
करनेसे दकना; शान्त होना	गँवार (८) जिसमें गहराई न हो;
<b>चंबूर</b> न॰ कीलें खींचनेका एक औजार	भोटा; उदा० 'तेनुं काम जरा <b>जाडुं</b>
आंधूरा; जंबूर	होय छे दनीय
<b>वंबूरोप्</b> ० एक छोटी तोप; जंबूर(२)	जाहुं सहद वि० ठस बुना हुआ; गाढ़ा;
बाजीगरका भददगार लड्का; झमूरा	जा <b>डूंब(भ)म</b> वि० भारी-भरकम;
<b>बाआव</b> स्त्री० जाना और आना; आवा-	अतिशय मोटा
आही [(२)ख्खसत	<b>जान</b> वि॰ जानकार (२) परिचित;
जाकार (रो) पुं० आव-भगत न होना	पहचानवाला (३)स्त्री० जानकारी;
जाकीट न० जाकिट; फ़तुही; वास्कट	झान (४) परिचय; जान-पहचान
भागतुं वि॰ आगता हुआ; जागता;	<b>आणकार</b> वि० जानकार [पहचान
जाग्रत (२) सजग; जागरूक; बेदार।	जामपिछाग <u>(</u> -न)(ण,) स्त्री० जात-

- [ --मूतरवुं = जानवूझकर विगाड़ना। जागसो दहाडो ≕ आवादीका काल (२) अशुभ या झगड़ेका दिन.]
- जागरण न॰ जागरण; रतजगा(२) जागृति; बेदारी
- आपवे अ०कि० जागना; तींदसे उठना; जायत होता; जगना (२) सजग होना; जायत रहना; जगना (२) जागता हुआ होता; जागना (४) ताजा होना; चलना; उभरना; उदा० 'वात पाछी , जागी छे '(५) अज्ञानमें से निकल्ला; जाग फ्राप्त करना
- बातका भेद जाननेवाला; भेदिया जाचर्षु स० क्रि० जानना; पहचानभा; परिचित होना (२) मानना; समझना; उदा० ' हुं जाण् के ते करशे '

बागभेषु वि० अंदरकी बात जाननेवाला;

- जानी बोई (०ने), जानी बूसी (०ने)= जान-बूझकर
- जाणीतुं वि० जान-पहचानवाला; परि-चित (२) अनुुमवी; अम्यस्त (३)नामी जाचे अ० गोया (२)मानो; जानो
- जाने कार्यसम्बद्धां आता. जाने कार्यसम्बद्धां के आने-जनजाने

<b>Alte</b> A.S.
------------------

#### অৰ্থিনি

- आत (त,) स्त्री० जाति; जात;ंधर्य	जाते (ते,) अ॰खुद; आप (२)जातिकां;
(२)वंश; जात; खानदान; उदा०	ज्ञातिसे; उवा० 'तें जाते कोण <b>छे ?</b> '
'तुं तारी जात उपर गयौं'(३)	जात्रा स्त्री० तीर्थयात्रा; यात्रा; जात्रा
बिरादरी; गोत्र (४)देह; जास (५)	जात्राद्धु पूं० (२)वि० तीर्याटन करने-
सदा बना रहनेवाला मूल गुण;	वाला; यात्री
प्रकृति; जात [ला.] । [– उपर अवुं 🛥	जायु (भूक) त्र० हमेशा टिंके-चला करे
जातिस्वभाव दिखाना ; जात पर जॉना	इस तरह; लगातार
(२)मिजाज करना । <b>–चोरवो == काम</b> -	जाववास्पछी स्त्री० यादवोंकी आपस-
चोरी करना (२) बिरादरी, जात-पौत	आपसकी लड़ाई (२) एक क्लैके
छिपाना । –जणावी = असलियतका	व्यक्तियोंकी आपसी लड़ाई; खाना-
पता चलना; जाति <b>या कुलकी प्रकृति-</b>	जंगी⊵[ला.]
का जाहिर होना.]	আৰু পৃঁ০; ল০ আহু
जातकमाई स्त्री० खुदकी कमाई	<b>अख़ुई</b> वि० जादूका; चमत्कारी
जातभाई पुं० एक ही जाति या थिरा-	आतुगर पुं० जादूगर;
दरीका; एक ही बिरादरीमें उत्पन्न	जाहुमंतर पुं० जादूका मंत्र
होनेके नाते भाई; भाई-बंद ; ज्ञासि-जन	जाह, आहूई; आहूगर, आहूमंतर देसिये
गातनहेनत स्त्री० खुद की हुई मेहनत;	'जादु आदि
	जान स्त्री० बरात; जनेत
स्वाश्रय (२) शरीरश्रम	जान पुंठ आन; प्राण(२)प्राणप्पारा
<b>आतरलुं</b> वि० केवल अपनी जात	व्यक्ति; जान [ ला. ] (३)दम; जान
सम्हालकर बैठा रहनेवाला; स्वार्थी;	(४)हानि । [⊶आपको = जान बख्श-
खुदगरज [नस्ळका	नी ।पर ओबर्षु 🛎 जान पर आ बनना
बातवंत, जातवान वि० कुलीम; अच्छी	(२)जान पर खेलना.]
जाति स्त्री० कुल, वर्ण या विरावरी	जानेमाल पुं० जोन व माल; जने-मन
और योगिका भेदसूचक वर्ग; जाति;	जामबर मर्क देखिये ''जनॉवर
समुदाय (२) लिंगमेदसूचन थर्ग;	जानी वि॰ प्राणप्रिय (२) जानी; जान
जाति; लिंग [व्या.]	लेनेवाला विगह; जनवासा
<b>आतिवहेवार</b> पुं० आंति-जातिके बीचमें	जानीवासो पुरु बरातिगॉके ठहर <b>नेका</b>
खान-पानका संबंध	आनेवारी पु <b>र्व देखिये ' जा</b> म्युआरी'
जोतियोचक वि० जातिवोचक [याः]	<b>वानैयो</b> पुंठ <sup>े</sup> वरातीः 👌
भातिस्वजाव पु॰ जातिस्वजाव; जाति	जाम्युजर्भरी पुं० जनवरी
या क्रीमका विशिष्ट स्वभाव (२)	बायती पुंठे जायता; पंग्या इतर्जम;
खुदको स्वभाव; स्वभाव	कानू; कड़ी निगरानी
विंग् वि॰ जातीय ; जातिका (२)स्त्री	जापानी वि० जापान देशका या उत्तत
या पुरुष जाति-संबंधी; यौन	संबद ; जापानी (२) जो टिकाऊ न ही

er f≝….93

-			a
۰,	1	,	



	1.14
नाजुक; दिखावटी [ला.] (३)स्त्री•	
जापानकी माथा; जापानी (४) पुं०	
जापानवासी	
बाक्तो पुं० देखिये 'जापतो,'	म
<b>जाफत</b> स्त्री० जाफत; दायत	
जाफरां <sub>ह</sub> जाफरियां न्०व०व० (अव्य-	
वस्थित)लंबे बारु (२)जुल्फ परीशौ;	অ
बिसरे हुए बल्ल [ झबरा (पश्)	জ জ
जाकरियाळुं, आकरिमुं, आफर्च वि०	প
जामगरी स्त्री० तोप या बंदूकमें आग	
देनेका फ़लीता; जामगी। [-चांपवी,	
मूकवी=तोप, बंदूक आदि दागना	
(२) [ला.] उभाड़ना; उकसाना;	শ
भूर ह भराना.]	জ
আলক্ষর ন॰ अमरूद	
बामनुं अ०त्रि० जमना;- जमा, इकट्ठा	:
होना (भोड़, टोला, मैल, कचरा) (२)	স
पतली चीपाका गाढ़ी या ठोस होना;	জ
नीचे बैठनाः; चिपकनाः; बैठनाः; जमना	
	;
(दूष, पानी) (३) जड़ मजबूत होना;	জ
- अपनी जगह पर डटा-बना रहना;	
वमना (४) रसोत्मवक होना; दिलमें	-
बैठना; रंगमें आता; मचना; जमना;	স

खल निकलना; ठनना (मैत्री, घंधा, दुकान, युद्ध) । [जामी खवी च्ळठनना; झगड़ा - होना; लड़ पड़ना. ]

**साविम पुं० व**मानंत लेनेवालाइ जामिन **साविमवार २० जमा**नतनामा क्र

जानिसंघरित स्त्री० आमिन होता; जामिनी [देखिये जामिन आदि जामीन, जामीनकत, जाव्देन्गारी बाको पुरु पेशवाज वैसा बढा घेरवात वंगरसा; जामा काम्यु विक्र जतमा हुआ; जात हरक

बायो पुं० पुत्र (२)वि० पुं० जना हुवा; जनमा हुआ; जात **गर**(र,) स्त्री० ज्वार (अनाज) **सरबाजरी** स्त्री० भरण-पोषण ; गुजारा (ज्ञा.) **वारी** अ० जारी; चलता हुआ **गलिम** वि० जालिम ; कूर **गवक** वि० **वा**हर गया या भेजा हुआ ; निर्यात (२)स्त्री० बाहर भेजा हुआ; निर्यात (३) खर्च; व्यय (४) खर्चमें लिली हुई रक़म; उधार **गवंतरी, जावंत्री** स्त्री०) जादित्री शसा**चिठ्ठो** स्त्री० निजी बैर लेनेके लिये लिखी जानेवाली धमकी भरी गुप्त जिट्ठी **।।सूसी** स्त्री० जासुसका काम ; जासूसी ।सो पूं० निजी बैर लेनेके लिए लोगों पर को जाती ज्यादती (२) उसके लिए दी जाती गुप्त धमकियाँ **।हेर** वि०. जाहिर; जो गुप्त न हो; प्रकट ; खुला हुआ(२) सार्वजनिक ; आम **ाहेरखबर** स्त्री० विज्ञापन; इश्तहार-जाहेरनामुं न० घोषणापत्र; सार्वजनिक आम जलसा सूचना जाहेरसभा स्त्री० सार्वजनिक सभा; **आहेरात** स्त्री० जाहिर करनेकी किया; प्रसिद्धि (२)इग्लहार; विज्ञापन (३) अ० खुले आम; बाहिरमें जाहोजलाली स्त्री० वैभव; दबदबा; शान क सौकत; जाह न जलारु, 🖓 जाळ स्त्री ्जाल (भूत, सन आदिका) (२) जाला (३) फंदा; फ़रेब; ज़्रूल (४) ल्ट्टू घर लपेटनेकी छोटी रहुद्दी

जाळवणी स्त्री० संभाल; हिफ़ाजत

हिफ्रांजत करना

हो (कपड़ा) (२) तार-तार; जीर्ण

**वाळियं** न० जाली (मकानमें ) ; रोशन-

बाळी स्त्री • छेददार चीज; जाली (२)

जाली जैसी बनावट जो दीवार या

खिड्कीमें लगाई जाती है; जंगला (२)

दान(२)जालीदार चिमनी<sup>:</sup>

1.11	1. 6
	_

- जिल्लो पुं० विभाग; हलका (२) सूत्रेका बाळववुं स० कि० सँमालना; सहेजना; बह भाग जो कलक्टरके मातहत हो; जिला जाळावाळा वि० छिदरा; जो दबीज न
  - जिमाई स्त्री० जीवन-निर्वाहके लिए मुक़ररे की हुई रक़म या खसीन; जीविकाका साधन; गुजारा
  - जिवाढवुं स॰ कि॰ जिलाना; जिंदा करना; मरनेसे बचाना(२)पालना-पोसना: जिलाना
  - जिवाळी स्त्री० तबलेके चमडे परका काला वर्तुल;स्याही (२)तंबूरेके तूंबे पर तारोंको बाँधा जानेवाला ढोरा; जवारी | रहोवा
  - जिहोबा पं० ईक्वरका यहदी नाम; **जिगोडी** स्त्री० किलनी; चि**पड़ी**
  - **जिगोडो** पुं० बड़ी किलनी; चिचड़ा
  - **जीतद्**स० कि० जीतना
  - **चीरान** न० देखिये ' जेतुन '
  - बीव स्त्री० देखिये 'जिह '
  - **जीन** पुं० एक प्रकारका भूत; जिन
  - **जीन म० भीन: पछान: चारणामा** जीनो पुं० जीना; अलग निकाली हुई
  - सीदी जीभ स्त्री• जीम**े(२)जवान; वामी** (३)रसना; जीभ (४)बुट पहननेमें मयुक्त लोहेकी पट्टी ; जीभ । न्यिताई जबी == कह कहकर थक जाता। -- सौंगां वालवी, वाळवी = जीभ रोकना: बोलना चंद करना। जीवें वर्ष्युक वबान पर होना (२) बदना<del>ज होनाः]</del>
  - **वीभाकोबी स्ती० हज्जत ;ाह्य स्ट्री**त
  - **बीरण** वि० जीर्ण
  - जीरवव् स० कि० क्वाना; हजस करना (२) सहग करना; झेलना **जीव** न०ं जीताः

लट्ट्की डोरी बाळं न० जाला (२) मकड़ीका बुना हुआ जाल (३) आंखका एक रोग; जाला (४) जाल; ठगने, फँसानेकी युक्ति जागड(०) वि० लौटानेकी शर्त पर, दिखानेके लिए, बिना दाम दिये लिया ्हुआ सौदा; जाकड़ बांध (०) स्त्री० जाँघ; जंघा; रान जांधियो एं० जॉथिया; घटना; निकर ज्वांबु (०) न० जामुन [जामुनी जांबुडियूं (०) वि० जासुनके रंगका; जाबुइं(०)वि० जामुनी (२)न० जामुन जाबुडो (०) पुं० जामुनका पेड़; जामुन बियर न० दिल; जिगर (२) दिली दोस्त [जितवाना [स्रा.] **जिलाव (--व)व्**स०ऋ० जिताना; बिलावुं अ० कि० 'जीतना ' कियाका कर्मणि रूप: जीता जाना जिह स्त्री० जिद; हठ जिही वि० जिही; हठी **चित्रत** न० जन्नत ; स्वर्ग **विप्सी** वि०(२)पुं० एक सानाबदोश जातिका आदमी; कंजड़; कंजर

**जिराक** न० जिराक़ा **जिरायत** वि० देखिये ' जरायत '

_		Ł
	T.	Г

- **H** 

<u> </u>	- 13
<b>जीनें</b> वि॰ जीनें; बहुत पुराना	(२) षिदा होना या रहना; जीताः (२)
जीलम्बे अ० बहुत ताबेदारी सूचित	जीवन गुजारना; जीना; उदा० 'गुरुंग-
करनेवाला उद्गार	मीमा जीववा करता तो मरवु सार्व '
और पुं० जीव; प्राण; शरीरका चेतन	<b>जीवसटोलट</b> अ० जानजोसों [ समूह
तत्त्व (२)प्राणी; जीव(३)मन; दिल;	जीवात स्त्री० सूक्ष्म जंतु या कीड़ोंका
जी (४) [ला] पूँजी; घन (५) जान;	<b>जीवादोरी</b> स्त्री० देसिये 'जीवनदोरी '
दम; सार (६) घित्त; मन; ध्यान।	र्णीडवुं न० कपास, पोस्ते इत्यादिका
<b>[–अष्यर थवो =</b> जी न लगना (चिंता-	फल; डोंड़ा; ढेंढ़ी; डोड़ी
के कारण)। <b>– आववो =</b> सचेतन	जींगरां (०) न०ब०व० देखिये 'झींयरां'
होना (२) जानमें जान आना । <b>- भहष्</b>	<b>जुआर्थ</b> न० संयुक्त कुटुंबसे अलग होकर
<b>करतो तथी =</b> जी न करेना; मन न भागना.]	जमाया हुआ नया संसार; बँटवारा; अलगीझा
<b>भौबउकाळो</b> पुं० जलापा; क्लेश;कुढ़न	<b>जुआळ पुं</b> ० ज्वार;जुआर;भाटाका उलटा
जीवजंत (सु) पुं०; न० कीढ़ा-मकोढा ;	जुक्ति स्त्री० जुगत; उपाय; युक्ति;
जीव-जंतु	करामत(२)रीत
जीवडूं न॰ जंसु; छोटा कीड़ा	अन्ग पुं० जुंग; जमाना; युग
जीवडो पुं० जीव ; आरमा (२) बढ़ा कीढ़ा	जुगत वि॰ जोड़ा हुआ; युक्त (२)
<b>जीवत</b> न० जीवितः; खिदगीः; जीवनः:	युक्त; योग्य; अनुकूल
<b>बीवतदान</b> न० प्राण-दान; जीवनन्दान	<b>जुगती</b> स्त्री० देखिये 'जुक्ति '
बीबहर न० जीवन; जिंदगी; उम्र	जुंगलुं वि० अपनी जगह पर ठीक बैठता
<b>जीवस्ं वि</b> श्रीताः; जीववालाः; <b>चिवा</b> ः;	हुआ; युक्त; उचित
्रसमीव	जुगलजोडी स्त्री० जोड़ा; युगल
जीवतीय वि॰ जीतोड़ (काम) ः	जुगार पु॰ जूआ; जुआ; दूत जिुआरी
अभिषेत्र न० जीवन; जिंदवी (२)आयुष्य;	जुगारियो पु० जुआ खेलनेवाला; जुआड़ी;
े उन्न (३) प्राण; जीवन	भुगारी वि॰ जुआ खेलनेकी लेतवाला
<b>भीवनसलह</b> पुं० देखिये ' जीवनसंग्राम '	(२)पुं० जुआड़ी; जुवारी
बीबनबोरी स्त्री० आयुष्य (२) जीवनका	<b>जुट्ट्</b> वि॰ असत्य; झूठा (२) नकली;
मुस्य आधार (ला.) 👘 🖓 👘	बनावटी (३) बेकार; जड; संज्ञाहीन (अंग)
बीवननिर्वाह पुं० भरण-पोषण; निर्वाह	(अंग) 👘
वीवनससी स्वी० सहमर्मचारिणी; पत्नी	जुबाई स्त्री० जुदाई; अलगाव
वीवनसंबास पु॰ जिया रहनेके लिए	<b>भुद्ं</b> वि०जुदा ; दूर ; अलग ( २) <b>अलोखा ;</b>
प्राणियों द्वारा किया आणेवाका	जुदा । [वड्युं = अलग होना (२)टूट
ন্ট্যান) জীবন-কত্ব 🖉 🖉	जाना (३) अलग राय रसना (४)
<b>जीवलेण</b> वि०ंजानलेवा; प्राणचालक	संयुक्तमेंसे अपना अलग करना;
वीवर्बु अ० कि० जीना; सौस चर्ममा	अलगानाः]

লুনবালী	

#### 190

**जुनवाजी** वि० पुराना (२)पुराने विजा-रवाला; सनातनी; अोर्थोडोक्स ' जुबान स्त्री० देखिये 'जवान ' जुबानी स्त्री० जवानसे बताई हुई कैफ़ियत; गवाही भुमलो पुं० जुमला; कुल संख्या; जोड़ जुमा पुं० जुमा; शुक्रवार **जुमेरात** स्त्री० जुमेरात; गुरुवार जुम्मेवार वि० जिम्मेदार; उत्तरदायी; [ दारी; खिम्मेवारी जिम्मेवार अम्मेबारी स्त्री० उत्तरदायित्व; जिम्मे-**भुम्मेवार** वि० देखिये 'जुम्मेदार' **जुम्मेवारी** स्त्री० देखिये 'जुम्मेदारी ' जुम्मो पु० जिम्मा; जवाबदेही **कुलफ़ुं** न० बालोंकी लट; जुल्फ़ जुलम पुं० जुल्म; जबरदस्ती (२) अत्याचार; अन्याय (३) अतिशयता या राजबका काम **जुलमगार** वि० जुल्मी; जालिम **जुलमी** वि॰ जुल्मी; अत्याचारी (२) बालिमाना; अत्याचारपूर्ण **जुलाई** पुं० जुलाई; जूलाई **जुलाब प्**ं० जुलाब; विरेचन(२)दस्त; जुलाब । [**–आपवो** ≕ विरेचन देना (२) [ला.] खूब धमकाना; बहुत घबड़ाना । --यई जवो == घबड़ा जाना.] **जुवान** वि० (२) पुं० जवान भुवानजोध वि० पूर्ण यौवनशाली (२) मजबूत; क्रद्दावर **जुवानियो** पुं० जवान जुबानी स्त्री० जवानी ; युवावस्था ; यौवन **जुवार** स्त्री० ज्वार; जुआर(अनाज) **जुवार्थ** न० देखिये 'जुआर्थ ' जुस्ताबार वि० ओजपूर्ण; जोशीला

जुस्सो पुं० जोश; उत्तेजना (२)मनो-वृत्तियोंका आवेश ( ३ )शक्ति; प्रबलता जुहार पुं०जुहार; 'प्रणाम ', 'सलाम का भाव सुचित करनेवाला शब्द जू स्ती०जूँ;ढील । [ –चेबुं ⇒किलनीकी तरह चिपकनेवाळा; चिकना; चम-चिच्चड (व्यक्ति)] जूई स्त्री॰ जुही; जुही (बेल) जूगदुं न० जुआ; दूत **जूज** वि० **वहुत योड्**ा; जरा जूबजाज वि० अति योड़ा; नहींवत् जूजवुंवि० जुदा; भिन्न ; अलग जूठ न॰ झूठ; असत्य जूठाणुं न० सूठी बात; झूठ जुटाबोलुं वि० झुठ बोलनेका आदी; झूठा [मूठा (अंग) जूटुं वि० झूठा (२)नकली (३) बेकार; जूहुं वि० खाकर छोड़ा हुआ; जूठा जूबी स्त्री० पूली; छोटा गट्टर; जूरी **जूको** पुं० साडु(२)गट्ठर; पूला; मुद्धा जूलियुं न०, भूती स्त्री०, जूतुं न० जुता । [जूसियां सावां, पडवां = मार पड़ना; जूते पड़ना (२) अपमान या तिरस्कार होना; निकाला जाना । जूते मायुँ जब् = जानेकी परवाह न करना; जूतीकी नोकसे; बलासे.] **সুল** ৭ুঁ জুন (ভঠা महीना) जूनुं वि० पुराना; आगेका; क़दीम (२) जर्जर; जीर्ण(३)जिस पर बहुत समय बीत चुका हो; दिनी (४) सघा हुवा; पूर्ण अभुभवी; सिद्ध; नामी;पुराना; उवा० 'जूनो चोर, जोगी, पापी आद्रि' **जूवो** पुं० किलनी बे (जे') स॰ (२) वि॰ जो (३) अ॰ जो ; कि; उदा० तेनुं कारण ए छे जे(के)'

चे	१९८ जोग
बे(जें) पुं०; स्त्री० जय; फ़तह	जेवुं तेवुं (जे') वि॰ साधारण; जैसा-
जोजे (जॅजॅ) पुं० नमस्कार; वंदन(२)	तैसा (२) कैसा भी
अ० वदनसूचक उद्गार	<b>जेहाव</b> स्त्री० घर्मकी रक्षाके लि <b>ए</b> किया
<b>जेजेकार</b> (जॅंजॅ) पुं०; स्त्री० जयजयकार	जानेवाला यु <b>द्ध</b> ; जिहाद
जेटलुं (जे') वि॰ जितना 👘 👘	<b>जेहु</b> स्वी० धूल; गर्द
जेटले (जे') अ० जिस मात्रामें ; जितना	ज्वो अ० यदि; अगर; जो
जोठ पुं० पतिका बड़ा भाई; जेठ(२)	<b>जोइए</b> अ०कि० चाहिये [आव <b></b> श्यक
जेठमास	<b>जोईत्</b> वि० चाहिये उतना; जरूरी;
जेठाणी स्त्री० जेठकी पत्नी; जेठानी	जोके अ० यद्यपि;अगरचे;गो; जोकि
जेठीमध न० जेठीमधु; मुलेठी	(२) फिर भी; उदा० 'तेणे आपवा
अंसून (जॅ') न० जैतून; एक तेलहन;	कहर्षु, जो के एन्ं मन नयी )
'मॉलिन'	<b>जोख</b> न० जोखनेका बाट(२) जोखनेकी
जेते स०(२)वि० कोई भी;जी भी	रीति; तौरु; जोख (३) तराजू
(३)सामान्य;उदा० 'आ कंई जे ते	<b>जोलम</b> त० भविष्यमें होनेवाले नु <del>क्र</del> सा-
माणसथी न बने '	नकी दहशत (२)नुकसान; जोखिम;
<b>बेब पुं॰;</b> स्त्री॰ जेब; शोभा	खतरा (३) वह कार्य जिसमें जोजिमका
जेम(जे') अ० जैसे; जिस तरह; यया	डर हो; साहस । [ <b>स्तेडवुं</b> ≕साहस
<b>जेन के</b> (जे') अ० जैसे कि; मसलन्;	करना; जोखिम उठाना <b>। –वेठवुं =</b>
उदाहरणके रूपमें	घाटा सहना ; नुक़सान उठाना.]
अव तेम (जे') अ० ज्यों-त्यों; किसी	जो <b>लनकारक, जोलनकारी</b> वि० जिसमें
तरह; मुश्किल्से; येन-कैन	जोखिम हो; जोखिमी
जेमनुं(जें) स॰ ब॰ व॰ जिनका (२)	<b>जोलमदार</b> वि० देखिये ' जवाबदार '
वि॰ जिस तरहका; जैसा(३)जिस	जोलमबारी स्त्री० देखिये ' जवाबदारी '
बाजूया तरफ़का [जेर	जोलमाव् अ० कि० नुकसान पहुँचना
जेर(जे') अ० बसमें; ताबे; पराजित;	<b>जोलव्ं स०</b> कि० तौलना ; जोलना (२)
जेरबंद (-घ) (जॅ) पुं०धोड़ेकी बागको	मनमें अच्छी तरहसे विचारना [ला.]
तंगके साथ जोड़नेवाला चमड़ेका	जोग थि० योग्य; उदा० ' खावा जोग;
तस्मा; जेरबंद (२)चमडेका कोड़ा;	लखवा जोग'(२)की ओरका;
सटाकी	जोग; के लिए; उदा० 'नाम जोग
<b>जेरो</b> पुर्व गिरा हुआ चूरा; झड़न; चूरा	हुंडी' (३) अ० — के प्रसि; उदा० ' — जन्म रोगी को ग'
(२) तंबाकूका चूरा; जदी	र्नां तंत्री जोग' ————————————————————————————————————
जेल स्त्री॰ कैदखाना; जेल; जेलखाना	जोग पुं० योग (२) प्रबंध ; इंतऊाम (३) जनपर्वते प्रायदेने प्रायदेनो न्यालेंको न्यान
(२) क्वैद; क्वैदकी संजा	बुनाईमें तानेके सूत्रके तारोंको ऊपर-
<b>वेदर्डु</b> वि० जितना (कद, नाप)	नीचे करनेवाली योजना । [ <b>– जःवयो,</b> जे <b>ल्लो –</b> संक्रेस, प्रजन, कोल्प, <b>फ्री</b> न्प
जेर्चु (जे') वि०' जैसा; जिस तरहका	<b>बेसचो =</b> संयोग प्राप्त होना; मौक़ा

alias

## 115

- मिलना । **–ज्ञावो** ⇒ योग होना;मिलाप होना ]
- जोगटो पुं० जोगड़ा; साधु (सुच्छकारमें) जोगण स्त्री० योगिनी; जोगत; जोगिन
- जागण स्ताष्ट्रयाग्या,जाग्य,जाग् (२) साधुकी स्त्री; जोगन
- वोगमाया स्त्री० ईश्वरकी माया;योग-माया (२) दुर्गा
- **जोगवाई** स्त्री० व्यवस्था; इंतजाम **जोग्** वि० देखिये 'जोग' वि०
- वोटडी स्त्री०, (--डूं) न० जवान मेंस; गौसर
- अतेटो पु० एकसी दो चीकोंका जोड़; जोड़ा; उदा० 'घोतीजोटो (२) एक चीक्वके साथ सब तरहसे बराबरीकी चीक्व; जोड़ी
- बोड स्त्री० दो समान चीखोंकी जोड़ी; जोड़ (२) प्रतियोगिता या बराबरीमें समान उतरनेवाली दूसरी चीज;जोड़ (३) संबूरेके चार तारोंमें से बीचके दो तार(४)सोहबत;मिल्म;योग
- जोडकण्ं ने० सुकवेदी; कैसे भी ओड़ा हुआ। गीत या पदारचना (२) मन-गढ़त बात
- **कोडर्कु** न॰ एक दूसरेके साथ लगी हुई चीजें;युग्म(२)एक साय पैदा **हुए** दो बच्चे; जुड़वौं(ब॰ व॰ में प्रयुक्त)
- कोडणी स्त्री० जोड़नेका काम या रीत; जोड़ाई (२)शब्द लिखनेके लिए अझ-रोंको जोड़नेकी रीत; हिज्जे; जोड़नी
- बोडवुं स०कि०(अलग चीजोंको) जोड़ना – सीना, मिलाना, चिपकाना आदि (२) अलग-अलग हिस्सों या टुकड़ोंको मिलाकर एक पूरी चीज बनाना; तरतीबसे बैठाना; बैठाना; जोड़ना (वाक्य, पद्य, यंत्रादि)(३)काम पर

लगाना (४) (बैरू या घोड़ा) जोतनाः वाहन या सवारी तैयार करना (५) नुकसान या घाटेको भरना; सूर्ति करना; भरना; उदा० 'में ऐमां घरना दस जोडघा' (६) स्थापित करना (प्रीत); मनसे उपजाना; जोड़ना(बात)। [औदी काडवुं झ कल्पनासे गढ़कर तैयार करना; बनावटी या झूठा तैयार करना; बातें बनाना.] राष्ट्रमं न० जोडा: जोडी

- जोडवुं न० जोड़ा; जोड़ी
- जोडाकर पु॰ संयुक्ताक्षर; मिलित वर्ण जोडाकोड अ० पास-पास; सटकर
- बोडाल न० जोड़; संधिस्थान; संधान (२)इकट्ठा करना; मिछा देना; जोड़ (३)इकट्ठा होना; जुड़ना; उदा० 'बे राज्योनुं जोडाण '
- जोडियुं वि० साथ रहनेवाला; साथी; संगी (२) जोड़ेमेंका कोई एक; जोड़वाला [बच्चेकी जूती जोडी स्त्री० जोडी; जोड़ (२) छोटे
- कोडीकार पुं० सायी(२)वरावरीका; जोड़का; जोड़ीदार
- जोबुंन०दो चीजोंका जोड़ा;जोड़ा(२) वर-कन्या (३) जूता [पास
- कोडे अ॰ साथनें; साप (२)नजदीक; जोडो पुं० जूता (२)डेसियें 'जोटो '
- जोस स्त्री रोेशनी ; ज्योति (२) दीमेंकी लौ ; टेम [ वातकी वातमें
- जोतजोतामां अ० देखते ही देखते; जोतर न० जुआठेमें बँघी हुई रस्सी या तसमा जिसमें बैलकी गरदन फैंसाई जाती है; जोता
- जोतरवुं संव किं० जोतेसे पशुको जुआठेके सन्य बॉंधना; जोतना

**जीलवं न० देखिये 'जोतर**'

भीडो	२०० <b>भा</b>
बोहो (-म) पु• योदा; सिपाही	लेवुं≖सोच लेना; गौर करना(२)
जोजन न० जोनन; जवानी	मारनेकी धमकी देता । जोईने चालम्,
<b>भोषनवंस्</b> वि० जोवनवाला	बोईने इगऌं भरबुं≕फूंककर पाँव
बॉबर पुं॰ (मिलमें)मजदूरोंका मेट;	रखना। बोबा बेबुं = दर्शनीय; सुंदर
"एंडैल होना	(२) बदनामी हो ऐसी स्थितिका
जोबाचुं अ० कि० राश खाना; मरणासन्न	आना; जिससे मारपीट हो; गत
<b>जोवो</b> (जो ') पुं० जी हूबनेकी अवस्थामें	(बनना).]
आना; बेहोश हो जाना; राश; मूच्छी;	ओदेश पुं० ज्योतिष;ज्योतिषका ज्ञान;
बेहोशी। [आवयो =ग्रश खाना;	नजूम। [ न्नदोवा 🚥 ग्रहोंके स्थान
अचेत हो जाना.]	<b>देल</b> कर फलित ज्योतिष कहना ]
बोम न० जोम; जोश; बल	<b>जोश</b> पुं०; न० उफान; उबाल; जोश
बोर न० जोर; क्रूवत(२)श्रम; मेह-	(२)उ्त्तेजना; सरगर्मी; जोश(३)
नतः; उदा० ' एमां मने शुं जोर पडचुं?'	वेग; जोर
(३)वश;काबू;जीर 'मारु एना उपर	बोझी पुं० जोखी; ज्योतिषी; नजूमी
कोई जोर नथी '(४)उन्नति; तेजी;	<b>जोशीलुं</b> वि० जोशीला; खोरदार
जोश; वेग; उदा० 'भाईनुं काम कई	<b>जोव</b> पुं० देखिये 'जोश '
जीरमां देखाय छे', 'तावनुं जोर'	जोवी पुं० देखिये 'जोशी'
आदि । [आ <b>ववुं</b> ≕ जोर पड़ना; श्रम	बोस पुं०; न०देखिये ' जोश '; ज्योतिष
लगना। –काढवुं=बलका उपयोग	<b>बोहाकी</b> स्त्री० <b>जुरू</b> म; अत्याचार;
ंकरना; जोर दिखाना। <b>–चढवुं =</b> जोरों	ज्यादती
पर होना; बोर पकड़ना; चरबी	जोहुकम पु॰ जुल्म;धाक(२)अ० हुक्म
चढ़नाः]	के मुताबिक्क; जो हुक्म; जो आज्ञा
बोरदार वि॰ जोरदार; प्रबल	जोहुकमी स्त्री ॰ जुल्म ; स्वेच्छाचार (२)
बोरावर वि॰ कोरावर; बलवास	वि० जुल्मी ; अत्याचारी [हत्या
बोद स्त्री • जोक; पत्नी [दिसलाना	जौहर म० जौहर; सामुदायिक आत्म-
जोवडा (-रा) वर्षु स॰ फि॰ दिखाना;	<b>जौहर</b> न॰ रत्न; जवाहरात
सोवानुं अ० कि० दिखाई देना; वीखना	साति स्त्री∘ बिरादरी; जाति; जाति
बोबुं स॰ कि॰ देखना (२) खोजना;	<b>कातिवंगु</b> पुं० किरादरीवाला; भाई-बंद
स्रोचना-समझना;ध्यान देना; देखना	<b>ख्यारमी</b> अ० जबसे
[ला.](३)पढ्ना;अम्पास करता;उदा॰	ज्यारनुं दि० जनका 
'कामना कागळ जोवा '; 'प्रूफ जोवा'	क्वार छगी अ० जब तक
(४)फलित ज्योतिष कहना या भूता-	अप्रारे अ० जिस समय; जब जन्मे जन्मे जन्म
दिका आवेश है या नहीं यह देवना(५)	ज्यारे स्पारे अ० किसी न किसी समय
आखमामा; अनुभव करना; देखना;	(२)चाहे जव; जवकभी
उदा०'जोवुं होम तो आवी जा'। [णोर्स	ण्याः अ० जहाँ

समको

<del>trat</del>	त्यां		201	
		अ० जहां-तहां; हर एक जगह	परीक्षामें	नापार

(२) मुश्किल्लेसे (३) किसी तरह; ज्यों-त्यों स्वाबली स्वीक्ष प्रकोल्पतः जनवी (२)

ज्युबिली स्त्री० महोत्सव; जुबली (२)

परीक्षामें नापास होकर उसी कक्षामें रहना [ला.] ज्वाळा स्त्री० ज्वाला;आगकी लपट ज्वाळामुखी पुं० ज्वालामुखी

# Ħ

**स** पुं० 'च' वर्गका – ताल्रुस्थानीय चौथा व्यंजन **शकझोळ** वि० मशगूल (२)स्त्री० रेल-पेल;बहुतायत (आनंदकी) सर्कुवर्षु अ० कि० झुकना; लटकना मल मारवी, प्रस मारीने रहेवुं=देखिये 'जल्ब मारवी' बोर; झलझल जगजग, जगमग अ० चमाचम; झला-**सगमगवुं, स**गमगवुं अ० कि० झलझला-ना; जगमगाना {चमक सग्तरगाट, सगमगाट पुं० जगमगाहट; सग्बुं अ० कि० जगमगाना ; झलकना **झगार (-रो)** पुं० जगमगाहट; झरुक मगडवं अ० फि० झगड़ना; लड्ना जग्रडाखोर वि॰ झगड़ालू; कलहप्रिय मधओ पुं० झगड़ा; टंटा; लड़ाई **झझणाट** पुं० झनझनाहट;झनकार(२) झुनजुनी ;,जलन (३) रोब ; दमाम झझणो स्त्री० हाथ-पाँवके एक हालतमें देर तक रहने या दबनेसे पैदा होने-वाली सनसनाहट; झुनझुनी; झनझनी (२)कोघ या रीसका आवेश **समूमव् अ० क्रि० ऊ**पर लटकना; बाहर या ऊपरसे लटकना; टॅंगना; झुमना (बादल) (२) टूट पड़नेको तैयार होना; दबाव डालना [ला.] सट ग० झट; तुरत

मटकामण न० फटकनेकी किया; फट-कना (२) फटकनेकी किया; फट-कचरा; फटकन (३) फटकनेकी उप्तत झटकाबवुं स० कि० 'झटकवुं ' कियाका प्रेरणार्थक (२) झटकेसे मारता,काटना मटको पु० झटकेके साथ किया हुआ घाव; झटका (२) घक्का; चोरसे खोंच-ना(३) घावकी नाईं होनेवाली पीड़ा [ला.] । [झटका खावा ⇔ घाव झेलना (२) मर्मवचन या चुभनेवाली बात मुनना। – पडवा = घाव खाना (२) दु:सी होना; श्रम उठाना (व्याय्यमें).] झटोझट अ० झट-झट; झट-पट झडको पुं० कपड़ेकी चीर; दरक(२)

झटका देकर दही मथना झडती स्त्री० पूरी खोज;तलाशी(२) कुर्क़ीका आदेश;जब्ती(३)पुलिसकी तलाशी

- झाइप स्त्री० त्वरा; वेग(२)झपटनेकी किया; सपट(३)सपाटा;टक्कर
- **सडपवेर** अ० तेजीसे; झपाटेसे
- **झडपर्षु** स० कि० झड़पना; झपटना
- **झडपो** वि॰ वेगवान; गतिवाला; तेज मबी स्त्री॰ जोरकी वर्षा; झड़ी(२)

सपाटा; झड़ी

**शणकार (~रो), झणको** पुं० झंकार; झनकार प्र

त्रर्ष	२०३ साटकमी
(३) एक वारीक कपड़ा (४) स्त्री०	<b>सळम</b> (-ह)ळ अ॰ देखिये 'झळझळ'
वारिशको फुहार; बूँदाबाँदी (५)अ०	(२) वि॰ चमकता हुआ; झलाबोर
रिमझिम	सळहळवुं अ०कि० बहुत प्रकास देना;
<b>झरवुं अ०कि० (</b> द्रवका) धोरे धोरे	झलझलाना; चमचमाना
बाहर निकलना; झरना [ अटारी	सळांसळां (०) अ० झलाझल; चमकके
<b>शक्लो</b> पुं० झरोखा; छज्जा; बारजा;	साथ (२)न० व०व० तेजका अंबार;
शरेणो स्त्री० झुनझुनी	तेजःपुंज
<b>भरेळो</b> पुं० जलनेसे होनेवाला फफोला;	मळेळो पुं० देखिये 'झरेळो'
छला ; झलका	झंखना स्त्री० आतुरतापूर्वक या बेसबीसे
<b>शरो</b> पु० देखिये 'झरण'	रटना; किसीको बार-बार याद करना
<b>झलक</b> स्त्री॰ झलक; ओप; चमक	(२) चिता; बेचैनी; छटपटी
ज्ञालकर्षु अ० फि० चमकना; झलकना	<b>शंखवाण्</b> वि० खिसियानाः झेंपू
(२)अपनी असली प्रकृति दिखाना[ला.]	
सलावुं अ० कि० पकड़ा जाना (२)	पड्ना (२)झेंपनाः, खिसियाना
अकड़ जाना; काठ होना; किसी	मंखवुं स० कि० आतुरतापूर्वक रटन
अंगका जकड़ा जाना; उदा० 'वायी	करना; बार-बार किसीको याद करना
सांधा झलाई गया छे '	संसट स्त्री० संसट; पचड़ा; झमेला
<b>संवेर</b> न॰ जवाहिर; जौहर(२)पानी;	झंड पु० एक मूत; जिन (२) वि० जल-
जीवट [ला.]	मस्त; मुस्तंडा (३) घूर्त; मत्सरपूर्ण
झवेरात न० जवाहिरात; रत्न, मोती,	संडी स्त्री॰ झडी
हीरा वग़ैरह (२)जड़ाऊ जेवर (३)	संडो पु॰ झंडा; निकान; अलम (२)
बल; खूत्री; सस्व; जौहर [ला.]	जुंविश; आंदोलन [ला.] (३) कोई
<b>झवेरी पुं</b> ० जौहरी	पक्ष या उसकी अगुआई । [~ <b>उठावको,</b>
सळक स्त्री० झलक; चमक; ओप	<b>फरकाववो</b> ≕ —का झंडा खडा करना
<b>सळकर्वु</b> अ० कि० देखिये ' झलकवुं '	(२) –की फ़तहका झंडा छहराना।
<b>शळकाट</b> पुं० झलक; चमक	-लेवो अगुआ बनना.]
झळको पुं० झलक; ओप; कांति	<b>झंपलाववुं</b> अ० कि० जीवटसे किसी
<b>शळसळ</b> अ॰ झलझल; तेजसे झलकते	काममें कूद पड़ना; साहस करना
हुए; झलाझल [अ॰ झलझल	<b>साकशमाळ</b> वि० झकाझक; झलाबोर;
सळसळाट पुं० झलझलाहट; चमक (२)	जाज्यल्यमान
ज्ञळमळिम्ं न० आँसू (२) सबेरे या	झांकळ स्त्री०; न० ओस; शथनम् बाह्यं नि० ज्यादाः क्रम्बरः जन्मि
्रामका धुँघला प्रकाश; झुटपुटेका प्रकार । जिन्द्रविषयं स्वयन्त्र - जोने	झासुं वि० दथादा; पुष्कल; अतिज्ञय सारकली स्वीत भग आचिरे जनग
प्रकाश । <b>(सळसळियां आववां ==</b> आंखें)	<b>झाटकणी</b> स्त्री० सूप आदिसे साफ करना फटकना (२) एरफनेकी राज्यस
डबडबाना; भाववङो होकर गद्गद होना.]	करना; फटकना (२) फटकनेकी उच्चत (२) फटकार; झिड़की; ऌताड्[ला.]
-	(i) is a set of the set of the set

शालकर्षु	२०४ हाणमुं
साहकर्षु स० त्रि० सूपसे साफ़ करना;	सापदुं न० थोड़े समयकी मूसरुधार
<b>फटकना (२) झ</b> दकारना ; झाड़ना (३)	) वर्षी; जोरोंकी वर्षी; झर
कटकारना ; उलटी-सीधी सुनाना [ला.	
साटको पु० देखिये 'झटको '	- झामर पुं० सिर और आँखोंका एक रोग
बाद न॰ पेड़ (२) एक आतिवाबाजी;	
<b>धाङ् । [बद् =</b> सवारको नीचे पटकने	
के लि <b>ए</b> घोड़ेका अगले दोनों पैरों पर	
खड़ा होना.]	त्वचारोग (३) अति पक्व ईंटका
साबकम् स० कि० देखिये ' झाटकनुं '	टुकड़ा; झौवाँ
<b>जावपान</b> म० संपूर्ण बनस्पति	झामखुं स०कि० तपाई हुई ईंट या
साडवुं स० कि० झाडू देना; झाड़ना	r ठीकरेसे पानी या दवाको छनकाना
(२) कपड़ेसे भूल-ग्दं साफ़ करना;	झार पुं० ज्वार; भाटाका उलटा
<b>झाड्</b> ना (३) झाड़-फ्रूँक करना (४)	<b>सारण न० धातुकी चोजको टाँका देक</b> र
फटकारना [ला.]	जोड़नेका सामान (२) उससे की हुई
साडी स्त्री॰ झाड़ी; झाड़ों, बेलों और	धातुकी जोड़ाई; झाल; झालबा
केंटीले पौधोंका समूह (२) जंगल	<b>झारवुं</b> स० कि० गरम पानीकी धारसे
भार न० बड़ी झाडू; बुहारी (२) झाड़-	<ul> <li>घोना या सेंकना (२) आहिस्ता आहि-</li> </ul>
फटकार; अपमान; अनावर; भर्त्सना।	
<b>[पडवुं</b>	- डालियाँ काट डालना; छाँटना
नित होना। –मळवुं = विफल होना;	
बनना (२) अपमान होना; फटकार	
पड़ना.]	छेददार पलटा; छोटा झरना
<b>काबुवाळो</b> पुं <b>० झाढू</b> वालग; भंगी	<b>सारो</b> पुं० सरना ; <b>सर(</b> पूरियां छाननेका)
झाडो पुं० झाड़ा; मैला; गू(२)दस्त;	
चुलाब (३) पूरी जामा-	<ul> <li>बरतन; हजारा; फुहारा [छलक</li> </ul>
तलाशी (४) झाड़-फ्र्र्रैक। <b>[भावे जवुं</b> ,	झालक स्त्री० तरल पदार्थका छलकना;
<b>झाडे फरवा जवं</b> =पाखाने जाना;	झास्टर पुं० एक दलहन; सेमके दाने
हगना.]	<b>झालर स्त्री</b> ० झालर; झूल; कोर-
झाडोपेशाब पुं० शौच; मलोत्सर्ग	किनारा (२) बजाया जानेवाला
<b>झानम</b> न० देखिये ' जहन्नम '	घड़ियाल; झालर; घंटा
<b>झापट स्</b> त्री०टक्कर;झापड़ (२) प्रेत-	🔹 🖬 सन्द्रना ; सन्द्रना ;
बाषा; झपेटा	ब्रहण करना; धरना(२)क़ैद करना;
<b>क्षस्थटयुं</b> स०क्रि० कपड़ेसे झाड़ना; <b>झ</b> ठ-	थामना; बंधनमें लेना (३) अकड़ना
कारना; पछारना(२) प्रहार करना	
(३) खूब खाना; ठूँसना [ला.]	आग्रहपूर्वक जमे रहना; अपनी बातको

इस्छि २	০৭ নুজাৰৰ
पकड़े रहना। झाली पडवुं क्विसी	शीक स्त्री॰ जरीके तारोंकी कारणोबी;
बात पर जमे रहना.]	सलमे-सितारेका काम
झाळ स्त्री० ज्वाला या उसकी आँच (२)	शीकवुं स०कि० जोरसे केंकना; उठा-
कोधका आवेश; झल्लाहट [ला.]	कर फेंकना; (घोते. समय कपड़ेको,)
झाळवुं स०कि० झालना; पाँजना	पछाड़ना (२) पटकना; हराना
झांक (०प) स्त्री० मंदता; धुँधलापन(२)	शोणवट, झीण्याझ स्त्री० जारीकी;
बट्टा; लाछन । [आववी (आले) =	सूक्ष्मता (२)निपुणता; कमाल; ग्हराई
धुँघला दीखना; अस्पध्ट दिखाई देना ।	झीणुं वि० झीना; बारीक; छोटा;
लागवी = घब्बा लगना ]	उदा० 'झीणुं काणुं' (२)पैना; तीक्ष्ण;
मांखरं (०) न० झंखाड; झाँखर	उदा० 'झीणी अणी' (३)पतला; महीन
झांखरं (०) स०कि० झांकी करना (२)	(४) नाजुक; महरा; सूक्ष्म; बारीक
लुक-छिपकर देखना; झाँकना	(काम) (५) महीन; धीमा; तीक्ष्ण
सांखी (०) स्वी० अस्पष्ट खयाल या	(आवाज) (६) गहराईसे काम कर-
अपूर्ण दर्शन; झाँकी (२) लुक-छिप-	नेवाला (मनुष्य); उदा० 'अहीं झीणा
कर देखना; झाँकना (३) भावपूर्वक	माणसनुं काम छे' [ला.] (७) बहुत
दर्शन (करना)	किफ़ायंती; कजूस जैसा। [-कांसण्
मांखुं (०)वि० अस्पध्ट; हलका; ओछा	च गहराईमें जाता; बहुत छान-बीन
(२) धुंघला; निस्तेज	करना; बालकी खारू निकालना.}
भाम (०) स्त्री० झाँझ (२) गुस्सा;	झीणो ताव पु० बहुत दिनसे आनेवाला
झल्लाना [बेड़ी; जंजीर[ला]	मंद बुखार; जीर्ण ज्वर
झांझर (०) झाँझर; झाँझन (२)	झीपवुं स०कि० पकड़ना
झांझयां (०) न० व० व० मृगतृष्णा;	झीखुं न० सिवाईके लिए तालमेंसे पानी
मृगजल; सराव (२) तेजसे या आँसूसे	उलीचनेकी बॉसकी छिछली टोकरी या
आँखोंका चौंधियाना; धुंघ। [सांझ-	सूप जैसी चीज; वेंढी
वान्तुं जळ = मृगजल.] [भूत	झॉक (०) स्त्री० टक्कर; मुकाबला
सांघडी (०) स्त्री०, (डो) पुं० मलिन	झींकवुं स०कि० देखिये 'झीकवुं'
शांपली (०) स्त्री० छोटा फाटक; झाँप	सींटवुं स०फि० (झंख़ाड़) लगाना;
(प्राय: बाढ़ या खेतका) [सियान	लिपटाना (२) एक पर एक (चीफ)
शांपी (०) पुं० फाटक (२) गाँवका	कममें रखकर ढेर लगाना
झियाबुं अ०कि० 'झीपनुं' कियाका	झींबरा (०) न०म०म० सिरके विखरे
कर्मण रूप; पकड़ा जाना	हुए अव्यवस्थित रूखे बाल; झोंटे
सिस्टाबुं अ०कि० 'झीलनुं'का कर्मणि;	झुकाबबुं स०फि० झुकाना; नीचा-टोझा
पकड़ा जाना; झाथमें लिया जाला	करना; नवाना (२) जीवटके किसी
झीक स्त्री०टक्कर;मुझावला। [- झीसनी	काममें कूद पड़ना; साहस करना
= अपने वसमर मुझावला करना;]	झुलाबबुं स०फि० झुलाना (२) स्नटकाना

त्तुंब	२०६ झोगो
मुंड न० सुंड; समूह; ग्रल्ला	झूलो पुं० झूला; झूलनेका साधन;
<b>सुंबे</b> ज्ञ स्त्री० जोरोंका आंदोलन; जुंबिर	
र्मुमर न० देखिये झमरख′ [ लटकन	· · · ·
मूनव् अ०कि० सुकना; नमित होना;	
सूसव् अ०कि० लगा रहना ; पीछे लगन	
(२) घमसान युद्ध करना; जूझमा	<b>सूंटग्</b> स०कि० झपटकर छीन लेता;
झूडवुं सं०कि० लेट्ठ या मोटे डंडेरे	ा <b>स्टंस्टा, स्टास्ट</b> स्त्री० एक दूसरेके
पीटना; सटकना; ठोंकना (२) झक	<ul> <li>पाससे झपट लेना; छीना-झपटी</li> </ul>
झोरना; झटकारना	<b>सूंटावन्</b> स०कि० देखिये ' झूंटववुं '
<b>झूडियुं</b> न० जिससे पीटा जाय ऐसा सोंट	
या लट्टा । [झूडियां पडवां ≕मार मिलन	। जाना [सोंपड़ा
(२) जूतियाँ पड़ना; जूतियां चटस्राते	
हुए अपमानसे लौटना; अपना-सः	र्म् <b>सरी</b> (०) स्त्री० देखिये 'धूंसरी'
मुँह लेकर लौटना ]	<b>सूंसर्थ न० गा</b> ड़ो, हल आदिका जु <b>वा</b>
<b>सूडो</b> स्त्री० देखिये 'जूडी'	झरेर (झॅ)न० उप्तर (२) ईर्ष्या (३)
<b>झूडो</b> पुं० बहुतसी चीजोंका एक साथ	बैर । [–आववुं = डाह होना ; जलना ।
बाँधा हुआ जूट; पूला; महुर	<b>चडवं</b> जहरका असर होना (२)
<b>झूनक्</b> न०, (क्षो) पुं० अनेक चीओंका	🧴 बैर, डाहका मनोभाव होना । <b>– वावयुं</b>
समूह; झूम्का; गुच्छा	<b>≕</b> झगड़ेके बीज बोना.]
<b>सूमणुं</b> न० अक गहना; झूमका; झूमर	🚺 झेरकचोलुं, झेरकोचलुं (झॅ) न० कूचला
<b>सूमव् अ</b> ०कि० देखिये 'झझूमवु' (२)	क्षेरी (०सुं) (झॅ) वि० जहरीला (२)
टैंगना (३) आतुरतापूर्वक ताकना;	ईर्ष्यालु
ं तरशना	<b>झोक पुं०;स्त्री० झुकाव; मनका कि</b> सी
<b>झूरव्युं</b> अ० कि०के लिए तरसना;	विषयकी बोर झुकाव; झुकनेका माव
कलपना (२) कलपनेसे दुर्बल-सीय	attant dan be werely second
होना; झूरना; झुरना	<b>सौकुं ग</b> ० नींद या नशेका सोंका;
भूल स्त्री० भाखर (२)कवितामें आने जन्म (२) पानी राजे आणिता	
वाला अंतरा (३) हाथी-घोड़े आदिकी	S
् पीठ पर डाला जानेवॉला कपड़ा; झूल जंगलाज संच सरकर (संव) ा (२) को ल	( , ,
ं <b>मूलजा</b> पुं० झूलना (छंद) ा[(३) लोरी	• •
<b>मूलम् न॰ मूला (२) पालना; हिंडोला</b>	
<b>अूलत्ं</b> वि॰ पेंग लेता हुआ; झूलमा।	
् <b>(मूलतोः पुरु =</b> झूलना पुरु ]	झोड (झॉ) न० मूत; प्रेस जेवलान (लॉ) प्ली प्रेल्टिनी जागा
<b>ज्ञूलम्</b> अ॰कि॰ पेंग लेना; झूलना (२)	कोडलपट (झाँ) स्त्री० प्रेतादिकी बाधा कोकर्प कोको लेकिने (कोकर्प कोडेने)
लटकना	<b>क्षोबायुं, झोवो</b> देखिये- 'जोबावुं', 'जोबो'

		۰.
111	14	ł

## टचली **धांचडी**

शौयणो पुं० देखिये 'सोलणो'
<b>झोल</b> स्त्री • ढीला होनेसे कपड़ेका बीचमें
झूल्लना; झोल
कोलगी स्त्री० खानेदार थैली; झोली
झोलगो पुं० बड़ी झोली; झोला
कोलुं (झौं) न॰ झुंड; टोली
सोख न० झोंका [पेंग (३) झोल
झोलौ पुं० झूला (२) धक्का; झूलेकी

सोळ (भाँ) स्त्री०	ज्याला; शोला;
आगकी लपट	[ 'झोलणी' आदि
क्रोळची स्त्री०,(	नों) पुं० देखिये
<b>झोळी</b> स्त्री० झोली	(साधूकी) (२)
हाथमें पकड़नेकी	लटकती थैली;
थैली (३) बाब	ठ <b>कको सुलानेकी</b>
) झोली । <b>[लेवी</b> = 1	भिसारी बनना.]
मोळो पुं० झोल (२)	)बड़ी झोली; यैला

## ट

- ट पुं० 'ट'वर्गका-मूर्द्धस्थानीय पहला व्यंजन
- **इकटक** अ० लगातार 'टिक-टिक' की आवात्र ; टिक-टिक (घड़ी आदिकी) (२) टकटकी, टिकटिकी लगाकर (देखता) (३) स्त्री० देखिये 'टकटकारो'
- टकटकाट पुं० 'टिक-टिक' आवाज (२) उकता देनेवाली बेकार बात; सकबक
- टकवुं स॰कि॰ टिकना; निभना (२) एक स्थल पर ज्यादा समय तक ठहरना टकाख वि॰ टिकाऊ; चलाऊ; मधबुत
- दकाब पूं० टिकाऊपन; मजब्ती
- डकाबारी स्त्री० सौके हिसाबसे गिनती; सौमें से कितने इसका प्रमाण; प्रति-शतता; 'परसेग्टेज'
- डको पु० टका; तीन पैसे । [टकानुं मामस ≕कोडीका आदमी; तुच्छ मनुष्य.]
- टको पुं० रुपया; रुपया-पैंसा; टका (२) सेकड़ेके हिसाबसे गिनती ; व्यति-शतला; की सदी
- टको पु॰ मूँड़ा हुआ + मंजा सिर

- **डकोर** स्त्री •टोक, टोकनेकी किया (२) जरा इशारा या संकेत करना (३) वक्रोक्ति; मीठी टीका
- टकोरखानुं न० नौबत बजानेका फाटक-के ऊपरका कमरा या स्थान; नौबत-खाना; नवक़ारखाना
- डकोरवुं स०कि० टकोरना (२) टोकना टकोरी स्त्री० डनेकी छोटी चोट; टकोर टकोरो पु० डनेकी चोट; टकोरा (२) टकोरेकी संकार
- डक्कर स्त्री० ठोकर; झोंका (२) मुक़ाकला; टक्कर
- डगरट-(-म)गर ४० टकटकी, दिझ-टिकी रुगाये हुए; निनिमेथ
- **डगुमनु** वि० देख़िये 'डगुमगु' (२) **अ** डोलते हुए; लड़खड़ाकर
- टच वि० बढ़िया किस्मका (२) पुं० कसौटी पर जांचकर निकाला हुआ सोनेका अंग; टंफ (२) अ० थोड़ी देरमें; क्षष्ट। [--वईने =- तुरत.] टचकुं न० अग्र; नोक (२) छोटा स्यौहार टचको पुं० झटका; घाव [छिन्नुनी टचकी बांकटी स्त्री० कासी डेंगली;

ৰামান	

	-4	
23		1
-		

<b>क्या</b> क	٩a
टवाक वि० आईवरी; रोखीखोर; ओछा	
टवाक अ०, (-कियो, -को) पूं० उँग-	
लियां चटलामेकी आवाज; चटाक;	
चटाखा	
<b>टचूकडुं</b> वि० बहुत छोटा	
<b>दटळव्</b> ब अ० कि० बिलखना	
टटा (हा)र वि० ठीक सीधा ; सनकर ;	
तना हुआ (२) सशक्त [ला.]। [वर्ष	
= ⇔सीघा खड़ा होना (२) बीमारीके	
बाद शरीरमें शक्ति आना.]	
टट्टी स्त्री <sub></sub> टट्टी; टट्टर (२) खसकी	
टट्टी – चिक (३) पाखाना; संडास	
टट्टू पुं०; न०टट्टू (२) कमजोर घोड़ा	
टडकावर्ष्टुं स० फि० डॉटना; धमकाना	
टडपड स्त्री॰, (-डाट) पुं॰ मिच्या	
अड़प्पनका प्रदर्शन; खुदनुमाई; शेखी	
टनटन अ०(२) न० टनटन (घंटेकी)	
<b>टपकव्</b> अ०कि० टपकना; चूना	
<b>टपकावयुं</b> स०क्रि० टपकाना (२) संक्षेप-	
में लिखना; टॉकना (३) अग्यमें से	
नकल कर लेना	
टपनी स्त्री॰ गोल टीका; बिंदी (२)	
टिकली; मोना, अबरक या सोने-	
चौदीकी गोल टिकिया; टिक्की; चमकी	
हेंग्हु न० बूँद (२) नुक़ता; बिंदु ँ	
टप टप अ० टपाटप; झट-झट	
टपॅटपी स्त्री० चमड़ेकां टुकड़ों जो	
जस्तुरेकी घार तेज करनेके काम अपना वेर्स्टाफेका	
आता है; चमोटा	
टपली स्त्री० हलकी चपत ; थप्पड़ (२) तामा ; चुटीली बात [ला]	
्याना, पुटाला पास [लागु सन्दर्भ तक कुम्हारका हाँबी टीपनेका	

- ध्यस् त० कुम्हारका हॉडी टीपनेका 'सामन' 'यापी' (२) जमोटा !
- टक्लो पु॰ बोरसे लगाया हुआ थण्डड़; तनामा (२) मिट्टीके नम्मे बरतन

पीटनेका कुम्हारका औजार; यांपी; पिटना
टपवुं स० कि० टपना; लौघना (२)
दूसरेसे आगे निकल जाना; बढ़िया
होना; बढ़ना [ला.] 👘 🕠
टपाटप अ॰ झटपट; टपांटप (२)
स्त्री० कहा-सुनी; टंटा⊢फ़साद
<b>टपाटपो स्</b> त्री० कहा-सुनी; हुज्जत
टपाल स्त्री० डाक; पोस्ट
<b>टपालऑफिस</b> स्त्री० डाकघर
<b>टपालखर्च</b> न० डाकव्यय
टपाली पुं० डाकिया; पोस्टमैन
टपोटप अ० एक-एक करके (२) टपा-
टप; टपसे
टप्पो पुं० अमुक लंबाईका अंतर,
फ़ासला; टप्पा (२) मुसाफ़िरी; पड़ाव; मंज़िल (३) घोड़े या बैलकी सवारी
(४) संगीतका एक प्रकार; टप्पा
(५) गप। [-मारबो ≃गप हॉकना.]
(२) गगर[=गरपा=गर शगणा] टब.न॰ टब; कंडाल; गंगाल
टमकन् अ० कि० कीण प्रकाश देना;
टिमटिमाना (२) दूरसे सूक्ष्म प्रकाश
दिखाई देना
<b>टमेट्</b> न० <b>,(टो</b> )पुं० टमाटर
टपॅन्टाइन न० तारपीन
टल्लो पुं० टिल्ला;टल्ला;धक्का (२)
फेरा; चक्कर (३) मुँड़ा हुआ सिर
टबळवुं अ० कि० तड़पना; छटपटाना
(२) बार बार याद करना; झूरना
(२) दुःखी होना; तड़पना
टज्ञ(—स) स्त्री॰ टक; टकटकी;
टिकटिकी [कराह
टहकारी पुंध्युः स या पीड़ाकी आवाज ;

टहुकर्षु अ० कि० (कोयरू या मोरका) कूकना; कूजना; सिहकनां ~..

रहुको	२०९ टार्ट्
मुहुमो यहुमो पुं० कोयल या मोरकी मधुर श्वति (कूक, कुहू; केका) (२) बुलानेके लिए की दुई लंबी पुकार; हौक (३) बातचीतमें 'हुँ-हुँ' शब्द ढारा सुनते रहलेकी स्वीकृति देना; हुँकारी टहेल स्त्री० वह गाना जो याचक माँगते वकृत रोज ऊँचे स्वरमें गाता है; टेर (२) एक ही चीज बार-वार कहना या घ्यान पर लाना; टोक [ला.] टहेलियो वि० पुं० (२) पुं० ऊँचे स्वरमें गाते हुए टेर लगानेवाला; फेरीवाला साथू [करना (२) वि० लालची टळकर्बु अ०कि० टहलना; हमर-उघर घूमना (२) गाँवमें माँगनेके लिए टेर लगाना टहेलियो वि० पुं० (२) पुं० ऊँचे स्वरमें गाते हुए टेर लगानेवाला; फेरीवाला साथू [करना (२)वि० लालची टळकर्बु अ०कि० टलना; ललसा टळकर्बु अ०कि० टलना; ललसा टळकर्बु अ०कि० टलना; अलग होना; बिसकना; अपने स्थानसे हटना (२) दूर हटना; मर जाना टंक पुं० मुहर लगा हुआ सिक्वा; टका (२) स्त्री० निचित्ति वेला, वन्त; जून; उदा० 'खावानी के दोहवानी टंक' टंकगखार पुं० टंकणक्षार; सुहागा टंकशाळ स्त्री० टकसाल टंकाव्व सं करि० 'टांकवुं' कियाका प्रेरार्थक रूप; टंकाना टंगाबवु, टंगाववुं स० कि० टाँगना टंवाक्य, टंकावा दंवाकार वि० प्रगडालू; फसादी टंदो पुं० टंटा; क्रजिया; झगडा दंदोकिसाव पुं० टंटा-फ़साद; लड़ाई- ग्रगडा दंहेलि ता पुं० टंटा-फ़साद; लड़ाई- गाडा दंहेलि पुं० जहाखका मुख्य माँझी;	२०९          कणंधार(२) ऊँचा आदसी यां कोई         स्यादा ऊँची चीड; लंब-सड़ंग [ला.]         टंस्लर न० तामलेट; तामलोट         टाइम-टेबल न० समयसूची; टाइमटेबुल         टाउन-हॉल पु० टाउनहाल; नगरभवन         टाट पुं० परात जैसा बड़ा थाल जिसके         किनारे वाहर मुड़े हुए हों; थाल         (२) अ० बिलकुल; निपट; उदा०         लूसोटाट', 'नागुटाट'         टाट वि० चुस्त; कसा हुआ; सबत बैठा         हुआ (२) मस्त; चकचूर [टाट         टाट न० सनकी डोरियोका मोटा कपड़ा;         टादियुं म० टाटका टुकड़ा (कपड़ा)         टाह न० बौसकी फट्टियोंकी चटाई,         दीवार या छोटा दरवाजा; टट्टर;         टट्टी (२) टट्टरोंका बनाया हुआ         सोंपड़ा (३) टट्ट्         टाढ स्ती० ठंड'; जाड़ा; सरदी।         [-चडवी = जाड़ा लगना(२) वुखार         की कँपकेपी लगना (३) [ला.] (अंमुक         काम करना हो तब) उकता जाना;         सिहर उठना। - फेरा मारे छे=सरदी         नहीं लगती है।-वाबी=ठंड लगना.]         टाक स्त्री० ठंडन (२) सुख; शान्ति ।         निर्चा सठला हो तब) उकता जाना;         सिहर उठना । - फेरा मारे छे=सरदी         नहीं लगती है।-वाबी=ठंड लगना.]         टाकर स्त्री० ठंडन (२) सुख; शान्ति ।         टाहर बको पुं० सुडी वुखार; सरदीका         वुखार; जूड़ी         टाढरवको पुं० सुडी बुखार; सरदीका         तुखा या भादयद कृष्णा सप्तर्गाका
ग. हि−१४	

ढाचु	२१० टॉपबुं
प्रकृतिका । [हाढा पहोरनी = गय;	टौंका मारना; सिलाई करना (३)
लंबी-चौड़ी (हाँकना)। टाढा पहोरनुं=	
फ़ुरसतके समयका; गप जैसा । -पाणी	
रेंबवुं = हतोत्साह करना ; पस्तहिम्मत	
करना,] [(२)घात;मौक	
<b>दाणं न</b> •	
टापटीप स्त्री॰ व्यवस्था; सुघड़ता;	किया (४) फ़ायदा; असर; गुण
सफ़्राई (२) मरम्मत; दुरुस्ती (३)	
टीम-टाम ; सज-धज [ हाँ करना	[-लागवी = (दवाका) असर होना ]
<b>टापझी (सी)</b> स्त्री० बातचीतमें हाँ मे	
<b>टापु</b> पुं० टापू; बेट; द्वीप	लिए जमीनके अंदर बनायी हई टंकी ;
् <b>टासोटो</b> पुं० हथेलियोंके परस्पर आवा-	टौका 🦉
तसे उत्पन्न शब्द ; करतल-ध्वनि ; ताली	
<b>डाल स्त्री</b> दाल झड़ गये हो ऐसा	<b>टांग</b> (०) स्त्री० टांग; पैर ( <b>–मारवी</b>
सिरका भागः ; गंज	= कुश्तीमें टाँग अड़ाकर गिरा देना.]
टालको स्त्री० देखिये 'तालको '	टांगवुं (०) स० कि० टॉंगना
दालकुं न॰ देखिये 'तालकु'	टांगो (०) पु० टांग; पैर (२)टांगा;
CINE IN CIAL ACTAL	त्तरमाः घोड़ागाड़ी। [टांगा तोडवा
टाळवुं स० कि० टालना; दूर करना;	व्यर्थ पाँव तोड़ना]
रोकना (२) किसी चीजमेंसे अच्छा	
निकालकर खराब छोड़ देना; छाँटना	नोककी तिरछी काट (३) चोट;
टाळो, पु॰ टरकाना; टाल-टूल (२)	झटका (४)घट;टोटा; तंगी। <b>[ पडवी</b>
जुदाई रखना (३) भेद;चमरकार; मेन (४) गंदोग: फौका (॥)	= घट होना; टोटा होना.]
स्रेल (४) संजोग; मौका (६) हिसाबके सही-ग्रलत जाँचनेकी	टांचण (०)न०संक्षिप्त नोंध ; नोट ; टीप
िहतालक तहान्यलत जापनका किया; कौटाः[ <b>—मळवो</b> ≕मौक़ा मिलना	
(२) हिसाब खरा होना (काँटा).]	(२) उटंग (कपड़ा); तंग
टांक (०) स्त्री० तराशी हुई कलमको	टांटियो (०) पुं० टॉंग (तुच्छकारमें) ।
नोक; टाँक; जीभ (२) होल्डर या	[टांटिया कापवा = जड़ काटना;
पेनकी निब; जीभी	आधार उड़ा देना । टांटिया न <b>रम यई</b>
टांकणी (०) स्त्री० आलपीन; पीन	जया≕ थक जाना; पैर भर जाना
टांकणुं (०) न० टाँकनेका औजार;	(२) निरुत्साह होना (३) धन
टौको (२) मौका (३) शुभ अवसर	गँवाना; नुक़सान सहना.]
टांकवुं (०)स०कि० पत्थर टाँकना;	<b>टांपवुं (०</b> ) स० कि० ताकना; मौक़ा
<b>खनना</b> ; कुरेदना ; सिल कूटना (२)	<b>देख</b> ते रहना; आतुरतासे देखना

हार्चु	२११ हीपुं
टॉंपुं (०)न० मिलने जाना (२) फेरा; चक्कर	टियाब् अ०कि० टेंगना टिबो पुं० टीवा; टीला; हुह;
<b>टिकिट</b> स्त्री० टिकट; प्रवेशपत्र ।	टीकडी स्त्री० गोल, ठोस चीजका
[-स्रागवी = टिफट खरीदनेकी आव-	चपटा टुकड़ा; टिकिया; टैबलेट
स्यकता होना (२) लाटरीमें नंबर	the grant is had a set of the
लगना; इनाम मिलना (३) भाग्य-	
वशात् फ़ायदा होना.]	दीकास्रोर वि॰ टीका या निंदा करनेका
टिकिटमास्तर पुं० टिकटबाबू	आदी; हरफ़गीर; नुकतेचीन
दिवकड पुं० टिक्कड़	टीकी स्त्री० सोने या चाँदीकी टिकली;
टिक्को स्त्री० सफलता; कामयाबी (२)	चमकी (२) छोटा टी्का; टिकली;
अभाष; सिफ्रारिश (३) टिनली;	बिंदी (३) नजर; टक
दिक्की [ ठेंगा ; हूठा [ला.]	
दिषको पुंध टीका; बड़ा तिलक (२)	
दिचानुं अ०कि० टकराना; दो धस्तु-	
ऑका आपसमें भिड़ जाना (२) बेकार	
धनके खाना; मारा मारा फिल्का	
टकराना (३) पिट्रना	टीप स्त्री॰ सूची; फ़ेहरिस्त (२)
टिटियाण २०, (-रो) पु॰ क्लेश;	उगाहनीका परचा; चंदेकी यादी
टिटिहारोर; शोर-गुल; कजिया	चंदा (३) क़ैदकी सजा । [-करवी=
टिटोडी स्त्री० टिटिहरी	सूची बनाना (२) चरा लिखाना।
टिन न० क़र्लई; रांगा (२) टीसकी	- देवी, भरवी = इँटोंके जोड़ोंपर
चद्दरका बरतन; टीन	(मसालेसे) टीप भरना ।–मारवी =
टिनपाट न॰ तामलोट; डबला (२)	्टीप भरना (२) सजा देना]
उसके जैसा तुच्छ मनुष्य; हेच-पोच	टीपकी स्त्री० सोने या, चाँदीकी
[ला ]। [–आपवुं = इखसत करना;	टिकली; टिकिया;ुचमकी; डॉक
बरतरफ़ करना ]	टीपणूं न० टीपना; पंचाग्। [उकेलब्
टिपाई स्त्री० तिपाई	=गई गुज़री बातें उसेडकर झगडा
टिपावर्व् स०कि० 'टीपवुं' का प्रेरणार्थक	बढाता; गड़े मुदे उखाड़ना ]
<b>टिपार्वुं</b> अ० कि० 'टीपर्वु' का कर्मणि	दी <b>पर्वु</b> स॰ कि॰ टीपना; पीटना;
<b>टिप्पण</b> न०, ( <b>-णी</b> ) स्त्री० संक्षिप्त	ठोकना (जमीन, गच आदि) (२)
टीका; टिप्पणी (२) टांकना; टीप;	(लोहा आदिको) आकार देना;
नोट-दर्ज करना	पीटना (३) मारना; पीटना (४)
<b>टिंगळावुं</b> अ०कि० देखिये 'टिंगावुं'	संजा करना (५) एक ही बात पर
टिंगाड (-च) वुं स०कि० 'टिंगावुं' का	जीर दना [ला.]
प्रेरणार्यक	टीपुं न० बूँद; कर्तरा

r

टीमच न० नास्ता; कलेवा (२) पायेय **टीमर्ट्** न० गचका दुकड़ा (२) लकड़ी-কা কুঁবা टीसंडी स्त्री० 'ललाटमें लगानेकी टिकली; बिदिया; चमकी (२)छोटी ·बिदी-टीका (३) मोरपंसका अर्ध-चन्द्राकार चिह्न; चेंदा; चंद्र टीस्टुं न० तिलक; टीका टीकी(-सी) स्त्री॰ अँखुआ; कॉपल े(२) नुकीली कली; कुड्मल; टूसा (फूलका) (३) शेखी; ऍठ र्टीनळावुं अ० कि० टेंगना; लटकना टींगांड(--इ)षुं स० कि० देखिये 'टिगाडव्' टींगाल ब॰ कि॰ टेंगना टौँबो पुं० देखिये 'टिंबो' ं टि्कड़ासोर दुकडालाज, टुकडालोर वि० टुकडगदा; **दुकडी** स्त्री० टुकड़ी; छोटा दल दुकडो पुं० टुकड़ा (२) खानेका टुकड़ा [ला.]। .[टुकबा उधराववा⇒भीस मौगना; टुकड़ा मॉगना] -नाजवो, **फेंकवो** ⇒दयादानमें या तुच्छकारसे देना.] ट्क्को.पुं॰ ल्तीका; चुटकुला (२) ंजांदू-टोनेसे सम्बद्ध छोटा मंत्र या प्रयोग; जंतर-मंत्रर; टोटका (३) इंशारा; संकेत ट्वास पूं॰ जेंगोछा; तौलिया **टुंकार** पुं० तुकार **टुंकारवुं** स॰कि॰ तुकारना **ट्रंकारो** सुं० तुंकार ट्रक स्त्री० पहाड़की चोटी; शिखर (२) कविताकी अमुक पंक्तियोंका समूह; छंद; पद्यांश [ टुंरा दूरनुं दि॰ जिसके हार्य न हों; जूला;

ट्ंगे टूमण न० जादू-टोनेका छोटा मंत्र या प्रयोग; जंतर; टामन; टोटका -ट्वो पुं० गड्ढा, पिचक, गद्दा (बरतन-में) (२) गहरा छेद; नासूर (३) बिदु; बिदी; नुक़ता (४) **ब्रंद-ब्रं**द करके पानी देना (५) रुईका फाहा (६) बड़ी चुटकी (७)ताना;चुटीली बात (८) एक प्रकारका जंतु दुंक (०) स्त्री० देखिये 'टुक' नं० २ टूंक (०) वि० देखिये 'टुंकू' टूंकमां (०) अ० योड़ेमें; सौ बासकी [ लिपि ; 'शार्टहैंड' एक बात **ट्रंकाकरी (०किपि)** स्त्री० संक्षिप्त टूंकाण (०)न० संक्षेप(२)छोटा करना दूंकावर्षु (०) स०कि० (कुछ अंश) काटना; घटाना; छोटा करना **टूंकुं वि०** जो लंबा या विस्तुत न हो; कम; छोटा;संक्षिप्त (२)नाटा। [-करबुं = थोड़ेमें निबटाना; इति करना। --- भडवुं =- पूरी नापका न होना; कम पड़ना.] ट्रं**क्टंटव** वि० बहुत छोटा; कम संबा टूंटियुं (०) न० हाय-पैर समेटकर, बकुची बाँधकर सोना (२) एक प्रकारका शीतप्रधान संकामक ज्यर; 'इन्फ्ल्एंसा' दूंपबुं (०) स॰ कि॰ जड़मूलसे उखाड़ डालना; नोचना (२) दईको ढेंढ़ीमेंसे अलग करना (३) ताने कसकर शर्मिदा करना (४) मसलकर गूँधना

दूंपायुं (०) अ० कि० 'टूंपवुं' कियाका कर्मणिरूप (२) गला जकड़ जाना; घुटना [(२) गलेकी घंटी टूंपो (०) पुं० गला घोटना; फौसा

हेक २१३	दीय
हेक पु०;स्ती० टेक; प्रण; दृढ़ निष्टचय (२) आवरू (३) थूनी; टेकनी(४) कविताका स्थायी पद; टेक देकण न० टेकन; सहारा; आधार टेकरो स्त्री० टेकरी(२)छोटी पहाड़ी टेकरो पु० टेकरा; टीला; ढूह टेकववुं स० कि० टेका-सहारा देना; टेकाना टेकाना टेकाना देकनी (२)देखिये 'टिकववुं' टेकी स्त्री० टेकनी (२)देखिये 'टिककी'। [-लगरबी=अच्छा असर होना (२) सफल होना.] टेकी वि० टेकी; टेकवाला टेकीलुं वि० टेकती; टेकी; हठी टेकी पु० सहारा; आघार; टेका (२) आधारकी वस्तु;टेकनी (३) प्रस्तावका समर्थन; ताईद । [-आपबो=समर्थन करना (२) मदद फरना.] टेटी पु०; स्ती० गरमियोंमें होनेवाला एक फल; खरबुबा (२) लड़ी या वसीवाला पटाखा; पटाखा टेटरे पु० बरगदका फल;गेदा; बढ़बट्टा टेक्स न० टेवुल; मेज टेमो पु० घावकी सिलाई; टॉका टेरर्बु न० पतला अगला भाग; नोक; सिरा टेव स्त्री० टेव; आदत [होना टेवावुं अ०कि० आदत पडना; अम्पस्त टेस (टॅ) पु० स्वाद; लज्जत टेसवार (टॅ)वि०जायकेदार;स्वादिष्ट; मज्रेदार टेसी (टॅ) स्त्री० घमंड; डोखी टे (टॅ०) अ० (थककर) चूर होकर;	टेंट (टॅ०) स० टेंटें (२) स्त्री० सड़ाई (३) नापसन्दगी जतानेकी सकवाद; टाँय-टांय ढंड स्त्री० शेखी; एँठ; गर्व टंडपंड स्त्री० रेखिये 'टंडपट' टोक (०णी) स्त्री० टोकटाक; पूछताछ (२) उलाहना (३) नघर; कुदृष्टि टोच स्त्री० चोटी; शिखर टोच ह्त्री० चोटी; शिखर टोच ह्त्री चा गोल हिस्सा टोच्चुं स०कि० लगातार चुओना; कोचना; टोचना; क्रुचकुचाना (२) वार-बार कहे जाना; टोकना; उलहना देना टोची पुं० कोचा; उसका घाव (२) तग्ना; कोचा (मारना) [ला.] टोटी स्त्री० टोपी; किसी भी चीज पर लगायी जानेवाली शामी जैसी वस्तु टोटो पुं० बड़ी शामी (२) गलेकी घंटी; कौवा; टेंटुआ (३) एक वाति- शवाजी; बड़ा पटाखा (४) चुस्ट। [-पीसचो = गला घोटना; टेंटुआ घोटना.] टोडलो पुं० देखिये 'टोल्लो' टोडो पुं० पगमें पहननेका एक गहना; तोड़ा (२) बंदूकका लंबा फलीता;तोड़ा (३) हजार रुपये या इनके रखनेकी यैली; तोड़ा (४) (चौखटका) टोड़ा (५) मीनार (६) सिवान टोण, टोणुं न०, टोणो पुं० ताना; कोचा (२) जादू-टोना टोप पुं० टोप (२) बारिशमें पहननेकी बनातकी टोपी (३) बड़ा छाता (४)

## होपरापाक

**RtX** 

### ठयकारचु

टोपरापाक पुं० देखिये 'कोपरापाक' टोपर्स न० देखिये 'कोपरुं' टोपसी स्त्री० टोकरी टोपली पुं० टोकरा; झाबा टोपी स्त्री० टोपी टोपी स्त्री० टोपी टोपी पुं० बड़ी टोपी; टोपा टोपली स्त्री० लुटिया; लोटी टोलपुं०टोल; चुंगी (२) चुंगीघर; नाका टोलकुं, टोलुं न०, टोलो पु० गंजा-घुटा हुआ, सफाचट सिर टोस्लो पुं० चौखटकी आगेकी लकड़ीका आगे निकला हुआ सिरा; टोड़ा (२) टिल्ला; धक्का(३)वादा (४)

उछालना (५) गुल्लीका टोला, बिल्ला। [टोल्ले मूकवुं = उठाकर ऊँचे रख देना; भूला देना; बिसराना] टोवुं स०कि० (खेतसे) चिल्ला-चिल्ला-कर पंछियोंको उड़ाना; कुड़कुड़ाना (२) बूँद-बूँद पानी पिलाना टोळ (टॉ) पु०; स्त्री०; न० हँनी आवे ऐसी किया था बोल; ठिठोली; चुटकुला टोळको स्त्री० टोली टोळटप्पो (टॉ) पु० हँसी-मजाककी बात; हँसी-ठठोली टोळो स्त्री० टोली; मंडली टोळां न० झुंड; समूह

## 5

**ठ** पुं०ं′ट'वर्गका–मूर्ढस्थानीय दूसरा व्यंजन ठकठक अ० 'ठक-ठक' ध्वनिके साथ ठकराई स्त्री० ठकुराई (२)सेठगीरी; **ब**ड़ाई-(राइन; ठक्रुरानी ठकराणो स्त्री अठाकुरकी स्त्री; ठकु-ठकराणो पुं० गाँवका मालिक; छोटा राजा; जमींदार; ठाकुर ठग वि० (२) पुं० ठग ठगर्षुं वि० ठगनेवाला; छली; धूर्त **ठगव् स**०कि० ठमना; छलना **ठगळावुं** स॰ कि॰दचकना ; झटका लगना **ं(गाड़े जै**सी सवारीमें) ठगाई स्त्री० ठगाई; ठगी ठगार्च वि० ठगनेवाला; धोखेबाज ठचरी स्त्री० बुढ़िया; बूढ़ी ठचर वि० खूसट; बुढ़ाफुस; जराजीणं ठण्वर वि० अतिवृद्ध; खूसट

ठठ स्त्री॰,ठठ; जमान; भोड़ ठठाडवुं स॰ कि॰ धुसा देना; भीतर पहुँचा देना ठठारवुं स०कि० ठाट करना; खुब सँवारनाः; डाटना (पहननाः) ; ठटना ठठारो पुं० सज-धज; ठाट-बाट;ठट ठठ्ठालोर वि० ठट्ठाबाज; दिल्लगीबाज ठहाबाजो, ठहामक्सरो स्त्री० हँसी-मजाक; ठट्ठा-दिल्लगी ठठ्ठो पुं० ठट्ठा; हॅंसी-मजाक **ठणकारो** पुं० ठनक; ठनकार ठणको पुं० ठनक (२) ठमक (३) जाडेकी केंपकँपी । हर **ठणठ**ण अ० 'ठन-ठन ' आवाज करते ठणठणगोपाळ पुं० साधनहीन या वुदि-हीन आदमी; ठन-ठन गोपाल ठपकारवुं स० कि० पछाड़ना; पटकना (२) उलाहना देना (३) ठोंकना

	<u> </u>	
- 11		
-		

ठपको २	१५ ठाकोर
<b>ठपको</b> पृं० उलाहना (२) खाँसीकी	<b>ठरेल</b> वि० समझदार; संजीदा
आवाज; ढॉस। [-स्वाबो, मळवो,	<b>ठलववुं</b> स०कि० देखिये 'ठालववुं'
<b>सांभळवो =</b> दोष या उपालंभका पात्र	ठलवाबुं अ० कि० 'ठालववुं' कियाका
होना.] [भरी चाल; ठमक	कर्मणे रूप; खाली किया जाना
ठमक स्त्री० चलनेकी छटा(२)नजाकत-	<b>ठस</b> वि० ठस; ठोस; ठूसकर भरा
ठमकारो, ठमको पुरु ठमक; थिरक	हुआ (२) कसाहुआ ; सरूत; ठस
(२)मटक;नखरा [ठौर-ठिकाना	(३) अ० ठसाठस
<b>ठरठेकाणुं</b> न० जमकर रहनेका स्थान;	<b>ठसक</b> स्त्री०, ( <b>को</b> ) पुं० ठसका ; ठस्सा;
ठरब स्त्री० देखिये 'ठरडाट'	शान; रोब (२) लटका; <b>ठसक</b>
<b>ठरडवुं</b> स० कि० दो या ज्यादा धागोंको	<b>ठसबुं</b> अ०कि० मनमें बैठ जाना-समझमें
मिलाकर बट देना; दुबटना	आना; अमना
ठरबाट पुं॰ टेढ़ापन (२) ऐंठ [ला.]	<b>ठसाठस</b> अ० ठसाठस; ठूँस-ठूँसकर
ठरडावुं अ० कि० टेढ़ा-तिरछा होना;	<b>ठसाववूं</b> स० कि० 'ठसवुं' का प्रेरणार्थक
झुक जाना (२) ऐंठा जाना; बटा	ठम्रोठस अ० देखिये 'ठसाठस'
जाना (३) रूठना [ला.]	<b>ठस्सादार</b> वि० ठस्सादार; रोब-शानदार
ठरवुं अ०् कि० ठहरना; थमना;	ठस्साबंध अ० ठसकके साथ; ठस्सेमें;
स्थिर होना; ठिकाने लगना; रुकना	रोबर्मे [रोब(३)लेटका; ठस्सा
(२) (भाव, बात) तय होना; पक्का	ठस्सो पुं० तड़क-भड़क ; ठाट-बाट (२)
होना; ठहरना (३) नीचे बैठना;	ठळियो पुं० फलका सख्त बीज; गुठली
जमना; थिरना; निथरना (४) ठंडसे	ठंड स्त्री० ठंड; सर्दी (२) शीतलता
गाढा या ठोस होना; जमना (धी,	्(३) जुकाम; सर्दी
लड्डू आदि) (५) ठंडा होना; उदा०	ठंडक स्त्री० शीतलता (२) शास्ति;
भात ठरी गयो' (६) सर्दी लगना;	নূদ্বি; ঠবক [লা.]
ठिठुरना (७) (अग्नि या दीपकका)	<b>ठंडाश</b> स्त्री० ठंडापन (२) सुस्ती; मंदता
बुझना; जलती ची <b>ज</b> का ठंडा होना	ठंडी स्त्री० देखिये 'ठंड' र्तन दिः स्त्राप्तरं(२)री(>६)
(८) ठंडक, तृष्ति, शान्ति होना;	ठंडुं वि० ठंडा; सर्द (२)बासी (रसोई)
उदा॰ 'छाती, आंतरडी ठरवी ' (९)	(३) मंद; सुस्त (बाजार; स्वभाव) (४) ज्यानः ज्यानन् (ज्यान)
लगना ; उदा० 'जराक आंख ठरी हती'	(४) शान्त; स्वस्थमना (मनुष्य) ।
ठराव पुं० ठहराव; प्रस्ताव (२) किंगी नानना रज पा कोन	[पाणी रेडवुं= शांत करना (२)
किसी बातका हल या तोड़ अल्लाह मह कि प्रकार का जानक	हौसला पस्त करना.] [ओला
ठरावर्षु स॰ कि॰ पक्का था तय करना;	ठेडूंगार वि० खूब ठंडा;वर्फ़सा ठंडा; ठाकोर गंद गॉनकर प्राफिल, कोलर
ठहराना; निश्चय पर आना (२) प्रस्ताव करना	ठाकोर पुं० गाँवका मालिक; छोटा
ठरीठाम अ० असल ठिकाने पर (२)	राजा; ठाकुर (२) ठाकुरजी; ठाकुर (३)एक अच्च (४) प्राप्तान करिया
चनसे; जल्दी या दौड़-धूप फिये बगुर	(३)एक अल्ल (४)सामान्य क्षत्रियके जिस आजगण्ड ज्यू
न गण भरता या पाउन्पूरा मध्य अग्रेर	लिए आदरसूचक शब्द

<u> </u>	
R	Π,
	Ì.

हूस

- ठाकोरबी पु॰ देव या विष्णुकी प्रतिमा; ঠাক্যুব্বী **তাত** পুঁ**৩ তা**ट; গান **ठाठशी** स्त्री० ठटरी; अरथी ठाठियुं वि॰ ठूंठ; जीर्ण-शीर्ण (२) न० इस प्रकारका वाहन ठाठुं न० ठटरी; हड्रियोंका ढाँचा; पंजर (२) छाती और जंधाकी हर्डियां (ब॰ व॰ में) (३) कोई भी जर्जर चीज; ढांचा। [<mark>ठाठ</mark>ां भागवां, रंगावां = बहुत पीटना जिससे हड्डी टूट जाय; हड्डी तोड़ना ] ठाठो स्त्री॰ सेवा-टहल; खिदमत ठाम पुं०; न० (रहनेका) स्थान; ठिकाना; ठौंद (२) न० आसन; बैठनेकी जगह (३) बरतन।[--**ठेकाणा विनान्ं**≕वेठिकानेका; आवारा (२) बेपायादार (३) अव्यवस्थित.] ठामणुं न० बरतन ठामुकूं अ० निरा; बिलकूल ठार पुं०; न० ओस (२) ठंडी हवा (३) स्थान; ठौर (४) अ० पूरा; जानसे; उदा० 'ठार मारवुं-करवुं' ठारवुं स०कि० ठंढा करना; जमाना **ठालबब्**ं स० कि० खाली करना <mark>ठाख</mark>़ वि० खाली; जिसमें कुछ भरा न हो; रीता (२) जिसके पास कोई काम न हो; बेकार; ठाल्या (३) जो बंद न हो ; खुला (४) (भैस आदिका) सगर्भान होना;ठाँठ (५) अ० अका-रण; बेमतलब **ठाखुंठम, ठाखुंमालुं** वि० बिलकुल खाली ठावकाई स्त्री०, ठावकापणुं न० गंभी-रता; संजीदगी; विवेक
- ठावकुं वि० गंभीर; संजीदा; सयाना

- ठांस (०) स्त्री० बुनाईका गाढ़ापन (२) शेखी; ठसक; बढ़ाई; खाली रोब (३) ठसका; ढाँस
- ठांसवं (०) स० कि० दबा-दबाकर भरना; ठूसना (२) बहुत अधिक खाना; डटकर खाना; ूसना (३) मनमें बैठाना; जमाना (४) अ०कि० खाँसना; ढाँसना
- ठांसी (०) स्त्री० खाँसी
- ठांसो (०) पुं० सूली खॉसी; ढॉंस (२) घूँसा [बौना (व्यक्ति)
- **ठिंगुजी (–शी)** वि० (२) पु० ठिंगना; ठीक वि० ठीक; अच्छा; योग्य; जैसा
- चाहिये ऐसा;बराबर (२)न अच्छा, न बुरा; ठीक; सामान्य(३) अ० अच्छा; खैर
- **ঠীকতাক अ० ঠীক**ঠাক
- ठीकाठीक वि॰ (२) अ॰ जैसा-तैसा; साधारण; मामुली
- ठोकरी स्त्री० ठीकरी; गिट्टी
- **ठीकर्स** न० मिट्टीके बरतनका टूटा हुआ टुकड़ा; ठीकरा (२) भिट्टीका बरतन [ हिस्सा ; कटाह ला.] ठीब स्त्री० टूटी हुई हाँडीका नीचेका
- **ठीवं न**० मिट्टीका बरतन
- ठींकरी (०) स्त्री० देखिये 'ठीकरी'
- ठींकचं (०) न० देखिये 'ठीकहं'
- ठींगणुं वि० ठिंगना; बीना; नाटा
- ठ्ठवावुं अ०कि० सर्दीसे अकड् जाना;
- ठिठुरना; सिहरना [ कुंदा **ठूणकुं** न० लकड़ीका भारी,बड़ा दुकड़ा; ठूमको स्त्री० (पतंगकी डोरीको) दिया जानेवाला झटका; ठुमको
- **ठूमरी** स्त्री० ठुमरी [ निकालना ठूश (-- स) स्त्री॰ दम, जान, मोमियाई

	±.		•
	н.		: 1
1	s		-

ठो**कन्** 

ठूंठवाबुं अ० कि० देखिये 'ठूठवाबुं' ठूंठुं वि० ठूंठा; बिना हाथका; लूला (२)न० पेड़का सूसा तना; ठुंठ(३) बीड़ी पीनेके बादका बचा हुआ हिस्सा ठूंसलो, ठूंसो पुं० घूंसा ठेकडो स्त्री० मजाक़; ठठोली ठेकठेकाणे अ० जगह-जगह; जहां-तहां ठेकडो पुं० कुदान; चौकड़ी; कुलांच

- ठेकवुं स०फि० चौकड़ी भरकर कूदना; लोधना
- **ठेकाणूं** न० ठिकाना; रहनेकी जगह; मुक़ाम (२) स्थान; स्थल; ठिकाना (३) पता (४) रोजगारीकी जगह (ठिकाना लगना) (५)[ला.] प्रबंध; उदा० 'रसोईनुं कशुं ठिकाना ; ठेकाणुं नयी'। ठिंकाणे पडवुं = उचित स्थान पर पहुँच जाना; ठिकाने लगना । ठेकाचे पाडवुं=नौकरी पर लगा देना; ठिकाना लगाना (२) काममें लगाना (३) मार डालना; ठिकाने लगाना । **ठेकाणे रहेषुं = वि**वेक मर्यादामें रहना । ठेकाचे रासदुं = नियत स्थानमें रखना; गुम न होने देना (२) मर्यादामें रखना। **ठेकाणे लाववुं** ⇒समझाकर ठीक रास्ते पर लाना; ठिकाने लाना; असलियत पर वहुँचानाः]
- **ठेकाँजे** अ०ँबदले; --की ज़गह पर ठेकेबार पुं० ठेकेदार; ठीकेदार
- ठेको पु॰ तबला बजानेकी एक रीत; ठेका (२) इजारा; ठीका; ठेका
- ठेक अ० अंत तक; आखिर तक
- ठेठनुं वि० आखिर तकका (२) धूर्त; काइयाँ; भेदू
- ठेठवी अ॰ ठेठसे; शुरूसे

ठेवूं न॰ ठेस; ठोकर

- ठेर (ठॅ) अ० सही जगह पर; असल ठिकाने पर (२) देखिये 'ठार' अ०
- **ठेरठेर** (ठॅ,ठॅ)अ० जगह-जगह; अहॉ-सहॉ
- ठेरबवुं स॰ कि॰ तय करना; ठहराना (२) स्थिर करना; न हिले इस तरह रखना; टिकाना (३) रोकना ठेरबुं (ठॅ) अ॰ कि॰ होना; छिड़ना
  - (लड़ाई) (२) ठहरना; रुकना
- ठेराववुं स०कि० ठहराना; तय करना ठेलजगाडी स्त्री० ठेलकर चलाई जानेवाली गाड़ी; ठेला (२) बज्वों-को चलना सिखानेकी गाड़ी; पुड़ला; गड़ोलना (३) बच्चोंको विठाकर ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी; 'बाबागाड़ी'
- ठेलवुं स० कि० ठेलना; ढकेलना; बकेलना (२) आगे सरकाना
- ठेलो पुं० ठेला; धक्का (२) ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी; ठेला
- ठेश स्त्री० ठोकर; ठेस (२) हलकी लात लगाना; ठेस (३) छोटी सिटकिनी; बिल्ली (४)छोटा प<del>ज्य</del>ड़
- ठेशो स्त्री० पच्चड़ (२) छोटी सिट-किनी; बिल्ली
- ठेस, ठेसी स्त्री० देखिये ठेश', 'ठेशी' ठोक पुं०; स्त्री० ठोंक; प्रहार; पूँसा
- शक पुण, स्ताण्ठाक, त्रहार, नू (२) उलाहना (३) ताना
- ठोकर स्त्री० ठोकर; ठेस (२) [रुा.] भूल; ठोकर (३) खोट; घाटा
- ठोकवुं स॰ कि॰ ठोंकना (२) मारना (३) गप हॉकना (४) खूब खाना; ठूँसना (५) (तार) खटखटाना; (मुक़दमा) दायर करना; (सेमा) गाड़ना

ठोठ

ठोठ वि० ठोट; कम अक्लका; बुदू ठोबर्ष (--लुं) वि० भद्दी शकलवाला; कुरूप (२) न० घातु या मिट्टीका बरतन; ठीकरा



- ठोर (ठाँ) पुं० ठोर; माठ ठोंसवुं (ठाँ०) अ० कि० खौसना; ढांसना;ठांसना (२) स०कि० ठूंसना ठोंसो (ठाँ०) पुं० देखिये 'ठांसो'
- 👅 पुं० 'ट'वर्गका--मूर्द्धस्थानीय तीसरा व्यंजन [ डकैती रकादी स्त्री० डाका डालनेका काम; इक्को पुं० बंदरगाह पर माल चढ़ाने-उतारनेके लिए बनाया हुआ पक्का माट; डॉक (२) समुद्र या नदीके पानीसे बचनेके लिए बांधा हुआ बंध; पुश्ता डसल स्त्री० देखिये 'दखल' डल् न० साग मिलाकरः पकाई हुई दाल; सगपैतो; दलभजिया डस्रो पुं० देखिये 'डखू', (२) [जा.] षोटाला; गड़बड़ (३) दखल; बसेड़ा; अड़चन। [न्वालवो == वाधा **डालना; रोड़े अटकाना । – पडवो =** शगड़ा खड़ा होना; झंझट पैदा होना. **रसोळवं** स०कि० घँषोलना बग स्त्री० डिगना; हिलना; अस्थिरता इस न० डग; कदम (२) एक डगका अंतर; फाल [ डगमगाना **उगडगव्** अ०कि० इधर-उघर डोलना; **डगडगो** पुं० मनका डगमगाना (२) शंका; दग्नदग़ा (३)अविश्वास;वहम **डगमग** वि० डगमगाता हुआ; डगडौर
- डगमगबुं अ० कि० डगमगाना (२) निरुचयसे विचलित होना–डाँवाडोल होना [ला.]

#### ₹

डगमगाट पुं० डगमगाहट डगरी स्त्री० देखिये 'डोकरी' इगर्घ न० अति वृद्ध मनुष्य; खल्लड़ बगरो पुं० डोकरा; बुढ़ा आदमी हगली स्त्री० छोटा इग **डगली** स्त्रीं० छोटा कुरता डगलुं न० मोटा कुरता या औंगरला बगलुं न० देखिये 'बग'; कदम डगलो पुं० बड़ा जैंगरला; ओवरकोट डगवुं अ० फि० देखियें 'डगमगवुं' अगळी स्त्री० मोटा, छोटा ट्केड़ा; फौंक (२) टॉकी (फलकी) (३) समझशक्ति; दिमाग्र। 🟅--स्वतवी = पागल होना ; होश ठिकाने न होना.] बगळ न० मोटा, बड़ा टुकड़ा; फॉक **इगुमगु** वि० (२)अ० देखिये 'डगमग'; अस्पिर ड्यानुं अ०कि० धयड़ाहटसे सन्न या स्तब्ध हो जानाः; हक्का-बक्का होना (२) द्दांग छंगना (फलको) डच्चो पुं० तबलेका बायाँ; ठेका बच पुं० हालैंडका बतनी; डच (२) उसकी भाषा (३) वि० उस देशका **डचकारी** स्त्री०, (**–रो**) पुं० 'टिक-टिक' आवाज करके (चलनेको) प्रेरित करनाः टिटकारी

**बचकियूं, डचकुं** न० पानीमें डूबते या

तिया जवरन विगलते समय गलेनेंसे होनेवाळी आवाज; हिनकी (श्दनमें)डबगर पु॰तबले पर चमड़ा मढ़नेवाला; दबगर; खटीक (२) छाता आदि दबगर; खटीक (२) छाता आदि पर रोग़न बढ़ानेवालाडबकुं न॰ फॉक; टुकड़ा (पाजका)डबहर अ॰ झटझट; टपाटप दबरदे पु॰ तबि-मीतलका डिब्बा दबल्टो पु॰ तबि-मीतलका डिब्बा वारहका समाहार बटण वि॰ गड़ा ढुआ; जमीनंके भीतरका (२) न॰ गंदा पानी जमा होनेके लिए बनायी हुआ पत्रका कुऔ; चहवच्चा पर वनाया हुआ पाखाना; संडासडबल्टो विरति डबला हुए; टपाटप बत्तबने कुओ; चहवच्चा दबक्टं न॰ चमड़ेका कुटपा; डब (२) कच्ची हॉड़ो; लुटिया (३) धातुका ची हंन्ही; लुटिया (३) धातुका ची हंन्ही छोटा बरतन; डबला डबक्टं के छाट साहन, डबला बाहक अ० डबडवाते हुए; टपाटप डबहेन हेला छाट; डट्टा (२) (किवाडको बन्द होनेंसे रोकनेवाला लकड़ीका) डट्टा (३) बालमंदिरमें खेलका एक साधन (४) कैलेंडरकी तारीखोंके पत्तोंका बंडल; गट्टा इक्को छोटा (२) धब्बा देश, इंका (५) आकसिमक वातंक या भय ! [–पडवो=द्युवहा; दुबका बडा छोटा (२) धब्बा; ताय (३) पकौड़ी (४) [ला] दब्बा देखा देखी हां कि डुवाना; डुवाकर तार करता (२) अपवित्र करना डब्बी पु॰ देखिय 'डवा'इफ सत्री०; तन् डफ (२) अ० झट घब्ना एं कोटा, मोटा डंडा; सोंटा बब्बा पु॰ देखिय 'डवा'इफ सत्री०; तन डफ (२) अ० झट घर्डा स (३) अत्री स्त्री० देखिय 'डवा'इफ सत्री०; न० डफ (२) अठ झट घर्डा स (३) अत्रे हा सरेंगइफ स्त्री०; न० डफ (२) अठ झट घर्ण न० छोटा, मोटा डंडा; सोंटा चर्जा देडा; सोंटाइफ स्त्री०; न० डफ (२) अ० झट घर्डा; सोंटाइफ स्त्री०; न० डफ (२) अ० झट घर ना खड़ा; तांदी; लहिया; बहली छोटी गाडी; लहिय 'डवा'इफ स्त्री०; न० डफ (२) अन सट घर्ना न० छोटा, मोटा डंडा; सोंटाइफ स्त्री०; न० डिंह (२) अत्ता दहा खातके य		285	बरामणी
उफोळ वि० जड; मूर्ख         मरुआ           डफोळ-शंख पु० डपोरशंख; मूर्ख         डरपोक वि० डरपोक; बुज्रदिल           डसको, डबकुं देखिये 'डपकी' आदि         डरखुं अ० कि० डरना	ोते या जवरन निगलते समय गलेमेंसे होनेवाली आवाज; हिचकी (रदनमें डचकुं न॰ फाँक; टुकड़ा (प्याजका) डचूरो पुं० गले या छातीमें दम घुटना साँस रुकना; साँसत डसन वि॰ वारह; दरजन (२) न वारहका समाहार बरण वि॰ गडा हुआ; जमीनकें भीतरक (२) न॰ गंदा पानी जमा होनेके लिए बनाया हुआ पक्का कुआँ; चहबच्च उटणकूवो, डटणसाळ, डटणजाजव पुं० चहवच्चे पर बनाया हुआ पालाना; संडास डट्टो पुं० कागकी तरह इस्तेमाल हुई डाट; डट्टा (२) (किवाड़को बन्द होनेसे रोकनेवाला लकड़ीका) डट्ट (३) बालमंदिरमें खेलका एक साधन (४) कैलेंडरकी तारीखोंके पत्तोंका बंडल; गट्टा [सूरवन इछव् अ॰ कि॰ दुर्वल-अशक्त होना; डण् न॰ मोटा डंडा (२) डेला; ठेंगुर उपकी स्त्रो॰, (-क्ट) न॰ डुवकी; गोता इण् न॰ मोटा डंडा (२) डेला; ठेंगुर इपकी स्त्रो॰, (-क्ट) न॰ डुवकी; गोता इण्डा दाय (३) पकौड़ी (४) [ला. दगदगा; वहम; शंका (५)आकस्मिक आतंक या भय ! [-पडवो=श्वहा शुभा होना (२) भय खाना (३) घल्बा पड़ना.] डफ स्त्री॰; न० डफ (२) अ० झट डफोळ वि॰ जड; मूर्ख डफोळ वि॰ जड; मूर्ख डकतो, डबकुं देखिये 'डपकी' आदि	डबगर प् दबगर प दबगर प पर रो डबडव डबरो प् डबल् रोव डबा स्व डबा स्व डबा स्व डबा स्व डबा प् डबा प् डबा प् डबा प् उवा पि तर क टीतका पगड़ी डबोळवं तर क डबोल्यं उवा पि	ए •तबले पर चमड़ा मढ़नेवाला; ; खटीक (२) छाता आदि एम चढ़ानेवाला अ॰ झटझट; टपाटप ए॰ ताँबे-पीतलका डिब्बा टी स्त्री॰ डक्लरोटी; पावरोटी ए॰ चमड़ेका कुप्सा; डब (२) हाँड़ो; लुटिया (३) घातुका हेंहका छोटा बरतन; डबला अ॰ डक्डबाते द्रुए; टपाटप ति॰ डिबिया; डिब्बी त॰ डूबनेकी आवाज हे [-दईने, टेसी आवाजके साथ; तुरन्त-] न॰ डूबतेका डूबना-उत्तराना । ट्रंडब्वा; डब्बा (२) (रेल- ता) डिब्बा; डब्बा (२) (रेल- ता) डिब्बा; डब्बा (२) (रेल- ता) डिब्बा; डब्बा (२) (रेल- ता) डिब्वा; डब्बा (२) (रेल- ता वाड़ा; कांजी-हाउस (६) पीपा; कनस्तर; टीन (७) (कटाक्षमें) स॰ कि॰ डुवाना; डुबाकर रता (२) अपवित्र करना त्री॰ डिबिया; डिब्बी ० देखिये 'डवो' न॰, इमणी स्त्री॰ दो बैलोंकी पाड़ी; लढ़िया; बहली टमरी स्त्री॰ देखिये 'डमर' द॰ एक सुगंघोदार वनस्पति; वि॰ डरपोक; बुजदिल ० कि॰ डरना
डवको पुं० देखिये 'अपका' डरामणी स्त्री० धमकी; डर; सताना		-	ि २०१४ अन्यत्रादः <b>७९<sub>।</sub> त्रत्यान्धः</b>

		-	
6 ( P	ł	7	

धमकी; डर

बसकुं न० देखिये 'इसकुं'

बीचमें बोलनाः]

**डरामणुं** वि० डरावना (२) न०

डराववुं स० कि० डराना (२) धमकी

डली स्त्रो० घोड़ेकी पीठपर जीनके

डसर्षु स० फि० दांतसे काटना; डेंसना

इहापण (ड्) न० संयानापन; समझ ।

[-- करवुं, बहोळवुं = विना समझे-वुझे

बीचमें अपनी बात या अनुरू रुड्राना;

**बह्येळव्**रुं (ड्हाँ) स॰कि॰ ब्रवको हिलोरना; (पानी) घँघोलना (२)

(अखि लाल हो जाय यहाँ तक)

मसलना (३) बहुत कामोंमें माथा

मारना; सिर मारते फिरना [ला]

**इहोळाब्** (इहाँ) अ० कि० 'डहोळब्'

कियाका कर्मणिरूप (२) आंखका उठना

(३) हिलनेसे अव्यवस्थित होना;

हिलना; मामला उलझ जाना [ला.]

**रहोळूं** (ड्हॉ) वि॰ घँघोला हुआ;

बहोळो (ड्हॉ) पुं० घँघोला, हिलोरा

इंकी स्त्री० पानी खींचनेका गंत्र; पंप

डंको पुं० ढंका (२) घोड़ेकी पीठपरदोनों

ओर लटकाये हुए ढोल (३) टकोरा;

घंटा (४) फ़तहका उंका ; फ़तह [ला.] ।

[-वागवो = विजय-घोष होना; फ़तह-

का डंका वजना (२) ख्याति होना (३)

इंस पुं० डंक; दंश (२) दानेमें घुन

लगनेसे उसमें होनेवाला छेद (३)

हुआ तरल पदार्थ (२) अफ़ीमका

ग रला; आलोडित

डळी स्त्री॰ देखिये 'डली'

समाजमें नाम होना.]

रस; षोला

नोचे डाला जानेवाला नमदा; अर्कगीर

[ देना ; डौटना

राजे जहरीला काँटा; डंक (४)कीना; बैर। [--रासवो = कीना था बैर रखना.] डंसर्बु स०कि० डसना; डंक मारना; दौतसे काटना (२) जुतेकी रगड़से पाँवका छिल जाना; काटना(३) मनमें खटकना; सालना लि। इंसीलुं वि० इंकीला; डंकवाला इंगोर्च न०, इंगोरी पु० डंडा; लट्ट; सोंटा बंडाबाकी स्त्री० डंडेसे मारपीट; लाठी चलना **डंडी (--डू)को** पु॰ छोटा डंडा या लडू डंफावा ( – स )स्त्री० देखिये 'डफांस' **इंमर** पुं**० बवंडर; वगू**ला डाकन स्त्री॰ डाकिन; डाइन (२) भूत-विद्या जाननेवाली स्त्री; टुनहाई (३) जिसकी नजर लगे ऐसी स्त्री **डाकथी** स्त्री० डाकिनी; डाइन डाकबंगलो पुं० डाकबँगला बाकली स्त्री० छोटी बुग्गी (२) साँपका बोलना(३)जबड़ा हाकर्लुं न० डुगडुगी; हुग्गी डाकाटी स्त्री० डकेंती; डाका डाक्नुपुं० डकैत; डाकू डासली ( --लुं) देखिये 'डाकली', 'डाकलु' डागळी स्त्री० थिगली; थेगली; जकती (२)सिर; मग्ज; दिमाग़ (३)समझ-शक्ति; सूझ [ला.] । [--चसकवी, डट-कवी = पागल होना। --ठेकाणे होवी = होश ठिकाने होना 📔 [(३)कीना काच पुं० दाग़; धब्बा (२) [ला.] ऐव **बाबाबूची** स्त्री० धरुते ही घल्ले;दाग्र पड़नेसे होनेवाली अस्वच्छता डाधु पुं० मुर्देको जलानेके लिए कंधे पर रखकर श्मशान ले जानेवाले बाधो पुं० दारा; धब्बा

<b></b>	
समार्	पा

बाधोडूयो पुं० एकाथ दाग्र था धब्बा बाचाकुट स्त्री० बकवास; माबापच्की डार्च् न॰ जबड़ा; कल्ला(२)मुझड़ा बाट पुं० महाविनाश; तबाही बाटबुं स०कि० देखिये 'दाटबुं' (२) चिपाना बाटबुं स० कि० डॉटना; धमकाना बाटो स्त्री० डॉट; धमकी **उन्टो** पं० काग; डाट **बाफर** स्त्री**ः, डाफरियूं** न० केकार इधर-उधर देखना; व्यर्थ झॉकना **डाबडी** स्त्री० देखिये 'दाबडी' **बाबडो** पुं० देखिये 'दाबडो ' डाबचियं न० दाबनेके काम आनेवाला वजन; दाबनेका साधन (२) बौखटके ऊपर दाब रखनेवाली लकडी; भरेठ **बाबली** स्त्री० देखिये 'दाबडी ' डाबलो एं० देखिये 'दाबडो' (२) घोडेकी टापका नाल

- बाबाजमणी (-णुं) अ० दायीं और दायीं दोनों तरफ़; वायें-दायें (२) कमशः दोनों ओर (३) बायांका दायां और दायांका वायां हो इस तरह (४) पक्षपातसे [ला.]। [--करषुं= पक्षपात करना (२) सुनी अनसुनी करना.] [अलग [ला.] बाखुं वि० बायां (२) अप्रिय; दूर; बास (०डो) ुं० डाभ; दर्भ डाम (डा') पुं० किसी तप्त मुदासे दागनेका चिह्न; चरका (२) [ला.]
- धब्बा; लांछन (३) कुछ नहीं; हूठा. देना; उदा० 'ले डाम !'। [--सांपवो, देवो=दागना (२)कुछ न देना; हूठा देना; उदा०' एने शुं डाम दे ?'.]

패

बानवियो पु॰ गुदबी, रजाई आदि
रखनेकी लकडीकी धोड़ी
<b>ভামেল</b> ন০ দয়ু মাগ ন জায় ইমজিए
उसका एक अगला और एक पिछला
पैर बांधनेकी रस्सी; छांद; छान
डानर पुं०कोलतार; तारकोल; डामर
डामरेज न॰ रेलसे आया हुआ माल
स्टेशनके गोदाममें अघिक समय तक
पड़े रहनेका हरजाना; डिमुरेज
<b>बामनुं</b> (डा') स०कि० तपाये हुए लोहे
या अन्य घातुसे शरीर पर दाग
लगाना; दागना (२) ताना मारना
हामाहोळ वि॰ डॉंगाहोल; अस्पिर
डामीज(–स) वि० प्रसिद्ध गुनहगार
बामुं न० दागनेका चिह्न; चरका;
गुल; दाग (२) काला दाग
डायरी स्त्री • डायरी ; रोजनामचा
डायरो पुं० (राजपूतोंमें) विरादरी या
जेवनार (२) बूढ़े, अनुभवी लोगोंकी
बैठक; दायरा (३)आपसी आदमियों-
की मंडली
<b>धारव्</b> स०क्रिं० डराना; धमकी देना
(२) मना करना; रोकना
बाहम् वि० सयाना; समझदार
बाळ स्त्री॰; न॰ डाल; शाखा
बाळकी स्त्री॰, बाळक् न॰, बाळी
स्त्री० छोटी शाखा; डाली
डाळुंन०मुख्य तनेकी शाखा; डाल
बांबळी (०) स्त्री०, डांबळुं न० डाली-
मेंसे फूटी हुई छोटी बाली; टहनी;
र्डाही 👘
डांग(०) स्त्री० लाठी; डांग
डांगर स्त्री॰ धान; छालि
डागूं(०) वि० देलिये 'डांड'

_		 _
•	п	

्रहेन	đ

·····	••••••••••••••••••••••••••••••••••••••
बॉड(०) वि० छड़ा; बिना कारू-	डिंगो पुं० अँगूठा दिखाता; हूठा देकर
बच्चेका (२) इंडेसे काम लेनेवाला	इनकार करना
(३) बेशर्म; ल्रबार; ठग	<b>डोचकुं</b> न॰ ढेंप; ढेंपी (२) स <b>वसे</b>
<b>डांडाई</b> (०) स्त्री० बेहयाई; ल्बारी;	<b>ऊपरका पतला हिस्सा; उँगलीका</b>
धूर्तता [जानेवाला रास	अग्र भाग (३) उभर आया हुआ।
डांडियारास(०) पुं० छोटे डंडोंसे खेला	गाँठ जैसा टुकड़ा 🛛 🛛 🖣 ची
डांडियो (०) पुं०वेहया पुरुष(२) ढिंढोरा	डीट ( • डी ) स्त्री • स्तनका अग्र भाग;
पीटनेवाला (३) छोटा पतला डंडा	डीटियुं न० छोटी ढेंप (२) बैंगन
<b>डांडी</b> (०) स्त्री०छोटी पतली लकड़ी;	डीटुं न० फलके मुँहका वह हिस्ला
डौड़ी; डंडी; दस्ता (२)तराजूकी	जिसके बल वह टहनीसे लटकता रहता
डंडी; डॉड़ी(३) छोटे उंडोंसे बजा-	है ; ढेंप ; ढेंपी [टुकड़ा ; कुंदा ; लट्ठा
नेका एक वाद्य (४) जहाजके	डीमचुं न० लकडीका बड़ा और मोटा
<b>मार्गदर्शनके छिए ऊँची टेकरी पर</b>	डींट न० ढेंप । [-काडवुं = जड़ सोदना ।
गाड़ी हुई लकड़ी (५) रोशनीका	~जव्ं = जड़मूलसे नाश होना.]
मीनार (६) सीघी रेखा; डेंड़ीर	<b>बींट (०वी</b> ) देखिये 'श्रीट'
(नाककी सीघ)	डींटवुं स०कि० ढेंपीमेंसे तोड़ना (२)
बांबो(०) पु० छोटा ल्हु (२)दस्ता	(फलसे लगी हुई) दहनी तोड़ डालना
(३) फुनगो; अँखुआ [ डाँस	डीटियुं न० देखिये ' डीटियुं '
इसिस(०) पुं० एक प्रकारका मच्छर;	डोंट न० देखिये 'डोट्'; टुना अधेर
<b>डांसुं</b> (०) वि० कच्चा; अपरिपक्व	डींडवाणुं न० बदअमली; अव्यवस्था;
स्वादवाला (खिरनीके लिए)	<b>बुक्कर</b> न० सूक्षर (जानवर)
<b>डियोटी</b> पूं० शालाओंका सिरीक्षण	<b>ब्रगड्रग</b> अ० डुंगडुंगीको आवाज
करनेवाला सरकारी अधिकारी (२)	बुगबुगियुं न ० डुगडुगी
वि० नायब ; डिप्टी	<b>डुगडुगी</b> स्त्री० छोटी डुगगी; डुगडुगी
<b>हिल न०</b> डील, शरीर	<b>ड्वाड(-द)व्</b> स०कि० डुवाना; डुवोना
<b>डिसेंगर</b> पुं० दिसं <u>वूर</u>	<b>डूबाब्</b> अ०कि० 'डूबच्' कियाका भावे
<b>डिस्ट्रिक्ट</b> पुं० डिस्ट्रिक्ट; जिला (२)	ड्मकलास, न० भारी वजन उठानेवाला
सरकारी अधिकारीका अपने हलकेमें	यंत्र [बड़ा ढेर; ढूह
्दौरा	डुंगर पुं० छोटा पर्वत; डूंगर (२)
<b>डिंग</b> स्त्री॰; न॰ डींग; गप	<b>डुंगराळ</b> वि०जहाँ जगह-जगह पर डुंगर
<b>विंगलुं</b> न० चोटीका हिस्सा, टुकड़ा;	हों ऐसा; पहाड़ी
नया रस – दू <b>म</b> भरा अंकुर; गामा	<b>डुंगरी</b> वि० पहाड पर पैदा होनेवाली
(२)थूहरका टुकड़ा(३)सिर [ला.]।	(वस्तु);पहाडी(२)डूँगरसे संबद्ध;
[-उडाडी मूकवुं = झटकेसे काटकर	पहाड़ी (३) स्त्री० छोटा पहाड़;
अलग करना; गरदेन उड़ांना.]	टीला; डूंगरी

कुंगरो	२२३ डेंड्यू
<b>बुंगरो</b> पुं० डूंगर; छोटा पर्वत	= हारना; खोना (२) शर्तमें रसी हुई
<b>डुंगळी</b> स्त्री० प्याज	चीजना हारने पर प्रतिपक्षीके कब्जेमें
<b>बुंगो(–घो)</b> पुं० चोर	जाना (३) व्यर्थ जाना; उदा० 'काजी
<b>डूघो पुं</b> ० छोटी डॉडीकी एक बड़ी	डूल थई'.]
कटोरीदार कल्लछी; डब्बू; डोई	<b>डूलवूं</b> अ०कि० डूबना; गरक होना (२)
<b>बूचवुं</b> सं०क्ति० बड़े बड़े कौर लेना	तबाह होना ; दिवाला निकालना (३)
(२)ठूसकर साना	कुछ महत्त्वका न होना (४) डोलना
<b>डूचो</b> पुं० निकम्मे काग़ज या कपड़ेका	<b>डूवो पुं० गाड़ा</b> तरल पदार्थ (२) तलछट
गोला या पिंडा (२) उसकी डाट	डूबा स्त्री० मोमियाई, कचूमर निकॉलना
(३) बड़ा कौर; गस्सा (४) वह	डूसकुं न० सिसकी
कपड़ा जो बारबार गींजनेसे पिंड	बूंख (०) स्त्री०कोंपलके आने फूटने-
जैसा बने (५) असम्य आदमी;	वाला हिस्सा; टुनगा; कल्ला; गामा
उजहु । [ बूचा काढवा, काढी नाखवा	इंलरा(-ळा) वर्षु(०) स०कि० धम-
=बहुत श्रम कराकर थका डालना;	काना; डटिना
मोमियाई निकालना; कचूमर निका-	<b>बूंगळी</b> (०) स्त्री० देखिये 'डुंगळी'
लना । <b>–मारवो =</b> पिंडसे मुंह या छेद ∸ ── '	र्डूगो (-घो) पुं० देखिये 'डुंगो 'ँँ
बंद करना.]	<b>इँटी</b> (०) स्त्री० नामि; टूँडी
<b>ब्वकां</b> न०ब०व० देखिये 'डबूकियुं '	<b>डूंटो'</b> पुं० बड़ी नाभि (२) नाभि औसा
<b>डूबको</b> स्त्री० डुबनी; ग्रोता । [ <b>-सावी</b> ,	उभड़ा हुआ भाग
मारवी ⇒ग्रोता साना; पानीमें पैठना	डूंडूं न० अनाजकी बाल; बाली; भुट्टा
(२)नजर बचाकर छूहो जाना.]	डेंक न॰ जहाजकी पाटन; डेक
<b>ब्रक्तुं न</b> ० डुवकी; गोता	डेपो स्त्री० गोदाम; डिपो
<b>डूबवुं</b> अ०कि० डूबना(२)डूबकर मर जाना (३) तननाः भाग रोजा (४)	<b>बेफराब्</b> अ०कि० पेटका उभड़ना(२)
जाना (३) डूबना; अस्त होना (४) लिए ) दिनाना जिल्लाना (५) कि	किसी अंगका सूजना; फूलना (३)
[ला.] दिवाला निकालना (५) लीन होना; डूबना	फीका-कांतिहीन होना
<b>इ्मची</b> स्त्री० साजमें घोड़ेकी दुमके	<b>डेरासंबु</b> पुं० ब०व० डेरा या तंबू; डाला
नीचे रहनेवाली डोरी; दुमची	हुआं पड़ोव 🛛 [[ला.]
इमो पु॰ मनोवृत्तियोंके आवेशमें छातीमें	डेरो पु॰ तंबू;खेमा (२) पड़ाव; डेरा
होनेवाली बेचैनी या घुटन सौस	<b>बेरौ</b> (डॅ') पु० ठेंगुर; अड़गोड़ा; <b>डे</b> ला
सीनेमें अड़ना	डेली(डॅ') स्त्री० पौरी; डपोदी (२)
<b>डूल</b> वि० डूवा <b>हु</b> वा; ग़रक़;नष्ट;	चौकी (पुलिस)
तबाह(२)न० कानका एक गहना।	<b>डेलुं</b> (डॅं′) न० डघोढ़ी; पौरी (२)
[करवुं = वारना; निछावर करना;	उघोढीका बड़ा दरवाजा
स्रोनेके लिए तैयार रहना। <b>⊶षवुं</b>	बेंबचुं (डॅ०) न० छोटा जलसर्प; डोड़हा

	१२४ खेळा
बोई स्त्री० मटके आदिसे पानी निका-	हुआ एक बरतन (२) नारियलका
लनेका लंबी डौड़ीका एक बरतन;	हुक्क़ा (३) डोई या डोजा (४)
कडुवा	बड़ी कील
<b>डोक</b> स्त्री० गला; गरदन । [–भाषाी	<b>ढोल</b> स्त्री० बालटो; डोल (२)मस्तूल
<b>जवी, मरडाई जवी</b> ≕मरणासन्त होना; गरदन झुकना.]	डोलकाठी स्वी० मस्तूल (२) उस परके झंडेकी लकड़ी
डोकरी स्त्री॰ बूढ़ी स्त्री; डोकरी	<b>डोलची स्त्री</b> छोटा डोल (२) जमडेका
डोकरो पुं० बुढा आदमी; डोकरा	डोल (३)पुं० जहाजमेंसे डोलके सहारे
डोकाबारी स्त्री० बढ़े दरवाजेमें रखी	पानी उलीचनेवाला
हुई छोटी खिड़की	<b>डोलव्ं न</b> ० डोल(२) चमड़ेका डोल
डोकालव, डोकाव अ०कि० सिर आगे	डॉलर पु॰ एक अमेरिकन सिक्का; डालर
करके देखना; झौकना	<b>डोलर (–रियो</b> ) पुं० एक फूल-पौधा;
<b>डोकियुं</b> न० गरदन आगेको करके देखना	मोगरा
डोकी स्त्री० गला; गरदन	<b>डोलवुं</b> अ०कि० झूलना; डोल्मा(२)
डोक्टुंन० सिर (२) गरदन आगेको	विचलित होना; डगमगाना
करके देखना। [ <b>~धुचाववुं</b> = ना	डोलुं न० झपकी (२) मूल-चूक; घोला
कहनाः, सिर हिलाना ।मूकव् =	डोशो(-सी) स्त्री॰ बूढ़ी स्त्री; वृदा
जानकी परवाह न करना; जान	डोसो पुं० बूढ़ा आदमी; वृद्ध
हष्टेली पर रखना.] [चोटी	बोळ पुं॰ महुएके फलकी गुठली; गुल्ली
बोबर्कु न० सिर(२) ऊपरका हिस्सा;	डोळ पुं०व०व० लावामें बिना खिले
<b>दोझ</b> पुं० एक जून ऌेनेकी दवाकी मात्रा	हुए दाने; ठुरीं (२) दाल दलनेमें
या उतनी दवा; खुराक; डोज	रह जानेवाले अखंड दाने —————————————————————
डोझर्च न० पेट; ओझरी; गढा	<b>बोळ (डॉ)</b> पुं०; न० आकार; घाट;
डोसुं न० देखिये 'डोझरुं'	डौल (२) दिखादा;ढोंग;तकल्लुफ़
डोडचुं न० फल, फूल या बालका बिना	<b>डोळियुं</b> न० महुएका देल
खिला हुआ गोफा, गाभा (२) ढेंढी;	डोळो (डॉ) वि॰ दिखावटी; आढंबरी; ढोंगी विरे समाचार
डोंडी	La
<b>डोडो</b> पुं० फल-फूलका गाभवाला ताजा	डोळी स्त्री॰ डाँड़ी; 'स्ट्रेचर' (२)
्कूटता गोफा (२) मक्केका मुट्टा डोबी स्त्री० पौरी; डघोढी	डोळने पुं० आँखका डेला; कोया(२) आॉल (३) नखर; घ्यान [ला.]।
बाबा स्त्राण पारा; बधावा बोबुं वि॰ नासमझ; निरां पोंगा (२)	जाल (२) नघर, व्यान [ला.]। [डोळा काढवा=आँखें तरेरना; अखि
न॰ भैंस। <b>डिवां चारवां</b> = निरक्षर	[जाळा कार्या - जास तररना, जास दिखाना; डॉटना। -इबबो = मन
रहना]	तृप्त होना। अरी बचो = मरण
डोबो पुं० ज़ड; गावदी (पुरुष)	समीप होना (२) गुस्सा होना (३)
डोमो पुं० नारियळको खुरचकर बनाया	र्शन होना (२) ईब्प होना.]



. 218

## đ

- ड पुं॰ 'ट' वर्गका मूर्ढस्यानीय चौथा व्यंजन (२)निरा पोंगा ; जड (व्यक्ति)
- **डय पुं**० ढेर; पुंज
- डवलायंच वि० (२) अ० बहुत;डेरों
- हयली स्त्री॰ छोटा देर; देरी
- डक्लो पुं० ढेर;अटाला; राशि । [—वई बर्षुं≕अंजर-पंजर ढीले हो जाना; पस्तहिम्मत हो जाना.]
- **हभूषभू** वि० उगमग; डौवाडोल
- डण्यार वि॰ अति वृद्ध; खूसट
- डब्डो पुं० जड मनुष्य (२) पतंगमें बडी लगायी जानेवाली तीली;ठड्ढा डप(-फ) अ० गिरनेकी आवाज; घप
- डव स्त्री॰ ढव; ढंग; तौर; रीति
- डबवुं अ०कि० 'ठब ढब' आवाज करना (२) डूबना (३)मर जाना; डेर होना
- डबु पुं० दी पैसोंके बराबरका सिक्का; अधन्ना; टका
- डबूकबुं अ०कि० (ढोलका)बजना (२) पानीमें बुबकी लगाना
- डबूड(--र)बुं स०कि० अच्छी तरह उढ़ाकर सुलाना (२) थपकना (३) पीटना [ढम-ढम;घुकार
- डमक (०ढमक) अ० ढोलकी आवाज;
- डमकवुं अ०कि० (ढोलका) बजना
- **डमहोल** वि॰ ढोल जैसा फूला **हुआ**; बहुत मोटा दिखाई देनेवाला
- डसडवुं स०कि० उमीनसे रगड़ खाता हुआ सींचना; घसीटना (२)[स्त.] बेमनसे काम करना; घसीटना (३)

- घसीट लिखना; वसीटना (४) कोई काम जैसे-सैसे कर डालना
- डसरडो पुं॰ वसीटनेसे चमढ़ेका छिल जाना; रगढ़ (२) बेगार; इच्छाके विरुद्ध काम
- **इसबुं, इसळबुं** अ०कि० दहना
- डळच्चुं अ०कि० लेटना; एक आर झुकना; ढलना; ढरकना (२) तरल पदार्थका पात्रसे गिरना; ढल्ला (३) सचिमें ढाला जाना (४) अमुक वृत्तिकी ओर झुकना [ला.] [छिपना डंकाचुं अ०कि० ढकना; ढक जाना;
- इंग पु॰ बर्ताव; चाल-ढाल;ढंग (२) आसार; लक्षण(३) रीति; ढव; तरीका; ढंग
- डंगडाळ पुं० विश्वसनीय बरताव या रहन-सहन; ठिकाना (२) आकार; डंग; बनावट
- **ढंगघडो** पुं० भरोसा; विष्<mark>वसनीय</mark> आचरण; ठिकानेका काम
- दंध वि० बिलकुल पोला; सोसला
- दंदेरो पुं० दिंढोरा (२) सरकारी उद्-घोषण या अधिसूचना [झकझरेरना दंदोळम्ं स०कि० जोरसे हिलाना;
- **ढाढी** पुं० शहनाई बजानेवाला; ढाढ़ी (२) एक प्रकारका मंगन, शिख्लयंगा
- हाल स्त्री० ढाल (२)बचानका साघन; आह. [ला.]
- डाळ पुं० ढालुबां-डलवां जमीन; ढाल(२) ढव; तरीका; आचरण (३) गानेकी

	_	-
1.11		
-	÷.	

होंगसी

	रर६ हागसा
पदति; तर्ज (४) घरोपा; घरका-सा	<b>ढांकप (पि)छेदो</b> (०) पुं० दोष छिपाने
संबंध (५) कनकूत । [ – उतारवो 🛥	या ऐब पर परदा डालनेकी युवित;
आकार देना (२) ठीक ढालुआँ	ऐबपोशी [ढॅंकना(२)छिपाना
रखना (३) समान, समतल बनाना ।	डांकवुं (०) स०कि० ढकना; ढाँकना;
मां गार्बु = रागके अनुसार - ढंगके	<b>ढांदुं</b> (०) न० मरा हुआ ढोर
्साथ मानाः ] 👘 [हुई गुल्ली	डांडो (०) पुं० बड़ा बैल
<b>डाळकी</b> स्त्री० धातुको गलाकर ढाली	<b>डिंगलो</b> स्त्री०, <b>डिंगलुं</b> न०, <b>डिंगलो</b>
डाळको पुं० धातुकी बड़ी गुल्ली; डला	पुर देखिये 'ढींगली ' आदि
(२)[ला.] ढंग;रीत(३)कामकाजमें	<b>डीकणुं</b> वि० देखिये 'ढींकणुं'
सफ़ाई; कुशलता (४) समझ	हीको पु॰ देखिये 'ढींको'
<b>हाळवुं</b> स०क्रि•ः (ऑखोंको) नीचाः	<b>डीचवूं</b> स०कि० देसिये 'ढींचवुं'
करना; झुकाना (२) (चारपाई)	<b>ढीवनुं</b> स०कि० मार मारना; पीटना
विछाना (३) बूँदके रूपमें गिराना;	बीमचुं न॰ कुंदा (२) मिट्टीका मोटा
(वाँसू) ढालना (४) कनकूत करना	कुठला; डेहरी (३) [ला.] नाटा
(५) (सचिमें) ढालना	बच्चा (४) सिर
<b>हाळिपूं</b> वि० ढालदार; ढालू;ढालुझौं;	डीमड्ं(-मुं) न॰ गांठ जैसी सख्स
<b>इलवां</b> (२) न० घातुकी गुल्ली (३)	सूजन; ददोरा; चकत्ता जेन्द्र संस्थित (२) को कि
ढालुओं जमीन या खेत; ढाल (४)	<b>ढोगर</b> पुं० मच्छीमार (२) मौझी; भीवर
एक ही ढालवाला छप्पर; एकपलिया	<b>ढीम्</b> न० चकत्ता; ददोरा <b>तीम</b> स्वीक कर्णनी केन्द्र जिन्हेल्ल
(५) डेस्क	<b>ढील</b> स्त्री० व्यर्थकी देर; विलंब(२)
राळियो पुं० सेतकी सिंचाईके लिए	तनावका अभाव ; ढील ; ढीलापन (३) [ला.] लापरवाही
पानी ले जानेकी ढालुआं नाली;	बीलुं वि॰ ढीला; शिथिल; जो कसा
बरहा (२) सोने या चाँदीका ढाला	न हो (२) जो सख्त न हो; ढीला (३)
हुआ चौकोर डला; पासा	[ला.] पस्तहिम्मत (४) कमजोर
सको पुं० विथान्ति; सुस्ताना (२)	(५) काहिल; मंद;ढीला। [–मूक्युं
चाल-ढाल (३) तरीक़ा; पढति	=ढील देना; ढीला छोड़ना; थोड़ा
डॉकम (०) न० ढक्कन; ढकना (२)	लापरवाह होना.]
बचाव; आड़ (३) उकनेकी किया	<b>ढील्ंड्स</b> वि० बिलकुल ढीला
क्रमी (०) स्ती० छोटा ढकना;	<b>ढींकणुं</b> वि० ढिमका; अनुक; फ़लौ
डकनी; हाँड़ीका ढक्कन; चपनी(२)	वींकवो पुं० नदी या तालाबके सूखे
षुटनेकी हड्डी; चपनी	तलमें पानीके लिए खोदा हुआ गड्ढा
ांकणुं (०) न० ढकना; ढक्कन (२)	डींको पुं० घूँसा; मुक्का
(किसी जीजकी) ढकनेके काम आने-	बींगली स्त्री० गुड़िया (२) गुड़िया-सी
वाला कोई भी साधन; झॉप	बनी-उनी छोटे क़दकी स्त्री [ ला. ]
	-

डींगलुं	२२७	बोली
डॉगलं, न॰ पुतला; खिली डॉगलं, पुं० नर गुड़िया; गुदु डॉचल पुं० जांध और टांग जोड़; घुटना डॉचम सं०कि० हदसे ज्या ढकोसना (२) पीना (तुन् (३) शराब पीना [ला.] इकदुं वि० नजदीक; निकल इकदुं व० नजदीक; निकल इकदुं व० नजदीक; निकल इकदुं व० देखिये 'ढूकदुं इंकदुं व० देखिये 'ढूकदुं इंकदुं व० दिखिये 'ढूकदुं इंकदुं व० दिखिये 'ढूकदुं इंकदुं व० दिखिये 'ढूकदुं इंकदुं न० दोखिये 'ढूकदुं इंदर्सुं न० वाजरेकी वास किंकालनेके बाव बचा रहने इंद्रं न० देखिये 'ढूदसुं' इंसो पुं० गेहूँकी बडी मोटी मोटा भारी कंबल; धुस्सा डेक्वो पुं० सिंचाईके दि निकालनेका एक यंत्र; ढें देको पुं० उभड़ा हुआ भाग (२) शरीर पर उमड़ा इ वालाभाग; कूबड़।[-नमव करना; शरीर नजाकर काम डेकलो पुं० देखिये 'ढेखले ढेद्र पुं० इस नामकी अंत्यज आदमी	ता वेपली स्ती॰ हा; पुतला वेपलं न० रोड़ा के बीचका वेपुं (-फुं) नव देवर्ष न० सारें दा पीना; वंषावयां = रव छकारमें) करना; बरत छकारमें) करना; बरत छकारमें) करना; बरत छकारमें) करना; बरत दे पु० ढेर; ट देवो पु० दुए ना; पास गांठ; गंड (२ देखो पु० हुए ना; पास गांठ; गंड (२ देखो पु० दुर् देखो पु० हुए ता; देकरा दोषकुं न० स रोटी (२) दोर न० साय, करणे मने दोरदांक, दोरव करणे मनेशी; ढोर करणे ही भरना.] न करना.] दोलकी स्त्री० टिकोहरा [-बगाडवी तं जातिका पक्षका न र [गुजराती दोरकन्ठ न० ढोर	छोटा, चपटा ढेला ;ढेला (२) थक्का; चक्का ;ढेला (२) थक्का; चक्का 5 देखिये 'ढेपलुं' की एक चीज । <b>डिवरां</b> वाना करना (२) रखसत ारफ करना.] राधि (न; शरीरमें पड़ी हुई ) गोबरका लोंदा; चोंथ ति मोरनी खानेकी एक चीज गनेकी एक चीज गरी रे मुंहवाला मिट्टीका घड़ा । सिर; मुंड (३) वि० फा; अस्पिर। [-ऊडी ट्ना(२)पूरा हारजाना.] भेंस, पशु आदि चोपाये; । [जोवुं = जड; मूर्ख. ] राक (स)र न०ब०व० डंगर ठ ढोल; नगाड़ा ! [- खोटा ढोल; पसावज । = दोनों पक्षोंमें अपना ात रेखना; किसी एक हना.] ठ [सटिया; मचिया
	[गुजराती <b>ढोलकु</b> न० ढोर जोमिश्रित <b>ढोलकी (-णी)</b> पु० सबके ढोलियो पु० गैहंत; भद ढोली पु० ढोल मुहल्ला या ढोली पु० ढोल	

म्पंजन

टुकड़ा; तस्ती

करना.]

तकली स्त्री० तकली

**तकावी** स्त्री० तकावी

ज**गह;** तकियागाह

रोस

२२८

डोळ पुं० चमक; मुस्तम्मा; वातु पर चौवी-सोनेका पानी चढ़ाना डोळवुं स०कि० उड़ेलना; ढालना; पानी आदिको गिराना (२) लुढ़-काना (२) न० बेपेंदीका बरदन (४) कभी इस पक्षमें तो कभी उस पक्षमें मिल जानेवाला; बेपेंदीका कोटा;औडर।[(-ने काचे) डोळवुं,

त पुं० 'त' वर्गका --दंतस्यानीय पहला

सकसी स्त्री० काँच या धातुका चौकोर

तकतो पुं० बड़ी तस्ती; तस्ता (२)

तकरार स्त्री० तकरार; झगड़ा; टंटा

बाईना (३) मढ़ा हुबा चित्र या फोट

(२) बाघा; विरोष; उष्म। [--

**उठाववी =** विरोध या बाधा खड़ी

तकलावी वि० जो मजबूत और टिकाऊ

**सक्सीरवार** वि० अपराघी; कुसूरवार

तकाजो (-वो) पुं० तकाजा; तगादा

सकासवं स०कि० ललचाई हुई दुष्टिसे

संकियो पुं० पीठ पीछे रखा जानेवाला

तकेवारी स्त्री० जान्ता; कड़ी निगरानी

तकती, तकती देखिये 'तकती', 'तकती'

बड़ा तकिया (२) फ़क़ीरके रहनेकी

ताकना (२) चाहना; ताकना

निहो; नाजुक

तक स्त्री० उपयुक्त काख; मौक़ा

तल्मुं डोळी पाडनुं ः (-के सिर) जिम्मेदारी डालना.] डोळाथ स०कि० पंखा सलना; पॅवर ढालना डोळाथ न०, डोळाव, डोळो पुं० देसिये 'डाळ' डॉग (ढॉ०) पुं० ढोंग; दिखावा डोंगी (०स्टुं) (ढॉ०) वि० ढोंगी; पाखंडी

## ₹

तजती स्त्री० देखिये 'तकती ' तकतो पुं॰ देसिये 'तकतो' (२) मंच; रंगभूमि तस्ती, तस्तो देखिये 'तकती', 'तकतो' तगढर्षु स॰कि॰ खूब दौड़ाना; सदेढ़ना (२) थका डालना; बेकार चुमाना तगर वि० तगड़ा तगडो पुं० '३'-तीनकी संज्ञा तगतगर्षु अ०कि० चमकना; चिलकता; चमचमाना **तगव्** अ०कि० देखिये 'तगतगव्' तगाबो पुं० तगादा; तकावा तगार्व न॰ लोहेका तसला (२) पेट; गड्ढा [ ला. ] सगावी स्त्री० तज्ञावी तगेडवुं स०कि० देखिये 'तगढवुं' तज स्त्री०; न० दारचीनी; तज तजगरो पुं० जांच (२) हिसाबकी जांच **নঅধীল** स्त्री० जाँच; सोज (२) युक्ति; करामात (३) कोशिश (४) चौकसी; हिफ़ाजत (५) व्यवस्था; तजवीज; बंदोबस्त तजब्दं स०कि०त्यागना ; छोड़ना ; तजना

तणामुं

- तटस्य वि० जो किसी पक्षका न हो; निष्पक्ष (२) निरपेक्ष; पक्षपातरहित; तटस्य
- तब अ० तड़कनेकी आवाजा; तड़ (२) स्त्री० लकड़ी, घरती, दीवार आदिके फटनेसे पड़नेवाला लंबा छिद्र; दरार (३)न० तड़; पक्ष; दल [छांयडो ' तडकीछांयडी स्त्री० देखिये 'तडको-तडकोछांयडो, तडकोछांयो पुं० धूप और छोह (२) सुख-दुःख [ला.] तडकोड स्त्री० तड़ोंके बीच समझौता;
- दर्लोमें मेल तब्तड ज० 'तड़-तड़ 'की या तड़कने-फटनेकी आवाजा; तड़ातड़ (२) फ़ौरन; तड़ाक-फड़ाक
- सब्तब्र्यु अ०कि० 'तड़-तड़' शब्द होना; तड़तड़ाना (२) चिटकना; फटने पर आना (३) गुस्सेर्ने बोलना; तड़कना [ला.] [आतिशबाधी तब्दतबियो पुं० चिनगारी (२) एक
- तडना च्या पुरु विगयारा (२) २क **तड ने फड, तड ने मड**≖देखिये 'तडफड' **तडपबुं** अ०कि० देखिये 'तऌपबुं'
- तबफड अ॰ चटपट; तड़ाक-फड़ोक; तड़ातड़ (२) खुल्लमखुल्ला; मुँह पर तडफडवुं अ०कि॰ दुःखर्में हाथ-पौव मारना; तड़फड़ाना(२)हाफना(३) व्यर्थ प्रयत्न करना; छटपटाना [ला.]

तडफबाट पुं० तड़फना; छटपटाहट

- **तबफडियां** न०ब०व० दुःखमें हाथ-पैर पछाड़ना; बेताब होना (२) बेकार कोशिश करना; छटपटाना
- तदफवुं अ० कि० तड़फना; छटपटाना तदबूच न० तरबूज; मतीरा

तडमड अ० देखिये 'तडफड'

**सडवुं** अ०कि० किसीको मारने या उससे झगड़नेके लिए आगे बढ़ना; झपटना; लपकना

- तबंतवा स्ती॰ तड़ातड़ जवाब देना; कहा-सुनी (२) मारपीट; तड़ातड़ तबाक सं॰ टटनेका शब्द: तडाक(२)
- सबाक ज॰ टूटनेका शब्द; तड़ाक(२) तुरत; तड़ाक
- सडाको पुं० झूठी बात; गप (२) एकदम होनेवाली भोड़, वृद्धि या लाभ। [--पडवो ⇒एकाएक अच्छा लाभ होना.]
- तबातड अ० तड़ातड़;झटपट; लगातार तबातडी स्त्री० कहा-सुनी; मारपीट; तड़ातड़ (२) चढ़ा-चढ़ी; होड़ (३)
- उतावली; धमाचौकड़ी
- तबामार अ० खोरोंसे; तेजीसे
- **तडामार ( –रो ) स्त्री० दौड़-धूप** ; **अस्दी;** मारामार
- तडी स्त्री० बौछार; झड़ी (२)मारपीट
- **तडूकवुं** अ०कि० जोरसे कड़ककर बोलना; तड़कना; गरजना
- सङ्को पुं० जोरसे कड़ककर बोलनेकी आवाज; गरज; कड़क
- तबोतब अ० देखिये 'तडातड'
- **तणवालुं** न० सिनका
- तणको पुं० चिनगारी यो अंगारा
- तणछार्वु अ०कि० किसी अवयवका तनना (२) पैरको झटका देते हुए चलना; झनकना; लेंगड़ाना (३) तीव पीड़ा होना; टीज़ना
- तणावुं ब०कि० सिंचना; तनना (२) अपने गसके बाहर कामोंसे छदना या सर्च करना । [तणाई भरवुं च बूतेसे ज्यादा सर्च करना; देसादेसी सर्च करके बहुत नुक्रसान सहन करना. ]

सची.	२३० तमंत्रो
ताणी स्त्री०, तर्चु न्०, तनो पु० संबंध	
कारककी विभक्ति (का, को आदि)	<b>तफढंवी</b> स्त्री० किसीकी चीच या
ततडवुं अ०कि० देखिये 'तडतडबु'	साहित्यिक रचनाको हड़पना; <b>चुराना</b>
<b>ततडावव् स</b> ०कि० <sup>ं</sup> 'तहतडवुं' कियाक	ा <b>तफडाबव्</b> ं स०क्रि० किसीकी चीज
प्रेरक (२) धमकाना; डॉटना [ला.	उठाकर चुलते बनना ; हुढु गना ; चुराना
<b>सतक्यिः</b> पुं० चिनगारी; अग्निकण	<b>तफरके</b> अ० चुरा, बिखरा या <b>हड़</b> पा
ततूडी स्त्री॰ छोटी तुरही	हुआ हो इस तरह
<b>त्ततूड्ं</b> न० एक तरहकी रणभेरी; तुरही	
নকোন্ত থ০ নক্ষান্ত	तफायत पु० तफावत; फ़र्क
तना स्त्री० परवा; तमा (२) विस्तार;	तफो पु० जत्था; विभाग; समूह
फैलाव [वैसे; तथा	
तवा अ० और;व;तया (२) उस तरह;	दशा (३) कक्षा; पद; दरजा (४)
<b>तद्दन अ० विलकु</b> ल; पूरा (२) निरा	विभाग;तबका;खंड [(२) <b>दौड़</b>
तनमनाइ पूं० आवेश; जोश; अधीरपत	त्वदको स्त्री० योडेकी दौड़की आहुट
तपसीर स्त्रीक सूँधनी; हुलास	<b>तवडाववुं</b> स॰्कि॰ दौड़ाना (२)डौटना-
<b>तपसीरियं</b> वि० सुँचनीके रंगका	डपटना (३) उबालना
त्तवन्तुं स०कि० तपाना	तबलुं न॰ तबला
<b>तपनुं</b> अ०कि० तप्त-गरम होना; तपना	. तबियत स्त्री० मन; मिजाज; तबीबत
(२) तप करना (३) [ला.] देर तक	(२) शरीरका हाल; स्वास्थ्य
बाट देखते हुए खड़ा रहना; किसीकी	तबीब पुं० तबीब; हकीम
राह देखकर समय बर्बाद करना (४)	तनीवी वि॰ तवीव-संबंधी; तिब्बी (२)
श्रुस्सा करना	स्त्री० हकीमका पेशा, हकीमी
<b>तपसी</b> वि० (२)पुं० तपस्वी ; तपसी [प.]	
<b>तपसील</b> स्त्री० विवरण; ब्योरा; तफ़सील	
सपाड (-व) वुं स॰ कि॰ तपाना	गोल ठीकरा; तवा; ठीकरी
तरास (०णी) स्त्री० तहक़ीक़ात;	<b>तमण</b> स्त्री० जमीन खोदकर बनाया
तफ़तीश (२) जॉंच-पड़ताल; खोज	हुआं चूल्हा; भट्ठी
(३) निगराती; देखभाल	तमणुं वि० तिगुना
तपातवं स०कि० ख़ोजना (२) चौकसी	
करना; छानबीन या जाँच करना (३)	(२)पु॰ चरपराहट,तीखापन
सँमालना; निगरानी रखना	तमतमुं वि० बहुत चरपरा
तपास-समिति स्त्री० जाँच-समिति	तमन्ना स्त्री० तमन्ना; इच्छा; वातुरता
<b>सपासाववूं</b> अ०कि० 'तपासत्रुं' किथाका	
प्रेरणार्थंकरूप - रेन्ट्रे- २०-२	तमरं न० झींगुर; झिल्ली
<b>सपेली</b> स्त्री० पतीली	<b>समंचो</b> पुं० तमंचा; पिस्तौल

रामा

तमा स्त्री० तमा; परवा; सरज (२) कमी; त्रुटि तमाज्ञ स्त्री० तंबाकु; तमाकु तमाचो पुं० तमाचा; थप्पड़ **तमाम** वि०(२)अ०तमाम;कुल;सारा तमाक्षो पुं० तमाशा (२) फ़जीहत; भद [ ला. ] [छाना; चक्कर आना सम्मर स्त्री० औखोंके आगे अँबेरा **तर** वि॰ तर;ताजा(२)तृप्त;अघाया हुआ (३) मालदार (४) मदमत्त; क्शेमें चूर विरत;साढ़ी तर स्त्री० दही या दूधकी मलाईकी तरक पुं० तुर्क; मुसलमान तरकट न० प्रपंच; बहुयंत्र; साखिश **तरकटी** वि० साजिश करनेवाळा; प्रपंची **तरकडो** पुं० देखिये 'तरक' सरकारी स्त्री० सब्जी; तरकारी; साग-पात(२)खाने योग्य मांस **तरकीब** स्त्री० तरकीब; युक्ति तरबड स्त्री० देख-भाल; सँभाल(२) झंझट;पचड़ा **तरबाट** पुं० तहलका; डर; त्रास **सरमाळो** पुं० गाने-बजानेका पेशा करनेवाली जातिका आदमी तरछोबर्यु स०कि० जोरसे झटकना; झटका देना (२) तिरस्कारपुर्वक निकाल देना, तजना (३) दुतकारना; धिक्कारना **तरजुमो** पुं० अनुवाद; उल्था;तरजुमा सरड स्त्री० लकड़ी, घरती, दीवार आदिके फटनेसे होनेवाला लंबा चीरा; दरार; बाल (शीशा) **तरडव्ं** अ०कि० दरार पड्ना; फटना; चटकना; तिलकना (मिट्टी) (२)

as,

टेढ़ा-तिरछा होना (३) नाराज होकर किसीके विरुद्ध चलना तरहाट पुं० फटनेकी किया ; तड़क (२) अभिमान; अकड़; ऐंठ सरडावुं अ०कि० देखिये 'तरडवुं ' तरमुं न० तिनका; तूण तरत अ० तुरत; फ़ौरन्; तुरंत तरपं (-पि) ही स्त्री० मृतककी बरसीके दिन किया जानेवाला श्राद्ध;त्रिपिड तरफ स्त्री० तरफ; पक्ष; ओर; दिशा (२) तंतूवाधके मुख्य तारके नीचेके तारौंका समूह;तरब(३)अ० विसा-में; तरफ़ निति तरफडवुं, तरपटिवां देसिये 'तडफडवुं' तरफण स्त्री० बीज बोनेका तीन नकी-वाला एक औजार; बाँसा तरकी वि० (समासमें)तरफ़का; तरफ़ा तरफेन (फॅ) स्त्री० पक्ष; बाजू (२) तरफ़दारी; पक्षपात तरबतर वि० तरबतर; भीगा हुवा **तरबुच** न० देखिये 'तडबूच ' तरबोळ वि॰ सराबोर; तराबोर तरभाणी स्त्री० धार्मिक विधिमें काम वानेवाली तबिकी छोटी तस्तरी; छोटा त.रबहना तरभाषुं न० ताँबेकी बड़ी तक्तरी जो धार्मिक विधिमें उपयोगमें लाई आती है; तरबहना तरबेट (-टो) पुं० तिराहा; तिमुहानी तरवाडो पुं० खजूरको छेदनेवाला ; ताड़ी निकालनेवाला [ घोड़ी ; तिपाई तरवायो पुं० तीन पायोंकी लक्ज़ीकी तरवुं स॰कि॰ पार करना; लौंघना (२) (पानी पर)तैरना (३) बचना; तरना [ ला. ]

/ तरस	२३२ तवो
तरस स्त्री० प्यास (२) उत्कट इच्छा;	तलप्रबुं अ०कि० जोरसे कूदना (२)
षाह; लालसा [ ला. ]	तड्पना; तलफना
<b>सरध्युं</b> वि० प्यासा; तृषातुर	<b>तलपाथड</b> वि० आतुर; अघीर; देसद्र
तरस स्त्री० देखिये 'तरझ' (२) न०	तलपूर वि० तिलके जितना (२) तिल-
लकड़बग्धा (३) पुंज कोध	भर; थोड़ासा भी
तरसाड स्त्री० ताड़का पत्ता; तालपत्र	तलब स्त्री० तलब; उत्कट इच्छा
<b>तरसावयूं</b> स०किं० तरसाना; लल्चाना	<b>तलभार, तलमात्र</b> वि० तिलके जितना;
<b>तरस्युं</b> दि० देखिये 'तरषयुं'	तिलभर; थोड़ासा भी
<b>त्तरंग पुं० (पा</b> नीकी) तरंग; रुहर(२)	तलवारनी थार पर रहेवुं ≕पूर्ण सतर्कता
कल्पना; मनकी तरंग	या साववानीसे बरतना
<b>त्तरंगी</b> विव् तरंगी; मौजी (२) कल्प-	<b>तलसर्व</b> न० तेलहन काटनेके बाद खेतमें
नाएँ करनेवाला	रहा हुआ डंठल; तिलेती
तराई स्त्री० तराई	<b>तलसब्</b> अ०कि० अति आतुर होना;
तराड स्वी० दरार; चीरा	बेचैन रहना; तरसना
तराणा, वराणो पुं० तराना	<b>तलसाद पुं</b> ० आनुरता; छटपटी
तराप स्त्री॰ छलांग (२) झपट;झपट्टा	<b>तल्सांकळी</b> स्त्री०तिलपपड़ी; तिलश् <b>करी</b>
सरापो पुं० लट्ठों और बाँसके टट्टर या	तलाक स्त्री० विवाह-संबंधका वि <b>च्छेद</b> ;
पीपोंसे बनाई हुई नाव; बेडा	নন্দারু
तरियो पुं० चावलमें रहा हुआ धान;	सलादी पुं० पटवारी
तुषयुक्त चावल	तलाब न॰ तालाब
तरियो पुं०एक दिनके अंतरसे आनेवाला	तलावडी स्त्री॰, तलावडुं न॰ तलैया
ज्यर; अँतरा ज्यर (२) चौथे दिन	तली स्त्री० छोटे तिल; तिल्ली
आनेवाला ज्वर; चौथिया	तलो ९७ पगड़ीके सिरे परका तुर्रा; शमला
तरीके अ०के अनुसार; तरह;की हैसियतसे;के तौर पर	रान्छ। सल्लाक स्त्रो० देखिये 'तलाक'
तरीको पुं॰ रास्ता; उपाय (२) रीत;	तलंगर वि० पैसेवाला; मालदार
तरीका [तरह;तौर	तवाई स्त्री० कमबस्ती; आफत; तबाही
तरह स्त्री॰ प्रकार; तरह (२) भांति;	(२) ताकीद; चेतावनी; धमकी
तरहवार वि० तरह-तरहका; भांति-	तवारीस स्त्री॰ इतिहास; तवारीख
भौतिका (२) विचित्र	तबी स्त्री० लोहेका छोटा तवा
तस पूं० तिल; तिल्ली (२) तिलके	तवेषो पुं० रसोईमें ऊपरन्तीचे करनेकी
आकारका शरीर प्रका काला दागु;	लोहे, पीतल या काठकी चपटी
तिल	कलछी; पंलटा
तलप स्त्री० तलब; चाह (२) कुदान;	तवो पुं० रोटी सेंकनेका लोहेका गोल
छलौग । [-आववी = चाह होना. ]	पत्तर; तवा (२) चिलमके छेद पर

	•

ดสสสฐ	द्वर त्यूरा
रखनेकी गोल चपटी ठीकरी; तका।	तळाच न०, (०४) स्त्री०, (०४) म०
[ <b>तवा बेवुं =</b> विलकुल साफ़ (२)धनसे	देखिये ' तलाव ' आदि
साली हुआ; तथाह.]	तळांसबुं (०) स०फि० घीरे-घीरे पाँव
तसतसब्ं अ०कि०र्बिचना;तनना;कसना	दबाना (२) चप्पी करना
तसु पुं०;स्त्रो० एक इंच जितनी माप;	तळियाझाटक अ० सर्वथा नष्ट; तहस-
तसू। [-भॉय न सूसवी=दिमायमें	नहस; नेस्त-नाबूद
या ध्यानमें न आना; अकुलाना; कुछ	<b>तळिप्ं</b> न० दिलकुल नीचेका हिस्सा;
न सूझना; घबड़ाना.]	तह; तल (२) पैरका नीचेका भाग;
तस्वी स्त्री० मेहनत; तसदीह[प.]	तल्ग
तहकु(-कू)व वि० स्थगित; मुल्तवी	तळी स्त्री० सुसतला
तहकूवी स्त्री० रोक; मौक़ूफ़ी; तवक्कुफ़	तस्त्रे ज॰ सीचे; तले
<b>त्तहनाम्ं</b> न० संधिपत्र ; मुलहनामा	तळेउपर अ० ऊँचा-नीचा; तले था ऊपर
तहसीस स्त्री०; न० लगान; माल-	(२) अधीर; बेसज्ज [ला.]
गुचारी (२) जिलेका वह भाग जो	सळेटी स्त्री० तलहटी
तहसीलदारके अवीन रहता है;	तंगवि० कसाहुआ; तंग (२) तना
तहसील	हुआ; सींचा हुआ (३) तंगदस्त
<b>सहसीलदार</b> पुं० तहसीलदार	(पैसा) (४) कायर, दिक़ या परे-
तहीं अ॰ वहां; उधर	शान; तंग <b>अाना (५) पूं० जीन कस</b> -
तहेवात स्त्री० सेवा करनेके लिए उप-	नेकी पेटी;तंग <b>[ ऊँची सुयनी</b>
स्थिति; हाजिरवाशी; हुजूर (२) सेवा-	तंगडी स्त्री० टौग; टॅंगड़ी (२) उटेंग-
टहरु; ताबेदारी	तंगाझ स्त्री० कमी; तंगी
तहेवार पुं० त्योहार; त्यौहार; पर्व	तंगी स्त्री० कमी; न्यूनता; तंगी
<b>तहोनत</b> न॰ तोहमत; मिय्या आरोप ।	तंत पुं० तार; तंतु (२) किसी घटना
<b>[–भाषचुं =</b> लांछन लगना. ]	या बातकी परंपरा; सिरूसिला (३)
<b>तहोमतवार</b> वि० अगराषी; मुलजिम	चर्वा; वाद-विवाद (४) पीछा
<b>तहोमतनाम्ं</b> न० आरोपपत	(छोड़ना) (५) हठ; जिद
<b>तळ न॰</b> निचला भाग;तल(२)तला;	तंत्री पु० तंत्र चलानेवाला; अधिपति
पेंदा;तल (३) सतह;तल (४) मूल	(२) वर्तमानपत्रका संपादक (३)
(५) बुनियाद (६) जन्मस्यान	स्त्री० तंतुवाद्यका सार; तंत्री (४)
<b>सळपद</b> न० गौवकी जमीन (२) असल-	धनुषकी ढोरी;पनच (५)एक तंतुवाच
मूल जगह (३) समतल मूमि (४)	तंदुरस्त वि० तंदुरुस्त; नीरोग; स्वस्थ
पूरे लगानवाली-खालसा जमीन	संबुरस्ती स्त्री० तंदुरुस्ती; स्वास्थ्य; सेहत
<b>सळपदुं वि</b> ० स्थानिक (२) देशज;प्रामीण	तंबाकु(–कू) स्त्री० देखिये 'तमाकु'
तळव् स०कि० तलना [गद्दा	तंबु(बू) पुं० तंबू; खेमा
सळाई स्त्री० बहुत इई भरा विछौना,	र्सबूरो पुं० तंबूरा
-	

संबोळ	२३४ ताणमुं
तंबोळ पुं० (नागरबेरुका)पान;तांबूरु	तावा कलम स्त्री० (संक्षिप्त 'ता०क०')
(२) पानका बीड़ा मां बीड़ी (३)	लिख चुकनेके बाद और जोड़ा हुआ;
गहरा लाल रंग (४) गलेका एक रोग	
संबोळी पुं० तंबोली; तमोली	ताजियो पुं० ताजिया
सा पुं० एक कागज; ताथ	<b>ताजुब</b> वि० अचरज-भरा; दंग
ताक स्त्री० निशाना; स्रक्ष्य (२)	<b>ताजुनी स्त्री</b> ० ताज्जुब; अचरज
भात; ताक	<b>तामुं वि</b> ० नया; ताजा; हरा (२)
त्ताकहो पुं० ताक; लाग; मौक़ा	बकान दूर होकर स्फूर्तिमें आया हुआ
<b>- বাকলিযুঁ</b> বি০ ৰাঁষা <b>টু</b> ঝা নিয়ানা	
गिरानेवाला 🦷	<b>ताजूडी</b> स्त्री० देखिये 'त्राजूडी'
साकवुं स०कि० स्थिर दृष्टिसे देखना;	तावेतर वि० तुरतका; तरोताजा
ताकना (२) निशाना बौधना (३)	<b>ताट पुं०</b> थाल जिसका किनारा <b>बाह</b> र
चाहना; ताकना	मुड़ा हुआ हो; बड़ा तश्त
ताकात स्त्री० ताकत; मक़दूर	ताव न० सनका मोटा कपड़ा; टाट
साकीब स्त्री॰ जल्दी (२) फ़रमान;	<b>ताटी</b> स्त्री० बौसकी फट्टियोंका परदा;
बाजा; तुरत करनेकी जरूरत (३)	चिक [या परदा; टट्टर
वेतावनी; धमकी; ताकीद । [करवी	ताटुं न० बाँस या धासकी चटाई, पल्छा
व्ह जल्दी करना ।आपवो = चेतावनी	ताड पुं० ताड़ (पेड़)
ेदेना; चेताना]	<b>ताडगोळ</b> पुं० खजूर या ताड़के रस <sup>्</sup> -
ताचुं न० ताकः; आला; ताखा	नीरेसे बनाया हुका गुड़; ताड़गुड़
ताकेडू वि॰ देखिये 'ताकणियुं'	<b>ताडछुं(पत्र</b> )न० ताड़का पत्ता;ताड़पत्र
ताको पुं॰ (कपड़ेका) थान	<b>ताडपत्री</b> स्त्री०ताडुकी पत्तियोंका <b>छाजन</b>
नाकोडी वि० देखिये 'ताकणियुं'	(२) एक प्रकारका कपड़ा; तिरपाल
ताग युं० याह; अंत; निबटारा;तोड़।	ताडी स्त्री० ताड़ी (ताड़–खजूरका रस)
[-काढवो, लेवो = गहराई नापना (२)	<b>ताडूकवुं</b> अ० कि० गरजना; जोरसे
थाह लेना; अंदाजा लगाना.]	कड़ककर बोलना; तड़कना
तागडमिन्ना पुं०ब०व० ऐक्रोआराम	<b>साडूको</b> पुं० जोरसे कड़ककर बोलने <b>की</b>
सामड़ो पुं० तागा; धागा	आवाज; गरज
तागबुं अ०कि० थाह छेना; माप	
^निकालना (२) निबटना ; पूरा करना ;	तननेसे होनेवाली पीड़ा; चरचराहट
पार लगाना	सग्ग(ग,) स्त्री० नसोंका तनाव (२)
तासुं न॰ देखिये 'तासुं'	तंगी; कमी (३) आग्रह
साजगी स्त्री॰ ताजापन (२) स्फूर्ति;	<b>राण</b> न० पानीके बहावका जोर; खि <del>षाव</del>
ताजगी (३) तं <b>दुरुस्ती</b>	ताचवुं स∘कि॰ तानना; खींचना (२)
<b>ताजव्</b> न० देखिये 'त्राजव्'	घसीटना (३) लंबा हो इस प्रकार

_		
a n	1.1	
	***	

तारवची

	•••
सींचना; लंबाईके बल फैलाना (४)	ताबेदारी स्त्री० ताबेदारी ; हुन्मवरदारी
तरफ़दारी करना; उदा० 'कोईनुं	<b>ताबे</b> अ० ताबे; अघीन; मातहत
ताणवुं'।[ <b>ताणीने =</b> ऊँची आवाजसे;	<b>साबूत</b> पुं०; न० मुरदा ले जानेका
<b>खोरसे (२) आग्रहपूर्वक</b> । <b>ताणी लाववुं</b>	संदूक; जनाजा; ताबूत (२) बावला
≔ आग्रहपूर्वक सींच लाना (२) <b>ब</b> गैर	या मूढ़ जैसा व्यक्ति; बौड़म
हकके उठा लाना (३)जबरदस्ती झींच	साबदतीव अ० तावड़तोड़; तुरत ही
लाना. ]	तामडी स्त्री० देखिये 'तांबडी'
ता <b>णंताण(—णा), ताणाताण</b> (ण,)	तामडो पुं० देखिये 'तांबडो '
स्त्री॰ खोंच-तान; खोंचा-खोंची	सायको पुं० टोली; समूह; मंडली (२)
ताणी स्त्री० देखिये 'ताणो '	गाने-बजाने और नाचनेका काम करने-
ताणीतू (-तो) शी (०ने, -सी, -सीने)	वाली नर्तनी, रामजनी या वेश्याकी
अ० खूब खींच-खाँँचकर; मुसीबतसे	मंडली; तायफ़ा
<b>ताणु (–णुं)</b> वि० तिरानबे; ९३	तार वि॰ तार; उच्च; तींव्र (स्वर)
<b>ताणो</b> पुं० बुननेके लिए लंबाईके बल	तार पं∘तार; तंतु;तागा; रेशा; सूत
फैलाया हुआ सूत; ताना	(२) भातुको पीटकर या सींचकर
तात् वि० बहुत तपा हुआ; गरम(२)	बनाया हुआ गोल तार; तार (३)
ेकठोर स्वभावका;सरगर्भ(३)तुरत-	पगाया हुआ गाल तार, तार (२) [ला.] तार ढारा भेजी हुई खंबर;
का; ताजी	[आ] तार दारा नजा हुइ संबर, तार (४) तल्लीनता । [- <b>कोडवो</b> ,
<b>तान स्वी</b> ०;न० तान (संगीतमें) (२)	सार (७) संख्याता । [ <b>⊸छाव्या,</b> ठोकबो ⇔ एकदम तार खटखटाना ।
थुन ; लगन (३) तूफ़ान ; शरारत	-मळवो = तार द्वारा संदेशा भिलना
<b>तानपूरो</b> पुं० तानपूरा [(२)कोष	
सानो पुं० ताना; व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात	
ताप पुं० सूर्यकी गरमी; धूर (२)	<b>तारऑफिस</b> स्त्री० तारघर
गरमी; औच; ताप (३) बुखार;	तारकस पु० तार सीचनेवाला ; तारकश
ताप (४) सस्ती (५) घाफ; रुआब	तारकसब पूं० संग्ने-चौंदीके तार;
(६) संताप; दुःख	कलाबत्तू; जरी
तापड्ं न० सनका मोटा कपड़ा	तारण न० पार करना; तारना; उद्वार
तापणी स्त्री०, (-णुं) न० शरीर गर-	करना (२) मावार्थ; सार (३)
मानेके लिए घास-फूस आदिको जलाई	कर्ज होते समय माल या रोकड़के
हुई आग; अलाव [तप करना	रूपमें रखी जानेवाली धरोहर; अमा-
तापब् अ०कि० तापना (२) स०कि०	नत (४) तरल पदार्थमें चोज डुवाकर
<b>तापोटो</b> पुं०, तापोडियुं न० सस्त घूप;	निकाल लेनेके बाद पड़ा रहनेवाला
घाम (२) गरमीसे होनेवाला फोड़ा	तरल पदार्थ
ताबोटो पुं० देखिये 'टाबोटो'	तारवणो स्त्री० (हिसाबमें) जमा-उधार
<b>तानेवार</b> वि० तानेवार; आझांकित	का सातावार हिसाब तय करना

तारवम्	
•	

100	A.	ų,	π
		÷.	••

	111
सारवर्षु स॰ कि॰ दवी हुई वीजको	तालीन स्त्री॰ तालीम (२) व्यायांम-
सौंधकर ऊपर उठाना (२) ऊपर-	शिक्षा (३) अनुशासन
अपरसे रु लेना (३) किसी चोजको	तालीमबद्ध दि० तालीमयाफ्ता; शिक्षा-
कैलाकर पानीमेंसे निकालना; बोरना	युक्त [(२) घूर्त
(४) जमा और उघारके आंकड़े	तालीमबाज वि० कसरती; व्यायामी
बाक्रोंके हिसाबसे तय करना (५)	<b>तालुको पु</b> ० तालुका; तहसील
<b>नफा या टोटा निकालना;</b> स्याज-बट्टा	तालुं न॰ अँगियामें लगाया आनेवाला
निकालना	करुगबत्तूका टुकड़ा
<b>तारचूं स</b> ०कि० तारना ; डूबतेको बचाना	तालेबर, तालेबंत, तालेबान वि० ताले-
ताराम वि० तहसनहस; बरबाद; चौपट	बर; भाग्यशाली (२) मालदार
तारीच स्त्री० तारीख; तिथि; मिती।	ताथ पु॰ एक कागज; ताव
<b>[-नांबवी</b> =तारीख ढालना । <b>- वढवी</b>	ताव पुं० ताप; बुखार
🛥 मुक्रदमेकी तारीख निश्चित होना ;	<b>ताव</b> पुं० अहंकारको झोंक; ( <b>मूछों पर)</b>
तारीख पड़ना } [ नोंघ	ताव । [-रेवो = रोव या गर्वमें मूळों
तारीच स्त्री० जमा-उघारकी संक्षिप्त	पर हाथ फेरना; अकड़ना]
तारो पुं० तारा; सितारा (२) आंखकी	ताबडी स्त्री० छिछली कड़ाही; ताई
पुतली; तारा	ताबडो पुं० कड़ाह; कड़ाहा
क्षरो पुं० होशियार तैराक; तैराक	तावण (-भी) स्त्री० तपानेकी या कड़-
ताक पूं∘ ताल (संगीतका) (२)मजा;	कड़ाकर बुंढ करनेकी किया (२)
रंग (३) लाग; मौक़ा (४) झांझ;	कसौटी [ला.]
<b>कांस्यताल । [–धाववो ≕</b> भजा या रंग	तावलुं दि० जिसे बुखार चढ़ा हो
अग्ना (२) मौक़ा आना । <b>करवो =</b>	सामनुं स०कि० शुद्ध करनेके लिए खुद
गत बनाना;भद करना(२)आनंदका	तपाना; ताना (२) गळाना; पिषलाना
आयोजन करनाः]	(३)कसना; ताना [ला.]
ताल स्त्री॰ सिरका गंजापन; गंज।	तावीज न० तावीज; जंत्र
<b>[पडवी =</b> सिर गंजा होना (२) खूब	तावेचो पुं० देखिये 'तवेघो'
दुःख, कष्ट झेलनाः] [ पंदिया	<b>तासक स्</b> त्री० तक्तरी; रकाबी
तालको स्त्री० सिरका मघ्य भाग;	तासीर स्त्री० गुण; असर; तासीर (२)
<b>तालक्तुं</b> न० सिरका वीचका और सबसे	रूप; आकार
अपरेका भाग; खोपड़ी; चंदिया	तासीरो पुं० मौका; मजा; रंग; तमाशा
तालमेल स्त्री० ताल-मेल; टीप-टाप (२)	तासुं न० ताशा; तासा [मजीरा
बाहरी तड़क-मड़क [तालमेल	ताळ पुं०; स्त्री० झॉझ; करताल;
तालमेळ पु॰ तालों स्वरोंका मेल;	ताळवुं न० तालु (२) खोपड़ी; चेंदिया
तालावेली स्त्री० घटपटी; जल्दवाजी	ताळाकूंची स्त्री० साला और कुंजी
-	n

ताळार्स पी

- ताळावंची स्त्री॰ वह स्थिति जिसमें कारखानेका माछिक ताला लगाकर मबदरोंको काम करनेसे रोके: तालाबंदी
- ताळी स्त्री० हथेलियोंका परस्पर आवात; ताली (२) ताल (संगीतमें)। करनेके लिए अन्यकी हुयेली पर हुयेली मारना (२) कौल देना (३) संगीतमें ताल देना । **--पबवी**=(अभिनंदन या हर्ष जतानेके लिए) तालियां बजाना (२) भद होना; ताली बज जाना] तास्तुं न॰ ताला; कुफ्छ । 🗕 वैवार्य 🖛 ताला लगना; बंद होना (२) निःसंतान मर जाना; घरका बेचिराग्र होना (३) बुरा हाल होना; उजड़ना; नसीय टेवा होना.]
- काको पुं० मिलता-जुलता या अपनी अगह पर ठीक बैठता होनेका भाव (२) हिसाबके सही ग्रलत होनेकी जॉच:कॉटा
- तांत (०) स्त्री० चिकने पदार्यका तंतु: चिकना तंतु (२) आंतोंकी बटकर बनाई हई डोरी; तौत
- तांतनो (०) पुं० तंतु; तार; डोरा सांसळबो (०) पुं० चौलाई
- सीरका (•) ५ं० ब०व० केंगनी, सौबा, कोदो आदिको कुटकर मिकाले हुए दाने तांबडी (०) स्त्री ० छोटा बटला; बटलोई तांबडो पुं० पानी भरनेका बड़ा बरतन; दरला
- सांबाकुंडी स्त्री० स्तानका पानी रखनेके िल्ए काममें आनेवाला मोल, रहरा बरतन जिसके दोनों ओर कुंडे रहते हैं; कोपर; ता ब्रकूट

समि (०) न० तामा

तांसळी ( ॰ ) स्त्री ॰ छोटा तसला ; तसली
तांसळ् (०) न० तसला
तिरकड पुंच मोटी रोटी; टिक्कड़
तिबोरी स्त्री॰ तिजोरी [नादान
तिसासियुं, तितासी वि०वेशदब ; उद्वत ;
तिसम न॰ तिलक; टीका
तिसमारलां वि० तीले स्वभावका;यरम-
मिवाज (२) सेसीसोर (३) पं•
शेलीलोर आदमी [येती
तीकम पुं० जमीन सोदनेका औचार;
तीबाट पुं० चरपराहट; तीबापन
(स्वादका) (२) स्वभावकी उग्रता [सा.]
तीकाश स्त्री० तीखापन
तीचां न०व०व० लाल मित्री; मिरवा
(२) काली मिर्च
तीखुं वि॰ तीखा; चरपरा (२)
पानीवार; तेज (३) उग्न; मिथाणी
(४) न॰ फ़ौलाद। [-मरिबुं, मरी
= उग्न प्रकृतिका; गरममिजाज.]
तीचुंतमतम्ं वि० तीखा मिर्च; तीता
सीज, तीज देखिये 'त्रीज', 'त्रीजु'
तीड न॰ टिड्री
तीणुं वि॰ पैना; तीदण (२) तेज नोक-
वाला; तीवण (३) कुछ ऊँचा मबर
तीत्र (स्वर)
तीतीघोडो ५० एक परदार कोड़ा; टिड्डा
तीरसं वि॰ तिरछा; कतराता हुआ; टेका
तीरी स्त्री० तिक्की; तिग्गी
तीस वि० तीस; ३०
<b>तुक्तमरिया</b> न०व०व० एक औषवि
तुक्को पुं० लतीफ़ा; चुटकुला (२)
मनकी तरंग; मौज (३) बिना फुसका
बाण; तुक्का । <b>[−डठवो</b> ≕मन्तमें सका-
यक कोई वुन सबार होना; सहर आ
जाना.(

<b>तुच्छ</b> कार
------------------

**तुच्छकार पूं० अ**नादर; तिरस्कार **तुच्छकारव्** स**ंकि०** दुतकारना **तुजाई** स्त्री० रफ़ू करनेका काम**ं**या उसकी उफात (२) तुनाई; तुमाई (रुईकी) [र्थक रूप; तुमाना **तुणावयुं** स०कि०'तूणवु'कियाका प्रेरणा-तुमियाट पुं० देखिये 'तुनियाट ' **तुनाई** स्त्री० देखिये 'तुणाई ' **सुनोववुं** स०कि० देखिये ' तुणाववुं **तुनार्थ्** अ०कि० ' तूण र्यु 'का कर्मणि रूप **तुनियाट** पुं० रफ़्गर (२) तूमनेवाला (रुईको) (३) विसाती (४) तुच्छ [ घमंड मनुष्य;हेच-पोच [ला.] तुमाली वि० मिजाजी; घमंडो(२)स्त्री० **तुमार** पुं० दो पक्षोंके वीचमें लंबा पत्र-ब्यवहार; काग्रजी का वाई; मिसिल; तूमार तुमारी वि० लंबे पत्रव्यवहारसे संबद **तुरत** अ० तुरत; झट; तुरंत **तुरंग** न० क्रैदखाना; जेल **तुराई** स्त्री० तुरही; शहनाई **तुराई** स्त्री० बुना हुआ कपड़ा लपेटनेका ेंजुलाहेका एक औजार; तूर **तुरि(-री)** स्त्रो० जुलाहोंकी कूंच या **गानेका** सूत तानेमें भरनेका औं बार; तुरी; भरनी [थौंक्ला **तुलसीक्यारो** पुं० तुलसीका थाला या . **तुलसीपत्र न**० तुलसीपत्र (२)निर्णायक मत; 'कास्टींग वोट' **तुब(--वे)र** स्त्री० तूर; अरहर; तुवर (२) उसका पौधा **तुळसी** स्त्री॰ तुलसी (मौधा) **तुळसीक्यारो, तुळसोपत्र** देखिये 'तूलसी-क्यारो', 'सुरुसीपत्र ' त्रुंस∘ तू

तूटवं **तुंकार** पुं० देखिये 'तुंकारो ' **तुंकारवुं** स०कि० तुकारना **तुंकारो** पुं० तुकार (अधिष्ट संबोधन) तुंगुं वि० मोटा; स्थूल; पुष्ट (२) २० हलककुर् (३) फूला हुआ पेट (४) चिद्रसे फूला हुआ मुंह [ला] **सुंब** वि० तुंद; मिजाजी; उद्धत **तुंडमिजाज** पुं० गरम मिजाज **सुंडमिकाजी** वि० गरम मित्राजवाला; घमंडी **तुंतौ** न० व०द० 'तू-तू' करना ; तुकारना तुंद, (०मिजाज), (०मिजाजी) देखिये 'तुंड' आदि तुंबडी स्त्री० एक बेल; तुंबी (२) तुमड़ी ; र्तूंबा । [**⊶सालवी** ≕भिक्षुक बनना.] सुं**वडूं** न० रौंबा (फरू); तुमड़ा; सुंबा (२) इस फलको सोसला बनाकर बनाया हुआ पात्र; तूँबा; तुमड़ी (३) सिर; मुंड (तिरस्कारमें) [जा ] तूक स्त्री० कविताको अमुक पंक्तियोंका समूह; तुक; पद्यांश तूट स्त्री॰ टूटना; अवरोध (२) संबंध न रहना; अनबन; विरोध (३) तंगी; कमी तूटक वि० अलग हो गया हुआ; बिछुड़ा हुआ (२) खंडित; अपूर्ण (३) अ० अलग-अलग; पुथक् तूटफाट स्त्री० फूट;अनबन(२)दरार **तूटवं** अ०किं० टूटना; संडित होना (२) संबंध छूटना; भंग होना(मैत्री, सगाई आदि) (३) दिवाला निक-लना (४) भगदङ्ग मचना; पलायन होना। [तूटी पेडवुं = (किसी काम में) जोरोंसे और निश्चयपूर्वक लग

जाना; जुट जाना.]

तूटचुंफूटचुं	२३९	तेत्रीस
<b>तूदर्षुफूटर्षु</b> वि० टूटा-फूटा ; साधारण निकम्मा [(रुई	; तत्त्व;तेजः	[ <b>⊸पडवूं ≕</b> प्रकाश पड़ना ;
निकम्मा [(रुई	) <mark>चमकना</mark> (२	) प्रभावमें दबना । –मारबुं
<b>तूचव्</b> स०कि० रफ़ू करना (२) तूमन	ना = प्रकाशित	होना; चमकना (२) रोव
सूस न० बनावटी बात; गढ़ंत; झूठ		
गप(२)साजिश; जाल (३) चेष्टा		दारचीनी, लौंग, धनिया,
नखरा; चोचला	मिर्च मादि	सामग्री; मसाला 💦
<b>तूतक</b> स्त्री०; न० जहाजकी पाटन; डे	क <b>तेजाब पुं</b> ० ते	ाजाब; अम्ल; एसिड
<b>तूतेलूत</b> न० झूठी और मनगढ़त बातोंब		तेजस्विता; चमक (२)
परंपरा; गप ही गप (२) कोरी ग		इना; तेजी; महँगी (३)
<b>तूनव्ं</b> स०कि० देखिये 'तूणवुं'		র্বি; তন্মাह(४)उन्नति;
तूमडी, (-ई) देखिये 'तुंबडी,' 'तुंबा		)पुं० घोड़ा (६)वि०तेज ;
तूर न०;स्त्री० आक, सेमल आदिव		[तेजी-मंदी
🛛 बेंबीसे निकलनेवाली 🛭 रुई (२) स्त्री		० मूल्यका चढाव-उतार;
ाहनाई; तुरही (३) न० एक बा		तेज ; फुरतीला
(आदिवासियोंका)	तेटलुं वि० उ	
तूराइ पुं० कसैलापन		'मात्रामें ; उतनेमें (२) उस
<b>तूरियं</b> न० एक साग; तोरी; तोर		या अंतर पर (३) उतनेसे
तूरी स्त्री० तुरी; तुरही (२) जुल		उतने समयमें; उस बीच-
होंकी क्रूँची; तुरी		न तिरफ़; ओर
<b>तूचं</b> विं० कसेला; तुवर		स्त्री० तट; किनारा (२)
तूल न॰ खड़ी फ़सल (२) रुई; तू		निमंत्रित करना; न्योतना
सूचर स्त्री॰ देखिये ' तुवेर '		कको) कंवे पर या कमरमें
त्तूंबडी(डुं) देखिये 'तुंबडी,' 'तुंबड		डी जब् =साय ले चलना.]
ते स॰ वह (२) वि॰ वह	् तेडागर वि०	कंधे पर (बालकोंको)
तेस(०४) स्त्री॰ खोज; तलाश (२		गनेवाला (२) घर-घर
तनदेही; हिफ़ाजत (३) करकसर		
किफ़ायतशारी (४) देखिये 'तेखडुं'		के० 'तैडवुं' कि <mark>याका</mark>
तेलाडुं न० तीनको टोली या समूह (२		रूप (२) निमंत्रण था त्योतना
तीन व्यक्तियोंका आपसमें अपनं		ा; निमंत्रण; बुष्ठावाः
अपनी कन्याओंका एवज या बदल	न तेणी (ते') स	२ 'वह' का स्त्रीलिंगका <b>रूप</b>
तेच वि॰ तेज; तीक्ष्ण; पैनी धारक (२) उग्र; तीखा; गरममिजाज		अ॰ उस ओर
(२) उप्र, ताखा, गरमामग्राज (३) फुरतीला; तेज्र		ार <b>लिस</b> '
तेज न० प्रकाश; तेज (२) प्रमाव		्रात )स(तॅ)वि॰ देखिये 'तेंता-
सामर्ग्य (३) पंचमहाभूतोंमें अगिन		तीस; तेतोस; तेतीस; ३३
and IN made South and		and reaction to a second se

तेवी

- तेची (०करीने) अ० इसलिए; इससे; अतः
- **त्तेपन**(तें) दि० तिरपन; ५३
- तेन (तें) अ० उस प्रकार; वैसे;तैसे
- तेर वि॰ तेरह; १३
- तेरमुं वि० तेरहवां (२) न० मृत्युके बाक्का तेरहवां दिन या उस दिन होने-बाला भोज; तेरहीं
- तेरब (-त) स्त्री० तेरहवीं तिथि; तेरस
- **तेरील** स्वी० क्याज गिननेका---रुगानेका दिन (२) व्याजकी दर
- **तेरीव स्त्री**० देखिये 'तारीज'
- तेक न० तेल (२) वह तेल जिसपर कोई सत्य तैयार किया जाय; सत्त्वका माहा (३) बहुत श्रमसे थकना; दम [ला.]। [-काडवुं = कचूमर निकालना; यका देना। --कोवुं, तेखनी वार कोवी = पूरी चौकसी करना। --नीकटाबुं = कचूमर निकलना; थक-कर चूर होना। --रेडाबुं = कलेजा कौपना (२) कलेजे पर सौप लोटना; डाह होना.]
- **तेलियुं** वि० तेलिया; तेलयुक्त
- तेली वि॰ तेलिया; तेलयुक्त; तेलहा (२) पुं० तेली (३) एक अल्ल
- तेलीबियां न०ब०व० तेलहन
- **तेववुं** वि० उतना
- तेवील वि० तेईस; २३
- तेषुं (ते') वि० वैसा; तैसा
- तेवे (ते') अ० उस समय; तब
- तेसड (तें) वि॰ तिरसठ; ६३
- तेंताली (--ळी)स (तें०) वि० तेता-स्रीस; तेंतालीस; ४३
- तेंसठ (तें०)वि० देखिये 'तेसठ' [सज्ज तेयार वि० तैयार (२) उद्यत; आमावा;

		ł	Ì
-		_	

.

- तैवारी स्त्री तैयारी ; तत्परता ; मुस्तैदी सो अ०तो; अगर; यदि; उदा० 'जो आबसो तो जईस्ं (२) फिर भी; उदा० 'तुं नहीं आवे तोपण हं जईश' सो ज० किसी सब्द पर जोर देनेके लिए इसका प्रयोग किया जाता है; तो; तब; उदा० 'तो तुं जा', 'बेस तो सरो' सोखडाई स्त्री० बेथदबी; गुस्तासी; उजहर्षन तोछ्टं वि० असम्य; गुस्ताल; उद्दत (२) उटंग; ओछा (कपड़ा); कम तोटो पुं० टोटा; कमी; नक़सान तोड स्त्री० पिंडलीमें होनेवाली पीड़ा तौड पं० निकाल; फ़ैसला; हल तोडचोड स्त्री० समझौता; समाधान तोडफोड स्त्री० तोड़ना और फोड़ना; तोड-फोब
- तौडवां संविभिव तोड़ना; जुड़े, सटे या लगे हुएको आधात, झटका या दवावसे अलग करना (२) चुनना; चुनकर अलग रखना; उतारना (कूछ, कली) (३) खंडित करना; तोड़ना (हाय, कांच) (४) अलग दो हिस्से करना; टुकड़े करना (वाल, डोरा) (५) मंग करना; तोड़ना (वचन)
- तोडो पुं० पैरमें पहननेका सौकड़ा; तोड़ा तोडो पुं० पूनी कातते समय निकलने-वाला थक्का
- तोबो पुं॰ टोड़ा (२) मीनार; कॅंगूरा (३) बावलीके ऊपरकी दीवार(४) कण्चा तोड़ा हुआ फल्ल (आम, कैंघ आदि)
- तोतडाबुं अ०कि० तुतलाना; हकलाना तोतखुं वि० तोतला; हकला
- तोलिंग वि॰ भारी; विज्ञाल; भीमकाय

वोत्ते र
- ·

ŔΑ	ł
----	---

म्राहित

तोतेर (ताँ) वि॰ तिइत्तर; ७३	तोलाट पुं० तौल्नेवाला;तौका
<b>तोव स्त्री० तोप</b> (२) <b>बढ़ी</b> नप [खा.]	तोखुं न० दस सेरकी तौछ; दस से र <b>कत्रन</b>
<b>तोपमोळो पुं०</b> तोपका गोला ; मोला ( २ )	तोखुं (तॉ) न∘सिर
बड़ी गंध [ला.] [ मप्पी [का.]	तोले म० तुल्लामें; बराबरू
<b>तोपची पुं</b> ० गोलंदाज; तोपची (२)	तोस्रो पुं० एक क्ष्यमामर वजनः तोस्रा
<b>तोपच (</b> तौ) अ०फिर भी; तथापि; बावजूद [मारपीट	तोस्तान न० बहुत बड़ी चीख या भारी घटना
तोफान न० तूकान; मस्ती (२)लडाई;	<b>रोळव्</b> स॰ कि॰ वजन करना; सौछना
तोफानी वि० ऊधमी; तूफ़ानी	तोळाट पुं० देखिये 'तोलाट'
सौबरी पुं० तोबड़ा; घोडेको दाना	तॉतिर वि० देखिये 'तोतेर'
<b>खिलाने</b> की चमड़ेकी यैली (२) <b>रीसके</b>	स्पजनुं स०कि० तजना; छोड्ना;त्यागना
मारे फूला हुआ मुँह [ला.]	स्यागवुं स०कि० देखिये 'त्यजवुं'
तोबा अ॰ (२) स्त्री॰ 'अति हो गई'	त्यारे अ॰ तब (२) तो फिर;उस स्थितिमें
ऐसा अर्थ दिखानेवाला त्रास या	त्याबी(-सी) वि० तिरासी;सिराझी;८ँ३
उकता जानेका उद्गार; तोबा	त्या (') अ॰ वहां; तहां (२) उस
तोर (तॉ) पुं० मिद्राज; अहंकार	परिस्थितिमें
तौर (ताँ) स्त्री० दूष या दहीके क्रमर-	त्रण वि०तीन; ३
की मलाईकी परत; मलाई; कालाई	<b>त्रमणूं</b> वि० तिगुना; तीन गुना
तोरण न० मुख्य दरवाजा या द्वार;	त्राक स्त्री० तकुका; तकला
मेहराबदार द्वार; तोरण (२) बंदन-	त्रागडो पुं० तागा; सूत (२) उपनयन
बार; सोरण	(३) बट देनेकी फिरकी; घिरनी
तोरी (तौ) वि॰ मिजाजी(२)स्त्री॰	त्रागुं न॰ घरना (२) हठ; जिद
मिजाज;गरमी(३)रीस; झुँझलाहट	त्राजवुं न० देखिये 'त्राजूडु'
तोरो पुं० टोपी या पगड़ीका फुँदना;	त्राजूडू न० तराजू (२) गोँदना
तुर्रा (२) पगड़ीका कलाबत्तूबाला छोर;चिल्ला (३) बँघे हुए फूलोंका	त्राटकेनुं अ०कि० धावा बोलना; छापा मारना
गुच्छा; तुरी; गुलदस्ता	त्राड(ता') स्त्री० जोरकी चीख; दहाड़
तोल पुं॰; न॰ तौल; तोल; वजन;	त्राणु(-णुं) वि० तिरानवे; ९३
जोख (२) तौलनेके काम आ <b>नेवा</b> ले चनन कर (२) कि कि काम आनेवाले	त्रापो पुं॰ देखिये 'तरापो'
साधन;बाट (३) [ला.] कोमत; क्षद्र (४) ग्रह्मियर: जनन	त्रास पुं॰ त्रास; जुल्म (२) सताना;
(४) प्रतिष्ठा; वजन तोल्हु (तॉ) न॰ सिर; खोपड़ी	परेशानी; ऊब (३) कंपकेंपी (४)
तोलडी स्त्री० पकानेका मिट्टीका पात्र ;	षाक;डर [होना(२)डरना
हाँडी (२) मुदेंके साथ स्मशानमें ली	त्रासब् अ०कि० उकता जाना; हैरान
हाजा (२) नुपुष ताथ रनसागम ज़ा जानेवाली आगभरी हाँडी	त्राहित वि॰ अजनबी (२) सटस्थ;
<b>तोल्ज्युं</b> स०कि० देखिये 'तोळ्यु'	उदासीन (३) पू॰ तिसरैत
······	

π <del>Γ</del>π\_99

_		. 1
٩.	11	2
		•

पचेत्रम्

সাৰ্	ন০ ই	स्तिये	'तांबु'		
त्रास्	वि०	टेढा	; तिरछ	T	
				-	_

- त्रिफला(–ळा) स्त्री० ऑवला, हड़ और बहेड़ेका चूर्ण; त्रिफलाबूर्ण त्रिभेटो पुं० तिमुहानी; तिराहा
- त्रिपंगी वि० तिरेंगा (२) पुर्० सफेद, इरा और केसरिया ऐसे तीन रंगोंवाला राष्ट्रध्वज [अरबा विराक्ति स्त्री० त्रैराशिक; अनुपात; त्रीक स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि;तीज

# 1

- पुं० 'त' वर्गका दंतस्थानीय दूसरा
   स्यंजन
- बई अ०कि० ('यवुं' कियाका भूत-कालीन स्त्रीवाचक रूप) हुई; बनी; रची गई; घटी आदि (२) अ०-से; ढारा; होकर; -मेंसे गुजरकर। [-चूकवुं = खत्म होना; हो चुकना। -रहेवुं = पूरा हो जाना; हो चुकना (२) अंत, फ़ेसला या निबटारा होना; हो जाना.] [ढारा; होकर
- **थईने** अ०<sup>ँ</sup> बनकर; होकैर (२)–से; **थकवर्षु** स०कि० 'थाकवुं' की प्रेरणा-र्यक किया; थकाना
- **मकी** अ० देखिये 'थी'
- **थकुं** अ०--के कारण; के द्वारा
- ग्नड न० (पेड़का) तना (२) [ला.] वंशवृक्ष; कुरसीनामा; शिजरा (३) (कांरचोबीमें) प्रारम्भ; नीवैं; मूल आधार (४) मतला (गजल); टेक (५) उत्पत्ति-स्यान
- बहेर्क स्त्री० डर; घड़कन; कंपन (२) बोस्रते बोलते जीमका रुकना; हकलाहट

त्रीबूं वि० तीसरा
त्रीश (-स)वि० देखिये 'तीस' [[प.]
त्रूठवुं अ०कि० प्रसन्न-तुष्ट होना; क्रुठना
त्रेसड स्त्री० (२) न० देखिये 'तेखड'
<b>त्रेपन</b> (त्रॅ) वि० तिरपन; ५३
त्रेवड स्त्री० किफ़ायत; मितव्ययिता
(२) इंतजाम
त्रेबीश (-स) वि० देखिये 'तेवीस'
त्रेसठ(त्रॅ) वि॰ देखिये 'तेसठ'
त्रोफवुं स०कि० गोदना (शरीर पर)

## थ

**यडकवुं** अ०कि० रुक-रुककर उच्चा-रण करना; हकलाना (२) घड़कना; भयसे कॉपना **यडकाट** पु॰ धड्कन ; भय (२) हकलाहुट **थडकार(--रो)** पुं० 'थड' की आवाज़, (२) बोलते समय अक्षरोंपर पड़-नेवाला दबाव थडको पुं० 'थड' की आवाज (२) देखिये 'थडकार' नं० २ थडमां अ० नजदीक; बग्रलमें थडियुंन० (पेड़का) तनायातनेका जड़ोंके पासका हिस्सा (२) पुक्त-नामेका मूल थडी स्त्री० एकके ऊपर एक रखी गई। चीजोंका ढेर; गड्डी **यड्** न० देखिये 'थडियुं' थहो पुं० दुकानका अग्रभाग **थयरको** पुं० गाढ़ा लेप **थयरव्ं** अ०कि० थरथराना (२) **डर**ना; त्रस्त होना [ला.] वयराट पुं० यरयराहट; कॅंपर्केंपी **वचेडवुं** सं०क्ति० गाढ़ा लेपना

	•	•
T		Л

थ लब

	९०२ महरू
भगे (गे)डो पुं० देशिये 'यगरडो'	छे; कलाक पयो; मन शाक ययुं;
<b>चनगन (०चनगन)</b> अ० नाचनेकी	एक गाउ थाय' आदि (४) मनमें
भाषाज; येई-येई	होना; उपजना; होना; उदा० 'मने
<b>बनगनवुं</b> अ०कि० घिरकना	एम थाय छे के जई आवुं' (५) महसूस
<b>भगगगट</b> पुं॰ जोश; मस्ती; उत्साह	करना; अनुभव करना (दुःख) (६)
<b>भनभन, (०वुं), (</b> भाट) देसिये 'थनगन'	एक स्थितिसे दूसरी स्थितिमें आना;
भादि	होना; उदा० 'पाणीनी वराळ <b>थई</b> ।'
वपडाक, वपाट स्त्री० थप्पड़; तमाचा	[ <b>थई जूकवुं, रहेवुं</b> = देखिये 'थई' में ।
बपेली स्त्री० थपककर बनाई हुई मोटी	<b>थई अवुं=</b> पूरा होना; समाप्त होना;
पूरी [बनाई हुई चीज, आकार	हो जाना (२) स्वाभादिक रूपमें –
<b>थपोली</b> स्त्री० हायसे यापकर	अपने-आप या अनजानमें बनना;
<b>षप्पड</b> स्त्री० थप्पड़; तमाचा । [ <b>- सावी</b>	उदा० 'भूल थई गई.']
= वप्पड़ खाना; लगना (२) मार	षळ न॰ स्थान; जगहु; थल
साना (३) घाटा होना; धोसा साना	<b>मळचर</b> वि० (२)न० थलचर; थलचारी
(४) सबक़ मिलना;अनुभवसे अक्ल	यंभवुं अ०कि० थमना; रुकना (२)
ठिकाने आना.]	सुस्ताना
<b>बण्सी</b> स्त्री० छोटा गड्ढ; गड्डी; चक्का	<b>भाक</b> पुं० यकान; थकावट । [— <b>उतारवो</b>
<b>भण्गो</b> पुं० (साड़ी, चोली पर लगाया	=थकावट दूर करना; सुस्ताना । –
जानेवाला) कलाबसूका गोल लपेटा	<b>साथो ==</b> जाराम करना.]
ड्रुआ फ़ीता; ठप्पा	<b>थाकवुं</b> अ०कि० थकना (२)तंग आना ;
ष्ययुं अ० कि० हुआ (२)अ० बस; काफ़ी	हारना [थका-माँदा
<b>वर पुं</b> ० भूमिकी परत;वर; स्तर(२)	थाक्युंपाक्युं दि० बहुत थका हुआ;
तह; पपड़ी	<b>थागडयी (यों)गड</b> न० मरम्मत;
बरबर अ० थरधर	दुरुस्ती; कामचलाऊ उपाय [ला.]
<b>भरथरवुं</b> अ०कि० देखिये 'थथरवुं'	<b>थामदार</b> पुं० थानेदार
<b>भरणराटी</b> स्त्री० थरथराहट; कॅंपकॅंपी	थाण् न० याना; अड्डा;केन्द्रस्थान(२)
<b>भरमॉमिटर</b> न० थरमामीटर; ताप-	पुलिस चौकी; थाना (३) (पेड़का)
मानयंत्र	थलिः; आलबाल
भवुं अ०कि० होना; बनना; निमित	
होना (२) पैदा होना; लगना;	<b>मायायावडी</b> स्त्री० थपककर–सहला-
होना; उदा० 'कहो कर्वु नहीं थाय;	कर शान्त करना (२) कोरी आशा;
झाड पर फळ याय छे; उधरस थवी'	फुसलाबा
(३) अस्तित्वमें आना; समयका	थान ने० यान (कपड़ा)
ब्यतीत होना; गुचरना; (तोल)तौलमें	
उत्तरना; होना; उदा० 'वसत माय	भागक न॰ स्यान; निवासस्यान; यानक

দান :

पं क्रम्सली

	र्षण पुणसमा
याप स्ती॰ सुरु हुए हत्यके पंजेका	नैवेच समर्पित करते उम्प गामा
वाघात; थाप(२)मुलावा; चकमा;	आनेवाला स्तोत्र ः ः ⊴िरेकाकै; चुड़ी
शौसापट्टी (३) सबलेके बीचका काला	थाळी स्त्री० थाली (२) ग्रामोफोनका
माग या उस पर दी हुई थएकी;	याळुं न० चक्कीका गोल घेरा जिसमें
याप। [-बाबी = घोंखा खाना ; मुरुा-	पिसकर आटा पड़ता है (२) मोटका
वेमें पड़ना। -वेथीं, मारबी = थप्पड़	पानी उँडेलनेके छिए कुँएके पास
कसना, लगाना(२)पकमा देना; छलना	बनाया हुआ गढ्ढा; छीलर; पैड़ी
(३)तबले पर थाप कगाना (४) गाढा	यांमली (०) स्त्री० छोटा खंगा; यूमी
लेप करना।मारी जबुं = घोला दे	थांगलो (॰) पु॰ लंगा; स्तंग
ंजानाः]	थिजाबदुं स॰कि॰ 'थीजवु' कियाका
बापट स्त्री० वय्यह; वाप	प्रेरणार्थक रूप; अमाना
<b>षापडी</b> स्त्री० गच पीटनेका राजका	यिजानुं अ०कि० 'यीजवुं' का भावे रूप
औजार; थापी (२) देखिये 'षपेली'	थी – सीसरे और पाँचवें कारककी
(३) थप्पड्	विभक्ति; से
वापण स्त्री० पूँजी; धाती (२) लीपना;	<b>यीगडी</b> स्त्री० देखिये 'यींगडी'
लेप (३) न्यास; धाती; धरोहर।	थीगडूं न० देखिये 'थींगडुं'
	<b>धीलबूँ</b> अ०कि० तरल चीउका गाडा
जाना; गंबन.]	या ठोस होना; जमना
यापन स० कि० स्यापित करना;	षीनुं वि० जमा हुआ; गाढ़ा
यापना; क़ायम करना (२) गाढ़ी	यौँगडी स्त्री० छोटा पैवन्द; धिगली;
लिपाई करना (३) यापना; पायना	थेगली येमली
बापो पुं• चूतड़; नितंब (२) बँढेर पर	र्थींगई न० पैवन्द; चकती; थिंगली;
रहनेवाला गोल सपड़ा;नरिया(३)	<b>पुवेर</b> पुं०; स्त्री० पूहर; यूहड़; से <b>हुँड</b> ़
गीली रोलीसे बनाया हुआ हाथके	मू अ॰ यूकनेकी आवाज; यू
पंजेका छापा; पापा	पूर्द स्त्री० खेलमें विराम सूचित
<b>चाबडव्</b> स०कि० यपकना; यपकी देना	करनेवाला उद्गार; पूर्यू-यक्का
बाबडी स्त्री० थपकी (२)देखिये 'थापडी'	यूषो पुं० रेशा; निःसार वस्तु; थोया;
वात्रर वि० देखिये 'स्थावर'	सीठी; फोक (२) रेशा; तंतु
<b>बाह</b> पुं० नदी आदिकी यहराईकी सीमा;	<b>षूली</b> स्त्री० दरदरा दला हुआ अनाज
ग्राह; तल । [रहेगो = औचित्यकी	या उसकी खाद्य वस्तु; पूली; दलिया
सीमा रहना या होना; मर्यादा	<b>बूलुं</b> न <b>े चोकर; च</b> लनौस
रहना.]	<b>थूबर</b> पुं०; स्त्री० देखिये 'युवेर'
षाळ पुं०; स्त्री० पाल; बड़ी याली	<b>षूंक</b> न० यूक(२)मुंहमें छूटनेवाली लार ।
(२) ठाकुरजीके नैवेचका याल –	[-डडाइब् =खाली बकबक करना.]
ठाकुरजीका प्रसाद (३) ठाकुरजीको	भूंकदानी स्त्री० उंगालदान; पीकदान

	İ
योकमे	f

	र्षुकर्षु स०कि० थूकना । [पूंकेस् गळार्षु,	सीमायेव वि० बहुत; खूब; योशमें
$\mathbf{u}$ \$\$ (o $\mathbf{u}$ \$) so $\mathbf{u}$ \$\$ $\mathbf{v}$ $\mathbf{u}$	चाटवुं = दचन न पालना; थूककर	খীৰামালুঁ বি০ কন ৰাতনবাতা;
पहेंकार पुं० ' येई-येई' ध्वति बेक स्त्री० ज्यार जैसी एक सांघ चीज यो एक छोटे पौषेकी जड़मेंसे मिलती है (२) कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग बेकडो पुं० चौकड़ी भरना (२) फांदना;को कूदकर पार करना बेप स्त्री० गढ़ी लिपाई (२) उसडे हुए सेपडो पुं० गढ़ी लिपाई (२) उसडे हुए सेपडो पुं० गढ़ी लिपाई (२) उसडे हुए सेपडी परड़ी (२) कुम्हारका कूड़ा बेप हु न० देसिये 'येपली' (२) एक साध चीज [पाथना; थोपना बेप हु न० देसिये 'येपली' (२) एक साध चीज [पाथना; थोपना बेप हु न० कोती केप हु न० कोती केपाई न० बाढ़ा लीपना (२) केपाई न० बोता थीक; बेर बेकडो पुं० यैला(२) बोरा बेकडी स्त्री० गहुी	चाटना.]	मितनायी
पंदुकार पुं० ' येई-पेई' ध्वति बेक स्त्री० ज्यार जैसी एक खाद्य पीज जो एक छोटे पौधेकी जड़मेंसे मिलती है (२) कुदान; छलांग बेकडो पुं० वौकड़ी; कुदान; छलांग बेकडो पुं० वौकड़ी; कुदान; छलांग बेकडो पुं० वौकड़ी; कुदान; छलांग बेकडो पुं० वौकड़ी; कुदान; छलांग बेकडो पुं० वौकड़ी; कुदान; छलांग बेकडां पुं० वौकड़ी भरना (२) फोदना;को कूदकर पार करना बेप स्त्री॰ गढ़ी लिपाई (२) उखडे हुए तेपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूंडा बेकडी स्त्री॰ छोदेको हायसे घोपकर बनाई हुई घीज या कोई आकार बेपर्खु न० देखिये 'येपलो' (२) एक साक्ष चीज प्राया लीपना (२) बेपाई न० मोती बेपाई न० मोती बेपाई न० मोती बेपाई न० मोती बेपाई न० मोता लिपना (२) बेपाई न० मोती बेफा पुं० येला(२) बोरा बोकडी स्त्री॰ गढ़ी बेका पुं० येला(२) बोरा बोकडी स्त्री॰ गढ़ी बेका पुं० येला(२) बोरा बोकडी स्त्री॰ नड्री	बेई (व्येई) अव येई-येई	चीबुं वि० थोड़ा; जरा; अल्प । [थोडा
	भेईकार पुं० ' येई-येई' ध्वनि	दहाडानो, थौडी घडीनो महेमान =
$\xi(r)$ , कुदान; छलौगबोढुंधणुं वि॰ योड़ा-बहुत; कुछ-कुछबेकडो पुं॰ वौकड़ी; कुदान; छलौगबोढं थीडे अ॰ थोड़ा थोड़ा करके;बेकडो पुं॰ वौकड़ी; कुदान; छलौगबोढं थीडे अ॰ थोड़ा थोड़ा करके;बेकडां पुं॰ वौकड़ी; कुदान; छलौगधीमे-धीमे [पन; मुख-रोग्यबेकडां पुं॰ गाढ़ी लिपाई या लेपधीमे-धीमे [पन; मुख-रोग्यबेपडो पुं॰ गाढ़ी लिपाई या लेपबोखर स्त्री॰ मुंहुकी सूजन और फीकाबेपडो पुं॰ गाढ़ी लिपाई (२) उखड़े हुए(२) फटी-पुरानी या निकम्मी पीथीखेपड़ी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडाबोभ पुं॰ अटकाव; रोक; अंतबेपडां त॰ देखिये (३) कुम्हारका कूँडाबोभ पुं॰ अटकाव; रोक; अंतबेपडां न० देखिये 'येपली' (२) एकबोभा, धोभिया पुं० ब० व० मूंछवेखेपडुं न० देखिये 'येपली' (२) एकबाख चीज [पाथना; सोपनाबेपडुं न० देखिये 'येपली' (२) एकबाल के गुच्छे; गलमुच्छेबेपडुं न० घोतीपाथना; शोपनाबेफा पुं० थेला (२) बोराखोर (थॉ') पुं० यहर; सेहुँडबेकडी स्त्री॰ योक; डेरचोरा (थॉ') स्त्री॰ पंकदार यहर;बोकडी स्त्री॰ गडी।योरा (थॉ) पुं० अनुकूढ समय; मौका	वेक स्ती० ज्यार जैसी एक खाद्य चीज	आसन्नमरण, कुछ ही देरका मेहनान.]
<ul> <li>भेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग</li> <li>भोडे थोडे अ० थोडा थोडा थोडा करके;</li> <li>भेकडुं अ० कि० चौकड़ी भरना (२)</li> <li>भोदना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद गे० मुंहुकी सूचन और फीका</li> <li>भोद रगी० मुंहुकी सूचन और फीका</li> <li>भोद एं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भेपड़ी (२) जिल्माई (२) उखड़े हुए</li> <li>भोद पुं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भोद पुं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भेपड़ी रगी० छोदेको हायसे घोपकर</li> <li>मेकडी रती० छोद गै हायसे घोपकर</li> <li>भोर पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० अटकान; धमना;</li> <li>भार पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० कि० अटकना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म पुंठ कि</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म करना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म करना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रात्म पुंठ रात्म करना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रा सुदे</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रा सुदे</li> <li>भार पुंठ रुका कि रा यहा</li> <li>भार पुंठ रुका रा सुहु</li> <li>भार पुंठ रुका रा सुहु<!--</td--><td>को एक छोटे पौषेकी जड़मेंसे मिलती</td><td>बौडुंक वि० जरासा; तनिक; घोड़ासा</td></li></ul>	को एक छोटे पौषेकी जड़मेंसे मिलती	बौडुंक वि० जरासा; तनिक; घोड़ासा
<ul> <li>भेकडो पुं० चौकड़ी; कुदान; छलौग</li> <li>भोडे थोडे अ० थोडा थोडा थोडा करके;</li> <li>भेकडुं अ० कि० चौकड़ी भरना (२)</li> <li>भोदना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद ना;को कूदकर पार करना</li> <li>भोद गे० मुंहुकी सूचन और फीका</li> <li>भोद रगी० मुंहुकी सूचन और फीका</li> <li>भोद एं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भेपड़ी (२) जिल्माई (२) उखड़े हुए</li> <li>भोद पुं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भोद पुं० गाड़ी लिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>भेपड़ी रगी० छोदेको हायसे घोपकर</li> <li>मेकडी रती० छोद गै हायसे घोपकर</li> <li>भोर पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० अटकान; धमना;</li> <li>भार पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० अटकाव; रोक; अंत</li> <li>भोर पुं० कि० अटकना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म पुंठ कि</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म करना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ रात्म करना; धमना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रात्म पुंठ रात्म करना;</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रा सुदे</li> <li>भार पुंठ पुंठ पुंठ रा सुदे</li> <li>भार पुंठ रुका कि रा यहा</li> <li>भार पुंठ रुका रा सुहु</li> <li>भार पुंठ रुका रा सुहु<!--</td--><td>है (२) कुदान ; छल्रौग</td><td>थोड्ंधणुं वि० योड़ा-बहुत; कुछ-कुछ</td></li></ul>	है (२) कुदान ; छल्रौग	थोड्ंधणुं वि० योड़ा-बहुत; कुछ-कुछ
<ul> <li>बेकवुं अ०कि० चौकड़ी भरना (२) धीमे-धीमे [पन; मुख-रगेय घोषां त्या;को कूदकर पार करना कोषा हान मुंद्रकी सूजन और फीका का हाक मुंद्रकी गढ़ी लिपाई (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी राजी हीप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी पपड़ी (२) उखड़े हुए तेप्रकी राजी हीप्रकी राजी हीप्रकी पार गुं० अटकाव; रोक; अंत तेप्रकी पर्वा ही राजी ही योपकर वाकार रक्तना (२) प्रतीक्षा करना; रकन वेपर्खु न० देखिये 'येपली' (२) एक वोषा, योभिया पुं० ब० व० मूंछवे साथ दीज [पाथना; योपना सीरोभिया पुं० ब० व० मूंछवे साथ दीज ता तिर्क गाढा लीपना (२) वालके गुच्छे; गलमुच्छे योर(याँ) पुं० यूहर; सेहुँड विक्री प्रेली योका; यैली योरी (याँ) पुं० यूहर; सेहुँड विक्री पुं० गेला; यैली योरी (याँ) पुं० यूहरहा एक टुकड योरी पुं० गेला (२) वोरा योरी (याँ) स्वी० पंरेतरा यूहर; नाग-फर्न योकही स्त्री० गही</li> </ul>		
<ul> <li>फोरना;को कूदकर पार करना</li> <li>फोरना;को कूदकर पार करना</li> <li>बेघ स्त्री॰ गाढ़ी छिपाई या छेप</li> <li>बेघ स्त्री॰ गाढ़ी छिपाई या छेप</li> <li>बेघ स्त्री॰ गाढ़ी छिपाई (२) उखड़े हुए</li> <li>केपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडा</li> <li>बेपकी स्त्री॰ छोदेको हायसे घोपकर</li> <li>बाध दीज छोदको हायसे घोपकर</li> <li>बाध दीज हिपाई योण्ठी' (२) एक</li> <li>बाध दीज पिपली' २) एक</li> <li>बाध दीज पिपली' (२) एक</li> <li>बोध, घोभिया पु० ढ० व० मूंछवे</li> <li>घोर(घो पु० यूहर; सेहुँह</li> <li>बोही स्त्री॰ छोटा यैला; थैली</li> <li>घोरियो (घॉ) पु० यूहर; सेहुँह</li> <li>बोही पु० थैला(२) बोरा</li> <li>चोर (घॉ) पु० यूहर, सीक पुढ़ा यूहर;</li> <li>बोक पु०; स्त्री॰ घोक; ढेर</li> <li>नाग-फनी; नाग-फन</li> <li>बोक दि स्त्री॰ गडी</li> </ul>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
षेष स्त्री० गाढ़ी लिपाई या लेपषोषुं न० सड़ा हुआ सोसला दानषेपढो पुं० गाढ़ी लिपाई (२) उखड़े हुए सेपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडा(२) फटी-पुरानी या निकम्मी पौथीसेपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडायोभ पुं० अटकाव; रोक; अंतयेवली स्त्री० लोदेको हापसे योपकरयोभयुं अ० कि० अटकना; थमना; यमनाई हुई चीज या कोई आकारयोभयुं अ० कि० अटकना; थमना; यमना; यकना (२) प्रतीक्षा करना; ठकनयेवली स्त्री० लोदेको हापसे योपकरयोभयुं अ० कि० अटकना; थमना; यमना; योभयुं अ० कि० अटकना; थमना; यकना (२) प्रतीक्षा करना; ठकनयेवली स्त्री० लोदिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पुं० ब० व० मूंछने साख चीज [पाथना; योपनासाख चीज [पाथना; योपनासिरोके पास गालों पर बढ़ाये हुए योपदा पुं० युहर; सेहुँहयेपखुं न० फोतीयोपता (२)सेपखुं न० कोतीयोर(यॉ) पुं० युहर; सेहुँह योरी (यॉ) पुं० युहर; सहुँहयेली पुं० थेला(२) बोरायोरी (यॉ) स्त्री० पंठेदार युहर; नाग-फनयोकडी स्त्री० गट्टायोक; डेरयोकडी स्त्री० गट्टायोक; डेरयोकडी स्त्री० गट्टायोक; हेरयोकडी स्त्री० गट्टायोक; के रे	फौरना;को कुदकर पार करना	
षेपडो पुं० गाढ़ी लिपाई (२) उखड़े हुए छेपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडा बेलकी स्त्री० कोदेको हापसे घोपकर बनाई हुई चीज या कोई आकार बेवखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एक बाद्य चीज [पाथना; धोपना बेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एक बाद्य चीज [पाथना; धोपना बेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एक बाद्य चीज [पाथना; धोपना बेपखुं न० कोठ गढ़ा लीपना (२) बेपखुं न० कोठी बेपखुं न० कोठी बेपखुं न० कोठी बेपछो प्रें थेपली' (२) एक बाह्य चीज [पाथना; धोपना बेपखुं न० कोठी बेपछो प्रें थेपली' (२) एक बाह्य चीज [पाथना; धोपना बेपछो प्रें थेपली' (२) एक बोभा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवे बोरा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवे बोरा चीला; धोपना बालके गुच्छे; गलमुच्छे बोर (घाँ) पुं० यूहर; सेहुँढ बोर(याँ) पुं० यूहर; सेहुँढ बोरी (याँ) पुं० यूहरहा एक टुकड बोरी पीरा वोरी (याँ) स्ती० पंजेदार यूहर नाग-फन बोकडी स्त्री० गडूी बोर्ड योक रही पुं० अनुकूल समय; मौका	देव स्त्री० गाढ़ी लिपाई या लेप	• • •
सेपकी पपड़ी (३) कुम्हारका कूँडासोभ पुं० अटकाव; रोक; अंतयेवली स्त्री० छोदेको हायसे घोपकरयोभवुं अ० कि० अटकना; थमना;बनाई हुई चीज या कोई आकारककना (२) प्रतीक्षा करना; ठकनबेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एकसोभा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवेसाध चीजपिथना; थोपनासाध चीजपिथना; थोपनाबेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एकसोभा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवेसाध चीजपिथना; थोपनासाध चीजपिथना; थोपनासेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एकसोभा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवेसाध चीजपिथना; थोपनासेपखुं न० देखिये 'थेपली' (२) एकसोभा, घोभिया पुं० ब० व० मूंछवेसेपखुं न० कि० गाढा लीपना (२)बालके गुच्छे; गलमुच्छेबेपखुं न० कोतीधोर(यॉ) पुं० यूहर; सेहुँडबेकी स्त्री० छोटा यैला; थैलीधोरियो(यॉ) पुं० यूहरका एक टुकडबेकी पुं० थैला(२) बोरायोरी (यॉ) स्त्री० पंजेदार यूहर;बोकडी स्त्री० गडीसोस(यॉ) पुं० अनुकूल समय; मौका		
येवली स्त्री० स्त्रोव होयसे योपकरथोभवुं अ० कि० अटकना; थमना;बनाई हुई चीज या कोई आकाररकना (२) प्रतीक्षा करना; रुकनवेषखुं न० देखिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पु० ब० व० मूँछवेबाद्य चीज [पाथना; थोपनासोभा, योभिया पु० ब० व० मूँछवेबेषखुं न० देखिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पु० ब० व० मूँछवेबेपखुं न० देखिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पु० ब० व० मूँछवेबेपखुं न० देखिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पु० ब० व० मूँछवेबेपखुं न० कि० गाढा लीपना (२)बालके गुच्छे; गलमुच्छेबेपखुं न० प्रोतीबालके गुच्छे; रालमुच्छेबेपखुं न० प्रोतीधोर(याँ') पु० यूहर; सेहुँडबेस्ती स्त्री० छोटा यैला; यैलीधोरियो (याँ') पु० यूहर; पक टुकडबेस्ता पु० देला(२) बोराघोरी (याँ') स्त्री० पंजेदार यूहर;बोकडी स्त्री० गडुीसोस(याँ) पु० अनुकूछ समय; मौका		
बनाई हुई चीज या कोई आकाररुकना (२) प्रतीक्षा करना; रुकनबेपखुं न० देखिये 'येपली' (२) एकसोभा, योभिया पुं० ब० व० मूंछवेसाध चीज [पाथना; योपनासिरोके पास गालों पर बढ़ाये हुएबेपखुं न० के० गढ़ा लीपना (२)बालके गुच्छे; गलमुच्छेबेपखुं न० कोतीपाथना; योपनाबेपखुं न० कोतीपाथना; योपनाबेपखुं न० कोतीपाथना; योपनाबेपखुं न० कोतीबोर्ट(यॉ) पुं० यूहर; सेहुँडबेक्ती स्त्री० छोटा यैला; थैलीघोरियो(यॉ) पुं० यूहरहका एक टुकडबेक्ती पुं० यैला(२) बोरायोरी (यॉ) स्ती० पंजेदार यूहर;बोक्की पुं०; स्त्री० योक; डेरनाग-फनाबोक्की स्त्री० गहीघोस(यॉ) पुं० अनुकूल समय; मौका	येवली स्त्री० छोदेको हाथसे धोपकर	
भेषसुं न० देसिये 'येपली' (२) एक       सोभा, घोभिया पु० ब० व० मूंछवे         साध चीज       [पाथना; योपना       सिरोके पास गालों पर बढ़ाये हुए         चेषयुं स० कि० गाढ़ा लीपना (२)       बालके गुच्छे; गलमुच्छे         चेषयुं स० कि० गाढ़ा लीपना (२)       बालके गुच्छे; गलमुच्छे         चेषयुं स० कि० गाढ़ा लीपना (२)       बालके गुच्छे; गलमुच्छे         चेषयुं त० कोती       घोर(याँ) पु० यूहर; सेहुँढ़         चेकी स्त्री० छोटा यैला; यैली       घोरियो(याँ) पु० यूहरहका एक टुकड़         चेकी पु० यैला(२)बोरा       घोरी (याँ) स्त्री० पंजेदार यूहर;         चोक पु०;स्त्री० योक; ढेर       नाग-फन         चोकदी स्त्री० गही       घोस(याँ) पु० अनुकूल समय; मौका	बनाई हुई चीज या कोई आकार	-
साध चीज[पाथना; थोपनासिरोके पास गालों पर बढ़ाये हुएबेपदुं स० कि० गाढ़ा लीपना (२)बालके गुच्छे; गलमुच्छेबेपदुं न० घोतीबोर(याँ) पुं० यूहर; सेहुँडबेस्री स्त्री० छोटा यैला; यैलीधोरियो (याँ) पुं० यूहर; सहुँडबेस्री पुं० थैला(२) बोराघोरी (याँ) पुं० यूहर; सहुँडबोस मुं०; स्ती० योक; डेरनाय-फनी; नाग-फनबोस्डी स्त्री० गहीघोस (याँ) पुं० अनुकूल समय; मौका		
षेपदुं स० कि० गाढा लीपना (२)बालके गुच्छे; गलमुच्छेषेपाडुं न० घोतीघोर(याँ) पुं० यूहर; सेहुँडषेली स्त्री० छोटा यैला; थैलीधोरियो(याँ) पुं० यूहरका एक टुकडषेली पुं० थैला(२) बोराधोरीयो (याँ) स्त्री० पंजेदार यूहर;बोक पुं० थैला(२) बोराघोरी (याँ) स्त्री० पंजेदार यूहर;बोक पुं०; स्त्री० योक; डेरनाग-फनबोकडी स्त्री० गट्ठीघोस (याँ) पुं० अनुकूल समय; मौका	-	•
बेपाइं न० कोती     घोर(घाँ) पुं० यूहर; सेहुँड       बेसी स्त्री० छोटा यैला; यैली     घोरियो(घाँ) पुं० यूहरहा एक टुकड़       बेसी पुं० थैला(२)बोरा     घोरी (घाँ) पुं० यूहरहा एक टुकड़       बोस पुं० ;स्त्री० योक; डेर     नाय-फनी; नाग-फन       बोकडी स्त्री० गट्ठी     घोस (यॉ) पुं० अनुकूल समय; मौका		· · · ·
<ul> <li>बेली स्त्री० छोटा यैला; थैली</li> <li>धोरियो (थॉ') पुं० यूहरका एक टुकड़</li> <li>बेलो पुं० थैला (२) बोरा</li> <li>धोरी (थॉ') स्त्री० पंजेदार यूहर;</li> <li>बोक पुं०;स्त्री० थोक; डेर</li> <li>नाग-फन</li> <li>बोकडी स्त्री० गट्ठी</li> <li>धोल (यॉ) पुं० अनुकूल समय; मौक़ा</li> </ul>		
थेस्रो पुं० थैला(२)बोरा योरी (याँ) स्ती० पंजेदार यूहर वोक पुं०;स्त्री० योक; डेर नाय-फर्मा;नाग-फन बोकडी स्त्री० गट्ठी योक समय; मौका	<b>षेस्री स्त्री० छोटा यैला</b> ;थैली	
वोक पुं०;स्त्री० योक; डेर नाग-फन बोकडी स्त्री० गट्ठी योख(यॉ) पुं० अनुकूछ समय; मौक़ा		
बोकडी स्त्री० गड्डी बोल (यॉ) पु० अनुकूल समय; मौका	• • • •	
	-	
	-	बोलिपुं (थॉ) न॰ एक पात्र; बटलोई

- 🛎 पुं० 'त' वर्गका--दंतस्पानीय लीसरा म्पंजन
- बक्रिण वि॰ दक्षिण; दाहिना (२) स्त्री० दक्षिण; दनिखन (दिसा) (२) पुं० दक्षिण देश; दक्सिन
- रविजगोळ (-ळार्च) पुं० द्रविग्-गोलार्घ; दक्षिणगोल

# द

बसिणभूव पुं० दक्षिणी धुव

- बक्रिमी वि० दक्षिणका; दक्षिण-संबंधी; दक्तिलनी (२) पुं० दक्षिण देशका निवासी; महाराष्ट्रीय; दक्तिणी (३) स्त्री० मराठी भाषा
- **वज्ञणात्(--पुं)** वि०द<del>विव</del>नकी ओरका; दक्सिनी; दकनी (२) दाहिनी ओरका

~

रवाणी	२४६ रक्स्
रवणी वि०(२)पुं० देखिये 'दक्षिणी'	
<b>वसम्</b> न० वह स्थान जहाँ पारसी	. लुंब्रूकना
अपने मुर्दे रख आते हैं; दखमा	वडियो पुं० दोना;दौना
बस्तल स्त्री० दखल; हस्तक्षेप (२)	
रुकाबट; अड्चन;दखल	लपेटकर बनाया हुआ छोटा गेंद (३)
<b>रवलगीरी</b> स्त्री० दखल देना; हस्पक्षेप	A · · · ·
<b>बरूलम</b> स्त्री० दक्षिण दिशा; दक्सिन	दडीनुं भाणस'
बगड पुं० पत्यर	<b>बडो</b> पुं० गोलाकार चीज्र; पिंडा; गेंद
<b>बगढाई</b> स्त्री० (काममें) हरामखोरी;	(खासकर खेलनेका) [दत्तक;पालट
मूर्तता	<b>दलक</b> पुं० गोद लिया हुआ लड़का;
बगढाचोय स्त्री० भादों सुदी चौथ;	<b>ददहवुं</b> अ० कि० धाराके रूपमें गिरता
गणेशचौथ; ढेलाचौथ	बहुढी स्त्री॰ छोटी धारा (गिरनेवाली)
<b>रगद्</b> न० ढेला(२)वि० दगाबाजः; धूर्त	
बगबगो पुं० दग्रदगा; शक; वहम	तरल पदार्थ; घारा
<b>रगलवाज(-जी)</b> देखिये 'दगाबाज,	
दगाबाजी' [दगावाजी'	
<b>दगासोर(-री</b> ) देखिये 'दगाबाज,	, वफलर न० कासके कागज्ज, बही, रजि-
<b>ৰণাৰাজ</b> বি॰ বয়াৰাত্ম	स्टर यगैरह; दफ़्तर (२) कार्यालय;
<b>गगावाजी</b> स्त्री० दगावाची;घोखेवाची	-
<b>बगो</b> पुं० दगा; छल्ल; घोखा (२)	
विष्वासघात । [ <b>देवो, रमवो</b> ≕घोला	ा वफतरी वि० दफ़्तरका; दफ़्तरसे संबद्ध (२) एंट जाना जिल्लीकाला वा
देना (२) विष्वासघात करनाः]	(२) पुं० दफ़्तर लिखनेवाला <b>या</b> रखनेवाला
<b>बगोफटको पुं० छल-कपट; मकर-फ़रेब</b>	
<b>ধল্লাৱৰ্থু</b>	
प्रेरणार्थकरूप ['डटण' आदि	
दटण (०कूबो, ०साळ ०जाजरू) देसिये	
<b>दटाववुं</b> स० कि० गडवाना; गड़ाना	
<b>दटावुं</b> अ० कि० 'दाटवुं' कियाका कर्मणि रूप; गड्ना	समाप्त किया हुआ। [करबुं = दूर
क्ष पुं०; न० बारीक धूल या धूलकी	
मोटौँ तहवाली जमीन	बिखेर देना; तितर-बितर करना.]
<b>दहदद</b> अ० पानी,गिरनेकी ध्वनि;टप	- बफेस्ती० दफा; बार; बेर
टप(२)टपाटप(आँसुओंका गिरना)	<b>धवडाववुं</b> स० कि० धमकाना; डपटना
<b>वडवड (०दडवंड)</b> अ० दौड़नेकी आवाच	<b>बबढूं</b> न॰ चनका; थनका
बडवुं न० धनका; भनका	वबक्की पुं० दबदबा;ठाट-बाट;रोब

रसर् ः	रेपेछ बरबी
वस्ष्रं अ० कि० देसिये 'दवाषुं' (२) दबना; शुकना; हार स्वीकार करना ववाच न० दवाव (२) भार; वजन (३) दाव; नियंत्रणका असर [छा.] ! [-करबुं = दवाना (२) आग्रह करना (३) दमन करना; मात करना !-नीचे आषषुं = एहसानमंद होना ! -रुप्रब्युं, वापरषुं = दवाथ डालना.] ववाववुं स० कि० दवाना; दावना ! [ववाववे सालवुं = तेजीसे चलना; पैर उठाना.] ववाववुं अ० कि० दवना वबेल् (-रुं) वि० दबा हुआ; दबैल (२) एहसानमंद; दबैल; पराधीन वम पुं० दम; श्वास; साँस (२) (धूज्रपानका) कद्या; दम (३) श्वासरोग; दमा (४) प्राणवायु; जान; जीव (५) [ठा.] सस्त्व; ताक्षत; बूता; दम (६) घमकी; दम ! [-आपवो = धमकाना ! -ऊप- डवो = दमेका हमला होना ! -कादी नास्तवो =- खूब थका डालना (२) सताना; नाकमें दम करना ! - कादी नास्तवो =- खूब थका डालना (२) सताना; नाकमें दम करना ! - कादी नास्तवो =- खूब थका डालना (२) सताना; सत्र करना ; चुपचाप सहन करना ! -जोबो = दम या ताकतकी जांच करना; जोर-अउजमाई !वेसा- डवो = डप या धमकी देना; डौटना ! -देवो = धमकाना ! -पकडवो = बाट देखना; रुकना; ठहरना ! -फिडाववो = दवाना; धमकाना ! -आरवो = = वलना; धमकाना ! -आरवो =	२४७          समडी स्त्री॰ पैसेका चौया हिस्सा; दो दमड़ी ! [-नुं = कौड़ोका.]         समदाटी स्त्री॰ डॉट-डपट; धमकी दमनमीति स्त्री॰ डरा-धमकाकर वधर्में करनेकी पढति; दमननीति धमलुं वि॰ दमेका रोगी; दमी दमलुं वि॰ दमेका रोगी; दमी दमा स्त्री॰ दया; करुणा ! [-सादी, लावची = दया दिखलाकर छोड़ देना; तरस खाना । -डाकणने साथ = वयाके बदलेमें अपकार मिलना; एहसान-फ़रामोशी.]         दर पु॰ भाव; कीमत; दर (२) अ॰ हरएक; उदा॰ 'दर पेढीए'         दर पु॰ भाव; कीमत; दर (२) अ॰ हरएक; उदा॰ 'दर पेढीए'         दर पु॰ भाव; कीमत; दर (२) अ॰ हरएक; उदा॰ 'दर पेढीए'         दर न॰ बिल (सौप, चुहे आदिका) वरकार स्त्री॰ परवाह (२) सँभाल वरकास्त स्त्री॰ आवेदन-पत्र; अर्जी; दरख्वास्त (२) प्रस्ताव (समा आदिमें)। [-आपवी, भरवी = कचहरीमें दर- ख्वास्त पेश करना। -वजाववी = डिगरीके अमलके लिए अर्जी देना। -पूक्वची ==प्रस्ताव पेश करना?] वरणाह स्त्री॰ दरणाह; मक़बरा दरगुजर वि॰ दरगुडुर; माफ़ किया हुआ; क्षमा किया हुआ यरचा स्त्री॰ देखिये 'दरगाह' वरजी पु॰ दर्जी; दरजी दरजी पु॰ दर्जी; दरजी तराहे; हद; उदा॰ 'केटलेक दरज्जे; वात एटले दरण्जे गई छे' (२) पद; दरजा; ओहदा बरद न॰ दर ं दुःख; पीड़ा। [-नेसर्ग = डठी हुई पीड़ाका बन्द होना.]
देखिये 'दम खेंचवो '(२)खाली रोव जमाना.]	बरदागीनो पुं० देपया-पैसा और गहने बरदी वि० दर्दी; बीमार

रपंतर	246	रवाचाची
ररवार पुं०;स्ती० बरतार;राजसमा;	2	बरेक वि० हरएक प्रत्येक के प्रा
गादसाहनी कपहरी (२) पुंध राजा;		दरेड्युं स०कि० बोनेके लिए यासके
दरवार के कि कि कि कि		स्पर्मे बीज डाठना (२) अ <b>० कि०</b> .
बरबारगड पुं० राजाका महल; गढ़ी		धाराके रूपमें गिरना
वरबारी वि॰ वरवारी; दरवारका;		बरेडो पुं० घारा (गिरनेवाली)
<b>दरवार-संबंधी (२) पुं∍</b> राजसमामें		बरोःस्त्रीं + दूब ; दूर्वा
बैठनेवाला; दरवारी		बरोडो (-रो) पुं० तेजीसे किया हुआ
बरनाबी पुंक दरमाहा; मासिक वेतन		आक्रमण; छापा; दरेरा; भावा
<b>राजियान, बरम्बान:</b> ंश० दरमियान;		बर्शन न० दर्शन; देखनेकी किया (ते)
<ul> <li>सम्बद्धे अंदर; वीचमें । [</li></ul>		भक्तिभावसे देखनेकी किया; दसंत
= बीच-बचाव करना.] [बचाव		(३) देखाव; दृश्य (४) दर्शन (छः
वरमियामगीरी स्त्री० विचवई; वीज-		शास्त्र)
बररीज अ० रोज; हररीज		रार्गनी वि॰ जो सामने हो; सुरूा;
बरवाको पुं० वहा द्वार या फाटक;		जाहिर(२)वि० स्त्री० दर्शनी हुंबी;
दरवाजा। [ वर्रवाजा उघाडा होबा =	:	दरसनी हुंडी
किसी प्रतिबंधका न होना; रोक न		रशीववं संवक्तिव दिखाना; दरसाना
होनर.]		<b>दलवाडी</b> पु॰ ईटें पकानेवाला; पथेरा
वरवाल पुं० दरकान; डघोदीदार		दलाल पुरु दलाल; विचवई; सौदा ठीक
वरवानगी स्त्री० दरवानी		कर देनेवाला (२) कुटना; भढ्आ
बरास स्त्री० दाक्ष; दास		बलाली स्त्री० दलालका काम; दलाली
बराज स्त्री० अमेडीका एक रोग; दाद	ſ	(२)दलालका पारिश्रमिक; दलाली ।
वरियाई वि० समुद्रका; समुद्र-संबंधी;		[
दरियाई (२) स्त्री० एक तरहका	•	करना.]
रेशमी कपड़ा; दरियाई		रलालुं न० दलालका काम; दलाली
<b>रारयादिल</b> वि॰ दरियादिल; उदार		बलील स्त्री० दलील; तर्क
<b>दरियादिली</b> स्त्री० दरियादिली;उदारता	•	<b>दलीलबाबी</b> स्त्री० परस्पर दलीलोंका
दरियाक (पत) स्त्री० विवेक; विचार		युद्ध; बहस; वाग्युद्ध
दरियावविस्र, (-सी) देखिये 'दरिया-		बल्लो पुं० घरोहर; याती; पूँजी
दिल; दरियादिली'		दवराववुं स॰ कि॰ (पशुओंका) जोड़ा
वरियो पुं० समुद्र; दरिया (२) बहुत		खिलाना; बाहना; गाभिन कराना
विस्तृत या गहराईवाली जगह, वस्तु		बचा स्त्री॰ दवा; औषध (२) इलाज;
आदि [ला.] । [-सेडवो = समुद्रयात्रा		दवा [ला.]
करना (स्थोपार, रोजगारके छिए) ।		रवासानुं न० दवासाना; औषधालय
इहोळवो = लंबे-चौड़े विस्तारमें		दवादाक, बवापाणी न० म० व० औष-
परिश्रम उठाना, मेहनत करना.]		घियाँ; दवादारू

		- 5
1	د ال ر	Ø

रहाड़ो

दवावालो पुं॰ दवा वेष्णेपाला;'मेमिस्ट' बन्न वि० दस; दश; १० दशक पुं० दशक; देशका समाहार (२) दस वर्षोंका समाहार; दशकं; दशाब्दि (३) संख्या लिखनेमें दाहिनौ ओरसे दूसरा स्थान; दहाई बधाको पुं० दशक; दसका समाहार (२) दस वर्षका समय; दशाब्दि **बज्ञम** वि० दसवाँ ; दशम(२)स्त्री० दसवीं तिथि ; दशमी ; दसमी [ हुई रोटी बेशमी स्त्री० दूधमें आटा सानकर बनाई मझम् न० मृत्युतियिसे दसवें दिन होनेवाला प्रेसकृत्य; दसवाँ; दशाह बेशरा पुं०; स्त्री० दशहरा;दसहरा बास स्त्री० गाड़ीका पहिया तौलनेकी तेलवाली धज्जी; बसी (२) देखिये ' दशी ' (३) स्थिति; हालत; दशां (४)ग्रहोंका भाग्यकारु;बुरी दशा; बुरा हाल बर्बाध पुं० दसवीं भाग;दशमांध(२) वि०(३)न० भिन्नका एक प्रकार जो दशसे गिना जाता है; दशमलव [ग.] दशी स्त्री० कपड़ेके सिरे परका सूत ; दसी बगोरा स्त्री० देखिये 'दशरा' बन्नोबिन अ०चारों ओर; दसों दिशाओंमें **रस** वि० देखिये 'दश' वसकत पुं० अक्षर; हर्फ़ (२) अक्षरोंकी लिखावट (हाथकी) (३) हस्ताक्षर; पस्तजत वसको पुं० देखिये 'दशको' **बसम्ं** न० देखिये 'दशमूं' बस्कत पुं० देखिये 'दसकत' बस्त पुं•दस्त; हाथ (२) वस्त; पासाना; [भोजन খুল্তাৰ बस्तरकान म॰दस्तरख्यान (२) सामा;

बस्ताना पु० ब० व० दस्ताने

- बस्तूर पुं० रिवाज;प्रया; सत्रर(२) नेग; लागा (३)मारसियोका पुरोह्ति बस्तूरी वि० दस्तूर-संबंधी (२) स्त्रीं० दस्तूरी; दलाली (३)हक; नेग दस्तो पुं० छोटी ओखलीकी मूसली; दस्ता (२) मूठ; बेंट; दस्ता; हाणा (३) जौबीस कागडोंकी गट्टी; बस्ता (४) अमुक संख्याकी सिपाहियोंकी टुकड़ी; दस्ता
- बहाबाबाकी वि०रंती० सगर्भा; गर्भवती
- बहाडियुं वि० (२) न०, (--यो) पुं० दैविक मजदूरी पर काम करनेवाका; मफ़र; रोजीवार 🟤 🗉 अ० हररोज बहाबी स्त्री० दिनाती; रोजीना (२) बहाबो पुं० दिन;तारीख; तिवि; वार (२) मृत्तकके पीछे दिया आनेवाका भोज(३)[ला.] समय; जमाना(४) नसीब; सितारा। [बहाबा जावी रहेवा, बूढी जवा == मौत आना (२) अवधि स्नत्म<sub>ं</sub> होना। दहादा काडवा = दिन काटना (२) गुजारा करना। धहाडा भराई चुकवा ः= आ पड़ला; मौत आना। रहाता रहेवा= यर्भ रहना; पेट रहना । **बहाबा लेवा=सम**य वीलना, लगना । (**-ना) बहाबा होवा** = -- के सुवाके दित, मले दिन होना। बहाबे लागखुं = कामधंधे पर लगना। -आधवो = अवसर प्राप्त होना (२) मौक़ा मिलना। **--चबलो होबो** = सुखके दिन होना। **--चडवो =** दिन भढना(२)देर होना(३)गर्भ रहना (४)रोजकी मजदूरी चढ़ना। --वांको होबो = भाग्य प्रसिकूल होना; कुरे

दिन होता ]

9.51

यासम्

बहीं न॰ दही
<b>दहींबडुं</b> न० दहीबड़ा
<b>बहेज</b> स्त्री०;न० देसिये 'देज'
<b>बहेशत</b> स्त्री० दहन्नत; डर
<b>बळ</b> न॰ पत्ता; दल (२) फूलकी <b>पँखड़ी</b> ;
दल(३)सेना;दल(४)घनता; मोटा-
पन (५) एक मिठाई
बळ्ल्युं न० पीसनेको चीज; पीसना
<b>बळवर न०</b> दरिद्वता ; ग़रीबी (२) आलस्य
<b>दळवरी</b> वि० दरिद्री;काहिल;सुस्त
बळवार पुं० दल्रदार (२) भारी
<b>बळडी</b> वि॰ देखिये 'दळदरी'
बळाचुं स० कि० पीसना। [बळी बळीने
<b>कूरुडीमां वाळवुं</b> == भारी परिश्रम
करने पर भी कुछ फल्ल न पैदा करना;
<b>कम अक्</b> लके कारण श्रम व्यर्थ नष्ट
करनाः] [उज्जत; पिसाई
बळाई स्त्री०, बळामण २० पीसनेकी
<b>बंगो पुं</b> ० दंगा; बस्रेड़ा; हुल्लड़(२) बलवा; दंगा। [ <b>–जठाववो</b> = विप्लव
बलवा; दंगा । [उठाववो = विप्लव
करना। -मजावयो = दंगा-फ़साद
करना.] [ फ़साद ; हल्ला ; उत्पात
र्यगोफिसाद पुं० लड़ाई-झगड़ा; टंटा-
<b>बंह पुं० डं</b> डा; दंड (२) पतला छोटा
रंडा;छड़ी (३) सजा (४) डाँड़;
जुरमाना (५) एक प्रकारकी कसरत;
डंड(६)चार हाथ जितनी एक नाप ।
<b>[पीलवा = डंड</b> पेलना.]
<b>बंडवुं स</b> ० कि० सजा करना (२) दंड
देना; डॉंडना
<b>दंदी (रू्) को</b> पुं॰ डंडा; लट्ठ [डंडा
बंबो पु॰ डंडा; लगुड़(२)(गुल्ली मारनेका)
पंतक न॰ पाँचा (किसानका औजार)
(२) (हरू, पाँचा काद्रिका) दाँता
बंताळी स्त्री० पाँचा (सेतीका औवतर)

		-
बादयम, बाइयाणी,	राई स्त्री०	प्रसव
करानेवाली स्वी;	दाई (२)	थाय;
उपमाता	. ,	
बाक्तर पं० डाक्टर		

- वाक्तरी वि० डाक्टरका; डाक्टर-
  - संबंधी (२) स्त्री० डाक्टरी
- **दासलल** वि० अंदर गया हुआ–**चुसा** हुआ; दाखिल(२)अ० बदले; —के लिए; —के रूपमें; —के तौर पर
- **बाखलो** पुं० उदाहरण; दृष्टान्त; मिसाल (२) अनुभव; सबक; सीख (३) प्रमाण; सबूस (४) हिसाब; गणितका प्रश्न [ग.]। [दाखला तरीके ⇒ उदाहरणार्थ; मसलन्। –बेसवो = हिसाबका जबाब मिलना (२) सबक़ ले ऐसा होना; –को सबक़ मिलना.]
- दासवषुं, दासवुं स० कि० दिसाना; बताना; व्यान पर लाना;कहना; दरियाफ़्त करना(२)अ०कि० असर दिसाना;गुणधर्म बताना(३)दुःसना; पीढ़ा होना
- **बाग्रीनो पुं०** गहना (२) अदद; नग बाघ पुं०जलना;दहन ।[--वेवो =अग्नि-संस्कार करना; मृतक-दाह करना.]
- **वाझ(झ,)**स्त्री० प्रीति; अनुकंपा; रहम (२) चिढ़; गुस्सा (३) द्वेष; कीना; डाह। [-आववी = चिढ़ना; सीजना। -ओलववी = बैरका बदला लेकर अपना कोध शान्त करना। --मडवी = गुस्सा होना; भीतर ही भीतर जलना। दास बळवुं = खारवृत्ति या गुस्सेसे झुंझलाना, कुढ़ना.]
- बाझे जुंन∘ जमीनका इतना तपना कि पौर्व फुँकने लगें [फुँकना दासार्थु अ० कि० दण्य होना; अलना;

रांत

-		-
	Ξ.	F
- 2		÷

- बाट वि० बहुत; खूब; उदा० 'मोंचुं दाट' (२) पुं० महा विनाधा; सवाही बाटवुं स० कि० दफ़नाना; गाड़ना
- (२) गाड़कर छिपाना बाटी स्त्री० धमकी; डॉट
- बाटो पुं० डाट; काग
- बाटा पुरुषाट, काल
- **बाडम**्न० अनार; दाड़िम
- बाढ (ढ,)स्त्री० डाढ़;चौभड़; दाढ़। [—सळकवी ≕ मुँहर्मे पानी भर आना; राल टपकना.]
- **दाया (~ विया ) को** वि∘ेदाढ़ीवाला ; मर्द; डढ़ार [दाढ़ी ; डाढ़ी
- **दाढी** स्त्री० ठोड़ी या ठोड़ी परके **वा**ल; **दाग**्न० जकात; टोल; चुंगी
- **बाणचोरी** स्त्री० जकात भरनेसे बचना; करचोरी • [दरदरा
- **राणावार** वि० दानेदार; रवादार; **राणापीठ** स्त्री० अनाजकी थोक विकीका बाजार; धान-मंडी
- दाचो पुं० अनाज; घान्य(२) अनाजका कण; दाना (२) उसके जैसा कोई भी कण; रवा; मनका (४) चौसरमें पासे पड़नेके बाद गिना आनेवाला अंक। [---चांभी जोवो == कह देखना; प्रयत्न करके देखना.]
- **दागोपाणी** पुं०; न० अन्न-जलु; दाना-पानी (२) नसीब
- बातण न० दातुन; दतौन
- **दातजपाणी** न० दातुन और पानी या उनसे दांत और मुंह साफ़ करना.
- बातरडी स्त्री० छोटी हेसिया
- वात्तरबुं न० हँसिया;गँड़ासा
- **दाता (०२)** वि॰ देनेवाला (२) दान करनेवाला; उदार (३) पुं० दान देनेवाला; दाता;दातार

- **बाब** स्त्री∘ फ़रियाद; अर्ख (२) इंसफ़; दाद। [--आपक्षी, देवी =-न्याय करना;
- दाद देना (२) गिनना; बदना.] दादफरियाद स्त्री० किसी भी प्रकारकी
  - शिकायत, फ़रियाद
- बाबर स्त्री० दाद (चर्मरोग)
- बादर पुं० सीढ़ी; जीना
- **दादरो** पुं० सीढ़ी;जीना (२) जीनेका द्वार(३)तालेके अंदरका पेच; झड़ी (४)एक ताल;दादरा [गुंडापन
- बाबागीरी स्त्री० जबरदस्ती; सिरजोरी;
- वादी स्ती॰ माता या पिताकी माता; दादी (पिताकी माता);नानी (माता-की माता)
- दाबो पुं∘ माता या पिताका पिता; दादा(पिताका पिता);नाना(माता-का पिता)(२) गुंडा
- बाधारंगुं वि० अदेखी; डाही (२) वागल
- दान न∘ दान;देना(२)धर्मबुद्धिसे या पुण्य कमानेके लिए देना; दान (३) खेलनेकी बारी; दार्थ, दाँव
- दानत स्त्री० मनोवृत्ति; वृत्ति । [--का-बवी = न्याय या नीतिकी भावना न रहना; प्रामाणिकताका मिटना । --राक्तवी == मनोवृत्ति रखना.]
- **बानाई** स्त्री० दानाई; समझदारी; विदेक (२) भल्मनसाहत; शराफ़त
  - (३) प्रामाणिकता; दयानतदारी
- **दानेग्न(-स)री** पुं० दानवीर
- **दानो** वि०पुं० दाना; समझदार; **विवेकी** दाप् न० नेग; लाग
- **बाद** पुं० दाव; दचाव (२) **डावह** (३) दबाव; अंकुश; धाक। [—**देवो**, मूक्तवो ≕अंकुश, नियंत्रण रखना(२)

### नामधी

दबावमें रखना ।<del>--वेसाहवो, राज्ञवो</del> = भाक जमाना; दाब दिख्रानाः] बाबदी स्त्री० डिविमा [ किम्बा बालडो पुं० धातुका ढनकनदार पात्र; वार्थणियुं न० कोई चीज बतानेका साधन **दाववुं** स॰ कि॰ दावना; दवाना; कुचलना (२) दमन करना; अंक्रुझमें रखना या जोर व पकड़ने देना [ला.] । [दाबीने कहेवुं = आग्रह करना;दबाव डालकर कहना । **दाबी** रासवं = दबाना; भारके नीचे रखना (२) गुप्त रखनाः जाहिर न होने देना । बाबी देवुं = कुचल ठालना; रोक देसा.] बाभ पु॰ दाम; दर्भ कीमत मुल्य **वाम** पुं० घन; दौलत; दामं(२)न०दाम; **सामण** न० पशुओंके पैर बौधनेकी रस्सी जिसमें और छोटी छोटी रस्सियाँ जुड़ी होती हैं; दामनी बामणी स्त्री० स्त्रियोंका ललाटका एक गहना; दामिनी बामणुं न० मथानीकी वह रस्सी जिसे सम्बिनेसे मथानी घूमती है; नेती रामयूपट न० कर्जरी दुगुना लेना; दून रायको पु॰ दश वर्षका समय; दशक **रायजो** पुं० स्त्रीधन बायण स्त्री० बच्धा जनानेवाली स्त्री; [ बैठक ; दायरा वाई बाधरो पुं० समुदाय;जमाव(२)दरवार; बाक पुं० धराब (२) बारूद **राक्सान्ं** न० आतिशवासी **रांक्लोळो** पुं० **वारू**द, गोले आदि युद्धकी सामग्री सक्तवियो पुं० सरावी राजनी स्त्री॰ एक वनस्पति; भड़माँड़; सत्पानासी (२) एक प्रका

वाक्यांधीः इत्री०ः शराबवन्दी; मधनिषेध वाद्योगे पुं० निगरानी करनेवाला अधि-कारी; दारोग्रा; दरोगा

- वाव पुं० खेलनेकी बारी; दावें; दौव (२) पासेके दौवमें आई हुई संक्या (३) मौक़ा; उपयुक्त काल; घात (४) युक्ति; पेच; दौव-पेच। [(--वा) दावयुं होबुं क्र योग्य होना। --झावयो व्य मौका मिलना; घात लगना (२) खेलनेकी बारी आना। --मां आववुं = घातमें आना; मौक़ा मिलना; युक्ति कारगर होना.] दावयेच पुं० युक्ति-प्रयुक्ति; दौव-पेच।
- [- लडाववा = युक्ति करना; चास चल्लना.] [प्रार्थनापत्र बाकायरजी स्त्री॰ अर्जीदाना; वादीका बाबो पुं॰ दावा; हक्क; मालिकी (२) इक्क:प्राप्त करनेके लिए न्यायाख्यमों की हुई फ़रियाद; नालिघ; दावा (३) इब आरमविष्वास; दावा । [- करवो = हक़के लिए अदाल्डतमें नाखिश करना (२) अधिकार या इक्तनी मॉग करना !-- मांडवो == नालिझ: पेश

करना; मुक़दमा दायर करना.]

दास पुं० दास; सेवक

**बासी स्त्री० दासी;** सेविका

**दाह पुं**० दाह; जलन

- बाळ स्त्री० दाल(२)पकाई झुई दाल; दाल(३)चाव पर जमनेवाली पपड़ी; खुरंड;दाल । [-मा कंई काळुं होर्बु =दालमें काला होना.]
- बाळरोटी स्त्री॰ दाल-रोटी; निर्बाह (चलना) [भूने हुए चने बाळिया पुं॰ ब॰ द॰ (बिना सिलनेने) बाडियो (॰) पुं॰ देक्तिये 'ढांडियो'

ą	ħ	ĝ	5

- वीबी(०) स्त्री० देखिये 'डांबी'(२) तंतुवाचका तुवे समेत लंबा दंब बांस(०) पु० दांस (२) दांसा (२) बैर; कीना (४) हाथीदाँत; ज़दा० 'वांतनी चुडी' । विति चडवुं = बदनाम होना। दांते जीभ लेवी = दांतोंसे जीभ काटकर मर जाना। हांते सरगुं लेखुं == दाँत काढ़कर, दीनतासे किसीकी शरणमें जाना। वाते मेल ्रधावयो == धनी बनना । बांते सागवुं == ्र चसुका लगना; –का स्वाद लग जाना.] **बांतरं**(--बुं)(०) वि० देंतुला; दंतार बौताळुं(०) वि० दतिवार;दंवानेदार बांतियुं(०) वि० दंवानेदार (२) न० दांत दिसाकर काटनेको दौडना ; बंदर-भुड़की (३) झिड़की ; डॉट िकमा **शंतियो (**०) पुं० एक ओर दॉंतोंवाला **रांती (** ० ) स्त्री० किसानका बीज बोनेका **भौ**जार; बाँसा (२) दरार**; सड़(**३) कोर परकी काट(रंगड़ या दाँतसे) **थलि**(०) पुं० आरेका दौत;दॉता(२) लरोंच; दौता। [-वांता पूरवा = जोड़ाईमें ईटोंके बीचकी जगह चुनेसे भर देना;टीप भरना.] मिली दिकामाळी स्त्री० एक औषमि; ढेका-दिगर वि० अन्य; विशेष; दींगर(२) अ० 'और मी', 'इसके उपरान्त' इस अर्थमें पत्रके आरंगमें व्यवहृत [(२)गवै হাৰুই; জন্যভন্ম **दिमाक (--ग)** पुं० मग्ज; बुद्धि; दिमाग़ **दिय(--ये)र** पुं० देवर **दिय (--ये) रवट्ं** न० पतिकी मुँत्युके बाद देवरके घर बैठना
- **विल न**० दिल;हृदय ।[**–अतरवुं ⇒** दिल बहुा होना । **–ऊंचुं यवुं ≕** दिल म

đ	

- स्लगना; जी उचटना। भडानुं = दिल भर साना.]
- दिलवार वि० दिलदार (२) उद्धर (२) पुं० आसिक (४) प्रिय मित्र (५) स्त्री० माशुका
- दिलावर वि॰ बढ़े दिलका; दरिया-दिल (२) बहादुर; दिलेर; दिलावर
- विलासो पुं० दिलासा; धीरज
- विलेर नि० नहादुर; दिलेर

विलोनान वि० प्राणप्रिय; जिगरी

- विल्लगी स्त्री वोक; दिलवस्पी (२) हेंची; दिल्लगी
- विषय पु० सूर्योदयसे सूर्यास्त तकका समय; दिवस (२)एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदय दूकका समय; दिन (३) पु० ब० व० समय; जमाना। [- फरवो = दिन फिरना। -भरवा = हाजिरी फिलना, किसाना। -भराई जूकवा = नरणायज होगा; भौराका सिरपर सेलना। - सेवा = दिन रुगना; समय वीसना.]
- दिवासो पुं आग्धाढ़की अमावसका पर्व दिवाळी स्त्री॰ दिवाली; दीवाली(२) आनम्द या मजा।[--करवी क्ष दिवाली का त्योहार मनाना.]
- बिवेट स्त्री० (वीयेकी) बत्ती
- विवेस न॰ रेंडीका तेल; एरंडीका तेल
- दिवेलियुं वि० रेंड्रीके तेलसे युक्त; चीकट (२) रेंडीका तेल पिया हुआ, उतरा हुआ (चेहरा, मनुष्य) [क्रा.]
- (३)न० रेंड्रीका तेल रखनेका पात्र
- दिवेली स्त्री० एरंडबीज; रेंडी; अंडी
- दिवेस्रो पुं० रेंड़; अरंड; सरंड; अंडी बी पुं० दिन(२)दशाका ग्रह।[--ख्या-
  - ळवो = भाग्योदय करना । स्टब्स,

रुस्तर्

-	<u> </u>
CTP.	π

**दीवानी** वि० रुपये और जायदादके इन्साफ़से संबंधित; दीवानी (२) स्त्री० दीवानका काम; वर्जारत(३) राज्यके महसूलका कामकाज (४) दीवानी अदालत ; दीवानी (५) दीवानी अदालतका मुक़दमा **दीवानुं** वि० दीवाना; पागल वीवावसी स्त्री० दीया-बत्ती बीवास स्त्री० दीवार; भीत **बीवावखत** पुं०; स्त्री० दीयावत्तीका समय; सार्यकाल सिलाई बीबासळी स्त्री० दियासलाई; दीया-बीबी स्त्री० दियट;दीवट; चिराग्रदान बीबो पुं० दीया; दीवा; दिया; चिराग़; बत्ती । [**–ओलवाई अवो** ≕ कुलके या किसी समूहके अच्छे आदमीका मर जाना; कुप्पा लुढ़कना । –राज **करवो, राणो करवो** = दीया गुल करना; दीया ठंडा करना.] बीसबुं अ० कि० दिखाई देना; दीखना (२) मालूम होना; सूझना [ला.]। विसत् रहेवुं = आंखोंके आगेसे दूर होना; टलना (तुच्छकारमें).] **दुकान** स्त्री० दुकान; दूकान **बुकानदार पुं**० दुकानदार; ब्योपारी **दुकाळ** पुं० अकाल; काल; दुष्काल; कहत **दुकाळियुं** वि० अकाल-पीड़ित **बुलडुं न०** दुःख; दुखड़ा (२) वारना; बलायें लेना [(लेना) **दुसन्तां न**०ब०व० वारने; बला<del>बें</del> **दुल्लणुं** न० दुखना; कष्ट होना (२) प्रसवके पहले पेटमें होनेवाली पीड़ा (३) वारना

**हुज्ञबबुं** स॰ कि॰ देखिये 'दुखाववुं'

**दीठ** अ॰ प्रति; फ़ी; पीछे; उदा॰ ' সম বীঠ' **बीठुं** अ० फि० देखा [**बीठानुं सेर** = नजारके सामने कुछ बने इसपर एतराज होना। --पडवुं == इक्जत जाना (२) रुकना; बंद होना.] **बीबार** पुं० व० व० मुखाकृति; कांति **बीचे रासवुं** <del>=</del> लगातार किये जाना; आंख मूंदकर किये जाना पीन न०;पुं० दीन;मजहब (२) कोई भी धर्म **दीपटो** पुं० तेंदुआ बीपमळ स्त्री० मंदिरके आगे दीप जलानेके लिए बनाई हुई लाट या मीनार; दीपस्तंभ **दीपचवुं** स०कि० देखिये 'दीपाववुं' **दीपवुं** अ० कि० प्रकाशित होना; चमकना (२) शोभादेना; फबना; स्तिलना [ करना **दीपाववुं** स० कि० चमकाना; रोशन **दीवदो** पुं० दीपक; दीया [मीनार **दीवादांडी** स्त्री० रोशनी-मीनार;दीप-**बीवान** पुं० वजीर; मंत्री;दीवान(२)

फरवो, सठवो = दुर्देव आना; सुरा

सीगर वि० (२) अ० देखिये 'दिगर'

हाल होना; दशा विगड़ना.]

**रीकरी** स्त्री० पुत्री;बेटी **वीकरो** पुं० पुत्र;बेटा

- राजसभा; कचहरी; दीवान (३) बड़ा कमरा (४) प्रकरण; परिच्छेद (५) गज्रल-संग्रह; दीवान
- **दीवालकानुं** न० दीवानखाना; बैठक **दीवानगीरी** स्त्री० दीवानका काम; वर्षारी
- **धीवानापणुं** न० थागलपन; दीवानापन

<u>F</u> u	Ť.
•	•

शूच **दुक्स्ती स्त्री॰ दुरुस्ती; मरम्म**त **दुर्लंश** न॰ लापरवाही; उपेक्षा (२) वि० बेखबर; बेपरवाह **हुलारी** स्त्री० लाड़ली बेटी; दुलारी **बुलारो** पुं० प्यारा पुत्र; दुलारा दुवा स्त्री० दुआ; आशिष। [--देवी≂ दुवा देना.] [(२)दुहाई; जान **बुवाई** स्त्री० दुहाई; घोषणा; मुनादी बुविधा स्त्री० निष्चयका अभाव ; दुबिया **दुशालो** पुं० दोशाला **बुङ्मनाई, बुङ्मनाबट, बुङ्मनी स्त्री**० दुरम्नी ] दुष्काल **हुब्काल(–**ळ) पूं० अकाल; काल; **बुष्काल(--ळ)निवारण** न० दुर्भिक्षका दुःख-निवारण; 'फ़्रेमिन-रिलोफ़' **दुहो** पुं० एक मात्रिक वृत्त; दोहा दुंगो पुं० चोर **ब्ंब** स्त्री० तोंद **बुंबाळ(--ळुं)** वि॰ तोंदवाला; तोंदीला **बुंबाळो** पुं० तोंदवाला देव; गणेश बू वि० दो (समासमें ) ; दुगुना (अंकोंमें ) **दूओ** पुं० देखिये 'दूरी ' दूक्षणुं(−तुं)वि०(२)न० दुधार(मदेशी) **दूझवुं** अ०कि० दूघ देन<u>ा(</u>२)चूना; टपकना दूणवुं स० कि० सताना; संताप देना दूत पुं० दूत; संदेशवाहक(२)जासूस **बूती** स्त्री० दूत स्त्री(२)दूती; दूतिका **दूतुं** वि० धूर्त दूभ न० दूघ (२) वनस्पतिका दूघके रंगका निर्यास; दूध। [-आपवुं, बेबुं 🛥 दूष देना (गाय, भैंस आदिका) (२) फ़ायदा पहुँचाना; लाभ करना । -मेळववुं = दूच जमाना । दूचे बोईने आपवुं = दियानतदारीसे (आदरपूर्वक)

पीड़ा होना हुसाववुं स० कि० पीड़ा देना; दुखाना (२)पके घाव या फोड़े आदिको छूकर पीड़ा पहुँचाना; दुखाना वार्थकरूप **दुकागव्युं** स०कि० दुखाना;'दुखव्'का प्रेर-**दुकावुं** अ० कि० दुखना; पीड़ा होना **दुक्तावो** पुं० दर्द; पीड़ा; वेदना **दुक्लियार्व, दुक्लियुं, दुक्ती** वि० दुस्लियारा; दुसिया; दुसी **हुनावुं** अ० कि० साने-पीनेकी चीउका चूल्हेपर जलने लगना; जलना; दग्ध होंगा (२) मनमें जल्लना; कुढ़ना 🕂 🛉 वि० धूर्त; चाल्बाज **दुवारो** पुं० दूधका व्यापारी; दूधवाला **दुवाळ(--छुं)** वि० दुधार;दुवैल(ढोर) **दुनिया स्त्री० दुनिया; संसार । [--पार करवुं** = लोकव्यवहारमेंसे जिकाल देना: संसारकी नजरमें गिराना (२) मार बालना; दुनियासे उठा देना.] **हुनियादारी स्त्री० संसारका व्यवहार**; दुनियादारी [ दुनियाई **सुम्यवी** वि० दुनियाका; सांसारिक; **हुपट्टो पुं**० कंधे पर डालनेका कपड़ा; [ अधियाना दुपट्टा **हुभागवुं** स० कि० दोसे भाग देना; **हुभाववुं** स० कि० देखिये 'दूभववुं' **हुआवं** अ० कि० दुखी होना; मनमें जलना; दुःखी-भाराज होना **दुभाषियो** पुं० दुभाषिया **दुमकलात** न० देखिये 'डुमकलास' **दुरस्त** वि० जैसा चाहिए वैसा; ठीक; **दुक्स्त** (२)ठीक किया हुआ; मरम्मत किया हुआ; दुश्स्त (३) उचित;

वाजिव; दुरुस्त

हुलपुं अ० फ्रि० दुझना; दर्द करना;

For Private and Personal Use Only

-	 _
	1.5
ж.	 
-	

1.14

a	
देना; वापस करना। - वांधी थोरा	बूंटी स्त्री॰ देखिये 'बूंटी '
काठवा = बालकी साल सींचना;सुचड़	<b>बूंटो</b> पुं० देखियें 'बूंटों '
निकाल्लना । <del></del> मां ने बहीमां पग राखवा	बूंडुं न० देखिये 'डूंडुं '
⇔ बेपेंदीका लोटा; दो नायों पर पैर	बुष्टि स्त्री० नखर; दृष्टि(२)देखनेकी
रखना ]	गक्ति; दृष्टि(३)[ला.] व्यान; जित्त
दूबवाक पुं० खीर [हुआ(बच्चा)	(४)दृष्टिकोण। [-पद्यीं=नजर पड्ना;
<b>दूबपीलुं वि० दू</b> घमें मुँह डुबाकर मारा	दिलाई देना (२) (कुंडलीमें) आहुका
<b>वूचभाई</b> पुं० जिनके बाप अलग मगर माँ	असर होना ।वेसवी ≕नजार स्वयना.]
एक ही हो ऐसे भाई [(२)दूधके दौत	<b>वेकारो</b> (दें) पुं॰ 'मारो, <b>गकड़ो</b> ' ऐंसी
<b>दूषिया</b> वि० पुं० २० व० दुधिया (दौत)	पुकार; हल्ला–पुल्ला; हुकार
<b>दूषियुं वि०</b> देखिये ' दुषाळ' (२) दूधके	बेचतानी जांचमां बूळ नाचवी = अनुमवी
रंगका; दुधिया; सफ़ेद (३) नया;	की औखमें घूल ज्ञोंकना
ताखा; शुरूका; कच्चा; उदा०	देखती आंखें ≔ जान-बुझकर
' दूषियुं लोही '(४)न० लौकी	देखरेख स्त्री० देख-रेख; निगरानी
<b>दूवी</b> स्त्री० लौकी; घिया; कद्	देखवुं स॰कि॰ देखना
<b>दूपट</b> वि० दोहरा; दुगुना	देसा स्त्री० दिसाई देना; दृष्टियोथर
<b>बूबळी स्त्री</b> ० 'दूबळा' की या उस	होना। [देबी=दिखाई देना; देखनैमें
जातिकी स्त्री	रु।तः। [—दया → एरलाइ प्रता, पलपन आना.]
<b>हूबड्डूं</b> वि० दुबला; कमजोर	बेसाइ पुं० देखिये 'देखाडो '
दूबळो पुं० भीलसे मिलती-जुलती एक	वेसाडवुं स॰ कि॰ 'देखवुं' कियाका
<b>जातिका अ</b> ग्दमी (२) आधा गुलाम जैसा	प्रेरणार्थंक रूप; दिखामा; दिखलामा
(सुरतको ओरका) किसानकाँ चाकर	
<b>बूमबब्</b> स॰ कि॰ दुःसी करना; दिल	.(२) औंस, हाथ, सोंटा मादि दिसांकर
जलाना	डराना (३) मैथुनके छिए मादा और
दूमवुं अ० कि० देखिये 'दुमायुं'	नरको इकट्ठा करना(पशु); जोड़ा
दूमों पुं० देखिये 'डूमो '	लगाना, सिलाना । <b>दिसाडी देवुं =</b> ओ
हूर वि॰ दूर; जो दूरहो; अलग(२)अ०	गुप्त हो उसे खुला करना (२) अपने
बन्निक अंतर पर; परे; दूर । [बेसवु	प्रभावका परिचय कराना; खोर
=(स्त्रीका) रजस्वला होना (२) अलग,	दिखानाः] [दिखानाः; वताना
जुदा होना.]	देखाडो पुं० दिखाया; आडंबर (२)
<b>दूरबीन न</b> ० दूरदर्शक यंत्र; दूरबीन	वेखावेखी स्त्री० अनुकरण (२) अ०
दूरी स्त्री० दो बिदियोंवाला ताराका	अनुकरणके रूपमें; देखादेखी
ेंपंद्ता; दुक्की; दूरी	बेखाव पुं०दृश्य; नखारा; देखाव(२)
<b>दूरदेश</b> वि॰ दूरदेश; बुद्धिमान्	आकार;आकृति;रूप (३) दिखाबा;
दूरेंदेशी स्त्री० दूरदेशी; दूरदशिता	माहंबर [ला.]
बूंगी पुं० चोर	<b>देलावडूं</b> वि० सुंदर; रूपवान

•	٠
য	T
	٠

वेषु	२५८ बोर
<ul> <li>बेषुं</li> <li>बेषुं स०कि० देना(२)पीटना; ठोंकना [ला.] (३) बंद करना; कीठँगाना देषुं न० कर्ज; देना; ऋण</li> <li>देशकाल (-ळ) पुं० देश और काल (२) दो परिमाण - दिक् और काल (२) दो परिमाण - दिक् और काल (२) दो परिमाण - दिक् और काल (२) दो परिमाण - दिक् और काल (२) देशाचार; आचार-व्यवहार [ला.] देशवाझा स्त्री० स्वदेशके लिए अनुकंपा; देश-प्रेम</li> <li>देशनिकाल पुं० निर्वासन; देशनिकाला देशपार अ० देशके बाहर (देशनिकाला) देशवाझा स्त्री० स्वदेशके लिए अनुकंपा; देश-प्रेम</li> <li>देशनिकाल पुं० निर्वासन; देशनिकाला) देश-प्रेम</li> <li>देशनिकाल पुं० निर्वासन; देशनिकाला) देशवादार पुं० वेशमें प्रचलित रीत- रिवाज; देशाचार [करना; देशाटन देशावर पुं० अन्य देशमें प्रचलित रीत- रिवाज; देशाचार [करना; देशाटन देशावर पुं० परदेश; देसावर देशी वि० देशका; देश-संबंधी; देशी (२)स्वदेशी; स्वदेशमें उत्पन्न (३) पुं० अपने देशमें रहनेवाला (४) स्त्री० प्राकृत भाषाका एक प्रकार</li> <li>देह पुं०;स्त्री० देह;काया : [-छोडवो, पडवो, मुकवो = मर जाना; देह छोड़ना]</li> <li>देहातवंद पुं० मीतकी सजा; मृत्युदंड देव वि० देव-देवता संबंधी; दैव (२) न० नसीब; भाग्य</li> <li>देवगति; भाग्यका फेर देवयोग पुं० देवयोग; संयोग; इत्तिफ़ाक दोवाब पुं० दोआब; दोआबा</li> <li>दोकडो पुं० रुपयेका सौरा दिहसा; एक नया पैसा (२) बारह टका सुव</li> </ul>	बोड(दॉड,) स्त्री॰ दौड़नेकी किया या वेग; दौड़ बोडकुं न॰ तुरईकी ज़ातकी एक सब्बी बोडयान, बोडमार (दॉ) स्त्री॰ दौड़ा-
(३) अंक; 'मार्क' [स्यान [ला.] <b>बोव्यस</b> न० दोअख(२) दुःखोंसे परिपूर्ण <b>दोट स्त्री० दौड़नेकी किया; दौड़</b>	<b>बोबळुं</b> वि० देखिये 'दोदरुं ' <b>बोपट</b> वि० दोहरा; दुगुना <b>बौर</b> (वॉ) पुं० दौर; अमल; अविकार;
बोटंबोटा, बोटाबोट स्त्री० दौड़ा-दौड़ी	सत्ता (२) तड़क-भड़क; दबदबा; रोब

री ।	त्वसाम

245

हाविनी प्राणत्वाम

- बोरबमाम(दॉ) पुं∘ दबदबा; रोब-दाव बोर पुं∘ मोटा रस्सा (२) पतंगकी डोरी; डोर
- बोरबी स्त्री० पतली रस्सी; डोरी
- बोरडुं न॰ रस्सा; रस्सी
- दोरडो पुं० तागा; घागा; ढोरा(२) अभिमंत्रित -- पढ़ा हुआ घागा
- दोरवर्णी स्त्री० मार्ग दिखाना; रहनुमाई (२) गुप्त सीख या सलाह; पट्टी; कान मरना
- **दोरववुं** स०कि० हाथ पकड़कर चलाना; रास्ता दिखाना(२)टाँका मारना;सीना
- बोरवुं स०कि० देखिये 'दोरवर्थु'(२) सींचना (लकीर) (३) उरेहना; चित्र सींचना
- **दोरंगी** वि॰ दो रंगोंबाला; दोरंगा (२) तरंगी; चंचल [ला.]
- कोरी स्त्री॰ रस्सी; डोरी (२) पतंगकी पतली डोर(३)लगाम; काबूमें रखनेका उपाय; डोरी [ला.] (४) कुछ नापनेकी डोरी या फ़ीता। [-ताणी राखवी == नियंत्रण, दाब रखना; बसमें रखना.]
- **बोरीसंचार (- रो)** पुं० कठपुतलीके खैलमें डोरी हिलाकर पुतलियोंको नचाना (२) पीठ पीछे चाल**वाजी** करना या चाल चलना {ला.]
- **बोरो** पुं० डोरा; धागा (२) गलेका एक गहना (३) करधनी; तगड़ी; कंदोरा(४)मंत्रित डोरा; मंत्र-सूत्र। [-बांधवो ≕ मंत्रित-पढ़ा हुआ डोरा बांधकर रोगादिका निवारण करना.]
- **क्षेरोवागो** पुं० मंत्र-सूत्र;मंतित डोरा; पढ़ा हुआ डोरा
- बोलत(दॉ) स्त्री० दौलत; घन

बोल्तमंद, दोल्त्वान(दो)वि० दौल्तमंद

- बोलुं (दाँ) वि॰ भोला; सीमा (२) उदार प्रकृतिवाला; सखी
- र्षे पर नहारागाला, तथा बोवडा (-रा)वर्षु (दो) स॰कि॰ 'दोह्तुं' कियाका प्रेरणार्थक; दुहाना
- रोशी पुंध बजाज (२) एक अल्छ
- बोच पुं० दोघ; मूरू; खता (२) खामी; न्यूनता; दोष (३) गुनाह; जुर्म(४) लाछन; दोष (५) पाप। [--साढवो व्य खुचढ़ निकालना; दोष दिसाना। -- देवो च तोहमत लगाना (२) उल्हना देना. ]
- बोहरो पुं• दोहा
- बोहवुं स०कि० दुहना(२)किसी चीचका सारभाग निचोड़ लेना; कस सींच लेना; चुसना [ ला, ]
- बोहितर पुं० वेटीका वेटा; नाती; दोहता (२) मृतकके पीछे बटि जानेवाले
- दूधमें आटा सानकर बनागे हुए सहू बोहित्र पुं० बेटीका बेटा; दौहित्र; दोहता बोह्यलुं वि० कठिन; मुष्किल; तुष्कड़
  - (२) न॰ दुःख; संकट
- बोंगाई स्त्री० धूर्तता; चालवाबी
- बोंगुं वि० धूर्त; कपटी(२)वेअदव; उद्धत
- ग्रंथ पुं० तरल होना; द्रव (२) किसी चीज्रका तरल रूपांतर; पिधला हुआ रस; द्रव
- डवर्षुं अ० कि० तरल होना; पिघलना; गलना (२) चूना; टपकना; बहना (३) दयाई होना; पसीजना [ला.]
- बाक्त स्त्री० दाख; द्राक्ष
- द्राव पु॰ घोल; द्रव; किसी पदार्थका तरल रूपांतर
- द्रावक वि० गलाने, पिघलानेवाला; द्रावक (२) न० सुहागा; द्रावक

द्रावण न॰ तरल रूपतिर; द्रव; मोल

ब्राविडी जागायाम पुं० द्राविड प्राणायाम

1

### 250



#### च

- भ पुं० 'त'वर्गका -- दंतस्थानीय वौद्या स्थंजन
- अक स्त्री ज्यास (२) जोग; उत्साह (३) त्वरा; जल्दी (४) घ्यान
- धक्षक्य ये कि० देखिये 'धगधगवु'
- वदायषुं स०कि॰ घकेलना (२) बोरोंकी तैयारियां करके आगे चलाना (काम) घकेलवुं स० कि० बकेलना; धक्का देना; ठेलना; ढकेलना (२) लाप-रवाहीसे यों ही आगेको ठेलते जाना;
- बिना सोचे-समझे चलाये रखना कार्कावका, बक्कालक्षी स्त्री० बक्कमधक्का (२) भीड
- वकामुक्की स्त्री० धवकामुक्की
- वत स्त्री॰ देखिये ' घक '
- धक्षधक्तवुं अ० कि० गुस्सा होता; कुढ़ता; मन ही मन जलना; प्रसोसना धक्तवर स्ती• रटन; धितन; खठका वक्षयुं अ० कि० वति तन्त्र होना; बह-

कना; धषकना (२) [ला.] गुस्सा होना ; कुढ़ना(३)स॰कि॰ उलहना देना बज्ञारो पुं० घाम; गरमी; तपन (२) बातुरतापूर्वक रटन; बार-बार याद करना षगषग अ० वधकते हुए (जोरोंसे जलना) षगवगर्ष अ० कि० घघकना; दहकना (२) खुब गरम होना षगवुं अ० कि० देखिये 'घखवुं' मगझ स्त्री० ओश; उत्साह; प्रेम षज्य वि० श्रेष्ठ;धुरीण (२) मजजबूत; टिकाऊ; पक्का (३) जोशीला षजा स्त्री॰ धजा; व्वजा; इंडा; निशान । [ --बांधवी = झंडा लहराना (२) कीर्ति फैलाना; रोशन करना (३)गुप्त बात फैला देना.] षज्रापताका स्त्री० व्यजा

- घड न० विना सिरका शरीर;घड़(२) नीर्वे; बुनियाद; मूल; आधार [ला.] (२)अ०धड़से। [--वईने = धड़से;झट.]
- **भडक**.स्त्री० पड़कन; धड़क(२)डर। [—पे**सवी**, स्रागवी ≕ डरना.]
- भडेकवुं अ० कि० घड़कना; धकषकता भडकार (--रो)पुं०' धड़ ' की आवाज; धड़कन
- **ধৰমত** অ০ ঘড়-ঘড়
- भडमडाट पुं० 'घड़-घड़ 'की आवाज; घड़-घड़ (२)अ० घड़से; घड़ाघड़ घडंघडा स्त्री० सारपीट; मारामार
- भडाकावंभ ज॰ धड़ाकेके साथ (२) धड़ाकेके; सटपट; फरटिसे

-	

पनातो

**भवाको** पुं० धड़ाका; मोर सब्द (२) वारको ही मिले ऐसी (हंडी); वनीके सुमभेवाला चौंक उठे ऐसी नयी, विचित्र नाम सिक्सी हुई बात या धटना (३)कारूचक; गर्दिशे बणीधोरी पु॰ बनी-बोरी (२) इक्षक अमामा। [--मारको = अल्दीसे काम धणीरणी पुं० मालिक; मनी-घोरी निबटना;झटपट कर बालना.] **धर्णमाही, धर्भणी स्त्री०** दनवनाना बहाबह अ० धहाबड़; धड़ाकेसे पतिम न॰ हंगामा; उपहब (२) डोंग; भवी स्त्री० एक तौल या वखन(२) ं व्यर्वकी घूम-घाम पासंग; वड्रा धतूरो पुं० एक वनस्पति; धतुरा बडो पुं० तराजूका समतोल न होना ववरावयुं स॰ कि॰ खुद उलहना देना (२) तराजुमें समतोछन लानेके सिए षधणावयुं स॰कि॰ दनवनाना 👘 [धार रला जानेवाला भार; पासंग; बढ़ा बमूबो पुं० मोटी धारायें गिरना; मोटी (२) बोध; सबक़ (४) नियम; थन अ० धन्य;धन (प.) अमाण; सीमा; हव; माप (५)गणना; भन न० थन; दौछत (२) समुद्धि क्रम ; इरुक्रत ; हिसाथ [ला.] । [--करबो (गोधन; विधाधन) (३) धन (राष्ट्रि) 🛥 धड़ा करना (२) क़द्र करना ।--स्तेवो = कोष ग्रहण करना; सील, सबक चनचन ७० कृतकृत्य; घन्य लेना । --होवो ≕ तराजूके पलढ़े सम-धगारक (--स) पुं० धनराधिका सूर्य तोल न होना (२)कुछ प्रमाण या मनुर पुं० मनुवरिः; मनुकवाई नियम होना; हद होना.] भपनुं अ०कि० धपना धण न० धन; गोधन; (गायोंका) सुंड कम्मो पुं० धप्पा; थप्पड़; धप षणघणवुं अ० कि० थन-दन सम्ब होना; धब अ॰ भन; धप (आवाजा) (२) दनदनाना (२)काँपना शूम्प; ठप; दंद(३)घप्पा लगानेकी भजवणाट पुं० 'दन-दन 'की आवाज নাৰাজ; ধণ वणियाणी स्त्री० पत्नी (२) मालकिन भवक स्त्री० धड़कन; धकधकी मणियातुं वि० जिसका धनी-मालिक हो **भवकन्ं स**० फि० भड़कना (२)मालिकीका धवकारो पुं० स्पंदन; धड़कन; धडुका **धणिया**पुं न० स्वाभिस्व; मालिकी धवडको पुं० सारा काम यकायक वेकार पणियामो पुं० सेतीमें काम करनेवाले जाना; घोटाला होना; पानी फिर चाकर('दूबळा')का मालिक जाना; चौपट होना षणी पुं० वनी; मालिक; स्वामी(२) षद्यवुं अ० कि० पिरना (२) [छा.] पति (३) वि० मालिक; उदा० ' अर्गु दिबाळा निकाळना (३) मर जाना । कोई धणी नथी'। [--करबोे ≕ पुन-थिबी वर्षु = भर जाना; बेर हो जाना विवाह करना; किसीके घर बैठना.] (२)[ला.] गहरी नींदमें पड़ना.]. षणीकोग वि०, (--गी) वि० स्त्री० खरी-मबाको पुं० घोर सब्द; धमाका; घब

चित्रेय मनः	२६२ धरवर्षु
वबाय नवः न० मटियामेट होना; पानी	भमवुं स० कि० भाषी पलाना; धमना;
फिर जाना; चौपट हो जाना	बॉॅंकना (२) आगको हवा करना;
विकेषुं सं० कि० हावसे पीटना (२)	फूँकना; जलाना (३)आँचसे बराबर
ठगना; घोखा देना	तपाना (४) ठगना; चुरा लेना
<b>भवोभव</b> अ० धडाधड़; लगातार	<b>बनाचकडो</b> स्त्री० देखिये 'धमचकड'
भन्नो पुं० देखिये 'धप्पो'(२)धन्ता; दाग	• भगाषम(-मी) स्त्री० घमघम(२)
भगक स्त्री० वेग; जोश(२)तेज; दमक	मारामार; मारपीट (३) इल्ला-गुल्ला
(३) तड़क-मड़क; ठाट-बाट	<b>भनारू</b> स्त्री० धमाल; धमाचौकड़ी
<b>भगवाचुं अ</b> ० कि० गरजना (२) कपिना	• <b>मनालियुं</b> वि० घनारिया; धाँघली
(३) जनकना; दमकना	षमावनुं स० कि० 'धमवुं' कियाका
धनकार, भनकारो पु० 'घम'की	प्रेरणार्थक रूप (२)ठगना; चुरा छेना
बाबाख; धम(२)वेग; जोश	धर स्त्री० तृष्ति; संतोष (२) यक़ीन
वनकावयुं स० कि० धमकी देना; धम-	भर स्त्री० (गाड़ीका) जूआ; कंधावर
कामा; डरामा (२)डॉटना	(२) बैलको पहले-पहल ओतनेसे
<b>वमकी</b> स्त्री० घमकी; डर	लेकर गिने जानेवाले उसके वर्ष (३)
<b>भवचकड स्</b> त्री० धनाल; धनाचौकड़ी	शुरू; मूल; घुर
(२) गरारत; अषम	<b>जरसम</b> वि० जिस पर किसी कार्यका
<b>बनज</b> स्त्री० भाषी; धौंकनी	भार हो; मजबूत; धुरीण; भारी
<b>चमचम</b> अ॰ घम-घम	(२) प्रवीण
बमबमब् अ० फि॰ 'घम-घम' आवावा	<b>वरवडीची अ० शुरूसे;</b> धुरसिरसे
होना (२)काँपना (३)बहुत गंमें होना	वरछोब स्त्री० रियायत; छूट (२) तोड़;
वनवनाट वि० तीला; चरपरा(२)	समझौता
पुं० 'धम-धम 'की आवाज; धम-धम	भरणुं न० धरना; ढई
(३)रोब; दबदबा; आतंक(४) ठाट-	भरती स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन ; घरती ।
बाट; तड़क-भड़क (५) तीलापन	[ <b>-मां पैसी जर्दु =</b> अत्यंत लजिजत
बमबमाववुं स॰ कि॰ 'धमघमवुं'	होना; जमीनमें <b>गड़</b> जाना.]
कियाका प्रेरणार्थक रूप (२) घमकाना	धरतीकंप पुं० भूकंप; भूचाल; भौंबाल
(३) [ला.] जोशसे काम चलाना;	<b>बरपकड</b> स्त्री० घरपकड़(२) <b>बार-बार</b>
कोई काम वेगपूर्वक और खूब करना;	गिरफ़्तारी
रगड्ना	<b>धरपत</b> स्त्री० तृष्ति; संतोष (२) धीरज;
<b>बनमोकार</b> अ० पूरे वेगसे; घड़ाकेसे	विश्वास ।[वळवी = अधाना; संतोष
ममपछाड स्त्री०, (-डा) पुं० ब० व०	होना (२) यक़ीन होना.]
शरारंत और अधीरता (२) उछल-	भरवर्षु स०कि० तृप्त करना; छकाना;
कूद; छटपटी	अधवाना (२)ठूँसना

	<u> </u>
979	1100

**२१**३

षाज्यायु

- धरबोळ न० प्रलय; सत्यानास ।[-अवुंच तबाह होना; मटियामेट होना; भूल उड़ना.]
- **खरम**्पुं० देखिये 'धर्म ' **भरमचरको** पुं०व्यर्थका फेरा; धरमधक्का
- भरमूळ न० शुरू; जड़मूल; धुरसिर भरम पुं० संतोष; तुप्ति
- भरवयुं स० कि० तृप्त करना; अधवाना
- बरबुं स० कि० घरना; यामना; पक-ड़ना; रखना (२) घरना; पहनना (३) धारण करना; घरना (वेष; जन्म) (४) पासमें रखना; पेश करना; आगे रखना करार अ० जरूर; अलबत्ता (२) बिल-कुल; साफ़
- अरार पुं० वाहनमें जुभेको तरफ़ ज्यादा बोझ होना; उलारका उलटा
- धरावर्षु स॰कि॰ 'धरवुं' और 'घरावुं' कियाका प्रेरणार्थक रूप (२) नैवेद्य करना; देवके आगे घरना [छक्तना धराषुं अ॰ कि॰ तृप्त होना; अघाना; बरी स्त्री॰ (पहियेका) घुरा; अख (२) पृथ्वी या खगोलका अक्ष; उत्तर और दक्षिणको जोड़नेवाली कल्पित रेखा; अक्ष [हुए छोटे पौदे; पौद; पनीरी घर न॰ उखाड़कर रोपनेके लिए उगाये घरबाडियुं न॰ पौदकी क्यारी; पनीरी घरो पुं॰ गहरा गड्ढा (खासकर पानीका); दह
- **धरो** स्त्री० दूब;दूर्वा
- धर्म पुं० धर्म (२) शास्त्रोक्त आचार; धर्म (३) पुण्य; दान (४) धर्म; फ़र्ज; कर्तेव्य (५) एक पुरुषार्थ; धर्म (६) गुण;स्वभाव; प्रकृति (७) धर्मराजा
- **धवडा (–रा)वच्ं** स० कि० ' धाववुं <sup>1</sup>का प्रेरणार्थक; दूघ पिलाना ;अखिल देना

भवा स्मी॰ तंदुवस्ती; शक्ति (२) अच्छी दशा। [--बळवी == आरोग्य, शक्ति आदि पुनः प्राप्त होना.] [ बढ़ना घसवुं अ० कि० वेगसे आगे बढ़ता; धसारो पुं० हल्ला; हमला धंतर न० जादू (२) ठगनेकी कला **थंतरमंतर** न० जंतर-मंतर; जादू-टोना **षंतूरो** पुं० घतूरा भंभाबार वि० पेशेवाला; घंघेवाला (२) उद्योगी (३) पुं० व्यापारी (४) कारीगर; हुनरमंद **धंचावारी** वि० पेशेवर; रोजगारवाला (२)स्त्री॰ धंधा; रोखगार; उद्यम गंगो, पुं० धंघा; उद्यम; रोजगार; प्रवृत्ति(२)न्पापार [ व्यवसाय **मंधोरोजगार** पूरु घंघा और रोजगार; षा पुं०; स्त्री० मददके लिए पुकार; दुहाई;गोहार (२) हाय। [-नासमी == मददके लिए पुकारना.] धाई स्त्री० स्तन धाक पुं०;स्त्री० धाक; डर(२)अंकुश; दबाव (३) बहरायन। [-अवबबा, (--वी) -- बहरापन टलना । -- बेसवी ≕ धाक जमना.] धागडी स्त्री० चीधड़ोंकी गुदड़ी; कथरी भागो पुं० फटा-पुराना कपड़ा; लाट; चिथड़ा; गूदड़ (२)धागा; डोरा चाटी स्त्री० रीत; ढब; शैली माह स्त्री० हाकुओंकी टोलीका छापा; धाड; बाकाजानी (२) घाता; छापा (मारना) (३) उतावली [ला.]। -मारबी = बड़े शौर्य या पुरुषार्थका काम करना;तीर पकाना [ला.].

भारपाडू पुं० डाकू; ठुटेरा

_	4	•		1	Ŀ
	1	R.	ŝ	1	ľ.
			-	-	s

मार्चु

सारियं, बाढुं न० वादमियोंका खमाद; मजमा; भीड़ बाजा पुं० ब० व० धनिया; धाना धाली स्त्री० सील; लाजा; लावा धात स्त्री० वीयं; धात (२) कोष्ठक; खाना [आना बात द्वं व० कि० अनुकूल होना; रास धान न० अनाज; धान्य बाप स्त्री० उतावलीमें होनेवाली भूल-चूक; धोसा (२) घोसा; छल (३) घोरी [ला.]। [-आपबी, देवी = घोसा देना; छलना। - साबी = छला जाना;

घोखा खाना । —मारधी ≕ उचककर ले जाना.]

**धावडर्षु** स० कि० छलना; गाहकोंसे उचितसे अधिक दाम लेना;ठगना

**धाबळ (--ळी)**स्त्री०पतला घुस्सा; कंबल **बाबळो** पुं० मोटे ऊनका घुस्सा

भार्मु नॅ॰ (मकानकी) पक्की छत; धावा (२) धब्बा; दाग्न (३) (दूधका) हंडा

- भामच स्त्री० एक प्रकारको मोटा सौंप; बामिन चिहल-पहल; बूअ-घाम
- षामित [चहल-पहल; घूम-घाम बामजूम स्त्री० खोरोंकी सैयारी; धूम; धामो पुं० लंबे अरसेके लिए पड़ाव
- भार स्त्री॰ तल्वार आदिका तेज किनारा;बाढ़;धार(२)धार;धारा; दरेरा (३) किनार; छोर। [-पर रहेषुं = आन-जोसोंकी दशार्में या कड़े . अधिकारमें रहना.
- भारभ न० धरनेकी क्रिया; धरना; षारण (२) आधारभूत होना या बनना;अवलंबन;धारण (३) स्त्री० आचार(४)धीरज(५)धरन;शहसीर (६)षड़ा;पासंग
- भारणा स्त्री० धारणा; मनसूबा (२)

कस्पना; धारणा (३) याददावद; भारणाशक्ति (४) ग्रहण करलेकी किया; घारणा

- बारबार वि० धारदार; धारवाला
- धारबुं स० कि० मान लेना; कस्पना करना (२) धाहना; इच्छा करना (३) अनुमान करना; अटकल लगाना (४) ठानना; (मनमें) तय करना। [धारीले जोबुं = ध्यानपूर्धक, टकटकी लगाकर देखना। धार्युं करचुं = अपने मनकी करना; इच्छित, मनमाना करना.]
- भाराधोरेच न० कायदा, नियम आदि घारापोथी स्त्री० कानूनकी किताब; 'कोड'

धाराझास्त्री पुं० वकील; झानूनवां धारासभा स्त्री० झानून वनानेवाली सभा;विधान-सभा;व्यवस्यापिका सभा धारियुं न० एक घारदार हथियार धारो पुं० रिवाज; घाल; प्रथा(२)झानून धार्युं वि० इच्छित; (मनमें)ठाना हुवा;

तय किया हुआ (२)न० घारणा;संकल्प बालावेली स्त्री० भारी अधीरता; उत्तावली; बेसबी

षाव स्त्री॰ घाय; उपमाता

- **মাৰণ** ব০ নাঁলা হুম; হুম
- धावणी स्त्री० चट्टू; चुसनी
- षावणुं वि० दूषपीता; दूधर्मुंहा (२) उस उम्रका (बच्चा) (३)न० दूष-पीता बच्चा
- **भाववुं** स०कि० स्त्री या मादाका दूध पीना; स्तन पीना;चोखना
- धार्षु अ०फि० दौड़ना; मददको दौड़ना; धाना [प.] (२) रोगका एकदम फैल जाना; उदा० 'तेने घनुर्वा धायो छे'

1 State 1	

चुनाचु

	र६५ जुमानु
पान्न(-स)को पुं० देसिये 'धासको'	भुपकेसे । [-रहीने = जाहिस्ता; धीरेसे
भारती स्त्री० दहशात; डर। [जायबी,	(२) युक्तिपूर्वक (३) चुपकेसे;
<b>वेणी, देलाडवी, वतावची = उ</b> राना;	ચુપચાવ.]
डर दिखाना.] [गड्बड़; ऊषम	षीर दि० वैर्यदान;अडिग;दृढ़; षीर
षाथल (-ळ) (०) स्त्री०; न० धांभल;	(२) गंभीर; शांत; घीर(३)स्त्री०
मामलि ( – ळि ) युं वि० यांघली ; ऊघमी	वैर्य ; भीरज (४)यक्रीन ; प्रतीति
विकावयुं स० कि० खूब गरम करना;	भीरभार स्त्री० महाजनी; साहूकारी
तपाना; थिकादा (२) धभकामा	<b>भीरणुं</b> स० कि० भरोसा <b>रस</b> ना;
विषकारषुं स० कि० विक्कारना	विक्वास करना (२)भरोसे पर सौंपना
धिगाणुं न॰ जोरोंसे छिड़ी हुई लड़ाई;	(३) उघार या सूद पर देना; कर्ज
दंगा मुक्ती	देना; उघार देना
षिगामस्ती स्त्री० घींगाघींगी; घींगा-	भीदं वि० भीमा (२) भीर; धैर्ययुक्त
षिगुं वि० धींगड़ा; मोटा; मजबूत	मीरे, मीरेनी, भीरे भीरे अ० आहिस्ता;
भीकडी स्त्री०, (बूं) न० हलका	धीरे-धीरे; होले-हौले
ज्वर; हरारत	र्षीयाणुं न० देखिये 'धिंगाणुं'
वीकतुं वि० धषकता हुवा (२) जोरोंसे	धौंगामस्ती स्त्री० देखिये 'धिगामस्ती'
षलता हुआ; फलता-फूलता [ला.]।	भींगुं वि० देखिये 'चिगुं'
[ बीकती संगढी = खूब चिंताका	भुजारी स्त्री०, मुआरो पुं० कॅंपकॅंपी;
विषय; जलती आग; बरुाजान.]	सिहरन [कारना
<b>षीकवुं</b> अ० कि० घघकना ; बहुत जलना	<b>घुतकारवुं</b> स० कि० दुतकारना; धुत-
<b>मा तपना। [धीकतो मंघो =</b> बढ़ता	भुतारी स्त्री० ठगनी; घूर्त स्त्री
हुआ या चलता धंधा.]	<b>मुतारं</b> वि॰ धूर्त; घोसेबाज
भीट वि० सहनशील (२) निडर;ढीठ	<b>भुताचुं</b> अ० कि० 'घूतवुं' कियाका कर्मणि
<b>भीवकारो</b> पुं० 'घब-घब' की आवाज़;	रूप; घोखा खा जाना; छला जाना;
धन-ध्व	<b>धुपेल</b> न० सिरमें डालनेका मसालेका तेल
भीवको पुं॰ मुक्का; घूंसा; धप	<b>भूपेलियुं</b> दि० तेल जैसा (२) न०
भीषवुं स०कि० धब-धब मारना; पीटना	तेलहँडा (पात्र)
धीमाद्य स्त्री० मंदता; भीमापन	<b>मुमाडियुं</b> न० चिमनी; घुवाँरा(२)वि०
भीमुं वि० धीमा; मंद; मंथर; कम	जिसमेंसे घुऔं निकले ऐसा(मिट्टीका तेल)
गतिबाला (२) जो उग्र या तेख न हो;	षुसाढी स्त्री० घुआँ। [मा वाचका
धान्त (३) ढीला; धीमा । [-पडवुं =	भरेवा = मिम्या प्रयस्त करना; हवा
गति मद होना (२)कोध शांत होना ।	मुट्ठीमें बांधनाः.]
-पाडवुं = मंद करना (२) ठंका	मुनाडो पुं० देसिये 'घुमाडी'
करना; शांत करना.]	<b>मुमान्</b> अ०कि० जलनेमें घुआ होना
बीमे(०थी) अ० आहिस्ता; धीरेसे;	(२) कुढ़ना; भीतर ही भीतर जलना

_	 _
-	

षोतीचोको

<b>भूनास</b> पुं० भूऐँसे लगनेवाला कचरा;
<b>भुमांसा</b> (दीवार, छत आदि पर)
भुम्मस न० कुहरा; कुहासा [प.]
षुळेटी स्त्री० होलीके बादका दिन;
भुर्लेडी; घुरेंडी
घुंगुं न० झाड़-शंखाड़; झाड़ी
<b>भूंको</b> पुं० घूँसा; धप
भूभवुं अ०कि० आवेशमें हिलना;
अमुआना [प.]
भूणी स्त्री० धुआं (२) (जोगियोंकी)
धूनी । ृ[ <b>जगाववी</b> ≕धूनी जमाना,
रमाना.]
भूतवुं स०कि० ठगना; घोखा देना
भून स्त्री॰ धुन; लौ (२) धुन;मनकी
लहर; सनक (३) सुरका गुँजना;
स्वरभंगी (४) एक प्रकारका गीत; धुन
मूनी वि॰ धुनी; तरंगी (२) तरंगी;
सनकी [धूप (सूर्यकी)
भूष पुं० धूप;गंधद्रव्य (२) पुं०; स्त्री०
भूपवानी स्त्री० धूपदान; भूपदानी
<b>भूपसळी</b> स्त्री० धूपबत्ती; अगरबत्ती
अूषियुं न० धूप देनेका पात्र; धूपदान
भूभ वि० (२) अ० बहुत; भारी (३)
आवेशके साथ; घुनके साथ (४)
स्त्री० द्योर; वमाल; भूम
<b>भूमधाम</b> स्त्री० धूमधाम; धूम
मूळ(ळ,) स्त्री०ं घूल; गर्दे (२)
रास्तेकी रज; खाक (३) निकम्भी,
্নুच্छ चीज; धूल [ ला. ]। [খৰা-
<b>डवी=</b> -के ऊपर घूल फेंकना; नाहक़
निंदा करना (२) –को धमकाना;
उलहना देना । <b>⊸ऊढवी</b> ≕(किसी
स्थल पर)भूल उड़ना; उजह जाना ।
-काही माखवी, खंखेरी काडवी 😄

पुत्रास पुं० भुऐंसे लगनेवाला कचरा;	देना (३) जाने-आनेका नाता सोड़ना।
<b>भुगांसा</b> (दीवार, छत आदि पर)	काबी == झल मारना (२) पछताना
<b>पुम्मस</b> न० कुहरा; कुहासा [प.]	(३)व्यवहृत न होना।पडची ==
<b>बुळेटी</b> स्त्री० होलीके बादका दिन;	(जीवन, बुढ़ापा) धूलमें मिलना ।
<b>भुलेंडी</b> ; धुरेंडी	-बाळवी = धूलमें मिलाना; पानी फेर
षुंगुं न० झाड़-संखाड़; झाड़ी	देना (२) विगाड़ना; नष्ट करना
<b>नुंचो</b> पुं० घूँसा; धप	(३) धुरियाना; गाड़ना; धूलसे ढकना
<b>पूषच्ं</b> अ०कि० आवेशर्मे हिलना;	(४) उपेक्रा करना ]
अभुआना [प.]	भूळम ( को)ट पुं० बगूला; ववंडर
पूर्णी स्त्री॰ धुआं (२) (जोगियोंकी)	<b>बूळवमा स्त्री</b> ० तुच्छ चीज या बात ; बूल
घूनी । ृ[जगावबी ≕धूनी जगाना,	<b>भूळवाणी स्त्री</b> ० बरबादी; धूलधानी
रमाना.]	<b>भूळी पडवो</b> पुं० होलीके बादका दिन;
पूतवुं स०कि० ठगना; घोखा देना	<b>े</b> षुलेंडी
<b>इन</b> स्त्री० धुन; लौ (२) धुन;मनकी	<b>मूंच</b> स्त्री० (आँखकी) धुंध
लहर; सनक (३) सुरका गुँजना;	मूंधकार पुं०; न० धुंध (गर्दकी)
स्वरभंगी (४) एक प्रकारका गीत; धुन	भूंधबाट पुं० जलनेमें धुआं होना (२)
पूनी वि॰ धुनी; तरंगी (२) तरंगी;	दबा हुआ गुस्सा; भड़ास; झुँझलाहट;
सनकी [धूप (सूर्यकी)	कुढ्न
पूर पुं० धूप; गंधद्रव्य (२) पुं०; स्त्री०	<b>घूंघवावूं</b> अ०कि० घुआँना; जलनेर्मे
पूरवानी स्त्री० घूपदान; धूपदानी	धुर्बा होना (२) झुँझलाना; कुढ़ना
पूपसळी स्त्री० धूपबत्ती; अगरबत्ती	वूंसरी स्त्री०, बूंसरं न० जुआ (गाड़ी
पूरियं न० धूप देनेका पात्र; धूपदान	आदिका)
क्म वि॰ (२) अ॰ बहुत; भारी (३)	षूंसो पुं० मोटा भारी कंबल; घुस्सा
आवेशके साथ; घुनके साथ (४)	भोकडी स्त्री०, घोकडुं न० रुईको बढ़ी
स्त्री॰ क्योर; वमाल; थूम	गाँठ (२) काया; शरीर
<b>पूनचान</b> स्त्री० धूमधाम; धूम	धोकणुं न० कपड़े घोनेका डंडा
रूळ(ळ,) स्त्री० धूल; गर्द (२)	बोको पुं० मोटा डंडा; लगुड़ (२)
रास्तेकी रज; खाक (३) निकम्भी,	मुक्का; घूँसा (३) घाटा; नुक़सान
्तुच्छ चीज; धूल [ला.]। [अडा-	(४) देसिये 'धोकणुं' । [ <b>पहोंचवो ≑</b>
<b>डवी</b> =–के <b>क</b> पर घूल फेंकना; नाहक़	नुक़सान पहुँचना; घाटा सहना.]
निंदा करना (२) –को धमकाना;	<b>थोको (–क्सो)</b> पुं० नुक़सान ; घाटा (२)
उलहना देना । <b>⊸ऊढवी</b> ≕(किसी	चिता (३) दगा; घोखा
स्थल पर)भूल उढ्ना;उजड़ जाना ।	<b>भोतली स्त्री० छो</b> टी घोती
काही माखवी, संखेरी काइवी ==	घोतियुं न० घोती
खूब हॉटना (२) जवाबदारी छोड़	<b>वोतीजोटो (वो)</b> पुं॰ घोतीजोड़ा

ञ्चन

-	

- **घोष पु॰ ऊँचाईसे वेगसे गिरनेवाला** ्पानीका प्रवाह; प्रपात
- **भोषमार** अ० मोटी घारसे; मूसलाघार **धोबज** स्त्री० घोबिन; घोबन
- **घोबी** पुं० धोबी । [---मो कूतरो ≕ घोबी का कुत्ता; उठल्लू आदमी.]
- षोयुं वि० ठोठ; बुद्धे (२)न० ईंट; रोड़ा घोबो पुं० मुर्ख व्यक्ति; बुद्ध
- धोम पुं० सूर्ये (२) सूर्यकों तेंख गरमी; तेज धूप(३)कोध । [–धक्सवो = सस्त धूप पड़ना (२) अतिशय कुद्ध होना.]
- भोरेज न॰ मनका मुकाव; प्रवृत्ति (२) (शालाका) दर्जा; कक्षा; श्रेणी (३) पैमाना; प्रमाण (४) पढति; रीति; नियम
- भोरी वि० धुरीण; बड़ा; मुख्य (२) पुं० जोतने योग्य बैरू; घुरीण (३) पुत्र
- थोरो पुं∘ छतकी मुंढेर; मुंढेरा; 'घबूतरेका तकिया (२) पेड़के चारों ओर बनाया जानेवाला मिट्टीका 'चबूतरा (३) खेतकी मेंड
- भोल (भॉ) स्त्री॰ भौल; तमाचा
- बोलाई स्त्री० देखिये 'घोवाई'
- धोवडामण न० धोनेकी उज्प्रत; घुलाई (२) घोनेके बाद बचा हुआ गंदा पानी; घोवन िउज्पत घोवडामणी स्त्री० घुलाई; घोनेकी छोवडादवुं स० फि० घुलाना घोवरामण न० देखिये 'घोवडामण' घोवराववुं स० फि० देखिये 'घोवडायदु' घोबाई स्त्री० घोनेकी उज्पत; धुलाई घोवाच न० (पानीसे मिट्टीका) घुल आना; बहावका तोड़; दरेरा

धोवाचुं अ० कि० 'घोवुं' कियाका कर्मणि रूप; धुलुना (२) (शरीर) क्षीण होना; निचुड़ना

- बोबुं स० कि० थोना । [घोई काढपुं, माखपुं = सस्त मरम्मत करना; पीटना (२)पानी फेरना; निकम्मा कर देना (३) (वृत्तिको) मनमेंसे दूर करना (३) (वृत्तिको) मनमेंसे दूर करना (३) (वृत्तिको) मनमेंसे दूर करना (३) निंदा करना। घोई पीवुं = (किसी चीजको)निकम्मा धरा रहना (२)सिर चढ़ना; कुछ न समझना.] घोळ(घों) पुं०; न० गीतका एक प्रकार घोळखूं(घों) स० कि० चूना पोतना; सफ़ेदी करना। [घोळी आववुं = कार्य सिद्ध करना; प्राप्ति करके आना
- (२) (कटाक्षमें)कार्य-सिद्धि न होना.] बोळाई (धॉ) स्त्री॰ चूना पोतनेकी मखदूरी;पुताई
- षोळां(माँ) न० व० व० पके हुए बाल
- धोळुंधव, घोळुंफर्क(--ग), धोळुंबल (धों) वि० बिलकुल सफ़ेद
- थॉंस(घाँ०) स्त्री० हल्ला
- ध्राज्ञ (--स)को पुं० घड़क; दहशत
- ध्रुजाट पुं०, ध्रुजारी स्त्री० कंप; यर-थराहट;कॅंपकेंपी
- भूजारों पुं० देखिये 'बुजारी'
- धुजाववुं स० कि० केंपाना
- झुसको पुं० रोदन; चदन
- भूजवर्षु स० कि० कॅपाना; हिलाना मुजर्षु स० कि० कॉपना; थरथराना

मस्तिष

=

246

#### न

न पुं० 'त' बर्गका--दतस्यानीय पाँचना व्येजन (२) अ० न; नहीं; मुत नई (न') स्त्री॰ लौकी (बेल) नईंगुं(न') न॰ लौकी; घिया मई तालीम स्त्री० नई तालीम; बुनि-यादी सालीम [ बेशमें [फा.] मकटुं वि॰ नककटा; नकटा (२) नकतो पु० मनकी तरंग; अनुठी कल्पना;धुन(२)नुकता; थिंदी नकरं वि॰ जो महसूलसे मुक्त हो; ी निःशुल्क; करमुक्त(२)मुक्त; निर्लेप (३)लिरा; निपट नकल स्त्री० नकुछ; प्रतिलिपि (२) नक़रु; अनुकरण; स्वांग(वेश, वाणी आदिका) (३) मनगढंत कहानी; मनकी उपज मकली वि० नकली; कुत्रिम; बनावटी (२)पुं० बहुदपिया(३)मसझरा नकशी स्त्री० ननुकाशी; नकाशी मककीकाम न० बेल-बुटे खोदने या चित्र बनानेका काम; नक्काशी नकशोबार वि० नक्काशीदार; नक्शी मकशो पुं० नक्शा; नकशा मकाम् वि० निकम्मा; अनुपयोगी (२) अ० व्यर्थ; अकारण;नाहक़ मकार पुं० नकार **मकारवुं** स०क्रि० नकारना [ रयुक्त नकारात्मक वि० निषेधात्मक; नका-नकारं वि० बुरा;हीन(२)जिही नकूचो पुं० (सॉकल अटकानेका)कोंढ़ा; कुंडा ((जपवास) मकोरडो वि० पुं० नहार; निराहार

# मक्कर दि० जो सोसलान हो; ठोस **नक्कार्य** वि० देखिये 'नकार्र' मक्की वि० भौकस;ठीक;निश्चित;तय किया हुआ; नियत (२) भरोसेका; विश्वसनीय (३) अ० जरूर; अवश्य मक्कूर वि० देखिये 'नक्कर' मक्कोरडो वि० पुं० देखिये 'नकोरडो' नल पुं० नख; नाखून (२) नाखून (पशु, पक्षीका)। [--जेटलुं = बहुत छोटा; सूक्म (२)महत्त्वहीन; नगण्य.] मसराळुं, मसरांसोर, मसरांबाज वि० नखरेबाज मस्तरं न० नखरा; नाज-अदा; हावभाव मबली स्त्री० स्त्रियोंका कानका गहना नसाववुं स०कि० डलवाना नकार्यु अ०कि० 'नालयुं'का कर्मण; डाला जाना (२) दुबला हो जाना; निचुड़ना मलियुं न० नाखून काटनेका एक साधन; नहरनी (२) रग निकाली हुई फली (३) नाखुनकी खरोंच; नखक्षत मसी वि० तीक्ष्ण नाखूनवाला; नखी (२) स्त्री० मढ़ा हुआ नाखून (३) मिजराब (४) नाखून काटनेका एक सामन; नहरनी; नाखून-तराश मसोतर, मलेद वि० अश्भ

नकोद न० कुलका उच्छेर (२) सत्या-नाग्न; उच्छेद। [-जर्बु = निर्वंश होना; घर उजड़ना (२) सत्यानाग्न होना। -बळबुं = पूरी पामाली होना; मटि-

	•	~	
च्य	. 1	К	2

নজীৰ্ণ

यामेट होना । -वाळवुं =पूरी पामाकी	
करना; धर घालना.]	
नत्तोवियुं वि० विनाधकारी; उच्छेवी	
(२) बाँझ; नि:संतान (३) न०	
निर्वेशका थन निर्वेशका थन	
नकोरियुं न० नाखूनकी खरोंच; नहरूा;	
नमण् ति० एहसान-फ़रामोश; कृतज्न	
मगद वि॰ नक़द;नक्द (रक़म) (२)	
कीमती (३) ठोस;संगीन । - धराक	
= मालवार व्यक्ति ।नाणुं = वह	
जायदाद जिसकी कीमत कमी भी	
रोकड़र्मे मिल्र सके; नक़द.]	
नगद नारायण पुं० नकद रक्तम; देपया	
(२) वि० धनी; मालदार (३)	
(व्यंगमें) कंगाल (आदमी)	
मगद माल पुं० मलीदा जैसा तर मोज्य	
पदार्भ; माल	
नगरी वि० देखिये 'नगद'	
नगरी स्त्री० नगरी; शहर (२) वि०	
नगरका; शहरका	
भगरं वि० कृतवन (२) बेशर्म (३) निगुरा	
मगार्थ न० नगाड़ा; नन्कारा	
नगीन न० रत्न; नगीना [पुरुष;विज्ञ	
नगीनो पुं० नगीना; रत्न (२) चतुर	
मगुणुं वि० देखिये 'नगणुं'	
मगोड स्त्री० एक बुक्ष ; निगुँडी ; सिंडुवार	
नगम वि॰ नग्न; मंगा (२) खुला;	
स्पष्ट (३) बेहया; निर्लज्ज [ला.]	
मधरोळ वि० बेह्या; चिकना भड़ा	
(व्यक्ति); जड (२) बेफ़िक; लापरवाह	
मचवर्चु स०कि० 'माचवुं'का प्रेरणायक;	
नचाना	
<b>नवित</b> वि० निश्चिम्त; बेफ़िक	
नजूको पुं० देलिये 'नकूचो'	
नह्यं वि० अलग; जुदा	

नक्क ४० लाबार होकर; माबार नमदीक अ० नजदीक; पासमें मबर स्त्री० नजर; भेंट। [--करबुंः≖ नजरके रूपमें कोई चीज भेंट करना.] नबर स्त्री० नजर; दुष्टि (२) ज्यान (३) बुरी नखर लगना; नजर (फा.)। कृपा करना । --वालवी ≕ चित्त देना; मन लगाना(२)न्याय या नीतिकी भावना न रखनाः; नीयत विगाइना । --वालवी = देखिये 'नजर पहोंचवी' । -चोंटवी = नचर लगना (२) विसमें बैठना; व्यानमें आना। --पडवी == दिखाई देना; देखना। --पहोंचवी = दिखाई देना;दीखना (२) अनुलका काम करना; सूझ-बुझ होना। --मां आवर्ष् = पसन्द आना । –मां घालबं = घ्यानर्मे रसना (२)नुकसान पहुँचानेकी ताकमें घुमना; घातमें रहना। -- लामबी == नजर लगना ] मजरकेव स्त्री० नजरबन्दी; नजरकैंद **सक्षरचुक**्स्त्री० नजरमेंसे छुटी हुई 'चूक या ग्रहती नजरबंबी स्त्री० जादुसे लोगोंकी नजर बांचना: नजरबन्दी; डीठवंदी मजराणं न०, (--मो) पुं० वजराना;

मेंट; नजर [रूमना मजराषुं अश्र कि॰ नजराना; नजर मजरियुं न॰ नजर न रुगे इसलिए किया जानेवाला काजरूका चिह्न या तावीज आदि टोटका; डिठीना

नजरोनवर २० नवरके सामने; प्रत्यक्ष नजीक २० नवदीक; पासमें [योड़ा नजीबुं वि० नाषीष; तुष्छ(२) वरा;

मह 200 ममत मट पुं० नट; अभिनेता (२) रस्सीपर লকাজীৰ বিগু নজ্য ভতানকী বৃলি-नाचनेवाला; नट (३)एक राग; नट [दृत्ति; नफ़ाखोरी वाला; नफ़ाखोर नफालोरी स्त्री० ज्यादा नफ़ा चाहनेकी गटसट वि० नटखट; धृते; सटपटिया नठारं वि० बुरा; हीन नफिकर्य वि० देखिये 'नफकरुं' मठोर वि० जिसपर कहने-सूननेका **गफो** पुं० नफ़ा;मुनाफ़ा;लाभ;प्राप्ति असर न हो; बेडया; चिकना घडा गफोतोटो पुं० लाम-हानि (२) नफ़ा-टोटा निकालनेका हिसाब; गणितका (व्यक्ति) त्रितबाधाः छत एक भाग; 'प्रोफिट एन्ड लॉस' मडतर स्त्री० अहचन; घकावट (२) नवळाई स्त्री० निर्वलता;कमजोरी मडवुं स०कि० बाधा डालना; पीड़ा देना नवळूं वि० निर्बेल ; कमजोर मणबोई पं० ननदोई मबामुं वि० बिना बापका (२) बिना मणंब स्त्री० ननद; ननंद; नंद मा-नापका; यतीम; अनाथ ( बच्चा ) मत्रवायु पुं० नाइट्रोजन (गैस) नव (०डी,०णी,०मी) स्त्री० नाककी मबीरो पुं॰ बेटे या बेटीकी संतान मभमंडल (-ळ) ন॰ আকাशमंडल; बाली: नथ क्षगोल नथी अ० कि० नहीं है नभषुं अ० कि० निभना; टिकना (२) नदी स्त्री० नदी: दरिया निर्वाह होना; पुसाना; निभना (३) मबीमाळुं न० छोटी नदी या नाला कामचलाऊ होना; काम चलना; मणणियातुं, नथणियुं वि० बिना मालिक-निभना का (२) लावारिस नभाव पुं० निवाह;युजर;निर्वाह ननामी स्त्री० अरथी; ठठरी; ठटरी नभावयुं स० कि० निभाना; निवाहना मनामुं वि० बगौर नामका (२) जिसमें नभोमंडल (-- ळ) न० देखिये 'नभमंडल' लिखनेवालेके दस्तखत न हों ; गुमनाम **नमक न**० नमक; नोन नफ्री पूं० नकार ममण न० झुकनः; नत होनेकी किया मपाट वि० खराब;गंदा;भहा (२) देव-पूजाका जल मपाणियुं वि० बिना पानीका; जिसमें नमण्नं वि० झुका हुआ ; नमित (२) पानी न हो (२) जो जिना सींचे विक-वक; टेढ़ा (३) सलोना; सुन्दर; बाँका सित हुवा हो (३) बेशऊर; बेसलीका (नाक) [ला.] मपास वि० फेल; अनुत्तीर्ण नमतुं वि० नीचेकी ओर सुकता या बल्ता मपुंसक वि० नपुंसक लिंगका (व्या.) हुआ; नीचा(२)एक ओर नीचे (२) पुरुषत्वहीन (३) पुं० हिजहा; मुकता हुआ (तराजुका पलड़ा)(३) नपुंसक; हीजड़ा ढीला; नर्म (४) नम्न ; विवेकी (५) न० **ৰজকৰ্য** বি০ ৰক্তিক; নিৰ্<del>ষিষ্ঠ</del> दबना; पीछे हटना; हार स्वीकार मफट वि० बेशर्म;निलँजज करना । [**–आपवुं, जोसवुं, मूकवुं** ≕ नफटाई स्त्री० निर्लज्जता : बेहामी सौलमें ज्यादा देना (२) अपना आग्रह

_			_	
	1		-	
	• •	T	ч	

#### नवटांक

छोड़ देना; बात नीचे डाल्ना;	नरम वि० मुलायम; कोमल (२)
गिरकर सौदा करना ; राम खाना ; ढील	नम्न; विनययुक्त (३) नर्म; ढीरुा
देना (३) हार क़बूल करना; लोहा	(४) निर्बल; कमग्रोर
मानना । नमतो दिवस == ढलता दिन	<b>नरमाई</b> स्त्री० नर्मी
(२)पतनका समय; बुरे दिन । <b>नमतो</b>	नरमादा न०व०व० नर और मादा
<b>पहोर =</b> सूर्यास्तकी ओर ढल्ला समय.]	(२) कुलाबेकी ओड़ी; कब्जा
नमर्चु स० कि० झुकना; नत होना	नरमाझ स्त्री॰ नमी; नम्रता
(२) नमन करना (३) नम्र बनना	नरमो पु०एक प्रकारकी कपास; नरमा
(४) ताबे-अधीन होना; शरणमें	मरवा(बाँ) पुं० देखिये 'नरवो'
जाना [ला.]। [ <b>नमी पडवुं =</b> माफ़ी	नरबुं वि० तंदुक्स्त; निरोग (२) अ०
मांगना;ताबेदार होना;शरणमें जाना.]	निरा; निपट; एकदम
समायुं वि० बिना मौका (बच्चा)	नरवो (वो') पुं० क्रायमी बंदोबस्तवाली
नमारमूंडुं वि० निठल्ला; बेकार (२)	जमीन (२) जमीनका बंशपरंपरासे
निरंकुंश (३) बेघरबारका; निमोड़ा	प्रोप्त कारबार
ममालुं वि० जिसमें कुछ दम या शक्ति	नरस (-सुं) वि० नीरस (२) बुरा; गंदा
न हो; बिना बिसातका [तरीन	मराज स्त्री० रंभा; सब्बल
ममूना(-ने) धार वि० उत्तम; बेह-	नराणी स्त्री० नहरनी (नाईकी)
<b>नमूनो</b> पुं० नमूना; बानगी (२) वह	नराताळ अ० देखिये 'नरदम'; निपट
असल प्रतिया चीउ जिस परसे नकल	नरं वि० निरोग (२) अ० बिलकुल; निरा
की जाय; मूल प्रति	नरेणो स्त्री० देखिये 'नराणी'
मर्म्यु वि० झुका हुआ; नत (२) न०	नर्युं वि० निरोग (२) अ० बिल्कुल;
दबना; पीछे हटना । [-आपर्यु = बात	नि्रा; निपट
नीचे डालना; गम खाना; ढील देना	नस्त पुं० देखिये 'नळ '
(२) हार क़बूल करना.]	नब बि० नया; नूतन; नव
नर पुं० नर; पुरुष; मर्द (२) मनुष्य	मव वि० नव; नौ; ९। [-गजना
(३)चूल(किवाड़की) [मल	नमस्कार करवा == -से दूर भागना;
नरक त० नरक; दोजस (२) दिष्ठा;	कूरसे टालना।
नरगिस, नरगेश न० नरगिस	याजी कतरवुं = भारी संकट आ
नरचुं न० बायां; तबला [[व्या.]	नड्ना; गत बनना.]
मरजाति स्त्री॰ पुरुषवर्गे (२) पुलिंग	नवज्ञ(-जु)दान वि० नौजवान; नव-
नरणुं वि॰ नहार; निराहार	युवक (२) पुं० नवयुवक
नरतुं वि० खराब; गंदा; निकृष्ट	भूवम (२) उन्मवरुपम म <b>वजोबन</b> न० चढ्ती अधानी; नवयौदन
नरदम वि॰ निरा; शुद्ध; एक ही	नवटांक वि॰ छटांक (२)न॰ छटांक;
क्रिस्मका; खालिस (२) व० निरा;	स्वटाका (बाट)
ৰিন্তন্তুত	2041 (MIC)

नवटांसिय	২৩২
मबटांकियुं न०, मलटांकी स्त्री०	मबाज
छटौककी नाप या बाट; छटौक	करन
<b>मवदाववुं</b> (न') स <b>०</b> कि० नहलाना(२)	नवाणि
ठगना; नुक़सान करना; पानी फेरना	भेंट;
<b>नवत्तर(र्य)</b> वि०∵नया; नवी <del>नतर</del>	নৰাজু
नवनेजा पुरुबर वरु;स्त्रीरु, नवनेजा	उथल
न०ब०व० महासकट	मवाजे
<b>नवमी स्त्री॰</b> नवमी (२)वि० स्त्री॰ नवीं	नवाण
मवराई स्त्री० फ़ुरसत; निठल्लापन	नवाणु
मबरात (०र) स्त्री॰ चैत्र और आहिवन-	55
शुक्लकी पहली नव तिथियाँ; नवरात्र	नवारस
अवराववुं (न') स॰ कि॰ देखिये	<b>नवूं</b> वि
'नवडाववुं'	(२)
<b>मवरा</b> झ स्त्री० देखिये 'नवराई'	नौसि
<b>नवर्ध</b> वि० बिना काम-घंघेका; जो	- कच्च
क्षाली बैठा हो; निठल्ला;बेकार(२)	जिस
कामसे फ़ारिग्र; निदुत्त	कोर
<b>मवदंघूप</b> वि० बिलकुरु बेकार	नयाँ
मबरोज पुं० वसंत ऋतुका समान दिन	[नवी
और रातवाला दिवस (२) पार-	(देख
सियोंके वर्षका पहला दिन; नौरोज	नवे
नवल स्त्री॰ उपन्यास; नावल	जान
मवलक्या स्त्री० उपन्यास; नावल	्रमाभ
मवलल वि० नौ लाखकी कीमतका	मवुंजून
(२) अगणित (३) अमूल्य	मर्चुनक
मदलिका स्त्री० छोटी कहानी; कहानी	नवुं सर्
मबलोहियुं वि० जिसकी नसीमें नया	(२)
लहू बेह रहा हो; जवान	नवेण (
म्बशिकाउ वि० नीसिखुआ; सीखतर	(२)
मबझेकुं वि० थोड़ा गर्म, कुनकुना	पहले
मबसा (०न)र पुं० नवसार; नौसादर	नवेली
(क्षार)	नवेसर
म <b>बस्तुं</b> वि० नंगा; विवस्त्र	শৰ্ষজ্ঞি
मबाई स्त्री॰ नयापन; मबीनता (२)	्सकि
अचरज (३) अपूर्वता; अद्भुत	गली
5 7 N N N N N N N	

न वे किन<u>्</u>

नव <b>ल्यम्</b>
मवाजयुं स॰कि॰ प्रेमपूर्वक स्वागत
करना;अभिवादन करना (२) मेंट देना
नवाजिक्त स्त्री० नवाखित्रा; कुपा (२) भेंट; उपहार
नवाजूनी स्त्री॰ ताजी खबर (२)
उथल-पुथल; भारी उलट-पलट
<b>मवाजेंश स्त्री</b> ० देखिये 'नवाजिश'
नवाण(न') न॰ जलाशय
नवाणु(णुं) वि० निम्नानवे; निम्नानवे;
९९ [लाबारिस
नवारस (-सु, -सुं, -सिंगुं) वि॰
मर्षु वि० नयाः; नवीनः; नूतनः; अपूर्व
(२) तुरतका; ताजा; शुरूका(३)
नौसिखुआ; अनुभवहीन; अपरिचित;
कच्चा (४) अपूर्व; अजनबी (५)
जिसका उपयोग पहले न किया हो;
कोरा; अछूता (६) बदला हुआ;
नया; स्थानापन्न (७) नये सिरेका।
[नवी आंखे = नये जमानेकी नजरसे
(देखना) ।स्ठोही = जवानीका जोरा ।
नवे जन्मे आवर्षु = भारी आफ़त या
जानलेवा बीमारीसे बचना <b>ः नवे</b>
नाम = नये सिरेसे.] [उथल-पुथल हो
मवुंजूनुं वि० जिसमें भारी हेर-फेर या
मबुंगवकोर दि० दिलकुल नया
मबुं सबुं वि० तुरतका; हालका; ताबा
(२) अपरिचित; अंज्ञात
नदेण (न') स्त्री० रसोईधर; घौका
(२) वह स्थिति जिसमें मोजनसे
पहले किसीको छुवा न जाय
नवेली स्त्री॰ नवोडाँ; दुलहि्न
नवेसर(०थी) अ० नये सिरेसे
<b>मवेळियुं (</b> न <sup>′</sup> ) न० सॅंकरी, तंग गली;
सलियारी (२) घरके पिछवाडेकी
गली; अंतरिका

а	73	
-		

२७३

a dia b

नवेळी (न') स्त्री० देखिये 'नवेळियु' (२) पानी जानेकी नाली मबेळुं (न') न० देखिये 'नवेळियुं' **नवेंबर** पुं० नवंबर मन्माशी (-सी) वि० नवासी; ८९ मध्याणु(-णुं)वि० देखिये 'नवाणु'; ९९ नवासोर, नवासाज वि० नवासोर; नशेवाज नको पुं० नशा; कैफ़ मस स्त्री० नस; रग (२) पलेका रेका; रग। [--पकडवी -- नस-नस पहचानना; असलियत, मूल कारण, प्रकृति या वासा भाग खरी बात कोज निकालना. नसकोरी स्त्री० नाकके भीतरकी मुखा-यम जमड़ी (२) नकसीर। — य न फुटबी = नकसीर भी न फुटना; बाल भी बाँका न होना.] । नाक नसकोवं न०नाकका छेद; नथुना (२) नसंबाण वि० अधन्त; ढीला; निढाल मसाडवुं स० कि० 'नासवुं' का प्रेरणा-र्यक रूप; भगाना । [नसाकी अवुं == दूसरेकी औरतको मगाकर ले जाना; भगाना.] नसिमत स्त्री० नसीहत;सीख(२)सजा नसीसर्वु स० कि० सिनकना; छिनकना দুন্ত জানা. नसीब न० नसीब; भाग्य । - अज्ञ-मावयं 😅 नसीब आजमाना । – जञ्चबयु, चूलचुं, जागवुं ≕ नसीव खुल जाना, चमकना, जागना, सीघा होना। --मुं **उन्धुं, --फूटलुं = कमनसीब । --नुं पांबडुं** जैसा बरतन **फरव् =** भाग्योदय होना; नसीब पलटना। -फरबुं ≕ बुरेसे अच्छे दिन आना; भाग्योदय होना: - नसीब पलटना । --फुटबुं = नसीब फुटना; कार बरतन किस्मत बिगड़ना। --- बे डगला आगळ नंसावर्यु स०कि० 'नांखवूं'का प्रेरणार्थक

ने जागळ ≔ अही जानो वहाँ कम-नसीबी, युर्माग्य पेश आयेगा। ( सोइने) -वेषणं = किसी पर आधार रखना.] नसेक्यूं स० कि० देखिये 'नसीक्यू' नसोतर न० एक बनौषषि; निसोध नस्तर न० नग्तर(जिया और औसार) महार ग॰ कुत्तेकी बातका एक हिंसक. **पशु; सोनहा**\* महि स०न; नहीं नहितर अ० नहीं तो; घरना; अन्यया महिमुं न० नेंखनसे सटी हई चमडी-नहिबत् अ० महींवत्; बरासा नहीं अ० देखिये 'नहिं' **नहींतर** अ०<sup>°</sup>देखिये 'महितर' नहेर (नुहॅ) स्त्री० नहर महोतुं(नुहाँ) अ० कि० मही था महोर पुं० पेजेका माखून; नख (२) नस्रक्षत; महट्रा [ থাজিবী नहोरा पुं० ब० व० निहोरा; चिरौरी; नळ पुं० पेटकी बड़ी बौत; नहा (२) पाईप; नरू (२२)मरू राजा। (--सही **बवा** == दस्त रूंग जाना; पेट झुटना । -भरावा = अतिोमें सुजन जाना : क्षति नळाकार वि० नलाकार नळियूं न॰ मरिया; सपरैल; सपरा मळी क्त्री॰ फ़ुकनी; नरी (२) एक ऊँचा नलाकार बरतन; ऊँची मौद नळो. पु॰ नड़ी नली (२) पैरकी लंबी हड्डी; नला (३) घुटनेसे छेकर पेट तकका हिस्सा (४) घातुका बड़ा नला-रूप; डलवाना

गु. हिं–१८

	t
6. C. D.	ľ

## नागरचुं

শৰদু ২	७४ नागरचुं
मंचार्षु स०कि० 'नांचवु' का कर्मणि;	नाकुं न० छेद (२) सूईका छेद;नाका;
बाला जाना (२) दुवला हो जाना;	औस (३) ज़कात वसूल करनेका
मिचुड़ना (३)क़ै करमा। [नंसाई बबुं	स्थान; नाका; चुंगीघर (४) जहां
<b>= (ग्ररीर) अ</b> त्यंत दुर्बर्ड, कमजोर	बहुत रास्ते मिलते हों वह स्थान;
होना; नस छोली होना; हौसला	एक तरहका चौराहा (५) रास्तेका
पस्त होना; दिम टूटना.]	सिरा, मोड़ या प्रवेशद्वार; नुक्कड़;
मंग न० एक चीज; मग; अदद (२)	नाका (६) गौवमें प्रवेशके लिए सिमा
हीरा; नग (३) [ला.] मूर्ख (४) घूर्त	आता कर; चुंगी; राहवारी
मनुष्य (चीजको)	माकेबार पूं० नाकेदार; राहदार
खेलाचुं संवित्रिव तोड़ना (प्रायः काँचकी	साकेवंची स्त्री० नाकावंदी; नाकेवंदी
संस्थान में में जिल इंटना (प्रायः कांचकी	नासपुं स॰ कि॰ देसिये 'नांखवुं'
चीजका) [सिंदा करना	सासुदा पुं० जहासका कप्तान; नाखुवा
नंदवुं स० कि० देखिये 'नंदमवुं' (२)	नाकोरी स्त्री० देखिये 'नसकोरी'
मंदवुं अ० फि० वानंदित होना	माजोर्ड न० नाक
मा ज॰ नहीं, न; मत (२) स्त्री॰	नागकेसर न॰ एक बनौषणि; कणाव-
नकार । [संभळावमी = इनकार	चीनी; नागकेसर
्करना; निषेध करना.]	<b>नागडूं</b> वि० देखिये ('नागु'
माउमेर वि० माउम्भेद; निराज्ञ	नागडो पुं० साघुओंका एक सम्प्रदाय;
माक न॰ नाक (२) [ला.] आबरू;	नागा (२) साघु (तिरस्कारमें) (३) भार्च व्यक्ति [चन्द्र]
नाक। [ <b>-कंपुं करवुं</b> = घमंड-गर्य	भूतं व्यक्ति [ला.]
करना; इतराना । —कपाई खबुं ≕ नाक	ना <b>गण (-णो)</b> (ण,) स्त्री० नागिन; नागन (२) एक गहना
कटना। <b>कापवुं</b> = नाक काटना।	नागमुं न० बरतन उठानेके लिए लगाया
<b>⊶कापे एवुं =</b> भोथरा; कुंद; खुंडा । 	जानेवाला सरकीली गाँठोंवाला
<b>धसवुं = नाक घिसना; नाक रग-</b> इना ! <b>नी क्षंडीए = ना</b> ककी सीधर्मे ।	रस्सीका घेरा; फंदा; अरिवन (२)
जगा विकास के स्वा - नाक पर मक्ली	मथानीकी रस्सी; नेती (३) हलसे
–१९ मास वस्था – गाय पर मथस। बैठना । – <b>मरडवुं</b> ≔ नाक सिकोडना ।	जुआ बाँधनेकी रस्सी; नगगल
-मां ऊंट चालवां, पेसवां = सूब गर्व	नागपांचम (म,) स्त्री० नागपंचमी
होना; ऍठना । – रुगेटी ताणवी == नाक	नागर वि० नागर; नगर-संबंधी (२)
रगड़ना, घिसना.]	सम्य (३) चतुर; नागर (४)
नाककट्टुं वि॰ नकटा; नककटा(२)	नागरकी जातिका (५) पु० नागर
बेह्या; नककटा	जातिका व्यक्ति; नागर(६) (व्यगमें)
नाकलोटी स्त्री० नाक रगड़ना; नाक-	हरिजन ; मेहतर(७)स्त्री० सोठ ; नागर
घिसनी ; नकघिसनी [ बंधी'	<b>नागरडी (∽ण)</b> स्त्री० नागरकी स्त्री
<b>नाकाबंदी (धी)</b> स्त्री० देखिये 'नाके-	नागरणुं न० देखिये 'नागणुं'
	÷

## नॉगरमोथ

नागरमोथ (थ,) स्त्री० नागरमोथा	पोला डंठल; नाल (४) [ला.] वृत्ति;
नागरवेल(ली) (ल,)स्त्री० नागरबेल	झुकाब (५) रुगास; काबू (६) गए-
नागरिक वि० नागरिक;नगरका(२)	दन । [भौषी = नाडी-परीक्षा; नज्द
पुं० नगरवासी; शहरी (३) राष्ट्रका	पर उँगली रखकर देखना (२) मनो-
आम आदमी ; नागरिक, 'सिटिखन'	भावोंका झुकाव देखना.]
नागली स्त्री० एक मोटा जनाज ; नाचनी	नाडण न० जुआ बॉधनेकी रस्सी;
मागाई स्त्री० निलंज्जता; बेशमीं (२)	ेसागळ; माथा; नारी
षूर्तता	माडाछडी स्त्री० दी या ज्यादा रंगोंके
नागुं वि० नग्न; विवस्त्र; मंगा (२)	सूतनी कोरी; नारा; नाहा
अलंकारहीन; शोमाहीत; खाली; नंगा	माबी स्त्री७ नाड़ी; नब्द (२) छोटी
(नाक, कान आदि) (३) [ला.]	कोरी; नाहा 🗇 👘
बेशमं (४)धूर्ते; नाइयों। [−बोलवुं	नाडुं न॰ छोटी डोरी; नाड़ा (२)
= बीमत्स बोलना (२) मुकर जामा;	लाफ रंगका डोरा; रक्षासूत्र; नीवा
शूठ बोलना.]	(३)नेफ़ेमें डालनेकी डोरी या फ़ीता;
<b>नास्ंपूर्ग्</b> वि० नंग-घड़ंग; नंमा-सुंगा प्रायोगियां कि नंग-घड़ंग; नमा-	माड़ा; इज़ारनम्द (४)जूड़ा धौजनेका
मामोबियुं वि० नंगा; तग्न	डोरा; चोटी (५) हेद; मयौदा ।
नाच पुं० नाच, नृत्य या उसका जलसा ।	-छोडवुं = पैशाव करना (२) वर्द या
[	तनाव ढीला करना.] [आर्थमाना
अलग अलग तरंग करना । –नवावया == नाव भचाना ]	नाणवुं स० कि० परखना; कसमा;
नाचनुं अ० कि० नाचना 📖	नाणाकीय थि० आधिक; माली
शाकूटके अ० नाचार; लाचार होकर:	नाणाबजार न० सराफ़ोंका बाजार;
नाजर पुं० अदालतका एक अणिकारी;	सराफ़ा (२) जौहरी-बाजार
'नाजिर' (२) हिजड़ा;हीजड़ा	गाणाभीड स्त्री० पैसेकी तेगी ; तंगदस्सी; अर्थ-कव्ट
नाजुकाई स्त्री० नजाकत; लताफ़त	नाणामंत्री पुं० अर्थसचिव; वित्तमंत्री
नाटक ने० नाटक; दुश्य-काव्य (२)	नाणावटी पुं० सराफ़ (२) मालदार
[ला.] भद; फ़जीहत (३) ढोंग	व्यक्ति
नाटकचेटक न० हास्य-विनोद; नाटक-	नाणाशास्त्र न० अर्थशास्त्र
चेटक [(२)ढोंगी[ला.]	नाणाशास्त्री पुं० अर्षशास्त्र जानने-
<b>नाटको</b> वि० नाटक जैसा; नाटकोय	वाला; अर्थवास्त्री; विराप्रबंधक
नाटिका स्त्री० छोटा नाटक; नाटिका	नामां म०ब०व० पैसा; भन(२)मूल्य
माठाबारी स्त्री० भागनेकी खिड़की,	नाणुं न० चलता सिक्का; मुद्रा (२)
मार्गं या उपाय; चोर दरवाजा	मन; पैसा; अर्थ
नाड(ड,) स्त्री० नाड़ी;नब्ख;रग(२)	नात(त,) स्त्री॰ ज्ञासि; बिरादरी;
चमड़ेकी रस्सी; नाधा (३) कमलका	जाति ; एक ही कुल, जाति या वर्गका

91 Berl	12	t

२७६

जनसमुदाय (२) जातिवालोंको दिया हुआ मोज। [--बहार सूक्स्चुं = बिरादरीसे-खारिज करना; जाति-च्युत करना.]

**मातजात** स्त्री० जात-पाँब

- नासरिषुं वि॰ जिसने करावा किया हो; करावा-संबंधी (२) जिसे करावा करनेकी सुट्टी हो (व्यक्ति, जाति आदि) (३) जो एक क्रिस्मंका न हो; बेयेल
- नातरं न० नाता; संबंध; उदा० 'याम नातरे भाई' (२) बेवा या त्यक्ताके साथ पुनर्विवाह; करावा; सनाई (३) बेमेल जोडा (चीज)।[नातरे बर्षु = करावा करना; (किसीके)धर बैठना। नातरे सावर्षु ≈ बेया या त्यक्ताका पाणिग्रहण करना; घरमें डालना.]
- नातवरों पुं० जाति-मोज
- नातासः स्त्री० ईसाई त्योहार; किसमस नातीसुं वि० जातिका; विरादरीका
- नाव स्त्री० बैल वग्रैरहकी नाकमें पहनाई जानेवाली रस्सी; नाय (२) (नाककी) नय (३) जसीनकी युलाई रोकनेके लिए बांधी जाती मेंड़ बांध;पाल [रस्सी; तसी नावयुं न० तराजूके पलड़े बांधनेकी नावयुं स०कि० (बैलको)नाथ पहनाना; नाधना (२) बसमें करना; नायना (३) चाल सिक्षानेके लिए फेरना;

. सथाना ; निकालना

साद पुं० माद; घोष; झ्वनि; आवाज (२) वाचा या वर्णोंके उच्चारणमें एक प्रकारका बाह्य प्रयत्न;नाद (३) [स्रा.] आदत; वसका (४) लौ;धुन; लगन (५) गर्व। [--क्रतरबो ≕ गर्य टल्लना, उत्तरना; धमंड पूर होना। -मां पश्च्युं, --सामबो, नादे बढवुं क रूत लगना; घुन सवार होना; लगन लगना.]

- त्वाबार दि० नादार; ग्ररीब (२)जिसका दिवाला निकला हो या जिसने दिवाला निकाला हो; दिवालिया (३) पुं० दिवालिया [दिवाला माबारी स्त्री० नादारी; ग्ररीबी (२)
- **नानकडुं** वि० नन्हा; छोटा
- मानसटाई स्त्री० नानखताई
- मामग(ना) स्त्री० कमी; क्षति; स्रोट (२) क्रुटुंबर्मे बड़े आदमीका न होना
- नानपन (ना') न० बचपन; छुटपन
- नानम (ना') स्त्री० छोटापन; छोटाई (२) कमीनापन; ओछापन (३) कमी; खामी; क्षति (४) देखिमे 'नानप' नं. २
- नाम्ं(ना') वि० छोटी उम्रका; छोटा; कमसिन (२) क़दमें अल्प; छोटा (३) हलका; ओछा [ला.] । [नाना बापनुं = हीन कुलका । नाने मॉए ⇒छोटे मुँह.] नानुंसुनुं वि० मामूली; साधारण ; नाबीज नान्पतर वि० नपुंसक लिंगका [ब्या.] मापसंबगी स्त्री० नापसन्दगी (२)मान्य न होना; मान्यता न देना सिंद नापास वि० देखिये 'नपास' (२) नाप-नाम न० नाम (२) रूपाति; नाम (३) स्मारक; थादगार; नाम (४) किसी व्यक्ति, वस्तु आदिका संज्ञा-रूप शब्द; संज्ञा; नाम। (-करबुं, कारवुं = स्थाति प्राप्त करना; नाम करना (२) [ला.] बदनाम होना; नाम बूबना । --जवा देवुं = नाम न छेना; (किसीसे) बहुत अधिक बचना; प्रसंग तक न छेड़ना। -- देवुं,

η	Ŧ	1	t	ţ
~	2	•	_	-

लेवुं =(किसीका)नाम लेकर कहना;
पुकारना ; बुलाना (२) [ला.] चुनौती
देना;परेशान करना; सताना; स्वरू
कहना या कुछ करना; नाम लेना ।
बोळवुं == नाम डुवानाः । मूकवुं =
नाम न लेना । <b>नामें चडाधवुं =</b> (–को)
हक़दार बनाना; बस्ताबेज या क़रारमें
उसका नाम लिखवाना; (किसीके)
नाम पर; किसीके नाम । नामे मांडवुं,
नाने लख्युं = बहीमें (किसीके) नाम
रकम लिखना;के पास इतने रुपये
बाक़ी हैं यह लिखना ; नामे लिखना.]
नामचीन, नामजावुं वि० नामी; प्रसिद्ध
<b>मामजोग (-गी)</b> वि० अंदर जिसका नाम
लिसा हो उसे ही मिले ऐसा (हुंडी)
नामठाम न० नाम और पता; सिरनामा
<b>नामदार</b> वि॰ नामदार; नामवर(२)
माननीय [ घातु; नामबातु [व्याः]
<b>नामदार</b> वि० नामदार; नामवर(२) माननीय [घातु;नामवातु [व्या.] नामधातु पुं० संकापदसे बनायी हुई
नामधारक, नामधारी वि० नाम धारण
करनेवाला; नामधारी; नामघारक
(२) नामघारी; झूठा; ढोंगी
<b>नामना</b> स्त्री० नाम; कीर्ति; नामवरी
नामनिवाल त० नामनिवाल; नामो-
निशान
<b>नामनुं</b> वि॰ नामक; नामका (२)
कहनेभरको; नाममात्र; नामधारी
नाममात्र वि० कहनेभरको; नाममात्र
नामयोगी वि० संबंधसूचक (अव्यय)
[व्या.] [होना
मामरजी स्त्री० अनिच्छा; मरजी न
नामराधि वि० एक नामका; एक
राशिके नामवाला
<b>मासर्व</b> वि० नासर्द; डरपोक <b>नामर्वाई, नामर्वी</b> स्त्री० नामर्दी;भीरुता
ALTERNA ATTACT ATTACA ATTACT STRAT

नामबुं स०कि० झुकाना; नवाना [प.]
(२) उढ़ेलना; गिराना (३) व० क्रि॰
मुढ़ना;की अरेर जाना
नामगूर वि॰ नामजूर; अस्वीकृत
नामांकित वि० प्रस्यात; नामी-मिदामी
नामौ (०षुं) वि० नानौ (२)सुन्दर
नामुं ने० जमा-खर्चका हिसाब; हिसाब-
किताब; लेखा (२) हक;लाग (३)
वर्णन? गामा; उदा० 'शाहनामुं? ।
[-करबुं =(के यहाँसे)उधार लाग,
लेमा । बासबु = (के यहसि) उपार
भाल लानेका व्यवहार होना.]
नामे अ०के नाम;के सातेमें
नामोधी स्त्री० बेइक्प्रती; लोछन;
नामुसी जितिका आदमी
मायको पुं० सुरत जिलेकी जादिवासी
नायबी स्त्री॰ (पहियोंकी) नामि;
चक्रनामि; पिंडी (२) नारी; नामा
नारंगी वि॰ नारंगीके रंगका; नारंगी
(२)स्त्री० नारंगी(फल और पेड़)
नाराज वि० नाराख; रॅजीदा; नाखुर्श
नाराजगी, नाराबी स्त्री० नाराजी;
नाखुशी
नारियेळ न० नारियल; श्रीफल
नारियेळी स्त्री० नारियलका देड;
नारियल [मा;नारियल पूर्णिमा
नारियळी पूर्णिमा स्त्री० श्रावणी पूर्णि-
नारीआति स्त्री॰ स्त्रीजाति (२)
स्त्रीलिंग [व्या.]
मार पुं० नाई, बारी, बढई आदि लोग;
पौनी; नेगी-जोगी (२) पौनीका लाग — >-
या नेग
नार्च(ना') न० पके हुए उत्सममें बना
हुवा गहरा छिद्र (२)नहरुआ; नारू
नाल स्त्री० नाल (कमल आदिकी डंडी)

माहक अ० नाहक; अकारण (२) बिना

हक; अन्यायसे

बाल्प्रयकी

209

नांसमुं

**नालायकी** स्त्री० अयोग्यता गालेकी (-सी) स्त्री० निंदा; बुराई; बदगोई माय स्त्री॰ नाव। {ज्यसायषुं, केठषुं गृहस्यी चलाना; घर सँभालनाः] नावडी स्त्री० ठोंगी; किश्ती; छोटी नाव मावडुं न० छोटी नाव; डोंगी मावण (ना') जन० नहान; स्नान (२) नहानेका पानी (३) रजस्वलाका जहाना; ऋतु-स्नान (४) रज; आर्तव नाइणियुं(ना') न० नहानेकी जयह; हम्माम , माबाकेफ वि० नावाकिफ; अनजान नाविक पुं० नाविक; मौझी (२) कर्णमार; साविक नाबी पुं० नाई; हुरजाम नाम पूं० नाश; संहार; बरबादी (२) नुकसान; टोटा **नासवंत, नासवान** वि० नासवान; नक्वर; भंगुर [ मास ; नस्य मास पुं० नामसे घुऔं या भाफ लेना; नासतपास स्त्री॰ स्रोज;तलाश;छान-बीन [ पाती नासपाती स्त्री०;न० एक फल;नाश-नालभाग स्त्री० भगदङ मासबुं अ० फि० दौड़ना (२) भागना; पर्शायन करना (३) पीछे हटनर; पिछलना । निासतां भोंय भारे पडवी 🛥 भागना मुश्किल हो जाना.] नासानास (-सी) (स,) स्त्री० दौड़ा-दौड़ी; दौड़धूप(२)भगदड़ नासि (-सी) पास वि० निराश; मायूस; [ रोग नाउम्मेद नासूर न० नाक और गले आदिका एक नास्तो पुं० नाश्ता; जलपान

नाहकर्नुवि० व्यर्थ; नाहक नाहवुं (ना'वुं) अ०कि० नहाना । [नाही नाखवुं = - को खत्म, पूरा हुआ या मरा हुआ समज्ञना (२) कोई आशा या रिष्तान रखना(३) शोक या चिंता छोड़ रेना.] [ डरपोक गाहिमत वि० पस्तहिम्मत; बेहिम्मत; नाळ पुं० नारू(घोड़े, बैल, जूते आदिका) नाळ पुं० लंबी, खोखली बंढी या नली; नाल (२) (गर्भस्य शिशुका) ताल; ऑवल (३)स्त्री० सँकरा, तंग रास्ता या गली; गलियारा (४) नरिया; **सपरा (५) परनाला (६) बंदूकुकी** नली; नाल नाळचुं(--चुं) न० एक सिरेसे बंद बाँसकी खोखली नली; चोंगा माळियुं न० सँकरी, तंग गली या रास्ता; गलियारा [ 'नारियेळ' आदि माळियेर,(-री),(-री पूनम) देखिये नाळो पुं० पानीमें होनेवाली एक बेल; प्रसारिणी लता; चंद्रपर्णा सांखवुं(०) स०कि० डालना;फेंकना; झिड़कना(२)दूर करना; बाजु पर⊸ करना; पड़ा रहने देना; छोड़ देना (३)रखना; धरना; डालना; उदा० 'घास अहीं नांखवानुं छे', 'तलवार पर हाथ नास्यो' (४) अंदर डालना, छोड़ना; उदा० 'गोळ नांखो तेटलुं गळघुं थाय' (५) कारीगरके यहाँ चीज तैयार करानेके लिए सौंपना; दे आना; उदा० 'जोडा, कपडां वगेरे नारूयां' (६) कर, जकात लगाना ।

[नाली मूकवुं, राखवुं = चीज खरीद-

# नांगरवुं

209

मियम जं'का

मी रखे रहना.] नांगरबुं (०) स॰ कि॰ लंगर डालना (२) जोलना; नॉथना

कर रख छोड़ना (२) निकम्मी बीधको

- निका पु॰ निकाह; शादी; विवाह
- निकाल पु॰ फ़्रैसला; निबटारा (२) निकलनेका रास्सा; निकास
- निकाझ(-स) स्त्री० मालकी परदेशमें रकानगी; निकासी; निर्यात
- निकार पुं० मौड़ी निकालना; निसा-रना (२) मौड़ी (३) बढ़ा भाटा (४) बह स्थिति जिसमें भाटेके बाद बारह निनट तक समुद्रका पानी स्थिर-अचल रहता है [लना; निसारना निकारषु स० कि० धौना; मौडी निका-

**निसालस वि०पाक-**दिल; निखालिस **निसालसता स्**त्री० पाकदिली

- निगाह स्त्री० निगाह; दृष्टि (२) [ला.] देख-रेख; ध्यान; खबर;सँमाल (३) निगाह; मेहरबानी । [--राबबी = ध्यान रखना; निगाह रखना; निगरानी रखना(२)मेहरबानी रखना.]
- निगळ पुं० बरतने आदि पर लगा क्रुआ छींटा;दाग(२) गढ़ा रस (३) छाननेके बाद बचा हुआ कचरा; निधार निम्रा स्त्री० देखिये 'निगाह'
- निचोड पुं० निचोड़ (रस,जरू आदि) (२) सार; निचोड़; निष्कर्ष [ला.]
- निचोववं स०कि० निचोडना; गारना
- (२)निचोड़ना; शोषण करना [ला.] **विचोवातुं** अ०क्रिं० 'सिचोवतुं' का कर्मणि
- नितार पुं० नियार (तरल पदार्थ) जिल्लान पर जिन्ही जिल्लान
- नितारवुं स० कि० नियारना
- निषदक अ० निधड़क; बेखटके

লিণ্বাৰবু	<b>स</b> ०	কি ৽	ं नीपजवुं
प्रेरणायैक	ः; स	त्पन्न	करना
निभातों पंद	. <del>2</del> 8	स्रे 'ति	नमाडो'

- निभाव पु॰ गुजरिा; निवाह; निर्वाह (२) आघार; सहारा । [**–करवो =** जैसे-सैसे पूरा करते रहना; चालू रखना
- (२)पालन-पोषण करना; निवाहनां] निभाषषुं स०कि० 'नीभवु'का प्रेरणार्थक (२)निवाहना; निभाना (३) औसे तैसे निर्वाह करना (४)ज्योंका त्यों बनाये रखना; चला लेना; निभा लेना
- **निमक** न० निमक; नमक
- निमभूकं स्त्री० नियुक्ति; "तैमाती (२)पगार;वेसंग लिस्रोपरीक्षण निमताणो पु० जांच;हिसाबकी जांच; निमतानबार पु० हिसाबकी जांच करने-
  - वाला; लेखापरीक्षक; अन्वेषक
- निमंत्रक पुं० निमंत्रक; समा आदि बुरुानेवाला; 'कन्वीनर'
- निमंत्रण न० निमंत्रण; न्योता; दोषत निमंत्रचुं स० कि० निमंत्रण, न्योता देणा
- निमंत्री पुं० देखिये 'निमंत्रक'
- निमाबो पुं० आवी(२)कुम्हारकी भट्ठी
- निमार्च अ० कि० नियुक्त होना

**लिमाळो** पुं० बाल; केश

- निमित्त न० कारण; निमित्त (२) हेतु; रूक्ष्य; निमित्त(३)योग;शकुन (४) तोहमत(५)दिखावटी कारण; निमित्त; बहाना
- नियम पुं० नियम; झानून; झायदा (२) रीति; प्रया; चाल (३) वत; टेक; प्रतिज्ञा (४) बंघन; नियंत्रज; नियम (५) ठहराब; प्रस्ताध । [-पाळवो = व्रतका पालन करमा (२) नियमानुसार चलना। --बांघवो =

<u>.</u>	_					
P	2	٠	ľ	đ	₹	

- कायदा करना; नियम बनाना (२) रीति₀ पढति या प्रथा रखनाः } नियमसर अ० नियमके अनुसार; ढाकायदा
- विधमाबलि (- ली) स्वी० नियमोंकी परंपरा (२) तंत्र या संस्थाके नियम, क्रायदे आदि
- नियायक वि०्तियममें रखनेवाला; व्यवस्या करनेवाला; नियामक (२) पुं∙ ऐसा पुरुष; नियामक (३) विश्वविद्याल्यकी प्रबंध-समितिका सभासद; सेनेटेर'
- विद्यालकत्तभा स्त्री० विश्वविद्यालयका तंत्र प्रलानेवाली सभा; प्रबंधकारिणी सम्रा; 'सेनेट'
- विरमाद पु॰ निष्रि; निश्चय; निर्णय (२) व॰ निदचयपूर्वक; निरघार
- विरपारनं स॰ कि॰ देखिये 'निर्घारनु'
- **मिरनिराळुं वि० अ**रुस-अलग ; विविघ ; नामा
- विराकरच न० फ़ैसला; अंत; निराकरण (२) नामंखुर करना; रद्द करना
- मिरासीवाबी पुं० (२) वि० निराशा-वादमें माननेवाला; 'पेसिमिस्ट '
- **जिराळुं** वि॰ निराला; विलक्षण; अजीब; अलग; न्यारा
- **विधांत** (त,)स्ती॰ फ़ुरसत;साली वक्त (२) आराम; सुख; भैन (३) युद्ध आदिका रुक जाना या न होना; शान्ति; सलामती। [--भवी, वळवी = निश्चित होना; फ़िक् टलना.]
- **गिरांते** अ० आरामसे; फ़ुरसतमें (२) ्**बिना उतावल्री या दौड़-धूप** किये (३**) चैनसे**; सुखसे
- निषपयोगी वि० निरुपयोगी; निकम्मा

- निकप्रयुं स०कि० किसी विषयका निरू-पण करना; ठीक-ठीक समझा देना; बयान करना (२)अवलोकन करना; आलोचना करना
- **निर्णायक मत** न०; पुं० निर्णायक मत; 'कास्टिंग बोट'
- निर्बेशवुं स॰ कि॰ निर्देश करना; बतलाना (२) आज्ञा,हुकम या निर्देश करना [निष्चय करना मिर्धारवुं स॰ कि॰ निर्णय करना;
- निर्वळता स्त्री० निर्वलता; कमओरी
- निजेंळ वि० बिना मिलावटका; शुढ; सालिस
- निर्मंबुं स०कि० निर्माण करना; रचना करना (२) तय करना; ठानना
- **निमंळ** वि० निर्मेल; स्वच्छ; पवित्र निर्माता पुं० निर्माता; 'प्रोडपुसर'
- निर्माल्य स्त्री०; न० निर्माल्य (२) वि॰ बेजान; निस्सत्व
- निर्माववुं.स०कि० 'निर्मवुं'का प्रेरणार्थक निर्मावुं अ० कि० निभित्त होना; रचा जाना(२)तय होना [बाघाके
- निविध्मे अ० निर्विघन; बिना विघन-निवासवुं स० कि० सिरोपाव, इनाम, पद, खिलअत आदि देकर संतुष्ट करना [निवारना [प.] निवारवुं स० कि० रोकना; हटाना;
- निवृत्ति स्त्री० सुख; चैन; आराम(२) कुरसत; अवकाश (३) (संसारेसे) निवृत्ति (४)निवृत्ति; काम न करना; प्रवृत्तिका अभाव(५)नौकरीसे निवृत्त होना; अवकाशप्राप्ति (६)समाप्ति
- मिबेडो पुं० निबेड़ा;फ़ैसला;सुलझाव; निबटारा(२)अंजाम;समाप्ति;अंत

নিচা २८१ দীমান निक्ता स्त्री० सिल (पत्थरकी पटिया) निवासोर वि० सदा निवा किया करने-वाला; चुग्रलखोर निशालरो पुं० बट्टा; लोढा (पीसनेका) नीक स्त्री० नाली; मोरी (पानीकी) निझान न० डंका; भोरका घंटा; गजर नीकर अ० नहीं तो (२) ऊँट परकी नौबत मित्राल न० निशान; चिह्न (२) नीकळवं अ० फि० बाहर आना या जाना; निकलना (२) गुजरना; निशाना; लक्ष्य (३) झंडा; निशान। [-करवं = अंकित करना; चिस्न जाना; पसार होना (३) बीतना; लगाना । **--चडर्ष् =**- युद्धका निशान, गुजरना (४) प्रकट होना; (नदीका) संडा लहराना। --ताकवुं, मांडवुं = उद्गत होना; निकलना; धीरे-घीरे निशाना बाँचना.] बाहर निकलना (५) दिखाई देवा; निज्ञानबाज वि०(२)पुं० ठीक निशाना उदित होना (सूर्य-चंद्र) (६) कोनेमें बाँधनेवाला; लक्ष्य साधनेवाला: पड़ी हई चीजका मिलना, हत्ये <u> নিয়ানৰাজ</u> चढना (चोरीका माल) (७) शरीर निशानी स्त्री० निशानी; चिह्न;याद-पर उत्पन्न होना ; उभर आना (चेच्चक ; गार (२) संज्ञा; संकेत; निद्यांनी गाँठ) (८) पकड़ या बंधनसे मुक्त मिशाळ स्त्री० पाठशाला; स्कूल; मदरसा होना; छुटना; उऋण होना; निकलना **निज्ञाळियो** पुं० विद्यार्थी (९) (दास) दूर होना; जाता रहना; निषचय पुं० निश्चय; दुढ़ विचार; नष्ट होना; निकलना (१०) साबित निर्णय (२) विश्वास; निश्चय; भरोसा होना; सिद्ध होना; निकलना; उदा० (३)अ० निक्चय ही; जरूर 'छोकरो पाञी नीकळघो' ( ११) प्रका-निश्वयपुर्वेक अ० अवस्य ; निश्चयपूर्वक शित होना; शाया होना (१२) शुरू निरचयवाचक वि०निरचयवाचक विया.] होना; चलना; छिड्ना(बात, चर्चा) निषक्रमार्थं पुं० निरुचयार्थं [ व्या. ] (१३) हिसाब होने पर रक्तम जिम्मे निश्चे अ० निश्चय ही; जरूर; अवस्य आना; पावना होना; निकलना (१४) निसंबत स्त्री० निसबत; लगाव; वास्ता दूसरी कियाके साथ संयुक्त कियाके (२)परवाह; तमा; चिंता (३) अ० रूपनें आता है और जल्दीका भाव -- के मार्फ़त, -- के जरिये बताता है। [मीकळी जबुं == निकल लिसरणी स्त्री० नसेनी; सीढी जाना;चला जाना(२)हस्ती या गिनती-निसातरों पुं० देखिये 'निशातरो' में न रहना ( ३ ) बहकना हाथसे जाना.] निसासो पुं० निःश्वास; लंबी सौस नीघलबुं, नीधलाबुं अ० कि० बालोंमें निस्बत स्त्री० देखिये 'निसबत' दाने भरना; रेंड्ना; दूध पहुना निहाल वि० देखिये 'न्याल' **नीचलुं** वि० निचला; नीचेका निहाळयुं स० कि० टकटकी लगाकर नीचाजोचुं न० लज्जित होना पड़े ऐसी रेखना; ध्यानपूर्वक देखना स्थिति ( ৱান্ত; নিশ্বান निबबुं स० कि० निदा करना नीचाण न० निचान; नीची जगह (२)

भीचुं	२८२ नेटी
नीचुं वि॰ जो ऊँचाई पर न हो;	नींदवुं स॰ कि॰ निराना; नलाना;
ढलता; झुका हुआ (२) कम उँचाई-	
वाला; गीचा (३) नीच ; कमीना;नीचा	
<b>शीचे अ० नीचे</b> ;नीचेकी तरफ़	नलाई; सोहाई (मजदूरी)
नीडर वि० निडर; निर्भय	मींभाडों पुं० देखिये 'निमाडो'
<b>नीतरपुं</b> अ०कि० टपकना (२) नियरना;	<b>मुकसान</b> ग० नुकसान; हानि; बिगाड़
जल आदिका स्वच्छ होना	(२)घाटा; नुक़सान । –िउठाववुं =
गीतर्युं वि० नियरा हुआ; स्वच्छ	नुकसान उठाना.]
नीपज स्त्री० उत्पत्ति; पैदाइश; उपज	नुकसानकारक, तुकसानकारी वि०
भीषज्ञवुं अ० कि० पैदा होना; उपजना	
(२) वनना; नतीजा निकलना;नया	
रूप मिलना (३) लाभ होना	नुक़सानका बदला; हरजाना (३)
नीपट वि० बेशमं (२) अ० निपट;	वि० नुकसानवाला; क्षतिग्रस्त
ৰিলস্কুল	नुक्तेचीनी स्त्री० नुकताचीनी; छिंद्रा-
नौम पुं० नियम; प्रतिज्ञा (२) भूत-	
प्रेतादिको चढायी जानेवाली बलि	नुसलो पु॰ नुसखा (दयाका)
<b>नौन</b> वि० नीम; आधा	भूगरं वि० देखिये 'नगरुं'
<b>নীমতত্ব্</b> অ০কি০ অনুমৰ, হিলা, সাঁच	भूर न० माड़ा; किराया (जहाज,
आदि पाकर तैयार होना (व्यक्ति,	
कस्तु); निंकलना (२) आँच, झिक्षा	👘 ने(नॅ) अ० और (२) दूसरे और
आदि पाकर पक्का होना; सिद्ध होना	
<b>नीमवुं स० कि०</b> नियुक्त करना; नास-	आग्रह और हकारसूचक झब्द; न;
्यद करना	उदा० 'में कहपुं हतुं ने ! '
नीमे अ० वाघे हिस्सेसे	<b>नेक</b> वि० नेक; प्रामाणिक; स <del>ञ्घा</del> ;
नीमेनीम वि० आधोंआध	न्यायी (२) नीतिमान (३) घार्मिक
<b>गीरसर्वुं</b> स॰ कि॰ घ्यानसे देखना	(४) स्त्री० नेकी; न्यायपरायणता
नीरण न० घास-चारा	(५) पुं० हद; प्रमाण; मात्रा (६)
नीरषुं स० कि० ढोरको घास डालना	
ं <b>नीरो</b> पुं० नीरा;ताजा ताड़ी (२) घास-	
चारा	नेको स्त्री० ईमानदारी; सचाई (२)
नीलम न० नीलम	भलाई; नेकी (३)सदाचार; सद्वर्तन
नीवडवुं अ० फि० देखिये 'नीमडवुं'	(४)स्तुति-वचन; दुहाई पुकारना
<b>नीसरपुं</b> अ० कि० निकलना	मेर्जुन०, नेओ पुं० नेजा (२) बरछी
मींदण न॰ निरी हुई निकम्मी घास;	(३) भाला [जॉच-पहताल
चिखुरन	<b>नेटां</b> न० <b>ब० व०, नेटी</b> स्त्री० गहरी

नेषुं	२८३ न्यात
नेई वि० निकटका; पासका	नोकरडी (नॉ) स्त्री० नौकरानी
<b>नेडें</b> अ० नेड़े; पासमें	नोकरशाही (नॉ) स्त्री० नौकरशाही
नेंग्रो पुं० नेह; प्रेम। [लागवो == प्रेम	
होना ; दिल अटकना । <b>लेवो = सुचड</b>	
निकालनेके लिए पीछा करना;	; <b>नोकरी</b> (नाँ) स्त्री० नोकरी;सेया
किसीके पीछे पड़ना.]	नोबा(नॉ) वि॰ जो तूर हो; अलग;
नेतर न॰ बेंत (लता और छड़ी)	जुदा; अलहदा
<b>नेतरं</b> न० मथानीकी रस्सी;नेती	नोट स्त्री० नोट (सिक्का) (२) टिप्पण;
<b>नेतागीरी स्त्री०</b> नेतागीरी;अगुवाई	नोंघ (३) चिट्ठी; पुरदा (४)
<b>नेपाळो</b> पुं० जमालगोटा	नोटबुक;कापी [देना; बुलाना
<b>नेपुर</b> न० नूपुर; धुँघरू	<b>नोतरवुं</b> (नाँ) स०कि० न्योतना; दावत
<b>नेफो</b> पुं० नेफ़ा	नोतरियुं (नॉ) न० निमंत्रित व्यक्ति;
<b>नेम</b> स्त्री० निशाना; लक्ष्य (२) इरादा;	; न्योतहरी; न्योतारी
🔹 हेतु । [ <b>चूकयो</b> 🛥 निशाना चूक जाना	मोतरं(नॉ') न॰ निमंत्रण; दावत;न्योता
(२)कार्य सिद्ध या पूरा न कर लेना.]	] শীমাষ্ঠ(নাঁ) বি॰ আষাব্দ্রীন (२)
<b>नेव</b> ्न० नरिया; खपरैल (२) <b>छप्पर</b> के	
छोर परके खपरे; ओलती (३)ओलतीमें	
से गिरनेवाला पानी । <b>[नवे मूकवुं =</b>	
छोड़ देना;्किनारे पर,्ऊपर, अलग	ग नोम(नॉम,) स्वी० नवमी; नौमी
्रखना; उपेक्षा करना.]	गोरता(नॉ) न॰ व० व० वसोज मासके
नेषु(-षुं) दि० तब्बे; नव्वे; ९०	नवरात्रके दिन; नकरात्र [सःजिजी
मेषुं न० देखिये 'नेव'	नोरो(नॉ) पु॰ निहोरा; विशैरी;
नेव्याशी (-सी) वि० देखिये 'नव्याशी'	
नेस(०डो) पु० अहीरोंका जंगलमें	
बनाया हुआ सोपड़ोवाला गाँव ; आभी-	
रपल्ली (२) बहीरका झोंपड़ा	दिया हुआ मारू <b>ब्योरेवार लिखा</b>
नेस्तौ पुं० परचूनिया; मोदी	जाता है [टीप
बेह(नें) स्त्री० (हुक्क़ेकी) नै	नोंभनी (गॉ०) स्त्री० टॉकनेकी किया;
नेह पुं० नेह; प्रेम [गलियारा	
भेळ (नॅ) स्त्री० सेंकरी, तंग गली;	
नोक(नॉ) पुं०; स्त्री० नोक; अनी;	
सिरा (२) प्रतिष्ठा; वक; टेक (३)	
छटा; शान (४)ू आकार; अग्रभाग;	
मौका (घर आदिका)	मौकासंग्य न० नौसेना; जलसेना; 'नेवी'
मोकर(नॉ) पुं० नौकर(२)दास	न्यात स्त्री० जाति; विरादरी; ज्ञाति

२८४

पश्च

#### म्पतिजास

- स्थातजात स्त्री० जात-पौत न्याय पुं० न्याय; इंसाफ़(२)योग्यता; उचित-अनुचितका विवेक;न्याय(३) प्रथा; रिवाज; कायदा (४) दृष्टांत-वाक्य; कहाक्त; न्याय; उदा० 'काक-तालीय न्याय'(५)प्रमाण ढारा किसी बस्तुकी परीक्षा; न्याय (६) न्याय-दर्शन (शास्त्र)। [--तोळवो ⇔ दोनों
- पक्षोंकी सचाई-क्षुठाई या उचित्त-अनुचितकी जौष करके फ़्रैसला करना; न्याय करना.]
- न्यायी (-स्य) वि० ठीक न्याय करने-वाला;न्यायी (२)न्यायोचित; न्याय्य
- म्याई दि० न्यारा; जो दूर हो (२) अनोखा; अजीब; न्यारा
- न्यास वि० निहाल;कृतार्थ(२)मालदार
- प
- प पुं० 'प'वर्गका पहला ओख़्ठघ व्यंजन
- पकड स्त्री॰ पकड़ना; पकड़नेकी किया (२)पकड़नेकी दाक्ति, मौका या उसका तर्ष ; पकड़ (३) सँड्सी जैसा पकड़नेका सार्थन ! [-∹आधवी == पकड़में आना (२) प्रहण करना; समझना. ]
- यकवर्षु स०कि० पकढना; ग्रहण करना; थामना (२) धारण करना; धरना; किसी वस्तुमें व्याप्त होना; पकड़ना (रंग) (३) मागते हुएको रोकना; गति या व्यापारसे निवृत्त करना; पकड़ना (४) स्रोज निकालना (भूल) ; पकड़ना (५) पकड़ना; समझना (अर्थ,बात) (६) गिरफ़्तार करना; बंदी बनाना; 'अरेस्ट' करना; पकड़ना। **[पकडी** पारवुं = पकड़ना; किसी काममें आगे बढ़े हुएकी बराबरीमें आ जाना (२) पता लगाना; खोज निकालना । **पकडी सेव्ं**≕ उठा लेना(२)एकदम पकड़-कर क़ाबूमें करना या बंदी बनाना (३) किसी विषय, या बात पर क़ाबू, अधिकार पाना. ]

- पकबहुकम पु० गिरफ़्तार करनेका हुकम; वारंट-गिरफ़्तारी
- पकडापकडी स्त्री० लगातार गिरप्रता≁ िरियौं; पकड़-घकड़
- पक्तववुं स० कि॰ पकाना; रौधना (२)मिट्टी आदिके बरतनको भट्ठीमें रक्षकर तपाना; औच देकर कड़ा करना; पकाना (३) कोई चीख पक आय ऐसा करना; पकाना
- पक्तवान न० पकदान; पक्वाझ
- **पकावनुं स**०कि० देखिये 'पकववुं '
- **पकोबी** स्त्री० पकौड़ी
- पपकाई स्त्री० धूर्तता; छल
- पक्कुं वि० फो किसीसे घोखा न साय; अनुभवी (२) धूर्त;मक्कार(३)पूरा-पूरा; समूचा(४)पक्का; अचल्ठ; दृढ़ (५)पक्का(रसोई आदि)
- पक्ष पुं० पक्ष; तरफ़दारी (२) तड़; पक्ष; भाग (३) विवादके विषयका एक हिस्सा; पक्ष (४) तरफ़दारी; पक्षपात (५) पख्लवाड़ा; पक्ष (६) स्त्री० पंख; ढैना; पक्ष। [-करबो, कोंचवी, ताजवो = पक्षपात करना.]

Ч¥	۶Ť	₹
	 ••	-

### पगरस्ती

**पक्षकार** वि० (२)पुं० पक्ष करनेवाला; तरफ़दार पक्षधात पुं० पक्षाचात ; रुजन्वा ; पक्षचात पक्षपात पुं० पक्षपात; तरफ़दारी पक्षपाती वि० पक्षपाती पकापकी स्त्री० पक्ष बनना; दल बन जाना; जुदाईकी मावना (२) तरफ़वारी; पक्षपात पकी न० पक्षी; चिड़िया पद्धवाज स्त्री० पखावज; मृदंग पत्तवादिक वि० हर पन्द्रहवें दिन होने-वाला; पाक्षिक (२) न० पन्द्रहवें दिन प्रकट होनेवाला समाबारपत्र; पाक्षिक पत्तवाहियुं न० देखिये 'पक्षवाहु' पल्लबाई न० पसवाड़ा; पाल पत्नाच स्त्री० पत्नावज;मूदंग पत्नांक स्त्री० पत्नाल पत्ताल स्त्री० फूल आदि उठाकर सायं-कालमें देवस्थानको घोना (२) घोना; पंखारना पद्माली पुं० भिवती; सनुका पंसाळवुं स॰ कि॰ पानीसे बोना; पसारना **यग** पुं० पग; पैर; पांव (२) आना-जामा [ रूा. ](३)मूरु; जढ़ । [-आववा = पौर्वोंमें चलनेकी ताक़त आना(२) स्वाश्रय पर या अपने बल पर खड़े रहनेकी शक्ति आना (३) हवा होना; रायब होना।--उठाववा, उपांडवा 🛥 वेगसे चलना ; पाँव बढ़ाना (२) खिसक जाना; भाग निकलना। --काडबो = आना-जाना बंद करना (२) भरून रोकना; प्रभाव दूर करना (३) हटाना;दूर करना(४)अलग होना;

दूर होना। **--चलाबचो** = पाँव उठा-कर चलना । **⊸योई पीया** ≈ एहसान मानना; आभारी होना। 🗝 कपडवा = संकोच होना; धर्म आना। -पाछा **पडवा =**हिम्मत न चलना ; सकुचाना } -- मांडवो = पाँव जमाकर खड़ा रहना (२) आगे बढ़ना; पाँव उठाना (३) प्रवेश करना ; पैर रखना (४)व्यवसाय वारम्भ करना। – **वाळवो = वा**राम लेना; सुस्ताना**। थगे पडष्ं ≓**पाँव पड़ना (२) शरण स्वीकार करना। भगे लग्ग्य्यं = पौर्वोमें गिरकर नम-स्कार करना; मत्या टेकना; पाँव छूना (२) माफ़ी माँगना; पाँव पड़ना। थगे लाग्या = हारे; यक गये; तोबा.] पगचंगी स्त्री० पौवचप्पी पगबार पुं० (घाटपर) योड़ी सीढ़ियों के बाद आनेवाली चौड़ी सीढ़ी पगचियुं न० सीढ़ीका डंडा; सीढ़ी; पाया पगंची स्त्री॰ पगडंडी (२) पटरी; 'फुट-पाथ' **पगवंडी** स्त्री० पगडंडी **पगपाळुं** वि० पैदल; पौव-पौव पगपेसारो पुं० पैठ; रसाई;दखल(२) आना-जाना [ला.] ।[**--करवो**=-वुसमा.] पगमर वि० अपने पगपर खड़ा रहने~ वाला; स्वावलम्बी पगर पुं० देवरी (खलियानमें) पगरखुं न० जुता; पगरखा पगरण न० अच्छा अवसर; प्रकरण(२) आरभ; बुरू [ जाना [ला.] पगरव पुं० चाप; आहट (२) आना-पगरवट स्त्री० पगडंडी (२) चलनेसे होनेवाला निशान; पैर; पदचिह्न पगरस्तो पुं० पगढंडी

वर	सम

पछात**वर्ग** 

- पगलां न०ब०व० देव, संतादिकी पूजाके निमित्त बनाये हुए चरण-चिह्न; पादुकाएँ पगली स्त्री० देखिये 'पगलां' [स्रोर पगलुछ (-स) णियुं न० था-अंदाज; गर्द-पगलुं न० पैरका निशान; पदचिह्न; चरण-चिह्न (२) डग; क़दम; पैर (३) एक गहना (४) त्वरित য়ীর হতাজ। [पगर्सा उपाय ; **ओळलवां = पैरके निशानकी जाँच-**परख होना; पदचिन्न परसे स्वभाव-चारित्र्य आदिकी कल्पना करना (२) किसी बातके पीछे रहे हुए गुप्त हेतुको जानना। पगलां करवां, थवां 🖚 पधारना; आना; तर्शरीफ़ लाना। -काढवं =,पदचिह्न परसे चोरकी टोह छगाना । –भरवं ≃इलाज करना (२) नालिश करना; दायर करना(३)किसी काममें आगे बढ्ना; कदम उठाना।
  - कामम आग बढ़ना; कदम उठाना। पगले पगले = क़दम ब क़दम;अनुसरण (करना).]
- पगार पुं० तनखाह; पगार; दरमाहा । [-करखुं ≕चुकाना; अदा करना । – थयुं = बेबाक़ होना; चुकता होना.]
- पगारबार वि० वेतन लेकर काम करने-वाला; तनख्वाहदार; वैतनिक
- पगी पुं० पैरकी निकानी परसे चोरकी टोहलगानेवाला (२) जौकीदार;गोड़ैत
- पगेर न० चोरके पैरका निशान; पैर पगेलागणुं न० पालागन; नमस्कार पत्रपत्र अल्लाज
- पचपच अ० पच-पच आवापा **पचपचवुं** अ० कि० पचपचाना (२) . **पच-**पच अ∄वाज होना
- पश्वरंग (-गियूं,-गी)वि॰ पचरंगा (२) जो विविध वर्ण या जातका हो; (पचरंगा

- पचवर्षुं स०कि० पचाना; हज्जम करना पचव्रुं अ० कि० हजम होना; पचना (२) जजब होना; सोखना; मर जाना (पानी); उदा० 'पाणी त्यां पची गयुं' (३) अंदर लीन या मग्न होना; दिल अटकना; उलझना; उदा० 'प्राणी प्रपंचमां शुं पची रह्यो' (४) हरामका माल प्राप्त होना या पचना
- पचाववुं स० कि० ′पचवुं' का प्रेरणार्यक रूप;पचाना(२)[ला.] हजम करना; आत्मसात् करना; पचाना (३)हज्जम कर जाना; पचाना; उड़ा देना
- **पचास** वि० पचास; ५०
- पचीश (--स) वि० पचीस; पञ्चीस; २५
- पजुसख न० भगवान महावीरकी जय-तीके समयका जैन पर्व,पजूसण(२) भाद-कृष्ण ढादशीसे भाद-शुक्ला वौष तकका जैनोंका त्योहार; पर्युषण
- पछडावुं अ० कि० टकराना; पटकना पछवाडी अ० पीछे
- पछवाडुं वि० जो अंतर्मे हो या पड़े; आखिरका; सिरे परका (२) न० पीछेका भाग; पिछाड़ी; पिछवाड़ा (३) पीछा
- पछवाडे अ० पीछे; पीठ पीछे (२) अंतर्मे; छोर पर। [-पडवुं, नंडवुं, लागवुं ≕कार्यसिद्धिके लिए किसीके पीछे लगना (२)पीछे पड़ना. j
- पछाट (-र) स्त्री० पछाड़; पटकनी
- पछाबबुं स॰ कि॰ जोरसे गिराना; पटकना(२)कुश्तीमें पछाड़ना; हराना
- पछाडी अ॰ देखिये 'पछवाडी'; पीछे पछात वि॰ पीछेका; पिछड़ा हुआ (२) अ॰ पीछे
- पछातवर्ग पुं० दलित वर्ग

শন্চী

पछी अ० पीछे; बादमें; फिर; पीछेसे पछीत स्त्री० घरके पिछवाडेकी दीवार; पछीत [ पिछौरी [प] पछेडी स्त्री० ओढ़नेकी मोटी चादर; पछेंको पुरु ओढ़नेकी मोटी बड़ी चादर पजवणी स्त्री० सताना; हैरानी पजवर्षु स० कि० सताना; त्रास देना पजळवुं अ०कि० तर होना;पचपचाना **पजुसण** न० देखिये 'प**जुसण**' पट पुं० पुट; स्पर्शसे हरूका रंग लगना (२) असर; प्रभाव (३) नदीका पाट (४) कपड़ा; पट (५) पर्दा; पट (६)विस्तार; फैलाव;चौड़ाई; पाट (७)सँकरी लंबी पट्टी (अमीनकी) (८) चित्र सींचनेका फलक या कपड़ा; पट। [- संचवो, ताजवो, भरवो = बीचमें पर्दा डालना। --लागचो = असर होना; रंग पकड़ना.] पट अ० पट; तत्काल; झट। [--वईने, लईने 🖛 झट. ] पटकम्ं सं०कि० पटकना; जोरसे जमीन आदि पर गिराना पढको पुं० कपड़ेका छोटा टुकड़ा; पट्ट पटपढ अ० पट-पट; जल्दी(२)स्त्री० बड़बड़ाना; बोलते रहना [(दुम) **पटपटावव्ं** स० कि० पट-पट हिलाना पटराणी स्त्री० पटरानी **पटलाई** स्त्री० गाँवके मुखियाका अधि-कार या काम; चौधराई **पटवो** पुं० पटवा (गूँथनेवाला) **पटा** पुं० ब०व० तलवार, पटा, गतका या लकड़ीके दावँ; पटा तिग पटाक अ० पट; शी छ (२) पुं० (घोड़ेका) पटाकडी स्त्री० चुटकी (२) पिस्तौल **पटादार** वि० धारीदार(२)पुं० पट्टे पर

पठ्ठू या सनदसे (जमीन) रखनेवाला (३) जमीनदार (४) चपरासी पटापट अ० पटापट; एकके बाद एक पटाबाज वि० पटेत; पटेबाज पटावाजी स्त्री० पटेवाजी (२) दावेंपेच **पटामणी** स्त्री० फुसलावा; दम-दिलासा पटामणुं वि० फुसलाऊ (२)न०फुसलाबा पटारी स्त्री० पिटारी; पेटी पटारो पुं० बड़ी पेटी; पिटारा पटावनुं स० त्रि० फुसलाना; तदबीरसे समझाना; मनवाना; पटीलना पटाबाळो पु० नौकर; चपरासी पटियां न० ब० व० सँवारे हुए बाल; (बालोंकी) पट्टी : पटिया पि.] पटी स्त्री॰ पट्टी; चिप्पी (२)फोडेकुंसी पर लगानेकी घज्जी ; पट्टी । [–पडवी 😑 कार्य सिद्ध होना; बहुत प्राप्ति होना । -- पावची 🛥 समझा-बुझाकर अपने नफ़ेका काम करवाना (२) प्रयोजन सिद्ध होना; काम निकलना, होना.] पटेल पुं० मुस्लिया; चौघरी (२) गौवका मुखिया ; पटेल ( ३ ) 'पाटीदार' नामकी जातिका आदमी (४) एक अल्ल पटो पुं० पट्टा; सनद; पटा (२) कपड़े या चमड़ेकी लंबी पट्टी; पेटी (३) कमरबन्द; पट्टा (४) रंगकी चौड़ी धारी; पटी (५) चंपरास पटोपट अ० पटापट; तेजीके साथ पटोळुं न० (रेशमी कपड़ा) पटोर; पटोरी पट्टी स्त्री० देखिये 'पटी' पट्टो पुं० देखिये 'पटो'

पठाण पु॰ पठान (२) मांझियोंका नायक-सरदार (३) जहाजकी पीठ पठाणी वि॰ पठानी (२) कड़ा (क्याज) पठ्ठुं वि॰ पट्ठा; तगड़ा; संडा

पर्व्यु

			-
1	E	e	L
	-		

- पड न॰ परत;स्तर;थर(२)ढकनेवाली वस्तु; आच्छादन;पुट(३)सिलवट; चुनट(४)पाट(चक्कीका)
- पबकार पुं० ऊँचेसे संबोधन (२) लल-कार; चुनौती
- पडकारचुं स०कि० ऌलकारना; चुनौती देना; आह्वान करना; बढ़ावा देना
- पडचुं न० करवट; पहलू (२) पक्ष; बाबू; पादर्व (३) मदद। [पडचां चोर्वा≕परसना; छानवीन करना। पडवां सेववां ≕ आभय, तावेदारी, बारण या पासमें रहना। पडको रहेवुं ≕ पछ या मददमें रहना; किसीकी कुमक पर होना.]
- सबसी स्त्री० पेंदी;पेंदा; बरतन आदिका तस्त्र (२) वृक्षकी जड़ोंके इर्द-गिर्द सनाया हुवा चबूतरा
- पडधम स्त्री० बड़ा डोल; दुंदुभि पडधी स्त्री० देखिये 'पडगी'
- पडमी स्त्री०, पडवो पुं० गूंज; प्रति-धोष;प्रतिष्वनि । [--पडवो ≕ गूंजना; प्रतिधोष होना(२) प्रत्युत्तर मिलना । --पाडवो = नाम करना;डंका बजना.]
- **पडडायो पुं॰** छाया; परछाईँ (२) प्रतियिव
- **पडछुं न० ईल**के ऊपरका हरा पत्ता; गेंड्रा [जीम; कौजा
- पडणीभ स्त्री० (गलेकी) घंटी;छोटी .पडलर वि० बिनानफ़ाचढ़ाया हुआ;
  - लागत (खर्च); पड़ता (२) बिना जोता हुआ (खेत, जमीन); परती (३) जो बिक न गया हो (४) खुका; जिसमें मकान न हो (मैदान) पडसी स्त्री॰ पतन; अघोगति; गिरा-
    - वट । [-रात = पिछली, भीगी रात.]

- पडतुं वि० गिरता हुआ (२) दुर्बरू (अवदशा) (३) न० कुदान ।[-नासवुं ≕ ओरसे गिरना; पढ़ना।-मूक्र्युं = छलौंग भरना। पढतो बोल झीलवो = मुँहसे बोल निकलते ही काम कर डालना; आजा या हुक्मका तुरत पालन करना.]
- पडचार पुं० देखिये 'पगयार' (२) (कुएँका) अगत
- पडवी स्त्री० छोटा पर्दा (२) आड़के लिए बनायी गयी दीवार; भोट
- पडवो पुं० परदा; पर्दा (२) कानका परदा; कर्णपट (३) बुरका; ओझल; परदा (४) गुप्त बात (५) अँतरा; परदा (तंतुवाधका) । [-काढवो ऱ् परदा करनेका रिवाज हटा देना; परदा करनेका रिवाज हटा देना; परदा गराना (२) किसी बहुस पर पर्दा गिराना (२) किसी बहुस पर पर्दा शिलना (२) परदा डालना; छिपा देना (४) अमुक समय तक मुल्तवी रखना ।--प्रहूटी अवो ऱ्परदा उठना या खुलना; परदा फाश होना; मेद खुलना । -पाह्लवो = परदेका रिवाज रखना (२) अंतरकी बात न कहना; परदा रखना.]
- पडपडवुं अ० कि० 'पड़-पड़' आवाज करना; पड़पड़ाना
- पडपडाट पुं० पड़-पड़ (आवाज)(२) (मिन्नाजमें) पड़पड़ाना--बोलना

**पडपूछ** स्त्री० पूछताछ

पडवुं अ०कि० पड़ना; गिरना; पतन होना (२) जाना;राह लेना;उदा० 'आगळ पडवुं; रस्ते पडवुं' (३) होना;निकल आना;पैदा होना;प्रसंग प्राप्त होना; उपस्थित होना;पड़ना;

	~
- 93	1.1

265

पतरनेषिम्

पर्या	२८९ पतरताकन्
मिलना; गिरना (दुःख; क्रप; काम;	पकापड(-डी) स्त्री॰ एक दूसरे पर
चैन;मार;मूप;बारिश आदि)(४)	झपटना; झपाझपी; झूल्ला
टिकना; ठहरना; मुकाम करना;	पडाब पुं० पडाब; मुक़ाम; ठहराब,
पड़ना (५) लेटना; लंबी तानना;	पडाववुं सं०कि० 'पडवुं', 'पाडवुं' किमा-
पड़ना (६) (क़ीमत; दाम; सूद;	का प्रेरणार्थक रूप (२) झपटना;
किराया आदि) लगना; पड़ना (७)	छीन लेना
लगना; स्पष्ट होना; होना; असर	<b>पदाळ</b> न०; स्त्री० खप्परके दो ढालुआ
करना; अनुभवमें आना; <b>समझा</b>	हिस्सोंमेंसे कोई एक; छप्पर
जाना; उदा० 'कपडुं ढीलुं पडे छे;	पडाळी स्त्री॰ दालान; बरामदा
सूंठ गरम पडे छे; ओछुंबसुं पडशे'	पहिसाज वि० देखिये 'पडतर'
(८) किसी चीजमें पैदा होना; होना;	<b>पडियूं</b> न० ( <b>चक्</b> कीका) पाट; पवाई
<b>पड़ना; ' चो</b> खामां इयळ, जीवात पडी	पडियो पुं० दोना; दौना
<ul> <li>छे' (९) किसी काममें रत रहना,</li> </ul>	पडी स्त्री० पुड़िया
लगा रहना; तल्लीन होना (१०)	पडीकी स्त्री० छोटी पुड़िसा (२)दवाकी
भ्रष्ट या पतित होना (११) हारना;	पुड़िया [(दवाकी)
जीता जाना; युद्धमें मारा जाना;	<b>पडीकुं न</b> ० बड़ी पुड़िया;,युड़ा(२) <b>पुंड़िया</b>
उदा० 'किल्लो पडघो' (१२)	पडो पु० बडा पुडा या जूरी;पूला(२)
होणिरीमें न गिना जाना; नाग्ना	ढोल; डुम्गी (३) ढिंढोरा; मुनादी
होना; उदा० 'निशाळ पडी; बहु	पडोश, (०ण), (-शी) देखिये 'पा <b>ढोश'</b>
्दिवस पडघा' । <b>[पडी भागवुं</b> =न	आदि 💦 👘
ंचलना; चलना बंद हो जाना (व्यापार,	पण्न॰ पण; प्रतिज्ञा; टेक(२) बाबसि;
नाटक आदि) । <b>पडी मूकवुं = छो</b> ड	शर्त ।[ <b>~मूकवुं, छेवुं</b> ≕प्रतिज्ञा करना⊾]
देना; जाने देना (२) पत्री रहेवुं =	पण अ॰ पर; मगर (२) उपराम्त;
परती रहना; उपयोगमें काममें न	फिरभी; भी; सबेत (२) न० भाष-
आना । पडपा उपर थाटु मरतेको	वाचक संझा बनानेवाला एक प्रत्यय;
मारना; कटे पर नमक छिड़कना.]	'पन'; उदा॰ 'गांडफ्ण; बाळफ्पा'
पडवी पुरु परवा; पड़वा; प्रतिपदा	पथाछ स्त्री० धनुषकी डोरी; पनच
<b>पंडसाळ</b> स्त्री० घरका ओसारेके वसलका	<b>-पणुं</b> त० दे <b>सि</b> ये 'पग' अ० में नं. २; उदा० 'माणसपणुं, सारापणुं
क्रमरा	पणे (प') ब॰ उँछर
पडळ ल॰ (आँखका) जाला; पटल।	पत स्त्री का समनेवाला को का प्रक्रित
🚽 🖅 न्याववां, फरी वळवां = आंखपर	कुष्ठ; कोढ़-चूना [ प्रतीदि
झिल्ली चढ़ जाना (२) <b>श्रोल न खुछना;</b>	पत स्त्री० वाबक ; पत[प.](२)विहवास ;
भूसक न खुलना,	पहरतेलिएं में बरवीका पता (२)
पहांच म॰ पट; एकदम; सर	उसकी एक बानगी
गु. हिं−१९	

-	• •	

•

पण्पंर

40.00	ર૬૦ યન્યર
पतराब(-जी) स्त्री० बढाई; बढ़प्पन	पत्तो पुं० पता; ठिकाना (२) खबर;
पत्तरावळ(क्री) स्त्री० पत्तल; पत्ता	पता। [कामो, लागमो = खनर
<b>पतराळी</b> स्त्री० पत्तल; पत्तर(२)पत्तल;	मिलना; टोह लगना (२) घात लगना;
परोसा (साध सामग्री)	मौक़ा मिछना.]
<b>पलराळुं न॰ प</b> त्तल; पत्तर	<b>पत्र</b> युं०; न० पत्र; चिट्ठी; काग़ज (२)
<b>पतरी</b> स्त्री० पत्तर (धातुका छोटा टुकड़ा)	न० पत्र;पत्ता(३)पत्र;समाचारपत्र
पत्तदंन०पत्तर;चादर(घातुकी)(२)	<b>पत्रक</b> न०पंजी; बही; दफ़्तर; 'रजिस्टर'
बहुत बड़ी परात	पत्राळी (-ळुं) देखिये 'पत्तराळी' आदि
<b>पतवर्वु</b> स० कि० निबटाना	पथक ुन्∘ टुकड़ी; छोटा दल (सैनिक-
पतवुं अ०कि० निबटना; पूरा होना;	स्वयंसेवकोंका);दस्ता
खत्म होना; कुछ करना बाक़ी न	पयराबुं अ०कि० फैलना; पसरना (२)
रहना (२) फ़ैसला होना; तय होना;	विछना; बिछाया जाना(बिस्तर आदि)
निबटना (३)चुकता होना ; बेबाक़ होना	<b>पथराळ</b> वि॰ पत्थरवाला; पथरीला;
पत्नंग पुं० पत्तंग; तितली; पतंगा(२)	कंकड़ीला
पुं०; स्त्री० पतंग; कनकौवा	पथरी स्त्री० कंकड़ी; कंकड़; छोटा
पत्तंगिबुं न० पतंगा; तितली; पतिग	पत्थर (२) (धार तेज करनेकी)सिल्ली;
पत्ताकर्षुं न० विट; पुरजा(कांग्रजका)	पयरी (३) अरमरी; पथरी (रोग)
पताबढ स्त्री० निबटारा; फ़ैसला	पचरो पुं० देखिये 'पध्थर' (२) [ला.]
<b>पताववुं</b> स॰ कि॰ देखिये. 'पतववुं'	जड-भावनाहीन मनुष्य (३) विघन; रोग (४) नगर नगर नहीं। राज्यन
पतासुं न० वतासा; बताशा	रोड़ा (४)ख़ाक;कुछ नहीं;अल्लाह-
पतिषुं वि० कोढ़ी; महारोगी	का नाम ; पत्यर ; उदा० 'तेने शुं <b>पथरा</b> जनके से (') <b>क्रिल्टो अल्लो</b> –
पतीकुं न <b>्र</b> कतला; फॉक	आवढे छे ! '। [-नासबो, मारवो =
पतीज स्त्री० आबरू (२) विष्वास;	बाधा खड़ी करना; रोड़ा डालना।
प्रतीति ; पतीज [प.] [त्यौहार	<b>–धाकवो ≕ औलाद</b> पत्यर जैसी निक-
पतेती स्त्री॰ पारसियोंके नये सालका	म्मी होना; (किसी स्त्रीकी कोखमें)
पत्तर स्त्री० आवरू (२) न० पत्तल;	कुपात्र पैदा होना.] [प्रसार;फैलाव
पत्तर (३) भिक्षापात्र; कपाल।	पथार पुं० बड़ा बिछौना (२)विस्तार;
[-उचाडवी, जोजण्वी, लांडणी,	पथारी स्त्री॰ बिछौना; शय्या (२)
फाडवी, रंगडवी = इरुजत बिगाड़ना,	[ला.] मुकाम; अड्डा; पड़ाव (३) जीपारी । प्रिलेज - सारणे उसरवनाः
उतारना (२) हैरान करना.]	बीमारी। [ <b>ए लेवुं =</b> खाटसे उतारना;
क्तरदेसियं न॰ देखिये 'पतरदेलियं'	मृत्युशय्या पर लेना.] [शम्याप्रस्त
क्तुं न॰ पत्ता (पेड़ आदिका) (२)	<b>पथारीय</b> क्ष वि० (बीमारीके कारण) <b>पथारी पुं० देखि</b> ये 'पयार'
काग्रेडका मोटा दुकड़ा; पत्ता; पूच्ठ	-
(३) (ताशका)पत्ता (४)पोस्ट-कार्ड;	पच्यर पुं० पत्पर;पापाग(२)रास्तेकी लंबाई सूचित करनेवाला या जीवा
पत्र; चिट्ठी	তমাহ বুদেরে করেবাতা পা আব।

۰.

### षण्यरपादी

आदि वतानेवाला पत्थरका गड़ा हुआ दुकड़ा;पत्थर(३)पत्थरका-सा दिल-वाला, संगदिल आदमी [स्रा.]। [-उपर पाणी = व्यर्थ परिश्रम; कुछ असर न होना। - तरबो = पत्वर पर दूब जमना; अनहोनी बात होना । --नी छाती = भावनाहीन मनुष्य; पत्यरका कलेजा (२) पत्थरकी छाती; मज्र-बूत दिल. ] **थच्यरपाटी** स्त्री० पाटी;पटरी; 'स्लेट' **पम्बरियुं** वि० पत्थरका बना हुआ (२) पत्थर जैसा सख्त (३) न० पत्थरका बरतन; पथरौटा पद पुं० पद; पैर (२) न० दरजा; पद; ओहदा (३) अर्थयुक्त शब्द; षद [ब्या.] (४) पद्यका चरण; पद (५) [ग.] 'टमं' (६) पद; वर्गमूल; 'रूट' पदक न० पदक; चन्द्रक (२) सिक्का पदवि(-वी) स्त्री० पदवी; ओहदा (२) उपाधि; खिताब; पदवी परवीदान समारंभ पुरु पर्ववीदान समारोह; 'कोन्वोकेशन' **पदवीघर, पदवीधारी** वि० उपाधिधारी पवार्थ पुं० पदार्थ; शब्दार्थ (२) चीख; वस्तु; पदार्थ (३) तस्व पदार्थपाठ पुं० प्रत्यक्ष पदार्थके द्वारा बोध परार्थविज्ञान न० पदार्थविज्ञान; 'দিজিৰ্ম' पदाववुं स०कि० 'पावबुं'का प्रेरणार्थक; पदाना(२)[ला.] जुब परिश्रम कराना ; बका डालना; हैरान करना (३) बलपूर्वक निकल्लवागा, प्राप्त करणा; हवियाना **पर्वु** न० पद; काम; उदा० 'गोरपर्वु'

पत्रराजणी स्ती० पधरावनी; पधारमा; पधराना (२) भेंट; उपहार पणरावयुं स०कि० आदरके साथ लिव जाना, बैठाना या स्थापित करना; पघराना (२) गले मढ़ना (अनचाही बीज) [ला.] **पचारवुं** अ० कि० पघारना **पनाई** स्त्री० डोंगी; नाव; पनसुइया पनारो पुं० पाला; साबिका (पड़ना) पन् (नुं')न०पना;पन्ना(इमली आदिका) पनो (नो') पुं० पनहा; अर्जा पनोती(नो') स्त्री० शनिकी दशा; बुरे दिन; साढ़े-साती पनोतुं(नो') वि० शुभ; मंगलकारी (२) सुखी; बाल-बच्चेवाला पर्झुन० एक प्रकारका रत्न; पन्ना **पपडा**ट पुं० (मिजाजसे) पड़-पड़ बोलना **पपनस** न० एक फूछ; चकोतरा -**पपलाववुं** स० कि० सहलाना; थपकना **भर्षेयुं** म० पपीला; एर्रडमेवा भगेषो पुं० पपीहा; चातक (२)पपीता (वृक्ष) पमरचुं अ०कि० महकना; सुवास फैलना पमराट पुं० महक; खुशब् पमार्क्यु स०कि०'पामनुं' का प्रेरणार्चक पयनंबर पुं० पैग्रंबर; नबी पर्यपाम पुं० पैसाम (२)ईक्वरी संदेश पर ज० ऊपर; पर पर वि॰ पर; पराया; ग्रैर (२) अण्य; दूसरा (३) दूर; अतीत (४) पर; आगेका; बादका; उत्तर (५) कोड़ परकम्मा स्त्री० परिक्रमा; प्रदक्षिण **परकार** पुं० परकार; 'कंपास' परब स्त्री० परस; जौष; परीक्षा। [-होबी≔परक होना.]

<b>परसन्</b>	२९२ परबोडियुं
परवर्षु स॰ कि॰ परीक्षा करना;	परणावनुं स०कि० न्याह करना;'वरपवुं'
परखना (२)पहचानना ; जान लेना	का प्रेरणार्थक रूप; क्याहना [प.] (२)
<b>- परसाववुं</b> स॰कि० 'परखवुं', 'पारखवुं'	दूषमें पानी मिलाना [ला.]
कियाका प्रेरणार्थक रूप; परखाना	
🔹 (२) [ला.] देना (३) सचेत करके	(२) स्त्री० स्थाहता औरत; परनी
सौंपना; सहेजना (४) समझाना; समझे	<b>परजेत(०र)</b> न० ब्याह; शादी (२)
ऐसा करना	स्त्री० व्याहता; पत्नी
परसामुं अ०कि० 'परसवुं', 'पारसवुं	<b>परणैयुं</b> त० देखिये 'परणायुं'
कियाका कर्मणि रूप;परखा जाना(२)	परण्यो पुं० व्याहनेवाला; पति
विवाहके लिए दुल्हेके रूपमें पसंद	परत अ० वापस (आना, देना, करना)
आना [ला.]	(२)स्त्री० बारीक चूर्ण;फंकी, भस्म
परमञ्जू वि० परोपकारी; परहित	आदि । [ <b>~करवुं =</b> लौटाना; वापस
<b>परगणुं</b> न० परगना; तहसील ——————————	करना.]
परवास न० दूसरा गाँव	परथार पुं० देखिये 'पडयार'
परगामी वि॰ अन्य गाँवका रहनेवाला	परदादो पुं० परदादा; दादाका जाप
(२) अनजान (३) तटस्य [ला.]	परदेश पुं० परवेश । [सेडवो -= काम-
<b>भरपूट</b> (	घंघेके वास्ते परदेशमें जानेका साहम चन्नून ।
(२) न० सुर्दा; रेखनारी [चमलपार	करना.] सन्दर्भ संद वेस्टिये (सन्दर्भ)
<b>परको</b> पुं॰ प्रतापका प्रमाण; परका;	<b>परवो</b> पु० देखिये 'पडदो' परवरीयां कि अपन प्रातिनार जिल्लानीय
<b>परछंड</b> वि० कद्दावर; बढ़े डील-डीछका <b>परछछ्यं</b> अ०कि०प्रज्वलिस.होना;जलमा	<b>परनातीऌं वि०अ</b> न्य जातिका; विजातीय <b>परनार(री)</b> स्त्री०अन्यको स्क्री; परस्त्री
<b>परकाल्यु</b> अण्यम् अण्यालस.हागः, जाल्या <b>परजीवी</b> वि० परोपजीवी	परनास्त-स्त्री०,(-छुं) न० परनाला
परणाणा विण परापणावः परठ(•भ) स्त्री॰ क्रबूलत; करार(२)	परपोटी स्त्री०छोटा बुदबुदा या बुलबुला
दहेज; दायजा {करार करना	परपोटो पुं० बुदबुदा; बुलबुला (२)
पर्वयं स॰ कि॰ तय करना; ठहराना;	भणभंगुर वस्तु; बुलबुला [ला.] ।
परड स्त्री० माथापच्ची(२)जला; झंझट ।	रायपपुर पर्पु, पुरुपुरुप [ठा.] । [ <b>−फूटवो ≕</b> बाहरी त <b>इक-भ</b> ड़क वा
म्रह्मी=माथापच्ची छोड़ देना;	[ पूर्ववा करणाहरा (एका वर्णना का दिखाऊ आयोजनका प्रकट हो जाना.]
[गूरुवागावारण्वत छोड़ देना.]	परब स्त्री० भ्याऊ;सबील;पौसला
<b>परण्डुं (वुं)</b> न <b>े सँपोला;</b> पोआ	धरबढी स्त्री० पक्षियोंको चुग्गा डालने
<b>परहियो, परडो</b> पुं० बबूलकी फली;सँगर	के लिए एक ऊँचे खंभे पर बनझ्यी
परण न० आह; शादी; परिणयन(२)	हुई वारों ओरसे खुली छतदार बुर्बी ;
भाहेकी तीय्र इच्छा [सा.]	छत्तरी [गमे याः करते
परणयुं स॰भि॰ म्वाहना; शादी करना	परवार्ष अ∙ःसीधाः; किना और कहीं
वरमार्यु न० छोटा सकोरा (२) मिहीका	परबीडियुं न० लिफ़ाफ़ा (२)काव्रअफी
दिया; दिउछा	थैली.

**परबीडो** पु**० बड़ा** लिफ़ाफ़ा **परभातियुं** न० देखिये 'प्रभातियुं'

दिनसे एक दिन पहलेका

परमाणु पुं०; न० परमाणु

**परवडवुं** अ० कि० पुसाना

गरज ; मतलब ; जरूरत

**परवरवं** अ० कि० जाना

परमाणुं न० नाप; परिमाण

परमियो पुं० सूजाक; 'गोनोरिया '

परबळ न० परवल (तरकारी)

परवा स्त्री० परवा; परवाह (२)

**परवाड**(ड,) स्त्री० गाँवका सीमान्त;

परवानगी स्त्री० परवानगी; इजाजत

परवानो पुं० परवाना;अधिकार-पत्र;

**परवारवुं** अ० कि० काम पूरा करके

फ़ुरसत पाना ; सपरना ; फ़राग़त होना

(३) छुट्टी; आजादी [ला.]

परवार पुं०; स्त्री० फ़ुरसत

परवाळुं न० मूँगा; प्रवाल

परसत पुं० देखिये 'प्रसाद'

परसेको पुं० पसीना

परसादी स्त्री० देखिये 'प्रसादी' परसाळ स्त्री० देखिये 'पडसाळ'

परहेज (र्) वि० बंधनमें पड़ा हुआ;

क्रैंदी (२) परहेख करनेवाला; बीमा-

रौमें कुपय्यसे अचनेवाला (३)परहेज

'लाइसेंस' (२) तितली; परवाना

[सिवान

परभाई (--मूँ) अ० बिना कहीं गये था

रुके; सीधा (२)वि० बाहरी; बाहरका

परम वि॰ उत्तम; परम (२) अगले

दिनसे एक दिन आगेका; पिछले

**परम बहाडे, परम दिव**से अ० परसों

परमाण वि० प्रमाण; सार्थक; ठीक;

चरितार्थ(२)अ० अवश्य; जरूर

परमंशाम न० उत्तम लोक; मोक्ष

## पर्रवीडो

२९३

44 -खाने-पीनेमें संयम करनेवाला (४) पापसे बचनेवाला (५)स्त्री० पापसे बचना; परहेजगारी; परहेज करनेका कार्य । [- **करवं =** क्रैद करना.] परहेजी(र्) स्त्री॰ क़ैद (२) परहेज पराई स्त्री० ओखली, खरल आदिका छोटा मुसल; दस्ता (२) रंभा (छेद करनेका) (३) वि० स्त्री० परायी पराणी स्त्री० बैल हॉकनेकी आरीदार छोटी छड़ी; पैना पराणे अ० बलातु ; वरबस (२) मुव्कि-लसे;अति श्रमसे [लंबी छड़ी;पैना पराणो पु॰ बैल हॉकनेकी आरीदार परात स्त्री० खड़े किनारेकी बड़ी थाली; परात (२) मट्ठेके ऊपरका पानी **परापूर्व** पुं० बहुत पुराना काल **परायं** वि० पराया; ग्रैर परादा स्त्री० छाछके ऊपरका पानी पराळ न॰ पयाल; पूआल परांठुं(०) न० परांठा; परौठा परिष पुं० वृत्तकी परिषि; घेरा (२) अर्गला;सिटकिनी (३) अर्गला जैसा एक डंडा [होना; रूपांतर होना परिणमयं अ० कि० परिणामको प्राप्त **वरिवळ** न० शक्ति [(२)वंशज परियं न०, (--घो) पुं० पुरसा; पूर्वज परिसंख्या स्त्री० परिसंख्या; गिनती (२) अंदाज; अटकल (३) जोड़; जमा (४)एक अर्थालंकार;परिसंख्या 👘 परी स्त्री० परी; अप्सरा परोकरा स्त्री० परीकथा; अदुभुत कथा; 'फेयरी टेल' पद न० पीब; मवाद; पीप ं पिरे पर्व न० उपनगर; 'तबर्ब' (२) क० दूर;

For Private and Personal Use Only

 - 12	IC

568

परूणागत स्त्री० पाहुनी; आतिष्य; मेहमानदारी परूपो पुं० पाहुना; अतिथि परेज, परेजी (रे') देखिये 'परहेज' आदि परोड(रो') पुं०; न० तड्का; प्रभात परोदिषुं न० तड्का; प्रभात; सबेरा परोणागत स्त्री० देखिये 'परूणागत' परोणी स्त्री० देखिये 'पराणी' परोजो पुं० देखिये 'पराणो' परोचो पुं० पाहुना; मेहमान परोबचुं स॰ कि॰ पिरोना (२) [ला.] किसी काममें मन लगाना, जोड़ना **पर्व** न० पुस्तकका कोई भाग; पर्व (२) अष्टमी, चतुर्देशी, पूर्णिमा और अमावस्यामें के कोई एक तिथि; पर्व (३) पवित्र दिवस (४) त्योहार; उस्सव; पर्वे (५) गाँठ; पोर (ईख आदिकी) **पर्वजी** स्त्री० पवित्र दिवस पलक स्त्री० पलक; क्षण; निभिष पसक स्त्री० पलक गिरनेकी किया;क्षपक पलकर्ष अ० फि० झपकना; पलकका गिरना और उठना (२) पलक गिरनेकी तरह गति होना या आना (३) रह रहकर धमकना; झिलमिलाना पलकारो पुं० झंपकेना; पलकका गिरना; झपक (२) झिलमिल (रोशनी ं आदि) (३) इशारा; संकेत पसटण(--न) स्त्री० पलटन पलटवुं स० फि० पलटना; बदलना पलटाबचुं स० कि० पलटना; बदलवाना **पलटाबूं अ०क्रि०** 'पलटवूं' कियाका कर्मणि; बदल जाना; पलट जाना; ः पलटना पलटी स्त्री०, (--टो) पुं० उलट-फेर;

पवन उलट-पुलट (२)पलटा (संगीत, कुस्ती आदिमें) [ पसीजना [ला.] प्रसळव्यं अ०कि० भीगना (२) (दिल) **पलंग** पु० पलंग [मौसिक हिसाब पलाकुं (--- सुं) न० अंक के पहाड़ेका प्रश्न; पराण न० पलान; जीन या चारजामा (२) खवार होनेकी किया; सवारी पलामवुं अ० कि० सवार होना (२) पलान कसना; पलानना पि.] **দজাৰ দুঁ**০ দুজাৰ पक्षाळवुं स० कि० भिगोना (२)[ला.] दिल पर असर पहुँचाना; पिषलाना (३) किसी कामका आरम्भ करना (४) मूँडनेके लिए दाढ़ी भिगोना पर्लाठी स्त्री० पालथी; पलधी पलीत पुं०; न० पलीत; पलीद; भूतप्रेत पलीतो पु॰ पलीता ; फ़लीता । [--पांपनो =पलीता दागना, देना, दिखाना। (२) उकसाना; उभारनाः] पलेट पुं०;स्त्री०पलेट(सिलाईमें);पट्टी पलोटवुं स०कि० कामकाजमें लगाकर अनुभवी-होशियार बनाना (२) फेरकर सवारीके लायक बनाना; सघाना ; निकालना ( ३ ) चप्पी करना ; पाँव दबाना पस्छबी वि॰ पल्लवित (वृक्ष) (२) स्त्री० इंगित; इशारा; उदा० 'कर-पल्ल्बी, नेत्रपल्ल्वी' पल्लुंन० पलड़ा; पल्ला (तराजू) पल्छुं न० दरकी ओरसे कन्याको दिया जानेवाला स्त्रीधन; हुंडा पबई स्त्री० हिजड़ा; हीजड़ा; जनखा पबन पुं० पवन; हवा (२) [ला.]

धमंड; अहंकार (३) फ़ैशन। [-नाडी नालवी = धमंड चूर-चूर करना।

प्रमपावडी	२९५ पहेंब
-बालबो, बाबो = -का फ़ैसन होना ।	पसार वि० पार किया हुआ (२) पास
<ul> <li>–भरावो == मिखाज होना; घमंड होना;</li> </ul>	
मिजाज सातवें आसमान पर होना.]	
पवनपावडी स्त्री० वह जादूकी खड़ाऊ	पसारवुं स॰ ऋ॰ पसारना (२) लंबाना
जिससे आसमानमें उड़ा जा सके	पसारों पुं० पसारा; प्रसार; विस्तार
<b>पवाडो</b> पुं० पैवाड़ा; वीरगाथा	<b>पसीनो</b> पुं० देखिये 'परसेवो '
पकात, पवायत स्त्री० सूत या कपड़ेमें	पस्तानुं न०रदानगी (अन्य गाँव जानेको)
लगाया जानेवाला कलफ़ ; माँड़ी (२)	(२) प्रस्यान (यात्राके पहले शुम
स्रेत आदिकी सिंथाई	मुहूर्तमें किसीके घर वस्त्रादि रख आने)
पवाली स्त्री० छोटा जाम; प्याली	
(२) पानी आदि भरनेका एक ऊँचे	पस्ताबी पुं० पछतावा; पश्यात्ताप
किनारोका पात्र	<b>पस्ती</b> स्त्री०निकम्मे काग़ज;रही
पबार्लु न॰ प्याला; गिलास; जाम(२)	पहाड पुं० पहाड़; पर्वता(-जेवुं=पहाड़
बड़ा नलाकार बरतन (३) अनाज	जैसा बड़ा, दुढ़, अचल या मजबूत;
नापनेका छोटा पात्र ; पायली	पहाड़.
प्वैयो पूं॰ हिजड़ा; हीजड़ा; जनखा	<b>पहार्डा</b> वि०पहाड़ी;पहाड़का (२)मज-
पश्चिम वि० पश्चिमी; मग्नरिबी;	<b>बूत</b> ; कद्दावर [स्रा.] (३)स्त्री० छोटा
पच्छिमका (२) पीछेका; पिछला	
(३) स्त्री० मग़रिब; पश्चिम(४)	एक रागिनी; पहाडी
न॰ योरप, अमरिका वग्नैरह पश्चिमी	
प्रदेश। 🛛 – मां सूर्य जगवो = अनहोनी	पहाजीपत्रक न० पटवारीकी बही;
होना; पत्यर पर दूब जमना; आस-	पहाणो पु॰ देखिये 'पहाण '
मानके तारे तोड़ना.]	<b>पहेरण (</b> प्) न० कुरता
पस स्त्री० अंजलि; अंजलिपुट; ओख	
पसरवुं अ०कि० पसरना; फैलना	<b>पहेरवेक</b> पुं०कपड़े पहननेका ढंग या क्ली;
पसली स्त्री० आधी अंजलि; पसर; ओख	यहनाया (२)पोशाक; पहनाया
(२) हयेलीका चनाया हुआ गढ्ढा	पहेरामणी स्त्री० कन्याके वाधकी कोरसे
जिसमें आचमनका जल रहे; अंजलि	
(३) वह उपहार जो भाई बहनको	आनेवाली भेंट; मिलनी
देता है; आतृदत्त (४) मॅंगूठी	<b>पहेरावर्षुं</b> स०कि० पहेरवुं का प्रेरणार्थक;
पसन्द वि॰ पसंद; मनोनुकूल (२)	पहनाना (२) गरुं मढ़ना (मारू आदि)
चुना हुवा; पसंद; स्वीकृत	<b>पहेरेगीर</b> (प्) पुं० पहरेवार; पहरी
पसंबगी स्त्री० पसंद; रुचि	पहेरो (१) थुं० पहरा; देस-रेस ; जास्ता;
पसाम्पर्तुं न व बल्लिशशके रूपमें मिली हुई	वीकी; निगरानी (२) संत्राक; हवाला
जमीन; मूँडरी	पहेल (पहें)स्त्री॰पहरू ; आरंभ ; अगुआई

_		
	٠	•

- फोर (पहें) पुं० दो कोनोंने बीचकी सतह; पहलं (हीरा, पासा आदिकी) पहेलबार (पृहॅ) वि० पहलदार पहेलबहेलुं(प्हॅ; व्) वि० पहली ही बारका; सबसे प्रथम (२) अ० पहले-पहलं; प्रथमतः
- पहेलबान पुं० पहलवान; भल्ल
- **पहेलां (प्**हॅ) अ० पहले; आगे; पेस्तर
- पहेरुं (प्हॅ) वि० पहला; प्रथम (२) मुख्य; आला; श्रेष्ठ (३) व० सबसे आगे; सर्वप्रथम
- पहोच (पहाँ) स्त्री० पहुँच ; रसाई ; गति (२) रसीद (३) [ला.] समझनेकी ः शक्ति; सूझ-बूस (४) सामथ्यं; बूता । [पहोची वळवुं = वराबरीमें आना; मुक़ाबलेमें पार उतरना; –से पार पाना.
- पहोषवुं (पहाँ) अ०क्रि० पहुँचना; जाना (२) (भेजी हुई चीआका) मिलना (३) टिकना; जारी रहना; लग रहना (४) स॰ कि॰ मुक़ाबलेका होना; समान होना; पहुँचना 🗠
- पहोचाडवुं(पहाँ) स० कि० 'पहोचवुं ' का प्रेरणावंक; पहुँचाना
- पहोचेलुं (प्हों) वि० जो किसीसे छला न जाय; अनुभवी; चालाक; घाघ **पहौर(प्हॉ)** पुं० पहर; याम
- **থচ্টাক্তাই (**ণ্**চ্ট)** ধ্বী০ ৰীড়াই
- **पहोळुं (**प्हों) वि० मौड़ा (२) कुशादा; विस्तृत (३) जो बंद न हो; खुला (४) কঁজায়া हুজা; জলগ; ভবা০ 'হাগা पहोळा करवा '। [--वई अबु == तवाह होंगा; चौपट होना। --वर्षु = फूलकर कुण्मा होगां; बार्छे सिरुमा; अत्यधिक उदार या बेफ्रिक बनगा]

10. पहोंब, (०वुं), ( --धाडवुं) (पहां०) देखिये 'पहोच' आदि पहोंची (प्हॉ०) स्वी० पहुँची (गहना) **यहॉचेलुं (प्**हॉ०)वि० देसिये ' पहोचेलुं ' पहोंचो (पृहॉ०) पुं० हाथकी कलाई; पहुँचा। [पहोंचा करडवा = कुछ नं सूझना; अनुरू मारी जाना (२) हिम्मत हारना; पछताना । --पकढवो = गुनाह करते हुए किसीको पकड़ना (२) पहुँचा [(२)क्षण;**छन थळ स्त्री०** पल; ६० विपलका समय पळवुं अ०कि० जाना पळवुं अ० जि० पालित होना; पलनो; पाला-पोसा जाना (२) रास या

अनुकूल आना (३) (जमीन) अपने क्रब्बेमें होना (४) स० फि० (वचन) पालना; निबाहना [ सुहाती पळको (-सी) स्त्री० चापलूसी; ठकुर-**पळावुं** अ० कि० 'पळवुं', 'पाळयुं' का

पकड़ना.

कर्मणि; पाला जाना पळिपुं न० पका हुआ बाल; पलित।

**[ पळिमां आववां ==** बाल सफ़ेद होना ; **शुढ़ापा आना;** सफ़ेदी आना.] पळी स्त्री ०पली (घी-तेल निकालनेकी) पळोटवुं स० कि० देखिये ' पलोटवुं ' **पंकावुं अ० कि०** नाम होना; सराहा जाना; —का नाम लिया जाना पंतिणी स्त्री० मादा पक्षी; पक्षिणी पंसी(--सेपं) न० पंसी; पलेरू पंसो पु॰ पंसा (२) मोटर आदिने पहिये परका अक्कन; पंक्षी; 'मडगाईं' **पंगत** स्त्री• यंगत; पंक्ति (भोजनमें) मंच वि० पंच; पाँच (२) न० पंचायत; - पंच (सभा) (३) पुं० पंचका सदस्य;

पांच

	110
पंच। [ मीमबुं = पंच ब्दना; पंच	(
भानना; मध्यस्थ बनाना.]	:
पंचक न॰ पांचका समूह; पंचक(२)	
धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र; पंचक	ş
र्थचक्वास पुं० पंचनामा; पंचकी तजवीज	qi
पंचनामुं न० पंचनामा ; पंचोंकी तजबीज	
पंचराउ वि० फुटकल; खुर्दा (विकी)	
(२)पंचमेल(मिश्रण)	षंग
पंचरात्रि स्त्री०; न० पंचराशिक [ग.]	पं
<b>पंचवायका</b> स्त्री० अफ़वाह; जनरव	षंग
पंचाजीरी स्त्री० पंजीरी [९५	पंत
पंचाणु (-णुं) वि० पंचानवे; पचानवे;	¢.
पंचात स्त्री॰ पंचायत ; पंच (२) पंचायत-	पं
की जाँच या तजवीज (३) पंचायतका	
फ़्रेंसला (४) [ला.] ऊहापोह; माथा-	पंर
पच्ची; बहस (५) पचड़ा; झमेला।	W
[वहोरवी, - मां पडवुं = तकरार या	
संझट मोल लेना; पचड़ेमें पड़ना.]	1
पंचालनामुं न० पंचनामा	च
पंचातियुं वि० झंझटी; पेचीदा; टेढ़ा	;
(काम या चीज) (२)पंचायतके करने	<b>q</b> i
योग्य; पंचायती(३)झगड़ालू; बखेड़िया	षं
पंचायत स्त्री० पंचोंकी मंडली; पंचायत	•
(२)बिरादरीकी कार्यकारिणी सभा;	
(२)(परायसम कायसा स्थायसा, पंच (३)पचड़ा; तकरार; झमेला	i
पंचायन वि० पचपन; ५५	पंष
पंचःवन विण पंचपन, ९९ पंचःश्री(-सी) वि० पचासी; ८५	•
पंचाशा (	
पद्धान (२० पाच अनावाला, पचान (२)न० तिथिपत्र; पंचांग	पंग
पंचियुं न० छोटी धोती; कछनी; अँगोछी	q
-	
<b>पंचालेर</b> वि० पचहत्तर;७५	व
पंजरी स्त्री० पंजीरी	प -
पंजेवी स्त्री० खेतीका अक साधन; पाँचा	प
पंजो पुं० (हथेली और पैरका) पंजा	प
(२) <b>चिडि्</b> योंका पंजा; <b>चंगुरु(३)पंजा</b>	

(ताश, पासा आदिका)। विजामा सेव् = पंजेमें करना ; क़ाबुमें करना । -- **सॅंभी** काढवो, चोढी देवो = तमाचा मारना; हलिया विगाड देना.] ड पु॰ पिंड; शरीर; देह(२)खुदकी जात (३) पिंडा: पिंड (श्राद्वमें) (४) पीलिया; पांडुरोग **डरोगियुं, पंडरोगी** वि० पांडुरोगी डे अ० खुद; आप; स्वयं डो पुं० पंडा; यात्रावाल बोळं न० चिचिंडा (तरकारी) क्या पुं० पूरोहित (२) एक अल्ल **डचो** पुं० ग्रामशालाका ब्राह्मण-शिक्षक (२)पुरोहित; उपाध्याय ' स्टर' तप्रयान पुं० मुख्यमंत्री; ' चीफ़ मिनि-**तियाळूं** वि० जो कई आदमियोंके सा-झेमें हो;पत्तीवाला (२) न० सासेका म्योपार: साझेदारी तुची पुं० सिर्फ़ बच्चे पढ़ाना जानने-वाला; मास्टर; मुंशी (२) पोथीपंडित बर वि० पंद्रह; पंदरह; १५ ष पुं० पंप (पानी खींचनेकी कल) (२) हवा भरनेकी पिचकारी; पंप (३)मोटरमें पेट्रोल भरनेका यंत्र मा बह स्थान पाळवुं स० कि० सहलाना (२) [ ला. ] अनुचित लाड़-प्यार करना (३) सहे-जना; तंदेहीसे सम्हालते जाना **पोयो पु**० इँटका टुकड़ा; **इँटकोहरा** n वि० चौथे हिस्सेका; पाव n स्वी० तरफ़: ओर nई स्त्री० पाई; पैसेका तीसरा भाग **ाक** वि० पाक; पवित्र(२)प्रामाणिक **क्त** पुं० पाक; परिपन्वता(२)पैदाइश;

उपज (३) खेतीकी उपज; फ़सल;

नांकट

- पैद्राबार(४)साथ पदार्थ;पाक (५) माक(फोड़ेका)(६) रसोई;पकाना; पाक
- पाकट वि० पाकठ; पका हुआ; पक्का (२) पुरुता; पाकठ; अनुभवी
- **पाणवुं अ**० कि० पकना; परिणत अव-स्थाको प्राप्त होना; सीझना (अनाज, फल आदि) (२) फ़सल पैदा होना; उपजना; उदा० (बाजरी आ वर्षे बहु पाकी ′ (३) (शरीरमें) मबाद भर आनेकी अवस्थाको पहुँचना; पकना (४) (बालका) सफ़ेद होना; पकना (५) [ला.] सिद्ध होना; निकळना; सायित होना; उदा० ' छोकरो सारो पानयो '(६) (शरीर, अवयत) घुर हो गया हो इस तरह पीड़ा होना; उदा० ' वाकयी शरीर पाकी मयुं छे ' (७) नियत समय आना; बक्त पूर्ण होना (हंडी) (८) (गोटीका) सब खानोंको परिकर अपने खानेमें पहुँचना; पकना (९)प्राप्ति होना; खटना; - के हाय आना ; उदा० ' आजनो दहाडो पाक्यो; तेमां तारुं सुं पाक्युं ?'
- **पाकाई** स्त्री० देखिये 'पक्काई'
- पाकी स्त्री० काम-काज बंद करना; हड़ताल
- बाकुं वि० पक्का; जो कच्चा न हो; पका हुआ (२) पुक्ता; पाकठ; अनुमवी(३)पक्का (मोजन, सीघा) (४) जो छूनेसे जूठा न हो; घीमें पकाया हुआ (५)जो छला न जाम्य; अनुभवी; घाघ [ला.] (६) होशियार; उदा० 'छोकरो गणितमां पाको छे'(७) दृढ़; अचल; पक्का (८) जिसमें कमी न हो; परिपूर्ण

पसम्ब

- (९) जिसमें सुरखी-चूना आदिका उपयोग हुआ हो (मकान); (क़रार या लेख) जो क़ानूनके विरुद्ध न हो; पक्ता। [-पाम = जराजीर्ण-वृद्ध मनुष्य।--सम्बाण = क़ानूनके अनुसार आखिरी लेख-क़रारं। पाके पावे = निष्चयपूर्वक; निस्सदेह.]
- पाग (-घ) डी स्त्री॰ पगड़ी (२) [ला.] अच्छे कामके बदलेमें दिया जानेवाला उपहार; सिरोपाव (३) वह रकम जो मकान किराये पर लेने पर पेशगी और नाजायज तौर पर दी जाती है; पगड़ी (४) रिश्वत । [--उतारबी ==(किसीके) पैरों पर पगड़ी रखना; दयाकी भीख मौगना । -ऊंघी घालबी == दिवाला निकालना ।-फेरबवी == मुकर जाना; सूठ बोलना (२) दिवाला निकालना (३) पक्ष बदलना । -बंषावबी = इनाम या सिरोपाव देना (२) सरा-हना; शाबाशी देना (३) शोक छड़ाना.] पाछडीपनो पु॰ पगड़ीके जैसा विस्तार

(बहुत लंबा, कम चौड़ा)

**भाच न०** सवाद; पीब; पीप

- पाछर्खुं वि० पिछला; बादका (२) पहलेका। [पाछली अवस्पा = वृद्धा-वस्या; बुढ़ापा। पाछली रात = रातका पिछला प्रहर; भीगी रात। पाछले बारजेबी = चोरी-चोरी; छिपे छिपे.]
- पाइस्ट अ० पीछे; पीठकी सोर । [--पबच्ं = पिछड़ जाना (२) किसी काममें संदेहीसे लगा रहना; जुटना (३)पीछा पकड़ना; पीछे लगना। --पबी वयुं == बराबरीमें न रह पाना; पिछड़ना; स्थिति या दरजेमें पीछे रह

पार्चु

पादी

- - पाटियुं न० तख्ता; पटिया; पटरी (२) काला तख्ता; क्याम पट (शालामें) (३) पांजरकी हड्डी; छातीकी हड्डी (४) एक बरतन। [पाटियां गोठवखां = (कोई चीज) अपनी जगह पर ठीक बैठे ऐसा करना; मेल हो ऐसा करना। पाटियां देवावां, भिडावां, बेसी अवां = कलेजा टूटना; छाती फटना; हिम्मत पस्त होना; छातीके किवाड़ खुल्ना (२) बंद हो जाना (३) नादार या दिवालिया होना। पाटियां रंगावां = खूब मरम्मत होना; बेभावकी पड़ना (२) बहुत टोटा होना.]
  - पाटियो पुं० बटलोईनुमा मिट्टी या षातुका एक बरतन; हांडी
  - पाडी स्त्री॰ पाटी; स्लेट (२) सूस या रेशमकी बुनी या गूंथी झुई चौड़ी पट्टी; निवार (३) धातुका पतला, लवा टुकड़ा; पट्टी (४) गाँवकी पट्टीदारी (५) एक ही मालिकीके पंक्ति-बढ सेत (६)माजरा; वाक्रया; उदा॰ 'सरपानाझनी पाटी'(७)दल; टुकड़ी;

--को पीछे छोड़ना.] **पार्धु** वि० पिछला; पीछेका(२) अ० पीछे(३)इसके अलावा; और; फिर (४) उलटी दिशामें; वापस; उदा० 'पाछो आव'(५)बाजू पर; जरा पीछे; उदा० 'तुं पाछो खस, पाछो बेस'। [ंपाछी पानी करबी ≕ पीठ दिखाना ; पीठ फेरना ।--**पगलुं भरवुं =** झिझकना (२) पलायन करना; पीठ फेरना । --पडवुं == हारना ; थक जाना ; षीठ फेरना। –वळवुं ≕ (चीजका) बिगड्ना, बेस्याद होना ( २ ) के होना ; उलटी होना (३) मर जाना; उठना । -वळीने (वाळीने) जोवुं = पीछे क्या है यह देखना; सोचना; बिचार करना ।–वाळवुं = अस्वीकार करना ; लौटा देना;भगा देना; निकाल देना.] पाडोतर वि० मौसमके पिछले समयका; पछेती (खेती आदि) पाची वि० पाजी; नीच (२) कंजुस षाट पुं० बड़ा पीढ़ा ; पाट (२) पूरा थान (२) जमीनका लंबा पट्ट; पट्टी (४) दो से ज्यादा अददकी एक साथ बुनाई (५) पाँवड़ा (चलनेके लिए रास्तेमें बादरार्थ बिछाना)(६)(ट,) स्त्री० बड़ी चौकी; तस्त(७)लंबा आयता-कारं टुकड़ा; (साबुन आदिका) (८) न० राजगद्दी **पाटडी** स्त्री० छोटी घरन; कड़ी पाटडो पुं० शहतीर; धरन पाटनवर न० राजघानी; पायतस्त पाटकाचो स्त्री०एक प्रकारकी गोह;गोह पाठकी स्त्री० लंबी, कम चौड़ी चौकी; ' बेंच ' (२) छोटा पीढ़ा (३) टखनेसे

For Private and Personal Use Only

# पादीदार

- दस्ता। [--उपर मूळ नासवी ⇒ शालामें जाना। -- वाळवी = वीरान करना; उजाड़ देना. ]
- **पाटोदार** पु॰ जमींदार; पट्टीदार (२) 'पाटीदार' जातिका आदमी
- पाटीवाळो पुं० रेलकी सड़क पर काम करनेवाले रेलके मजदूरोंकी टुकड़ीका आदमी; 'र्गेगमैन '
- **पाटु स्त्री**०; न० लात
- पाटो पुं० पट्टीके जैसा कपड़ेका लंबा पतला टुकढ़ा; पट्टी (२) (रेलकी) पटरी (३) लीक (गाड़ी आदिकी) (४) लोकरीति; रिवाज। [पाटा बांधवा = पट्टी पढ़ाना; बहकाना (२) अमित होना; कुछ न सूझना; होश ठिकाने न रहना। पाटे चढवुं = व्यव-स्थित रूपसे चालू होना; जमना। -- गोठबो = मेल मिलना; बनत होना.] पठ पं० पठ पठन (२) सबक: पाठ
- **पाठ** पुं॰ पाठ;पठन (२) सबक़; पाठ (३) बोघ;सीख(४)धार्मिक ग्रंथोंको नियमित रूपसे पढ़ना; पाठ
- **पाठमाला (–ळा)** स्त्री० क्रमिक पाठोंकी पुस्तक; पाठावळी
- **पाठवलुं** स०कि० भेजना; पठाना [प.] **पाठुं न**० पीठपर होनेवाला फोड़ा **पाठुं न० घीकुआ**रका पट्ठा
- पाड(पा′) पुं० उपकार; एहसान।[~ चडगे=-का एहसानमंद होना.] पाडवुं स०कि० गिराना (२) तैयार करना; बनाना (सिक्का आदि) पाडासार पुं० पक्का बैर (मैसों जैसा)
- **पाडी** स्त्री० भेंसका मादा बच्चा; पड़िया पा**डुं** न० मैंसका बच्चा; पेंडवा पाडी पु० भैंसका नर बच्चा; पाड़ा;

गली

भैंसा । [पाडा मूंडवा =निठल्ला होकर निकम्में काम केरना.] पाडो (पा') पुं० पहाड़ा **पाको** पुं• पाड़ा; टोला; मुहल्ला **पाडो**श पुं० पड़ोस पाडोग्रण स्त्री० पड़ोसिन पाडोशी पुं० पड़ोसी; हमसाया पाण(ण,) स्त्री० चौथा भाग; पाव (२) भौथा भाग सूचित करनेवाली खड़ी लकीर; पाई पाच न० सिचाई (२) मौड़ी; कलफ़ पाणियारी (पा') स्त्री० पनहारिन; पनहारी पाणिपार्व (पा ′) न० घरमें पानीके बर-तन रखनेकी जगह; पनसाल; घुड़ौंची पाणी न०पानी; जल; आब (२) जल जैसा कोई तरल पदार्थ; पानी (३) [ला.] धार; बाढ़ (४) तेज; आब; नूर (५) शुरवीरता; जीवट (६) टेक; आबरू; पानी; मान-मर्यादा (७) मुलम्मा; कलई। [ं--उतारबुं ⇒ सस्त परिश्रमके काममें लगाना (२) पानी उतारना; बेइर्जती करना । – अतरबुं ज्जार या बाढका पानी घटना; पानी कम होना (२) बुझाई हुई तलवार आदिका असर नष्ट होना; मरना (३) पानी उतरना; बेइज्जली होना (४) खूब श्रम पड़ना; थक जाना (५) (पैरका) सूजना । --वक्षावयुं = उकसाना; ललकार कर लड्नेको उद्यत करना (२) हथियार या लोहेको बुझानाः। –जबुं = इज्जत बिगड्ना, जाना । --ना रेलानी पेठे = छनभरमें ; झपाटेसे । – मों परपोटो = क्षत्रमंगुर वस्तु; बुक्रबुला। **--थडवुं =**= पानी

U.	Ξ.

पाधर्ष

पड़ना; वर्षा होना (२) मेहतत पातळ स्त्री० पत्तक; पत्त र (२) परोसा; पड़ना । अपहेलां पाळ = पानीसे पहले पत्तल (खाच सामग्री) पुरु या बॉध (बॉधना)। --पाणी करवुं पातळुं बि॰ पतला; महीन पाताल (--ळ) न॰ पाताल। [--फोडवुं ≕ =पानीके लिए तरसना (२) शका पृथ्वीके पेटामें से पानी निकालना (२) **डा**लना (३) सू**व**. खुश करना। -पाणी थई अबुं ≠ पसीनेसे तर हो वति कठिन काम करना; पत्थरको ओंक लगाना; आसमानके तारे जाना (२) खुद खुश होना (३) (कार **भा**दिका)पानी होना ।--पार्चु --- मुलस्मा तोड़ना ।--मां पग होवा == अप्रकट रूपसे चढ़ाना (२) (हथियारकी धार तेज बहुत कपटी और चालाक होना। --मां करने या हथियारको सख्त करनेके पेसी जब्दं = घरतीमें समा जाना (२) अति लज्जित होना; गढ़ जाना.] लिए) पानीमें बुझाना; पानी बुझाना **पाताळकूवो पु०** अयाह पानीवाला कुर्आ; टघूबवेल (३) भड़काना; उक्तसाना (४)पानी वेना ; सींचना । --**पीने धर पूछवुं=**-पानी पात्र वि० योग्य; लायक; काबिल; पीकर जाति पूछना।--फरवुं, फरो उदा० 'दानपात्र ; विश्वासपात्र' (२) वळचुं = पानी फिरना; बरबाद होना। न० पात्र ; बरतन ( ३ ) नदीके दो तटोंके -फेरबबुं = पानी फेरना; चौपट बीचका भाग; नदीका पेटा या पाट; करना।–भरबुं = पानी खींचना (२) पात्र (४) अभिनेता; पात्र (५) पानी भरना;फीका पड़ना। – मां जयुं = कहानी या उपन्यासका पात्र (६) श्रम बेकार जाना **। –मां मूठीओ भरवी** लायक, योग्य स्पक्ति; पात्र = मिष्या प्रयत्न करना; हवा मुट्ठीमें **पापरण(-जुं)** न० विछावन; दरी बाँधना । – मूकबुं = प्रतिज्ञा लेना ।– **पायरबुं** स०कि० फैलाना (२) विछाना लागर्बु = पानी लगना। - लेबुं = पानी पार नेव अपानकायु; पाद लेना(२)प्रतिज्ञा करना;नियम रखना.] पादण वि० पादनेवाला; पदोड़ा(२) पाणीचुं वि० पनिहा; जलयुक्त (२) **बरपोक; पदोड़ा** [ला.] न॰ पानीवाला नारियल।[-आप्रवुं, पादर न० गोईंड़ा; रहावन(गांवका) **परलाववुं == व**रतरफ़ करना ; निकाल **पावरी** पुं० पादरी देना।--मळवुं = बरतरफ होना.] **पादम्ं** अ० कि० पादना । **[पादी अनुं,** पाणीछल्लं वि०शरमिंदा; लज्जित (२) **वडव्ं = डर**्जाना.] पनिहा; जलयुक्त (३) न० नारियल पाधर वि० जनशून्य; वनस्पतिशुन्य; पाणीपोचुं वि० जिसमें कुछ पानी रहा उजाड़; वीरान (२)खुला; सैदान जैसा हों; पचपचा ्(३) न**्देखि**ये (पादर ', पाणीकेर, पाणीबरलो पुं० (स्वास्थ्य-पाइटरं वि० सीथा; जो लाड़ा या देंड्रा सुधारके लिए) स्थानांतर करना न हो (२) सरक; सीमा (२)न• बसेके कि परा; पत्र (२) मवईका कहीं गये को बिना; सीका पत्ता या उसकी एक बानची

पायानी केळवची

- पात्र न॰ पीना; पान पान न॰ पत्ता;पत्र (२)पुष्ठ(पुस्तकक्षा); पन्ना (३)नागरबेलका पत्ता; पान
- पानकर स्त्री० पतझड्
- पानडी स्त्री० छोटा और कोमल पत्ता; पस्लव (२) स्त्रियोंका कानका एक गहना;पत्ता [पानदान;पनडिब्बा पानदान(--नियुं) न०, पानदानो स्त्री० पानपटी(--ही), पानबीडी स्त्री०, पान-
- **बीबुं त**० पानका बीड़ा; तांबूल
- पानसोपारी स्त्रो०; न० पान और सु-पारीका मुखवासन (२) [ला.] तुच्छ भेंट; पानफूल (३) किसीके मानमें किया जानेवाला समारंभ
- **पानियुं** न० पन्ना; पृष्ठ(२) नसीबका पन्ना;भाग्य [ला.] [नीचेका भाग
- पानी (नी') स्त्री० तरुवेका एड़ीके धानुं न०पत्ता; पर्ण (२)पृष्ठ; पन्ना (३)
- (ताशका) पत्ता (४) औजारका घार-वाला भाग; फल (५) (रत्न) पन्ना (६) [ला.]जीवनभरका संबंध; पाला। [-पडवुं = साबिका होना; जीवनमें साय रहनेका मौका आना; पाला पड्ना.]
- **पानेतर** न० वह सफ़ेद वस्त्र जो व्याहके समय कन्यांको पहनाया जाता है
- पानो (नो ') पु॰ वात्सल्यसे माँकी छातीमें दूध उमड़ आना (२)पेन्हाना (३)जीवट; शूरवीरता; जोश; धैयं [ला.] i [-चढवो = छातीमें दूध भर आना, उमड़ आना (२)ढुलार होना; दूध पिलानेकी इच्छा हीना (३)जोशमें आना.]
- पाच न॰ अधार्मिक इत्य; पाप (२) [ला.] कपट (३) नापसन्द ध्यक्ति;

कामका मेद खुल जाना ।--गयुं,टळपुं= बला टली; बाधा दूर हुई;पाप कटा । --फूटी नीक्ळवुं=-पाप उदय होना; पापका फल मिलना.] पापका फल मिलना.] पापड पुं० पापड़ [सार पापडकार, पापडियो सार पुं० पापड़ा-

बला [ला]। [**–उधार्य पडव्ं** ≍बुरे

- पापडी स्त्री० पापड़ जैसी एक साध चीज(चादलके आटेकी)
- पापकी स्त्री० सेम; शिंबी
- पापियुं वि० पापी; पातकी
- **पामर्थुं** स०क्रि० प्राप्त करना;पाना (२) ताड जाना; भौपना; समझ जाना; पाना
- पाय पुं० पाँव । [पाये पडवुं, लागवुं = मत्था टेकना; नमस्कार करना (२) माफ़ी मांगना; पाँव पड़ना.]
- **पायलानुं** न० पालाना; पायलाना; शोचालय
- पांयजामो पुं० पायजामा; पाजामा पांयसस्त न० पायतस्त; राजधानी पायदस्त स्त्री० (पारसीकी)मरणयात्रा

पायबळ न० पैदल लक्कर; पैदल पायमारू वि०पायमारू;पामारू;चौपट पायमास्ती स्त्री० पामाली; बरवादी पायरी स्त्री० सीढ़ीका पाया;सोपान; सीढ़ी(२)पद;दरजा(३)एक प्रकारका आम

- **पायलागण्** न० पालागन
- **पायली** स्त्री० अनाज नापनेका बरतन; पायली(२) **चवज्री**;पावली
- पायादार वि• पायदार; वुनिवादी
- **वायानी केळवची** स्त्री० **कृतिकार्छ** तालीम; मई तालीम

#### पासमा

÷

	101 1111
पायो पुं० पाया; पावा (२) कपड़े	<b>पारणुं</b> न <sub>्</sub> पारण; पारणा (वत, उप-
धोनेका डंडा (३)बुनियाद; नीव;	वासका)
नीवँ (४) (त्रिकोणका) तल (५)	पारणी पुं• पारधी; खिकारी
घी और गुड़की चाशनी (६)अग्वार;	पारस पुरु पारस; फ़ारस; ईरान
मूल [ला.] । [ <b>ओछो होयो =</b> अक्लकी	पारस पुं० पारस; स्पर्धमणि (२)
कनी होना; अन्लका फ़तूर होना	वि० बढ़ा; उम्दा क़िस्मका; उदा०
या पागल होना ; कमअनल । - साजवो	'पारसजांबु' [राय जामन
= शिलान्यास विधि करना ; मकानकी	पारसवांबु न० बढ़िया किस्मका जामुन;
दुनियाद डालना (२) <b>नीव डालना;</b>	पारसण स्त्री० पारसी स्त्री
कोई कार्य आरम्भ करना.]	पारसनाच पुं० पार्श्वनाथ
पार पुं० पार; अंत; छोर(२) हद;	<b>पारसपीपळो</b> पुं० पीपलकी जातिका एक
सीमा;पार (३) किनारा; तट; पार	बड़ा पेड़ (२) [ला.] बेघरबारका
(४) गूढ़ मर्म ; भेद [ला.]।[- <b>आववो =</b>	लापरवाह आदमी
समः ग्ते होना; खत्म होना । - अतरबुं	<b>पारसमणि पुं</b> ० पारस; स्पर्शमणि
=पार लगना; पार उत्तरना; किनारे	<b>पारसी</b> वि॰ पारसियोंसे संबद्ध (२)
पहुँचना ( २ )सफलतापूर्वक पूर्ण होना ;	पुं० पारसी [पेन्हान(;पा <b>सना</b>
सिंद्ध होना; काप्र पूरा उत्तरना।	पारसो पुं० थनमें दूधका भर जाना;
पामवो = मर्म, भेद जानना ।मूकवो,	पारावार पुं० समुद्र; पारावार (२)
मेलवो, लाववो = समाप्त, खत्म करना;	वि० असीम; अत्यधिक
पार लगाना.]	<b>पाराशीशी</b> स्त्री० तापमानयंत्र;
पार (र,) स्त्रो० लाख चढ़ाया हुआ	' थरमामीटर
मटका (२)अमृतवान ; मरतवान	पारिवात(०क) न० हारसिंगार;पारि-
पारकुं वि० पराया; ग़ैरका; दूसरेका	जातक;पारिजात (फूल और वृक्ष)
<b>धारल</b> स्त्री० परल;परीक्षा	पारी स्त्री॰ रंमा (पत्थर तोड़नेका)
पारसर्वु स०कि० परीक्षा करना;गुण-	<b>पारेक्ष</b> पुं० पारसी; जौहरी (सि <del>न</del> का,
दोष जान लेना;परखना(२)पहचान	जौहर आदिका(२)एक अल्ल
लेना; परस करना	<b>पारेवडुं, पारेवुं</b> न० परेवा;कबूतर
<b>पारस्</b> वि० क़द्रदौँ; परसैया	यारो पुं० पारा (घातु) (२) मालांका
<b>वारखूं</b> न० परीक्षा;परक्ष(२)परचा;	दाना; मनका (३) (तंबूरेके तारमें
प्रतापका प्रमाण; संबूत; अमतकार।	पिरोया हुआ) मनका (४) बंदूक़की
[-करबुं, बोबुं, लेबुं=परीका करमा ;	गोली या छर्रा (५) मसूड़ा
परलना ।देशाङ्युं, वताड्युं ⇔धम-	पार्लमन्ट स्त्री० इंग्लैण्डकी संसद्;
कार करके अपना बल दिखाना;	पार्लमेंट (२) संसद्
परवा देना; शक्तिका परिषय देना.]	पालक(-स) स्त्री० एक साग;पालक
बारण् न॰ पारुमा;झीटा सूरुं।(बण्लोंका)	<b>पालवा</b> स्त्री० पाइट (दीवारकी चुनाईमें)

_			١.
41		,	l

\$o¥

पासनी स्त्री० पालकी पालबुं न० (तराजूका)पलड़ा;पल्ला पालन न० पालन; परवरिश पालनपोषण ल० पालन-पोषण

- पालमहार पु॰पालक; पालन करनेवाला
- पाल्लब पुं० साढ़ीका पस्ला, दामन(२) दुपट्टे या पगड़ीका जरीके तारोंवाला छोर (३) आश्रय; सहारा। [(-ने) पालवे पढर्षु ≕-के पाले पड़ना; -की धारणमें जाना.]
- पालबबुं अ० कि० पुसाना; पूरा पड़ना (२) उचित जान पड़ना; रास आगा (३) स०कि० पालना; पोसना; निबाहना [बरतन; सेई; पायली पाली स्त्री० अनाजकी एक नाप; उसका थाली स्त्री० बारीक पत्तियाँ (२) छोटा गिलास [रौनक आदि) पालीस स्त्री० पालिश(मसाला, किया, पालुं न० कुठला; पाला (२) बारिशर्मे
- दीवारकी रक्षाके लिए लगाया हुआ टट्टर; टट्टी (३) प्याला; जाम; गिलास श्(- नी साथे)पालां पडवां = - के परले पड़ना.]
- पाको पु॰ चौपायोंके खानेकी पत्तियां; आला-पाला (२)पानी पीनेका जाम; गिलास
- पालो पु॰ छतरी (बैलगाड़ी आदिके कमानीदार ढचिका आच्छादन)
- **पावडी** स्त्री० पॉवड़ी; खड़ाऊँ (२) पावड़ी (करघेकी) (३) लंबे दस्तेका काठका छोटा फावड़ा; फावड़ी
- **থাৰকা** পুঁও জাৰতা
- पावती स्त्री० रसीद; पहुँच
- पावरषुं वि० कुशल; पटु; निष्म्यात पावली स्त्री+ पावली; चवकी

٩	<b>ini</b>	

**ৰাৰকুঁ ন**০ অৰক্ষী **पावुं स० कि०** पिलामा पावैधो पुं० हिजड़ा; नपुंसक;हीजड़ा पानो पुं० एक प्रकारकी बंसी (२) (स्टीमरका)भोंपा; भोंपू;सीटी पाशेर पुं० सेरका चौथा भाग; पाव (कच्चा) {(कच्चा) पाझेरो पुं० एक पावका बाट; पौसेरा पास पुं० स्पर्शसे रंग चढ़ना; पुट (२) सोहबतका असर; संग; संगत [ ला. ] । [-बेसवो, लागवो = स्पर्शसे रंग चढ्मा (२) संगका रंग चढ़ना; सरक्जेको देखकर खरवूजा रंग पकड़ला है.] पास स्त्री० बाजू;ओर(२)अ० पास पास वि० पास; सफल; फ़तहमंद (२) स्वीकृत;मंजूर;पसन्द(३)पुं० आज्ञा-पत्र;रजाको लिखित आज्ञा; पास। [-पडवुं = पसंद आना; रुचनाः ] पासलो पु० पासेके आकारका वातु आदिका आयताकार टुकड़ा; (घातु आदिकी) ईट (२) सुनारका एक औजार; पासा पासवान पुं० हुजूरी; नौकर **धासवुं** स० कि० रंग चढ़ानेके सिए पहले खटाईका पूट देना पासुं न० करवट (लेटना) (२) पक्ष; बाजू; तड़; किसी वस्तुका दायौ या बायाँ भाग। पिरेसामां घालम्ं 🖛 हड़पना; राबन करना (२) कांश्वय देना; भारणमें लेनाः] पासे भ० पासमें; निकट (२) वयरुमें; बाबूमें (२) कब्बेमें ; अधिकारमें (४) सामनेः) आगे

पासते पुंक सासा; पौसा (सेलनेजन)। [पासा संग्रहा भक्ता:=भाष्य:अकि- पत्तो

प**ंत्रीम** 

- कूल होना; पासा पलटना। पासा नासवा ≕पासा फॅकना; मान्यकी परीक्षा करना। पासा पोवार पडवा = सफल होना; सिद्ध होना; --का पासा पड़ना; भाग्य खुलना.]
- पासो पुं० (चौपायोंका) दूधको थनमें उतरने देना; पासना
- पाळ (ळ, ) स्त्री० तालाव या सरोवरका किनारा ; मेंड़ ; पाल ; पाला (२ ) बाँध ; बंद ; पाड़
- **पाळणुं** न० पालना; ढोलना
- पाळषुं स० कि० रक्षा करना; पालन करना(२)भरण-पोषण करना; पालना (३)पाल-पोसकर तालीम देना; शिक्षा देना(४)निभाना; भंग न करना; –के अनुसार बरतना; मानना; पालना; रसना(आज्ञा,बचन, दत, रजा आदि)
- पाळियो पुं० स्मृतिस्तंभ (२) खेतमें पानी ले जानेकी नाली; घोला [पाला पाळियो पुं० (निट्रीका) बाँध; घुस्स;
- पाळी स्त्री॰ छुरी; पालिका (२) बारी; पारी (३) हड़ताल (४) पाटा; मेंड़ पांड(॰)पुं॰; न०,(॰रोटी)स्त्री०पावरोटी
- पांस(०) स्त्री० ढैना; पर; पंस(२) (सेना, मकान आदिका आगेकी ओर बढ़ा हुआ दायां-बायां भाग) पक्ष(३) आश्रय; सहाय [ला.]। [-भां घाल्डषुं = आश्रय देना; शरणमें लेना। पांसो माबवी = उड़ान भरने लगना; उड़ना सीसना (२) सयाना होना; होश सम्हालना (३) भाग जाना; चंपत होना; गायब होना.]
- पांसडी (०) स्त्री० फूलको पत्ती ; पॅखड़ी ; पुष्पदल [ धाखा [ला.]
- पॉक्सडुं (०) न० टहनी (२) कुटुंबको गु. हि-२०

- पांचाळूं(॰) वि॰ पांचवाला (२)
- दतिदार (३) टहनीवाला
- पांसियुं(०) न० पक्ष;तड़(२)डाली; शासाः(३) (कैचीका)पल्ला
- पांचुं (०)वि० झीना; छीवा; झिलमिला
- **पांगरवुं**(०) अ०कि० पनपना
- पौगर्ड (०) न०, (-रो) पुं० वह डोरी जिससे पालना ऌटकाया जाता है (२) तराजूका ृपलड़ा बाँधनेकी रस्सी;तन्नी(३)गुलेलकी रस्सी(४) पतवारकी क्षोरका नावका सिरा
- रांगछुं(०) वि॰ पंगु; पेंगुला (२) [ला.] निर्वल; अशक्त (३) आश्रय-हीन;आधाररहित
- पांगोठुं(०) न० कंधेसे कोहनी तकका हाथका भाग; पखुरा; मुश्क (२) हिलने-दुलनेवाले अवयवका कोड़
- पांच(०) वि० पांच; ५। [-मामसमा = लोगोंमें; जाहिरमें; समाजमें। --बरसनुं = युवान (२) अरमानभरा.]
- पांचम(०) स्त्री० पांचवीं तिथि; पंचमी पांचम्(०) वि० पांचवीं
- पांचकोरी (०) स्त्री०पसेरी ; पंसेरी (बाट)
- पांचरांपोळ (०) स्त्री० अञ्चक्त और पंगु मबेशियोंके रहनेका भर्मार्थं स्थान; पिंजरापोल
- पांजरुं(०) न० पिंजरा; पिंजड़ा(२) ऐसी कोई भी रचना या बनावट(३) कठघरा (न्यायालयका)
- पांती (०) स्त्री० पक्ष; बाजू (२) रीति; उपाय (३) भाग; हिस्सा; पट्टी (४) व्यवहार-गणित;'प्रेक्टिस' (५) देखिये 'पांची'
- पांत्रीस (-स) (०) वि० पैंतीस; ३५

- पांची (०) स्त्री० मांग (दालोंकी)। [-पाडवी ≕ मांग बनाना.] पांदवी (०) स्त्री० देखिये 'पानडी' पांदर्वु (०)न० पत्ता; पर्ण। [-फर्ड्यु = नसीव जागना; दिन फिरना। पांदडे पाणी पांचुं = अति दुःख देना; खूब
- सताना; पेरना.] पौपण (०) स्त्री० पलकके किनारेके बाल; बरौनी; बरुनी
- पांचर्ष(०) वि० सीघा; सयाना; सरल । [-करवुं=मार-पीटकर सीघा करना; सीघा करना । --पडवुं=अनु-कूल होना; रास आना; सीघा हाना.] पांसठ (०) वि० पैंसठ; ६५
- पांसरुं (०) वि० देखिये 'पांशरुं'
- पासळी (०) स्त्री०, (--ळुं) न० पसली पिक स्त्री० यूक; उगाल (२) पानका
  - थूक;पीक [पीकदान;उगालदान **पिकदानी** स्त्री० थूकनेका बरतन; **पिखायुं** स० क्रि० 'पीखवु' का कर्मणि **पिगळावयुं** स०क्रि० 'पीगळवु'का प्रेरणा-र्थक; पिघलाना
  - पिचकारी स्त्री० पानीकी घार(२) पिचकारी। [-- आपवी = गुदामार्गसे पानी चढ़ाना; 'एनिमा' देना; बस्ति-कर्म.] [निशान पिछाण स्त्री० जानकारी (२)पहचान; पिछाण स्त्री० जानकारी (२)पहचान; पिछाण द्वी० जानकारी (२)पहचान; पिछाण द्वी० जानकारी (२)पहचान; पिछाच, पिछानचुं देखिये 'पिछाण' आदि पिछाडो स्त्री० देखिये 'पछेडो'। [-ओरवी == दिवाला निकालना.] पिछोडो पुं० देखिये 'पछेडो' पिटाचुं अ० कि० 'पीटवुं' का कर्मणि पितकोडी स्त्री० एक चिडिया पितत्रापडो पुं० पितपायबा:पलास-पायडा

पितराई पुं० देसिमे 'पित्राई ' [सेत पितवाडो पुं०कुएँके पानीकी सिंचाईवाला पितळियुं न० (पीतलकी) कटोरी पित्त न० वह रस जो कलेजेमें पैदा होकर खुराकको पचाता है; पित्त (२) धरीरके तीन दोधोंमेंसे एक; पित्त । [-ऊतरवुं, बेसखुं = पित्तका असर दूर होना (२) कोध शान्त होना; पित्ता मरना (३) पित्त उबलना या सौलना;अधिक कोध आना.] पित्तळियुं न० देखिये 'पितळियुं' पित्तो पुं० पित्त (२) कोधका तीव्न आदेश [ला.]।[-ऊळळवो, सलबो,

- जाररा [ला. ] ि जिस्त्रया, सत्त्या, हाथमांथी जवो = पित्ता खौलना या उबलना. ]
- पित्राई पुं० चाचाके बेटे-वेटी; सातवीं पीढ़ी तकका एक ही कुलपतिका वंशज (२) वि० पिता-संबंधी; पित्र्य
- **पित्राण** वि० स्त्री० एक ही वंशमें पैदा होनेवाली
- षिन स्त्री० आलपीन (२)' सेप्टी-पिन ' पिपरनीट स्त्री० देखिये 'खाटीमीठी'
- पिपूडी स्त्री॰ फूंककर बजानेकी नली; सीटी; पिपीहरी; पर्पैया। [ –वगाडवी = अपनी ही वातको रटा करना;अपनी गाना (२) खुक्तामद, भय आदिके कारण हॉमें हो मिलाना. ]
- पियर (पि') न० पीहर; मायका पियावो पुं०सिंचाईकी उच्छत (२)प्याऊ पिय पुं० पति; कांत
- पियेर(पि') न० देखिये 'पियर'
- पिरसर्ग न॰ परोसना (२) परोसा हुआ पात्र; पत्तल, थाली आदि (३) परोसा;पत्तल(भेजना)

# **विरसावन्**

- पिश्साववुं स॰ कि॰ 'पीरसवुं'का प्रेरणार्थक; परसाना (भोज्य वस्तु) पिरामिड पुं॰ पिरामिड (२) शंकु आकार (चीऊ)
- पिछाई स्त्री० पेरना; दबाव पहुँँमाकर रस निचोड़ना (२) पेरनेकी उष्णत
- पिलामण न०, (--णी)स्त्री॰ पेरनेकी उच्चत (२) त्रास; यातना [ला.]
- पिस्ताचुं अ० कि० 'पीलवुं' का कर्मणि; पेरा जाना (२) [ला.] कास दिया जाना (३) ओटा जाना
- पिल्सुं न०, (--स्लो) पुं० लपेटकर बनाया हुआ गोला;लुंडा;पिंडा
- **पिवडावर्वुं** स०कि० पिर्लानां [जानाः **पिवार्व् अ**० कि०'पीवुं'का कर्मेणि; पिया
- पिसार्चु अ०कि० 'पौसवुं' का कर्मणि; पिसना; पीसा जाना [४५ पिस्साळीस वि० पैतालीस; पैतालिस;
- **पिस्तुं** न० पिस्ता(मेवा)
- पिस्तोल स्त्री० छोटी बंदूक; पिस्तौल
- र्षिगल ( ळ) वि॰ पिंग रंगका; गहरे भूरे रंगका; पिंगल (२) न॰ छंद:-शास्त्र; पिंगल (३) [ला.] अत्यंत विस्तार; लंबा-चौड़ा विस्तार
- **पिंजर** न० पिंजरा
- **पिड** पुं० पिड; गोला (२) पिड (श्राद्धमें)
- **पिडलुं** न॰ देसिये 'पिडुं'
- **पिकलो** पुं० देखिये 'पिंहो'
- पिंडी स्त्री० पिंडली; पिंडी (टॉगकी)
- **पिंधुं** न० रुपेटकर किया हुवा गोला; पिंडा
- मिडो पुं० पिंडा; पिंड; लुंडा; गोल (मिट्टी, आटे, डोरे आदिका)

**पीक** स्त्री० दे**सि**ये 'पिक' ।

पीसवुं स० कि० बदगोई करना

द्वीभूत होना (२) पसी जना; पिघलना पीछी स्त्री० तूलिका; कूंची; कश पीछुं न० पर; पंख (२) उसकी लेखनी पीछेहठ स्त्री० पीछे हटना; हारना; हार पीछो पुं० पीछा । [-पकडबो, लेबो = पीछा करना (२) खुचढ़ निकालसे रहना; पीछे पड़ना (३) सताना.] पीटवुं स० कि० पीटना; खूब मारना (२) रोना-घोना; मूत व्यक्तिके शोकमें छाती पीटना (३) ढोल आदि पर

पीगळवुं अ० कि० पिषलना; तरल,

- छाता पोटना (२) ढाळ जावि पर इंडा पीटना;बजाना
- पीटचुं वि० मुआ; निगोड़ा (माली)
- **वीठ न**० स्थान; पीठ; उदा० 'विधा-'पीठ' (२) स्त्री० वाखार; पेंठ (३) बाखार-भाव। [--**ऊधडवी = वा**खार-भाव निकलना, खुलना। --**उकी रहेवी** = बाखार-भाव स्थिर रहना.]
- पीठ स्त्री॰ पीठ; पृष्ठ । [-आववी = पीठ लगना; छिलना । -ठोकवी, याबडवी = पीठ ठोंकना । -देखाढवी = पीठ दिखाना; भाग खड़ा होना । -फेरववी ≕त्याग करना;छोड़ देना; पीठ देना.]
- पीठबळ न० पीठ पीछे रहकर सहारा देनेवाली शक्ति;पीठ पर होना
- पीठी स्त्री० चिक्कस; वर-कन्याको लगानेका हलदी, जौका आटा और तेल मिला उबटन
- पीठुं न० बाखार या दुकान (सकड़ी, शराब-ताड़ी आदिकी);शराबखाना; कलवरिया(२)टाल;बढ़ार(स्कड़ी)
- पीड स्त्री० पीड़ा; कष्ट (२) प्रसद-वेदना (३) मरोड़

पीषचं	

पीड्युं स० कि० पीड़ा पहुँचाना; डुःस	पीरोजी ( मुं) वि० फ़ीरोजेके रंगका;
देना (२) प्रकड़ना; ग्रहण करना	फ़ीरोजी [ देना(३)ओटना(कपास)
(३)दबाना; चॉपना	पीलगुं स०कि० पेरना (२) [ला.] दुःस
<b>थीडा</b> स्त्री० पीड़ा; दुःखः;कष्ट (२)	<b>पीलवो</b> पुं० एक पेड़; पीलू
बाषा; अड़चन; पीड़ा 👘	<b>पीऌु पुं०</b> पीऌू (पेड़) (२) एक राग
<b>पीडान्नुं</b> अ॰ कि॰ 'पीडबुं' कियाका	(३) पीरूका फल; पीलू
कर्मणि; पीड़ित होना; दुःखी होना	पीलुंबी स्त्री॰ पीलु;पीलू(पेंड़)
<b>भीद स्त्री० काठकी लंबी बल्ली जिस</b>	पीलुडुं न० पीलूका फल; पीलू
पर पाटनके तख्ते जड़े जाते हैं; कड़ी;	पीलो पुं०कक्षी; कल्ला (तने या जड़का)
छोटी धरन (२) वि० प्रौढ़; सयाना	<b>पीवुं</b> सं०कि० पीना; पान करना(२)
<b>भोडियुं</b> न० देखिये 'पीढ' न० १; कड़ी	सोखना; जख्व करना; पीना (३) भुआँ
(२)दाढ़;चौभड़(३)मसूड़ा	सींचना; पीना। [पीजवुं≕न बदना;
<b>भीयुं</b> न० पीनेकी चीज़; पेय	सिर चढ़ना; कुछ न समझना(२)किसी
<b>पीत</b> ्न॰ पानी देकर तैयार की हुई	बातको सह लेना; पीना
फ़सल (२) वि० पीला;पीत	पीसणी स्त्री० चक्की (२) ताश फेंटने
रीतळ न॰ पीतल; पित्तल (घातु)	की बारी; फेंट
पीतुं न०, (–तो) पु॰ क़तला	<b>पीसवुं</b> स०कि० पीसना; चूर्ण करना ( २ )
पीधेल ( रुं) वि॰ जिसने शराब भी है	रगड़कर बारीक करना; घोटना;
<b>पीप</b> न <sup>े</sup> पीपा	रगड़ना (३) फेंटना (ताश)
<b>भीषर</b> स्त्री० एक देड़; पाकड़	<b>पीलवी पुं० सीटी; भोंपा; भोंपू</b>
<b>पीपर</b> स्त्री० पीपल;पिप्पली (लता)	<b>पीहुको</b> ५७ देखिये 'पीसवो़'
(२) पीपर; पीपल (कली)	<b>पीळाश स्त्री० पीलापन</b> ; जर्दी
पीपरीमूळ न० पीपरामूल; पिप्पलीमूल	<b>पीळूं</b> वि० पीला; जर्द; सँदली
<b>पीपळ ९</b> ० एक वृक्ष; पाकड	<b>यीळुंपच</b> वि० बिलकुल पीला
<b>वीपळीमूळ</b> न० देखिये 'पीपरीमूळ'	र्वीखव् स०कि० बिखेर देना(२)नोचना;
भीषळो पुं० पीपल (पेड़); अश्वरूप	तोड़कर फेंक देना। [पींसी क्षायुं =
<b>पौपी</b> अ॰ 'पी-पी 'आवाज़ (२) स्त्री •	तानोंसे तंग करना ; ताना मारना (२)
(गाजर या पत्तेकी)फूंककर बजानेकी	नोच-नाचकर खाजाना । <b>पींकी वास्य</b>
मली; फिपीहरी; सीटी (३) चीं	= चीर-फाड़कर घज्जियाँ उड़ाना;
बोलना; फ़जीहत [ंढीड़	नोच-नाचकर अलग-थलग कर देना
<b>वीयो पु</b> ंग्वांसका मैल; की बड़; पिंजेट;	(२)तानोंसे तंग कर देना.]
वीरसर्षु स० कि० परोसना	पींखाचुं अ० कि० 'पींखवुं' का कर्मणि;
<b>वीरसार्युं</b> अ० कि० 'पीरसवुं'का कर्मणि;	बिसरना; नुचना; नोचा जाना
थेशीसा जाना	पींछी स्त्री॰ देखिये 'पीछी'
यौरोज पुं॰ फ़ीरोआ; पीरोजा	पींखूं न∙ पर; पिच्छ
<b>v</b> .	-

	 _
4	Q.

	-
æ	-
ч	
4	

	<u> </u>
पींजन स्त्री० पिंजन; धुनकी (२)	पुरवनी स्त्री॰ पूर्ति; परिशिष्ट; क्रोब-
न॰ घुनाई; पिंजन; पींजना (३)	पत्र (२) बढावा; उत्तेजमा
(किसी बातका)पिष्टपेषण; बार-बार	<b>पुरवार</b> वि० प्रमाणित; साबित
कहना [ला.]	<b>पुरवियो</b> पुं० पुरविया
<b>ণাঁজৰ্ষ</b> ল০ ইম্বিয় 'দাঁসহ'	<b>पुराण</b> वि० पुराण; पुराना (२) न०
पींबवुं स॰ कि॰ धुनना; पींजना(२)	पुराण (घर्मग्रंथ)
(बातको) बहुत लंबाना [ ला. ]	<b>पुराणी</b> पूं० पुराणकी कथा पढ़कर
पींजामण न०, (जी) स्त्री० धुननेकी	सुनानेवाला; कथक्कड़ (२) पुराणका
मज्रदूरी; धुनाई	रचयिता (३) एक अल्ल
पींखारण स्त्री० धुनियेकी स्त्री (२)	<b>पुराण्ं</b> वि० पुराना; प्राचीन
रुई धुननेका काम करनेवाली स्त्री	पुराववुं स०कि० 'पूरवुं' का प्रेरणार्थक;
पींजारो पुं० धुनिया	पुराना ; भरवाना
<b>पींजाबवूं</b> स०कि० 'पींजवुं <b>'का प्रेर</b> णा-	<b>पुराव्</b> अ० क्रि० 'पूरवुं' का कर्मणि
र्थक; थुनवाना [धुना जाना	पुराषो पुं० गवाही; सबूत; प्रमाण ।
<b>पौँआवं</b> अ०कि० 'पींजवुं' का कर्मणि ;	[ऊभो करवो = अगर कोई सबूत या
पीँढारो पुं० लुटेरोंकी एक ख्यातनाम	गवाह न हो तो झूठा खड़ा कर देना.]
जातिका व्यक्ति; पिंडारी	पुरांस(०)वि० बाक़ी;बचा हुआ;शेष
<b>पींडेरी</b> वि० मिट्टीकी दीवारोंवाला	पुरुष पुं० पुरुष; मर्द; नर (२) थर;
<b>पुगाइव्ं</b> स०कि० 'पूगवुं'का प्रेरणार्थक;	पति (३) आत्मा; पुरुष (४) पुरुष
<b>पहुँचा</b> ना	[ब्या.] । [-मांन रहेबुं = नामर्द,
<b>पुचकारी</b> स्त्री० पुचकार; चुमकार	नपुंसक हो जाना।मांन हौषुं ==
<b>पुरुडियो</b> तारो पुं० घूमकेतु; पु <del>च्छ</del> ल्ल-	नामर्व, नपुंसक होना.]
तारा [पुछवाना	पुरुषोलम मास पुं० पुरुषोत्तम मास;
<b>पुछावयुं</b> स०कि० 'पूछवुं'का प्रेरणार्थक;	अधिक मास;लोंद
पुछार्यु अ० कि० 'पूछर्यु' का कर्मणि;	<b>पुल</b> पुं॰ पुल; सेतु
पूछा जाना [पुरुषकी)	<b>पुष्टिः स्त्री</b> ० पुष्टिः पोषण (२) समर्थनः
<b>पुष्यति</b> थि स्त्री० मृत्युतिथि ( महा-	ताईद; पुष्टि(३)उत्तेजन; सहारा।
पुत्रवष्ट्र स्त्री० पुत्रकी बहू; पतोहू	[+मळबी = समर्थन, आधार मिलना.]
<b>पुरको</b> पुं० देखिये 'डक्को' (२)पुरक्वा; टुकड़ा [पुरजोश	<b>पुस्तकियुं</b> वि० किताबी; पुस्तकीय (जो
	गुबसे या अनुभवसे प्राप्त हुआ न हो)
<b>पुरजोर</b> (	(२) जो पुस्तकमें भरा हो, पर
पुरवहार वि० (२)अ० पूरी शानके साथ	जीवनमें न लाया गया हो
पुरवियो, पुरमेयो पुं० पुरविया	पुस्ती स्त्री० रही(काग्रज) (२)पुश्ता
<b>पुरवठो</b> पुं० रसद; वावश्यक सामग्री	(दीवारका) ; दासा 👘 👘

-	•
	. 1
з	 
_	

पून्स्

<u></u>	-
पुस्सो पुं० पुश्ता; बुस्त; बाँव (पानीकी रोकके लिए)	
ধুমৰ্ষ্ অ০ কিৎ দক্তুঁখনা	
<b>पूछगाछ</b> स्त्री० पूछताछ; पूछपाछ	
पूछदी स्त्री० पूँछ; तुम; पूँछड़ी	
<b>पूछर्ड्</b> न॰ पूँछ; पुच्छ। [पू <b>छवा</b> मी	
पेसवुं चदुममें घुसा रहना; खुशामद	
करके किसीके अचीन होना; पूँछ	
पकड़कर चलना । -एकलुं बाको छे	
= जानवर जैसा निरा मूर्स है।	
क्टी जद्दं ≕ दस्त जारी होना;	
पेट चलना । <b>पकडवुं =</b> पीछे पड़ना;	
पीछा करना (२) जिद पकड़ना।-	
मळव्युं (कटाक्षमें)≕खिताब मिलना.]	
<b>पूछपरछ,पूछपाछ</b> स्त्री०देखिये 'पूछगाछ'	
पूछवुं स० कि० पूछना; प्रश्न करना;	
जवाब तलब करना; दरियाफ़्त करना	
(२) खोजना; पता लगाना (३)	
सलाह लेना (४) गिनती में होना ; क़द्र	
करना; पूछना [बार पूछना	
पूछापूछ(-छो) स्त्री॰ पूछापाछी; बार-	
पूजवं स० कि० पूजा करना; पूजना	
(ईश्वर, देवता आदिको) (२) भजना;	
सेवा, भक्ति करना	
पूजा स्त्री० पूजा; आराधना; उपासना;	
पूजन (२)पुजापा (३)मार; पिटाई; पूजा [ला.]	
पूजापो पुं० पुजापा; पूजनकी सामग्री	
<b>पूजारण</b> स्त्री० पूजा करनेवाली स्त्री	
<b>पूजारी</b> पुं० पुजारी	
पूजाववुं स० कि० 'पूजवुं' का प्रेरणा-	
ঁৰ্যক ৰুণ; ণুজবানা	
पूजाबुं अ० कि० 'पूजवुं' का कर्मणि;	
पुजना; पूजा जाना (२) सम्मानित	

होना ; पुजना

भुष्ठ स्त्री॰ पूँठ; पीठ (२) पूतड़; नितंब (३) पीछा [ला.]। [-करवी = देखनेवालेकी ओर पीठ करना (२) अवज्ञा करना; आज्ञा न मानना (३) पीठ दिखाना; हारकर भाग जाना। - देखाढवी = पीठ दिखाना; भाग खड़ा होना.] पूठ्य अ॰ पीछे; पुठवार [प.] पूठ्यिं न॰ (पहियेकी) पुट्ठी (२) जूतड़। [पूठियां फाटवां = डर लगना; यबड़ाना। पूठियां रंगावां = सख्स भार

पड़ना; भुरकुस निकलना.] पूठुं न० द्विदलके ऊपरका छिलका (२) किताबकी जिल्द (३) किताब पर चढ़ाया हुआ काग़ज (४) चूतड़, पुट्ठा (५) गठन; काठी (शरीर)। [-संसावुं, बासवुं ⇒शरीरका मजबूत होना.]

- पूठे अ० पीछे; पीठकी और
- **पूढलो, पूडो** पुं० पुआ;पूड़ा(आटे या पीठीका)(२)छत्ता
- **पूणी** स्त्री० पूनी
- **पूतळी** स्त्री० (औखकी) पुतली; सारा
- पूतळी स्त्री∘ पुतली (लकड़ी घातु आदिकी); गुड़िया (कपडेकी) (२) खूबसूरत स्त्री; पुतली
- **पूतऌं न**० मूर्ति; प्रतिमा। [**पूतळा जेवुं =** जड; अचेतन; बुन जैसा.]
- **पूनम** स्त्री० पूर्णिमा
- पूम स्त्री० ६ई घुनसे समय उड़नेवाले बारीक रोयें; वाततूलः; इंद्रतूल(३) कपड़े परके रोयें; फुचड़ा
- पूमडी स्त्री० पौदेसे सटी हुई रुई
- पूसडुं न० रुईका अति छोटा गाला; फाहा;फोहा;फाया(२)रुईके गालेको उम्परसे योड़ा बटकर बनाई हुई खड़ी

٩v

पेचिमुं

बसी (३) फूल। [**प्रुमडे पाकी पार्वु** ≕बहुत परेशान करना; सताना; नाच नचाना.]

- पूर वि॰ पूरा; संपूर्ण (२) न० बाढ़; पूर(३)पूरन;पूर(पूरनपूरी आदिका)
- **पूरण** वि० पूरण; पूर्ण (२) सर्वव्यापी (३)न० पाटनेकी या पाटी हुई चीज्र; पूरन; उदा० ' पोळीनुं पूरण; जमीननुं पूरण '
- पूरणपोळी स्त्री० पूरनपूरी (मीठी)
- **पूरणी** स्त्री० भरना; पाटना(२)पाट-नेकी चीज (ईंट, मिट्टी आदि)(३) पूर्ति; अधिक कथन (४) बढ़ावा; पुरचक
- **पूरत्ं** वि० काफ़ी; पूरा; पर्याप्त
- **पूरपाट** अ० सरपट; वेगसे
- पूरबुं स० कि० भरना; पाटना (२) तंग जगहर्मे रखना; हवालातमें रखना (३) पूर्ण करना; पूर्ति करना; पूरना
- पूरी स्त्री० पूरी; पूड़ी (खानेकी चीज) पूर्ष वि० देखिये 'पूर्ण'। [-करवुं=
- प्रथ (अप पाखय प्रण ग [—करवु= समाप्त करना; प्ररा करना (२) खत्म करना; नाश करना (३) भरण-योषण करना; निवाहना (४) (वचन) निवा-हना; पालन करना। –पडवुं = वरा-बरीका होना; –से (बल आदिमें) बढ़कर होना (२) काफ़ी होना; निर्वाह होना; पर्याप्त होना। –पाडवुं = अरूर-सके मुताबिक देना; आवश्यकताको पूर्ण करना.]
- पूरेपूर्ध वि० पूरा-पूरा; समूचा; संपूर्ण पूर्ण वि० पूर्ण;पूरा; जो अभूरा, खंडित, कम या अपूर्ण न हो (२) समाप्त; पूर्ण (३) न० शून्य; बिंदु; सिफ़र
- पूर्व वि॰ पूर्व; प्राचीन (२) आगेका;

अगला;पूर्व (३) पूरबी; मशरिकी; पूर्व (४) स्त्री० पूर्व; पूरव पूर्वतैयारी स्त्री० पहलेसे की हुई तैयारी पूर्वमूनिका स्त्री० भूमिका; प्रस्तावना पूर्वे अ० पूर्व; पहले; पेश्तर **पूळियुं न० छोटा पूला; पू**ली पूळो पुं० पूला; बड़ा मुट्ठा। [-ऊठवो = जल जाना; नाश होना; आग लगना । -मूकबो = जला ढालना; नाश करना; आग लगाना.] पूंखवुं स० कि० परछनसे वर-कन्याका स्वागत करना; परछना (२) वोनेके लिए छिटकाना, विखेरना **पूंछदियुं** वि० पूंछवाला; दुमदार; पुच्छल पूंछवी स्त्री० पूँछही; दुम; पूँछ । [-पट-**पटाववी = दुम** हिलाना (२) वशमें होना; ताबेदार होना.] पूंछडूं न० पूँछ; पुच्छ पूंजी स्त्री० पूँजी; मूलघन **पूंजो** पुं० कूड़ा-करकट;कचरा; राख, गोबर आदि [ आदि पूंठ, पूंठळ, पूंठियुं, पूंठुं, पूंठे देखिये ' पूठ ' येक (पॅ) वि॰ पैक(करना)(२)चंट; चालाक [ला.] **पेगंबर** पुं० देखिये 'पयगंबर' **पेगाम** पुं० देखिये 'पयगाम'

पेच पुं० लपेट; चक्कर; पेच(२)चूड़ी-दार कील; स्कू(३)पतंगोंकी डोरोंका एक-दूसरेसे उलक्षना; पेच(४)[ला.] युक्ति; फ़रेब; पेच(५)मुश्किल; जाल;फंदा।[-रचवो च्युक्ति रचना; जाल बिछाना।--लडाववा=पतंगोंका पेच करना(२)युक्तियां लड़ाना;जाल फैलाना.]

पेकियुं न० पेचकश

**वेची (–ल्ं) वि० युक्तिवाज** ; जालसाज

षेट न० पेट; उबर(२) पेट; जठर(३)

[ला.]आजीविका; गुजारा (४) गर्मा-

शय (५) खुदकी औलाद; अपना कूल

(६) अंतर; दिल; पेट (७) किसी

वस्तुका भीतरका भाग; पेट; पेटा।

[-सोखबुं=दिल सोलकर पेटकी बात

कहना; पेट देना । – वडवुं = वायु-

गोलेसे पेटमें पीड़ा होना (२) पेटका

पानी न पचना; पेट फुलना । -- बालवुं

=पेट चलना; दस्त आरी होना।

-- बोटी अवुं = पेटमें जुहे दीइना ।

–षोळीने शूळ उपजाबबुं = अपने हाथों

आफ़त मोल लेना। ---छूटी अमुं =

पेट छटना; दस्त होना । -- **टाढ्ं करव्ं** 

= पेटकी आग बुझाना; मुख मिटाना

(२) परायी जायदाद हजम करना

(३) चैन पाना; आराम मिलना।

-टाढुं थवुं, ठरवुं, ठंदुं धर्षुं = चैन

नसीव होना; क़रार पाना; दिलकी

आग बुझना;जी ठंडा होना। —नी

पूजा करबी ≔पेटकी आग शान्त करना;

भूख मिटाना। – नुंपाणीन हालवुं =

कुछ असर न होना । **– नुं वळचुं =** भूखा

(२)असंतूष्ट; दिलजला। - ने भाखुं

**क्षापवुं ==** जिंदगी चाल् रखने, निभानेके

लिए खाना (२) खाना। - नो मेस 🗢

पेटकी बात; रहस्यभरी बात । —पर

छरी मुकवी, यग मुकवो, पाटु मारखुं

= अजीविका--रोजीको नुकसान पहुँ-

बाना; पेटका धंधा छोड़ना; रोजी

बिगाड़ना । – काटवुं = पेट तनना (२)

घरका या अपने आदमीका वगा देना;

घरवालोंका आपसमें फूट डालना;घर

फोड़ना । –बळवुं = जलना; दाह हौंना

•	
	•

## पेटासाम्

(२) चिंता, फ़्रिक होना; जी जलना। --बाळवुं == भूखों भरना। --मां उता-रष् = पेटमें डालना; निगलना; सा जाना(२)ध्यानमें लेना(३)बरदाश्त करना (४)पराया माल उड़ा जाना; पचाना (५) ठीक संमधा देना । – मा कुकढां बोलवां, कुवा पडवा=पेटमें चूहे कूदना, दौड़ना। -मां साडा **पडवा** == भूख लगना। --मांतेल रेडाबुं ≕ दिल अड़कना ; चिंता होना ; कलेजा धक-धक करना । –<mark>मां दुःसमु</mark>ं = किसी बालका मनमें दुःख होना; मनमें मैल आना (२) 'अब क़रीब ही है' इस तरहका उद्गार; उदा० 'हवे अमदावादने शुं दुःखे छे' अर्थात् अहमदाबाद धास ही है। --मां धग = पेटमें दाढी । - मां पाळी = मनमें बैर या मैल। --मां पेसबं = पेटर्मे घुसना।—मां पेसी नीकळथुं ⇒पेटमें धुसकर मनकी बात जानना।—मां बळवुं ≕मन मसोसना (२) सद्भाव होना। –**मोट्ं राखव्ं =**दरियादिल होना। पेटे आववंु ⇒ - की कोखसे जन्म लेना । **पेटे पडवुं** = जन्मना । **पेटे** पाटा बांधवा = भूखमरी सहन करना. पेटपुजा स्त्री० भोजन **पेटपूर वि० पेट भर जाय उतना; भरपेट** पेटबळ्युं वि० दिलजला; मनसे दूःसी (२) जलनेवाला; अदेखी **पेटभरं** वि०पेटू(२)स्वार्धी(३)पेटभर सामेके लिए नौकरी करनेवाला **पेटधव्** स**० कि० सुलगाना** पेटब् अ० कि० सुलगना पेटासानुं न० मुख्य खानेमें आया हुआ खाना; पेटा

## मेरणति

## 323

पेशवास

	434
पैदाजाति स्त्री० बड़ी जातिका एक	à
विमाग; उपजाति	वेग
पेदानियम पुं० उपनियम [रक़म	वेत
<b>पैढारकम</b> स्त्री० मुख्यके पेटेमें आई हुई	1
<b>पेटारो</b> पुं॰ पिटारा	:
पेटावयुं स० कि० देखिये 'पेटववुं'	;
<b>पेटावूं</b> अ० कि० देखिये 'पेटवूं'	पेत
<b>पैटाविभाग</b> पुंरुं उपविभाग	वेग
पेटासमिति स्त्री० उपसमिति	;
<b>पैदाळ</b> न० भीतरका भाग; पेटा	q
<b>पेटियुं</b> वि० पेटमर खानेके बदलेमें	ā
नौकरी करनेवाला (२) न० पेटका	वेन
गुजर; रोजना खाना; रोजी (३)	ζ
सनखाहने रूपमें दिया गया पेटभर	
नाज (४)तनख्वाह; दैनिक वेतन ।	वेव
[काढवुं, कूटी काढवुं 🛥 गुजारे जितना	,
कमाना ; रोटोः कमानाः. ]	वेग
पेटी स्त्री० पेटी: संदूक़; बक्स	5
<b>पेटुं न</b> ० किसी चीज़का भीतरी भाग ; पेटा	पेग
(२)अंश; भाग (३) (तिरस्कारमें)	-
पेटी [ला.] [ पेटे ; एवजमें	पेर
<b>पेट</b> अ० विषयमें; बारेमें(२)बदलेमें;	<b>मे</b> र
<b>पेठ(–ठे)</b> (पॅ) अ० नाईं; तरह	पेर
<b>पेडु</b> न० पेडू	वेरे
<b>पेडव्</b> न० मसूड़ा; मसूढ़ा	पेर
पेढी स्त्री० सराफ़की दुकान; कोठी	वेस
(२) व्यापारीको बखार; कोठी(३)	đ
पीढ़ी ; पुश्त	पेल
<b>पेडी</b> उतार वि० जो कई पीढ़ियोंसे चला	ą
आताहो;पुश्तैनी(२)अ०पीढ़ीदर	ন
पीढ़ी ; पुच्त-दर-पु <b>च्त</b>	वेक
<b>पेढीनाम्</b> न० वंशवृक्ष; कुरसीनामा	(
<b>पेदु</b> न० देखिये 'पेडु'; पेडू	a
वेषुं न० मसूड़ा	3
पेक(पॅ) स्त्री० पत्थरकी क्रलम; पेन	षेव

पेणी(पें) स्त्री० छिछली कड़ाही; सई
पेणो (पॅ) पुं० छिछला कड़ाह;बड़ी तई
पेदा (पे) वि० पैदा; उत्पन्न (२)कमाया
हुआ; पैदा । [ <b>–करबुं</b> ≕पैदा करना;
उत्पन्न करना (२) पैसा पैदा करना;
कमाना.]
<b>येदा</b> श (पॅ)स्त्री० पैदाइश ; उत्पत्ति;उपज
<b>पेथवुं</b> (पॅ) अ० कि० रुत रुगना (२)
आंदत पड़ना; अम्यास होना
पेषुं (पें) वि० आदी; व्यसनी (२) न०
आदत [पेन; 'फाउन्टनपेन'
पेन स्त्री० पत्थरकी क़लम; पेन(२)
वेपर न० पेपर;समाचारपत्र;अखबार
(२)पुं०; न० प्रक्तभत्र;परचा;पेपर
पेर (पॅ)स्त्री० प्रकार; रीति (२)खबर;
पता (३) तदबीर
पैर स्त्री॰ पोर; पोंगी (ईल, बॉस
आदिकी) (२) न० अमरूद
पेरबी (यॅ) स्त्री० पैरवी; प्रबंध; युक्ति
(२) प्रयत्न; कोशिश
पेरबुं स० कि० (बीज) बोना
पेराई, पेरी स्त्री० पोर (ईख आदिकी)
पेरान० अमरूद
पे <b>रे</b> (पॅ) अ० तरह; नाई
पेरो (पॅ) पु॰ पैरा; 'पैराग्राफ '
पेल (पॅ) न॰ धूनी हुई रुईकी छोटी
तह; फाया; शाफ़ा
पेलुं चि॰ (२) स॰ वहा [पेला जन्ममा,
पेले जन्मे = आनेवाले जन्ममें(२)कमी
नहीं.]
मेजनाई वि० पेशवा-संबंधी; पेशवाका
(२) स्ती० पेशवाओंका अमल; पेश-
वाई (३) पेशवाओंका राज्यकाल या
उनका साम्राज्य

**पेशवाज** पुं० पेशवाज

### वेसाय

षेकाब पुं० पेशाब ; मूत्र । [---भई अजो 🖛 ¥र जाना.] **पेशावकान्** न० पेशावखाना येशी स्त्री० पेशी; मांसपिड (२) फलमे गुदेका पिंड; फौक (खजूर, कटहल आदिकी) **पेइबाई** वि० देखिये 'पेशवाई ' **वेसनीकळ** (पें) स्त्री० पैठना-निकलना; आना-जाना (२)कारभार [ला.] येसर्ष् (पॅ) अ० कि० पैठना; षुसना पेसार (-रो) (पॅ)पुं० प्रवेश; पैठ(२) परिचय; गाढा संबंध **थेंगडूं**(पें०) न० रकाब षेंठ(पॅ०) स्त्री० पेंठ; पैठ (लापता हुंबीके स्थान पर) षेंडो (पॅ०) पुं० पिडा; (मिट्टीका)लोंदा (२) पेड़ा (मिठाई) নিপ্ৰ **वेंतरो**(पें०) पुं० पैतरा (२) चाल; **पेंधयुं** (पॅ०) अ० कि० देखिये 'पेधवुं' **वेंगूं** (पैं०) वि० (२) न० देखिये ′ पेशुं ′ **पैकी** अ० --मेंका; --मेंसे यैड स्त्री० किसी बातका पीछा या अंत; पंचायत; माथापच्चो पैडुं न० पहिया; चक्र पैस् न॰ पतला चपटा टुकड़ा; क़तला वैसादार वि० पैसेवाला; धनी पैसो पुं० पैसा; आनेका चौया भाग (२) [ला.] पैसा; धन; जर। पिसा उडा-ववा = धन उड़ाना; पैसा बरबाद कर-ॅना; रुपया पानीमें फेंकना । **पैसा खावा** = घूस लेना (२) विक्वासघात करके पैसा हजम करना; ग़बन; जमा मारना । पैसा सोटा थवा = कर्ज दी हुई रकम न मिलना; उधार दी हुई रक़म न पटना । पंसा सोबा = व्यापारमें टोटा

आना (२) पैसा नष्ट करना; पैसा उडा देना। पैसा घालवा⇔ कर्ज दी हुई रक़म अदा न होना। पैसा वांपवा =धूस देनाः; पूजना। पैसा पाणीमां जवा=रुपया ठीकरी करना; व्यर्थ खर्च होना । पैसा मारवा = रुपया खा जाना, हड्पना; जमा मारना। पैसा **वेडफवा = पैसा** ठीकरी करना; रुपया पानीमें फेंकना । पैसा वेरवा = बहुत आदमियोंको घूस देना; पूजना । वैसानुं = टकेका; तुच्छ । पैसानुं पाणी करवुं **≃पैसा ठीकरी करना.**] **पैसोटको पुं० धन-दौलत; जमा-जया** पो(पॉ) स्त्री०; न० पासेके दावमें एक का दावँ; पी (२) पहला खाना (चौसर) यो(पॉ) पूं०;स्त्री० पौ;तड्का;भोर पोई स्त्री० एक लता; पोई पोईस अ० 'मार्गमेंसे हट जाओ' यह उदगार; पोश्च पोक स्त्री० चिल्लाकर रोना; चीख। -मुकर्बी = किसीका नाम लेकर जोरसे रोना (२) कुछ मिलेगा नहीं यह समझकर छोड़ देना.] [ बनावटी **पोकळ** वि० पोला; खोखला (२)झूठा; पोकार पुं० पुकार; चोख (२) फ़रि-याद । (-- उठाववो = फ़रियाद करना; भावाज उठाना.] [ बुलाना पोकारवुं स० कि० पुकारना; जोरसे पोकेपोके अ० आठ-आठ औसु; चीख मार-मार कर (रोना) पोखराज पुं० पुखराज (रत्न) पोगळ न० बाह्य आहंबर; दिलावा: कलई; पोल

पोच स्त्री० (धान्यका) वह छिलका जिसमें बीज-सार न हो; पैया

<u> </u>	
919	1.12

**पोटकुं** न० गठरी; पोटला

पोटाश (--स) पुं० पोटाश

**पोटीस** स्त्री० पुलटिस

वाहन;ं नंदी

पौना

आनाः]

ंकिया; पोताई; - पुतारा

#### 114

षोवर्ष्त् **पोचकन** वि० डरपोक; बुजदिल पोतियुं न० छोटी धोती; कछनी । [ पो-षोणुं वि० नरम; गुदगुदा; ढीला; दवाने तियां लई लेबां, लेबां = तुकसान पर दब जाये ऐसा (२) डरपोक [ला.] पहुँचाना (२) लूटना(३) घबडा़ना; [ --पडवुं ⇒ गुदगुदा होना; नरम होना परेशान करना । -- काढी नासवुं, छुटी (२)टिक न सकना; घंबहाना.] अर्च, फाटी अर्चु= घबड़ा जाना; हिम्मत पस्त होना.] **पोटकी** स्त्री० छोटी गठरी;पोटली;पुटकी पोतीकुं वि० अपना; स्वकीय; निजी पोतुं न० पोतनेका कपड़ा; पोता (२) पोटली (--लुं) देखिये ' पोटकी ' आदि चूने या रंगमें तर कुँची; पोता पोते स० आप; खुद; स्वयं **पोबळो** पुं० गोबरका लोंदा; चोंथ; चोंथ शोठ स्त्री० गोन; गोनी (२) बनआरेके **पोपचुं** न• (आँसकी) पलक; पोटा बैलोंका झुंड; टाँड़ा (३)नंदी;बैल **पोपट पुं०** तोता; शुक **पोठियो** पुं० लदुआ बैल (२) शिवका षोपटियुं वि० तोतेके रंगका;तोतई(२) बिना अर्थ समझे तोतेकी तरह रटा **पोठी** पुं० टडि़ेका बैल(२)बनआरा पोडूं न० लिपाईकी पपड़ी (२)छत्ता हुआ [स्त्री० सोतेकी मादा; जुकी पोपटी वि० तोतेके रंगका; तोतई (२) पोडपुं(पाँ) अ० फि० सोना; पौढुना **पोहाडवूं** (पॉ) स**् कि०सूलाना** ; पौढ़ाना **पोपटो** पुं० हरे चनेकी फली; बुट पोणा (पॉ) पुं०ब०व० पौनका पहाड़ा; **पोपडी** स्त्री० ऊपरी परत; पपड़ी [ **SSIII** पोपबो पुं० उमरी, उखड़ी, या सटी हई पोणीसो (पाँ) वि० सौमें पाव कम; परत; पपड़ी षोजुं(पाँ)वि०पौन;सीन-चौयाई; ०।।। पोपर्ख वि० नरम; ढीला; जो कुछ **पोनोसो** वि०(पॉ)पचहत्तर; पौनसौ; ७५ बरदाश्त न कर सके (२) लाड़-लड़ैता ; **ेषोत**न० अपना असली स्वरूप ; असलि-जिसका बहुत अघिक लाढ़ किया गया यत । (-प्रकाझबुं = स्वमाव दिसाना ; हो(३)व्यर्थ कोशिक करनेवाला अपने गुण-कर्मपर जाना; अपने पर पोपांबाईमुं राज न० नियम-व्यवस्था और कार्यकुशलताके दिना चलनेवाला पोल न० बच्चा; बालक(२)कपड़ा; अंधेर; अंधेरनगरी भोत (३) कपड़ेकी बुनावट; पोत [ला.] पोर्षु वि० नरम; ढीला; दीन पौतडी स्त्री॰ छोटी घोती; कछनी **पोबार** (पॉ) पुं० ब० द० तीन पासेके **पोतापणुं** न० अपनापन; आत्मीयता खेलमें तेरहका दावें (२) पौबारह; (२)व्यक्तित्व(३)अस्मिता; अर्हमाव फ़तह। [-करवा, गणवा = भाग **पोतारो** पुं० पोतनेका गीला कपड़ा; जाना। --पडवा =- पौबारह पड़ना, होना; फ़तह होना.] पोता; पुचारा; पुतारा(२) पोतनेकी पोमलुं वि० हर्षविह्वल(२)नमं;ल्हैता

सेवनी

775

चौंचा

पोवणी स्त्री० कुमुदिनी; कुई	*
पीयर्च न <b>० कुई</b> ; कुमुद	Į
पोयुं न० वह सीमा जहां डंडेसे गेंदको	पो
खेँलसे हुए ले जाते हैं; 'मोल '	1
<b>पोर</b> (पॉ) <b>म</b> ॰ परसाल	ŧ
<b>पोरस</b> (पॉ) पुं० आनंदोर्मि; खुर्रीका	यो
जोश (२)पानी; जीबट	पो
पोरिष् म० बच्चा	यो
षोरियो पुं० लड़का	यो
<b>पौरो</b> स्त्री० लड्की	2
<b>पौरो</b> (पॉ) पुं० सूक्म जलजंतु [ 'पोरस'	यो
<b>पोरो</b> (पॉ) पुं० अवसर; मौका(२)देखिये	1
पोल (पॉ) पुं० घुनी हुई रुईका ढेर;	षो
पोर्ल (२) न॰ नरम महा (३)	पो
रुईका छोटा गाला या फाहा	षो
<b>पोस्ठ स्वी०; न०</b> पोल; पोलापन;	पौ
अवकाश ; खोखला(२)[ला.] दिखावा ;	3
असत्यता; पोल(३)अंधेर। [वलावयुं,	यो
हांक्युं = अव्यवस्था और अंधेर चलाना	यौ
(२) असत्यता या ढोंग चलाना ]	यो
योखकु न० अँगिया; चोछी (स्त्रियों और	- 4
बालकोंकी) [अंघेरही अघेर	यो
<b>वोलंवोल न</b> ० बिलकुल पोल-अंधेर होना;	<b>थे</b> ।
<b>पोलाम</b> न॰ पोलापन; निःसारता(२)	पो
स्रोखलापन; पोल (पेड़का)	पो
<b>থালাৰ</b> ন০ জীলাব 🕺 (জীলাবী [লা.]	1
पोलाबी वि॰ फ़ौलादका (२)मजब्तुत ;	षो
मॉलिका न०; स्त्री० पालिका; चमक	यॉ
	i
<b>पॉलिसी स्त्री०</b> पालिसी (२)कूट नीसि ; ं पालिसी	ণাঁ
<b>पोल्लीस</b> युं॰ पुलिसमैन; सिपाही (२)	पों
स्त्री० युलिसका दछ [याना	पों
<b>पोलीसचोकी स्वी०</b> पुलिसचौकी;चौकी;	वौ
<b>पोलीसपटेल</b> पुं० मुसिया;पटेल	1
षोलुं वि॰पोला; सोसला (२) निस्सार;	i
	•

सोसला [ला.]। [**—दंढ, भम**≔ बिल-कूल पोला.] धा(पॉ) प्०;स्त्री० अंजली;अंजलि (२) वि० अंजलीमर (एक या दोनों हयेलीका) ৰিন্দ **शाकी स्त्री० कपड़ा-**लत्ता या उसका व पुं० पूस; पौष मास षण न० पोसना; पालना (२) पोषण षवुं स० कि० पालना-पोसना (२) प्रोत्साहन, उत्तेजन देना:हीसला **बढा**ना विर्ाचु अ० कि० 'पोषवुं' का कर्मणि (२)पुसाना (३) खपना; मौग होना स पं० देखिये 'पोष'(२)नेग पिोस्त स(०बोडो)पुं० अफ़ीमका खाली डोंड़ा; सिवं स० कि० देखिये 'पोधबुं' साण न० पुसाना; पूरा पड्ना (२) मौग; खपत [ तावा ।सालुं बि० पूसाने योग्य (२) प्रुष्ट; सिट स्त्री० पोस्ट; डाक **स्ट ऑफिस** स्त्री० डाकघर; 'पोस्ट [मास्टर ' आफ़िस' **स्ट मास्टर** पुं० डाकबाबू; 'पोस्ट स्टिमेन पु० डाकियाः 'पोस्टमैन' ोह(पॉ) पुं० पौ; भोर; तड़का ळ स्त्री० फाटक; दरवाजा(२)मोहल्ला मीठी पुरनपुरी (३) गली ोळी स्त्री० पत्तली और नरम रोटी(२) क(०) पुं० हरी बालोंको औच पर सेंककर निकाले हुए दाने; होला किनुं स० कि० वरकन्याको परछना ॉंबा(०) पुं० देखिये 'पॉक' **सावुं**(०) स०फि देखिये 'पोंकवुं खा(-वा) पुं०व०व० हरे या भिगोये हुए भानको सेंक और कुटकर निकाले हए चिपटे दाने; चिड्या; चिउडा

प्पार्चु	३१७ प्रेरक
प्याद्दं न० प्यादा(२)पैदल सिपाही;प्यादा प्यार्ख वि० प्यारा; प्रिय [गिलास प्याली स्त्री० छोटा प्याला(२)छोटा प्याल्गुं न० प्याला; गालास; जाम प्रालो पुं० प्याला; गिलास; जाम प्रकट वि० खुला; जाहिर; प्रकट(२) प्रत्यक्ष(३) प्रकाशित (पुस्तक) (४) व० सबके सामने; प्रकट प्रकरण न० प्रसंग; विषय (२)प्रकरण (ग्रंथका) (३) मामला प्रगट वि० (२) अ० देखिये 'प्रकट' प्रगटद्दं अ०कि० प्रकट होना; जन्म लेना (२) सुलगना (३) स० कि० सुलगना प्रगटद्ददुं स० कि० 'प्रयटदुं' का प्रेर- णार्थक; प्रकट करना; प्रगटाना [प.] प्रचंड वि० प्रचंड; भीषण; भयानक (२) कहावर [रिवाज; प्रचार प्रचार पु० प्रचार; फैलाव(२) चलन; प्रजट्दूं अ० कि० सुलगना; जलना प्रघार पु० प्रचार; फैलाव(२) चलन; प्रजट्दूकी जनता; प्रजा (३) रैयत; प्रजा; रिआया(४) संतान; औलाद। [-यवी = संतान पैदा होना। -होदी = संतति होना.] प्रजापति पु० प्रजापति; ब्रह्या(२) राजा (३) कुम्हार [ला.] [तंत्रात्मक प्रजासत्ताक वि० प्रजासत्ताक; प्रजातंत्र; प्रजाल्याक वि० प्रजासत्ताक; प्रजातंत्र; प्रजाल्याक वि० प्रजासत्ताक; प्रजातंत्र; प्रजाक्ष्यं स० कि० सुलगाना; जलाना प्रत स्त्री० ग्रंयकी नक्रल; प्रति(२) मूल ग्रंथ; असल लिखावट प्रताप पु० सामर्थ्य; प्रमाव(२) तेज; कांति (३) प्रताप; रोब प्रतिमा स्त्री० प्रतिभा; कांति (२)	प्रसिवादी पुं० प्रसिवादी; मुद्दालेह प्रस्वे अ० प्रसि; क्षोर; सरफ प्रवर्शन न० तिरूपण(२)प्रदर्शनी;नुमाइश प्रधान वि० प्रधान; मुख्य (२) पुं० सचिव; मंत्री [पद;वजारत प्रधानपद (बुं), प्रधानवट्टं न० मंत्रीका- प्रभालपेरी स्त्री० प्रभालपेरी प्रभालयुं स०कि० जानना(२)प्रमाणके रूपमें स्वीकार करना; कवूल रखना (३)साबित करना; प्रमाणित करना; प्रमानता [प.] [प्रभाणतः प्रमानसर वि० (२) अ० मापके अनुसार; प्रमाण अ० - की तरह;नाई; -के अनुसार प्रमुद्ध पुं० सभापति; अध्यक्ष (२) दि० मुख्य; प्रमुख [स्थान; सदारत प्रमुद्ध पुं० प्रभापति; अध्यक्ष (२) दि० मुख्य; प्रमुख [स्थान; सदारत प्रमुद्ध पुं० प्रक्तिला (४) देवताको चढ़ाई हुई वस्तु; प्रसाद [ला.] प्रसाद (३) निर्मलता (४) देवताको चढ़ाई हुई वस्तु; प्रसाद (२) मार प्राणये अ० जान-जोखोंसे; प्राणपणसे प्राणीविद्या स्त्री०जीवविज्ञान; 'जूलॉजी' प्राच्यापके पुं० प्रणी; जीव प्राणीविद्या स्त्री०जीवविज्ञान; 'जूलॉजी' प्राच्यापक पुं० अच्यापक; 'प्रोफ्रेकर.' प्रार्थचुं स० कि० प्रार्थना करना; वितयपूर्वक कहना; सवाल करना; प्रार्थना [प.] प्रेसळ वि० प्रेमी; प्रेमर, प्रमवाला प्रेवाळ वि० स्नेही; प्रेमी; प्यारा प्रेरक वि० प्रेरणा, गति या उत्तेजन
मानसिक शक्तिकी झलक,छटा;प्रतिमा (३)विलक्षण बौद्धिक शक्ति; प्रतिमा	देनेवास्तः; प्रेरक (२) प्रेरणार्थक (क्रिया)[व्या.]

-	· · · · ·	
1		Т
-		

फटाकरो '(२)খৰ্ছ

प्रेरणा स्त्री॰ प्रेरणा करना; प्रेरणा	प्रेस न॰ प्रेस; दाबनेकी कल (२) इई
(२) प्रोत्साहन ; उसेजना ; प्रेरणा (३)	आदिको दबाकर गौठें धौधनेकी कल
आदेश; आज्ञा	(३) छापनेकी कल ; प्रेस (४) प्रेस ;
प्रेरच् स॰कि॰ भेजना ;प्रेरना [प.] (२)	छापाखाना (५) अखबार [ला.]
गति, प्रोत्साहन, आज्ञा या गुप्त	प्लेटफॉर्म न॰ प्लैटफार्म (रेल्वे स्टेशन-
सलाह देना; प्रेरणा करना	का) (२) मंच; प्लैटफार्म

#### 95

क पुं० 'प' वर्गका-दूसरा ओष्ठच व्यंजन फई, फईजी, फईबा देखिये ' फोई ' ककरो पुं० पैरा

- फकीर पुं० फ़क़ीर; त्यागी; वैरागी फकोरी स्त्री० फ़क़ीरी; साधुता
- फक्कड वि० लोकलाजकी परवाह न करनेवाला; उच्छुंखल (२) छैला; सजीला (३) सुंदर (४) उड़ाऊ; দৰ্কি ; ঐদ্যিক
- फगर्षु अ० कि० झूठ बोलना; मुकरना (२) नियंत्रणमें न रहना; हायसे जाना
- फगाववं स० कि० छलना (२) सलत समझाना (३) फेंकना; झिड़कना (४) अस्वीकार करना
- फजेस वि० बरनाम
- फजेली स्त्री॰ फ़जीहत; दुर्गति; भद (२) बदनामी; फ़जीहत
- ·फजेलो पुं० मद; फ़जीहत (२) पके आमकी गुठली, छिलके आदि घोकर बनाई जानेवाली कढ़ी
- फट अ॰ तिरस्कारका उद्गार; फ़िश; . छी. (२) फट (आवाज) (३) 'फटा हुआ⊸सुला'; उदा∘ ' उघाडूं फट'। [--कहेवुं = 'धिक्' कहनाः]
- फटक अ० फड़फड़ानेकी आवाज (२) स्त्री० धकपक; डर; चौंक फटकडी स्त्री० फिटकरी; फटकरी फटकवुं अ० कि० खिसकना; ठिकाने न होना (भेजा; बुद्धि) (२) हाथसे जाना ; क़ाबूमें न रहना (३)(रंग) उड़ना फटकारवुं स० फि० पीटना; ताड़ना (सोटी या चाबुकसे); फटकारना [q.] फटकारो पुं० प्रहार, झटका या उससे उत्पन्न शब्द (२) चित्तभ्रम; उन्माद (३) खटका; धड़क फटेकासाळ स्त्री० झटका-करघा **फटको** पुं० चाबुक या सोटीका प्रहार (२) हानि; वाटा [ला.]। [-वडवो, वागवो = प्रहार होना (२) नुक़सान पहुँचना; घाटा सहना.] फबको पुं० अँगोछा; गमछा फटफट अ० पटासे आदिकी आवाज; पटाखा; फट-फट(२) धिक्-धिक्(३) श्वट-पट; वरौर सोचे-समझे **फटफटी** स्त्री० मोटरसायकिल **फटबवुं** सं० कि० देक्षिये 'फटाबबुं.' फटाकडी स्त्री० छोटी बंदूक; पिस्तौल পহাকৰী বুঁ০ প্ৰয়ন্তা

	Ш.	211
_		

### 715

फरक्सी ो; अँखुआ।[--फूटको=

- फटाकियो, फटाको पुं० पटाखा फटाणुं त० अश्ल<del>लि गीत या बोल,सीठना</del> फटाफट अ० फटसे; फट-फट; लगातार फटाबार वि० बिलकुल खुला फटाबार्यु स० कि० बहकाना; वरग्रलाना
- पटोपनु राजानज्यहमामा, नरप्रसान पटोफट अ० देखिये 'फटाफट'
- फड न० शराब चुआनेका स्यान(२) बाज़ार (३) थाना (४) गाने-नाचने-वालींका समूह; भाँड़-भगतिये (५) (लावणी गानेमें) एक पक्षका समूह (६) अ० फटसे
- फडक.स्त्री० धक-पक; उर; चौक(२) पहने हुए वस्त्रका छोर;पल्ला; अंचल
- **कडकियुं** न० दामन;अंचल(२)ओसाते समय चादरसे खनाया हुआ हवा करनेका साधन
- फडच स्त्री० छोटा पतला टुकड़ा; फॉक फडचो पु० फ़ैसला; निबट।रा; हल (२) अदायगी; भुगतान (ऋण)। [फडचामां : अ्यु दिवाला निका-लनेके बाद बची हुइ मिल्कियतमेसि ऋण-परिसमापन करना;ऋण जुकाना]
- **सहफड** अ० फड़-फड़ आवाज (२) लगातार; बराबर (३) घड़कन(४) र्धाधल; उतावली
- फडफडवुं अ० कि० फड़फड़ाना (२) (डरसे) कॉंपना; घकघकाना (३)
- गुस्सेमें योलना ; फटकारना फडफबाट पुं० फड़फड़ाहट ; कॅंपकेंपी
- (२) [ला.] मिखाज; बढ़प्पन; ऐंठ फडा स्त्री॰ देखिये 'फडच' फडाकियुं वि॰ गपोड़िया(२)शेसीसोर फडाको पुं॰ पटासा(२)धक-पक; घड़क (३) गप(४) 'फड'की आयाज
- फडाफड ल॰ तड़ातड़; लग्तार

- **फचमो** पुं० फुनगी; अँखुका।[<del>-फूटवो=</del> अंकुराना (२) नयी समस्या या **वा**त सड़ी होना; नया गुऌ सिलना.]
- **फणस न०** कटहले; पनस
- **फणसी** स्त्री० एक तरकारीकी फली; 'फेन्चबीन'
- फर्ची स्त्री० कंघी (२) करघेका एक औआर; फन्नी; राछ
- फतवो पुं० फ़तवा; आज्ञा (२) हुक्म (३) ढोंग : [**—करवो, मांडवो =** ढोंग रचना । **—काडवो =** निरंकु्ज्ञ सरकारकी ओरसे फ़तवे जैसा हुक्म जारी होना;आर्डिनन्स निकालना.]
- फतेह स्त्री० फ़तह; जीत; कामयाबी [-ना बंका = पूरी विजय; फ़तहका डंका.] [कामयाब
- फतेहमंद वि० फ़तहमंद; विजयी; फदफद अ० 'फद-फद' (शब्द) (२) नरम और गुदगुदा
- फबफववुं अ० कि० सड़कर या खमीर चढ़कर पिल-पिला होना; फदकना (२)मवाद भरकर फ़टने पर बाना; फदफदाना (३) भात आदिका पकते समय 'फद-फद' शब्द करना; फदकना फबियुं न० पैसा (२)चारपाई (बंबईमें) फना वि० फना; नष्ट; बरबाद
- फनाफातिया पुं० थ० व० पूरी तवाही; तहस-नहस
- फफडवुं अ० कि० देखिये 'फडफडवुं '
- फफडाट पुं० देखिये 'फडफडाट '
- फफळत्ं वि॰ सौलता हुवा
- फरम पुं० फ़र्के; अंतर
- फरकबी स्त्री० (कातनेकी) फिरकी; चरखी (२) नःघन; सकती(तकुएमें) (३)फिरकी;चकई (खिलौना)

-	

acad	१२० <b>फ्तवायु</b>
फरकर्षु अ० कि०फड़कना; कंपित होना	फरगी स्त्री० रुझानी (बढ़ईका एक
(२)[ला.] विखाई देना;देखनेमें आना;	मौबार) (२) परशु
दृष्टिगत होना ( ३ ) खिसकना ; चुपकेसे	फरस स्त्री० पत्थरकी पटिया; तस्ती
भल देना	<b>फरसबंधी</b> स्त्री० गच; फ़र्श, फ़र्श <b>वंद</b>
फरज स्त्री० फ़र्जं; कर्तच्य । [−पढवी≕	फरसाम न० तरावट लानेवाली साध
कोई काम अपनी इच्छाके विरुद्ध या	चीज; चाट
वरवस करना पड़ना ; फ़र्ज आ पड़ना.]	<b>फरसी स्त्री</b> ० देखिये फरको '
<b>फरजं</b> व न० संतान;फ़रजंद(बेटा)	<b>फरंबुं</b> वि० हरहा(पशु);आवारा(२)
<b>फरजियात</b> दि० कर्तव्यरूप; अनिवार्य;	घाघ; चतुर; जो किसीसे न छला जाय
जो फ़र्जने रूपमें करना पड़े;लाजमी	फराक न० फ़ाक (वस्त्र)
<b>फरत्ं</b> वि <b>ःचारों त</b> रफ़ आया हुआ ; इर्द-	<b>फरास</b> पुं० फ़र्राश; फरास; झाड़
गिर्द (२) चलता;गतियुक्त(३)बदलता,	देनेवाला [ खुराक
परुटता हुआ। [–फरबुं = आवारा	फराळ न॰ फलाहार; उपवासकी खास
घूमना (२) लगातार सफ़र करना.]	<b>फरियाद</b> स्त्री० <b>अ</b> र्ज्री(२)अन्याय, जुल्मकी
<b>फरते</b> अ॰ इर्द-गिर्द; चारों ओर	शिकायत; फ़रियाद (३) नालिश;
करकर स्त्री० फुहार (२) अ० हवामें	दावा; फ़रियाद
उड़ता हो इस तरह; फड़-फड़	<b>फरियादी</b> पुं० फ़रियादी; वादी(२)
<b>करफरवुं अ</b> ० कि० लहराना; फड्कना	स्त्री० फ़रियाद; जुल्मकी शिकायत
<b>,फरफरियुं</b> वि० फड़के ऐसा (२) न०	<b>फर्ी, फ्रीथी, करीने</b> अ० फिर; दोवारा;
षिट; पुरजा परवाना	फिरसे; पुनः
<b>करमान</b> न० फ़रमान;हुक्म(२)सनद;	<b>फरीपाछुं अ</b> ० और दोबारा; और फिर
<b>- फरमावचुं स<b>ंकि</b>०फ़रमाना;हुक्म करना</b>	<b>फरीफरीने</b> अ० बार-बार; फिर-फिर
फरमाझ (स)स्त्री० फ़रमाइश; आज्ञा	फरेल (- खुं) वि॰ पलटा हुआ (२) अनु-
(२)सिपुर्दगी; सौंपा हुआ	भवी (३) अविचारी; मिजाजी
<b>फरमासी (सु)</b> वि० फ़रमाइश,आईरसे	फल्डन० देखिये 'फळ'
बनाया हुआ; हुनमके अनुसार तैयार	फलंग स्त्री० फलॉग; चौकड़ी
किया हुआ (२) उत्तम; बढिया	<b>फलाणुं</b> वि० फ़लौ; अमुक; फलाना
<b>फरष्</b> ं अ० कि० इघर-उघर फिरना;	फस स्त्री० नस;रग [आवाज; फट
<ul> <li>भूमना; चक्कर खाना(२)सैर करना;</li> </ul>	फल स्त्री० फटने, दरकने, मसकनेकी
टहलना (३) गति करना ; फिरना (४)	<b>फसकवुं</b> अ० कि० छटकना; हिम्मत
लोटना; पलटना; बदलना । [फरी जबुं	पस्त होना; फ़िसलना (२) टूट,
= ऊपर होकर जाना; चक्कर साना	पढ़ना; ऊपरसे नीचे गिरना (३)
(२)मुकर जाना;झूठ बोलना (३)	दरकना; मसकना; फसकना
बदल जाना । करी बेसबूं = वचनभग	<b>फसदाचुं</b> अ० कि० घँसना ; नीचेकी ओर
करना; मुकेरना (२) पक्ष बदलना.]	बैठ जाना; टूट पड़ना; फसकना

कारेलुं

	ररा कारलु
फसल स्त्री० मौसम (२)पैदावार;फसल	फाकर्बु स॰ कि॰ फाँकना; फंका मारना
फसली वि० फ़सली; मौसमी; फ़सलका	काका पुं॰ ब॰ व॰ तंगी; हैरानी;
<b>फसर्वु</b> अ० कि० देखिये ' फसावुं '	मुरिकल(२)फ़ाक़ा;अनरान [ फंकी
फसामण (गी) स्त्री० फँसना; फँसाव	फाकी स्त्री० छोटा फंका (२) (दवाकी)
फसाबवुं स० कि० 'फसावुं 'का प्रेरणा-	फाको पुं० फंका; फांका
र्थक; फैंसाना	फाग पुं० बहार; वसंत (२) फाग;
फसाबुं अ० कि० फँसना (२)ठगा जाना	भगुआ (गीत)। [- सेलबो = होली
फळ न० (वनस्पतिका) फल (२)	खेलना; फाग खेलना.]
परिणाम ; नतीजा ; फल (३) नफ़ा ;	फागण पुं० फागुन; फाल्गुन
कायदा; फल (४) फल (हयियार	फाबर स्त्री० पल्चह; पच्चर; फाँस (२)
या औजारका अग्रभाग)। [ <b>– सावन्</b>	बाधा; रुकावट [ला.]। [मारबी =
= फल आना; फलना; फल लगना	पच्चड़ लगाना, ठोंकना (२) पच्चर
(२) फल पाना; नतीजा मिलना।	अड़ाना;बाधा डालना;पच्चर मारना.]
<b>—काढवुं =</b> प्राप्ति–फ़ायदर मिलना;	फाचरो पुं॰ (लकड़ीका) चैला; फट्ठा
फल पाना.]	फाजल विं० बचा हुआ; आवश्यकतासे
फळझाब न० फलदार वृक्ष; फलवृक्ष	अधिक ; फ़ाजिल ( २ ) फ़ालतू ; निकम्मा
फळडू(~डू)प वि० उपजाऊ; फलद	फाट स्त्री॰ फटना (२) दरार; फाट
फळवुं अ० कि० फलना; फल लगना	(३) देह टूटना; टूटना (४) [ला.]
(२) लाभदायक होना; सिद्ध होना	भेद; फूट (५)गर्व; रोब । [-पडवी≖
फळाउ वि० फलदार; फल देता हुआ	दरार होना; फटना(२)दल या तड़
<b>फळियुं</b> न० मुहल्ला; टोला	हो जाना; पृथक् होना; विभक्त होना.]
फळी स्त्री॰ छोटा मुहल्ला; टोली	फाटक पुं०; स्त्री० बड़ा दरवाजा; फाटक
<b>फळीभूत</b> वि॰ सार्थक; सफल	फाटकवाळो पुं० रेलके फाटक पर
फळुंन् (हथियार, औजारका अग्र-	तैनात नौकर; फाटकदार
भाग) किनारा; फल	<b>फाटफूट</b> स्त्री० फूट; भेद
<b>फंगोळवुं</b> स०कि० फेंकना; झिड़कना	फाटवूँ अ० कि० फेटना; टूटना; दरार
(२) घुमाना; चक्कर देना	पड़ जाना; दरकना (२) बदमस्त
<b>फंटावुं</b> अ० कि० दिशा बदलना; मुड़ना	होना; छकना (३) (देह) खूब दुखना;
(२) शाखाएँ होना; विभक्त होना	टूटना। [फादी अवुं=फटना (२)
फंड न० फंड; चंदा	बहकना; हायसे जाना। फाटी नीक-
र्श्व पुं० फंदा ; फांस ; साजिश ( २ ) माया-	ळवूं = (रोग) यकायक प्रकट होना
जाल;मोहका फंदा (३) दंभ;कपट;	और फैलना (२) फट पड़ना.]
ढोंग (४) बुरी लत; दुर्घ्यंसन [ला.]	फादुंतूदुं वि० टूटा-फूटा
फंफोसबुं स० कि० टटोलना; ढूँड़ना	फाटेल ( रुं) वि॰ फटा हुआ; फटहा
फाकडी पुं० फंका; फॉका	(२) असम्य (३) उद्धत
-	• •

गु. हिं–२१

	•	•
1000		
1010		54
		۰.

# फ**ांसको**

·····	
<b>फाटपुतूदपुं</b> वि० देखिये 'फाटुंतूहुं,'	फाळ स्त्री० छलाँग; चौकड़ी (२) धक-
फाड स्त्री० चीर-फाड़ (२)फॉक; दुकड़ा	पनः ; सटकाः ; धड़का । [ <b>-पडवी =</b> द्भिळ
फाडवुं स०कि० फाडुना; चीरना;तोड़ना	धडकना; खटका होना। <b>-अ्रवी</b>
फाडियुं न० छोटा पतला टुकुड़ा;फांक	= मौकड़ी भरना (२)साहस करना.]
फातडो पु० खोजा; हिजडा; हीजडा	फाळ पु० कपड़ेका लंबा टुकड़ा; धज्ञी;
फानस न० दीया; बत्ती; लालटेन	चीर [चरस्नी
<b>फायदाकारक</b> वि० फ़ायदेमंद; मुफ़ीद	फाळकी स्त्री० (सूत लपेटनेकी) फिरकी;
<b>फायदो</b> पुं० फ़ायदा; लाभ ; प्राप्ति (२)	फाळको पु० फिरकी; परेता
गुण;अच्छा असर;फ़ायदा । [पडवो	फाळवणी स्त्री० बँटवारा; विभाजन
= (दवाका) अच्छा असर होना)	<b>फाळववुं</b> स०कि० बाँटना ; हिस्सा करना
फारक(ग)वि० छुट्टा; मुक्त; कार्यसे	फाळियुं न० साफ़ा;मुंडासा
निवृत्त ; फ़ारिग्र	फाळो पुं० हिस्सा; भाग(२) बँटवारा;
<b>फारगतो स्</b> त्रो० छुटकारा; मुक्ति; फ़ा-	विभाजन (२) फंड; चंदा। [फाळे
रखती (२)तलाक; विवाह-विच्छेद;	पडतुं = जितना जिसके हिस्सेमें आवे;
'डायवोर्स' [ कता;प्रचुरता [ला.]	हिस्सेके अनुसार.]
फारू पुं० फ़सल् (२)अतिशयता ; अधि-	फांकडुं(०) वि० देखिये 'फक्कड़'(२)
फालतु वि० फुटकर; फुटकल (२)	छैला; सजीला; रसिक
फ़ाजिल; फ़ाल <del>तू</del>	फांको (०) पु० अभिमान; मिन्राज्यु
<b>फ़ालव्</b> अ० कि० खिलना , फैलना (२)	<b>फांट</b> (०) स्त्री० कपड़ेका छोर या
पुष्ट होना; मुटाना; मोटा होना	उसकी कामचलाऊ बनाई हुई झोली
<b>फालसुं</b> न० फालसा	जैसी चीज़
फालु न० एक प्रकारका गीदड़; लोमड़ी	फोटो(०) पुं० शाखा; भाग(२)कीना
<b>फाव स्</b> त्री० किसी काममें हाथ बैठना; रास आना [होना	(३)तरंग;झोंक;मनकी छहर
रास आना 🌼 [होना	<b>फांद</b> (०) <b>स्</b> त्री० तोंद (२) एक बेल;
<b>फाव</b> ट स्त्री० देखिये 'फाव'; गवारा	फांजी;काला विधारा
<b>फाववुं अ</b> ० त्रि० हाथ जमना; अनुकूल	फांबो (०) पुं० फंदा; प्रपंच; मायानाल
होना; गवारा होना (२) सफल होना;	फांफां(०) न०ब०व० खाली इधर-
मौक़ा मिलना; पासा पड़ना। [फावतुं	उधर देखना; झॉकना; टापना(२)
• <b>अाववुं =</b> रास आना ; अनुकूल आना.]	मिथ्या प्रयत्न;बेकार कोशिश
<b>फासफूस</b> स्त्री० तिकम्मा, रद्दी माल;	फांस(०) स्त्री० फॉंस;पच्चड़; किरिच
कूड़ा-कॅरकट	(२)अड़चन;रुकावट;भाँजी मारना
<b>फासफूसियुं वि०</b> फुसफुसा; कमजोर	[ला.] । [ <b>–काढवी – वा</b> घा दूर करना ;
(चीज);निकस्मा;जो कुछ उपयोग	फाँस निकालनाः। <b>–वाखवी, भारवी</b>
कान हो {फ़र्क; फ़ासला फासलो पुं० (समय, अंतर आदिका)	= पच्चड़ मारता; पच्चर अड़ाता.]
फासलो पुं० (समय, अंतर आदिका)	फांसलो (०) पुं० फंदा; जाल

		_	٠
_			-
-	Π.		
		۰.	
			۰.

फुलेंच 🤇

नाराम्	<b>३२३ फुलब</b> र
<b>फांसवुं</b> (०) स०कि० फं <b>रेमें</b> फँसाना;	<b>फीकुंफच (स)वि०</b> देखिये 'फिनकुंफच'
कौसना (२) फंदेमें कसमा (रस्सीमें	<b>फीटव्</b> अ० कि० टलना; मिटना;
डोल, घड़ा आदि); फॉसनॉ (३)	दुःख दूर होना (२) निवटना; वरा
तोड़ना (डाली) [वाला ; अल्लाद	होना; फ्रैसल होना
फांसियो (०) पुरु फंदा कसकर मारने-	फीण न० फेन; झाग
फांसी (०) स्त्री० फाँसी [का फंदा	<b>फीलवुं स</b> कि॰ फेंदना; मिलाना (गीठी
फांसो (०) पुं० फंदा; फांस (२) रस्सी-	. आदि) (२) फ़ाम्पदा; लाभ, प्रापित
फिकर स्त्री० फ़िक; फ़िकर	होगा; मिल्ना [ला.] 📖 👘
फिक्काश स्त्री० कांतिहीनता ; फीकायन	फील स्त्री० फ़ीता [छोटा परेता
फिन्कुं वि० पीला; फीका; कांतिहीन(२)	फीरकी स्त्री० फिरकी; चकई (२)
सीठा; बेमजा; भीका [ फीका-फक	<b>फीसुं</b> वि० वेमजा; सीठा;फीका (२)
फिक्कुंफच (स) वि० बिलकुल फीका;	ढीला; कम मजबूस; जो झट फट आय
फिटकार पुं॰ फिटकार; लानत	फुक्को पुं० मूत्राशय; फुकना (२) बुद-
<b>फिटाड(-व)वुं</b> स०क्रि० 'फीटवुं 'का	बुदा (३) (रबड़का)फुग्गा
प्रेरणार्थक ; मिटाना ; हटाना ; दुःख दूर	<b>फुमावो</b> पुं० नक़दके बदले छपी नोटोंके
करना [(३)शरारत;फ़ुतूर	चलनका खूब बढ़ जाना; मुद्राविस्तार;
फितूर न० ढोंग (२) विद्रोह; फ़ुतूर; दंगा	'इंपलेशन ' [निकम्मा; बेकार
<b>फितूरी</b> वि० फ़ुतूरिया; फ़ुतूरी (२)	<b>फुटकळ</b> वि० फुटकल; फुटकर <u>(</u> २)
ढोंगी [फ़िदा	फुदीनों पुं० पुदीना; पोदीना
<b>फिबा</b> वि० बहुत खुश(२)अति आसक्त;	<b>फुद्दी</b> स्त्री० गुड्डी; छोटी पतंग
फिरस्तो पुं० फ़रिइता;फ़िरिइता;देव-	<b>कुफवाटो</b> (–डो) पुं० फूँक; फुफकार
दूत(२)पैग़ंबर [ पियन	(२) गुस्सेका जोझ [ला.]
फिरंगी पुं० पुर्तगाली (२) फ़िरंगी ; यूरो-	फुरचो पु॰ टुकड़ा; पुरजा
<b>फिल्सूफ</b> पु॰ फ़िलासफ़र; दार्शनिक	<b>फुरजो पुं</b> ० बंदरगाह परका चुंगीघर;
<b>फिल्सूफी</b> स्त्री० फ़िलासफ़ी; तत्त्वज्ञान	फुर्जा (२) डॉक; डेक
फिशियारी स्त्री० बड़ाई; शेखी	<b>फुरसद</b> स्त्री० फ़ुरसत; फ़ुर्सत
<b>फिसाद स्त्री</b> ० ऊषम; तूफ़ान (२)फ़साद;	<b>फुलारो</b> पुं० बड़ाई;शेखी [फुलाना
हुल्लड	<b>फुलाववुं</b> स०कि० 'फुलवुं'का प्रेरणार्थक;
फिसोटो पुं० झागका समूह; फेन	<b>फुलावुं</b> अ०त्रि० ' फूलवुं 'का भावे रूप;
फी स्त्री० फ़ीस; शिक्षा-शुल्क (२)	फुलाना (अ०क्रि०) [वर-यात्रा
मेहनताना; फ़ीस (वकील, डाक्टर	<b>फ़ुलेकुं</b> न॰ घुड़-चढ़ी; वरका जुलूस;
आदिकी)	<b>फुलेल</b> न० खुशबूदार तेल; फुलेल
<b>फीकादा</b> स्त्री० फीकापन; पीलापन;	फुलेगर वि॰ बेल-बूटोंवाला (२) न॰
कांतिहीनता (२) फीकापन; सिठाई जीवां कि जेलिक ( किस्तां (	ऐसा कपड़ा (३) (ताशका रंग)
<b>कीकुं</b> वि० देखिए ' फिक्कुं '	षिड़ी; चिड़िया (४) फूलगोभी

For Private and Personal Use Only

मूल्यरहित.]

-	
COMPLET.	

**3**58 फुल्ली स्त्री० तासके चार रंगोंमेंसे एक; चिड़ी [(२) सोता **फुवारो** पुं० फ़ब्बारा; फुहारा; फ़ौआरा कुंगराववुं स० कि० बढ़ावा देना; बहकाना; अङ्काना फुंगराषुं अ० कि० मुँह फुलाना; रूठना कू अ० फुफकार जैसी आवाज । [--करबुं = फूंक सारना (२) फुफकारना (३) ग्रंबन करना (४)खर्च कर डालना,] फूगस्त्री० फर्फूदी; भुकड़ी कूट स्त्री० फूट; फूटना (२) दरार; वाला फाट (३) फूट; विरोध फूट न० आरिया; फूट फूटर्डु वि० सुंदर; रूपवान; सलोना **फूटपाथ** पुं० पटरी; 'फुटपा**थ** ' **फूटर्षु अ०**कि० फूटना ; खिलना ; उगना ; **अँखु**आ निकलना (२)टूटना;फूटना; जोरसे फटना; भग्न होना (३) खुला हो जाना; भंडा फूटना; खाहिर हो जाना (४) मुकरना; घोखा देना; विपक्षसे जा मिलना; फूटना। [फूटी वदाम न होबी --- पासमें कानी कौड़ी न होना। फूटी बदामनुं = टकेका; फूवडी स्त्री० चौगिर्दा घुमाव ; गोल-गोल घूमना (२)तारा या फूल जैसा चिह्न ; तारक-चिह्न; फुल्ली [ तितली फूर्बुन० परदार कीड़ा; पतंग (२) **फूमत्ं** न० फ़्रुँदना; गुच्छा; कलग़ी; तुर्रा **फुतिलुं** वि० फुरतीला फूल न० फूल; गुल; फूलको शकलकी वस्तु(२) आँलका एक रोग; फूली; फुला (३) एक गहना(४) फुलगोभी (५) गर्व; अड़ाई; गर्वसे इतराना।

पंच्य [**फूले बमावमुं ---** पाँव पूजना; देवकी तरह भावमंय आवभगत करना. **फूलकोबी (०ज्ञ)** स्त्री० फूलगोभी **फूलमूंचनी स्**त्री० फूल गूँयना (२)फूलों-की सजावटकी तरह वस्तुओंका उप-युक्त संकलन [ वृक्ष ; फूल-पौषा **फूलझाड** न० फूल देनेवाला पौधा या **फूलडोल** पुं० एक उत्सव; फूलडोल फूल्मजी(--शी) वि०(२)पुं० वसानसे फूल जाये ऐसा; फूलकर कुप्पा होने-[(२)नाजुक; कामचलाऊ **फूलफटाक (-कियुं)** वि॰ सजीला;छैला फुल्बडी स्त्री० एक प्रकारकी बड़ी; नमकीन बूंदी **फूलवाडी** स्त्री० फुलवारी; फुलवाड़ी फूलवुं अ० कि० फूलना; उभरना (२) खिलना; फूलना; फूल आना (३) हर्षित होना; प्रसन्न होना; फूलना (४) गर्वसे इतराना; बड़ाई हाँकना (५) बहकना; उत्तेजित होना । [फूलीने फाळको पवुं = फूलकर कुप्पा होना; फूलना; रोखी बघारना.] **फूलबुंफालबुं अ० फि०** फूलना-फलना फूलुं न० अखिका एक रोग; फूली **फूवड** वि० फूहड़ (२) गंदा; भहा फुस स्त्री० पराजय (२)वि० निकम्मा; रद्दी (३) न० फूस; घास फूंक स्त्री० फूँक; दम; सौंस (२) प्राण। [-नीफळी जवी = फूंक निकल जाना; प्राण निकल जाना; मर जाना। -मारबी = फूंकना(२)अप्रकट चेतावनी देना (३)कान भरना(४)भरमाना.] फूंकणी स्त्री० फुकनी; फ़ुँकनी (नली) फूंकबुं स०कि० फूंक मारना; फूंकना (२) फूंककर बजाना (३) दिवाला

कूंकार

**फोई**बा

<u> </u>	
निकालना (४) सहलाना । [फूंकी देवुं,	
फूंकी मूकवुं ≕ फूंक डालना; जला	
डॉलना (२) संस्तेमें बेच डालना;	
गिरकर सौदा करना । फूंकीफूंकीने 🛥	
फ्रुँक-फ्रूँककर; सावधानतासेः]	
कूंकार पुं० फूंक (२)फुफकार; फुंकार	
<b>फूंकारवुं</b> स० कि० मुंहमें पानी भरकर	
र्फूंकरो छिड़कना (२) फुफकारना;	
र्भुकारना	
फूंकारो पुं० देखिये 'फुंकार'	
फूकार्बु अ०कि० 'पूंकवुं का कर्मणि	
भूंकवाटी (-डो), भूंकाटी (-डो) पुं०	
फुफकार; फुंकार	
फेंब पुं० खराबी; दुर्दशा (२) सजा	
<b>फेडवुं</b> स॰कि॰ टाल्ना; मिटाना; दूर	
कर देना (२) <b>चुकाना; अदा करना</b>	
<b>फेण</b> (फॅं) स्त्री० फन(सौंपका)	
फोेफ(फॉ) न० फोन; झाग	
<b>फेफर</b> स्त्री० मुँहकी सूजन ; नु <b>स-कोथ</b>	
<b>फेफरी</b> स्त्री०, <b>फेफरं</b> न०मिरगी;अपस्सार	
फोफसुं न० फेफड़ा	
<b>फेक्नुआरी</b> पुं० फरवरी	
फोर पुं० फोर; फ़र्क; अंतर (२) सिरका	
घुमाव ; चक्कर ( ३ ) रुपेट ; फेरा ; चूड़ी	
(४)घेरा (५)दामन ; कपड़ेका पल्ला	
(६)बार बार आना-जाना; चक्कर;	
फैरा (७) घुमानेकी कील; पेच (८) अ०	
फिर; पुन: । [-चडवा = सिर घूमना;	
चयकर।पडवो = फ़र्क़ होना (२)	
सुघार होना। –मा आववुं = फैर	
खाना; पुमावके रास्ते जाना.]	
फेरणी स्त्री॰ फेरी (२) बेकार घूमना	
फेरबबली स्त्री ०, फेरबवलो पुं० आपसमें	
हेर-फेर; अदला-बदला	
<b>फेरवर्षु</b> स० कि० फिराना; फेरना	
-	

फेरियो पुं० फेरी करनेवाला; फेरीवाला फोरीस्त्री० वक्कर; ग़क्त(२)दफ़ा; बार (३) फेरी (फेरीवालेकी) फेरो पुं० फेरा; भावर (२) बारी; पारी (३) चक्कर; ग़क्त। फिरा करवा == अग्मिकी परिक्रमा करना (विवाहके समय);भौवर भरना।--साबो == हो आना;चक्कर लगाना (२)व्यर्थ **चक्कर** काटना । **–पडवो =** जानेका फल न मिलना; फेरमें पक्षना। **--फळवो** = जानेका अर्थं सिद्ध होना; जानेसे लाम होना.] फेल(फॅ)पुं० फ़ेल; ढोंग [वुद्धि;प्रगति **फेलाव**(फॅ) पुं० फैलाव;विस्तार(२) **फेलावयुं** (फॅ) स०क्रि०फैलाना;पसारना; विस्तार करना 🚽 बिढना फेलावुं(फें) अ० कि०फैलना; पसरमा; फेलाबो (फॅ) पं० देखिये 'फेलाब ' फोलं न० रेवा; तागेकी लड़ (२) फॉस; अड्चन;बाधा (३)मुश्किल;उलझन फेशन स्त्री० फ़ैशन फेसलो (फॅ) पुं० फ़ैसला; निर्णय; निबटारा; समाप्ति; खातमा फॅकवं(फॅ॰) स॰कि॰ फॅकना; डालना (२)गप हॉकना िथप्पड़ ; धप्पा फेंट(फॅ०) स्त्री० फेंट; कमरबंद(२) फेंटो (फें०) पुं० मुंडासा; साफ़ा; मुरेठा फेंदवुं(फॅ०) स०क्रि० तितर-बितर कर-नाः बिगाडनाःगींजना (२) बिखेरना फेंसलो (फॅ॰) पं० देखिये 'फेंसलो ' फोइयात वि० फुफेरा **फोई** स्त्री० फूफी; बूआ **फोईजी** स्त्री० (मानार्थ) फूफी; बुआ (२)फ्रुफेरी सास फोईबा स्त्री० फुफी; बुआ

चोक्	ः ३२६ . बस्तूं
कोक वि० फोकट; निकम्मा; रद्	फोफळ न० सुपारी; पुंगीफल
फोकट वि० (२) अ० फोकट; व्यर्थ;	फोफां न० ब० व० मूंगफली
निकम्मा; खराब	फोफ् न॰ स्यूलकाय; मोटेमल (२)
कोकदियुं वि० मुफ़्तका; फोकटका (२)	मूँगफलोका छिलका
निकम्मा ['फोकटियु'	फोरन(फॉ) अ० फ़ोरन
फोगट (-टियुं) वि॰ देखिये 'फोकट ',	फोरम (फॉर,) स्त्री० खुराबू; महक (२)
फोज(फॉ) स्त्री० फ़ौज; सेना	आबरू [ला.] [महक उकना
फोजदार(फॉ) पु॰ फ़ोजदार; कोतवाल	फोरबूं (फोर) अ० कि० खुराबू फैलना;
फोजदारी (फॉ) वि॰ झीजदारी (२)	फोरुं(फॉ) वि॰ चालाक; चुस्त;
स्त्री० फ़ौजदारका काम या पद (३)	फुरतीला (२) जरा बढ़ा;झाँगला;
फ़ौजदारी अदालत	ढीला-ढाला (३)हलका; कमवज्रनी
<b>फोड</b> पुं०; स्त्री० स्पष्टीकरण; विवरण;	फोर्च न० छीटा; बूँद
ब्योरा (२) निबटारा; फ़ैसला (३)	फोल पु० छिलके निकालकर साफ़ की
बेंटवारा	हुई चोज (२) बीज निकाली हुई इमली
फोडली स्त्री० छोटी फुड़िया; फुंसी	फोलवूं स॰ कि॰ छिलके आदि निकाल-
फोडलो पुं० फोड़ा; बड़ी फुंसी	कर साफ़ करना
फोडव सं० कि० फीड़ना (२)का	फोल्ली स्त्री० फूंसी
निबटारा करना; फ़्रैंसल करना (३)	फोल्लो पु॰ बडी फुसी; फोड़ा (२)
न० तरकारीका काटा हुवा टुकड़ा;	फफोला; छाला
टुकड़ा (४) दहीका लोंदा; थंक्का	<b>फोसलामग(-गो)</b> स्त्री० फुसलाना;
फोलरी स्त्री० खुरंड; पपड़ी	फुसलावा (२) ठगाई
फोतर न॰ छिलका (२) काग्रयका	फोसलाववुं सं० कि० फुसलाना;ठगना
टुकड़ा; पुरजा 🛛 🗍 आदिका)	<b>फोसलावुं</b> अ० कि० धोखा खा जाना;
फोंबो पुं० लोंदा; थक्का (दही, दूर्घ	ठगा जाना

ब

👅 पुं० 'प' वर्गका – तीसरा ओष्ठच व्यंजन बकडियुं न० दो कड़ोंवाला एक बरसन

बकनळी स्त्री० बकयंत्र; 'साईफन'

बक्तबक स्त्री०, बकबकाट पुं० बकबक; बकवास

बकरी स्त्री० बकरी

**बकर्द**न० बकरा **बकरो** पुं० बकरा बकल न॰ बकलस; बकसुआ बकवाट, बकवाद पुं० बकवास; बकवाद बकवुं स० कि० बेकार बात करना; बकना (२) बोलना (तुच्छकारमें) (३) शर्त लगाना; बदना

 ~ ~	·
	ल

1113

बकात वि॰ बचा हुआ; बाकी (२)	बगल स्त्री० बगल;कोस ।[-मां घोलेमुं
काटा, छाँटा हुआ; रह्। [- राख्य	=देखिये 'बगलमां लेवु'।—मां मारबै 🚝
= छटिना; रद्द करना; काटना.]	बगुलमें दबाना, दाबना । <b>मां राखन्</b>
<b>बकारी</b> स्त्री० दमनका उच्छ्यास ; मतली	= कब्जेमें रखना (२)आश्रय देना ।-मां
<b>बकाल</b> पुं० काछी; बद्दकाल (२) बनिया	लेवुं = बगलमें रखना ; बगलमें दबाना
(तुच्छकारमें),बक्काल [ का पेशा	(२)आश्रय देना।-मां होषुं = कब्बेमें
बकालुं न० साग-पात;सब्जी(२)बक्कील-	होना(२)अपनी निगरानी – देखभाऌमें
बकोर पु॰ शोर;कोलाहल [देना	होना । <b>बगलो कृटवी</b> ≕ बगले बजाना ।
बक्तवुं स०कि० भेंटमें देना; बख्शना (२)	<b>बगलो देखाडवी =</b> दिवाला निकालना।
बक्षिश (स) स्ती०मेंट; उपहार; नजर	बंगलो बगाउँची = बगलें बजाना.]
<b>बखडियुं न</b> ० देसिये 'बकडियुं'	<b>बगलवेली</b> स्त्री० कंधे पर लटकातेसे बगु-
बस्तर न० बस्तर; कंदच	लके नीचे रहे ऐसी थैली; बगली
<b>बलतरियो</b> पुं०कवचधारी योढा; बर्डेंतर-	<b>बगस्री स्त्री</b> ० मादा वगला; बगली
पोश सैनिक	बगलुं न० एक पक्षी; बगला
<b>बसारो</b> पुं० कोलाहल; झोर । [ <b>बसारा</b>	बगलो पुं० नेर बगला;बगला;बन
<b>काढवा =</b> दिलके फुफोले फोड़ता;	<b>बगवा</b> पुं० कानका मैऌ; ख्रैंट
भड़ास निकालना.]	बगवार्वु अ० कि० सगबगाना; घबड़ाया
बताळियुं वि॰ शोर मचानेवाला	हुआ <b>होना</b>
बलाळो पुं० देखिये बखारो'	<b>बगाई</b> स्त्री० बगई; कुकुरमाछी
बलियो पुरु बलिया	बगाडे पुं० बिगाड़; हानि(२)विकृति;
<b>बलील</b> वि०्बसील; कंजूस(२)कंगाल	खराबी (३)अनबन ; बिगाड़ (४) भ्रष्टता
बर्खु न॰ छेद; सूराख	बगडवुं स० कि० बिगाडना
बलेडो पुं० बलेडा; फ़साद; दंगा	बगाडो पू० देखिये 'बंगाड
<b>बखोल</b> स्त्री० खोखली जगह; <b>खोखला;</b>	बगासुं न० जॅंभाई; जम्हाई; उवासी
(गुफा, कोटर आदि)	बगी स्त्री० बग्घी; जोड़ी
सल्लाड वि॰ गाढ़ा; जो पतला न हो 	वनीचो पुं० वगीचा;वाग [ छेद
वस्तर(–रियो) देखिये ' बखतर ' आदि	बगुं न० छेद;सूराख(२)दीवारमें हुआ
बगडवुं अ० कि० बिगड़ना; नष्ट होना;	<b>बचकारजुं</b> स० कि० पुचकारना
खराब होना (२) भ्रष्ट होना क्यो हो, को को	बचकारो पुं० घटखारा; चभड़-चभड़
<b>बगढो</b> पुं० दोका अंक च्च्चे तंत्र च्च्चा च्या च्या	बधकी स्त्री० बकुची; छोटी गठरी
<b>बगदो</b> पुं० कचरा; कूड़ा-करकट	बचकुं न० बकुचा; गठरी
<b>वगभगत</b> पुं० बगलाभगत चर्ना प्रति कर्ना की करेते कर	बचकुं न० दाँतसे की हुई चोट; काट;
बगरी स्त्री०, बगदं न० थी तपानेसे ऊपर	बतीसा (२) दाँतोंसे काटनेमें समा
आनेवाला मैल; घृतमंड(२) घी-तेल	सके इतना टुकड़ा । [ <b>–मरदूं =</b> दौतों <b>से</b>
आदिकी तलछट; काट	काटना; काट खाना.]

युषको	३२८ बरबो
<ul> <li>अचको पु॰ बक्रुवा; बड़ी गठरी</li> <li>वचत दि० बचा हुआ (२)स्त्री० वाक़ी बची हुई चीछ; बक़ाया (३) बचाई हुई रक्रम; बचत</li> <li>वचपन वचपन</li> <li>वचरबाळ वि० बच्चेकच्चेवाला</li> <li>वचरबाल पु० बचाव; रक्षा (२)बची हुई रक़म; बचत । [-करवो = निर्दोधता सिद करनेके लिए सफ़ाई देना.]</li> <li>वचावपक्ष पु० बचाव करनेवाला पक्ष; अभियुक्त पक्ष</li> <li>वचाव करनेवाला पक्ष; अभियुक्त पक्ष</li> <li>वचा स्त्री० बच्ची; बेटी</li> <li>वची स्त्री० चुंबन; बोसा</li> <li>वच्चि स्त्री० चुंबन; बोसा</li> <li>वच्ची स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० चुंबन</li> <li>वच्चो स्त्री० सुंघनी; जास</li> <li>वजरियुं न० सुंघनीकी डिबिया; नासदान</li> <li>बजस्वणी स्त्री० (आज्ञा, हुन्म आदिका))</li> <li>अमल करना-कराना; तामौल</li> </ul>	(३)भाव; दर; बाजार(४)झपत; मालकी किको। [करदुं = बाजार करना; खरीदना।बेसी अवं = बाजार मंदा होना; बाजार गिरना। - वधी जवं = बाजार तेज होना.] बजार मंदा होना; बाजार गिरना। - वधी जवं = बाजारू; मामूली; बाजा- रका; हलका (२) बाजारमें फैलनेवाली (अफ़वाह); अविश्वस्तनीय; बाडारी (३)स्त्री० बाजारी औरत; वेश्या बजावणी स्त्री० देखिये 'बजवणी' बजावयी स्त्री० वंजात्रा औरत; वेश्या धंक रूप; बजाना; वजा लाना वह्तावयुं स० कि० 'बाझवुं' का प्रेरणा- र्थक रूप; बजाना; वजा लाना बह्तावयुं स० कि० 'बाझवुं' का प्रेरणा- र्थक रूप; लिपटाना; सटाना(२) गले मढना; सिर थोपना [ला.] बटक वि० जल्दी टूट जाये ऐसा;कनकना बटकबोलुं वि० मजाक़पसद; हँसोड़ (२) मुंह पर दो-टूक जवाब देनेवाला बटकवोलुं वि० मजाक़पसद; हँसोड़ (२) मुंह पर दो-टूक जवाब देनेवाला बटकावां अ० कि० टूटना; दरकना(२) सड जाना बटकावां अ० कि० विदीणं होना; दर- कना (२) चर्राना; मसकना; फटना (कपड़ा)
बजरियुं न०सुंघनीकी डिबिया ; नासदान बजक्षणी स्त्री० (आज्ञा, हुन्म आदिका )	बटकावुं अ० क्रि० विदीणं होना; दर- कना (२) चर्राना; मसकना; फटना

#### 125

COLUMN 1

শহার বি॰ বঙ্গার্জ
बदाको (टो) पुं॰ आलू
बटाबुं अ० कि० ज्यादा देर तक पड़ा
रहनेसे बास मारना, उतर जाना
(अनाज या रसोई)
बटु पु॰ बटु; वटु; बालक
बढुक पुं० वह लड़का जो यज्ञोपवीतधारी
न हो(२)बौता आदमी
<b>अटे</b> रं न० सकोरा; कसोरा [दाग़;बट्टा
बह्वो पुं० मिथ्या आरोप; तोहमत(२)
बडमो पुं० पट्ठा; संड-मुसंड;पाठा
<b>बडवड</b> स्त्री० (२)अ० बड़बड़ ; बकवास
बडवडवुं अ० कि० बड़बड़ाना (२)ना-
राष्ठीके कारण मनमें गुनगुनाना(३)
हाँदना
बहबडाउ पुं० बहबड़ाहट; बकवास
वडमूछियो, बडमूछो वि० पुं० विना
मूँछका आदमी; मकुना
बड्युं न० वह पुरजा जिससे किवाड़ आदि
चौखटसे जोड़ने पर घूमते हैं; ज़ब्आ
बडवो वि०; पुं० सिरमुँडा; विरूप (२)
पु० वह लड़का जिसका यज्ञोपवीत हो
रहा हो; बरुआ(३)छोली हुई गॅंडेरी
बहाई स्त्री० बड़ाई; महत्ता (२) मगुरूरी
बहाबूट अ० तितर-बितर; अव्यवस्थित
थडाझ स्त्री० घमंड; रोखी
<b>बडुं</b> वि० बड़ा;भारी
बङ्को पुं० कड़ी चीज तोड़ते या चबाते
समय होनेवाली आवाज
बढती स्त्री० खुशहाली; वृद्धि; समुद्धि
(२) (तनख्वाहमें) वृद्धि ; बढ़ती
बणगुं न० नरसिंघा; रणसिंघा (२)
हुल्ल्ड्;दंगा-फ़साद(३)डींग; झेखी;
कोरी गप [ला.]
ৰলৰল স০ (२)ন০ মিন-মিন

<b>ৰলৰলৰুঁ</b>
बताब (व) चुं स०कि० बताना;दिसाना
बसी स्त्री॰ (दीयेकी)बसी(२)दीया;
बत्ती (३) बढावा; उत्तेजना [ला]।
[आपबी = उमाडना; उकसाना।
-काटबी = जवान खुलना; बोलना।
-मूकबी = घावमें बत्ती भरना (२)
आग लगाना; उभाइना.]
बत्तो पुं० (सील आदिका) बट्टा; दस्ता
(खरल आदिका)
बत्रीस (स) वि० बत्तीस;३२। [-कोठे
= चारों ओरसे; दसों दिशाओंमें.]
बत्रीक्ष (स) ल्स (स्त) णुं वि० पूर्ण
मानवके बत्तीस लक्षणोवाला (२) घूते;
काइयाँ; चट
बत्रीशी(-सी) स्त्री० वत्तीसों दाँत;
बतीसी (२)बत्तीस चीजोंका समूह;
बत्तीसी(३)स्वादिष्ठ भोजन। [ए
चित्र विसीकी) चर्चा-
निदा होनाः बदनाम होनाः । – सताबबी
= हँसना; बत्तीसी दिखाना (२) हँसकर
बात उड़ाना (३) धमकी देना (४) अमयदि बनना ]
वत्रीसुं न० बत्तीस दवाओं और मेवोंका
चूर्ण जो प्रसूताको दिया जाता है;बतीसा जन्म प्रकीर - वेरिको ( जन्म /
<b>वय</b> स्त्री० देखिये 'नाथ ' ————————————————————————————————————
<b>वयवो</b> पुं० वयुआ 
बचाववुं स०कि० थका देना; हराना (२)
हजम कर जाना; पचाना। [बथावी
<b>पाडवुं</b> = अयोग्य रीतिसे ले लेना;

हजरम कर जाना; माल मारना.] बच्चंबच्चा स्त्री० गुत्यमगुत्या; भिड़त बद स्त्री० बद; गिलटी(रोग)

बदधलन न० बदचलनी; दुराचरण

And in case of	

वपीषिष्

बरघाल स्त्री० बदचलनी (२) वि० वद-	व
चलन; दुश्चरित्र	:
बबदानत स्त्री० बददयानत; बदनीयती	;
<b>बदहुआ(वा</b> ) स्त्री० बददुआ; शाप	ৰ
<b>बदन न०</b> बदन; कारीर(३) <b>कुर</b> ता	:
<b>बदनक्षी स्त्री० बदनामी; हत<del>कइ</del>फ़्ब्रती</b>	व
<b>वदनाम</b> वि० बदनाम; कलंकित(२)न०	ন
बदनामी	स
<b>बदनामी स्त्री० ब</b> दनामी ; लांछन ; कलंक	3
बरनुं न०, (नो) पुरुपानीका कूंड़ा	व
या कुल्हड़; तामलोट (राजके काम	
आनेवाळा) (२) डबला (पाखानेमें	1
काम आनेवाला)	
<b>बदफे</b> ल बि० बदफेल;दुराचारी [सड़ता	:
<b>बरबदवुं</b> अ०कि० जंतुओंसे वजवजाना;	;
<b>वदवो (०ई)</b> स्त्री० बदवू (२) बदनामी	1
बदल अ० बदलेमें; एवजमें	;
बदलवुं स० कि० बदलना (२) – के बद-	ब
<b>लेमें दूसरी चीज लेना−देना</b> ; बदलना	
<b>बदलावुं</b> अ० कि० 'बदलब्रुं'का	म
कर्मणिरूप; बदलना (२)दूसरा हो	्य
जाना; पलट जाना; बदल जाना	
बरली स्त्री० बदली; बदलना; बदल	ব
जाना; फेरफार (२) नौकरी या कामके	-
स्थान या प्रकारका तबादला होना;	ì
तबदीली। <b>मां होवुं =</b> के बदलेमें	<b>a</b> r
याके स्थान पर होना.]	व्य
बदले अ० बदले; बजाय	म
बदलो पुं॰ बदला; मुआवजा; एवज (२)	वर्ष
ं फेरफार; अदल-बदल; बदला (३)	न
बैर; बदला [मानना; बदना	व
बर्ष् स॰कि॰ गिनना; समझना; आज्ञा	् भूष
बदशिकल वि० बदशकल; भोंड़ा	44
	-
बदाम स्त्री० बादाम; बदाम(२) हिसा-	-
बर्मे एक नगण्य चलन-सिक्का	1

**ादामी** वि० बादामी; बादामके छिलके से मिलते हुए<sup>.</sup> रंगका (२)बादामका बना हआ : बादामसे संबंधित : बादामी **वी** स्त्री० दराचरण; अनीति; बुराई; बदी (२) कुटेव (३) निंदा र्ष्धुंवि० सब; सारा; सर्व; पूरा षे अ० सब जगह; सर्वत्र **नडो स्त्रो० बनी; नवोढ़ा** [शादियाना **लग्रो** पुं० बना; दूल्हा(२)शादीका गीत; लवुं अ० कि० बनना; होना; निर्मित, रचित, सिद्ध होना (२) मेल होनाः पटना; बनना (३) रूप, वेश अरुना (४) [ला.] केवकुफ़ बनना (५) बना-व -- सिंगार करना; बनना( ६)मझेमें होना ; नशा छाना ; रंग चढ्ना । **बिनवा** काळ 🛎 भावी ; होनहार । बनवा जोग = संभवित; बन पड़ने योग्य.] ा**नवुंठनवुं स० कि० बनना-ठनना** नात स्त्री० बनात मिल लिख पुं० घटना; प्रसंग (२)बनाव; **ानावट** स्त्री ० बनानेकी रीति ; बनाबट : रचना(२)षड्यंत्र(३)फ़जीहत; बनावट **नावटी वि० वना**वटी: नकली **नाववुं** स०कि० बनाना;रचना; सिमित करना(२)हंसी, मजाक उड़ाना; बनाना न्(--स्)स न० ऊनका मोटा कंबल;धस्सा **नेवी(ने')** पुं० बहनोई फ्रांवि० दोनों; उभय पैयो पु० पपीहा; चातक **पोर** पुं० दोपहर; दुपहरी; मध्या**ह्न पोरा** पुं० ब० व० दोपहरका भोजन **पोरियुं** वि० दोपहरका; मघ्याह्नका (२)न० दोपहरको खिलनेवाला एक दुपहरिया (३) दोपरहको फुल ; करनेका काम (४) दोपहर तक

_	. ``	
æ	पा	रा

## बरास

काम करनेवाला मजदूर वा कारीपर	बरछट वि े जिसकी सतह चिकनी न हो;
(५) एक तरहकी आतिशवाजी	खुरदरा(२)मोटा; घटिया (अनाज)
बपोरी वि० दोपहरका (२) स्त्री० दुप-	<b>सरछी</b> स्त्री० बरछी
हरी । [ – करबी ⇒ दोपहरीमें आराम	बरड वि० जल्दी टूट जानेवाला; कनकना
करना । –गाळवी = दोपहरकी बेला	<b>बरडवुं न</b> ० देखियें ' बडवुं '; क़ब्जा
गुजारना, काटना.]	बरडों पुं० पीठ। [- याबडयो ≓पीठ
बफारों पुं० जनस	ठोंकन (। बेवड वळी जवो == सस्त
<b>बफावुं</b> अ० कि० 'बाफवुं' का कर्माण-	मार पड़ना (२) (हॅसनेके कारण)
रूप(२)ऊमससे जी घबँडाना।[बफाई	लोट-पोट होना.
जर्वु = कुछका कुछ कह देनेसे बात	बरणी स्त्री० एक पात-विशेष
बिगेड्ना.	बरदाझ(स,स्त) स्त्री० देसभाल;
बबडव् अ० फि० बडबढाना	तीमारदारी । 📔 <b>– करवी व्य देखभा</b> ल
<b>बनडाट</b> पू॰ देखिये 'बडबडाट'	करना; तीमारदारी करना (२)सहना ;
बबरची पुं० बावरची [[ला.]	बरदाश्त करना; उदा० 'भूलनी बरदाश
बबरचीखानुं न०बावरचीखाना(२)गंदगी	करवी '। <b>राखवी, लेबी</b> == देखभाल
बब्बचक वि० मूर्ख; बौड़म	करना (२) मेहमानदारी करना.]
बन्दे वि० दो-दो	बरफ पुं०; न० बर्फ़; बरफ़
<b>बगलवुं</b> अ०कि०भिनभिनाना; भिनकना	<b>बरफी</b> स्त्री॰ बरफी
(२) भिनभिनाते हुए मेंडराना	<b>बरफीयूरम्</b> न० एक मिन्टान्न
बनगाट पु॰ भिनभिनाहट; भिन-भिन	<b>बरवाद</b> वि० रद्द; निकम्मा; खराद (२)ज्युः, जुरुवुद
बमणुं वि० दोगुना; दुगुना; दूना	(२)नष्ट; बरबाद <b>बरवा</b> दी स्त्री० बरबादी
बर पुं० अर्च; पनहा (२) क़िस्म (३)	
माल (४) अ०के अनुसार;की तरह	<b>बरागळ</b> स्त्री० हलका बुख़ार; हरारत <b>बराडवुं अ</b> ० कि० चीखना; जिल्लाना
(५) वि० सफल; बर(आना); पूरा	बराबो पु॰ चिल्लाहट; चीख
(६) जैसा चाहिए ऐसा; योग्य।	बराबर वि०(२)अ० बराबर; समान;
[ – आववुं = सफल होना; बर आना ।	नुल्य(३)खरा; उचित; वाजिब(४)
- नुं होवुं ⇒ किस्म या पनहेका होना	पुरुष (२) खरा, डापरा, पारजब (०) जैसा चाहिए ऐसा; सही; ठीक
(कपड़ा).]	जता माहर एता, तहा, ठाक बराबरियुं दि॰ बराबरका; समकल
बरकत स्त्री • बरकत; लाभ (२) फ़तह;	बराबरियो पुं० बराबरका व्यक्ति;
सिद्धि (३) वरकत; बहुतायत; समृद्धि	बराबारचा पुण् वरावरका व्यानत; प्रतिस्पर्धी
बरको पुं० चिल्लाहट; चीख	बराबरी स्त्री० बराबरी; मुक़ाबला।
बरखास्त वि॰ बरखास्त; विसजित।	[ <b>-करवी</b> ⇔मुकांबला, स्पर्धा करना.]
[करवुं=(जलसा)बरखास्त करना ।	वरास न॰ बरास-कपूर

-यवं = बरखास्त होना.]

बरास न० सौ धनफुट

बरी

बहेक्युं

- बरी स्त्री॰ सीस; पेउसी; पेयुष बर पुं०; न० नरकट; नेजा बरो पुं० मिजाज; मग़रूरी (२) नखरा (३) शेखी (४) अति ज्वरके कारण होठके कोनेके पास होनेवाली छोटी ( 'बराबर ' आदि **फुसियाँ** । बरोबर (-रियुं, -रियो, -री) देखिये बरोळ स्त्री० तिल्ली; प्लीहा बलके अ० बल्कि; किंतु; प्रत्युत बला स्त्री० कष्ट देनेवाली वस्तु या व्यक्ति;बला (२) आफ्रत;बला।[--जवी, टलनी = बला टलना ।--लेनी = बलायें लें**ना । –वहोरवी =** बला मोल लेना । **--जाचे ! , –-रात जाने ! =** (मेरी)बला जाने;मैं महीं जानता.] बलिहारी स्त्री० खूबी (२) वाहवाही
- बलूच (---ची) पु० बैठ्चिस्तानका नि-वासी;ब ठूची (२) वि० बठ्चिस्तानका बल्ह्य न० बैळ्न; विमान; वायुयान बल्ह(--लो,--स्ले)युं न० चूड़ी।[बर्लयां पहे-रवां = स्त्रीका व्याह करना या किसीके घर बैठना; चूड़ियां पहनना (२)ना-मर्द बनना;चूड़ियां पहनना (व्यंगमें).] बस अ० बस; काफ़ी (२) निष्ठचय या दबाव बतानेवाला शब्द; बस।[--जारवुं
- = वैंव करना; बस करना। **चवुं** ≕ काफ़ी हो जाना.] == →= -
- बस स्त्री० मोटरबस
- बसी स्त्री० रकाबी; तक्तरी
- बसूर्य वि० देसिये 'बेसूरु'
- बसँ(–सो)(सँ०) पुं० दोसौ; २०० बहदंवि० दोहरा
- बहलावर्षु स० कि० मजबूत करना; विकास करना(२)फैलाना(३) प्रफु-ल्लित करना; बहलाना [ला.]

- बहाकुर वि० बहादुर; शूरवीर
- बहाखुरी स्त्री० बहादुरी; पराकम । [—मारवी≕बहादुरीका दम भरना था बोस्ती बघारना.]
- **बहानुं** न० बहाना; मिस । [--आपवुं = किसी बहानेका निमित्त होना.]
- बहार पुं०; स्त्री० बहार; शोभा; झान (२)आनंद; बहार (३) वसंत ऋतु; बहार; वसंतका आनंदभरा उन्मादक समौ ।[–आवबी ⇒लुरफ़, मजाआवा.]
- **बहारवटियो** पुं० वागी; विद्रोही (२) ऌटेरा [वगावत्त
- **बहारवटुं** न० डाकाजनी; डकैंती(२) बहारवासियों पुं० बाहरँवाला; भंगी बहाल वि० बहाल;मंजूर; कायम बहाली स्त्री० बहाली; स्त्रीकृति
- **बहिगोंळ** वि० जिसकी सतह वाहरको उठी हो; उन्नतोदर
- बहु वि० (२)अ० बहु; बहुत; खूब। [--करी = कमारू किया। --ययुं = अब बस करो; रुक जाओ (२)हद हो गई। --सारं = भल्ठे; अच्छा; ठीक.]
- **बहुमती** स्त्री० बहुमत; कसरतराय(२) एक पक्षसे दूसरे पक्षके मतोंकी अधिकता
- **बहुरूपी** वि० अनेक रूपोंवाला;बहुरूप(२) पुं० अनेक रूप धरनेवाला;बहुरुपिया
- **ৰম্ভৱন্মন** ন০ ৰহুৰবন
- **बहेक** स्त्री० महक; खुशब्
- बहेकवुं अ० फि० महकना (२) छकना; आवारा होना; बहकना

बहेकावर्दु	३३३ बंटियो
बहेकाववुं स० कि० बहकाना;वरग्रलाना	ा जलना। [ <b>बळधुं</b> =' जाने दो; टाल दो '
बहेबुं न० बहेड़ा (फल)	इस मतलबका उद्गार.]
बहेडो पुं० बहेडा (पेड़) (२) कीचड़	बळवी पुं० बलवा; गदर; विप्लव।
बहेतर वि० अच्छा; ठीक; बेहतर	[ - ऊठेंबो, जागको ≕ बगावत होना. ]
बहेन स्त्री ॰ बहन ; बहिन (२) कोई भी	
स्त्री (३) स्त्रीके नामके अंतर्मे आदर-	
सूचक अनुग	बुखार निकालना. ]
बहेनपणां न० व० व० बहनापा	बळिया (०काका),(०वापजी) पुं० ब०
<b>बहेर</b> स्त्री० बहरापन (२) सुन्न होनेकी	व० बड़ी माता; चेचक (२) उसका
स्थिति; जडता	देव । [ <b>—काढवा, टांकवा</b> ≕शीतलाका
<b>बहेराट</b> पुं <b>०, बहेरादा स्त्री० बहरा</b> पन	टीका लगाता.]
बहेरं वि० बहरा (२)ठीक न बजनेवाला	<b>बळियुं</b> वि॰ बली; जोरावर
(रुपया) (३) झूठा; सुन्न ; जड; उदा०	बळियेल वि० अदेखी; ईर्ष्यालु
'चामडी बहेरी थई गई  छे '	बळी स्त्री० खीसमें से बनाया जाने-
<b>वहोरवुं स</b> ० कि० बुहारना	वाला एक खाद्य; इसर <b>बळेव</b> स्त्री०श्रावणी; राखी पूनो; सऌ्नो
<b>बहोळुं</b> वि० बड़ा; विस्तारवाला;	वळोतियुं न० देखिये 'बाळोतियुं'
विशाल । [ <b>वहोळे हाथे =</b> उदारतासे ;	बळारापु गेर पालप पाळगरापु बळध्रुंअळघ्रुं वि० कुंढ्र;जला-भुना(२)
दरियादिलीसे.]	पीड़ित; संतप्त (३) ईर्ष्यालु; डाही
<b>बळ</b> न०्बल;जोर ! [ <b>–आववुं, पकडवुं</b>	बंको वि० प० झैला: बाँका: मजीला
= बल मिलना ; जोर पकड़ना ; बलवान	। संगडी स्त्री • चडी । (-पडेरवी = सामर्ट
बनना।भागवुं ≕जोर चला जाना;	बनना; चूड़ियाँ पहनना.]
शक्ति नष्ट होना.	बंग पु॰ रीति; तरह; प्रकार (२) तर्क;
बळलो पुं० बलगम	मनकी तरंग (३) नमनाः ढंगः जाति
बळजबरो, बळजोरी स्त्री० जबरदस्ती	) (४)वि० निर्लज्ज ; बेशरम
<b>बळलण</b> न॰ जलावन; ईंधन	<b>बंगली</b> स्त्री० छोटा बंगला [ बंगला
अळलरा स्त्री॰ जलनेकी पीड़ा; जलन;	बंगलो पुं० एक खास प्रकारका मकान;
दाह(२)जलन; मनस्ताप; कुढ़न	बंगाळ(-ळा) पुं० बंगाल
बळलुं वि॰ जलता हुआ (२)न॰ जलती	<sup>।</sup> बंगाळी वि० बंगालका; बंगला (२)
चीज (३) जलन; दाह (४) अलाव जन्म (जिन्दे) तंत्र कैन (२) जन्मी	स्त्री० बंगाली भाषा; बंगला (३)
बळद(वियो) पु॰ दैल (२) गावदी; बैल [ला.]	पुं० बंगालका रहनेवाला; बंगाली।
	[- <b>तोल</b> = ८० तोलेके सेरकी एक
बळवास्रोर वि० बलवाई; बाग्री बळवुं अ० फि० बलना; जलना (२)	तौल; पक्की तौल.] जंब (जिन्हों) के जन्म
बळबु अ० कि बलना; जलना (२) जलना; जलन होना(३) डाह करना;	· · · ·
শতনা, গতন হালা ( ২) তাই কৰো;	वाला एक घटिया अनाज

•

For Private and Personal Use Only

<b>संस</b> री	३३५ वाश्वी
नेका दमकल (३)पानी गरम करनेका	बालडबुं अ०कि०वखेड्रा करना ; झगड्ना
एक प्रकारका बरतन (४) पानीकी	बाखडी वि० (मवेशी) जिसे ब्याये ज्यादा
बड़ी कल; बड़ा नल	समय हो गमा हो; बकेन (गाय, भैस)
बंसरी स्त्री० बंसरी; बंसी	वास् न० छेद; सूरास
वंसी स्त्री० बंसी; बॉसुरी	बागायत स्त्री ०वगीचेमें होनेवाली खेती;
बा स्त्री० माँ; माता (२) बुजुर्ग स्त्रीके	साग-सब्जी (२) वि० कुँएके पानीसे
नामके पीछे लगाया जानेवाला शब्द ;	होनेवाली (खेती)
उदा० ' कस्तूरबा ' (३)अ० प्यारका	<b>बामायती</b> वि० फलफूलके पेड़-पौधे
एक उद्गार	लगाने लायक (अमीन); बाग़ाती
<b>बाइवल न</b> ० वाइबिल, इंजील	<b>बाघड (डुं)</b> वि० देखिये ' बाघुं '(२)
बाइतिकल स्त्री०बाइसिकिल; साइकिल	डरावना [ लाहट
बाई स्त्री० कोई भी स्त्री; बाई(२)	बाषाई स्त्री० बुद्रूपना ; मूढ़ता; बौख-
स्त्रीके नामके पीछे लगाया जातेवाला	कार्या न० ब० व० बेकार इधर-उधर
मानसूचक शब्द (३)सास(४)नौकरानी	देखना (२)व्यर्थ कोशिक्ष
बाईजी स्त्री० सास	<b>बाघुं</b> वि० बुद्धू; बौखल
<b>बाईडो</b> स्त्री० कोई भी स्त्री; स्त्री	बाधको पुं० मुट्ठी; पंजा या उसमें
(२)पत्नी। [ <b>-करवी =</b> व्याहना।	आये उतनी चीज; बकोटा (२)
– <b>रासवी =</b> रखेली रखना.]	बकोटा; पंजे या नाखूनोंसे नोचना
<b>बाईमाणस</b> न० स्त्री	बाज पुं० एक शिकारी पक्षी; बाज
<b>बाउल्रुं</b> न० खीरी; थन	<b>धाज</b> स्त्री०; न० पत्तल
<b>वाकरी</b> स्त्री० हठपूर्वंक झगड़ना।[ <b>बां</b> -	<b>बाजठ</b> पुं० चार पायोंवाला चौकोर
<b>घवो</b> = पूर्वग्रहके कारण किसीसे बैर	आसन; चौकी (बैठनेकी)
रखना.]	बाजडुं न० पत्तल
बाकळा पुं० ब० व० साबूत उवाला हुआ	<b>बाजरियं</b> न० बाजरेकी बाल; सिट्टा
दलहन। [–आपबा, नाखवा = उबाले	<b>वाजरी</b> स्त्री० बाजरा
हुए दलहनकी बलि देना.(२)धूस देना.]	बाजरो पुरु बड़े दानोंका बाजरा
बाकात वि॰ देखिये 'बकात '	बाजी स्त्री० वह तख्ता या कपड़ा जिस
बाको वि० बाक़ी; घटता या कम होता	पर बाजी खेली जाय; बिसात(२)
हुआ (२)बचा हुआ; अवशिष्ट; बाक़ी	चौसर या ताशका खेल (३) (ताशका)
(३) शेष;बाक़ी (४) स्त्री० जमा-	दावँ; बाजी; हाथ (४) युक्ति; दावँ-
खर्चका हिसाव करनेके बाद जमा रही	पेच; प्रपंच । [ <b>वगडवी ==</b> खेल बिग-
हुई रक़म; शेष; 'बेलेन्स' (५) न	डना; योजना निष्फल होना । – <b>रचवी</b>
चुकाई हुई रकुम; बक़ाया (६) अ०	= बाजी लगाना;युक्ति रचना ।- <b>रमवी</b>
नहीं तो; बाकी	=खेल खेलना;चाल चलना । -हाथयी
<b>वाकुं(-कोर्व)</b> न० छेद; सूराख	जवी = खेल ंबिगड़ना; बाजी हाथसे

# वासीगरी

225

नाम

जाना। – हारवी = वाखी हारना (२) युक्तिका सफल न होना. ] वासीगरी स्त्री० वाजीगरका काम; वाजीगरी (२)क्षेल-तमाशा (३) युक्ति;

प्रपंच, बाजीगरी

- **बाजु(-जू)** स्त्री० छोर; अंत (२) दिशा; ओर; करवट; पहलू; बल (३) पक्ष; तरफ़दारी। [**~ए बेसर्वु**= स्त्रीका रजस्वला होना(२)कामर्मे से निकल जाना; किनारा करना; उदा-सीन रहना.]
- **वाझवुं** स० कि० लगना; सटना; लिप-टना (२) अ० कि० झगड्ना; लड्ना
- वासंवासा(-सी), वासावास (-सी) स्त्री० लड़ाई; टंटा-फ़साद; झगड़ा बाट न० बाट, वजनका सेट
- **बाटकवुं** अ० कि० सट जाना; लिपटना (२) झगड़ना; लड़ना
- बाटली स्त्री० शीशी ; बोतल (२) शराब [ला.]। [- पीबी ≕ शराब पीना.]
- बाटलो पुं०बड़ी बोतल; शीभा । [बाटला भरवा = शीशेमें उड़ेलना (२) रोज दवा लाना; सदा रोगी बने रहना.]
- **बाडुं** वि० भेंगा; ऍचाताना। [**वाडी** आंसे जोवुं = तिरछी नजरसे चोरीसे देखना (२) उपेक्षित दुष्टिसे देखना; देखा अनदेखा करना.]
- वाण न० वाण; तीर (२) अंडाकार पत्थर(शिवल्गि)(३) साड़ीकी जमीन जहाँ ज्वारका पानी आता हो (४) खेतका सीमासूचक पत्थर या कोई निशान; ढोला (खेतका)(५) पदचिह्न; पौवका निशान (६) वाणासुर। [--काढवुं=पाँवके निशान-से चोरका पता लगाना.]

वाणावळी पुं० वाप चलानेमें कुशस योदा; होशियार तीरंदाज; वानंत; धनुर्घर [क़बूलियत वाणी स्त्री० ठहराई हुई मुद्दत (२) शर्त; वाण, वाणुं वि० वानवे; वानवे; ९२ वातमी स्त्री०समाचार; खबर (२) पता; टोह् [वाला; टोहिया; संवाददाता वातमीघार वि० (२) पुं० खबर लाने-वातमीघार वि० रद्द; निकम्मा; वातिल (२) निकाल दिया हुआ; वरतरफ वाप स्त्री० दोनों हाथ फैलाकर पकड़ना या आलिंगन देना; घपची; कोली

- (२) टक्कर; मुकाबला; मुठभेड़। [-- भरवी, भीडवी, लेवी = आलिंगन देना; भेंटना(२)बीड़ा उठाना; बड़ा भारी काम हिम्मतसे अपने जिम्मे लेना
- (३)मुकाबला करना; –से भिड़ना.] बाथोडियुं न० बेकार कोशिश करना
- बाद वि० कम; रद्द (२) अ० बाद; पीछे;⊣बादमें
- **बादबाकी** स्त्री० घटानेकी रीति; वाक़ी; तफ़रीक़;व्यपकलन[ ग. ](२)घटानेसे निकलनेवाली रक़म;शेष;बाक़ी
- बादलुं वि० नक़ली; मुलम्मा चढ़ाया हुआ (२) जो टिकाऊ न हो(३) न० बादला (४) जरकश साड़ी
- **बादी** स्त्री• अजीर्णं; बदहज़मी(२) पेटमें होनेवाली वायु; बादी
- बाघ पुं० वाघा; अड़चन; प्रतिबन्ध (२) विरोष; एतराज (३) दोष; पाप (४) पीड़ा; वाधा । [*—*आथवी <del>∞</del> हरज, आपसि होना; वावा खड़ी होना.]
- वामा स्त्री० मानता; मनौती (२) पीड़ा;कष्ट;बाघा(३)विष्न;बाघा।

बान	<b>३३७ अ</b> स्ट
[-रावनो, सेनी = मनौती मानना;	अस्मका साक (५) [छा.] स्वादरहित
वतः रखनाः]	चाना (६) गढ़बढ़; घोटाला
बान वि० जमानतके रूपमें; एवजका	बाखलो पूं० उबाले हुए जामका पना
(२)न० पेशगी; बँगाना (३) डामिन	बाफवुं स० कि० पानीमें उबालकर
बानासत न० पेशगीकी दस्तावेज;	रौंधना (२) (काम आदि) बिसाइ
बयानाखत	डालना; गड़बड़ करना [छा.]
बानु स्त्री० सन्नारी	बाबत स्त्री० विषय; बाबत; मामला
बार्नु न० बयाना;पेशगी	(२) व्योरा; विवरण (३) माजरा;
बानू स्त्री० सन्नारी	हक्रीक़त (४)अ०के विषयमें,के
बाप पुं० बाप । [-ना कूवामां बूडी मरबुं	बारेमें;की बाबत
= नुक़सानदेह होने पर भी पुरानी कुल-	बाबरां न० द० द० सिरके थिखरे हुए
मयदिाको निवाहे रखना; वापके कुएँमें	बाल; झोंटे [बाबरी
गिरना । <b>—ना वाप कोलाववा</b> == वापरे	<b>वावरी स्त्री०</b> सिरपर वालोंका गुण्छा;
वाप पुकारनाः]	बाबरं वि० झबरा
बापकर्मी वि० दापकी कमाई खानेवाला	बाबागाडी स्त्री० छोटे बच्चोंकी गाडी;
बापजन्मारामां, बापजन्मारे अ० सारी	गडुलमा; गडोलना
जिंदगीमें; कभी; जनमभर	बाबाहास्ती, बाबाही वि० हरुका; ति-
बापजी पुं० देखिये 'बापु' नं.(२)	कम्मा (२)वि० पुं० बड़ौदा रियासतमें
बापडुं वि० बापुरा; गरीब; बेचारा	पहले प्रचलित (सिक्का)
बापदादा पुं० व० व० वापदादा; पुरखे	बाबे अ०के बारेमें;के विषयमें
बापा पुं० (आदरार्थ ब० व०) देखिए	बाधो पुं० रोटी (बालककी माथामें)(२)
' बापु '	छोटा लड्का ; बाबा(३)दूषमुँहा लड्का
बापीकुं वि० बापका; मौरूसी; पैतूक	बामण(म')पुं० ब्राह्मण
बापु पुं॰ वाप; वापू (२) वड़ोंके प्रति	बामणी (म')स्त्री॰ बाह्यणी
आदरसूचक और छोटोंके प्रति प्यार-	<b>बामजी</b> स्त्री० छिपकली जैसा एक छोटा
सूचक शब्द; तात	कीड़ा; काह्यणी; अभनी
<b>बापूकुं</b> वि० देखिये ' बापीकुं '	<b>बामलाई,वामली</b> स्त्री०वग्रलमें होनेवाला फोड़ा ;   कॅंक्षथारी
बापो पुं० देखिये ' बाप '	बायबी स्त्री ॰ स्त्री; महिला(२)पुरूनी
बाफ पुं०; स्त्री० ऊमस (२)पसीना (३)	बायलुं वि० नामदं; डरपोक; कायर
भाष;बाफ। [आपबो =- भाष देना।	(र)स्त्रीवश; जनमुरीद
ववो, मारवो = ऊमस होना.]	बायुं न० बायें हायसे वजाया जानेवाळा
बाफजुं न॰ भाषमें यकानेकी किया;	तबला; बार्यां
उबालना (२) उबाली हुई चीफ्र (३)	बार पुं०वंदूक आदिकी आवाब ; पड़ाका
उबाला हुवा मवेशीका खाना, भूसा(४)	बार न॰ द्वार (२) कॉंगन (३) डघोड़ी
गु. हि–२२	

**ά**κ



बार बि॰ बारह; १२। [--रु बोष (करता) आधडवुं = कुछ भी आना; बग्ध्यास होमा ।--मैया ने तेर चोका = जातिभेद या छुवाछूतकी अति-वायता। --वरसे = बहुत लंबे अरसेके बाद। --वागवा = -पर आ पड़ना। बारे दरवाजा खुस्ला = कहीं मी जानेकी इजावत होना। बारे ने खारे = सवाकाल। बारे नेह वरसवा = मेहकी आंख न खुल्ना (२) खुशहाल होना; सब प्रकारसे सुखी होना। बारे बार खुल्ली होवी = देसिये ' बारे दर-वाजा खुल्ला '.]

बारकस न० माल ले जानेवाला जहाज बारणुं न० दरवाजा; द्वार । [वारणां उद्याडां रहेवां = किवाड़ खुले रहना (२) वंश जारी रहना। बारणां ठोकवा, तोवी पाढवां झवारवार घर आकर तकाजा करना। बारणे ताळां देवावां = घर वेणिरास होना; घर उजड़ना। बारणे बेसवुं झ घरना देना; तकाजा करना.]

- बारदान न० वह खाली बोरा, बॅंधना मा पात्र जिसमें माल भरा जाय; बारदान (२)बारदानका वजन
- बारमासी वि० वारह मासका; वारह-मासी(२)स्त्री०वारहमासी पौधा.
- बारमुं वि॰ बारहवां;बारहाँ(२) न॰ बारहाँ या उस रोज होनेवाला श्राद
- या भोज; बादशाह; बारवाँ
- बारमो चंद्रमा होवो = अनवन होना
- बार्स्सो (-सीं)गुं न० बारहसिंगा बारसास स्वी० दरवाजेकी चोसट; चौसटा

वाराक्षरी, वाराकडी स्त्री० वारहसड़ी बारी स्त्री० खिड़की (२) छटकनेका उपाय; बहाना [ला.]

- बारीक वि॰ वारीक; झीना; सूक्षम (२) पतला; महीन; वारीक (सूत, कपड़ा आदि) (३) क़दमें छोटा (सुपारी, दाना आदि); सूक्म (४) जरूरतका; अडीका (वक्त) [ला.]। [-काम = सूक्ष्म कारीगरीका काम। --नवार = सूक्ष्म दृष्टि। --वलात, समय = जरू-रतका वक्त; अडी.] [सूक्ष्मता
- बारीकाई, बारीकी स्त्री० वारीकी; जार्च क. जंबरायकी स्त्री० वारीकी;
- बारं न० वंदरगाहमें पैठनेका मार्ग (२) दरवाजा; रास्ता (३) छटकनेका उपाय; बहाना
- बारोबार अ॰ सीधे; बिना पूछे या रके बाल वि॰ छोटी उन्नका; कमसिन; बाला (२) नादान; बाल; कमअकुल
- (३)पुं० ऌड़ना(४)न० बालक; बास्त बालगीर पुं० उत्साही, बहादुर बालक बालगीर (-बी)स्त्री० बालटी [सँभाल बालाहा(-न्ही) स्त्री० देखभाल; सार-बालां न० ब० द० हक्का-बक्का होकर इघर-उघर देखना(२)बहाने
- भावची स्त्री॰ एक वनस्पति; बनतुरुसी बावटो पुं॰ एक मोटा अन्न; नांचनी; नागली [भाग;बाहु;बाँह

**वावबुं** न० कंघे और कोहनीके बीचका बाबन वि० बावन; ५२

बावर्ष(बा') वि॰ बावला; घबड़ाया हुआ;बीखलाया हुआ

**बावर्ल्ड् (वा')**न० यन; खीरी (२) प्रतिमा **बावळ (--ळियो)** प्ं० बबुल; कीकर

बाबळी स्त्री० अनेक बबूलवाली जगह या बबूलका छोटा जंगल

ata

	ररऽ वाग
बाबी स्त्री॰ साधुनी; बाबी [प.]	बाळबोब वि० जो बालकोंको झट समझमें
वावीश (स) वि० वाईस; व्यइस; २२	आं जाय; वालनोध; वासान (२)
बाबुं न॰ मकड़ीका जाला; जाला	स्त्री० देवनागरी लिपि
बाबो पुं० साधु; बाबा। विाबा मादम	<b>बाळमंदिर</b> न० बालकोंको तालीम देनेकी
= अति वृद्ध पुरुष (२) वावा आदम;	शाला; कालेमंदिर
আহি <b>मानद। ৰাৰা আৰম্পী বল্ল</b> য়	ँ <b>बस्टवुं</b> स० कि० जलाना; बालना
= बहुत पुराना समय । बाबा के बाबो	बाळुंमोळुं वि॰ बालक जैसा नासमझ
<b>वर्षु</b> = संन्यासी बनना (२) अंजाल	और भोला; भोलाभाला
छोड़कर निर्धिषत बनना । –नाच्यो	बाळोतियुं न० पोसड़ा; गॅंड़तरा(२)
<b>एटले बोदली माथी = दे</b> सादेसी	बिलकुल गंदा कपड़ा [ला.]
करना; भेड़चाल चलना.]	बांक ( • बो ) ( • ) पुं • ( बैठनेकी ) बेंच
<b>बासठ</b> वि॰ बासठ; ६२	बाङ्क (०) वि० छैला; सजीला; बाँका (२)
<b>वालुं(सू)वी</b> स्त्री० रबढ़ी	विचित्र प्रकृतिका; टेका(३)साहसी;
<b>बाहुक</b> पुं० बाहुक; बंदर (२) बौना,	बौका (४)नाजुक ; गंभीर (काम)
डरावना, कुरूप मनुष्य (३) बाहुक;	बांग स्त्री० बॉंग; अजान
नरूका एक नाम (४) हक्का-बक्का या	बांगड (०) जि० घूर्त; काइयां (२)
बौत्तलाया हुआ आदमी ; बावला [ला.]	साहसी; बॉका; घुष्ट [ तिलेती
<b>बाहोन्न</b> वि० चालाक; होशियार	बांगरं (०)न० तेलहनका सूखा डंठल;
बाहोन्नी स्त्री० चालाकी; होशियारी	बांगी पुं० अर्चा देनेवाला; मुअख्यिन
बाळ वि०(२)पुं०;न० देखिये 'बाल';	<b>बांध (घॆ)डवुं</b> (०)अ०कि० गला फाड़-
<b>दा</b> लक	कर जोरसे बोलना; डकराना (चौपायों
<b>बाळउछेर</b> पुं० शिशुपालन; शिशुसंवर्धन	आदिका)(२)महे प्रकारसे गाना; रॅकना
बाळक पुं०;न० बालक	बांट (०)ने० स्त्रियोंका एक रेशमी वस्त्र
<b>बाळकबुदि</b> स्त्री० बालबुदि ; नासमझी ;	(२) बाट, वजनका सेट (३) (सेतकी)
<b>कम</b> अक़ली <b>; छोकरा</b> पन	खूँटी ; खुत्मी, कौटे आदि (४)पु० एक
बाळकी स्त्री॰ छोटी लढ़की; बालिका	मोठी बानगी [स०कि॰ बाँटना
<b>बाळकेळवणी</b> स्त्री० बालशिक्षा	बांटवुं(०) न० झाड़; छोटा पेड़ (२)
<b>बाळगोपाळ</b> न॰ ब॰ व॰ बाल-बच्चे;	बांडियुं (०) वि० देखिये 'बांडुं' (२)न०
बालगोपाल	छोटी आस्तीनका कुरता ; बंडी ; फ़तूही
<b>बाळपण</b> न० बालपन; बचपन	बांबु (०) वि० बिना पूँछका (पञ्च);
<b>बाळपोची स्</b> त्री० बालकोंको पढ़ना	वौड़ा (२) कुरूप; महा; भोंड़ा (कुछ
सिखानेकी पहली पुस्तक; बालपोयी	मपूर्णताके कारण) (३) खुला; नंगा
(२)किसी भी विषयका प्रायमिक ज्ञान	(तलवार) [ बॉघ; बंघ
देनेवाली पुस्तक; बारूपोथी [सा.]	वांष(०) पुं० पुश्ता; वड़ी मेंड्(२)

### 1010101

Ya

वांधकास (०) न० पुनने-बोड्नेका
काम; चुनाई; तामीर; चिनाई
वांपछोड (०) स्त्री० निवटारा; चुकता
करनेके लिए कुछ छोड़ देना [लॉ.]
<b>बांधण</b> (०) न० बांधनेका कपड़ा;
बॅंधना (२) गाँठ; बंधन
बांबजी(०) स्त्री० बाँधनेकी रीति;
स्थापत्य (२) बॉंघनेकी मजदूरी (३)
इबारत; रचना (४) जगह-जगह पर
बौधकर कपड़ेको रंगनेकी रीति ; बौधनू
(५) इस तरह रंगा हुआ कपड़ा ; बौधनू
बांधवुं (०) स० कि० बांधना (२) फिसी
भीजको समेटकर उस पर बंघन कसना;
गौठ देना; बॉधना (गठरी; बिस्तर)
(३) क्रायदा, नियम, वचन आदिसे
बंधनमें डालना; बौंधना; पार्वद
करना; उसकी मर्यादामें रखना (४)
ेरचना; निर्माण करना; बनाना(मकान,
<b>पुरु, दीवार वादि</b> ) (५) लपेटना;
बौधना (पंगड़ी ; साफ़ा) ( ६ ) सोचना ;
बाँचना (आशा; कल्पना; मंसूबा;
खयाल) (७) नियत करना ; ठहराना ; रुगाना ; बौधना ; उदा० 'एमने
रुगाना; बौधना; उदा० 'एमने
रथा महिनानुं काम बांघ्युं छे;
ं बारा बांघवा'(८)जोड़ना; वटोरना;
थांधना; उदा० ' सो पोतपोतानां पाप-
<b>ণুण्य নাঁ</b> ষহাঁ <b>'। [ৰাঁঘী আৰক</b> == বह
<b>आवरू</b> जो सोयी न गई हो । <b>बाबी जवुं</b>
=बंधनमें कसकर चला ज्राना (२)
बौंधकर साथ <b>ले जाना । बांघी मूठी</b>
= वनी हुई, न विगड़ी हुई इज्जज्ञ या
प्रतिष्ठा। बांधी लेवुं = प्रत्युत्तर देते
समय चबड़ा आय या अपने आप जपने
जवाबोसे बंध जाय ऐसा करना (२)
करार या प्रस्ताव पर कायम <b>ः रहे</b>

ऐसा करना (३) बसमें करना;
दशीकरूप करना । बॉच्यो पग ≖ एक
स्थान पर ज्यादा समय रहना, बसना;
पाँव सोड्कर बैठना.]
बांधी बडीनुं(०) वि० दोहरे बदनका
(२) गठीला और मखबूत
बांबो (०)पु० गठन; अगलेट (२) बंधन
बांय (बा'०) स्त्री० बांह; आस्तीन (२)
हाच ; बाँह(३) [ला.]मदद । [-सालबी,
पकडवी = बाँह देना ; सहायता करना.]
बांयधरी (बा'०) स्त्री० जमानत
विचारं वि० बेचारा; दुःखी; बापुरा
बिछान् न० बिछानेकी चीउँ ; बिछावन ;
बिछौना (२)बिस्तर; बिछौना
विछाबवुं स॰ कि॰ बिछाना
विजोरी स्त्री० एक पेड़; बिजौरा
विजोर्य न० एक फल; दिजौरा
विडावुं अ० कि० 'बीडवुं 'का कर्मणि;
बंद होना
बन पुं० बेटा (किसका बेटा है यह बसा-
नेके लिए प्रयुक्त होता है); उदा०
'महमद बिन कासिम '
बन अ० बिना; बग़ैर; छोड़कर
वनजनुभवी वि० अनुभवहीन [माव
बनआवदत स्त्री० अज्ञान; न बानेका
वनजरूरियात स्त्री० अनावश्यकता
वनजरूरी वि० गैरजरूरी; अनाददयक
वनपाया(-ये)दार वि॰ बेबुनियाद;
मनगढत
वनवाकेफ वि० नावाफ़िफ़; अनभिज्ञ
वनशरती वि॰ बिना शर्तका
बनसलामत वि० बग़ैर सलामतीका
बना स्त्री० बयान; हक्रीकत; हाल

(२) घटना; माजरा; वाकया

•	 . •
п	TΨ

100

	1-1
वियार्ष(	विलाडो पुं०नर बिल्ली; बिलाव; बिल्ला विलाडो पुं०नर बिल्ली; बिलाव; बिल्ला दार मोटा कांच; विल्लौर बिल्लो रो कांच; विल्लौर बिल्लो पुं० पदक; विल्ला (२) उपाधि; पदवी [ला.] विवढा (-रा) वर्षु (वि') स० कि० 'वी- वुं' कियाका प्रेरणार्थक; बराना विसमार वि० भुलाया हुआ; विसारा हुआ; विस्मुत बिस्सरो, बिस्त्री पुं० दिस्तर; विछीना विस्मिल्ला करवुं= 'विस्मिल्लाह ' कह- कर क्रत्ल करना(२)खाना;भक्षण करना विहामणुं वि० मयानक; डरावना विहामणुं वि० मयानक; डरावना विहामणुं वि० मयानक; डरावना विहामणुं वि० मयानक; डरावना विहा स्त्री० विंदी; नोल टीका (२) अनुस्वारसूचक विंदी; नुकता; विंदी विंदु न० विंदु; सूँद (२) शुन्य; सिफ़र (३) नाटकका विंदु (४) पुं० संगीतका एक अलंकार दी न० वीज; तुख्म (२) जड़; मूल- कारण; बीज [-रोपषुं=बीज वोना; नीव ँ डालना.] वीक(वी') स्त्री० डरपोक; कायर। वीकण (दी') वि० भय; डर [-बिलाडी=भीगी बिल्ली.] वीकार् वि० देखिये 'विचारं' योक स्त्री० दूज; द्वितीया (२) शुक्ल पक्षकी दूजका चाँद; नया चाँद वीका न० वीज; नुख्म (२) वीर्यकी बुंद; शुक; बीज (३) औलला [ला.] (४) वर्ण; अक्षर (५) वीजमंत्र; गुर
लाबा बोलवा (पेटमां) ≕ (पेटमें) चूहे	(६)समीकरणका बीज; 'रूट' [ग.]
कूदना या दौड़ना ।– काढवुं (कोघळा⊸	(७) नाटक या कथावस्तुका मूल; कीज
मॉयी)≕बीचमें बात यकायक परुटना	बीजक न० बिल; बीजक (२) कवीरका
जिससे रंगमें भंग हो. ]	एक तत्त्वग्रंथ; बीजक

# **चीज**गलित

बीजवजित न० बीजगणित

ीववर पुं० दूसरी शादी करनेवाला; दूजवर; दुहेजू

- बीखुं वि० दूसरा; और (२) अलग प्रका-रका; भिन्न; दूसरा (३) अ० फिर; और; दूसरे ['बीट'; चुकंदर बीट न० गोवर (२) बीट (३) एक कंद;
- बीड न॰ मासकी आमीन; चरामाह(२) डाला हुआ खानका कच्चा लोहा
  - बीडवुं संब् किंब बंद करना (२) लिफ़ाफ़ोमें रखकर उसे बंद करना
  - बीडी स्त्री० पानकी गिलौरी ; बीड़ी (२) (तंबाकूकी ) बीड़ी
  - बीबुं न० पानकी गिलौरी ; बीड़ा।[-ज्या-डवुं, सडपवुं ≕ बीड़ा उठाना ।-फेरववुं
  - व्वीड़ा डालना, रखना.] [रसे हों **बीढो** पुं० बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें काग़ज्र
  - **भीनवुं** (बी') अ॰ कि॰ डरना
  - **बीना** स्त्री० देखिये 'विना'
- बीबी स्त्री० मुसलमानकी स्त्री (२)भले घरकी मुसलमान स्त्री
  - बीवुं न० सौचा (२)कोई आकृति छाप-नेका सौँचा;ठप्पा (३)छापनेका सीसे-का अक्षर; 'टाइप' (४) नमूमा; प्रतिकृति [ला.]
  - वील न॰ देखिये विरू' [पत्ता;वेल्पत्र बीली स्त्री॰ एक पेड़; बेल (२) उसका

**बीकीपत्र** न॰ बेलका पत्ता; बेलपत्र बीब (बी<sup>2</sup>) ब०कि० अल्ल (व)-

- वीवुं (वी') व० कि० डरना (२)चॉं-कना;पवराना;अड़कना [फॉकना बुकारुषुँ स०कि० मुट्ठी भर भर खाना या बुकारुषुँ सगी० कपड़ा सिर पर इस प्रकार
- वाँचना जो दाही बौर गाल पर आवे. बुल्को पुं० फंका; फांका

नुमि

- **वृत्वरसः वि० वुजुगं; वृढ (२)अनुभवी** बुझार्यं न० पानीकी मटकीका ढंकना बुझावयुं स० कि० बुझाना
- नुसान् अ० कि० नुसना
- बुझुर्ग वि० देखिवे ' बुजरग '
- **बुट्टाबार वि० बेल-बू**टेदार
- बुद्वी स्त्री० (कानकी) लौ; लोलकी (२) उसमें पहननेका गहना
- **बुट्टी** स्त्री० छोटा बेल-बूटा; बूटी
- बुद्दी स्त्री० जड़ी; बूटी; चमरकारिक वनौषधि (२) [ला.] अकसोर, अवूक उपाय (३) चतुर और प्रवीण आदमी। [- सूंघाडवी क्ल समझाना; युक्तिसे अपने मतका कर लेना (२) उकसाना; उमाढ़ना.]
- बुट्टो पुरु गुलकारी था बुनाईमें फूल जैक्ष आकार; बूटा; फूल-पत्ती (२)मनकी तरंग; खमाल [ला.]। [-उत्तम्बी, सूज्ञबी = मनमें खयाल उठना.]
- बुरुई वि० कुंद; भोथरा (धार) (२) [का.] मोटी अबलका; कुंदजेहन; मंबदुदि (३) मावहीन; भावरहित
- बुडवक वि॰ देवकूफ़; मूर्ख; बौड़म बुडाड(-व)वं स०कि० 'बूडवुं' किया-
  - का प्रेरणार्थक रूप; डुवाना
- **बुद्दुं** वि० बुड्ढा; वृद्ध; बूढ़ा [बुताम बुतान न० बुहतान; कलंक (२) बटन;
- मुतान गण् मुह्यान, कलक (२) मटन; मन्द्रमें जन्म स्वर्ण कर्ण (२) मटन;
- **बुतान्ं** न० महीन-फटी पगड़ीका टुकड़ा
- (२) [ला] मैली-फटी पगड़ी; बताना (३)बुहतान; कलंक
- बुतानौ पुं० फटी-पुरानी पगड़ी; बताना बुतारौ पुं० वड़ी झाड्; बुहारा
- वृदि स्त्री० वृदि; अंद्रल; समझ (२) वस्तुको जानने, समझने और विवार करनेकी चिराकी शनित; समझ-सक्ति;

# বুরিবচ

- विवेक; झान; सयानापन (३) विचार। [--बीलवी क्ष बुद्धिका विकास होना। - बालवी क्ष अनुरुका काम करना; समझमें आना। - बोडाववी क्ष अनुरु सर्व करना; अन्नल दौड़ाना। --नो भंडार, सागर क्ष बुद्ध समझदार व्यक्ति (२) मूर्ख; अन्नलमंदकी दुम । --करवी, फरी जवी क्ष अन्ल सठियाना.]
- बुद्धिवल (-ळ) न० बुद्धिवल; समझ-शक्ति;बुद्धिशक्ति (२) शतरंजका सेख
- **बुध** दि० सयाना ; ज्ञानी ; **बुध** (२)पू॑० बुध प्रह (३) बुधवार (४)पंडित; विद्वान बु**सराण** स्त्री० कोलाहल ; हस्ला-गुल्ला
- **बुमाट** स्त्री०;त०, (-टो) पु० किंवदती; अफ़वाह (२)पुकार; चीख
- **बुरको** पुं०मुँह ढकनेका जालीदार कपड़ा; नक्राब (२) बुरका (शरीर ढकनेका)
- **बुरज** पुं० बुर्ज ; गरगज (क़िले परका)(२) पुरता;दीवारकी मखबूतीके लिए बनाया
- हुवा बाँध (पटाना; पटवाना **पुराववुं** स०क्षि० ' बूरवुं ' का प्रेरणार्थक;
- **बुरावुं** अ० कि० 'जूरदुं' कियाका कर्मणि रूप; पटना; पाटा जाना
- **बुलंद** वि० भव्य (२)बड़ी योग्यतावाला; बुलंद मरतवा (३) जोरकी; बुलंद (आवाज)
- **बुंब** न० बूँद; क़तरा
- **बुंब** पुं०, बुंख्वाणा पुं० ब०व० वह बीज जिसकी काफ़ी बनती है; क्रहवा
- **पूक (०डो)** पुं० कौर; निवाला
- बूक्व स॰कि॰ फॉकना(२)सटसट खाना
- **बूको पुं॰** बड़ा कौर (२) फंका
- **मूम** पु॰्काग; डाट
- **कूचियुं** वि० **चिपटी नाकवाला; चिपट** (२)बग्रैर. कानका



बुचुं वि० ज़िपुटी नाकवाला; जिपट (२) नगैर कानका (३) बिना गहनेका, अलंकाररहित (कान, नाक)[ ला. ] बूज स्त्री० बूझ; समझ; क्रद्र **बुजवुं** स० कि० समझना; क़द्र करना **ब्रमवर्षु स**० कि० बुझाना **बूट स्त्री० (कानकी) लौ;** लोलकी ़ [**⊸गकडवी** ≕ अपराघ या भूऌ स्वीकार करना.] [ननेका गहना ; बाली बूटियुं न० (कानकी) लोलकी पर पह-बुठुं वि० देखिये 'बुठुठुं' **बूडकी** स्त्री० डुबकी; ग्रोता **यूडवुं अ० कि० डूबना(२)**बरबाद होना; दिवाला निकालना;घाटा सहना;डूबना **बूड, बूडियो** पुं० बड़ा बंदर ब्र्ब वि० वूढा; वृद्ध; बुड्ढा **बूषुं न**० मोटा डंडा ; सोंटा(२)तला ; पैदा (औचसे बरतनका होनेवाला काला पैंदा) **बूम स्त्री० चीख; पुकार; हाँक(२)** अफ़वाह; किंवदंती।[--**डठवी == नीख-**पुकार या इल्ला-गुल्ला होना ( २ ) अफ्न-वाह फैलना; गप उड़ना। --पा**डवी, मारवी ≔बु**लाना(२)फ़रियाद करना.] **ब्रमलूं** न० सुखाई हुई मछली **बूमाबूम** स्त्री० **वीख-**पुकार; शोरशुरू **बूरवुं** स॰ कि॰ पाटना; भरना बूराई(न्क्स) स्त्री॰ दुष्टता; बुराई(२) लनवन वरा बूच न० साफ़ की हुई पीसी हुई चीनी; **वूदं** वि० बुरा; सराब बूहो पु॰ वाड़ा जड़ा हुआ लकडीका कूंवा (२)मूर्न्न; दुदू बे(बॅ) वि॰ दो; २। [--आंखनी झरन == किसीकी मौजूदगीका असर ।--मॉनक घडे तेर्चु = बढ़कर; सवाया । -बोडे

1YY

110-1

<u> </u>	
<b>e</b> e .	n T

पडवुं = एक साथ बन न सके ऐसे दो काम शुरू करना ।-- तरक्षनी (बाबुनी) ढोरूकी बगाडवी = दो नावों पर पैर रक्षना । -- दाणा = जरा भी (अक्ल न होना । (एकनुं) -- न चबुं = अपनी बात पर क़ायम रहना; बात न ढालना । -- बाफनुं = छिनालके पेटका (औलाद) । -- बाफ = छोटी प्रस्तावना; कुछ शब्द या दचन । -- मोढा होवां = मुकर जाने-वाला [ला.].] बेमानी स्त्री० दुभक्षी

- बेड वि० दोनों: उमय
- च ७ । ५ ० ५ ५ मा; ७ मथ **२ - - - २** - २ - २ - २ - २ - २
- देकारी (वें) स्त्री० वेकारी; बेरोजगारी बेकी स्त्री० दोसे भाग की जाय ऐसी संक्या; समसंख्या; जुफ़्त(२)दोकी जोड़ी (३) दो उँगलियोंके इशारेसे जताई जा-नेवाली टट्टीकी हाजत।[-करवा जवुं, जबुं = पाखाना जाना। -्यवी, लागवी = टट्टीकी हाजत होना.]
- बेगरक(-वाउ-जु) (बॅ)वि० वेगरज;
- ंबेमतलब; तिःस्वार्थं [ (२)मजदूर बेगारी पु० बेगार करनेवाला; बेगारी बेगुना(०ह) (बॅ) वि० बेगुनाह; निर-
- ्पराष [अस्वस्थ
- **बेचेन**(बॅ,चॅ) वि० वेचैन; वेक़रार; बे**चेनी**(बॅ,चॅ) स्त्री० वेचैनी; वेक़रारी
- बेजीबवाळी, बेजीवसोती (बॅ, सॉ) वि० स्त्री० गर्भवती; हामिला; दोजीवा
- बेट पुं० द्वीप; टापू
- **बंटरी स्त्री० टार्च (२) बैटरी**
- **बेटीजी** स्त्री० गोस्वामीजीको बेटी
- **बेटीवहेवार** पुं० वेटी-व्यवहार
- बेढी पुं० बेटा; पुत्र
- बेठक (बॅ) स्त्री० बैठना (२)बैठनेकी जगह; बैठक (३)बैठनेका कमरा;

- बैठक; बौपाल (४) बहुतसे आदमियों-का इकट्ठा होकर बैठना; बैठक; जमाव; इजलास(५)र्पेदा; बैठक (६)एक कसरत; बैठक; बैठकी(७)अधिवेचन; जलसा; बैठक। [-होबी = -के यहाँ रोच बैठने जाना.]
- बेठाबाउ (बॅ) वि० बिना मेहनत किये सानेवाला;मुफ्तसोर;निरुद्यमी;आलसी
- बेठागरं, बेठाडु (बॅ) वि० वेकार बैठा रहनेवाला;अकर्मण्य; बैठा-ठाला
- बेठाबेठ(वें)स्त्री० विना रोजगारके वैठा रहना; वेकारी;ठाला (२)वह स्थिति जिसमें नफ़ा-नुक़सान न हो (३)अ० बैठा ही रहा हो इस तरह
- बेठुं (वॅ) वि० बैठा हुआ(२)नीचा; नाटा (कदमें) (३) शान्तिसे या ठंडे कलेजे होनेवाला; ठंडा; शान्त; उदा० 'बेठुं काम; बेठी बळवो '। बिठा पर्वुः लेटे हुएका बैठना (२) रोगनुक्त होना; तंदुइस्त होना(३)टुबारा उन्नति करना; उठना। बेठी वडीनुं = गठीला और छोटे कदका। --चडवुं = किसी चीखका आग पर रखनेके बाद अपने आप पक जाना; उदा० 'बेठो भात '। बेठेलो पोपडो उत्ताध्वो = गड़े मुर्दे उलाड़ना। बेठो बळवो = शान्त, अहिंसक बलवा। बेठो मात = बैठा भात.]
- बेठेल (--लुं) वि० बैठा-ठाला ; अकर्मण्प (२)नीचा ; नाटा (३)दवा हुआ ;दबैल (कपड़ा)(४)पड़ा रहनेसे विगड़ा हुआ
- **बेठो पगार** पुं० काम किये बिना मिलनेवाला वेतन; बैठी रोटी
- **बेडियुं** न० आम उतारनेका अंकुसी-जालीदार लग्गा;*ख*ग्गा

244

ोरजो

•	
बेडियूं न० दो बैलोंका गाड़ा (२)	बेबार्ड(बॅ) दि० दोनों कोर धारवाला;
बर्सीस मनकी नाप (कज्मी)	दोधारा (२) गोल-गोल; जस्पष्ट;
बेंधी स्त्री० वेड़ी; जंजीर (२)बंधन;	दिअ <b>र्थक</b>
जंजाल;प्रतिबंध;बेड़ी [ला.] (३)पॉबका	बेबारी तरबार (बॅ) = प्रतिग्रंही और
रूपेका गहना; कड़ा; बेड़ा (४) दो	इस्तेमाल करनेवाले दोनोंको नुक़सान
उँगलियांमें पहननेकी जड़ी हुई अँगुठी	पहुँचानेवाली चीज
बेडुं(बे') न॰ घड़ा और हंडा	बेध्यान (बॅ) वि० जिसका घ्यान न हो;
बेडो पु० बेड़ा; जहाज । [पार करवो,	गाफ़िल; व्यप्र; असावघान
<b>थवा</b> = बेडा पार होना	बेनमून(बॅ) वि० अजोड़; सर्वोत्तम;
बेडोळ (व) वि० बेडोल; भहा	वेजोड [ द्विपद
बेढव वि० भदा; वेडौल (२) बेअदव;	बेपगुं (-गाळुं) (बॅ) वि० दो पैरवाला;
असम्य (३) बेढंगा ; अव्यवस्थित ; विना	बेफाक(—ट) (वॅ) वि० खुला;
पद्धतिका (४) प्राप्तिरहित	निर्लज्ज; बेहद; बेहिसाब (२) <b>अ०</b>
<b>येढंग (-गुं)</b> (बॅ) वि० बेढंगा; कुढंगा;	खुले आम; सरे बाजार (३)
बेसिलसिला	बेत हाशा; सरपट
बेत (बॅ) पुं० युक्ति; तरकीव; योजना;	बेफान (बॅ) वि० बेखबर; असावधान;
चाल(२)इरादा; मनसूबा(३)बेत;	ग़ाफ़िल (२) जिसका घ्यान न हो
बेत।[–रचवो ≕युक्ति रचना; चाल	बेकिकर (रं) (बॅ) वि०वेफ़िक; वेपरवा
बलना.] बलना.]	<b>बेफिकराई</b> (वॅ) स्त्री०वेफ़िकी; वेपरदाई
-	<b>बेबाक</b> (बॅ)वि० बेबाक़; चुकता(२)
बेतला (वॅ) वि० बेपरवाह सेन्ट्रनी (वॅ) फिर कोन्ट्रों नोन्टर नामक	निडर; वेवाक
<b>बेलरफी</b> (बॅ) वि० दोनों ओरका; दुलरफ़ा	बेबाकळुं(वें) वि० व्याकुल; हक्का-
बेताळां (बॅ) न० द० द० दयालीस सा-	बक्का; घबड़ाया हुआ
लकी उम्रमें औखमें धुँधली आनाया	बेबोल (बॅ) पुं० ब० व० कुछ कहना,
उस समय पहनी जानेवाली ऐनक	निवेदन करना। [कहेवा == कुछ
बेतालोस वि० बयालीस; ४२	कहना (२)नसीहत देना; सीख देना.]
<b>बेदरकार</b> (बॅ) वि० वेपरवाह; बेफ़िक	बेबोलुं (बॅ) वि॰ झूठा; मुकर जानेवाला
बेदरकारी (बॅ)स्त्री० वेपरवाही;वेफ़िकी	बेमलूं (
बेबस्तूर (बॅ) वि० दस्तूर या रिवाजसे	द्विविध (२) मिलाबटवाला
्रलटा [बेदाना	बॅभरमुं (बॅ) वि० वेस्वाद
बेराणा (बॅ) पुं० ब० ज० एक औषधि;	बेभान (बॅ) वि॰ अचेत; बेसुघ; बेहोश
बेरिल (वॅ) वि॰ बेदिल ; नाखुश ; उदास	बेमालूम (बॅ) वि० बेमालूम; अज्ञात
बेबिली स्त्री० नाखुशी (२) अनवन	(२) अ० गुप्त रूपसे [माला
बेर्बु (बॅ) न० अंडा; बैशा	बेरसो (बॅ) पुं० रुद्राक्षके बड़े मनकोंकी
बेमडक (बॅ) अ० बेमड़क; निर्भय होकर	<b>वेरजो</b> पुं० गंवाबिरोजा
For Private and P	ersonal Use Only

C. G.
* ***

बेरत वि+ भूते; ठगड़ा (२) उडत; तुनकमिखाब (२) बग्रैर मौसिमका (४) स्त्री० असमय; कुसमय बेरंग(⊶गी)(बॅ) वि० जिसका रंग उड़ गया हो या बिगड़ गया हो; बदरंग (२) [ला.] डॉवाडोल मनवाला; अस्विरचित्त **वेंरोमीटर** न० वैरोमीटर बेस स्त्री० जोड़ी; जोड़ा; जोड़ेमें से कोई एक; साथी बेल (बॅ) पुं० बैल बेलगाडी (बें) स्त्री० बैलगाडी बेलगाम (बें) दि० बेलगाम; निरंकूश बेलवी स्त्री० दो आदमियोंका जोड़ा; युगल; जोड़ा [ तेल **बेसलेल न०** लकडी पर लगानेका एक बेलाशक (वॅ) अ० बिलाशक; बेलटके बेलिफ पुं० अदालतके हुक्मोंकी तामील करनेवाला सिपाही; मजकूरी; बैलीफ़ बेली पुं० बेली; मुरब्बी; सहायक **बेल्** न० पूनीका जोड़ा (२) जोड़ा ; युगल (३)सफ़ेद रेतीला पत्यर बेषचनी (वॅ) वि० कोलकर हट जाने-बाला; मुकरनेवाला बेषड वि॰ दोपती; दोहरा(२)स्त्री॰ दोहरी परत। [-वळवुं, वळी जवुं = दोहरा हो इस तरह झुक जाना.] बेबडावूं अ० कि० दोहरा या दुगना होना; दोहरना वेवडियुं वि० दो परतोंका; दोहरा(२) दोहरी गठनका [ दोगुना बेबच्चं वि० दोहरा; दोपर्ता(२) दुगना; बेसूब (बें) वि० अचेत; बेहोश; मूज्छित **बेधुमार**(बॅ) दि० बेधुमार; अगणिस

बेसज्ज (बॅ) स्त्री० बैठना-उठना; उठ-

₿¥€

	-
मेलजोल;	उठना-

बैठना [ला.] म्बदुरी; जगाई

बैठ (२) मैत्री;

बेसडामन न०, (--नी) स्त्री० जडनेकी

बेसणी (वें) स्त्री ०पेंदी ; (किसी चीजकी) बैठक (२) बैठक; आसन

- बेसर्ण (बॅ) न० पेंदा; बैठक (२) बैठने-का ढंग (३) मातमपुरसीके लिये जाना बेसती (बें) स्त्री • महरी दोस्ती; दौत काटी रोटी
- बेसतुं (बॅ) वि० अपनी जगह पर ठीक बैठता हुआ (२)मैत्री, मेल होना (३) नया शुरू होता हुआ; जिसका आरंभ हालमें हुआ हो; नया (वर्ष, मास आदि) (४) जो उचित हो; ठीक (५) औटता हुआ; ठीक आनेवाला। आना, बैठना; अँटना । ---भषुं = उप-योगमें आ जाना; काममें आ जाना; पूरा पड्ना (२)ठीक नापका होना; अँटना(कंपड़ा, जुता आदि)। – वर्ष = नया साल.
- बेसबुं (बॅ) अ० कि० आसीन होना; बैठना ( २ )नीचे बाना ; घटना ; गिरना (भाव; दाम); नीचे बैठना (तल-**स्ट); तहमें** जमना; बैठना (कचरा) (३) अपनी जगह पर ठीक आना ; छोटा बड़ा न होना; जेंटना; बैठना (कोट, टोपी) (४) शुरू होना (वर्ष; ऋतु) (५) फल-फूल लगना; आना (६) क़ीमत या दाम लगना (७) दाग्र लगना; असर होना (रंग, बास आदि-का) (८) धँक्षका; बैठना; चुभना; कट जाना; रुगना (छुरी या चाकू) (९)स्थापित होना; इजलास करना; शुरू होना; जारी होना; खुलना;

<u> </u>	
COR	C 1
	•
_	Υ.

	-
379	1.1

· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
(कोरट, दशा, कुर्झी आदि)(१०)	वींटीमां बेसाड्यू '(३) वंधनमें डारू
अर्थ समझा जाना; सुलझना (हिसाब;	देना; कैंद करना; उदा० 'जेलमां
वाक्य; प्रश्न) (११)सधना; मेंजना;	बेसाडी दीघो '(४)लगाना; डालना;
(हाप) बैठना; उदा० 'चीतरवामां	मत्ये मढ़ना (कर) (५) (घाक, रोब)
तेनो हाय बेठो छे' (१२) बेकार	जमाना । चिर बेसाडवु = बरतरफ
रहना; बैठा-ठाला होना; बैठना;उवा०	करना। ठाम बेसाडवुं = (स्त्रीको)
' भाई गुं करे छे ?बेठा छे ' (१३)	घरमें डालना;बैठाना.]
गला बैठना ; आवाज मारी होना(१४)	वैसारवुं(बॅ) स० कि० देखिये 'बेसाइवुं'
बाट जोहना ; अगोरना ; उदा० ' बेसीने	बेसार्चु (वॅ) अ० फ्रि॰ बैठा जाना
हुं तो थाक्यो '(१५)कस या पैनापन	<b>बेसुमार</b> (बॅ) वि० देखिये ' बेशुमार '
दूर होना; विगड़ना (कपड़ा, धार	बेसूर्व(वॅ)वि० ख़ोटे या खराब सुरका;
आदि) (१६) डूबना; उजड्ना; बैठना;	बेसुरा
आश्रयहीन होना; उदा० 'घर बेठुं-	<b>बेस्वाद (</b> बॅ) वि० बेस्वाद; बेमजा
माल विनानुंछोकरांडीयां विनानुं	<b>बेहक(न्क)</b> (वें) वि॰ बिना हक़
थयुं ' (१७) (घाक) जमना । [बेसवा	अधिकारका (२)अ० नाहक; अकारण
<b>कठदानी</b> जगा≕दीवानखाना; बैठक	<b>बेहक</b> अ० फिरसे न उठा जाय इस
(२)वह मनुष्य जिसके साथ उठना-	तरह (पशुका बैठना)
बैठना हो । बेसवामी डाळ = आश्रय-	बेहाल (बें) वि० जिसका हाल बुरा हो;
स्यातः; मात्रार। बेसी चवुं = बुरी	बेहाल (२)पुं०ब०व० दुर्रशा;बुरे हाल
दशा आना (२) थेंसना; दबना (भूखसे	बेहाली (वॅ) स्त्री॰ दुर्दशा; बुरी हालत
पेट या गाल) (३) कामकाज बंद	बेहूबगी, बेहूबी (बॅ) स्त्री० बेहूबगी;
होना (संस्था) ; डहना; गिरना (घर)	बेहूदापन; अनौचित्य
(४) (दुकान) न जमना (५) दिवाला	बेह्र्बु (वॅ) वि० बेहूदा; महा; असंगत
निकालना (६) निवँश होना;तबाह	बेळे बेळे(बॅ;बॅ) अ० मुस्किल्से;अत्यंत
होना (७) दबना; विगढ़ना; कस	कठिनाईसे ; बलपूर्वक
कम होना (कपड़ा, सूत आदि) (८)	<b>बें (०वें ) (</b> बॅ॰्) अ॰् में-में
थक जाना;हार जाना; बैठना;	<b>बौक</b> स्त्री० बैंक; बंक
उदा॰ 'मारी तो छाती बेसी गई '।	बैरी स्त्री॰ औरत; स्त्री (२) परनी;
<b>जूने वेसवुं</b> = (पतिकी मृत्युके कारण	जोरू । [ <b>– करवी =</b> पत्नी बनाना या
स्त्रीका)सोग मनाना । घेर बेसवुं =	भरमें बैठाना.] कैंक कर वेदिनवे (कैंक 2
बरतरफ़ होना । <b>बारणे बेसवुं =</b> धरना रेजा रे	र्षसं न० देखिये ' बैरी '
देता.] जेलाकां (में) सर्व कि व्यक्तित के राज्य विजयत	बो ( ०दोरी) स्त्री० पुलिदा आदि बांधने-
बेसाडवुं (वें) स० कि० बैठाना; विठाना	की एक प्रकारकी डोरी ; 'ट्वाइन '

ŝ (२) जमाना; अपनी अगह पर स्थित करना; बैठाना; अढ़ना; उदा॰ 'संग

For Private and Personal Use Only

षो स्त्री० दू; गंघ(२)[ला.] अक्रिमान बोकडी स्त्री० सकरी

बीकहुं

ৰাদ

बोकडुं न० बकरा बोकडी पुं० बकरा; बोकरा। [बोकडावे मोते मरवुं च बुरी तरहसे तुरंत भारा जाना। -जनाववो च (बलिके लिये– मार सहनके लिए किसीको आये करना (२)मखोल-मजाकका पात्र बनानः.] बोको स्त्री० चुवन; बोसा

(बोस स्त्री० वड़ा गड्ढा; बहुत बड़ी दरार; खोसला (२)पानी निकालनेका चमड़ेका ढोल [हों; पोपला बोसलुं, बोसुं वि० जिसके दांत गिर गये बोसलुं, बोसुं वि० जिसके दांत गिर गये बोसलुं, बोसुं वि० जिसके दांत गिर गये बोसल्जा (२) सुरंग; 'टनेल '(रेलकी) बोघरणुं न० चोड़े मुँहकी बटलोई;बटुला बोघलुं, बोधुं वि० भोला-भाला; गावदी; मुर्खे

- **बोचलो** पु॰ बालोंकी किनारीवाली बालकोंकी टोपी(२)पीठ तक आनेवाली लड़कियोंकी टोपी (३)जूड़ा; चोटी
- **क्षेचियुं** न० वाँसकी हलकी टोकरी; टोकनी; छवड़ा
- बोची स्त्री० गरदन। [-पर कांकरो मूकबो = कड़ा नियमन रखना (२) सतत खूब परिश्रम करना.]
- **बोच् न**० गरदन (तुच्छकारमें)
- बोज पुं० वोझ;भार;बोझा(२)प्रतिष्ठा बोजो पुं० बोझ; भार; वजन(२) जवाबदारी; जोखिम; बोझ
- ब्रोट न० देखिये 'अबोट' (२)स्त्री० नाव; डोंगी (३)स्टीमर; 'बोट'
- बोटवुं स० कि० जूठा कर देना; जुठा-रना; छूकर अपवित्र करना(२)पहलेसे घेर-रोककर कब्जा करना। [बोटी रासवुं, लेवुं(जगा)=पहलेसे पेरकर कब्जा जमाना; रोकना; छॅकना.]

बोड (वॉड,) स्त्री० मॉद; गुफा (पशुकी) बोडवुं स० कि० मूंड़ना (वाल) बोडियुं वि० देखिये 'वोडुं ' ! [बोडिया अक्षर = मात्रा, पाई, सिरो-रेक्षादिके बिना लिखे जानेवाले अक्षर.] बोडियो कलार पुं० एक वनस्पति बोडी स्त्री० मुंडी ; बेवा ; विधवा बोई वि० जिसके सिर पर बाल न हों ; गंजा ; मुंडा ; मुंडीत (२) खुला ; साफ़ सफ़ाचट ; मुंडा (स्रेत, सिर,अक्षर आदि)। [बोडा अक्षर = देखिये ' वोडिया अक्षर '। -करचुं च खुला-साफ़ करना (बाल, पत्तियां आदिसे) (२) लूटकर अकिंचन बनाना ; मूंंडना ; ठगना.] बोणी (बॉ) स्त्री० बोहनी (२)नये सालके

बोटियं न० देखिये ' अबोटियं '

- निमित्त दिया जानेवाला नेग (३) उलहना; गाली । [--कराववी = सबसे पहले खरीदकर शकुन कराना.]
- बोस (वॉ) पुं० बौड़म; मूर्ख; जड
- **बोतडुं** न० ऊँटका बच्चा; बोता
- **बोसान (--नुं)** न० (पगड़ीका) बताना; तहरेच (२) बोहतान; कलंक
- **बोते (--त्ते)र** (बॉ ′)वि० बहत्तर; ७२ **बोथड** वि० जड; ठोट (२)सुस्त;मंद
- **बोदलुं** वि० देसिये 'बोदुं'
- बोबावुं अ० कि० पानी पीकरतरहोना (२)पानीसे सड़कर बिगड़ जाना
- बोबुं वि० पानीसे सड़ा हुआ (२) ठीक नहीं बजनेवाला (३)ढीला ; कमजोर ; दब्बू ; बोदा
- बोच पुं० सीख; उपदेश (२) ज्ञान; बोध। [--थवो == झान होना; होश आना; समझ आना। -लेवो == सबक़ सीखना; सीख लेना.]

# बोधपत्र

## 284

भ्यूरास

बोचपत्र न०	विवरणपत्र;	' प्रोस्पेक्टस '
<b>बोध</b> पाठ पुंब	• प्रत्यक्ष <mark>पदा</mark> र्थ	के दारा बोघ;
पदार्थपाठ(	२)नमूनेके रूप	में दिया हुआ
े पाठ ; प्रत्यर	न पाठ ( २ ) नर	गीहत : सीख

- बोधवचन न० सिखावनके वचन
- **बोधवुं** स०कि० शिक्षा देना; उपदेश देना **वोबहुं** वि० तोतला
- **बॉयकोट** पुं० बहिष्कार; बायकाट **बोर** न० एक फल; बेर
- बोरबी स्वी० एक पेड़; वेर; बड़बेरी। [-संखेरवी, झूडबी = खूब मरम्मत करना (२) मारकर सब कुछ हड़प लेना.] [बकुल बोरसल्ली(--ळी) स्त्री० मोलसिरी; बोरिप्रुं न० घुंडी; बटन (२)एक गहना बोरी स्त्री०बोरी; गोनी (२)गाँठ; गठरी बोरो पु० भारी कंबल; धुस्सा
- बोल पुं० बोल; शब्द; बंचम (२) (कविताकी) कड़ी; ५धांश(३)ताना; बोली; बोल ।[-आपवो = कौल देना; वचन देना। - काढवो = जरा भी बोलना; हर्फ़ निकालना। - दे एवुं = जरूरतके वक्त काम आनेवाला। -देवो = जवाब देना; हुँकारी घरना (२)काममें आना। - बोल्लवा = बोल कहना(२)गुस्सेके लहजेमें कटु वचन कहना। - मारवो = बोली मारना, कसना; ताने देना.] [बातूनी बोल्कण्ं, बोल्फ्र वि० बोलता; वाचाल;
- बोलचाल स्त्री० वासचीतका संबंध; मेल; बोलचाल (२) तकरार; टंटा (३) क़ौल-क़रार
- बोलछा स्त्री० बोलनेका ढंग
- बोलती स्त्री० जीभ । [--बंध कराववी = चुप कर देना; बोलती बंद करना. ]

बोलपट न० बोलता हुआ चलचित्र; 'टॉकीज'

- बोलवाला स्त्री० वढ़ती-चढ़ती; बोल-बाला [किकेट बॉलबॅट न० ब० व० किकेटका खेल; बोलवुं स० कि० बोलना; शब्द, आवाज निकालना (२) कहना; बात करना (२) झिड़कना; डपटना; गुस्सा या
- नालुशी बतानेके लिए कहना [ला.]। [बोलनुं चालतुं = जिंदा;बोलता हुआ। --चालवुं = वोलचाल होना; बातचीत करना। बोली नाखवुं = बिना छुपाये या बिना संकोचके कह देना (२) कबूल कर लेना; जताना; जाहिर करना। बोली बतावषुं = कह देना; जताना.]
- बोलंबोला स्त्री० तकरार; हुज्जत बोलंबोला स्त्री० तकरार; हुज्जत बोलावाली स्त्री० तकरार; झगड़ा; चखचख; कहा-सुनी (२) बोलचाल । [--थवी == तकरार होना। --होवी=
- ्योलचाल या मेल होना.] बोली स्त्री० बोली; बोलचालकी भाषा
  - (२)ताना;बोल(३)कबूलत करना ।
  - [-करवी= शर्त करना;करार करना.]
- बोळ पु० एक प्रकारका गोंद
- बोळवुं स॰ कि॰ डुवाना; बोरना [प.] (२) गैवाना; नाश करना [ला.] बोळावाडो पु॰ अष्टाचार; अशुचिता; छुआछूत
- **बॅ!ब(०गोळो)** पुं० बम; बमगोला **बॅांबसारो** पुं० बमवर्षी; बमबारी
- ब्यान २० वयान; वर्णन
- **म्याहरे(-सी)** वि० जयासी; ८२
- **व्यूगल न**॰ एक विलासती रणवाक्ष; विगुरू



### শ

भवडवुं स०कि० किसी भारी चीबसे जोरसे दबाना;कुचलना(२)दरवराना; दलना [पद या गीत; भजन भजन न० भजन;नामस्मरण(२)भक्तिका भजनसंडळी स्त्री० भजनमंडली

- **भजनिक** वि० भंजन करनेवाला या गानेवाला; भजनी; भजनीक
- मजनियां न॰ व॰ व॰ भजन (२) करताल (३) गालियाँ [ला.]
- भ**जववुं** स० कि० नाटक खेलना; रूप भरमा; अभिनय करना
- मअज्ञुं स॰ कि॰ भजन करना; भजना; नामस्मरण करना (२) जपना; जप करना(३) सेवा करना; भजना (४) धूस देना; उदा॰ 'तेने काई भज्युं के द्युं?' [सादा चीज; पकौड़ी
- भजियुं न० तलकर बनाई हुई एक भटकन(—णुं) वि० भटकनेवाला; आवारागर्द; व्यर्थ घूभनेवाला

भटकचुं अ० कि० सटकना; व्यर्थ घूमना भटकाबुं अ० कि०(दो व्यक्ति या चीओंका आपसमें) टकराना (२) बीचमें आना; बाघक होना; आड़े आना (३) भटकना; व्यर्थ घूमना (४) [ला.]अकस्मात् मिल जाना या हत्थे चढ़ना (५) लड़ाई या कखिया होना; सिड़ना

भटका न० ब० व० व्यर्थकोशिश(२) चक्कर; फेरे। [- भारवां == लालसा-से व्यर्थकोशिश करना (२) मटकना.] मद्**रियुं, मटोळियुं** न० कुत्तेका **वञ्चा**; पिल्ला

शब्द; भक-भक भवकाबोर्खु वि० स्पष्टवक्ता(२)कटुभाषी भक्त वि० विभक्त; अलग बना हुआ या किया हुआ (२)विभाजित; बँटा हुआ (३) जनुयायी; भक्त; --पर आशिक (३) जनुयायी; भक्त; --पर आशिक (३) अनुयायी; भक्त; --पर आशिक (४) भक्ति करनेवाला; भजनेवाला (५)पुं० उपासक; भक्त [स्त्री भक्ताणी स्त्री० भगतिन (२) भक्तकी भक्ति स्त्री० भजना; भजन; उपास्य

भ पूं० 'प ' वर्गका-ओष्ठघ चौथा व्यंजन

भकभक अ० भक-भक; जोरसे (२) रह-

रहकर वेगसे निकलनेवाले घुएँका

देवताका नाम जपना(२)प्रेम;श्रद्धा; मक्ति(३)नवकी संज्ञा

- मसा पुं० भक्य; आहार(२)अ०' भक' आवाजके साथ(३) तुरत [गँवार मक्सड वि० मोटा; गाढ़ा(२)निडर;(३) भगत वि० पुं० मजन करनेवाला; भगत भगवाळूं न० बड़ा सूराख [(२)जोरसे मगमग अ० ' भगभग' आवाजके साय भगवां वि० गेरुआ; काषाय
- भगाडवुं स० कि० भगाना (२) ठगकर या बहकाकर ले जाना या असल स्थान खुढ़ाना
- .**मगोरप्**य पुं० राजा भगीरय(२)वि० दुष्कर; बहुत मुश्किल । [–प्रयस्न = महाप्रयास; मगीरय प्रयत्न.]
- भ**चकाववुं** स०कि०गचसे मीतर घुसाना; र्षेसाना (२)टकराना
- भवकार्षु अ०कि० मचकर्वु'का भावे रूप (२) मटकना; व्यय घूसना

मंड्री

	*41

সহাপুর

- सहुरे पुं० गोल बैंगन; मटा; मंटा भट अ० घिक् (२) झंट; फटसे भीनानानां नः नामिक्याया (२
- भठियारजानुं न० भठियारखाना (२) रसोईका कामकाज [स्रा.]
- भठियारण, भठियारी स्त्री०मठियारेका पेशा करनेवाली स्त्री(२)भठियारेकी स्त्री; भठियारन; भठियारिन; भठि-यारी
- भठियादं न० भठियारेका काम;भठि-यारपन (२) रसोईघर; भठियारखाना [ला.] [पकानेवाला;भठियारा
- भठियारो पुं० मड़भूंजा (२) साना भक्ठी स्त्री॰ मट्ठी; माड़; भरसाई (२) भट्ठा; पजावा (३) शराब बनानेका स्यान; भट्ठी (४) भट्ठी पर रखा हुआ बरतन या उसमेंकी बीज।
- [-गळवी= शराव बनाना.]
- मह्तो पुं० बड़ी मट्ठी; भट्ठा
- णड वि० शक्तिशाली; बलवान(२) समुद्धिशाली (३) पुं० योद्धा; भट (४) श्रीमंत
- भड न० कुँएसे पानी खींचनेकी सहूलि-यतके लिए की हुई चुनाई या कुँए पर रखी हुआी चपटी लकड़ी; पाट
- भडक स्त्री० मड़क; चौंक; डर
- **भडकण (--जुं)** वि० डरपोक; भड़कीला
- **भडकर्षु** अ० कि० चौंकना; मंडकना; यकायक डर जाना
- मडको स्त्री० फीकी राव या कॉंजी जैसी एक खाद्य चीज
- भडकुं न० उबाली हुवी गाढ़ी चीज या एक बानगी; महेरी
- भडकुं न०, (--को) पुं० आगकी भवक (२) ज्वाला; छोला; रूपट। [भडके बळ्यचुं = घषकना; घार्य-भार्ये अरूना।

भडको ऊठवो = बड़ा दुःख होना; वै	r
जलना; आग लगना (२) बेकार जाना	;
व्ययं जाना। पत्रो = धघकना (२)	
कलह होना.]	

- भवत न० मरता (बंगनका); भुरता भडबियुं, अडबुं न० भूभलमें पकाया, सिन्नाया हुआ पदार्थ
- भडवुं न० रेशा पड़ा हुआ कच्चा आम
- मडभड अ० धार्य-घार्य; 'मड़-भड़ ' आवाजके साथ(२)मक-मक; खोरसे
- भडभडवुं अ० कि० बिना सोचे बोल्ना; बकवास करना (२) घार्य-धार्य करके जलना; भड़कना; अचानक जल उठना; खोरसे जलना (३) सानेकी तीव इच्छा होना
- भडमडाट पुं० धार्य-घार्य जलना (२) मड़-भड़की आवाज; भड़-भड़ (३) अ० ऐसी बावाजके साथ; धार्य-वार्य
- भडभडियुं दि० मनमें जो हो वह कह डा-छनेवाला; जो कुछ भी गुप्ता न रख सके
- भडवीर पुं० बहादुर योदा;युद्धवीर भडवो पुं० अपनी स्त्रीके व्यभिषार पर जीविका चलानेवाला; रुष्याजीव (२)भडुआ; सपरदाई (३) स्त्रीवश पति;जोरूका गुलाम
- भडसाळ स्ती० चूल्हे या अँगीठीका गरम राखवाला माग [तुरत; घड़ाकेसे भडाक अ० घड़ाकेके साथ; धार्यसे(२) भडाको पु० घड़ाका; खोरकी आवाख
- (२) बंदूक़के दगनेकी आवाज; घायँ (३) गपोड़ा
- भडामड ज० 'मडामड' आवाजके साथ (२) एकदम; धडाधड
- भवाभूट स्त्री०; न० धौधकः ऊधम (२) तितर-बितर पड़ी हुई चीर्चे

- <b>1</b>	•

- भइं न० घरके आयेके दरवाखेके अगल-बग्नलकी दीवार; कौरा (२्र) आड़के लिए की जानेवाली पतली दीवार; परदा। [भढे बेसवुं = टूट जाना; बन्द होना; बिगड़ना (२) दिवाला निकालना (३) नि:संतान होना (४) रोजी या कमाई न चलना.] सडोमड अ० देखिये 'भडामड '
- भणकार(--रो), भणको पु० किसी चीजकी आवाजकी गूँज या आगाही; भनक

**भवतर न०** शिक्षा; पढाई

- भणवतुं स॰ कि॰ सीखना; पढ़ना (२) कहना; कविता रचना; उदा॰ 'भणे नरसैयो ' (३) पढ़ना; बाँचना। [--गणवां = पढ़ना और उस ज्ञानका उपयोग करना; पढ़ना-लिखना; सीखना; अनुभव प्राप्त करना। भणी-गणीवे = पढ़-लिखकर; शिक्षा ग्रहण करके; होशियार बनकर। (अगि-यारा)भणी जवा = नौ दो ग्यारह हो जाना; (स्रेकर) चपत होना.]
- भणाववुं स० कि० सिखाना; पढाना (२) पाठ पढाना या उप्चारण कराना; सिखाना; पढाना । [भणावी मूकवुं = पढ़ा देना; सिखाये रखना.] भणी अ० तरफ; ओर
- भत्तुं न० मुसाफ़िरीमें सानेके लिये साथ छेनेका मोजन; कलेवा; पाथेय; तोशा (२) उसके एवखर्मे दिये जानेवाले पैसे; भत्ता (३) खास कामके लिए वैसमके अतिरिक्स दी जानेवाली बँघी रकम था असल खर्च; मत्ता; अधिदेय भत्रीकी स्त्री० माईकी बेटी; पत्ति या पत्लीके भाईकी बेटी; भतीजी

1	h La	
1	77	5

पम्पर

भत्रीको पुं० भाईका या पति या पत्नीके
भाईका बेटा ; भतीजा 🛛 [जरनेवाली
भथवारी स्त्री० खेतमें छाक-कलेवा ले
भष्युं न० देखिये 'भत्तुं '
भवतं न० मिटीका घडा
भपताबार वि० चमक-दमकवाला;
घोनदार; ठाट-बाटवाला
भपकाबंध वि॰ भड़कीला; भड़कदार
(२) अ० शानके साथ;दबदबेने
मपको पु० शान; सजधज;ठाट-बाट;
आडंबर (२) धमकी
भभक स्त्री० चमक; भड़क
<b>মমকৰু স</b> ০কি০ ম <b>ड</b> कना; সমকনা
(२) शोभादेना; फबना (३) भड़-
कना ; ग़ुस्सा होना [ला.]
भगकादार वि० देखिये 'भपकादार'
भभकाबंध वि० देखिये 'भपकावंध'
<b>भभको पुं</b> ० देखिये 'भपको '
<b>भभडवुं अ</b> ० कि० खानेकी इच्छा होना;
जीभ चलना;खानेको जी करना
भभडाट पुं० खानेकी तीव इच्छा
भभरावयुं सं०कि० भूका या चूर्ण छिडक-
ना; भुरभुराना; भुरकाना विन जाय
भभर्ष वि०भुरभुरा;जो सट टूटकर भूर्णरूप
भभूभव् अ० कि० भभकना; भड़कना।
[ भिभूकी <b>कठवूं</b> ≕ जल उठना ; मभकना
(२) चमक उठना; प्रकाशित होना.]
भभूको पु॰ भभूका; शोला(२)प्रकाश
भमूत (-सी) स्त्री० भमूत; बभूत;
भस्म। [-बोळवी, लगाववी = भभूत
रमाना; साथु हो जाना.]
भगर स्त्री० भौं; भौंह; भ्रू
मनर स्त्री॰ मँवर; जलावर्त(२)अ०
भंमर स्त्री० मँवर; जलावर्त(२)अ० गोल-गोल; चक्करके रूपमें (३)पुं०
भौरा; भगर

WWYER	१५१ अस्मर
भगरबी स्त्री० छोटा लट्ट (२) वकफेरी;	भरवयुं संश्र कि॰ मसण करणाः सामाः
परिकमा (३) चकई; फिरकी	(२) दौत धेरामा; दौतीसे काटना
भगरडो पुं• लट्ट; मुटका (२) [ला.]	
सिम्नर; सून्य; कुछ नहीं; उवा०	खचालच; ठस
'ममरडो आवडे छे'। <b>(भमरबा जेवुं</b>	
= मूर्स; धनजन्कर (२) अस्विर.]	पीसमाह दलना; दादराना (२)
भमराळुं वि०सुंदर मौंबांला; सुभ्रूं(२)	अंडबंड बकना; बड़बड़ाना [हा.]
दुर्मागी; अमंगल(३)भीषण	भरडो पुं० दला हुआ अन्नः वलिया (२)
भगरी स्त्री० काटनेवाली एक मक्खी;	वह लपेट जिससे कोई चीज जुरा-पुर
भौरी; भिड़ (२) मैंघर; जलावर्त;	हो जाय (अजगरकी लपेट)
भौरी (३) मॉह	भरण न०भरण; गुजारा; निर्वाह(२०)
भमरो पु॰ भँवर; जलावतैं; गिर्दान (२)	
चकाकारमें उंगे हुए बाल; मॉरी (३)	भ <b>रणपोधन</b> ्न० पालन-पोषण; वेगुजर-
भौरा; अमर; बड़ी मधुमक्खी; भैवरा।	भरणुं न० मरमाः कृदि (२) भुकाये, दिये
[- भूसाई जवो = किस्मत फूटना	हुए पैसे (३) संग्रह 1 [-करबुं, भरबुं =
(स्त्रीका विधवा बनना).]	सरमारी ट्रेजरीमें रक्तम रखगा, वेमा.]
भमवूं अ०कि० गोलाईमें धूमना; चक्कर	भरतंग० माय; माप; मिकदार; वमा-
काटना; घूमना (२) बेकार घूमना;	ण (२) कपड़े पर बेलबूटा, फूलक्सी
भटकना (३) गुरा या जक्कर आना ।	काढ़ना, लिकालना; कारचोंकी; सुल-
<b>मनतुं भूत = सारा स</b> मय भटकता रह-	कारी; कसीदा (३) संचिमें रत डालकर
नेवाला;उठल्लूका चूल्हूा;आवारागर्द.]	ढालना; भरत; ढलाई (४) मसास्त
भमाइ (-व) मुं स॰ कि॰ 'भमवुं'का	भरकर बनाया हुआ शाक; भरता
प्रेरणार्थक; धुमाना (२)भ्रममें डालना:	भरतकाम न० कॉरचोबी, कशीदेका
भरमाना; ठगना	भाम; कढ़ाव 🛛 िकाम
भम्मर स्त्री०माँ;भाँह। [-चडाववां=	भरसपूर्ण न० कारकोबी और गूथनेका
भौह चढ़ाना, तानना,]	भरतर (-ल) वि॰ ढाला हुआ; भरतका
भयो अ० कृतार्थताका संतोष हुआ हो	(धातुकी चीज)
दस तरह; संतुष्ट । [- <b>थव्ं</b> क्रुको	भरतियुं न० बिरू; बीजन
होना;कृतकृत्य, संतुष्ट हो इतना होना.]	भरती स्त्रीण भरना; बाढ़; वृद्धि(२)
भर वि० भर; पूर्ण; भरपूर; इंद्रदा०	ज्बार; जुआर; भाटाका अल्हा (३)
' भरजुबानी, भरकंघ '	बहुतायत; आमद; बाढ़। [सायवी-
শংকুৰ(≁ৰ, ল) লো। দ্যুত্ৰকৃত	ज्वार चाना ।ं⊶ करवी;≕ भर देना
<b>'गिकस्मी ची</b> ज़ों, बच्चों या <del>प्</del> मुर्खीका	(२) (क्तोजमें) भरतीः मरताः]
संगृह; भागमतीका कुवको	मरबार पुं <i>व</i> मर्तार्ड्ः पौरा
a fa	

_	-	
		14.1

**1**44

भूग्रिकार

होना	(२) फोडेका एक रोग	
भरपट्टे	अ० चाहिये उतना; <b>सूब</b> ; जी	r
भरकर	; भरपेट	

भरगोगळ जब भरा जाना और स्तित

- भरपाई स्त्री० भरपाई; वेबाकी
- भरपूर वि० बहुत; पुष्करू (२) धूरी सरह भराः हुआ; भरपूर (३) अ० पूरी तरहसे; भरपूर
- भरभर्ष विक्कोरा; जो चुपड़ा हुआ त हो(२)दानेदार; भुरभुरा
- मरमांसाख्नुं न० प्रभात; तड़का; भोर मरम पुं० भरम; अम; झांति; बहम (२) मेद; मरम; रहस्य। [--क्सेसचो == रहस्य सोलना; क्लिनी हुई बात प्रकट करना। -- वगडवो == वेस्वाद हो जाना (२) मजा किरकिरा होना। -- भाषचो == भारम सुलना या भरम सोलना.]
- **वरनार** स्त्री० भरसार; अधिकता
- भरमानुं अ० फि० ठगा जाना; वोसा साना (२) अममें पढ़ना; बहुम करना मरबर्षु स० फि० टॉगना; लटकाना (२) जोड़ना; साथमें कर देना (३) कान भरना; उकसाना [ला.]
- भरवाड पुं० मवेशी पालकर युवर करने-वाली एक जातिका आदमी; अहीर भरवाडन स्त्री० बहीर स्त्री या अहीरकी स्त्री; अहीरिन
- भरबुं स॰ कि॰ जरना; साली चीकमें रखना, डाकमा, उँडेलना; साली अयहमें किसना (२) जमा करना; संबद्द करना (बनाज) (३) (नुक-तानकी) पूर्ति करना; भरना (४) फलके क्यमें निलना; जर पाना; उदा॰ 'करसी देवुं जरसो ' (५) जमा

करना; पावना भुकाना; चुकाना; देना (कर; बीसा; किराया; दोल; पैसे वादि) (६) चंदा देना या लिम्साना (७)करना; लगाना; एकत्रित करना (सभा; प्रदर्शनी; बाजार; भीड़; परिषद आदि) (८)गूचना (फूलोंकी चादर); बुनना; खाली जगह भरता (खटपाटी) (९) बेल-बूटे बनाना; काढना (१०)नापना(११)रंग पूरना; भरता; देहमें पोतना; उदा 🖓 चित्रमां रंग भर्या; डामरथी मों मरी दीष्टुं' (१२) समृद्ध या खुशहाल बनाना; उदा० 'बापनुं धर भरे छे' (१३) छादना; बोझा रखना; তৰা০ ' सार भरवो; सामान भरवो '(१४) पद पर नियुक्ति करना; भरना; उदा० ्रजगाओ भरवी ' (१५) अलग-अलग शब्दोंके साथ प्रयुक्त होनेसे अलग-अलग अर्थ होते हैं। [ बांब भरवी = असिमें औसू भरना। अगलुं भरबुं == कदम बढ़ाना; डग भएना। बोरो भरवो = सीना; सांधना। बचकुं भरवुं = बुङ्का भरना; दौरोंसे काटना। मों मरबुं≔ वूस देना। मरतामां भरषुं=जहां अधिक हो वहां वृद्धि करना; बढ़ाना। भरी आषवुं= नुक्रसानकी पूर्ति करना; भरना (२) चंदेमें लिख देना (३) नाप देना। भरी पीर्ष = मूल्य, महत्त्वका न शिनना; न बंदना ]

भरसाह स्त्री० देखिये ' भडसाळ '

भराव पुं० भरा जाना; जमा होना; जराव; जमाव; संग्रह (२) पूर्णता; परिपूर्णता [सरा;-पुष्ट मरावदार वि०जो जरा हुआ हो; क्स-

For Private and Personal Use Only

मरत्नम्

े चच

भरावनुं स० क्रि० 'भरवुं', 'भरववुं' क्रियाका प्रेरणार्थक; भरवाना	भस्तमनुं वि०. कुछ-कुछ भलाई. या
भरानुं अ॰ कि॰ 'भरवुं ' का कर्मणि;	बेकुप्पन या महत्त्ववात्या; बड्डा और जिल्ला जिल्ला जिल्ला का
भरना (२) दबकना; छिपना (३)	प्रतिष्ठित (मनसी; सल्जनसाई
ज्बराश्चन्त होना; तपना; उदा॰ ' आजे	भलमनसाई स्त्री० भलमनसाहत; मल-
शरीर भरायुं छे' (४) पकानसे देह	भलाई स्त्री० मलाई; अच्छाई; सुजनता
अकड् जॉना; फूलना; उवा० ' बाली	(२)नेकी; मलाई(३)मले आदमीकी
चालीने पग भराई गया ' (५) फौसना;	हैसियवधे प्रशंसा होना
जिल्झना; लिपटना(६)व्याप्त होना;	<b>সক্ষেত্র হবী</b> ও বিজাবিয়। সকলেজ উঠান সালিকার
भर जाना; पूर्ण होना; भरता; उदा०	भक्तमणपत्रः पुरुद्धः न ० सिक्वारिधनामाः ; जिन्द्रार्थन्तिः सिन्द्रार्थः
'मों फोल्लामी भराई गयुं' (७)	तिफ़ारिशी चिट्ठी
মান মাজোমা নহাই গয়, (ও) মারকা মন একলা: প্রচল (८)	भलगणी स्त्री॰ देसिये 'मलामण'
भावका भर जाणा; भरना (८) प्राप्त गोनर कीनरः अन्तरः जन्म	भस्ताश स्त्री० देखिये 'भसाई'। [-सेची ⇒
पुष्ट, मोटा हीना; भरना; उदा० 'साल भरताः जन्म ने' (०) जर्म	मला है ऐसा यश प्राप्त करना, लेना.]
'गाल भराता जाय छे'(९) पूर्ण कोनाः भगा बालाः जाय हे जेन्स कि	भ <b>लीभूंडी</b> स्त्री० क्षरी या खोटी बात्त; भली-बुरी
होना; भरा जाना; उदा० 'तेना दि- हमो भरार्ग स्वयप्र से '(१०) प्रायपः	भलीबार पुंश; स्त्रीवसत्तव; सार (२)
वसो भराई चूक्या छे '(१०)लगना;	
ईकट्ठा होना (मेला;भीड़)। [ <b>भराई</b> भा <del>नां</del> क (जनके) जंग जनक (०)	बरकत-फ़ायदा (३) होशियारी; ज्ञान असं तिव असर: शक्स (२) र <del>ने (</del> २)
<b>आवर्षु ≃ (ज्वर</b> से) अंग टूटना (२)	भर्खुं वि० भला; अच्छा (२) स्मेही (३)
(दिलं) परीजिना, मर आना (३)	सम्प; सुजन (४) प्रामाणिक; नेकः। [—मरो को जनगणन्तः। प्रप्रकः]
र्वीस भर आना। भराई वर्षु⇔	[-हन्ने तोः≕संभवतः; प्रायः.] अने यः अने क्रम्प
फेँस जाना (२) दबकना (३) (थकानसे	मले अ॰ मले; अण्डा; ठीक
देह) अकड़ना, टूटना(४)पूर्ण होना;	भक्ते पत्नार्था == बच्छा हुवा वाप आये;
भरा जाना(नौकरी,चन्दा,स्रोन आदि)।	खुरा वामदीव प्रके फोर सर प्रचेत कर जान
मराई पडवुं ≕ फँसना; उल्लझना।	भके पके व॰ भने; बहुत अण्छा
त्रराई वेसवुं≕वक्कना; छिपना.]	भव पुं॰ भव; संसार (२) जन्म; भव
भराबो पु॰ देखिये ' मराव '। [-म्बो =	(३) जिंदगी; औवन (४) महादेब;
(पेटर्मे मलका) जमाद होना (२) (ताब,	भवः । [बगडवो, बल्लवो == जिंदगी
वकावट आदिसे) देहका अकड़मा.]	बरबाद होना; जीवन धूरुमें मिछना।
भ <b>र्क्सादार, भर्क्सापात्र वि० भरोसेका ;</b> विश्वसनीय [मीनान ; भरोसा	<b>सुवारवो</b> ≕ जीवन सुवारना; जीवनमें
भवस्ती पुं० एतबार; विश्वास; इत-	কুন্ত ওপমীনী বা মহুম্বকা ক্লান
भरोसाबार, भरोसावात्र, भरोंसाबार,	करना। <b>एक भवना वेःभव</b> ःकरकाः ⇒ स्टिते स्टित् नेन्त्रज्ञ जन्म (०) — 5
	पतिके प्रति वेवफ़ा बनका (२) वर्मा-
भरोंसापात्र, भरोसो, भरोंसो देखिये 'भर्चसादार' जावि	न्तरसे या अमीतिसे कुल्ज्वर्वादाका
	लोप करना (३) (स्त्रीका) दूसरी
भर्नुनार्थ्यु नि० भरापूरा; जाबाद	वादी करना

	_
णम्ब	15

भंचारी

मबाई स्त्री० हळके प्रकारके नाष्टकका	विष्न; बाधा; भंग (५) बच्चता;
एक जेद;स्वान (२)फ़बीहत;मह् [स्रा.]	देढापन; कुटिलता; भग। [पडवो
मबादी पुंच भट्द; फ्रजीहत	= बांधा खड़ी होता; टूटना; विंगेड़
भवत्यो पुरु भाइ; भाड (२)वह व्ययित	जाना; मंग होंना (आनंद, हर्ष
ं जो बदनाम करे; मॉड 👘 🔄	आदि)। - पाडवी = बाका सड़ी
<b>मकिय</b> वि • जानेवाळे कालका; भविष्य;	करना; रोड़े अटकाणा; (रंगमें)मंग
भविष्यत् (२) न० मसीब; भाष्य(३)	करना; तोड़ना.]
मृत व्यक्तिकी छोड़ी हुई दौरतः, वरासत	भंधडी स्त्री० देखिये 'भंगियण'
(४)भविष्यकाल; भविष्य । [ <del>- वार्यु</del>	भौषाच न० भंग; विषटन; संक्ति होना
<b>≔ वरासतका</b> मृत क्यकितकी संपत्तिका	(२)अग्वक; विरोध
उपमौग करना । -बंबाबर्षु = उत्तरा-	भंगार पुं• टूटे-फूटे बरतन या दूसरी रही
विकारीको बीछत वे वेना ]े 👘	चीजें; अनगढ-खंगह
भविष्यकाळ पुं०ं आनेवालाः काल;	भंगियण स्त्री०भंगी जातिकी या मंग्रीकी
भाषिष्य (२) जिम्साका एक <b>्का</b> ल;	स्त्री; भगित; मेहतरानी
भविष्यकालः भविष्यः भविष्यत्काल	भंगियो पु॰ भंगी; भेहतर
মৰিআবামী ধ্বী০ মৰিআবামী	भंगी पुं० देखिये 'भगियों'
भौबेष्यवेसा पु० भविष्य जाननेवाला;	भंडच न॰ भाँहरा;तहखाना;भुईहरा[य.]
ज्योतिनी	(२)स्टीनरमें सीसरे दर्जे ने मुसाक्रियों के
भर्ष म० भौह; भू; भौ। [ भर्षा बडाययां	बैठनेके स्थानके इईगिर्वकी जगह
= कुद्ध होगा; भाँह पढ़ामा.]	भंबार पुं० (अनन्ता) भंडार; कोठार
भवेयों पुरु देसिये 'भवायों '	(२) खजाना; कोश (३) जहाजके
<b>মৰীমৰ ৬০ সং</b> ৰক জন্म <b>में ; জনস</b> -জলদ	डेकके नीचेकी, अगह (४) दुकान;
भन्न (स)को पुं॰ इच्छा; तीझः ठालसा	उदा० ' सारीमंडार '
भसबं ज० कि॰ भॉकमा; भूंकमा(२)	भंडकिष्टुं न० छोटा भौंहरा या सङ्खाना
े व्ययं बकना; भूकना	भंडारमुं स० कि० भंडारमें जस्बना
भछत् चि॰ जो हिलमिल जाये; मिलन-	(२) छिपाना; गांडना 👘 👾
ें सार (२) कैसा भी; विना ठिकानेका	भंबारियुं न० दीवारमें बनी हुई-छोटी
(३) विद्युका; जासगत	आलमारी मा किनाड़दार तासा; भंड-
ाज्यमांबद्धं न॰ देशिये ' महमांबहुं'	रिया (२) गाइने जीत्रेने हिस्से <i>में डे</i> टी-
াৰুৰ 🐨 বিগ বিধিন্ন হলৈ। নিজন্য	नुमा रपना (३) घरमें पीछेकी छोटी
🚑 क्रिइता-मुक्तरा होना; समान	कोठरी; अंडारी;
क्लेनाइमिलना (२) धौंपना	भंधारी पुं० भंबारी८ खन्नानची (२)भंबा-
<b>अक्रमेजूं स</b> ० <b>कि</b> ः सिफारिश- करना	रका अञ्चला; अंकारी; कोठारी(३)
अंग पुरु भग; दूटना; संक्ति होना (२)	एक अल्ल (४) झाड़ी और शराब बना-
तोड्ना; भंग (३) आंस्तुः नाक्स (४)	नेका केवा करनेवाली आति <del>का बहुति</del> त
	•

	~
मह	स्त

्याचेल

मंडारो पुं० पूरे गौंव या पूरी विरावरीको दिया जानेवाक्रा भोज (२) साधुओंका मोज; भंडारा [बटोरा हुवा धन भंडोळ न० पूँजी; संचिन्न धन; जोड़ा, भंधेरणी स्त्री० झूठ-सच (जोड़ना);

- भूठा बढ़ावा या उत्तेजन (देना) भंभेरवुं स॰ कि॰ झूठा बढ़ावा देना; बहुकानेवाली बात्तोंसे कान भरता; पट्टी पढ़ाना; झूठ-सच जोड़ना
- भाई पुं० भाई; सहोदर (२) पाचा, मामा,मौसी आदिका बेटा(३)किसी भी व्यक्तिके लिए विदेकयुक्त संबोधन;माई भाईबारो पुं० भाईकासा नाता या बर्तीव; भाईचारा; दोस्सी; बिरादरी
- भाईबंध पुं० मित्र; दोस्त; यार भाईबंधी स्त्री० मित्राचारी; दोस्ती
- भाईवापा पुं० द० द० मिन्नत-समाजत-सूचक झब्द। [--करवा = गिड़गिड़ाना; मिन्नत-समाजत करना (२)वरमीसे या समझा-बुझाकर (किसीसे) काम लेना.]
- भाईबीज स्त्री० मैयादूज [बच्चे भाईसांडु न० ब० व० एक ही मौदापके भाखरी स्त्री० एक प्रकारकी सख्त रोटी भाखरो पुं० मोटी बड़ी रोटी; रोट
- भरलवुं स॰ कि॰ बोछना; भाखना [प.](२) भविष्य कहना
- भाग पुं० भाग; अंश; हिस्सा (२)पुस्त-कका हिस्सा; खंड (३)भाग; तक़सीम [ग.]। [-पडचो = बैटना; हिस्सा होना। -- राखवो = हिस्सेदार, भागी बनाना; किसी काम, पेशा आदिमें हिस्सा रखना.]
- मानलुं वि० खंडित; दूटा हुआ; भग्न (२) खोखला;दरारवाल्प्र (मिट्टीका

कर्तन)। [भाषता पग व्यप्त हिनगरा; निरामा। भागता हावकां ⇒ आज्जी-पन; सुस्ती; काहिली। हावकानुं भागलुं = आलसी; कामचोर.]

- भामलो पुं० बॅटवारा; हिस्सा; भाम (२)देवीके नैवेचका माल-प्रसाद। [भागला पाढवा = बॅटवारा करना; हिस्से करना; बांटना.]
- भागवुं अ० कि० टूटना; टुकड़े होना; नष्ट होना; भग्न होना(२) दूर होना (भय) (३) दिवाला निकालना; उदा० 'पेडी भागी' (४) पलायन करना; भागना(५) स० कि० टुकड़े करना; तोड़ना (६) लूटकर तवाह करना (गाँव); डाका डालना (७) अदा न करना; न लौटाना (क्रजं; सूद) (८) भाग करना; भाग देना [ग.] (९) बटना; ऐंठना (रस्सी)। [भागी जबुं = भाग जाना (२) टूटना; टुकड़े होना.। भागी रात = भीगी रात; वाघी रातके बादकी रात.]

भागाकार पुं० [ग.] भाग करना; भाग देना;भाग;तक़सीम(२)भागफल; लक्वि भागाभाग (--गी) स्त्री० भागदौढ़; भगदड़ [दारिन

भागियज स्त्री० हिस्सेदार स्त्री; हिस्से-भागियुं वि० भागी; हिस्सेदार

भागियो पुं० भागी; हिस्सेदार; साझी भागीदार पुं० भागी; हिस्सेदार; साझी

(२)साथी; मित्र [पत्तीवारी भागीवारी स्त्री० हिस्सेदारी; झझा; भागेडु पु० भगोडा; फ़रारी

मागोळ स्त्री० शहरके क्रिलेका दरवाजा (२) यांवका सीमान्त; सिवान (३) बाखार; चौक

माम्युर्स्टयु	142
माम्लूट्युं वि॰ टूटा-सूटा (२) जो खणा-	মাণি
तार न बले; कुछ बन्द, कुछ बका हुवा	<b>य</b> रिव
मान्ये ख० कदाचित्; ज्ञायद	सार
भावी स्त्री० भाजी; साग	भाषी
भागीसाड वि० साग सानेवाला (२)	भाषां
[ला.] बेदम; शक्तिहीन; मूंगकी	মুক্ত
दाल खानेवाला	लगी
<b>भाजीपालो</b> पुं० सागपात; तरकारी	परो
भाषीमूळा पुरु ब॰ व० मूली और उसकी	भाणेः
तरकारी (२) गाजर-मूली ; मगण्य चीज	সালীয
[ला.] [(२)[ला.] चापलूस; भाट	भाषो
भाट पु॰ भाट जातिका आदमी; भाट	भात (
भारते हैं स्त्री के भाटका काम या पद (२)	निर्श
भाटपने; चापलूसी; भटई	[
माठ स्त्री॰, (ठुं) न॰ चमड़ी छिलनेसे	चिह
हुआ छोटा जस्म; रगड़	(૨
मादुं न० नदीके किनारेकी बलुई-रेतीली	सिन
भूमि; भाठ (२) नदी आदिमें छिछले	निद
पानीवाली जगह	2.44
भार्तुं न० (चमड़ीकी) रगड़ (२) कपड़े	भात
पर पड़ा हुआ चिकटा दाग; घब्बा	कले
भाड स्त्री० माड (२) भड़ मूंजेका भूननेका	पर
ंधतेन	भातभ
भारभूलो ५० भड़भूँजा	तरह
भाडवात पुं० देसिये 'भाडूत '	भाती
भाडावत न०, भाडाविठ्ठी स्त्री० किरा-	रंगा
यानामा; सरखत	भातुंः
माडु न० किराया; भाडा। [भाडानी	वाल
<b>बहैल =</b> भाडेका टट्टू ]	भाषुंः
भाग्रत पुं० किरायेदार	भाषुं
भाडूती वि॰ किरायेका; भाडेका(२)	(२)
पैसेकी खातिर काम करनेवाला;	भावर
माईमा टट्टू	भानः
भाषावहेघार पु० एक पंक्तिमें साथ बैठ-	(₹)
कर भोजन करनेका संबंध:रोटोव्यवहार	भार

भाग
<b>ाणियो</b> पुं० देखिये ' भाणेज ' (२) वह
चीज-सौग्रास जो कठिनाई झेलकर भी
साबमें लाई जाय [ला.]
<b>णी</b> स्त्री० मानजी
र्णु न० परोसी हुई थाली। [भाषामां
भूळ नासवी ≔ साना खराव करना;
ठगी रोजी विगाड़ना । <b>–मांडवुं =</b> खान
गरोसना (२) खाना खाने बैठना.]
ाणेज पुं० भानजः
ण्गेजी स्त्री० भानजी
ग्णो पुं० भानआ
ात(त,) स्त्री० बेल-बूटेदार चिह्न,
निशान ; छाप(२)तरह ; प्रकार; मौति ।
<b>पाडवी =</b> किसी वस्तुकी छाप,
चिह्न, अक्तित आदि उतारना; छापना
(२) अलग व्यक्तित्व होना; प्रभाव,
सिक्का जमाना (३) उलहना, ताना,
निंदा आदिसे अपमानित करना या
इज्जत विगाड़ना.] हि एंट गहारी ता सामन (२)
त पुं० पकाये हुए चावल;भात(२) क्लेवा: स्वार (काम करनेकी ज्याव
कलेवा; छाक(काम करनेकी जगह सरकेजानेकी)(व)एक: उक्सांच
र ले जानेकी ) (३)पुं० ; न० धान समासनुं वि० भौति-भौतिका; तरह-
तरहका तरहका
तीयर(-ळ), भातीलुं वि० रंगवि-
रंगा; भाँति-मांतिका; तरहदार
तुं न० मुसाफ़िरीमें साथ लिया जाने-
वाला मोज्य पदार्थ;पायेय;संबल;तोशा
षुं न॰ देखिये 'भातुं '
<b>ायुं</b> न०,( <b>–मो</b> ) पुं० भाषा; तरकश
(२)भाषी; चमड़ेकी घोंकनी
बरबो पुंब भादोंका महीना; भादों
न न॰ चेतना;होश(२)स्मरण;स्मृति
(३)समझ; अक्ल, बुद्धि(४)खयाल;
भास (५) सँभालः; देखमालं।[-आवर्षु,
s (z transferranting) transferranting transfe

ंभारे

मानमूख्	খাঁল	ġ.	ţ	
---------	------	----	---	--

245

चचुं ≠ होशर्मे आना; चेतनायुक्त होना (२) याद आना; खयाल आसा(३) होश आना; समझ आना।-कराववुं = होशर्मे आवे, समझदार बने ऐसी युक्ति करना.]

- भानभूखुं वि० जिसका होश ठिकाने न हो; वेसुघ; धारम-विस्मृत; सुघ-बुध सोया हुआ [भावज; भौजाई भाभी स्त्री० भाईकी पत्नी; भाभी; भाभु स्त्री० वापकी नौ; दादी (२) मामी
- (३)ताई; ताऊकी स्त्री [गीरा भामटो पुं० क्षावारा; उचकका; उठाई-भायबो पुं० पुरुष; मर्द(२)पति।[जभे, छत्रे भायडे ≂पतिके जिंदा होते हुए भी (पत्नीका किसीके घर बैटना).]

भाषात पुं० पितृव्य-चाचाके बेटा-वेटी (२) राजाके चचेरे भाई-बहिन

भार पुं० भार; वजन; बोझ (२) औबीस मनका एक वजन (कच्चा) (३) बीस तोले या एक तोलेका वजन (४)अम्क तौल जितना वजन; भर; उदा० 'रतीभार; रूपियाभार ' (५) बूता; सामर्थ्य; हैसियत; उदा० 'तारा ते बोलवाना शा भार?'(६) ग्रह, दशा या मंतर-जंतरका असर (७) राशि; ढेर; जत्था (८) अपच; अजीर्ण (९) जिम्मेदारी; भार [ला.] (१०) प्रतिष्ठा; वजन,महत्त्व;वक्तअत (११) अहसान; आभार। [-आववो = बोझ लगना (२) तकलीफ़ होना; परेशानी होना। -अपा**डवी = भार**, जिम्मेदारी, बोझ उठाना; भार उठाना । – खोबो, गुमाववो = प्रतिष्ठा गैंवाना । --जवो == मानहानि होता; प्रतिष्ठा जाना। -- ताणवो == भार उठाना । -- भा रहेवुं = अपनी प्रतिष्ठा बनी रहे इस तरह बरतना । -- मूकवो = बोझ भरना, लादना; बोझ डालना; भार देना (२) जिम्मेदारी, भार या बोझा लादना(३) एहसान करना (४) महत्त्व देना; कुछ महत्त्वका सम-झना, गिनना (५) आप्रह रखना । -- रहेवो = अजीणंसे पेट भारी होना (२) मान, इज्ज्जत बचना । -- राखवो = मान रखना.]

- भारखानुं नं० भार भरनेका वाहन (बैलगाड़ा, ऊँट, लारी आदि); भारवाहन(२)मालगाड़ी
- भारजा स्त्री० मार्या; पत्नी
- भारण न० दबावे; वजन(२)भूभलमें ेदबाना, रखना(३)वशीकरण;जादू
- भारबोज पुं० वजन; बोझ (२) [ला] जिम्मेदारी;भार(३)प्रतिष्ठा; वजन भारबक्कर पुं० वजन;वक्षअत;महत्त्व
- मारपरमार पुण्वजन,वक्तमत,महत्त्व भारवट(∽टियो) पुं० घरन; बँढेर
- भारवुं स॰कि॰ गरम राखमें दबा रखना (अग्नि) (२)मोह लेना; आदू करना
- भारी वि॰ भारी (२) स्त्री॰ घास, लकड़ी आदिकी गठरी; छोटा बोझा
- मारे वि० भारी; वजनी (२)मुझ्किलं; भारी; कठिन (३) झीमती; मूल्यवान (४) भारी; सज़ीलं; जो पचनेमें मुझ्किल हो (खुराक, पानी आदि) (५) अ० अति; खूब। [-करी क कमाल किया। -यई कमाल हुआ। -थवुं = आदरकी इच्छा रखना; वड़ा बनना; भारी बनना (२) वजनमें बढ़ना (३) मुझ्किल होना। -बिले = खिन्न हृदयसे; गमगीनीके साथ। -पडवुं = वोझ-सा लगना; सहा न जाना

		, - T
-	 ١.	Ψ.

360

HINNE

(२) सारी होना; सहँगा पड़ना।	बरतना; अपने पर आना। - राधनो
<b>⊸सागवुं ≕ (</b> शरीर) सुस्त लगना; अँगड़ाई लेना;देहका टूटना.]	≖ प्रीति रखना । भावे कमादे ≕इच्छा
अँगड़ाई लेना;देहका टूटना.]	या अनिच्छासे.]
भारेलम वि० आबरूदार; वजनदार	भाषवुं अ० कि० भाना; रुचना
आदमी (२) गंभीर (३) बड्प्पनका	भासनुं अ० कि० दिखाई देना; दीसना;
आडवर रखनेवाला	दिखना (२) प्रतीत होना; लगना
भारेबाई स्त्री० सगर्भा; हामिला	(३) प्रकाशित होना; भासना [प.]
भारो पु॰ घास, लकड़ी आदिका बोझ;	भाळ स्त्री० पता; खबर; सोज; सुराग
गट्ठर; गट्ठा [छोटा गट्ठर	(२) सँभाछ; देखभाछ। [-आपबी,
भारोटी स्त्री० लकडीका छोटा बोझ;	<b>देवी =</b> ठिकाना, पता बताना ।का <b>ढवी</b>
भारोभार अ०के वजन बराबर;किसी	= टोह् लगाना.]
चीजके वजनके समान (२) पूर्ण ; भरपूर	<b>भाळवण(जी)</b> स्त्री० सिपुर्दगी; सौंपना
भालुं न०, (-स्रो) पु० भाला	भाळबबुं स० कि० देखभालके लिये
<b>भालोडुं</b> न० तीर(२) उसका फल; गाँसी	सौंपना; सहेजना (२) सिफ़ारिश करना
भाष पुं० भाव; क़ीमत; दर	<b>भाळवुं</b> स <b>०</b> कि० देखना;अवलोकन करना
भाव पुं॰ भाव; अस्तित्व; होना(२)	भांग(०ग,) स्त्री० भंग; भांग (२)
प्रकृति;स्वभाव(३)इरादा; आशय;	उससे बनाया हुआ पेय; भाँग; भंग
इच्छा; भाव(४)मनोवृत्ति;मनोमाव	<b>भांगतोड, भांगफोड</b> ( ॰ ) स्त्री० तोड़ना-
(५) तात्पर्य; अभिप्राय; मंशा(६)	फोड़ना; तोड़-फोड़; विघटन
चेष्टा; अभिनय; भाव; मंगी (७)	भांगरो (०) पुं० एक वनस्पति ; भँगरा ;
राग; प्रीति; भाव (८) श्रद्धा(९)	भृंगराज । [ <b>–वाटवो</b> ≔छिपी हुई बातको
आर्य ! पूज्य ! (नाटकर्मे संबोधन) ।	प्रकट कर देना; भंडा फोड़ना.]
[-आववो, अप्रवो = अच्छे दाम	भागवूं (०)अ०कि० टुकड़े होना; भग्न
मिलना । 🔄 🖛 साबो = मिन्नत-समाजत	होना; टूटना (२) स० कि० टुकड़े
या आज्रिजीकी अपेक्षा रखना (२)नफ्रा	करना; तोड़ना (३) (गाँवको) लूट-
मिले इस तरह बेचना । <b>–छोडवो =</b> मर	मारकर तबाह करना; (गौव पर)
जाना । <b>−मवो</b> ≕चाह, अरमान होना;	डाका डालना । [भांग्यानी भेर =
(२) (किसीके प्रति) प्रीति होना,	अड़ीके समय मदद करनेवाला । <b>भांगी</b>
्भावना होना।नुं भूरुयुं == भावका	पश्चषुं = टूट जाना.]
भूखा; प्रेम चाइनेवाला।पडवो ==	भांग्युंतूटपुं(०) वि० टूटा-फूटा
क़ीमत तय होना (२) भाव नीचे	भाजग(-च)द(०) स्त्री० तकरार;
जाना; दाम कम होना <b>। –-पूछवो =</b>	झगड़ा (२) झंझट; झमेला; पचड़ा
मूल्य-महत्त्वका गिनना; कद्र करना;	भाजग(~घ)डिपुं(०) दि० उलझनवाला
पूछना(२)क़ीमत या दाम पूछना।	या झझटी (काम) (२) झमेला
<b>–भजववो =</b> अपने स्वभावके अनुसार	करनेवाला; झमेलिया
_	

**मांल**णी

- भावनी(०) स्त्री० बॅटवारा; विमाचन (२) भाग; हिस्सा भांड(०) पु० भाँड;मसखरा(२)हँसी-मजाककी नक्रछें आदि करतेवाली जातिका व्यक्ति; भाँड; भंड (३)
- वि॰ असम्य; बेशर्म भांबवुं(॰) स॰ कि॰ गाली देना(२)
- बदगोई करना; भांडना (३) उपा-लंभ, उलाहना देना
- भांबु न० भाई-बहन आदि स्वजन; बांधव [रॅंगाना
- भांभरवुं(०) अ० कि० गायका बोल्ला; भांभरुं(--ळुं)(०) वि० खरा खारा (२) स्वादरहित; बदखायका
- भिल्लारचोट वि॰ भिखारी जैसा;फ़क़ी-राना(२)भुक्खड़; टुकड़गदा
- भित्तारण स्त्री० निसारिन; निसारिनी भित्तारवेढा देखिये ' भिक्षारीवेडा '
- भिस्तारी वि०(२)पुं० भिसमंगा;भिसारी भिस्तारीवेडा पुं० व० व० भिस्तारीके औसा बर्ताव;भिक्षावृत्ति [भीगना भिस्तावुं अ० कि० 'मीजवुं' का कर्मणि;
- भिडाववुं अंध किंध का अनु का कमाल, भिडाववुं संव किंध 'भीडवुं' कियाका प्रेरणार्यक (२) लगाना; कसना; उदाव 'बटन भिडाव्यां नथी ' (३) दबाना; गले लगाना (४) उलझनमें डालना; घबराना (५) बेर कराना; लढ़ाना (६) घमकाना; डौटना
- भिडावुं अ० कि० 'भीडवुं' कियाका कर्मणि (२) जकड़ा जाना; पकड़में जाना; संकटमें आ पड़ना (३) भार या दाबके नीचे आना; दबना मिलामुं न०, (-मो) पुं० भिलावां मिल्लु पुं० खेलका साथी; पिट्ठू भिस्ती पुं० भिइती; सक्का

- भिषयां न॰ छाल या चमड़ीका कडा छिलका; सुरंड; पपड़ी
- **भीजववुं** स॰ कि॰ भिगोना
- भीजवुं अ० कि० पानीसे तर होना; भीगना; गीला होना
- भीड स्त्री० भीड़; मजमा (२) कठिनाई; तंगी; भीड़; संकट (३) पुं० लकड़ीको पकड़में रखनेका बढ़ईका एक औषार; शिकंजा । [-टाळवी, भांगवी == मुश्किल्के समय मदद करना। -पडवी == भीड़, संकट पड़ना.]
- भीडवुं स० कि० बंद करना; भिड़ाना (दरवाजा) (२) लगाना; कसना (बटन आदि) (३) दबाना; भेंटना (४) अ० कि० जुझना; लड़ना
- भोतर न० अंदरका हिस्सा; भीतर(२) दिल; भीतर(३)अ० अंदर; भीतर भोनाब: स्त्री० तरी; नमी
- भीवुं वि० तर,गीला,भीगा हुआ; आर्द्र (२)क्याम; सौवला; उदा० 'भीने वान '। [-संकेलवुं == किसी बात,जाँच, घटना या मामलेको आगे बढ़नेसे रोक देना; बात मारना.]
- भीर पुं० खेलका साथी; पिट्ठू
- भीलगी स्त्री० भील जातिकों या भीलकी स्त्री; भीलनी
- भौगबुं न० देखिये 'भिगडुं'
- भौंखवनुं स० कि० भिगोना
- भौंजवुं अ० कि० गीला होना; भीगना भौंजाववुं स० कि० भिगोना
- भौंजाबुं अ० फि० गीला होना; भीगना
- भोंडी स्त्री० मोइया (२) उसकी छालके निकाले हुए रेशे जिनकी रस्सी बटते हैं मींडो पुं० एक पौषा; मिडी (२) उसका फल; सिडी (३) बाघा; रुकावट (४)

-	-
म	R

भूत

151[001] [[ $-1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 100$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $1000$ (1001 ) $= 1000$ (1001 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 ) $1000$ (1000 )	भात	इसर भूत
= गप हॉकना; बेपरकी उड़ाना (२) पच्चर अड़ाना; बाघा डालना.] भींत स्त्री॰ भीत; दीवार। [-ने कान हीवा = दीवारके भी कान होना। - भूसवी = रास्ता बिलकुरू भूलना; भटकना; उठटी राह चलना.] भींतपत्र न् ० विज्ञापनके लिये समाचार आदि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्र भींतियुं न॰ छोटी भीत-दीवार भॉंस इवी॰ दबाव; चाप; शिकंजा। [-मां लेखुं = दबाना; दबावके नीचे लाना.] भॉंसखुं स॰ फि॰ दबाना; कुचलना; चांपना; दबावके नीचे लाना.] भॉंसखुं ब॰ क्रि॰ भॉंसलुं ' कियाका भुखाळ्वुं वि॰ भुक्खड; देट् भूकर्षा भूकर्षा वि॰ भूक्खड; देट् भूकर्षा वि॰ भूक्खड; देट् भूकर्षा वि॰ भूक्खड; देट् भूकर्षा वि॰ भूक्लकुर्जेला आदी; भूलतकड़ भूरुर्या भूकारण् (-णी) स्त्री॰ भूलतुं का कर्मणि; भूलनाद वे॰ कि॰ ' भूलतुं का कर्मणि; भूलना; याद न रहना भूकार्व व॰ कि॰ ' भूलतुं का कर्मणि; भूत्वा वं १ पु॰ मूलावा; भ्रम; घोला। [मूलावामा पर्व कुं नेका कर्मणि; भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; घोला। [मूलावामा पर्व कुं का कर्मणि; भूत्वा वं १ पु॰ मूलना; मुलावा; भूत्वा कर्मणि; भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; घोला। [मूलावामा पर्व दुं भूलतुं का कर्मणि; भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; घोला। [मूलावामा पर्व न रहना भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; घोला। [मूलावामा पर्व न रहना भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; छोला। [मूलावामा पर्व न रहना भूत्वा वं १ पु॰ मूलादा; भ्रम; छोला। [मूलावामा पर्व न रहना भूत्वा वं भूता वि॰ भूता; बिलकुल भूता भूताव॰ भूत; बीता हुला; अतीत (२) कना हुला; घटित; रूप या अत्स्या	गप[छा.] ।[-वालवो, मारवो, मेलवो	भुंध न० देखिये 'भूंड '
<b>H</b> in tesho Hin; tlart [A shift giat = tlarta Hang to the field giat = trans field . Htt sincer 1 - Hing and the field and the field . Htt sincer 1 - Hing and the field an	≕गप हॉंकना; बेपरकी उड़ाना (२)	भू न० (बालमाषा)पानी। [पीतुं करवुं
<ul> <li>होवा = शीवारके भी कान होना।</li> <li>-भूसवी = रास्ता बिलकुल भूलना; मटकना; उलटी राह चलना.]</li> <li>भींतिय न रु वित्रापनके लिये समाचार आदि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्र मींतियुं न छोटी भीत-दीवार भोंसवुं न छोटी भीत-दीवार भोंसवुं न ह्वं टवाना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भींसवुं न कि दवाना; कुचलना; चींपना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भींसवुं स० फि० दवाना; कुचलना; चींपना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भींसवुं भ० फि० दवाना; कुचलना; चींपना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भींसवुं भ० फि० दवाना; कुचलना; चींपना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भींसवुं भ० फि० 'भींसवुं 'कियाका चौंपना; दवावके नीचे लाना.]</li> <li>भूंका पुं व् च्रेर; बुरादा ! [भूका कार्ड लगाना [कर्मणि; दवना भोंसायुं अ० फि० 'भींसवुं 'कियाका मुंहात् वि० भूक्सड; देट मुंहात् (-र) गोष्ठ वैंगन; भंटा; भटा मुंख्य्यां बुल्व्यां वि० भूक्सड, (२) जो भुल्वं में सुछवर्ण (-णी) स्त्री० मुलावा; भ्रम मुंख्यां वि० भूलकंकड् (२) जो भुलविमें डाले [भुलावा; भ्रम; भूल्वाना मुंखावा व् वरिक 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा व वर्कत 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा व वर्कत 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा दे ज भूलतं 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा व वर्कत 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा व वर्कत 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा व वर्कत 'भूलवुं का कर्माण; भूल्वा पुं ज भूलावा; भ्रम; घोखा। [भुलावामां पढवुं = भूलावेमें पडना; भूताव व कर्कि 'मूसवुं 'का कर्माण भूताव व कर्कि ' भूसवुं 'का कर्माण मुत्तां वुं क क्रिं 'मूसवुं 'का कर्माण भूत्वां व कर्कि 'मूसवुं 'का कर्माण भूतां व वर्कत 'मूसवुं 'का कर्माण भूतां व वर्कत ' मूसवुं 'का कर्याण भूतां व त्वक्त ' मूसवुं 'का कर्माण भूतां व वर्कत ' मूसवुं 'का कर्माण भूतां व त्वकत ' मूसवुं 'का कर्याण भूतां व यक्तित त्या; क्या; वर्ता त्या; भूरोल् भूतां त्वा हुया; घटत; रूप या अतस्था भूतां त्वा हुया; घटत; रूप या अतस्था भूतां त्वा हुया; घटत; रूप या अतस्था भूतां त्वा हुया; घटत; रूप या अतस्था</li> </ul>	पच्चर अझाना; बाघा डालना.]	<b>≕ नवजात शिशुको पानीमें डुवाकर</b>
होवा = दीवारके भी कान होना। $(2)$ अर्थंसिद्ध हुए विना लौट नाना;-भूलवी = रास्ता विलकुल भूलना;साला दी विज एतरा विलकुल भूलना;साला ही कारेट नाना;भटकना; उलटी राह चलना.]भीतियं न० छोटी राह चलना.]भूकरी हनी० बुकनी; सुरका; वूर्णभादि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्रभूकरी स्त्री० बुकनी; सुरका; वूर्णभादि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्रभूकरेभूका पु० ब० व० वूर-वूर 1 [-ऊडभादि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्रभूकरेभूका पु० ब० व० वूर-वूर 1 [-ऊडभादि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्रभूकरेभूका पु० ब० व० वूर-वूर 1 [-ऊडभांस दी० दवाव; भार; दिकजा। [-माजषा = चूर-वूर 1 ता; नष्ट होनासंस ख त० क० दवाना; कुचलना;संर खवाणाना भूकेभूका ऊडी गया?भांस ख अ० क० ' भीसवु' कियाकाभूकरेभू वी० भूखन् दु दि० भूखा दि? इराता ! [भूका काईभुंखाळवुं वि० भूलखड; पेटूभूखा दी० भूखर दे दे दिर्ग भार?; भूखभूंखात्र वु व० भूलने आदी; भूलक्वकड़भूख स्त्री० भूखा(२)इच्छा; भूख ![-ऊईभूंखवुं वि० भूलतं हा आती; भूलक्वकडभूख स्त्री० भूख(२)इच्छा; भूख ![-ऊईभूंखवुं वि० भूलतं हा आती; भूलक्वड;भूकरभूंखवुं वि० भूलतेका आदी; भूलक्वड;भूकर खााा: भरपेट खाना ? विद्वभूंखवुं वि० भूलतेका आदी; भूलकमिलता (२)निराहार रहता; भूखभूंखवुं वि० भूलतं का कर्माण;भूकर्वा दि० भूखा (२) इच्छक; भूकरभूंछवां पु० मुलवं, भूलतं का कर्माण;म्रता वि० भूखा; विल्कुल भूखा;भूंछवां पु० भूलवं का फरणां;म्रता वि० भूता; वीता हुआ; अतीत (२)भूंछवां पु० भूलवं कर भूं कर्नाभूंखभूदा वि० भूदा; भूगले (२)भूंछवं वे कर्क ' भूलवुं 'का कर्माण;भूंबवे वा क्या तरा; भूगालभूंछवं वे कर्क ' भूलवुं 'का कर्माण;भूंबवे वि० भूखा; अल्कुल भूखाभूंछववुं वा प्रि कर्व ' का कर	भौंत स्त्री० भीत; दीवार। [- ने कान	मार डालना । –पीतुं जबुं = मर जाना
	<b>होवा</b> = दीवारके भी कान होना ।	(२)अयेसिदि हुए बिना लौट जाना;
भौतपत्र त्० विज्ञापनके लिये समाचार आदि दीवार पर लिखना; भित्तिपत्र भौतियुं न० छोटी भीतदीवार भौतियुं न० देवाना; द्वावके नीचे लाना.] भौतियुं न० दिनांता द्वावके नीचे लाना (२) गले लगाना [कर्मण; दवना गतादा [कर्मण; दवना भूको पुं० चूरा; बुरादा ! [भूका कार्ध गतादा: [भूको कार्ड गेया ? भूको पुं० चूरत; बाता हा गरे देखाना; भूकर्या भूछावयुं वि० भूछनेका आदी; भूछक्कड़ भूछावयुं व० भूठ भूछावा; भूछ भूछावयुं स० कि० 'भूछवुं का प्रेणायंक; भूछावयुं स० कि० 'भूछवुं का प्रेणायंक; भूछावय पं ० भूछावा; भ्रम; घोखा। [भूछावामा पढवुं = मुलावेमें पडना; भूछावा पं० मुछलान; भ्रम; घोखा। [भूछावामा पढवुं = मुलावेमें पडना; भूताव अ०कि० 'भूसवुं 'का कर्माण भूताव का क्रित्त (२) मुदा; बि० भूखा; वि० भूखा; वि० भूखा; विठ भूखा; विठ भूखा भूगोछ पाठा; भूगोछ (२) भूमाछे दीव० भूदा; बीता हुआ; अतीत (२ भूमोछतात्त्तः भूयोछ	–भू <b>लवी</b> = रास्ता बिलकुल भूलना;	खाली हाथ लौटना। –पीतो करवो =
aılfa zîara ve komeni; în freura mîta zîara de ali ze ure construite mîta zî ali ali ze ure construite mîta zi ali ali ze ure ze ali în ; acia ali în în în în în în în în în în în în în	भटकना; उलटी राह चलना.]	-
<b>HifnqinHifnqinHifnqinHifnqinBifnqiBifnqiHifnqiHifnqiHifnqiaaa</b> <t< td=""><td>भौतपत्र न्० विज्ञापनके लिये समाचार</td><td></td></t<>	भौतपत्र न्० विज्ञापनके लिये समाचार	
wite $\epsilon \pi l_0$ cala ; $\pi l_1$ ; $\pi m r r r r r r r r r r r r r r r r r r $	आदि दीवार पर लिखना ; भित्तिपत्र	
Rej = carri; caraa fit e ciri.](२) खानेसे साफ़: जाना; उदा० 'पांच सेर चवाणाना भूकेभूका ऊडी गया ' भूको पुं० चूरा; वुरादा ! [भूका काई त्याता [कर्मण; carri भूको पुं० चूरा; वुरादा ! [भूका काई नाक्षवा = तहस-नहस कर देता (२) भूको पुं० चूरा; वुरादा ! [भूका काई नाक्षवा = तहस-नहस कर देता (२) चाट-पॉछकर खा जाना.] भूको पुं० चूरा; वुरादा ! [भूका काई नाक्षवा = तहस-नहस कर देता (२) चाट-पॉछकर खा जाना.] भूख स्त्री० भूख(२)इच्छा; भूख ![-ऊई जबी = भूख मर जाना । -काढवी = गूहो(-ठ्ठो) पुं० मक्केकी हरी बाल; भूछ स्त्री० भूलव देता (२) वहुत भूछ स्त्री वे० भूलक कुलेया; भूल- भूकया भूकया मुलायां दि० भूलक कुलेया; भूल- भूछयां भूछतावा; अप भूछावा प्रिंग भूछत्वा; भूछ भूछावा प्रिंग भूछत्वा; भूछ भूछावा प्रिंग भूछत्वा; भूछ भूछावा प्रिंग भूछत्वां का प्रेलायां भूछतावा; भूम भूछावा प्रिंग भूछत्वां का प्रेलायां भूछतावा; भूम भूछावा प्रिंग भूछत्वां का प्रेलायां भूछतावा; भूम भूछावा प्रिंग भूछत्वां का प्रेलायां भूछत्वां का भूछात्वां भूछतावा; भूम भूछावा प्रेल भूछत्वुं का भूमणि; भूछावा प्रेल भूछत्वुं का कर्मणि; भूछावा खाला लाना.] 	भौंतियुं न॰ छोटी भीत-दीवार	
NiktegResCaleni; symoni; atturi; calaah flte crini(2) no countinResResRes $atturi;$ calaah flte crini(2) no countin $atturi;$ calaah flte crini(2) no countinResResRes $atturi;$ calaah flte crini(2) no countin $atturi;$ calaah flte crini(2) no countinResResRes $atturi;$ calaah flte crini(2) no countin $atturi;$ calaah flte crini(2) no mailResResResNikkagAn flteAtturiResResResResNikkagAn flteAtturiResResResResNikkagAn flteAtturiAtturiResResResNikkagAn flteAtturiResResResResNikkagAn flteAtturiResResResResNikkagAn flteAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiAtturiResResResResNikkagAtturiNikkagAtturiResResResNikkagAtturiNikkagAtturiResResRes <td>भोंस स्त्री० दबाव;चाप;शिकजा। [-मां</td> <td>4, 4, ,</td>	भोंस स्त्री० दबाव;चाप;शिकजा। [-मां	4, 4, ,
चांपना; दबावके तीचे लाना (२) गले लगाता [कर्मणि; दबना भूको पु॰ चूरा; बुरादा ! [भूका काई लगाता [कर्मणि; दबना भाषायां = तहस-नहस कर देना (२) चाट-पोंछकर खा जाना.] भूखाळवुं वि॰ भूक्खड़; पेटू भूख स्त्री॰ भूख(२)इच्छा; भूख ! [-ऊई भूख स्त्री॰ भूख (२) चाना : भूख भूछ मुलावणी स्त्री॰ भूछ मुलेयां भूछ मुलावणी स्त्री॰ भूछ मुलेयां भूछ मुलावणं (-णी) स्त्री॰ भूछ मुलेयां भूछ मुलावणं (-णी) स्त्री॰ भूछ मुलेयां भूछन हां याद न रहना भूछावां पु॰ भूछावा; भूछ का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछ का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछा का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछ का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछा का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछा का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछा का प्रेरणायंक; भूछावां पु॰ भूछावा; भूछात्र या भूछावां पु॰ भूछावा; भूछात्र या भूछावां पु॰ भूछावा; भूछात्र या भूछाछ पु॰ भूछाता र भूछात्र या भूछात्र या अत्र प्र भूछाछ पु॰ भूछाता योला; भूगोल (२) भूगोल्यामां पढवुं = भुलावेमें पडना; भूषाछ पु॰ भूछाता योला; भूगोल (२) भूगोल्यामां भूछाता । [-मारवो = भूद पड़ना.] भूत वि॰ भूता ; घटित; रूप या अत्र स्था भूद यहना.] भूत वि॰ भूता ; घटित; रूप या अत्र स्था भूद यहना.]	लेवुं = दबाना; दबादके नीचे लाना.]	
wittitajwittitajwittitajwittitajwittitajwittitaj $\exists a \circ y_{attas}; dz \forall gatas; dz wittitaj(-zoi)ujoutashaft gtl ano;wal = yata ut onni lwittitajy_{gat}(-zoi)ujoutashaft gtl ano;wittitajy_{gat}(-zoi)ujoutashaft gtl ano;wittitititititititititititititititititi$	चौंपना; दबावके नीचे लाना(२)गले	
yænzig $q = y = q = q = q = q = q = q = q = q = $		
ygg1(-zc)) $yo$ $uestimeygg1(-zc)) youestimeygg1(-zc)) youestimeyg21(2) vestimeuestimeyge1(2) vestime$	भौंसायुं अ० कि० 'भींसवुं' कियाका	
$y_{gr1}(z)$ गोर्ल बैंगन; भंटा; भटाउद्रेसकर खाना; भरपेट खाना (२) बहुत $y_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} y_{grave} i$ $y_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} i$ $y_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} i$ $q_{grave} i$ $y_{grave} y_{grave} i$ $q_{grave} i$ $q_{grave} i$ $y_{grave} i$ $q_{grave} i$ $q_{grave} i$ <		
y स्व कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण कर्ण	भुट्टो (-ठ्ठो) पुं० मक्केकी हरी वाल;	
भुलभुलामणी स्त्री० भूलभुलैया; भूल- भुलैयानिकालना। भूसे मरबुं = खाना न मिलना(२)निराहार रहना; भूख मिलना(२)निराहार रहना; भूख मिलना(२)निराहार रहना; भूख मिलना(२)निराहार रहना; भूख मरना] [(२)कंगाल भूखदेबिरादा(-स)वि०भुक्खड; भुक्का भूखदेबिरादा(-स)वि०भुक्खड; भुक्का भूखदेबिरादा(-स)वि०भुक्खड; भुक्का भूखदेबिरादा(२)कंगाल; तंगदस्त भूखदुं वि० भूखा(२)कंगाल; तंगदस्त भूखतुं का प्रेरणार्थक; भूखतुं व० कि० भूलवुं का प्रेरणार्थक; भूखना; याद न रहना भूलना; याद न रहना भूलावो पुं० भूलावा; भ्रम; घोखा। [भुलावामां पबवुं = भुलावेमें पड़ना; भूखतुं व० कि० भूसतुं 'का कर्मणि; भूलना; याद न रहना भूलावो पुं० भूलावा; भ्रम; घोखा। [भुलावामां पबवुं = भुलावेमें पड़ना; भूताव खाता.] भूसको पुं० कुरान; छल्लाँग।[मारवो= कूदना(२)साहस करना; कूद पड़ना.]निकालना। भूसे मरबुं = साता न मिलना(२)निराहार रहना; भूख भूखदेबारा (२)निराहार रहना; भूख भूखदेबारा (२)कंगाल; तंगदस्त भूखदुं वि० भूखा(२)कंगाल; तंगदस्त भूखदुं वि० भूखा(२)कंगाल; तंगदस्त भूखदुं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक; लालची (३) रारीब; भुक्खड; भुक्कड [-डांस, बंगाळी = बहुत भूखा.] भूचोल्ता गोला; भूगोल (२) भूगोल्तास्त्र: भूगोल भूगोल्तास्त्र: भूगोल भूगोल्तास्त भूगोल भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२) बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था	भुट्टा (२)गोल बैंगन; भंटा; भटा	
मुलंगांमिलना (२) निराहार रहना; भूखंमुलगणं नि० मुलावा; अममरना.][ (२) कंगालमुलामणं वि० मुलक्कड़ (२) जो भुलावेमेंमरना.][ (२) कंगालमुलामणं वि० मुलक्कड़ (२) जो भुलावेमेंभूखडीबारदा (-स) वि० मुक्कबड़; भुक्कडमुलावां वि० मुलाना; भुल्वानाभूखडी बारदा (-स) वि० भुक्कबड़; भुक्कडमुलावां वि० भूलतुं का प्रेरणायंक;भूखदी वि० भूखा (२) कंगाल; तगदस्तमुलावां वा कि० 'भूलवुं का प्रेरणायंक;भूखमरो पुं० भूखा (२) कंगाल; तगदस्तमुलावां वा कि० 'भूलवुं का प्रेरणायंक;भूखमरो पुं० भूखा (२) किंगाल; तगदस्तमुलावां पुं० भूलावा; भ्रम; घोखा।मूख्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;मुलावो पुं० भुलावा; भ्रम; घोखा।[-sitस, बंगाळी = बहुत भूखाः]मुलावां खालाः.]भूखपुं वि० भूखा; बिलकुल भूखामुसावां अ०कि० ' मूसवुं 'का कर्मणिभूचोळ पुं० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२)मुसावां अ०कि० ' मूसवुं 'का कर्मणिभूगोळशास्व; भूगोलमुसावां अ०कि० ' मूसवुं 'का कर्मणिभूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२)मुस्को पुं० कुदान; छल्लौंग।मारवो=कूदना(२) साहस करना; कूद पड़ना.]भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२)		
भुलवण (-णी) स्त्री० भुलावा; अममरना.][(२) कगालभुलामणुं वि० भुलकरु (२) जो भुलावेमेंभूखदीबारश (-स) वि०भुक्खड़; भुक्करभुलावां वि० भुलाना; भुलवानाभूखदीबारश (-स) वि०भुक्खड़; भुक्करभुलावां वि० भूलाना; भुलवानाभूखदी वि० भूखा (२) कगाल; तगदस्तभुलावां वा ० कि० भूलवुं का प्रेरणार्थक;भूखदी वि० भूखा (२) कगाल; तगदस्तभुलावां अ० कि० भूलवुं का कर्मणि;भूखपुं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलना; याद न रहनाभूलग्वा (३) सरीब; भुक्लड़; भुक्कडभूलगां पुं० भुलावा; अम; घोला।[-डांस, बंगाळी = बहुत भूखा.]भिछावामां पडवुं = भुलावेमें पडना;भूक्यपुंपाक्ष्युं वि० भूखा; बिलकुल भूखाभुसावुं अ० कि० भूलवुं का कर्मणिभूक्यपुंपाक्ष्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलनां पुं० भुलावा; अम; घोला।[-डांस, बंगाळी = बहुत भूखा.]भूकारावां पा रा न रहनाभूक्यपुंपाक्ष्युं वि० भूखा; बिलकुल भूखाभूकारावां पुं० भुलावा; अम; घोला।भूक्युंपाक्ष्युं वि० भूखा; बिलकुल भूखाभूतां खाला ता.]भूमाले पुं० कुदान; छल्लौंग। [-मारवो =भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२)भूत वि० भूत; घीता हुआ; अतीत (२)बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था	भुलभुलामणी स्त्री० भूलमुलेया; भूल-	
भुलामणुं वि० भुलकरु (२) जो भुलावेमें डाले [भुलाना; भुलवाना भुलाववुं स०कि० 'भूलवुं का प्रेरणार्थक; भुलाववुं स०कि० 'भूलवुं का प्रेरणार्थक; भूलावुं व० कि० 'भूलवुं का प्रेरणार्थक; भूलावुं व० कि० 'भूलवुं का प्रेरणार्थक; भूलावों पु० भूखसे मरना; भुलमरी मूल्या; याद न रहना भुलावो पु० भुलावा; अभ; घोखा। [भुलावामां पबवुं = भुलावेमें पड़ना; घोखा खाना.] भूतावुं व०कि० 'मूसवुं 'का कर्मणि भूलवुं का प्रेरणार्थक; भूक्तबुं (२) कि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक; लालची (३) रारीब; भुक्खड; भुक्कड लालची (३) रारीब; भुक्खड; भुक्कड आक्रि (३) रारीब; भुक्छ हुच्छक; भूकाड<	-	मिलना(२)निराहार रहना; भूखों
डाले[भुलाना; भुलवानाभूखई वि० भूखा (२) कंगाल; तगदस्तभुलाववं स० कि० 'भूलवु'का प्रेरणायंक;भूखमरो पु० भूखसे मरना; भुलगरीभुलावं अ० कि० 'भूलवु'का कर्मणि;भूखमरो पु० भूखसे मरना; भुलगरीभूलगा; याद न रहनाभूख्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलगा; याद न रहनाभूख्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलगा पु० भूलावा; भ्रम; घोखा।मूख्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलगा पु० भूलावा; भ्रम; घोखा।[-site, बंगाळी = बहुत भूखाः]भूलगा खाला खाला.]भूखा खाना.]भूसावुं अ० कि० ' भूसवुं 'का कर्मणिभूच्युंपाख्युं वि० भूखा; खिलकुल भूखाभूतावं अ० कि० ' भूसवुं 'का कर्मणिभूचोळ पु० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२)भूसको पु० कुदान; छल्जाँग।मारवो =कूदना(२) साहस करना; कूद पड़ना.]भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२)		
भुलाववं स०कि० 'भूलवुं का प्रेरणायंक;भूसमरो पु० भूससे मरना; भुलमर्भुलावं अ० कि० 'भूलवुं का कर्मणि;भूस्यग्रं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलावं अ० कि० 'भूलवुं का कर्मणि;मूस्यग्रं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;भूलावं पु० भूलावा; अप्र; घोला।[-site, बंगाळी = बहुत भूखाः]भिलावामां पडवुं = भुलावेमें पडना;भूस्यग्रं वि० भूखा; बिलकुल भूखाभुलावा साना.]भूम्यांद्र वि० भूखा; बिलकुल भूखाभूलावा साना.]भूमावुं अ० कि० ' भूसवुं 'का कर्मणिभूमावं अ०कि० ' भूसवुं 'का कर्मणिभूम्योळ पु० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२)भुसावं अ०कि० ' मूसवुं 'का कर्मणिभूगोळ पु० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२)भुसको पु० कुदान; छल्गँग।मारवो =कूदना(२) साहस करना; कूद पड़ना.]बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था	भुलामणुं वि० भुलक्कड़ (२) जो भुलावेमें	भू <b>लडीबारज्ञ (स)</b> वि०भुक्लड; भुक्कड
भुलावुं अ० कि० 'भूलवुं का कर्मणि; भूलना; याद न रहनामूल्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक; लालची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ लालची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ लालची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ लालची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावो (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुलावची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुल्डची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुल्डचुं वि० भूखा; बिलकुल भूखा भूगोळ पुं० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२) भूसावुं अ० कि० ' मूसवुं 'का कर्मणि भूसको पुं० कुदान; छलाँग । [-मारवो = कूदना (२) साहसकरना; कूद पड़ना.]मूल्यां वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक; लालची (३) सरीब; भुक्खड़; भुक्कड़ मुक्छकृ भूक्वड़ी (२) सुद्ध मुक्छकृ भूका विलकुल भूखा भूका विलकुल भूखा भूका वुं० कुदान; छलाँग । [-मारवो = कुद पड़ना.]	डाले [भुलाना; भुलवाना	भू <b>सद्दं</b> वि० भूखा(२)कंगाल;तंगदस्त
भूलना; याद न रहना भुलावो पुं० भुलावा; भ्रम; घोखा। [भुलावामां पडवुं = भुलावेमें पड़ना; घोखा खाना.] भूसावुं अ०फि० 'मूसतुं 'का कर्मणि भूसको पुं० कुदान; छलौंग। [-मारवो = कूदना (२) साहस करना; कूद पड़ना.] जिल्लची (३) गरीब; भूक्लड़; भुक्लड़ लालची (३) गरीब; भुक्लड़; भुक्लड़ [-siस, बंगाळी = बहुत भूखा.] भूस्युंपाइय्युं वि० भूखा; बिलकुल भूखा भूमोळ पुं० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२) भूसको पुं० कुदान; छलौंग। [-मारवो = कूदना (२) साहस करना; कूद पड़ना.]		
भुलावो पुं० भुलावा; अभ; घोला। [भुलावामां पडवुं = भुलावेमें पडना; घोला लाना.] भुसावुं अ०फि० 'मूसवुं 'का कमंणि भुसको पुं० कुदान; छलौंग।[-मारवो = कूदना(२)साहस करना; कूद पड़ना.] म्राहे का; घटित; रूप या अवस्था		मूर्स्युं वि० भूखा (२) [ला.] इच्छुक;
[भुलगवामां पडवुं = भुलावेमें पड़ना;       भूल्युंपाख्युं वि० भूला; बिलकुल भूला         घोला लाना.]       भूगोळ पुं० पृथ्वीका गोला; भूगोल (२)         भुसावुं अ०फि० ' मूसवुं 'का कर्मणि       भूगोल्डशास्त्र; भूगोल         भुसावुं अ०फि० ' मूसवुं 'का कर्मणि       भूगोल्डशास्त्र; भूगोल         भुसको पुं० कुदान; छलौंग। [-मारवो=       भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२)         कूदना (२) साहस करना; कूद पड़ना.]       बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था		
भाषा साना.] भूगोळ पुं० पृथ्वीका गोला;भूगोल (२) भुसावुं अ०क्रि० 'मूसवुं 'का कर्मणि भूगोल्शास्त्र; भूगोल भुस्को पुं० कुदान; छलौंग। [-मारवो = भूत वि०भूत; बीता हुआ; अतीत (२ कूदना (२)साहस करना; कूद पड़ना.] बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था		
भुसाबुं अ०फि॰ ' मूसवुं 'का कमंणि भूगोलशास्त्र ; भूगोल भुस्को पुं० कुदान ; छलौंग । [-मारवो = भूत वि० भूत ; बीता हुआ ; अतीत (२ कूदना (२)साहस करना ; कूद पड़ना ] बना हुआ ; घटित ; रूप या अवस्था	[भुलावामा पडवु = भुलावेम पडना;	
भुस्को पुं० क़ुदान; छल्जौँग । [-मारवो= भूत वि० भूत; बीता हुआ; अतीत (२ कूदना (२)साहस करना; कूद पड़ना.] बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था		भूगोळ पु०पृथ्वीका गोला ; भूगोल (२)
कूदना (२)साहस करना; कूद पड़ना.] बना हुआ; घटित; रूप या अवस्था		
नुगळ्। –ळः, –ळु, दाखय भूगळ आदि विशेषका प्राप्त ; भूत ; उदा०े अगभूत		
	चुगळः (−−∞३,−∞ु) दाखय भूगळ आदि	विशेषका प्राप्त ; भूत ; उदा० ं अगभूत;

# मूँतपलीत

943

<u>^</u>	<u></u>
धनीमूत' आदि (२) न० पंच महा-	= मरमाना (२) वशीकरण करना;
भूतोंमेंसे कोई एक तत्त्व; भूत (४)	जादू डालना. ]
प्राणी; भूत (५) प्रेत; पिशाच; भूत	भूराकोळुं त्र॰ देखिये 'भूरुंकोळुं'
(६) भूतकी तरह पीछे घूमनेवाला;	भूरियुं वि० नीला ; आसमानी (२) गोरा
भूत बनकर पीछे लगनेवाला (टोहिबा;	भूरंकोळुं न० भूरा कुम्हडा; पेठा
खुफ़िया) (७)ग़लत खयाल; वहम;	भूं वि० देखिये 'भूरियु'
आवेश; धुन। [ आषतुं = भूतकर	भूल स्त्री० भूल;चूक; खता; ग़लती;
आवेश होना; भूत छगना (२)	खामी; अशुद्धि; दोष; गफ़लत (२)
भूतावेश जैसी जिद या घुन लगना;	ठना जाना (३) विस्मृति (४)
किसी बातका भूत सवार होना।	गलतफहमी । [ <b>–आववी = चू</b> क होना ।
-काड्यूं - प्रेतवाघा हटाना (३) सवार	🖙 <b>सावी == मूरु,</b> गलती करना;
हुई घुन, जिद या ग्रलत खयाल दूर	यूकना। <b>⊷पढबी =</b> भूलना; यूक
करना। –गयुं ने पलित जाग्युं 😑	होना । <b>~मां रहेर्वु = ग़</b> फ़लतमें रहना.]
भूल्हेसे निकलकर भट्ठीमें पड़ना।	<b>भूलचूक स्</b> त्री० भूलचूक । [ं <b>—सेवो देवी</b> ≕
<b>– भरावुं =</b> वहम, घुन आदिका मूत	भूलचूक लेनी देनी.]
सवार होना। – वळगवुं = भूतावेश	भूलथाप स्त्री० भूल; बेखबरी; ग़फ़लत
होना.]	भूलवर्षु स॰कि॰ भुलावा देना ; भुलाना
भूतपलीत न॰ भूत; पलीत; प्रेत(२)	भूलवुं अ०कि० ग़लती करना; याद न
बेडौल आदमी; भोड़ी शकलवाला	रहना; भूलना; भूल जाना। [भूल्या
भूतावळ (ळी) स्त्री० भूतोंका समूह	रयांथी फरी गणवुं ं की हुई ग़लती
भूमव्यरेला (-पा) स्त्री० विषुवरेखा	पर दुःख न करके कॉम फिरसे
भूमंडल (-ळ) न॰ भूमंडल; घरती	शुरू करनाः]
भूमि (-मी) स्त्री० भूमि; घरती;	भूर्लुं वि० रास्ता भूला हुआ; भटका
पृथ्वी (२) जमीन; भूमि (३) देश;	हुआ; मूला (२) भूला-भटका (३)
प्रदेश (भारतभूमि)	विस्मरणशील; भूलना । [ – पडवुं =
भूमिका स्त्री० भूमिका; जमीन; घरती	भूला पड़ना; रास्ता भूल जाता; भटकना ]
(२) स्यान; भूमि (३) ओहदा; पदवी	भूषोः पुं० पानीसे बना हुआ गहरा गड्ढा
(४) मूल; उत्पत्तिस्यान (५) नटकी	्(२) एक कीड़ा; गुबरैला
वेशमूथा; अभिनेताका पार्ट; नग्टकका	भूबो पुंब झाड़-फूँक करनेवाला; ओझा
पात्र; भूमिका (६) प्रथादिकी प्रस्तावना; भूमिका	भूबिर स्त्री० अंतरीप; रास
भूमिदाह पुं० (शवको) दफ्रन करना	भूसको पुं० ऊँचाईसे नीचे कूदना; कुदान
भूरकी स्त्री॰ मंत्रित भस्म (२)जादूमंत्र	भूसवुं स०कि० साफ़ करना; पोछना
(३) मोहकारक प्रभाव; जादू;	भूसुं न० चोकर (२) चबेना; चना-
(२) नाह्यत्पन नगल, जापू, मोहिनी। [-नालवी, भभराववी	भूषु गण् परिषर (२) पर्याः, प्याः, युगाः क्याः व
and I many address	agard as -/ as a hard

-		÷
म		Γ.
	1 N	

<u>k-3</u>	
जानकारी भरना । <i>–</i> भराषुं = दिमास	भेजनारी वि० संन्यास ग्रहण करनेवाला
आसमान पर होना; इतराना; गर्वसे	<b>भेशवटी</b> पुं॰ संन्यास
ऐंठना (२) वहमका मूत सकार होना.]	भेग पुं० मिलावट; मिश्रण
भूंकमुं अ०कि० गघेका बोलना; रेंकना	<b>मेमामेगुं अ० साथ-</b> साथ [मिलाजुला
भूंगळ स्त्री० किवाड़ोंको बन्द रखनेका	भेगुं इकट्ठा; एकत्र (२) मिश्र ; संयुक्त ;
एक लंबा आड़ा डंडा;बेंबड़ा; अरगल	भेषो पु॰े देखिये 'भेंचो'
<b>भूंगळ</b> स्त्री० एक <b>बा</b> द्य	भेज पुं० नमी; तरी। [आवमो,
भूंगळी स्त्री॰ पोली नली (२) फुकनी;	लागवो = सील या हवाको नमीका
फ़ुँकनी (३) लोहे या घातुका स्रोल (४)	फैलना, लगना.]
मरीजनो जौचनेका डाक्टरका साधन;	<b>भेजागेब</b> (गॅ) वि० सनकी; पागल
'स्टेथेस्कोप' [भोपा(२)चिमनी	भेखुं न० भेजा; मरज; दिमारा। [भेगानुं
भूंगळुं न० नलाकार आकृति; भोंपा;	बहीं यबुं = सरुत मेहनतसे दिमाग्रका
मूंजर स्त्री० सूअरनी और उसके बच्चे	थक जाना; दिमाग खाली होना । – <del>म</del> ा
भूंड न० सूअर; सूकर। [नी भूंजर =	कतरन् = समझना; खयालमें आना।
स्त्रीके बहुत (छोटे छोटे) बच्चे;	<b>-सबाई अधुं =</b> दिमास चट हो जाना ।
सूअरनीके बच्चे.]	बसब्ं = पागल होना (२) विचार-
भूंडण स्त्री० मादा सूअर; सूअरनी	शक्ति नष्ट होना ।स्नाई जबुं = मग्ज
मूंबाई स्त्री० खराबी;बुराई(२)अनवन	सा लेना;मखा चाट जाना। <del>- वस</del> -
भूंडापो पु॰ बुराई (२) बुराईका कलक	<b>कवुं =</b> पागल होना ; सनकना । <b>ठेकाणे</b>
भूंडाद्म स्त्री० देखिये (भूंडाई)	<b>न होवुं =</b> विवेक-मर्यादाका खयाल न
भूंबुं वि० खराब; बुरा; दुष्ट(२)द्वेषी	रहना; दिमाग़ ठिकाने न होना (२)
(३) बीभत्स। [बोखवुं = निदा-	दिमाग्र सातवें आसमान पर होना.]
बदगोई करना (२) गाली देना.]	<b>भेट स्</b> ती० भेंट;मुलाक़ात;मिलन(२)
<b>भूंसवूं</b> स० किं० पोंछना; <b>धूल, दा</b> ग	भेंट;नजार(३)कंमरबंद;र्केटा
आदि साफ़ करना	<b>भेटवुं</b> स० कि० आलिंगन देना; गले
भूंसावुं अ० कि० ' भूंसवुं 'का कर्मणि	लगाना; भेंटना [प.] (२) मुलाकात
भेस पुं०; स्त्री० देखिये 'वेष'; मेस;	ह्येना; मिलना; र्भेट होना (३) लड़नेके
पहनावा (२)सन्यासीका भेस; सन्या-	लिए इकट्ठा होना
सीकी दीक्षा। [-ज्वतारवो = संन्या-	भेटो पुं० भेंट; मिलन(२)आलिंगन
सीका भेस बदल देना; फिरसे संसारी	भेद पुं० भेद; बिलगाव; अंतर(२)
बनना। <b>वरको</b> ⇔ संन्यासी बनना।	प्रकार; भेद; विभाग (३) छिपी हुई
-लेवो=देखिये 'मेख धरवो' (२)	बात; रहस्य; भेद (४) राजनीतिके
किसी व्येयके पीछे सर्वस्व त्यागकर	चार उपायोमेंसे एक; भेद (५)
्रुम जाना.] [किनारा; करारा	फूट; भेव (६) छेदन; चीरा; भेद।
मेकड स्त्री० ढेला (२) कगार; ऊँथा	<b>[आपवो = रह</b> स्य या छिपी हुई

,

भाषत	

भौंयतीय

भोगी वि० भोग करनेषाळा; भोगी
(२) पुं० भोग करनेवाला; भोगी
(३)आशिक; प्रीतम; भोगी; निषया-
सक्त (४) भौरा (५) सौंप, भोगी
भोजक पुं० उपभोग करनेवाला; भोगी
[प.] (२) जैन मंदिरका गवैया
भोजलुं न० बंदर; मर्कट
भोजाई स्त्री० मौजाई; भानी
भोट वि० (२) पु० बैवकूफ़; बुद्धू; मूढ़
भोटको पु॰ मिट्टीकी सुराही ; कुंजा ; कूजा
भोटंगडी स्त्री० एक वनस्पति ; भटकटँया
भोटीलुं न॰ पिल्ला
<b>મોઠપ, भोठું</b> देखिये 'भोंठम', 'मोंठुं'
<b>भोड</b> ़वि० गदराया हुआ
भोबो पुं० पेट; गढ़ा(तुच्छकारमें)
भोषाळुं न॰ पोल, निःसारता (२)
डोंग्। [ <b>–काढवुं =</b> पोल ुकोलना।
—नीकळवुं ⇒ पोल खुलना.]
भोमियण स्त्री० जानकार स्त्री
भोमियुं विश्व जानकार
<b>भोमियो पु० जानकार(२) रास्ता बता-</b> नेवाला; 'गाइड'
भोर (भाँ) पुं० घासके पूलोंसे भरा
हुआ छकड़ा (२) गाड़ेमें लादी जाय
उतनी राशि
भोरिंग पुं० बड़ा नाग
<b>मोरिंगडी</b> स्त्री० एक वनस्पति;
भटकटैया; कंटकारी भोग कि प्रोफ्ट करा क्या करन
भोस्ठ वि० पोला; फूला हुआ ; बहुत मोटा; उदा० 'जाडुं भोल '
मोळपण न० मोलापन [भरमाना
मोळवर्षु स॰ कि॰ अमर्मे डालना; मोळियूं वि॰ सीधा;निष्कपट; मोला
માાળખુાવર સાવા;ાનગ્લપદ; માલા

भोळं वि० भोला; सीधा भोंकवं स॰ कि॰ देखिये 'भोकवुं 🖉 **মাঁৱন**( মাঁ০ ) स्त्री ০, **মাঁठা मण** ( মাঁ০ ) न॰ कर्म: झेंप भोंटुं(भां०) वि० शमिदा; सेंपू भोंच (भाँ०) स्त्री० जमीन; भुमि। **[-आववी =** नयी चमड़ी आना;घावका भर जाना; खुरंड आना। **–समधी**। **सोतरवी =**जमीन देखना; शर्मसे जमीन क्रोदना; लज्जित होना (२) आलसीयनके लक्षण जताना । <del>- वंक्षाव</del>ं = मरणासन्न होना (२) बहुत भुझ लगना । --**नाववं =** मरणासश्र व्य-क्तिको साटसे उतारना। -- **पर पत्रे न** मुक्तवो = गाँव धरती पर न रखना; घमंडसे चुर रहना।-बराबर करवुं ; केनुं करबुं 🛎 भुरकूसः निकालना ; पीटकर भरता बना देना (२) अमीदोज कर देना। –भारे पडवी (नासतां) = इस तरह थिर जाना कि भागते न बनना । --मां क्रमबुं, होषुं = छोटी उम्र होना (छोटी उम्रवाले चालाक या युक्तिबाज मनुष्यके लिए प्रयुक्त होता है)। --मां पेसबुं = लज्जित होना; जमीनमें गड़ जाना। --सुंबबी = मृत्युशय्या पर होना। भौंवे उता-रषुं, नासथुं, सेषुं = साटसे उतारना.] भॉग्तळियं (भॉ॰) न० मकानका बिल-कूल नीचेका भाग भौंयरं(भाँ०) न० भौरा; तहखाना;

भुईहरा [स्त्री० मूँगफली भॉर्वीझ (--झीं,-सिं,-सीं) ग (मॉ०)

**3 4 7** 

Ŧ,

#### 440

### म

म पुं० 'प' वर्गका अनुनासिक मकदूर स्त्री० देखिये 'मगदूर' मकबरो पुं० क्रत्रिस्तान(२)मकबरा मकरकूबी स्त्री० उछल-कूद; ऊधम मकलाव् अ०कि० मुसकराना; मुलकना [प.] (२) खूब खुश होना मकाई स्त्री०; पुं० मनका; मकई मकाईडो (--- दो) डों पुं० मक्लेकी बाल; 'मंकोडी ' आदि भुड्रा मकोडी स्त्री०, (-डी)पुं० देखिये मक्कम वि० पक्का; अटल; दृढ़ मसमल न०; स्त्री० मखमल (कपड़ा) मस्त्रीचूस वि० मक्क्षीचृस; कंजूस मग पुंध मूँग। [--नुं नाम मरी (न देवुं, पाडवूं) = जवान न खीलना; कुछ न बोलना (युक्तिसे या किसी रहस्यसे)। (मों मां) मग ओरवा, भरवा= जवान पर ताला लगाना; मौनाव-लंबन करना.] मन पुं० मार्ग; मग [प.] (२)स्त्री० ओर; तरफ़(३)अ० ओर; दिशामें मगज पुं० बेसनकी एक भिठाई मगज न॰ मख; भेजा (२) पुं॰ फलकी

भगव नव मध्य; मजा (२) पुरु फलका भिरी; गूदा; मरवा (-कहपुं करतुं नवी ⇔दिमाग काम नहीं करता; अक्ल काम नहीं करती है (२) दिमाग चक्कर काटता है (२) पित्ता सौलता है; गुस्सा आ जाता है । --ससी वर्षु = पानल हो जाना । --साई अर्थु, सार्षु = मस्य सा जाना; सोपकी चाट जाना । --बसकी सर्थु = पागल होना । --बेकाचे म

होवुं = अङ्गल ठिकाने न होना; अङ्गल सरेलुं, चसकेलुं = पागल। --नुं फरेलुं, फाटेलुं = उच्छूंसल; घमंडी; मित्राजी। - पानी जबु = बकवाससे खोपड़ी खाली हो जाना; दिमारा थक जाना। - फरवुं, फरी आवुं = कोघ, भूप आदिसे माथे पर बल पड़ना; सिर चकराना, घूमना । -- बहेर मारी जबूं = अक्ल काम न करना; अक्ल मारी जाना। ---भमी अयुं = व्ययजित्त हो जाना; अकुल जाती रहना; अकुल ठिकाने न रहना। - मां आवनुं, **ऊतरवुं —** सयालमें आना; समझमें आना । 🔶 **मांथी - वसर्वु =** भूलना; लिकल जाना; बिसरना । -- मां पत्र म भराबो ≠ दिमाग सातवें आसमाव पर होना.∤ [ पच्ची मगजमारी स्त्री० मग्रजपच्ची; माधा-मगमी स्त्री० देखिये 'मुगजी ' **मगतर्व** न०मच्छर; डॉस ।[मग**तरा जेवुं** 🛥 तुच्छ; नाचीज.] मगतुं वि० कुशादा; चौड़ा;लंबा-चौड़ा मगरळ पुं० मूँगके लड्डू; मगदल **मगबळ** न० मुगदर; मुद्गर **मगदळियो** पुं०ं मुगदर [ हिम्मत **मगबूर** स्त्री० मक़दूर; शक्ति; बस; **দগণ** ৰি০ মগন; ৰাজী; অলি সমস্ন নন্দন দুঁ০ অন্ত; অৰকামা **ममकठी स्त्री**० मूँगफली

#### मेगेरॅमच्छ

मगरमच्छ पुं० मगरमञ्छ; बड़ा मत्स्य; बड़ी मछली मगरमस्त वि० हट्टा-कट्टा; हृष्टपुष्ट भगरी स्त्री० मादा मगर मगरूब वि० मगरूर; अभिमानी मगस्थी(-री) स्त्री० मगरूरी; घमड मगा स्मी० जगह; स्थान **मगावंचुं** स०कि० 'मागवुं' किंयाका प्रेर-णार्थक (२)मँगाना ं [मांगा जाना मगार्यु अ० कि० 'मागवु' का कर्मणि; मगियो पु० एक प्रकारको पत्पर मधमधब् अ० कि० खुशब् फैलाना; महमहोमा [प.]; महकना मधमधाट पुं० महक मणक स्त्री० पीछें हटना; डिगंमा। -आपनी = हार स्वीकार करना; झुकमा (२)पीछे हट जाना.] मेथकारवुं स०कि० देखिंगे 'मेन्दिकारव्' मचकारो पुरु (पलके) सिचकाना; झपक मलको पुं० अदा; भाज-मखरा; सेटका मचकीड पुं० ठेला; धक्को (२) तिएस्कोर (३) स्त्री० मोच। - साथी = मोच आना.] 14-17 मचकोडवुं स० कि० मरोड़ना; ऐंक्रमा -**सबकोडानुं अ०** कि०, 'मचकोडनुं' का कर्मणि;हड्डीका अपनी जगहरे हट जाना संबद्धं स॰ फि॰ ऐंठना ; मरोड़ना (२) 🛛 मिरोड़ा जाना मसलना , **मचडावुं** अ० क्रि० 'मचडबुं'का कर्मेखि ; मचचुं अ० कि० समाना; अँटमा (२) ठीन हो जाना; लगा रहना;सुरू होलग अगरी रहता ; लगना (३) फैलना ; मचना ; हलचल होना; उदा॰ <sup>4</sup>त्यां सोक्वन मच्युं छे ' 🦾 [सान**ः युज्ञान** मच्छर पुं० सच्छर; सच्छड़(२) अग्नि×

मर्चा

- मण्छरवानी स्त्री० मच्छरदानी; मसहरी
- मच्छी स्त्री॰ मच्छी; मछली
- मण्डीवजार न॰ मच्छीवाजार (२) अतिशय शोरगुलका स्थान [ला.]
- मछरं न० मच्छर; इसि
- मझ्लो पुं० नाव; मछवा
- मजकूर वि० सजकूर(२)पु० अहवाऌ; हकीकृत; वृत्तांत
- मजबूत वि० मजबूत; दुढ़; जो डिग न सके; पक्का(२)सबल;बलिष्ठ;मज्ज-बूत (३) कसकर बँघा हुआ; मजबूत (४) ठोस; पोढ़ा
- यजम् वि० साझेका; संयुक्त 🥠 🛶
- मजमुदार पु० परगनेका माल-कर्ध-चारी; मजमूआदार; हिसाबकी जांच करनेवाला अधिकारी (२)पत्तीबार; हिस्सेदार
- मजमू, मजमूबाइ देखिये 'मजमु' आदि
- मजरे अ० मुजरा; हिसाबमें मुजरा या मिनहा किया हुआ; बदलेमें । {- आपवुं ⇒हिसाबमें मुजरा कर देना । --सेवुं = हिसाबमें काट लेना; मितहा करना.]
- **मजरो** पुं० मुजरा; अदबसे किया हुआ। ःसलाम । [ **–करवो ≕झु**ककर सलाम करना.] (२)कटौती; मुजरा ।[--आग्र**को** ः ≖मुजरा करना; मिनहा करता.] ः ल
- मजल स्त्री मंजिल; एक दिनका सफ़र (अंतर) (२) पड़ाव; मुक़ाम; मंजिल (३) सक़र; टप्पा; पर्यटन । [--करबी, क्रायबी, क्षेडबी, सॉचबी, मारबी= ्सफ़ड करनह.]
- **मबलो**ंपुं० मकालका दर्शा; मंख्रिकः मं<del>या</del>ः स्कीरुः मजाः, आनंद; लुल्फ्न)

775

## मनीको

🛥 मौज मारना; ऌक्क उठाना।	मठ पुं० एक दलहन; मोठ
—पडवी ≕ सुख भोगना; आनंद मिलना; मजा आनाः]	मठ पुं॰ साधुओंका आश्रम; मठ (२) विद्याषाम
मजरक स्त्री॰ मजाक; हँसी; दिल्लगी	मठारबुं स॰ कि॰ मसलना; गूँधना (२)
मजागरं न० (किवाड्का) क्रम्बा; कुलाबा	मठरनेसे या रदेसे ठीक करना;मठारना
मजानुं वि० मजेदार; मनोहर; जिसमें	(३) बनना-ठनना; सजना-सँवरना
आनंद आये; मजेका	(४) मारना;पीटना; भरम्मत करना
मजाल स्त्री० मजाल; सामर्थ्य	(५)छककर, मदा ले-लेकर खाना
मजियादं वि॰ संयुक्त; साझेका (२)न•	<b>मठियुं</b> न॰ मोठके आटेका पापड़
भागीदारी; पत्तीदारी; साझा	मठियो पुं० कपासकी एक जात
म्बीठ स्त्री॰ एक वनस्पति; मजीठ	मठेरवुं स॰ कि॰ देखियें 'मठारवुं '
मजीठियुं वि० भजीठके रंगका; गहरे	मठो पुं० दही मयकर बनाई हुई छाछ;
सुसं रंगका; मजीठी	लस्सी; मथित (२) (दहीकी) एक
सजूर पुं० मजदूर; मजूर; श्रमजीवी	খাত্র বীর
मजूरण स्त्री० मजदूरनी; मजदूरन	<b>मढदाल</b> वि० देखिये 'मुडदाल'
मजूर महाजन न०, मजूर संघ पुं० मज-	<b>मडदुं</b> न० मुरदा; मुर्दा; बव
दूर संघ	मडम स्त्री ॰ यूरोपीय गोरी स्त्री; मेम
मजूरी स्त्री० मजदूरी: श्रम; मेहनत	मडरगांठ स्त्री॰ सोलने पर भी न सुसमे-
(२) उज्जत; मेहनताना; मजदूरी;	वाली गाँठ [कसकर(लिपटना).]
मजूरी [ मंजूषा	मडुं न० मुरदा।[मडानी पेठेमजबूतीसे;
<b>मजूस स्त्री</b> ० लकड़ीका बड़ा पिटारा;	मढवुं स०कि० मढ़ना (चीज) [महैया
<b>गत्रावार</b> स्त्री० मझधार; मँझघार	मडी, मढूली स्त्री० कुटी; मड्ई; मढ़ी;
<b>मझलुं</b> वि० मझला; बीचका; मॅ <b>स</b> ला	मण पुं० चालीस सेरका वजन; मन
<b>मना, मनानुं</b> देखिये 'मजा' आदि	(कच्चा) । [-मुं पांचशेर करबुं = खुब
मटक स्त्री० नखरा;मटक	पीटना;पीटकर भरता बना देना.]
<b>मटकाववुं</b> स० कि० (बात करते <b>हुए)</b>	<b>मणको</b> पुं० सनका; गुरिया
आँखें मटकाना, चमकाना	मणा स्त्री० कमी; त्रुटि; खामी
<b>मटकुं</b> न० पलकका गिरना; क्षपक	मणियार पुं० चूड़ियां बनानेवाली एक
<b>मटको</b> पुं० मटक; नाज-नखरा <b>; लटका</b>	जातिका आदमी; चुड़िहारा; मनिहार
<b>मटमटायव्</b> स०कि० आँखें मटकाना,	मणियुं वि० जिसमें एक मन वजन चीज
चमकानर	समा सके (शरतन, टोकरा, बोरा
<b>मटवं</b> अ०कि० मिटना;दूर होना; नष्ट	आदि); मनका
होना (२) रोगमुक्त होना;स्वस्य होना	मणियो पुं० मन वजनका बाट; मन
<b>मटोडी</b> स्त्री० मिट्टी; मट्टी [मलबा	मजीकुं न०, (को) पुं० मन वजनका
<b>मटौडूं</b> न० मिट्टी, कचरा आदि कूड़ा;	बाट या माप
गु.हि –२४	

मत	३७० मन
भत पुं०; न० मत; राय(२) संप्रदाय;	<b>मचोडुं न</b> ० वह नाप जो मनुष्यकी ऊँचाई
पंच; बमंगत (३) दुराग्रह; हठ (४)	जितनी हो;पुरुष(२)उतनी गहराई;पुरुष
बोट; मत । -आपको - राय देना	मददनीश वि० मददगार; सहायक
(२)वोट देना । <b>-बांघवो</b> ≔ मत स्थिर	<b>मदनियं</b> न० हाथीका बच्चा; मकूना
करना ; राय कायम करना । –लेवो =	मदरेसा स्त्री० मदरसा; शाला
राय पूछना.]	<b>मदार पुं०;</b> स्त्री० मदार ; आधार ; <b>भरोसा</b>
<b>मतदार पुं० मताधिकारी; मतदाता</b>	<b>मदारो पुं</b> ० भालू, बंदर, साँप आदि
<b>मलदारमंडळ न०</b> चुनावका हलका;	सधाकर नचानेवाला; मदारी
निर्वाचन-क्षेत्र	मय न॰ शहद; मधु (२) शहद जैसी
<b>मतपत्र</b> पु०; न० मतपत्र	मिठास; उदा० 'मधेवोळी जीम'
<b>मत्तपेटी</b> स्त्री० मतपेटिका; 'बेलट बॉक्स'	मच अ॰ मध्यमें; बीचमें
<b>मतवालुं</b> वि० मस्त; मतवाला; उन्मत्त	मधपूर्वो पु० शहदका छत्ता; मोहार;
(२) नहोभें चूर; मतवाला	करंड [शहदकी मक्सी
मता स्त्री० माल-मत्ता; दौलत	<b>मवमाल (्ली)</b> स्त्री० मबु <del>सक्</del> ली;
मति स्त्री० मति; बुद्धि । [वगडवी ==	<b>मधरात</b> स्त्री० आधीरात; मघ्यरात्रि
मति मारी जाना; अकुल सठियाना।	मधुरं वि० मधुर; मीठा
-सूलवी = विचार आना.]	मध्यम वि० मध्यम; बीचका; मझला
मतियुं वि०्जो अपना मतन छोड़े;	(२) मझोला; न बड़ा, न छोटा
हठीँ; जिद्दी; दुराग्रही	म <b>ध्यमसर्</b> अ० मघ्यम रीतिसे; मर्यादित
मतीलुं वि॰ हठी; जिही	मात्रामें [भूमव्यरेखा
मतुं न०गवाह और कबूलत करनेवाले-	मध्यरेखा(-वा) स्त्री० विषुवरेखा;
के दस्तखत । [करवुं, मारवुं = सही,	मध्यवर्ती, मध्यस्य वि॰ मध्यवर्ती;
हस्ताक्षर करना.]	बीचमें स्थित; मध्यस्थ (२) तटस्थ; जनामीयः जनामधः (२) जनामधः
मचक न० मुख्य स्थान; केन्द्रस्थान	उदासोन; मघ्यस्थ (३) मध्यस्थ; बिचवई [स्थता;बिचवई
मधवुं स॰ कि॰ बिलौना; मथना (२)	
अ० कि० मेहनत करना; अत्यधिक	मध्यस्थी स्त्री० मध्यस्य होना; मघ्य- मध्यान(क्ल) पुं० मध्यास्न; दोपहर
परिश्रम करना [परिश्रम; रगड़	मध्यो अ० मध्यमें;दीचमें(२)भीतर;अंदर
मचामण स्त्री० मथना; मयन (२)कड़ा	मन्य अण् मन्यम, शायम(२)मातर;अदर मन न० मन ; चित्त (२)दिल ; अंतःकरण
भवार्द्धं न० शीर्षक; 'हेर्डिंग' (२) चोटी;	(३)इच्छा; जी; मन । [ <b>–उपरथी काढी</b>
शिखर,किसी वस्तुका सिरा, सबसे ऊपरी हिस्सा	(२)३००, जा, नगा [—उपरथा कोठा नालवुं≕मनसे दूर करना; भुला
मबोटी स्त्री० मवेशियोंके सींगोंका मूल-	पाल <b>पु⊶</b> मगल दूर करना, नुला देना। <b>– उपर लेब</b> ुं≕घ्यान देना;
वाला हिस्सा; माथा; पेशानी (२) वह	खयाल करना। <b>–ऊठवुं, ऊतरवुं,</b>
भव्या जो साड़ीके सिर परके हिस्सेमें	अपेल परिवार – अञ्च, अतरवु, ओसरवुं ≕ दिलसे उतरना; मनसे
पडता है	जतरना; मनमें अनादर हो जाना।

•

नन

मनोहर

<b>- कहर्षु करतुं नयो</b> = मन नहीं
मानता; मन संतुष्ट नहीं होता है। काचुं, डचुपचु मन = डॉवाडोल,
कार्चु, ढचुपचु मन = डॉवाडोल,
अस्थिर मन । <b>–घालवुं</b> ≕मन लगाना;
मन देना; जी लगाना। – चक-
<b>रोळे चडवुं =</b> भन विचलित, डॉवाडोल
होना; मनका अनिञ्चयकी दशामें
होना। चोरवुं == मनकी बात न
कद्भुना (२) घ्यान न देना (३) अन्यका
मन हरना; मन मोह लेना।चोंटवुं
= मन लगना; जी लगना (२)भाना;
रु <b>चना।–थवुं =</b> जी करना ; मन होना ;
इच्छा होना। <b>-थी कतरी जब्</b> = मनसे
उतरना; मनमें तिरस्कार हो जाना ।
- मुं मनमां रही जबुं = इच्छा पूर्ण न
होंना; मनकी मनमें रहना । - नुं मैर्छु
= मनका मैला; खोटा।भो मेल =
<b>अंतरकी गु</b> प्त बात (२)कपट : बुराई ।
<b> परोबवुं =</b> जी लगांना; दत्तचित्त
होना; मन लगाना ।वेसवुं = रुचना;
जी लगना; मन भाता।मार्वु =
इच्छाओंको दबाना; मन मारना।
<b>मौ ऊगवंु</b> = खयाल उठना; मनमें
आना <b>।–मां अतरवुं</b> = समझमें आना ।
<b>—मां गांठ वाळवो</b> = गांठ थांधना;
याद रखना (२) निश्चय करना;
गौठना। — मां घोळावुं == बार-बार
मनमें उठना।मां फूलबुं, जुलाबुं =
हरबना; मन ही मन फूलकर कुप्पा
हो जाना; इतराना। - मूकीने,
<b>मेलीने =</b> तहे दिलसे; जी सोलकर;
मन मैला किये बिना । <b>मोटा मननुं</b> =
उदार; दरियादिल । <b>–वर्तवुं =</b> मनमें
<b>क्या है</b> यह जानना-परखना । <b>वळव्</b>
= संतोध होना; मन मानना।

– बाळबुं = मन मना लेना; शान्त करनाः ] मलसादेह पं०; स्त्री० मन्ष्यकी देह मनको पुं० मनुष्योचित जीवन । -- बगा-डवो = जीवन व्ययं गॅवाना. ] मनगमतं वि॰ मनभागा; प्रिय; मन-पसन्द मिनचाहा मनपसंब वि० मनपसन्द: दिलपसंद: मनफेर वि॰ जिसमें थोडासा फ़र्क हो (२) पुं० ऊने, थके हुए मनको दूसरी ओर लगाना; मनबहलाव मनभावतं वि० मनभाता; दिलपसंद भनमानतुं, मनमान्युं वि० मनमाता; जितना जी चाहे; यथेच्छ मनमोजी वि०मनसोजी; स्वच्छद; मोजी मनवर स्त्री० अतिथि-सन्कार; पाहनी; पहुनाई . 4 मनववं स० त्रि०. मनानाळा मनवार स्त्री० जंगी जहाज; युद्ध-पोक्र मनसूबो पुं० मनसूबा; इरादा; विचार मनस्वी वि० मनमौजी; स्वच्छन्द(२) भच्छे, ऊँचे मनवाला मनस्वी(३)स्थिर-चित्त; मनस्वी(४)मानी; स्वाभिमानी भना ( of) स्त्री ः मनाः; सनाहीः; निषेध मनाई-हकम पं० मनाही करनेवाला या जतानेवाला हुक्म; निषेघाजा मनाम(-व)णुं न॰ मनुहार; मनावन मनाववं स० कि० मनाना मनाचुं अ० ति० 'मानवुं' का कर्मणि; मान जाना; राजी होना मनियार पुं० देखिये 'मणियार'...... **मनीआंईर** पुं० मनीआईर मनुहार पुं० मनुहार; मनावन मनोहर वि॰ मनोहर; सुंदर (२)

न० सिरका पहनावा; आभूषणरूप

मपावर्षु	३७२
किरोवेष्टन; उदा० 'माथा करतां मनोहर मोटुं'	
मपावयुं स० कि० 'मापवुं'का प्रेरणार्थक	
मपार्चु अ० कि० ' मापवुं ' का कर्मणि	
मपात अ० मुफ्लमें; विनदामों; मुफ्ल	
मफतनुं, मफतियुं वि० मुफ़्तका; सेंतका;	
व्यर्थका (२) मुफ़्तखोर	
मकलर न० गुलूबन्द; 'मफ़लर'	
मबलक (-ग) वि॰ अतिशय; पुष्कल	
मम पुं० ब० व० चबेना	
मममम पुं० खाना; खुराक; उदा०	
' ममममनी पढी छे; टपटपनी नहीं '	
मभत पुं०; न० हठ; दुराग्रह (२)	
) होड़; चढ़ा-ऊपरी । <b>[ – गूकवो </b> ≕हठ	
छोड़ना । ममते चडवुंं ⇔हठ करना;	
जिद पर आना.]	
ममता स्त्री० ममता; अपनापन; अहं-	
भाव(२)स्नेह; ममता	
ममताळु वि० ममतायुक्त; स्नेही	
ममती (०एं) वि० हठी; आप्रही	
मनरी स्त्री० मुरमुरे जैसे छोटे दाने	
ममरो पुं० मुरमुरा (२) बत्तीका जला	
हुआ हिस्सा; गुल (३) उकसाना;	
टुपकना । [ <b>-मूकवो =</b> झगड़ा लगा	
देनेवाली बात घीरेसे कहना ; टुपकना.]	
ममळावयुं स० कि० किसी चीजको	
गलानेके लिए मुँहमें रखकर चूसना;	
चुमलाना; टुघलाना	
ममी स्त्री : न • रक्षित शव; मोमिया	
मरक मरक अ० मुसकाते हुए	
मरकवुं अ० कि० देखिये <sup>'</sup> मलकवुं' मरको स्त्री० महामारी; मरी; बवा	
मरको स्त्री॰ महाभारी; मरी; वबा	
(हैजा, प्लेग आदि)	
मरबी स्त्री० मुरगी; मुर्गी	:
मरघुं म० मुरगा	

					Ŧ	ſ	s	ļ
_	-	 _	-	 •	_		_	-
£.		-			-			

- मरघो पुं० मुरगा; मुर्ग़; कुक्कुट; कुक्कड़ मरचो स्त्री० लाल सिर्चका पौषा(२) कानका एक गहना; मुरकी (३) एक आतिशबाखी
- मरचुं न० लाल मिर्च; मिर्च; मिरचा (२) मिर्च जैसा छोटा मगर तीसा मनुष्य [ला.] । [–मीठुं अभरावचुं≔ नमक-भिर्च मिलाना । मरचां ऊठवां, लगगदां=बुरा लगना; मिर्चेलगना.]
- मरजाद स्त्री० अदब; तमीज (२)पुष्टि-मार्गकी आचारप्रणाली
- मरजाबी वि॰ पुष्टिमार्गके विशिष्ट आचारके अनुसार चलनेवाला (२) स्त्री॰ पुष्टिमार्गकी आचारप्रणाली
- मरजियात वि० अपनी मरजी पर अब-लंबित; ऐच्छिक; इस्तियारी
- मरजी स्त्री० मरजी; मर्जी; इच्छा; खुशी।[-राखवी, सावववी = मरजीके अनुसार बरतना.]
- भरजीवो पु० समुद्रमेंसे मोती निकालने-वाला; पनडुब्बा; मरजिया (२) मौतकी परवाह नहीं करनेवाला; जान पर खेलनेवाला; मरजिया [ला.]
- मरड पुं०;स्त्री० कंकड़ (चूना बना-नेका)(२)सड़क बनानेमें काम आने-वाला रोड़ा;कंकड़; गिट्री
- मरड पुं०; स्त्री० देखिये ' मरडाट '
- मरडवुं स॰ कि॰ मोड़ना; टेढ़ा करना (२) ऐंठना; मरोड़ना
- मरबाट पुं०; स्त्री० मुढ़ना;टेढ़ाई;ऍठन (२) टेढ़ापन; वकता;रोस(३)गर्व; घमंड (४) नाज; ऌटका
- मरडावुं अ० कि० 'सरडवुं' क्रियाका कर्मणि; सुड़ना (२) चिढ़ना; क्रोध

मल

## **মতোমি**শ

393

करना; रीस करना (३)नखरेकरना; मटकना [मरोड़फली मरडाशि (–र्शी,–सिं,–सौं,)ग स्त्री० मरडियो पुं० एक प्रकारका रोड़ा

जिसे जलाकर चूना बनाते हैं; कंकड़; कच्चा चूना

मरडो पुं० मरोड़ा; पेचिश; आमालिसार

- मरण न॰ मरण; मौत; मृत्यु (२) नाश;तबाही।[-वगडवुं=मरणोन्मुख व्यक्तिको सुखन मिलना;दुःखी होकर मरना(२)उत्तरत्रिया ढंगसे न होना.] मरणतोल वि॰ मर जाय ऐसा या
- मरणताल बि॰ मर जाय एसा य उतना (मार)
- **मरजपचारी** स्त्री० मृत्युग्रव्या [जिया **मरजियं** वि० जानपर खेलनेवाला; मर-
- **मरणूं** न० मरण; मरन; मौत
- मरतवो पुं० मरतवा; दरजा; रुतवा
- मरव पुं० मरद; पुरुष; मर्द (२)वीर-पुरुष;मर्द(३)वि० बहादुर;वीर;मर्द
- मरबाई, मरदानगी स्त्री० मर्दानगी; पुरुषत्व(२)बहादुरी; मर्दानगी
- **मरदाना (--नो )** वि० मरदाना; मर्दाना; **पुरुष-संबंधी ; मर्दों**का (२)पुरुषोचित ; मर्दाना
- मरबुं अ० कि० मरना; नष्ट होना; मरण होना (२) तबाह होना; धाटा सहना; बूबना; बसूल न होना; मरना (रुग्या; पावना) (३) (धातु आदिकी) भस्म, कुश्ता हो जाना; मरनी (४) भीतर जाना; सोखना;पच-ना; किसी चीजर्मे मिल जाना; मरना (५) टलना; दूर हटना (तुच्छकारमें) (६) पिटना; मारा जाना; मरना; उदा० 'सोगटी मरी गई'। [मरता बीवतां = (भविष्यमें) किसी भी

दिन । **मरवा ?= क्यों;अकारण;खा**ली; जदा० 'त्यां मरवा गयो हतो ?' । मरी जबुं = मरना; दब जाना; नष्ट हो जाना (भूख, प्यास, पाखानेको हाजत आदि) (२) मुरझाना; सूखना (३) पिटना; मारा जाना (गोट; मोहरा)। मरी पडवुं = जान तोड़कर कोशिया करना; मर मिटना; मर पचना(२) बलि, निछावर जाना;मोहित होना; मरना (किसी पर)। मरी परवारवुं = (सबका) मर जाना; तबाह हो जाना; मर मिटना । मरी फीटबुं = देखिये 'मरी पडवुं'। मरी मयीने ≍ुँमर-पिटकर; मरते-जीते;ज्यों-त्यों करके] भरवो पु० अँविया; टिकोरा; अंबी भरसियो पुं० मरसिया;स्यापा(कहना) मरहम वि० मरहम; स्वर्गस्थ मरामत स्त्री० मरम्मत; दुध्स्ती मरियुं न० गोल मिर्च ; मिर्च (२) मिर्चसा तीखा-कोधी मनुष्य [ला.] मरी न० कालो या सफ़ेर गोल मिर्च :मिर्च मरीमसालो पुं० गरम मसाला (२) [ला.] अतिशयोक्ति; नमक-मिर्च मरेठन स्त्री० मराठा स्त्री [स्ती मरेठी स्त्री॰ मरेठी बनस्पति(२)मराठा भरेठी पुं० महाराष्ट्रका निवासी; मराठा मरो पुं० मौत (२) मौतकासा दुःख; मौत; शामत; मुसीबत मरोड पुं० घुमाव; मोड़; (अक्षरका) आकार (२) देखिये 'मरडाट' मरोडवुं स० कि० देखिये 'मरडवुं' मर्व, मर्वाई, मर्वानगी, मर्वाना(-नी) देखिये 'मरद' आदि

**मल पूं**० मल्ल; पहलवान

<ul> <li>सहक बुं अ०कि० मुसकाता; मुसक राता;</li> <li>मुसक राता; मुलक ता [4.]</li> <li>मुसक राता; मुलक ता [4.]</li> <li>महक ता य गुं० मुलक राहट; मुस्क राहट</li> <li>(२) हर्षें; आनंद</li> <li>महक बाढ़ युं० मुलक राहट; मुस्क राहट</li> <li>(२) हर्षें; आनंद</li> <li>महक बाढ़ युं० मुलक राहट; मुस्क राहट</li> <li>(२) हर्षें; आनंद</li> <li>महक बाढ़ युं० मिल राह का देविये ' मलक र्वु '</li> <li>महक बाढ़ युं० मरहम महल का या गुं० मल राह मलक राह प्रें० मलना; मलक पुं० मरहम पट्टी</li> <li>महक पुं० मरहम महल का युं० मरहम पट्टी</li> <li>महल वर्ष (२) मलना; महल वा कि राज हिवा (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; महल वर्ष (२) मलना; परवा महल वर्ष (२) मार; मरम्मत [ला.]</li> <li>महल वर्ष करना</li> <li>महल वर्ष (२) मार; मरम्मत [ला.]</li> <li>महल वर्ष (२) मारा; भरम्मत [ला.]</li> <li>महल वर्ष त्र का लरा; अंदाना; समाना; मराला (२) कोई वाल कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वी पुं० मताल दी पुं० मताल व पी ला माना; मराला (२) कोई वाल कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वा क राता; युं युं त माल ' मताले पुं० मताल दी त्या कि ' ताता कु व्रा कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वा कराता पुं० मताल वा का राता (२) ईत्र कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वा कराते पुं० मताल का मौं ' ' मतालाई दिं० रेकि प' सता ' (२) ईत्र का मता कुं वा कु राता वुंक तरो कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वा कराता वूर्ण; मंजल मत्म मिर्क राता कराता का लाता वुंक कहना (वात आदि).]</li> <li>महाल वा कराता वुर्ण; मंजल मिर्क साटवे वाल पछि लगता.]</li> <li>महाल वा कराते वुं का का व्रा वा वुंक करा ' कहा न वाल कराते वाल ताता कराता कराते वाल ' मताल वा ' (२) ईत्र का करात चुंक कराते वाह का तरे करते वाता ' स्यु का कराते वार करात वाता ' (२) ईत्र वा ' मताल द' (२) ईत्र का का पछि लगता.]</li> <li>महाल वर्ता का वुर्ण; मंजल मिर्क का का वे व्र कर त</li></ul>	नलकर्षु	10 <b>x</b>	नतूरिवं
मुस्कराना; मुलकना [4.]बनानेका पानी निकाला हुआ दि्ति का लेदा, थक्का (३) चापलूसी; खुषा- मसकाद पुं० मुसकराहट; मुस्कराहट . (२) हर्षे; आतंदबनानेका पानी निकाला हुआ दि्ति का लेदा, थक्का (३) चापलूसी; खुषा- मद [ला.]. (२) हर्षे; आतंदजेदा, थक्का (३) चापलूसी; खुषा- मद [ला.]जेदा, थक्का (३) चापलूसी; खुषा- मद [ला.]. (२) हर्षे; आतंदमसलकाद पुं० मुसकराहट; मुस्कराहट मलकाम पुं० मरहम मलम पुं० मरहम मलम पुं० मरहम मलम पुं० मरहम पुं० मरहम पुं० मरहमपट्टीमसलकार निकेत पा मिलकर की जोने- वाली विचारणा; मसलहत; परामर्थ मसलक स्क्रीत कि निक मसलना; मसलना; मसार्थ द्वा कि निकता (२) मलना; मसार्थ दे(-ट्टी)मसलकार स्त्री० सार मिर्ग मलकर सुश करना (२) मलना; मसार्थ पुं० मलहाई; बालाई(२)'कीम' मसार्थ पुं० मलहाई (र्दा' मुलाहडा पुं० मतीद पुं० मती त्र प्रेकरा सुलाहा पुं० मतीदा; चुरामा (२) सत्त्व- युत्त खुराक (२) मार; मरम्मद[ला.] मसार्थ पुं० मत्रा पुं० कि की तर सा सकारे पुं० कराला; मेराना; समाना; मरता [न हो; 'मोडरेट' मबाल्वी, मकाली पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी पुं० कराला; भिखारी(२) गुंडा मताल्वी, मकाली पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी मताल्वी, मकाली पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी मताल्वी, मकाली पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी पुं० मताल्वी मताल्वी, मकाली पुं० मताल्वी मताल्वी, मकाला करनेका चुर्ण; मंचल; मिस्सी मताल्वी, मकाला करनेका चुर्ण; मंचल; मिस्सी मताल्वी पुं० मसलिरा; मजाङ; ठट्ठा मक्तरी स्ती० मसिल्ता (२) विट्राक मत्ता सां, ग्वा; मच्छर मक्तरो पुं० मसखरा (२) विट्राक करते करते करते बला पी पुं० मसलिदा; मसौदा मत्तुर पुं० मसलिरा; भरात् मत्तुर पुं० मसलिदा; मसौदा मत्तुर पुं० मसलिरा; भत्ती मत्तुर पुं० मसलिदा; मसौदा मत्तुर न० गोल तकिया; मसूरक; मत्तुर न० गोल तकिया; मसूरक;	मलक्त्रं अ०कि० मुसकाना; मुसकराना;	मसको पुं० मसका	मन्खन (२) श्रीसंड
HRMENE $d_{i}$ HEMMENE $d_{i}$			
. (२) हर्षे; आनंद मद [ला.] मलकाखुं अ० कि० देखिये ' मलकवुं ' मलकाम, मलका पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मलकाभ पुं० मरहमग मलम पुं० मरहम मलम पुं० मरहम मत्मलि पुं० मलका; मलका पुं० मरहमपट्टी [मसलना मसळव्दुं स० कि० मसलना; मस्तना; मलखुं स० कि० मिलना (२) मलना; मलखुं स० कि० मलना (२) मलना; मसावा पुं० अदद; लिहाजु: मुलाहजा (२) लिहाजुके कारण स्त्रियोका परदा रखना या करना; परदा मसावदा (ला') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर सुघ करना मसावदा (ला') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर सुघ करना मसावदा (जा') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर सुघ करना मसावदा (जा') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर सुघ करना मसावदा पुं० मलीदा; चूरमा (२) सत्त- युक्त खुराक (२) मार; मरम्मत[ला.] मस्तालो पुं० गतम मसाला (२) कोई बाज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री; मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोई चीज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री; मसालो पुं० कागाल; भिखारी(२) मुंडा महालवी, मझाली पुं० मयालवी ' महालवी, मझाली पुं० मयालवी ' महालवी, मझाली पुं० मयालवी ' महालवी, मझाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्ती महालवी, मझा; मच्छर महालवी, मझा; मच्छर महालवी, पुं० मसलदरा (२) विदूषक या काला करनेका चूर्ण; मंजन; निस्ती म्हार स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्टा महार रत्री० मसखरी; भजाक; ठट्टा महार रत्री० मसखरी; भजाक; ठट्टा महार रत्री० मसखरी; भजाक; ठट्टा महार रत्री० मसखरी; (२) विदूषक (राजाका) मस वि० ज्यादा; पुष्कलं मस वि० ज्यादा; पुष्कलं मस वि० ज्यादा; पुष्कलं मस वि० ज्यादा; मुर्फ्र ; मलुर्ग मस्तर् रती० देखिये ' मसुर' मस्तर् रती० दोखये ' मसुर' मस्तर् रती० तोक्या; मसुरक;	मलकाट पुं० मुसकराहट; मुस्कराहट		) चापलूसी; <b>खु</b> शा-
मलस पुं० मलखंभ पुं० मलखंभ; मलसवाली विचारणा; मसलहत; पराभरंमलम पुं० मरहममलम पुं० मरहममलम पुं० मरहम $(-\frac{2}{8})$ हत्री०, मलमपटो( $-\frac{2}{8}$ )पुं० मरहमपट्टी[मसलनापुं० मरहमपट्टी[मसलनापुं० मरहमपट्टी[मसलनामलम दुं० कि० मिलना (२) मलना;मसल्व तुं स० कि० मिलना; मराना;मलम दुं० अदव; लिहाज; मुलाहडाजाकर वाया हुआ (३) कंगाल; मन-(२) लिहाजके कारण रिवयोका परदासाणियो पुं० शवके साथ रमशान गयामलाबंदी (ला') न० ब० व० मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी;बोलकर खुश करतामसालियो पुं० शवके साथ रमशान गयामलाबंदी (ला') न० ब० व० मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी;बोलकर खुश करतामसालियो पुं० शवके साथ रमशान गयामलाबंदी पुं० मलावा; खुरमा (२) सत्त-सुता खुराक (३) मार; मरमत [ला.]मसाखंदी पुं० मलावा; खुरमा (२) सत्त-मसाला पुं० गरम मसाला (२) कोईयुक्त खुराक (३) मार; मरमत [ला.]मसाला (३) जोडाई के लिए रेत, बुनासंबाल पुं० करना; अंडाना; समाना;माताला (३) जोडाई के लिए रेत, बुनामराल्वी, मंबाल्ं भुं० कंगाल; मिखारी(२) गुंडाकहना (बात आदि).]मत्ताल्की पुं० मशाल्वीमसिलदाई वि० देखिये 'मशियाई'महाल्वी, मंझाली पुं० मसालरी; मजालामसी स्त्री० सिखरामहाल का करनेका चूणे; मंजन; मिस्सी[-को करतो करते करतेमहाकरो पुं० ससखरा (२) विद्रषकबला पीछे लगता.]महार स्त्री० मसखरा; पुर्कलमसुरे द्त्री० देखिये 'मसुर'महार स्त्री० मसखरा (२) विद्रषकबला पीछे लगता.]महार द्त्री० देखिये (२) विद्रषकमसुर द्त्री० देखिये (मसुर')महार दि० ज्या; पुर्कलमसुर द्त्री० देखिये (मसुर)महार दि० ज्या दा; पुर्कलमसु	. (२) हर्ष; आनंद	मद [ला.]	
मलम पुं० मरहममलखतसमिति स्त्री० विषयविवारिणीमलमपटी(-ट्टी) स्त्री०, मलमपटो(-ट्टी)सिलित [1्रांमापुं० मरहमपट्टी [मसलनामसळ्युं स० कि० मलना;मलखं स० कि० मिलना (२) मलना;मसाख न० मसान; मरघटमलाई स्त्री० मलाई; बालाई(२) 'क्रीम'मसाण्य न० मसान; मरघटमलाबो पुं० अदब; लिहाब; मुलाहडाजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.](२) लिहाडके कारण स्त्रियोंका परदा रखना या करना; परदाजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.]प्रकावडो(ला') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर खुश करनाजाकर आया हुआ व्यक्ते साथ स्मशान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालियामत्तावडा (ला') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर खुश करनाजाकर आया हुआ व्यक्ते (२) मसानका भंगी; मसालियामत्तावडा (ला') न० ब० व० मीठे बोल बोलकर खुश करनाहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालियामत्तावर्द्दा प्रकार; युरमा (२) सत्तव- युक्त खुराक(२) मार; सरमन्त[ला.]मसाला पुं० गरम मसाला (२) कोई चीज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री; मसाला (३) जोडाईके लिए रेत, बूना बाखा वि० नरम; धीमा; जो जोशीला मत्ताला पुं० कंगाल; भिखारी(२) गुंडा मत्ताला पुं० कंगाल; भिखारी(२) गुंडा मत्नाल्डी, मजाला पुं० मशाल्वी महाल्डी, मताला पुं० मशाल्वी मत्रा स्त्री० नसालदा; मारा; मत्ता स्त्री० नसलरा; मंचला मात्रा स्त्री० नसालदा; माराइया काला करनेका चूणे; मंजन; मिस्सी मत्ता स्त्री० नसलरा; मचाङ; क्ला पांत मा मत्ता स्त्री० नसलरा; मचाङ; क्ला मत्ता स्त्री० नसलरा; मचाङ; मारा मत्ता स्त्री० नसालिद; मस्विद । [-कोट वळ्याबी=नेकी करते करते बला पीछे लगना.] मत्ता स्त्री० देखिय 'मसुर ' मत्ता पुं० मातवा; मत्तरा; मत्ता पुं० मातवा; मत्तरा मत्ता स्त्री० देखिय 'मसुर ' मत्ता पुं० मातवा; मत्तरा मत्ता स्त्री० देखिय 'मसुर ' मत्ता पुं० गोल तकिया; मत्तरहा मत्तार पुं० गोल तकिया; मत्तरह मत्ता पुं० गोल तकिया; मत्तरहा <td></td> <td></td> <td></td>			
सलमपटो ( $-\frac{1}{2}$ ) स्त्री॰,मलमपटो( $-\frac{1}{2}$ )समिति[गूंबनापुं॰ मरहमपट्टी[मसलनामसळबुं स॰ कि॰ मसलना; मलना;मलाई स्त्री॰ मलाई; बालाई (२) 'कीम'मसाण्य न॰ मसान; मरघटमलाई स्त्री॰ मलाई; बालाई (२) 'कीम'मसाण्य न॰ मसान; मरघटमलाई स्त्री॰ मलाई; बालाई (२) 'कीम'मसाण्य पुं० भरातनका (२) क्ष्मधानमलाई स्त्री॰ मता; परदाजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.]पत्ता या करना; परदाजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.]मलावडो (ला') न॰ ब॰ द॰ मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालियो पुं० शवके साय स्मशान गयामलावडो (ला') न॰ ब॰ द॰ मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालियो पुं० शवके साय स्मशान गयामसावडा (ला') न॰ ब॰ द॰ मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालियो पुं० शवके साय स्मशान गयामसावडा (ला') न॰ ब॰ दल मीठे बोलहुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालिया पुं० शवके साय स्मशान गयामसालवा (लं २) मार; मरम्मत[ला.]मसालयो पुं० शवके साय स्मशान गयामसालवा (लं २) मार; मरम्मत[ला.]मसालयो पुं० शवके साय स्मशान गयामसालवा (लं २) मार; मरम्मत[ला.]मसालो (२) मारा हुआ सामान; गारा; मसालवी पुं० गराम मसाला (२) कोई चीज सामान; गारा; मसलि पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडाभवाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडाबहना (बात आदि).]मवाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडामसालेवा दले साराकदा; महिया ई'महालखी, मझाल्जी पुं० मसालवी; मारामसालेवा द ति॰ सिलिदा; मसिदामहालखी, मझालजि पुं० मसाल्यो; मजालमसालेवा स्त्री॰ ससलिद; मस्जिद । [-कोटे बळगवी = नेकी करते करते बला पीछे लगना.]महाकरो पुं० मसलदरासतुर का किया; मसुरक;महालकरापुं० मसावदा; मसुरक;महाकरो पुं० मसालरा; पुं० कंमसु			-
पुं० मरहमपट्टी [मसलना मलखं स० कि० मलना; मलना; मलखं स० कि० मलना; गर्जना; मलना; मलखं स० कि० मलना; गर्जना; मलना; मलखं स० कि० मलना; गर्जना; मलना; मलाई स्त्री० मलाई; बालाई (२) 'क्रीम' मसाण न० मसान; मरघट मसाणियुं वि० मसानका (२) स्प्रान जाकर आया हुआ (३)कंगाल; मन- हूस-असगुनिर्या [ला.] मसाणियी पुं० शवके साथ स्मधान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसाणियी पुं० शवके साथ स्मधान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसाणियी पुं० शवके साथ स्मधान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालयी पुं० शवके साथ स्मधान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसालयी पुं० शत्र सुध करना मसालयी पुं० शत्र सुध करना स्वालो पुं० मलीदा; भूरमात [ला.] मत्वाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडा मत्वाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडा मत्वाली पुं० मंताल; भोडेरा मत्वाली पुं० मंताल; भोडेरा मत्वाली पुं० मंताल; भिखारी (२) मुंडा मत्वाल दि० नरम; क्षेमा; जो जोशीला मत्वाल्डी, मजाली पुं० मजालची मतियाई वि० मौसीका; मौसेरा मत्वाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मत्री स्त्री० मसि; काजल (२) ढांत साफ़ या काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मत्री स्त्री० मस्छरकी तरह काटनेवाला छोटा जंतु; मज्ञ; मच्छर मत्कररो स्त्री० मसखरा; मजाक; ठट्ठा मत्कररो स्त्री० मसखरा; (२) विद्र्षक (राजाका) मस दि० ज्यादा; पुष्करलं मस दि० ज्यादा; पुष्करं			
Heiging to be approximately the set of	मलमपटी (-ट्टी) स्त्री०,मलमपटो (-ट्टो)	समिति	••
Heat 		मसळब्रं स० कि०	मसलना; मलना;
मसाबो पुं० अदब; लिहाख; मुंलहाड्याजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.](२) लिहाडके कारण स्त्रियोंका परदा रखना या करना; परदाजाकर आया हुआ (३) कंगाल; मन- हूस-असगुनियां [ला.]रखना या करना; परदामसाणियो पुं० शवके साथ श्मशान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसाणियो पुं० शवके साथ श्मशान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसाणियो पुं० शवके साथ श्मशान गया हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी; मसाणियो पुं० शरम मसाला (२) कोई चीख बनानेकी जुटाई हुई सामग्नी; मसाला पुं० गरम मसाला (२) कोई चीख बनानेकी जुटाई हुई सामग्नी; मसाला (२) जोडाईके लिए रेत, बुना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला (२) जोडाईके लिए रेत, बुना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला (२) जोडाईके लिए रेत, बुना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला (२) जोडाईके लिए रेत, बुना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला पुं० कंगाल; भिखारी(२) गुंडा मबाळ वि० देखिये भवाल' मज्ञाल्डी, मझाली पुं० मशाल्डी मज्ञाल्डी, मझाली पुं० मशाल्डी मज्ञाल्डी, मझाला कुं० मझाल्डी मात्रा स्त्री० नसिला; मौसेरा मज्ञा करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मज्ञा कहना वाला पछि लगना.] मस्ते स्त्री० मसलिद; मस्जिद । [-कोटे बळगावी = नेकी करते करते बला पछि लगना.] मसुर स्त्री० देखिये 'मसुर मसुरे पुं० मसविदा; मसौदा मसुरे पुं न० गोल तकिया; मसुरक; 			
(२) लिहाजके कारण स्वियोंका परवा       हस-असगुनियां [ला.]         रखना या करना; परवा       मसाणियो पुं० घवके साथ स्मशान गया         मलावडो(ला') न० ब० व० मीठे बोल       हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी;         बोलकर खुश करना       मसाणियो पुं० घवके साथ स्मशान गया         मलीवो पुं० मलीवा; चूरमा (२) सत्व-       हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी;         यक्त खुराक (३) मार; मरम्मत[ला.]       मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोई         यक्त खुराक (३) मार; मरम्मत[ला.]       मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोई         मबाखाबुं, मवाढवुं स०कि० भीतर समा       मसाला (३)जोड़ाईके लिए रेत, बूना         सके ऐसा करना; अंटाना; समाना;       मसाला (३)जोड़ाईके लिए रेत, बूना         भराला [न हो; 'मोडरेट'       मसाला [-भभराववो = नमक-धिर्ष         मवाल पुं० कंगाल; भिखारी(२)गुंडा       कहना (बात आदि).]         मवाळ वि० नरम; धीमा; जो जोशीला       डालना; घकिर वताना; बढ़ाकर         मवाळ वि० नरम; धीमा; जो जोशीला       डालना; घकिर वताना; बढ़ाकर         मवाळ वि० नरम; धीमा; जो जोशीला       डालना; घकिर वताना; बढ़ाकर         मवाळ वि० नरम; धीमा; जो जोशीला       डालना; घकिर वताना; बढ़ाकर         मवाळ वि० नरम; धीमा; जो जोशीला       डालना; घकिर वताना; बढ़ाकर         मताल दी पुं० कं गाल (२) इंति साफ       मसालेवा दवि० नसालिदा         महार स्ती० ससि: कालल (२) इंति साफ       मसी स्ती० देखिये 'मधी '(२) ईराका         याका का करत्ने जर्ते तरह काटनेवाला       [-कोटे बळगवी = नेकी करते करते <t< td=""><td></td><td></td><td>ानका (२) श्मधान</td></t<>			ानका (२) श्मधान
<ul> <li>रखना या करना; परदा</li> <li>मसागियो पु० झवके साथ स्मशान गया</li> <li>मसागवर्डा (ला') न० ब० व० मीठे बोल</li> <li>बोलकर खुश करना</li> <li>मसावर्डा (ला') न० ब० व० मीठे बोल</li> <li>बोलकर खुश करना</li> <li>मसावर्डा (ला') न० ब० व० मीठे बोल</li> <li>बोलकर खुश करना</li> <li>मसागियो पु० झवके साथ स्मशान गया</li> <li>हुआ व्यक्ति (२) मसानका भंगी;</li> <li>मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोई</li> <li>चीज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री;</li> <li>मसाला (३) जोड़ाईके लिए रेत, बुना</li> <li>मसाला (१) जोड़ाईक लिए रेत, बुना</li> <li>मसाला (१) जोड़ाईक लिए रेत, बुना</li> <li>माला (१) कंगाल; भिखारी (२) गुंडा</li> <li>महाला वि० नरम; धीमा; जो जोशीला</li> <li>महाला वि० नरम; गिसरा</li> <li>महाला वि० नरम; गिल गे पुण, मसला स्त्री गेसीयाई ' महायाई ' मह</li></ul>	मलाजो पुं० अदब; लिहाज; मुलाहजा		
wenasi ( $m'$ ) $n = a \circ a \circ h \delta a loggan suffer (\chi) मसानका भंगी;मसालयatom (m') n = a \circ a \circ h \delta a loggan suffer (\chi) मसानका भंगी;मसालयatom (m') n = a \circ a \circ h \delta a loggan suffer (\chi) मसानका भंगी;मसालयatom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ h \delta a \circ h \delta a logm'atom (m') n = a \circ h \circ h \circ h \circ h \circ h \circ h \circ h \circ h \circ h \circ$	(२) लिहाजके कारण स्त्रियोंका परदा	हूस-असगुनियां [	ਗ.]
बोलकर खुश करनामसानियामसीबो पुं० मलीदा; चूरमा (२) सत्त-मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोईयुक्त खुराक (३) मार; मरम्मत [ला.]मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोईयक्त खुराक (३) मार; मरम्मत [ला.]मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोईभवावा कुं मवाडवुं स०कि० भीतर समामसालो (३) जोड़ाईके लिए रेत, बूनासक ऐसा करना; अँटाना; समाना;मसाला (३) जोड़ाईके लिए रेत, बूनाभवाक दि० नरम; धीमा; जो जोशीलाआदि मिलाया हुआ सामान; गारा;भरता[न हो; 'मोडरेट'ससालो ( [-भभराववो = नमक-मिर्चभवालो पुं० कंगाल; भिखारी (२) युंडाबहना (बात आदि).]मवाळ दि० देखिये 'मवाल'मसालेवार दि० नसालेदारमत्ताळ दि० देखिये 'मवाल'मसालेवार दि० नसालेदारमत्तालवी, मक्षाली पुं० मशालचीमसियाई दि० देखिये 'मशियाई'मत्तालवी, मकाल करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसी स्त्री० मसलिद; मस्जिद ।मत्ता स्त्री० मत्करते करते तरह काटनेवाला[-कोटे वळगवी = नेकी करते करते वला पीछे लगना.]मक्करो स्त्री० मसखरा; मजाक; ठट्ठामसुर स्त्री० एक दलहन; मसूरमक्त दि० ज्यादा; पुष्कल'मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;	रखना या करना; परदा		
मसीबो पुं० मलीदा; चूरमा (२) सत्त्व- युक्त खुराक (३) मार; मरम्मत [ला.]मसालो पुं० गरम मसाला (२) कोई चीज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री;यक एसा करना; अँटाना; समाना; मरना [न हो; 'मोडरेट'मसाला (३) जोड़ाईके लिए रेत, चूना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला (३) जोड़ाईके लिए रेत, चूना आदि मिलाया हुआ सामान; गारा; मसाला 1 [-भभराववो = नमक-मिर्भ डालना; रिचकर बनाना; बढ़ाकर कहना (बात आदि).]मबाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडा मबाल पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडा मत्ताळवी, मझालवी, मझाल पुं० मशालची मांशयाई वि० मौसीका; मौसेरा मांशयाई वि० मौसीका; मौसेरा मांश स्त्री० यसि; काजल (२) ढांत साफ़ या काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मंजन स्त्रील साफ़ या काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मंचतर स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठा मकररी स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठा मकररी स्त्री० मसखरा (२) विदूषक (राजाका) मस वि० ज्यादा; पुष्कलमसालो पुं० गराम मसाला (२) कोई चेल याका; मसूरक; मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;			) मसानका भंगी;
युक्त खुराक (२) मार; मरम्मत [ला.]चीज बनानेकी जुटाई हुई सामग्री;भवडाववुं, मवाडवुं स०कि० भीतर समामसाला (२) जोड़ाईके लिए रेत, चूनासके ऐसा करना; अँटाना; समाना;मसाला (२) जोड़ाईके लिए रेत, चूनासके ऐसा करना; अँटाना; समाना;आदि मिलाया हुआ सामान; गारा;भरता[न हो; 'मोडरेट'भरता[न हो; 'मोडरेट'भवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडाबालना; रुचिकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडाकहना (बात आदि) ]मवाळ वि० देखिये 'मवाल'मसालेवार वि० मसालेदारमबालवी, मझाला पुं० मझालजीमसालेवार वि० मसालेदारमहालवी, मझाली पुं० मझालजीमसियर्ग्द वि० देखिये 'मशियाई'महालवी, मझालो पुं० मझालजीमसी स्त्री० देखिये 'मशी '(२)ईखकाया काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसी स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मझी स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठामसुर स्त्री० पक दलहन; मधूरमइकरो पुं० मसखरा (२) विदूषकमसुर स्त्री० देखिये 'मसुर'मस वि० ज्यादा; पुष्कल'मसूरियुं न० गोल तकिया; मसुरक;	-		
भवडावनुं, मवाडनुं स०कि० भीतर समामसाला $(3)$ जोड़ाईके लिए रेत, नूनासके ऐसा करना; अँटाना; समाना;भारता $[ + हो; ( + 1) stc ' ]$ भारता $[ - भभ राववो = 1 + 1 + 1 + 1 + 1 ]$ भरता $[ + हो; ( + 1) stc ' ]$ भारता $[ - भभ राववो = 1 + 1 + 1 + 1 + 1 ]$ भवाल वि० तरम; धीमा; जो जोशीलाआदि मिलाया हुआ सामान; गारा;भवाल वि० तरम; धीमा; जो जोशीलाआदि मिलाया हुआ सामान; गारा;भवाल वि० तरम; धीमा; जो जोशीलाआदि मिलाया हुआ सामान; गारा;भवाल वि० तरम; धीमा; जो जोशीलाडालना; रुचिकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कगाल; भिखारी (२) गुंडाकहता ( बात आदि ) ]मवाळ वि० देखिये ' मवाल'मसालेवार वि० मसालेदारमत्ताळवी, मझाली पुं० मझालजीमसियाई वि० देखिये ' मशियाई 'महाराई वि० मौसीका; मौसेरामसी स्त्री० देखिये ' मशी '(२)ईखकामशी स्त्री० मसि; काजल (२) ढाँत साफ़एक रोगया काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसी स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मशी स्त्री० मसखरी; मजाक; ठठुामसुर स्त्री० पछ दलहन; मसूरमइकरो स्त्री० मसखरी (२) विदूषकमसुर स्त्री० देखिये ' मसुर'मस वि० ज्यादा; पुष्कल'मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;			
सके ऐसा करना; अँटाना; समाना;आदि मिछाया हुआ सामान; गारा;भरता $[\neg$ हो; 'मोडरेट'ससाछा। $[-भभराववो = नमक-मिर्णभवाल वि० नरम; धीमा; जो जोशीलाडालना; धविकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडाडालना; धविकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडाकहना (बात आदि).]मवाल वि० देखिये 'मवाल'मसालेवार वि० नसालेदारमजालवी, मक्षाले पुं० मशालवीमसियाई वि० देखिये 'मशियाई'महायाई वि० मौसीका; मौसेरामसी स्त्री० देखिये 'मशी '(२)ईसकामहा स्त्री० मसि; काजल (२) ढाँत साफ़एक रोगया काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसीद स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मत्नी स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठामसुर स्त्री० एक दलहन; मसूरमहकरो स्त्री० मसखरा (२) विट्रूषकमसूरयुं पुं० मसविदा; मसौदासस वि० ज्यादा; पुष्कल'मसूरयुं न० गोल तकिया; मसूरक;$			
भरता[न हो; 'मोडरेट'मसाछा । [-भभराववो = नमक-मिर्चमवाल[पुं० नरम; धीमा; जो जोशीलाडालना; श्विकर बनाना; बढ़ाकरमवालपुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडाकहना (बात आदि).]मवाळ वि० देखिये 'मवाल'मसालेवार वि० मसालेदारमबालवी, मक्षाली पुं० मशालवीमसालेवार वि० नसालेदारमबालवी, मकाली पुं० मशालवीमसालेवार वि० नसालेदारमबालवी, मकाली पुं० मशालवीमसालेवार वि० नसालेदारमबालवी, मकाली पुं० मशालवीमसालेवार वि० नसालेदारमकालवी, मकाली पुं० मशालवीमसियाई वि० देखिये 'मशियाई 'मकालवी, मकाली पुं० मशालवीमसियाई वि० देखिये 'मशीयाई 'मकालवी, मकाली पुं० मशालवीमसियाई वि० देखिये 'मशीयाई 'मकालवी, मकालल (२) दौत साफ़एक रोगयाकाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसी स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मजी स्त्री० मर्सछरो तरह काटनेवालाएक रोगखोटा जंतु; मजा; मच्छरमला दर्श करते करते करते वला पीछे लगना.]मक्करो स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठामसुर स्त्री० एक दलहन; मधूरमक्करो पुं० मसखरा (२) विद्रूषकमसुर स्त्री० देखिये 'मसीदा; मसीदासत्ताका)मसूरियुं न० गोल तकिया; मसुरक;			••
भवारू वि० नरम; धीमा; जो जोशीलाडालना; ध्विकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडाडालना; ध्विकर बनाना; बढ़ाकरभवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) गुंडाकहना (बात आदि)]मवाळ वि० देखिये ' मवाल'मसालेवार वि० मसालेदारमजालवी, मझाली पुं० मझालचीमसियरई वि० देखिये ' मशियाई'महायाई वि० मौसीका; मौसेरामसी स्त्री० देखिये ' मशी '(२)ईखकामशी स्त्री० मसाल (२) ढाँत साफ़एक रोगया काला करनेना चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसी दत्री० मसजिद; मस्जिद ।मशी स्त्री० मसलरी, मजाल (२) ढाँत साफ़मसी दत्री० मसजिद; मस्जिद ।या काला करनेना चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसीव स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मशी स्त्री० मराल इकाटनेवालाएक रोगछोटा जंतु; मज्ञ; मच्छरबला पीछे लगना.]मइकरो स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठामसुर स्त्री० एक दलहन; मसूरमहत दि० ज्यादा; पुष्कल'मसूरियुं न० गोल तकिया; मसुरक;			
<ul> <li>भवाली पुं० कंगाल; भिखारी (२) मुंडा कहना (बात आदि).]</li> <li>मवाळ वि० देखिये 'मवाल ' मसालेवार वि० मसालेदार</li> <li>मज्ञालवी, मज्ञाली पुं० मज्ञालवी मसालेवार वि० नसालेदार</li> <li>मज्ञालवी, मज्ञाली पुं० मज्ञालवी मसालेवार वि० नसालेदार</li> <li>मज्ञियाई वि० मौसीका; मौसेरा मसी स्त्री० देखिये 'मज्ञी '(२)ईखका एक रोग</li> <li>मज्ञी स्त्री० मसि; काजल (२) दांत साफ एक रोग</li> <li>मज्ञाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी मती स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>मज्ञी करते करते करते बला पीछे लगना.]</li> <li>मज्ञकरो स्त्री० मसखरा (२) विदूषक (राजाका)</li> <li>मस वि० ज्यादा; पुष्कल' मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;</li> </ul>			
मवाळ वि० देखिये ' मवाल'       मसालेवार वि० मसालेदार         मज्ञालवी, मज्ञाली पुं० मज्ञालवी       मसियाई वि० देखिये ' मग्नियाई '         मशियाई वि० मौसीका; मौसेरा       मसी स्त्री० देखिये ' मग्नी '(२)ईखका         मशी स्त्री० मसि; काजल (२) ढाँत साफ़       एक रोग         मशी स्त्री० मसि; काजल (२) ढाँत साफ़       मसी स्त्री० देखिये ' मग्नी '(२)ईखका         या काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी       मसी दत्री० मसजिद; मस्जिद ।         मग्नी स्त्री० मच्छरकी तरह काठनेवाला       [-कोटे खळगवी = नेकी करते करते         छोटा जंतु; मग्न; मच्छर       बला पीछे लगना.]         मक्करो स्त्री० मसखरा (२) विटूषक       मसुर स्त्री० एक दलहन; मसूर         (राजाका)       मसूर स्त्री० देखिये ' मसुर';         मस वि० ज्यादा; पुष्कल       मसूरियुं न० गोल तकिया; मसुरक;			
मज्ञालवी, मजाली पुं० मजालवी       मसियरई दि० देखिये 'मशियाई '         मशियाई दि० मौसीका; मौसेरा       मसी स्त्री० देखिये 'मशी '(२)ईखका         मज्ञी स्त्री० मसि; काजल (२) दौत साफ़       एक रोग         मज्ञाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी       मसी स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।         मज्ञी स्त्री० मर्सछरकी तरह काटनेवाला       [-कोटे वळगवो = नेकी करते करते         छोटा जंतु; मजा; मच्छर       बला पीछे लगना.]         मक्करो स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठा       मसुर स्त्री० एक दलहन; मधूर         मक्करो पुं० मसखरा (२) विदूषक       मसूरे त्त्री० देखिये ' मसुर'         प्राजाका)       मसूरर्या पुं० मसलिदा; मसौरा         मस दि० ज्यादा; पुष्कल       मसूरियुं न० गोल तकिया; मसुरक;			
<ul> <li>मशियाई वि० मौसीका; मौसेरा</li> <li>मशी स्त्री० देखिये ' मशी '(२)ईखका</li> <li>मशी स्त्री० देखिये ' मशी '(२)ईखका</li> <li>मशी स्त्री० देखिये ' मशी '(२)ईखका</li> <li>पकाला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सी</li> <li>मशी स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।</li> <li>बला पीछे लगता.]</li> <li>महकरो स्त्री० मसखरी; मजाक; ठट्ठा</li> <li>महकरो पु० मसखरा (२) विदूषक</li> <li>मसूर स्त्री० देखिये ' मसुर</li> <li>मसूर स्त्री० देखिये ' मसुर'</li> <li>मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;</li> </ul>			
मशी स्त्री० मसि; काजल (२) दाँत साफ़एक रोगया काला करनेका चूर्ण; मंजन; मिस्सीमसीद स्त्री० मसजिद; मस्जिद ।मशी स्त्री० मच्छरकी तरह काटनेवाला[-कोटे वळगवी = नेकी करते करतेछोटा जंतु; मश; मच्छरबला पीछे लगता.]मश्करो स्त्री० मसखरी; मजाक़; ठट्ठामसुर स्त्री० एक दलहन; मसूरमश्करो स्त्री० मसखरा (२) विटूषकमसूर स्त्री० देखिये ' मसुर '(राजाका)मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;			
या काला करनेका चूर्थ; मंजन; मिस्सी मसीद स्त्री० मसजिद; मस्जिद । भग्नी स्त्री० मच्छरकी तरह काटनेवाला [-कोटे वळगवी = नेकी करते करते छोटा जंतु; मग; मच्छर बला पीछे लगना.] मक्करी स्त्री० मसखरी; मजाक़; ठट्ठा मसुर स्त्री० एक दलहन; मसूर मक्करो पु० मसखरा (२) विदूषक मसूरो पु० मसविदा; मसौदा (राजाका) मसूर स्त्री० देखिये 'मसुर ' मस दि० ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;	मशियाई वि० मौसीका; मौसेरा		रे'मशी'(२ <b>)ईख</b> का
मग्नी स्त्री॰ मच्छरकी तरह काटनेवाला [-कोटे वळगवी ≕ नेकी करते करते छोटा जंतु; मग; मच्छर बला पीछे लगना.] मश्करो स्त्री॰ मसखरी; मजाक़; ठट्ठा मसुर स्त्री॰ एक दलहन; मसूर मश्करो पुं॰ मसखरा (२) विदूषक मसूरो पुं॰ मसविदा; मसौदा (राजाका) मसूर स्त्री॰ देखिये 'मसुर ' मस वि॰ ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न॰ गोल तकिया; मसूरक;			· ·
छोटा जंतु; मश; मच्छर बला पीछे लगता.] मक्करी स्त्री॰ मसखरी; मजाक़; ठट्ठा मसुर स्त्री॰ एक दलहन; मसूर मक्करो पु॰ मसखरा (२) विटूषक मसूरो पु॰ मसविदा; मसौदा (राजाका) मसूर स्त्री॰ देखिये 'मसुर ' मस वि॰ ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न॰ गोल तकिया; मसूरक;	या काला करनेका चूर्ण; मंजन ; मिस्सी		
मश्करी स्त्री॰ मसंखरी; मजाक़; ठट्ठा मसुर स्त्री॰ एक दलहन; मसूर मश्करो पुं॰ मसखरा (२) विदूषक मसूरो पुं॰ मसविदा; मसौदा (राजाका) मसूर स्त्री॰ देखिये 'मसुर ' मस दि॰ ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न॰ गोल तकिया; मसूरक;	भग्नी स्त्री० मच्छरकी तरह काटनेवाल		
मइकरो पुं० मसखरा (२) विदूषक मसूरो पुं० मसविदा; मसौदा (राजाका) मसूर स्त्री० देखिये 'मसुर ' मस दि० ज्यादा; पुष्कलें मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;	छोटा जंतु; मश; मच्छर		-
(राजाको) मसूर स्त्री० देखिये 'मसुर ' मस दि० ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;	मक्करी स्त्री० मसखरी; मजाझ; ठट्ठ		
(राजाका) मसूर स्त्री० देखिये 'मसुर ' मस दि० ज्यादा; पुष्कलं मसूरियुं न० गोल तकिया; मसूरक;	मइकरो पु॰ मसखरा (२) विदूषव		
	(राजाका)	मसूर स्त्री० देखि	
मस न॰ मिस; बहाना उदा० ' गालमसूरियु '	-		
	<b>मस न०</b> मिस; बहाना	उदा० ' गाल्मसू	रियुं '

मत्तो	३७५ महेसिक
मसो पुं० भस्सा; मसा(२) अर्श; मसा	महिषर न० नैहर; मायका
मसोड् न० मसूड़ा; मसूढ़ा	महियारी स्त्री० अहीरिन; ग्वालिन
मसोसुं न० चूल्हेसे गरम बरतनको	महो न० दही
पकड़कर उतारनेका कपड़ा; साफ़ी	महीं अ॰ में; भीतर
मस्त, मस्ताना, मस्तानुं वि० मस्ताना;	महुडी स्त्री० महुएका छोटा पेड़(२)
मस्त; नशेमें चूर; उन्मत्त	तौला; महुएकी शराब । [' <b>चडवी</b> ≕
मस्तो स्त्री० तूफ़ान; ऊषम; उथम(२)	शराबके नशेमें चूर होना; शराबका
मस्ती; मतवालापन; नशा	नशा छाना. ] 👘 [गुलेंदा ; कोइना
मस्तीलोर वि० शरारती; कथमी	महुडुं न० महुएका फल; कोलैंदा;
महा पुं० माथ मास; माह	महुडो पु॰ महुएका पेड़; महुआ
महामारी स्त्री० महामारी; <b>है</b> जा	महरत न० देखिये 'मुहूर्त '
<b>महार</b> पुं० भंगी; मेहतर	<b>महुवर</b> स्त्री० मदारीका <b>बाजा; महुअर</b>
महाराज पु० महाराज; बादशाह(२)	महेक(हें) स्त्री० महक; खुशबू
वैष्णवोके आचार्य (३) बाह्यण,	महेकवुं (हें )अ०कि० बास आना;महकना
सत, राजा आदिके लिए संबोषन,	महेकाट(हॅ) पुं० महक; गंध
महाराज (४) बाह्यण रसोइया	महेर्षा्टू(–टो्)णां(हॅ; टॉ)न० द० द∙
महाराणी स्त्री० बड़ी रानी; महारानी	ताने; मर्मवचन
महारूपक न० रूपक काव्य; 'एलेगरी'	महेषु (हॅ)न० ताना; मर्मवचन । [मा-
महारेखा स्त्री० (–)ऐसा विरामचिह्न; निर्देशक; 'डैश' [व्या.]	रर्षु = ताना मारना; फबती कसना.]
দেওয়ক; ওয় [০০।.] সমাল দেও বিক্রিয়া দের সময়, ব্যাদিক	महेतर(हॅ) पु॰ हरिजनोंका मुखिया (२) भगी: प्रेन्चर
महाल पुं० जिलेका एक भाग; तहसील महाल ( का ) री ( क्रिक्स का का का का का का का का का का का का का	(२) भंगी; मेहतर स्वेतराजी (४) स्वीक ऐजनराजी : जंगिन
महालक(-का)री पुं० तहसीलदार (सरकारी अफ़सर)	महेतराणी (हॅं)स्त्री० मेहतरानी ; मंगिन महेतल (हॅं) स्त्री० मुहलत ; मुद्दत ; समय
महालव् अ० कि० ठाटबाटसे खुशीमें	महेतागीरी (हॅ) स्त्री० गुमाश्तागिरी;
इधर-उधर टहलना	कारिदगी
महावत पुं० महावत; पीलवान	महेताजी (हॅं) पुं० देखिये 'महेतो '
महावरो पुं० मुहावरा; अच्यास	महेती(हें) स्त्री० शिक्षिका (२)
महाविद्यालय न० महाविद्यालय;'कालिज'	
महाविराम न० महाविरामका(ः)ऐसा	महेतो (हॅ) पुं० शिक्षक (२)कारकुन;
चिह्न; 'कोलन '; विसर्गचिह्न (व्या.]	महेनत (हैं) स्त्री० मिहनत; मेहनत
<b>महिना</b> पुं० ब० व० गर्भ रहना [ ला. ]	महेनताणुं (हें) न॰ मेहनतका बदला;
महिनो पुं० महीना; मास (२)मासिक	मजदूरी; पारिश्वमिक; मेहनताना
वेतन; दरमाहा। [–आववो, वर्षो	महेनतु वि० मेहनती; परिश्रमी
(स्त्रीका) महीनेसे होना; ऋतुमती	महेफिल(हॅ) स्त्री० महफ़िल; जलसा
होना (२)मासिक वेतन मिलना.]	(२) वनभोजन; गोट

_ <b>_</b>	
Circums.	

## मंगौरा

- महेमान(हें) पुं० मेहमान; अतिथि महेमानगत(–ति), महेमानगीरी, महे-भानो स्त्री० आतिथ्य; मेहमानदारी; मेहमानी
- महेर(हॅ) स्त्री० मेहर; कुपा; दया महेरबान वि० मेहरबान; कुपालु महेरबानी (हॅ) स्त्री० मेहरबानी; कुपा महेरामण(हॅ)पु० समुद्र [कहार महेरो (हॅ)पु० पालकी ढोनेवाला; महरा; महेल (हॅ) पु०, महेलात (हॅ)स्त्री० महरा
- महेल्लो (हँ) पुं० महल्ला; मोहल्ला; टोन्डा महेसुल (हँ) स्त्री०; न० महसूल; भूमि-
- बर; लगान (२)जकात; चुंगी(३) राज्यकी कुल बाय
- महेसूली वि० महसूल-संबंधी; महसूली
- महोबत(हॉ) स्त्री० मुहब्बत; मित्रता; स्नेह (२) प्रेम; मुहब्बत; प्रीति
- महोबती (हॉ) वि०मुहब्बती; स्तेही; प्रेमी महोर (हॉ) स्त्री० सोनेका एक अंग्रेजी
- सिक्का; गिनी; मुहर (२) छाप; सिक्का; मुहर; मोहर। [-मारवी, लगाववी = मुहर करना; मुहर लगाना (२)क़द्र करना या प्रामाणिकताकी सनद दे देना; मुहर लगाना.]
- महोर्य (हाँ) न० शतरंजकी गोटी; मोहरा महोरू (-लात) (हाँ) देखिये 'महेल्र'
- महोल्लो (हाँ) पुं० देखिये ' महेल्लो '
- मळपुं०मल;मैला; विष्ठा सलसम्बद्धाः ज्यारः ज्यारीः स
- मळतर न० नफ़ा; कमाई; लाभ मळताबद्वं वि० मिलनसार; मेली
- मळतियुं वि० साथमें काम करनेवाला; आथी; मेली-मुलाक़ाती (२) अमुक पक्षसे मिला हुआ; पक्षकार
- मळव्युं अ०कि० मिलना; जुड़ना; सटना; पक्षमें हो जाना; मिथित होना(२)

- एक होना; मेल करना; मिलना(२) इकट्ठा होना;भेंट होना;भेंटना; मिलना (४) एकसा होना; समान होना(५) मेल होना; मिलना (६)पाना; मिलना (७) लाभ होना; हाथ लगना। [मळसुं आवर्षु = समान होनी; एकसा होना; मिलना (२) अपनी जगह पर ठीक बैठता हुआ होना; ठोक आना; अँटना। मळी जषुं = एक हो जाना; पक्षमें हो जाना; मिलना। मळ्या भाईनी प्रीत = कहनेभरकी, नामकी प्रीति.]
- मळसकुं न० भोर; तड़का; प्रभात मळी स्त्री० गाड़ीके पहियमें औंमे हुए तेलऔर चीयड़ोंसे बननेवाली कारलिब; कालिख(२)हनुमानकी प्रतिमा परके तेल और सिंदूरका मैल
- मंकोडी स्त्री० छोटा घींटा;छोटा मकोड़ा मंकोडी पु० चींटा; चिउंटा; मकोड़ा
- मंगल (-ळ) वि० मंगल; शुभ; कल्याण-कारी (२) पुं० मंगल प्रह; मंगल (३) मंगलवार (४) न० मंगल; कल्याण; सुख (५) शुभ अवसर (६) मंगलगीत (७) प्रंथके प्रारंभमें की जानेवाली इंब्टदेवकी स्तुति; मंगलाचरण । [-गावां = लग्नके समयके गीत - मंगल गी उ गाना; सोहले गाना.] [[-फरवा = ब्याह करना.]
- मंगळकेरा पुं० ब० द० फेरे; भांवर।
- मंगळच्चत्र न॰ मंगलसूत्र (सघवा स्त्रियां गलेमें पहनती हैं) (२)स्त्रियोंके गलेका एक गहना
- मंगळावरण न० मंगलावरण (ग्रंथारप्रमें या शुभ कार्यमें) (२)[ला.] आरंभ मंगाववुं स०कि० मंगवाना ; मंगाना मंडा स्त्री० मनशा ; इच्छा ; विचार मंडीरा पूं० ब० व० मजीरे ; मॅजीरे

_		_
-		
	"	-

	२७८ मानस
माग पु॰ मार्ग; रास्ता (२) जगह;	माजम्युं वि० मौजाया; सगा; सहोदर
बैठक (३)स्थान ; अवकाश ; गुंजाइश ।	
[-आपवो, देवो = किसीको बैठने	
आदिके लिए जगह देना(२)सत्कार	
करना ।करवो = रास्ता कर देना;	माजी वि॰ माजी; पहलेका; आगेका
मार्गमेंसे हट जाना (२)अवकाश या	(२) मरहूम; स्वर्गवासी (३) स्त्री० दादी
जगह कर देना।मूकबो (नी	(४) अंबेंग माता (५) माई
आगळ) = किसीसे घटिया, निकृष्ट	<b>माझम</b> वि० बीचका; मझला; <b>मँझला</b>
होनाः ।मुकाववो(नौ पासे)==अेष्ठता	माझा स्त्री० मर्यादा;हद। [-छोडवी,
क़बूल कराना; लोहा मनवाना.]	<b>मूकवी = म</b> र्यादाका त्याग <b>करना ।</b>
माग(ग,) स्त्री० मौग; खपत (२)	<b>—साचववी</b> — भर्यादाका पालन <b>करना</b> .]
तकाजा; पावना मौगना	माटली स्त्री० मटकी; छोटा मटका
मागण पुं० मिखारी; मँगता; मंगन	माटलुं न० मिट्टीका एक बरतन; मटका
(२)न॰ भौगना; याचना	भाटी स्त्री० मिट्टी(२)मांस । [-डांकवी ==
<b>मापणियात</b> वि० भिखमंगा; संगन;	ऐब पर परदा डालना; मिट्टी डालना ।
्टुकड्यदा [(२)खपत; मॉग	मवुं ≕ बिगड़ जाना; मिट्टी होना।
<b>भागनी</b> स्त्री० माँग; सवाल; प्रायंना	मां मळी जबुं = सिट्टीमें सिलना;
<b>मागजूं</b> न० मांग; मांगना(२)लेना;	नष्ट होना.] [मर्द; पुरुष
पावना (३) बन्दी-प्रत्यर्पण; ' एक्स्ट्रे-	मादी वि॰ खोरावर (२) पु॰ पति (३)
ढिशन ' । [–करबुं = मॉगना.]	माटे (०करी ०ने) अ० लिए; वास्ते;
मागतुं वि० मांग करता हुआ (२)न∙	-के कारण(२)इसलिए; इस कारण
रुना; पावना	माठुं वि० अग्नुभ; बुरा; अनिष्ट । [–
मागवुं स० कि० माँगना; याचना करना;	लागवं = बुरा लगना; दिल दुसी होना.]
कुछ देनेकी प्रायंना करना (२)वापिस	माडी स्त्री० मौ(२)दुर्ग्ध; आद्या शक्ति; माता [हिम्मतवाला
देनेके लिए कहना ।[मागी खावुं झ्टुकड़े	माता [हम्मतवाल।
मौंगकर जीना । माग्या मेह = मौंग या	माडीजायो पुं० वीर पुरुष; माईका छाल;
जरूरतके अनुसार मेंह (बरसना).] 	माढ पुं०महल; मंजिलवाली सुंदर इमा-
मागझर पु० मार्गशीर्षं मास; अगहन; मंगसिर [विषयक)	रत; आलीबान इमारत (२) महल्ला; टोला (३) एक राग
	टाला (२) एक राग माण(ण,) स्त्री० पनचोरा; गागर
मार्गुन० गाँग; मॅंगनी (प्रायः लग्न माछन स्त्री० मच्छीमारकी या मच्छी	माणवुं स० किं० अनुभव करना; भोगना
मारनेवाली स्त्री; मल्लाहिन; मछुइन	अ०कि० खुश होना; मजा लूटना
माछली स्त्री॰, (-लूं) न॰ मछली	मालस पुं०; न० मनुष्य; इंसान। [नी
माछी पुं० मछुवा; मच्छीमार (२)माझी;	वर्णमांधी ऊठी जवुं, नीकळी जबुं,
मल्लाह; मांग्री	माणसमांथी नीकळी जवुं = इंसानियत

माण	साई

गँवाना (२) नपुंसकता प्राप्त करना; पुरुषत्व गेँवांना.] माणसई स्त्री० मनुष्यता; इंसानियत माणियो पुं० घियाँड्रा नाणी स्त्री० बारह मनकी तौल (कच्ची) माचेक न० माणिक; मानिक माजेकठारी स्त्री०शरत्पूर्णिमा; कोजागर मातबर वि० खुशहाल; तालेवर मातुं (०तातुं) वि० हृष्ट-पुष्ट(२)मत्त मात्रा स्त्री० बारहसड़ीमें वर्णके ऊपर रुगाया जानेवालः (े) यह चिह्न; मात्रा(२)काव्य या संगीतमें एक स्वरके उण्चारणमें लगनेवाला काल; मात्रा (३) घातुकी भस्म; रसायन (४) किसी चीजका योग्य परिमाण;मात्रा; त्रमाण [ वृत्त मात्रामेळ छंद पुं० मात्रिक छंद; मात्रा-माणाकूट स्त्री० माथापच्ची; संझट; पचड़ा (२) बेकार श्रम; बला; चरला; शंसटवाला काम माषाकूटियुं वि० झंझटवाला; संसटी माबासीक स्त्री० माथापच्ची; झंसट माबादीठ अ० प्रति मनुष्य; फ्री आदमी माथाकरेल(--लुं) वि० सिरफिरा; मिजाजवाला; कोधी माथाफोड स्त्री० सिरयच्ची; मगुखयच्ची मायाफोडियुं वि॰ झंझटी (काम); बलेड़िया (मनुष्य) माथाभारे वि० मिजाजी; सरकश भाषावटी स्त्री० वह कपड़ा जो साहीमें सिरके नीचेके हिस्सेमें सिया जाता है (२) सिर परके कपड़े पर पड़े हुए तेलके घब्बे (३)सिरका भाग ; पेद्यानी ; **माथा(४)**आबरू [ला.] विाला कर **माथावेरो** पुं० फ़ी आदमी लिया जाने-

मार्गु न० सिर; खोपड़ी (२) घड़के जगर-का भाग; सिर(३) किसी भीजका अग्र भाग; माथा; सिर। [माथा उपर(होयुं) =मुरब्बी, सरपरस्त होना (२) सिर-अस्तिं पर होना; सम्मान्य होना;उदा० 'आव्या तो माथा उपर'। माथाना थळ घसाई जवा == बहुत दुःख सहन करना (२) अधिक परिश्रम उठाना यहना; सिर खपाना । **मायानुं फरेल, फाटेल** 🛥 किसीका कहा न माननेवाला; सर**क्या ।** मायानो मणि, मुगट = सरदार; सिर-ताज (२) पति; सिरताज। मावामां गव घाल्या होवा == किसीसे न दबना । मायामां टपला वागवा= ठोकर उठाना; रु:सका अनुभव करना <del>।</del> मा**थामां थूळ** बालबी = इज्जत पर पानी फेरना। माणामां पवन भरावो ≕ घमंडमें पुर होकर अकड़कर चलना; इतराना (२) सिर चकराना; चक्कर आगा। माथामां भूसुं भराबुं = ग्रलतफ़हमी या बहमका भूत सवार होना। माथा वगरनुं ≕निडर; जान पर खेलने-वाला। –आपवुं = सिर देना; प्राण निछावर करना । ---उठाववुं == देसिये 'माथूं ऊंचकवुं'। --**ऊंचकवुं = सिर** उठाना; विरोष, मुक़ाबला करना। -- ऊंचुं राखवुं = सिर ऊंचा करना; आत्मसम्मानपूर्वक रहनः; मगुरूरी रखना; सिर उकसाना। --कापर्च = अहुत नुक़सान पहुँचाना (२)दगा देना । -कूटवुं = मग़ज चट कर जाना (२) सिर धुनना; सिर पर खाक उड़ाना; शोक करना। – जजवाळवुं, जजवुं = विचारमें पड़ जाना; सोचमें पड़ना (२) शरर्मिदा होना; खिसिथा जाना।

360

माचे मढ्ना

-पालगं = देखिये 'मायं मारवु'। -मूम वर्षु, चडवुं = सिर धूमना, चक-राना; सिरमें दर्द होना। --चडाववुं ⇔ सिर खाना। - झीकवुं = मायापच्ची करना। ---तमबुं ≕ आंदर या भक्ति होना; वंदना करना । --जमाववुं =सिर नवाना; ताबेदार बनना । --पकाववं = सिर खाना। --पाकवं, पाकी जवं == मगजपच्चीसे ऊब जाना (२)सिर दुखने थाना । –ऋरबुं = चक्कर आना; सिर षुमना (२)कृद्ध होना । - फाटबुं = धूप, दर्द या बदबूसे सिरमें दर्द होना; सिर घूमना: (२) गुस्सा आना, होना । --फोडवुं≕मायापच्ची करना; सिर सपाना । --भांगवं == घमंड चर करना (२) नुक़सान पहुँचाना। –भारे **थव्ं** ≕गर्वे या मिञाज बढ जाना; दिमाग़ चढ़ना (२) सिर भारी होता; सिरमें दर्द होना । --भोंयमां घालवं 🛥 सिर झुकाना; रुज्जित होना; जमीनमें गढ जाना । –भारवं = किसी बातमें मन लगानां, जो लगाना (२) सिर भारना; ंगीच-**ब**चाव करनाः टौग अड़ाना; दखल देना। --रंगर्यु ≕ सिर तोडना, फोड़ना। --सोंपवुं = शरणमें जाना (२) जान देना; सिर देना]

माचे अ० ऊपर; उदा० ' घा माथे पाटो बांग्यो '(२)सिरके ऊपर। [-आववुं = (स्त्रीका) ऋतुमती होना (२) जिम्मे पढ़ना; सिर पड़ना (३) ऊँचाई पर जाना; ऊँचे आना (सूर्य, पतंग आदि)। --ओढवुं = साड़ी ठीक माथे पर ओढ़ना (२) जिम्मे लेना; सिर पर लेना (३) दिवाला निकालना। -- जोराढवुं = जवाबदारी या जोसम दूसरे पर

डालना; सिर डालना; मत्वे मढुना (२) घोसा देकर माल बेचना; गले मढ़ना । –गाळ चडवी = ऐब लगना । **—गाळ मुकवो ≔ ऐ**ब लगाना । **--चडा**-वर्व = स्वीकार करना; सिर-ऑसों पर होना (२) सिर चढाना; बहकाना; गुरुताख बनाना । --चडी बेसवं, चडी वागवुं≕हुक्म न मानना; मुँहरूगा होना (२) किसीकी सत्ता हथियाना (३) बढ़िया या बढकर होना। -छोगी मुकवी=विगाड डालना; नष्ट करना (२) नुक़सान करना; हानि पहेँचाना ।—झाड ऊगवां == बहुत कष्ट थडना; सिरं पर पहाड़ गिरना। --टाल पडवी = जवाबदारी या भार बहन करते करते या अनुभवकी ठोकरें साते खाते बूढ़ा होना । -- थी उतारी मासवं = सिरसे वोझ उतारना; किसी भार, दायित्वसे मुक्ति प्राप्त करना; पीछा छुड़ाना । –भूळ घालवी क कलह खड़ा करना (२) अपने ऊपर दोव या कलंक ले लेता (३) अपने आपको कलंकित करना:खुद अपमानित होना । -- पढवं =- जिम्मे आ पड़ना; सिर पर आ पड़ना (२) - के कारण घाटा सहना पड़े ऐसी हालतमें आ पड़ता; उदा० 'अमुक माल माये पडघो'। -- पाडवं = सिर मढ़ना। - मारवं = जिसमें घाटा सहना पड़े ऐसी चीज किसीके गले मढ़ना। –मोत भनवां = सिर पर मौतका खेलना। –रासवुं ⇒ जिम्मे लेना; सिर लेना। - लेवं = जिम्मे लेना (२) अपने ऊपर ले लेंना (झगड़ा, धाटा आदि)। --वहोरबुं == देसिये 'माथे लेवूं '। – हाथ फेर**बरो**,

माची

माचीर्षु

- मूख्यो = अपना गुण-स्वमाव दूसरेको देना (२) आशीर्वाद देना। - होवुं == भरतुमती होना(२) जिम्मेदारी होना; चिर होना; जिम्मे होना (३) सिर-आंखों पर होना.]
- **माचोडूं** न० सिर डूब जाय उतनी गहराई; पुरुष ; ऊँचाई, गहराईकी एक माप
- माबळियुं न० गंडा या ताबीज रखनेका सोने-चाँदीका सास आकारका आभू-षण; चौकी; तावीज
- मामुकरी स्त्री० घर-घर जाकर भिक्षा मौगना; मघुकरी (भिक्षा)
- माम्यमिक वि॰ माघ्यमिक; मघ्यका (२) प्रारंभिकसे आगेका; 'सेकंडरी '
- माध्यमिक शाळा स्त्री० 'हाईस्कूल'; माध्यमिक शाला
- मान न॰ मान; प्रतिष्ठा (२) आदर; सद्माव (३) अभिमान; मान(४) तौल; तोल; नाप; मान(५) 'लोगेरी-षम' [ग.] । [ ---आपबुं, देवुं =- सत्कार करना; मान रखना; मान देना। . – मागवुं = विशेष आजिजीकी अपेक्षा रसना; मानकी इच्छा करना। --- मा रहेवुं=धमंड या बड़प्पनमें रहना। ⊶मुकवुं≕अभिमानका त्याग करना । -**रालवुं =** मान रखना;बात रखना(२) मानमंग न हो ऐसा करना; प्रतिष्ठा बनाये रखनाः] [ लीफ़--मेप ' **मानचित्र** न० मानचित्र; नक्का; 'रि-मानत(-ता) स्त्री० मनौती; मानता मानव वि० मान देनेवाला; मानप्रद
- (२) अवैतनिक; 'ऑनररी' मानपान न० मान;आदर(२)प्रतिष्ठा मानसंग पुं० मानभग; अपमान (२) वि० अपमानित

मानमरतवो पूं० मर्तवा; प्रतिष्ठा मानमर्यांचा स्त्री० अदब; लिहाज मानवंतुं दि० माननीय; प्रतिष्ठित मानवी वि० मानव; मनुष्य संबंधी; मनुष्योचित (२) पुं० मनुष्य; मानव **मानव् स**०कि० मानना; स्वीकार करना; क्रदुल करना (२) मान करना; गिनना; कुछ मूल्य-महत्त्वका समझना (३)मनौती मानना তার্তা मानौतुं वि० खास प्रेमपात्र;अति प्यारा; माप न०माप; परिमाण; नाप; मिक्क-दार; वजन (२) [ला.] प्रतिष्ठा; वक़अत (३) हद; हिसाब।[--काढवुं, जोवुं = मापना; नापना (२) अटकल बाँधकर अंदाज लगाना (३) ताकत देखना; बल परखना । – सोयुं = इल्जेत गैवाना; बक़ अत न रहना। - राखवुं = मान रखना (२) हद या मात्रा या प्रमाण रखना | मायणी स्त्री० नपाई; वैमाइश

- मापलुं न० नापनेका पात्र; नपुआ जन्मर्थं सः जित्र जन्मर जन्मर
- मापवुं स० कि० नापना; मापना; पै-माइश करना (२) पैदल जाना [ला.] मापियुं, मापुं न० नापनेका दरतन या

साधन; नपुआ

- माफक वि० अनुकूल; रुचिकर; मुआ-फ़िक(२)अ०००के अनुसार; मुताबिक्र
- माफकसर अ० प्रमाणके अनुसार; प्रमा-णतः; हिसाबसे
- माफी स्त्री० माफ़ी;क्षमा (२) जाने देना; मुक्ति; माफ़ी। [-आपकी, बकाबी == माफ़ करना (२) क्षमा बख्शकर छोड़ देना। -- मळवी = माफ़ी भिलना (२) मुक्ति मिलना (फ़ीस, कर बादिसे).]

### माफीपत्र

- माफीपत्र पु०; न॰ माफ़ी मांगनेवाली या देनेवाली चिट्ठी या पत्र
- **माफो पुं**० रथ; मुहाफ़ा
- भावाप न० व० व० मातापिता; माँबाप या मातृ-पितृतुल्य व्यक्ति (२) किसी बातका आघार, उत्पत्तिस्थान या मूल-कारण [ला.]; उदा• 'आ खचंनां माबाप बतावो '
- माम स्त्री॰ माया; ममता (२) आश्चयं; ताज्जूब (३) धैयं ; दृढ़ता (४) टेक; ममत्त्व [ लदार मामलतबार पुं॰ मामलतदार; तहसी-
- मामलो पुं० मामला; परिस्थिति;बात (२) नाजुक समय; अड़ी; संकटका समय। [-काबूमां आववो = मामला -- परिस्थिति काबूमें आना। -वोफरवो = मामला बिफरना, किसीके काबूके बाहर होना;वात हाथसे जाना.]
- मामा पुं०व० व० मांकाभाई; मामा (२) शतु; चोर [लाः] । [-मळवा= चोर मिलनः ]
- मामामातीनुं कर्षुं = सगे-संबंधियोंका पन्न लेना या तरफ़दारी करना
- माभाजी, मामाससरा पुं० ब० व० पति या पत्नीका मामा; ममिया ससुर मामी स्वी० मामाकी पत्नी; मामी मामीजी, मामीसासु स्त्री० पति या
- पत्नीकी मामी; ममिया सास मामूल त० मामूल, रिवाज मामूली दि० मामूली;साघारण
- मामेरं न० देखिये 'मोसाळुं'
- मामो पुं० मॉंका भाई ; मामा (२) झत्रु ; चोर [ला.]
- मायकांक(--ग)लुं वि० नामर्द; कायर मायनो पुं० मानी;अर्थ (२) हेतु;इरादा

#### ३८२

## मारफतियो

माया स्त्री० माया; प्रकृति; अविद्या (२) कपट; माया; धोखा; इंद्रजाल (३) [ला.] ममता; भाया; स्नेह (४) ममताका कोई भी विषय (५) धन-दौलत;माया। [काची माया == धोखा सा जाय ऐसा मनुष्य । पहोंचेली माया = पक्का; किसीसे छलान जाय ऐसा मनुष्य । −करवी ≔ स्नेह करना; प्रीति जोड़ना । --धवी = राग, स्नेह होना । -राखवी ≕ममता, राग रखना ] मायाममता स्त्री० दया; माया; स्नह मार पुं० मार;ताड़न;चोट (२) मौत;मार (३) मारामार; विपुलता; अधिकता [ला.]।[--खाबो ≕ मार खाना (२) घाटा सहना । --पडवो = मार मिलना (२) नुक़सान पहुँचना । कामनो मार चालबो = मारामार काम चलना। मूड मार, मूंगो मार = मीठी मार.] मारकर्णु वि० मरकहा;हथछुट; मरखस्रा मारकूट स्त्री० मारकुटाई; मारपीट मारकेट न० मार्केट; मंडी मारको पुरु मारका; निशान; छाप (२) इफ़रात ; विपुलता मारखाउ वि० जो सदा मार खाये ; पिट्ट मारग पुं० देखिये 'मार्ग' मारझूड स्त्री० एक दूसरेको मारना और ठोकना ; मारकुटाई मारदडी स्त्री० गेंदसे खेळूनेका एक खेल; गेंदतड़ी [ पीटना ; मारपीट मारपीट स्त्री० एक दुसरेकं। मारना और मारफत अ० दारा; जरिये; मारफत (२)स्त्री० आढ़तिया या दलालके द्वारा काम करनेकी रीत (३) दलाली ; आढ़त मारफतियो पुं० दलाल; आढ्तिना; अवृतिया .

#### मारफाब

मारफाब स्त्री० मारपीट मारवुं स॰कि॰ मारना; चोट पहुँचाना; आधात करना; ठोंकना; पीटना (२) मार डालना; जान लेना (३)पीछे रेल देना; मार हटाना; भगाना; खदेड़ना (४) विशिष्ट गुण घर्मका नाश करना; बरबाद करना(चमड़ी);फोड़ना(गवाह) (५) लूटना; धावा बोलकर लुट लेना (गाँव; नफ़ा; खजाना); जोशसे कोई काम करना; व्यर्थ कोशिश करना; (फंका) मारना (६) असर हो ऐसा प्रयोग करना; मारना (ताना, वचन, आँख, गप आदि) (७) प्रहार करनेके लिए फेंकना; चलाना (तीर, तलवार आदि) (८) रोकना; सहना; मारना (भूख; मन) (९) घातूकी मस्म, कुश्ता करना; मारना(१०)चोरना; हड्पना:माल मारता [ला.](११)लगा-ना; ठोंकना ; गाड़ना ; चुभाना; मारना; जबान बंद करना (ताला, थिगली, काग, लोंदा, कील आदि) (१२)पट-कना; दे मारना; उदा० 'मायामां मारवुं' (१३) --का असर, झाँकी या वेदना दिखाई देना (चमक, भाप, धुँध-लापन,फीकापन आदि)(१४)खबरदस्ती या **घोखा देकर गले मढ़ना ।[मारी लावुं** =माल मारनाँ; हड़पना । मारी नाखवुं =जानसे मार डालना (२) घूस देकर अपना बनाना। भारी पाडवुं = भार डालना (२)एक साथ हड़पना या प्राप्त करना; रुपया मारना। मारी मुकवुं = सरपट दौड़ना। मार्यु अबुं = मारा जाना (युद्धमें) (२) षाटा या हानिमें आ पड़ना । मार्युं मार्युं फरवुं = मारा-मारा फिरना। **मायुँ फरवुं =** किसी

स

सन् स

З	L	Ş.

- चीजकी कमी होना; न मिलना(२) --की कमी न होना; मिलना.]
- मारंमारा स्त्री० मारपीट; लड़ाई मारामार(-री) स्त्री० लड़ाई; वार-
  - दात (२) तंगी; कमी
- मारीतारी (मा', ता') स्त्री० गाली-गलौज; तू-तू, मैं-मैं (२) निदा
- **मारंतारं करवुं** = भेदभाव रखना
- मारो पुं० जल्लाद; वधिक(२)मारामार; वार पर वार(करना)(३) [ला.] इफ़-रात; विपुलता। [---चलाववो ≕ मारा-मार, लगातार प्रहार करना (२)[ला.] बच्छा भोजन मिलने पर खूब सामा; हाव मारना.]
- मार्क पुं० मारका (ट्रेडमार्क) (२)अंक; नंबर (परीक्षा आदिके फलमें)
- मार्ग पु॰ मार्ग; रास्ता (२) रूढ़ि; प्रथा; चाल (३) धर्ममत; पथ; संप्रदाय। [-काढवो = निबटारा करना; हल करना; रास्ता निकालना। --लेबो = मार्ग ग्रहण करना(२) प्रथा ग्रहण करना(३) रास्ता लेना; उपाय लेना]
- माल पूर्व माल; सामान; असबाब (२) वन-दौलत; माल(३) [ला.] सस्व; हक़ीक़त; हस्ती; माल(४)मिष्टाक्ष; मिठाई; माल(५)गाँजा। [-मारबो == रिश्वत, खयानत आदिसे पैसा पैदा करना; माल मारना.]
- मालकांक (--ग) ची स्त्री० मालकॅंगनी मालकी स्त्री० मालिकी;स्वामित्व
- मालकोहक (दक) पुं० मालिकाना हक़; स्वामित्व; मालिकी
- मालक्षुं न० धातुके तार या डोरेमें पिरो-कर रखा हुआ काग्रज या चिट्ठियोंका ढेर(२)वड़ी माला । [हाडकांनुं मालखुं

### मालभाषी

101

माला

= सूचकर सिर्फ़ हड्डियां रह गई हों
ऐसा (शरीर) ;कंकाल; अस्पिपंजर ]
मालगाडी स्त्री० मालगाडी
<b>मारुण</b> स्त्री० मालीकी स्त्री; मालीका
पेषा करनेवाली स्त्री; मालिन (२)
नाकमें होनेवाली फुंसी
<b>मारुषणी</b> पुं० मालिक [जाति
मालवारी पुं० सौराष्ट्रमें अहीरकी एक
मालपाणी न० ब०व० मिष्टान्न; सुस्वादु
मोजन; माल । [-करबां ≐ तर माल
खाना;माल उड़ाना(२)माल मारकर
निहाल होना.]
भालपूर्वा (-हो)पुं० मालपूका; मालपूड़ा
मालम पुं० जहाउमें रखे मालका हिसाब
रखनेवाला (२)कर्णघार; मौझी
मालमता स्त्री० स्थावर और जंगम
मिलकियत; मालमत्ता
मालमलीदो पुं० माल-मलीदा
मालमतालो पुं० मिष्टान्न; तर माल(२)
उपयौगी माल-असबाब; सामग्री
मालमिलकत स्त्री ॰ देखिये ' मालमता '
मालिक पुं० मालिक; स्वामी(२)पर-
मेश्वर;मालिक [आदि
मालिको, मालिको हक देखिये 'मालकी'
माकिवा (स) स्त्री ॰ मालिवा
मालेतुआ(-ज्ञा)र न० बड़ा व्यापारी
(२)वि० बड़ा मालदार
मावजत (मा')स्त्री० तीमार; सेवाटहरू;
रज्जवाली [महावट(माघ मासमें)
मावठुं न <b>्वग्रैर मौसिमकी वारि</b> श;
नावहिसुं दि० मॉकी गोदमें या मॉके
कहनेमें रहनेवाला (२) डरपोक; कायर
<b>माव(वी</b> )तर न०ब०व० मांबाप
मार्चु अ० कि० समाना; अँटना; अपनी
जगह ठीक जा जाना; माना [प.]

मानो पुं० माथा; खोया (२) फस
आदिका गूदा;मग़ज़(३)सस;मावा
माझी स्त्री॰ मौसी; मासी; खाळा
माशूक स्त्री० माशूका; प्रेमिका
मासिक वि० मास-संबंधी; माहवार;
मासिक(२)न० मासिक-पत्र; मा <b>सिक</b>
(३) (स्त्रियोंका) मासिक धर्म (४)
ब॰ प्रतिमास; माहवार
मासियो पुं० मृतकका एक साथ तक
<b>हर मास किया जानेवाला श्राद</b> ;
मासिक(२)एक •प्रेतभोजन
मासो पु॰ तोलेका बारहवा भाग; माशा
मासो पुं० मौसीका पति; मौसा; सासू
मास्तर पुं० मास्टर;शिक्षक(२)कमंचारी;
अमल्दार(डाक, रेल, मिल आदिका)
भाह पुं० माधका महीना; माध; माह
माहित वि० वाकिफ्र; जानकार; माहिर
माहितगार वि० वाक्षिफ्रकार; जानकार
माहिली स्त्री० जानकारी; वाक़िफ़कारी
(२)पता; खबर ['माहे फागण '
माहे अ० अमुक महीनाइस अर्थमें;उदा०
माहार्व न० लग्नमंडप [माल
माह्यदं न० लग्नमंडप [माल माळ स्त्री०माला (२)चरसेकी माला;
माळ पुं० निर्जन, वीरान घासका प्रदेश
(२)माजल; खड; मकानका दरजा
माळखुं न० देखिये (मालखुं '
माळखु न० देखियेंमालखुं' माळण स्त्री० देखियें मालण '
माळण स्त्री० देखिये 'मारूण' माळण न० छाजन; अतरवन
माळण स्त्री० देखिये 'मारुण' माळण न० छाजन; अतरवन माळदुं स० कि० छाना (छप्पर)
माळण स्त्री० देखिये 'मारुण' माळण न० छाजन; अतरवन माळदुं स० कि० छाना (छप्पर)
माळण स्त्री० देखिये 'मारुज' माळण न० छाजन; अतरवन माळवुं स० कि० छाना (छप्पर) माळा स्त्री० माला; मनके, पुष्प आदि पिरोकर बनाया हुआ हार(२)जपमाला
माळण स्त्री० देखिये ' मारुण ' माळण न० छाजन; अतरवन माळदुं स० कि० छाना (छप्पर) माळा स्त्री० माला; मनके, पुष्प आदि पिरोकर बनाया हुआ हार(२)जपमाला (३) किसी भी चीजकी माला-सी संक-
माळण स्त्री० देखिये ' मारुष ' माळण न० छाजन; अतरवन माळदुं स० कि० छाना (छप्पर) माळा स्त्री० माला; मनके, पुष्प आदि पिरोकर बनाया हुआ हार(२)जपमाला (३) किसी भी चीजकी माला-सी संक- खना; माला; श्रेणो; आवली; उदा०
माळण स्त्री० देखिये ' मारुण ' माळण न० छाजन; अतरवन माळदुं स० कि० छाना (छप्पर) माळा स्त्री० माला; मनके, पुष्प आदि पिरोकर बनाया हुआ हार(२)जपमाला (३) किसी भी चीजकी माला-सी संक-

मास्त्रियुं	રેડપ ગાંકનું
पोइंग; बार-बार माद करनः; प्रतीक्षा करना (३) अकिंचन बनना; कामकाज- रहित होना;खाले बैठना । - प्रालवी = विरक्त बननः; साधु बनना । - फरेववी = देखिये ' माळा जपवी ' । - फेबी = देखिये ' माळा झालवी '.] माळियुं न० मंजिल; मकानका दरजा (२) असबाब रखनेके लिए छप्परके नीचे बनाया हुआ छोटा मचान; टांड़; पाटा माळी पुं० माली; बाराबान (२) फूल बेचनेवाला माळो पुं० घोंसला; नीड (२) बहुत कुटुंब रह सकें ऐसा चार-पांच मंजिला मकान (३) खेतका मचान; मंच मांकडी (०) एं० खटमल मंकडी (०) एं० खटमल मंकडी (०) स्त्री० वानरी; बंदरी; मर्कटो (२) चक्कीके ऊपरवाले पाटमें पहनाई हुई लकड़ी; मानी (३) मथानीके डंहेमें लगी कटावदार खोरिया जो मथनी पर जमकर बैठ जाती है(४) मवेशीके गरांव- के फंदेमें पहनाई जानेवाली लकड़ीकी गुल्ली (५) हलके ऊपरकी वह आड़ी सूंटी जिसे पकड़कर हलवाहा जोर देता है (६) नीले रंगकी मैस (७) चमड़ीका एक रोग (८) घोड़ीकी एक जाति (९) मकड़ी; लूता मांकडीकूकडी (०) स्त्री० एक जंतु; लूता (इसके पेशाबसे फफोले उठते हैं) मांकडो (०) पुं० लाल मुंहका बंदर; मर्कट मांकडी (०) पुं० लाल मुंहका बंदर; मर्कट मांकडी (०) पुं० लाल मुंहका बंदर; मर्कट मांकडी (०) पुं० सटमल वांस (०) पुं० स्वान (२) मंब; ऊँची	बैठक; ऊँची चौकी; तहत (२) गाड़ीकी धुरीके ऊपरका तस्ता; मचान मांची (०) स्त्री० साट (२) मचिया; चौकी जैसा वासन मांची (०) पुं० देखिये ' मांचडो '(२) चारपाई। [-मूकवो = पलंगको लात मारकर खड़ा होना; बीमारीसे स्वस्य होना.] मांबर (०) स्त्री० तुलसी आदिकी सींकों पर लगे हुए छोटे घने फूल; मंजरी (२) सुखतला (जूतेका) (३) मुर्गेके सिर परकी चोटी; कलगी मांगर्ड (०) दि० कंजी आंसोंचाला; कंजा मांगर्ड (०) दि० कंजी आंसोंचाला; कंजा मांग्रे (०) दि० कंजी आंसोंचाला; कंजा मांग्रे (०) दि० कंजी आंसोंचा दो हुई डोर; मांड (०) अ० ज्यों-त्यों करके; मुश्किलसे मांडगो (०) स्त्री० छत या मंजिलकी ऊँचाई (२) सजावट झांड मांड (०) ज० ज्यों-त्यों; किन्नी तरह; बहुत मुधिकलसे; मरते-जीते मांडवाळ (०) स्त्री० निर्णय; समझौझा; फ़ैसला; निवटारा मांडची स्त्री० घरके सामनेकी ऊँची बै- ठक (२) ओसारा; सायबान; बरामदा (३) नवरात्रमें बहुत दिये रखनेके लिए बनाई गई बड़ी दीवट जैसी रचना(४) खकात लेनेकी जगह; चुगीघर (५) बाखार; चौक (६) मूंगफली मांबचुं (०) स० कि० गूरू कराना(२) लिखना; नोट करता (३) सजाना; तरतीबसे रखना (४) योजना करता; स्थापित करता । [मांडी बाळवुं= फ़ैसल करना ; निवटारा करना (२) संज रखना; मुल्सची रखना.]
गु. हि−२५	

-	<u> </u>
-11	ы

गिरगी

भावमो(०) पु० मंडप; मंच-मंडप; मँड्या (२) लि। कन्या; बेटी। [--आवयो = बेटी) जन्मना । --अभो चवो ≕बेटी ब्याहके योग्य होना | मांडवामहरत, मांडवामुरत (०) न० कन्याके घर लग्न-मंडप स्यापित करने-की विभि मा मुहुर्त मांदगी(०) स्त्री० मांदगी; बीमारी भावलं (०) वि० सदा बीमार रहनेवाला; मौदा; (इससे) दुबंछ; ढीछा; सुस्त गांबुं(०) वि० मांदा; बीमार; रोगी मार्बुसाजुं (०) वि०(२)न०कमी बीमार, कभी स्वस्थ या तद्रस्त मांस(०) न० मांस; गोश्त; आभिव **मांसमाटी** (०) न**०व०व० मां**स णही(-हे) अ० अंदर; में; भीतर महिलं (०) वि० भीतरका महोमहि(०) अ० आयसमें माह्य जुंवि० अंदरूनी; भीतरका किवकारबुं स० कि० मीचना; मुंदना मिचकारो पुं० मिचकाना; झपक मित्रामणां न०ब०व०औसोंको बार-बार खोलना और बंद करना; आंखर्मुंदाई (२) औससे इशारा करना: इशारेबाजी मिचानं अ० कि० 'मीचवुं'का कर्मणि; (आंसोंका)मिचना; मुँदना मिजवान पुं० मेजबान; मेहमानदार मिआवाती स्त्री० जियाफत; दावत (२) मेहमाननवाजी; मेखबानी। [-उद्य-बबी, करवी == दावतका भजा लुटना.] मिजलस स्त्री० नाच-रंगकी महफ़िल; जलसा (२) मजलिस; सभा मिआगर्थ म०(कियाड्का)कव्या, कुलाबा मिजान ५० तुस्सा (२) अभिमान; ষদাঁঃ; দিন্তান ( ३ ) বেধীৰুৱ; মিন্সান ।

-करबा = कुद्द होना; गुस्सा करमा (२)मिखाज, घमंड करना ; इतराना । --स्तबो, लोबो, जवो = कुट होना। -डेकाणे न होगो = गुस्सा करना;वापेसे बाहर होना.] [मिजाजी; ममंबी मिजाजी वि० गुस्सैल; कोघी (२) मिटाबवं स० कि० मिटाना **নিদাৰ্যু এ**০ কি০ নথা তানা (२) (मवेशीका)दूथ चढाना;दूध चुरा रसना मित्राचारी स्त्री । मित्रता ; मैत्री ; दोस्ती मिनार(-रो) पुं० मीनार मिनिट स्त्री० मिन्ट मियाडं न० बिल्लीकी बोली; म्याँब मियान न० मियान मियां पुं० मुसलमान सज्जन (२)सम्मा-नित मुसलमानका संबोधन; मियाँ मिरात स्त्री० दौलत; पुंजी मिल स्त्री० मिल(प्रायः कपडेकी) मिलकस स्त्री० धन-संपत्ति; जायदाद: मिल्कियत मिलन न० मिलन; मुलाक़ात; भेंट **मिलनसार** वि० मिलनसार **मिलकामदार,मिलमजुर** पुं० मिलमजुदूर मिलाग पुं० मिलाप; मेल; भेंट मिलाबट स्त्री० मिलावट: मिश्रण मिलाबबं स०कि० मिलाना: मिश्रित करना मिण न० मिस; मिष; बहाना। नि मिषे =--का बहाना बनाकर;--के भिष.] मिसर न० मिस्र (देश) मिसरी स्त्री० साफ़ करके जमाई हुई चीनी: मिसरी मिताल स्त्री० उदाहरण; मिसाल (२) ब० –की तरह; –के अनुसार गिस्त्री पुं० होशियार कारीगर: मिस्तरी

- 2	<u> </u>	<u> </u>
म	Γ.	ч.
	-	•

मीरक

मीचनुं स० फि० (आंस) मीचना;	
बंद करना [मींगी; विरी	
मीज स्त्री० बीजके भीतरका गूदा;	
मीजान न० अटकल; अंदाजा; नाप;	
उचित मात्रा [सार;हिसाबसे	
मौजानसर अ० प्रमाण या मात्राके अनू-	
मोट स्त्री० नजर; एकटक दृष्टि; टक-	
टकी;टिकटिकी । [—मांडवी ≖ टकटकी	
ल्गाकर देखना; प्रतीक्षा करना (२)	
(के पास)आधाः रक्षना;से इच्छा	
करना.] [मिटना(२)रोगमुक्त होना	
मीटनुं अ० कि० खुप्त होना; नष्ट होना;	
<b>मीठवां</b> न० व० प्यारका आलिंगन	
(२)धारने । [-लेबां = बलायें लेना.]	
मोड्युं वि॰ मिठासवाला; मीठा (२)	
मिठँबोला; मिट्ठू (३) न॰ देखिये 'मीठडां'	
मीठाबोलुं वि० मिठबोला; मधूरमाधी	
भीठादा स्त्री॰ मिष्टान्न; मिठाई (२)	
मिठास; माघुर्य	
मीऽी स्त्री० चुंबन;मिट्ठी(२)स्नेहालिंगन	
मीठं वि॰ मघुर; मीठा (२) जिसमें	
मिठास हो; मधुर रसवाला; मीठा	
(३)न० नमक। मौठा झाढना मूळ	
कापवां = नेक आदमीसे इतना फ़ायदा	
उठाना कि नेकी करनेवालेकी ही हानि	
हो। मीठी औभ = खुशामदी-प्रिय लगे	
ऐसी अबान । – मरेखुं भभरावचुं = नमक-मिर्च मिलाना.]	
मीठूं स्त्रेंबु न० मीठा नीबू; चकोतरा	
मीठो लीमको पुं० मीठा नीम	
मोबूं न० शून्य; बिदु; सिफ़र। [-वळवुं	
=रद्द होना (२) सत्म होना (३)	
निर्वंश होना; घर बेचिराल होना।	
एकडा बगरनां मीडां = ( प्रधान	
-	

व्यक्तिके अभावमें) मुल्यरहित और बल्हीन चीजें और व्यक्ति.] भीडळ न॰ मैनफल; मदनफल मीदी(०आवळ) स्त्री० सोनामली; भई-संखसा मीन न• मोम मीगकप्पड, मीजकापड न० मोगकामा भोणवत्ती स्त्री - मोमबसी मीणियुं वि॰ मोमवाला (२) न॰ मोम-जामा हवा **मीजियं, मीजूं** वि० नशीला; नशा **बढ़ा** भीषो पुंब नशा; कैफ़ (२) मादक द्रव्य; नशीली भीज: नशा मोमबी स्त्री० बिल्ली भीनवं न॰ विल्ली मीनमेल (--व) स्त्री० एतराज; विरोध; शंकाशीलता (२) घटा-बढी करनेका भाव (३) व० कमोबेश मीनाकारी वि० बेल-बुटेदार(२)स्त्री० मीनाकारी; मीना भीनां अ० हार स्वीकार करनेका संकेत-श**ब्द । [—कहेवुं = हा**र स्वीकार करनाः चीं बोलना.] मीनी स्त्री० बिल्ली मीनो पं० सोने-चांदी पर बनाया जनिवाला रंगीन काम: मीना मोर पं॰ मीर; अमीर; सरदार मोरास स्त्री० मीरास: वरासत मॉचवुं स० कि० देखिये 'मीचव मौचामणां देसिये 'मिचामणा' मौंचाबुं अ० कि० देसिये ' मिचाबुं ' मॉन स्त्री० देसिये 'मीज' मीड स्त्री० मीड् (संगीलमें) मींब न॰ देखिये 'मीड ' मींबल न० देसिये 'मीतल '

ৰ্ষাৰী ( ০থাৰপ্ৰ) 166 100 मीडी (०आथळ) स्त्री० देखिये 'मीडी ' मुखपत्र न० किसी मंडलका पत्र;मुझपत्र मौंबूं वि॰ जो मनमें समझे मगर बाहर **मुखपाठ** पूं० जवानी याद करना;घोखना व्यक्त न होने दे;मचला(२)मक्कार;धूर्त मुलियो पुं० प्रमुख व्यक्ति; मुखिया (२) मीरही स्त्री० दिल्ली ठाक्नुरजीकी सेवा-पूजा करनेवालोंका मॉदइं न० बिल्ली अगुआ; मुसिया मुकटो पुं० देखिये 'मुगटो ' मुली पुं० अग्रेसर; नायक; अगुआ (२) **मुकद्द्**मो पुं० मुक़दमा; मुक़द्मा; दावा गौवका चौधरी; मुखिया मुकरदम पुं० देखिये 'मुकादम ' मुख्यत्वे, मुख्यरवे करोने अ० मुख्यसया; मुकरदमो पु॰ देखिये 'मुकट्मो ' अकसर; प्रायः मुकरर वि० तै किया हुआ ; नियत ; मुख्य प्रधान पुं० मुख्य मंत्री **मुगजी स्त्री० कपड़ेके किनारे पर लगाई** 'मुक़र्रर 👘 ['इनकार करना; मुकरना जानेवाली रंगीन महीन पट्टी; गोट; मुकरवुं, मुकरी अबुं अ० फि० कहकर मगुजी; संजाफ़ मुकादम पुं० मुकेहम; नायक; मुखिया; मुगट पुं० पगड़ी पर लगानेका एक टंडैल(मजदूरोंका) िगिरी आभूषण (२) राजाका ताज; मुकुट **मुकादमी** स्त्री०मुक़द्दमका काम ; नायक-मुगरी स्त्री० छोटा मुटका **मुकाबले** अ० मुक़ाबलेमें मुगढो पुं० एक रेशमी वस्त्र; मुटका **मुकावलो** पुं० बराबरी ; तुलना ; मुक़ा-**मुवरको** पुं० (गुनहगारका) **जमानत-**बला (२) आमना-सामना ; मुक़ाबला नामा ; मुचलका **मुकाम** पुं० रहनेका स्यान; वास; **मुछाळो** वि० पुं० मूंछोंवाला मर्द; **मुख्यर** मुक़ाम (२) पड़ाव; मुक़ाम मुजब अ० मुजिब; --के अनुसार मुकाववुं स० कि० ' मूकवुं 'का प्रेरणा-मुजरो पुं० मुजरा; सलाम र्यक; रखवाना – रिसा जाना **मुझवण स्त्री० दुविधा; घबराहट;उलझ**न मुकार्यु अ० कि० 'मूकवुं'का कर्मणि; मुझारी स्त्री०, (−रो) पुं० त्रिदोष;सन्नि-मुक्की स्त्री० मुक्का; घूँसा पात (२) घबराहट; बेचेनी मुक्को पुं० मुक्को; घूँसा मुझावुं अ० कि० दम घुटना ; साँस रुकना **मुक्त**कंठे अ० खुलकर; बगैर सकोच (२) दुविधामें पड़ना; घबड़ाना रखे; मुक्तकंठसे **मुठ्ठी स्त्री० मु**ट्ठी; मुक्त (२) मु**ट्ठी भर** मुझ न० मुंख; मुंह (२)चेहरा; मुख-आटा या अन्न जो दानके लिए निकाला मंडल(३)आगेका या ऊपरका हिस्सा जाय;े मुट्ठी; चुटकी। [-वांपवी, (४) मुहाना; नदीमुख **दाववी ==** मुट्ठी गरम करना; घूस मुत्रापार वि० जिसे अपनी मर्जीके अनु-देना । –मा राखवुं = अपने हाथमें – सार कार्य करनेकी सत्ता दी गई हो; कब्बेमें रखना; मुट्ठीमें रखना। मुखतार (२) एलची; प्रतिनिधि; -- बाळवी = हथेली बांधना (२) देनेसे मूखतार मुबत्यारनम् न० मुखतारनामा इनकार करनाः]

-	_ (	<u> </u>	
-	50	П	ιt
	×-		

		-
-		6
सत्ताः	.164	ſ
		τ.

<b>मुठ्</b> ठीभर वि० मुट्ठीभर (२) थोड़ा
मुरुठो पुं० बड़ी मुट्ठी
मुबदाल वि० मुरदा जैसा; मृतवत् (२)
मुरदार;बेदम; दुर्बल(३)मुरदेका (मांस)
मुडद्दं न० मुरदा; मुदी; शव
मुतरबी स्त्री० पेशाबखाना
मुतराववुं स०कि० 'मूतरवुं'का प्रेरणार्थक
मुल्सद्दी पुं० हिसाब लिखनेवाला; मुत-
सद्दी (२) राजकार्यमें कुझल व्यक्ति;
राजनीतिज्ञ (३) [ला.] दावँ-पेच
<b>आन</b> नेवाला; युर् <del>षित</del> बोज
मुदत स्त्री० मुद्दत; समय (२)
अवधि; मुद्दत । [-यबी = समय होना
(२) मीआद या अवधि पूरी होना।
बांधवी = समय सियत करना; भुद्दत

(२) नाजाद या जयाय पूरा हाना। --वांधवी च समय सियत करना; मुद्दत बांधना; अवञि देना। --पडवी = मुक्रदमेकी सुनवाई किसी अन्य दिन पर रखना; मुकदमेकी ता रीख पड़ना। --पाक्षवी ≕ मीआदका पूर्ण होना। --पाक्षवी ≕ मीआदका पूर्ण होना। --पाक्षवी = अवधि देना;मुद्दत बांधना.] मुइतियुं वि॰ मुद्दती; मीआदी; मीयादी मुद्दियो ताव पुं० मीआदी बुखार; 'टायफ़ाइड '

**मुद्दत स्त्री० देखिये 'मुदत** '

- मुद्दल न० मूलधन; पूँजी (२) अ० बिल-कुल;निरा;एकदम [नि:संदेह;देशक मुद्दाम अ० विशेषतः; खासकर (२) मुद्दामाल पुं० खास महत्यका या आव-रयक माल (२) वह माल जिससे गुनाहका प्रमाण-सबूत मिले
- मुद्दो पुं० प्रमाण; सबूत(२)महुब्बपूर्ण काम, विषय या बाबत (३) मूल-कारण; जड़; आरंभ; मुद्दआ मुनवका स्त्री० मुनंक्का

मुनकी पुं० मुंशी; लेखक; ग्रंयकार(२)

Junia
लिखनेवाला; लिखनेका काम करने-
वाला; मुहरिर;मुंकी(३)उर्दू-क़ा <b>रसी</b>
या अरबी पढ़ानेवाला; मुंशी
मुनसफ पुं० दीवानी अदालतका न्याया-
भीश; मुंसिक
मुनलफी स्त्री० मुंसिफ़का काम; मुं <b>सिफ़ी</b>
(२) अधिकार; सत्ता (३) जिनेक
करनेकी बुद्धि
मुनास (सि) ब वि० मुनासिब ; वाजिब
मुनीम पुं० कोठीका प्रधान गुमाक्ता;
मुनीम
मुफलिस वि० मुफ़लिस; गरोब
मुबारक वि० मुबारक; सौभाग्यसाली;
शुभ; धन्य। [ने मुवारक हो, एहो
= -को मुबारक हो ; हमें नहीं चाहिए.]
मुबारकबादी स्त्री० मुबारकबादी;
मुबारकबाद; बधाई; अभिनंदन
मुरधी स्त्री० मुर्धी; मुरगी
मृरघो पुं० मुरुगा; मुर्ग
मुरत न॰ मुहूर्त; घुभ काल
मुरतियो पु॰दूल्हा; कन्याके लिए प्रस्ता-
वित अथवा निश्चित किया <b>हुआ वर</b>
मुरम्बी वि० (२)पुं० (कुनबेमें) पूज्य;
बड़ा; बुजर्ग; गुरुजन(३) कद्रदान;
सरपरस्त; मुरब्बी; 'पेट्रन '
मुरम्बो पुं० मुरब्बा
मुलक पुं० मुल्क; देश; प्रदेश
मुलको वि॰ मुल्की; मुल्क-संबंधी;
मुल्कका (२) दीवानी; महसूली
मुल्तवी वि० मुलतवी ; मुल्तवी ; स्थगित
मुलवणी स्त्री० मूल्य निध्चित करना;
मूल्यांकन
मुखाकात स्त्री० मुलाक़ात; भेंट
मुलाकाती वि॰ मुलाक़ात संबंधी(२)
पुं० मुलाक़ात करनेवाला; मुलाक़ाती
•••

প্ৰ

मुंस्रान -

मुकास वि० सुंदर; शोभन 🗉 **मुकाम(--मो)** पुं० मुलम्मा; गिलट मुल्लो पुं० पूँजी; मूलघन मुबाडुं न० छोटा गाँव; खेड़ा; पुरवा मुबाळो पुं० बाल; केश **मुक्तक न०** मू**सल**; मुसल **नुझरूघार** वि० मुसलाघार **मुज्ञायरो** पुं० मुज्ञायरा [ हुआ मुक्केटाट वि० पीठ पीछे मुइकें बाँधा **मुक्लेल** वि० मुफ्लिल;कठिन | नाई **मुइकेली स्त्री०** मुहिकल; मुसीबत; कठि-मुसही वि० (२) पुं० देखिये 'मुत्सही ' **नुसहो** पुं० खर्रा; मसौदः (२) अर्थचन शैलीवाला लेख **मुसल(**--छ) न॰ मूसल; मुसल मुसळचार वि० देखिये 'मुझळघार' **मुसाफर** पुं० मुसाफ़िर; यात्री **भूसेग्फरखार्नु न०** मुसाफ़िरखाना; सराय **मुत्ताफरी स्त्री०** सफ़र; प्रवास; मुसाफ़िरी **मुलाफरी बंगलो** पुं० डाकबंगला मुस्ताक वि० आतुर;मुक्ताक(२)दुढ़; बटल । [--रहेवुं = जमा रहना ; अटल रहना.] मुहूर्त न० मुहूर्त;दो घड़ीका समय;४८ मिनट (२)कोई कार्य आरंभ करनेका शुम समय; मुहुर्त; साइत; सामत मुंब न० एक घास; मूंज मुंबी वि॰ मुंड़े हुए सिरवाला; मुंबी (२)पुं० नाई; मुंबी(३)संन्यासी; मुंडी मुई वि० स्त्री० मरी हुई; मुई मूउं वि० मरा हुआ ; मुआ (२) कोच या प्यारमें दिया जानेवाला एक विशेषण - उद्गार; मुआ मुएलं वि० भरा हुवा; मृत

390

मूओ वि०पुं० मृत; मुवा। [ मूथा **महीं ने** पाछा थया, मुझा नहीं ने मांबा पड़पा = कोई खास फ़र्कन पड़ा; एक-सा; जहाँका शहाँ रहना । ---वर ने बळी जान ⇒जाने दो;छोड़ दो बह बात;मुझे **क्या**.] मुकवुं स० कि० छोड्ना; तजना; रिहा करना ; मुक्त करना (२) (अमुक स्थान पर)नियुक्त करना; लगाना; क्रायम करना; (चीज) सजाना; सिलसिलेसे रखना; रखना (३) घारण अरना; पहनना (टोपी; पगड़ी) (४) परुनेके लिए चूल्हे पर रखना(साग, भात बादि) (५) रेहन रखना; सौंपना;सिपुदं करना; रखना; उदा॰ 'तेने त्यां सो रूपिया मुक्या छे ' (६)सीखनेके लिए नियन स्थान पर पहुँचाना; लगाना; उदा० 'शराफनी दूकाने–निशाळे मुक्यो' (७) कुछ जगह छोड़ना; उदा० ' चार लीटी मुकी दीधी' (८)--के जिम्मे डालना; रखना; थोपना। [ कंचुं मूंकवुं = खत्म करना; पूरा करना; निबटाना (२) रहने देना(काम)। पाणी मूकवुं = हाथमें पानी लेकर संकल्प करना, प्रतिज्ञा करना । भात जूकबी = बात छेड़ना; जिक करना (२) बात पेश करना.] मृग्ं वि० गूँगा; मूक(२)शान्स;चूुप;

- भूगु (व० गूगा; मूक(२)शान्त; पुप; मौन । [ सूंगो मार ≕ मीठी भार; गुप्त मार. ]
- मूछ स्त्री॰ मूंछ । [-आववी, जगवी क् मूंछोंका उगना; मसें भींगना (२) रुखकेका जवानीमें आना। - ऊंची राखबी = प्रतिज्ञा या इज्खत निवा-हना;आन रखना; अपनी बात रखना। - नीची बई जबी क्यमें व्यक्ते होना; इज्छन्न खोना। - नो आंकडो नमबा

-	
2007	
•	

न बेबो = गवं रखना;मुंछ नीची न होने देना !--नो बोरो फुटबो == मसें भींगना; मूँछ उगना। – नो वाळ≕ मूँछका बाल । – पर ताब, ताल देवो = मूँछों पर ताव देना; मूंछ भरोड़ना । -- पर सींब् ठराववां, मचाबवां, राखवां 🖙 मर्व करना । -- मां हसबुं == स्मित करना ; मुसकरानाः ] हिौसला ; सुस्त मूची वि० कंजूस (२) बेअक्ल या पस्त-मूठ स्त्री० मुट्ठी; मूठ(२) क्रम्बा; दस्ता; मूठ (३) तांत्रिक प्रयोग; मूठ। करना; मूठ मारना.] मूठी स्त्री० देखिये 'मुठ्ठी। [-- भो •भरावधी ≔ बेकार कोशिश कराना; व्यर्थ माथापच्ची कराना। - वाळीमे (नासवुं, दोडवुं) = दुम दबाकर । बांधी मूठी = गुप्त या रहस्यमय बात (२) इज्जत कायम रहना.] मूठो पुं० बड़ी मुट्ठी **मूबकुं** न० मुँड़; सिर; कपाल मुडी स्त्री० मुँह या कपालका भाग; मूँड़ ।[-तीची करवी = टेक या इज्बत छॉड़ देना, जाने देना । नीची मूडीए = सिर**ानवाकर; लज्जित होकर;** सिर नीचा करके.] मूडी स्त्री॰ पूँजी; धन(२)स्यापार-उद्योगमें लगाया हुआ धन; मूलघ [-हायमां होवी = मुट्ठीमें होना; क़ब्जेमें होना.] [ पूंजीपति मूडीबार वि० (२) पुं० धनी व्यक्ति; मूडीवाव पु॰ पूंजीवाद;सरमायादारी; ' केपिटालिझम ' 👘 [ सरमायादारी मुझेनावी वि० (२) पुं० पूँजीवावी; नूबो पुं० मुढ़ा; मोंढ़ा

मुली

मूलर न० मूत्र; मूत; पेसाब मूतरवुं अ० कि० मूतना । [मूतरी पडवुं ≠बर जाता; वबरामा.] मुमती स्त्री • कपड़ेकी पट्टी जो जैन यति मुंह पर बांधते हैं;मुखपत्री मूरत्त वि० (२) पुं० मूर्त्त मूरखाई, मूरखामो स्त्री० मूर्खता मूरब्तुं वि० मूर्ख 🗠 मूरझावुं अ० कि० मुरझाना मुर्काई स्त्री० मुर्खता; नासमझी मूल न० कीमत; मूल्य; दाम मूलवर्षु स॰ कि॰ मूल्य ठहराता (२) खरीवना (३) कद्र करना; गुजकी पहचान करना मूल्य न० मूल्य; कीमत; दाम मूल्यवान वि० मूल्यवान; कौमती मूसळी स्त्री० मूसली मूलळी स्त्री० बट्टा; दस्ता मूळ वि०मूल; असल; पहलेका; आव (२) न० पेड़-पौचेकी जढ़; मूल (३) आधार; नीव; बुनियाद (४)नदीका उद्गमस्यानः; मूलस्रोत (५) आदि-कारण[ला]।[--मां, मुळे = असलमें (२) शुरूमें; आदिमें; मूलतः .] **দুত্র্জাবেদ** ল'ণ মু<del>হু</del>য় কাৰ্ব্য **मूळगत** वि० मूलगत -मूळगुं वि० (२) अ० असले ; आ च ; मूल (३)तमाम; सारा; कुल मूळभूत वि० मूलभूत; बुनियादी; आ-[ ककहरा ; वर्णमारूा भाररूष मूळाकार पुं० वर्णमालाके मूल अक्षर; मूळाडियुं, मूळाडुं न० जह;मूल मूळियुं न० जढ़; मूल मुळी स्त्री॰ मूलकी छोटी साखाएँ मूळो पुं० मूली

र्म्स	३९२ नेर
मूंगुं वि० देखिये ' मूगुं ' मूंगां वि० देखिये ' मूगुं ' मूंगां वि० देखिये ' मूजी ' मूंगवा वि० देखिये ' मूजी ' मूंगवां दि० कि० आकुल बनाना; जलझनमें डालना; वेचेन बनाना मुंझारी (-रो) देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० देखिये ' मुझारा ' मूंगार्थ अ० कि० दिरके बाल उस्तुरेसे बनाना; मूंडना (२) [ला.] ठगना; मूंडगा (३) वेला मूंडना मूंडगा का मूंडना मूंडार्थ अ० कि० ' मूंडखुं ' का कर्मणि; मूंडा जाना; मूंडना मूंडार्य अ० कि० ' मूंडखुं ' का कर्मणि; मूंडा जाना; मुंडना मूंडार्य अ० कि० ' मूंडखुं ' का कर्मणि; मूंडा वाना; मुंडना मूंडार्य त्रात् किर ' मूंडखुं ' का कर्मणि; मूंडा जाना; मुंडना मूंडां दिने न मुंडित; मुंडा हुआ; मुंडा मूंडा हो; मुंडी (२) मूंडी; मूंड; सिर मूंड वि० मुंडित; मुंडा हुआ; मुंडा मूंडो पुं० न हिरती; मुगी मुगल्ल (-ळ) न० मुगजल्ड मुगली स्त्री० हिरनी; मुगी मुगल्डो पुं० हिरन; मृग मूंग्लो पुं० हिरन; मृग मूंग्लो पुं० हिरन; मृग मूंग्लुपत्र न०, मृत्युकर	मेरर गाड़ना। सोनानो पाळीमां छोढानी मेस =चएखतमें कलंकका टीका (लगनग).] मेघ पुं० मेंह; बारिश (२)बादल; मेध (३) मेघ राग (४) एक छंद मेघवनुव (-च्प) न० इंद्रघनुष मेघराजा पुं० इन्द्र (२) बरसात; मेंह मेघल (-ली) वि० स्त्री० बादलंसे ढका हुवा; मेघाण्छन्न मेघाडंबर पुं०; न० घनघटा; बदली (२)बादलोंका गरजना; मेघाडंबर (३)छतरीदार हीदा मेज स्त्री०; न० घनघटा; बदली (२)बादलोंका गरजना; मेघाडंबर (३)छतरीदार हीदा मेज स्त्री०; न० मेज; टेबुल मेजबान पुं०, मेजबानी स्त्री० देसिये 'मिजबान; मिजवानी ' [मंखिल मेडी स्त्री० छोटे मकानकी ऊपरकी मेडी स्त्री० छोटे मकानकी ऊपरकी मेडी स्त्री० छोटे मकानकी ऊपरकी मेडी पुं० ऊपरकी मंजिल; छस मेदी (में) अ० खुद; स्वयं ज मेवी स्त्री० एक प्रकारके दाने या उसके पत्ते; मेथी।[-ना = मेयीके लड्डू(२) बहुत भारी लाभ (३)मिष्टान्न; उदा० 'मेथीना करी मूक्या छे'.] मेथीपाक पुं० मेयीके लड्डू(२)[ला.] मार मेवनी स्त्री० घरती; दुनिया; मेदिनी (२)भीड़; मजमा मेदान(मॅ) न० मैदान मेवानी(मॅ) दि० मैदानी (सेल) मेदी(मॅ) रत्री० एक वनस्पति; मेहँदी
मृत्युदंड पुं० मौतकी सजा; देहांत-दंड	मेदान (मॅ) न० मैदान
मृत्युपत्र न०, मृत्युलेख पुं० वरासतनामा	मेदानी (मॅ) वि० मैदानी (सेल)
मेस स्त्री० मेख; खूँटी; कील(२)	मेना (मॅ) स्त्री० मैना; सारिका
पज्यर । [मारवी = कील ठोंकना;	मेनो (मॅ)पुं० देखिये≯ म्यानो ′
मेख मारना (२) रुकावट डालना;	मेर पुं० जपमालामें सबसे ऊपर रहने-
पच्यर मारना; मेख मारना (३)	वाला प्रषान मनका; मेरु (२) शिरो-
मजबूत या अटल बना देना; खूँटा	मणि; मुकुट (३) नैचेका वह भाग जिस

वेर
•••

पर चिलम रहती है; चिलमची (४) सौराष्ट्रमें बससेवाली एक जाति(५) मेरु पर्वत मेर स्त्री० ओर: दिशा मेराई पं० दरजी; दर्जी **वेल** पुं**०** ; स्त्री० डाकगाड़ी ; मेलट्रेन; मेल मेल(मॅ) पु॰ मैल; कचरा; गंदगी। (-कापबो = मैल काटना, दूर करना। [-मूकवो = दिलमें मैल न रहने देना ; कपट न रखकर साफ़-साफ़ कहना.] **मेलवा**ड(मॅ) वि० मैलखोरा;गर्दखोरा मेलगाडी स्त्री० डाकगाड़ी; मेलट्रेन **मेलडी**(में) स्त्री० चांडाल स्त्रीप्रेत; भूतनी (२)एक देवी; चांडालिनी **मेलग**(मे') न॰ छुटकारा; रिहाई मेलबुं(मे') स० कि० रखना; धरना मेलाण(मे') न० मिलन; मिलाप(२) खुटकारा; मुक्ति(३)डग; कवम। [--**पर्यु=(ग्रहण**हेंसे) छूटना, मुक्त होनाः] मेलावर्षु (मे') स० कि० 'मेलवुं'का प्रेर-णार्थक; रखवाना | रखा जाना मेलाब (मे') अ०कि० 'मेलवुं'का कर्मण; **मेली (**में) स्त्री० वह झिल्ली जिसमें गर्भ-स्य शिशु लिपटा रहता है; आंवल; खेड़ी; जरायु मेली विद्या(मॅ) स्त्री० मारण-जारण या भूतप्रेतादिको वशमें करनेकी विद्या; मंत्र-तंत्रविद्या ′ मेलं(मॅ) वि० गंदा; मैला(२) कपटी (३)न॰ मलमूत्रादि; मैला(४) भूत-

्र) प्रतादि । [**−वळगवुं** ⇒ भूत लगना.]

- मेबो पुं० ताजे या सुसाये हुए फल; मेवा
- मेग्न (मॅ) स्त्री० काजल; मसी । [--धसबी (मोढे) ≕ अपयश लेना । --नो चॉक्लो ≕ कलंकका टीका.]

मेळपण्

- मेशी वि० कंजूस
- मेस(मॅ) स्त्री० देखिये 'मेश '

मेह पुं∘मेंह;बारिश ।[माग्या मेह वरसवा =जरूरतके अनुसार मेंह वरसना; राम-राज्य होना.]

**मेहलो** पुं० मेंह; वर्षा

मेळ पुं० रोजका आय-व्ययका हिसाब; ब्योरा; लेखा (२) हिसाब; समझ; मह-त्त्व; हेतु; उदा० 'अत्यारे त्यां जयानी शो मेळ छे?'(३)एकसायन;सादुश्य; समानता (४) बनत; मेल (५) इकट्ठा होना; मिलन;मेल(६)मेल(संगीतमें); सुरोंका मिलना (७) संयोग;अनुकुलता; मेल; उदा० 'हमणां मने त्यां आवसानो मेळ नयी'। [--आबवो ⇒एकदिल होना ; मेल साना ( २ ) अपनी अगह पर ठीक बैठना (३) मौक़ा मिलना। --काढवो, बेसाडवो, मेळवबो = जमा-खर्च करना; हिसाब मिलाना (२) रोकड़ निकालना (३) अनुकूल करना; मेल मिलाना । — बाबो, बेसबो == सेल खाना; मेरु बैठना (२) अनुकूलता होना; संयोग होना (३) संगतिके े उपयुक्त होना । **--वेसवो, मळको** 😅 हिसाब मिलना(२)पटना ; मेल बैठना ।

--रहेबो = बनत होना; मेल रहनाः] मेळबग न० मिश्रण(२)जामन। [--शरषुं = मिश्रण, मिलावट करना; मिलानाः] मेळबगी स्त्री० मिलाना-बढ़ाना; मि-लाई (२) मिलानेकी चीज (३) तुल्ता

मेळववुं सं० कि० इकट्ठा करना; मि-श्रित करना; मिलाना(२)प्राप्त करना; पाना (३) तुलना करना; मिलाकर देखना; मिलाना (४) दूषमें जामन

1. 1.	ľ

- मोटप स्त्री० बङ्ग्यतः; प्रतिष्ठाः; आजक मोटपणुं न० बहाई (२) बड़ी उम्र मोटम स्त्री० देखिये 'मोटप' मोटाई(मो') स्त्री० देखिये 'मोटप ' मोटामा(मो') पुंश्वाव पद, प्रति-ष्ठावाला व्यक्ति; अगुआ; मुक्लिया मोटाझ(मो') स्त्री • देखिये 'मोटाई' मोट्(मो') वि० बड़ा(२)[ला.] उदार; सखी (३) प्रतिष्ठाबाला; आवरूवार (४)मुख्य;महत्त्ववाला; बढ़ा; जरूरी; उदा० 'मोटी मोटी बाबत '। मिटा सौक = बड़े लोग; बड़े आदमी । मोटा बोर्टा = बालिग्र; वयःप्राप्त; सयाना । -- कपाळ -- भाग्यशालीका -- बढ्मागी-का लंलाट । -करबुं = बडा करना; पालना-पोसना (२)मान, महत्ता देना; बड़ा बनाना । 🗝 येट == क्षमाशील या सहनशील स्वभाव(२)पेटकी बात पत्रा-नेवाली प्रकृति (३) लालगी स्वभाव । -मन=उदारता; दरियादिली।-मॉ = लालची, पेटू मा घूसखोर स्वमाव । मौटे पाटले बेसाड्युं = ऊँचे आसन पर बिठाना; ज्यादा मान देना; बंधान, करना ] मोटेंची (मो')अ०ऊँषी वावाफसे;क्षोरसे **মীৱৰ বিং ৰহা;ৰুৰে**য मोड (माँ) पुं० शादी जैसे मंगल अवसर
  - सगढ (मा) पु॰ शादा जस मगल मक्सर पर स्त्रीके सिर पर पहनाया जासे-वाला एक प्रकारका मुक्रुट;मौर(२) जिम्मा; मार [ला.]। [-मूकबो ≕ दायित्य ग्रहण करना; भार उठाता.] मौड पुं० मोड़; वुमाव (रास्ते आदि-का) (२) अकड; गर्य; एँठ (३) खिद;
    - भा (२) जगड, गय, २०(२) खिद, टेक (४) हायभाष; नखरे (५) लिसनेका ढय; बीली; इवारत

- मोचम(मॉ) वि० (२) ड० अस्पष्ट; अनिहिपत; मुग्ण्म मोवचारी(मॉ) स्त्री० महॅगी(२)महॅ-
  - गीका भत्ता; महँगाई मोधाई, मोघारत (म़ॉ) स्त्री० महुँगा होना; महँगी; गिरानी
  - मोधुं(मॉ) वि० महँगा; क़ीमती; अषिक दामवाला; तेज (२) [ला.] अति प्रिय; दुलारा (३) दुलंभ; दुष्प्राप्य (४) आद-रणीय; सम्मान्य (५) विधिष्ट मान या लाढ़ या प्रेमका इच्छुक; जिसका मनुहार करना पड़े। [-सोंधुं बबुं = मान इच्छना; आदरकी अपेक्षा करना.] मोचन स्त्री० मोची
  - मोज(मॉ) स्त्री० मौज; बानन्द (२) मरजी; तरंग; मौज । [-मां आवे तेम ⊥⇒इच्छाके अनुसार.]
  - मोचडी स्त्री० मखमल या चमढ़ेकी सुन्दर,नाजुक जूती;सलीमशाही जूती मोजजी स्त्री० पैमाइश (जमीन)
  - नोजनीवार पुं० (जमीनकी) पैमाइश करनेवाला
  - मोजमजा(माँ) स्त्री० मौज-मजा
  - मोजशोख (मॉ) पुं० भोग-विलास
  - मोबी ( सुं) (माँ) वि आनंवी; मौजी
  - (२) विलासी (३) मनमें आये सो करनेवाला; तरंगी; मौजी

मोर्खुन० मौज; पानीकी लहर; तरंग मोर्खुन० मोखा या वस्ताना [तैयार मोजूब वि० मौजूद; हाजिर; विद्यमान; मोर्ख (मॉ) अ० (अमुक) मुकाम पर,गौव पर: गौने पर: ज्वा० (कोले उपयोग)

पर;मौजे पर;उदा० 'मोजे रामोरू' वोको पुं० देखिये 'मोजुं' वोझार ल० में; दीवमें; वज्ञार [प.]

# षीरणंषो

मोर्म्

भोडवंगो(मॉ) वि० मौर-सेहरा पहनने-वोका; बहादुर (२) पुं० वर; दूल्हा मोहं(माँ) वि० निष्चित समयके बादका: जिसमें देर हुई हो; देरमें (२)न०समय बीत जाना; देर होना (३)देर; विलंब मोडामोड (माँ) अ० मुंह दर मुंह रूबरू; समक; मुँह पर (२) एक मुँहसे दूसरे मुँह मोडियुं(गाँ) न० सबसे ऊपरका हिस्सा; मोहड़ा; मोहरा (२) लालटेनका वह भाग जिसमें बत्ती रहती है; कल्ला; 'बर्नर' ( ३ ) चरलेका वह हिस्सा जिसमें तकुआ रहता है; मोड़िया (४)पशुओंके मुंह पर बाँधी जानेवाली जाली माहरा मोबुं(मॉ)न०मुंह; मुख। [ मोढा जेवुं ⇔ जोठीक या अच्छा न हो;भद्दा; भोंड़ा । मोबानी मीठाश = दिलमें मिठास नहीं, मगर मुँहमें मिठास; मुँहकी मिठास। मोडानी बात = मौखिक कही हुई बात, लिखित नहीं । मोढा ती बातो = जबानी अमा-खर्च ; वह बात जो कही जाय, थर अमलमें न लाई जाय। मोढानुं छुटुं = बाचाल; मुँहजोर (२) दो-टूक जवाब देनेवाला;साफजवाब । मोढा पर आवर्षु = जाबान पर आना; मुँहमें आना। मोढा पर कहेबुं = बिना शरमाये मुँह पर कहना; सीधी-सीधी सुनाना। **मोढा पर भूंकन्** = मुँह पर थूकना;तुच्छ समझनाः मोढा परथी भात्र पण न **ऊडवी = जिससे कुछ बन न सके ऐसा** होना; दुर्बल, बेदम होना। मोढा पर मारबं = मुँहपर सीधी-सीधी सुनाना । मोडा ५र शाही ढोळावी, रेडावी = मुँहमें कालिख लगना;मुँह काला होना । मोडामां आधे तेम = बिना सोचे-समझे: मुँहफटकी सरह; जो मनमें आये।

भोडामां आंगळी घालबी == दौत तले उँगली दबाना; दंग हो जाना (२) बोलनेके लिए विवश करना । मोडामां जीभ घालबी = मुँह बंद कर लेता ; चुप होना । मोडामां जीभ न होवी == मुँहमें जबान न होना ; जुप होकर बैठ रहना । मोडामां मुंके एवुं = परवाह न करने-वाला (२) दूसरेसे आगे निकल जाने-वाला: बढ़कर; सवाया । मोढामां दांत नथी ?= दम, जोर, ताक़त नहीं है ? मोबरमां मग ओरवा == मुँहमें घुनघुनिया भर लेना; जवाब दिये बिना भुप रहना; मुँह पर साला लगा लेना। मोडामां मारवुं = मुंह पर सीधी-सीभी सुनाना ।मोढामा लीलुं तरणुं घालगुं 🛥 मुँहमें तिनका लेना; अति दीनता प्रकट करना । मोढामां साकर = मुँहमें गुड़-घी या घी-शक्कर। – अबळुं करी माक्षयंं ≕ मुंह चपड़ा कर देना ; हुस्निया विगाड़ देना। --आवंडुं थई जबुं = (अपनासा) मुंह लेकर रह जाना; **खिसियाकर रह जाना।--आववुं = मुँह** आना; मुँहमें छाले पड्ना। - जतरी अवं ः स्विसियाकर रह जाना; मुंह उतरना (२) दिलगीर हो जाना। ⊶करवुं ≕छेद करना; फोड़ेका फुटना, मुँह करना ।--काढवूं ≕ संसारमें आत्म-सम्मानपूर्वक रहना;सिर ऊँचा करना । --चडबुं = मुंह लटकाना, फुलाना; रूठना। – बलावर्य् = मुँह लगना; हुज्जत करना:ढिठ:ईसे जवाब टेना (२) गालियाँ देना(३)खाना; मुँह, चलाना । ~**चालमुं = बार-**बार साये जाना (२) बोलते रहना; मुँह चलाना । – अंडव् = बड़ोंकी बात न रसना; कहा न

मोस्

मोम

मानना (२) और बचाना; मिलनेका टालना। --जोईने लपडाक मारवी = किसीसे जैसा चाहिये वैसा बरताव करना। --ढांकर्वुं ≕ शर्रामंदा होना; भरदा करना (२) रौना; सियापा (स्त्रियोंका मृतकके पीछे रोना)। -नोचुं घालवुं = मुँह छिपाना; सिर नीचा करना । --पडवुं, पडी जबुं ⇔मुँह उतरना; (अपनासा)मुंह लेकर रह जाना। --पहोळुं करवुं == दंग रह जाना; मुंह बाना, फैलाना (२)मुंह पसारना; आनूरतापूर्वक राह देखना । --वहोळूं यई जबुं ≔दंग रह जाना (२)मर जाना; टन हो जाना ।-फेरववुं = मुँह फेर लेना; नाराजी दिखाना; मुंह लटकाना । --वताववुं = सामने आना; मुँह दिखाना । -- वतावाय एवुं = मुंह दिखाने योग्य । -- वहार काढवुं =दुनियाको मुँह दिखाना; सबके सामने आना। -- बंध करबुं == चुय कर देना; मुँह बंद करना । -- झाळवुं = मुँह पर फेंक देना या मुँह ५र फेंक मारना (२)दूर होता; मुंह काला करना। -मडभडवुं, भभडवुं ≕खानेकी तीव्र **इच्छा होना;जीभ चलना;हौका होना ।** –भरवुं ≓ भुँहमें कौर डालना; मुँह भरना (२) घूस देना; मुँह भरना। --भराई जबुं = अघाना ; संतुष्ट होना । -मलकाववुं = मंद-मंद हेंसना; मुस-कराना । ---रही जखंु ≕ मुँह थकना । –राखवुं = मान रखना । –लेवाई जवुं = (अपनासा)मुंह लेकर रह जाना; बिसियाकर रह जाना; मुँह फक पड़ **धाना ।--वकासीने रहेवुं =- मुंह ताक**कर रह जाना। - यटाळवुं = कुछ खाना;

मुँह जुठारना । --संताड्युं = शर्रमिया होना; मुँह छिपाना। –सिवाई वर्षु ⇒ मुंह पर मूहर लगना; न बोलना। --सीवी लेवुं = मुँह सीना; मुँह बंद करंदेनाः (२) छेद या सूराख वंद करनाः। – हरुायबुं = साना (२) चबाना (३) बोलना (४) सिर हिला-ं कर स्वीकृति, अस्वीकृति आदिकी सूचना देला; सिर हिलाना। **मोढे** करनुं = घोसना; कंठस्थ करना । मोडे कहेवुं = रूबरू कहना ; मुँह पर कहना । मोढे चढवुं = याद हो जाना; जबान पर होना; कंठस्य होना । मोडे चडीने = सामने आकर;रूबरू;मुँह पर । मोद्ये ताळ् ुं देषुं = जवान पर ताला लगाना; मुँह पर मुहर लगाना । मो**वे नई बचु,** थवुं = जबानी याद हो जाना। मोरो बोरूबुं ≕सिफ़ं कहना,कुछ कर**ना नहीं;** जबानी जमा-खर्च करना (२) सामने कहना (बिना डरके); मुँह ५र **कहना ।** मोढे माथे ओढवुं = दिवाला निकालना (२)मुंह ढाँपकर रोना(३)निराझ होना; हार जाना । मोढे लागर्षु 🗕 खानेका चसका लगना; मुँह लगना। अबळुं मोदुं करीने बेसवुं = पीठ फेर लेना; घ्यान न देना; मुँह मोड़ना। शुं मोढुं लईने थोले ? कया मोढे बोले ? = बोलनेमें लज्जित होना; किस मुँहरे बात कहना? जरा जेटलुं मोबुं बई अवुं = अपनासा मुंह लेकर रह जाना; लज्जित होना(२)मुँह इतनासा निकल সানা; दुबला हो जाना। बाळ तार्च मोबुं = अपना मुँह काला कर; दूर हो [उपयुक्त तैली पदार्थ; **मोयन** জা.] मोन न० मोयन देना या उसके सिए

मोसल

नील ा
मील (मॉ) न॰ मौत; मृत्मु
मोलियो पुं० झाँसकी पुतली पर लगने-
वाली झिल्ली;मोतियाबिद । [मोतिया
मरी जवा = पस्त हिम्मत हो जाना;
हाव-पांव फूलना.]
मोती न॰ मोती ! [-ना चोक पूरवा
= स्वयाली पुलाव पकाना; बड़े बड़े
भनसूबे बॉबना.]
मोतीज(न)रो पुं• चेचकका एक
प्रकार जिसमें बदन पर मोती जैसे दाने
निकल आते हैं; मोतीझिरा
मोब स्त्री॰ देखिये 'मोदियूं'
मोबियुं न० दूसूती चादर या फ़र्श
मोबी पु॰ मोदी (२)कोठारी; भंडारी
(३) ऐक अल्ल
मोबीज्ञानुं न॰ मोदीकी दूकान (२)
असका कोठार; मोदीखाना (३)
सम्करको खुराक और कपड़े सप्लाय
करनेवाला महकमा; 'कमसरियट'
मोबबलो (मॉ) पुं० देखिये 'मोबदलो '
मोन पुं० वह बल्ला जिसपर छप्परके
ठाटका बोझ रहता है; बँड़ेर
मोभाबार वि॰ वजनदार; इल्जतदार
<b>भोमारियुं</b> न० बँड़ेर पर डकनेकी बड़ी नरिया; मोषिया
नारया; साम्रिया कोन्द्राचे तः जनगणना जेनेग्वाचा भाषा
मोभारो पुं० छप्परका बॅडेरवाला भाग
मोनो पूं० रतवा; बरजा; आबरू; मतंबा कोन्ट (जर्म) कर वेलिने (जर्मकर)
मोबर्ड(मॉ) न॰ देखिये 'माह्यरुं'
् <b>मोर(मॉ) पुं० वौर; मौर; मंजरी</b> जोर (जॉ र ) अ० अपने प्रयोगरी पर
<b>मोर</b> (सॉ, र,)अ० आगे; पूर्व ; मोहरे पर जेन्द्रोप करण्डी पोटरेकी सामयजनाः
मोरबोपुं • लक्ष्करी मोहरेकी म्यूहरचना;

मोरचा (२) क्रिष्ठेके बुर्जका माग जहाँ तोप रहती है;गरगण मयूरतुत्प मोरबुबु न० मीला योषा; तूलिया; मोरम्बो पु॰ देखिवे 'मुरम्बो '

मोरमोर (मॉ-मॉ) अ० (खादा) मुंहमें कलते ही भूर-भूर हो आय इस तरह; खस्ता मोरली स्त्री० मुरली; वंशी **नोरलो** पुं० मोर सोरबन न० जामन मोरबवुं स० कि० जमाना (दही) मोरबुं(माँ) अ०कि० बौर लगना; मौर थाना : मौरना : बौरना मोरषुं (माँ) स०कि० काटना; छीलना (सन्जी आदिको) मोरस स्त्री० दानेदार शक्कर: बीनी मोरियोः पुं० सांवां जैसा मान; तिज्ञी; नीवार मोरी स्त्री॰ मोरी;नाछी(गंदे पानीकी) मोर्च (माँ') न०(शतरंजका)मुहरा;मोहरा मोर्च स० मेरा मोरे(मॉ) अ० आगे मोल(मॉ) पुं० फ़र्सल; पैदावार मोबडी वि० आगेका; अगला; सामनेका (२)पुं० अगुआ ; मुखिया भोषण न० देखिये 'मोण' मोबाळो पुं० बाल; केश मोर्षु स० कि० स्तेहयुक्त करना;मोना मोसम(मॉ) स्त्री० मौसिम; ऋतु मोसमी वि० मौसिमी; अध्तुका मोसंबी स्त्री० नारंगीकी किस्मका एक फल; मोसंबी मोसाळ (मॉ)न० मॉका पीइर;ननिहाल; ममियौरा [ आदमी मोसाळिम्ं (मॉ) न० मामाकी तरफ़का भोसाळूं(माँ) न० वह नेग जो मौबापकी **ओरसे लढ्कीको सीमंतके अवसर पर** या उसके बेटे-बेटीके उपवीश या शादीके

अवसर पर दिया जाता है;भीकट;भात

मोत्रनठार	
Ald the second	

- मोहनठार, मोहनचाळ पुं० एक प्रकारका मिष्टाज
- मोहरम (मॉ) पुं० हिंजरी संवत्का पहला महीना; मुहरंम
- मौहबुं अ० कि० मोहित होना (२)स∙ कि∙ मोहित करना
- मोहाबुं अ० कि० मोहित होगा
- मोळ(मॉळ,) स्त्री॰ शरीरमें वातके ंप्रकोपसे मुँहसे टपकनेवाली छार (२)मंदी
- मोळप(मॉ) स्त्री० फीकापन; सीठा-पन(२)ढिलाई
- मोळवुं स॰ कि॰ छीलना (सम्बी)
- **मोळाई**(—त)(मॉ) वि० मामाका; \_\_\_\_\_\_ममेरा
- मोळाग्न (मॉ) स्त्री० फीकापन; सोठा-पन (२)ढीलापन
- मोळिप् (माँ) न० अँगियाकी आस्तीन पर लगाया जानेवाला (कलाबसूका)क्षीता; ठप्पा: कलाबस् (२)कलाबतूनी साफ़ा
- मोळियुं(मॉ) ने॰ दिना नमककी रोटी (२) शोकमें पहननेकी साड़ी
- मोळुं(मॉ) वि० स्वादरहित; फीका; सीठा (२) ढीला; सुस्त [ला.]
- मोळुंमच (माँ) •वि० बिलकुल फीका
- मों(मो') न॰ मुंह; मुख (२) [ला.] आवरू; प्रतिष्ठा; हया। [-न्तुं पान = अति प्यारा; आँखका तारा (२) जिससे धान बढ़े। -ने चोकठुं नयी = मुंहमें लगाम नहीं है; जो मनमें आये,बक देना। -पडी जबुं = लज्जित होना; खिसियाकर रह जाना (२)

## **\*\***\*

- म्युनिसिपासिटी दिलगीर, दुःसी होना। –मां आंगळां
- षालवां = दौतों तले उँगलियां दबाना; दंग रह जाना । -मां घूंकवुं = धूर्तता आदिमें आगे बढ़ जाना । -मां घूंके एवुं = बढ़ा हुआ; सवाया; आगे बढ़ जानेवाला ! -मूकीने = मान-प्रतिष्ठा या हया त्याग करके; बेशमं होकर (२) मुक्तकंठसे; मूंह ढाँपकर । -संताखवुं = मुंह छिपाना; लज्जित होना । गळघुं मों करवुं, कराववुं = मुंह मीठा करना; मिठाई खाना, खिलाना.]
- मॉकळा(मो') स्त्री॰ चेहरेका आकार, रूप
- मोंघवारी, मोंघाई,सोंघारत, मोंघुं देखिये 'मोधवारी, मोघाई, मोघारत, मोघुं'
- मोंबक्लो (माँ) पुं० वह चीज जो कुछ काम करने या कुछ देनेके बदलेमें मिले; बदला; मुआवजा (२) जमीन बेचने-वालेका सरकारी दफ़्तरमें खरीदारका नाम दर्ज करा देनेका काम
- मॉमाग्युं(माँ) वि॰ मुंहमांगा; सूब
- मॉमायुं(माँ) न॰ मुँह या सिर;किसी चीजका अता-पता या जानकारी[ला.] मॉमार(माँ) वि० मुँहज्वोर और प्रभा-वशाली
- मोंसूझणूं (माँ) न॰ प्रभात; भोर
- म्पाउं न० बिल्लीकी बोली; म्याँव
- म्यान त० म्यांन
- म्पानो पुं० एक तरहकी पालकी; मियाना
- म्पुमिसिपालिटी स्त्री० नगरपालिका; नगरसभा; म्युनिसिपैलिटी

800





#### य

- थ पु० पहला अंतःस्थ वर्ण (२) पदके अंतर्मे आनेसे 'भी 'का अर्थ सुचित करता है; उदा० 'तमेय ' (३) प्रश्न-बालक सर्वनामके साथ अनिश्चितार्थक अणिकताका भाव सूचित करता है; उदा० 'केटल्र्य '
- थजमान पुं० यज्ञ करनेवाला; यजमान (२) दक्षिणादि देकर पुरोहित या बाह्यणोंसे घामिक कृत्य करानेवाला; यजमान (३) आश्रयदाता; दाता
- **यजमानवृत्ति** स्त्री० यजमानके दान-दक्षिणासे जीविका चलाना
- **दंव न०** संव;कल(२)देखिये 'जंतर'; **जंत**र; संव
- **यंत्रीयोग** पुं० यंत्रीद्योग
- **र्यत्रोद्वोगवार** पुं० यंत्रोद्योगके बढ़नेसे **देशकी** आबादी है ऐसा वाद; ' इन्ड-**स्ट्रिय**लिज्रम '
- वा अ० हे; ऐ(२) अथवा; वा; या
- **याकूती** स्त्री० भाँगकी चाझनीकी माजून **याचवुं** स० कि० थाचना; माँगना
- मात्राळु पुं० तीर्थाटन करनेवाला; थात्री मात्री वि० तीर्थाटन करनेवाला (२)
- पुं० यात्री [सूची;नोष;याददाश्त पुं० यात्री [सूची;नोष;याददाश्त पाब स्त्री० याद; स्मरण; स्मृति (२)
  - यादगार वि० जो किसीको याद दिलाये (स्मारक) (२) याद रह जाय ऐसा; स्मरणीय
  - यावगीरी स्त्री० स्मरणशक्ति; याददाश्त (२) स्मारक; स्मृतिचिह्न; यादगार माबदास्त(-स्ती) स्त्री० याददाश्त

- यादी स्त्री० सूची; ब्योरेवार नोंघ; फेहरिस्त (२) नोंघ,ब्योरा लिखनकी किताब (३) याद; स्मरण याने अ० अथवा; वा; या यार पुं०धार; दोस्त (२) जार; यार यारी स्त्री० यारी; दोस्ती; मैत्री(२) स्त्री-पुरुषका अनुचित प्रेम या संबंध;
  - याराना (३) पाल फैलानेका रस्सा (४) मदद।[--प्राप्तवो, देवी(नसीबे) = (नसीब) खुल जाना या चमकना; प्रयत्न सफल होना.] [अयाल
  - याल स्त्री० सिंहकी गरदन परके बाल; याहोम अ० कुरवानी-आंत्मत्यागका नारा। [**--करवुं, करीने मुकाव्युं ≕**
  - मरनेकी तैयारी करके जूझना.] याळ स्त्री० देखिये 'याल '
  - याळ रनाण पालप पाल युक्ति स्त्री॰ तदबीर; चाल; हिकमत; उपाय (२) तर्क; युक्ति
  - युक्तिप्रयुक्ति स्त्री० भेले-बुरे उपाय करना; विविध चालें चलना; युक्ति-प्रयुक्ति करना
  - युक्तिबाज, युक्तिमान वि० चतुर; होशियार(२)शोधक;लोजी;करामाती

**युनान** पुं० ग्रीस देश; यूनान

- युतानी वि० यूनानका; यूनान-संबंधी; यूनानी (२)यूनानी(चिकित्सा-झास्त्र; हकीमी )
- युनिट पुं० इकाई (मान था माप) (२) एक प्रकारकी चीजोंकी एक राशि जो मानदंडक' काम दे

रम

योजना

Xa5

योखना स्त्री० योखना; आयोजन; स्यवस्था (२) किसी कार्यके बारेमें उसकी रीति, वस्तु, उद्देष्य आदिका पहलेसे किया हुआ दिथार; योजना **योववुं** स०कि० संवद्ध करना; जोड़ना (२)योजना करना;रच्दना;तरतीवसे रखना(३)नियुक्त करना; लगाना; प्रवृत्त करना

### ₹

र पुं० दूसरा अंतःस्य वर्ण **ৰ্ক্মক** स्त्री० सकसक; खींचतान रकम स्त्री० वस्तु; चीज (२)गहना; जैवर (३) बहुत रुपये-पैसे; धन; रक़म (४) संख्या; रक़म [ग.](५)गणितका प्रक्त, सवाल । (-उपाडवी = पैसे उघार लेना; लौटानेकी झर्त पर पैसे लाना (२) कोई चीज या जेवर चुराना.] रकमबंध वि० योक; फुटकर या खुदराका उलटा(२)अ० एक कलम; पुरे तौरसे; समूचे (३) हिसाबसे; एकके बाद एक; कमसे रका(--के)बी स्त्री० रकाबी; रकेबी रक्षवुं स० कि० रक्षा करना रलडपट्टी स्त्री० आवारागर्दी; मटरग्रस्त (२) धक्का; चक्कर

रखडवुं अ०कि० मटकना; व्यर्थ दक्कर काटना (२) [ला.] --का ठिकाना न लगना; किसी काममें न लगना (३) काम पूरा न होना; बीचमेंसे विनष्ट होना; लटक जानां [हरहा (पशु) रखडाड वि० भटकता; आवारा(२) रखडामण न०, (-शी) स्त्री० बेकार धूमना या व्यर्थ चक्कर लगाना; भटकना [आवारा रखडु(--डेल) वि० देखिये 'रखडाउ'; रखती स्त्री० मान; लिहाज; मुरौवत

रखरख न० तड़प; छटपटी; बेचैनी रखरखबुं २० कि० तहपना; 평군학-टाना (२) जलना; खूब तपना रखवाळ पूं० चौकीदार; रखवाल रखवाळी स्त्री०, (-च्छं) न० रखवाली; भौकी (२) रखवालीकी मजदूरी; रखाई;रखवाई [हुई स्त्री;रखेली रसात स्त्री० दिना विवाह किये रसी रत्नावचुं स०क्रि० 'राखबुं'का प्रेरणार्यक; रिखा जाना रखवाना रकार्यु अ० कि० 'राबयुं' का कर्मणि; रक्ते ( ०ने ) अं० शायद; कदाषित्; कभी रजेवाळ(-ळी, -ळूं) देखिये 'रब-ৰাক্ত' পাৰি रलेळ्युं स०कि० रखियाना; बनावको सड़नेसे बचानेके लिए उसमें राख मिलाना रखो (०पियो)पुं० गौव या खेतकी चौकी करनेवाला; रसवाला; चौकीदार रसोपुं न० देखिये 'रखवाळु ' रक्या स्त्री० राख; भस्म रप स्त्री० रग; नस (२) [ला] मनका सुकाव; मनोवृत्ति (३) हठ; खब्त; धुन । ]-अोळसबी, जाभवी, तपासबी, **पारसबी = मनोवृत्ति जामना ; रग पह-चानना । -- तो भोनियो = रग-र**गसे

गु.हि–२६

ৰাজিজ ]

रपद	
-----	--

#### THEFT

रगड स्त्री॰ रगड़; सर्वन; मालिश (२)
कड़ा परिश्रम; रगड़ (कठिनाईसे
रगडदगढ अ० ज्यों-त्यों करके; जैसे-तैसे;
रगडपट्टी स्त्री० रगड़ा; अति परिश्रम
रगडवुं स० कि० रगड़ना; घिसना;
धोंटना (२)मालिश करना; मलना;
हायसे रगड़ना (३)अत्यधिक परिश्रम
कराना; हैरान करना; रगड़ना
रगढो पुं० गाढ़ा द्रव पदार्य (२)तलछट;
किट्ट (३)झगड़ा ; रगड़ा
रगत न० लह; रक्त
रगतपीतियुं वि० कोढ़ीं; कुष्ठरोगी
रगतरौयडो पुं० रोहेड़ा;रक्तरोहितक
रगबोळवुं स० कि० घूलमें रगड़ना;
गँदा करना [गिड़गिड़ाना
<b>रगरगवुं अ० कि</b> ० आजिजी करना;
रगरगाववुं स०कि० 'रगरगवुं' का प्रेर-
णार्यक (२)भरोसा देकर दुःखी करना
(३)आशा बेवाकर लटकाये रखना
रगशियं वि० थीमा ; मंद ; सुस्त । [गाडु
= मंयर गतिसे और मुस्किल्से चलने-
वाला कामः ]
रगिषुं, रगीलुं वि॰ रगीला;हठी (२)
ॅममुक प्रकारकी मनोवृत्तिवाला
रघवाट पुं० जल्दवाजीसे उत्पन्न घवरा-
हट; हड्बड़ी (२) बावलापन
रघवाटियुं, रघवायुं वि० हडवडी मचा-
नेवाला; हड़बड़िया; अधौर
रघवावुं अ० कि० हड़बड़ाना;घबराना
रचवुं स०कि० रचना; बनाना; निर्माण
करना
रखबुं अ० कि० (द्रषका) क्षमीनमें उत-
रना-पचना (२) आसक्त या अमुरक्त
होना, रचमा [ लगा हुआ

रचेलुंपचेलुं, रच्युंपच्युं वि० रत; लोग ;

रज स्त्री॰ जर्रा; अणु; कण जो सूर्य-
प्रकाशमें उड़ता दिखाई देता है(२)
गर्दै; रज; कचरा(३)न० स्त्रियोंका
मासिक रक्तस्राव; रज (४) वि०
थोड़ा; जरासा। [तुं गज करवुं =
तिलका साड़ करना । मामे रज मभ-
रावे एवं ़≕क़दम आगे रहनेवाला.]
रजकण स्त्री०;पुं० रजकण;धूलिकण
रजको पुं० मेथीकी जातिकी घास
रजत वि० रजत; चौंदीका बना हुआ
(२) रजत; शुभ्र; रूपेके रंगका (३)
न॰ रूपा; रजत
रजतमहोत्सव पूं० पचीस साल पूरे होने
पर मनाया जानेवाला उत्सव; रजत-
जयती; 'सिल्वर-ज्युबिली '
रजपूत वि० (२) पुं० राजपूत
रजपूताई स्त्री० रजपूती; राजपूतपन
रजपूताणी स्त्री ०राजपूत स्त्री;राजपूतानी
रजपूताना पुं० राजपूताना
रजपूती स्त्री० राजपूतपन; रजपूती
रजवाडी वि॰देशी रियासतका; रियासती
रजवाडु न॰ देशी रियासत; रजवाड़ा
रजवाडो पुं० देशी रियासत; रजवाड़ा
(२) जहाँ राजपूत रहते हों वह प्रान्त ;
राजस्थान (३) राजगृह; राजाका
महरू [देखिये 'रज'
रजस पुं० देखिये 'रजोगुण' (२)
रजा स्त्री० रजा; परवानगी; अनुमति
(२) छट्टी; रजा (३) रुखसत;
मौकूफ़ी;रेजा (नौकरी,काम आदिसे)।
[पंडवी = छुट्टी होना.] [रवाई
रजाई स्त्री० थोड़ी रूई भरा लिहाफ़;
रवाकवा स्त्री० वीमारी (२) अनेचीती
भाकत(३)भौत; कजा

<b>ৰ্যা</b> মিত্ <b>তী</b>	

रजाचिठ्ठी स्त्री० वह चिट्ठी या अर्जी	रण १० बालूका मैदान; रेगिस्तान(२)
जिसमें रजादी या मौगी गई हो	लड़ाईका मैदानु; रण(३)युद्ध; रण
रजी स्त्री० रेत;बालू [किया हुआ	(४) <b>श्रहण ; क</b> र्ज
रजू वि० नजरके सामने रखा हुआ;पेश	<b>रणकवुं</b> अ० कि० रनकना
रजुआत स्त्री० पेश करने या होनेका	रनकार(-रो), रनको पु॰ धातुकी
काम ; पेशी दूसरा ; रजोगुण	चीज टकरानेसे उत्पन्न ध्वनि ; झनकार;
रजोगुण पुं० प्रकृतिके तीन गुणोमें से	झंकार (२) उस आवाजके खत्म होनेके
रभोगुंगी वि० रजोगुणवाला या उससे	बाद हवामें गूँजता हुआ स्वर ; गूँज
संबंधित(२)कोघी; तामस	रजगाडी स्त्री । तोप आदिसे लैस यांत्रिक
<b>रजोटी</b> स्त्री० बारीक गर्दरज	गाड़ी जो लड़ाईमें काम आती है; टंक;
रमळवुं अ० कि० निकम्मा या बेकार	'टैंक'
घूमना-फिरना; भटकना । [(काम)	रणगीत न० लड़ाईका गीत
रेक्सळी जबुं = (काम) खटाईमें पड़ना	रणझणवुं अ०कि० झनझनाना;रनकना;
माकुछ ते न होना]	खनकना [भागनेवाला; <b>रणधीर</b>
रटनुं स० कि० रटना	रण्थीर (–रं)वि० लड़ाईके मैदानसे न
रडती सूरत वि॰ रोनी सूरतवाला;	रणयंको पुं० रनवंका; वीर
मुहर्रमी; रोतड़ी सूरत	रणबाट स्त्री० रणक्षेत्रका रास्ता(२)
रडवुं अ० कि० रोना; रुदन करना	लुटेरेका काम; डाकाखनी; ड <b>कै</b> ती
(२)स० कि० –को लक्ष्य करके दुःखी	रणवास पुं० रनिवास; रनवास; हरम;
होना; रोना; रंज, शोक, ग्रम करना	अंतःपुर [रणमे <b>री</b>
(३) दुःख बयान करना; रोना।	रणशिगङ्गं, रणशिगुं न० रणसिंघा;
[ <b>रडो ऊठवुं =</b> नींदमेंसे सुगबुगाकर	रणशूर (–६ं) वि० रनबंका; शूरवीर
हड़बड़ाकर रोना (२) घाटेमें आ	रणहाक स्त्री० युद्धका नारा; युद्धघोष
जाना; हानि पहुँचना (३) हार	<b>रणियुं</b> , रणी वि० ऋणी; क़र्जुदार
जाना; थके जाना ]	रतन न० देखिये ' रत्न ' (२) आंखकी
<b>रडवं</b> अ०कि० लुढ्कना	पुतली; तारा
रडाकूट स्त्री०, (टो) पुं० रोना	रतनजोत स्त्री० औषघके काममें आने-
पीटना; रोनी-घोनी (२)क्रजिया; टंटा	वाला एक पौधा; रतनजोत
(३) व्यर्थ श्रम [ला.]	रतल पुं• क़रीब साढ़े अड़तीस तोलेका
रडारोळ स्त्री० रोना-पीटना; कुहराम	एक अंग्रेजी बजन; पाउंड
<b>रडघुंलडघुं</b> वि० मूला-भटका (२) शायद	रतली वि० पाउंड वजनका(२)सं <b>स्</b> या-
कोई; इनका-डुक्का (३') बिखरा हुआ;	के साथ प्रयुक्त होता है; उदा० 'त्रण
तितर-बितर [आग्रह	रतली '; अमुक पाउंड बजनका
<b>रह स्त्री॰ ल्प्रै;</b> लगन; घुनः(२) हठ;	रतवा पुं० चमड़ीका एक रोग;वात-
रडियाळुं वि० सुंदर; सलौना; मोहक	रक्त; रक्तवात

रताल

रण्तुं

- रताक्त स्त्री लखाई; लाली; सुर्खी रताख्नु न • एक कंद;रतालू [रतौंधिया रतांधळुं वि • रातके समय नहीं देखनेवाला; रती स्त्री • गुंजे जितना कद या क्यन; रती (२)एक वखन जो तोलेका ३२ वां हिस्सा होता है
- रतीवूर, रतीमर वि॰ रसीके जिल्ला; रसीमर(२)करासा; रसीमर
- रतुंबढुं, रतूमडूं दि० रतनारा; ललझू; किंचित् लाल; राता
- रत्न न॰ रत्न(२)अपने वर्ग, जातिमें उत्कृष्ट वस्तु या व्यक्ति; रत्न;अय(३) समुद्रमंचनसे निकले हुए चौदह रत्न
- रद वि० रह; निकम्मा; काटा-छौटा हुआ रदबातल वि० निकम्मा; रह
- रवियो पुं० कही हुई बासको रद्द-निकम्मी साबित करनेवाला प्रत्युक्तर; खंडन; रद्द करना
- रही वि० रही; निकम्मा; बेकार
- रपाडी स्त्री०,(--टो)पुं० चक्कर;फेरा (२)तेज दौड़; रपट (३) बका ढालना; रगढ़ना
- रपेटवुं स० कि० खूब तेज दौड़ाना; सरेड़ना (२) बहुत श्रम कराकर थका डालना; रगड़ना
- रपेटी स्त्री०, (--टो) पुं० देखिये 'रपाटी'। [-मां लेबुं = काममें बहुत जोतना; थका डालना; रगड़ना.]
- रफते रफते अ० रफ़्ता-रफ़्ता; धीरे-धीरे रफु वि० रफ़ूचक्कर; ग़ायब
- रफुचकर वि० गायब;रफ़ूचक्कर
- रफेरफे अ० अस्तव्यस्त; तितर-वितर
- रवडी स्त्री० रवडी; वसौंघी
- रबर न॰ रबढ़; रबर
- रवारी पुं० ग्वाला; अहीर

रम्बड(-र) न० रबर; रबड़ रमकडूं न० खिलौना रमकाण न० हुल्लड़; दंगा; भार-पीट रमची(-जी) स्त्री० हिरमजी रमझट स्त्री० सपाटा;तेजी;झड़ी रमण पुं० रमण; कान्त; पति(२)न० खेलना; विलास; रमण; कीड़ा। [रमणे चढवुं = खेलके पीछे पागल होना (२) (पागल बने इतनी हद तक) जोशमें आना.] रमणबुझार्थ न० मिट्टीका मोटा ढक्कन (२) उसके जैसी बेढंगी, मही कोई [ वितर শ্বীয় [ সা. ] रमणभमज अ० अस्तव्यस्त; तितर-रमत स्त्री० खेल; कीड़ा; मनोरंजन (२) खेलनेकी रीति, ढंग । [-करबी = कामकी तरह काम न करके सिर्फ़ उसके स.च सेलना। ---रम्बी = खेलना; कीडा करना(२)दावँ बालना; खेल खेलना; चाल चलना (३) युक्तिपूर्वक छलना; दगावाजी [ कीड़ा ; मनबहलाव करना.] रमतगमल स्त्री० तरह-तरहके खेल; रमत बात स्त्री० बिलकूल आसान

- चीज या काम; बायें हाथका खेल रमसाराम पुं० एक जगह स्थिररूपसे न रहनेवाला;रमताराम;उठल्लूका चूल्हा
- रमतियाळ वि० खेलकूदमें मेग्न रहेने-वाला; खेलवाड़ी; खिलंदरा
- रमतुं वि॰ खेलता हुआ (२) बंधन-रहित; छुट्टा; मुक्त (३) कुषादा; विस्तारवाला; खुला (४) जो षुस्त न हो; ढीला। [--रहेवुं ≕ छुट्टा या ढीला रहना। --राखवुं = झौगला रखना; तंग न रखना.]

804

# रनरमावर्षु

रमरमाबर्गु स॰ फि॰ जोरसे मारमा रमवुं अ॰ फि॰ सेलना (२) आनंद मनामा; चैन करना (३) सदा मनमें या स्मृतिपट पर रहना; मनमें घूमना-फिरना; रमना; उदा॰ 'वास रम्या करवी' (४) काम-कीड़ा करना; रमना (५) करतव या सेल-तमाधा करना; सेलना (नट, भोड़ आदि) (६) कोई खास सेल सेलमा (ताध, शसरंज आदि) (७) लाड़ करना। [बाव रमवी = युक्ति करना; दावें खेलना या पैतरा रचना। राम रमी अवा = मौतके मुँहमें जाना; शामत जाना; संकट आ पड़ना। रमी रहेवुं, रम्या करवुं = हमेधा व्याप्त होना; न मूलना; रमना.]

- रमाडवुं स॰कि॰ 'रमवुं'का प्रेरणार्थक; कोलाना (२) नचाना; ठगना [ला.] रमुज स्त्री० मनोरंजन; मजा; हॅसी-
- विनोद; कौतुक (२) हँसी; भजाक रमूकी वि० विनोदप्रिय; मजाक-पसंद;
- हँसोड़; मजेदार (२) आनंदी
- रबई स्त्री० रई; छोटी मथानी
- रवडवुं अ० कि०भटकना । [रवडी जवुं, रवडी पडवुं = बेकार क्षमते रह जाना; कामयाथ न होना; कुछ ठिकाना न होना; छूटना (नौकरी आदि).]
- रवरव अ॰ छरछर;छरछराहटके साथ (पीड़ा होना)

रवरववुं अ०त्रि० छरछराना (पीड़ा)

- रबरवाट पु॰ घावमें नमक या खार लगनेसे होनेवाली पीड़ा; छरछराहट
- रवानगी स्ती॰ रवाना होना; विदा; रवानगी (२) उस वक़्त दी हुई भेंट; विदाई (३) दूसरे गौव रवाना करना, मेजना

**T**.

रबाल स्त्री० मोड़े या बैलकी एक प्रकारकी चाल; दुलकी; रहवाल रवी पूं० वसंत ऋतुया उस ऋतुकी फ़सलँ; रबी; चैती रवीपाक पुं० रबी; चैती(फ़सल) रवेन्न पुं० वालाखानेका बरामदा:बारजा (२)रिवाज;प्रया;रविश ] कोसारा मकानका बरामदा; रवेशी स्त्री० रबेयुं न० बहुत छोटा बैंगन (२) उपरसे योडा चीरकर, अंबर मसाला भरकर पकाया हुआ शाक रि रवैयो पुं० दही मथनेका डंढा; मयानी; रवैयो पुं० रवैया; चलन; प्रया रवो पुं० रवा; सूजी (२) जाँदी आदिका दाना; रवा(३)गुड्की भेली;पारी:ढोंका रशियन वि० रूसी (२)पुं० रूसनिवासी (३)स्त्री० रूसी माषा रशिया पुं० रूस(देश) रस पुं० रस;स्वाद (२) साथे हुए अन्नका प्रथम परिणाम;शरीरकी सात बातुओं-में से पहली घातु; रस (३) कांग्यका रस, आनंद (४) आनंद ; प्रेम ; रस (५) जिद; होड़; ममत्त्व (चढ़ना) (६)तरल पदार्थ;रस(७)फलों या वनस्पतियोंका जलीय अंश; रस(८)सार; सत्त्व(९) गुण; फ़ायदा; नफ़ा; रस(१०)सोना, चौदी आदि धातुको गलाकर बनावा हुआ रस (११)पारा;रस (१२)भातू-ओंको फूंककर तैयार किया हुआ भस्म; रस। - जावयो = मजा, रस आना। -उतारवो = (हाथसे) पीटकर गुस्सा ठंडा करना; पीटनेकी इच्छा पूरी करना (२)व्यर्थ चक्कर काटकर लौट आना (३) बहुत देर तक खड़ा रहना (४) जमानदराजी करना; जबान

Yos

YH.	

- स्रक्षाना (५) बददुआ देना। --असरबो == अतिसयोक्सि करना(२) (पॉंब) सूज जाना (३) अंडवृद्धि होना; पानी उतरना (४) अधिक चलनेसे या खड़ा रहनेसे थक जाना; पौव तोड़ना। -- जामबो == रसोत्पादक होना; जमना (काव्य; गाना) (२) मजा जाना.]
- रसकस पुं॰ सार; सत्त्व; कस
- **रसगुल्लुं न०, (-ल्लो)** पुं० रसगुल्ला **रसवस** वि० रसपूर्ण; सरस
- रसभेर अ० मजेसे; चावसे; शौकसे रसाकशी(--सी) स्त्री० भारी कशमकश:
- रसाकशा(--सा) स्त्रा० भारा कशमकश खींच-तान; नोक-सोक
- रसातल (-ळ)न०रसातल। [-धालवुं = रसातल पहुँचाना; पूरा बरबाद कर देना। - प्रवुं, वळी जवुं = मटियामेट होना (२)निवँश होना। पृथ्वी रसातल जबी = दुनिया इधरसे उघर होना]
- रसादार वि॰ रसादार; झोरबेवाला रसादय न॰ धातु, पारा आदिकी भस्मवाली औषधि (२) जराव्याघि-नाशक औषधि;रसायन(३)रसायन-विधा; रसायन-विज्ञान
- रसावणविद्या स्त्री० धातु,पारा आदि मारनेकी या ताँबा आदि हल्की घातुओंमें से सोना बनानेकी विद्या; रसायन (२) रसायनक्षास्त्र
- रतायणशास्त्र न॰ रसायनसास्तः 'केमि-
- . स्ट्री' (२) रसायन-विचा; रसायन
  - रसायणी वि० रसायन-संबंधी ; रासाय-निक(२)पुं०रसायनशास्त्री;रासायनिक
  - **रत्तायन (०विद्या,०क्वास्त्र, --नी**) देखिये 'रसायण' आदि
  - रतालो पुं० पुड्सवारोंका दल; रिसाला

(२) अफ़सर या रईसका पहिलार, परिजन आदि [(२) उपजाऊ रसाळ(-छुं, वि० रसपूर्ण; रसीला;रसाल रसियुं वि० रसिया; रसिक (२) रस वा आनंदका अनुभव करनेवाला; रस लेनेवाला (३) अड़दार; हठी; जिद्दी

- रसो स्त्री० पोन; मवाद; उसके जैसा जलीय पदार्थ;पानी(२)रोगके जंतुओंसे बनाई दुई दवा; रुग्रा; टीका
- रसी स्त्री० रस्सी; डोरी
- रसीव स्त्री० रसीद; पावती
- रसीखुं वि॰ रसीला; रसिया (२) छवीछा; सुंदर; सजीला (३) रससे भरा हुआ; रसपूर्ण
- रसो पुं० शोरवा; रसा; झोल
- रसोइयण स्त्री० खाना पकानेवाली; मिसरानी
- रसोइयो पुं० रसोइया; बवरची
- रसोई स्त्री॰ खाना पकानेकी किया (२) पकाया हुआ खाब पदार्थ; रसोई;खाना रसोईपाथी न० भोजन या उससे संबंधित कामकाज [रसोई; बावरचीखाना रसोडुं न० रसोईघर; रसोईखाना; रसोढी स्त्री॰ शरीर पर उभरी हुई
- गिलद्री; रसौली
- रस्तौ पूं० रास्ता; मार्ग; राह (२) उपाय; रास्ता। [रस्तामां पडवुं = रास्तेमें पड़ा हुआ होना; झट मिल जाय ऐसी स्थितिमें होना; निकम्मा या अरक्षित। रस्ते चडवुं ⇒ रास्ते पर आना; उचित मार्ग पर आना (२) रास्ते जाना; राह लगना। रस्ते पडवुं = राह पकड़ना; चला जाना (२) नौकरीमें या किसी काममें लग जाना; ठिकाने लगना(३)काम चल निकलना।

	2	
-32	Π	

रंग

🍽 काढवो 💳 उपाय) निकालना ; हस कोजना । --पकडबो == चला जाना; रास्ता पकड़ना (२) मार्ग ग्रहण करना.] रस्सो पुं० मोटी रस्सी; रस्सा रहीश वि० रहनेवाला; निवासी; बासी **पहेठाण**(र्हे) न० रहनेका स्यान; निवासस्थान; मुक़ाम; रहाइश रहेणी (रहें) स्त्री० रहनेका ढंग; रहन-सहन; बर्ताव रहेणीकरणी(र्हे) स्त्री० रहन-सहन; माचरण मिहरवानी रहेम(०त) (रहॅ)स्त्री० रहम; कृषा; रहेमरिल(र्हे) वि० रहमदिल रहेमनजर (रहॅ) स्त्री० कृपादृष्टि; मेहरवानीकी निगह रहेवार्चु (र्हे) अ० कि० रहा जाना (२) चैन पड़ना; कल मिलना; उवा० 'दुसे रहेवात् नथी' रहेवास (र्हे) पुं० रहना; बसना; बास करना (२) निवास; रहनेका स्थान रहेवासी (रहें) वि० रहनेवाला; निवासी रहेषुं(रहॅ) अ०कि० रहना; बसना (२) राह देखना; रुकना; ठहरना; रहना (३) समाना; भीतर आना; अँटना (४) थम जाना; ककना; रहना(५) बचना; छूटना; बाक़ी रहना (६) जीवित रहना; शिंदा रहना; रहना (७) शान्त--चुप होना; स्वस्थ होना (८)नौकरी पर लगना; रहना(९) पेट रहना(१०)रहना (दूसरे बब्दोंके साथ आने पर); उदा० 'ढीला रहेवुं' (११) दूसरी कियाके भूतकृदंतके साम 'वह किया पूर्ण करना' इस अर्थमें; उदा॰ 'ते कोली रह्यो '

(१२)भूतकृवंतके साथ 'वह किया

बारी है' इस अर्थमें; उदा० 'ह विचारी रह्यो झूं के हवे सारे सुं करवुं ' (१३) वर्तमान कृद्तके साथ 'वह किया होती रहती है' इस अर्थमें; उदा० 'ते घेर कागळ लखतो रहे छे'। [रही वर्षु = (अंगका) संझाहीन हो जाना; काठ होना; गठिया रोगसे जकढ़ जामा (२) मर जाना (३) बच जाना (४) धकना; ठहर जाना;न जग्ना (५) मुक़ाम पर ढटा रहना (६) बाकी रहना; बचना; छूटना (७) (ग्राम्य) पेट रहना । रही रहीने **≕ रुक-रुककर; रह-रहकर** । रहेवा देवं ुं ≕रोक देना; बंद कर देना(२) रथाग करना; छोड़ना(३) मुक़ाम करने देना.] रहेंट(रहें०) पुं० रहेंट; रहट रहेंसबुं(रहॅ०) स० कि० फाङ ढालना; करल करना रहर्षुंसहर्षुं वि० रहा-सहा; वचा-**सूचा** रळतर न० कमाई; उपार्जन रळवुं स० कि० कमाना ; पैसा पैदा करना रळाड वि० कमाऊ रळियामणुं वि० रमणीय; सुंदर रंग पुं० लाल, पीला आदि रंग या उसकी बुकनीयाद्रव; रंग(२)[ला.]असर; प्रभाव ; रंग ( ३ ) आनंद ; मनकी तरंग ; मौज; रंग (४) नशा; मस्ती; मद; कैंफ़ (५) प्रीति; स्नेह; रंग (६) प्रतिष्ठा; शान (७) रंगभूमि; रंग-मंच(८)रणभूमि;युद्धक्षेत्र । [--आवयो ≕जानंद झाना ; रंग जमना **। –ऊवडवो** ≕भलीभौति रंग लगना; े रंग चढनाः; रंग खुलना। -उत्ती झवो ⇒

रंग उड़ना । -डलरबो = रंगका हलका

<u> </u>	
1.1	ľ

पड़ना; रंग उत्तरना, उड़ जामा (२) मोते समय रंग उत्तरनते दूसरे रूपड़ेको रंग लगना । - करबी = रंग देना; रेंगना (२) विजयी होना (३) यश या क्याति प्राप्त करना । - नांक्सबो = रंग कोलना, डालना, फेंकना । - फरबो, डवलाबो = रंग फीका पड़ जाना; रंग उतरना । -मबाबबो = रंग मचाना;रंग रचाना । -मारबो, लगाड-(-व)बो = रेंगना । -मां आधवं = रंग मं रेंगना; रंगमें आना । -राक्सबो = शान रक्तना; कमाल करना । -लागबी = रंगी हुई चीजके स्पर्शेसे रंग लगना (२) -के असरमें जाना; -के रंगमें डलना (३) - का चसका लगना.]

- र्रगत वि॰ रेंगा हुआ; रंगीन (२) सुक्षोमित (३)स्त्री० रौनक;खुबसूरती; उदा० ' आ कपडानी रंगत सारी नषी ' (४) आनंद; भजा; रंगत
- रंगद्वेष पुं० जातिद्वेष; अन्य रंगके लोगोके प्रति भेदभाव
- रंगपंचनी स्त्री० वसंतपंचनी
- <mark>रंगपाची</mark> न० मादक पेय; नशा;अमल रंगबेरंगी वि० रंगविरंग
- रंगमेब पुं० अलग रंगके लोगोंके प्रति भेदमाव; जातिमेद
- रंगभेर अ० हर्षके साथ; आनंदसे
- रंगरसिम् वि० रंगरसिया; विलासी
- रंगकट पु॰ रंगरूट; नया सिपाही
- रंगकम न० आकार; सूरत-शक्ल; रंग-कम; देखान
- रंगरेज पु॰ कपड़ा रँगनेवाला; रँगरेज रंगरोगान न॰ रंग और रोगन (आविकी

रौनक) [में); मसखरा; भौड़ रंगलो पुं० बिदूषक (नाटक या ' मथाई '

XOZ

ंची

- रंसचुं स॰क्षिं॰ रंगे चढ़ाना (मेच, बीबार आदि पर); रंगमें डुबोना (कपड़ा); रँगना। [रंगी माझवुं = मारपीटकर लहू-लुहान करना.]
- रंगकाला(-ळा) स्त्री० रंगकाला; नाटघकाला (२) रेंगनेका कारखाना रंगाई स्त्री० रेंगनेकी मउदूरी; रेंगाई
- (२) रॅंगनेकी कला या चलुराई; रॅंगाई (२) रॅंगनेकी कला या चलुराई; रॅंगाई रंगाट पुं० रॅंगनेका काम और कला; रॅंगाई
- रंगादी स्त्री॰ रँगनेका काम या कला (२) रँगरेज (३) रँगनेका कारखाना
- रंगामक न०, (-की) स्त्री० रँगनेकी मबकूरी; रंगाई
- रंगारो पुं० रेंगरेख; रंगसाउ
- रंगी वि॰ रंगी;रंगीन;रंगका शौक्रीन (२) रंगयुक्त; रंगवाला; उदा• 'विविधरंगी'(३)स्त्री॰एक प्रकारकी खाल मिट्री; हिरमजी
- रंगीन वि॰ रेगा हुआ; रंगीन
- रंगीलुं वि० रॅंगीला; आनंदी; रसिक (२) सुंदर; खुबसूरस; रॅंगीला
- रंगोळी स्वी० जमीन पर रंग देकर बनाये हुए बेल-बूटे; चौकमें आटे आदिकी लकीरोंसे बनाया हुआ चित्र रंच वि० रंच; योहा
- रंजाड पुं०; स्त्री०विगाड़; नुकसान (२) उधम; तुझान; घरारत (३) हैरानी; दु:ब; बरुंघ; संताप
- रंजाडवुं स० त्रि० सताना; दुःख देना रंडापो पु० रंडापा; वैधव्य
- रडावुं अ० कि० 'राडवुं 'का कर्मजि
- रंडी स्त्री० नावने-गानेका व्यवसाय करनेवाली स्त्री; रंडी (२) वेस्मा; रंडी (३) ताशका एक पत्ता; वेगम

र्रदो

th

- रंबो पुं० रदा [मिसरानी रंबबारी स्त्री॰ साना पकानेवाली; रंबबारो पुं०;स्त्री॰ रसीइया;बाबरची रंबावुं अ॰ कि॰ 'रांबचुं'का कर्मणि (२) कार्य सिद्ध होना; लाम होना[ला.] रंबो पुं० रंदा
- राई स्त्री॰ राई। [--चडवी, लाववी ≕ राईके जैसा असर होता (२) वुस्सा होता; उत्तेजित होना। --होबी(मगज के माथामां) == मिखाज होना; गुमान होना.]
- राईतुं न० रायता । [-करदुं = [ला.] कुचल डालना (२) अपने पास साली पड़ा रहने देना.] [डालना;धारना
- राईमीठुंन० राई-नोन उतारकर आगमें राकसी वि॰ राक्षसका (२) अति विशाल; भीमकाय; भयानक; कूर (३) स्त्री॰ राक्षसी; दानवी (४)
- हुत्तेके जैसा लंबा नुकीला दांत राख स्त्री० राख; मस्म । [--चोळवी = मभूत रमाना (२) दिवालिया बनना (३) भीख मौगना (४) पायमाल होना.] राखवी स्त्री० राखी; रखौंडी; रखड़ी राखवुं स० कि० रक्षा करना; बचाना; रखना (चीछ); निर्वाह, पालन करना (बात; वचन); मान रखना; नष्ट न होने देना (इरुबत) (२) जोड़-जोड़कर रखना; एकत्र करना; संचय करना (धन आदि) (३) (आदाा;
  - उम्मीद; चिंता) करना; रखना(४) भारण करना; दिखलाना (दया; मेह-रवानी; भाव; जोर); रखना(५) अपने हाथमें,अधिकारमें करना; रखना (अंकु्स; क़ाबू; दाब; ध्यान; निगरानी; क्रम्बा; हक; आना-जाना(६) क्षायह

छोड़ना; रहने देना; स्थापित, स्थित रलना; मंजूर करना; स्वीकृत करना; उदा० 'कायम राखवुं;बहाल राखवुं; छूट राखवी; ढीलुं राखयुं '(७) रेहन, बंधक करना; अमा रखना; स्वीकार करना; उदा० 'गीरो राखवुं; जमे राखवुं '(८)खरीदना; क्रम्बेमें लेना (९)व्यवहारके लिए अपने अधिकारमें रुना; सैनात करना; रखना(घोड़ा, पहल्वान आदि) (१०)स्त्री-पु**रव**से संबंध करना; रखना (परस्त्री या परपुरुषको) (११)पड़ा रहने देना; छोड़ना (१२) रोकना; आगे चलने न देना (१३) रोक रखना; ठहराना; जानेन देना। [रासी ओवुं == आज-माइश, जाँचके लिए रख लेना । राज्री मुक्युं = सम्हालकर रखना; हिफ़ा-जतसे रखना (२) बाक़ी रखना । रासी रहेवुं = क़ब्जेमें रखें रहना(२)जारी रखने देना। राखी लेव = खरीद कर रख छोड़ना; ले रखना (२) रोक रखना; ठहराना; रखना.] रासेली वि०स्त्री० (२) स्त्री० रखेली राखोडियुं वि० राखके रंगका रासोबी स्त्री०,(-डो)पुं० राख; मस्म राग पुं०राग; आकर्षण; मोह; आसक्ति (२) प्रीति; राग; मेल; बनत (३) कोष(४)लाल रंग;राग(५)गानेकी ताल-लययुक्त पद्धति जिससे रंजन हो; राग। [--आववो = पटना; मेल होना । -- काढवो = गाना ; तान लगा-ना; अलापना (२) लंबी आवाजमें रोना (व्यंग्यमें); भेंकड़ा पूरना । -- साथो == बनना ; पटना ; मेल साना । -गावो = किसी रागमें गाना (२)--के

	×.
155.7	П

.

राजसत्ता

	•{• (• (•(•(•))
कहे अनुसार चलना;के रंगमें	राजवरवारी वि० राजकीय
<b>ढलना । –धूंटवो = स्व</b> र भरना, साध-	राजद्वारी यि० राजा या राज्यसे
ना(२)तान लगाना ।मबो = मेल,	संबंध रखनेवाला; राजकीय
एका होना। रागे पडवुं ≕ ढंगसे चल	<b>राजधानी</b> स्त्री० राजधानी; पाटनगर
निकलना; सफलताकी ओर बढ़ना	<b>राजन पुं० रा</b> ल पे <b>ड़</b> का निर्यास; राल;
(२) लगना; नौकरी, काम करना;	'रेझीन'
ठिकाने लगनाः] [या रोवेकी)	राजपाट न॰ राजपाट; राजसिंहासन
रागको पुं० लंबी आवाज ; तान (गानेकी	राजप्रकरण न० राजनीति
राच न॰ राछ; औजार (२) घरकी	राज <b>वंधारण</b> न० राज्यका विभाम;
<b>थीज-व</b> स्तु; घरबार(३)बरतन(४)	संविधान
पुं० जुलाहोंका औजार;रास्ठ [बार	राजबीज वि॰राजाके वंशमें पैदा हुआ;
राचरचीलुं न० घरकी चीज-वस्तु; घर-	राजवंध्य (२) न० ऐसा आदमी
राचवुं अ०कि० खुश होना; प्रसन्न	राजभोग पुं० वैष्णव मंदिरोंमें दोपहरका
होनां ; राचना [प.] (२) फबना ; शोमा	एक भोग आरेर दर्शन
देना; राचना [प.]	राजमहेल पुं० राजमहल
राज अ॰ (दीपक) गुल, ठंडा (होना,	राजमान (०राजेशरी) (संक्षेपमें रा०
करना) । [–करबोे(दीवो)≕(दीया)	रा०) वि० जिसके नाम चिट्ठी लि <b>सी</b>
ठंडा करना। –थवो (दीवो) ≔	जाय उसका एक संबोधन
(दीपक) गुल, ठंडा होना.]	राजरमत स्त्री० राजनीतिक दावॅ-रेच,
राज पु॰ राजा; राज(२)न॰ राज;	युनित-प्रयुनित
राज्य। [-आववं = राजाकी तरह	राजराणी स्त्री० पटरानी
बैठे-बिठाये खाना प्राप्त होना, मिल-	राजवी पुं० राजा (२) राजाके जैसा भा-
मा;कामकाजसे मुक्ति मिल्ला(२) कुल सत्ता प्राप्त होना.]	ग्यवान पुरुष(३)वि० राजाके योग्य; राजसी
राजकाज पुं० राजकाज; राज्यव्यवस्था	<b>राणवुं अ</b> ० कि० शोमित होना; रोशन,
(२) राजनीति ∫टिक्स ′	प्रकाशित होना; राजना [प.]
राजकारण न० राजनीति; 'पॉलि-	राजशासन न० राजाशा; शासन(२)
<b>राजकारणी</b> वि॰ राजनीति-संबंधी;	राजकाज; राज्यप्रवंध (३) राजाके
राजनीतिक (२) पुं० पॉलिटिक्समें	मारफ़त चलनेवाला राजकाज; राज-
हिस्सा लेनेवाला व्यक्ति; राजनीतिज्ञ	तंत्र; 'मोनार्की '
राजगरो पुं० फलाहारके काम आनेवाला	राजशाही स्त्री॰ राजाकी मर्जीके मुता-
एक प्रकारका घान , रजगीर ; कूटू	सिक पलनेवाला राज्यप्रबंध; राजतंत्र;
राजगदी स्त्री ॰ राजगदी ; राजसिंहासन	'मोनार्की '
राजदरबार पुं० राजाके रहनेका और	रावसत्ता स्त्री० राजाकी सत्ता (२)
दरबार करनेका स्थान;राजगृह;दरबार	राज्य बलानेवाली सत्ता; राजसत्ता

			_
44.	- P	•16	5
	1		<b>C</b> 4

सहमत

रावसत्ताक वि० जिसमें राजाकी सत्ता

(२)राजाओंकी समा; राजसभा(३) खास वर्षके लोगोंके प्रतिनिषियोंकी धरिषद्; राज्यसभा; राज्यपरिषद्;

राजस्यान न० देशी रियासत; रजवाड़ा (२) राजस्यान; राजपूताना राजा पुं० राजा; राज्य करनेवाला (२) ताझका एक पत्ता; बादशाह (२) भोला और उदार प्रकृतिका आदमी । [-मोज = भोज राजा; राजा भोज (२)[ला.] उदार और दाता आदमी । - माणस = राजा जैसे वैभव और आवारवाला आदमी; बादशाह (२) मोला और दरियादिल मनुष्य (३) आविश्वसनीय और आलसी व्यक्ति.] राजियो पुं० राजा (२) मृतकको लक्ष्य करके छाती पीटते समय गाया जाने-वाला गीत; मरसिया; सियापा राजी वि० राजी; खुद्य (२) सम्मत;

[स्वेच्छा; उमंग; हौस

राकोक्षुकी स्त्री० कुशल; खैरियत(२) राजीनामुं न० त्यागपत्र; इस्तीक़ा(२) वादी-प्रतिवादीका परस्पर मेलवाला

राड (ड,) स्त्री० चीख; पुकार; टेर (२) क़खिया; रार; राढ़; राड़ (३) शिकायत (४) लौ; घुन; आसक्ति। [--करवी == शिकायत करना (२)क़जिया करना; रार सचाना (३) हठ करना.] राइं न० ज्वार, बाजरा या सरकंडे

ेलेख; राजीनामा; समझौता **राज्यबंधारण** न० संविधान

• जल्ती हो; राजसत्तादाला राजसमा स्त्री० राजसमा;

'काउंसिल औव स्टेट 'ं

वरबार

१९ उम्	निष्ट्
आदिका तना; ढंठल (२) तीर	(३)
नरकट (४) राजकी कन्नी, करन	
राणी स्त्री० रानी (२) ताझका	
पत्ता; बेगम	
राणीआयुं न० रानीका बच्चा	
राणीवास पुं० देखिये 'रणवास '	
राणुं वि० बुझा हुआ (दीपक)।[(य	ीवो)
राणो करवो =(दीया) बुझाना,	
करनाः] [रहित; अँधर	ষুব্দ
<b>राणुंधब पि</b> ० बिलकुल अँघेरा, प्र	
<b>राणो</b> पुं० राजपूत राजा;राणा (२)	[रू.]
एक हिंदू जातिका आदमी; 'गे	জী '
(३) एक अल्ल	
रात पु० नाई (मानवाचक संबोध	
रात स्त्री० रात; रात्रि । [-काढ	
रात काटना, गुज़ारना। - वहा	
<b>लघर न हो</b> बी = संसारके का	
कुछ ज्ञान या समझ न होना।	
राजा ≓ मोर (२) उल्लू; रात-	राजा
(३) रातको काम करके दिनमें	
लेनेवाला। – मार्थे लेवी = अ	रिसमें
रात काटना; सारी रात जा	गकर
काम करना ।रात पडवी =- र	বাদা
समय होना; रात होना.]	
रातवियो पुं० लाल ज्वार	
रातवहाडो, रातविवस अ० रात	
हमेशा [पारी; 'नाइट वि	
रातपाळी स्त्री० रातकी पारी;	
रातवासो पुं० रातको कहीं ।	
डालना;पड़ाव (२) खेतमें चौकीके	
रहना आसक्त; अनुरक्त	
रातुं वि० लाल रंगका ; सुर्ख ; राता	
रातुंबटक, रातुंबोळ वि० बहुत ल	गरु; '
लाल जंगारा	
रातुंपीळुं वि॰ युस्सैल; नीला-वी	ला

•

रातोरात	४१२ राषतुं
रातौरात अ॰ रातोंरात	(४) सत्त्वहीन हो जाना।- राम
रात्रि(-त्री) स्त्री॰ रात्रि; रात	करो ≕यह बात अब छोड़ दो; मुछ
राजे ब॰ रातको; रातमें	बननेका नहीं;अल्लाहका नाम लो।
रान न॰ वीराना; जंगल (२) वीराना;	∽दारण थवुं = मर जाना.]
তজাৰু সৰিম	रामकी स्त्री॰ सामुकी स्त्री; रामकी
<b>रानवी(वुं)</b> वि॰ जंगलका; जंगली	
(२) असम्य; उजड्ड (३)गॅवार(४)	
आवारा; भटकनेवाला	शाला; सराय
रानी वि० जंगली ; वन्य 🔰 [(गुजरास)	) रामदुवाई स्त्री॰ रामदुहाई
रानीपरज स्त्री० एक आदिम आति	रा <b>मपगलुं न० रामकी चरणपा</b> दुकावाला
राफडो पुं० (सौप या चूहेका) बिल;	मीनाकारीका खेवर [कसोरा
बौबी (२) (दीमक, चोंटी आदिका)	रामपातर, रामपात्र न० सकोरा;
बमीठा; बाँबी। [-फाटबो = बड़ी	<b>रामकळ</b> न॰ एक फल
तादादमें बाहर आना ]	<b>शामबा</b> ण न० कभी निष्फल न जाय <b>ऐसा</b>
राव(०डी) स्त्री० महेरी; काँजी (२)	रामका वाण; रामबाण (२) वि०
ंडबाल्ल्कर गोढ़ा बनाया हुआ ईखका	निष्फल न जाय ऐसा; अमोघ;
रस; राग	ड्डुक्मी (दया); रामबाण
राबेतो पुं० चाल; प्रथा; रिवाज	<b>रामभरोसो</b> पुं० भगवानका भरोसा
रामुं वि० गैवार; अनगढ़; उजहु	<b>रामरोटी</b> स्त्री० पकाये हुए अन्नकी भिक्षा
राम पु॰ दशरण-पुत्र राम; विष्णुका	(२)पुआ;मालपूआ [कोटिका नाटक
एक अवतार; राम (२) परशुराम;	
राम (३) बलराम ; राम (४) ईश्वरका	
एक नाम; राम (५) जान; दम;	
ताक़त (६) आना (सूद) (७) 'उस	
वर्ग-आतमें बड़ा ' यह अर्थ बतानेके	
िलिए नामके आगे 'राम' लगाया	[- उकेलवुं = अढ़ाकर बात कहना।
जाता है; उदा॰ 'रामकुंडाळुं' मादि।	
[माम जपो == चुपचाप बैठे रहाँ ; चुप-	
ंचाप देखा कीजिये।मुं नाम सों=	रामैयुं न० सकोरा [मोट; वरसा
भगवानका नाम लीजिए; कुछ अच्छा	रामयो वि०पुं० (२)पुं० बिना सुंडका
काम कीजिए (२) देखिंगे 'राम	रामो पुं॰ घरका काम करनेवाला
राम करो '। नै रामायन =- बातका	
बतंगड़ । –बोक्तवा = भर जाना ।–रमी	
जवा = भर जाना (२) टूटकर भूर	
हो जाना (३) तबाह हो जाना	रायतुं न० देखिये 'राईतुं '
	- · · ·

राष	
-----	--

	•र२ राष
राल स्त्री॰ देखिये 'राळ'; राल	राहदारी पुं० पविक; मुसाफ़िर; राह-
राव स्त्री० अन्याय-अत्याचारसे बचा-	गीर(२)किसी रास्तेसे ले जाये जानेवाले
नेको फ़रियाद; शिकायत(२)सहाय-	मालपर लिया जानेवाला कर; उसका
ताके लिए की हुई आजिजी; गुहार;	आज्ञापत्र; राहदारी; राहका परवाना
ताके लिए की हुई आजिजी;गुहार; रक्षाके लिए पुकार (३) चुगली।	(३) मार्गप्रदर्शन; राहबरी
[- करबी, खात्री =फ़रियाद करना.]	<b>राहबर</b> पुं० राहबर; मार्गप्रदर्शक
राइटी(~ठी) स्त्री॰ गोलाकार छज्जा,	राहबरी स्त्री० राहबरी; रहनुमाई
बरामदा, छत(२)रावटी; छोटा खेमा;	राळ स्त्री० राङ वृक्षमेंसे निकलनेवाला
छोलदारी [लोंका एक ततुवाद्य	गोंद; राल; सालरस [ आजिज;दीन
<b>रावचहय्यो</b> पुं० गाकर भीख मॉंगनेवा-	. राक(-क्नुं) (०)वि० नरम स्थभावका;
रात्रजियो पुं० गाँवका चौकीदार; चौकी-	रांग(०) स्त्री० कोटकी दीवारके
दार; गांबकी औपालका चपरासी	पासका हिस्सा (२)सवारी [ रोग
रावयुं न० राजपूत क्षत्रियोंकी मजलिस ;	रांसण(-णी) (ण,) स्त्री० पाँवका एक
दरदार(२)गाँवके पंचोंका इकट्ठा होना	रांट(०) स्त्री० टेढापन; वक्ता; बॉक
(३)सिपाहियोंके रहनेका स्थान	(२) अनवन; विरोध
राज स्त्री० भागीदारी; पत्ती; साझा(२)	रांटुं (०) वि० टेड़ा ; वक ; बॉका ; कुटिल
सूरके साथ मूलधन (३) बौसत (४)	रांड(०) स्त्री० विषया; बेवा; <b>रांड़;</b>
एक राशिमें उत्पन्न होनेसे समान जाति,	(२) वेष्या; रंडी
गुण, स्वभाव वादि; राग्ति मिलना(५)	रांडवुं(०) अ० कि० विधवा या विघुर
डेर; राशि। [बनती राग्न आववी =	बनना (२)वि० नामर्द । [रांडीने बेसवुं
बनना;पटना;मेल साना;रास आना.]	= रॉडकी तरह हताश या लाचार होकर
राग्न(श,) स्त्री० रस्सी (१६ हायकी)	बैठना;सिर पर हाथ धरकर बैठना.]
(२)लगाम; रास; बागडोर (३) पगहा;	रांडवो (०)पुं० नामर्द, डरपोक
ढोर बाँधनेकी रस्सी [(१६ हाथ)	रांडीछांडी (०) स्त्री० विषवा या पतिसे
<b>राशवा</b> वि० बैलादिकी रस्सीके जितना	त्यागी हुई स्त्री [श्रित विषया]
राशी वि० सराब; हीन; दुष्ट	रांडीरांड(०) स्त्री० विथवा(२)निरा-
रास पुं०(२)स्त्री० देखिये 'राज्ञ'	रांडेली(०) वि० स्त्री० विषवा
रास पुं॰ वृत्ताकारमें गाते हुए घूमते-घूमते	रांखवुं(०) न० मोटी रस्सी; रस्सा
किया आनेवाला एक नाच या उसमें	राम्ब्य(०) न०रांघनेका ्कास; रांघना
गाया जाय ऐसा गीत; (गुजराती) रास	रावणियुं(०) न० रसोईघर
<b>रासडो</b> पुं० एक प्रकारका गरबा (घटित	रांबलुं(०) न० रॉंधनेकी क्रिया; रॉंधना
घटनाओंका वर्णन करनेवाला)	रांधवुं(•) स॰ कि॰ भोजन पकाना;
राह पुं० राह; रास्ता (२)रीति; प्रथा;	रांधना (२) फल प्राप्त करना; लाभ
राह (३) प्रतीका; बाट। [-कोबी=	होना; मिलना [ वौबार)
बाट देखना; प्रतीका करनाः]	रांप(०) पुं० बढ़ी गहनी (सेतीका

For Private and Personal Use Only

-	•
राष	57

	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
रांपडी स्वी० खेतकी बेकार वास निका-	–रासबी = रिवाजके अनुसार बरतना
ल्लोका सेसीका एक औजार; गहनी	(२) संसारका व्यवहार निवाहना;
<b>रांपर्वु</b> स० कि० खेलकी घास निकालनेके	लेन-देनमें ईमानदार रहना.]
लिए गहनी चलाना 👘 [ रापी;रापी	रौतमात स्त्री० रहन-सहन; व्यवहार;
रांपी (०) स्त्री० मोचीका एक औँजार;	चाल-ढाल
रिज्ञाववुं स० कि० देखिये 'रीज्ञववुं'	<b>रीतरिवा</b> ज पुं० ब० व० रीति-रिवाज
रिमार्षु अ० कि० देखिये 'रीसवुं'	रीतसर अ० रीतिके अनुसार
रियोटं पुरु रिपोर्ट	रीते अ० तरह; प्रकार (२)की
रिवामण (-णी) स्त्री० यात्तना; पीड़ा	हैसियतसे(३)रिवाज या प्रथाके अनुसार
रिवाबवुं सं०क्रि० 'रीबवुं'का प्रेरणार्थक;	रीबवुं स० कि० सताना; खूब दुःख देना
दारुण यातना पहुँचाना; खूब दुःख देना	रीम न० बीस दस्ता (काग़ज़); रीम
रिवायुं अ० त्रि० 'रीववुं'का कर्मणि;खूब	रोल स्त्री०;न० डोरे लपेटी हुई गराड़ी;
सताया जाना; अति पीड़ित होना	रील (२) सिनेमाके चित्रोंकी लंबी पट्टी
<b>रिवेट पुं</b> ० घातुकी चहर या टुकडोंको	रीस स्त्री॰ रिस; रीस; कोघ; रूठन
जोडूनेवाली कील जो एक सिरे पर	रोंगण न० बैंगन; भंटा
माणेदार होती है; टॉका	रॉंगणो स्त्री० बेंगनका पौधा; बैंगन
रितामणुं वि० बात-बात पर रूठनेवाला;	रॉगम् २० बैंगन; भंटा
रिसहा (२) न॰ रीस; रिस।	रोंछ न॰ रोछ; भालू
[रिसामणं मनामणां करवां = जरा-	राज गण राठ, गालू रआब पुं० रूआंब; दबदबा(२)तेज;
जरामें रूठना और जरा-जरामें मनाना.]	प्रताप; रोबदाब। [- करवो - रोब
रिसावुं अ० कि० रिसाना; रूठना	जमाना । - पडवो = रोब जमना;
रिसाळ (०वुं) वि० रिसहा	रोबमें आना। -राखवो = ठाटबाटसे
रीझ स्त्री० आनंद; रीझ	रहना या बरतना.]
रीझववुं स०कि० रिझाना	
रीझवुं अ० कि० रीझना; प्रसन्न होना	<b>वआख्यार</b> वि० रोबदार; प्रभावशाली
रौढुं वि० उपयोगमें आकर मजबूत बना	रुकाबट स्त्री० रुकावट; अवरोध
हुआ (मिट्टीका पात्र); पक्का (२)	रुक्तो पुं० रक्ता; छोटी चिट्ठी; पुर्जा
दुःख सहकर घीर बना हुआ; दृढ़	रुस पु॰ रुख; गाल(२)चेहरा; मुझ;
(३) जो न सुघरे; चिकनां घड़ाँ	शकल (३)पक्षपात; मनका झुकाव 
रीत(त,) स्त्री॰ रीत; रीति; प्रकार;	व्हलसत (व)स्त्री० रुखसत ; बरतरफ़ी
ढंग; तरीक़ा (२) रिवाज; चलन;	रुववुं अ० कि० रुचना; पसंद आमा
परिपाटी; रोति; पढति (३) दहेव	रुचि स्त्री॰ दचि; इच्छा (२) मूच;
आदिके लेन-देनकी प्रतिज्ञा;ठहरौनी । र जोगोल करिके कर्णाने करान	<b>सानेकी इच्छा; रु</b> चि
[- मां रहेवुं = रूदिके मुताबिक चलना;	रणिमंग पु० सुरविभग
छोकाचारके अनुसार जलना।	<b>रामावर्षु स</b> ०कि० ' संसर्वु ' का प्रेरणार्थक

४१५

सम्ब

- समावुं न० कि० 'क्सावुं 'का मावे रूप; पाषका भरना वियुं न० हृदय; हिरदा [प.] क्वायत स्त्री० वार मिसरोंका एक छंद (अरबी, फ़ारसी या उर्दू); क्वाई रवांटो स्त्री० मुलायम बारीक रोंगटे स्वांटुं न० रोंगटा; रोम रमेल (-स्टुं) वि० रुईदार रवानाई स्त्री० रोशनाई; स्याही; मसि रक्षवत स्त्री० रिख्तत; घूस रवावससोर वि० रिख्ततसोर रू न० रुई; रूई रूए व० -के अनुसार; -के आघार
- पर या कमसे या --ले सबब रूख स्त्री० देखिये 'रुख '(२)अटकल; अंदाबा (३) रुख; विचार; बभिप्राय (४) बाखारका माव; रुख; भाव-साव। [---जोवी क्ल मौक़ा या अवसर देखना.] [रूखड़ा रूख(०डुं) न० छोटा पेड़-पौधा; छोटा
- रुझ स्त्री० धावका भरना
- **रूप्तच्ं** अ० कि० घावका भरना
- रूडवुं स० फि० रूठना; नाराज होना रूदुं वि० अच्छा;उत्तम;रूरा;सुंदर;भला।
- [कडा याना थवा == गुभ-मंगल होना.] रूढि स्त्री० रूढि; प्रचलित रीति या रिवाज;चाल(२)रूढिने कारण शब्दका अमुक अर्थबोध करानेकी शक्ति; रूढि रूढिप्रयोग पु० माषामें जिसका रूढिसे विशोष अर्थ होता है ऐसा शब्द-प्रयोग; रूढि-प्रयोग
- रूप ने॰ रूप; आकार; शकल; स्वरूप (२)सौन्दर्य;रूप(३)वेश; रूप(४) रूपक; नाटक; दुश्यकाव्य(५)विभ-दिसके प्रत्ययके योगसे बना शब्दका

- रूपांतर जो वाक्यमें प्रयुक्त होता है; रूप [ब्यतः] । [-क्यनो अवतार, अंधार = खूब सुंदर होना; रूपकी संपत्ति । -नी मजि = सुंदरी; रूपवती स्त्री; शोरेकी पुलली.]
- रूपक न० रूपक; दुइबकाव्य; नाटक (२) एक अर्थालंकार; रूपक (३) सात मात्राका एक दोताला ताल; रूपक (संगीत) (४) गाना; गीत (संगीत) (५) पुं० रूप भरनेवाला नट; अमिनेता
- रूपरेखा स्त्री० किसो चीजका सिर्फ़ आकार बतानेवाली रेखा; खाका; रेखाचित्र (२)संक्षिप्त बयान;रूपरेखा
- रूपाख्यान न० घातुका रूपांतर करना; रूप; घातुरूपावली [व्या.]
- रूपाळुं वि० रूपवान; हसीन; सुंदर
- रूपियाभार वि०(२)पुं० एक रुपये या तोले भरकी तौल; भरी
- रूपियो पुं० रुपया। [रूपिया खावा≕ रुपयोंका खर्च होना; रुपये लगना; उदा० 'आ मकाने बहुरूपिया खाघा' (२) पुस लेना; रुपये खाना]
- रूपुं न० रूपा;चाँदी [जैसा;रुपहला रूपेरी वि० रूपका बना हुआ; रूपा रूपेडो स्त्री० रुपल्ली;रुपया(तुच्छकारमे) रूबरू अ० रूबरू; सामने; समक्ष

रूम स्त्री० कमरा;रूम

- रूमसूम अ० पाजेबकी मंद ष्वति;रुनझुन रूमसाबुं: (रू') अ० कि० जोरसे चक्रा-कारमें धूमना; पागरुपनसे घूमना (मवेचीका)
- क्मयुं(रू') ४० कि० जोरसे बकाकारमें भूमना ; जूझमा (युद्धमें) (२)भटकवा; फिरना

<b>₩</b>	रद . रेको
म्चुं न० रोगां; रोंगटा ।[क्यां ऊभां वयां झरे न० रोगां; रोंगटा ।[क्यां ऊभां वयां झरे मंच होना; रोगें खड़े होना ।-न फरक्युं = कुछ भी वसरन होना; रोगां न पसीजना । रूवे रूवे जीव राखवोः= बहुत देखभाल रखना.] कसर्णु न० रूठन; रूसना कंडग्रं, रूंछुं न० छोटा बाल या तंनु कंवयुं स० कि० रोकना; घेरना (२) दम घोंटना [घुटन कंवायुं, स्ं र्गु न० देखिये 'रूवु' रेकर्ज न० नोंघ; टिप्पणी; अभिलेख (२) मिसिल; दपतर; फाइल (३) स्त्री० प्रामोकीनकी प्लेट; रेकार्ड; नूवी (४) पुं०; न० पराकाष्ठा; आखिरी हद । [-तोडवो = जो हद अंकित हो गई हे उस हदसे भी आगें बढ़ना.] रेक्न स्ती० रेखा; लकीर (२) दांतमें जड़ी हुई सोनेकी कील; खुमी (३)	१६ रें (रें) वि० गाढ़ा; तल्झट बैझा (२)स्त्री० पीछा (पकड़ना; डोड़ना) रेडवुं स० फि० जरू वादिको घाराके रूपमें गिराना; उँडेल्ना (२) तरल पदार्थको एकमें से दूसरे बरतनमें ढालना; उँडेल्ना रेडियाळ(रें) वि० भटकता; बिमा मालिकका; हरहा (पशु) (२) निक- म्मा; बिना दमका(काम) रेडुं(रें) वि० भटकता; बिना निगरा- नीका; बिना देखमालका रेख(रें) न० धातुको जोड़नेका टांका; झालना [झालना; पाँजना रेणवुं(रें) स० फि० धातुको जोड़ना; रेत स्त्री० बालू; रेत रेताळ वि० रेतीला; बलुआ रेती स्त्री० बालू; रेत रेफ पु० रेफ रेबको (रें) पु० रबदा; कीचड़ (वर्षा) रेखमें ब० पसीनेसे तरबतर, सराबोर रेल स्त्री० बाढ़; जलप्रलय (२)बहुता-
है उस हरसे भी आगे बढ़ना]	रेबक्को (रॅं') पुं० रबदा; कीचड़ (वर्षा)
रेक स्त्री॰ रेखा; लक्षीर (२) दांतमें	रेबझेब अ० पसीनेंसे तरबतर, सराबोर
जड़ी हुई सोनेकी कील; खुमी(३)	रेल स्त्री० बाढ़; जलप्रलय (२)बहुता-
बहुत छोटी कील(४)अ॰ जरा भी	यत; रेलपेल
रेखाचित्र न॰ रेखाओं से बनाया हुआ	रेल स्त्री० रेलकी पटरी
चित्र; रेखाचित्र (२) किसीके जीवन-	रेलगाड़ी स्त्री० रेलगाड़ी; रेल
का संक्षिप्त निरूपण; रेखाचित्र	रेलछेल, रेलगछेल स्त्री० पूरा भरनेपर
रेच पुं० विरेचन; जुलाव । [आपवो =	छलक जाना (२) मेरमार; रेलपेल
दस्त लानेवाली दवा देना (२) धमकी	रेलवुं अ०कि० बाढ़ आना; जोरसे बहना
देना ।सागवो = विरेचनका असर	(२) जाना (३) स०कि० जोरसे उँड़ेलना
होना (२) धमकीका असर होना.]	(४) द्रवकी धारा गिराना; ढोलना(५)
रेचक पुं० रेचक; दस्तावर	बाढ़का बहा ले जाना; दूर करना
रेजगी स्त्री० रेडगी; रेजगारी; खुर्दा	रेलसंकट न० बाढ़से उत्पन्न संकट
रेजो पुं० झॅंगियामें काम आनेवाला सूती	रेलार्बु अ०कि० रेला चलना; ढलना;
या रेसनी कपढ़ेका टुकढ़ा; रेजा (२)	उँडे़ला जाना
धातु गलानेकी कुल्हिया; धड़िया	रेलो पुं० छोटा बहाव; रेला

2.00	-
CIT C	1
	· •

रोजिबुं ४	१८ राज
होजिबुं वि० प्रतिदिनका; रोजमर्राका; दैनिक	रोनक स्त्री० रौनक; चमक; तेज
पानक रोजी स्त्री० कामधंघा; रोजगार(२)	रोनकदार वि० रौनकदार; भड़कीला रोज संद रोप: पौप:
गुजरान; जीविका; रोजी (३) रोजकी	रोष पुं० रोप; पौषा रोप मुं० रोप; पौषा
भुषराग, जावका, रामा (२) रामका सार्य; पँदाइश	रोपणी स्त्री० रोपाई; रोपनी; बोआई
	रोपवुं स०कि० रोपना; बोना; जमीनमें
रोको पुं॰ बढ़े और घार्मिक मुसल- मानको कव; दरगाह (२) मुसल-	गा <b>ड़कर खड़ा करना; उदा० ' वांस</b> रोपवो '
्मानोंका रोजा	रोपीट स्वी० रोनापीटना; कुहराम;
रोक्त न॰ घोड़ेसे मिलता-जुलता एक	रोपीट
अंग्रली जानवर; नीलगाय	रोफ(-ब)(रॉ) पुं० रोब; रुआब;
रोझियो, रोझी वि० एक प्रकारकी कपास	दबदवा(२)प्रताम;ते ज(३)वाब;रोबदाब
रोटली स्त्री॰ गेहूँकी रोटी; फुलका;	रोबड वि॰ जड; मूर्ख; अरसिक
चपाती	रोमांचक वि॰ रोमांच हो ऐसा; रोंग्रटे
रोटलो पु॰ हायकी रोटी; रोट (२)	सहे करनेवाला; रोमहर्षण
जीविका; रोजी [ला.] । [रोटला भूगा	रोय वि० मुझा; मरा (स्त्रियोंकी गाली)
बर्बु=भोजन मिलना (२) जीविका	रोबदावयुं स०कि० 'रोवु'का प्रेरणार्थक;
प्राप्त होना । –करवो = रोटी बनाना	षलाना
(२) मारकर चपड़ा बना देना(३)	रोबावुं अ० कि० 'रोवु' का मावे रूप;
कुचल डालना.]	रोया जाना
रोटो स्त्री॰ देखिये 'रोटली' (२)	रोवुं अ० कि० रोना ; औसू बहाना (२)
डनलरोटी; पावरोटी	स॰ कि॰ -की रोना ; -का दुःस रोना
रौटीबहेवार पु० साथमें जीमने-जिमा-	(३)न० घदन; रोनेकी किया
नेका संबंध; रोटीका संबंध; रोटी-	रोशनाई, रोधनी स्त्री० रोधनी (२)
व्यवहार	स्माही; रोशनाई
হুৰিবৰু ল০ কি০্ ভুর্জান্য	रोळ पु॰ कै-दस्त; हैजा; मरी (२)
रोडूं न० इंटका टुकडा; रोडा	कहर;दैवकोप; गजब; पायमाली
रोम स्त्री० रातकी चौकी; रोंद; गरत	रोळवुं स० कि० मसलना; सींजना (२)
(सिपाहीका)	मूलमें रगडना; मैला करना (३)
तोजुं न० हदन; रोबा	कुचलकर मार डालना [ला.]
रोतड(-इं,-ल) वि॰ जो झट रो दे;	रोंचुं(रॉ॰) वि॰ गैंवार; असम्य; इनहू
रोनी सूरतवाखा	रोंचो (रॉ॰) पुं॰ बुढू; उजहु;गाब्बी
रोतुं वि॰ रोता हुआ; रोता रहनेवाछा	रोंबुं(रॉ॰) न॰ ती रा पहर; संसका
रोदहुं(-णुं) त० बीतीकी, कहाती;	समय ्
रोना (२) स्दन [यौंद; ग्रश्त	रोंढो (रॉ॰) पु॰ तीसरे पहरका भोजन

रोब स्त्री० रादमें चौकीके लिए घूमना; (२) व्याळू (३) तीसरा पहर; सांस ल पूं• तीसरा अंतःस्य वर्ण

लेकर; उदा० 'एने लईने '

लईने अ० लेकर(२)--के कारण;--को

लकडवकड अ०धडाकेसे;धडाधड़;जोरोंसे

लक्डियुं वि० लकडीका (२) सल्त;कड़ा;

कठिन (२) पेड़को भी झुलस दे ऐसा

(पाला) (४) न० मसाले रखतेकी

लकडीकी खानेदार छोटी पेटी ; चौधड़ा

लक्कुं(,≕कूं) को पूं⇔ लुक़मा; कौर(-२)

अभ) प्रयोजनकी सिद्धिः फ्रायदा

सम्बो पु॰ लकवा; पक्षाधात 🚽

(व्यंग्यमें)



¥85

## ल

- रूक्षण न० लक्षण; चिह्न(२) किन्य वस्तुओंसे अलम करनेवाला खास गुष; सात्तीयत (३) व्याख्या; परिभाषा; लक्षण(४)चाल-ढाल; आचरफ;लक्षण
- स्वज्ञणबंतुं वि० शुभ लक्षणोंवाला; सु-लक्षण(२)(व्यंग्यमें) अशुभ--ब्रुरे लक्ष-्णोंवाला
- स्रमवुं स०कि० स्थिरः इष्टिसे दिखना; ताकना (२) मिषाना बांधना; सामगा (२) साकमें रहमा; सकर्ना (प.) (४) अटकल करना (५) खोज निकालना; ेदेख जाना
- स**काषिपति** पुं० लक्ष**पति**; लखपती
- **लक्ती** वि० लक्ष्यवाला;ंलक्ष्य(सामा-न्यतः समासके अंतमें आताः है)-डबर० 'एकरुक्ती'
- लक्ष्मीपूजन त*े, स्वेक्षींचूं*चा स्त्री*० चेत-*तेरसके दिन की जॉनेवॉली संक्ष्मीकी पूजा
- सक्य वि• ज्यान देने योग्य; सक्य (२) जिस पर निशाना छगाया आग्य; जिसका निशाना बांधा जाय (२) जो देखा या जाना जा सके; दर्शनीय; इष्य (४) न० घ्येय; उद्देश्य; रुष्ट्र्य (५) हेन्दु; मकसद(६) निशाना; रुक्य(७) हुरुयार्थ
- लक्यबिन्दुन० लक्ष्य; ध्येय
- ल्क्सचोरासी स्ती० चौरासी ख़ाख योति -अल्मका चक; चौरासी कार्यके
- लसणी न० सूची; फ़ेहरिस्त (दान चा
- ्वदेकी) रुक्रम् त• क्रेसनी(२) (इंदेकी) क्रुम्

लक्कड न० लकड़ी [ईका काम लक्कडकाम न० लकड़ीका काम; बढ़-लक्कडबोद पुं० कठफोड़ा; हुदहुद(पक्षी) लक्कडधक्कड अ०देखिये ' लकडधकड ' लक्कडपोठ स्त्री० लकड़ीकी दुकान; टाल; अड़ार लक्कडफोडो पुं० लकड़हारा [लड्ड् लक्कडघोडो पुं० एक तरहके सीनीके लक्कडियां वि०(२)न० टेकिए 'सकक्रियं'

लक्कडियुं वि०(२)न० देखिए 'लकडियुं' स्वा पुं० उक्ष; लाखकी संख्या (२) किसी विषयमें कित्तकी एकाग्रता;ध्यान (२) उद्देश्य; लक्ष्य(४)निशाना; ध्यान (२) उद्देश्य; लक्ष्य(४)निशाना; ध्यान (२) उद्देश्य; लक्ष्य(४)निशाना; ध्यान (२) उद्देश्य; लक्ष्य(४)निशाना; ध्यान करना। - संख्युं, दोरयुं = ध्यान आर्काषत करना; ध्यान पर लाना। -श्वर सेयुं = ध्यान देना; सियाह रखना। -राखवुं = ध्यान रखना; नियाह रखना । -साधवुं = प्रयोजन, उद्देश्य सिख करना (२) ठीक, ज्यथवेध करना.]

	ι.
--	----

कवल न॰ किवित; लेव; करार	नगर वि० (२) ग० नगातार; विमा सके
<b>समापति पुं</b> ० लखपती	सगढी स्त्री॰ सोने या चाँदीकी ईटें;
लखलवा वि० चमकीला; चमकदार;	गुल्ली; इंट [काठी (२) <b>सादी; दोस</b>
सा <del>फ़ र</del> बच्छ (२) <b>अ० पीड़ाका उठना</b>	<b>रूगडुं</b> न० यघे पर लादनेकी <b>खुरजीः या</b>
या बंगोंका टूंटना	समम अ॰ तक; पर्यंत; छग मि.]
समाल्यम् अ०कि० पीड़ा होना; अंगोंका	सगत वि० संबंधी; विषयक (२)स्ती•
टूटना(२)चमकना; झलकना(३)चमड्-	लगाव; संबंध (३) ज॰ पास; सार्य;
चनड बावाज होना(४)बकबक करना;	सटकर •
बढ्बढ्राना [(२)तरसना; छलचना	समती स्त्री॰ लगाव; पहुँच; प्रमान
ल्यालयाचुं ज॰ कि॰ घोरकी मूख लगना	सन्तुं वि० संबंधी ; विषयक;नज <b>दीयका;</b>
लकालकाट पुं० जगमगाहट (२) बकवास	पासका [रू <b>नन; कौ</b>
(३)टीस; इसक	लगन न∘ देखिये 'लग्न ' (२) स्थी•
स्वलूट वि० वेशुमार; पुष्कल	लगनगाळो पुं० विवाहके दिन; स <b>हाणग</b>
लवार्षु स०कि० लिखना । [लसी नारर्षु	कर्णनसरा स्त्री० शादीके दिन; संस्कृत्य
= जो ,लिसना हो उसके बदले कुछ	लगनी स्त्री॰ लगन; घुन [बंदावन
और लिख डालना (उतावलीमें या	लगभग अ॰ पास;क़रीब(२)लनजन;
भूकरे)। सभी बाळपुं = हिसाबमें	<b>लगाडयुं</b> स० कि० लगाना (२ <b>) पोखना;</b>
बहुेसातेमें लिसना ] [दूरी	चुपड़ना; चिपकाना; लगाना (३)
क्याई स्त्री० लिखाई; लिखनेकी मज-	संलग्न करना; जोड़ना; स <b>टाना;</b>
ल्याच न॰ लिखाई; लिखावट(२)	लगाना (¥) किसीको साथ लगा <b>लेगा;</b>
खिसी बात; लिबित; लेस	साय कर देना
क्यापट्टी(डी) स्त्री॰ लिखा-पढ़ी	खगावर्षु स॰ कि॰ सुलगाना
लचारो पुं० बकवास	लगाम स्त्री० (लोहेकी) लगाम (२)
लिसतम वि॰ (सत) लिखनेवाला	बागडोर;रास;लगाम (३) अंकुक;
क्वोसरी वि॰ वनी; तालेवर (२) पुं•	नियंत्रज [सा.]
रूबपती [लाख बढाना	क्तवार (रेक) वि० जरा; थोड़ा-सा (२)
लगोटवुं स॰कि॰ (सिट्टीके बरतन पर)	व॰ योड़ी देरके लिए; जरा; तनिक
लकोटी स्त्री॰ काँच या पत्थरकी	<b>रूगावचुं</b> स० कि० देखिये 'लगाडवुं '
(चेलनेकी) छोटी गोली; गोली	नं०१; लगाना (२) मारना
लबोटो पुं॰ कांच या पत्परकी (सेल-	लगी अ॰ तक; पर्यंत; लगि [प.]
नेकी) बड़ी मोली; गोली(२) महत्त्व-	लगीर (-रेक) वि॰ देखिये 'लगार'
पूर्ण या सरकारी काग्रजोंका सील	सगोलम व॰ बिल्कुल करीब; सटकर
কিৰা हुआ पुलिंदा, লিफ়াफ়া	(२) लगभग; पासमॅ; निकट
सम्बन्धन ० देसिये 'लक्षण' [लेख	सम्म वि॰ लग्न; लगा हुवा(२)सीन;
क्स्वा लेख पुं० द० द० ब्रह्मलेख; भाग्य-	आसक्त (३)न० पृथ्वी एक राक्ति <b>में रहे</b>

बादी; लग्म

समरमगर वि+ फटेहाल

गाभावाला; कर्षु

प्रद्रमा समय; सम्म (¥) विसी युग

कार्यको करनेका मुहतः; सम्म (५)

मियाइका मुहुर्ते या सुप्रकाल (६)

सम् वि॰ लगु; छोटा (२) हलका;

लगु (३) आसान (४) ह्रस्व; एक

अधुपरिष पुं० ९०' से छोटा कोण; स्वून-

समुतम मि० समुतम; सबसे छोटा (२)

**समुपती** स्त्री० अल्पमत (२)अल्पमत-

बाते कोग था पक्ष ; जल्पमत (३) थोड़े

**अपुतिले स्त्री० संकि**प्तलिपि; 'सार्ट**हैंड**'

समुर्खना स्त्री - सनुसंका [(२) मोग

सम्बद्ध स्त्री० सटकती चाल; रूपकन

**রম্বদর্শু গ**০ ক্ষি০ জবকনা; বৰাব

शाविसे पीजका मुकना (२) मीच

बाना(२) इठलाते हुए चलनेसे कमरका

सुभगा; रूपकना 👘 [पकाई हुई वाल

सबको पुं० लोंदा; पिंड (२) लोंदा जैसी

सम्मने पुं० माँझा चढ़ाये हुए डोरकी

**सववर्षु** स**०त्रि० रुण्डित करना;**शमिदा

**सवावन्** स**ंकि॰ 'लाजव्'का प्रेरणार्वक**;

लज्जित करना; लजाना; लजवाना

समालनी स्थी॰ साजवंती; इईमुई;

समामम् वि• सज्जाजनमः; रूपाने-

समामनुं स॰ कि॰ छणाना; शरमाना

, बट स्त्री० तट; बुल्फ़ (२) गरंकी जब

करना; ल्याना

ल्यियक; शेमैनाक

सम्बन्ध व+ तर-बतर; चकाचक

लबर्षु स॰ कि॰ लजकता; सुकना

वटी; मौका

राषाल्

**९० सम्**तम समापवर्त्य [गः]

**बीट होना वा** रसना

¥71

দাশ

-(३) (सूतके) जमुक सार वा डोरेकी बंटी; लटिया (४) मोतियोंकी सड़ी सटक स्त्री॰ लटक; नखरा(२)छटा; सूबी; झैली; लटका; डब (३) मोच लटक्स(--जियुं) वि० सटकता, झुलता हुवा (२)न० झुमका (कानका गहना) सटकर्षु अ० कि० लटकना; झूलमा टॅंगना (२) आधाररहित होना; काम वधूरा रह जाना; लटकना (स्न.) बहकावचुं स०कि० 'सटकवुं'का प्रेरणा र्षक; स्रटकाना [युक्त (२) नजरेबाव सटकाळुं वि० छटकीला; हाव-भाष-सटकुं न० नसरा; अदा; चोत्रका सटको पुं० अदा; अंग-भंगी; हाव-जा-शहकोमहको पुं० मटक; नाज-मधा श्रद्यपट वि॰ प्रेमासक्त; एक दूरवेले लिपटा हुआ (२)स्त्री • सटपट; प्रचय । [-करबी = अन्यको भरमानेके लिए चालाकी, खटपट या धमाल क**रना।** -गनवं ≕प्रेमासक्त होनाः] सदपदियुं न० त्रमोटा (हज्जामका) सत्वमुं अ० फि० शुकना; नत होना लटार स्त्री॰ चनकर; मटरग्रस्त **सटियुं** न० सिरका बाल सत्दू वि० बहुत ढीला; सुस्त; सिषिस (२) परवश; पराभीन (३) स्तम्ब; जड़ीभूत (४) पुं० लट्टू (खिलौग) सड वि० पट्ठा; मुस्तंडा (२) पुं० मह सठि(-ठीं)गुं वि० मुस्तंडा (२) पूर्त स्तू वि० (२) पुं० देखिये ' लठ ' सठ्ठो पुं० गाड़ीके पहियेका लोहेका डंडा; अक्ष; धुरा(२)मुस्तंबा आवमी; पट्टा सरकण(--चूं) (ल') वि॰ लढ़ाका; शर्गड़ॉलू सरत(ल') स्त्री० लढ़ाई

For Private and Personal Use Only

संयक्षय

संडर्षु वि • मुस्तंडा; पट्ठा (२)न० हृष्ट-	
	लवावुं अ० कि० ' लादवुं ' का कर्मणि;
<b>ণ্ডুচ্চ ৰ<del>ভৰ</del>া (ক্ৰিয়া</b>	लंदना
<b>लडबाड</b> (ल') स्त्री॰ झगड़ा; लड़ाई;	लप स्त्री० वला; आफ़त
लडवुं(ल ') स॰ कि॰ उलाहना देना;	स्त्रप अ० लपसे; झटसे
्दोष देना (२)अ० कि० लड़ना; झग-	लपक लपक अ० लपसे; चटसे; गटगट
ड़ना;बहस करना;युद्ध-लड़ाई करना	(२) घाव आदिमें टीस मारते हुए,
(३)मामला अदालतमें ले जरना;लड़ना;	लहर मारते हुए
दायर करना (४)अनबन होना [ला.]	लपकारो पुरु जीभको लपलपाना;
<b>लडवैयो</b> पुं० (ल′) योद्धा; सैनिक	जीभकी लपलपाहट (२) वेदना या
लडाई(रू') स्त्री॰ लड़ाई; युद्ध; जंग	भयसे किसी नंगका फड़कना; चड़कन
(२) झगड़ा; टंटा; लड़ाई	(कलेजा)
ज्डाक(–कु)(ल') वि० लड़ाका ; झगड़ालू	लपको पुं० गंदी चीजना लोंदा (२)
लडायक(रू') वि० जो लड़ सके(२)युद्धो-	गरम लोहेसे दागनेका निशान; चरका
पयोगी; जगी (३) झगडालू; लढाका	लपर्छंप स्त्री० प्रपंच; झमेला; झंझट;
लडावर्षु (ल') स॰ फि॰ 'लडवुं'का प्रेरक;	জঁজান্ত
- <b>फड़ा</b> ना	लपट स्त्री० लपक; लपकना; <b>ज्ञपट</b>
<b>स्टावनुं</b> अ०कि० दुलार करना; लड़ाना	(२)टक्कर; धक्का; चपेट(३)पेभ;
झडी स्त्री० लढी (२) डोरेकी लटिया	(२)टरकर, पर्यस्त, पर्वट(२)१२, छपेट; फंदा(४)वि० तल्लीन; मश-
स्वय स्त्री० लत;टेव (२) पढति;ढब	राष्ट्र, कवा(०)।व० सरणम, मया गूल; लिप्त
लणणो स्ती० लुनाई; लौनी	
लमबुं स॰ कि॰ लुनना; फ़सल काटना	लपटसपट स्त्री० लपक; झपट्टा; झपट
लत स्त्री ॰ लगन;धुन (२)लत;व्यसन	लपटवुं अ० कि० सरकना
ललाँ न॰ब०व० लक्ते; कपड़े	लपटावर्षुं स॰ कि॰ 'लपटवु', 'लप-
लत्तो पुं० महल्ला; शहरका हिस्सा	टावुं 'का प्रेरणार्थक; लिपटाना
ल्वद्यपथड अ०ल्यपथ; सराघोर(२)	ल् <b>पटावुं</b> अ० कि० लिपटना; चिकटना;
<b>देलि</b> ये 'लथरपथर '	चिकनी चीजसे गंदा होना(२)लालममें
ल <b>चडवं</b> अ० कि० लड़खड़ाना (२)हक-	फँसना; ललचना [पटा; ढीला
लाना (३) दुबला हो जाना (बीमारीसे)	लपदुं वि० जो कसा हुआ न हो; लट-
रूषत्रियुं न० लटापटी; लङ्खड़ी	<b>लपहंग</b> वि॰ लंबतडंग
<b>ल्यबय</b> अ० एक-दूसरेसे बलपूर्वक भिड़े,	लपडाक स्त्री० तमाचा; लप्पड़ (२)
लिपटे हुए; लथपथ	लगाड़ खाना; नुकसान पहुँचना, पहुँ-
ल्वरप्रवर अ॰ ढीला–ढाला; झाँगला	चाना [ला.]
लबबर अ॰ तर और लौंदा जैसा(२)	रूपॉबन वि॰ देखिये 'लपडंग'
किसी तरल पदार्थसे सराबोर हुआ;	लपरको पुं० गाढ़ा लेप
लयपय (३) चूर; लीन	लपरूप स्त्री० वकवास; वकवक (२)

- مشغب	· · ·		
		<b>_</b> .	

अ॰ लपसे; त्वरासे (३) वाव कादिमें
लहर मारते हुए
रूपरूपाट पुं०;स्त्री० बकवास; बकवक
(२)उतावली; जल्दबाजी
रुपरुपियुं वि० जल्दबाज; हड़बड़िया
<b>रूपसण्ं</b> वि० फिसलनवाला; रपटीला
(२)न० फिसलन (जगह)
लपसर्षु अ० कि० फिसलना; सरकना
(२) पतन होना ; गिरना ; फिसलना
रूपार्वु अ० कि० दबकना; छिपना(२)
तंग जगहमें सटकर बैठ जाना
लपेटवुं स० कि० लपेटना (२)फॅंसाना;
रूपेटना [ ला. ] [ चुपड़ना
लगेडवूं स॰ कि॰ लेपना; गीली चीख
स्पेडो पुं० गाढ़ा लेप
सम्पद वि० सस्त जिपका हुआ, लिपटा
हुआ; लपटौआं
सम्पद्य स्त्री० लप्पड; तमाचा
रूप्पनछप्पन स्त्री०;न० पषडा; संझट;
प्रपंच; जंजाल (२) जरूरतसे ज्यादा
<b>अन्</b> ल बधारना; शेखी
रूप्यो पुं० कलाबत्तूका गोल लंपेटा हुआ
फ़ीता; ठप्पा (२) मोटा, बेढंगा पैवंद
लफड(−र)फफड(~र) अ० झूलता
हो इस तरह; ढीला-ढाला; अव्ययस्थित
<b>लफर्ष</b> न॰ रेंटका लोंदा या रेंट (२)
किसी वस्तु, व्यक्ति या कार्यके संबंधसे
होनेवाला नुकसान; आफ़त; बला।
[ –वळगर्वुं = बला पीछे लगना ; पीड़ा
रुगंना.
स्फर्म वि० पूर्त; दराबाज (२) लफगा;
व्यभिचारी (३) बेशरम; निलॅंज्ञ
व्याभचारी (३) बशरम; निलज्ज स्वक स्वक अ० देखिये 'लपक लपक' स्वकारी पुं० देखिये 'लपकारो'

समेगी पुरुँ देखिये 'छपको '

लबडचुं अ० फि० देखिये 'लटकवूं' रुवदावं अ०फि० तरल पदार्थसे सनना, लयपथ होना (२) फँसना; उल्झेना लबलब अ० 'लब-लब ' आवाज करते हुए; चभड़-चभड़(२)लपसे; गटगट (३) यरंबर लबाको पुं० मैले, फटे-पुराने कपड़ोंका-ढेर; लुगरा (२) घरके टूटे-फुटे माल-असबाबका ढेर (३)काठकवाड़ ; घरकी रही चीजें लवाड(-डी) वि० लवार; लवाड़ लबाबी स्त्री० लवारी; झूठा; लवाही লৰুৱৰু, লৰুলৰু, লৰুকলৰুক अ০ গাৰ-वर; धकक्क (कलेजा) लमणा(-णां)झीक स्त्री० मायापज्जी लमणुं न०,(-णो) पुं० कनपटी 👘 स्वामत स्त्री० धर्म;साथ (२)लानत; स्विरमें नाया हुआ गान धिक्कार ललकार पुं० अलापना; तान(२) उँचे सलकारचुं स० कि० अलापना; 'तान लगाना (२) हॉक लगाना (३) टिंट-कारना (४) ललकारना; ल**ड़नेकी** चुनौती देना णिर्यक; लल्बाना ललचाववुं स० कि० 'ललपावुं' का प्रेर-सलपार्च अ० कि० ललचना; सालचमें पड्ना (२) लुभाना;मोहित होना (३) लालसा करना; ललचना सन वि० थोड़ा (२)पुं० अंश; लव (३) निमेषका छठा भाग (४) तबलेका किनारवाला हिस्सा (५) बकबक **लवचीक** वि० लचीला: लचकीला **स्वरी** स्त्री० बकवास; प्रलाप 2

स्वलव स्त्री० वड़बड़; व्ययं बकमा (२) अ० व्ययं बकबक (करता) ~

सवस्वयुं अ० कि० वड्वडाना; वकना

-	Ţ	K	

٠.

Yex



लयलयाट (रो) पुं० यकवास
लवलीन वि० लवलीन; तल्लीन; मशगूरु
स्वर्षु अ० कि० बड्बड्राना; बकना
समंग न० लौंग; सवंग
स्वर्धनियुं वि० लौंगकी शकलका या
र्शीयके जितना(२)न० कानका एक
गहना; लौंग [पत्रिका आदिका)
समाजम न० चंदा (सदस्थता, पत्र-
स्वाद पुं • पंच(२)पंचायतका सदस्य;पंच
लवावी वि० पंच-संबंधी ; पंचायती (२)
स्त्री॰ पंचोंका काम; पंचायत
कवार(वा ′) पुं∙ ऌुहार; लोहार
समारियां (वा ') न॰ व॰ व॰ छोहारका
काम करनेवाली खानाबदोश जाति;
<b>वाड़ि</b> या लोहार
<b>समार्थ</b> न० दकरीका बच्चा
अवारी पुं० बकवास; प्रलाप
<b>सरिंग</b> न॰ देसिये ' लवंग.'(२)लॉॅंगके
वाकांरका (बंदूक, स्टव आदिका)
बागेका छोटा हिस्सा; टोपी 🔹
<b>क्विंगियुं</b> वि०(२)न० देखिये 'लवंगियुं'
<b>समूरियुं(यु ')</b> न०, समूरो पुं० नासूनसे
<b>की हुई</b> खरोंच; नंखक्षत; नहट्टा
सम्बो पुं० जीमका अग्र; जिह्नाप
काकर न० लघकर;सेना;लघ्कर(२)
भीड़; मजुमा; फ़ौज; उदा॰ 'बाखुं
सरकर लहेने न जता [ला.]
<b>संस्करी</b> वि० रूक्करी; सेन <del>ा संब</del> ंधी
कत्तम न० लहसुन; लसुन
स्तर्णियुं वि० लहसुनवाला (२)लहसुन
जैसा तीसा (मूली आदि) [पत्पर
सत्तजियो पुं• लहसुनिया; एक क्रीमती
कतरक कसरक अ० वर्राटेसे; तेजीरे 🐳
कत्तरको पुं० वेगले कींचना या रगढ़ना
(२) पिस्सा; रगड

ससोटषुं	स॰ क्रि॰	थोटना;	रवकृत;
बाटना			

- लस्सी स्त्री० लस्सी (दूष और पानीकी) सहर (-रा)वुं अ० कि० लहराना
- लहाच (ल्) न० लाभ; नफ़ा
- स्तहाची(ल्) स्त्री० खुशीके अवसर पर नेग बॉटना
- सहाणुं(ल्) न० शुभाशुभ अवसरों पर बिरादरीवालों और नेगियोंको दिवा जानेवाला उपहार
- स्रहाव (--वो) (रु) पुं० आनंदका कुछ लेना (२) अरमान; चाव
- सहियो पुं० सिखनेवाला; कातिव; मुंबी
- सहे(ल्हें) स्त्री० लगन; लौ; बुग
- रुहेकचुं (ल्हॅ) अ० कि० छहकना; जोडे साना (२) अंग-संगके साथ पालन, बोलना आदि; झूमना (३) लहराना
- लहेको (ऌ्ट्रॅ) पुं० हाव-भाव ; अंग-भंगी; अदा (२) ऊँचे स्वरमें या गला फाड़कर बोलना ; लहजा
- कहेबत(ल्हॅ) स्त्री० मखा; आनंद; लज्खत(२)लज्जत; स्वाद; मबा
- **स्त्रेवतवार**(ल्हें) वि० लज्ज्**तदार;** स्वादु; आयक्षेदार
- स्रहेर (ल्हें) स्त्री॰ (पानीकी) स्रहर; तरंग; (हवाका) झोंका; (मनबी) मौज; लहर (२) नींद या नचेके असरका अनुभव करना; लहर (३) सुख-चैन; ऐरा (४) आनंद; चैत; मजा। [--उदावची, करवी, वारवी= मोज मारना; मजा लूटना । --पडवी = मजा आना.] [सहराना सहेरषुं (ल्हें) अ॰ कि॰ तरंगें उठना; सहेरी(ल्हें) वि॰ आनंदी (२) तरंबी;

•	
	- <b>T</b>

• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	•
मनमौजी; लहरी (३)इक्कबाब(४)	लंगीस न० पतंगके दिनोंमें डोरेसे ठीकरा
उड़ाऊ(५) स्त्री० छहर; तरंग; छहरी	बौंधकर खेला जानेवाला लंगर
<b>लहेर्चु</b> (ऌहॅ) स०कि० ग़ौरसे सुनना (२)	संगोट पु॰ लँगोट; लँगोटा। [सारवो
गिनना; समझना; मानना; पहचानना	= लँगोट पहनना (२) साषु या जोमी
(३) देखना (४) पाना; लहना [ प. ]	बनना; लेंगोटी बाँघ लेना(३)लेंगोटी
स्टर्क्स्यू अ०कि० चमक मारना;झलकना	<b>बाँ</b> ष लेना; सारा धन उड़ाकर <b>दरिद्र</b>
(२) उमंगसे झूमते हुए आना (३)	हो जाना ]
छालसा करना; ललकना	लंगोटबंध वि० लेंगोटबंद; लेंगोट बाँध-
संख्यपुं अ०कि० भुकना; नत होना	नेवाला (२) बह्यवारी; लॅंगोटबंद
(२) खुशीमें झूमना (३) देखिए 'लळ-	लंगोटियुं वि० लॅंगोटी बॉबनेवाला;
कर्बु'। [लळी पडर्बु=झुक जाना।	कम-उम्र [(२) साषु; वावा
सळी लळीने ≕नीचे पुक-अूककर]	संगोटियो पु० लंगोटियायार; बालनित्र
लंगड वि॰ लंगड़; लेंगड़ा	संगोदी स्ती॰ सँगोटी । [नारकी,
संगडार्षु ब॰ कि॰ लेंगडाना	बाळबी = लॅंगोटी बॉंघकर तन डकना
<b>अंगडी (०घोडी</b> ) स्त्री० एक खेल	(२) मन-दौलत उड़ाकर भिसारी
<b>संगर्यु</b> वि० लेंगड़ा	बनना; लगोटी बांघ लेना (३)सांघ-
संबद्धों पूं॰ लॅंगड़ा (आम या पेड़)	संन्यासी बनना; लँगोटी बाँभ लेना.]
संगर न॰ लंगर (नाव या जहाजका)	संगोटी पुं॰ लॅंगोटा (२) देखिए
(२)लंगर; लंगरखाना; सदावतं(३)	'लगोटियो ' [रुंघन करना
स्वियोंका पैरका एक गहना; लंगर	लंबवुं स० कि० देखिए 'उल्लंबबु' (२)
(४) एक सिरे पर वजन बाँघी हुई	<b>संघावं</b> अ० कि० सँगढाना
कोरी; लंगर(५) [ला.] लंबी क़तार;	रुंब वि० (२)पुं० लंब; 'पर्पेन्डिक्युलर'
पंगत । [जपाबवुं, अंचकवुं = लगर	(३)वि० लंबा; लंब(४) पुं० साहुल
उठाना । –नासवुं, फांसबुं = लंगर	<b>संबगोळ वि०</b> (२) पुं० अंडाकार; <b>अर्थ-</b> सनम्बर
डालना, करना.]	वृत्ताकार सं <b>बचोरस</b> वि०(२)पुं० समकोण <b>वतु</b> -
लंगरकानुं न० लंगरखाना; लंगर	र्भुज; 'रेक्टेंगल'; आयत [ग.]
लंगरव स॰ कि॰ लंगर करना; लंगर	रुंबाई स्त्री॰ लंबाई
बालकर जहाजको खड़ा करना (२)	लंबाण न० लंबापन; लंबान; लंबाई
एकमें दूसरी चीज लगाकर या जोड़कर	(२) लंबाना [यँक; लंबाना
जजीर या कतार या माला करना (३)	र्लबाबबुं स॰ कि॰ 'लंबावुं' का प्रेरणा-
फंदेमें फेंसाना; फाँसना [लंगर	संबार्यु अ० कि० लंबा होना (२) किसी
कंपार स्त्री० लंबी कतार (२) जंजीर;	बातका अधिक समय तक जारी रहना
खंगारणुं स० कि० देखिए ' लंगरवुं '	संबूस (स) वि॰ लंबू (वादमी) (२)
संगाच वं क के संगहाना	पुं० ऐसा व्यक्ति
•	P. JAL . 1117

### নাকৰকাল

४२६

स्रागम्

लाकडकाल न० लकडीका काम स्राकडवी वि० लकडी-सा सख्त (२) पुं० ब० व० देखिये 'लाकडशी लाडु' स्राकडशी लाडु पुं० एक तरहका चीनीका

- सस्त लड्डू सम्बद्धी स्त्री॰ लकड़ी; लाठी३ [---ओ कदयी --- लकड़ी, लाठी चलना; मार-पीट होना। एक लाकडीए हांकवुं =-एक लाठीसे सबको हॉकना.]
- स्ताकंडुं न॰ (पेड़की) लकडी(२)[ला.] बिघ्न;अड्चन;अवरोष; बाघा (३) ईंघन; लकड़ी । [लाकडानी तलवारे कड्युं = पूरे साधनोंके बिना लड्ना(२) इस तरह दिखावा करके अपना व्य-बहार, संसार चलाना; लॅंगोटी पर फाग खेलना। लाकडा लडाववां = मूठ-सच जोडकर झगढा लगाना। काकडां संकोरवां = उकसाना; भड़-काना: आगमें घी डालना। -- घालवं, **मुसाढवूं, युसाडी वेर्यु =** नेग, कर, लाग **था** ऐसा रिवाज लादना (२) अपने स्वार्थकी बात बीचमें दाख़िल कर देना (३) रुकावट, विष्न डालना (४) कमर जकड़ जाना। --पेसबुं, पेसी अबुं == देखिए 'लाकडुं घालवुं' नं. १, ३। **स्नाकडे मांकडुं बळगाडवुं** = योग्यता **देखें** बिना संबंध करना ; अनमेल संबंध जोड़ना (२) दो आदमियोंमें झगड़ा लगाना, [

सास स्त्री॰ लास (पीपल आदिकी)

स्वांच पु० लाख;सो हजार। [-टकानुं =बहुत क़ीमती या उपयोगी; लाख टकेका;पतेका;मारकेका। --रूपियानुं =लाक टकेका; हीरा आदमी; बड़ा ईमानदार और भला(मनुष्य)।--बातनी

एक बात = संक्षेपमें थोड़ेमें ; सी बातकी एक बात । लासे लेखां लेवां = लासोंका लेन-देन करना (२) बड़ी-बड़ी बातें करना;डींग मारना;दूनकी लेना.] लालवुं स०कि० लाख चढ़ाना(२)लासना [**प**.] स्वरियुं वि० लाखका बना हुआ या लास चढ़ाया हुआ (२)न० लाखका कंगन लाखुं न० शरीर पर जन्मसे पड़ा हुआ दाग्न; लच्छन; लक्षण स्राक्षेणुं वि० प्रतिष्ठित; इज्जतदार; सुलक्षण(२)लाख टकेका; क्रीमती **लासोटव्रं** स०कि० देखिये ' लाखवुं ' लाग पु० घात; मौका (२) आघार; लाग ; टेकान (३) युक्ति; लाग; तरकीब (४) बीच; दरमियान (जगह)। [--सावो ≕मौक़ा मिलना (२) ठीक क़ब्बेमें आना; पकड्में आना। --ताकवो 🛥 घातमें रहना; मौका ढँढ़ना.] लागट अ० लगातार; बिना रुके कागणी स्त्री० माव; मनोभाव (२) दया लागणीप्रधान वि० भावप्रधान; भावक लागत स्त्री० लागत(२)जकात लागतुं बळगतुं वि० लगावटवाला;संबंधी सागभाग पुं० संबंधीकी हैसियतसे मिलने-वाला हिस्सा लागलागट अ० लगातार; विना रुके लागलुं अ० सुरत ही; फ़ौरन लागवग स्त्री० बड़े आदमियोंसे जान-पहचान; रसाई; पहुँच लागवुं स॰ कि॰ संबंध या स्पर्श होना; रूगमा; जुड़ना; सटना (२) संबंध, रिक्ता होना; लगना (३) मनोभाव अनुभव करना; दिलपर असर करना; --के लिए मनमें भाव पैदा होना;लगना

### स्रागवं

\*79

सामगै

(४) जान पड़ना;अनुभव होना;समझमें
आना ; रूगना (५) दिखाई देना ; प्रतीत
होना; ज्ञात होना (६) इच्छा-हाजत
होना; लगना (भूख-प्यास)(७) (किसी
काममें) मुस्तैदीसे, मनोयोगपूर्वक लग
जाना; जुटना;लिपट जाना;लगा रहता
(८)आरी होना; शुरू कर देना;ठिकाना
लगना; उदा० 'ते नोकरीए-कामे-चंधे
<b>लाग्यो छे'(९)ठीक बैठना;लगना(कुंजी)</b> ;
असरप्रभाव करना (दवा); लागू
होना (क़ानूनकी घारा)( १०) हानिकर
प्रभाव होना; लगना; उदा० 'पाणी
लागवुं, उजागरो लागवो' (११) ध <b>व</b> का
लगना; टकराना; रगढ़ खाना; चोट
लगना(१२)आँख मुँदना, लगना ; उदा०
'हमणां ज आंख लागी छे' (१३)खर्च
होना; दाम लगना (१४) किसी स्त्री
या पुरुषका अन्य पुरुष या स्त्रीसे अबैध
संबंध जोड़ना । [कामे स्नागवुं = नौकरी-
धंधेमें लग जाना (२) काम आना;
<b>इस्तेमाल होना । पूठे लागवुं</b> = हाथ
धोकर (किसीके) पीछे पड़ना (२)
पीछे लगना; किसी आशासे पीछा
पकड़ना । हाथ लागर्वु =- मिलना ; हाथ
रुगना; हाथ आना.
लामबुं अ० कि० सुलगना , जलने लगना
स्रामु वि॰ लागू; लगा हुआ; सटा हुआ
(२)ठीक बैठता हुआ; अनुकूल आने-
वाला (३) अ० जारी । [ <b>करव्</b> च=
अपनी जगह पर ठीक बैठे ऐसा
करना; चरिताथं हो ऐसा करना (२)
ज़ोड़ना; लगाना । –थवुं, पडवुं = पीछे-पीछे जाना; साथ हो लेना (२) ठीक बैठना; लागू होना (३) अवैघ
पाछ-पाछ जाना; साथ हो लेना(२)
০ঃক ৰ০ন); তাথু हালা (২) <b>अवध</b>
संबंध जोड़ना (स्त्री-पुरुष) (४) (रोग)

लगना (५) दवाका असर होना।
-रहेषुं = लगा रहना (२) पीछे-पीछे
जाना; साथ धरना ]
सागो पुं० लाग; नेग; हक; वस्तूरी
(२)कर; महसूल (३)लगाव; रिश्ता;
लाग (४) पीछा
साब स्वी॰ लाज; शर्म(२)परदा(रखना)
(३)प्रतिष्ठा; लाज । [ <b>काढवी =- परदा</b>
करना; घूँघट करना, काढ़ना, निका-
लना। –मू <b>कवी</b> = परदेकी प्रथाका
त्याग करना (२) हया-शर्मका त्याग
करना । –रासवी = आवरू बचाना ;
लाज रखनाः]
<b>साजम</b> वि० देखिए ' लाजिम '
<b>लाजवं</b> अ० कि० लजाना; शरमाना
साजिम वि॰ लाजिम; उचित
साट(ट,) स्त्री० लाट; जाठ(घानीकी)
(२) घुरा (गाड़ीके पहिये या चरखेकी)
साट पुं० लहर; तरंग
साट पुं० लॉट; ढेर
साटसाहेब पुं० बड़ा हाकिम; लाट
लाटी स्त्री० लकड़ीकी बखार; टाल
<b>साटो</b> पुं० छहर; मौज; तरंग
लाटो पुरु साबून या किसी घातुका लंबा
टुकड़ा । [स्राटा काढवा = फ़ायदा होना;
प्रोफ्ति करनाः]
लाठी स्त्री० बाँसका लंबा डंडा; लाठी ।
[चलाववी = ठाठी चलाना.]
लाब न॰ लाड़; दुलार
<b>लाइकणुं</b> वि० लाड़ला; प्यारा
लाडकवायुं वि० देखिए 'लाडवायुं'
सारकुं वि॰ देखिए 'लाडवायूं'
साहवायुं वि० लाड्ला; दुलारा; प्यारा
लाडवो पु० देखिए 'लाडु'। (लाडवा

जावानुं काम नयी = आसान काम

-	R	l

-	-	-
- 12		

	• 46
गहीं है; जेरु नहीं है।-आयो, अनवी	सारोडियुं न॰ देशिए 'रापसिटूं
=प्राप्ति करना; लड्डू बँटना,मिलना.]	काफो पुं० तमाचा (२)उड़ाक व्यक्ति
स्ताडी स्त्री० सुकुमार कन्या (२) दुलहन;	(३) सर्गला; बेंबड़ा
दुलहिन; लाड़ी विटा; दुलहेटा	<b>सावर्ध दि० सुकुमार; नायुक; कोवल</b>
साहीलं वि० लाइला (२) न० लाइला	काबी स्वी॰ देखिए 'लापी'
स्ताडू पुं० लड्ड; मोदक(२) पिंडा; गोला ।	<b>साबूं</b> न० थीकुंगारका पट्टा; <b>न्वारफा</b> ठा
[-साथानुं काम = आसान काम; खेल.]	काम पु० लाम; प्राप्ति; फ़ाववा । [
<b>साडो</b> पुं• लाड़ा (२) लाड़ला बेटा	<b>सादयो</b> =लाम मिलना ; फ़ा <b>क्या होगा.</b> ]
<b>स्नात</b> स्त्री० लात;पाद-प्रहार(२)हानि;	<b>ল্যামণাখল</b> ধ্বী০ কার্নিক-যু <b>ক্তা গঁশ</b> শী
कषाड़ [ला.] । [-कावी, वागवी ==	साभवुं स० कि० लाभ होना; सटमा;
लात खाना ; लातका प्रहार सहना (२)	कमानः
हानि होना ।मारवी, रूगाववी =	<b>काय</b> (ला'ह,) स्त्री० आग; <b>जम्मि{२)</b>
छात चलाना; लातसे मारना (२)	जलन; बाह । [ववी, लागवी विमी
नुक़सान करनाः]	चीज़को भाग छगना। <b>पेडवर्त</b> भ <b>लव</b>
काताट्युं स॰ कि॰ लातसे मारना;	लाग <b>वी =</b> जोरकी भूख लग <del>ना।</del> केल्में
रुताड़ना [कोठी	भूहे <b>दौड़</b> ना (२) जलन, दा <b>ह होगा</b> ]
<b>काली</b> स्त्री० बंदरगाहके पासका गोदाम;	लायक वि॰ लायक; योग्य(२) अपि-
काद(द,) स्त्री॰ लीद	कारी; लायक (३) अनुकूल; जावक
<b>कावर्षु</b> स॰ कि॰ लादना जन्मे जने जन्म की जीवरों को रोग	मुनासिन; उपयुक्त (कावडी
साबी स्त्री॰ पत्यरकी पतली और छोटी	रुायकाल, लायकी स्त्री० लिमाझव;
तस्ती; पटिया (२) फ़र्श; गच	स्तावरी(ला') स्त्री० बहुत बोलता;
सांबदुं स॰ कि॰ पाना; लाघना [प.]	बकबक (२) शेखी; खुदकी बड़ाई; डींग
(२) अ० कि० अहाजका जमीनसे चिपक जाना	<b>स्तार</b> (स्ना <sup>'</sup> ) स्त्री० लंबी क़तार; <b>संह्</b> डा
ायनक जाता <b>लायह</b> स्त्री० लप्पड़; तमाचा	सारी (सा') स्त्री० रेलकी पटरी पर
सापटियुं न० गलसुआ; कनफेड़	ठेलकर चलाई जानेवाली गाड़ी(२)
सायरदा वि॰ लापरवा; लापरवाह	माल <b>ढोनेके काम आनेवाली गाड़ी</b>
कापरवाई स्त्री० लापरवाई; बेफ़िकी	(हायकी या मोटर-लॉरी)
लापशी (-सी) स्त्री॰ गेहुँके दरदरे	<b>स्राल</b> पूं० छैला;रँगीला पुरुष; <b>बौका</b>
आटेका एक प्रकारका हलवा; ज्यादा	(२)पुत्र; लाल(३)स्त्री० माणिक;
षी बालकर बनाई हुई लपसी	लाल (४) एक चिडि़या ; लाल
सापी स्त्री॰ किवाड़, मेज, कुरसी आदि	लाल वि० लाल; सुर्ख । [−घोडीए वडवुं
लकड़ीकी चीजोंके छेद आदि भरनेके	= शराब या अफ़ीमका नशा करना;
कामका एक प्रकारका मसाला;पुढीन	लाल पानी पीना । <b>यई जवुं = लान</b> -
सामोट स्त्री० लप्पड़; घौल; तमाचा	पीला हो जाना; कोध करना।
••	-

क्रम्मभून	¥6¢	संगु
<b>मोहां करवां</b> = पान खाना (*	२) यस <b>साहि</b> युं वि	<ul> <li>अधिक लार टपकती हो</li> </ul>
मिलना.] [लाल		चा) (२)न० वह कपड़ा जो
सालयून, सालयटक वि० बहुत		लेमें इसलिए बॉयते हैं कि
কালৰু বি৹ তালৰী; তাসী		जेसे उसका शरीर भी <b>गे नहीं;</b>
कालगोळ वि॰ देसिए 'लालम्	रूम 'सीनाबंद	(३) दूषभरी बाल, खोशां 👘
सालची पुं० कृष्णकी बालस्वब	•	० रजस्राव (पशुका)
<b>नूर्ति</b> (२) गोस्वामीजीका बेट		<ul> <li>कातका निचला भाग;</li> </ul>
सालगणी स्त्री० लालपानी; व		लोंडी (२) घंटेका लटकन;
<b>काम्यम</b> वि० बहुत लास; लाल	সম্পুকা তীতক (	३) बोलना; मावाज <b>; हुवाँ</b>
भारतमाई स्त्री० आग; अग्नि	(पशुपक्षी	की – खासकर स्थारकी )
सामग्रहाल वि० लालमुखे; बहु	त लाल <b>लाळो</b> (ला'	) पुं० अंगारा
साका पुं० छैला; रंगीला पुरुष	;ৰাঁকা <b>কাগ</b> গুঁ০া	मटर जैसा एक दलहन
जनाव स्त्री॰ लाली; सुर्खी;	ललाई लॉगरबुं(०	) स॰कि॰ देखिए 'लंगरबुँ ;
काली स्त्री॰ लाली; सुर्खी (२	)चंटेका लंगर डाय	<del>अकर जहाजको ठहराना</del>
कटकन; लोलक		) (०) न०; स्त्री० लंगन;
स्तालते पुं० छैला; बॉका; मौर्ज पठान [ए	ो (२) उपनास	
	• •	) न॰ घरना (देना)
कल्बणी स्त्री० लावनी (२) व		) ज॰ कि॰ लंघन करना (२)
सावरी स्त्री० एक पक्षी; लबा		पहाँ घरना देना
<b>सावर्ष</b> (ला') न॰ कुत्तेका काट	•••	पुं० लंधन; उपवास (२)
कुत्तेका भूंकना । [नाजवं, अ	•	र) बड़ा डग, फाल
<del>ङ्कुरो</del> का काटना(२)ग्रुस्सेमें व	· · ·	स्त्री० रिश्वत; लौब; पूस
भटकारनाः]	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>लावसोर</b> (०)वि० घूसखोर
कावलक्ष्कर त० लाव-लक्ष्कर		) वि० पूसखोर; रिक्वतसोर
कावनुं स० कि० लाना; ले व	···· \ · /	वि॰ घूर्त; <b>गठ(२) अक्खड़</b> ;
कार्चु(रूा′) न० कुत्तेका काटा ———————————————————————————————————		ाशमें न रहनेवाला; सरकश;
काइस(—स) वि० बरकाद; नग	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	र्म्स, देखिले 'जाती'
स्त्री॰ लाश। [अव् = तबाह		स्त्री॰ देखिये 'लापी' ) स्त्री॰ एक एक्सएस राजी
कासर स्त्री० व्यर्थकी देर; ही		) स्त्री० एक पातसाग, माजी स्त्री० स्पतिः: साम्यास्त्र
लासरियापणुं त०, खासरियावे		स्त्री॰ स्मृति; या <b>ददास्त</b> खर्ये 'लापी '
ब॰ व॰ व्ययंकी देर; ढील		लय लागा (•) स्त्री• वंश-गंड; कंशी-
सासरियं वि० जो कहे मगर को		() तकपार; हुज्जत
व्यर्थकी देर करनेवाला; ढील साही स्त्री० शेंहुँके आटेकी सौंग		() तकरार, हुण्यत वि॰ लंबा; अषिक विस्तार-
4 11		। विश्व किंव, निक्रा मनुत्तु; ा र । [स्रांबी केंब, निक्रा मनुत्तु; ा
काक स्ती॰ लार; राल	माण्य र प्र	Z i fastat mat tatt i a dad.

NN 85
· · • ·

दीर्षं निद्रा; ज्लंबा सफ़र । सांबी **लेंचवी** = लंबी सानना; भुरमुट मारकर सो जाना (२) मर जाना। लांबी फाळ भरबी = भारी हिम्मत करना; साहस करना (२) अपने बृतेसे बाहर काम करना। --करवु == लंबा करना; सल देनाः पिष्ट-पेषण करना। --कावर्ष ≕अधिक जीना। --क्रेंचवं =्बहत जीना (२) ढील करना; समय व्ययं वितानाः । ---वर्षु, भई अर्थु=किसी काममें अधिक समय लगना; तूल पकडना (२) (आरामके लिए) लंबी तानकर सोना (३) बहुत घाटा सहना (४) मर जाना । लांबो हाथ करवो 🛎 मदद करना या माँगना; हाथ धरना या पसारना (२) भीख माँगना; हाय पसारना (३) धूस लेना (४) बाघा ढालना. संबंध्यट (०) वि० चित; पट लांबुलच(०क) (०) वि० बहुत लंबा; लंबा-चौड़ा लांभवं, लांभुं (०) न० विभाग; हिस्सा (२) वह चिट्ठी जो हिस्सेदारोंके हिस्सेकी बॉटके लिए डाली जाती है लिसित वि॰ लिसित ; लिखा हुआ (२) न० साम्यलिपि; भाग्यरेला लिलितंग वि० 'लिखनेवाला' इस अर्थमें

- खत लिखते समय इस्तेमारु करते हैं -**লিদ্বাদ্ধী দুঁ**০ লিক্সাজা
  - लिलाई (-म) मू॰ नीलाम
  - लिसोटी स्त्री॰ छोटी रेखा या खरोच; क्सिंगेका चिन्ह; रगड़
  - लिसोटो पुं० बड़ी रेसा या खरोंचे: ल्की **र**ेलीक
  - सिंबद स्त्रीक नीबुझा येवः नीबू

# त्विसयो

लिंबु न० नीबु (फल) लिबडी, लिबोई स्त्री० नीव (पेड) रिकोळी स्त्री० चौड़े मुँहका एक **बड़ा** बरतन (२) निबौली; निमकौड़ी

- स्त्रीक स्त्री० लीक; रेखा(२)हद; सीक लीस स्त्री० जुंका अंडा; लीस
- लीसियुं २० लीखें निकालनेकी बारीक दंदानोंबाली कंषी
- लीटी स्त्री रेखा; लकीर; लाइन (२) पंक्ति; क़तार(३)काव्यपंक्ति; चरण; पाद (४) मर्यादा; लीक;हद । [--मारवी = लकीर खींचकर रद्द करना, काटना.
- लीटो पं० मोटी लकीर (२) छेंक; अक्षर काटना । लिटा ताणवा = अटपटाँग लकीरें खींचना (२) बेतुका चित्र सींचना या लिखना । --मारवोे ⇔ छेंकनाः अक्षर काटना ]
- लीचे व॰ --केकारण: --को लेकर **स्तीपण** न० गोबर-मिट्रीका लेप; लिपाई लीपर्व स०कि० लीपना (गोबर-मिट्रीसें) लौमडी स्त्री० छोटा नीम (२)नीमकी जातिका कोई छोटा पेडु; उदा० 'मीठी लीमडी '
- लीमडो पुर्वनीम [पट्टी; लीर पिं.] लीरो पुं०ं कपहेका लंबा टुकड़ा; धज्जी ; लील स्त्री० काई; सिवार(२)जीभकाँ मैल। [--उतारबी = जीभका मैल
  - साफ़ करनाः]

स्रीसछोपुं वि० हरा (२)हरी छालका लीलझाम् न० चीटसे बना हजा हरा दाग; नीला; नील (पड़ना)

लीलम ग० हरे रंगका एक रतन; पन्ना; मरकत कारी ; संब्जी लीलवण न०,(--जी) स्त्री० हरी तर-सीखवो पु० दलहनकी कलीका हरा दाना

# सीलागर

XŚŚ

सूर्वपान्

लीलागर स्त्री० भौग लीलामुं न० देखिए 'लीलझामुं' लीलासहेर स्त्री० आनंद; ऐश (२)

खुशहाली स्तीस्त्राश स्त्री० हरापन

- स्रीस्तां पाणी न०व०व० घोटी हुई भौगका पेय; भौग
- लीली घोडी स्त्री० भाँग (२)भाँगका नशा।[--ए **चडवुं** = भंग पीना; भंगका नशा छाना]
- सौसोचूकी स्त्री॰ सुस-दु:स; नीच-ऊँव सौस्ट्रं वि॰ हरा; सब्द (२)गीला; भीगा (३) रसवाला; तरोताजा (४)तर; मालदार; घनी। [लीला झाढ तळे भूके मरवुं = खूब हयादार-लज्जा-दीलि होना (२) बहुत आलसी; काम-चोर। लीली वाढी = भरी जवानी; चढ़ती, खिलती जवानी (२) बाल-बच्चोंवाला बढ़ा परिवार। -करवुं = फ़ायदा पहुँचाना; संपत्ति प्राप्त करना। सौसे तोरणे = कुछ भी हासिल किये बग्रैर। लीलों डुकाळ = अतियृष्टिसे होनेवाला अकाल; पनकाल; पनिया काल.]
- लीर्खुछम वि० बहुत हरा; हरा ही हरा लीलुंपीळुं वि० नीला-पीला; अति कुढ; लाल-पीला
- स्त्रीस्रोतरी स्त्री० हरी वनस्पति; हरि-याली (२) सागपात; सक्त्री; भाजी
- लीसुं वि०जो खुरदरा न हो; चिकना (२) फिसलनवाला; चिकना (३)
- कीछा; व्यर्थकी देर करनेवाला
- लीसुंख्स दि० बिलकुल चिकना
- कोंड- त०; स्त्री० रेंट; सिनक 🗸
- कोंडी स्त्री० छेड़ी; मेंगती; वेगनी

लोंडीपीपर स्त्री० पीयलकी कली;पीपर; पीपल हिवा मल; बड़ी लेंडी स्टोंबुं न० (ऊँट, गधे आदिका) गोल बँधा स्तोंपण (व्युंपण) नव्दे सिए 'लीपण" सींपवुं(०गूंपवुं) स०कि० देसिए 'लीपवुं' र्लोबरी(-हो) देखिए ' लीमडी ' आदि **लींबण स्त्री० देखिए ' लिंबण** ' सींबुं,सींबुबी,सींबोई देखिए 'लिबु' आदि लोंबोळी स्त्री० देखिये ' लिबोळी ' खुण्वाई स्त्री० कपट; पूर्तता लुच्चुं वि॰ घूर्त; कपटी(२)काइयाँ; धाघ; चंट (३) लुच्चा; बदमास; व्यभिचारी 🔄 निपड़ा आदि; पोंछना लुछणियुं न० पोंछनेके काम आनेवासा **ल्छावर्यु** स० कि० 'लूछर्यु' का प्रेरणा-पोंछा जाना र्थक; पोंछवाना 🚽 लुछाबुं अ० कि० लुछवुं 'का कर्मंगि; **स्टणियुं** वि० ऌटनेवाला सुटार (-रो) पुं० सुटेरा; डाकू लु**ढावनुं** स०कि० 'लूटवुं' का प्रेरणा**र्यक**; [सुटना लुद्राना 💪 सुरावं अ० कि० लूटनुं का कर्मणि; सुहार पुंक लुहार; लोहार रुहारियां न०व०व० देसिए 'लवारिया' लू स्त्री० लू (२)लूसे होनेवाला सेम । [-लागबी = लुलगता, मारना। - बाबी = लू चलना. लूओ पुं० लोई;पेड़ा (गूंधे द्वए आटेका) लूक(--स) स्त्री० देखिए'लू' लूखस स्त्री० खुजली (रोग) लुखुं वि० जिसमें चिकनापन न हो। 🗉 रूखा (२) रसहीन; सुखा; रूखा (२) निर्धन ; खाली हाथ । -हसबुं = कुत्रिम ढंगसे हेंसना ] स्मुनुवा (--पू) सं- विक कुका-सुला

# সুৰৰাজন্মা

**कुगवांकत्तां** ज**े व**े वे० कपड़ा-छत्ता **सूनर्बुन०** कपड़ा; वस्त्र (२) साड़ी। किंगडां उतारीने बांचको = मौतकी 'खबर देनेके लिए (पत्रके आरंभमें) लिखा जानेवाला सांकेतिक वाग्य। सूगडां उतारी लेवां -- सब कुछ छीन लेना; कपड़े उतार लेना। लूमडा **सेवावां**≕डाकुओं आदि द्वारा लूटा जाना । सूचर्डा लेखां = लूटना ] खूनदी स्त्री० लुगदी(२)मॉझा(पतंयका) **सूलपुं** न० देखिए 'लुछणियुं ' **मूडन्ं** स॰ कि॰ पोंछना (२) किसीके कोई गीली चीज मलना, लगाना, चिपकाना मिल; लूट सूब स्त्री० लूट; डकैती(२)लूटा हुवा सूरकाट स्त्री० लूटमार; सूटपाट **सूडण्ं** स०क्रि० लूटना;जवरदस्ती <del>छी</del>नना **सूराकूट** स्त्री० बार-बार या अनेक जगहों पर ऌटमार मचना सूच न० लवण; नमक। [--उतारबुं 🖛 बाबा दूर करनेके लिए तमक निछावर करना; वारना। - सार्वु = - का नमक खाना (२) --का नमक खानेसे उसका एह्सानमंद होना या वफ़ादार रहना.] सूचहराम वि० नमकहराम सू**महलाल** वि० नमकहलाल **कुवी** स्त्री० एक भाजी; लोनी; नोनिया **मूनो** पुं० कोना; सार; नोना रूम स्त्री० फलोंका गुच्छा; घौद; घौरी रु**मज्**न०;(--को) पुं० फलोंका बड़ा गुच्छा; वौरा

- कूमर्षु अ० कि० लटकला ; लूमनइ [प.] (२) झुकना; नत होना
- सूली(०बाई)स्त्री० जीभ; लोला।[--हलाववी, हलाव्या करवी == सिर्फ़ मुँह

से कहना; जीभ हिलाना (कु**छ किये** बग्रैर) (२) हुँ-हाँ करना.] सुर्खु वि० लॅंगड़ा (२) अशक्त; निर्वल; असहाय (३) प्रमाणरहित ; वेवूनियाद; आधारहीन; अमूल स्टंटस्त्री० देखिए 'लुट' **सूंटणियुं** वि० देखिए <sup>(</sup> लुटणियुं <sup>(</sup> सूंटफाट, सूंटवूं देखिये 'लूटफाट', लूटवूं' लूंटार (-रो) पु॰ देखिए 'लुटार ' सूंटासूंट स्त्री० देखिए 'लूटालूट' ल्टावर्ष,स्टार्थ देसिए 'ल्टावर्','स्टार्य' **ळूंडापर्जु** न० दासता; गुलामी **लूंडी** स्त्री० लॉंडी; दासी ल्हो पु॰ दास; गुलाम **लूंव** स्त्री० देखिए 'लूम' स्ंबर्व अ० कि० देसिये ' लूमव्ं ' **लैबा** पुं० लिखी बात; लेख; उ**दा**• ' शिलालेख, विधिना *लेख* '(२)**क्ररार-**नामा; दस्तावेज; लिखित; लेखपण (३)छोटा निबंध; लेख। [--करबो == लिखापढ़ी–लिखित करना । --**कोत-**रावचो, लसावचो = शिला मा ताँवे आदिके पत्र पर लेख लिखवाना.[ **तेवज(-जी)** स्त्री० लेखनी; क़लम लेखपत्र पुं०; न० छेखपत्र; दस्तावेज्र लेखवर्षु, लेखर्षु स० कि० गिनना; कुछ मूल्य-महत्त्व रखनेवाला मानना; **लिवित** समझना लेखित वि॰ लिखा हुआ; लिखित; लेकितवार, लेकी वि० लिखा हुवा; लेखित; लिखित (२) अ० लिखकर लेखुं न० गणितका छोटा, आसान प्रस्त जो जवानी किया जाम (२) महरूद; गिनती (२) शक्ति; हैसियत; बिसात

ind:	*##	÷,
लेखे अ० - के हिसाबसे; अनुसार (२)	लेम्प पुं०; न० लैंप;	लंप; चिराग्र
प्रीत्यर्थ; वास्ते;-के नाम पर । [लागर्च		
= इस्तेमाल होना; काम करना;	लेखुं(लॅं) न∘ राजक	
कारगर होना.]	कंक्री (२) एक प	
<b>लेमदार</b> (लें') पुं॰ लेनदार	लेलूर (लँ) वि० उन	
<b>लेणदेण</b> (लें') स्त्री०लेन-देन; लेने-देनेका	सैसूर (लैं) वि० उ	
संबंध; लेना-देना (२)पूर्वजन्मका क़र्ज	लेवब स्त्री० उघारव	
लेने-देनेका संबंध ; ऋण-संबंध	<b>लेवडबेवंड</b> स्त्री० ः	
रु <b>जादेणी</b> (रुँ') स्त्री० देखिए 'लेणदेण'	् संबंध; उधार, मँग	
नं०२ (२) लेन-देनका संबंध	लेवडावर्षु स॰ कि॰	' ऌेवुं ' का प्रेरणा-
<b>लेर्णु (</b> लॅं') न० लहना; लेना; पावना	यक; लिवाना(२)	
(२) ऋणानुबंध जैसा अच्छा संबंध	<b>हेवादेवा</b> पुं०;स्त्री०हे	
<b>लेप</b> पुं० लेप(२)उबटन, मरहम या लेपका	किंसी प्रकारका स	
गीला मसाला; लेप (३) आसक्ति;	लेपाल न॰ खरीदने	
लगाव; लेप	लेवाली स्त्री० खरीव	
<b>लेगडी</b> स्त्री० दर्द आदि पर लगानेका या	सियाबुं अ० कि० 😚	+
रखनेका लेप;मिट्टी आदिकी पट्टी;प्रलेप	लिया जाना (२) रे	
<b>लेपड्ड</b> वि० गले पड़नेवाला	दुबला होना ; सूखना	
<b>लेपडो</b> पुं० पपड़ी; परत [लगना	लज्जित होना । [ले	-
लेपनुं स॰ कि॰ लेपना (२) लिपटना;	याना (२) सूखकर	
ले <b>पार्व,</b> अ०कि० 'लेपवुं'का कर्मणि (२)	<b>लेवुं</b> स० कि० लेना;	
अनुरक्त, आसक्त, लिप्त होना	धारण करना(२)।	
<b>लेबल</b> न० लेबुल; लेबल	लेना (३) ले लेना	
<b>लेबास</b> पुं० लिंबास; पोशाक	उदा० 'आ काममां	
लेभागु(लॅ) वि० उचक्का (२) कहींसे	खाना या पीना; उ	
किसीका माल हड़पकर अपना बताने-	लेशो के चा'? (	
वाला	समर्थन करना ; लेन ( - )	· ·
लेमूक(लॅ) स्त्री० आपसमें निबटारा;	(६) खरीदना; लेग	
कुछ रक़म छोड़कर चुकता करना (२)	ं क्यारे लीघी' ? (७)	
घवराहट; हड़बड़ी; व्याकुलता २२- (२४) - २	তথা০ ' আ হাতেলুঁ	
स्रेमेल (लॅ) स्त्री० बार-बार उठाना और	धारण करना; रूप भ	
धरना (उतावलीके कारण) (२)	धारणा करना; रख नेको ((a, ) जन्म	तना; उदा० सक
मरणासन्न अवस्था; मौतकी घड़ी (३)	लेवो '(१०) अगवा	
इस तरहकी घबराहट या हड़बड़ी;	चलना; ले जाना; — रे की जे राजा	
अधीरता	साथे लीषो '(११)	।हड़पनाः; छाननाः;

लेष्

लूटना; क़ब्जेमें करना;लेना(इज्जत, समय, जीव, रिश्वत आदि) (१२) खबर लेना; डौटना; फटकारना; आड़े हाथों लेना; उदा० 'ते आव्यो के तेने लीघो (१३) उठाकर रखना; स्थानांतरित करना; उदा० 'टेंबल पासे लो ' (१४) पुकारना; बोलना; लेना; उदा० 'तेनुं नाम न लेशो' (१५) इकट्ठा करना; अपने सिर पर लेना; उदा० 'निसासा लेवा; हाय लेवी'( १६)दर्ज करना ; लिखना ; नोट कर लेना; उदा० 'तेमनुं ठेकाणुं लई लो '(१७)काटना (नाखून, बाल आदि) (१८)काम लेना था कराना; उदा० 'काम लेवुं '(१९)खोज करके जानना; समझना; लेना(नाप, याह, स्रबर, सुधबुध आदि)(२०)लेना; मांगना; उदा० 'में रजा लीधी छे' (२१) विरोध, एतराज, आपत्ति करना । [**रुई नासयं** = खबर लेना; धमकाना; आड़े हाथों लेना (२) उलाहना देना (३) अनिच्छासे या बरबस लेना, ग्रहण करना। लई पड्यू = समझ बैठना; मानना; अपने ऊपर लेना (२) गले मढ़ना ; गले पड़ना। स्तई बेसवुं = आरंभ करना (२)मानना; समझना; अपने ऊपर लेना(३)हजम कर जाना। लई मूकवुं ≕पहलेसे ले रखना; खरीदकर रख छोड़ना। लई सेब्ं चपकड़ना; थामना; लेलेना (२) छीनना; झड़पना; झपटना(३)अपने अधिकार-क़ब्बेमें करना; लेना (४) अपने पास ले रखना; संग्रह करना (५) बापस लेना (६) उठा लेना; उठाना। सबर लेबी == हाल पूछना;

खबर लेना (२) वैर लेना। मनमां **लेवुं =** बुरा लगाना; मन पर असर होने देना(२)मन पर घरना; ध्यान देना । माथे लेखुं = अपने जिम्मे लेना; सिर पर लेना। हाथमां लेवुं = भागते हुएको पकड़ना; मारना; लेना(२) बसमें करना; लेना (३) अपने क़ाबु --नियंत्रणमें करना। लेता पडवुं = देखिये 'लई पडवुं'.] **लेवुंदेवुं** न० देखिये ' लेणदेण ' लेंघी (लॅ०) स्त्री० बच्चोंका सुथना लेंघुं (लॅ०) वि० थोड़ा पागल-सा; बौड़म **लेंघो** (लॅ०) पुं० पायजामा ; सुथना लोई स्त्री० लोई(ऊनी) **लोकवायका** स्त्री० लोकवचन; अफ़वाह लोकशासन न०, लोकशाही स्त्री० लोकतंत्र; प्रजातंत्र लोकशाळा स्त्री० जनताको शिक्षा देने-वाली एक प्रकारकी शाला लॉकिट, लॉकेट न० स्त्रियोंका गलेका एक गहना; लॉकेट **लोखंड न॰** एक धातु; लोहा लोखंडी वि० लोहेका बना हुआ; लोह; लौह(२)बहुत मजबूत; फ़ौलादी(३) दृढ़ निश्चयवाला ; अडिग [ला.] लोचवावुं अ० कि० उलझना ; फॅस जाना; खटाईमें पड़ना । [लो**चवाई जवुं, पडवुं** = उलझना (२) धाटेमें आ जाना.] **लोचायुं** अ० कि० किसी चीज़का एक ओर दब जाना; पिचकना (२) देखिये 'लोचवाबु' (३) घबड़ाना (४) असिंगें पीड़ा होना; औसें चढ़ना लोचो पुं० लौंदा;पिंड(२)रही काग़ज या कपडे़का पिंडा (३) गड़बड़; वपला (४) तकरार; एतराज; आपत्ति।

स्रोट

[लोचा पडती वात = वह बात जिसमें सफ़ाई न हो । लोचा वाळवा = साफ़ न बोलना; खुलकर, स्पष्टरूपमें न कहना; बोलते समय बीचमें रुकना (२) सही बात न कहकर हीले-हुवाले करना । -करवो = गोल पिंडा बनाना (२) बिगाड़ना; कामके लायक न रहने देना; गोंजना । -पडवो = तकरार या आपत्ति खड़ी होना !-पाडवो = बखेड़ा या आपत्ति खड़ी करना । -वाळवो = देखिए 'लोचो करनो '.]

- स्रोट पुं० आटा; चून । [-चाटतुं करवुं = कंगाल या पायमाल करना; खाकमें मिलाना । -फाकवो = पागलकी तरह बकना (२) धूल चाटना; व्याकुलता या कायरता दिखाना (३) साधन-रहित हो जाना.]
- लोटकुं न० मिट्टीकी लुटिया
- लोटपोट वि० बहुत थका हुआ;लोथपोथ
- (२) झुरमुट मारकर लेटना; लोटपोट लोटबुं अ० कि० लोटना; करवटें बद-लना (२) लेटना; सोना (३) लुढ़कना; लोटना
- लोटियुं वि० सफ़ाचट (२) बिलकुल मूंड़ा हुआ; सफ़ाचट। [--कराववुं = सिर मुंड़ाना.] [जातिका आदमी लोटियो पु० शीआ मुसलमानोंकी एक लोटी स्त्री० लोटी; लुटिया
- स्रोटुं न० मिट्टीका लोटा;मिट्टीका लोटेकी शकलका बरतन (२)सिर;मुंड [ला.]
- स्रोटो पुं० लोटा (पात्र) (२) दस्त; पतला पासाना [ला.]। [स्रोटा भरवा = वार-वार पाखाना जाना (२) (भोजनकी तैयारीके लिए) लोटे पानीसे भरना। -अलरबो = दस्त होना; टट्टी होना।

स्हर्तने अबुं = पाखाने जाता.] लोड पुं० पानीकी उत्ताल तरंग; बाढ़की ऊँची लहर (२) मिट्टीका पिंडा जो आंचमें गलकर लोहे जैसा बना हो; लोष्ट; लोहेका ढेला (३) आपत्ति; एतराज; बाधा [ला.] । [-नाखवो, पडवो = बाधा खड़ी होना, करना; अड़चन डालना या खड़ी होना.] लोडखं स० कि० लोढ़ना; ओटना

--पवो = दस्तकी बीमारी होना। -

- **लोढां न०ब०व० लोहेके औ**जार; ्लोखर (नाई, बढ़ई आदिके)
- लोढी स्त्री० लोहेका तवा (रोटीका) लोढुं न० लोहा (धातु)
- स्रोब (थ,) स्त्री० लोथ; लाज्ञ (२) आफ़त;बला [ला.] (३)वि० बहुत यका हुआ; लोथ-पोथ। [-बबुं = धककर चूर होना। -पडवो = लोथ गिरना; मारा जाना। -बहोरवी = बला मोल लेना। -बळवी = बरबाद होना।-बाळवी = बरबाद करना (२) बला दूर
- करना(३)लाश गिराना;लोथ डालना.] स्रोपपोप वि० थका हुआ; लोथ-पोथ स्रोपदुं अ० कि० लोटना; छटपटाना स्रोपियुं (लॉ) न० कुत्तेका काटना
- लोपडचोपड न० घी, तेल आदि स्नेह-युक्त पदार्थ (२) [रा.] अतिज्ञयोक्ति (३) खुज्ञामद
- स्रोपरी स्त्री० लोंदेको हाथसे थोपकर बनाया हुआ मोटी पूरी जैसा आकार
- **लोपवुं** स०कि० तोड़ना;उल्लंघन करना; न मानना
- स्रोफर वि०पुं० लफंगा;बदमाश;आवारा स्रोद(लॉ) स्त्री० याददाइत; स्मरण-शक्ति (२) आदत; बान

তীবান
-------

# वकीलातनाम्

स्तोबान पुं० लोबान (धूप और औषषि) स्रोभामर्षु वि० लुभानेवाला; मनोहर स्रोभाषर्वु स०कि० 'लोभावुं' का प्रेरणा-र्थक; लुभाना

स्त्रीभार्ष अ० कि० लालचमें पड़ना; लुभाना

लोँ<mark>सियुं, लोभी</mark> वि० लोभी; लालची लोस वि० लोल;चंचल(२)सुंदर(३)

- उत्सुक; लोल (४) न० गरबेके चरणके अंतमें आनेवाला शब्द
- <mark>स्रोसक</mark> न० लटकनेवाली चीज; लोलक (घंटेका लटकन; घड़ीका लंगर)

लोहचुंबक न० लोहकांत; चुंबक; मक़नातीस [लफंगा लोहर पुं० जड;मूर्स व्यक्ति(२)आवारा; लोहर्षु स० कि० पोंछना [तर लौहियाळ (-ळुं) वि० लहूवाला; खूनसे लोही न० लहू; खून; रक्त । [-उकाळो = जलन; कुढ़न; गुस्सा; क्लेश । -डकळवुं = गुस्सा आना; लहू उबलना । -ऊडी जवुं = लहू न रहनेसे चेहरा पोला पड़ना; खून सूखना (२)डर या खेदसे चेहरा विवर्ण होना;चेहरा सफ़ेद हो जाना (३) शमिंदा होना । -- क्वर्ख्य

= तंदुरुस्ती अच्छी होना; शरीरमें खूनका दौरा होना (२)आनंद होना; बाछें खिलना । **—र्गु पाणी करर्बु** — सख्त परिश्रम करना;लहु-पानी एक करना । -मूं पाणी धर्ब = लह बिगड़ना (२) खुब परिश्रम होना। –पीर्वु≕ तक-लीफ़ देना; लहू पीना (२) चूसकर पायमाल करना । –रेडवं = (अपना या अन्यका) खून बहाना; अन्यको कुल्ल करना या अपना बलिदान देना । **शेर लोही चडवुं** = बाछें खिलना; अति प्रसंत्र होना.] सोहीचुतुं वि० लहू-लुहान; क्षत-विक्षत स्रोहीतरस्युं वि० लहूका प्यासा लोहोलू(--लो)हाण वि० लहु-लुहान लोळियुं न० स्त्रियोंका लोलकीका एक गहना ; झुमका (२) धानकी बाल;बाली लोळो पुं० जीभ; लोला (२)जिह्वाग लोंकडी (लॉ०) स्त्री० लोमडी লাঁচ (লাঁ০) বি০ ইঞ্জিয় 'লাঁচ' लोंबो (लॉ॰) पु॰ लौंदा; लोंदा **लौकिक** वि० लौकिक;सांसारिक(२) इस लोकका; इहलौकिक (३) न॰ लोकाचार; चलन (४) मातमपुरसी

# ব

ध पुं० चौया जंतः स्थ वर्ण बकरखुं अ० कि० कुढ होना; विगड़ना (२) बहकना; हाथसे जाना; क्रब्वेमें न रहना(३) मुकरना; बेईमानी करना बकरी स्त्री०, (---रौ) पुं० विकी; विकय (२) विकी; विकीकी आमदनी; क्रस्ला (३) विका ढुआ माल वकासवुं स० कि० (मुँह)बाना, फैलाना वकील पुं० वकालत करनेका अधिकारी; सनदयापता वकील (२)राजप्रतिनिधि; वकील (३) किसीकी ओरसे मामलेकी पैरवी करनेवाला; वकील धकीलास स्त्री० वकालत वकीलासनामुं न० वकालतनामा मंतकर

- वक्कर पुं० वक;मान;पद;वजन(२) ढंग;चलन;पात्रता।[-सोवो, गुमाबवो = मान,प्रतिष्ठा गँवाना;वक खोता.] वक्रीभवन न० (किरणोंका) वक होना बक्र न० विष; जहर
- वसत पुं० वक्त; समय (२) वक्त; मोक़ा(३)बुरी दशा; मुसीबतका समय; मुश्किल (४)फ़ुरसत; अवकाश; वक्त (५) बार; दफ़ा; उदा० 'एने केटली वसत कहेवु ?'। [–काढवो, गाळवो, गुजारवो = वक्त गुजारना; समय नष्ट करना। –साचववो = समय पर काम करना; वक्तका पाबंद होना.]
- **वज्ञतवेवस्तल** अ० किसी भी समय; वक्तवेवकृत
- बल्लसर अ० वक्त पर; समयसे
- वसते अ० शायद; संभवतः; कदाचित्
- **बल्ततोवल्तत** अ० बार-बार: वक्तन-फ़वक्तन; समय-सनय पर
- **वस्तल्लो** पुं० बानेके दोषके कारण कपड़ेमें होनेवाला नुकसान
- **वस्ताण** न॰ बखान; प्रशंसा
- वस्ताणवुं स० क्रि० वखानना; सराहना
- **बस्नार** (र,) स्त्री० बखार; कोठार
- वस्तुं न० पक्ष; तरफ़दारी (२) आड़; आश्रय; शरण(३)देसिये 'वगवसीलो' (४) वि० नामके अंतमें आकर ' --के पक्षका ' ऐसा अर्थ सूचित करता है; उदा० ' बापवखुं '

बसूद वि० बिछुड़ा हुआ; बिछोही

वस्तो पुं० भुखमरीका संकट (२) संकट। [वस्तानुं मार्युं ≕ भुखमरी या संकटका मारा हुआ। सावाना वस्ता पडवा, होवा ≕ सानेका न होना; रोटीके लाले पड़ना; दाने-दानेको तरसना.]

**9		9
-----	--	---

# क्मोक्च्रं

बजोडखं स०कि० बदगोई करना; निदा करना; दोष निकालना वग पुं०; स्त्री० देखिए 'वगवसीलो' (२) पक्ष; तरफ़दारी (३) जगह; समाई; गुंजाइश(४)मौका; अवसर । [- करवो(-वी) = पक्ष करना(२) व्यवस्था, प्रबंध, आयोजन कर देना । – चालवी, पहोंचवी, लागवी = बहोंके सायके संबंधका या इनके आश्वय या मददका असर होना। वगे करवुं, पाडवुं ≔ उचित स्थान पर सजाकर रखना; ठिकाने पर रखना । वगे पडतुं = अनुकूलताके अनुसार; यथावसर (२) तरतीवसे सजाया हुआ ] वगडाउ वि० वन्य; जंगली वगडो पुं० जंगल; वीराना वगदां न० ब० व० मिथ्या प्रयत्न वगर अ० बग़ैर; बिनां; सिवा वगवसीलो पुं० बड़ोंके साथका संबंध और उनका आश्रय या मदद; वसीला वगसग स्त्री॰ देखिये 'वगवसीलो' (२) समा सके ऐसी जगह;गुंजाइश;अवकाश वगडावर्षु स० कि० ' वगाडव्', ' वग-डवुं का प्रेरणार्थक वगाडवं स० कि० बजाना (२) चोट, प्रहार लगे ऐसा करना ; चोट पहुँचाना वगियुं, वगोलुं वि० जान-पहचानवाला; जिसकी कुछ चलती हो; प्रभावशाली (२) पक्षपाती (३) न० पक्षपात बगेरे अ० वर्गरह; इत्यादि बगो पुं० मुहल्ला; टोला वगोषुं न०,(-वणी) स्त्री०, (--वणुं) न० निदा; बदगोई [ करना वगोववुं स० कि० निंदा करना ; बदगोई

वघरडुं	४३८ वट
वधरडुं न० साठी जैसा लाल धान(२) चौकर; कचरा; बनावन वघरणुं न० विघ्न; बाधा वघरो पुं० टंठा; अनबन (२) विघन (३) बिगड़ना या सड़ने लगना वघार पुं० बधार; छौंक(२)टुपकना उभाड़ना;उकसाना; चुटीली बात[ला. वघारणी स्त्री० हींग वघारयुं स० कि० बघारना; छौंकना वच स्त्री० जीच; मध्यस्थता वच कलुं न०हरज; आपत्ति; बुरा लगन नाराज होना; रूठना (२) बीचमेरे खिसक जाना वचकुं न० विघन; बाधा वचको पुं० बुरा लगना (२) हरज; आपत्ति (३) वहम वचन न० वचन; कथन; वाक्य; बात् (२) प्रतिज्ञा; कौल; वचन (३) वचन; उदा० 'एकवचन ' [व्या.] [-काढचुं=कहना; बोलना; बात मुँग पर लाना (२)प्रतिज्ञा करना । -तोड वुं=वचनभंग करना ! -मारवुं=ता	<ul> <li>बछ स्त्री० वस्सु; चीज</li> <li>बछनाग पूं० बछनाग</li> <li>बछ्टदुं अ० कि० छूटना; सटी, चिपकी</li> <li>चीजका अलग होना (२) सटी चीजसे</li> <li>अलग होकर उड़ना, वेगसे फेंका जाना;</li> <li>छूटना [हुआ; वियुक्त</li> <li>बछरे हिव० बिछड़ा हुआ; अलग किया</li> <li>बछरे स्त्री० बछेड़ी; बछेरी</li> <li>बछरे स्त्री० बछेड़ी; बछेरी</li> <li>बछरे स्त्री० बछेड़ी; बछेरी</li> <li>बछरे स्त्री० बछेड़ी; बछेरी</li> <li>बछरे स्त्री० बछड़ा (तुरतका खसी</li> <li>फिया हुआ)</li> <li>बछो पुं० विछोह; वियोग (२) भेद; फूट</li> <li>बछोद तुं स० कि० सटी, चिपकी चीजको</li> <li>अलग करना; पकड़से निकालना;</li> <li>छोड़ना</li> <li>बजास्वी०; न० बच;क्चा (एक वनस्पति)</li> <li>बजास्त्र न० वजन; भार (२) तौल; वजन</li> <li>(३) [ला.] महत्त्व; बबाव; वजन (४)</li> <li>मान; प्रतिष्ठा; बजना [-पडवूं, प्राप्त असर पड़ना.]</li> <li>बजरबट्टु(-स्टुरुं) न० बजरबट्टू</li> <li>बजारबट्टु (-स्टुरुं) न० बजाना</li> <li>बजीको पु० इनाममें मिलो जमीन; माफ़ी</li> </ul>
वचन; उदा० ' एकवचन ' [ व्या.े ] [-काढखुं = कहना; वोऌना; बात मुँ; पर लाना (२)प्रतिज्ञा करना । –तोड	<ul> <li>प्रभाव, असर पड़ता.]</li> <li>त्रभाव, असर पड़ता.]</li> <li>वजर बहुं (ट्टुं) न० बजरबट्टू</li> <li>बजारबं सुं (ट्टुं) न० बजरबट्टू</li> <li>बजारबं सुं स० फि० बजाना</li> <li>बजीरो पुं० इनाममें मिलो जमीन;माझी</li> <li>जमीन; इनाम [(शतरंजका)</li> <li>बजीर पुं० वजीर; मंत्री (२) वजीर</li> <li>बजीराई (त), वजीरी स्त्री० वजारत</li> <li>बजाराई (त), वजीरी स्त्री० वजारत</li> <li>बजाराई (त), वजीरी स्त्री० वजारत</li> <li>बज्रादा त० इंद्रका अस्त्र; बज्र ! [जेवुं</li> <li>= बहुत कठोर; बज्र.]</li> <li>बट बि० मुख्य; सबका</li> <li>बट स्वी० टेक; संकल्प; प्रतिज्ञा(२)</li> <li>आबरू (३) महाजनी; साहूकारी (४)</li> <li>वह स्थान जहाँ लेन-देनका काम चलता</li> </ul>

.

बदक	४३९ वर्दु
होनेका भाव बतानेवाला प्रत्यय;	बहाळ पुं० जातिभ्रष्ट या धर्मभ्रष्ट
उदा० 'घरवट' (६)पुं० रोब;प्रभाव;	होनेका भाव; भ्रष्टता [ करना
शान । [ <b>–पडवो</b> ≕ रोब, धाक जमना ।	बटाळवुं स० कि० जाति या घर्मअष्ट
<b>मां रहेवुं</b> <del>≕</del> रोबमें रहना.]	बटाळो <sup>ँ</sup> पुं० देखिये 'वटाळ'
वटक स्त्री०; पुं० मूल्यका वह अंतर	
जो दो ची जोके अदेल-बदलमें रहे;	बटेशरी स्त्री० राहलर्च; मार्गव्यय(२)
फ़र्क (२) अति-पूर्ति ; नुकसानका मुआ-	
वज्ञा (३) बदला; वैर	वड पुं० बड़; बरगद(२)वि० बड़ा
वटकवुं अ॰ क्रि॰ रूठकर भाग खड़ा	
होना; रिसाना; नाराज होना	वडपण(-णुं) न० बहप्पन
वटल (-ला)वुं अ० कि० हलकी मानी	
जानेवाली जाति या धर्ममें जाना;	वहवागळ स्त्री०, वहवागळुं न०, वह-
जाति या धर्मभ्रष्ट होना	वागोळ स्त्री० चमगादड़; गादरु
<b>वटलोई</b> स्त्री० बटलोई	<b>बढवो</b> पुं० पुरखा; पूर्वज(२)बाप या
<b>वटवं</b> स॰कि॰ लौघना;पार करना(२)	माँका बाप; दादा (पिताका पिता);
अ०कि० (समय) बीतना, गुज़रना	नाना (माताका पिता)
🔹 (३) (पानीका) पीछे हटना ; उतरना	वडससरो पुं० सास या ससुरका बाप;
(४) भाग जाना	ददियाससुर (ससुरका पिता); ननि-
वटहुकम पुं० मुख्य हुक्म या सब पर लागू	
होनेवाला हुक्म(२)आर्डिनेस;अघ्यादेश	
<b>वटाणो</b> पुं० मटर (दाना)	ददियासास (ससुरकी माता) ; ननिया-
<b>बटाव</b> पुं०ऋण, सूलधन, क़ीमत आदिकी	
कुछ माफ़ी; छूट (२)बट्टा;भँजाई;भुनाई	
(३) बिक्री पर मिलनेवाली दलाली	<b>बडागरं</b> वि० (समुद्रके किनारे गड् <b>ढोंमें</b>
<b>वटाववुं</b> स०कि० भुनाना; भेंजाना (सि-	÷ • ·
क्का) (२) हुंडी, नोट अादिको सिक्कोंमें	
बदलवाना; भुनाना(३)लाँघना;पार	
करना; –से बढ़ जाना (४) 'वटवुं',	•
'याटवुं' का प्रेरणार्थक । [ <b>(−ने)वटावे</b>	
<b>एवुं</b> ≕ –से बेहतर; –से बढ़कर।	बडी स्त्री॰ बड़ी; बरी (चौठेकी)
<b>वटावी सावुं</b> =धोसा दे जाना (२)	वडील वि० बुजुर्ग; बड़ा; पूज्य (२) पूं•
बसमें न रहना; न बदना (३)का	
दुरुपयोग करना;उदा० 'बापनी आबरू	वडीलोपाजित वि० पैतृक; मौरूसी;
वटावी साधी'.] [का कर्मणि	ा बाप-दादाका <sup>[</sup> आदिमें अधिक
<b>बटावुं</b> अ० कि० 'वटदुं' और 'वाटवुं'	- बहुं वि० बड़ा; उझ, पद, अधिकार

वद्	४४० वदार
बडुं न० बड़ा (उरदका) (२) 'परत'के	वणसाडवुं-स० क्रि० 'वणसनुं 'का प्रेर-
अर्थमें संख्यावाचक शब्दके साथ आता	
है; उदा० 'एकवडु; बेवडु '	वण्याई स्त्री० बुननेकी मजदूरी; बुनाई
बडे अ० से	(२) बुननेका ढंग; बुनावट; बुनाई
<b>वडेरं</b> वि० बुजुर्गं ; बड़ा [लड़ाका	वणाट पुं० बुनाई; बुनावट
<b>बढकण (णुं), वढकारुं</b> वि० झगड़ालू;	वणाटकाम न० बुननेका काम; बुनाई
वढवाड स्त्री० क़जिया; टंटा; लड़ाई	<b>वणिय(यॅ)र</b> (वं) न० एक छोटा
<b>वढबाडियुं</b> वि० देखिए 'वढकणुं '	चौपाया जंतु; बिज्जू [ फाड़ डालना
<b>बढवुं</b> अ०कि० तकरार करना ; झँगड़ना;	<b>वतडवुं</b> स० कि० नाखूनसे खुजल्हाना या
लड़ना (२) मारपीट करना; लड़ना	<b>चतन</b> ंग० वतन; मूळ वासस्थान; जन्म-
(३) स०कि० डाँटना; फटकारना	भूमि (२) सरकारकी ओरसे इनाममें
<b>बढावुं</b> अ० कि० 'वढवुं', 'वाढवुं' का	मिली जमीन; माफ़ी जमीन; जागीर
कर्मण [प्रेरणार्थक	(३) जमीन-जागीरकी उपज
<b>बढावयुं</b> स०कि० 'बढवुं', <sup>'</sup> बाढवुं 'का	वतनदार वि० (२) पुं० जागीरदार
<b>वण(</b> ण,) अ० बिना; बग्रैर	<b>वतरडवुं</b> स० कि० देखिए 'वतडवु'
वण(ण,) न० कपास (२) कपासका खेत या पौधा	<b>वतरणुं</b> न० कलम (लकड़ीका लिखने- का टुकड़ा)
<b>वणकर</b> पुं० बुनकर; जुलाहा	<b>बताडवुं</b> स० कि० देखिए ' विताडवुं ′
वणकरी स्त्री० बुननेकी मजदूरी; बुनाई	<b>वतावर्वुं</b> स० कि० सताना; परेशान
वणछो पुं० पेड़की छाया (नीचेके पौधे	करना (२) छेड़ना (३) वताना
पर पड़नेवाली)	वती अ० से (२)वास्ते; -के स्थान पर;
बणज पुं० बनिज; व्यापार;धंधा(२)	–के बदले
स्त्री० माल; सौदा;व्यागारकी चीज	वत्ं न॰ हजामत
<b>बणजार स्त्री० वन</b> जारेके बैलोंका झुंड;	बते अ॰ से
टौड़ा (२)बनजारेका क़ाफ़िला; कारवौं	<b>वतेसर</b> वि० विस्तारवाला; लंबा-चौड़ा
<b>वणजारी</b> स्त्री० बनजारन; बनजारी	(२) न० बतगड़; लंबी-चौड़ी (हॉकना)
<b>बणआरो</b> पुं० अनजारा [बुनाई	बत्तुं वि० विशेष; अधिक; ज्यादा
<b>बणतर</b> न० बुनना (२) बुनावट; साफ़	वद(द,) अ० वदि; कृष्णपक्षमें (२)
वणवुं स० कि० बटना (रस्सी) (२)	स्त्री० अँधेरा पाख; बदी
बुनना (कपड़ा) (३) बेलना (रोटो	वदवुं स० कि० बोल्ना (२) अ० कि०
आदि) (४) सेंवई बटना(५)बीनना	मंजूर, स्वीकृत होना
(६) कामकाजमें लगाकर अनुभवी	बदाड पुं॰ देखिये 'नायदो'
बनाना; संधाना [ला.]	बबाय वि० (२) स्त्री० देखिये ' विदाय '
वणसबुं अ० कि० विगडना; खराब	वदायगीरो स्त्री० देखिये 'विदायगीरी '
होना (२) नष्ट होना; बिनसना [प.]	वतार पुं० देखिये 'वायदो '

-

वपत वणावतुं स० कि० (आशीर्वाद देते हुए या भक्तिपूर्वक अक्षत-फूल आदिसे) सत्कार करना; पूजना (२) हर्षपूर्वक आवभगत करना

बधाको पुं० पूजन–आवभगतकी सामग्री (२) वर या कन्याको भेजा जानेवाला उपहार; बघावा

वधु वि० अधिक; ज्यादा; बहुत

**बभूपडतुं** वि० देखिए 'वधारेपडतुं'

बधूकुं वि॰ चाहिये उससे अधिक; उचितसे अधिक (२) बाक़ीका

- **वभेरवुं** स० कि० बलि चढ़ाना;बलि देना(२)फोड़ना;तोड़ना(३)काटना
- **बन न० बन**;जंगल; वन । [**⊸करवुं** ≕ बिना घरबारका कर देना; कहींका न रखनाः] [वल्कल

**बनकूळ** न० पेड़की छालका कपड़ा; **बनभोजन** न० वनभोजन;गोट;'पिक-

- बनभाजन न० वनभाजन;गाट;ापक-निक'
- बनमाळा स्त्री० वनमाला;बनमाला
- बनमाळी पु॰ बनमाली; वनमाली; श्रीकृष्ण
- बनराई(-जि,-जो) स्त्री० वनराजि; वनराजी;वन;वृक्षोंकी लंबी क़तारें (२) लंबा-चौड़ा जंगलका प्रदेश; जंगल; वन; वनराजी (३) जंगलकी पगडंडी; वनराजि
- वनवेली स्त्री० जंगली बेल(२)गद्य-काव्यकी एक नई रचना, कविता
- बनबागळुं न०, बनबागीळ स्त्री० देखिये 'वडवागळ'
- बना स्त्री० वनिता (२) अ०बिना; सिवा
- बनेच दि० भटकता ; आवारा ; असम्य ; जंगली

बपल स्त्री॰ विपत्ति; आफ़त; मुसीबत

- वदि अ० वदि; वदी; कृष्णपक्षमें वद्दी स्त्री० वृद्धि; हासिल [ग-] वद्य अ० (२) स्त्री० वेसिये 'वद' वद्य (क्ष) स्त्री० वृद्धि,बाढ़,विकास;नफ़ा वद्य(क्ष) स्त्री० वृद्धि,बाढ़,विकास;नफ़ा वद्यद्ध स्त्री० घट-बढ़; कमी-बेसी वपरावळ स्त्री० घंडकोशका एक रोग व्यद्य स्त्री० घंडकोशका एक रोग व्यद्य स्त्री० घंडकोशका एक रोग व्यद्य स्त्री० घंडकोशका एक रोग द्या क्ष त्रि० संख्या, डील, आकार, मात्रा, गुण, फैलाव आदिका अधिक होना; वृद्धि होना; लंबा, ऊँचा होना; बढ़ना (२) बाकी रहना; बचना (३) दूसरेसे आगे निकल जाना; प्रगति करना; बढ़ना। [वात द्यो अधी, पडवी = बात बढ़ना; बातका बहस या क्षगड़ेका रूप ले लेना.]
- वचाई(-मणी) स्त्री० बधाई;बधावा; खुशखबरी (२) खुशखबरी लानेवालेको दिया जानेवाला उपहार; वधाई
- **बथामणुं** न० मंगल कार्यंके निमित्त किया जानेवाला देवीका पूजन (२) बधावा; बधाई
- वषारवुं स० कि० वृद्धि करना; किसी चीज आदिमें और रखना; बढ़ाना (२)पहलेसे अधिक लंबा-चौड़ा, ऊँचा करना; बढ़ाना; फैलाना; विस्तार करना (३) बचत करना; बाकी रखना; बचाना; खर्च न होने देना दखारे वि० अधिक; ज्यादा; विशेष वथारेपडतुं वि० चाहिये उससे अधिक

(मात्रा, कद, मर्यादा आदिसे)

बधारो पुं० वृद्धि; बढ़ती; अधिकता (२) नफ़ा; छाम; वृद्धि (३) बाक़ी; शेष; बचत (रक़म) (४) पूरण; पूर्ति; 'सप्लिमेंट' (५) समाचार-पत्रकी पूर्ति; परिशिष्ट

वपराव्	<b>8</b> 84	वरराजा
<b>वपरावं</b> अ० कि० ' वापरवुं ' का कर्मणि इस्तेमाल होना; काममें आना <b>वपराग्न</b> स्त्री० उपयोग; इस्तेमाल <b>वफा स्</b> त्री० वफ़ा; वचनका पालन प्रामाणिकता(२)भक्ति;श्रदा; विश्वान <b>वफादार</b> वि० वफ़ादारी <b>वफादार</b> वि० वफ़ादार,वचन-पालक(२ विश्वसनीय (३)स्वामिभक्त; वफ़ादा <b>वफादारी</b> स्त्री० वचनका पालन करता वफ़ादारी (२)स्वामिभक्त; वफ़ादार (३)निष्ठा (४)राजभक्ति; वफ़ादार (३)निष्ठा (४)राजभक्ति; वफ़ादार (३)निष्ठा (४)राजभक्ति; वफ़ादार वमोपुं० वैभव; साहबी ठाठ (२)अदब लिहाज; मुरोवत (३)प्रतिष्ठा; वज वमळ न० भवर; चक्कर; जलवर्त धर वि० वर;श्रेष्ट(२)पुं० दूल्हा; व (३)पति (४)वर; देवता या गुरुजनों इच्छा-पूर्तिके लिए की जानेवाली प्रार्थ वरष (-क्ष) पुं० वरक; सोने, चौदील पत्तर [वृषभ राग्नि वरक्व एं० वरक (२) वर्ष (३) स्त्री वरक्व एं० वरक (२) वर्ष (३) स्त्री वरक्व पुं० वरक (२) वर्ष (३) स्त्री वरक्व पुं० वरक (२) वर्ष (३) स्त्री वरक्वेली वि० स्त्री० पतिप्रेममें आसक्त वरघोडियां न० ब० व० नवदंपती वरघोडी वि० स्त्री० पतिप्रेममें आसक्त वरघोडियां न० ब० व० नवदंपती वरघोडी पुं० वरयात्रा (२) फ़जीह [ला.]   [वरघोडे चडवुं = बदनाः होना ।काडबो = वरयात्रा निका लत्ना (२)बदनाम करनाः] वरचढायो पुं० धुडुजढो (वरकी) धरजषुं स०कि० तजना; बर्जित करना छोडना [वरयोग वरयोग वि० स्त्री० विवाहके योग्य धरजोळो पुं० उचाट; फ्रिक(२)बदनाम	; ति )) र ; ते ते ; त र ते ना त ह ने : : : : : : : : : : : : : : : : : : :	वरद्दं (व') न० अंकुर निकला हुआ चना आदि; अँकुरी [स्त्री० वर्ण; जाति वरण पुं० वर्ण; अक्षर (२) रंग; वर्ण(३) वरणागियुं वि० बनाव-सिंगार करने- वाला; शौक़ीन; छैला; सजीला वरणागी स्त्री० बनाव-सिंगार; सजघज वरणावुं अ० कि० पकने पर होना; गदराना [(२)चुनाव; पसंद; करण वरणी द्रंग वरणी; पुरोहितका सम्मान वरणो पुं० वरुण वृक्ष वरत पुं०; स्त्री० घरस खींचनेकी रस्सी; बरत (२)ढोर चरानेकी उजरत; बराई वरतणियो पुं० गांवका चौकीदार (२) गांवके चोपालका चपरासी (३) गांवके निशान परसे चोरका पता लगा- नेवाला; चौकीदार (४) मार्गदर्शक; 'गाइड'(५)मार्गमें रक्षा करनेवाला वरतपुं अ० कि० बर्ताव करना; बर- तना; आधरण करना (२) बनना; होना (३) स० कि० परखना; जान लेना; विचारना (४) प्राप्त होना (५) नेग या लाग देना; उदा० ' बहेनने कई वरत्या नहीं' [(२)ज्योतिषी; नजूमी वरतारो पुं० भविष्यवाणी; पेशीनगीई वरवी स्त्री० खबर; संवाद; संदेशा (२) हुक्म । [-आपबी = सूचना या हुक्म देना; आजापालनकी खबर देना । - करवी, पहोंचाडवी = खबर पहुँ चाना; जताना; विदित कराना.] वरमाळ(-न्छा) स्त्री० जयमाला (स्वयं- वरमें) (२) जिवाहके समय वर-कन्याके गलेमें डालो जानेवाली सूतकी माला; मंगलमूत्र
<b>धरड</b> (व') न० बिवाई		वरराजा पुं० दूल्हा; वर; नौशाह

वर ूं	<b>8</b> 83	वर्षस्य
वरवुं वि० बेडौल; विरूप;बदशकल	5;	वराडुं(व') न० रस्सी; डोरी
भद्दा (२) खराब; गंदा		बराध(ध,) स्त्री० बच्चोंको होनेवाला
<b>वरवुं</b> स <sup>े</sup> कि० पसंद करना ; चुनना ( ३	१)	एक रोग (२) एक बनस्पति
वरेके रूपमें पसंद करना ; ब्याहना [प	٩.]	वराप स्त्री० उत्कट इच्छा;तीव लालसा;
वरवुं अ० कि० खर्च होना; इस्तेम	ান্ত	तलब (२)जमीनको वह स्थिति जिसमें
होना; खपना		वर्षाके बाद बादल फटने पर पानी सूख
वरज्ञी स्त्री० बरसी । [(विवाहर्न	))	जाता है और वह जोतने योग्य होती
थवी = शुभके बदले अशुभ होना	j –	है (३) फ़ुरसत
वरस न० वर्षे; बरस; साल । [–य	- वां	वराळ स्त्री० भाष; भाफ; बाष्प (२)
= बुढ़ापा आना; आयु ढलना. ]		[ला.] भड़ास ; दिलका बुखार, ग़ुबार ।
वरसगांठ स्त्री० बरसगाँठ; सालगि	रह	[ऊनी वराळेन काढवी= जरा भी
<b>वरसदहाडो</b> पुं०, <b>वरसवं</b> टोळ न० कर्र	ोब	मुँह न लगना;चूँ न करना; विरुद्ध न
एक सालका समय; एकाध बरस		बोलना(२)दिलका गुबार न निकालना.]
वरसवुं अ० कि० वर्षा होना; बरस	ना	बराळयंत्र न॰ भाषसे चलनेवाली मशीन
(२) बूँदोंकी तरह गिरना; झड़न		वरांसो (०) पुं० भरोसा (२) पछतावा
बरसना (३) स० कि० बड़ी मात्र		<b>वरियाळी</b> (व') स्त्री० सौंक
देना, फेंकना, बखेरना; वरसाना		बरी स्त्रो० एक अन्न; कांगनी; केंगनी
वरसाव पुं० वर्षा; बारिश (२) ब	ड़ी	वरु पुं०; न० भेड़िया; वृक
मात्रामें बरसना (फूल, इपये आदि)	) (	<b>वरुणी</b> स्त्री० देखिए 'वरणी '
	T I	<b>वरेडुं</b> (रे') न० रस्सी; डोरी
	रह	वरो पुं० बिरादरीको भोज देना(२)
राह देखना ; अति आतुरतासे प्रतीय	न्ना	उपयोग; खर्च
– करना । <b>वरसी जवुं</b> <del>≖</del> दे देना; प्रस	ন্ম	बगं पु॰ किसो बड़े समूहका एक विभाग;
होकर खूब दे देना. ]		वर्ग (२) जातिके अनुसार किये गये
<b>वरसी</b> स्त्री० देखिए <sup>(</sup> वरशी '		समूहोमें से प्रत्येक समूह; वर्ग (३)
<b>वरसूंद</b> स्त्री० प्रतिवर्श मिलनेवाली बँ	भी	श्रेणी; कक्षा; दर्जा (४) शालामें
रकेम; सालियाना		विद्यार्थियोंकी पढ़ाईके लिए निर्घारित
<b>वरसोवरस</b> अ॰ हर साल; सालान	F	किया गया श्रेणीवार कमरा; दर्जा (५)
<b>वरसोळी</b> स्त्री० देखिए 'रसोळी'		वर्गे ; 'स्क्वेर' [ ग. ] । [ <b>करवो</b> = दो
<b>वरंड(-डो)</b> पुं० बरामदा; दालान	T;	समान संख्याओंका गुणा करना; वर्ग
ओसारा		करना (२)दर्जाया श्रेणी बनानाः ]
<b>वरागडुं</b> वि० देखिए 'वडागरुं'		थर्गमूल (⊸ळ) न० वर्गमूल
वराइ पुं०;स्त्री०हिस्सा;भाग। [वर		वर्चस न० वर्चस्; कांति; तेज (२)
<b>पढत्ं</b> = हिस्सेके अनुसार; जित	ना	शक्ति; पराक्रम; वर्चस्(३)वीर्य
जिसके हिस्सेमें आवे.]		<b>वर्चस्व</b> न० देखिये 'वर्चस'

4	4	T

बलंदो

बर्ण पु॰ वर्ण; रंग (२) वर्ण; अक्षर (३)	वर्तीव पुं० बर्ताव; व्यवहार; आचरण
बाह्य रूप; वर्ण (४) प्रकार; भेद; वर्ण	वर्तुल (ळ) न० गोल; वर्तुल; कुंडली;
(५)पु०;स्त्री० जाति;वर्ण (ब्राह्मण,	वृत्त (२)वर्तुल; वृत्त; 'सर्कल' [ग.]
क्षत्रिय, आदि) (६)ज्ञाति; बिरादरी;	बर्षफळ ने० वर्षफलें
उदा० 'अढार वर्ण'। [–मांघी जतुं	वर्षेषुं अ० कि० (२) स० कि० देखिए
<b>रहेवुं, नोकळी जवुं =</b> जातिच्युत होना	'बरसबुं' [वृष्टि; वर्षा
(२) इनसानियत खोना । <b>विनानुं</b> =	वर्षा स्वी० वर्षाकाल; बरसात(२)
बेठिकाना;भद्दा; बेढंगा; खराब ]	वर्षांसन न० (राज्यकी ओरसे)निर्वा-
<b>बर्णभेद</b> पुं० जातिभेद (२)वर्णभेद	हार्थ मिलनेवाळी वार्षिक वृत्ति;
वर्णमाला (-ळा) स्त्री० वर्णमाला;	सालियाना
अक्षरमाला [[प.]	<b>य विर्ध</b> अ० प्रतिवर्ष
वर्णवयुं स० कि० वर्णन करना; बरनना	<b>वलखवुं</b> अ० कि० मिथ्या प्रयत्न करना
<b>वर्णयुं</b> स० कि० देखिए ' वर्णववुं '	वल्खां न <b>्व</b> ्वे व्याप्रिया प्रयत्न;
वर्णसगाई स्त्री० वर्णानुप्रास (२)प्रास	बेकार कोशिश
बैठना था बिठाना; तुकांत	बलण न० रख;भाव;मनका झुकाव;
वर्णसंकर वि० वर्णसंकर; दोगला(२)	वृत्ति (२)(रास्ते या नदीका)मोड़ (३)
व्यभिचारसे उत्पन्न; हरामी(३)पुं०	कवितामें छंदका पलटा सूचित करने-
ऐसा आदमी; वर्णसकर	वाला पद (४) किसी सौदेमें होनेवाले
<b>बर्णुं</b> वि० –के रंगका ; उदा० ' घउंवर्णुं '	लाभ-हानिका फ़र्क लेना या देना
वर्तणूक स्त्री० बरतनेका ढंग; बरताव;	(५)अक्षरोंका मोड़। <b>[ – अखत्यार</b>
व्यवहार	<b>करखुं,षकडबुं,लेखुं =</b> अभिप्राय या वृत्ति
<b>वर्तन</b> न० वर्तन; आचरण;बर्ताव	धारण करना । – चूकबबुं, पताबबुं,
वर्तमान वि० वर्तमान; चालू (२)आघु-	<b>वहें</b> दवुं = सौदेमें होनेवाले लाभ-
निक; हालका; वर्तमान(३)पुं० ब०	हानिकी रक़म चुका देना.]
व० समाचार; वर्तमान(४)पुं० वर्त-	<b>वलवल स्त्री</b> ० आवश्यकतासे अधिक
मानकाल; वर्तमान	चंचलपन ; चुलबुलापन (२) बिना पूछे
<b>वर्तमानकाळ</b> पुं० वर्तमान समय (२)	बकना , बड़बड़
वर्तमानकालः, वर्तमान [व्या.]	<b>वलवलव्ंु</b> अ० कि० बड़बड़ाना; बकना
<b>वर्तमानकृवंत</b> न० वर्तमानकृदंत	(२)रोते रोते बोलना;विलाप करना;
वर्तमानपत्र न॰ समाचारपत्र;अखबार	बिल्लाना (३)व्यर्थं प्रयत्न करना
वर्तवुं अ०कि० आचरण करना; बर-	<b>वलवलाट</b> पुं० बिलबिलाहट; आऋंद
तना; चलना(२)होना; बनना(३)	(२)हिलना–डोलना; कुलबुलाना
स॰ कि॰ परखना; पहचानना;	<b>वलवलियुं</b> वि० आकंदी ; रोने-चिल्लाने-
देखना (४)प्रचलित रूढ़िके अनुसार	वाला (२)बकवादी [ डच
देना (नेग आदि)	<b>वस्त्रंदो</b> पुं० हालैंडका निवासी ;वलंदेब ;

<b>बलूर</b>	राष्ट्र व्यूष
बलूर(व') स्त्री॰ खुजलाहट; चुल;	वसवसो पुं० दग्रदगा; अंदेशा; वहम
सुरसुराहट [ सूनसे सरॉबना	वसबाट पुं० वसना; वास; वासस्थाने
बसूरर्ष् (व') स॰ कि॰ खुजलाना; ना-	बसवायुं न०, (-यी) पुं० पौनी; नेगी
बसूरिय न०, बलूरो पुं० पंजे या नासून-	वसर्वु ज० कि० बसना; स्थायी रूपसे
से बनी खरोचे बकोटा [हाल	रहना (२) मनमें बैठना; जममा
बले(लॅ) स्त्री॰ हाल; दशा (२) बुरे	बसंत पुं०; स्त्री॰ वसंत; बसंत; बहार
बलौणाबार (व') पुं० बिलोनेका दिन	(२) बसंत (राग)
वसीमावारे (व') अ० बार-बार; हर-	मसंत स्त्री०; न॰ वरकी ओरसे कन्याको
षड़ी [ला.]	दिया जानेवाला वस्त्रादिका उपहार;
बसौगी (व') स्त्री० मथानी; रई	डाल; बरी (रसम) [ बसामा
बस्रोम् (व') न॰ बिलोना; मथना (२)	वसाडव् स०कि० 'वसतुं'का प्रेरणार्थकः;
दही मयनेका भटका; मधनी (३) दही	वसाजूँ न० औषधियाँ डालकर बनाया
गयनेका डंडा; रई; मयानी	हुआ पाक (२)पंसारीकी चीर्जे
बलोपात पु० अधैर्यसे पैदा होनेवाली	वसात स्त्री विसात; पूजी; माल (२)
भबराहट; बेसबी (२) दिलाप; वा <del>त्रं</del> द	हैसियत; विसात; गिनती
वलोववुं (व')स०कि० विलोना; मधना	वसावर्वं स०कि० 'वसवुं'का प्रेरणार्वक;
(२) [ला] बहस करना; किसी	बसाना (२) 'वासर्बु'का प्रेरणार्वक
बातकी बार-बार चर्चा करना.]	बसार्वु अ० कि० 'वसर्वु' का मावे (२)
ववडा(-रा)ववुं स० कि० ' वाववुं 'का	'वासर्वु' का कर्मणि (३) न॰ रेसे-
प्रेरणार्थक; बोँआना	वाई (रखवाली और मजदूरी)
<b>भवळव्</b> अ० कि० खुजलाना; रवचामें	<b>यसायों</b> पुं० रखवाला; रक्षके
सुरसुरी अनुभव होना	बसाहत स्त्री० मूल वासस्थानसे दूसरी
बबळाट पुं० खुजली; सुरसुराहट(२)	जगह पर किया जानेवाला निवास या
कुलबुलाना ; हिलना-डोलना	उसका स्थान (२)उपनिवेश; 'कॉलोनी'
वसति स्त्री० बसना; बस्ती (२) बास;	बसाहसी वि०ेउपनिवेश-संबंधी (२)
निवास (३) आबादी; बस्ती (४)	दूसरे देशमें बस जानेवाला;उपनिवेशी
बच्चों-कच्चोंकी अधिकता (५) आबाद	बसियत स्त्री० विरसा; वरासत; मीरास
जगह; बस्ती	(२) वसीयतनामा
<b>वसती</b> स्त्री० देखिये ' बसति '	<b>वसियतनाम्</b> ं न० वसीयतनामा
<b>ससतीमणतरी</b> स्त्री० जनगणना; मर्दु-	वसीलो पुं० बड़ोंके साथ लगाव, संबंध
मञुमारी [रेकर्ड	या रसाई; उनका वसीला, सहायता
बससीपत्रक न० जनगणनाका पत्र या	या प्रभाव [(गाय, भैंसका)
<b>बलम्ं</b> वि० विषम; कठिन; मुक्किल	बसूकवुं अ० कि० दूघ तोड़ना; सूखना
(२) विकट; जटिल; विषम (३)	बत्नूल न० पावनेमें से अदा हुई रझम;
बुरा; अधुम	बसूल (२) जामदनी; प्राप्ति; बसूल

वसूलवार
---------

88£

वहीवंचो

(३)लगान(४)अ० चुकता; बेबाक़ । **बहाणवट्ं** न० सागरमें जहाज चलानेका [--आपवुं = मिनहा करना; कटौती काम (२) जहाजोंसे व्यापार करता करना । **–करवुं, थवुं, लेवुं** = बेबाक़ (३) समुद्रयात्रा **बहाणुं** न० प्रभात; भोर। [**वहाणां** होना; चुकता होना.] वसूलवार वि०(२)पुं० आय या लगान वही जवां == बहुत दिन गुजर जाना। बसूल करनेवाला –वावुं = सबेरा होना.] वसूलात स्त्री० वह लगान जो वसूल वहार (व्) स्त्री० सहायता; कुमक। करना हो (२) वसूल करना या [वहारे चडवुं, घावुं = मददको दौड़ना.] लेना; वसूली वहाल (व्) न० प्रीति; प्यार वसो पुं० बीघेका बीसवां भाग; बिस्वा वहालपण (-णूं) (व्) न० प्यार; प्रेम (२) सवा पाँच हाथ (मान)(३)सौ वहालम (व्) पुं० बालम ; पति ; प्रियतम या बीसका अनुक्रममें सौवाँ या बीसवाँ वहालसोयुं (व्) वि० लाड़ला;लाड़लड़ैता भाग (४) आबरू [ कुनबा बहाली (व्) स्त्री ॰ प्रिया; चहेती बस्तार पुं० विस्लार; फैलाब (२)बड़ा वहालुं (व्) वि० प्यारा; प्रिय **वस्तारी** वि० बड़े कुनुबेवाला **वहालेशरी** (व्) वि० हितैथी; हितेच्छ् वस्ती स्त्री० देखिये 'वसती' वहालो (व्) पुं० प्रियतम; प्रीतम; प्रेमी; वस्तीगणतरी, वस्तीपत्रक देखिये 'वसती-चहेता गणतरी', ' वसतीपत्रक ' वही स्त्री० वही; खुदाका संदेश (२) बस्तु स्त्री० वस्तु; चीज; पदार्थ (२) [ला.] धुन; मनकी तरंग; सनक। सत्य; वस्तु (३) न० नाटककी कहानी; [-आवयी = ग़श आना या नसोंका तन घटना; कथावस्तु; वस्तु । [--गूंथवुं जाना (२) [ला.] सनक सवार होना.] = माटक या कहानीके विषयकी वही स्त्री० बही; हिसाबबही (२) रचना करना; प्लाट रचना. वंशवृक्षकी किताब,पुश्तनामा,शिजरा-वस्तुता स्त्री० खरापन; सत्य; यथार्थता नस्ब (३) किताब (कोरी या लिखी वस्तुपणुं न० सत्यता; सचाई; यथार्थता हुई)। [-वांचवी = पुश्तनामा पढ़ना वस्तुसंकलना स्त्री० वस्तुरचना;वस्तु-(२)पुरानी घटनाओंका वर्णन करना संकलन (३)निंदा करना;गड़े मुर्दे उखाड़ना.| बहुबुं स०कि० वहन करना;ढोना (२) वहीवट पुं० संचालन; कारबार; अ०कि० धाराके रूपमें प्रवाहित होना; प्रबंध (२) प्रथा;परिपाटी;पढति; बहना (३) बीतना; गुजरना। [ वही रोति-रिवाज (३) लेन-देन; संबंध जर्षु = बहक जाना ; हाथसे जानाः] वहीबटदार पुं० प्रबंधकर्ता; 'मैनेजर'; बहाज न० बड़ी नाव ; जहाज । [-कमाब् संचालक (२) तहसीलदार =खूब दौलत कमाना.] **वहीवटी** वि० कारबार-संबंधी बहाणवटी पुं० नाविक; खलासी (२) वहीवंचो पुं० पुस्तनामा रखनेवाला समुद्री व्यापारी ( ३ ) जहाजका मालिक भाट; भाट

षहु

789

वहोरो

6.91

बहेवारु (व्) थि० न घटिया, न बढ़िया;मघ्यम;साधारण (२)काममें लाने योग्य; व्यवहार्य; जिस पर आचरण किया जा सके

- वहेषुं (वहॅं) स० कि० वहन करना; ढोना; उठाना (२) सहना; झेलना (३) अ० कि० धाराके रूपमें प्रदा-हित होना; बहना (४) घारा या बहावके साथ आगे जाना; बह जाना (५) गुजरना; बीतना (६) बहकना; पथ-भ्रष्ट होना। [वही अवुं = हाथसे जाना; बहकना। बहेती गंगा, सेर = चालू आमदनी। बहेतुं मूकबुं = दूर हटा देना (२) घ्यान न देना; पड़ा रहने देना; छोड़ देना (३) बहकने देना; हाथसे जाने देना.]
- **बहेळियुं** (व्हॅ) न॰ छोटा नाला
- वहेळो(व्हॅ) पु॰ छोटा प्रवाह;नाला या सोता (२) बहावसे बना हुआ गड्ढा; खाई
- वहेंचण(–णी)(व्हॅ०) स्त्री० बांटना; हिस्से करना; बटवारा (२) हिस्सा (३) छोटा हिस्सा; 'डिविडंड'
- वहेंब्बुं(व्हॅ॰) स॰ कि॰ बाँटना(२) प्रत्येकको अपने हिस्सेके अनुसार देना
- **बहोण्ं**(व्) वि० विहीन; रहित
- बहोरबुं(व्हॉ) स॰ कि॰ मोल लेना; खरीदना (२)इकट्ठा करना; बटो-रना; हिफ़ाजतसे रख छोड़ना (३) मौंग लाना (४)जोखिम उठाना, लेना
- **वहोरवाड** (वहाँ) स्त्री० झीआ मुसल-मानोंका महल्ला⊶वस्ती
- बहोरो (युहॉ) पु० शीआ मुसलमानोंकी एक जातिका आदमी(२)मुसलमानोंकी एक जमाजतका व्यक्ति(३)एक बल्ल

मर्टा के

- बैक्ठ पुं० रस्सी आदिकी ऍठन; बट (२) रुगाव; संबंध; वसीला(३) युक्ति; करामात (४) थात; दावें (५) कीना; बैर; जौट (६) हठ; जिद; आग्रह (७) गौठ; गिलटी। [-खडाववी = बटना; ऍठना (२) उकसाना; उमाड़ना। -राखवो = बैर रखना। थळे कवळे = युक्तिपूर्वक; कुशलतासे.]
- बळकबळ पुं०; स्त्री०; न० अनुकूलता और प्रतिकूलता; सुयोग-कुयोग (२) वात और दार्वपेच
- बैळगण न० (मूतका) लगना; भूतावेश; प्रेतबाघा (२) निस्बत; लगाव; वास्सा; सरोकार (३) भूतप्रेत (४) साथ लगा हुआ काम या व्यक्ति (५) जवैध संबंध
- बळवणी स्त्री० अलगनी; बिलंग
- बळगर्षु अ०कि० लगना; सटना; जुड़ना; लिपटना; चिमटना(२)लगा रहना; लगना(३)झगडा करना; उलझना
- बळगाट (--क्वे) पुं० भूतप्रेस या किसीका लगना; छूत (२) भूतप्रेत
- वळगाडवुं स॰ कि॰ 'वळगवुं'का प्रेरणार्थक (२) सिर मढ़ना, डालना
- थळण न॰ देखिये 'वलण' (२) जौधका मूल; वाटी; उरुमूल
- बैळलर न० मुआवजा; बेदला

.

- बळता, बळतां, बळती अ० बादमें;पीछे; फिर (२) और; अधिक
- बळत्तुं वि० प्रति; विरुद्ध (२) वापसी; जवाबी (कार्ड); लौटता; उदा• 'वळतो जवाब; वळती टपाल'
- बळबार वि० बटवाला; ऍठनदार
- बळचुं अ० कि० टेढ़ा होना; मुड़ना;

भूकना (२) छौटना; वापस आमा (३) मनका झुकाव होना (४) बेस्वाद होंना; करौला होना; बिगड़ना (५) सुधरना; सुधार पर जाना (६) बँधना; बाँधा जाना (जुड़ा; लड्ड) (७) जारी होना; लगना; उदाँ॰ 'वाते वळघा' (८) होना; बनना; लगना; उदा० 'शेवाळ वळवी, टोळे वळदुं' (९) पलटना; बदल जाना; अच्छी दशाको प्राप्त होना; उदा॰ 'वळतो दहाडो, वळती वेळा ' (१०) काम सरना; प्राप्ति होना । [ बळसां पानी बर्बा = माटा शुरू होना(२)जोश कम होना (जवानी, रोग आदिका)। वळती बहाडी = भले दिन ; भाग्योदय । **डग**रूगे बळी जेवुं = (थकान या निराशासे) निढाल होकर बैठ जाना (२) अधिक मात्रामें इकट्ठा होना –आ जाना। पार्खु बळवुं = लौटना; वापस आंना (२) क़ै होना (३) बेस्वाद होना; बिगडना.]

- वळामणुं न० विदा करना;.विदा (२) वि० पीछे हटता हुआ; कम होता हुआ उदा० 'पाणी वळामणां थई गयां '
- बळावर्षु स० कि० 'वळवुं', 'वाळषुं' का प्रेरणार्थक (२) बिदा करना
- बळांबियो पुं० पयप्रदर्शंक; 'गाइड' (२) रास्तेमें सोज-खबर लेनेवाला; मार्गरक्षक
- बळार्चुन० पयप्रदर्शकका काम (२) उसकी मखदूरी (३)अ०कि०'वाळवुं'-का कर्मणि
- बळाबो पुं० देखिये 'वळावियो'
- बळाक(०) पुं० (रास्तेका) नोड़; घुमाव (२) लिपिका मोड़

_				2
	ľ	T		r
		٩	1	

देना; धमंड चूर करना; ढीला, नरम बना देना (३) घमकाना ; डॉटना (४) पीटना; मारता । – सावो 🖛 बेरोजगार रहना; मनिखयां मारना (२)काम न निंबटनेसे देर होना; काम खटाईमें पड़ना (३) खाली, निर-र्थंक पड़ा रहना;बेकार बैठे रहना। -हटबो, सरबो = अपानवायुका निक-लना; हवा छुटना (२) लि।] घबराना; छन्का छुटना; पसीना छटना । --नी साथे वढे एवं = हवासे लड़ने-वाला;शगड़ाल् । --नीकळी जवो = यक जाना (२)मर जाना ; दम निकलना । --वाबो = असर होना; विचार या भा-वनाओंका वेगसे फैलना; हवा चलना.] वाई स्त्री० मूच्छी रोग;'हिस्टीरिया';बाई बाउ स्त्री० बिवाई(२)वि० तरंगी; अस्थिर उपदेश; वाज बाएक पुं० उपदेशक; वाइज (२)स्त्री० बाक पुं० कस; सत्त्व (२) आटेकी [कार(२)प्रवीण चिकनाई वाकेफ(०गार) वि० वाकिफ़; वाक़िफ़-वासरो पुं० घरकी चीज-वस्तु; घरबार वासो पुं० देखिये 'वखो '(२) महामारी वागलं न० देखिये 'वागोल'

वागवुं अ० कि० बाजेसे आवाज निक-लना; बजना (२) चोट लगना; लगना (३) (अमुक घंटोंका) समय होना; बजना। [वागते ढोले जवुं = डंकेकी चोट जाना (२) बदनाम होना। वागतो घंट = बातूनी या शेखीखोर आदमी। पगलां वागवां = किसीके आनेकी आहट सुनाई देना; पास आनेमें होना। शब्द बागवा = अखरनेवाली - लगती बातका असर होना; बोल अखरना.]

४५०	
-----	--

० वास्ट
बागळूं न॰ देखिये 'वागोल'
बल्दोल स्त्री०; न० गादुर; चमगादड़
(२)जुगालीसे बना हुआ रस
<b>वागोलवुं स</b> ० कि० जुगाली करना; पगु-
राना (२)[ला.] चवा-चवाकर खातेसे देर लगाना
बर लगाना बागोळ स्त्री०; न० देखिये 'वागोल'
<b>बागोळव्</b> स० कि० देखिये 'वागोलव्'
वाग्ये अ० बजे
वाघ पुं० बाघ; शेर; व्याझ। [नी
बोडमां हाथ घालवो = जान पर
खेलना; शेरके मुँहमें जाना। – <b>नी</b>
माशी = शेरकी खाला; बिल्ली।
~नुं माथुं लाववुं ≕ बड़े साहसका
काम करना; जान पर खेलना।
<b>−मारवो = ब</b> ड़ा पराक्रम करना.]
वाघनस पुं० बघनखा; बाघनस (एक
हथियार; बच्चोंका गहना)(२)एक
गंधद्रव्य [द्वादशी
वाधबारश ( स) स्त्री ॰ कार्तिक कृष्णा
वाधरण स्त्री० 'वाघरी ' जातिकी या
'वाघरी 'की स्त्री (२) गंदी, फूहड़ स्त्री [ला.]
वाधरी पुं० 'वाधरी ' जातिका आदमी
(२)मैला, गंदा, असम्य नीच व्यक्ति
वार्घांबर न॰ बाघकी खाल; बाघंबर
बाघो पुं० बानाः; बागाः,पहनावा(२)गठरी
वाचन न० वाचन; पाठ; पढ़ाई(२)
पढ़नेका तर्ज; पढ़ाई (३) विधानसभामें
बिलका चर्चाके लिए पेश होना;वाचन; ' रीडिंग '
<b>वाचनमाळा</b> स्त्री० पाठशालाके दरजोंमें
पढ़ानेके लिए तैयार की हई किताबोंकी

# वरण्डियुं

### ¥4.8

वाही

वाडटियुं न० सायबान; पड्छती वाछडी स्त्री० बछड़ी; बछिया वाछडुं न० बछड़ा वाइडो पुं० गायका नर बच्चा;बछड़ा वाछरडी स्त्री० वछड़ी वाछरडुं न० देखिये 'वाछडुं' वाछरडो पुं० देखिये 'वाछडो ' वाछरं न०ग(यका बच्चा;बछरू[प.];बछड्ा वाइंट, बाइंटियुं देखिये 'वाइट', 'वाछटियं' [पादना; गोज करना बाह्यट स्त्री० अपान वायुका निकलना; बाब वि० उकताया हुआ (२) हारा हुआ (३) स्त्री०तोबा; पीड़ा; ऊब (४) उपदेश;वाज ।[**–आवयुं** ≕ उकता जाना (२)दुःखमें आ पड़ना; पीड़ामें फेँसना.] बाजवी वि० वाजिब; उचित; वाजिबी। [ बाजतुं गाजतुं, वाजते गाजते = वाजे-गाजेके साथ; घूमघामसे (२) खुले-आम; डंकेकी चोट.] वाजापेटी स्त्री० हारमोनियम वाखित्र न० बाजा; वाद्य; वादित्र **वाजिया** वि०(२)पुं० ब० व० सिंचा-ईसे तैयार किया हुआ (गेहूँ) वाजित्र न० देखिये 'वाजित्र' वाखुं न० बाजा; वाद्य (२) (एकसे स्वभाववाले लोगोंकी) मंडली [ला.] वाट (ट,)स्त्री ॰ बाट ; मार्ग (२) प्रतीक्षा; राह; बाट (देखना)। [--कोवी = इंतजार करना; बाट जोहना; राह देखना। –पाडवी≕ लुटना; वाट पारना (२) बाढमेंसे रास्ता करना (३) छटकनेका उपाय करना । बाटे में घाटें = जहां-तहां; सभी जगहोंमें। बाटेषी वर्धवास लेबी = बकारण

शगड़ा मोल लेना; हवासे लड़ना.]

बाट स्त्री० (दीयेकी)बत्ती (२) पहिये पर चढ़ाया जानेवाला लोहेका पट्टा;हाल । [-धडाववी = हाल चढ़ाना (२) बत्ती उकसाना.] बाटकी स्त्री० कटोरी; प्याली वाटको पु० कटोरा; प्याला वाटसरच पुं०, (~-वी)स्त्री० राह-खर्च; मार्गव्यय (२) सफ़र-खर्च वाटणियो, वाटणो पुं० बट्टा; लोढा वाटपाडू, वाटमार (–६) पुं० बटमार; राहजन [ घोंटना;बांटना(२)बाँटना **वाटव्रं** स० कि० पीसना; कुचलना; **बाटवो** पुं० बटुआ [ परामर्श बाटाघाट स्त्री० बातचीत; चर्चा; वाटो पुं० गोल लंबा बीड़ा (२) (पेट पर पड़तेवाली बड़ी)झुरीं(३) जूनेसे दीवार पर बनाई हुई गोल किनारी वाड (ड,)स्त्री० बाड़ ; झाड़बंदी । (बाबे चीभडां गळवां = रक्षकका ही भक्षक बनना; बाड़का ही खेतको खाना.] वाड(ड,) स्त्री० मोहल्ला; टोला वाडकी (-को) देखिये 'वाटकी', 'बाटको' वाबाबंधी स्त्री० फ़िरकाबंदी; दलबंदी (२) वि० जो दलबंदीमें शामिल हो वाडियुं न० खजूर भरनेका या खजूर भरा हुआ खजूरकी चटाईका बना हुआ थैला; बोरिया वाडी स्त्री० बाग्र; फुलवारी; बाड़ी (२)फूलोंकी चादर या उनकी सजा-वट (३) विरादरीके भोज आदिके लिए बिरादरीकी ओरसे बनाया हुआ चौकवाला मकान; बाड़ी (४) छोटा मुहल्ला या पाड़ा। [--ओ दूसवी == अच्छी आमदनी होना । --स्ट्रंटाई वनी

= खाकमें मिलना.]

জুৰঠীয়জীকা 🔰 🖌	<u>५२</u> वा
वाढीवजीफो पु० जागीर, जमीन आदि	वाणोतर पुं० गुमाश्ता; कारिंदा
(२) [ला.] समृदि	वाणोताणो पु० बाना और ताना
बाहो पुं० घरका घिरा हुआ पिछवाड़ा;	ताना-बाना
अहाता; बाड़ा (२)बाड़ा; पशुशाला	वात पुं० वात; पदन (२)वात(घातु
(३)पाड़ा; मोहल्ला (४)संडास (५)	वास स्त्री० कथा; आख्यायिका
[ला.] दल; तड़; पक्ष। [बाडामां	कहानी (२) घटना;वृत्तान्त;वार्ता
ज्युं, बाडे अवुं ≕पाखाने जाना ।	हकीकत; सच बात (३) अफ़बाह
बांघवो, वाळवो बाड़ा बनाना	गप (४) कथन; कहना; वचन
(२) गुटबंदी या तड़ बनाना.]	बात ; उदा० 'तमारी वात हु समज्य
बाह पुरु ईखका खेत या ईखकी खेती	(५)बातचीत; संभाषण; वार्ताला
वाढ पुं० काट; घाव(२) हथियारकी	(६) बढ़ी आवश्यक या. कठिन बार
धार; बाढ़ (२) मरोड़ा; पेटकी	मामला या विषय; बिसात; हैसियत
ऐंठन (४) (फ़सलकी) कटाई; लुनाई	उदा० 'एमांते की वात छे?
वाढकाय स्त्री० फोड़े आदिमें चीरा	(७) काम; विषय; भामला; बात
लगाना ; चीर-फाड़	उदा० ' पारकी वातमां मार्थु न मारो
<b>बस्डकूटियो</b> पुं० चीर-फाड़ करनेवाला	'ए मारा हायनी वात नथी' (८
(डॉक्टर)(२) पंचायत करनेवाला;	बात; रवैया; तौर-तरीक़ा; व्यवहार
दूसरोंके मामलेमें अपने आप बीचमें	आचरण; उदा० 'पैसादारनी वा जुदी छे' (९) बराबरी; मुका
पड़नेवाला	जुदी छं' (९) बराबरी; मुझा
बाहवुं स० कि० काटना; चीरना	बला; उदा० 'एनी शी वात करवी
वाडियुं न० देखिये 'वाडियुं '	(१०) वर्णन; खूबी; प्रशंसाकी बात्
वाढियो पुं० उत्कट इच्छा; चसका (२)	उदा० 'एनी शी वात थाय' ( ११ ) कहन
लत; चसका (लगना; पड़ना)	या करना; बात आ पड़ना; उदा
वाही स्त्री० घी परोसनेका प्रायः मिट्टीका	'वखत आवे त्यारे वात' (१२)
टोंटीदार बरतन; करवा [बनेनी	योजना; कोई काम करनेका विचार
वाणियण स्त्री० बनियाइन,बनियेकी स्त्री;	'स्कीम'; उदा० 'मारी बधी वा
वाणियागल, वाणियाविद्या स्त्री०,	मारी गई ' (१३) रहस्य ; मेद ; बात
वाणियाबेडा पुं० व० व० बनियेका	उदा० 'तेनी वात बहार पडी गई '
ढंग या व्यवहार; बनियापन	[ <b>—आपवी =</b> भेद या रहस्य खोल देना
वाजियो पुं० बनिया (२) एक कीड़ा;	पेट देना।उकेलबी=देखिये 'वा
अँखफोड़वा ।[वाणिया थई जवुं ≕ समय	काढवी '। –उडाडवी = बात उड़ान
समझकर नरम हो जाना; दीन-हीन	टालना (२) गप उड़ाना; चच
बन जाना.]	चलाना । <del>- उपाडवी</del> = किसी विषय <b>क</b>
गणीक्षूरुं वि० बोलनेमें शुर	चर्चा छेड़ना; बात उठाना (२) बात
<b>ाणो</b> पुं० दाना(सूतका)	यढ्ना; झूठी बात कहना । <b>–ऊडवी</b> =

नात

বাৰস্ত

बात उड़ना, फैलना। - ऊडी जवी == बात कटकर उसका विषयान्तर होना ; बात न चलना; बात टलना। -- झभी करवी = झुठी बात बनाना ; बात गढ़ना (२) बात शुरू करना, छेड़ना । --करबी = चर्चा करना (२) हक़ीक़त, हाल कहना या सुनाना(३)निंदा करना; बदगोई करना। -करावनी = बातोमें लगाना । **–काढवी** = बात कहना (२) बातचीत या चर्चांका विषय अनाना । - साई जनी, गळी जनी == बात पी जाना;बात घूंट जाना । **– वालवी** = गप उड्ना (२)चर्चा फैलना; बात उड्ना (३) निंदा होना। --चूंपावी = बात बिगडना । – चोळवी = बात लंबाना ; एक ही बालका पिथ्टपेषण करना। -छणदी = बातकी छानबीन करना। - जोडवी = कहानी रचना (२) झठी बात बनाना; बात गढुना । -- थवी = बात उठना;बात आना;चर्चा चलना । हक़ीक़त या हाल पेश किया जाना (२) निदा होना। - नहीं, वालनो पायो नहीं = नापायेदार बात; बातका सिर, न पैर। ---ना तडाका, फडाका = गप-शप; लंबी-चौड़ी (हॉकना) (२) युद्धकी बातें। -नूं वतेसर के वतीगण करवुं = बातका बतंगड़ करना। -पामबी = बात पाना; असल मतलब समझना;भेद जानना । – फुटवी – बात खुलना; भंडाफोड़ होना। --बनवी 🛥 घटना बनना। – बनाववी = बहाना बनाना; बात बनाना, गढुना । - भारे थवी = टेक, आग्रह बढ्ना; गर्व होना; बात बढ़ना; साख, मान बढ़ना (२) वात बिगड़ना। --भारे पडी जवी=

किये हुए कांमका परिणाम सहा न जाय ऐसी स्थिति पैदा होना । -मानवी = बांत रखना; कहा मान लेना ; सलाह मान लेना । **–मारी अवी** = काम न बनना(२)खेल बिगढ़ना।-मां नाखवुं 🖛 **बातोंमें लगानां। --वच्चवी, वंठवी** == बात बढना; मामलेका तुल सींचंना। - वातमां = जरा-सी बातमें; बात-बातमें । एक ज वात = पक्का निश्चय; संह बातकी एक बात । (-- नी ) शी बात **करवी** = इनकी बराबरी क्या करना; इनकी क्या बात। ठीक छे, वात छे तारी = आगे तेरी शामत आयेगी; तुझे बादमें भजा चलाऊँगा। वाए बात बाल्बी = चारों ओर चर्चा होना ; बात फैलना; हवा उड़ना। वाले लागवुं, वाले वळगवुं = बातोंमें लगना । वाते वळ-\* **गाउथुं** == बातोंमें लगाना । वातौनां बहां करवां = बातें बघारना ; निरर्थंक बातें किया करना. ]

वातचीत स्त्री० वातचीत; वार्तालाप (२) गप-शप [बातूनी वातूडियुं, वातूडुं, वातोडियुं, वातोडुं वि० वाव पु० वाद; बहस; शास्त्रार्थ (२) तकरार; झगड़ा;वादविवाद (३) होड़; लाग-डाँट(४) सिद्धान्स;वाद; 'थियरी'; उवा० ' विकासवाव' । [-करवो = शास्त्रार्थ करना (२) होड़ लगाना; स्पर्धा करना । -पडवो = तकरार, बहस होना । -मां पडवुं, वादे धडवुं = स्पर्धा करना; होड़ लगाना ]

वादण स्त्री० वादी – मुद्ई स्त्री वाढळ त० थादल; मेष। [–सूटी पडवुं ≕खोरोंकी वर्षा होना;वर्षाकी भरमार होना (२)[ला.](आफ़तके बादल)एक

_	
ЗŪ	761

४५४

#### वायबासरे

साय टूट पड़ना । --**वीक्षराषुं, वेरावुं** = घटाका बिखरना; बादल छँटना; बादल फटना ] बाढळी वि० बादलके रंगका; आसमानी; हलके नीले रंगका (२) बादलमेंसे होकर आनेवाला (कड़ी घूप) (३) स्त्री० छोटा बादल; बदली (४) इस्पंज; मर्दी बादल; इसपंज **वाबळुं** न० बादल वासी वि० वादी; बोलनेवाला; उदा० ' सत्यवादी '(२)वादमें माननेवाला; उदा० ' वेदांतवादी ' (३) पुं० रागका मुख्य स्वर; वादी (४) मुद्दई; वादी (५) महुअर आदि बजाकर (सौंप आदिको) नचानेवाला; मदारी (६) बाद, बहुस करनेबाला बादीगर पुं० मदारी बाबीलुं वि० आग्रही; हठी बाबोबाब अ० होड़ाहोड़ी; स्पर्धासे बाधण(-णी) स्त्री० हिचकी बाघर (-रो)स्त्री० चमडेकी सँकरी पट्टी या डोरी; चमडेकी बढी; वधी बान पुं० वर्ण;रंग (२)स्त्री०सदींसे फटी हुई चमड़ी (३) न० शरीरकी गठन; अचरजभरी चीज ंकाठी वानगी स्त्री० बानगी; नमूना (२) वानी स्त्री० एक प्रकारकी मीठी ज्वार वानी स्त्री० चीज़; व्यंजन (भोजनका) (२) भस्म; चिताकी राख। [--वाळवी = मुर्देकी राखको ठंडी करना.] वानुं न० वस्तु; चीज्र;जिस। [धणां वानां करवां = बहुत प्रकारसे समझाना, मनाना (२)उलहना देना। सौ सारां

.**बानां यवां** ≕सारा काम निर्विध्न

पार उतरना]

बानो	पुं०	एक	खुशबूद	तर	पदार्थ(२)
					चिक्कस

**वापर** पुं०ंदेखिये 'वपराश '

वापरवुं स० कि० इस्तेमाल करना; बरतना (२)खर्च करना; खरचना

वाम पुं०;स्त्री० लंबाईकी एक नाप ओ दो हाथ फैलाकर छाती समेत होती है

- थाम वि० सुंदर;वाम;बाम(२) थायाँ; वाम (३) विरुद्ध;प्रतिकूल; वाम(४) अधम; नीच; वाम
- वामणुं वि० बौना; ठिंगना; वामन

वामन वि० वामन; बौना (२) पु० विष्णुका एक अवतार; वामन (३) बौना आदमी; वामन (४) मूर्स मनुष्य [ला.]

धामयुं स॰ कि॰ (बोझ कम करनेके लिए) फेंक देना; कुछ कम करना (२) घटाना; दूर करना; कमीकी ओर लाना (२) दिलकी बात कह देना; दिल खोलना (४) क़ै करना; वमन करना (५) त्याग देना (६) अ० कि॰ घटना; कम होना

वामाटामा पु॰ ब॰ व॰, बामाटामा न॰ब॰ व॰ आनाकानी;टालमटोल

वायक न०वचन; वाक्य

बायका स्त्री० वात; गप; अफ़वाह बायज पु०(२) स्त्री० देखिये 'वाएज' बायडाईस्त्री०गप या शेखी मारनेका माव बायडुं वि० वातकारक; बादी; वातज (२) गप या शेखी मारनेका आदी (२) [ला.] विचित्र प्रकृतिका; हठी वायदाबिट्ठी स्त्री० वादेके मुताबिक पैसे देनेके लिए लिखी हुई कबूल्त; इक्का [मीआदसे

बायबासर, अ० वादेले मुताबिक;

[वरासत; विरासत

# वामबो

¥ષ્ષ

# वाराफ्रेरा

वागवो पुं० मुद्दत; अवधि (२) मीआ -बायेल देखिये 'वाएज' दसे करनेका काम; वादा । [बायबानो वार(वा') पुं० ३६ इंचकी नाप; गज बार पु० वार; दिन (२)स्त्री० समय; सोवो = वादेका सौदा; सट्टेका व्यापार । वायदे चडवुं = मुल्तवी रहा काल (३) बार; बेर; दफ़ा; करना; खटाईमें पड़ना; (किसी फेरा; उदा० ' पांच वार ' (४) [ला.] कामका) टिल्ले खाते जाना । अगस्त्य देर; दिलंब; ढील। [<del>...लगाढवी,</del> **लागबी =** देर लगाना; देर लगवाः] अद्यिना बायबा = अज्ञान्य मुद्दत; वादा बार अ० '--के अनुसार' के अर्थमें संज्ञाके पूरा न करनेके लिए दी हुई अवभि*॑*] अंतमें आता है; उदा० 'कमवार, गोत्र-वायरो पुं० वायु; हवा (२)फ़्रैंशन; वार' (२) 'वाला' के अर्थमें संज्ञाको जमानेकी हवा [ला]। [बायरा बाई लगनेवाला प्रत्यय; उदा० 'उमेदबार' चूकवा ≕ सुख-दुःखका अनुभव हो वारकवार पुं० शुभाशुभ दिन जाना; सुख-दुःख देखे होना। बायरे बारणुं न० वारना(२)वारण; प्रतिरोध । चडवुं = रंगमें आना (२) कूलकर - बाळवुं = किसीके सिर आनेवाले कुप्पा हो जाना; गर्वंसे इतराना; वोष आदिमें से उसे उबार लेना; फूलना (३) खयाली पुलाव पकाना किसीका दोषादिमें से बचाव करना (४) खटाईमें पड़ना (५) आपेमें न वारतहेवार पुं०, वारपरव(-व).न० रहना; उसेजित होना। - काखवो, उत्सवका दिन; पर्व; तीज-त्यौहार काढी नाखवो = बहुत भमकाना; वारदुं स० कि० रोकंना; अटकाना; झाड़ना(२)खूब थका देना (३) मना करना (२) बलि जाना; वारना पीटकर भूरकस निकालना; अधमरा (३) (आरती) उतारना। [वारी वर्षु कर डालना । --मी**कळवो, मीकळी जवो** =बलायें लेना (२) निछावर होना; = थककर चूर होना (२) भुरकस फिदा होना । बारी नाखबुं = राई, नोन निकलना । --वाबो = हवा चलना ] उतारकर फेंक देना; वारनाः। वार्यु वायल (--लो) वि०तरंगी; अस्थिरचित्त करवुं ⇔ सलाह मानना.] वायवर्डिंग स्त्री०; न० वायविडंग वारस पुं० वारिस; उत्तराधिकारी **वायवरणो** पुं० देखिए 'वरणो ' वारसाई स्त्री० विरसा; मीरास **बायवी** वि०स्त्री० वायु-संबंधी; वायव्य वारसागत वि० विरसेमें प्राप्त; मौरूसी; (२) बायव्य (कोण) बायु पुं० वायु; हवा (२) पुं०; न० पेतृक वारसाहक (--क्क) पुं० उत्तराधिकार; वातविकार; बादी; वायु (३)बाई; वारसो पुं० विरसा; - मीरास मिरगी; अपस्मार । [--आवर्षु = वात-कोप होना; बाई चढ़ता.] वारंवार व० बार-बार; बारंबार **बायुगोळो** पुं० गोला (रोग);बायगोला ; वाराफरती अ० वारी-वारीसे; एकके [ फारोंको जाननेवाला वायुगुल्म बाद दूसरा बायुशास्त्री पुं०हवामानमें होनेवाले फेर-वाराफेरा पूं०व०व०वार-वारआमा-

गरा	÷	

नांस्ते

जाना ; सरुत ; फेरा ( २ ) बदलना; परि-
वर्तन; फेर (दशाका)
बारी स्त्री॰ बारी;पारी(२)बदला लेनेका
मौका अवसर
बारु अ० अच्छा; ख़ैर; अस्तु(२)वि०
अण्छा; सुंदर; ठीक
<b>बारेंघडीए</b> अ० बार-बार; फिर-फिर
बारो पु॰ बारी; पारी (२) तातील;
छुट्टी; काम बंद रहनेका दिन (३)
<b>भड़ा</b> ; कलसा। [ <b>—बांधवो</b> ≕कोई चीज
नियमित रूपसे देनेका करार करना ।
<b>मूकनो</b> = गैरम थानीका कलसा पेट-
पर रेखकर सेंकना ]
<b>भारौवारियुं</b> वि० वारके हिसाबसे दिन
गिनकर लगाया जानेवाला (सूद)
बाल पुं० तीन रसीके बराबरकी एक
तौल, परिमाण
<b>वाल</b> पुं०व०व० एक द्विदल; सेम
<b>वारू</b> पुं॰ कपाटी; 'वाल्य'
बालपाथडी स्त्री० सेमकी फली
भाली पुं० संरक्षक; वली; अभिभावक; गाजियन
<b>वालीवारस पुं० व</b> ली या वारिस
जालोळ (लो′) स्त्री० एक प्रकारके
सागको फली; सेम
<b>बाब स्त्री० वा</b> वली; बावड़ी
बावटो पुं० झंडा; पताका
<b>वावड</b> पुं० खबर; पता;समाचार(२)
किसी बीमारी-रोगका फैलना
बावडिंग न॰ वायबिडंग (औषधि)
बावणियो पुं० बीज बोनेका साधन;बाँसा
वावणी स्त्री० बोनेका काम; बोआई
बाबर पुं० देसिये 'वावड'
बाबवुं सँ० कि० बोना
<b>थावंटोळ</b> पुं० बवंडरका तूफ़ान; औषी

वाधाझोडुं न० आँधी; अंधड़; तूफ़ान वार्य अ० फि० हवाका चलना, बहना (२) (शरीर पर ठंडका) असर होना; लगना (३) स०कि० बजाना बाबुं स० फि० व्याना; बियाना बावेतर न० बोआई; खेती (२) बोयी हुई चीज (३) बोयी हुई जमीन बद्या (श,) स्त्री०(श्राद्ध आदिमें)काकबलि वास पुं० बसना; थास; निवास (२) वासस्थान; घर; बास;मुक़ाम (३) मोहल्ला (४) स्त्री० बास;गंध (५) बदबु; दुर्गध सिंदरी ; फ़तूही बासकोट पुं०; न० वास्कट; फत्रही; वासण न० बरतन ; पात्र । - जिलावा = घरमें (प्रायः पति-पत्नीके बीच) झगडा होना ] **वासणकूलण** न० बरतन-भौड़ा वासरी स्त्री० डायरी; रोजनामचा वासरू वि० देखिये 'वासेल' वासवं स० कि० बंद करना बासी वि० बासी (खाना, फल आदि) **बासीब्** न० मवेशियोंका गोबर, मुत्र **अर्दिःक्**ड़ा; गोवर बासेल वि० परती (खेत) वासो मुं० बसेरा करना ; बसना ; टिकना (२)मुकाम; बसेरा(३)दिन; वासर **वासोती(-पी)** पुं० रखवालीके लिए खेतमें रात रहनेवाला; अगोरिया वास्तव न० देखिये 'वास्तविकता' वास्तवदर्शी वि० यथार्थदर्शी:'रियलिस्ट' वास्तविक वि० वास्तविक; यथार्थ; सत्य (२) उचित; वाजिब वास्तविकता स्त्री० सच्ची हकीकृत; वास्तव (२) औचित्य; मुनासबत वास्ते अ० वास्ते; लिए; हेत्

- म्	1	ų,
------	---	----

# वांसह

बाह अ० वाह; सामु; शावाश

- बाहन न॰ वाहन; सवारी (गाड़ी, पशु बादि)(२)विचार, भाव या कार्य-विशेषको प्रकट करनेवाली वस्तु; माघ्यम; जरिया; साधन
- बाहबाह स्त्री० वाहवाही; प्रशंसा (२) अ० देखिये 'वाह'
- बाहियात वि० बाहियात; बेहूदा; निकम्मी(बार्ते) (२)खराब; वाहियात; नीच [हो; संदिग्ध मनवाला बाहेरू (-र्जु) वि० जो अमित हुआ बाळ पुं० बाल; केश। [--उतारबा क्ल (विधवाका) सिर मुँडाना। -ऊभा बबा करोयें खड़े होना; रोमांच होना। --म सूटघो, --वांको म थवो क्लाल बांका न होना। --सेबा क्लिसी खास अंगके बाल मूँडना(२)विधवाका सिर मूँडना; सिर मुँडवा देना.]
- वाळछो पुं० वाल; केंग (तुच्छकारमें) बाळण न० उतार; किसी चीजका प्रभाव दूर करनेकी दवा, युक्ति आदि
- वाळवुं स॰ कि॰ टेढ़ा करना; झुकाना; नवाना (२) चूर्ण, चाक्षनी आदिको बांघकर किसी तरहका रूप या आकार देना; बांघना (लड्डू); बनाना (बीड़ी); डालना (शिकन); मारना (पालथी); बांधना (जूड़ा आदि) (३)अदा करना; खुकाना (ऋण); फिराना; फेरना; खुमाना; दिशा बदल्लना; मोड़ना (गाड़ी); लौटाना; वापस करना (जवाब, मूठ आदि); मनाना (मन); बदला देना; फेरना (उपकार, बदला आदि) (४) झाड़ना; बुंहारना; उदा॰ 'पूंजो वाळवो, घर वाळवु' (५) ढकना; आच्छादन

करना; लगाना; उदा० 'तेना उपर
भूळ वाळ, छेडो वाळवो '(६)पानीके
लिए रास्ता बनाना; पानी बराना
(सिंचाईमें)। [कलम बाळवी ==
(पेड़ पर) क़ल्लम लगाना । कैड
वाळवी ≕ खूब काम करना। छेडो
<b>वाळवो = मुं</b> ह ढॉपकर रोना । पंग
वाळवा ≕ दस लेना; सुस्ताना। मव
बाळवं = मन मनाना; मन मारना।
बाळी लाववुं = बटोरना; झाड़-
<b>थ</b> टोरकर इक्ट्रा करना(२) घुमाना;
. औटाना । वाळी लेवुं ≕ झाड़-बटोरकर
इकट्ठा करना (२) मिनहा करना;
काट लेना.]
बाळंब पुं० नाई; हज्जाम
बाळंदन स्त्री० नाईकी स्त्री; नाइन
बाळी स्त्री० नय(२)बाली(कानकी)
बाळु स्त्री० बालू; रेत
बाळ् न०;स्त्री० रातका भोजन; ब्यालू
-बार्खु वि० नामके अंतमें आनेवाला एक
प्रत्यय; –वाला; –युक्त; –संबंधी;
–की मालिकीका आदिके अर्थमें;उदा०
'घरवाळो'
बाळो पुं० भातुका लंबा तार; तार

- (२) एक रोग; नारू; नहरुआ वांक(०) पुं० अपराघ; गुनाह; दोव; खामी (२) वऋता; टेढापन; बांक। [-काढवो ≕ दोष निकालना या देखना। --नीकळवो, पडवो, मां आवर्षु झदोष निकले ऐसा कार्य करना; गुनाह, अपराघ होना.]
- बांकडियुं (०)वि० टेढ़ा (२) धुंबरांसा बांकडो (०) पुं० दहेज; दायजा
- वाकाई(०) स्त्री०टेढापन; वक्ता(२) खुटाई; दुराबह

वांकावोल्

## बांबरी

- वाकाबोर्लु(०) वि० कहनेके बाद इनकार करनेवाला; मुकर जानेवाला वाकियुं(०) न० नऌ आदिको जोड़ने-वाला टेढ़ा टुकड़ा
- वांडुं (०)वि० जो सीधान हो; टेढ़ा; वक; झुका हुआ(२) [ला.] जो सरल न हो; कुटिल; चालबाज (३) आड़ा; झूठा; उलटा (४) विरुद्ध; विरोधी (५) न० हरज; अनबन; ग़लत-फ़हमी;विरोध(६)वकता; टेढ्रापन। **[वांकी नजरे जोबुं = चोरी-चोरी देखना** (२) गुस्सा होना (३) कामातुर दृष्टिसे देखना; आँख सेंकना (४) कुदृष्टि करना । वांकी पाघडी मुकवी = बनाव-र्सिंगार करना; बांकपन करना (२) दिवाला निकालना । – चालवुं == अमीतिकी राह चलना (२) उलटा, टेढा जाना। **--पडवुं** = बुरा लगना; गुस्सा होना (२) उलटा, विरुद्ध, प्रति-कुरु लगना। – बोलबुं = मुकर जाना; झूठ बोलना (२) निंदा करना (३) गुस्से **या रीसमें बोलना ।-वळवुं =**टेढा होना (२) परिश्रम करना (३) मुड़ना; दिशा बदलना । – बळी जबुं = झुक जाना । वांको बहाडो = शामत आना; सत्या-नासका समय । वांको वाळ यथो = बाल बौंका होना; जरा भी बाधा होना या अङ्चन पड़ना ]
- वांकुंचूकुं (०) वि० टेढा-मेढा
- वांकुंटेड (०) वि० बिलकुल टेढ़ा
- बांघुं (०) न० नाला (नदीका)
- वांचन (०) न०वाचन; पढ़ना (२) पढ़नेका तर्ज्ञ; पढ़ाई (२) अभ्यास; अध्ययन; पढ़ाई ['वाचनमाळा' वांचनमाळा (०) स्त्री० देखिये

वांचवुं (०) स० फि० पढ़ना; बाँचना (२)[ला.]भविष्य कहना; ज्योतिषका कल बताना (३) चाह करना; इच्छा करना। [वांची काढवुं, वांची अवुं= पूरा पढ़ डालना (२) जल्दो-जल्दो पढ़ डालना। वांची जोबुं = ज्यानसे पढ़ना (२) पढ़नेका प्रयत्न करना.]

- वांछ्युं (०) स० कि० इच्छा करना; चाहना
- वांस ( ०णी ) (०) स्त्री ० बाँझ (स्त्री) ; वंध्या
- **वांझणुं (०)** वि० देखिये 'वांझियुं'
- वांझियाबारुं वि० बाँझका; लावारिस (२) न० इकलौता बेटा
- वांझियुं (०)वि० जिससे संतान उत्पन्न न हो; वाँद्व (२) जिससे फलप्राप्ति न होती हो; अफल; बाँझ
- **वांसो (०**) पु० बुनकर, जुलाहा
- वांट (०) पुं० हिस्सा; बाँट; भाग वांटणो (०) स्त्री० बटवारा; बाँट
- वांटवुं (०) स० कि० बाँटना; हिस्से करना
- वांटो (०) पुं० हिस्सा; बाँटा (२) इनाम या निर्वाहको जमीनका टुकड़ा
- वांढो (०) वि०पुं० कन्या न मिलनेसे अविवाहित रहा पुरुष; वंट; वंठ वांतरी (०) स्त्री० कपड़े या किताबमें
- लगनेवाला एक कीड़ा; घुन
- वांदर (०)पु०वानर; वंदर । [वांदराने निसरणो आपवी ≕ मूर्खको और भड़काता; पागलको भग थिलाकर उकसाना |
- वांबर (--रा) वेडा (०) पुं० ब० व० बंदर जैसी चेथ्टाएँ करना [वानरी बांबरी (०) स्त्री० बॅदरी; बॅंदरिया;
- **बांदरं (०**)बंदर; वानर
- बांबरो (०) पुं० नर वानर; बंदर

		•
-	1.7	-
-		

विकासबुं

	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
(२) चौंप; घोड़ा; खटका; कल	वांसळी (०) स्त्री० बॉंसुरी; बंसी;
(३) तालेका खटका; झड़ी (४)	बंसरो ; बॉसली (२) देखिये 'वांसणी'
एक आतिशबाजी; छर्छ्दर(५)बोझ	वांसिया चोखा (०) पुं०व०व०सागूदाना
उठानेकी एक कल; बालकुप्पी;	वांसियुं (०) वि० बाँस-संबंधी (२)
'केन' [एक पौधा; बाँदा	बाँस बराबर; बाँस जितना लंबा
बांबो (०) पुं० एक जंतु; चपड़ा (२)	वांसी (०) स्त्री० लंबा बाँस जिसके
<b>वांघाखोरियुं</b> (०) वि० दोष निका-	सिरे पर हँसिया जैसी चीज जड़ी होती
लनेवाला; नुकताचीं; छिद्रान्वेषी	है(२)एक तरहका धान;बाँसी
<b>बांघो</b> (०) पुं० वाधा; अड़चन(२)	वांसे (०) अ० पीठकी ओर; पीछे
हरज; विरोध; तकरार; एतराज;	वांसो ( ० ) पुं ० पीठ;पृष्ठ । [धाबडवी 🖛
ं आपत्ति । [–आववो, ऊठबो, नोकळवो	पीठ ठोंकना <b>।–भारे थवो</b> ≕मार <b>खाने</b>
≕एतराज, विरोध, हरज होना;झगड़ा	योग्य काम करना (२)मिज्राज सातवें
खड़ा होना । <b>–उठावयो, काढवो,</b>	आसमान पर होना,गर्व बढ़ना । <b>–हरूको</b>
<b>लेबो</b> ≔ आपत्ति उठाना; तकरार या	<b>करवो</b> = पीटना ; मारता.]
विरोध खड़ा करना। <b>पडवो</b> =-	<b>विकराल(–ळ)वि०</b> विकराल;भया <b>नक</b>
<b>विरोध या एतराज होना ; झगड़ा होना</b>	<b>विकल</b> वि० दिकल; व्याकुल;वि <b>ह्वल</b>
(२)बुरा लगना; विरोध करनेका	(२)विकल; अपूर्ण; खंडित (३)
बहाना मिलना ]	असमर्थ; विकल (४) पुं० विकला;
<b>वांघोवचको</b> (०) पुं० दोष; खामी;	कलाका ६०वाँ भाग
खुचड़; भूल-चूक; नुक़्स निकालना	विकला स्त्री० कलाका ६० वौ भाग;
वांस (०) पुं० बांस (२) उसका डंडा	विकला(२)रजस्वला; विकला (३)
या सोंटा (३) मयानी; रई(४)	एक अंशका ३६०० वाँ भाग [ग.]
सात-आठ हाथ जितनी एक नाप ; बॉस	विकसवुं अ० कि० खिलना; विकसना
(५)राजका ईंटें छीलनेका औजार ।	<b>विकसावयुं</b> स० कि० 'विकसवु' का
[ <b>फ़रवो =</b> घरमें निर्धनता होना ]	प्रेरणार्थक रूप; बिकसाना
वांसकपूर (०) न० वंशकपूर; वंश-	<b>विकळ</b> वि० देखिये 'विकळ'
लोचन बंसलोचन [(गहरा)	<b>विकळा</b> स्त्री० देखिये 'विकळा'
वांसजाळ, वांसपूर (०) अ० बाँस बराबर	विकाशवं अ० कि० खिलना; विकसना
वांसडो (०) पुं० बांसका सोंटाइंडा	(२)स॰कि॰ विकसित करना;सोलना;
वांसणी (०) स्त्री • स्पर्ये रखनेकी लंबी	फैलाना; प्रसारित करना
थैछी, बसना [आदि बनानेवाला	विकास पु॰ विकास; खिलना (२)
वांसकोडो (०) पुरु वांसके टोकरे	उत्कान्ति; कमिक उन्नति या विकास
वांसस्तमी (०) स्त्रों० वॉसुरी;वांसली	विकासवाद पुं० विकासवाद
वांसको (०) पुं० बसूला	विकासवुं देखिये 'विकाशवुं'

H.		

¥\$o

६० वित्तांमपुं
रखना; अदब करना । स्रांबी विचार ==
दूरकी सोचना; दूरदेशीकी बात.]
विधारणा स्त्री० विचार करना;
विचारणा [विचार करके
विचारपूर्वक अ० सोच-समझकर;
विचारवंत, विचारवान वि० विचार-
वान्; विचारशील; सोचने-विधा-
रनेवाला [प्रदान
<b>विचारविनिम</b> य पुं० विचारोंका आ <b>दान</b> -
विधारवुं स० कि० विचारना; सोचना
विचारसरणि(-णी) स्त्री० विचार
करनेकी पढति, कमबढता आदि;
विचारधारा; विचारसरणी
<b>विछळाववुं</b> स० कि० 'वीछळवु <b>'का</b> प्रेरणार्थक
विछोह पु॰ वियोग; विछोह; जुदाई
बिजय पुं० विजय; फ़तह [दुंदुनि
<b>विजयउंको</b> पुं० विजयका डंका; विजय-
विजयादशमी स्त्री० विजयादशमी;
दशहरा;दसहरा [वियोग
विजोग पुं० वियोग; जुदाई (२) विरह;
<b>विकोगण(-णी)</b> वि० स्त्री०वियोगिन; विरहिणी; वियोगिनी
विटंबणा स्त्री० कष्ट ; विडंबना,परेशानी
विण अ० बिना; सिवा; बिन [प.]
विणामण न०, (णी) स्त्री० बिन-
नेकी किया; बिनाई (२) अनाजमें
से बिनकर निकाली हुई चीज (कूड़ा-
करकट); बिनन (३) बीनने <b>की</b> मजदूरी; बिनाई
<b>विणार्यु</b> अ० कि० ' वीणवुं ' का कर्म <b>णि</b> <b>विणावयुं</b> स०कि० 'वीणवुं'का प्रेरणार्थक
विलाख्यु संगंतरु वाणवुका प्ररणायक विलाख्यु संगतित दुःख देना; हैरान
वताः इराग करनाः सताना गुजारनाः
भरगा, छतामा [गुआरग

विताड (-व) बुं स॰ कि॰ बिताना;

विसवाद पु॰ जहर पैदा करनेवाली बोली; जली-कटो (कहना)(२)तकरार; बस्नेड़ा [छटा हआ

विसूर्टुं वि० अलग; निछुड़ा हुआ; साथ विसरेबुं स० कि० बिखेरना

- विसेरायुं अ० कि० 'विखेरवुं' का कर्मणि; विखरना;फैल जाना
- विगत स्त्री० विषय; बाबत; ब्योरा (२) समझ; सूझ-बूझ [विस्तारपूर्वक

बिगतवार, विगते अ० ब्योरेवार;

विग्नहरेका स्त्री॰ (--) ऐसा विरामचिह्न; निर्वेश्वक; 'ईश' [ब्या.]

विषयोटी स्त्री० प्रत्येक बीधेका मुक़ररे किया हुआ या दिया जानेवाला लगान; शरह-लगान; लगान मुक़र्ररी या लगान वाक़ई [उघर धूमना विषयर्षु अ० कि० विचरना; इधर-

विचार पु॰ विचार; विचार; खयाल (२) अभिप्राय; विचार; राय(३)उद्देश; अभिप्राय; मतलब (४) कल्पना; मनसूबा;खयाल; विचार, धारणा(५) निर्णय; विचार(६) विनय; मुरौवत; दूसरोंका लिहाज (७) परिणामका खयाल(८) जिता;खयाल;सोच-विचार। [--आपवो = राय देना;सलाह, परामर्श देना।--खलाववो = सोचना; विचारना (२) परामर्श करना। --वोडाववो = कल्पना करना। --वोडाववो = राय रखना;उद्देश्य होना।--पूछवो=किसीका वभिप्राय जानना चाहना।--राजवो = विचार होना;विचार करना(२) लिहाज

# निग्राय

#### দি সম্ভ

- विवास वि० विदा किया हुआ; रुखसत किया हुआ; रवाना (२) स्त्री० विदा; जानेकी इजाजत; अलग होना; विदाय [विदाई; रुखसती विवाययारी स्त्री० विदा करना; विदाई; विवार्थ स०कि० फाडना; टुकड़े करना;
- बिदारना [प.] (२) मार डालना
- विद्या स्त्री० विद्या; ज्ञान (२) उसका शास्त्र या कला; उदा० 'समाज-विद्या' (३) विज्ञान; विद्या; सायन्स (४) देखिये 'वद्या'। [ चौरे विद्या == तमाम विद्या; समग्र ज्ञान; हर फ़न। मेस्री विद्या == जारण, मारण, बक्षीकरण या भूतप्रेतादिको वदामें करनेकी विद्या; मलिन विद्या.]
- विद्याधिकारी पु० शिक्षा-विभागका अधिकारी; लोकशिक्षण संचालक; 'डी. पी. आई.'; 'डो. ई.'
- विकाम्यास पुं० पढ़ाई; शिक्षा; अध्ययन
- **विष स्त्री० विध ;** प्रकार ; भाँति ; तरह
- विषया स्त्री० विधवा; बेवा; रौड़
- **विखविध** वि० भौति-भौतिका; कई प्र<mark>क</mark>ारका; विविध
- विधान न० विधि; काम करनेका ढंग; रीति; विधान (२) शास्त्राज्ञा; विधि (३) किया; विधि (४) सेवा (५) उपाय; साधन; विधान (६)हायीके लिए बनाया हुआ लड्ड; विधान
- विषि स्त्री० विधि; ब्रह्मा; विघाता (२) तक़दीर बनानेवाला; भाग्यविघाता(३) आज्ञा; शास्त्राज्ञा; विघि (४)विधि; संस्कार(५)पुं०;स्त्री० किया;धार्मिक संस्कार; विधि (६) कियाका कम या पद्धति [ व्या. ]

	_
विभुर पुं० दिथुर; रँडुआ(२)वि०विकस	r,
व्याकुल; वियुर (३) वियोगी; विधुर	
विषेग वि० विघेय; करने योग्य (२)	)
अभीन; यशवर्ती; विधेय (३) न	ð
वान्यका वह अंश जो उद्देश्यके बारे	Ť
कहा गया हो; विधेय [ब्या ] 🐳	

- विषेयवर्धक विं० विषेयके अर्थमें वृद्धि करनेवाला (२) न० विषेय-विस्तारक; विषेयवर्धक [व्या.]
- **ৰিচ্যৰ্য** পুঁ০ আ**ক্লাৰ্য**; বিচ্যৰ্য
- विनय पुं० विनय; नम्रता(२) शिष्टता
- जिनयमंदिर न० माघ्यमिक शाला; हाईस्कूल
- विनवणी स्त्री० मनुहार; विनती करना
- विनंति स्त्री० अर्जु; प्रार्थना; बिनती; विनती
- विनंतिपत्र न॰ अर्जी; प्रार्थनापत्र
- विनंती, विनंतीपत्र देखिये 'विनंति'; 'विनंतिपत्र'
- विना अ० बिना; बग़ैर; छोड़कर
- **विनाशिका स्त्री**० विध्वंस-पोत; 'डिस्ट्रायर'
- विनीत वि० विनीत; नम्र; विनयी (२) सुशिक्षित (३) ज्वार दलका; 'लिबरल' (४) जिसने हाईस्कूल या 'विनयमंदिरकी' शिक्षा पूरी की हो; 'मैट्रिक्युलेट' (५) उस कक्षाका

विविषूरक वि० उद्देश्यपूर्ति या कर्मपूर्ति

<b>n</b> .		
13	<b>H</b> 1	7
• •		

¥\$?

विमान न॰ विमान; वायुयान; हवाई	বিন্তায
जहाज (२) देवमंदिर (जैन) ; विमान	সন্দ
<b>विमानी</b> वि० हवाई जहाज-संबंधी;	विल
विमानका (२) निरभिमान; गर्व-	ब्रिटे
रहित (३) पु० विमानचालक	विसाय
<b>विमानोमयक</b> न० हवाई अड्डा	विल
विमासण स्त्री० पछतावा; पश्चात्ताप	स्वदे
(२) गहरा सोच-विचार, चिंतन	(३)
<b>विमासवुं</b> अ० कि० पछताना; सोचना	असा
(२) विचार करना; सोचमें पड़ना	বিলাৰ্
<b>वियाण</b> वि० जो क्याता हो; जो बच्चा	(२)
देता हो; उदा० 'वरसवियाण' (२ <b>)</b>	विलास
न० बियाना; पशुकी प्रसूति	विल
वियावुं अ० कि० व्याना; बच्चा देना	विलोब
(पशुका) [विरण	[ प.
<b>विरण (०वाळो )</b> पुं० एक सुगंधित जड़;	निरी
विरमबुं अ०्ति० ठहरनाः, रुकनाः,	विलोवुं
बिरमना [प.]	विवरण
विरल(-लुं) वि॰ दुर्लभ; विरल;	विवाद
(२) जो घना न हो; विरल (३)	झगड़
थोड़ा; विरल(४)निर्जन; वीरान	मुकद
विराजयुं अ० कि० शोभित होना;	विवाह
बिराजनाः; विराजनाः;बैठना	विवेक
विराम पु॰ विराम; ठहराव; रुकना;	विनय
बंद होना (२) आराम; विश्राम;	বিবিকর্
विराम (३)अंत; अवसान; विराम	समझ
<b>विरामचिह्न</b> न० विरामचिह्न	विवेकी
विराभवुं अ० कि० बिरमना [प.];	वाला
रुकना;ठहरना;बंद होना;अंत आना जिल्लाना के बिल्लाना कि	ज्ञानी
बिरुसबुं अ० फि० बिरुसना [प.];	्सम्यः
चमकना; झलकना; शोभित होना	विशाल
(२) मौज, आनन्द करना ; विलसना	विशे अ
[प.](३)स० कि० भोगना; बिल-	विशेष
साना [प.] [विलंबना	(२)
<b>दिलंबबुं</b> अ० कि० देर, दिलंब करना;	खास

विलायत स्त्री०;न० वतन; स्वदेश; जन्मस्यान(२)तुर्कोंका असल मुल्क; विलायत (३) यूरोप;विलायत (४) ब्रिटेन;विलायत

विस्रायती वि॰ विल्रायतका; विल्रायती; विलायतका बना हुआ (२) जो स्वदेशका न हो; विदेशी; विलायती (३) विचित्र; चकित करनेवाला; असाधारण [ला.]

- विलाबुं अ० कि० कुम्हलाना ; मुरझाना (२) पिघलना (३) नाश-विलय होना
- **विलासवुं** स० कि० विलास करना; विलसना [प.](२)चमकना
- विलोकवुं स॰ कि॰ देखना; बिलोकना [प](२)तलाश करना; अवलोकन~ निरीक्षण करना |(दूब)
- विलोवुं अ०कि० दूध चढ़ाना; अमोरना रिल्ल
- **विवरण** न० विवरण; स्पब्दीकरण विवाद पुं० विवाद;बहस;च्ची(२)
- झगड़ा; विवाद (३) मतभेद (४) मुकदमा; दावा [शादी;ब्याह
- विवाह पुं० सगाई; मॅंगनी (२) विवाह;
- <mark>विवेक</mark> पुं० देखिये 'विवेकबुद्धि' (२) विनय; सम्यता; शिष्टता
- **विवेकबुद्धि** स्त्री० भले-बुरेका भेद कर**ने,** समझनेकी शक्ति; विवेक; समीज
- विदेकी वि० भले-बुरेकी पहचान करने-वाला; विवेकी; समझदार (२) ज्ञानी; विचारवान्; विवेकी (३) सम्य; शिष्ट; विजयी

विक्साल (--ळ, --ळुं) वि० विशाल ; बड़ा विक्से अ० --के विषयमें ; बारेमें

विशोष वि० विशेष; अधिक; ज्यादा (२)असाधारण;असामान्य;विशेष; खास (३)पुं० अंतर; भेद करना;

<u>n</u>		
TT	귀엽다	ľ

- विशेष (४) खास धर्म या गुण; विशेष। [--विनंती के (संक्षेपमें 'वि० वि०') = खास निदेदनके अर्थमें पत्रमें लिखा जाता है। विशेषे करीने = खासकर; विशेषत:.]
- विशेषण न० संज्ञाका गुण या संख्या बतानेवाला शब्द; विशेषण विया.]
- विशेषता स्त्री० ज्यादापन; अधिकता; ज्यादती (२) अंतर; विशेष (३) श्रेष्ठता; उत्कृष्टता; खूबी; विशिष्टता; विशेषता [व्यक्तिवाचक संज्ञा[व्या.] विशेषनाम न० नामका एक प्रकार; विशेष्य न० विशेषणयुक्त संज्ञा; विशेष्य
- वित्रवास पुं० विश्वास;यक्रीन;भरोसा (२)श्रद्धा; विश्वास [भरोसेका विश्वासपात्र वि० विश्वसनीय;
- विश्वासी वि० देखिये 'विश्वासु' (२) पुं० ईसा मसीहमें विश्वास करने-वाला; ईसाई
- विक्र्यासु वि० विश्वास करनेवाला; विश्वासी (२) जिसका एतबार किया जा सके; विश्वसनीय; विश्वासी
- **विष** न∘ विष; जहर । [**−मारवुं ≕** जहर मारना.]
- विषसापरो पुं० एक वनस्पति
- विषय पुं० इंद्रियग्राह्य पदार्थ; विषय (२) भोग्य वस्तु; भोगका साधन (३) कामवासना पूर्ण करना; काम-भोग; इन्द्रियजन्य आनंद (४)विचार या अध्ययनकी वस्तु; विषय (५) मामला; बात; विषय; प्रसंग (६) लक्ष्य; उद्देश्य (७) देश; विषय; जनपद। (~उपाडवो = कोई बात या बिषय छेड़ना, आरंभ करना.]

वि	<u>ì</u>	į
	·	-

- विषयविचारित्री वि० स्त्री० विषय-निर्वाचनी [संबंधी विषे अ० में (२) वारेमें; विषयक;
- विसवासी स्त्री० बिस्वेका २०वॉ भाग; बीघेका ४०० वॉं भाग(२)लकड़ीको एक नाप
- विसात स्त्री० बिसात; मूल्य; महत्त्व (२)बिसात;शक्ति; सामर्थ्य; महत्त्व (३)गणना;हस्ती; बिसात
- विसामो पुं० विश्वाम; सुस्ताना (२) वह ऊँचा चबूतरा जहाँ बोझिया बोझ रखकर सुस्ताये; टेकान
- विसार पुं० भूल जाना; विस्मरण
- विसारवुं स० कि० भुला देना; याद न रखना; बिसारना
- विसारो पुं० देखिये 'विसार'; विस्मृति
- विस्तरबुं अ०कि० विस्तृत होना ; फैलना
- विस्तार पु॰ विस्तार; फैलाव (२) वृद्धि (३) विशालता; विस्तार(४) [ला.] बड़ा परिवार या कुनबा
- विस्तारवुं स॰ कि० विस्तृत करना; फैळाना; विस्तारना [प.]
- विस्फोटक वि० फूटनेवाला या फोड़ने-वाला (पदार्थ); विस्फोटक
- विस्मरवुं स० कि॰ भूल जाना ; बिसरना
- **बिहरवुं** अ० कि० घूमना-फिरना (२) विहार करना; विहरना [प.]
- विहार पुं० विहार; कीड़ा (२) घूम-कर मनोरंजन करना; विहार (३) अनग; मटरग़क्ती; विहार (३) (बौद्ध) मठ; विहार। [--करवो = कीड़ा करना (२) जैन साधुका प्रवास करना (३) जैन साधुका चल बसना.] विहोणुं वि० विहीन; वंचित; विमुद्ध; रहित,

-8-		1
40	स ९९	L

नीतरपुं

• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
वीसर(-रा)वुं अ॰ कि॰ विखरना;	बीर वि॰ वीर;
तितर-बितर होना	पुं० वीर पुरुष
भीषत, सीगतकार देखिये 'विगत' आदि	बीर(४)एक त∘
<b>कौचुं</b> न०, (घो) पुं० बीघा	वीर; वीररस
<b>वीडळवूं</b> स०क्रि० किसी बरतनमें पानी	<b>वीरकाव्य</b> न० वी
डाल, उसे हिलाकर साफ़ करना;	<b>वीरडो</b> पुं० नदी य
बँगालना (२) कपड़ोंका मैल छॉटना	भागमें पानीके सि
<b>वीछी (छु)</b> पुं० एक विषैला जंसु;बिच्छू	वीरन(०वाळो)
<b>थीछुवा</b> पुं० <b>ब</b> ० व० पाँवके अँगूठेका	वीरपसली स्त्री ॰
एक गहना; बिछिया; बिछुआ	दिन भाईकी
<b>सीव स्त्री० विजली</b> ; विद्युत्	<b>जामेवाली</b> भेंट
<b>यीवणो</b> पु० पंखा; व्यजन	वीरभूमि स्त्री०
<b>मीवळी</b> स्त्री० विजली; विद्युत्	
<b>बीबळोघर</b> न० बिजलीघर; 'पाबर-	वीरहाक स्त्री० भयानक गर्जना
स्टेशन'	<b>वीरो</b> पुं० भाई;
<b>बीबाजु</b> पुं० विद्युत्का अणु; 'इलेक्ट्रोन'	वील न॰ क्सीयत
<b>बीण</b> स्त्री० प्रसव-वेदना; प्रसंबकी पीड़ा	वीलुं(वी') वि॰
<b>थीणवुं</b> स० कि० बिनना; चुनना(२)	(२) भटकता (प
∎टिना;पसन्द करना(३) (अनाजमें	न हो । [पडवुं
<b>से कूड़ा-करकट</b> )निकाल लेना; बिनना	झेंपना; खिसिया
<b>थीलक</b> न०; स्त्री० किसीके ऊपर बीती	साथमें न रख
हुई वात; घटित घटना; वीती (२)	घूमता छोड़ देना
संकट [दुःख पड़ना; बीतना	कलंक या खेदसे
<b>वीतवं</b> अ० कि० बीतना ; गुजरना (२)	रह जाना ]
<b>वीमववुं</b> स०क्रि० प्रार्थना-विनय करना ;	<b>वोश</b> वि० बीस;
मनुहार करना,चिरौरी करना,बिनवना	वीझी स्त्री० देखि
<b>थीफरवुं</b> अ०क्रि० कुद्ध होना; बिगड़ना	बीशी स्त्री० ढाव
<b>चीमार्कप</b> नी स्त्री० बीमार्कपनी	वीझीवाळो पुं०
<b>बीमो</b> पुं० बीमा (२) उसका क़रार, लेख	<b>वोस</b> वि० बीस; २
(३) बीमेका प्रीमियम (४) [ला.]	सोलहों माने (२
जान-जोखोंके काम; साहस <b>।</b> [–- <b>कत</b> -	बिस्वे.]
राई के ऊतरी जवो, -खरूास थवो =	वीसमवुं अ०कि०
मर जाना; तबाह होना। <b>करवो,</b>	शान्त होना (ग
सेडवो ≕ साहस करना ; जान जोखिम-	उफान आदि)
<b>में डाल</b> ना; जान पर खेलना.]	वीसरवुं स० कि०

बहादुर; बीर (२) ा; बीर (३) भाई; । रहका प्रेत; बीर (५) (६) महावीरस्वामी ीररसका काव्य ग तालाबके जल**विहीन** रेलए बनाया हुआ गड्ढा देखिये 'विरण' ० श्रावणी पूर्णिमाके ओरसे बहनको दी वाली धरती वीरोंको जन्म देने-युद्धके समय वीरकी बीर ानामा ; मृत्युपत्र **; 'वील'** शरमिदा; झेंपा **हवा** पशु); छुट्टा; जो**वँषा** = बिछुड़ जाना (२) ा जान**ा। —मूकव्**ंु⇔ तना; किसीको बेकार ⊺ । **–मों करवं =** शर्म, ते अपना-सा मुँह लेकर २० लये 'वीसी' बा;बासा; भोजनालय होटलका मालिक २०। [—वसा ≃ संपूर्ण; २) बहुत करके; बीस दूर होना; उतरना; गरमी, जोश, थकान,

वीसरवुं स० कि० विंसरना; भूल जाना

<u></u>	
मारा	राष्
•	

- Arei vi J	<b>1)</b>
वीसरागुं अ० कि० 'वीसरबुं' का कर्मण; याद न रहना; मूलना बीसी स्त्री० बीसका समूह; बीसी (२) बुनाईमें तात्मेके तारोंकी एक प्रकारकी गिनती; वीशी बीछ स्त्री० ज्वार (भाटाका उलटा) बींखयुं स० कि० देखिये 'पींखवुं' बींखयुं स० कि० देखिये 'पींखवुं' बींछांचो पुं० बिच्छू (जंतु) बींछांचो पुं० बिच्छू (जंतु) बींछांचो पुं० बिच्छू (जंतु) बींछांचो पुं० बिच्छू (जंतु) बींछांचो पुं० बिच्छू (जंतु) बींछुवा पुं० देखिये 'वींछीडो' वींछुवा पुं० देखिये 'वींछीडो' बींछुवा पुं० देखिये 'वींछीडो' बींछांचो पुं० पंखा; व्यजन बींझणुं न० देखिये 'वींजणुं' वींझवुं स० कि० तलवार, लाठी आदि हवामें जोरसे घुमाना बींटली स्त्री०, (-लो) पुं० स्त्रियोंका नाकका एक गहना; नय बींदलो पुं० देखिये 'वींटो' बींदवुं स० कि० लपेटना; लुंडियाना; पींदियाना (सन रक्सी आदि)	वीषषुं स० कि० वेधना; छेद करना; छेदना; वींधना (२) घाव करना; बेधना; गड़ाना; चुभाना वींधाववुं स०कि० 'वींधवुं'का प्रेरणार्यक वींधावुं स०कि० 'वींधवुं' का कर्मणि; विंधना; वेधा जाना कृठवुं स० कि० बरसना; बरस पढ़ना वृत्त न० वृत्त; आचरण; चाल-चल्प्न (२) छंद; वृत्त (३) वर्तुलाकार क्षेत्र; वृत्त (४) समाचार; वृत्त (५) वृत्तांत; घटना; हंक़ीकृत; वृत्त (५) वृत्तांत; घटना; हंक़ीकृत; वृत्त वृत्तविवेचन न० पत्रकारी; अखबार- नवीसी; 'जर्नालिज्म' वृत्तविवेचन न० पत्रकारी; अखबार- नवीसी; 'जर्नालिज्म' वृत्तांत पुं०; न० वृत्तांत; हाल; हक़ीकृत;वर्णन (२) खबर; समाचार वृत्ति स्त्री० मनमें उठनेवाला विचार; वृत्ति; चित्त-मनका व्यापार (२) रुख; मनकी अवस्था; मनोभाव; वृत्ति (३) स्वभाव; प्रकृति (४)आचरण; बरताव (५)व्याख्या; कारिका; वृत्ति
<b>वींछुडो</b> पुं० देखिये 'वींछीडो'	<b>वृत्तपत्र</b> न० अखबार; समाचारपत्र
वींछुवा पुं० ब० व० देखिये 'वीछुवा'	<b>वृत्तविवेचक</b> पुं० पत्रकार
वींजणों पुं० पंखा; व्यजन	नवीसी; 'जनॉलिंज्म'
वींझणुं न० देखिये 'वींजणुं'	<b>वृत्तांत पुं</b> ०; न० वृत्तांत; हाल;
वींझवुं स० क्रि० तलवार, लाठी आदि	हकीक़त;वर्णन (२) खबर; समाचार
वींटली स्त्री०, (–लो) पुं० स्त्रियोंका	र्वृत्ति; चित्त-मनका व्यापार (२)
नाकका एक गहना; नय	रुख; मनकी अवस्था;मनोभाव;वृत्ति
वींटलो पुं० देखिये 'वींटो'	(३) स्वभाव; प्रकृति(४)आचरण;
ग्. हि३०	

•	łĦ

- वेग पुं० वेग;गति;त्वरा (२) जोश; आवेश (३) कसक; ग्रूल (४) त्रास; आसंक; डर। [-मारवा ≕ कसकना; शूल उठना.]
- **वेगळुं** वि० जो दूर हो; दूर (२) अलग; जुदा । [**—होवुं** चरजस्वला होना; कपड़ोंसे होना.]
- वेगळे अ० फ़ासले पर; दूर
- वेगी (०लुं) वि० वेगी; तेज; वेगयुक्त
- **वेचवाल** वि० बेचनेवाला; वेचवाल (शेयर आदिका)
- वेचवुं स० कि० बेचना । विचीने खणा खावा = किसीसे न दबना (२) बेच खाना; उड़ा डालना.}
- वैचाउ वि० बिकाउ

**वेचाण** न० बेचना; बिक्री; बै

- वेचाणसत न० बैनामा; विकय-लेख
- वेचातुं वि० मोल लिया हुआ या दिया हुआ; दाम देकर लिया हुआ या दिया हुआ। [कजियो वेचातो लेवो, लडाई वेचाती लेवी = झगड़ा मोल लेना (२) किसीका पक्ष लेकर झगड़ना.]
- वेचायुं अ०कि० 'वेचवुं' का कर्मणि; बिकना [प्रजा
- बेजा स्त्री० निशान (२) विपत्ति (३) बेठ स्त्री० बेगार (काम) (२) जब-दंस्ती कराया जानेवाला काम; बेगार (३) [ला.] बोझ; बला; आफ़त; कष्ट देनेवाली वस्तु या व्यक्ति। [--उतारवी, काढबी, बाळवी = बिना मन लगाये, बेगारकी तरह काम करना; बेगार टालना। बेठे काढव,

पकडवं = बेगार पकडना। बेठे अवं

= बेगारके लिए जाना.]

- वन्तुं स० कि० सहना; झेलना (२) किसी स्थिति, संबंध आदिकी रक्षा
- किये जाना; निवाहना **वेठियो** पुं० वह आदमी जिससे बिना मजदूरी दिये काम कराया जाय; बेगारी(२)बेगारमें पकड़ा हुआ बगैर दामका नौकर
- **वेडफवुं** स०कि० व्यर्थ खर्च करना; उड़ा डालना; नष्ट कर देना; बिगाड़ना
- **वेडफाबुं** अ० कि० 'वेडफवुं' का कमैंणि
- **वेडमी** (वे′)स्त्री० पूरन भरी हुई रोटी; ्पूरनपूरी
- **वेडलो पुं० देखि**ये 'वेल्लो'
- **वेडवुं** स०क्रि० जालीदार लग्गीसे(फल्ल) तोड़ना, उतारना
- **वेडवो** पुं० देखिये 'वीरडो'
- वेडी स्त्री० वह लग्गी जिसके सिरेपर जालीदार थैली रहती है (आम आदि तोड़नेकी)
- बेडो पु० लग्गीसे फल उतारनेवाला
- वेढ पुं० उँगलीकी गांठ; पोर;पोरवा (२)छल्ला; पोरिया
- वेदमी स्त्री० देखिये 'वेडमी'
- वेडो पुं० उँगलीकी गाँठ; पोर; पोरधा (२) लकडीकी गाँठ। विद्या गणवा = पोरें गिनकर हिसाब करना(२) दिन गिनना; प्रतीक्षा करना। वेढे गणाय एटलुं = अल्प संख्यामें; उँगलियों पर गिना जा सके उतने; इने-गिने.]
- वेण (वॅण,) स्त्री० कपासका पौधा; कपास (२) प्रसवकी वेदना
- बेण (वॅ) न० वचन; बोल; बैन [प.] (२) प्रतिज्ञा; कौल। [--काढवुं ≕ बोलना। -- मारवुं = बोल मारना; मर्मभेदी वचन कहना;ताना मारना।

۰.	c,	_
벽		Ŧ

वेरामी

- --रासर्च् = कहा मान छेना; बात रखना । --सांभळवुं == उलहना या तानां सुमना ; फटकारा जाना ; सूनना.] बेणि (-णी) स्त्री॰ बालोंकी चोटी;वेणी (२) जुड़ेमें सोंसनेका फूलोंका गजरा वेणु (०का) स्त्री० वेणु; गौसूरी वेत (वॅ) पुं० उपयुक्त काल; मौक़ा (२)व्यवस्था; प्रबंध; ब्योत वेतन न० वेतन; तनस्वाह वेतर न०एक-एक बारका जनन:बियान । [--आववं, वेतरे आववं = पशुकी मादा-का गर्माधानका समय होना. वेतरण स्त्री० (कपड़ेको) ज्योंतना (२) जरूरी इंतजाम, प्रबंध (३) सजा[ला.] \* **वेतरवुं** स० कि० कपड़ेको सिलाईके लिए काटना; ब्योंतना (२) जरूरी इंतजाम करना (३) [ला.] विगाड़ देना; चौपट कर देना; गुड गोवर कर देना। शिंडनुं चोड वेतरवुं ⇒ कुछका कुछ कर डालना; बिगाड़ देना;औरका और या उलटा कर देना.] बेता पुं० ४० व० समझ; सयानापन; होशियारी (२) सलीक़ा ; शऊर ; ढंग
- बेद पु० वेद; ज्ञान (२) यथार्थ ज्ञान; वेद (३) आर्योका सबसे प्राचीन घर्म-ग्रंथ; वेद(४)चारकी संख्या; वेद। [-भणवा = वेदाभ्ययन जैसा भारी काम करना.]
- बेविमुं वि० वेर्देज्ञ; वेद पढ़ा हुआ(२) [ला.] अ्यवहारणून्य पंडित।[-डोर ≕पौथी पंडित; जो पंडित हो मगर व्यवहारदक्ष न हो;कोरा पंडित.]
- बेथ पुं० वेघ; छिंद्र; बेध (२) दौष; पाप (३) जरूम; वेधन; वेघ (४) बेधना; छेद करना; बेध (५) प्रहों

- आदिकी गति, समय आदिका पर्य-वेक्षण, निरीक्षण (६) सुतार या राजके काममें घास्त्रीय दोष (७) सूर्यग्रहण-के पहलेके जार और जन्द्रम्रहणके पहलेके तीन पहरके सूतकका समय (८) ढेष; डाह [ला.]
- वेधन न० वेधन;छेद करनेकी किया; वेधना(२)छेद करनेका औजार;वेधनी
- देवनी स्त्री० मोती, रत्न आदिमें छेद करनेकी बरमी; वेघनी(२)हाथीका अंकुषा; वेघनी
- वेषवुं स० कि० छेद करना; छेदना; बेषना(२)वींघना;बेधना;चुभाना
- वेषज्ञाला (-ळा) स्त्री० वेधशाला; अंतर-मंतर [जैसा कोई वाहन वेन (वॅ) न० बहना (२) बैलगाड़ी
- वेपार (वॅ') पु॰ व्यापार; ब्योपार।
- [-मांडवो = संसार-व्यवहार चलाना.] वेपाररोजवार (वॅं) पुरु व्यापारका कामकाज [घंघा-रोखगार
- वेपारवणज (वॅ′) पुं० बनिज-ब्योपार; वेपारी (वॅ′) पुं० व्यापारी; व्योपारी
- बेर (वें) न० वैर; घत्रुता (२) द्वेष; बैर; बुराई। [—स्टेब्रुं, वाळ्युं ⇔ बैर लेना; बदला लेना.]
- वेरणके (--डे) रण वि० तितर-वितर; अस्त-व्यस्त; छिन्न-भिन्न
- वेरभाव (वें) पुं० शत्रुभाव; द्वेष; बैर वेरी (वें) पुं० वेरी; शत्र
- वेरपुं सर्व किं० चीचोंको सितर-वितर करना; विखेरना (२) कैलाना; छिटकाना; विखेरना (२) [ला.] खूब पैसे खरवना
- बेराग (वें) पूं० वैराग्य; बैराग
- वेरामी (वें) पुंध बैरागी; बाबा

<u> </u>		
q	a	ų

चॅनन्

बेरान (बें) वि॰ वीरान; उजाड़ **बेरागुं अ**०कि० 'वेरवुं' का कर्मणि(२) बिक्रर जाना; तितर-बितर होना बेरी (वॅ) वि० बैर रखनेवाला; बैरी (२) पूं० दुश्मन; बैरी देरे (वॅ) अ० - के साथ; -- से (लग्न) वेरो पुं० कर; महसूल; 'टैक्स' बेस स्त्री॰ बेल; लता बेलज न० बेलन;बेलना 💿 फूल-पत्ता बेल्लबुट्टी स्त्री०, (--ट्टो) पुं० बेल-बूटा; बेला स्त्री० देखिये 'वेळा' (२) सीमा; मर्बादा; वेला (३) समुद्रतट; वेला (४) ৰাগী वेस्री स्त्री० बेल; लता बेलो पुं० बड़ी बेल, लता (२) वंश; ेबेल [ला.] । [-वालवो, वयवो = वंश बढ़ना; बेल बढ़ना.] [ बाली किलो रुं० स्त्रियोंका कानका एक गहना; **बेक्ट** वि० बेसलीका; चिसमें शकर ान हो (२) जिसके पेटमें बात न<sub>-</sub>पचे (३) विह्नल; व्याकुल 🗸 स्विहर्म (वा') पुं० समधी **वेवाज** (द्या'; प')स्वी० समधीकी स्त्री; 🚊 [ तिलक सम्भिनः सम्भन देविकाळ (वॅ') न० सगाई; मॅंगनी; बेस प्० भेस;पोशाक;पहनाया;वेश-भूषा (२) बदला हुआ भेस; रूप; वेष; स्वाम । (--जतारवो, काढको =- प्रोगाक बदलना (२) किश्वाका केश व्युदि सिंगार निकाल देना (३) वचनभंग करना; वादाखिरुफी करना;मुकर जाना । --करवो, काढनो, घरबो, लेवो = भेस बनाना; वेश श्रारण करना; रूप भरना;स्वांग बनाना । --काडवो, काढीके कभा रहेषुं, काडीमें बेसमुं =

वकस्मा	त् किस	ी का	मर्मे 🕯	त्र्धाः व	ार्छवा ;
<u>ক্</u> তক্ব	वीषम	र से	खड़ा	हो	जाना;
बीचमें	टॉंग	সহ	ाना ।		रल्यो =
दूसरे प	क्षमें ज	π मि	लना.	]	
शवारी	ৰি  ম	हप ३	रनेवा	ला;	स्वाँगी ;

- वेशघारी (२) ढोंगी; घूर्त (३) पुं० ठग बेशवाळ न० देखिये 'वेविशाळ'
- वेष, वेषधारी देखियें 'वेश' आदि
- वेसण न॰ बेसन (२) बेसनका घोल वेसर(-रो) स्त्री॰ बेसर (नाकका गहना) [(३)बिल;छेद
- बेह पुं॰ नेष; छेद (२) नाका; छेद बेळ स्त्री॰ वेला; समय; बेला (२) ज्वार; भाटाका उलटा। [-वळबी = दशा सुधरना.]
- बेळ (वॅळ,) स्त्री॰ नसोंका तनाव या ऐंठन; मरोड़ (२) फोड़े-फ़ुंसी या किसी भावकी पीड़ासे शरीरके संधि-स्थानमें होनेवाली गाँठ; गिलटी (३) मनकी तरंग; खब्त; धुन। [--आववी ≃ शरीरकी नसोंका तन जाना (२) धुन सवार होना। --धालवी = फोड़े-फुंसी या धावके दर्दके कारण गिलटी होना.]
- वेळा स्त्री० वेला; समय; बेला (२) विलंब; देर (३) [ला.] वेला; सास अवसर; प्रसंगविशेष (४) आफ़तका समय; विपत्काल। [--वटबी = समय गुखर जाना। --वळवी == भाग्य फिरना; दिन फिरना। --वेळानी छांयडी = जीवनके उतार-चढ़ाव, अस्तोदय.]
- वेळु स्त्री० वालू; रेत
- **बेंगच** (वॅ०) न० बैंगन; भंटा
- बेंगणी (बॅ०)स्त्री० वेंगनका पौधा;बेंगन
- बेंगणुं (बें०) न• बेंगन; भंटा

चेंस

- रेस (वॅ०) स्त्री० बालिश्त; बित्ता (२) पुं० युक्ति; मौका; घात; काल; पेच; उदा० 'द्या वेंतमां फरो छो?'(३)अ० 'किसी त्रियाके होनेके साथ-साथ तुर्त' ऐसा अर्थ दिखाता है; ही; उदा० 'जतांवेंत'। [-साबो, बेसबो=मौका मिलना; घात लगना। --भोंय न सूझबी = कोई उपाय न सूझना; दिमारामें या घ्यानमें न आना। --मां फरवुं = घातमें फिरना; ताकमें यूमना; घातमें रहना]
- **वैज्ञानिक** वि॰ विज्ञान-संबंधी; वैज्ञा-निक (२) पुं० वैज्ञानिक; विज्ञानी **वैड**़ पूं० बिवाई
- वेद्यं न० देखिये 'वरडु'
- **वैतर्ड**न० थका देनेवाँला या उकता देनेवाला काम; रगड़ (२) बेगार (काम) (३) मेहनताना; भजदूरी वैतरो पुं० थका देनेवाला काम करने-
- वाला; अमजीवी; मेहनतकश; मजदूर (२) कड़ा परिश्रम उठानेवाला; कष्ट-साम्य काम कर सकनेवाला
- बैद पुं० वैद्य; वैद; बैद
- वैदक न० वैंदका पेशा; बैदई (२) चिकित्साशास्त्र; वैद्यक [वैद्यक वैदकीय वि० चिकित्साशास्त्र-संबंधी;
- **बैबुं** न० वैद्यका पेशा;बैदई; चिकित्सा-व्यवसाय । [--**करवुं** ≕ किसीको पीटकर राह पर लाना; सीघा करना ]
- बैशाल पुं० वैशाख; बैसाख
- **वोक्छो** पुं० छोटा झरना; नाला
- **बोट** पुं० बोट; मत [अघिपत्र
- वोरंट न॰ वारंट; वारंट-गिरफ़्तारी; बोळाववुं(वॉ) स॰ कि॰ विदा करना बोळावियो(वॉ) पुंक विदा होनेवाले

व्यक्तिके साथ जानेवाला पथप्रदर्शक; 'गाइड'

- वॉकसो (कॉ०) पुंध देखिये (वोकळो ) व्यक्ति स्त्री० किसी भी भर्ग या समूहका एक जन;व्यक्ति(२)जन;व्यक्ति (२) म्यक्त, प्रकट होनेकी किया; व्यक्ति
- व्यक्तिवाब पुं० वह वाद जिसमें सामा-जिक विचारमें व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व दोनों महत्त्वकी चीजें हैं
- व्यसीपात पु० एक योग; व्यतिकत; म्यतीपात(२)भारी उपद्रव या उत्पात; म्यतीपात
- व्यसीपालियुं वि० उपद्रवी; उत्पाती व्यवहार पुं० व्यापार; कारबार; पेशा;
- व्यवहार (२) बर्ताव; आचरण; व्यवहार (३) लोकरीति; प्रथा; व्यवहार (४) आपसमें लेने-देने, आदान-प्रदानका संबंध
- व्यवहारगणित न० व्यवहारमें–दुनियाके कामोंमें काम आवे ऐसा गणित (२) व्यवहारगणित; 'प्रेक्टिस' [ग.] (३) गणितका मौखिक सवालः [ग.]
- व्यवहारसिद्ध वि॰ व्यवहारमें प्रचलित बना हुआ; प्रचलित; व्यवहारी
- व्यवहारी वि० व्यवहार-संबंधी;व्याव-हारिक
- व्यवहार वि॰देखिये 'वहेवारु'; व्यवहार्य व्यसन न॰ व्यसन; बुरी आदत; लत (२)नशा करनेकी आदत(३)दु:ख;
  - संकट; व्यसन(४) आफ़त; जोखिम (५) नाश; व्यसन। [--पडवुं=ज्यादा
  - आदी होना; चसका पड़ना (२) मादक पदार्थका आदी होना ]
- व्यसनी वि० किसी बुरी भोजेका आदी; व्यसनी; आदी

_	•		
÷.	C	K,	

## **शकरपारी**

- व्यंडस (-छ) पुं० नपुंसक; हिअड़ा व्याज न० ब्याज; सूद (२) बहाना; मिष;व्याज (३)ठगाई;व्याज; छल । [-काढवुं = ब्याजका हिसाब करना । -कापवुं = सूद काट लेना; सूद मिनहा करना । स्पूर्व क्याज = [ला.] संतानकी संतान । क्षाप्युं व्याज = कटौती किया हुवा सूद । वक्रवृद्धि व्याज = सूद दर-सूद; चक्रवृद्धि.]
- म्पाकसाउ वि० म्पाजसोर; सूदसोर म्पाकसाव(--च) स्त्री० रूपयोंका लेन-देन न होनेसे या अवधिसे पहले चुकता होनेसे होनेवाला सूदका घाटा; म्पाजका बट्टा
- व्यालकोर वि० व्याजखोर; सुदखोर
- व्याजमुद्द ति वह रक्तम जिसमें मूल और सूद शामिल हो;सूदके साथका मूल
- **व्याजवटुं** न० व्याज और दलालीका पेशा;महाजनी; साहकारा
- व्याखु(० डु)वि० सूद पर लिया हुआ या दिया हुआ ; सूदी
- म्यापदुं सर्वेकि०;ँव० कि० व्याप्त होना; किसी चीजके अंदर फैल जाना; व्यापना(२)पसरना;फैलना

- व्यापार पुं० व्यापार; प्राणी या पदार्थकी किमा; काम (२)कारबार; पेद्या; व्यापार; दाणिज्य (३) उद्योग; उद्यम; व्यापार
- व्यापारी पुं० व्यापारी; व्योपारी
- व्यास पुं० व्यास (मुनि) (२) द्वाह्यणोंका एक अल्ल (३) मोटाई; दिस्तार; व्यास (४) केन्द्रसे होते हुए परिधिके दोनों छोरों तककी दूरी; व्यास; 'डायमीटर' [ग.]
- भ्यासजी पुं॰ व्यास मुनि (२) [ला.] लोगोंको (महाभारतकी) कथाएँ सुनाने-वाला ब्राह्मण; कथावाचक; व्यास
- क्यासपीठ स्त्री॰; न॰ वह स्थान जहाँ वक्ता या कथावाचक खड़ा रहता है या बैठता है; मंच
- तत न० द्रत; पुण्यके विचारसे करनेका धार्मिक कृत्य, अनुष्ठान, नियम आदि (२) अमुक करने न करनेका वार्मिक निष्चय; द्रत। [⊷ झ्यबम् = द्रतका उद्यापन–पूर्णाहुति करना। – रेष्मुं = कोई धार्मिक कार्य करनेका संकल्प करना; द्रत ग्रहण करना.]

### য

श पुं० ऊष्मवर्गका प्रथम वर्ण इसक पुं० शक; वहम; शंकाः इसक पुं० एक प्राचीन जातिके लोग; शक (२) संवत् (३) शकसंवत् शकतुं न० रेशा; सुतड़ा [संदिग्ध शकदार वि० जिस पर शक पड़ता हो; शकन, शकनियाळ देखिये 'शुकन' आदि

शकमंब वि० संदेहमें पड़ा हुआ; शकवाला; संरायप्रस्त शकरखोर(--रो) पुं० एक पक्षी; शकरखोरा(२)मीठी चीजें खानेका शौकीन; शकरखोरा शकरटेटी स्त्री० एक फल; स्नरदूजा शकरपारी पुं० शकरपारा

बाकारियुं.	१७१ सम्ब
सकरिष्ठं न० एक कद; शकरकंद शकरी स्त्री० क्षिकरेकी मादा ककरो (०वाव) पुं० शिकरा (२)[ला.] पक्का उठाईगीरा, उचक्का सकवर्ती वि० जो शक प्रवर्तित हो; युग- प्रवर्तक; स्मरणीय शकवुं अ०कि० समर्थ होना; शक्तिमान होना; सकना (२) संभव, मुमकिन होना; सकना (२) संभव, मुमकिन होना; सकना (२) संभव, मुमकिन होना; सकना (२) संभव, मुमकिन होना; सकना शकुन न० शकुन; सगुन; अगुन (२) पक्षी; शकुन ! [-जोवा == शकुन देखना, निकालना, बिचारना !थवा, खेवा == गुप्र सगुनके रूपमं मान्य करना; सगुन होना.] शके अ० मानो; गोया; जैसे शकारटटेटी स्त्री० देखिये 'शकरपारो' शकारटटेटी स्त्री० देखिये 'शकरपारो' शकारटटेटी स्त्री० देखिये 'शकरपारो' शकारटटेटी स्त्री० देखिये 'शकरपारो' शकाररदेटी स्त्री० देखिये 'शकरपारो' शकार स्त्री० शकल; शक्ल; रूप ! [-फरी जवी, बदलाई जवी = स्वरूप, चेहरा, गुण-धर्म आदि बदल जाना; सूरत विगड़ना.] शक्काबार वि० शानदार चेहरेवाला; डीलदार (२) मोहक; प्रतिभासंपन्न; शान्दार शक्यो पुं० देखिये 'शिक्को' (२) सुन्दर, मध्य मुखाछति; सूरत–शक्ल (३) (गहने आदिकी) चमक शक्तिसम्ला स्त्री० शक्तिमान होनेका माव; शक्तिम्ला; सामर्थ्य शक्यवेद पुं० कियाका शक्यार्यसूचक दाच्य[ब्या.] [रूप,संगावलार्थ[ब्या.] शक्यार्थ पुं० शिक्यां हान्यार्थस्राका	ससस पुं. सस्स; व्यक्ति; आदमी ससस पुं. सस्स; व्यक्ति; आदमी सस्सो पुं. देखिये 'ल्झोटी' (२) देखिये 'शक्को' न. २, ३ शप स्त्री. (दीयेकी) ली; दीपशिखा शगदी स्त्री. बगिठी ! [-माथे लेबी, बहोरची = जन्यका डांडाट अपने ऊपर ले लेना; पराई आगमें कूदना.] सगराम पु.; न. देखिये 'शिगराम' सच न. सनका पौधा; सन (२) उसकी छालके रेशे; सन मचपार पु. शरीरकी शोभाके लिए जलंकार, गहने आदि; सिंगार; श्रुंगार सचपार से राज्य कि. श्रुंगार करना; सजाना; सँवारना; सिंगारना[प.](२) गहने पहनना [फूटना,अंकुर उगना शणमार्यु स. कि. अंकुराना; अंखुआ शण्यां न. सनका कपड़ा; शाण; सनिया शत पु. सत्त; सौ शतक न. शतक; सौका समाहार(२) शताब्दी; शती; सदी; शता (२) सी सालोंका उत्सव सच्चव् स्त्री. शतुदा; दुरमनी; बैर झनि पु. हानि (प्रह) (२) शनिवार (३) नीलम; हानिप्रिय ! [-नी दशा च त. सय.] शब न. सव; लाश; मुरदा धाम्य पु. शब्द; ध्वनि; आवाज (२) बोल; वचन (३) शब्द (वाक्यमें बाया हुआ सार्यक पद) [ब्या.] ! [-करवो = आवाज करना । -काढवो = बोलना;आवाज निकालना । वे झम्ब
For Private and	Personal Use Only

 -
-

.

### शहेनसत्त

<b>कहेवा, बोलवा</b> == सिफ़ारिश करना	মহলিৰু বি॰ হাসিবা ; স্তজ্সিব;হার্সেবা
(२)सीख देना या उलहना देना.]	<b>शरवुं</b> वि० तीक्ष्ण, तेज क्रानका
शमवुं अ० कि० बुझना; शान्त होना;	शरसको पुं० शिरीष; सिरीस; सिरस
ठंडा होना (२) नष्ट होना; मिटना	(पेड़)
समळो स्त्री० एक पक्षी; चील	<b>शरादि(चि)यां</b> न०ब० व० श्राद्ध-पक्ष
शमियामो पुं० शामियाना; तंषू; खेमा	<b>शराप</b> पुं० शाप; सराप; बदहुआ
शयतान पुं० ग़ैतान; इबलीस (२)	<b>धाराफ पुं० सराफ़; महाजन</b> ; साहूकार
षदमाश; दुष्ट; शैतान [ शैतानी	<b>शराफी स्त्री</b> ० सराफ़ी; महाजनी;
श्रयतानियत स्त्री० बदमाशी; दुष्टता;	साहूकारा (२) वि० सराफ़-संबंघी (३)
शरण न० शरण; सहारा; आश्रय;	विश्वसनीय; शरीफ़ [ खोरी
रक्षण । [क्षरणे आवतुं 🛥 शरणमें आना;	<b>शराबसोरी, शराबवाजी</b> स्त्री० शराब-
शरणागत होना.	<b> शराव (०ऌं)</b> न० सकोरा; चपनी;शराव
वरणाई स्त्री॰ शहनाई [शरणागत	शरीगत वि० हिस्सा रखनेवाला;शरीक;
भरणागत वि० शरणमें आया हुआ;	साझी(२)साथी; सहायक; बेली; शरीक
<b>शरणुं</b> न० शरण; आश्रय [प्रतिज्ञा	<b>ारीफ</b> वि॰ शरीफ़; कुलीन <b>; ऊँ</b> चे
शरत स्त्री० शर्त; होड़; बाजी; करार;	षरानेका (२)प्रतिष्ठित; आबरूदार;
धरती वि॰ शर्त-संबंधी; शर्ती; शर्त-	शरीफ़ (३) पुं० (बड़े शहरका) 'शेरीफ़'
वाला (२) किसी धर्तं या प्रतिज्ञापर	शरीर न० शरीर; देह
आश्रित; शर्ती [ शरदपूनो	<b>शरीरविद्या</b> स्त्री० शरीरकी रचना
शरबपूनम स्त्री० शरत्पूणिमा,कोजागर;	आदिका शास्त्र; 'फिजियोलोजी'
शरबी स्त्री० सदीं; ठंड; जाड़ा (२)	<b>शरु</b> न० एक पेड़; सरो; सर्व
जुकाम; सदी [सरफोका	🛛 <b>शरू</b> वि०प्रारंभ किया हुआ ; चालू ; शुरू
<b>शरपंखो</b> पु० एक वनस्पति; शरपुंखा;	<b>शङ्गात</b> स्त्री० शुरू; प्रारंभ; पहल
<b>शरबत</b> पु०; न० शरबत; शर्बत	<b>शलावड्रं</b> न० देखिये 'शरावलुं'
<b>शरवती</b> वि॰ हलके,ओछे रंगका (२)	<b>शल्या</b> स्त्री० पत्थरकी पटियाँ; सिल्ली;
स्त्री० शरबती (कपड़ा)	<b>হিাল্য</b>
<b>शरम</b> स्त्री० शरम; शर्म; हया; लज्जा	<b>शस्त्रकिया</b> स्त्री० शस्त्रकिया, चौर-फाड
(२)प्रतिष्ठा; लाज; इस्खत; राम (३)	<b>शस्त्रप्रयोग</b> पुं० चीर-फाड़; 'ऑपरेंशन
लानत; धिक्कार	चहुळी स्त्री० फूलका एक पेड़; शेफा-
<b>शरमाववुं</b> स०क्रि० 'शरमावुं'का प्रेरणा-	लिका
र्थक(२) शरमाना ; लज्जित करना	वाहीब नि॰ (२) पुं॰ शहीद
<b>शरमावुं</b> अ०क्रि० लज्जित होना; शर-	बहीबी स्त्री० बहीद होना; बहादत
माना;लजाना (२)झेंपना; खिसियाना	काहूर न० राऊर; सलीका; ढंग
ज्ञरमाळ वि० लज्जाशील; शर्मीला;	<b>कहेनशाह (श्हें)</b> पुं० शाहंशाह;सम्राट्
शमऊि; शमस्ट्रि	<b>क्षहेनज्ञाहत (श्</b> हॅ) स्त्री० साम्राज्य

शाकपांचवुं म० साय-पात; साय-काजी शाकवजार स्त्री०; न० सब्बीमंडी शाकवजार स्त्री० साय-भाजी; सब्बी; तरकारी (२) [ला.] छोटा; सुज्छ; साम (समझना) शाकाहार पुं० शाकाहार शाकाहारी वि० (२) पुं० शाकाहारी; 'वेजिटेरियन' शाके अ० शक-संवत्के अनुसार
शाकवजार स्त्री०; न० सब्बीमंडी शाकवजी स्त्री० साग-भाजी; सब्बी; तरकारी (२) [ला.] छोटा; तुज्छ; साग (समझना) शाकाहार पुं० शाकाहार शाकाहारी वि० (२) पुं० शाकाहारी; 'वेजिटेरियन'
तरकारी (२) [ला.] छोटा; सुच्छ; साग (समझना) झाकाहार पुं० शाकाहार झाकाहारी वि० (२) पुं० शाकाहारी; 'वेजिटेरियन'
साग (समझना) झाकाहार पुं० साकाहार झाकाहारी वि० (२) पुं० साकाहारी; 'वेजिटेरियन'
शाकाहार पुं० साकाहार शाकाहारी वि० (२)पुं० साकाहारी; 'वेजिटेरियन'
<b>शाकाहारी वि०</b> (२) पुं <b>० शाकाहारी;</b> 'देजिटेरियन'
'वेजिटेरियन'
शाके अ० शक-संवतुके अनुसार
<b>शाख स्त्री० साल; लेन-देन-संब</b> भी
एतनार या प्रतिष्ठा; इज्जत (२)
अल्ल; उम्रजाति (३)देखिये 'साक्षी' ।
[पडवी = प्रतिष्ठा होना; आवरूका
प्रभाव पड़ना (२) अल्लका नाम
पड़ना । –्यूरबी = गवाही, साख देता,]
वाखा स्त्री० शाखा; डाली;वाख(२)
भाग; अंश; शाखा
वागरित (-व), झागिर्ब पु० झागिर्व;
शिष्य (२) सहायक; पिट्ठू
ज्ञाण पुं० शाण; सान (पत्यर) (२)
न॰ चार माशेकी एक तौल;शाण
शाणकुं न॰ सकोरा; कसोरा (२)
मिट्टीका भिक्षापात्र; सोपड़ा; सप्यर
शाणप स्त्री॰, (॰ण) न॰ संयानायन; चसुराई
शार्जु वि० सयाना; समझदार ।
[शाणी शिपाळ = बाहरसे समाना
नौर भीतरसे कपटी। बा <b>मी सीता</b>
🗢 🛲 सीता जैसी सयानी और विनयी
लड़की या स्त्री.]
झाम स्त्री॰ ज्ञान; ठाट; ठंसक (२)
रूप; शान;देखाव; छटा
<b>शामबार</b> वि० शानवार; सुगठित; सुग्दर
(२) शानदार; भव्य; गौरवशाली
काम पुं० वाम; बदेदुआ

6-.

श्रत्पर्वु

ः धार्षे

श्रस्पव्	¥@¥
शस्यभुं स॰कि॰ साप देना; सरापना [प.]	माहजो
शाबाश अ० शायाश; मन्य; याह	सच्चा
शाबाझी स्त्री० शाबाशी; बन्यवाद;	करनेव
सराहना [शामी;सामी	शाहमृग
झाम स्त्री० मूसलकी लोहेकी सामी;	লাছী বি
शामवुं अ० कि० शान्स होना	साम्रा
<b>शामळ (-ळियो)</b> पुं० श्रीकृष्ण; सौब-	भाही र
लिया; श्याम	যাচীপু
<b>बामळुं</b> वि० सौवला; काला; श्याम	भाषता
शामळो पुं० श्रीकृष्ण; सौवलिया	जन (
सामियानों पूं० देखिये 'शमियानो'	(३)
<b>शार</b> (शा') पुं० छेद; सूराख	भाष्ट्रकार
<b>सारडी</b> (शा') स्त्री० छेद करनेका	ईमान
<b>अौजार; वर</b> मा	धानुवी
कारको(शा') पुं० बढ़ा बरमा (२)	भाहेव प
बहुत पानीके लिए कुएँके तलमें छेद	चाहेवी र
बहुत पानीके लिए कुएँके तलमें छेद करना या जमीनमें पाइप उतारकर	पुं० इ
कुर्झा बनाना; 'बर्ेरग'	<u>वाहेर</u> प
<b>शारणुं</b> (शा') स॰ कि॰ छेद करना;	<u>काहेरी</u>
छेदनाः, बेधना (२) ताना मारनाः,	कविस
कोसना [ला.]	चाळ स
<b>शाल</b> स्त्री० शाल; ऊनी चादर	शाळा र
शासनुशाला पुं० व०व० सम्मानार्थ दिये	ণাতাম
जानेवाले पगड़ी, शाल-दुशाले वादि	नाळोपय
कासन न० कासन;दंड;सजा(२)अमल;	योगफ
राज्य; हुकूमत; शासन (३) आज्ञा;	कांति स
हुनम (४) उपदेश [ शासनतंत्र	कियाव
<b>सासनतंत्र न</b> ० राज्यतंत्र;शासनव्यवस्या;	या यु
<b>सासनपद्धति</b> स्त्री० शासनप्रणाली	निःश≢
शाह पुं० मुसलमान राजा; शाह;	मानसि
बादधाह (२) सराफ़ (३) प्रामा-	शमन;
णिक, प्रतिष्ठित व्यक्ति; शरीफ़ (४)	आदिन
चोर (व्यंग्यमें) (५) बनियोंका एक	सनकी
अल्ल [ जीरा; काला जीरा	मारम
शाहजीर न० एक वौषघि; स्याह-	≕ तृषि

सच्चा;ईमानदार (२) (संदेह निवारण
करनेके बाद) सकारने योग्य (हुंडी)
साहमृग २० एक पक्षी; शुतुरमुर्ग
शाही मि॰ शाह-संबंधी; शाही (२)
साझाज्यका; साझाज्यसे संबद्ध
प्राही स्त्री० स्याही; रोशनाई
धाहीजूस पुं०;न० स्याहीजूस; सोख्ता
धा <b>हुकार</b> पुं० साहूकार; सराफ़;महा-
जन (२) सञ्चा, ईमानदार व्यक्ति
(३) (व्यंग्यमॅ) घोर; घूर्त
साहुकारी स्त्री ०लेन-देन आदिमें सचाई;
ईमानदारी; सचाई
शाहुवी स्त्री० एक जानवर; साही
माहेर पु० गवाह; शाहिद
गहेबी स्त्री० गवाही; साहिदी; सहादत
पुं० शाहिद; गवाह
गहिर पुं० शायर; कवि
गाहेरी स्त्री० कवित्व; कविपन (२)
कविसा; शायरी
सळ स्त्री॰ शालि; धान
गळा स्त्री०मकान; शाला; गृह(२)
पाठाशाला; मदरसा
गळोपयोगी वि० विद्यार्थियोंके उप-
योगका; शालोपयोगी
गति स्त्री॰ झान्ति; वेग, कोभ या
कियाका अभाव (२) क्लेश, क़ज़िया
या युद्धका अभाव; शांति (३)
निःशम्दता; खामोशी; सूनापन (४)
मानसिक या शारीरिक उपद्रवोंका
शमन;काम, कोघ, रोग, पीड़ा, ताप
आदिका शमन; शांति (५) घीरता;
मनकी स्थिरता,स्वस्थता (६) विश्वाम;
आराम; निवृत्ति; शान्ति। [ <del>ववी</del>
≕तुप्ति होना (२) युद्धादिका न
- • • •

त्रातपाठ

Sec. 4.	
XUM	

#### <u>चिमालो</u>

होता; शान्ति होना; निश्चित होना।
-वळवी = क्षांति होना; निश्चित
होना; युद्धादिका न होगा.]
<b>शांतिपाठ</b> पुं० शांतिके लिए किया जाने-
ৰাজা ম'ব-পাठ; হারি-ৰাখন
<b>शिकरामन</b> न॰ (हुंडी) सकारना(२)
हुंबी सकारनेका बट्टा; सकारा
ग्निकरावधुं स० कि० 'शिकारवुं'का प्रेरणार्थक
<b>शिकरावुं</b> अ०क्रि० 'शिकारवुं'का कर्मणि ;
स्वीकार किया जाना; संकरना
सिकल स्त्री० शकल; शक्ल; चेहरा
सिकाकई स्त्री० सीकाकाई
किकार पुं० शिकार; मूगया; आखेट
(२)मारा हुआ पशु-पक्षी; शिकारका
जानवर; शिकार (३) [ला.] बलि;
भोग; भक्ष्य; शिकार । [ववुं ==
किसीके फंदेमें फेंसना; किसीका
किसीके फंदेमें फेंसना; किसीका शिकार होना; किसीके राषादिकी
बलि होना (२) - से मात होना;
-से पराजित होना ; उदा० 'वासनानो
शिकार बन्यो'.] [सकारना ( <b>हुंबी</b> )
<b>शिकारवुं</b> स० कि० स्वीकार करना;
<b>क्षिकारी (-र)</b> वि॰ शिकार-सम्बन्धी
(२) शिकार करनेवाला; शिकारी
(३) पुं० शिकारी; पारघी
किकोतर (-री)स्त्री० पीछा न छोड़ने-
वाली भूतनी
<b>शिकोतरं</b> न० पीछा न छोड़नेवाला भूत
शिक्कल स्त्री० देखिये 'शिकल'
जिल्के अ० साथ; सहित; समेत
शिक्षण न० शिक्षा; पढ़ाई (२)सीख;
তদইহা ; হিন্ধা
<b>जिलणपद्धति</b> स्त्री० शिक्षा देनेका ढंग;
शिक्षा-पडति; किक्षा-प्रणाली

<b>য়িৰপথালে</b> ব০ ফি	ধাগমান্দন ; যিধা-
যাংস	[ গিধ্যামাৰগী
হিলেপহাল্মে পুঁ০	शिक्षणशास्त्री ;
<b>शिला</b> स्त्री० शिला	; ज्ञान; बोच;
सीख (२) सजा; दंड	(३)एक वेदांग;
शिका	[ पट्टी (पढाना)
शि <b>लवणी</b> स्त्री० बह	कामेवाली सीख;
<b>য়িজনাত্ব</b> জ০ কি০	देखिये 'शीखबबुं'
(२) बहुकानेवाली	सीख देना; कान
भरता; उभाइना;	पट्टी पढ़ाना [ला.]
<b>शिखंड</b> पुं० दही औ	र श <del>क्क</del> रके योगसे
बनाया जानेवाला <b>ए</b>	रक खाद्य पदार्थ;
श्रीसंड	51 1
<mark>য়িলা</mark> ম্বী০ যিলা	; चोटी; चुटिया
(२)तुर्रा; शमला(	<b>২)</b> লী; যিৰো
शिसाउ वि० नौसिख	आ; नौसिखिया;
सीसतर (२) वि	निः अनुमवका;
बेतजरबेकार	-
<b>शिखामण</b> स्त्री० सिंग	बावन; उपदेश;
िशिक्षा; सबक़ । [	
सीख लेना; उपदेेश	
<mark>शिगराम</mark> पुं०; न० एव	
सवारी; शिकरम;	
<b>जिफारस</b> स्त्री० देखि	ये 'सिफारस'
<b>क्षिवर</b> पुं० तंबू; शि	विर(२)छावनी;
<b>মি</b> ৰিয <sup>ँ</sup>	[ খাভ
<b>शियळ</b> न० स्त्रीकी प	वित्रता; सतीत्व;
মিয়া বি০ থীনা (ন	<b>पु</b> सलमान)
<b>মিযাৰিয়া</b> বি০ ঘৰৰ	गया हुआ; हक्का-
बक्का (२) झेंपा ह	
शियाळ पुं०;स्त्री०(	
सियार; गीदड़	

शिषाळु वि० आड़ेमें होनेवाला

शियाळो पुं० सर्वीका मौसम; जाड़ा

÷

In Contraction	xot i	वी क
बिर न० शिर;सिर(२) किसी नीवक	। <b>दिास्त वि०</b> लायकः; योग्य (२) <del>र</del>	গী০
सर्वोच्य अंश, भाग; शिर; बीर्ष		
शिखर (३) सेनाकी आगेकी पंथित		ालन
शिर। [आपर्षु = प्राण निखाव		
करना; जान देना; सिर देना।	- शिस्तबद्ध वि० नियमबद्ध	
<b>उपर लेवुं =</b> जिम्मे लेना; सिर लेना	। 🛛 हिंग्ग स्त्री० फली; छीमी; शिंगी	
-कापवुं = सिर कोरे उस्तुरेसे मूंड़ना	; किंग न॰ देखिये 'शिंगडुं'	
नमकहराम होना; ठगना.]	<b>र्शिगडी</b> स्त्री० छोटा सींग(२)ब	াক্ষ
विरिषोर वि० सरजोर; सरकश; उद्		गिड़ा
शिरबोरी स्त्री० सरकोरी; जबरदस्त		जा ;
विरसाज पुंक्ताज; राजाका मुकुट (२	) सींग;सींगी। [दिगडां भराय	ववां,
बुज्रुर्ग; सिरताज [ ला. ]	<b>भाडवां =</b> लड़नेको तैयार हो	না;
<b>शिरपेच</b> पुं० पगड़ी या फेंटेका ऊपर <del>व</del>	<sup>ग</sup> सामने होना।यई जबुं =- (श	रीर)
शमला; चिल्ला; सिरपेच	सींगकी तरह तन जाना (२) व	टंडसे
शिरमोर पुं० साज; (सिरका) मुकु		
(२)जो सर्वश्रेष्ठ हो; सिरमौर	<b>शिगोटी</b> स्त्री० सींगका टेढ़ापन, व	
ि <b>झरस्तेवार</b> पुं० अफ़सरका मुख्य क्लर्व		-
सरिश्तेदार	सौंग निकलते हैं(४)मुलम्मा चढ़ा	
<b>शिरस्तो</b> पुं० सरिक्ता; रीति; रिवा		
<b>शिराई</b> (रा') स्त्री० सुराही (बरतन		
<b>चिरामण</b> (रा')न०,(-णी)स्त्री०नाक	· · · ·	
<b>बिाराववुं</b> (रा') स॰ कि॰ नाक्ता करन		
शिरोई(रो') स्त्री० देखिये 'शिराई		(२)
शिरोबिंबु न० सर्वोच्च बिंदु या स्थान		
्शिरस्; शिखर(२) 'वर्टेक्स' [ग.]	राकिली, दोकी स्त्री॰ बैलके मुं	
<b>दिल्लाजित न</b> ० शिलाजीत; सलाजी	-	
<b>धिलारोपण न०</b> शिलान्यास	इफ्रिंडुंन० छीका; सीका। [	
<b>ছিলেন্টেন্ন</b> দুঁ০ ছিলেন্টেন্ন; ছিলেন্টিলি		
<b>शिव वि॰ मंगलकारी; शुम; शि</b>		
(२) पुं० महादेव; शिव (३) न कल्याण; मंगल; दीव	॰ रख छोड़ना; अभी हाथ पर लेना (३) गुप्त रखता.]	र न
विषयरात(त्रि,त्री) स्त्री० शिवराति		
<b>विव्यूडी</b> स्त्री० छोटी सीटी	<b>कोख</b> स्त्री०सीख;सिखादन (२)	विदा
कि <b>जूढो</b> पुं• सीटी; भोंपा; भोंपू	करते समय दिये जानेवाले 🥤	-
যিচন্দুলি ধ্বাও ভাববৃন্নি; নথায়		

-	

### হ্যুকলিৰাক

रक्सत । [-आपवी = रुखसताना या	
बिदाई देना. ]	1
क्षीया पुं० लोहेकी नोकदार आधी	,
खोखली सलाख; सीख (बोरेमेंसे नाज	
निकालनेकी) [सिख;सिम्स	
शीख पुं० सिक्ख संप्रदायका अनुयायी;	1
धीखबबुं स०जि० सिलाना,पढ़ाना (२)	1
[ला.]पट्टी पढाना;कान भरना;उभा <b>ड्ना</b>	
भीखवावुं अ०कि० 'शीखववुं'का कर्मणि	
शीलवुं स॰ कि॰ सीखना; पढ़ना;	
कान प्राप्त करना	
शीले अ॰ समेत; साथ	۱
शीडवुं स॰ कि॰ बंद करना;	1
पाटना; पाट <b>कर बंद करना (छे</b> द,	
दरार आदि) (२) कुछ चीज भीतर	i
रख कर बंद करना (लिफ़्राफ़ा)(३)	
(कर्ज) अदा करना, चुकाना	_
शीतल वि॰ शीतल; ठंडा; सर्द	1
शीतला, शीतलातातम देखिये' शीतळा';	l
'शीतळासातम'	
शीसळ वि० देखिये 'शीतल'	1
क्रीतळा स्त्री० शीतला; चेचक (रोग)	
(२)चेचक रोगकी अधिष्ठात्री देवी;	
হ্যীরন্তা (३) ষি॰ स्त्री॰ হ্যীরন্তা।	1
[काडवा, टॉकवा = चेचकका टीका	1
लेगानाः] शीतळासातन स्त्री० श्रावण धुक्ला या	
भारत्वात्तरतम स्ताव त्यावण गुप्छा या भाद्रपद कृष्णा सप्तमी; एक त्यौहार	1
माद्रपद कुण्णा सप्तमा, एक त्याहार शीयळो पुं० थूहर, झाड़-संसाड आदि	
रात्मळा पुण् पूर्र, साइन्ससङ् जाव उठाकर लानेका लकड़ीका एक साधन;	•
कांटा [काहे[प.]	
काटा [काह[पः] इसीव (०मे) अ॰ मयों; किस लिए;	
क्रीबी पुं० हबशी जातिका आदमी;	1
हबशी सिधा	
જેવના સિંહવા	,

झीखं न० भोजनकी कच्ची सामग्री;

कीणकत (-- 20दे) पुं० एक पेड़; सेमल कोरीन वि० सीरीं: मीठा इतिदंन० किसी आटेका घीरे जैसा घोल; घोला (२) जलेबी आदिका लमीरवाला घोल दिखिये 'शीरु' धीरो(शी') पं०हलवा; हल्आ (२) **बील** न० शील; स्वभाव (२) व्यव-हार; चाल-चलन; शील(३)चरित्र; चारित्र्य; शील(४)देखिये 'शियळ' (५)वि० स्वभाववाला; शील (समा-समें); उदा॰ 'दानशील' शीशम न० सीसम (पेड़) **ज्ञीशी स्त्री० शीशी:बोतल ।** [--संवाहवी = चीर-फाडके लिए क्लोरोफ़ार्म देना.] **शीशो** प्ं**० वड़ी बोतल ; शीशा । <mark>| भौशा-</mark>** मां उतारबुं = धोखा देकर वशमें कर लेना; शीशेमें उतारना.] कीळ म० देखिये 'शील' क्षीळवंत, घीळवंतं, शीळवान वि० क्षील-वान; शीलवतु; नेकचलन शीळवा पं०, शीळस न०, शीळी स्त्री० एक चर्मरोग; शीतपित्त; जड़पित्ती; ਧਿਜੀ सितम' **शोळीसातम** स्त्री० देखिये 'शीतळा-**शीळं वि०** शीतल: ठंडा क्रीळो पं० छांह: छाया र्जीकली स्त्री० देखिये 'शीकली' **जींकी** स्त्री० दोनों या पत्तलोंकी बौधी हई गड़ी (२) देखिये 'शीकली' **इॉंकुं** न० देखिये 'शीकू' ) आदि र्सीम (०डी, ०ड, --गोटी ) देखिये 'शिंग' **शींगोदी (---------------------------------**देलिये) ' शिगोडी '; 'যিঁশাৰ্' सगन झुकन न०देसिये 'शकून' (२) अच्छे **धुकलियाळ**ं वि 🖉 संगुनवाला

शुकर ४	અટ ના
गुकर पुं० शुक; शुक्रिया; उपकार मानना (२) सौमाग्य; खुशकिस्मसी (३) सफलता; फ़तह। [-गुझारवो, (-था) = कृतक्षता प्रकाश करना; शुक बजा लाना; शुक अदा करना] शुक रवार पुं० देखिये 'शुक्लार '(२) सलीका; ढंग; शऊर(३) जान; माल; बरकत धुक्करवारी स्त्री० शुक्रवारको लगने- वाला बाखार; गुजरी; हाट शुक पुं० शुक्र (प्रह) (२) शुकवार (३) न० वीये; शुक शुक्कार पुं० शुक्रवार; शुक (२) [ला.] सलीक़ा; जान; बरकत; माल; शरुरा पुं० शुक्रवार; शुक (२) [ला.] सलीक़ा; जान; बरकत; माल; शरुराई करना; कार्यसिद्धि करना; माग्य फेरना !पवो, बळवो == बर- कस या जान आना; लाम होना; अच्छे दिन आना; माग्य पलटना.] शुक्ल वि० सुक्ल; श्वेत; सफ़ेद (२) पुं० बाह्यजॉका पुरोहित (३) बाह्य- णोका एक अल्ल [पाख; सुदी झुक्लपका पुं०; न० शुक्लपक; उजाला शुद्ध वि० शुद्ध; साफ़; निर्मल (२) पवित्र; शुद्ध (३) निर्दोष; शुद्ध (४) विना मिलावटका; खालिस; असली; सुद्ध (५) स्त्री० देखिये 'शूध' शुद्धि स्त्री० शुद्धि; पवित्रता; स्वच्छता; सफ़ाई (२) प्रायस्कित्त रक् पवित्र- शुद होना; अंतःशुद्धि (३) वमांतर	للله होश आमा; होशमें आना । करकी = धर्मांतर करनेवालेको संस्कार द्वारा पुनः मूल धर्ममें लाना (२)पुनः हिंदू- धर्ममें लाना.] [वका) धुद्धिपत्र (०क) न० शुद्धिपत्र (किता- धुसार पुं० शुमार; अंदाजन्; लगभग धुसार पुं० शुमार; अंदाजन्; लगभग धुल्क न० शुल्क; स्त्रीधन (२) क्रन्धाके मूस्यके रूपमें वरसे लिया जानेवाला द्रव्य; शुल्क; कन्याशुल्क (३) मूल्य; कीमत (४) माड़ा; किराया (५) कर; महसूल; शुल्क: द्युं स० क्या; प्रदनवाचक सर्वनाम; उदा० 'शुं क्षाधुं?; शुं लाव्या?'(२) क्या; बेपरवाई या तुच्छकारसूत्रक प्रहनवाचक सर्वनाम; उदा० 'ते मारं शुं कोळवानो हतो?; ताराधी शुं याय तेम छे?' (३) वि० कौनसा; क्या; प्रदनवाचक सार्वनामिक चिशे- घण; उदा० 'ते शो पदार्थ छे?' (४) क्या; आक्षत्यंसूत्रक प्रहनवाकक विशेषण; उदा० 'सो रोफ!' (५) प्रदर्नार्धसूत्रक विशेषण; क्या; उदा० 'सो विद्यार छे?; 'सी वात छे?' (६) कितनेक प्रयोगोंमें 'कुछ' या 'क्या' जैसा वर्थ सुच्ति करसा है; उदा० 'शुंनुं शुं यई गयुं!' (७) क्यान्या; उदा० 'सो नामके जतमें आता है); उदा० 'तोबराशुं मों ' (९) अ० प्रइनसूत्रक शब्द;

मुंब

**सूदं**वि० शूर; पराक्रमी

न्नेहा

सुंह पुं॰, (हा) स्त्री० सूँह; शुंड	ল্ৰ
र्षुंडी पुं० शुंडी; हाथी	উ
र्घुंय बि॰ कुछ; क्या (अनिश्चितार्थ	(
सूचित करता है); उदा० 'शुंय कहणुं	(
हरो ने शुं समज्यों' [ बक्का	জুল
भूबमूद वि० मूह; जडवत्; सुन्न; हक्का-	-J
धूर्ण स्वी॰ होश; सुध-बुँघ; चेत।	ভ
[-आवबी = चेतनायुक्त होना; होशमें	_
आना.] [(२) बुद्धि; समझ	হার
भूषवूच स्त्री० सुध-बुध; होश-हवास	৾য়
<b>शून</b> (न,) स्त्री० शून्य; सुझा; सिफ़र।	च
[-मूकवी = रद्द करना; काटना.]	হাঁশ
गूनकार(न,) पु॰ निस्तब्धता; सन्नाटा;	হাৰ
सुनसान; निर्जनता (२) (चित्तकी)	হাৰ
धून्यता; शून्य अवस्था; चित्त सन्न	ፍ
हो जाना 🦷 [बिलकुल मौन	भ
<b>भूनमून</b> वि० सन्न; स्तब्ध; जडवत्;	ग
भूम्य वि॰ शून्य; खाली; रिक्स (२)	ল
असत्; मिथ्या; झूठ (३) अचेत; बेहोश;	चोस
बेसुघ; संज्ञाहीन (४) रहित; शून्य;	हर
उदा० 'ज्ञानशून्य' (५) न० शून्य;	अं
सिफ़र (६) अभाव; शून्य। [-मूकवुं	হাজ
= रद्द करना; काटना.]	হাৰ্জ
<b>भून्यहृबय</b> वि० हृदयशून्य; कूर;	হাত
निष्ठुर; हृदयहीन (२) शून्यमनस्क;	(२
बेष्यान; अन्यमना	म
<b>शूर</b> वि० शूर; वहादुर; वीर; पराक्रमी	ए
(२) पुं० सूरवीर; शूर (३) जोश;	হাতা
आवेश। [-आववुं, चढवुं, छूटवुं ==	ন্নতা
शूरताके जोशमें आना; शौर्य सवार	ষ্টবি
होना (२) जोश आना; सनक सयार	হায
होना.] [वीर व्यक्ति; हिम्मती	घा
<b>झूरवीर</b> वि० (२) पुं० शूरवीर;	चेर
<b>ञ्चरातन</b> न० शौर्य; पीरुंष; पराक्रम	গ
• •	-

त न०.एक शस्त्र जो भाषा, बरछा रेसा होता है; गुरू (२) सूली;शुली ३) त्रिशूल; शूल(४) कंटक; कौटा ५) एक वातप्रकोपजन्य वेदना; शुरु ठ न० देखिये **शुरू(२)स्त्री० कौटा ।** --**ऊपडवुं, फूटवुं ≕**कौटा चुभनेकी सी पीड़ाका होना; जूल उठना । -वागवी = शरीरमें कौटा चुभना.] ठी स्त्री० सूली; **गूली ।** [**–आपची,** ाूळो**ए चडाबचुं, ⊶देवी** = सूली पर ढाना.] गरनुं स० कि० सिंगारना; सजाना 🖪 पुं० सेंकनेकी किया; सेंक हवूं स० कि० आग पर पकाना, ब्डाया लाल करना; सेंकना (२) नना (३) शरीरके किसी अवयवको रम करना; सॅकना (४) |**सा.**] लाना; सताना; कष्ट पहुँचाना ाच(—स)ल्ली पुं० शेखचिल्ली: वाई क़िले बाँधनेवाला व्यक्ति (२) गलसी और तरंगी आदमी गई, शेखी स्त्री० शेखी; घमंड रिस्रोर वि० शेस्रीसोर; शेसीबाज पु॰ सेठ; साहकार; धनाढप; महाजन २)बनिया (३)(नौकरका)मालिक; ाक़ा; स्वामी(४)व्यापारी आदिका क संबोधन (५) एक अल्ल **ाई** स्त्री० सेठगीरी; सेठपन ाणी स्त्री० सेठ या सेठकी स्त्री;सेठानी ज्यो पुं० सेठ; साहकार (शे′) स्त्री० धारा;धार(२) [ला.] ⊺र जैसा नोकदार भाग; शंकु कदुं(शे') वि० तुरतका दुहा हुआ ; धारोष्ण (दूध) शेहा पुं० व० व० रेंट; सेढ़ा [प.]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

जे ह

रे हो ¥20 **क्षेडी** स्त्री० खेतका कम भौड़ा किलारा **शेरामण** न०; स्त्री देसिये 'छेरामआद' क्षेडो पुं० खेतका किनारा जहाँ जुताई झेरियुं न० सेर वजनकी नाप (पात्र) धोरियो पुं० सेर वजनका बाट; सेर नहीं होती और वास उगती है;किनारा **झेरी** स्त्री० गली; कुचा(२)मुहल्ला श्रेतरंज पु० एक खेल; शतरंज जोरीको पुं० सेरका बाट; सेर **क्षेतरंबी** स्त्री ०रंग-बिरंगी दरी : क्षतरंजी झेतान पं० देखिये 'शयतान' क्षेरो (शॅरो')पुं०अर्जी आदि पर अफ़सर-का लिखा हुआ रिमार्क;टिप्पणी;टीका **कोतानियत** स्त्री० शैतानी; दुष्टता शेतानी वि० शैतान; नटखट; शरीर **क्षेलडी** स्त्री० देखिये 'क्षेरडी'; गन्ना **शेलायं** न० देखिये 'शेलो' स्त्री० शैतानी; शरारत; बदमाशी क्षेस्ती स्त्री० चक्तमक्कसे आग सूलगानेकी धोतूर न० शहतूत; तुत्त (फल और पेड़) बोरी; सोख्ता **शेर** पं० एक तौल–मनका चालीसवौँ **शेली स्त्री० राख; भ**स्म भाग;सेर (२) शेर; बाघ;सिंह(३) **होखूं न० जरक**का दुपट्टा; कक्षीदेदार चीता । [---बचुं = शेर होना; हावी उपरना; सेला (२) (अमुक जातिकी) होना; सरजोर होना। -- फोही चडवुं= विधवाके पहननेकी एक खास साड़ी संतोष, आनन्द होना; बाग-बाग होना; (३) जरकश अंचलवाला स्त्रियोंका बाईं खिलना । --सुंठ साबी = --में एक कीमती वस्त्र बोर होना; -में बुता, सामर्थ्य होना.] शैलो पुं० वह रस्सी जिससे दुहते समय **होर (हॉ) स्त्री० होर; क**विता; प**द्यां**श गायकी टॉंगें बाँधते हैं; नोइनी; नोई क्वेंर पं० कोयर; हिस्सा (२) कोयरकी झेव स्त्री० सेथ (बेसनकी) (२) सनद या दस्तावेज सेंदई: सेवर्ड: सिवई (गेहेंकी) शोरकी स्त्री॰ ईस; गन्ना; ऊल (२) **झेबममरा** पुं० ब० व० वह चुबेना छोटी पतली पगडंडी जिसमें सेव और मुरमुरे मिले हुए हों शेरबो पुं० पगडंडी; पगरस्ता (२) (बार्म आदिके कारण) चेहरे पर **झेवाल (--ळ) स्त्री**० सिवार; सेवार; काई । [--वळवी == काई जमनाः] लाली दौड़ना (३)आँसुओंकी लड़ियोंके शोवाळवुं स० कि० पैसा पैदा करमा; सूखे हुए निशान(४)धकधकी ; खटका ; कमाना;खटना (२) सफलतापूर्वक पूरा हौल (५) शीतल जल पीनेसे गलेसे पेट करना;कार्य-सिद्धि करना तक होनेवाला उंडकका असर सॅरहलाल पुं० शेयरदलाल; दलाल बोबुं वि० ढालू; ढालवौ (२) न० आहा कर्ड (जोताईमें) इॉरबजार न० शेयरोंके लेन-देनका रोच वि० शेष; बचा हुआ; अवशिष्ठ; बाखार; शेयरबाजार **झेरवामी(--नी)** स्त्री० शेरवानी बाक़ी (२) पुं० दोष; कोषनाग (३) बाक़ी बची हुई चीज ; शेष (४) स्त्री० **झेरखूं** ब० कि० देखिये 'छेरखुं' प्रसाद; देवताको न्वढ़ाई गयी बस्तु; **ज्ञेरा**न०एक पक्षी शेष (५) भागकी बाकी; शेष [ग.] सेराढो पुं० देखिये 'छेरंटो'; गर्द

झेहूं (धें) स्त्री० हराना; दबाना; मात `[प.](२)दाब; प्रभुत्व; रोब; नियंत्रण;

अंकूश (३) शतरंजमें सादशाहको

दी गयी किश्त; शह (४) पतंगको

धीरे-धीरे डोर पिलानेकी किया;ढील देना: शह। [-आपबी, देवी == शह देना:

किश्त देना (शतरंजमें)। --आवयी,

पडवी, लागबी = दबनां; शहमात

होना;ं शहका असर होना।⊸कार्म

🖛 🛲 बिलकुल डर जाना; भीगी

बिल्ली बनना। –छोडषी, भुषयी =

क्वेळो पु० एक प्रकारका जतुः कौटाचुहा

र्शे (शॅ०) अ० किस कारण; काहे [प.];

शोक (शॉक,) स्त्री० स्रौत; सपत्नी

**शौक** पुं० शोक; दिलगीरी; मृत्यू-

शोक (२)मृत्युके बांद मालम् मनानेका

ठोकाचार । ∫ –करवो, घरवो =

गम करना; शोक करना । **\_पाळवो** 

= शोक करना; मातम मनाना]

शोकीन (शॉ) वि० शौकीन; छैला

शोंख (शॉ) पु० शौक; प्रबल इच्छा;

शोसी (०न, ०लुं) (शॉ) वि० शौकीन;

शौग पु० शोक; मातम; सोग [प.] शोगटाबाजी स्त्री० एक खेल; चौसर;

कोगही स्त्री॰, (--टुं) न॰ गोटी; गोट

**क्षोणिमुं** वि० शोक करनेवाला; क्षोक-पूर्ण; क्षोकी (२)क्षोक-सूचक; मातमी

(३) न० मातमी बंस्त्र, साड़ी

अरमान; रुचि (२) मौज; मोग-

शोकियुं न० देखिये 'सोंगियुं'

क्यों (२)किसलिए (प्रश्तवाचक शब्द)

पतंगको शह देना; ढील देना.

कोक(शॉ) पुं० देखिये 'शोख'

<b></b>
-

¥٢	ł
----	---

हीषण होष पुं० घोष; होक (२) जिली; फ़िक; घोच (२) पछतावा; सोच शोषना स्त्री० देसिये शोच'; सोच होषणुं स० कि० धोच, होक करना (२) सोचना; बिचारना होष पुं०;स्त्री० होंघ; सोज; तलादा;

अन्वेषण(२)क्षोजी हुई चीख;आविष्कार **शोधकोळ** स्त्री॰ क्षोजना ; तलाश करना

(२)आविष्कार करना

शोबचुं स०कि० खोजना;शोधना;तलाझ करना (२)पेरखना; जांच करना (३) शुद्ध करना; शोधना; साफ़ करना (४) नयी बात खोज निकालना; नयी चीज बनामा; बाबिष्कार करना

- **शोमंशोघा, शोमाशोध** स्त्री० सीज पर स्रोज (करना)
- शोभवुं अ०कि० शोभित होना; सुम्दर लगना; सुहाना; फेबना (२) शोमा देना; ⊷के लायक होना; छाजना; जेबा देना
- शोभा स्त्री० सुन्दर देखाव; सौंदर्य; शोभा (२) शान; प्रसिष्ठाः [लर]। [--आयबी = शोभा देना;खेबा देना। --लेबी = आनन्दका सुख भोगना(२) यक्ष प्राप्त करना;यश/मान कमाना.]-
- शोभोतुं न० सुन्दर लगनेवाला; शोभाय-मान; शोभायुक्त; सुहावना
- शोर पुं० शोर; कोलाहल
- शोरक्कोर पुं० शोरगुल; कोलाहल
- कोष पु० सूखने या जलहीन होनेका भाव;सूखना;प्यास;कोष।[-पडवी
- = प्याससे गला सूख जाना.]
- शोषण नं० सोखनेकी किया; सुखानेकी किया; शोषण

गु. हिं--३१

विलास; ऐश

चौपड़

छिला

(चौसरकी)

स्रोम्म्	४८२ स्वानु
सौमतुं स॰ कि॰ सोखना; अरन करना	भीजी पूं० (आदरार्थ ब० व०) प्रभु;
सौदायुं अ॰ कि॰ 'सोयवु' का कर्मणि;	विष्णु (२) स्वामीनारायण संप्रदायके
सुखना; जलहीम द्वोना	प्रवर्तक श्री सहजानन्द स्वामी
शोच न० शोच; शुदि; पविवता;	वीफळ न० नारियरु; श्रीफल । [वायपुं
स्वच्छता (२) मढ-स्याग द्वारा घरीर-	= छुट्टी दे देना; वरतरफ करना.]
घुदि;पाखाने जाता । [चवं =-पाखाने	मरिलंत वि० श्रीमंत; धनी; लक्ष्मीवान
जाना; मल-स्यायके लिए जाना.]	(२) राजाओंके चामके पूर्व लमाया
झीचकूप पुं० संबास; पाखाना	जानेवाला शब्द [अग्रह
इमधान न० ध्मधान; पसान; मरघट	धीलंताई स्त्री० श्रीमंत या घनी होनेका
ध्मधानियो पुं० मुरदेको कघे पर उठा-	भूतलेखन न० श्रुनकर लिखना; बोल्कर
कर मसानमें ले जानेवाला; कंघा	लिकाना; इमछा; 'डिक्टेशन'
देनेवाला [तकलीफ़; झम	इवसन न० श्वसन; सौंस लेना (२)
धम पुं० श्रम; थकान (२) मेहनत;	पवन; वायु; श्वसन
घमजीवी वि० शारीरिक परिश्रम कर	इवसर्षु स० कि० सौंस लेना; जीना
जीविका चलानेवाला; श्रमजीवी	व्यसिल वि० श्वास द्वारा लिया हुआ
(बुद्धिजीवीका उलटा); मजदूर मबख पुं० बौद्ध या जैन संन्यासी भववुं स० कि० श्रवण करना; सुनना भाषक वि० शुननेवाला; श्रावक(२) पुं० बौद्ध भिक्षु; जैन संन्यासी; श्रावक मावल पुं० श्रावण; सावन (मास) । [	या छोड़ा हुआ; श्वसित (२) हॉफा हुआ (३) म० श्वास; श्वसित श्वास पुं० श्वास; सॉस; श्वसित (२) दम; हॉफा; श्वास (३) वर्णका एक बाह्य प्रयत्न [व्या.] [~कपडवो = वेगपूर्वक श्वासोच्छ्वास चलना; सौस उखड़ना;साँस चढ़ना; हॉफना (२) आसन्नमरण होना;
करना; आठ-आठ आंसू रोना.]	साँस अपरको चढ़ना।साथो ⇒
श्री पुं० मंगल-सूचक सब्द जो किसी	दम मारना; साँस लेना; मुस्ताना।
लिखावटके आरम्भमें प्रयुक्त होता है	घूंटषो = साँस रोकना; दम
(२) 'श्रीमान्', 'श्रीमती' का संसेप	साधना; साँस चढाना। -घेरावो =
(नामके पूर्व आदरायं जोडा जाता	दम धुटना; साँस ऊपरको चढ़ना
है);श्री (३)छः रागोंमें से एक राग;	(२) दिल लगना; विख्वास संपादित
श्री (४)स्त्री० लक्ष्मी;श्री (५)शोभा;	होना।घडवो = साँस चढ़ना; साँस
सौन्दर्य; श्री (६)त्रिवर्ग धर्म, अर्थ	फूलना(२)दमेका इंगला होना।वहार
और काम;तीन पुरुषार्थ;श्री। [गणे-	काडतां लगी = आसिरी दम तक;
झाय नगः = थी गणेशको नमस्कार	मरते दम तक। ⊶मूकवो = आराम
(२)पुं० ब० व० आरंभ; भीगणेश.]	करना; दम मारना (२) मर जाना;

10.00

_			- A
		ς.	671
-	ς.	1.1	
•	~		

<b>बस</b> ्प्रता होना। - सेथोः	=साँस केना
(२)विश्वाम करना;सुरखान	
स्वासनछी स्त्री के बहु नाव	ठी जिसके

द्वारा साँस फेफड़	में जाती है	; ग्वास-
प्रमाली	± + .	[ ऋवास
त्रवासोण्स्यास, त्रवा	सोच्यास पुं य	व्यासो-

#### स

- स पुं० जन्मवर्गका तीसरा वर्णे (२) यह नामके आरंभमें आकर सह, सहित, साथ ' या कहीं-कहीं ' समान ' वादि अर्थ बताता है; ভৰাণ 'सकुंटुंब; सपिंड; सजाति; समोत्र' स एक पूर्वगः; यह शब्दके आरंममें आकर 'सु, अच्छा ' आदि अर्थे बताता है; उदा॰ 'सजात; सपूत' **सई** पुं० दर्जी; दरजी सईस पुं० साईस सफटम वि० देखिये 'साकटम';सपरिवार सकडवुं स० फि० जकड़ना; कसकर बौधना; कसना सकरकंब न० सकरकंदी; शकरकंद सकरटेटी स्त्री० देखिये 'शकरटेटी' सकरपारो पूं० देखिये 'शकरपारो' सकर्मक वि० सकर्मक (किया) [व्या.] सकर्मी वि॰ भाग्यशाली; मसीबंदार **सकल (–ळ)** वि० सकल; सब;समस्त सकंचो (--को) पुं० शिकंजा (यंत्रणा देनेका यंत्र) (२) कसकर पकड़ने, दबानेका यंत्र; शिकंजा (३) [ला.] पकड; क़ाबू; शिकंजा सकाम वि० कामनायुक्त; सकाम
  - (२) फलाकांक्षासे कार्य करनेवाला; सकाम; फलासक्त (३) स्वार्थी; खुदग्रर्ज

- सकार पुं० ठंग; सलीका (२) स्वाद; आयका (३) (किसी पदार्यका) सार; सत; सत्व (४) 'स' अक्षर या उसकी ब्वनि; सफार। [-भाषयो = अच्छा बनना; कोई चीब रसोत्पादक बने ऐसा करना; जमना.]
- सकारो पुं० वह लकड़ी या फट्टी जो तानेके तारोंको व्यवस्थित रसनेके लिए सूतमें ढाली जाती है; सुतारा सक्नुदुंब वि० सपरिवार; सक्ल
- सक्कई वि० टकसाली; प्रमाणभूत; बढ़िया क़िस्मका; खरा; जो बनावटी न हो (२) सुन्दर; मजेदार
- सक्करसोर पुं० देखिये 'शकरसोर' सक्करटेटी स्त्री० देखिये 'शकरटेटी' सक्करपारो पुं० देखिये 'शकरपारो'
- सपगरपारा पुण दाखय शकरपारा सक्कस वि॰ अच्छी तरह कसा हुआ; खूब सींचा हुआ; जकड़बंद (२) सस्स; मजबूत
- सरकाई वि० देखिये 'सक्कई'
- सक्कावार वि॰ देखिये 'शक्कादार' सक्को पुं० देखिये 'सिक्को' (२) लेव-देन संबंधी इतबार या प्रतिष्ठा; साख; छाप; असर; प्रभाव (३) रोब; दबदवा; सिक्का (अमना) (४) शक्ल-सूरत; चेहरा (५) खेलनेकी परष्यरकी गोटी, योली

र के के संस



सज स्त्री०; न० चैन; सुख; आराम; करार। [--पडवं = शांति या चैन होना; करार पाना। --वळव् =- वैन, क़रार पाना; शान्ति मिलना.] सक्तणुं वि० नरम स्वभावका; सीघा; सरल (२) जो शरीर, नटखट,उपद्रवी न हो; जो चुलबुला न हो; अचंचल सत्तत वि० सस्त; सखत; कड़ा (२) दुढ़; मजबूत; सखत (३) निर्दय; कठोरहृदय; कड़ा; सख्त (४) थका डालनेवाला; घोर; कड़ा; कठिन (५) हवसे ज्यादा; भारी; गजबका; उदा० 'सखत भीड' (६) तेजा; तीखा; उग्र; सस्त (७) जोरवार; -आन्नहयुक्त; उदा० 'संसत भलामण' ·(८) मृद्दिकल; भारी। [--सजा ≂ कड़ी क़ौद।–हाथदे≕ क़ैद-सख्त ; कड़ाईके साथ; सख्तीसे] सन्तली स्त्री० सुखतला; पाताबा सलताई, सलती स्त्री अस्ती; कड़ापन (२) जुल्म; कठोर व्यवहार; सख्ती

(२) प्रतिबंध; रोक | [--गुवारवी, बायरवी = कड़ाई करना; सख्वी करना.] [हो गया हो; शिथिल सखळडखळ वि०ढीला-ढाला; जो ढीला सखावत स्त्री० सखावत; दान (२) उदारता; सखावत

संसावती वि॰ सखी; दानी; उदार (२) सखायतका; खैराती

सक्की वि० सखी; दानशील; उदार। [--नो लारू = बहुत उदार स्वभावका आदमी; दरियादिल आदमी ]

ससी स्त्री० ससी; सहेली ससुन पु० देखिये 'सुखन' [आदि सस्त (-स्ताई,-स्ती) देखिये 'सखत' सर्ग स्त्री० (दीयेकी) ली; दीपशिखा सगढ पुं०; स्त्री० समाचार; खेंबर; टोह(२)चोरका पदचिह्न (३) पीछाँ सगढग वि० अस्थिर;डाँवाडोल; उगमग सगडगो पुं० अस्थिरता; अनिश्चितता (२) संदेह; अनिश्चय

सगडी स्त्री० देखिये 'शगडी'

सगण पुं० पीछा [सगाई; मँगनी सगपण व० सगापन; खूनका नाता (२) सगराम पुं०; न० देखिये 'शिगराम' सगवड स्त्री० व्यवस्था; सुपास;सुभीता; अनुकूलता। [--जोबी = किसी चीजका इंतजाम होगा या नहीं यह सोचना। - पडसुं = अनुकूलताके अनुसार; जो रास आये या अनुकूल हो; मुआफ्रिक] सगवडियुं वि० जो रास आये; मनो-नुकूल; जैसा चाहिये वैसा

सगेवाड, सगाई स्त्री॰ देखिये 'सगपण' सगासांई न० ब० व० सगे-सम्बन्धी; रिक्तेदार

सगोर वि० सगीर; नाबालिग

सगुं वि० एक ही खूनका; जिससे विवाह आदिके कारण संबंध हो; सगा; निकट संबंधी (२)न० संबंधी;रिश्तेदार; सगा सगुंबहालुं वि० सगा; संबंधी; रिश्तेदार सगुंसंबंधी न० सगे-संबंधी

सघळुं वि० सकल; सब; सारा

सचराचर वि० जिसमें स्थावर-जंगम सभी हों; सचराचर(२)अ० सब जगह;

सर्वत्र [(२) अ० चिताके साथ सचित वि० चितायुक्त; सचित; चितित सचोट वि० अचूक; जो चोट पहुँचा सके; खाली न जानेवाला; शतिया; पुर-असर (२) अ० चूक न जाय इस तरह; प्रभावपूर्वक; अचूक

_	- C
- <b>T</b>	

सच्चाई स्त्री० सचाई; उज्बापन (२) ईमानदारी; सच्चाई सच्चुं वि० सच्चा; ईमानदार; खरा सकड वि० कसा हुआ; जकडबंद; सख्त; दुढ़;मजबूत(२)कठिन;मुश्किष्छ;भारी;

सस्त (३) सस्त चिपका, सटा या जुड़ा हुआ (४) अकड़ा हुआ; जकड़ा हुआ। [-- मई जर्चु झ मर जाता; टन हो जाना (२) हनका- वनका हो जाना; स्तब्ध, सन्न रह जाना; सन्नाटेमें आना; जड़वत् हो जाना । -- वाप ⇒ वड़ी मारी चोरी। -- रेज्रुं = खूव धमकाना; फटकारना.]

सजनी स्त्री० सजनी;सहेली (२) प्रिया सजवुं स० कि० घारण करना; सजना

(२)अलंकृत करना; सजाना;सँवारना

(३) युढादिके लिए तैयार करना; सजाना { अञ्चपूर्ण; सजल सजळ वि० जलयुक्त; सजल (२) सजास्त्री० सजा;जुर्माना;अपराधका दंड सजात वि० सुजात; सुजन्मा; कुलीन सजाती,सजातीय वि० सजातीय;सजाति सजायो पु० उस्तुरा; क्षुर

सवावट स्त्री० सजना, सजावट; सजनेका तर्ज, पद्धति आदि; अलंकरण सजावार वि० सजा पानेका अधिकारी; सजायाब

सजीव वि० सजीव; जीवित; जिन्दा सबीवन वि० सजीव; जिंदा। [.-औवधि = हमेशा मढ़नेवाला और काटने पर भी सजीव रहनेवाला बुझ। --पाली = सदा बहनेवाला पानी; ब्रम्सूट पानी.]

सजीवुं वि० देखिये 'सजीव' 🤤 सजोडे अ० पति या पत्नीके साथ 🕁 ज्ञासोर

- सल्य दि० सज्ज; तैयार; लैस
- सल्जर वि॰ देखिये 'सजड'
- सज्ज्या स्त्री० सज्जा; शय्या (२) शय्या-दान [(२)पोशाक; सज्जा सज्ज्ञा स्त्री० कवच; बख्तर; सज्जा सट पु० समान चीचोंका समूह; सेट
- सट(०क) अ० सट-सट;जल्द। [-वईने, लईने = फ़ौरन; तुरत; सट-सट.]
- सटकवुं अ० कि० छटकना; पर्लायन करना; भाग जाना(२) धीरेसे खिसक जाना; सटकना
- सटकाबवुं स० कि० छड़ी आदिसे मारना; सटकाना (२) 'सटकर्वु'का प्रेरणार्थक
- सटरपटर वि० अव्यवस्थित; तितर-बितर(२)इषर-उषर;तितर-बितर; जहां-तहां (३) फुटकल; सटर-पटर (४)अ० बेतरतीब; अव्यवस्थित रूपमें
- **सटरपटरियुं** वि० सटर-पटर; अव्यवस्थित
- **सटवूं** अ० कि० देखिये 'सटकवुं <sup>"</sup>
- सटाक अ० 'सट-सट' वावाज करते हुए; सट-सट; सड़ाकसे (२) फ़ौरन; जल्द; सट-सट (३) स्त्री० सटाकी (४) सटाकीकी आवाज; सटाक; सड़ाक ! [-वईने, लईने = त्वरासे; जल्द; सट-सट (२) 'सट-सट' आवाज करते हुए; सट-सट.] [फ़र्राटेसे सटाकावंघ अ० तुरत; बीझतासे; सटाको पुं० कोड़ेकी आवाज; सटाक; सड़ाक (२) कोड़ा; सटाकी
- सटोडियो पु० सटोरिया; सट्टेवाज सटोसट अ० लगातार;सड़ासड़;बिना रुके सट्टासोर वि० बीडोंका सट्टा-सौदा करनेका आदी; सट्टेबाज,

सहासीरी	इंटेइ सतामणी
सट्टासोरी स्त्री० पीओंका सट्टा – सौदा करनेकी लव	सब पुं० परिः, बादबान
करनेकी लत	सणको पुं० वह दर्द जिसमें कौटासा
सट्टी पुं० सट्टेवाजका सौदा; सट्टी 🐇	भुभता ही; शूल (२) [ला.] मनको
संह वि॰ संज्ञाहीन; जड़; ठस (२)	
चकित; विस्मित; भौचनका(३)अ०	
त्वरासे; सड़ासड़	<b>सभगार्थ्</b> अ० कि० देखिये 'शणगावुं'
संस्क दि० (२) ज० चकित; मौचक्का	सजगो पुं० देखिये 'शणगो'
(३)सड़ासड़; तेजीसे । [मई जब् =	: <b>মন্দদসৰু</b> অ০ কি০ 'মন-মন' হান্ব
हैरान रह जाना; भोचक्का, वकित	
ें होना.]े स	<b>सनसनाट</b> पुं० सनसनाहट
सडक स्त्री॰ सड़क	संजसार(-रो) पुं० देखिये 'बणसार'
संबन्धी पुरु देखिये 'सबढको'	(२) घोड़े, बैल जादिको बेगसे हॉकना;
ें <b>संबंधु</b> अ० कि० सड़ना; गलना (२)	टिटकारना; सटकारना (३) रुमाम
्र[ला.] भ्रष्ट होना; सड़ना	आदिको खरा सकझोरना, झटका देना -
सडसठ (ठ,) वि०सड़सठ; ६७	सत दि० सत्य; सच्चा (२) भला;
सडसडाट पुं० खौलनेकी आवाज; सन	
सनाहट; 'सड़-सड़' आवाज (२) अब	
फर्राटेसे; तेजीसे; सड़ासड़	भ० अस्तित्व; सत्ता; सत्त्व (६) सत्य;
सहाक अ०शी झतासे ; सड़ाकसे ; सट-सट	
सहाको पुं० चाबुककी आवाज; सहाक;	
सटाक(२)बीढ़ी या चिलसका कश;	=सच्चाईका जोझ उमड़ना(२)सती-
्रदम् (३) चभड़-चभड़। [-ताणवो	, त्वकी शक्तिका प्रादुर्भाव होना, प्रकेट
्रमारवो, लेवो = चिलम आदिका कश	
सींचना.]	होना; सत पर चढ़ना।वतावर्षु ==
सड़ासब अ० सड़ासड़; तेजीसे; लगाता	
् <b>संडियानां पान</b> (डि')न०ब०व० अरवीने	
पत्ते	सतत वि० अविच्छिन्न; जो लगातार
संबिधानी गांठ (डि') स्त्री० अरवी	हो; सतत (२) अ० हमेशा; सतत
सरियौ(डि') पु॰ अरवी; घुइया(२)	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
उसका पत्ता या उंडी	बह भाव जिसमें स्पिर न रहा जोय;
सहेडाट अ० वेगपूर्वक; तेजीसे; सड़	
सङ् आवाज करते हुए; विना विघन-	-
ৰাঘান্ট; নিৰ্বিচন	सतम पु॰; स्त्री॰ जुल्म; सितम
सबो पुं॰ सहन; बिगाड़ (२) अच्छा-	
चार; डराबी; विंगाड़ [ला.]	सतामणी स्त्री० सताना; हैरानी

2235	2.
सता	τ.

संग	ग्वारी
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

सतार पुं०; स्त्री० सितार	-मां आवर्षे = सत्ताघारी दननाः
संतारी पूर्व देखिंगे 'सितारी' । बेडती	शासन-सूत्र हायमें होना.]
हीवी=सितारा बुलंद होना; सौभाग्य-	सत्तावारी वि॰ सत्तांघारी
काल होना;अच्छे दिन होना । -पौजरो	सत्ताधिकारी, सत्ताबीवा <sup>ँ</sup> वि <sup>०</sup> जिसके
- <b>होबो</b> भाग्यका अनुकूल होना ; नसीब ल <b>ड़</b> ना:]	पास सत्ता और अधिकार हो (२) पुंब अधिकारी; अफ़सर
सतावणी स्त्री० देखिये 'सतामणी'	सत्तावान विर्णसत्ताधारी
सताबर्चु स०फि०सताना; परैकान करना सताबुं अ०.फि० समाना; जेंटना	<b>सत्तावार वि</b> ० प्रमाणितः; विंश्वस्तनाथः; प्रमाणभूत
सतांब पुं० समाई; निर्वाह; समाना	सत्तावाही वि० सत्तावाला; अधिकार-
सरित्रम् वि॰ सत्यवादी; सच्चा	युक्त; जो सत्ताका प्रभाव जमाये
सर्तु वि॰ सच्चा; सन्मार्गगामी (२)	<b>सलागु(गुं)</b> वि० सत्तामबे;सत्तानवे;९७
सतवाला; सत्त्ववान् (३) जिंदा; जीवित	सत्तामन वि० सत्तावन; ५७
(४) बलता हुआ; वर्तमान	<b>सत्ताबीस</b> वि≉ंसत्ताइस; २७
सतेज वि० (अधिक) प्रकाशयुक्त था	सत्तु पुं॰ सत्तू; सतुआ
सुलंगता हुवा (२) उत्साहयुक्त, सत्त्व- कील; उत्साही (३)सञग; होशियार;	सत्तो पुं० सात बूटियोंबाला ताशका पत्ता या पासा; सत्ता
संबंधान	सत्य वि० सत्य; यंगार्थ; सच; सरा
<b>सत्कारवुं</b> स० क्रि० स्वागतेसत्कार करना; सतकारना [प.]	(२)न० सत्य; यथार्थता; सञ्ची बत्ति सत्यान्नह पु० सत्य-पालनका आग्रह;
करना, चतकारना [५०] सल्कारसमिति स्त्री० स्वागत-समिति	सत्याग्रह (२) उसके द्वारा लडा जाने-
सत्तर बि॰ सत्रह;सत्तरह; १७। [-आना	ताला अहि्रक युद्ध (३) उसके निमित्त
ते वे पाई =चाहिये उससे भी बढ़िया;	भाषत जाहराम पुरु (२) उत्तर लागरा की गई सविनय अवज्ञा
गच गाइ⊶ गाह्य उत्तर गा नख्या, सर्वोत्तम । –जगाएँ ≕ अनेक स्थानों	सत्याप्रही वि० सत्याग्रह-संबंधी (२)
पर ।	सत्यान्नह करनेवाला; सत्यानही(३)पुं०
आदमी । <b>–वक्षत, बार</b> =बहुत दफ्रा;	सत्याप्रहका सहारा लेनेवाला;सत्याप्रही
गर-गर (२) अवश्य; जरूर.]	सत्यांगीश न० सत्यांनास; सर्वनाश; बर-
सत्ता स्त्री॰ मालिकी; स्वामित्व(२)	बादी । [-जवुं, बळवुं = निर्वश रहना
सता; अधिकार; प्रभुत्व(३) अमल;	(२) तहस नहस होना ।नी पाटी=
हुकूमत; शासन (४)बल; खोर (५)	पूरी पामाली; मलियामेट होना.]
अस्तित्व; सत्ता। [–भाववी ⇒ प्रभूत्व	सत्यांसी(-सी) वि० सतासी;सत्तासी;८७
प्राप्त होना;हुकुमत मिलना (२) कुवत	सबरन (
भाष होना; बीमारीसे उठनेके बाद	तितर-वितर; विखरा हुआ
शक्ति प्राप्त होना।-बालबी = हकूमत	संबन्धा पुंज साय; संग (२) काफ़िला
चलना; रोब जमना; धाक जमना।	(३) राजकी एक जातिका आदमी

समय :	४८८ सप्रयो
सबदुं वि॰ गाढ़ा; जो अधिक पतला न हो	सनंब, सनंबी देखिये 'सनुद' आदि
सदर वि० मुख्य; प्रधान; श्रेष्ठ; सदर;	सनान न० सगे-सबंधियोंकी मौद पुर
सर्वोच्च (२) पहले बताया हुआ;पूर्वोक्त	
(३)सब;कुल (सत्ता ; परवानगी) (४)	
न० प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान	
उच्चाधिकारीकी कचहरी; सदर;	= किसीकी मृत्युके कारण स्नान
सदरमुक़ाम (५) पुं० सभापति; सदर	
सदरपरवानगी स्त्री० सर्वाधिकार;	मौत पर मृत्युस्नानका संबंध होना.]
चाहे सो करनेका कुल इस्तियार	सनानसूतक ने स्नान-सूतक (२)
सरह वि० पहले बताया हुआ ; पूर्वोक्त	
सबरों पु॰ सबरी; फ़तूही	[-आवव, होव = मृत्यु-स्नान या सूलक
<b>सदवुं अ</b> ०कि० रास आना,अनुकूल होना	
सर्वतर अ० हमेशाके लिए; सदाके	
लिए (२) पूर्णतः; सर्वथा; बिलकुल	
सबा (०काळ) जा० सदा; हमेझा	सनेपात, सन्निपात पुं० सन्निपात; त्रिदोव
सबी स्त्री॰ सदी; शताब्दी (२)	सम्मानवुं स० कि० सम्मान करना;
सौ; सैकड़ा; सदी	सनमानना [प.] [र्थक;फॅसाना
सपेहे अ० सदेह; घारीरके साथ	<b>सपटादव्</b> स०कि० 'सपटावुं'का प्रेरणा-
स <b>मवा</b> वि०स्त्री० (२) स्त्री० सघवा	सपटाचुं अ० कि० फेंसना; उलझना;
समार्चु अ० फ्रि० 'साधवुं' का कर्मणि;	पकड़में आना; जकड़ा जाना
सधना; साधा जाना	<b>सपडाववुं</b> स० कि० 'सपडावुं' का
सम्बर वि० शक्तिशाली; सशक्त;	प्रेरणार्थक; फंदेमें लाना; फँसाना
मजबूत; मोटा (२) घनी । [आसामी	<b>सपडार्वु</b> अ० त्रि० फंदेमें पड़ना;
= मालदार व्यक्ति; मोटा असामी;	फँसना; पकड़ा जाना
धनी (२) रुपये-पैसेके मामलेमें सच्चा;	<b>सपनुं न</b> ० देखिये 'स्वप्न'
ईमानदार आदमी; खरा असामी.]	<b>सपरम्ं</b> बि० शुभ पर्ववाला ; मांगलिक,
तन स्त्री० सन; संवत्;सन् (सन् ईसवी;	<b>शुभ(दिन) [ तवाह; नेस्तनाबूद्र</b>
सन् हिंबरी)	सपाट वि० सपाट; हमवार(२)चौपट;
तनव स्त्री॰ सनद; परवाना	<b>सपाट</b> स्त्री० चपाट; सलीपर (जूता)
तनही वि० सनदी; सनदयाक्रता	<b>सपाटाबंध</b> अ० तुरत; सपाटेसे
सनमन अ० तीर या बंदूककी गोली	<b>सपाटी</b> स्त्री० किसी भी चीजका <i>बिल</i> -
छूटते समय होनेवाली आवाज; सनसन	कुल जगरका सपाट भाग; सतह
गम्सनाटी स्त्री० सनसनी; सत्राटा;	सपाटो पु॰ सपाटा; तेजी; स्बदा(२)
खलबली । 🔤 – फेलाई अवरे = सजाटा	तमाचा (३) चाबुकका प्रहार (४)
छाना.]	गप; मपोड़ा। [ सपाटामां आवर्षु =

समार्थुः	

erted.	
हत्ये चढुना; हाथ आना; पकड़में	बनना (२) अपनी नियोंषता या सफ़ाई
आना । –करबो, मारबो, लनाववो 🛥	पेश किये जाना.]
कोई काम रगढ़ इस्लना; आर	सफाईबार वि० साफ़; स्वच्छ; सुयरा
सारना । <b>–काकी नावा</b> वो ⇒ पोटना ;	सफाबट अ० सफ़ाचट; बिलकुल साफ़
वमकाना; सबक सिसाना]	सफाळुं वि० (अप्रत्याशित घटना आदिके
<b>सपादुं</b> न०आमार;एहसान(२)वसीला;	कारण)घबराया हुठा; हक्का- <b>वक्का;</b>
सिफ़ारिश । [-चडर्षु = एहसान होना ।	भीचनका (२) बिना सोचा हुवा;
-कागवुं = एहसानमंव होनेकी भावना	<b>अनची</b> ता
होना.] [मुनासिब ढंगसे	<b>सफील</b> वि० साथ-साथ लगा <b>हुआ, आया</b>
<b>सवारे</b> अ० ठीक; उचित रीतिसे;	हुआ (घर, जायदाद आदि) (२)
सपूच्ं वि० समूचा; पूरा; तमाम	स्त्री० रक्षणके लिए बनायी हुई रचना;
त्तपूत पुं० सपूत; कुलका नाम बढाने-	फ़सील; परकोटा
वाला (२) अच्छा पुत्र; सपूत	सर्फुन लंसफ़हा, पृष्ठ
सपूरत स्त्री० सिपुर्दगी; सौंपना	<b>सफेदी</b> स्त्री० सफ़ेद बुकनी, चूर्ण (२)
सपेर (पॅ)अ॰ ठीक; उचित रीतिसे	क्वेतता; सफ़ेंदी (३) चूनेकी पुताई;
सप्टेंबर पुं० सितंबर	सफ़्रेदी (४) अंडेका सफ़ोद मग़द;
सम्पद्य वि० चुस्त; तंग; चिमटा हुआ	अंडेकी सफ़ोदी
सफर पुं० सफ़र (हिजरी सन्का दूसरा	सफेवो पु० सफ़ेद चूर्य (२)सफ़ेदा (रंग)
महीना ) (२)स्त्री०ंप्रवास; सफ़र (३)	सफो पु॰ सफहा; पृष्ठ
जहाजका सफ़र; समुद्रयात्रा	सबक पुं०; न० सबक; सीख
सफरजन न० एक फल; सेव; सेव	सबजी स्त्री० भंग; सम्बी (२) साग-
सफरी वि॰ सफ़रका; सफ़री (२)	पात; सब्जी; हरी तरकारी
उड़ाऊ; खर्चीला (३) पुं० मुसाफ़िर;	सबजो पुं० मघआ (पौधा); मरबा
सफ़री (४) खलांसी; नाविक	सब्दको पुं० तरल वस्तु खाते समय
सफल(-ळ) वि० सफल; फलयुक्त;	निकलनेवाली आवाज; चभड़-चमड़
फलवाला (२) कामयाब; कृतकार्स;	सबब्बुं अ० कि० बासी पड़ा रहनेसे
सफल; सार्थक	बिगड़ जाना,उतर जाना (२) निठल्ला
सफा वि० सफ़ा; साफ़; स्वच्छ (२)	होकर बैठा रहना; बेकार धूमना;
समाप्त; पूरा; जिसमें कुछ बाक्री न हो	सङ्गा; बुरी हालतमें रहना [ला.]
सफाई स्त्री॰ सफ़ाई; स्वच्छता (२)	सबब् वि० सुगठित;मजबूत;सक्षम;समर्थ
निष्कपटता; सरलता; सफ़ाई(३)[ला.]	सबब पुं० सबब; कारण; हेतु (२)
क्षेसी ; बींग (४) सुथरापन ; टीप-टाप ;	अ० क्योंकि; कारण यह कि; सबझ
ठाट-बाट। [मारबी, हांकवी == शेखी	सबनदीन स्ती॰ सबमेदील 👘 👘
बधारना; ठींग मारना।मांची हाम	<b>सबर</b> स्त्री० (२) <b>अ०</b> देखिये 'सबूर'
न काढवो = अपने मुँह मियां मिट्ठू	<b>सबरस</b> ं म० नमक; सर्व-रस

2 °	
whether the local division in the local divi	
<b>.</b>	

- सबल (-छ, -छूँ) वि० सबल; बल्यान; मजबूत (२) खूब; अतिशय सबील वि० सबीज;वीजवाला;वीजयुक्त (२) सविकल्प (समाधिका एक प्रकार) सबूर स्त्री० सब्र; धीरज; सहन-धक्ति;
- संबर्र (२) अ० 'ठहरो; रुक जाओ ' इस मतलबका उद्गार
- सबूराई, सबूरी स्त्री० सत्र; धैर्यं । [--पकडवी, राखवी = सत्र करना; धीरज धरना.]
- संबोसब अ० तेजीसे; चटपट
- सभर वि० पूरी तरह भरा हुआ; भरपूर।[–भरबुं,सभरे भरबुं≔पूरी तरह मरना.]
- सभा स्त्री० समा; परिषद्;मजलिस (२) समा; लमिति; समाज; मंडली । [--मरबी =- समा करना; सभा होना । --मळवी =- जलसा होना; सभा होना.] सभाक्षोभ पु० सभामें खड़े होकर
- बोलनेमें संकोष
- सभागी वि० हिस्सेदार; सभाग
- समासद पुं० सभासद;सदस्य;'मेम्बर' सम्ब वि० सम्य; शिष्ट; भद्र;सम्मा-
- सौगन्ध दिलाना । -साथा, लेवा = कसम खाना; शपब लेना.]
- .सम वि० सम; एकस; सवृश; समान (२) तालका खारंत्र-स्पान; सम (संगीतमें) (३) संगीतका एक अलंकार; सम
- समचरी स्त्री॰ प्रतिवर्ष आनेवाली मृत्पुतिथि; श्राद्धदिन (२) उस दिन की जानेवाली किया; सादकर्म

सम्पीरस वि० (२) पुं० आत्य सम-चतुत्रुण; मुरम्पा; वर्न समस्र (०म) स्वी० देसिये 'समचरी' समस (०म) स्वी० समझ; अक्ल; बुद्धि; ज्ञान; होध; सयानापन (२) आपसमें किया हुआ समझौता; करार;आक्सी

- समझ । [-ना करणां आव्युं ⇒ होश सँमालना; वयस्क होना; तमीज, व्यवहार सीखना। -पडवी = सनझा खाना; जान पढ़ना; मालूम होता.] समजणुं वि० समझदार; सयाना समखबार वि० समझदार; बुढिमान
- समजार्षु स० कि० समझना; आनना (२) अर्थ ग्रहण करना; अर्थ समझमा (२) जर्थ ग्रहण करना; (३) जरे-कोटेकी तुलना करना; बिचारना; समझना (४) अ० कि० बाग्रह छोड़ना; मान जाना।[सपजी लेषु == समझौता करना; समझ लेना.] समजाबट स्त्री० समझाना
- समआवर्षु स॰ कि॰ समझाना (२) रूठे हुएको प्रसन्न करना; ठंढा करना; भनाना; समझाना (२) मीठी वालोंसे बहलाना; फुसलाना; भुलावा देना; छलना
- समजु वि० समझदार; सयाना
- समजूत (-सी) स्त्री॰ समझ जाना; मानना; समझौता, स्वीकार, कवूल करना (२) समझाना; दोनों पक्षोंमें मेल कराना; समझौता (३) सीख; सलाह (४) किसी बातको सुगम करके समझाना; स्पष्टीकरण; विवरण; खुलासा; विवेचन । [-उपर आवर्ष := समझौता करना.]
- **নদৰ্যা** ম্পা০ পাল

समडी स्त्री० जमी वृक्ष

समरा

¥77

समस्या

- समुद्दी पु० एक पेंड़; शमी समनी स्त्री० वारीक चीजें पकड़ने, उठाने या तार मोड़नेका नाजुक चिमटा; चिमटी
- समर्जुन० सपना;स्वप्न। [-आवर्षु= स्वप्न आना;सपना पड़ना(२) तीव इच्छा होना; छलवना; उदा० 'तने तो पैसानां ज समर्णा आवे छे'(३) मनमें यकायक कोई खयारु उठना; धुन सवार होना.]
- समतल वि० समतल; हमवार (२)न० समतल, समान सतह (३) समतल क्षेत्र; 'प्लेन' [ग.]
- समतोरू वि० वरांबर वजनका; सम-तोरु (२) समान; वरावर; एकसा (३)पुं०;न०समान वजन।[--ऊत्तरचुं = बरावर, समान उतरना.]
- समतोलता स्त्री•, (-न, -नेषुं) न॰ समतोल होना या बनना; सभतुला; सन्तुलन [स्थक; समतल
- समयळ वि० समान सतहवारा; सम-समबारण वि० जो ऊँवां या नीचा न हो; समान (२) मध्यम प्रकारका; औसत दरअका; न घटिया, न बढ़िया;
- सामान्य [समानता; मोडरेशन' समबोरच न॰ प्रमाण, माप आदिमें समस्त पुं० समन; सम्मन
- समबाचु(-जू) वि॰ समान भुजाओं-वाला; सममुज (क्षेत्र) [ग.]
- समसाव पुं० समतोकी बुंदि यो भाव; सममाव (२)जारमीयभाव; अपनापन
- समनाबी वि० सममावयुक्त
- समभुच (--बीय) वि॰ देखिये 'समवाजु' समेमिति स्त्री॰ जीसत; सममिति [ग] समय पु॰ समय; कालः; बक्त (२)

मौसम (३) मौक़ा; जेवसर; जेप-युक्त काल; समय; संजीर्ग (४) प्रतिज्ञा; नियम; समय (५) संकेल; शतं; वादा; समय (६) सिद्धांग्त; समय (७) पाठंशांलामें शिलणके लिए मियत किया हुवा समयका एक भाग; तास; 'पीरियह'। [--ऑळववी, जोबो, वर्तनो = अनुकुल अवसर ŧ वा नहीं यह देखना; अवसर ताकना; मौका ढुँढना। -चबौ = (कोई कॉम करनेका)समय होना। --भराई जवो =समय पूरा होना;मीआद गुजरना (२) अवकाशे या फ़ुरसेरा न रहना (३) वक्स आ जाना; मौतकी घड़ी [टाइमटेबुल आ जाना ] समयपत्रक न० समयसूची; समयसारणी; समयसुचक वि० समयोचित कार्य करनेकी बुढिवाला; प्रत्युत्पन्नमति समयसुचकता स्त्री० समयोचित कार्ये करनेकी बुद्धि; प्रस्युत्पन्नमतिका भाव **समरण** न० स्मरण; सुमिरन समरम्ं स० फि० स्मरण करना; सुम-रना [प.] समरावर्षु स॰ कि॰ 'समारव्'का प्रेरणार्थक; भरम्मत कराना समर्पचं स० कि० समर्पित करना; सॉपना; समर्पना [प] समझान न० स्मशान; मसान समसम अ० हवाकी ओरकी आवास; सन-सन **समसमब्**ंअ० कि॰ 'सन-सन' आवाज होना; सनसमाना (२) मन ही मन कुल करना; मसोसना

सनस्या स्त्री॰ समस्या; अटिल प्रश्न; मसला (२)इशारा; संकेत; सैन (३)

समझ छना |

÷ . .

<b>n</b>	
1.1.1.1.1.1.1	,
A	Į,

त्रसायुं

······································	492
कहावत; पहेली; समस्या; मसल।	समामाती
[ <b>-पूरवी</b> ≕समस्यापूर्ति करना.]	फ्रीसला (२
समळी स्त्री० चील [ शमी बुक्ष	चैन (३)
समळी, समळो देखिये 'समडी; समडो';	सुलह और
समा स्त्री० ज्वारके अंत और भाटेके	समाथि पुं०
आरंभके बीचकी स्थिति जिसमें पानी	केन्द्रित व
बारह मिनट रुकता है	अंतिम अं
समाचार पुं० समाचार; खबर	मरण (३)
समाचारपत्र न० समाचारपत्र;अखबार	हुआ मका
समाज पु० समाज; समूह; समुदाय	चडवी, य
(२) सभा; समिति; समाज (३)	सुमावि र
समान पूर्म या आचारवाला जनसमूह;	तद्रूप होना
समाज (४) किसी खास उद्देश्यकी	<b>यवी =</b> सम
पूर्तिके लिए संघटित जनसमुदाय;	मर जाना।
समाज [नियम आदि	समापषुं स०
समाजकारण न० समाजतंत्रकी रचना,	समार पुं०
समाजिक पुं० समाजका सदस्य; सामा-	समार पुं०
जिक (२) प्रेक्षक; सामाजिक	करनेका प
समानी वि० समाजका; सामाजिक;	समारकाम
समाज-संबंधी (२) जो किसी	<b>समारम्</b> स०
समाजमें शामिल हुआ हो (३) पुं०	सुधारना (
ऐसा पुरुष; सामाजिक (सदस्य)	(२) सँवा
समानी स्त्री॰ देखिये 'समणी '	समारंभ युं०
समाणुं नि० समान; एकसा; सरीखा	हुआ जारम
(२) –को लागू होनेवाला (गाली)	युन्त उत्सव
(३) अ०;के साथ; सहित	<b>समालवुं</b> स <b>र्</b> ा
समानो पुं० बड़ी चिसटी	<b>समाव</b> पुं०
समाबान त० समाधान; संदेह-निवारण	समावदावर्षु प्रेरणार्थक
और शांति (२) संतोष; तृष्ति (३)	
ध्यान; समाधि; समाधान; इक्ट्रिय-	समाबनुं स०
निरोध (४) निबटारा होना; क्रैंसछा	समार्चु स्व
होना; निबटाना; सुलज्ञाना; हरु	जाना ; अँटन
करना (५) समझौरा; ाराकीनामा।	.किसीको अ
[-उपर आवर्षु = समझौला करना;	करनाः; कि
समग्र छेता.	जानाः बैठन

मामानी	स्त्री० स	ामाचान ;	निदेन्:
फ्रेसला (	२) चित्त	की शान्ति	; कल;
चैन (३	) लड्राई-	सगड़ेका	अभाव;
	र शान्ति		
		• मनको •	
		समाधि;	
अंतिम व	तंग (२)	) साघ-संव	त्यासीका

मरण (३) समाधिस्थल पर बनाया हुआ मकान आदि; समाधि। [--घहवी, यवी, --मां बेसवुं, लागवी = समाधि लगना; परप्रात्म-चिंतनमें तद्रूप होना; समाधिस्थ होना।---चबा-यवी = समाधि लगाना। -- लेवी = मर जाना (साधु-संतों था योगीका).] समापषुं स॰कि॰ पूर्ण, समाप्त करना समाप पूं० मरम्मत; दूरस्ती

समार पु० जोती हुई जमीन बराबर करनेका पटरा; हेंगा; पटेला; मेडा समारकाच न० मरम्मत करना

समारषुं स॰कि॰ बनाना; दुरुस्त करना; सुधारना (२) काटना (तरकारी)

(३) सँनारना; बनाना (बाल) समारंभ युं० ठाट-बाटके साथ किया हुआ जारंभ; समारंभ (२) धूमधाम-युक्स उत्सव, जलसा आदि; समारोह

**समालवुं** स०कि० सँभालना ; रक्षा करना समाव पुं० समाई; समाना

समावबाववुं स० कि० 'समाववुं' का प्रेरणायंक [समाना समाबवुं स०कि० 'समावुं' का प्रेरणायंक; समावुं स०कि० 'समावु' का प्रेरणायंक; समावुं स० कि० समाना; भीतर आ जाना; अंटना (२) समाविष्ट हो जाना; किसीको बनुकूल होकर स्थान आप्त करना; किसी संस्था या तंत्रकें समा जाना; बँठना। [समाई बवुं = भीतर

समादश	

त्तर

दाखिल होकर हिल-मिल जाना; लुप्त, विलीन या गायब हो आना ] समावेश पु० समावेश; समाना समास पुं० समाई; समाना; समावेश (२)समास∫व्या !(३)संक्षिप्त करना; समासः छोटा रूप । [--पवो = समावेश होना; किसी तंत्र या संस्थामें घुल-मिल [हुआ;समानान्तर;'पेरेलल' जाना 📄 समांतर वि० समान अंतर पर आया **समीकरण** न० समीकरण; समान, बराबर करना (२) समीकरण; 'इक्वेशन'[ग.] सिंच्या समीसंध्या, समीसांज स्त्री० साँच:शाम; समुद्र पुं० समुद्र; सागर। [-स्नेब्बो =समुद्रयात्रा करना। -- बहोळवो, वलोवको ≔ समुद्रमंथन करना (२) कोई कठिन समस्याकी चर्चा करना। समुद्रकांठो, समुद्रकिमारो पुं० समुद्र-तट;समुद्रका किनारा | फेन समुद्रफीण, समुद्रफेण(-न) न० समुद्र-सम् वि० ठीक; दुरुस्त; व्यवस्थित; जैसा चाहिये वैसा (२) देखिये 'समाणुं' (३) अ०समेत; --के साथ; उदा० 'घडाका सम्'ते नीचे पडयुं' । [--**करव्ं** = दुरुस्त करना; सुधारना (२) तर-तीबसे रखना; सजाना ] समुनमुं थि० ठीक; दुरुस्त; व्यवस्थित सम्ल(-ळ) वि० मूल सहित; समूल समूळगुं वि० समूचा; पूरा; समूल समूळुं वि० देखिये 'समूल' समेटवुं स० कि० समेटना (२) निब-टाना; समाप्त करना(३)बंद करना समेत वि० समेत; एकत्र; संयुक्त (२) अ० साय; समेत

सबैयो पुं० अगवानी; जगवाई (२) किसी संप्रदायके अनुयायियोंका संमेलन समो पुं० समय; वक्त (२) उपयुक्त अवसर; मौक़ा (३) मुश्किल्लका वक्त; मुश्किल । [ -कठण के बारोक होवो = मुसीबतके दिन होना; संकटपूर्ण या नाखुक वक्त होना; वक्त पड़ना। - जोवो = अनुकूल अवसरकी राह देखना; मौक़ा देखना (२) घातमें रहना; मौक़ा तकना। -वळवो = पूर्व स्थिति पर आ जाना; पहलेके जैसा अच्छा हो जाना; जमाना बदलना.]

- समोल(ल,) स्त्री० जुएके सिरे पर लगायी जानेवाली खूँटी;सैला;सिमल
- समोवड वि० समान; बराबरका; समकक्ष (२) प्रतिस्पर्धी; बराबरीका
- समोवडियण वि०स्त्री० हमउझ<mark>, सम-</mark> वयस्क (स्त्री) (२)्वराबरीकी, प्रतिस्पर्धी (स्त्री)
- समोवडियुं वि० हमउञ्च (२) समान; जोड़का (३) प्रतिस्पर्धी; हरीफ़; बराबरीका
- समोवडुं वि० देखिये 'समोवड'
- समोवर्ष न० स्नानके गरम पानीमें और पानी मिलाना या मिलानेका पानी
- समोववुं स० कि० स्नानके लिए रखे हुए उष्ण जलमें ठंडा जल मिलाना; समोना
- सर स्त्री० गलेमें पहननेकी एक लड़ीकी मोती या मनकोंकी माला,कंठी,सिकड़ी
- सर वि० 'बड़ा' के अर्थमें शब्दके आरंभुमें जाता है; उदा० 'सरसूबो'
- सर पु० ताशके खेलमें किसी एक रंगके पत्तोंका प्राधान्य; तुरुप; सर (२) शेयर; भाग

स्रर

•

 <b>.</b>	4

सर पु॰ ब॰ व॰ (सूद गिननेमें) मूल-	सरकुं वि० समान; वरावर; सदृश्च(२)
धन और मुद्दुतके महीनोंका गुणनफल	सपाद; समतल; जो जबड़-साबड़ न
<b>त्तर</b> ्वि० ताबे; अधीन;मात; परा-	हो (३) उंगका; व्यवस्थित; ठीक (४)
जित;हारा <b>हु</b> आ । <b>[–करबूं</b> =जीतना ।	उचित; योग्य; लायक;उदा० 'मारा
-वर्षु = मात होना; अधीन होना.]	सरखुं काम' (५)वाक्यमें संज्ञाके बाद
श्वर अ० 'अनुसार; मुताबिक; से' इस	वाने पर <u>'</u> तक' या 'भी' अर्थ, सूचित
अर्थमें संज्ञा या विशेषणके साथ आता	करता है; उदा० 'आंगळी सरसी न
<b>है</b> ; उदा० 'कायदेसर, माफकसर' (२)	ुउपाडी'। [सरक्षी नजर = निष्पक्ष
'के लिए,के कारण' इस अर्थमें संज्ञाके	दुष्टि; समदृष्टि; एक आँखसे सबको
साय वाता है;उदा० 'धंघासर,हेतुसर'	देखनेकी दृष्टि । नहि सरज्ञुं == नहींवत्
<b>सरकट न० बें</b> त या नरकट जैसा एक	(२) जरा; तनिक; थोड़ा.]
पौघा; सरकंडा	<b>सरकेसरख्ं</b> वि० बराबरका; जोड़का;
<b>सरकणुं</b> वि० सरकीला; फिसलनवाला	समान ; एकसा
(२) त० सरकनेकी जगह; फिसलन	सरगबो पुं० सहिजन; मुक्या; सौंजना
<b>सरकवुं</b> अ० कि० सरकना; खिसकना;	सरघस न० जुलूस (समुदाय)। [नाहर्षु
फिसलना (२) चुपकेसे चल देना;	= जुलूस निकालनाः]
खिसकना; सटकना	सरजनहार पुं० देखिये 'सजनहार'
<b>सरकस</b> न० सर्कस	सरबर्षु स० फि० देखिये 'सर्जवु'
सरकार पुं०; स्त्री० सरकार;राज्य;	सरजोरी स्त्री० देखिये 'सिरजोरी'
हुकूमत(२)बड़ोंका संबोधन;हुजूर;	सरड अ० सुड़कनेसे होनेवाली आवाज
सरकार । [ <b>⊸थरवारे घडवुं</b> ≕मुक़दमा	सरडको पु० सुड़कनेकी किया, आवाज;
कचहरीमें पेश करना; दावा दायर	सुड़क (२) चभड़-चभड़; तरल चीच
करना.]	खानेसे होनेवाली आवाज
सरकारघारो पुं०,सरकारभरणुं,सरकार-	सरही स्त्री०गिरगिट(२)मादा गिरगिट
<b>भरत न</b> ० लगान; भूमिकर; पोत	<b>सरहो</b> पुं० गिरगिट
<b>सरकारी</b> वि० सरकारका; सरकार-	सरणि(-णी) स्त्री० सरणी; सरणि;
संबंधी; सरकारी	पगडंडी (२) पद्धति; तरीका; रीति;
<b>सरकियुं</b> न० सरकीली गाँठ	सरणी (३) सजाबट; व्यवस्थितता;
<b>सरको</b> पूं॰ सिरका	सरणी
<b>सरबाई</b> स्त्री०, <b>सरबायणुं</b> न० समा-	सरत स्त्री० नजर; दृष्टि (२) थाद-
नता; भरागरी	दाश्त; स्मरणशक्ति (३) व्यान;
सरकामणी, सरकावट स्त्री० तुलना;	खयाल; सुरत । [−पह्रोंचवी = नजर
समानता (२) बराबरी; मुकावला	या दुष्टि जाना (२) अक्ल काम
सरसावयुं स॰ कि॰ तुलना करना;	करना । <b>–रहेवी =</b> घ्यान <sub>्</sub> आना;का
मिलाकर जाँचना; मिलाना	खयाल रहना; स्मरण होना; खयाल

सरमुसत्यार वि० कुल सत्तावारी (२) पुं० तानासाह; अभिनायक

सरमुखत्यारी स्त्री० मुखतारकुलका काम या पेशा; तानाशाही; वविनायकर्स सरर अ० सन-सन; सर-सर (मोली, तीर आदिकी हवामें चलनेकी आवाब) सररर अ० जल्दी सरकनेकी आवाजु:

संर-सर; सरसराहट

संस्ताप	9
---------	---

## \* ? 4

a

Æ

स

अमाना । रहेनुं = याद रहना; याद	
होना ।राजनी = तयाक रखना;	
तिगाह रखना; सँगाछनाः]	
सरतजूक स्मी० देखनेमें कुक होना;	
बुष्टिदोष (२) व्यानसे उतरना;	
मुरू जाना	
<b>सरत्</b> वि० समीप; निकट; पास	
सरबार पु० सरदार; नेता; मुसिया	
(२) अमीर; सरदार; सामंत	
सरसारी स्त्री० सरदारकी सत्ता या	
पद; सरदारी (२) अगुआई; नेतृत्व	
(३) वि० सरदारका; सरदार-संबंधी	
सरदेशमुसी स्त्री० मराठी राज्यकालका	
एक प्रकारका कर	
सरनज्ञीन पु॰ सभापति; सदर	
सरमाम् न० पताः सरनामा	
सरपट पुं० एक वनस्पति; सरपत	
सरपण न० जलावन; ईषन (लकड़ी)	
सरपंच पुं० सरपंच; पंचोंका मुलिया	
सरपाव पुं० सिरपाव; खिलअत ।	
[-आपवो = सिरोपाव बख्शना;	
खिलअत देना (२) शाबाशी देना.]	
सरपेच पुं० देखिये 'शिरपेच'	
सरपोद्य न०ढन्कन (२) ग्रिलाफ़	
सरफरोशी स्त्री० सरफ़रोगी ; सिर देना	
सरबसर वि० तमाम; संपूर्ण (२) समग्र;	
सारा (३) व॰ पूर्णतः; सरबसर;	
सरासर	
<b>सरवाजी</b> स्त्री० ताशका एक खेल	
सरमर वि॰ न कम, न ज्यादा;ठीक;	
बराबर(२)बिना नफ़ा-नुक़ँसानका। िज्ञाई ल तर स्वाना जिल्लों जाल	
[बार्तुः ⇔वह साता जिसमें जमा- सर्वकी पर्वे गणान तो ]	
स्तर्चकी मर्दे समान हों.] सरभरा स्त्री० आव-अगत: सेवा-	
TTTTTT TTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTTT	

टहल; खातिरवारी; सरवराही

सरल वि० सरल; सीघा (२) आसान;
सरल; सुकर (३) निष्छल; सरल
सरव पु॰ एक पेड़; सरो; सर्व
सरवडियुं, सरवडुं न०, सरवडो पुं० रह
रहकर आनेवाली बारिशकी बौछार
सरवण पुं० फेरीवाला साधु (२)
कौंवर लेकर भीख मौगनेवाला (३)
श्रमण; भिक्षु
सरवणी स्त्री० तेरहींके दिन की जाने-
वाली राग्यादान आदि किया
सरवर, सरवरियुं न० सरोवर; झील
सरवाणी स्त्री० सोता; झरना
<b>सरवायुं</b> न० आय-व्ययका वार्षिक
विवरण; चिट्ठा
<b>सरवाळे</b> अ० कुल मिलाकर; समग्रतया
(२)अंतमें ; आखिरकार ; फलतः
सरवाळी पुं० संख्याओंको जमा करना,
जोड़ना (२) जोड़; मीजान; जुमला
सरमुं वि० तीक्ष्ण कानका; जो झट
सुन सके (२) जोरसे, ऊँचेसे बोला
हुआ (३) अमुक तरहके स्वाद या
महकवाला (४) चपल; तेज; उदा०
'सरवा पग'
तरबुं अ० कि० देखिये 'सरकवुं' (२)
पूरा पड़ना; काम भरुना; सरना;
प्रयोजन सिद्ध होना; उदा० 'काम, वर्ष, गरज सरबा'

.

सरबेवुं	४९६ सरेस
<b>सरबैधुं</b> न० देखिये 'सरवायुं'	पर आना; ठिकाने आना; चल
सर्रावयं न० सरसोका तेल; कड़आ	निकल्ला; ढंगसे चलने लगना।
तेल (२) केंचुआ; गिजाई 👘	<b>चडावर्षु, पाढगुं</b> ≕ राह पर लाता.]
सरस पुं० देखिये 'सरेश'	सराण स्त्री० सान (चढ़ाना; देना;
सरस वि० अच्छा; उत्तम; बढ़िया	धरना) [सिकलीगर
(२) रसवाला; रसीला; सरस	सराणियो पुं० सान घरनेवाला;
(३) सुन्दर; मोहुक। [-तोलवं =	सरायरा अ०ँ आदिसे अंत तक
तौरुमें अधिक देना.]	सराफ पुं० देखिये 'शराफ'
सरसंदेशों पु॰ खबर; समाचार	सराफी स्त्री० देखिये 'शराफी' । [ <b>जंबो</b>
सरसव पुं० सरसों	= प्रामाणिक घंघा; ईमानका सौदा
सरसाई स्त्री० होड़; प्रतिस्पर्धा	(२) महाजनी; साहूकारा.]
सरसामान पुं० घरगिरस्तीका सामान;	सरार अ० अंत तक; सरासर; सरबसर
सरोसामान; माल-असबाब	<b>सराव (०ऌं)</b> न० सकोरा ; सराव;शराव
<b>सरसियुं</b> न० देखिये 'सरशियु'	<b>सराववुं</b> स० कि० 'सारवु' का प्रेरणा-
सरसीषुं न० रसोईकी कच्ची सामग्री;	थँक (२) श्राद्धकर्म करना; पिडा देना
सीधा [समीप;सटकर;पास	सरासर अ०,(-री) स्त्री० देखिये
सरस्ं वि० अच्छा; उत्तम (२) अ०	'सरेराबा'
<b>सरसूबो</b> पु० बड़ा सूबेदार; प्रांत या प्रदेशका बड़ा अधिकारी	<b>सरांठी (०) स्त्री</b> ० अरहर आदिका सुखा डठल, कड़िया; रहॅठा
सरहद स्त्री॰ सीमा;सरहद (देशकी)	सरियाम वि० प्रमुख; मुख्य (रास्ता)
सरहवी वि० सीमा संबंधी, सरहदी (२)	(रे) सरे-आम; जाहिर, खुला(३)
पुं० सरहद प्रांतका आदमी	सीमा; जो टूटा हुआं न हो; अखंड
सरळ वि० देखिये 'सरल'	सरीखुं वि० सरीखाः समानः योग्य
<b>सरळता</b> स्त्री० सरलता; आसानी <b>सरंजाम</b> पुं० आवश्यक सामग्री;	सरीसुँ वि० देखिये 'सरीखु' (२) अ० समीप;पास
सरंजाम (२)युद्ध या सेनाकी सामग्री	सर न० एक पेड़; सरो; सर्व 🦉 🦉
सरा स्त्री॰ देखिये 'सराई' (२)	सरूप वि० सदृश; सरूप; एकसां(२)
प्रवाहः धाराः सरा (३) ऋतः मौसिमः	रूपवाला; संरूप; सुन्दर
प्रवाह, धारा; सरा (३)ऋतु;मौसिम; उदा० 'ल्गनसरा'	<b>सरेडे</b> ज० देलिये 'सराडे'
सरां(०ई)स्त्री० सराय; सरा;धर्मशाला	<b>सरेतीरे अ</b> ० बाजे-गाजेके साथ (२) स <b>रे</b> -
सराक पुं०; स्त्री० नोकदार सलाई;	आम; जाहिरमें
फौस; किरिच; झूल	सरेराज्ञ स्त्री० औसत; पड़तां [ग.]
सराकडो पुं० देखिये 'सरोखडो'	(२) अ० औसतन् (३) अंदाजन्;
सराडे अ० सीधी राह पर; उगसे;	लगमग; अटकलसे
ठिकाने पर । [ <b>⊸वडवं ≕ठीक</b> रास्ते	सरेश(-स) पुं० सरेश;सरेस(पदार्य)

-	7
<b>N</b>	

¥95

सर्राम

अनुमति;

<b>सरैयो</b> (रै') पुं० सुशबूदार जीजें	सर्वानुमति स्त्री० सबकी
बचनवाला [ रमट्टा	सर्वसम्मति
<b>त्तरोल्लडो</b> पुं० चूनायुक्त या चूना मिली	<b>सर्वांगी (०ण)</b> वि० सब व
सरोबुं न० ज्यार-बाजरेका सूखा डंठल	(२) सारे शरीरमें व्याप्त
सरोतरी वि॰ वाजिब;उचित;न्यायसंगत	संवौगीण
<b>सरोतो</b> पुं० सरौता; सरोता	सर्वे स० सर्व; सब; सारा
सरोद पुं० एक तंतुवादा; सरोद	सर्वोच्च वि० सर्वोच्च;
सरोबो पुं॰ सरौता (२) सरोद (३)	सर्वोपरी वि० सबसे बढ़िय
स्वरोदय; सरोधा (विधा)	स्हृष्ट (२) श्रेष्ठ; उत्तम
सरोवर न० सरोवर; झीछ; सर	<b>सर्वोपरीपणुं</b> न० श्रेष्ठता; ः
सर्कल (०इन्स्पेक्टर) पुं० सकिल इस्पे-	<b>सलगम न</b> ० सलजम; शलग
कटर; गिर्दावर कानूनगो	सलज्ज वि० हयादार; सल
सर्चनजूनुं वि० सुष्टिके आरंभसे प्रचलित;	अ० लज्जाके साथ; शरम
आदिका; रोजे अजलसे जारी	सलपो (को) पुं० दम;क्श (
<b>सर्जमबाक्ति</b> स्त्री० रचना, निर्माण	(२)समूह; समुदाय
करनेकी बौद्धिक शक्ति; रचनाशक्ति;	सरमो पुं० सलमा; बादला
सुजनशीलता [प.] [सुजनहार [प.]	सलवर्षु स० कि० देखिये
सर्चनहार पुं० लब्दा; सिरजनहार;	सलवामण स्त्री० उलझन;
सर्जवुं स॰ कि॰ उत्पन्न करना; रचना	सलबाव अ॰ कि॰ कोई उप
करना; सिरजना; सूजना [प.]	मिलनेसे घबराना; स
सर्व वि० सर्व; सब; समस्त। [-हक	हड़बड़ीमें पड़ना; फैस
स्वाधीन = मालिकीके सर्व अधिकार	'सालववुं', 'सल <del>व</del> वुं' का
अपने कब्बेमें होना ]	<b>सलाट</b> पुं० सिलावट; संगत
सर्वंधकी वि० सब पक्षोंका; सब पक्षोंसे	सलाटी स्त्री० घार तेज कर
संबद्ध; सर्वपक्षीय (२) सबका उचित	सिल्ली [बाँधना ; गाँट
पक्ष करनेवाला [सर्वभक्ष	सलावर्षु स० कि० एकको दू
सर्वभक्षी वि० सब कुछ खानेवाला;	सलाबी स्त्री० देखिये 'सल
सर्वमान्य वि० सबको मान्य; सर्वमान्य	सलाडुं न॰ देसिये 'सलाटी'
सर्वसलाधीश पुं० सर्वाधिकारी; मुख-	सलाबो पुं० एक ऊँटको दूर
तारकुल	बौधना (२) [ला.] किसी
सर्वसंमत बि॰ सर्वमान्य; सर्वसम्मत	इच्छाके विघद काममें लग
सर्वसाधारण, सर्वसामान्य वि० सबको	(३)चुग्रली खाना;इघरकी
छागू होनेवाला; सर्वसामान्य	सलाम स्त्री० सलाम; नम
सर्वानुमत वि० जिसको सबने अनुमति	अलेकुम, आलेकम = सला
दी हो; सर्वसम्मत; एकराय	<b>करवी</b> = नमस्कार करना
-	
गु. हिं–३२	

वि० सब अंगोंसे संबद्ध रिमें व्याप्त होनेवाला; सब; सारा ग्वोंच्च; सबसे बड़ा सबसे बढिया; सर्वो-ष्ठ; उत्तम श्वेष्ठता; उत्तमता जिम; शलगम यादार; सलज्ज (२) प्राथ: शरमाकर ० दम;कश (चिलमका) मुदाय मा; बादला क॰ देखिये 'सालववुं' ॰ उलग्रन; फँसाब क० कोई उपाय, हल **न** राना ; सकपकानाः इना; फँसना (२) ल्ववुं' का कर्मणि गवट; संगतराश <mark>वार तेज करनेका पत्यर</mark>: बाँधना ; गाँठना; ओब्ना **क० एकको दूसरेके साथ देखिये** ' सलाटी' वि 'सलाटी' (२) चुग्रली ह ऊँटको दूसरेकी दुमसे [ला.] किसीको उसकी काममें लगाना; जोतना ना,इधरकी उधर करना सलाम; नमस्कार । [– **कम** == सलाम अलैकम । स्कार करना । **–शीलवी**,

# सलामती

## सवाको

लेवी = सलामका जवाब देना; सलाम
लैना <b>। −भरवी ≕</b> झुक-झुककर नम-
स्कार करना;कोरनिश बजा लाना
(२)आजिजी या खुशामद करनाः]
पलामती स्त्री० सलामती: तन्दरुस्ती:

- सलामती स्त्री॰ सलामती; तन्दुरुस्ती; कुशल (२) जिंदगी; सलामती (३) रक्षा; सुरक्षितता
- सलामी स्त्री० सलामी; सलामके रूपमें दिया जानेवाला मान, भेंट या लगान (२) किसीके सम्मानार्थ सलामी देना; सलामी
- **सलावब्रं** न० मिट्टीका भिक्षायात्र ; खप्पर

सलाह स्त्री॰ सलाह; सीख; सिखावन (२) राय; सलाह (३) सुलह; मेल

- सलाहकार वि० (२) पुं० सलाह देने-वाला; सलाहकार (३) सुलह करने-बाला या करानेवाला
- सलूक स्त्री० सलूक; वर्ताव; व्यवहार (२) सद्भाव; मेल; सलूक (३) नेकी; भलाई; सलूक; सुलूक
- सस्ट्रकाई स्त्री० सम्यता; शिष्ट व्यवहार

(२) सलूक; मेल्र; मुहब्बत सलूपुं वि० सलोना; सुन्दर; मनोहर सऌन न० सैलून; सेलून

सलेपाट पुं० सलीपर; सिलीपट (रेलका) सल्ली स्त्री० उस्तरा तेज करनेका पत्थर;

सिल्ली; पचरी [काम आनेवाला) सल्लो पु० बरीका चूना (पलस्तरमें सवड पु०; स्त्री० देखिये 'सगवड' सवळवुं अ० कि० देखिये 'सळवळवु' सवळ (-ळुं) वि० सुलटा; सीघा (२) घडीकी सुईकी दिशामें धूमनेवाला; बाईंसे दाहिनी ओरका;'क्लाकवाइज'।

सिवळा पासा पडवा = मनमें इच्छा

हुआ थार उतरना; फ़तह होना; पौ बारह पड़ना।-पडवुं = सही निकलना; सच होना (२) सफल होना; पार उतरना। सबळे हाथे पूज्या हुझे = विधिपूर्वक या फल मिले इस तरह आरामना की होगी.]

- सवा पुं० ब०व० सोआ (बीज) (२) पपड़ या अचारमें पड़नेवाला एक कीड़ा
- सवा वि० सवा; १।(२)चतुर्थांशके साथ कोई अंक; किसी अंकसे पाव अधिक; उदा० 'सवा छ' (३) सौ, हजार जैसी संख्याओंके पूर्व 'इससे सवा गुना ' अर्य सूचित करता है; उदा० 'सवासो; सवा-हजार' । [-आठ = मनपसंद; अच्छा । --वीस = सच्चा; यथार्थ; सत्य । - जोर = बहुत; खूब; उदा० 'सवाशेर लोही चडवुं' याने अति आनन्द होना (२) बढ़-बढ़कर; सवाई; उदा० 'शेरने माथे सवाशेर'.]
- सबाई वि० स्त्री० सवाई; सवामुना; बढ़-चढ़कर (२) स्त्री० सवायुनेका भाव; सवाई (३) उत्तमता,बढ़ती मा उम्दापनका भाव; अधिकता (४) सिपाहीका साफ़ा या पगड़ी (५)नियत समयसे अतिरिक्त समयमें किया हुआ काम या उसका मेहनताना (६) सूद स्रेनेका एक प्रकार जिसमें मूलधन अपने चतुथौशसे युक्त होता है; सवाई। [--चिंद्ठी = एक रूपयेका सूदके साथ सवा रूपया देनेका लिखित करार; सवाईका एकका । -नो धंधो = सवाई पर क्रर्ज देलेका धंधा.]
- सवाकवा पुं० अनुकूल या प्रतिकूल वायु (२) दुर्घटना; आकस्मिक घटना सवाको पुं० एक पैसा

899

सहकारी मंडळी

- सवाण स्त्री० साथ, मैत्री या संगतका आनंद; सुहबतसे मिलनेवाला बल (२)आराम;चैन;कल(३)न०मादा पशुका गर्भाधानका काल
- **सवादियुं** वि० स्वादिष्ट; जायक़ेदार (२) स्वादी; चटोरा; जिमला
- **सवायुं** वि० सवाया; सवागुना (२)सवाई; बढ़-चढ़कर
- सवायो पुं० एक पैसा
- **सवार** (स<sup>′</sup>) स्त्री०; न० सवेरा; प्रात:-काल ! [~**थवुं, पडवुं ≕** सवेरा होना.]
- सवार वि॰ सवार; सवारी पर बैठा हुआ (२)पु॰ सवारी पर चढ़ा हुआ आदमी; सवार(३)अखारोही सिपाही;सवार। [--थवुं == घोड़ें पर संवार होना (२) सरकश होना; उद्दंड होना; सिरजोरी करना.]
- सवारी स्त्री सवार होनेकी त्रिया; सवारी (२) गाड़ी, पालकी लादि पर-सवार होनेवाला; सकार; सकारी (३) जुलूस;सवारी (४) अधिकारीका दौरा; ग़क्त (५) (फ़ौजकी) कूच; हमला; चढ़ाई (६) [ला.] रोबदार, ठाट-वाट-वाला आदमी (७) संगीतका एक ताल
- सवाल पुं० सवाल; प्रश्न (२) मॉॅंगना; मॉंग; प्रार्थना; सवाल (३) बोल; वचन; सवाल । [- करवो, नाखवो = सवाल करना;मॉंगना; याचना करना] सवालजवाब पुं०ब०व० सवाल-जवाब;
- प्रश्नोत्तर (२) कहा-सुनी; तकरार (३) पूछताछ; खोज
- सवा वीस वि० [ला.] सही ; प्रमाणभूत ; यथार्थ (२) शिरोधार्य
- सवासण स्त्री० सुहागिन; सुवासिनी
- सवासो (सॉ) पुं० सवासौ; १२५

सविस्तर वि० विस्तारयुक्त; विस्तृत (२) अ० सविस्तर; ब्योरेके साथ; तफ़सीलवार

सवे (वॅ,) अ० ठिकाने पर; ठीक रास्ते पर;व्यवस्थित(२)वि० अच्छा; रूरा; उत्तम। [-करबुं = छिपा देना (२) नियत स्थान पर रख देना; ठिकाना लगाना (३) मार डालना; ठिकाने लगाना । –गडवुं == अनुकूल होमा (२) ठिकाना लगना; प्रबंध होता; नौकरी-पेरोमें लगना (३) नियत स्थान पर पहुँचना । --स्रावनुं = काममें छेना; इस्तेमाल करना (२) ठीक रास्ते प्रर लाना; सुधारना.] (पहले; आगे सवेळा अ० समय पर; नियत समयसे सवैयो पुं० एक छंद; सवैया 🥋 सब्यापसब्य वि० बायां-दायां(२)झूठ-सच ससणब् अ० कि० देखिये 'सणसणवु'-संसम्पाट पुं० देसिये 'सणुसणाट' ससणी स्त्री० सन-सनः सनसनाहट (२) बच्चोंका एक रोग; हब्बा-डब्बा **ससरों पूं**० ससुर; व्वसुर ससली स्त्री० खरगोश (मादा) ससलं न० खरगोश; खरहा ससलो पु० खरगोश (नर) सर्स्तुं वि० सस्ता; अल्प मूल्यका (२) [ला.] बेवकअंत; तुच्छ । [--**पडव्ं** = कीमंतर्मे सस्ता लगना या आना ।--मू**कर्व्** ·= सस्ता लगा देना; सस्ता बेचना.] सहकार पुं० सहकार (२) आम; सहकार सहकारी वि० सहकारयुक्त (२) सहकार करनेवाला या सहकारसे चलनेवाला; सहकारी (३) पुं० संहायक; सहकारी सहकारी मंडळ न०, सहकारी मंडळी स्त्रीं० सहकारी समिति

सहम	५०० सळक
सहम सहम वि॰ सहज; साय-साय जन्मा हुआ (२) प्राकृतिक; कुदरती; सहज (३) आसान; सरल (४) अ० अकारण; व्ययं; योंही (५) स्वाभाविक ढंगसे; सामान्यतः (६) आसानीसे सहजबुद्धि स्त्री० स्वाभाविक वृद्धि या प्रेरणा; सहजज्ञान; 'इस्टिक्ट' सहमत वि॰ सहमत; एकराय सहमत वि॰ सहमत; एकराय सहमती स्त्री० एकवाक्यता;एकमत होना सहवास पुं॰ साथ रहना; सहवासी (२) सुहबत; साथ-संबंघ (३) अम्पास; मुहावरा; मक्क सहवासी वि॰ साथ बसनेवाला; सहवासी (२) परिचित (३) अम्परत; आदी सहाय स्त्री॰ सहाय; मदद; सहायता सहाय पुं॰ सहाय; साथी; मददगार सहाय न्त्री॰ सहाय; साथी; मददगार सहाय न्त्री॰ सहाय; साथी; मददगार सहाय कु का हुआ सहायक बना हुआ सहायक्त वि॰ जिसमें भाग, हिस्से हों; मागी; साझेका (काम, जायदाद आदि) (२) संयुक्त; मुइतरका (३) न॰ साझेदारी; पट्टीदारी सही स्त्री॰ सही; इस्ताक्षर; दस्तखत (२)वि॰ सही; इस्ताक्षर; दस्तखत (२)वि॰ सही; इस्ताक्षर; दस्तखत	रेक होना । - होषुं = क़बूल-मंजूर होना; स्वीकृत होना (२) खरा, सही होना.] सही स्त्री० सखी; सही [प.] सही स्त्री० सखी; सही [प.] सहीसलामत वि० निविघ्न; सहीसला- मत; सुरक्षित; निरापद (२) अ० सलामत; सहीसलामत [सलामती सहीसलामती स्त्री० सुरक्षितता; सह वि० सब; सर्व सहलियत स्त्री० सहल्यत; वासानी सहस्वय वि० सहृदय;दूसरोंकी भावना था मनोभावोंको समझनेवाला;कोमलचिस (२) दयालु; सहृदय (३) रसिक;सहृदय सहेश(स्हॅ) वि० अल्प; योडा; तनिक(२) अ० देखिये 'सहज' [जरासा; कुछ सहेजसाज (स्हॅ) वि० (२) अ० योडासा; सहेखे (स्हॅ) वि० सरल; आसान; सहल (२)स्त्री० मनबहलावके लिए ध्रमण; सर (३) मनकी मौज; आनंद सहेलाई (स्टॅ) स्त्री० सीर करना; मौज उड़ाना या उसका स्यान; सेरमाह; रमणीय स्थान सहेलाई (स्टॅ) वि० आसान; सहल सहेलाई (स्टॅ) वि० आसान; सहल सहेलाई (स्टॅ) वि० आसान; सहल सहेलाई (स्टॅ) वि० आसान; सहल महेलां (स्टॅ) वि० आसान; सहल महेलां (स्टॅ) वि० आसान; सहल महेलां (स्टॅ) वि० आसान; सहल महेलां (स्टॅ) वि० आसान; सहल महेलां (स्टॅ) वि० आसान; सहल

	•
1.	
1100111	•
-	

संकेलम्

- सळकडी स्त्री० छोटी तीली; सलाई; शलाका (२) [ला.] उकसाहट;उत्तेजन । [--करबी = उभारना;उत्तेजित करना.] सळबड्डं न० शलाका; छोटी सलाई.
- सळकर्षु अ०कि० जरासा हिलना;कुल-बुलाना (२) खानेकी तीव्र इच्छा होना; हौका होना (३) शुल उठना
- सळको पुं० देखिये 'सळक' (२) तीव इच्छा; लालसा [जलना
- सळगवुं अ० कि० सुलगना; सिलगना;
- सळवळवुं अ० कि० जरा-जरा हिलना; अंगड़ाई लेना;कुलबुलाना(२)शरीर पर कीड़ा रेंगनेकासा भाव उत्पन्न होना(३) कुछ करनेके लिए आमादा, तत्पर हो जाना [ बुलाहट
- सळवळाट पुं० हिलना-डुलना; कुल-सळव्युं अ०कि० घुन द्वारा खाया जाना;
- धुनना; धुन लगना
- सळंग वि॰ जिसमें जोड़न हो; जो बीचमेंसे जुड़ा हुआ न हो; अखंड; अटूट;अविच्छिन्न(२)अ० लगातार; बराबर; बिना रुके
- **सळंगसूत्र** थि०कमबद्ध; सिलसिलेवार; अविच्छिन्न; एक सूत्रमें जोड़ा हुआ
- सळियो पुं० छड़ (धांतुका);सीखचा; लोहेकी तीली
- सळी स्त्री० शलाका;सलाई । [---मस्पत्वी = उभारना; उकसाना । **⊬करवी** ≕ नटखटी करना; छेड़ना.]
- सळीसंचो पुं० [ला.] भले-बुरे उपाय; युक्ति-प्रयुक्ति (२) उकसाहट;उत्तेजना
- सळेकडी स्त्री॰, (--इं) न॰ देखिये 'सळकडी' आदि
- सळेलाबी स्त्री० देखिये 'सळकडी'
- **सळेकडुं** न० देखिये 'सळकडुं' । [--**करवुं**

= उभारना;	ওর্ন্নজির	करना	(२)
चिढ़ांना ; सिझ	ाना (३) f	चढानेके	লিয
उँगली आदि	से छना;	छेड्ना.]	

- सळेखम न० जुकाम
- सळो पु॰ घुनना; कीड़े लगना
- संकडामण (–णी) स्त्री० जगहकी तंगी; संकीर्णता; कुशादगीका न होना (२) मुश्किल; संकट [प्रेरणायंक संकडाबवुं स० कि० 'संकडावुं'का
- संकडावुं अ०कि० सिमटना;सिकुड़ना; तंग जगहमें दबना(२)जगहकी संकीर्णता सहन करना (३)संकट, भीड़ पड़ना; संकटमें फेँसना [ला.]
- संकडाश स्त्री० तंगी; संकीर्णता;जगहकी तंगी (२) संकट; मुक्किल
- संकल्प पु॰ संकल्प; इरादा; इच्छा; प्रयो-जन (२) निरचय; संकल्प (३) कोई धार्मिक इत्य करनेकी प्रतिझा; संकल्प (४) कल्पना; विचार; संकल्प; तर्क । [-ऊठवो = कल्पना उठना;जीमें आना; धुन बँधना। --करवो == निरुचय करना; ठानना (२) प्रतिझा करना; नियम बनाना। --मूकवो == प्रतिझा लेना (२) निरुचय करना (३) आशा छोड़ देना.]
- संकळावुं अ०कि० 'सांकळवुं'का कर्मणि; संकलित होना;संलग्न होना;(जंजीर-के औकड़ोंकी तरह)जुड़ा हुआ होना
- संकेत पुं० पहलेसे की हुई गुप्त योजना (२)इशारा;इंगित;चिह्न;संकेत (३) संकेत-स्थान; संकेत (४) शर्त; संकेत (५)संकेतवाक्य;सांकेतिक शब्द व्या.]
- संकेलवुं स०कि० समेटना; बटोरना; तह करके रखना(जाजिम आदि); सकेलना [प.] (२)बंद करना; सके-रना [प.]

-	<u> </u>
संघर	ाखार

	'
संयरालोर वि० जरूरतसे ज्यादा संग्रह	
करनेकी वृत्तिवाला; संग्राहक ; परिग्रही	
संघराखोरी स्त्री० संग्राहक-वृत्ति	
संघरो पु० संग्रह;संचय;परिंग्रह	
संघाडियों पुं० खरादी	
संघाडो पुं० लराव	
<b>संघात</b> पुं० साथ; संग (२) जमाव; भीड़;	
जत्था; समूह; संघ (३) आधात;	
मीटना; संघात (४) अ० साथ; संग;	
सहित; उदा० 'कोनी संघास गयो ? '	
संघाती वि० (२) पुं० साथी; संगी	
संघाते अ० साथ; संग	
संघेडो पुं० देखिये 'संघाडो'; खराद	
संच पुं० गुप्त पेचवार रघना या बनावट	
(२) दीवार या पिटारी आविमें बनाया	
हुआ गुप्त खाना या आलमारी	
संचरवुं २० कि॰ चलना; चलता बनना;	
संचरना [प](२)भीतर घुसना;व्याप्त	
होना;फैलना(३)स०कि० संचय करना;	
संचना [प.] (४) खपरैलोंकी फेरवट	
करना [मेहनताना	
<b>संचरामण न०, (-णी)</b> स्त्री० फेरवटका	
<b>संचराववुं</b> स०क्रि० 'संचरवुं' का प्रेरणा-	
र्थक (२) फेरवट करानाँ	
संचयुं स० कि० इकट्ठा करना; जमा,	
संचय करना;संचना[प.](२)गड्ड बनाना	
संचळ पुं० संचल; सोंचर नमक; काला	
नमक	
संचार पुं० फैलना; प्रसार; संचार (२)	
चलाना ; आगे बढ़ाना ; प्रेरणा करना ;	
संचार(३)गमन; संचार; भ्रमण(४)	
सूर्यका दूसरी राशिमें प्रवेश;संचार	
संचारवुं स० क्रि० खपरैलोंकी फेरवट,	
फेरौरी करना (२)डालना ; सींचना	

संचो पुं० यंत्र;कल (२) देखिये 'संच' (३) स्टव

संचोरो पु० पापडाखार

संजाप (~च) पु० संजाफ़ ; गोट;किनारा संजीवन न०पुनर्जीवित करना ;संजीवन

संजीवनी स्त्री० संजीवनी (औषधि) (२) संजीवनी-विद्या

**संजोग** पु॰ संयोग; संजोग; मिलन (२)दैवयोग; संयोग; इत्तफ़ाक(३) परिस्थिति

संगोगवशाल् अ० दैवयोगसे;इत्तफ़ाक़न् संडास पु०; न० संडास; पाखाना

**संडोववुं** स०कि० शरीक करना, फदेमें लाना, घसीटना, फॉसना

संबोवाबुं अ०कि० 'संडोववुं' का कर्मणि संत वि० साधु; पवित्र (२) पुं०संत;साधु संतति स्त्री० संतति; बाल-बच्चे; औलाद (२) फैलाव; विस्तार; संतति

(३)परंपरा; अविच्छिन्नता; संतति

संततिनियमन न० संतति-निरोध संतरुं न० संतरा

संतलस स्त्री० गुप्त मंत्रणा; मसलहत संताक्कडी स्त्री० एक खेल; आंख-

मिनोनी [करना संताडवुं स० कि० छिपाना; आड़में संतापवं स० कि० पीड़ा, कष्ट देना;

सतापवु स० कि० पाड़ा, कष्ट दन संताना; संतापना [प.]

संताबुं अ० कि० छिपना; छुपना

संतोखवुं स० कि० संतुष्ट करना; राजी करना [वजन संतोखो पुं० बारदानके साथका कुल संत्री पुं० संतरी; पहरेदार; संत्री संबर्भ पुं० संदर्भ; मनका आदि पिरोना;

व्यवस्थित करना (२) एकत्र करना; संकलन करना;संदर्भ (३)आगे-पीछेके

•	. •	•
सर	Ĥ	प्रथ

## संभाळ

अर्थंका संबंध; संबंध-निर्वाह; संदर्भ
(४) रचना (५) प्रबंध, निबंध आदि
प्रंथ; संदर्भ [रेफरन्स
संवर्भग्रंथ पुं० आकर ग्रंथ; 'बुक ऑव
संवैद्य पुं० संदेश; खबर; संवाद
संदेशारों पुरु पुन्नाम पेड़; सिद्धेश्वर
संदेशो पुरु देखिये 'संदेश'; खबर
संदेह पुं॰ संदेह; शंका; वहम (२)
एक अयलिकार; संदेह। [आणवो,
स्राववो ≕ संदेह करना ।पडवो,
मा पढवुं = शक पड़ना; शका होना.]
संबाडवू स॰ कि॰ दो चीजों, टुकड़ोंको
एक दूसरेके साथ चिपकाना, मिलाना,
सीना आदि; जोड़ना; टॉकना
संघि पुं०; स्त्री० संघि; संयोग; मेल
(२) वह जगह जहाँ दो चीजें या दो
टुकड़े जुड़ें; संधिस्थान; जोड़ (३)
मुलह; संघि; मेल; समझौता (४)

- जरूरतका वक्त; अझे; परिवर्तन-काल (५) युगांत-काल; संघि (६) संघि [ब्या.] (७) नाटककी एक संघि (८) सेंघ; संघि
- संधिकाळपु० दो युगों या विशिष्ट कालों-के बीचका समय,युगांत-काल,संधिवेला
- **संचिवा** पुं० गठिया; संधिवात
- **संष्**ंवि० सब; सारा
- संघे अ० सर्वत्र; सब जगह
- **संप** पुं० ऎक्य; मेल
- **संपवुं** अ०त्रि० मेल करना; एका करना
- संपाडवुं स० कि० प्राप्त करना; पाना संपी(०रुं) वि० मेल-जोलवाला; मिलनसार; मेली
- संपेटवुं स० फ्रि० देखिये 'समेटवुं'
- संपेसर्ड न० किसीको पहुँचानेके लिए सौंपी गई चीज

- संबंध पुं० संबंध; योग; मेल; संपर्क; संयोग; संग; संसर्ग (२) मॅंगनी; संगाई (३) मैंत्री; परिचय; संबंध; पहचान; रिश्ता (४) छठा कारक; संबंध[व्या.]। [--जोडवो, बांधवो == नाता जोड़ना.] संबंधी वि० संबंधी; --से संबढ; संबंध
- रखनेवाला (२) रिश्तेदार, सगा; संबंधी(३)अ० –के बारेमें, विषयमें
- संबो पु० समूह; समुदाय;समवाय संबोधवुं स०कि० संबोधन करना; —को लक्ष्य करके बोलना (२) सम-झाना;संबोधना [प.]
- संभव पुं० संभव; शक्यता; मुमकिन होना; संभावना (२) मूल्ठ; कारण; हेतु; संभय (३) उत्पत्ति; जन्म; संभव। [--यवो == पैदा होना; उत्पन्न होना। --होवो = मुमकिन होना; शक्य होना.]
- संभववुं अ०कि० उत्पन्न होना; बनना; संभवना [प.] (२) हो सकना;संभव होना;संभवना [प.]
- संभळावर्षु स० कि० 'सांभळवुं' का प्रेरणार्थक; सुनाना (२) प्रत्युत्तर देना; खरी-खोटी सुनाना या गाली देना; सुनाना [सुना जाना
- संभळावुं अ०कि० 'सांभळवुं' का कर्मणि; संभार पुं० संभार; साज-सामान; उपकरण (२) सरकारी या अचारमें
  - भरनेका मसाला
- **संभारणं** न० यादगार; निशानी
- **संभारवुं स**० कि० याद करना; स्मरण करना; सँभारना [प]
- **संभारियुं** वि० मसाल्गे भेरा हुआ(२) न० मसालाभरी तरकारी
- संभाळ स्त्री० सँभाल;देख-रेख;खबर (२) पोषणादिका भार; पालन;

संभाळवुं

## संसार

- रक्षी; सार-सँभाज। [--नीचे ≕ --की देखरेखमें (२)--के आश्रयमें, शरणमें। --राखवी, लेवी ≕ सँभालना; रक्षा, 'पालन करना; खबर लेना; रोक-याम करना.]
- संजाळवुं स० कि० सॅभालना; रक्षा करना; हिफ़ाजतसे रखना; जतन करना; दिख-भाल करना (२) (किसी कामका)भार उठाना; जिम्मे लेना; चलाना; निवाहना (३) अपनेको जब्त करना; संयत करना; सँभारूमा (४) अ० कि० सँभलना; सावधान या होसियार रहना; बेखबर न रहना; चोट आदिसे बचाव करना
- संमत वि० सम्मत; सहमत(२)माना हुआ; स्वीकृत; पसन्द; सम्मत
- **संमति** स्त्री० सम्मति; सहमति; स्वीकृति; अनुमति
- संमान न० सम्मान;आदर-सत्कार(२) प्रतिष्ठा;गौरव
- संमानकारिणी वि०स्त्री०, संमानकारी वि० सम्मान करनेवाला; आदर-सत्कार करनेवाला
- संमानित वि० सम्मत; माना हुआ(२) सम्मानी; जिसमें सम्मानका भाव हो संमान्ध वि० सम्मान्ध; आदरणीय
- संगिश्रण न० सम्मिश्रण; मिलावट संमुख वि० सम्मुख; जो सामने हो (२) –की ओर प्रवृत्त; अभिमुुख; सम्मुख (३) अ० सामने; समक्ष; सम्मुख
- संयुक्स वि० संयुक्त ; जुड़ा हुआ ; मिला हुआ ; संबद्ध (२) अनेकोंने मिलकर किया हुआ
- संयुक्तकियापद न० संयुक्त किया

- संयोग पुं० संयोग; मिलन; मेल (२) संबंध; संयोग (३) समागम; साय; संगति (४) मिश्रण; संयोग (५) परिस्थिति [भूडमरूमध्य संयोगीभूमि (--मी) स्त्री० संयोगभूमि; संबत पूं० संवतु; विकम संवत् (२)
- उसका कोई भी वर्ष, संवत् संबनन न० संवनन: बशमें करनेकी
- स्वनन न० सवनन; वशम करनका किया (२) प्रेम करना; प्रेम करके वधमें करनेका यत्न
- संवरवुं स०कि० ढकना;व्याप्त करना; छिपाना (२) समेटना; बटोरना(३) रोकना;निग्रह करना
- संवाद पुं० संवाद; वार्तालाप; सवाल-जवाब; बातचीत (२)चर्चा; संवाद; बहस (३)मेल होना; एकता (४) सहमति; संवाद; एकराय होना
- संझय पुं० संशय; संदेह; शक (२) े दहशत; भय
- **संग्रोधक** पुं० आविष्कारक; नयी स्रोज करनेवाला(२)शुद्ध-साफ़ करनेवाला; संग्रोधक
- संशोधन न॰ संशोधन; शुद्धि (२) खोज; शोध; अन्वेषण; आविष्कार संशोधव्यं स॰ कि॰ संशोधन करना
- संसार पुं• संसार; जगत्; दुनिया; सृष्टि(२)मायाजाल; लौकिक प्रपंच; संसार(३)आवागमन; जन्म-मरण; संसार(३) गृहस्थी; संसार। [-सरको = दुनियादारीके व्यवहारमेसे पार उतर जाना(२)पार उतरना; भव-बंधनसे छुटकारा पाना; तरना। -नो वा वावो = संसारके दूसरे लोगोंकी तरह आचरण करने लगना; दुनियाके तौर-तरीक़े अपना लेना; दुनिया-

संसारव्यवहार

सागमट्

- दारीकी हवा लगना। --मांडवो, मां पडवं = शादी करना; घर बसाना.] **संसारव्यवहार** पुं० दुनियादारी
- संसारसुधारो पुं० सामाजिक सुधार; समाज-सुधार
- संसारी वि० संसार-व्यवहार-संबंधी; सांसारिक; दुनियादारी-संबंधी; संसार-का (२) दुनियादार; लोकव्यवहारमें कुशल; संसारी (३) संसारमें फँसा हुआ; दुनियादार; संसारी
- संस्कार पुं∘ संस्कार; शुद्ध-साफ़ करना (२) सूधारना; संस्कार (३) सजाना ; संस्कार (४) वासनाओं, कर्मों आदिको मनपर पड़ी हुई छाप;संस्कार (५) शिक्षा, उपवेश, संगति आदिका मन पर पड़ा हुआ प्रभाव ; संस्कार (६) पूर्वजन्मके कृत्योंका फल; संस्कार (७) अंत्येष्टि क्रिया; मृतक-कर्म; संस्कार(८)द्विजातियोंके शास्त्रविहित १६ कृत्य; संस्कार (९) पढ़ाई; शिक्षा । [--करबो≔शुढ करना(२)सजाना; व्यवस्थित करना । माथे संस्कार बीतवा = सिरपर आफ़त आना; संकट आना] संस्थान न० छोटा राज्य; रियासत (२) उपनिवेश; 'कोलोनी'
- संस्थानवासी वि०(२)पुं० उपनिवेशमें बसनेवाला; उपनिवेशवासी; उपनिवेशी संहरवुं स० कि० एकत्र करना; संग्रह करना;संहरण(२)लौटा लेना(मंत्रसे बाण आदि);संहरण(३)नाश, संहार
- करना; संहारना [प.] साइकल स्त्री० साइकिल; बाइसिकिल **साईस** पुं० साईस
- **साकटम** वि० सारे कुनबेको–सपरिवार दिया हुआ (न्योता)

साकटी(--ठी)स्त्री०,(--डुं)न०,(--टो) पुं० सागौनका लंबा मोटा बल्ला साकर स्त्री० मिसरी। [--पीरसवी, वाटवी, ना रवा पीरसवा, वाळी जीभ करवी = चापलूसी, खुशामद करना ] साकरियो पुं० फूलके मधुका टपकना; परागका चुना (२) चीनी चढ़ाया हुआ चना । चना साकरियो अणो पुं० चीनी चढ़ाया हुआ साक्षर वि० (२) पुं० साक्षर; पढ़ा-

- लिखा; शिक्षित(३) शिक्षित; विद्वान (४) लेखक; साहित्यकार
- साक्षरी वि० साहित्यकार-संबंधी (२) कठिन शब्दार्थवाली (रचना)
- साक्षी पुं० (अपनी) आँखों देखनेवाला; साक्षी (२)गवाह; साक्षी
- साक्षी स्त्री० साक्षी; साक्ष्य; गवाही; गवाहका बयान । [-आपबी, पूरती = गवाही देना (२) समर्थन करनां.]
- सामीवार पुं० गवाह; साक्षी
- साक्षीभूत वि॰ साक्षीभूत; जिसने स्वयं देखा हो
- साख स्त्री० साख; गवाही; साक्षो
- साख स्त्री० डालका पका हुआ फल; टपका (आम)
- साल स्त्री० चौखटके आधार पर लगनेवाली दो खड़ी लकड़ियाँ; साह (२) [ला.] आंगन; चौक

**साखप (--पा) डो**शी पुं० हमसाया;पड़ोसी

साखी स्त्री० दो चरणोंका एक प्रकारका दोहा था पद; साखी (२) गजल, लावनी या गरबीमें आनेवाली स्वर आलापकर गायी जानेवाली छोटो पंक्तियाँ

साग पुं० सामौन; सागवन

सागमदुं वि० देखिये 'साकटम'

	•
समा	राख

सागवान न० सागौनकी लकड़ी सागुचोखा, सागुदाणा पुं० व० व० सागू-दाना; साबुदाना [वरीका चूना सामेळ पुं० छाना हुआ बारीक चूना; साच न० सत्य साचकर्छुं वि० साँचला; सत्यवादी; ईमानदार; सच्चा; निष्कपट

**सागरीत (--**द) पुं० पुठवाल; साथी (ख़ासकर बुरे कामोंमें सहायक)

- सांचमाच वि० सच्चा; यथार्थ; ठीक (२) अ० सचमुच; वस्तुत:
- साफवण(--णी) स्त्री०, (--जुं) न० सँभाल; देखभाल; रक्षा; पालन-पोषण साचववुं स० कि० सँभालना; रक्षा करना;पालन करना; व्यवस्था करना साबाई स्त्री० सचाई; सत्यता, सच्चापन साबाबोखुं वि० सच कोलनेवाला; सच्चा साचुं वि० सत्य; सच; खरा; जैसा हो वैसा (२) सच्चा; विशुद्ध; खरा; असली; जो नक़ली न हो; उदा० 'साचुं मोती '(३)सच बोलनेवाला; सच्चा(४)वचन पालनेवाला; सत्यवादी सार्चुजूढुं वि॰ झूठ-सच; सच-झूठ(२) न०उकसानाः; उभारनाः। [साचां जुठां करवां क्ल झूठ-सच जोड़ना ; उभारना .] साचे अ० सचमुच; वाकई; निस्संदेह (२) उचित रीतिसे; यथार्थतः साचेसाचुं वि०बिलकुल सच; यथार्थ साज पुं०साज;सामान;आवश्यक सामग्री (२) सिंगार; वस्त्राभूषण; सजावटकी सामग्री; साज (३) घोड़ेको सजानेका सामान; साज। [--मांडवो = घोड़ेको सवारीके लिए तैयार करना.] साजन (०महाजन) न०, साजभिया पुं०

ब०व० वरयात्रामे	ं शामिल	होनेवाले
लोग; बराती		~

- साजसरंजाम, साजसामान पुं० साज-सामान; आवश्यक चीज-वस्तु
- साजिवो पुं० साज बजानेवाला;साजिदा; सपरदाई (तबलची या सारंगिया)
- **साजीखार** पुं० सज्जीखार; सज्जी
- साजुं वि० तंदुरुस्त; स्वस्थ; चंगा(२) जो टूटा हुआ न हो; साबित; साबूत; अखंड [भला-चंगा
- साजुंताजुं दि० ताजा और निरोगी;
- सार्जुसम, सार्जुसमुं वि॰ तंदुरुस्त; निरोगी (२) बिलकुल साबित; जो जरा भी टूटा हुआ न हो; अखंड
- साटको पुं० चमड़ेकी पट्टी बाँधकर बनाया हुआ चाबुक या कोड़ा; सटाकी
- साटमारी स्त्री॰ देखिये 'साठमारी'
- **सादवन्ं** स०कि० मूल्य ठहराना; लगाना (द्यम) (२) <del>क्वपित्रम्</del> (२) <del>फ</del>र्ने
- (दाम) (२) खरीदना (३) शर्त, इक़रार, प्रतिज्ञा करना [लेना
- सादबुं स॰कि॰मूल्य ठहराना (२) मोल साटास्तत न० प्रतिज्ञापत्र; इक़रारनामा साटांतेस्डां न० व० व० कन्याके बदलेमें कन्या देनेका व्यवहार या बिरादरीके तीन व्यक्तियोंका आपसमें कन्याका लेन-देन करनेका व्यवहार
- साटी स्त्री० शर्त; प्रतिज्ञा; वादा; उदा० 'तें रमतमां दान आपवानी साटी करी हती'

सादुं न॰ प्रतिज्ञा; कौल; शर्त; क़रार(२) मूल्य ठहराना (३) पेशगी; बयाना (४) मालके बदलेमें माल या कन्याके बदले-में कन्या देना (५) बदला; मुआवज्जा

मादुंते**खदुं** न० देखिये 'साटांतेखडां ' **साटुंतेखदुं** न० देखिये 'साटांतेखडां ' **साटे** अ० बदलेमें; एवजमें

सायनो

साटोबी

- **साढोडी** स्त्री० पुनर्नवा; गदहपूरना; साटी (वनस्पति)
- साटोडीमूळ न० पुनर्नवाका मूल
- **साटोडो** पुं० एक वनस्पति
- साठ(ठ,) वि० साठ; ६०
- साठमारी स्त्री॰ जंगली पशुओंको उकसाकर लड़ानेका तमाशा (२) लड़ाई; टंटा [ला.]
- साठी स्त्री० साठ सालकी आयु; बुढ़ापा(२) साठ वर्षका अंतर, समय या अवघि। [साठे हाय घालवा ≕खूब बुढ़ा हो जाना; सठियाना.]
- साठी स्त्री०साठ दिनमें पकनेवाला एक बान या ज्वार;साठी (धान)
- साडत्रीज्ञ (-स) वि० सैंतीस; ३७
- साइलो पुं० स्त्रियोंकी धोती; साड़ी साडा(ड') वि० आधेके साथ; साढ़े।
- [-त्रण घडीनुं राज = क्षणिक सुख या सत्ता; चार दिनकी चाँदनी। -सास बार परबडवुं = ठीक पुसाता होना.]
- साडाबार (डा')स्त्री ०[ला.]ग़रज ; परवा साडी (डी') वि० देखिये 'साडा' साडी स्त्री०स्त्रियोंकी क़ीमती घोती (२)
- स्त्रियोंकी धोती; साड़ी साडीबार(डी')स्त्री॰देखिये 'साडाबार'
- **साडीसाती** (डी') वि० साढ़ेसाती
- साडु(०भाई) (डु') पु॰ साढ़
- सादु(०भाई) (ढु') पुं० साढू
- साणकुं न० बड़ा सकोरा (२) भिक्षापात्र
- **साणको (-सी)** स्त्री० सँड़सी
- साणसो पुं० सँड्सा (२)पकड़; फॅसाव;
- काबू (३) संकट; मुस्किल [ला.] सात वि० सात;७३ [--गळणे गाळवुं = खूब सोचना;खूब विचार करना;छान-बीन करना।--गळणे गाळीने पाणी

**पीवं =** खुब सोव-समझकर কৰ্ম उठाना।--पांच थवी, बीतवी = पेटमें हड़बड़ी पड़ना; बहुत घबराना (२) मुसीबत आ पड़ना; आसमान टुटना । ⊶पेढी उथलाववी, –पेढीना चोपडा उकेलवा = बीती हुई बातें निकालकर गालियां देना; गड़े मुर्दे उखाड्ना; बहुत निदा करना ; पानी पी-पीकर कोसना । - फेरा गरज होवी = कोई चारा न होना; अत्यंत ग़रज़मंद होना । **–मण ने** सवाझेरनुं काळजुं = पत्थरकी छाती; घोर संकटमें भी न डिंगनेवाला दिल: मजबूत दिल(२)खूब सावधान । साते अवतार = जन्मजन्मान्तरमें । साते घोडे साथे चडवुं = एक साथ अनेक फ़र्ब अदा करनेका जिम्मा लेना.] खिल सातताळी स्त्री० दौड़कर खेलनेका एक सातभाई पुं० सातभाई;सतभइया(पक्षी) सातम स्त्री० सप्तमी (तिथि)

- सातम्ं वि॰ सातवाँ। [सातमे आसमाने जबुं, चडवुं, पहोंचवुं = मिजाज सातवें आसमान पर होना; बहुत घमंड बढ़ जाना.]
- **सातवो** पुं० सत्तू; सतुआ
- सातळो पुं० एक पेड़; छतिवन; सप्तपर्ण
- **सातोडियुं** न० एक खेल
- साथ पुं०साथ;संग;सुहबत (२) सह-कार (३) अ० साथ
- सायरो पुं० घासका बिछोना; पयालका बिछोना; साथरी [प.] (२) कुशको चटाई; साथरी (३)मरणासघ्न व्यक्तिके लिए गोबरसे लीपकर बनाया हुआ चौका। [सायरे सुवाडवुं=मरणासघ्न व्यक्तिको चौके पर सुलाना.]
- सायवो पुं० देखिये 'सातवो'; सत्तू

		1	
	J	•	

साघना करनेवाला; तपस्वी;साघक । [**⊸बाषक कारणो ≕**पक्षकी और उसके विपक्षकी दलीलें.]

साधन न० सिद्ध करना; पूरा करना; साधना; साधन(२)साधन; औजार; सामग्री; उपकरण(३)उपाय; साधन; जरिया; युक्ति(४)तप,संयम,उपासना आदि ईश्वर-प्राप्तिके साधन(५)हेतु; साधन

साथनभूत वि० साधन≪प बना हुआ साथनसमृद्धि स्त्री० साधनोंकी विपुलता साथनी स्त्री० समतल जाननेका राज-बढ़ईका एक औखार; साधनी

- साधवुं स०कि० साघना; सिद्ध करना; पूरा करना(२)प्रमाणित करना;साबित करना; साधना (३) (देव, मंत्र आदिको वशमें करनेके लिए) साधना करना(४) अपने अनुकूल करना; वशमें करना; साधना (५) शब्दका सिद्ध रूप किन फेरफारोंसे हुआ यह बताना (६) (अवसर या मौक़ेसे) लाभ उठाना; प्राप्ति करना; काम निकालना
- साधारण वि० साधारण; मामूली; आम; सामान्य (२) मघ्यम; न बहुत, न कम; औसत दरजेका; सामान्य; न बढ़िया, न घटिया (३) समान; जो सब पर लागू हो; साघारण
- साघारण अवयव पुं० समापवर्तक; 'कॉमन फेक्टर' [ग.]
- साषु वि॰ साधु; बढ़िया; उत्तम (२) धार्मिक; धर्मपरायण; सदाचारी; साधु (३) [व्या.] शिष्ट; साधु (शब्द; भाषा) (४) (समासके अंतमें) सिद्ध करनेवाला; साधक; उदा॰ 'स्वार्य-साधु; तकसाधु ' (५) पुं॰ साधू-पुरुष;

बुलागा;आवःश्व दना । —दवा ≔ जवाब
देना ।— <b>नीकळवो —</b> आवाज निकलना ।
<b>–पाडवो</b> ≕ ढिंढोरा पीटना; मुनादी
करना । –वेसवो ≕गला बैठ जाना.]
सादड वि० फुटकर (२) सावंजनिक;
सबके लिए खुला हुआ ['सादडो'
सावड स्त्री०, (-डियोे) पुं० देखिये
सावडी स्त्री० चटाई

सामक स्त्री० जांघ; रान; ऊष

साषियो पुं० स्वस्तिक;सथिया[प.][ झ]।

आदिमें रंग भरना; चौक पूरना.]

सामी पुं० साथी; सहायक; मददगार (२)खेतीके लिए रखा हुआ नौकर

साथेलागुं अ० साथ-साथ; एकसाथ (२)

साद पुं० आवाज; पुकार; स्वर (२)

चीख; चिल्लाहट। [-ऊघडवो =

वावाज खुलना; गला खुलना । **–करवो** 

= हॉंक देना; जोरकी आवाजसे

साथे अ० साथ; सहित; सह

बिलकुल; तमाम; समूचा

[साथिया पूरवा = ऑगनमें स्वस्तिक

- सादबो पुं० अर्जुनका पेड़; ककुभ
- सादाई स्त्री० सादगी; सादापन
- साबुं वि०जिसमें तड़क-भड़क, दिखावा, फ़जूलखर्ची, जटिलता, मिलावट, दंभ बा कृत्रिमता न हो; सादा (२) जिस पर रंग, छाप, स्टांप, टिकट या लिखाई न हो; कोरा; सादा (कागज) (३) साधारण (क़ैंद); आसान; सरल : [ झादी केद = सादी कैद; कैद महज्ञ.] सामक वि० साधक; कार्यकी सिढिमें उपयोगी (२) साघक; सिढ करनेवाला (३) सिढ करनेका प्रयत्न करनेवाला (४) मंत्रबल्से भूत-प्रेतादिको सिढ

करनेवाला;साधक(५)पुं०(मोक्षकी)

साबू

	_	_
स	Ţ٩	

साध्(६)त्यागी; मुनि; संतः;वैरागी (७)अ० शाबाश; धन्य; साधु-साधु सान स्त्री० शान; छटा सान स्त्री० इशारा; संकेत; सैन; और्षका संकेत (२)समझ; अक्ल(३) स्वमान; शान (४) न० रेहन; गिरवी। [-करवी = इशारे करना; आँखसे संकेत करना। -मां कहेवुं = इशारेसे कहना; सैनसे कहना। -मां मूकवुं = गिरवी रखना; रेहन रखना। -मां समजाववुं = इशारेसे समझा देना; थोडेमें समझा देना.]

- सानी स्त्री० तलते समय ताईमें बचा हुआ चुरा (२) पेरे या कुटे हुए तिलका तेलयुक्त चूरा;तिलकुट(३) राख;भस्म सानुकूल (-ळ) वि० अनुकूल; सहायक साप प्॰सौंप; सर्पे। [-उतारवो = सौंप उतारना ।---**काढवो** =(सँपेरेका)साँप-को तमाशेके लिए बाहर निकालना (२)कामकी धूममें दूसरा काम ले आनायाबाधा खड़ी करना। — छो के घो छ = क्या है, यह निश्चित नहीं किया जा सकता। --ना के घोना भणाववा 🛲 बहुत तरीक़ोंसे समझाना । --**नो भारो** = जोखिम; बला;हानि-कर, कष्टकर चीज;साँपोंका सिरपर लिया हुआ पिटारा(२)खुब डाही, ईर्षालु व्यक्ति; सौंपका बच्चा। सापे छर्छ्दर गळवुं = साँप-छर्छ्दरकी गति या दशा होना; दिनिधामें होना.]
- सापण (-णौ) स्त्री० साँपिन; साँपकी मादा [सँपोला सापोलियुं न०छोटा साँप (२) पोआ; साफ वि० साफ़; स्वच्छ; निर्मल(२)
  - जिसमें मैलन हो; जिसमें काँटे-कंकड़

न हों; मँजा हुआ; साफ़(३) समतल; बराबर; साफ़(४) जिसमें मैल, बुराई, कपट न हो; निर्दोष; साफ़; निष्कपट; साफ़दिल (५) स्पष्ट; बोटूक; साफ़ (६) अ० साफ़; खुले तौरसे; स्पष्ट रूपसे। [-फरवुं, करी देवुं = उड़ा देना; खर्च कर डालना; कुछ बाक़ी न छोड़ना;साफ़ करना; सब खा-पी डालना (२) मार डालना; सबको खतम कर देना; किसीको जीवित न छोड़ना;साफ़ करना.]

साफ साफ वि० बिलकुल साफ़ (२)अ० साफ़-साफ़; स्पष्टतः (३) साफ़ दिलसे साफ़युफ वि० साफ़; निर्मल; स्वच्छ; साफ़-सुथरा (२) स्त्री० सफ़ाई; झाड़-पोंछ (३) कामकाजमें सफ़ाई; फुरती; चतुराई; सफ़ाई (४) पुं० डंडकी कसरतका एक प्रकार

**साफसूफी** स्त्री० सफ़ाई; साड़-पोछ साफी स्त्री० चिलम पीनेका कपडा साफ़ी

साफो स्त्री०शेखी;बड़ाई(२)वि०बिना कमीशनका; जिसमें बट्टा,दलाली न मिली हो; केवल;खालिस

**साफो प**ुं० साफ़ा; मुरेठा

साबदुं वि० सारा; पूरा; तमाम(२) सज्ज;लैस;तैयार(३)स्वस्य; तनकर

साबर न० साबर; साँभर हिरन

साबर्रांशगडुं, साबर्राशगुं, साबरशोंगडुं, साबरशींगुं न० साबरका सींग

साबुँचोँखा, साबुँदाणा देखिये 'सागुचोखा' साबू पुं० देखिये 'साबु'

सामूत
-------

सामे इ.लिपंचमी - आदों

- संखूत वि० साबित; अखंड; साबत; ज्योंका त्यों; दुरुस्त; जिसमें कोई खामी न हो; पूरा-पूरा जीवित (२) संगीन; मजबूत; साबूत साबूती स्त्री० मजबूती; संगीनी (२) सुरक्षितता [अ० आभारके साथ
- सुराकरता [अ० जानारक ताय सामार वि० एहसान-आभारसहित (२) साम पुं० स्वामी; पति (२) स्त्री० (मूसलका लोहेका) शंब
- सान पु॰सामचेद; साम (२) साम(उपाय)
- सामदुं वि॰ इकट्ठा; एकसाथ; एकत्र; सम्मिल्ति (२)अ॰ साथ-साथ; एक-साथ [विरोध;मुठभेड़ सामनो (सा') पुं० सामना;मुकाबला;
- सामर न० सेमल; शाल्मली वृक्ष सामसामुं (सा') वि० जो ठीक सामने हो; सम्मुख; समक्ष (२) विरुद्ध; प्रति-कूल; विरोधी (३) स्पर्धावाला; हरीफ़; प्रतिस्पर्धी (४) अ० आमने-सामने; मुकाबलेमें (५) प्रतियोगितामें । [-आशी जयुं = (लड़नेके लिए) तैयार होना; सामने होना.]
- सामसामे (सा')अ० आमने-सामने (२) स्पर्धा, प्रतियोगितामें
- **सामळ (-ळियो)** पुं० श्रीकृष्ण;सौवलिया **सामळुं** वि० सौंवला; श्याम
- सामळो पुं० सौवलिया; श्रीकृष्ण सामान पुं० सामान; असबाब; चीज-वस्तु(२)साज(जीन, लगाम आदि)। [--नाखवी, भीडवी = जीन कसना.]
- सामान्य वि० सामान्य; साधारण; आम; मामूली (२) सबमें पाया जानेवाला गुण या चिह्न; समान; सामान्य(३) न० सामान्य लक्षण

सामान्यनाम न० जातिवाचक संज्ञाव्या.]

सामापांचम स्त्री० ऋषिपंचमी;भादों सुदी पंचमी

- सामावाळियुं, सामावाळुं (सा') वि० विपक्षी; शत्रुके पक्षका; प्रतिपक्षी
- सामाबाळियो (सा') पुं० प्रतिपक्षी ; शत्रु सामासामी (सा', सा') अ० एक दूसरेके विरुद्ध ; आमने-सामने ; सामने (२)
- स्पर्धामें; प्रतियोगितामें। [--आवर्षु = मारपीट होना; मुठभेड़ होना; लड़ाई होना(२)स्पर्धा होना.]
- **सामियानो पुं०** शामियाना
- सामुद्रधुनी स्त्री० दो समुद्रोंको जोड़ने-वाली खाड़ी; जलडमरूमध्य
- सामुं(सा') वि० सामने आया हुआ; सम्मुख;मौजूद(२)विषद्ध;प्रतिकूल । [सामां किंगडां मांडवां = लड्नेको तैयार होना; सामने होना; मुक्राबले पर आना। ---आवव्,ं, जव्ंु ⇒ आगे बढकर लेना या स्वागत करना; अगवानी करना । **– जोवं** = सबर लेना; देखभाल करना (२) –का खयाल करना; खयालमें लाना; लिहाज करना; उदा ० 'मारा घोळा वाळ सामुं तो जो' (३) नजर डालना; देखना; इच्छा करना;उदा० 'तेना साम् तो जोई जो '। --थवं = सामने होना; घुष्टतापूर्वक जवाब देना (२) भारनेको दौड़ना। --पहर्षु = विरुद्ध पक्षमें जाना । --बोलवुं = धृष्टलापूर्वक जवाब देना; विरुद्ध बोलना;मुँह लगना.]
- सामे(सा') अ० सामने; रूबरू; मौजूदगीमें (२) आँखोंके सामने; सामने;समक्ष (३)विरोधमें; विरुद्ध। [--आंगळी करवी = निंदा करना। --बारणे = नजदीकमें;पासमें।--मोढे

Ħ	मि	æ

सार्चमाई

= सामने आकर; रूबरू; मुँह पर.] सामेल वि० शामिल; शरीक सामेथुं न० अगवानी; आगे बढकर लेना या स्वागत करना सामो पुं० एक कदन्न ; सौवौ सायत स्त्री० सायत; ढाई घड़ी; घंटा सायर पुं० सागर; सायर [प.](२)न० शराब, ताड़ी आदि पर लगनेवाली जकात **सायंकाल(--ळ)** पुं० सायंकाल सायो पुं० साया ; छाया ; छाँह (२) [ला.] मदद;आश्रय; साया (३) फ़क़ीरका कुरता; चोला सार वि० अच्छा;बढ़िया;उत्तम(२) पुं०; न० सार; सत; कस (३) भावार्थ ; तात्पर्य ; मथितार्थ (४) [ला.] लाभ; फ़ायदा(५) उमंग; आनंद (६) अच्छा भाव (७) सज्जनता ; अच्छाई सारण वि० सारण;चलानेवाला(२) पुं० बावली या कुँएमें से निकाली हुई नहर(३)न० अंत्रवृद्धि सारणगांठ स्त्री० अंत्रवृद्धि; 'हार्निया' जल-प्रणाली (२) तालिका ; सारणी सारणी स्त्री० बुनाईके लिए फन्नीमेंसे ताना पिरोना;कंघी भरना सारप स्त्री०भलाई; सज्जनता; अच्छाई सारभाग पुं० अच्छा भाग(२)सारांश सारभूत वि० निष्कर्ष या निचोड़के रूपमें प्राप्त; सारमूत; साररूप (२) सर्वोत्तम;सारभूत; साररूप **सारमाणसाई** स्त्री० सज्जनता सारववुं स०कि० सार निकालना सारवा स्त्री० सारवान् जमीन; उपजाऊ অমীন

सारवान पुं० सारवान; ऊँटवान सारवार स्त्री० सँमाल; सेवा-टहल (२) तीमारदारी सारवुं स०कि० आदकर्म करना; पिड देना (२) पिरोना (३) झाड़ना; गिराना (४) औजना; आँखमें लगाना

(५) पार लगाना; पूरा करना (६) सुंदर बनाना; सजाना; पहनना (७) खिसकाना; दूर करना; सरकाना (८) टॉंकना; नक़ल कर लेना

सारस पुं०; न० सारस; लक़लक़

सारसी स्त्री० सारसकी मादा; सारसी सार्रग पुं० जहाजका कप्तान; नाखुदा

(२) उसका साथी; खलासी

सारंगी स्त्री० एक तंतुवाद्य; सारंगी साराई (-ञ) स्त्री०अच्छाई; सज्जनता; भलमनसी

सारासारी स्त्री० अच्छा मेल या संबंध सारांश पुं० सारांश; तात्पर्य; मथितार्य

सारीगम स्त्री०संगीतके सात स्वर या उनकी लिपि; (संगीतका) सप्तक; स्वरलिपि (२) किसी राग या गीतके स्वर; सरगम

सारी पेठ(-ठे) अ० खूब; अच्छी तरह **साद** अ० – के लिए; वास्ते

सारं वि०(२) म० अच्छा; मंगलमय: शुभ; भला (३)सुंदर; अच्छा;मजेदार; भला (४) सारा; समस्त; सर्व (५) अ० (जवानमें) भले; अच्छा; खैर । [(स्त्रीने) सारा बहाबा होवा = गर्भ रहना; पेट रहना। सारा पगलानुं = नेकक़दम; जिसके पधारनेसे शुभ हो। सारो बहाडो = भले दिन; सुलके दिन.]

सार्वनरसुं, सार्वमाठुं वि० भला-बुरा। [⊶करवूं ≕यह अच्छा है, यह खराब है

संस्टेंपयू	५१३ सांसर्व
इस प्रकार नुक्स निकालना; जल्दी	खटकना (२) दिलमें दुःख होना;
यसंद न करना। – कहेर्चु = उलहना	सलना; अंसरमा 👘 🛛 🖣 सरस
देना; धर्मकाना (२) निंदा करना;	सालस वि० सीधे स्वभावका; सीवा;
बुरा कहना.]	सालातून् वि० वेसमझ; वेढंगा (२)
सारेंबडुं ने० चावलके आटेका पापड़	बेढंगा (२)मोला-माला; सरल; अल्हड
सार्वजनिक, सार्वजनीत वि० सार्व-	
जनिक; सार्वजनीन	सालो पुं० देखिये 'साळो '
साल न० किसी छेदमें ठीक बैठनेवाला	सालोमी पुं० ढोरोंका डाक्टर; पश-
सिरा; लकड़ी आदिका पतला सिरा	चिकित्सक; सलोतरी
जो सालमें जमकर बैठे; चूल(२)वह	साल्लो पुं० स्त्रियोंकी घोती; साड़ी
जो दुःख देता हो;साल । [-काढ्यु =	साब(सा') अ० बिलकुल; एकदम;निपट
लकड़ीके छेदमें ठीक बैठनेवाला सिरा	<b>सावकुं</b> वि०ेसौरोला
बनाना (२) बाधा दूर करना (३)	सावचेत वि॰ सावधान; सावचेत
खतम करना; मार डालना; ठिकाने	सायवेती स्त्री॰ सावचेती; सावधाती;
लगाना । <b>वालवुं = दाधा खड़ी</b>	सजगता (२) चेतावनी; तंबीह
करना; रुकावट डालना.]	सायज पु॰ वारा (२) सिंह
साल स्त्री॰ साल; वर्ष (२) फ़सल;	सावम(मान) वि० सावमान; संसर्फ
पाकका मौसिम (३) सालियाना	सावरणी स्त्री० झाड़ू; बुहारी
सालगरेह, सालगीरी स्त्री० सालगिरह;	सावरजो पु० बड़ी झाडू
बरसगठि	साबलुं न० सकोरा; शकोरा; शराब
सालपोल (-लियुं) वि० जो जोड़मेंसे	
ढीला पड़ गया हो ; ढीला (२) जिसकी	
चूलें ठीक बैठी न हों;ढीली चूलवाला	
(३)[ला.]ढीला;बोदा; मुस्त	दोष या विकृतिका दूर होना;सुंघरना ।
सालम पुं० सालम मिस्री; सुधामूली	- <b>ऊपडवी, थवो</b> = सौंस ऊपरको
सालमपाक पुं० सालम मिस्री डालकर	चढना; आसन्नमृत्यु होना।काढी
बनाया जानेवाला एक पाक (२)	नाखवो = खूब थका डालना (२)
मार [ला.]	भुरकुस निकालना; कचूमर निका-
सालववुं स॰ कि॰ लकड़ीका सिरा अन्य	लना।वालवो =- जिदा होना;
र्लकड़ीके छेदमें बैठाना; सालना	सौंस चलना.]
सालवार अ० सालवार; वर्षानुकममें	सासरबासो पुं० विदाके समय बेटीको
सालवारी स्त्री० वर्षानुकम (२)घटना-	दिये जानेवाले कपड़े, गहने आदि जन्मिः कर्माने कार्य
ओंको सालवार कमर्मे रखना; उनकी सूची या नोंध	सासरियुं न० ससुरके पक्षका; ससुराल-
	वाला(२) ससुराल
'संस्वर्षु अ० कि० सालना; चुभना;	सासरी स्त्री∘,(—र्ष) न∘ ससुराझ

मु. हि–३३

	4	٤¥		
--	---	----	--	--

झम्सु स्त्री॰ सास, प्रति या पत्नीकी माता सासुली स्त्री॰ सास (माजवाजक) साहत स॰ किना; वकर्ना; वालना साहत स॰ साहस; जोसियका काम (२) अविकरपूर्ण, वीदत्यपूर्ण काम ; साहस (३) किसी वद्यापारण कामलें प्रवृत्त होनेकी वृत्ति; साहस; जीवट; हिम्मत । [ - केक्रां = साहस करना; जोसिम उठाना. ]

साहत्तकथा स्त्री० साहस या साहसपूर्थ कामोका वर्णन करनेवाली कहाती; वीरोंकी कथा [आदमी; साहतिक साहतक्र पु० हिम्मतवर, अस्लेप साहतिक, साहती वि० साहस करनेवाला; साहतिक; साहती

साही, साहीपूल देखिये ' वाही व्यादि साहकार, साहकारी देखिये 'साहुकार'; ' शाहकारी '

- साहुडी स्त्री॰ देखिये 'शाहुडी'
- साहेब पु॰साहिब ; मारूिक ; स्वामी (२) सरदार; हाकिम ; आदरणीय व्यक्ति; साहिब (३) टोपीबाला; यूरोपियन; स्राहब (४) ईश्वर; साहिब
- साहेबसोक पुं० गोरे लोग (सासकर अंगरेज) [िठत स्त्री साहेबा स्त्री० साहिबा; सेठानी;प्रति-साहेबी स्त्री० साहबी ठाट;वैभव(२)
- मालिकपन् ; साहिबी
- साहेबो पुं० स्वामी; वर
- साहेली स्त्री॰ सहेली; ससी
- **साल** स्त्री० करना
- सामगी पुं० बुनकर
- साफ़ाबेकी स्त्री० साळेकी पत्नी; सल्हज साफ़ी स्त्री० पत्नीकी बहन; साली साफ़ू पु० रंगीन महीन सर्वा

- सामे पु॰ पत्नीक आई; साला सांगरू(०) स्त्री० संकीर्णता;तंगी(२) कठिनाई; युसीबत; यूहिकल
- सांकवुं(०) वि० कम चौड़ा; संकरा; तंग(२) चुस्त; संकीर्ण; कसा हुझा (३) संकुचिढ़; अनुदार; संक्रीफं-हृदय। [-पब्बुं = विस्तारमें कम पड़ना; संकीर्णता अनुभव करना; कुबादगीका न होना.]
- सांकडे मांकडे (--छे) (०,०) अ० सिक्तुइ-सुकुड़कर; सिमटकर; बक्तुची मारकर
- र्**सांकछ (०)** स्त्री० श्रृंखला; जंजीर; संकल; सांकल; सिकड़ी (२) दरवाचेकी सांकल; कुंडी (३) जमीन नापनेकी १०० फुटकी एक नाप
- सांकळवुं(०) स॰ कि॰ (खंजीरकी तरह)जोड़ना;मिलाना; एक दूसरेसे लगाना (२) अ॰ कि॰ सौकलकी तरह जुड़ना; संकलित होना
- **सांकळिपुं** (०) न० अनुकमणिका; विषयसूची
- सांकळी (०) स्त्री० छोटी कड़ियां,छल्ले आदि जोड़कर बनाई हुई लड़ी या खंजीर; 'चेइन' (२) खंजीर जैसा गलेका एक गहना; सिकड़ी
- सोकव्युं(०) न० पैरका एक गहना; सौकड़ा [अंदाचा
- सांको (०) पुं० किसो चीजको मापका
- सांबचुं (०) स०कि० सहना; झेलना (२) क्षमा करना (३) नापना (४) तुलना करना; मिलाकर देखना सांबु(०) न०नाप (२) जोतकर खाली छोड़ा हुआ खेत [(व्यापारी) सांबो (०) पुं० एककी संस्थाका संकेत

with the second s	<b>પ્</b> રમ્ <del>કોવ્રે</del>
सांबद ( दी) (०) स्ती॰ शमीकी फली; संगर [साथ; समस्त; पूरा,समूखा सांबरेषुं (०) अ०कि० अलना; संचरमा [प.] (२) जाना; विदा होना सांबर्षु (०) स०कि० संचय करना; इकट्ठा करना; संचित करना सांबाकाम (०) न० यंत्र; कल; मशीन (२) कल्का काम; यंत्रकाम (३) यंत्रकी बंगायट, कल, पुरंचे आदि [ठप्पा सांचा (०) पुं० यंत्र; मशीन (२) साँचा; सांचा (०) पुंठ यंत्र; स्रांग (२) साँचा; सांचा (२) बहुत देर करना [ली.] । -पाढवी = विलंब करना; काम संटाईमे डालना;शाम-सुबह करना । -सवार = रोच; निरंतर; लगातार.] सांचरे (०) व्या शामको सांचरे (०) व्या शामको तांचरे (२) आरती तांचर (२) आरती तांचर (२) अरहर, कपास आदिका वादि [सूसा डठल; रहठा सांठी (०) पुं० ज्वार, ईस आदिका गांठदार हरा तना; सांठ (ईसका) सांचशी, सांचरी, सांडती (०) देखिये 'साणयी' मादि [आदमी, सांइनी; ऊँटनी सांडर (०२,) स्त्री० सांइनी; ऊँटनी सांडयी (०) स्त्री० सांइनी; उँटनी	सांसी (•) स्त्री • स्वः हकरे कोती जाग जतती कामीन; जोत (२) न० देकिये 'सांतीबूं' सांतीबूं (०) न० हल; सीर सांतीबूं (०) न० हल; सीर सांतीबूं (०) न० हल; सीर सांतिकुं (०) न० वेलनो जोतनेने प्रमुक्त एक प्रकारका जुवा सांब (०व,) स्त्री० बनीनके मालिक्रको लगानके रूपमें ठहराई हुई वर्त पर वनाज या स्पयोंमें मिछनेवाला उपवका भाय; बटाई; ग्रस्लई । [सांव वस्त्रवं, प्रूक्त्वं = प्रत्नीन जोतमेके मिप देना किसमें मालिकको लगानके रूपमें जपवका भाय; बटाई; ग्रस्लई । [सांव वस्त्रवं, प्रूक्त्वं = प्रतीन जोतमेके मिप देना किसमें मालिकको लगानके रूपमें जपवका माय; बटाई; ग्रस्लई । [सांव वस्त्रवं, प्रूक्त्वं = प्रतीन जोतमेके किप देना किसने मालिकको लगानके रूपमें ज्यवका दिना सांवयों, सांवी, सांचीको पुं० पट्टे पर कताई,बुनाई आदिमें सार जोड़ना;झांघ सांच (०४,) स्त्री० देसिये 'साधी' (२) कताई,बुनाई आदिमें सार जोड़ना;झांघ सांच (०) न० जोड़नेकी किया; जोड़; संघान (३) परिशिष्ट; किसी जीवका प्रत्क वंश सांचची (०) स्त्री० जोड़नेकी किया; जोड (२) जोड़नेकी कुशलता या रीति सांचचुं (०) अ०कि० सीना (२) दो चीजों, टुकड़ोंको चिपकाना, मिलाना आदि; जोड़ना (३) दीकना; जोड़ता (४) (बरतको) झालना; टांका लगाना; चकती ख्याना सांचो (०) पुं० वह जगह जहां दो बीजे
सांडियो (०) पुंक देखिये 'सांब' पुंक सांडो (०) पुंक एक जंतु; सॉड़ा सांसळमुं (०) स० फि० ची या तेलमे तलना या सॅकना	टूटा हुआ दुस्स्त करनेके लिए लगावी

त्तम	रष्
	-

	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
पटना । <b>वेसवी,मळवी</b> == ठीक जुड़ना;	सित्तार्यु अ० कि० 'सीझवुं' का आवे;
टौका ठीक लगना । –मार्गो =	सिमना
जोड़ना, मिलाना, सीना आदि.]	<b>सिडावर्षु स</b> ०कि० 'सीडवुं'का प्रेरणार्थक
सांपडवुं (०) अ००० मिलना;प्राप्त	सिहानुं अ०ति० 'सीडवुं' का कर्मणि;
होना,संपन्न होना(२)जनमना,पैदा होना	सीझना (ऋण)
सांबेल् (०) न० मूसल	सितार पुं०; स्त्री० सितार
<b>सांचर (</b> ०) स्त्री०, ( <b>ण०</b> ) न० स्मरण;याद	सितारो पुं० सितारा;तारा(२) [ला.]
<b>सांभरवं</b> (०) स०कि० इकट्ठा करना;	दशा;भाग्य;सितारा ।[ <b>−चडतो हो</b> वोः≕
बटोरना (२) अ० कि० याद आना;	अम्पुदय होना ; सितारा बुलंद होना ।
स्मरण होना 🛛 [ध्यान देना ; सुनना	ू <b>पांगरो होवो</b> <del>–</del> भाग्य <b>व</b> नुकूल होता;
सांमळ्युं (०) स० कि० सुनना (२) [छा.]	किस्मत लड़ना.]
सांसता (०) स्त्री० घीरज; सत्र (२)	सिसेर वि० सत्तर; ७०
सत्ता; बल (३)तंगी; मुस्किल; भीड़	सित्तोतेर वि० सतहत्तर;७७ [८७
(पड़ना)	सित्याझी (-सी) वि० सतासी; सत्तासी;
सांसतुं (०) वि० सबूर; घैर्ययुक्त(२)	सित्योतेर वि० देखिये 'सित्तोतेर'
कोमादिसे निवृत्त; शांत	<b>सिद्ध वि० सिद्ध; अच्छी तरह तैयार</b> या
सांसा (०) पुं० ब० व० कमी; बड़ा	पूरा किया हुआ; सफल; प्राप्त; लम्ब
संकट ; साँसत ; परेशानी ; मुश्किल	(२) निक्चित; प्रमाणित;सिद(३)
सांसो (०)पुं० सौंसा;संशय;अनिष्चय	निष्णात; दक; विशेषज्ञ (४) जिसले
सांसोट (०) २० सीधा; आर-पार	सिद्धि प्राप्त की हो (५) मुक्त; सिद्ध(६)
सिक ( क) रू स्त्री० शक्ल; चेहरा	पुं० संत या योगी जिसे सिद्धि प्राप्त हो
सिरकाई वि॰ देखिये 'सनकई'	गई हो; सिद्ध (७) मुक्तपुरुष; सिद्ध
सिक्कादार वि० छापवाला; मुद्रांकित;	सिमार (
मुहर लगा हुआ (२) सुंदर; शकील	जाना; रवाना होना
सिक्काबंध दि० मुद्रांकित; मुहरवाला	सिनेमा पुं० सिनेमा; चलचित्र (२)
(२)ज्योंका त्यों; जो खुलान हो; बंद	सिनेमाघर; सिनेमा
सिकके अ० साथ; समेत	सिपाई पुं० सिपाही; सैनिक(२) चप-
सिक्को पु० सिक्का; छाप; मुहर (२)	रासी; सिपाही (३) पुलिस; सिपाही
चलनसार सिक्का; रुपया; सिक्का।	सिपाईगिरी स्त्री० सिपाहीका काम या
[करदो, ठोकदो, मारदो, लगाववो	नौकरी; सिपहगरी; सैनिकवृत्ति
≖ मुहर करना; सिक्का लगाना	सिपाईसपरां न०व०व० सिपाही-पुलिस
(२) सफलतापूर्वक काम पूरा करना;	और उनके साथके व्यक्ति
पार लगाना.]	सिफत स्त्री० सिफ़त; गुण; विशेषता
सिनराम पु०; न० देखिये 'शिगराम '	(२) सारीफ़; प्रशंसा (३) चालाकी;
सिमार (रेट) स्त्री । सिमरेट; सिगार	होशियारी; सफ़ाई
	× · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

_		_
	• :	
		S.,

ξu

नुमान्ध्रस	41
विकारक स्ती । सिफ्रारिश	
सिर न०-सिर; सिर	
<b>ीलपधोरी</b> स्ती० सरकोरी; अवरवस्ती	
ः (२) जहंडता; सरकषी; सरकोरी	
सिरताज पुं० मुकुट; ताज (२) [सा.]	
मुरम्बी; नुबुर्ग(३)सिरताज;सरदार	
विष्टनामुं न० पता; सिरनामा	
सिरपाव पूं० देसिये 'सरपाक'	
सिरपेच पूर्व पगड़ी पर बांधनेका एक	
गहना; सिरपेच; सरपेच	
सिरस्तेवार पु॰ देखिये 'शिरस्तेदार'	
तिरस्तो पुं० देखिये 'क्षिरस्तो'; रीत	
सिलक स्त्री० खर्चमें से बची हुई रकम;	
बचत (२) हाय परकी रोकड़; श्री	
रोकड़ बाक़ी(३) वि० हाथ पर बचा	
हुआ रुपया, नोट आदि; बाकी। [	
<b>काढवी</b> =खर्चमें से बची हुई रक्रमका	
हिसाब करना । ⊸नेळवनी ≕ बाय-	
व्ययका हिसाब लगाकर रक्तभके घटने-	
बढ़नेका पता लगाना;रोकड़ मिलाना ।	
-रहेषुं = बाकी बचना ; बचत होना.]	
सिलसिलाबंध वि० सिलसिलेवार; कम-	
युक्त(२)जो लगातार हो;असंड(३)	
अ०अनुकमसे; एकके बाद एक	
सिलसिलो पुं० सिलसिला; म्हंसला;	
कड़ी (२) कम;प्रया;परंपरा;सिलसिला	
(३) कुल्परंपरा; कुरसीनामा; सिल-	
सिला; शिजरा-नस्व जिल्ला: शिजरा-नस्व	
सिलाई स्त्री० सीनेका ढंग; सिलाई (२)	
सीनेकी मजदूरी; सिलाई	

- सिवडामन न०, (--मी) स्त्री० सीनेकी मजदूरी; सिलाई
- सिवडावनुं स०कि० 'सीववु'का प्रेरणा-र्यक; सिलाना; सिलवाना
- सिबाय अ०-के सिवा, बिना, अलावा

तिषाषुं	ল০কি০ 'ধীবৰু'কা	कर्मणि;
सिया	नाना	

- सिसकारषुं स०कि० सिसकारना; आक-मण करनेके लिए उभारना
- सिसकारो पुं० सिसकारी; सिसकारना (आवाच)। [-करबो = सिसकारना; उसकानाः उमारनाः लहकारनाः। -भरबो, नारबो, लेबो = सिसकारना; मुँहुसे सीटीकी-सी आवाज निकालना |
- सिसोटी स्त्री॰ देसिये 'सीटी' **सिसोर्तळगं** न० साहीका कौटा
- सिन स्त्री० देखिये 'शिन'; फली सिंबचं स० फि० सींचना; छिड्कना; डालना (२) (पेड्को) पानी देना; सींचना (३) एक पर एक चीजें तर-तीवसे रखना; लादना; गड्ड बनाना (४) लादना; किसी पर जिम्मेदारी,
- भार डालना (५) (पानी निकालनेके लिए रस्सी या घड़ा) कुएँमें डालना
- सिद्रर न० सिंदूर; संदूर पि.]
- सिंदूरियुं वि० सिंदूरके रंगका; सिंदूरिया; सिंदूरी; संदूरी [सिंधव सिषव पु०; न० सेंघा नमक; सैंघव;
- सिंबाल्म न० सेंघा नमक
- सिंह पु॰ सिंह; शेर(२) पाँचवीं राशि; सिंह। (--के झिमाळ ?== फ़तहकी सबर या मौतकी ? । —मुं वरुषुं = वीर; बहादुर; शेरका बच्या.]
- सिंहण स्त्री० सिंहनी; घोरनी
- छड़; सीख
- सीगरो पुं० बढ़ईका एक औजार; बॉक सीजन्दुं स॰ कि॰ 'सीमर्चु'का प्रेरणा-र्थक: सिमाना

.

34144	l

3-11-1
--------

<b>युकासन</b> न० सुखद आसन; सुबासन
(२) पालकी; सुखासन
<b>सुचियाचं, सुक्रियुं</b> वि० सुस्री; सुस्रिया
सुगरी स्त्री० एक चिड़िया; बया
सुगंब पुं०;स्त्री०, (-भी) स्त्री० सुगंध;
खुशबू
<b>सुनंबीयार</b> वि० सुनंधी; खुशबूदार
<b>सुँगार्षु</b> अ० कि॰ घिनाना; नफ़रत
करना; किसी चीज आदिसे भागना
<b>सुगोळ</b> वि० सूब सस्ता; अल्प मूल्यका
सुमाळ (० षुं, रहुं) वि० जल्द घिन या
नफ़रत करनेवाला; किसी चीज़से
भागनेवाला
सुधद दि॰ साफ़; स्वच्छ(२)चतुर;
कुशल; सुषड़ (३) विवेकी; ज्ञानी;
समज्ञदार
मुचडता, मुधडाई स्त्री॰ स्वच्छता (२)
सुघड़ता; सुघड़ाई; कुशलता
जुवरी स्त्री॰ देखिये 'सुगरी'; वया
सुवाण वि० सुजान;ज्ञानी; समझदार
सुजात वि॰ सुजात; कुलीन (२) सुन्दर;
सुजात; सुगठित जनवन्त्रं कः किः 'गयक' का लेगाप
सुझाडचुं स० कि० 'सूझवु' का प्रेरणा-
र्थक; सुप्ताना; दिखाना; सूचित करना
<b>सुहताळी</b> स वि० सेतालीस; ४७
<b>सुदोल</b> वि० सुदोल; सुंदर; सुंगठित
<b>सुणवं</b> स॰ कि॰ सुनना
<b>सुण्याववुं</b> स० कि० 'सुणवुं' का प्रेरणा- थंक;सुनाना [सुगम; सुबोघ
थक;सुनाना [सुगम; सुवाध
सुतर वि॰ (२) अ॰ सरल; आसान;
सुसराउ वि० सूतका बना हुआ; सूती
सुतर वि॰ देखिये 'सुतर'
कुतरेख वि॰ देखिये 'सुतराउ'; सूती
सुतार पु॰ बढ़ई; सुतार

सुतारकश्वात्तर लगहा वर्षतका काम, बहईगिरी; सुतारी
सुतारी वि० बढ़ईका; वढ़ई-संबंधी
(२) स्त्री० सुतारी; बढ़ईगिरी
ु सुवार्(०काम, −री) देखिये 'सुतार'
मादि [ सुदी ; उजला पास
सुद ज॰ शुक्ल पक्षमें (२)स्त्री॰ सुदि;
सुवामा पुं० सुदामा; श्रीकृष्णका एक
सहपाठी (२) कंगाल मनुष्य [ला.]।
[ना तांदुल = ग़रीबका उपहार.]
सुद्दामापुरी स्त्री० सौराष्ट्रका एक
नगर;पोरबन्दर(२)[ला.] कंगालका
निवासंस्थान चनि सन् देलिले 'सन्द'
<b>सुदि</b> अ० देसिये 'सुद' <b>सुधरवुं</b> अ० कि० सुधरना; अच्छा होना
सुबराई स्त्री॰ सुधार; सुधराई (२)
जुमराइ रनाण जुमार, जुमराइ (२) नगरपालिका; म्युनिसिपैलिटी
सुवराववं स०कि० 'सुधरवं' का प्रेरणा-
र्थक; सुघरवाना ; गलती दुरस्त कराना
सुधार पुं० सुभार; इसलाह;संस्कार
सुचारक वि० सुधारक; सुधार करने-
ँवाला (२)पु॰ँ ऐसा व्यक्ति; सुधारक
सुवारच न०, (-ना) स्त्री० सुवारना;
सुघार; संस्कार; इसलाह
<b>सुघारव्ं</b> स० कि० अच्छा करना;
ंविगड़े हुएको बनाना; सुधारना (२)
छीलना (तरकारी) ; मरम्मत करना ;
दुरुस्त करना (मकान, यंत्र आदि)(३)
गुलती दूर करके सही करना या
लिसना; सुघारना; संस्कार <b>्करना</b>
<b>सुवाराववुं</b> स० कि० देखिये 'सुपराववुं'
सुधारो पुं० सुधार; सुधरना; दोव मा
विकृतिका दूर होना; अच्छी स्थिति
(२) संस्कृति; सुषार; सम्यता (३)
नयी प्रयाया रिवाज (४) प्रस्ताव

٥Ĥ

428

	<u> </u>
पर संघोधन; तरमीम । [मुकवो = प्रस्ताव पर संघोधन रखना.] सुद्धी अ० तक; पर्यंत सुष्मां (०त)अ० साथ;सहित;समेत;सुद्धां	<b>सुरावट</b> (२)सु सुरीखुं वि सुरेक वि
मुण्मां (०त) अ० साथ;सहित;समेत;सुढी मुणावणी स्त्री० सुनवाई; सुनाई; पेशी । [-भवी, नीकळवी = मुकदमेकी सुन- वाई होना.] मुपरत स्त्री० सिपुर्दगी;हवाला (२) दि० सिपुर्द;सौंगा हुआ। [-मरप् = सौंपना.] मुफियाणुं दि० ऊपर-ऊपरसे सुन्दर लगनेवाला; बाहरी सफ़ाईवाला मुमारे पुं० शुमार; अटकल; अंदाजा मुमारे पुं० शुमार; अटकल; अंदाजा मुमारे अ० अंदाजन; लगभग मुमेळ पुं० वच्छा मेल; मनका बच्छा मिलन; बनत (२) सुंदर मिलन; उत्तम प्रकारका मिश्रण [ दाई मुपाणी स्त्री० बच्चा जनानेवाली स्त्री; मुरस दि० सुर्ख; लाल [ [जा.] असर सुरसी स्त्री० खर्ची; लाली; सुरसी(२) मुरता स्त्री० लगन; लौ (२) ब्यान; होश; सुरत [प.](३)याद; सुफ्र; सुरता (२) स्त्री० सुरतकी बोरकी बोली (३) पुं० सुरतका या उस वरफका रहनेवाला । [-फाल्म = छैला;फक्कड़.] मुरमो पुं० सुरमा [ फायजामा सुरवाछ (-ळ) पुं०;स्त्री० सुरवाल; मुरंग स्त्री० जमीनमें सोदकर बनाया हुआ गुप्त मार्ग; सुरंग (२) बारूदके गोलेकी एक युक्ति या बनावट (दीवार या चट्टान आदि उड़ानेके लिए); सुरंग । [-काडमी = पहाड़के नीचेसे	सुरेक ति सुरेक ति सुलकाण लक्षणो सुलटावय सुलटावय सुलटावय सुलटावय सुलटावय सुलाक सुलेह र अभाव सुलेह र सुलेह र अभाव सुलेह र सुलाक सुलाव सुलावय सुलावय सुवाराय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय सुवावय
सोदकर रास्ता बनाना.] <b>सुराई</b> स्त्री० सुराही	सुवासिष सुप्रोमन
<b>सुरावा</b> स्त्री० सूराख; छेद	सजाव

सुभोभन

<b>सुरावट</b> स्त्री॰ सुर मिलाना; स्वरमेल
(२)सुरीली आवाज; सुस्वर
<b>सुरीलुं</b> वि० सुरीला; मघुर स्वरवाला
<b>सुरेक</b> वि० सुडौल;सुन्दर;गठीला
<b>सुरेक</b> वि० मधुर स्वरवाला;सुरीला
<b>चुलक्षण(मुं)</b> वि॰ सुन्दर या शुभ
लक्षणोंवाला; सुलक्षण [करना
सुलटावयुं स०कि० सुलटा करना; सीघा
सुकतानी वि० सुलतानका; सुलतानी;
<b>शाही (२)स्ती० सुलतानकी हुक्</b> मत ;
राज्य; सुलतानी (३) [ला.] राजाका
स्वेच्छाचार या जुल्म
सुलाब स्त्री० सूराख; छेद
सुलेह स्त्री० सुलह; लड़ाई-सगड़ेका
अभाव; मेल (२) समझौता; सुलह
सुलेहजांति स्ती० सुलह और अमन
सुवडा (-रा) वदुं स॰ कि॰ 'सूवुं' का
प्रेरणार्यक; सुलाना
सुवा पुं० सोआ; सोवा (बीज)
<b>सुवाडवुं</b> स०कि० 'सूवु' का प्रेरणायंक;
सुलाना
सुवाण स्त्री० देखिये 'सवाण'
सुवारोग पु० जच्चाको होनेवाला एक
रोग; सूतिकारोग
सुबाबड स्त्री॰ प्रसदकाल और उसके
बादका बीमारीका समय [सौरो
सुवावडसामुं न० प्रसवगृह;जच्चाखाना;
सुवावडी स्त्री० जच्चा; प्रसुता; सूतिका
सुबाबुं अ०कि० 'सूवु' का भावे; सोया
जाना [सौमाग्यवती; सुवासिनी
सुबासन (-मी)स्त्री० सुहागन; संघवा;
सुवासिणी(-मी)स्त्री ् देखिये 'सुवासण'
<b>सुक्रोमन</b> न॰ शोमाके लिए की हुई
सजावट; सुंदर सजावट

जुसेबाद ५:	रन स्थि
मुसवाट (टो) पुं० तेज हवा चलनेकी	भूको भू० तम्बाकूका भूरा;जरदा;सुरती
आवाज; सरसराहट; इर्राटा	<b>सग</b> स्त्री० थिन: नफ़रत
सुस्त वि० सुस्त; आलसो (२) भौमा;	मुचन न॰ सूचन; सुझाव
मंद; सुस्त	सुचवव् स०कि० सुचित करना;अताना;
सुस्ती स्त्री॰ सुस्ती; भालस्य; नींवका	ष्यान पर लाना; सुप्ताना
जुमार(२)मंदता; सुस्ती । [उवावी	<b>सूचवार्युं</b> अ०फि० 'सूचवर्वु'का कर्मणि;
देवी, काी नासनी ≕ठोक-मीटकर	सुझाया जाना
सीमा करना । - कबनी = अँगड़ाई	<b>सूज</b> स्त्री० सूजन;शोथ [फूल जाना
लेना; बेदार होना। <b>करबी, राजवी</b>	सूजर्ष अ०कि० सूजना किसी अंगका
= आरम्सी होना.]	सूझ स्त्री० सूझ; समझ; पहुँच
बुहाग पुं० सुहाग; सौभाग्य	सूझतुं न० जो अपनी पसंद या सूझके
सुहागम वि० स्मी० सुहागिन; सुहागन;	अनुरूप हो; उदा० 'तमे तमारं सूंझतु
सौभाग्यवती (२) पतिकी चहेती	करो छो ए चाले?'
. सुहान स्त्री॰ शान्ति; संदेहनिवारण;	सूझावुं अ० कि० दिसाई देना; सूझेगा (२) जनाम मा स्पान्ने जना। सामन
. समाधान [सुंदर लगना सम्बद्ध लगना	(२)खयाल या ध्यानमें आना ; सूझना
सुहार्युं अ० त्रि० सुहाना; शोभित होना;	सूब वि॰ इकट्ठा सादा (स्थाज) (२)
सुंचाळा (०) पु०व०व० देशाहकी किया संस्वर्ग (०) पु०व०व० देशाहकी किया	पुं०; न० मूल; जड़ (३) न० जोतनेसे
सुंबाळी (०)स्त्री० पूरी जैसी नाक्तेकी चीफ्र; सुहारी	पहले सेतमेंसे सूटी, डंठल, झाड़
सुंबाळुं (०) वि० चिकना और मुला-	आदिकी सफ़ाई करना भारती संत्राह सहारता तोवरः सहार
यम; सुकुमार(२)नरम स्वभावका;	सुबलो पुं० एक प्रकारका तोता; सूत्रा स्वी स्वीक स्वोन्य समीवा (२) संगती
नर्मदिल; मृदु (३) न० बालकके	सूबी स्त्री॰ छोटा सरौता (२) सूएकी मादा [तोता; सूबा
जन्मका सूतक; सूतकाशोच	भावा [ताता, घूमा सूबो पुं० सरौंता (२) एक सरहका
सूकगळुं न० बालकको होनेवाला एक	सूत्रण पुण्य सराता (२) एक सरहमा सूत्रण्युं वा० फि० सूजना {सूतक
रोग; सूला रोग; सुलंडी; 'रिकेट्स'	स्तक न० जननाशीय था मरणाशीय;
धुकवर्षु स० कि० देखिये 'सुकाववु'	सूराकी बि॰ सुतकी (जन्म या मरणका)
सुकुं वि॰ जिसमें गीलापन न हो; सूखा;	सूतर न० सूत;कच्या धामा । [-मे तांतच
सुरुकं; शुष्क (२) दुबला; सुसंबी।	बंधायेल् = प्रेमके धागेसे बँघा हुना.]
[-रही वर्षु = कुछ अंसर न होना;	सूतरफेंगी (फें) स्त्री॰ एक तरहकी
कोरा रह जाना । सूको काळ=बारिश	मिठाई; फेनी; सुपाफेनी
न होनेसे पड़नेवाला अकाल; सूखा।	सूतरझाळ स्त्री० एक प्रकारका धान
सूको सम = खाली धनकी,बंदरर्घु हुकी ।	सूतळी स्त्री॰ सुतली
सूको प्रदेश = वह विभाग जहाँ नेशा-	सूत्र न॰ सूत्र; तंतु; सूत; धागा (२)
बंदी हो; 'ड्राय एरिया '.]	सूत; रुईका धागा (३) सूत्र; व्यवस्था;
सूकुम(-स)ट वि॰ बिलकुल सूखा	नियम (४) सूत्र-ग्रंथ (कल्पसूत्र,

۹.	423
मुद्दे से करनेवाला कोई छोटा, अयंग् गर्भ वाक्य; सूत्र (६) सूत्र; 'कारमूला' [ग.](७) साघ्य; 'प्रोपोजीशम' [ग.] प्रुष स्त्री० सुघ; होश; चेत-खबर (२) पता; खबर। [-आवबी, वळवी = होश जाना; चेतनायुक्त होना.] प्रुषेबुघ स्त्री० सुघ-बुघ; होश-हवास; अक्ल। [-ऊडी जवी = होश ठिकाने न रहना.] (२) व० व० गणेशकी दो पल्नियां – शुदि और बुदि सून वि० शून्य; शून; खाली; रहित पूलकार पु० देखिये 'शूनकार' पूलकार पुठ देखिये 'शूनकार' पूलकार पुठ देखिये 'शूनकार' पूलकार पुठ देखिये 'शूनकार' पूलकार पुठ देखिये 'शूनकार' पूलकार पुठ देखिये हिंगा साथ-सहवास- के रहना। -मूककां = अकेला, साथी- संगीके बिना छोड़ देना.] पूलकार वि० बिलकुल सूना कुपकी स्ती० छोटा सूप या छाज पूफ न० बकरीके बाल (२) उसका कपड़ा (३) ऊनका बस्त; सूफ़	भूरव जुनसान; सम्न (२) न० देखिये 'सून- कोर'; सुनसोन; समाटा स्ट पु॰ सुर; आवाज; कठ; स्वर। [-मोपवो = गायकको चाहिये ऐसा स्वर बाजेमें निकालना; स्वर मिलाना। -पूरबो = स्वर मरना; स्वर मिलाना (२) [ला.] समर्थन करना.] सूरज पु॰ सूरज; सूर्य। [बडती कळाए होवो = अम्युदयका समय होना; नसीब चमकना; सितारा वुलंद होना। -सपतो होवी = उम्रति, तरक्की पर होना। -मार्थे आखवो = दोपहरका समय होना (२)पूर्ण समृदि होना.] सूरजमुखी न॰ सूरजमुखी सूरज न॰ जमीकद; सूरण; सूरन सूरत(-ती) स्ती॰ देखिये 'सुरता' सूरवेटी स्वी॰ स्वर भरनेका पेटीनुमा एक वाद्य सूरोखार पु॰ एक झार; बोरा सूरवंची पु॰ सूर्यवंगी (२) सुर्योदयके बाद देरसे उठनेवाला सूल्ट न॰ हिसाब या झगड़ेका निब- टारा; फ्रैसला; समाधान; समझौता (२)वि॰ सीधा;सरल सूल्ट वि॰ सुल्ठटा; 'उलटा का उलटा (२) जनुकूल; सुविधाजनक
<b>सूफ न० बकरीके बाल (२) उसका</b>	(२)वि० सीधा;सरल सूलट्टुं वि० सुलटा; 'उलटा' का उलटा (२) अनुकूल; सुविघाजनक सूखर पु०; न० सूअर; सूकर सूखुं अ० कि० लेटना; किसी आधार- पर पड़े रहना(२)सोना; नींद लेना। [सूई जखुं ़ जान्त होना;बंद पड़ना; रुकना (२) खर्चके असिरेकसे खराब स्थिति होना; नसीब सो जाना;

÷. ·

- <b> +</b>	

-

सेरणो

सूर्तुं सूकन् = अवज्ञा करना; कुछ	से (सॅ′) स्त्री० मदद;सहाय । [पूरवी≕
न गिनना। सूतेस्टो सिंह जगाववी	सहारा,बल देना;मददगार सिद्ध होना.]
≕विकराळ या पराऋमी पुरूषको	<b>सेकटो</b> पुं० देखिये 'सरगवो'
छेड्ना.] [करना; सनसनाना	सेकंड स्ती० सेकंड; सेकेंड
<b>सूसवर्ष</b> अ०कि० सन-सन आवाज	<b>सेगरो</b> पुं० देखिये 'सीगरो'
सूळ, सूळी देखियें 'शूळ'; 'शूळी'	<b>सेज</b> (सॅ) स्त्री० सेज; शय्या
सूंबाळूं न० जौ, गेहूँ, धान आदिकी	सेवळ न० नदीका पानी; सरित्जल (२)
बालके ऊपरका सूई जैसा नुकीला	वि० बारिशके पानीसे होनेवाला (गेर्डू)
रेशा; दूँड़	सेड (ड') स्त्री० देखियें 'शेड'
<b>सूंघणी</b> स्त्री० सुँघनी; हुलास; नास	<b>सेडकढूं</b> (ड') वि० देसिये 'शेडकढुं'
सूंघवुं स० कि० सूंघना; वास लेना	सेतान (-नियत, -नी) देखिये 'शेतान'
(२) नाकके क्वाससे अंदर सींचना	आदि
(सुँघनी) [र्थक; सुँघाना	<b>सेतूर</b> न० शहतूत
सूंघाडवुं सं० कि० 'सूंघवुं' का प्रेरणा-	सेनो पुं० एक प्रकारका कपड़ा; छट्ठा
सुंढ स्त्री० सोंठ; शुंठी	सेप न॰ सेब
सुंडली स्त्री० डलिया;टोकरी;सिकोली	<b>सेपटा</b> न <b>्ग</b> ्य व्यान् चमड़ेकी पतली पट्टियाँ
सूँडलो पु० डला; टोकरा; छबड़ा	जो पैनेके सिरे पर बांधी जाती है;
सुँग्रे प्०ँ ढला; टोकरा	वधियाँ । [काबी नाजवां = (पीट-
सूंद स्त्री सूंड; सूंद	पीटकर) साल उघेड़ना; चमड़ी उड़
सूंद्रल (ल,) स्त्री० (बैल या श्रमकी)	जाय इतना पीटना ] [पट्टी;सटाकी
कसानोंकी आपसकी सहायता; हुँड़;	सेपटी स्त्री० चमड़ेके चाबुककी पतली
डँगवारा किरना	सेव न० सेव 🌷 प्रमण
<b>सूंडाडवुं</b> स० कि० सज्ज करना, तैयार	सेर(सें) स्त्री० सैर; हवास्नोरीके लिए
सुँढाळुं वि० सूँडवाला	सेर (स) स्त्री० वह डोरा जिसमें मौती,
सूँदियुं वि० सूँडवाला ; सूँडाकार (मोट)	मनके आदि पिरोये हों; लड़ी; इस
(२)न० एक प्रकारकी हलकी ज्वार;	तरहकी माला (२) घासकी चिपटी
सुँधिया (३) ऊँट या घोड़ेके पलानके	पत्ती, तिनका या शलाका (३) प्रबाह;
नीचे डाला जानेवाला कपड़ा	द्रव पदार्थकी धार (४) झिरा;नस । [-
सूंषणी स्त्री० छोटा सुथना, पाजामा	आववी = घारा या प्रवाह निकलना;
सुंबचुं न० सुथना; याजामा	झरना बहना। छूटबी = फ़म्बारेकी
सुंधियुं न० चीयडे,रस्सी,पयाल आदिकी	तरह धारा बह निकलना.]
वड़ी ईंडुरी; गेंडुरी;बीड़ा;बीड(२)	सेरडो पुं० देखिये 'शेरडो'
[ला.] बेढंगी या पुरानी पगढ़ी या टोपी	सरववुं स॰ कि॰ सरकाना; आहिस्तेसे
सुजर्बु स॰ फि॰ रचना; बनाना;	खिसकाना
सिरजना [प.]	<b>सेरवो</b> पुं० शोरना; शोरवा

सरिय	५२५
सेरियुं (से') न० सनकी जातके एक पौधेका बीज	
<b>तेलदं</b> (–दं) न० घीकुआरका फूल	से
तेली स्त्री॰ राख; अस्म (२) गलेमें	से
डालनेकी काले धागोंकी अंटी ;सेली	
<b>सेलुं</b> न० देसिये 'घोलुं'	सै
<b>सेलो</b> पु॰ देखिये 'शेलो'	
सेव देखिये 'शेव'	सं
<b>सेवडी</b> स्त्री० जैन साघ्वी	
सेवडो पु० सेवडा; जैन साधु	
सेवममरा देखिये 'शेवममरा '	सै
सेवर्धन(-नी) वि० इस नामकी एक	सं
प्रकारकी (सुपारी)	
सेवबुं स० कि० सेवा, भनिस करना;	सं
मजना (२) बहुत संग करना (३)	•
काममें लाना; व्यवहारमें लेना (४)	
(अंडा) सेना	सै
सेवंचुं वि० देखिये 'सेवर्धन'	
सेवा स्त्री० सेवा; खिदमत; चाकरी	
(२) पूजा; आराधना; सेवा (३)	सं
सेया-टहल; तीमारदारी(४)निष्काम	सं
भावसे अन्यका काम करना ; सेवाकार्य	
सेवाचाकरी स्त्री० सेवा-टहल; तीमार-	
दारी	
सेवापूजा स्त्री० सेवा-पूजा; आराधना	
<b>सेवाळ, सेवाळवुं</b> देखिये 'शेवाळ' आदि	
<b>सेको</b> स्त्री०ब०व० सेव या सिवइयाँ	
<b>सेळभेळ</b> वि० देखिये 'भेळसेळ'	
सेळभेळियुं वि० मिलावटवाला	

- **सें (सॅ०**) पुं० 'एक'को छोड़कर किसी संख्यावाचक विशेषणके साथ आने-ंबाला सौका रूप:उदा० '**'**चारसें, बारसें'
- संकडो (सँ०) पुरे सौकी संख्या; सौका समूह; सैकड़ा (२) सदी; शताब्दी (३) वि॰ सैकड़ों; उदा॰ 'सेंकडो माणसो'

संत(ब)लो (सॅ०) पुं० झाइ-संखाइ
उठानेका लकडीका एक साधन; काँटा
सँषौ (सँ०) स्त्री० माँग (बालोंकी)
सेंबी (सें०) पुं० देखिये 'सेंबी' (२)
सिरका एक गहना; माँग-टीका
सैकुं न०, (-की) पुं० सैकड़ा; सौका
समूह (२) सौ सालका काल; सदी
संबकागांठ स्त्री० रस्सी आदिका एक
सिरा खींचनेसे छूट जानेवाली गाँठ;
मुद्धी; डेढ़ गाँठ [बच्चोंका एक खेल
सैडकियुं न० देखिये 'संडकागांठ' (२)
संडकुं न॰ देखिये 'संडकागांठ' (२)
सुड़क (आबाज)
संडको पुं०सुड़क (आवाज) (२) साड़ीके
औंचलका कोना जो खींचकर कोखमें खोंसा जाता है; कोंछ
खोसा जाता है; कोंछ
<b>संडण न॰छाजनमें खपरैलोंके नीचे</b> डाली
जानेवाली फट्टियाँ, अतरवन आदि;
तिरपाल(२)उनको बाँधनेकी डोरी
सैयड(-ठ) पुं०ब०व० चेचक; शीतला
सो (साँ)पुं०सौ; १००। [गळणे गाळीले
= बहुत सावधानीके साथ ; खूब सोच-
विचारके बाद। -टचनुं सोनुं =
उत्तमोत्तम सोना;सौ टंचका सोना।
ना साठ करवा = घाटा सहना;
घाटेका धंधा करना। -मण रूनी
तळाईए सूर्वुं ≕ सुखचैन होना; घोड़े
बेंचकर सोना । <b>ये वर्ष पूरा थयां</b> =
किसी पर आफ़त आ पड़ना; मौतकी
तैयारी होना.]
साई स्त्री॰ ईतजाम;सुभीता;व्यवस्था
सोकटाबाजी स्त्री० चौसर; चौपड़
सोकटी स्त्री ( टं) न० (चीसरकी)

स गौटी ; गोट। [-नारंची = गोटी मारना; दूसरेकी गीटीको खेलमें

#### स्पेषकस्वाजी

474

मारना (२) चोट करना (३) गोटी जमना प्रयोजन सिद्ध करना; जलह हासिल करना । --वागवी = युमित सफल होना; गोटी जमना; गोटी बैठना.] सोकठावाजी स्त्री० देखिये. 'सोकटावाजी' सोकठी (--ठुं) देखिये 'सोकटी' सौग पं० सोग: शोक सोगटाबाजी स्त्री ॰ देखिये 'सोफटाबाजी' सोमटी(--दं) देखिये 'सोकटी' **सोगठावाजी** स्त्री०देखिये 'सोकटाबाजी' सोगठी (--ठुं) देखिये 'सोकटी' सौगन(सॉ) पुं०ब०व० सौगंध; रापथ। -आपना, सवडावबा = कसम बिलाना; हलफ़ देना; गीता, क्रुरान या गंगाजल । उठवाना । –सावा, लेवा 🖛 क़सम खाना ; क़ुरान, गीता या गंगाजल लेकर कहना सोगननामुं (सॉ)न० सपयपत्र; हलफ़-नामा; 'एफिबेविठ' ( सोगननाम' सोगंब, सोगंबनामं देखिये 'सोगन, सोगात(सॉ) स्त्री० सौग़ात; मेंट सोगिम् वि० शोकवाला; गमजदा; शोक-पूर्ण (२) न० शोकसूचक पहनावा; मातमी लिबास सोज पुं० गंभीरता; सयानापन; विवेक (२) सौजन्य; सद्वतंन (३) रीति; ढव; रहन-सहन:ढंग (४) वि०वच्छा ; उत्तम सोची स्त्री० मैदा सोज् वि० अच्छा; उत्तम (२) स्वच्छ सोबो पुं० सूजन; सोथ सोबी स्त्री० छड़ी; छोटा पतला ढंडा सौबी पुं० मोटा बड़ा ढंडा; सोंटा। --जलावनो = सोंटेसे मारना; सोंटा षलाना, जमाना (२) सत्ता कलाना.]

होना; ठीक सौदा होना; सौदा पटना

avir Jain Aradhana Kendra www.ko	bbatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyan
<b>होगू</b> जंगी ।	५२७ सो <b>द्रवनुं</b>
(२) सादा पूर्ण होना; उसकी ववत्रि, पूर्ण होना.] सोनव्यो. पुं० सुवर्ण-चपक; पीछा. वंपा श्रोवागेदं पुं० एक प्रकारकी लाल सिट्टी: सोनागरू; हिरमबी सोनामहोर स्त्री० सोनेका सिक्का; मुहर; अशरफ़ी सोनामहोर स्त्री० एक रेवक वनस्पति; सनाय; सोनामुखी (२) एक घातु; सोनामाखी; सोनामक्सी सोनार पुं० सुनार; सोनार बोनारण स्त्री० सुनारकी स्त्री; सुनारी सोनार पुं० सुनार; सोनार बोनारण स्त्री० सुनारकी स्त्री; सुनारी सोना (०महाजन) पूं० सुनार; सोनार तोन् न० सोना;सुवर्ण। [सोनाना बळिमा करवा = सोनेके महल उठाना; बहुत धनवान होना। सोनानी लंका कुंटावी= अति मूल्यवान चीत्रका खो जाना या लुट जाना। सोनावो वरसाव वरसवो = बहुत कमाई होना; चांदी कटना। सोनानो सुरब ऊगवो = बहुत सुख वौर समुदिका समय आना; सितारा चमकना.] सोनरी वि० सोनेके रंगका; सुनहरा; सुनहला(२)सोनेका(३)सोनेका मुलम्मा चढाया हुवा(४) [ला.] उत्तम;ध्यानमें	रु७ सोपारी हवी०; न० सुपारी; सोपायी सोपारी हवी०; न० सुपारी; सोपायी सोपारी हवेते रहुछे पहरमें प्राणियोंके निद्राधीन होनेसे होनेवाली शान्ति या सणाटा सोबत (सॉ) स्त्री० सुहबत; संग; साथ; मित्रता ! [सोबते चडवं = सुहबत उठाना; किसीकी सुहबतमें रहुकर ष्ठछ बुरी वादतें सीखना.] सोबती (सॉ) पु० सुहबती; साथी; मित्र सोम पु० सोमलता; सोमरस; सोम (२) चंद्रमा; सोम (३) सोमवार; सोम (४) संगीतमें एक अलंकार; सोम। [-नाह्रम = सोमयागर्मे पूर्णाहुतिका स्ताह करना (२)'छूटे; बला टली; कल पड़ी' इस मतलबका उद्गार.] सोमल्सी अमास स्त्री० सोमवती अमा- वास्या; सयोती मावस सोमबली स्त्री० सोमवार; सोम सोमबली स्त्री० सोमवार; सोम सोमबली स्त्री० सोमवत्ली; सोमल्या सौम (सॉ) स्त्री० सूई; सुई सोयणी स्त्री० मोचीका एक औजार (२) एक रागिनी; सोहिनी सोयो (सॉ) पु० बड़ी सूई; सुआ सोरठ पु० सौराष्ट्रका एक दिस्सा(२)
रुने योग्य; बढ़िया (नियम, क़ानून आदि) [-केस्टूं = एक अच्छी जातका केला; चंपा-केला; कलकतिया केला। -टोळी = घोसाघड़ीके काम करने- वाली घूर्त लोगोंकी टोली.]	सार्व पुण् सारा-प्रकार एक रहिस्सा (२) एक रागिनी; सोरठ; सोरठी सोरठियाची स्त्री॰ सोरठ प्रदेशकी स्त्री सोरठी वि॰ सोरठ प्रदेशका; सोरठसे संबंधित सोरठो पुं॰ एक मात्रिक छंद; सोरठा

सरेरठो पु॰ एक मात्रिक छंद; सोरठा सोरम (सॉ) स्त्रीः न० वियोगके दुःखसे सूसना; शुरना

सोरम स्त्री० देखिये 'सोडम'

सोरबर्ग् स० कि० चैन पड़ना; कल मिलना

सोनेयो पु० सोनेका सिक्का;स्वर्णमुदा

सोपारा पुं० अच्याय; परिज्छेद।[--

गणवा, यणी व्या≔भाग जाना; नौ

सौपट अ० सीघे; बिना मुड़े-घुमे

दो ग्यारह होना.]

सोरव्

- सोरबुं(सो) स०फ्रि० (लकड़ी, पेड़ आदिको) खुरचकर या काट-छौटकर या टूंसे निकालकर साफ़ करना या ठीक करना (२)[ला]उचितसे अधिक दाम लेना; लूटना (३)गाली देना; फटकारना
- सोराटषुं (सो') स॰कि॰ खूब छीलना; खूब काट-छौट करना (लकड़ी, बाँस आदिको) (२) [ला.] खूब गालियाँ देना; फटकारना; सौ बात सुनाना
- सौरं अ० तक; अरसेमें; दरमियान
- सो वसा अ० बिलकुल निदिचतरूपसे; निस्सदेह;सौ बिस्वा [सुवासिनी सोवासण(---पी) स्त्री० सुहागिन; सोबुं स०क्रि० (सूपसे) फटकना
- सोस पु॰ सूब प्यास (लगना); गला सूखना, खुश्क होगा (२) [ला.] तीप्र इच्छा; लालसा (३) फ़िक; चिता। [-पडवी = सूब प्यास लगना; गला सूखना.]
- सोसवार्वु अ० कि० रस सूल जाना; सूखना; जलहीन होना (२) दुबला होना; सूखना (चितासे)
- सोसर्चु अ०कि० सहन करना; सहना (२)स०कि० सोखना;जरुब कर लेना
- **सोसावं** अ०कि० देखिये 'सोसवाचु' (२) 'सोसवुं'का कर्मणि
- **सोहवं** अ०कि० सोहना;सुंदर लगना .**सोहाग** पुं० सौभाग्य;सुहाग;अहिवात
  - (२)बड़ा भाग्य(३)अहिवात, सुहा-गकी चीजें (चूड़ी, सिंदूर आदि)। [---उतराववो, लेवराववो.= पतिके मरनेपर पत्नीकी सुहागकी चीजें उतरवाना.] [यती;सुहागन सोहागण वि०स्त्री० सुहागिन;सौभाग्य-

496

- सोहागी वि० सुशोभित (२) भाग्यवान; सुखी (३) आनंदी
- **सोहामण्** वि० सुहावनाः सुकोभन
- **सोहाववूं** स०क्रि० 'सोहवु'; 'सोहावु'का प्रेरणार्थक
- सोहार्यु अ० कि० देखिये 'सोहवुं'
- सोहासण(-णी) स्त्री० सुहागित; सौभाग्यवती; सुहागन [सोहिनी
- सोहिषी(-नी) स्त्री० एक रागिनी; सोह्यस्तुं वि० सुहावना (२) सरल; आसान (३) सुखदायक
- तोळ वि० सोलह; १६। [-वाल ने एक रती क्रवराबर; ठीक; न्यायके अनुसार; बावन तोछे पाव रत्ती। सोळे कळा = पूरा (चंद्रकी सोलह कलाऔं परसे); पूर्ण। सोळे संस्कार पई चूच्या = सब प्रकारके सुखदुःखका अनुभव कर लिया; सब कुछ भोग लिया। सोळे सोपारा भणवा क्र सब प्रकारसे होशियार, चालाक बनमा; घाष बनना। सोळेसीळ आनी = सोलहों आने; जैसा चाहिये वैसा; बिलकूल.]
- सोळ(सॉ) पुं०, (--ठुं) न० (छड़ी आदिकी) चोटका दाग, साँट
- सौळुं वि॰ घोकर अलग रखा हुआ (वस्त्र) (२) न० खाना पकाते समय पहना जानेवाला वस्त्र (३) पुष्टिमार्गीय आचार-प्रणाली
- **सोंध(०वारी)** (सॉ०) स्त्री० सस्ती; सस्तापन; महँगीका न होना
- **सोंघारत (--प) (**सॉ॰) स्त्री॰; न॰ देखिये 'सोंधवारी'
- सॉॅंघुं(सॉं०) वि० कम दामका; सस्ता । [−मॉॅंघुं थवुं≕मान चाहना; आदरकी अपेक्षा रखना.]

- 14	
सा	पण

435

स्कुरव्

सापण
सोंपण (साँ०) स्त्री० सिपुर्दगी; हवाला
सोंपवुं(साँ०) स०क्रि० सोंपना; सिपुर्द करना
<b>सोंफ(</b> सॉ॰) स्त्री॰ सौंफ़
सॉसरबुं, सोंसबं(सॉ॰) वि॰(२)अ०
आर-पार। [–नीकळवुं, पडवुं = इस
पारसे उस पार तक जाना(२)न पचना.]
सौ वि॰ सब; सर्व; कुल (२) अ०
भी; समेत; उदा० 'तुं सौ आवजे '
स्टांप(०) पुं० स्टांप; ॅंस्टेम्प'
स्टॉल पुं०;स्त्री० स्टाल; दुकान
स्त्री स्त्री० औरत;स्त्री(२)पत्नी

स्त्रीकेसर न०स्त्रीकेसर [त्रियाचरित्र स्त्रीखरित(−त्र) न∘तिरिया चरित्तर; स्त्रीजन न० औरत; स्त्री

स्त्रीषर्म पुं० स्त्रियोंका कर्तव्य; स्त्रीधर्म (२) रजोदर्शन; स्त्रीधर्म [स्त्रीपात्र स्त्रीपात्र न० कया, नाटक आदिका

स्त्रीखुद्धि स्त्री० स्त्रीकी बुद्धि; स्त्रीबुद्धि (२) स्त्रीकी सलाह [[व्या.] स्त्रीलिंग न० स्त्रीलिंग; नारीजाति स्थान न० स्थान; जगह; स्थल(२) रहनेकी जगह; घर; स्थान (३) पद;ओहदा;स्थान

- स्यानक नर्वे स्थान; स्थानक; रहनेकी जगह (२) बैठक; आसन (३) पद; स्थानक; ओहदा
- स्थानकवासी वि०(२)पुं० जैनोंका एक संप्रदाय(३)स्थानकवासीका था उससे संबंधित
- **स्पानिक स्वराज(–ज्य)** न० स्थानिक स्वशासन; 'लोकल सेल्फ गवर्नमॅंट'
- स्थापवुं सं०कि० स्थापित करना, क़ायम करना (संस्था आदि);स्थित करना; प्रतिष्ठित करना; निर्माण

गु. हिं–३४

- करना (२) (किसी स्थान पर) स्थिर करना; जमाना; रखना; नियुक्त करना; स्थापित करना (३) किसी विषयको सप्रमाण प्रतिपादित करना, प्रमाणित करना या निरूपित करना स्थिति स्त्री॰ स्थिति; स्थिर रहना; एक स्थान या अवस्थामें लगातार बने रहना; ठहरना (२) निवास; स्थिति
- (३)अवस्था; दशा; स्थिति(४)पद; ओहदा;स्थिति(५)मर्यादा;स्थिति
- स्थितिचुस्त वि० रूढ़िवादी; स्थिति-पालक; 'कनजरवेटिव'
- स्यितिस्यापक वि० पूर्व अवस्था प्राप्त करनेवाला;स्थितिस्थापक;लचीला

स्तान न∘स्तान; तहाना (२) मृतस्तान । [--करर्षु = नहाना (२) [ला.](किसी संबंधीको)मरा हुआ समझना; सारा संबंध तोड़ देना. ]

- स्नेहलग्न न० प्रीतिविवाह
- स्तेहसंमेलन न० स्तेहियोंका सम्भेलन; स्तेह-सम्मेलन; 'सोश्यल गेघरिंग'
- स्नेहाळ वि० प्रेमपूर्ण; स्नेहल
- स्पर्चवुं अ०कि० स्पर्घा करना स्पर्घास्पर्चो स्त्री० होड़; प्रतिस्पर्धा स्पर्झा पुं० छूना; स्पर्श(२) संसर्ग; संपर्क; स्पर्श (३) छूनेसे होनेवाला
- ज्ञान;स्पर्शज्ञान;स्पर्श(४)[ला.]थोड़ा अंश; लव; गंध; अल्पमात्रा; लेश (५) (संसर्ग, स्पर्शया संगका)असर
- स्पर्शवं स०कि० छना; स्पर्श करना
- **स्फुरग**न०,(--मा)स्त्री० स्फुरण(२) स्फूर्ति; तेजी; फुरती
- स्फुरेंबुं अ॰कि॰ स्फुरित होना; कॉपना; (अंग) फड़कना; स्फुरना [प.] (२) मनमें एकाएक आना; प्रकाशित होना;

24	1.2

स्वीकारम्

- चमकना(विचार, चमक आदि);स्फुरण होना (३) अंकुरित होना; फूटना स्कोट पु० फूटकर निकलना (अंकुर आदि); फूटना; फटना; स्कोट (२) निवटारा; अंत; फ़ैसला (३)फोड़ा; सूजन;स्फोट (४)वर्णके अवणसे मनमें उत्पन्न हीनेवाला माव; शब्दार्थका बोघ;स्फोट [ब्या.]
- स्मरण न० स्मरण;स्मृति;याद (२) बार-बार याद करना [स्मृतिचिह्न स्मरणधिह्न न० स्मारक; यादगार; स्मरणपीथी स्त्री० देखिये 'नोंघपोयी' स्मरवुं स०क्रि० याद करना; स्मरना[प.] ज्ञववुं अ०क्रि० टपकना; चूना
- स्वदेशी वि० अपने देशका; स्वदेशी (२)न० स्वदेशज; स्वदेशबंधु(३) स्वदेशकी भावना (४) अपने देशका माल इस्तेमाल करनेकी भावना
- स्ववेशो धर्म पुं० अपने पड़ोसकी परि-स्थितिकी सेवाके द्वारा जगतकी सेवा होती है यह भावना; स्वदेशीका धर्म
- स्वधर्मी वि० अपने घर्मका (२) पु० अपने धर्मका आदमी;स्वधर्मी
- आविशम न० अपना वतन (२) स्वर्ग [⊶जवुं, पहोंचखुं = मर जाना; स्वर्ग-वास होना;परलोक सिघारनाः]
- स्थान, स्वर्म्नु न० स्वप्न; सपना; स्वाब
- स्वभाग पुं० स्वभाव, सहजप्रकृति(२)टेव; आदत ; प्रकृति । [म्पडवो == सदा बना ारहनेवाला मूल गुण या धर्म बन जाना;
- · आदत पड़ना (२) आदत बन जाना ]

स्वागतप्रमुस पुं० स्वागताध्यज्ञ स्वागतसमिति स्त्री० स्वागतसमिति स्वागता स्त्री०स्वागत;सत्कार;अभि-नंदन(२)पु० एक छंद

- स्वाव पु॰ स्वाद; जायका(२) सौंदयं; आनंद; रस (३) चखना (४) मजा; लच्छत; स्वाद(५) मोह;शौक; रुचि। [-करवो = चखना (२) खानेकी चीओंका चसका लगना ! -खलाडवो = चखाना (२) अनुभव कराना(३) स्वाद चखाना; मारना। -चाखवो, जोवो == चखना; रसानुभव करना; मजा लूटना।--पडवो = रुचिकर होना; पसंद आना; मजा आना। - लेवो = देखिये 'स्वाद चाखवो ']
- **स्वादियुं, स्वादीलुं** वि० चटोरा; जिमला
- स्वाधीन वि० जो अपने ही अधीन हो; स्वाधीन (२) जो अपने वद्यमें हो; स्वाधीन (३) स्वतंत्र; आज्राद; स्वाधीन । [--करवुं = सौंपना.]
- स्वामी(०लुं) वि० स्वार्थी; खुरसजे
- स्वाहा स्त्री॰ अग्निकी पत्नी; स्वाहा (२)अ॰ अग्निमें आहुति देते समय उच्चारण किया जानेवाला एक झब्द; स्त्राहा ।[--करवुं = खा जाना; चटकर जाना । -- ववुं = जल जाना; नष्ट होना; स्वाहा होना (२) खाया जामा.]
- **स्वीकार** पुं० स्वीकार;अंगीकार
- **स्वीकारयुं** स०कि० स्वीकार करना; कबूलना; मान लेना

Ę	 हजालपट्टी

# ह

ह पुं० ऊष्मवर्गका अंतिम वर्ण हरू पुं० हक;दावा;अधिकार(२)नेग; हक (३)फ़र्ज ; कर्तंच्य ; हक़ (४)सत्य; न्याय (५) वि० सही; सत्य; हक़; न्याय्य ; दुरुस्त । [--अवा करवो = फ़र्ज पूरा करना; हक़ अदा करना । --करवो = मालिकाना हक़ या अधिकारकी मौंग करना; दावा करना । <del>– वालवो</del> = हक-अधिकार होना । –थवुं = मर जाना। ---दबाववो, मांरवो = हक़के अनुसार जिसे जो मिलना चाहिये वह उसे न देना; हक़ मारना। -- पहोंचवो = हक़-अधिकार होना । --मां = पक्षमें; [ठीक; दुरुस्त; न्यास्य हकमें.] **हकदार** वि० हक़दार;अधिकारी(२) हकवारण वि० स्त्री० हक़दार (स्त्री) हक्बारी स्त्री० हक़दार होनेका भाव हकनाक, हकनाहक अ० हक-नाहक; लकारण हकसाई स्त्री० नेग; हक़; लाग हकार पुं० 'ह'की ब्वनि या 'ह'वर्ण;हकार (२)हाँ करना;स्वीकृत्ति देना ।[--भणवो = हाँ करना;स्वीकार करना;कबूलना.] **हकारवुं** सं०कि० हॉक लगाकर या लल-कारकर कहना; हँकारना हकारो पुं० हॉक लगाकर बुलानेवाला (२) हँकारकर निमंत्रण देनेवाला (३)

हकालवुं स०कि० इटाना; भगा देवा (२)हॉकना; चलाना(३)हॅकारना; ऊँचे स्वरसे बुलाना

हुंकारी

हकीकत स्त्री॰ सही अहवाल या घटना; सत्य बात; हक़ीक़त (२) संग्वी खबर या समाचार;सही हाल; हक़ीक़त (३) खबर; हाल; वृत्तांत (४) घटना (५) सत्य; असलीयत; हक़ीक़त; यथार्थता हकीकतबोष पु॰ हक़ीक़त, वृत्तांत, घटना आदिके बारेमें रही हुई त्रुटि या भूल हकूमत स्त्री॰ हुकूमत; सत्ता; अधिकार हकूमती धि॰ हुकूमत सत्ता; अधिकार हकूमती धि॰ हुकूमत सत्ता; हक्यून पु॰ देखिये 'हक' हगवूं अ०कि॰ हगना

हत्तमचर्षु अ०किं० किसी स्थिर स्थान परसे या किसी जमी अवस्थासे इधर-उधर होना; हिल उठना

**हचमचाववुं** स० कि० 'हचमचवुं 'का प्रेरणार्थक; हिलाना

- हचाको पु० देखिये 'हिचाको'
- हज स्त्री० हज; हज्ज(मक्केकी यात्रा)
- हजम वि० हजम किया हुआ;पचा हुआ;
- हजम(२)[ला.]गबन किया हुआ; हज्जम हजरत पु० मालिक; स्वामी; श्रीमान्
  - (२) हजरत; जनाब; महोदय

हजाम पुं० नाई; हजाम; हज्जाम

- **हजामत** स्त्री० हजामत(२)[ला.]बे**कार** मेहनत; व्यर्थका परिश्रम (३) कड़ी आलोचना करना; आड़े हायों लेना
- हजामपट्टी स्त्री० हजामतका काम; हज्जामी (तुच्छकारमे)। [--करबी= बिना काम-भंधेका बैठा रहना; खाली बैठा रहना; निर्र्यक काममें समय गँवाना.]

हणार
------

## हरसेली

- हजार वि० हज़ार; १०००। [--गाडा = बहुत; बेहद; हज़ारहा। --धंटीनो छोट साबो = बहुत अनुभव होना; खूद मुसाफ़िरी किये होना । --हावनो **चणी =** परमेश्वर.]
- हजारी ५० एक पुष्पवृक्ष;गेंदा;हजारा
- हजारी गोटो पुं० गेंदेका फूल; हजारा; र्येदा
- हजी अ० अभी; अब तक (२) अब मी
- हजीरो पुं० मीनारोंवाला संदर मक़बरा
- (२) [ला.] बड़ी स्याति-प्रसिदिका काम (व्यंग्यमें)
- हजु अ० देखिये 'हजी'
- हजूर स्त्री० हुजूर; श्रीमान् (२) उप-स्थिति;हाजिर होना;हुजूर। [-भरवी =हुजूरमें-सेवामें रहना.]
- हजूरियो पुं० हुजूरमें रहनेवाला खास नौकर; हुजूरी (२) अँगोछा;गमछा
- हजूरी पुं० हुजूरी; राजाका खास नौकर (२) स्त्री॰ सेवा-टहल
- हटार्चु न० खरीदनेका काम; सौदा-सुरुफ़का काम (२) खरीदने-बेचनेका
- पेशा; दुकानदारी; हटुवाई हठ पुं०; स्त्री० हठ; खिद; दुराग्रह। [-उपर आवव्, पकडवी, मां आवव्,
- लेवी, हठे चडवुं, हठे भरावुं = हठ पकड़ना; जिद पर आना; जिद करना.]
- हुठबुं अ०क्रि० हठ करना; मचलना
- हठवुं अ०कि० हटना (२)पीछे हटना; भागना; हटना
- **हठीलाई** स्त्री० हठीलापन; जिद
- हठीलूं वि॰ हठीला; जिद्दी; हठी (२) असाध्य; लाइलाज (रोग)
- हडकवा पुं० हड़क; जलातंक (रोग) (२)[ला.] हड्क जैसा पायल वावेग;

हड्का;हड्का। [--मथो, लागयो = हड्का रोग होना; हड़काया बनना (२) हड़क जैसे पागलपनके अधीन बनकर आचरण करना; हड़काये जैसा बर्ताव करना । ~हालवो ≕खूब हड़क उठना.] हडकायुं (-येलुं) वि० हडकाया; पागल हडताल स्त्री० एक उपधातु; हरताल हडताल स्त्री० हड्ताल 🔰 [हड्ताली **हडतालियो** पुं० हड़ताल करनेवाला; हबताळ स्त्री० हड़ताल हण्ताळियो पुं० देखिये 'हरुतालियो' हबरो पुं० हाथ या पैरसे दिया जाने-वाला धक्का; टहोका हरुषूत स्त्री० चारों ओरसे धृतकार मिलना;दुत्तकार (२)वि० सब जगहोंसे तिरस्कृत बना हुआ या दुतकारा हुआ हबप स्त्री० जाग्रह (२) अ० एकदम और तेश्रीसे;त्वरित;**प्रट**पट । [--करवुं, करी जवूं≕विता चवाये एकदम निगल जाना; हड़पना (२) [ला.] हड़पना; हजम कर जाना (चीज, माल आदि)। --लईने ≕ एकदम और तेखीसे ; चटसे.] हडपची स्त्री० ठोड़ी, ठुड्डी हडपर्षु संश्वकि० हड़पना; निगलमा हडफ अ० देखिये 'हडप'; त्वरित हडफट स्त्री० देखिये 'अडफट' हडफर्बु स०कि० फेंक देना; झिड्कना **हडफेट** स्त्री० देखिये 'अडफट' हरबदर्षु अ० कि० पस्तहिम्मत होना; हिम्मत टूट जाना (२) हड़बडाना; **घबराना** 

हरवाट पुं० हड़वड़ी; घवराहट हडसेलर्षु स०कि० धक्का देना; धकेलना हडसेको पुं० धनका; टहोका

हबहबतुं	५३३ हफ्तो
हबहद्धं वि० सौलता हुवा (२)[ला.] प्ररा; पत्का; निरा [साथ सौलना हबहद्धं व० कि० 'हडहढ आवाखके हवी स्त्री० दौड़ । [-काढवी, मेलवी =दौड़ना.] [ ल्पकनेकी आवाछ हद्दाट, हदुदु व० तेवीसे दौड़ने या हदेखय 'हडुडाट' हवेहवे स्त्री० कुत्तेको हॉकनेकी आवाछ (२) किसीके प्रति आदरका अभाव; अवझा; अवहेलना हवो पुं० बैलगाड़ीको आगेकी ओर मुकनेसे रोकनेके लिए लगायी जाने- वाली लकड़ी; हरेना; जॅटड़ा हण्डुं स० कि० करल करना; जानसे मार डालना; नाघ करना; इनना हण्हहवां व० कि० हिनहिनाना; हींसना हणहवाद पुं०, (-दी) स्त्री० हिन- हिनाहट; हीस हत्या लगना । -लेवी, बहोरबी = हत्या सिर लेना; पापका भागी बनना.] हत्याकां पुं० मारी खुनखराबा या संहारकी घटना हत्यार्च वि० हत्यारा; घातक हवियार न० हथियार; अस्त-शस्त्र (२) साधन; उपकरण (३) औजार; हथियार 1 [-जगामवा, ऊंचकवा, पकडवां, लेवा, सजवा = हथियार उठाना; हथियार वांधना; युदके लिए तैयार होना.] हत्यारबंध वि० हत्याराद्धं ; सगस्त्र	हषियारबंधी स्त्री॰ हषियार रखनेकी मनाही; हषियारबंदी हषेली स्त्री॰ हथेली; करतल। [-देसाढवी = कुछ मिलेगा नहीं ऐसा सूचित करना; अंगूठा दिखाना।मां नवाववं = किसीसे इच्छानुसार काम कराना; नाच नवाना; हायमें करना। मां स्वर्ग बताववं, मां हरा बताववा = वड़ी बड़ी आशाएँ देकर ठगना; गुड़ दिखाकर ढेला मारना.] [महण हथेबाळो पुं० देखिये 'हायेवाळो'; पाणि- हपेळी स्त्री॰ देखये 'हायेवाळो'; पाणि- हपेळी स्त्री॰ देखये 'हयेल्ठो'; हस्ततल हपोटी स्त्री॰ हथौड़ी हवाबो पुं० हथौड़ी हचोडी पुं० हथौड़ी हचर्डो वृं० हथौड़ी हम्पें वि॰(समासांतमें) हाथकी नापका; उदा॰ 'जढीहच्यु' (२) हाषमें; उदा॰ 'जढीहच्यु' (२) हाषमें; उदा॰ 'जढीहच्यु' (२) हाषमें; उदा॰ 'जढीहच्यु' (२) हाषमें; उदा॰ 'क्रह्य्थु' हव स्त्री॰ हद; सीमा; मर्यादा (२) अंत; हद। [-आववी, खवी = हद होना; अति हो जाना; औचित्यकी सीमा लॉघ जाना।-ओळंगवी, स्टा- ववी = हदसे गुजरना; मर्यादाके पार हो जाना।-कर्ष्दो, वाळ्वी = हद कर देना; अति कर देना; औचित्यकी सीमा लॉघ जाना.] [बाहर हवपार अ॰ बेहद; अतिशय (२)हदके हवपारी स्त्री॰ किसी हदके बाहर होना हनुमानकुदको पुं० हनुमान जैसी लंत्री कुदान, छल्जांग; 'लंग जंप ' [ यार हपसावार अ॰ किस्तके अनुसार; किस्त- हक्तो पुं॰ सप्ताह; हफ्ता (२) किस्त कुतानेका नियत समय या नियत रकम, किस्त [-करचो, बाववी==
For Private ar	nd Personal Use Only

#### हफतावार

हर्ष

किस्त बाँचना । --पडचो == क्रिस्तका नियत समय पर अदा न होना; किस्त-खिलाफ़ी होना। --भरबो == किस्त अदा करना.] हफताबार, हफतो देखिये 'हपतो' आदि हबक स्त्री० भारी डर; हैवत; हौल हबकवुं अ०कि० चौंकना; डर जाना; हौल पैठना **हन**शी पुं० हबशी **हबसण** स्त्री० हबशीकी या हबशी आतिकी स्त्री; हबशिन; हबशन **हबसी** पुं० हबशी **हबहबाट पुं॰ 'हब-हब'** आवाज (२). कोलाहुल; शोरगुल हमणां अ० अभी; इस समय; फ़िलहाल हमराही स्त्री० साय; सुहबत हमबतनी वि॰ एक ही देशके निवासी; [दस्ता; खल-बट्टा हमवतन हमामदस्तो पुं० हावनदस्ता; हमाम-हमाल पुं० हम्माल; हमाल; क़ुली हमाली स्त्री० हमालका काम हमियाजी स्त्री० (रुपये रखनेकी) थैली; गँजिया (२) [ला.] धन; दौलत हमेल पुं० गर्भ; हमल (२) स्त्री० चपरास; पट्टा। 🛛 🖛 रहेवो == सगर्भा---हामिला होना.] हमेक अ० हमेशा; रोज हमेशां अ० हमेशा; नित्य; सदैव 'हमात थि० जिंदा; जीवित हवाती स्त्री॰ जिंदगी; हवात (२) अस्तित्व; हस्ती हर वि० हर; प्रत्येक हरकत स्त्री० अङ्चन; बकाबट; बाधा (२) आपत्ति; एतराज; हर्ज हरकती वि० रुकावट डालनेवाला

हरकोई वि॰ प्रत्येक; चाहे जो कोई; कोई भी हरक पुं• हर्ष; आनंद; हरस [प.] रक्षमेलुं वि॰ अति हर्षसे पागल बना हुआ; हर्षोन्मत्त हरखमेर अ० हर्षके साथ; सहवं हरख(--जा)चुं अ०कि० खुश होना; प्रसन्न होना; हरखना; हरखाना [प.] हरगिब (-स) अ॰ हरगिज; कभी; किसी हालतमें हरजी पुं० परमेश्वर; हरि 🛛 [ फल; हड़ हरडां न०ब०व० हड़के अवपके छोटे हरडे स्त्री० हरं;हड़;हरीतकी (फल) हरण न० हिरन; मृग; हरिण हरणियुं न०, (--यो) पुं० मुगझिरा नक्षत्र; मृगशीर्ष [ मृगशीर्थ नक्षत्र हरनी स्त्री॰ हिरनी; हरिनी (२) हरणुं न० हिरन; मृग 🛛 हिरताल हरताल(--ळ) स्त्री० एक उपघातु; हरतुंफरतुं वि० जो घूम-फिर सके; घूम-फिर सके ऐसाया उतना; चंगा **हरदम** अ० हरदम;हमेशा पिहर **हरनिक अ**० दिन-रात; अहनिक; आठों हरफ पुं॰ हरफ़; बात; शब्द (२) अक्षर; हर्फ़ [आना-जाना हरफर स्त्री० घूमना-फिरना; बार-बार हरबडवुं अ० क्रि॰ देखियें 'हडबडवुं' हरबडाट पुं० हड़बड़ी; घवराहट हरमुं वि० हलदीने स्वादका हरनवुं स०कि० देखिये 'हराववु' हर्र्यु वि० हरा; सब्ज (रंग) (२) ताजा; हरा हरवूं स०कि० जबरदस्तो भगा ले

जाना (स्त्रीको); हरना; हरण

[ इलकई

नीपता;



हरूकाई

Terra .	५३५ हरकाई
करना (२) छीन लेना; हरना;	; हरि पुं० हरि; विष्णु; श्रीकृष्ण(२)
हड़पना (३) ले लेना	घोड़ा; हरि(३) सिंह (४) बंदर
हरस पुं० अशे; बवासीर	(५) चंद्रमा । [नो लास = मगवानका
हरसमसा पुं० ब० व० अर्श और मस्स	ा भक्त; ईश्वरकी प्रेरणासे चलनेवाला
हराज वि० नीलाम किया हुआ; नीलामी	
<b>हराजी</b> स्त्री० नीलाम । [ <b> कोलाववी</b> =	
नीलम करना; नीलाम पर चढ़ाना	
हराम वि॰ इसलामी धर्मशास्त्रवे	(३) हरिका भक्त
विरुद्ध; हराम ; निषिद्ध; धर्मशास्त्रमे	f हरिजनेतर पुं० जो अंत्यज न हो;अंत्यजसे
निषिद्ध (२) बिना हकका; अनुचित;	भिन्न (२) पुं० ऐसा पुरुष; सवर्ण
हरामका (३) मुफ़्तखोर; आलसी;	<b>हरिण पुं०;</b> न० हरिण; हिरन
ि तिरुद्यम् । <b>[नाः पैसा</b> ≕ हरामकी	
कमाई; हरामका माल । न्नी ओलाव,	
—नुं कोळियुं ≕हरामका वच्चा;हराम	
खोर;दुष्ट;शठ । −नुं खावुं=हरामका	
खाना; बिना मेहनत किये खाना।	<b>हरियाळ्</b> वि० हरा; सब्ज
-नो माल = हरामका माल; हरामकी	हरोफ पुं० हरीफ़; प्रतिदंदी; प्रतिस्पर्धी
कमाई.]	(२) विरोधी; हरीफ़; बन्नु
हरामसोर वि० हरामका माल खाने-	
वाला; हरामखोर (२) कृतघ्न; नमक-	
हराम; हरामखोर(३)दुष्ट; बदमाश	
हरामजार्बु वि० हरामके गर्भसे उत्पन्न;	हरेरो पुं० एक पेड़
हरामजादा	हरोल (ळ) स्त्री॰ सेनाका पिछला
हरामी वि॰ हरामसोर; कृतघ्न; बद-	
माश; हरामी (२)स्त्री० हरामखोरी;	बराबरी; जोड़। [मां आवर्षु, कर्भु
नमकहरामी; मुफ़्तखोरी	रहेवुं, बेसवुं = स्पर्धा करना.]
हरामुं वि॰ हरहा; हरहट (पशु) (२)	हल पुं० हल; निर्णय; सुलझाव । [नरप
निरंकुश; मस (पशु) । [ <b>ढोर =</b> पशु जो भाषा पिटने काल को जौन नियाल	
जो भागा फिरनेवाला हो और जिसका कोई प्राक्तिन न को (२२ जिस्	
कोई मालिक न हो (२) [ला.] उसके जैस जिन्हार साहित, जनवन	
जैसा निरंकुश व्यक्ति; आवारा बागवां सर्व किन्दु 'करनं' 'करन्स'कर	शोभा; बहार; रौनक़(३)पल; क्षण
हरावर्षु स० कि० 'हरवुं', 'हारवुं'का प्रेरणार्थक; हराना (लड़ाई-झगढ़े	हलकबार वि॰ सुरीला
সংখ্যাপক, গুংগেন। ( জড়াই-জন্ত	हलकट दि० हलका; कमीना; नीच;

आदिमें) ्रिकर्मणि

हरार्षु अ० फि० 'हरवुं', 'हारव'का

ओछा

हलकाई स्त्री० हलकापन;

हलकापर्चु

484

हत्तेत्

- **हलकापर्चुं** न० भार न होना; हलकापन **हलकारवुं** स० कि० खोरसे पुकारना (२) टिटकारना; चिल्ला-खिल्लाकर हॉकना (३) चलाना; हॉकना
- **हलकारो** पुं० हरकारा; कासिद(२) हरकारा; दूत
- हलकांश स्त्री० हलकापन
- हलकुं वि० कम वजनवाला; जो भारी न हो; हलका (२) कम दामवाला; मामूली;हलका (३) जो जल्दी हजम ही जाय;सुपाच्य;पक्का(पानी);हलका (४) कम परिश्रममें हो जानेवाला;
- सहल; हलका(५)हलका; ताजा;थकान-रहित; प्रसन्न; चितारहित; उल्लासपूर्ण (६) जो (प्रहार) तेज या अधिक कष्ट देनेवाला न हो; जो गहरा न हो(रंग); हरूका; मीठा ( ७ ) घटिया; निकृष्ट (८) नीच; ओछा; कमीना; हलका (९) अघटित; निदित; अप्रतिष्ठित;हलका । [हरूका पेटनुं = पेटकी बात या गुप्त बात बता देनेवाला;पेटका हलका (२) अनुदार मनवाला ; संकुचित मनोवृत्ति-वाला (३) नीच कुलका । ⊶करबुं ≕ वजन, भार कम करना (२) मार-मारकर अशक्त बना देना; पीटकर भरता बना देना(३)धमंड चूर करना । .--**धव्ं=वजन कम होना (२) देखिये** 'हरुकुं पडवुं'। --प**डवुं**=अपमानित होना ; हरूका होना । --स्रोही = चटिया े दरजा या जाति; अप्रतिष्ठितता (वंश, कुल, आदिकी ) ]
  - हुलमल स्त्री० सरुबली;उपद्रव;हलचल हलमलबुं व०कि० हिलना;डोलना(२)
  - [ला.] सावमग्न होना; दिल भर आना हरूमुं अ०कि० हिलना; ढोलना

- हलमो पुं० एक मिठाई
- **हलाक** वि० हैरान; हलाकान (२)<del>कंगाल</del> हलाकी स्त्री०, हैरानी; हलाकानी;
- तकलीफ़ (२) तंगी; ग़रीबी;कंगाली हलामण स्त्री० चक्करमें आना;भटकना;
- हैरानी (२)मायापच्ची; झंझट; पचड़ा हलाल वि० (इसलामी) धरअके अनु-कूल; हलाल; बिहित;जायज्ञ। [-करखुं == पशुका घरअकी विधिसे वध करना; हलाल करना (२) बदलेमें पूरा काम कर देना; हलाल करना.]
- हलालकोर पुं० भंगी;हलालकोर(२) क़साई (३) पूरा काम करके बदला प्राप्त करनेवाला; हलाल करनेवाला
- **हलावव् ं** स०कि० 'हालवुं'का प्रेरणायँक; हिलाना (२) किसी यस्तुको ऊपर-नीचे, दायें-बायें छे जाना या गति देना; हरकत देना; हिलाना; डोछाना (३) किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानसे हटाना; खिसकाना; हिलाना (४) प्रचलन करना; चलाना (विचार, बात, चर्चा आदि) ; चलनेको प्रेरित करना (हलचल, प्रवृत्ति आदि)। [जीभ हलावनी = बोलना; जवान हिलाना (२) सिफ़ारिश करना । मार्षु हलाववुं ⇒ सिर हिलाना (स्वीकृति, वस्वीकृति आदि सूचनाके लिए)। **सूसी** हलावबी = देखिये 'जीभ हलावबी' ! **हाथ हलाववा** = हाथ-पाँव हिलाना; काम करना; मेहनत करना.] [जाना हलार्षु अ०कि० 'हालवुं'का भावे; हिला **हलाबुंचलावुं** अ०कि०हिला-हुला जाना; कुछ किया करनेमें समर्थ होना
- हलेलुं वि० दुनियादारी न जाननेवाला; अल्हह (२) घीमा; मंद; मंयर

रोग्रं	430
हिन्तुं ग० नाव सेनेका वंडा; वाँड़;बल्ला	(¥
हरको पुं॰ हमला; हल्ला; धावा(२)	[f
[सा.] पक्का; हानि; पाटा (२) [ जा.]	শিব
्कामकाण; उद्यम	(अ
<b>हूबड</b> वि० देसियें 'अवड'	ਸੈਲ
हबनां अ॰ इस समय; अभी	हवाई
हबस पुं॰ हवस; इच्छा; वासना(२)	हवादे
कामवासना (३) लालच; हवस	लग
हवसकोर वि॰ कामी; विषयी	हवार
हवा स्त्री॰ हवा; वायु (२) वातावरण;	( <b>क</b> ुप्
परिस्थिति;हवा(३)नमी;तरी।[(गाम-	हवाण
मां)केबी छें?=गाँवमें स्था चर्चा-बात-	रह
बीत पल रही है ? (२) गांवमें जीवन-	मिर
को प्रभावित करनेवाली परिस्थिति	न०
या वातावरण कैसा है ? (३) गाँवके	हवाति
लोगोंका आरोग्य कैसा है ?सावा	त्रयत
बवुं ≔ हवाखोरीके लिए स्वास्प्यवर्धक	कोरि
स्यानको जाना; हवा आनेके लिए	<b>চ্</b> ৰাজ
जाना (२) बेकार भटकते रहना या	जो र
ठाली बैठे रहना; कहींकी हवा साना।	हवान
-आवी == हवा साना; सुली जगहमें	हवा
टहलना (२) कुछ न मिलना; असफल	नाप
रहना; हवा खाना(३)ग्रायब हो जाना;	हमाल
हवा हो जाना।	हवाल
ग्रामव हो जाना; हवा हो जाना(२)	सिप
मेहनत बेकार जाना।मां किल्ला	योंक
बांबवा ≕हवाई किले रचना; खयाली	अफ़
पुरुषि पकाना । – मां बाबका भरवा =	हवालंग
व्यर्थ कोशिश करना; हवा पीटना।-	या प
लागबी = हवा लगना; किसीके संसर्गका	हवासो
प्रभाव पड़ना (२) हवा या नमीका	सिपुर
वसर होना.]	सत्ता
वर्ष्त वि॰ इंबाई; हवासे संबद्ध (२)	परस्प

- हणरही वि० हवाई; हवासे संबद्ध (२) हवाको भीरकर चल्लनेवाला; हवाई (३)कस्पित; मनसे पढ़ा हुवा; हवाई
  - गु. हिं–३५

हपाकी

- (४)स्वी• एक आतिषवाभी; हवाई। [-किल्ला वांचमा = देखिवे 'हवामां किल्ला वांघवा'। - सूरवी = हवाई (आतिशवाजी) छूटना (२) अफ्रवाह फैलना; हवाई उड़ना.]
- हवाई जहाब न० हवाई जहाब;वायुथान हवाढ पुं० किंसी चीजपर नभ हवा लगनेका असर (होना); नमी;तरी
- हवाडो पुं० जानवरोंके पानी पीनेके लिए (क्रुएँके पास) बनाया गया कूंड; उबारा
- हवाज स्त्री० सुहबत, मैत्री या साथ रहनेका आवंद (२) साथ रहनेसे मिलनेवाला वल (३)आराम; वैन(४) न० पशुकी मादाके गर्भाधानका काल
- हवातिषुं न० व्यर्थं कोशिश; मिथ्या प्रयरन । [हवातियां मारवां ≕ बेकार कोशिश करना.]
- हवाफेर पुं० स्वास्थ्यके कारण हवा-स्रोरीके लिए कहीं जाना
- हवासान न० दातादरणमें होनेवारे हवाके दबाव बादि परिस्थितियॉकी नाप [(२)अहवाल;वृक्तांत
- हवाल पुं० अवस्था; हालत; हवाल[प.]
- हवालवार पुं० पटपारी या चौघरीका सिपाही;हवजवार(२)फ़ौजके सिपाहि-योंकी या पुलिसकी छोटी टुंकड़ीका अफ़सर; हवलदार; हवालदार
- **हवालवारी** स्त्री० हवालदारका काम या पद
- हवालो पु॰ जन्मा; अधिकार (२) सिपुर्दगी; हवाला (३) इल्तियार; सत्ता; अधिकार(४)वारीक छल्ती (५) परस्परके खातेमें अमान्उधार करता; क्कानांतरित प्रविष्टि । [ हवाले करवुं = कब्बेमें लेना (२) कब्बेमें देना;

हवाबुं	५३८ हळाहळ
हवाले करना । <b>-आपनो</b> = जामिन	हस्तक वि० (२) अ० - के चरिये; - के
बनना; हवाला देना (२) सौंपना	
-नाखनो = परस्परके खातेमें जमा	- हस्तमूनन न० अभिवादनके रूपमें आप-
उधार करना.]	समें हाथ मिलानेकी किया: 'बेकडेरब'
हवावुं अ०कि० किसी चीजमें हवाक	हस्तप्रत स्त्री० पुस्तककी हस्तलिखित
मिलना; नमी लगना; हवा लगना	प्रतिः पांडलिपिः 'मेन्यस्किप्ट'
हुबे अ० अब; इस समय (२) इसके बाद; आइंदा; आगे	हस्तमेळाप, हस्तमेळो पुं० हयलेवा; पाणिग्रहण
हवेब पुं० हलदीका जूर्ण	हस्ते अ० हस्ते; –के द्वारा; मारफ़त ।
ह्वेडो पूं० देखिये 'हवाडो'	<b>पोते = ख</b> दने किया है ऐसा अर्च
हवेषी अ० आगेसे; आइंदा [ मंदिर	सचित करता है(प्राय: हिसाब और
हवेली स्त्री० हवेली (२) पुष्टिमार्गीय	छन-देनमें).]
हरों अ॰ खर; अले; कोई परवाह नहीं	हळ न० जमीन जोतनेका औजार;
हशेक्तं वि० योड़ा गरम; कुन्कुना	हरु । [ हळे जोबाबुं = हरुमें जुतना
हसमुखुं वि॰ हसमुख; प्रसन्न	(२) सख्त मेहनतके काममें लगातार
हसर्षु अ०कि० हॅसना; खुले मुंहसे हर्ष-	
भ्वनि निकालना (२) मजाक करना;	हळब (०र) स्त्री॰ हलवी; हलद
हेंसना (३) स०कि० उपहास करना;	हळवति पुं० (सुरतको ओरकी) 'दुबळा'
हैंसी उड़ाना (४)न० हेंसी, हास्य (५)	जातिका एक व्यक्ति
भवाक; दिल्लगी; हँसी। [हसवामांची	
ससर्व वर्षु = मजाक उड़ानेसे बुरा	
नतीजा निकलना,मबाक करनेका फल	· •
भुगतना । हसी काडवूं = हँसीमें उड़ा वेजाः वैगीमें ने केवरः वैगाल का	
देना; हँसीमें ले लेना; हँसकर बात जन्म देना। जनी जन्म न रेन केन्द्र	· · · ·
् उड़ा देना। हसी नांबावुं ≕हँस देना; हँस पड़ना(२)देखिये 'हसी काढवुं '।	षीर,मृदु,नरम ( २ )[ङा.] अप्रतिष्ठित; हलका
रांत काडीने, पेट पकडीने हसबुं =	<b>हळवुं</b> अ०कि० हिल जाना; पर <b>चना;</b>
हँसते-हेंसते पेटमें बल पड़ जाना;	हिल-मिल जाना (२)जी लगना ; ठीक
. खूब हॅंसना; लोट-पोट होना. ]	लगना; रचना; भाना ( ३) अवैध संबंध
हसामयुं सं०कि० 'हसवुं'का प्रेरणार्यक;	जोड़ना; अग्रानाई करना
हेंसाना । [ लीक हसाववा = जगहेंसाई,	हळवुंमळवुं स॰कि॰ हिलना-मिलना;
लोकनिंदा करानाः] [हँस देना	
हसामुं ज० कि० 'हसवु' का कर्मणि;	हळवे (०षी) ब० होलेसे; आहिस्त
हृत्ती स्त्री॰,(-सुं) न॰ हॅसना; हॅसी (२) हॉसी; मबाझ; हॅसी	हळाहळ वि० अति तीव; मीषण(२) न० कालकूट विष; हलाहल

### 1.11

#### 489

हार.

	12.2 610.
<b>हंग्रीमटीने — हिल-</b> मिलकर	हाकोटो पुं० जोरकी आवाज; चोख;हौक
<b>हंकारचुं</b> स॰क्रि॰ हॉकना; चलाना	हायत स्त्री० हाजत; आवश्यकता;
<b>ईंगामी</b> वि० अस्पायी; पोड़े अरसेका	जरूरत (२) शौच आदिका देग;हाजत
<b>हंगानो</b> पुं० हंगामा,घमारु,उपद्रव(२)	(३)हवालात; हाजत; 'लोक-अप' ।
हुस्लड; हंगामा; कथम	[यमी, लागवी = टट्टी-पेशाबकी
<b>ईफाबर्यु</b> स०कि० 'हांफवुं' का प्रेरणा-	हाजत होना ।पडवी = आदत पड़ना ।
र्थक; थकाना; हराना	<b>हाजते जवुं</b> =पाखाने जाना; हाजत
<b>हंमे</b> श(–श†) अ० हमेशा; रो <b>व</b>	रफ़ा करना.]
हैस पुं० हंस (२) आत्मा; जीवात्मा;	हाजर वि॰ हाखिर; उपस्थित; मौजूद
हंस(३) एकदंडी (संन्यासी); हंस	हाजरजवाब पुं० हाजिरजवाब; जो
<b>हंसजी</b> स्त्री० हंसनी; हंसी	वातका यथायोग्य जवाब तुरत दे
हंसपद न० लिखावटमें (्र) चिह्न,हंसपद	
हंसा पु॰ एक छंद (२) स्त्री॰ हंसनी	हाजरजवाबी वि॰ जिसे बातका यथा-
हैंसी स्त्री० हंसी; हंसनी	योग्य जवाब तुरत सूझ जाय; हाजिर-
हा अ० सम्मतिसूचक उद्गार; हाँ(२)	जवाब (२) स्त्री॰ हाज्ञिरजवाबी;
स्त्री॰ स्वीकृति (देना); हाँ करना।	तुरत जवाब देनेकी शक्ति
[ <b>-पाडवी</b> ≕ हाँ करना;स्वीकार करना;	हाजरजामि(-मी)न पुं० हाज़िरजामिन
माननाः]	हाजराहजूर वि० जो हजूरमें सेवामें
हाउ पु॰ हाऊ; हौवा (२) सॉप	हाजिर हो;हाजिरवाश(२)साकात्;
हाक स्त्री॰ हॉक; चोरकी पुकार (२)	आंस्रोंके सामने; हाजिर
प्रमाय; धाक; रोय; आतंक। [-	हाजरी स्त्री॰ हाचिरी; मौजूदगी;
<b>रेजाडवी, देवी = डर</b> दिखाना।-	उपस्थिति (२) सवेरेका खाना;
<b>मानवी =</b> (किंसीका) प्रभाव मानना;	हाजिरी । [–्रूरवी, भरवी = हाजिरी
आज्ञाकारी रहना; भय मानना; रोबमें	रजिस्टरमें लिखना; हाजिरी लेना।
आना। -वागवी = प्रभावका असर	<b>–लेमी</b> = उपस्थिति माऌूम करना
होना; ढंका बजना; घाक जमना.]	(२) सस्त उल्हना देना; फटकारना.]
हाकरू स्त्री० हौक; जोरकी पुकार	हाअरीपत्रक न० हाजिरीकी किसाब;
(२) उत्साहयुक्त अनुरोध या विनती;	रजिस्टर
पुकार; हॉक; आह्यान	हाजियो पूं० हां(२) खुशामदी; हांजी-
हाकवुं अ०कि० हॉकना; चलाना (२)	हौजी करनेवाला । [पूरको = हौ
हॉक देकर भगा देना	करना; सम्मति देना.]
हाकेटो पुं० देखिये 'हाकोटो'	हाजी पु॰ हाजी, हज करनेवाला
हाकेम पुं० हाकिम; सूबेवार	हा भी अ॰ हा जी; जी साहब
हाकोटपुं स॰ कि॰ जोरसे बोलना;	हा जी हा स्त्री॰ खुशामद; हाँजी-हाँजी
षिल्लाना (२) डाँटना; फटकारना	हाव स्त्री०; न० हाट; हुकान (२)
	Z

भंडरिया

काम करना.]

सम्पाहिक बाबार;हाट; गुजरी । (-

मांबच् = दुकान करना; हाट करना.]

हाटियुं न॰ दीवारमें बनी हुई अलमारी;

हाक न॰ हड्डी (२) देहकी गठन;

काठी (३) अ० (मुहादरेमें) एकदम;

बिलकुल; निपट (४)खूब; बहुत ही ।

[-आववुं = खूब तंग आना;यक जाना;

उकता जाना (२) खुब दुबंल हो जाना;

हड्डियाँ निकल आना;सूखकर काँटा हो

जाना । ---जन् = असलियत जाहिर

करना;अपने पर आना(२)हाथसे जाना

(३) रुपये-पैसेसे बिलकुल खाली हो

जाना । --नो ताव =- जीर्णज्वर; पुराना

बुखार। **~भांगवां ≔** बुरी तरह पीटना;

हर्द्डी तोड़ना (२) शरीरसे दुर्बल-हड़हा बना देना (३) दिल लगाकर

हाडकी स्वी० छोटी और नाजुक हड्डी

हाबकुं न० हड्डी। [हाउकां खोलरां

**करकां ≐ हड्डी-गुड्डी तोड़ना; हह्री** तोड़ना; अवमरा करना। **हाडकां** 

चालवां = शरीरमें काम करनेकी

ताकत होना;हाय-पाँव चलना । हाड-

कौनुं आखुं, मागलुं, आसां हाडकांनुं,

**हाक्कांनुं हराम**=कामचोर; आलसी ।

हारकांनी माळो = हुडियोंका धाँचा;

कंकाल। **हाढको भारे यवां** == मार

सानेके रुक्षण दिसाई देना। हाडका

गांगवां = जी लगाकर मेहनत करना

(२)बुरी तरह पीटना; हड्डी तोड़ना।

हाडकां रंगवां = हर्डी तोड़ना (२)

जूब नुक़सान करना । हाढकां बाळवां ==

कसरत करना (२) मेहनत करना।

हावकां हराम करवां ≠आलसी होजर

हादियुं

हार्म काम न करना । **–जतरषुं, उत्तरी अपुं** = हर्द्दी उलड्ना । -- ग्मावर्षु == दिल लगाकर, कमर बॉबकर काम करना.] हाडींपेंडर न० अस्थिपंजर; कंश्वज्ञ हाडमार स्त्री० दिन्कत; परेशानी; कठिमाई \_\_[(२)देखिये 'हा**डमार'** हाडमारी स्त्री० तिरस्कार; धुतकार हाडवेर न० पक्का बेर; बापाबेर हारुवंद(न्द्र) पुं० हड्डी बैठानेवाला; कनंगर हाडियो पु॰ कौआ (पक्षी) - नुसार हाजियो ताव पुं० जीर्णज्वर; पुराना हाडे(-डो)हाड अ० हड्डियों तक; प्रत्येक अंगमें। [**-म्यापी जर्षु, लावी** जन् =सिरसे पैर तक आग लगना.] हाण(ण,) स्त्री० हानि; नुकसान हाय पुं० हाथ; इस्त (२) ड्रहनीसे बीचकी उँगलीके सिरे तककी नाय; हाथ (३) (ताशमें) जीता हुआ दाबें; हाय (४) रेलका सिग्नल; सिकं-दरा (५) [छा.] हस्तकौशल (६) सहागता; सहयोग; हाथ बँटाना; प्रेरणा; साथ; उदा ० 'ए काममां भारो हाय नयी ' (७) कृपा; रहम; उदा० 'तेना उपर मारा बन्ने हाय छे' (८) (रँगाई आदिमें) दफ़ा; बार; पुट; उदा० 'रंगना वे हाथ कीवा' (९) पाणिग्रहण; हथलेबा; उदा० 'कन्याना हायनी मागणी क**री**' (१०) इस्तियार; सत्ता; काबू; बस; उदा० 'मारा हायनी वात नथी (११) और; तरफ़; दिशा; हाथ; उदा० 'बाबे हाथे तेनुं भर छे'। [-अटकाटवो, अडाडवो = हागसे स्पर्शं करना; हाय लगाना (२)

For Private and Personal Use Only

(W): WING

448

हाम देवो

र्व्हन बैंटाना; काम करनेमें सहायता ः अचिता । --भावमुं = मिलना; फ्रायदा 'होगा; हाम आना (२) अधिकार-कम्बेमें वाना; हाय वाना । -- उगामवो मारने पर उतारू होना; किसी **पर हाय** उठाना । --उकावधो == देखिये 'हाव जगामनो' (२) अपना क्रम्बा या हक छोड़ देवा। --खपर सेम्बुं == बशमें करना; हाथमें करना (२) काम शुरू करना; हाथमें लेना। -उपाडवो ≕किसी पर हाय उठाना; मारना । – कतरी जबो == हाथ उलड़ना, उतरना। –ऊपडवो = हाय उठा बैठना; हायसे मारना ! -- कंचो रहेवो = किसी काममें फैसनेके बाद उसमें से पैदा होमेवाले दोषसे अलग रहना, बचना । (२) बाज्ञा देनेवालेकी स्थितिमें होना । **⊷करवुं** ≕ अधिकार करना; हायमें करना । --कापी आपवा == सही; झब्-लियत आदि देकर खुद विवश होना; हांच कटा देना; हाथ कटाना । ---काक्षा **करवा** = बुरे काममें शरीक होना; कलंकका टीका लगाना;हाय रँगना (२) घूस लेना; हाथ रॅंगना। किसी काममेरे हाय खींचना; काममें सहायता देना बंद करना; हाझ उठा छेना; जिम्मेदारी फेंक देना(२)हाथ भारतना; आशा छोड़ देना। --वसवा = पछताना; हाय मलना (२) हार जाना; थकता। --चालगो 🗢 किसी काममें दखल देना; हाथ डालना; हस्तक्षेप करना । --वडवुं == (काममें ) हाय जमना, बैठना (२) हत्वे चड्ना; हत्ये लगना। --चलावचो ==

कॉम करना; तेवीसे काम करना; हाथ चलाना (२) (किसी पर) हाथ उठाना; मारना; हाथ चलाना (३) जस्दी-जल्दी खाने लगना; मुँह चलाना (४) (लिसावटमें) काट-र्छाट करना; सुधारना । --वळवळवा == (भारनेको) हाथ खुजलाना । –बाटबों = व्यर्यं प्रयत्न करना; हाथ-पाँव पीटना [ला.] । --बालवो = हाथ चलना। --चोक्सो न होवो ⇒स्त्रीका रजस्वला होना; कपड़ोंसे होना (२) हाषका झूठा, बेईमान होना । --बोक्सो होबो = हाथका सच्चा होना;ईमामदार या निष्कऌंक होना। —चोळवा⇒ स्रोनेके बाद पश्चात्ताप करना; हाब मलना। –कूटो होवो == खूब खर्चीला या उदार होना; हाथ ऊँचा होना (२) हाथ छुटा होना; मारनेकी होना। -जया = सहारा, भारत आधार जाना (२) हिम्भत हारना हाय न चलना; हायसे (३) काम करनेकी शक्तिका न रहना। --सारुबो -- हाय पकड़ना (२) रोकना; मना करना; हाय धरना (३) सहायता करना; हाय घरना; हाय बँटाना (४) पाणिग्रहण करना; हाथ घरना। **--ठरवो** == किसी काममें हायका अभ्यस्त होना; हाथ जमना, बैठना। -साळी देनी = सफ़ाईसे छटक जाना (२) छलना; दगाबाजी करना।-थी जबुं=देलिये 'हायेथी जवुं'। → वेकाडवो = ताक़तका परिचय देना (२) इस्तकौधल दिसाना (३) हस्त-रेसाविद्को हाय दिसाना। –वेवो= हायका सहारा देना; टेकाना (२)

हाम मरवुं

ષષર

হাৰ ভাৰৰা

चुपड़ना(रोटीमें घी आदि)(३)रोकना; मना करना; हाय देना; हाथ घरना। **⊶भरवुं** ≕काम आरंभ करना; हाथ मौंगना !— धोई मासवा = आशा छोड देना; हाय थो बैठना (२) दिवाला निकालना (३) जिम्मेदारी या किसी काममेरी हट जाना; हाथ सींचना; हाथ उठा लेना।--भोईने =देखिये 'हाथपग' घोईने । --**मालवो** = हड़पना; लूटना; हाथ भारता; हाय साफ़ करना (२)हायसे पकड़ना । -नीचे = अधीन; मातहत(२)आश्वयमें; (३) निगरानीमें; देखभालमें।-मीचेनुं = ताबेदार; मातहत; नीचे काम **करनेवाला । —मी वात** ≕ बसकी बात ; अधिकारकी बात। --- नुंकर्युं == अपने हायसे किया हुआ (बुरा काम)। --नुं चोक्स्तुं ⇒हाथका सच्चा। --नुं छूदुं ≂ हथछुट (२) उड़ाऊ । --मूं भूठुं = हाथका झूठा। —नुं पौखुं = उड़ाऊ। --नो मेल≕तुच्छ वस्तु जिसे दे देनेमें झिझक न हो।**---पकडवो**≕देखिये 'हाथ झालवो'। --पग = हाय-पाँव (२)मुख्य आधार (३) हेतु; आदि-कारण; मूलकारण । **~पग गळी अवा** ≕देखिये 'हाथपग भांगी जवा**' । --पग** जोडीने बेसी रहेवुं = हाय पर हाथ घरे बैठे रहना; आलसी होकर बैठा रहना । --पग घोईने == हाथ घोकर (किसीके पीछे पड़ना)। --पग भांगी जवा == हाथ-पौर्व हारना; बिलकुल निःशक्त होना (२)साहसहीन होना; हाथ-पाँव हारना। **--पछाडवा**≕गुस्सा करना (२) तीव्र घोक करना; सिर

पीटना । – पीळा करवा 🛥 हाय) पीछे करना; व्याह करना। --वतावतो 🛥 देसिये 'हाय देखाडवो' (२) हाथका इसारा, संकेत करना। --वांगवा == किसीको विवश कर देना; हाथ काट **देगा। --वेसवो =**=किसी काममें हाथ बैठना, जमना। --भीडमां होबो = तंगदस्त होना; हाथ खाली होना। **--मारवा** ⇒ तैरनेमें हाय-पांव हिलाना; हाय-पाँव मारना। --मारवो⇒चोरी करना;हड़पना;हाथ भारना (२) रोग्रन, रंग आदिसे रंगना (३) तैरनेमें हाथ-पाँव मारना। --मां आवर्षु == देखिये 'हाथ आवर्यु'। –मां चांपर्वु, रावर्यु= षूस देना। --मां पडषुं = वशमें होना; **हाथ पड़ना; हाथ आना । --मां लेखुं** 🛥 देखिये 'हाथ उपर *ले*वुं'। **–मा हा**थ **अश्यको = वचन** देना; प्रतिज्ञा करना; हाथ पर हाथ मारना (२) हाथमें हाथ देना,क्याह कराना । –मां होवुं = हाथमें होना; वशमें होना,अघिकारमें होना । -मिलाबवो == पाणिग्रहण करना; हाथ धरना(२)दोस्ती करना(३)मेल-मिलाप करना। **–मूकवो**≕गुरु या बु्जुर्गका आशीर्वाद देना;किसी ध्यक्तिमें सरपर-स्तके गुणधर्म, स्वभाव आदिका संचार होना; उदा० 'मामाए तेने माथे हाथ मूक्यो छे'। --राखवं == वधमें रखना; हायमं रखना। --स्त्रगाइवो == हाथसे स्पर्श करना; हाय लगाना(२)मवद करना; हाथ बँटाना। ---रुंबाववो = मदद मांगना; हाथ पसारना (२) भीख मौगना (३)मदद करना;हाथ बँटाना । –लगग्र्युं = भिलना; हाथ लगना। -लागवो = किसी चीजका किसीके

हावउछीन्

483

हाषी

· · ·	
हायसे छू जाना; हाथ लगना। -लांबो	पर ली हुई या दी हुई; मँगनीकी(चीज);
<b>करवो</b> =देखिये 'हाय लंबादवो'।	हथउषार
<b>-वळवो =</b> किसी काममें हाय बैठना;	हाषकडी स्त्री० हथकडूी। [−करबी ≕
अभ्यस्त होना । <b>–सारो होवो</b> ≕किसी	हथकड़ी पहनाना, डॉलना.]
हस्तकौशलमें प्रवीण होना; हायमें	<b>हायकंतामज न</b> ० हाथकताई
सफ़ाई होना (२) जिससे यश प्राप्त	हामकागळ पुं० हाथकाराज
हो ऐसा होना (३) ईमानदार	<b>हायकाम</b> न॰ हायका काम; हुस्तकार्य
होना; हाथका सच्वा होना (४)	हायकारीगरी स्त्री० दस्तकारी; हस्त-
(स्त्रीका) रजस्वला न होना।	निया
-सांकडमा होवो = देखिये 'हाथ	हाथकांतण न० हाथकताई
भीडमां होवों'। -हलको होवो	हायगाडी स्त्री॰ हायसे खींचनेकी या
⇒हाथसे काम करनेमें चोट न लगे या	ठेलनेकी गाड़ी [हाथकी चतुराई
नुकसान न हो ऐसी कुशलता होना।	हामचालाकी स्त्री० (जाडूके खेलमें)
-हलावता आववुं = हाय हिलाते	हायछड स्त्री० (हायसे) धान-कुटाई
आना। -हरूलववा = उद्यम करना;	हायणी स्त्री॰ हथिनी; हयनी (२)
हाय चलाना।हेठे पडवा = कोई	(दीवारकी मजब्तीके लिए बनवाया
उपाय न रहना; हाथ पर हाथ	जानेवाला पुरता [ला.]
धरकर बैठ जाना;हाय-पाँव हारना;	हाथताळी स्त्री० ताली; करताली।
हिम्मत हारना ।होवो = हाथ होना;	[देवी = सफ़ाईसे चंपत हो जाना
शामिल होना । अग्रेडे हाथे देवुं = खूब	(२) छलना; चकमा देना.]
पीटना। आडो हाथ देवो, घरवो,	हायप्रत स्त्री० देखिये 'हस्तप्रत '
राखवो ⇒ रोकना; अटकाना; हाथ	हायबेडी स्त्री० हथकड़ी
देना या घरना। केडे हाय देवा - यक	हायमहेनत स्त्री॰ हायसे किया जाने-
जाना; कमर टूटना । माथे हाथ	वाला श्रम [(देना)
रेवो = हताश हो जाना; सिर पकड़कर	<b>हाथमुचरका</b> पुंग्ब०व० खुद मुचलका
बैठ जाना। माथे हाथ फेरवथो = मातम	हाथमोजुं न० हाथका मोजा; दस्ताना
या स्नेह प्रदर्शित करना (२) आशीर्वाद	हायलाकडी स्त्री० छड़ी (हाथमें
देना; अपने गुण, स्वभाव किसीमें	पकड़नेकी) (२) सहारा; आधार[ला.]
आये इस प्रकार सिर पर हाथ रखना ।	हायवेंत(-मां) अ॰ बहुत नजदीक;
माथे हाथ मूलवो = आशीर्वाव देना	पासमें; हाथ आनेमें (होना)
(२)अपना गुण, स्वभाव दूसरेको देना ।	<b>हायसाळ</b> स्त्री० हाथकरघा जन्मिलो पंच उल्ला (जन्म) - न्यीना
(र)अपने गुज, स्पनाय दूसरफा दना । मार्थे हाथ होवो = सिर पर साया	हाथियो पुं० हस्त (नक्षत्र); हथिया
नाथ हाथ हावा मात्रर पर ताया होना; सिर पर होना.]	हायी पुं० हायी। [घोळो हायी बांधवो
रुपिः, स्वरं ५२ होगोः,] स्वयनकोनं विक्रायतः लौटा टेनेकी धर्त	= बूतेसे बाहर खर्च हो ऐसा काम सरकाः सफेट साणी सौगरा !

हायउछीनुं वि० पुनः लौटा देनेकी शर्त करना; सफ़ेद हायी बाँधना.]

äт.	ीव	ia
×		

हाथीवांत पुं० हायीदांत

(२) बड़ी टॉंगोंवाला

हाचीपगं वि॰ जिसे हायीपांव रोग हो

हाथे अ०हायसे(२)हायमें(२)खुद; आप।

[-करोनें ≕ स्वेच्छासे; जान-यूझकर;

संकल्पपूर्वक । **--श्वडवुं** == देखिये 'हाय

चडवुं '।, --मी जवुं == हाथसे जाना,

निकलना; अधिकारमें न रहना (२)

किसीके काबू,वशके बाहर होना; हायसे

जाना । -- खेसवुं = कोई काम आना;

हाथ जमना। **हाथे हाथ मिलावयो** =

देखिये 'हाथ भिलाववो'.] [हथलेवा

हार्यवाळो पुं० वरकन्याका पाणिग्रहण;

हाथो पुं० हाथा; दस्ता; मुठिया; हत्था

(२)सहाय; मदद (३) पक्ष । [कुहाडाना

488

हाल्स्यू

- हायबोय स्त्री० शोक; अफ़सोस; चिंता (२) अ० आह; हाय
- हार पुं० फूलोंकी बड़ी माला;पुष्पहार (२) गलेम पहननेका एक गहना ; हार हार(र,)स्त्री० हार; पराजय(२)पंक्ति; कतार ।[**⊸खावो =** हार खाना;पराजित होनां। --मां रहेवुं = पंक्तिमें रहना
- (२)[ला.]स्पर्धा करना; होड़में रहना.] हारको पुं० बड़ा हार (२) शक्करकी
- कतरियोंका हार;खजानीका हार हारतोरा पुं० ब० व० पुष्पमाला और
- फूलोंका गुच्छा (२)[ला.] मान; आदर हारबंध अ० क़तारमें; पंक्ति बांधकर
- हारबुं अ०कि० हारना; पराजित होना
- (२) तंग आना; थकना(३) स० कि० स्रोना; हारना
- हारी पुं० एक छंद(२)किसानीके काममें मददके लिए रखा हुआ व्यक्ति;हरवाहा
- हारे अ० साथमें; साथ; पासमें (२) तुलनामें ; बराबर ; साय-साथ
- हारेडूं वि० अवमी; उत्पाती
- हारोहार अ० एक पंक्तिमें;पाँत बांघकर; [भावार्थ; मतलब; हार्द बराबर
- हार्व न० हृदय (२) मर्म; रहस्य (३) हरल पुं ०ब ०ब ० हाल; दशा; अवस्था(२)
- बुरा हाल; अवदशा(३)अ०हालमें;अभी
- हालवाल स्त्री० हाल-डोल; हिलना-डुलना (२) चाल-ढाल; तौर-तरीक़ा
- हारुणडोलण वि० हिलता-डुलता ; **डगमगाता हुआ; डॉवाडो**ल
- हालत स्त्री ॰ हालत; दशा; हाल(२) आदत; लत [ पोलियुं'
- हालगोल(-लियुं) वि॰ देखिये 'साल-हालमां अ० हालमें; अमी
- हालरडुं न० लोरी (गीत)

- **हाया बनव्**ं,≕बुरे काममें दूसरेके सांधन या हथियाररूप बनना हाथोहाथ अ० जिसको देना हो उसीके हायमें; हाथोंमें (२) एक हाथसे दूसरे हाथमें; तुरत; हाथोंहाथ; एक-दूसरेकी मददसे। [- अपडी जवुं, **वेचाई जवुं =** हाथोंहाथ बिक जाना, उड़ जाना.] [ टालटूल हा ना स्त्री० आनाकानी; टालमटोल; हाम स्त्री० हिम्मत; साहस ।
- [-भीडवी = हिम्मत करना.]
- हामलवुं अ०कि० हिम्मत हार जाना; पस्तहिम्मत होना
- हामी पुं० जमानत देनेवाला; जामिन (२) जमानत; जिम्मेदारी लेना
- हाय अ० हाय (उद्गार) (२) स्त्री० बददुआ; शाप; हाय। [-पोकारवी, **लेवी ==** दिल दुखाना ; आह लेना.]

**हायपीट** स्त्री० हाय मारना;रोना-पीटना हायवराळ स्त्री० शोक;अफ़सोस; खेद

	- 2

हांत्लं

-
हालदं न० बच्चोंको नजार न लगे
एसी चीचोंकी माला; कठला(२)
समूह; टोली (३) देवरी (खलिहानमें)
(४ँ) लोरी (गौत)
हरलबुं अ०कि० हिलना ; डोलना ; बंचल
होना(२) जाना; वलना
<b>हालहवाल</b> पुं०ब०व० बुरे हाल; <b>दुर्द</b> शा;
तबाही (२)वि० दुर्दशाग्रस्त
हाल हाल अ० अभी; इसी वक्त;तत्काल
<b>हालंहाला, हालाहाल</b> स्त्री० <b>बार-</b> बार
हिलना; हिलना-बुलना
हालीमवाली पुं० ऐरा-गैरा; मामूली
हेसियतका आदमी
हालोबालो पु० धूमना-फिरना
हाव पु॰ हाव; स्त्रियोंकी शृंगारसूचक
चेष्टा (२) इच्छा; हवस
हाबमाव पुं० ब० व० हाव-भाव; नाज-
नखरा (२) विलास-चेष्टा
<b>हावर्रवायरं</b> वि० हन्कावनका;पागल-
सा; घबराया हुआ; हावला-बावला
हावां (वे) अ॰ अब; अमी
हाश अ० चैन, संतोष या छुटकारेका
उद्गार; हा (२) स्त्री॰ चितारहित
दशा; चैन; कल, शान्ति
हास्तो अ० हाँ तो; हाँ जरूर
हास्यचित्र न० हास्योत्पादक चित्र;
ैंकेरिकेचर' 
हाहाहोही अ० हास्य-विनोदकी आवाज;
हाहा (२) स्त्री॰ हाहाहीही; हाहा-
ठीठी; हँसी-ठट्ठा
हाहो स्त्री० शोरगुल; हो-हल्ला; चीख-
पुकार (२) चहल-पहल; धूम
हाळी पुं० हलवाहा; किसाम (२) खेतीके
काममें मदद करनेवाला नौकर
हां(०) अ० हौ (एक उद्गार) ; उदा०

'तमे एम करजो, हां' (२) (कहानी सुनते समयकी) हुँकारी (भरना); हुँ (३) ललकार, हुंकारका उद्गार हांक (०) स्त्री० हांक; जोरकी पुकार हॉकयुं(०) स०कि० हॉकना(२) [ला.] लंबी-चौड़ी बातें करना; बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना ; हॉकना । [**हांक्ये राखवुं** == कैसे भी बनाये रखना; कभी भंग न होने देना; निबाहना (२) लंबी-चौड़ी बातें किये जाना.] हांकारो (०) पुं० 'हां' आवाज हाँकेंदु(०) पुं० गाड़ीवान; हाँकनेवाला हांजा गगडी जवा(०)=छक्के छूटना; हिम्मत पस्त होना हांडली(०) स्त्री० होंड़ी; हुँड़िया हांडलुं(०) न० बड़ी हाँड़ी हांडवो(०) पूं० एक खाद्य चीज हांबी (०) स्त्री ॰ होड़ी ; हंडी (मिट्टीकी) (२)हंडा (घातुका)(३)हँड़िया; हॉड़ी (छतसे लटकानेका काँचका पात्र) हवि (०) पुं० हंडा (धातुका) (२)एक खाद्य चीज (३) [ला.] मूर्ख; गावदी हांफ(०) पुं० ; स्त्री०,(०ण) स्त्री० हांफा । [--चडबो = हाँफा छूटना; हाँफना.] हांफवुं(०) अ०क्रि० हॉपना; हांफना हॉफळुं(०) वि० व्याकुल; वबराया हुला हांफळुंफांफळुं वि० हक्का-बक्का; धब-राया हुआ; बावला हल्लि स्त्री०, (-स्लुं) न० देखिये 'हांडली, हांडलुं'। [हांस्ला कुस्ती करे (धरमां) = अत्यंत ग़रीब होना;दौत पर मैल न होना। हॉल्लां खलडवां = झगड़ा, तकरार होना । **हॉल्ला फोडवां** 

≓ तकरार करना (२) घर बदलना (३) किसी एक काममें न लगा रहना।

हरस	U

**ૡ**¥૬

हिसाब

<b>-फोडवुं</b> = छिपी हुई बात बता देना;	हितशय
भंडा फोड्ना(२)जीविकाके साधनोंका	बदले
नाश करना; लगी रोजी बिगाड़ना।	বিচন
फोडी नांखबूं = नुक़सान करनाः	हितसंब
तबाह करना (२) सिर फोड़ना(३)	हितेश
मारनाः]	हिनाः
हांसडी (०) स्त्री० हँसली (ग्लेकी हड्डी)	हिनो ।
(२) गलेका एक गहना; हँसली (३)	हिमाय
अरिवन; रस्सीका फंदा	
हांसल(०) वि० हासिल; लब्ध; प्राप्त(२)	(२) मुक़र्र
न० जकात; चुंगी; कर(३)फ़ायदा;	_ <b>*</b>
लाभ; हासिल (४) उपज; पैदावार; जन्म (५) ज्वीन ( जन्म कि सेन	हिमाय
हासिल (५)नतीजा;हासिल; निचोड़	तरफ
हांसचो (०) पुं० गैंती; कुदाल	हिमाळुं
<b>हांसियो (</b> ०) पुं० हाशिया (काग़जका)	हिमाळे
हांसिल (०) वि० देखिये 'हांसल'	हिमा
हांसी (०) स्त्री० हाँसी; मजाक; हँसी;	हिरवर्ण
दिल्लग़ी (२) फ़जीहत; बदनामी;	हिलचा
हाँसी; हँसाई	डोल
हो हो(०) <b>अ० वर्जन करनेका उद्</b> गार;	हिलोळ
हौं-हाँ [शोरगुल; कोलाहल	<b>स्</b> ला
हिकराण न० रोना-पीटना; कुहराम (२)	हिलोळं
हिक्कड वि० निष्ठुर; हृदयहीन; सख्त-	(२)
दिल(२) जो मिलनसार न हो [ठंड	विनोर
हिक्कळ न० बारिशसे होनेवाली बहुत.	[हिले
हिनका स्त्री० हिनका; हिचकी	तरंगि
हिचकारं वि० कायर; नामर्द (२)	उधम
अधम; नीच;हलका;निद्य;हेय;बुरा	हिल्लोल
हिचाको पुं० भीड़; भीड़-भड़क्का;	
धन्तमधन्ता	हिसाब
हिजरत स्त्री० वतनसे अलग होना या	(२)
वतन छोड़ना; हिज्जत; हिजरत	लेखा;
हिजरती वि० हिजरत करनेवाला	आदिः जिल्ला
हिजरावुं अ०क्रि० वियोगसे दुःखी होना;	किताल
<b>धूरना; हुड़</b> कना [हौना	महत्त्व
हितविरोध पुं० किसीके हितमें विघ्नरूप	हिसाब

त्रु पु० अपनी मुर्खतासे हितके ४ हानि करनेवाला मित्र (२) हितमें तरूप बननेवाला स्वार्थ बंध पु०भला;हित;कल्याण(२) रो वि० हितैषी; हितेच्छ स्त्री० हिना; मेहँदी पुं० मेहँदी; हिना(२)हिम **ात स्त्री**० हिमायत; तरफ़दारी ) समर्थन करना (३) लगान र्ररीमें की हुई वृद्धि iती वि० (२)पुं० हिमायती; **त्दारी करनेवाला;** हामी ठंडा र्टु वि० बर्फ़ीला; हिमवान्; बर्फ़सा ठो पुं० हिमालय।[—माळवो ≕ लिय चढ़कर बर्फ़में देह छोड़ना.] गी पं० कपासकी एक जात ाल स्त्री० हिलना-डुलना; हाल-(२)प्रवृत्ति; आंदोलन; हलचल **उवं** स०क्रि० झुलेको हिलाना; ना (२) हिलोरना गे पुं० हिलोर;हिलकोरा;हिल्लोल झुलेका आगे-पीछे जाना ; पेंग(३) द; आनंद; हिल्लोल; उछाह। ोळे चडवं = झूलेकी तरह झूलना ; ात होना; हिलोरा लेना (२) । मचाना; उपद्रव करना.] ल(-छ)पुं० लहर; हिलोर; गैल(२) मनकी तरंग; हिल्लोल पुं० हिसाब; गणना; गिनती गणितका प्रश्न; हिसाब[ग.](३) ; खरीद-बेची, आय-व्यय, लेन-देन का व्योरा; हिसाव; हिसाव-ब (४) गिनती ; हैसियत ; बिसात; ब(५)रीति; नियम; ढंग; हद; ब:तरीका ।[(खुदाने घेर)⊸आपवा

<u> </u>	
IBUILINGIA	
X	

৸૪७

- चचुं = भर जाना। -मणवो = गिनती करना; गणितका प्रश्न करना (२) कुछ महस्वका समझना; हिसाब होना। -चूकववो = हिसाब पाक करना; हिसाब बेबाक करना; ऋण बुका देना।-राखवो = आवक-खर्चका व्योरा रखना (२) हिसाब होना; कुछ हव रखना। --सेवो = हिसाब मांगना; हिसाब पूछना.]
- **हिसाबकिताब** पुं० हिसाब-किताब; हिसाबबही(२)लेन-देनका ब्योरा या लेखा; हिसाब-किताब
- **हिसाबनो**श(<del>- स</del>) पुं० हिसाबनवीस; हिसाबदाप; 'अकाउंटेंट'
- हिसाबी वि० हिसाब-संबंधी (२) हिसाब रखनेवाला; हिसाबदार; हिसाबसे चलनेवाला(३)गिनकर निश्चित किया हुआ;चौकस;ठीक (४) पुं० हिसाब लिखनेवाला मुनीम
- हिसाबे अ० हिसाबसे;हिसाबके मुताबिक हिस्सेदार वि० हिस्सेदार; भागी; साझी हिस्सो पुं० हिस्सा; भाग; अंश; साझा
- हिंग स्त्री० हींग
- हिंगळो (०क) पुं० ईंगुर; शिंगरफ़
- हिंगळोकियुं न० ईंगुंर रखनेकी डिबिया; इँगुरौटी (२) वि० शिंगरफ़के रंगका; जिंगरफ़ी [फल; इँगुवा हिंगोर्ड न०, हिंगोटो पुं० हिंगोट वृक्षका हिंगोरी स्त्री० हिंगोट वृक्ष; इंगुदी हिंबोल(-ळ) पुं० हिंडोल; झूला
- हिंडोळाखाट स्त्री० खाटका हिंडोला
- हिंबोळो पुं० पालना जैसा बड़ा झूला; हिंडाला।[-खावो क्सूलेपर झूलना; पेंग मारना(२) [ला.] किसी आशामें लटके रहना; झूलना.]

ही	¢

हिरवाणी स्त्री० हिंदुस्तानकी या हिंदू स्त्री; हिंदुआनी हिंबोल पुं० हिंदोल; झुला; हिंडोला (२) एक राग; हिंदोल हिबोळवुं स० कि० हिंडोलेमें या पालनेमें झुलाना; झुलाना हिमत स्त्री० हिम्मत; बहाद्री हिमतबाज, हिमतवान वि० हिम्मती हीक स्त्री० हिक्का; हिचकी (२) गुल; वेदना ( ३ ) उतावली; ताकीद ( ४ ) दमा हीकळ न० देखिये 'हिक्कळ' हीचकयं अ०कि० देखिये 'हींचकवुं' हीचकार्य वि० देखिये 'हिचकार्य' हीचकावुं अ० कि० 'हींचकवुं' का भावे (२) टकराना [देखिये 'ईचवुं' हीचवं अ० कि० देखिये 'हींचवु' (२) हीजडो पुं० हिजड़ा हीण वि० हीन; नीच; अधम (२) घटिया; हलका; निम्न कोटिका(३) मिलायटवाला (४) रहित; हीन; वर्जित;कम;अधुरा हीणकर्म न० नीच कर्म; हीनकर्म होणपत(-द) स्त्री०; न० नीचता; बुराई; लांछन; हीनता **हीणुं** वि० देखिये 'हीण' हीबकब अ०कि० चौंकना; धकधकामा (२) सिसकना; हिचकी लेना हीबकुं स्त्री० सिसकी; हिचकी होमज स्त्री० छोटी हड़, हरीतकी हीमजी हरडे स्त्री० छोटी हरी सूखी हड़ हीर न॰ रेशम(२)एक वृत्त;हीर(३) तेज; नूर; कांति (४) सत्त्व;जौहर; हीर; माल (५) प्रेम; प्यार(६)हिम्मत । [--गुमाववं॑ु ≕नूर गँवाना । --हारवंु = सास-प्रतिष्ठा जाना; इरजत खोना.]

हीरकमहोत्सव	५४८ हुलामण
हीरकनहोसव, हीरकोत्सव पुं० हीरक	= आज्ञा करना;हुक्म देना ।उठाववो
जयन्ती; ६०वीं वर्षमाँठका उत्सव	= आज्ञाका पालन करना ; हुक्म दजा
<b>हीरकोरी</b> वि॰ रेशमी कोरवाला	लाना । <b>काढयो ≕</b> आजा जारो करना ।
हीराकणी स्त्री० हीरेकी कनी; कनी	- <b>बहार पडवो</b> ≕आज्ञा जाहिर होना;
<b>हीराकशो(–सी)</b> स्त्री० हीराकसीस	हुक्म निकलना.]
हीराकंठी स्त्री० पासेदार मनकोंका	<b>हकमनाम्</b> न० डिगरी; डिकी
सोनेका हार	<b>हुक्काधाणी</b> नं०ब०व० हुक्क़ा,पानी आदि
हीरागळ वि० रेशमी	पीना (२) हुन्का पीने-पिलानेका
<b>हीराबोळ</b> पुं० एक प्रकारका गोंद;बौल	व्यवहार या जाति-बिरादरीका संबंध ;
हीरावेध वि॰ हीरेको बेधे ऐसा (२)	हुक्कापानी । [⊶बंघ करवां ⇒हुक्का-
[ला.] होशियार; चालाक; हीरा	पानी बंद करना.]
हीरो पुं॰ हीरा; एक श्वेत रत्न	<b>हुक्को</b> पुं० हुक्का; नारियल । [गग-
हौलवुं अ०कि० हिलना; डोलना (२)	<b>डाववो, ताणवो, पीवो == हु</b> क्का पीना;
देखिय 'इचबु'	गुड़गुड़ाना । <b>भरवो =</b> हुक्का भरना.]
हीही अ० हँसनेकी आवाज; हीही	<b>हुक्जत</b> स्त्री० हठ; जिद(२)हुज्जत; <b>सगड़ा</b>
हींचकवुं अ०फ्रि० पेंग लेना; झूलना	<b>हुण्डती</b> वि० हठी(२)झगड़ालू;हुण्डती
हींचको पुं० झूलनेका साघन; झूला;	<b>हुक्रताययुं</b> स० कि० घुतकारना;
हिंडोला (२)झूलते समय झूलेका आगे-	घिक्कारना (२) धमकाना; डौटना
पीछे जाना ; पेंग ; हचकोला	<b>हुडुडु</b> अ० हल्ला या झपाझपीकी ध्वनि
हींचववुं स०कि० देखिये 'हींचाववुं'	<b>हुलाशनी</b> स्त्री० हुताशनी; होली
हींबवुं अ० कि० झूले पर झूलना;पेंग लेना	<b>हुतुतुतु</b> न॰ एक खेल; कबड्डी
हींचावचुं स०कि०'हींचवुं'का प्रेरणार्थक;	<b>हुन्नर</b> पुं० हुनर; फ़न; कारीगरी
झुलाना [झुलाना; पेंग मारना	<b>हुन्नरउन्नो</b> ग पुं० हुनर और उन्नोग-भंघा
हींबोळवुं स॰कि॰ झूलेको हिलाना;	<b>हुन्नरी</b> वि० हुन <b>र</b> मंद; निपुण; कुशल
हींचोळाखाट स्त्री० देखिये 'हिंडोळाखाट'	<b>हुमलासोर</b> वि० हमलावर; आक-
हींडछा स्त्री० चलनेका ढंग; चाल	- मणकारी
<b>हींडवुं अ॰ कि॰</b> चरूना	<b>हुमलो</b> पुं० हमला; आक्रमण; धावा
हींबाब (व) वुं स० फि० 'हींडवुं' का	<b>हुरम</b> स्त्री० लौंड़ी; दासी; हरम
प्रेरणार्थक; चलाना [जाना	हुरियो पु०; स्त्री० गत; भद्द; फ़जीहत
हींडावुं अ० कि० 'हींडवुं' का भावे; चला	(२) मजाक उड़ाना; ठट्ठा (३)
हींडोल(-ळ), होंडोळालाट, हींडोळो देखिये 'हिंडोल' आदि	अ० बढ़ावा, मंजाक़ या तुच्छकारका
	उद्गार । [—बोलाववो ≕ भद्द उड़ाना.]
<b>हींयां अ</b> ० यहां; हियाँ	<b>हुलराववुं</b> स०क्रि० (बच्चेको) दुलारना ;
हुकम पुं॰ हुक्म; आज्ञा (२) (ताशमें)	लाड़-चाव करना
सर;तुष्प । [⊸कापवो, करदो, छोडवो	हुलामण न० लाइ-चाव; दुलार

-	_	
- CB - 1		
•		· •

हुलामणुं न० दुलार (२) वि० प्यारमें

दिया हुआ (नाम)

489

हुलामो पुं० जोश; आदेश (२)[ला.] धमायौकड़ी; धमाल; उपद्रव हलाबबुं स० फि० देखिये 'हलराववु' (२) उछालना (३) हिलाना; चारों ओर घुमाना, फिराना (४) तलवार, भाला, चाकू आदिकी नोक तेजीसे गड़ाना, भोंकना; हुलना (५) 'हुलाबुं', 'हुलवुं' का प्रेरणार्थक **हलार्ष्** अ०कि० देखिये 'मकलावुं' (२) स०कि० देखिये 'हुलरावयुं'; उदा० 'हुं तो हुलावुं मारा भाईने' हुल्लड न० हुल्लड़; दंगा-फ़साद;बलवा हुल्लडसोर वि०(२) पुं० हुल्लड्बाज; बलवाई; विद्रोही; उत्पाती हुं(०) स० मैं (उद्गार) 👩 (०) अ० हुंकार (दर्प, ललकार आदिका **हुंकार(–रो)**(०) पुं० बात सुननेकी स्वीकृतिका सूचक सब्द; हँ (२) जोर देकर कोई बात कहना (३) सिंहनाद; गर्जना; हंकार हुंसातुंश (---श्री,--सी) (०,०) स्त्री० स्पर्धा; चढ़ाऊपरी; खींचतान; होड़ हूक पुं० हुक; अँकुसी हुक पुं० बंदर (बालभाषामें) (२) स्त्री० मरोड़; आँतोंकी ऐंठन हुकवुं अ० कि० बंदरका बोलना (२) चीख मारता; चिल्लाना हकाहक स्त्री० बंदरोंकी हुंकार हूको पुं० देखिये 'हुक्को' . हुप अ०ँ बंदरकी <sup>(</sup>हूप-हूप' आवाज (२) पुं० बड़ा बंदर हूपाहूप अ० देखिये 'हूकाहूक' हुबहु वि० हुबहु; ज्योंका त्यों; तादृश हेठ

हरी स्त्री॰ हर; अप्सरा हूलकुं न० अनचीती घबराहट हलबुं अ०कि० देखिये 'ऊलबुं' (२) आनंदमें आ जाना हंछी वि० नटखट; उत्पाती; लगामको न माननेवाला (घोड़ा) (२) मनहूस; [मनहूस व्यक्ति সন্থ্য हुंछी घोडो पुं० मुंहु जोर घोड़ा (२) हंडियामण २० हुंडीकी दर; हुंडावन

- हंडी स्त्री० हुंडी। [-पाकवी = हुंडीकी मुद्दत होना । –लखवी = हुंडी करना; हुंडी लिखना । ⊸क्षिकारवी ≔ हुंडी [(खेतीमें) सकारनाः]
- हूंबल (ल,) स्त्री ० हूँ ड़;आपसकी सहायता हुंफ स्त्री० उष्मा;गरमाहट(२)[ला.]
- सहायत।; आश्रय; बल । [-वळवी 🛥 गरमाहट अनुभव करना; गरमाना.]
- हंफाळ (—ळुं) वि० गरम; गरमी पहुँचानेबाला
- हुरय न० हृदय; दिल (२) [ला.] छाती; हिम्मत; हीसला (३) मन; अंतःकरण; हृदय; हिया (४) दयाई मनोभाव या वृत्तियाँ--प्रेम, दया, समभाव आदि (५)मर्म; रहस्य। [--पीगळवुं = दिल पसीजना । न्नवंध पडी जवुं 😅 दिलकी धड्कन बंद हो जाना । -भराई आववुं = दिल भर आना.]
- हृदयपलटो पुं० हृदय-परिवर्तन
- हृदयमंथन न० दिलमें होनेवाली उथल-पुगल; मनोमंथन
- हृवयाफाट अ० देखिये 'हैयाफाट'
- **हे**(हॅ) स्त्री० धीरज; हिम्मत । [**–पूरवी**
- ⇒संतुष्ट होना(२)सहायता करनाः]
- हेज पुं० जमीनकी नमी; तरी;सील
- हेठ अ० नीचे; तले; हेठ [प.]

हेठस्राण

निचाई

हेवातन

हेठलाण न० नीचेकी ओरका हिस्सा; **हेठलुं** वि० नीचेका; निचला

हेठळ अ० नीचे; तंले [ नीचे हेठुं वि० हलका;नीचा;हेठा(२)अ० **हेठे** अ० देखिये 'हेठ'। [--बेसबुं = नीचे बैठना; तलमें जमना (२) उकताकर या हारकर कोई काम-धंधा या प्रवृत्ति छोड़ देना; हाथ उठा लेना(३) पामाल होना ]

- हेड(ड,) स्त्री० शिकंजा (अपराधीको यंत्रणा देनेका) (२) अड़गोड़ा; ठेंगुर (३) सगर्भा स्त्रीको नियमित रूपसे होनेवाली शारीरिक पीड़ा; उदा० 'ऊलटीनी हेड' (४) बेचनेके बैलोंका झुंड (५) [ला.]जेल; क़ैदखाना
- हेडकी स्त्री० सिसकी(२)हिचकी; हिक्का
- हेडबेडी स्त्री० शिकंजा और बेड़ी(२) अंकुश; दबाव; शिकंजा [ला.]
- हेडी स्त्री० बेचनेके बैलोंका झुंड (२) समानता (वय आदिकी)

**हेडो** पु० अति प्यार; आसक्ति; अनुराग

- हेत न० प्रीति;स्नेह;ममता; हेत [प.]। [---वरसबं = अधिक प्रीति होना.]
- हेताळ(--ळु) वि० प्रेमपूर्ण; स्नेही; स्नेहल
- **हेबक**(हॅ) स्त्री० हैबत; दहशत; डर। [–खाबो ≕ चोंकना ; डर जाना ; हैबत छाना |
- हेबकायुं (हॅ) अ०फ्रि० देखिये 'हबकवुं' हेबत (हॅ) स्त्री० देखिये 'हेबक'
- **हेबताब्** (हॅ) अ०कि० देखिये 'हेबकास्'
- हेमक (हॅ) वि० अहमक; मुर्ख(२)डरपोक

हेमक्षे(-ले)म वि० सहीसलामत;क्षेम; ৰুহাল

हेमंती वि॰ हेमंत-संबंधी

हेर(०क) पुं० जासूस;भेदिया;हेरिक हेरत(हॅ) स्त्री० हैरत; अचंगा हेरफेर वि० हेरफेर किया हुआ; अदल-बदल किया हुआ (२) परिवर्तित; बदला हुआ (३) पुं० हेरफेर; उलट-पलटकी किया; परिवर्तन (४) फ़र्क़; फेर; अंतर

हेरवुं स०क्रि० ग़ौरसे ताकना या छिपे-छिपे देखना ; निहारना ; हेरना [प.] (२) ललकारना; बढावा देना

- हेरान (हॅ) वि० हैरान; तंग आया हुआ; [मुश्किल दिक
- हेरानगत(–ति) (हॅ) स्त्री० हैरानी;
- **हेरियं** न० छिपे-छिपे देखना (२) किसी सूराखमेंसे आनेवाली सूर्यकी किरण (३)झपकी; नींदका झोंका (४)पवनके अनुकूल नाव घुमाना
- **हेरु(⊸रो)** पुं० जासूस; हेरिक; भेदिया
- हेरोफेरो पुं० आना-जाना;आमद-रफ़्त; फेरा (२) आने-जाने जैसा कुछ थोड़ा काम; मिलना-जुलना
- हेल्ल(ल,) स्त्री० बोझ;भार(२)गाड़ीमें भरा हुआ बिकाऊ जलावन या वह गाडी जिसमें ये चीजें भरी हों; हेल (३) सिर पर रखा हुआ या रखनेका हंडा (४) बोझ उठानेकी मजदूरी (५)
  - मजदूरका काम; मजदूरी
- **हेलकरी** पुं० मजदूर; मुटिया
- **हेलकारो** पूं० धक्का; हेला; हचकोला
- **हेलारो** पुं० हेला; धक्का; हचक
- हेली स्त्री० सतत वर्षा; झड़ी
- **हेलो(--रुलो**) पुं० हेला; हचकोला; ध**क्का** (२)तेजी; वेग(३)अड्चन;नुक़सान
  - (४) दचका; हचकोला

हेवातण(--ंन) (हॅ) न० सौभाग्य; अहिवात

होकारो

हेवान	ૡૡૹ
हेबान (हॅ) वि॰ हैवान; जंगली (२)	प्यारसे पा
नः पशु; जानयर; हैवान	लगा रख
हेवानियत (हॅ) स्त्री० हैवानियत; पाश-	अंतर्वेदना;
वता;पशुता [परचा हुआ	फाँस । <b>हैया</b>
हेबायुं(हॅ) वि० हिल गया हुआ;(किसीसे)	हैयानुं फूटेर
हेवाल (हॅ) पुं० अहवाल; वृत्तांत; हाल	बेवक्रूफ़ ।
हेवावुं (हॅ) अ०कि० हिलना; परचना;	देखिये 'हैया
हिल जाना	लखी राख
हेसियत (हॅ) स्त्री० हैवियत; सामर्थ्य;	रखना; गाँ
बिसात (२) मान-प्रतिष्ठा; हैसियत	नथी == तसव
हेसियतवार (हॅ) वि० हैसियतदार;	समाधान नह
हेस्पितवाला	है (२) हिम
<b>हेळववुं</b> स०क्रि० हिले-मिले ऐसा करना;	करे एवुं =
हिलाना; परचाना (२) मनमें संतोष	अंगेज; अच
हो ऐसा करना; मन मनाना (३)	दिल खोलन
सधाना; पालना (पशुको)	दिलका सुब
हैडियावेरी पुं० मुसलमानी राज्यका	= देखिये 'ई
ेएक कर; जिजिया	जवुं = अल्ल
हैडियो पुं० टेंटुवा; घंटी	आवयं = वि
हैडुं न॰ देखिये 'हैयुं'	राखवुं = म
हैयाउकलत स्त्री० वुद्धि; सूझ-बूझ;अकुल	'रखनाँ। है
हैयाबारण स्त्री० संतोध; समाधान;	वैसा होंठोंप
शान्ति (२) विश्वास; दिल <mark>जमई</mark> ;	लगानाः, गर
चित्तका समाधान	मनमें रखन
हैयाफाट वि० जिससे कलेंजा फट जाय;	बौधना.]
हृदयविदारक (२) अ० हृदय विदीर्ण	होइयां अ० ड
हो जाय, कलेजा फट जाय इस तरह;	[–करवुं ≃ि
्बिलख-बिलखकर (रोना)	डकारना ]
हैयाफूट वि० मूढ़; हियेका अंधा; बेवकूफ़	होकली (हॉ)
हैयाश(-स)गडी स्त्री० कलेजा भूनने-	होका (०यंत्र)
वाला; छाती पर मूँग दलनेवाला	यंत्र; कंपास
हैयासूनुं वि॰ देखिये 'हैयाफूटुं' (२)	होकारो (हाँ)
निष्ठुर; हृदयशून्य	हुँ; हुँकारी
हैयुं न॰ हृदय; दिल; हिया। [हैया	डॉंटनेवाली

हयु न० हृदय; ादल; हिया। [हया उपर राखवुं=सूब देखभाल करना; ालना-पोसना; छाती पर हैयाना लाळा = না । दिलका जलापा; दिलकी **मी होळी =** दिलका दुःख । **लुं, फूटम्ं** = हियेका अंधा; हैयामां कोतरी राखवं == ामां लखी <mark>राखवू' | हैयामा</mark>ं ब्रवं़ु≕ठीक रखना; जीमें ठि बाँधना । **–कबूल करत्** ल्ली न होना; चित्तका हीं होता; मत मानता नहीं म्मतन पड़ना। **--कहर्ष्ट्**न जो न माना जाय; हैरत-रजभरा **। –खाली करव्**ं ≕ त; दिलके फफोले फोड्मा; दार निकालना । **–ठालबबुं** हैयुं खाली करवुं'। **--फुटी** ल चरने जाना। **–भराई** देल भर आना। – हाय ननकी स्वस्यता बनाये ये तेवुं होठे = जैसा मनमें पर । **हैये दाबवुं** = छातीसे ले लगाना **। हैये धरवुं =** ता;ठीक ध्यान देना;गाँठमें

- **होइयां** अ० डकार या तृप्तिका उद्गार । [**—करवुं ≍** किसीका माल पचा जाना ; डकारना.]
- होकली(हॉ) स्त्री० छोटा हुन्का
- होका (०यंत्र) न० कुतुबनुमा ; दिग्दर्शक यंत्र ; कंपास
- होकारो (हॉ) पु० संमतिसूचक शब्द; हुँ; हुँकारी (२) चीख; हो-हल्ला; डॉंटनेवाली आवाज। [**-पूरवो** <del>=</del> हुँकारी भरना; हुँ-हुँ करना.]

	. N.
Ę	sаr

442

होको (हॉ) पुं० हुक़्क़ा (२) देखिये 'होकायंत्र' होज(हॉ) पूं० पानीका कुंड; हौज **होजरी** स्त्री० जठर; पेट होजरुं न० पेट; गढ़ा (तुच्छकारमें) होठ पुं० देखिये 'ओठ' । [-फफडाववो 📼 होंठ हिलाना; कुछ बड़बड़ाना। --मां ने होठमां = कोई न सूने इस तरह; **धीरेसे । होठे आवी रहेवुं** = बोलनेकी तैयारी होना;होंठों पर, मुंह पर आना.] होड स्त्री० होड़; शर्त । [-मां अतरवुं, **बक्तवी, मारवी =** शर्त बदना, बाँधना.] होत्रकुं न० छोटी नाव; डोंगी **होडी** स्त्री० नाव; नौका **होहेवार** वि० ओहदेेदार; पदाधिकारी होहो पुं० ओहदा; पद; अधिकार होनारत स्त्री० घटित होनेवाली घटना; होनहार; भवितव्यता (२) दुर्घटना; आकस्मिक घटना होबाळो पुं० लोक-समाजमें प्रकट हो जाना; चर्चा या फ़बीहत (होना) होमबुं स०क्रि० होमना; बलिदान करना होष(हॉ) अ० खैर; भले होलबर्बु स०कि० देखिये 'ओलवव्' होलार्च अ०कि० बुझना (आग, दीपक आदिका); शान्त होना (डाह; द्वेष) होसी स्त्री० मादा पंडुक; पंडुकी होलो पुं० पंडुक; टूटरूँ; फ़ाल्ता होवापणुं (हाँ) न० अस्तित्व;होना;हस्ती होषुं (हाँ) अ०क्षि० होना; बनना; निर्मित होना होंचे अ० हों होश पुं० होश; चेतना; सुघबुध (२) शक्ति;सामर्थ्य । [-जडी जवा=होश

## होंसील

- उड़ जाना; होश जाते रहना। --मा आवचुं = होशमें आना; चेतना प्राप्त करना.] [हवास; होश होशकोश पुं० ब० व० हिम्मत; होश-होशियार वि० होशियार; प्रवीण; चालाक (२) सजग; सावधान; होशियार(३) समझदार; होशियार। [--रहेवुं=सावधान, होशियार रहना; सतर्क रहना.] होशियारी स्त्री० होशियारी।[-करबी,
- होशियारी स्त्री०होशियारी ।[–करबी, वाखववी, बताववी, मारवी=भिष्या बङ्ग्पन जताना.]
- होहा(--हो) स्त्री॰ हो-हल्ला; शोरगुल; कोलाहल (२) प्रसिद्धि; विज्ञापन; चर्चा;इजहार(३)धवराहट; खलबली (४) अ० 'होहा' आवाज
- **होळवुं** स०कि० कंघी करना;ब्योरना; बाल सँवारना
- होळी स्त्री० होली। [**-नुं नाळियेर =** आफ़त या जानजोखोंके कामोमें **कूद** पड़नेवाला; जान पर खेलनेवाला.]

**होळेयो** पुं० मन, सेर, रुपये आदिका पूर्णतासूचक चिह्न;उदा० रु० १०); बिकारी [चीख-पुकार

- होंकार(हॉ०) पुं० देखिये 'होकारो' नं. २; होंक्ष(हॉ०) स्त्री० होस; उमंग; शौक़ होंक्सतोंकी (हॉ०, तॉ०) स्त्री० देखिये ' ट्रोंसातोंसी '
- होंगोर्लु (हॉ०)वि० देखिये 'होंसीरुं' होंस (हॉ०) स्त्री० देखिये 'होंश'
- होंसातोंसी (हॉ०, तॉ०) स्त्री० देखिये 'हंसातुंश'

होंसील (हाँ०) वि० हौसलामंद; उत्साही

Storectain Mahavis Adradhma Kendra Shree Kailash Sagarshuri / Koba Bandhinggar, grangeandig

